श्री वीतरागाय नमः

जैनाचार्य-जैनधर्मदिवाकर-पूज्य-श्री-घासीलालव्रतिविरचितया प्रमेयचन्द्रिका-ख्यया व्याख्यया समलङ्कृतं व्याख्याप्रज्ञप्त्यपरनामकम्

॥ श्री-भगवतीसूत्रम् ॥

(दशमो भागः)

अथ द्वादशशतकस्य चतुर्थोद्देशकः प्रारभ्यते

द्वादशशतके चतुर्थोद्देशकस्य संक्षिप्तविषयवर्णनम्

परमाणुद्वयस्य एकतया सङ्गीभूतत्वे आकारप्ररूपणम्, एवमेव त्रिचतुः पञ्चषट्सप्ताष्टनवदशसंख्यातासंख्यातानन्तपरमाणूनामपि एकतया सङ्गीभूतत्वे आकारप्ररूपणंच, तदनन्तरम् अनन्तानन्तपुद्गलपरावर्तप्ररूपणम्, पुद्गलपरावर्त-

---

बारहवें शतक के चौथे उद्देशेका प्रारंभ-

इस बारहवें शतक के इस चतुर्थ उद्देशक मे जो विषय कहा गया है उसका विवरण संक्षेप से इस प्रकार है-

दो परमाणुओं के आपस में मिलने पर जो द्व्यणुक रूप स्कन्ध होता है उसके आकार की प्ररूपणा इसी प्रकार से तीन परमाणुओं के आपस में मिलने पर, चार, पांच, छह, सात, आठ, नौ, दश, संख्यात, असंख्यात और अनन्त परमाणुओं के आपस में मिलने पर त्र्यणुकादिरूप स्कन्ध होते हैं उनके आकारों की प्ररूपणा अनन्तानन्त पुद्गल

બારમા શતકના ચોથા ઉદ્દેશાનો પ્રારંભ

આ ચોથા ઉદ્દેશકમાં જે વિષયનું પ્રતિપાદન કરવામાં આવ્યું છે તેનો સંક્ષિપ્ત સારાંશ નીચે પ્રમાણે છે-

બે પરમાણુઓના સંયોગથી જે બે અણુવાળો સ્કન્ધ બને છે તેના આકારની પ્રરૂપણા-એજ પ્રમાણે ત્રણ પરમાણુઓના સંયોગથી બનતા ત્રિઅણુક સ્કન્ધના, ચાર, પાંચ, છ, સાત, આઠ, નવ, દસ, સંખ્યાત, અસંખ્યાત અને અનંત પરમાણુઓના પરસ્પરના સંયોગથી બનતા ચાર અણુવાળાથી લઈને અનંત પર્યન્તના અણુવાળા સ્કન્ધોના આકારોની પ્રરૂપણા-અનન્તાનન્ત

प्रकारप्ररूपणम्, नैरयिकाणां पुद्गलपरावर्तप्ररूपणम्, एकनैरयिकस्य औदारिकपुद्गलपरावर्तप्ररूपणंच, ततः असुरकुमारस्य औदारिकपुद्गलपरावर्तप्ररूपणम्, ततः एकनैरयिकस्य वैक्रियपुद्गलपरावर्तप्ररूपणम्, नैरयिकाणां पुद्गलपरावर्तप्ररूपणं च, एकस्य नैरयिकस्य नैरयिकत्वावस्थायाम् औदारिकपुद्गलपरावर्तप्ररूपणम्, एकनैरयिकस्य असुरकुमारत्वावस्थायाम् औदारिकपुद्गलपरावर्तप्ररूपणम्, एकनैरयिकस्य पृथिवीकायिकत्वावस्थायाम् औदारिकपुद्गलपरावर्तप्ररूपणम्, एकासुरकुमारस्य भूतभाविनैरयिकत्वावस्थायाम् औदारिकपुद्गलपरावर्तप्ररूपणम्, नैरयिकस्य नैरयिकत्वावस्थायाम् वैक्रियपुद्गलपरावर्तप्ररूपणम्, नैरयिकस्य पृथिवीकायिकत्वावस्थायां वैक्रियपुद्गलपरावर्तप्ररूपणम्, नैरयिकाणां नैरयिकत्वावस्थायां कियन्तः औदारिकपुद्गलपरावर्त्ताः व्यतीताः सन्तीति ? प्रश्नोत्तरम्,

---

परावर्त का प्ररूपण, पुद्गलपरावर्त के प्रकारों का निरूपण, नैरयिकों के पुद्गलपरावर्त का प्ररूपण, असुरकुमार के औदारिक पुद्गल परावर्त का प्ररूपण, एक नैरयिक के वैक्रियपुद्गलपरावर्त का प्ररूपण, नैरयिकों के पुद्गलपरावर्त का प्ररूपण, एक नैरयिक के नैरयिकत्वावस्था में औदारिक पुद्गलपरावर्त का प्ररूपण, एक नैरयिक का पृथिवीकायिकत्व की अवस्था में औदारिकपुद्गलपरावर्त्त का प्ररूपण, एक असुरकुमार के भूतभावि नैरयिकत्वावस्था में औदारिक पुद्गलपरावर्त का प्ररूपण, एक नैरयिक के नैरयिकत्व अवस्था में वैक्रियपुद्गल परावर्त का प्ररूपण, एक नैरयिकों के पृथिवीकायिकत्व अवस्था में वैक्रियपुद्गलपरावर्त का प्ररूपण, नैरयिकों के नैरयिकत्वावस्था में कितने औदारिक पुद्गलपरावर्त व्यतीत हो चुके हैं?—

પુદ્ગલ પરાવર્તનનું પ્રરૂપણ–પુદ્ગલ પરાવર્તના પ્રકારોનું નિરૂપણ–નૈરયિકોના પુદ્ગલપરાવર્તનું નિરૂપણ–અસુરકુમારના ઔદારિક પુદ્ગલપરાવર્તનું નિરૂપણ–એક નૈરયિકના વૈક્રિયપુદ્ગલપરાવર્તની પ્રરૂપણા–નૈરયિકોના પુદ્ગલપરાવર્તની પ્રરૂપણા–એક નૈરયિકમાં નૈરયિકત્વાવસ્થામાં ઔદારિક પુદ્ગલ પરાવર્તની પ્રરૂપણા–એક નૈરયિકના પૃથ્વીકાયિકત્વની અવસ્થામાં ઔદારિક પુદ્ગલપરાવર્તની પ્રરૂપણા–એક અસુરકુમારના ભૂતભાવિ નૈરયિકત્વાવસ્થામાં ઔદારિક પુદ્ગલપરાવર્તની પ્રરૂપણા–એક નૈરયિકના નૈરયિકત્વ અવસ્થામાં વૈક્રિયપુદ્ગલ પરાવર્તની પ્રરૂપણા–એક નૈરયિકના પૃથ્વીકાયિકત્વ અવસ્થામાં વૈક્રિયપુદ્ગલ પરાવર્તની પ્રરૂપણા–નૈરયિકોને નૈરયિકત્વાવસ્થામાં કેટલા ઔદારિક પુદ્ગલ પરાવર્ત વ્યતીત થઈ ચુકયા છે ? આ પ્રશ્નનો ઉત્તર નૈરયિકોના પૃથ્વીકાયિકની અવસ્થામાં ઔદા-

नैरयिकाणां पृथिवीकायिकत्वावस्थायाम् औदारिकपुद्गलपरावर्तप्ररूपणम्, औदारिकपुद्गलपरावर्तस्य हेतुस्वरूपनिरूपणम्, औदारिकपुद्गलपरावर्त्तस्य निष्पत्तिकालनिरूपणम्, औदारिकपुद्गलपरावर्तकालस्य अल्पबहुत्वादिकप्ररूपणम्, पुद्गलपरावर्तस्य अल्पबहुत्वादिकप्ररूपणंच।

पुद्गलवक्तव्यताप्रस्तावः

मूलम्—रायगिहे जाव एवं वयासी-दो भंते! परमाणुपोग्गला एगयओ साहन्नंति, एगयओ साहण्णित्ता किं भवइ? गोयमा! दुप्पएसिए खंधे भवइ से भिज्जमाणे दुहा कज्जइ, एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ परमाणुपोग्गले भवइ। तिन्नि भंते! परमाणुपोग्गला एगयओ साहन्नंति, एगयओ साहण्णित्ता किं भवइ? गोयमा! तिपएसिए खंधे भवइ, से भिज्जमाणे दुहा वि तिहा वि, कज्जइ, दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ दुपएसिए खंधे भवइ, तिहा कज्जमाणे पोग्गला भवंति। चत्तारि भंते! परमाणुपोग्गला एगयओ साहन्नंति, जाव पुच्छा, गोयमा! चउपएसिए खंधे भवइ, से भिज्जमाणे दुहा वि, तिहा वि, चउहा वि कज्जइ, दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ, अहवा दो

इस प्रश्न का उत्तर नैरयिक के पृथिवीकायिक की अवस्था में औदारिक पुद्गलपरावर्त का प्ररूपण औदारिक पुद्गलपरावर्त के हेतु के स्वरूप निरूपण औदारिकपुद्गलपरावर्त की निष्पत्ति के काल का निरूपण, औदारिक पुद्गल परावर्त काल के अल्प बहुत्वादिक का प्ररूपण, पुद्गलपरावर्त के अल्पबहुत्वादिक का प्ररूपण।

રિક પુદ્ગલપરાવર્તની પ્રરૂપણા—ઔદારિક પુદ્ગલપરાવર્તના હેતુના સ્વરૂપનું નિરૂપણ—ઔદારિક પુદ્ગલપરાવર્તની નિષ્પત્તિના કાળનું નિરૂપણ—ઔદારિક પુદ્ગલપરાવર્તકાળના અલ્પબહુત્વ આદિનું કથન—પુદ્ગલપરાવર્તના અલ્પબહુત્વ આદિની પ્રરૂપણા.

दुपएसिया खंधा भवइ, तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणु पोग्गला, एगयओ दुप्पएसिए खंधे भवइ, चउहा कज्जमाणे चत्तारि परमाणुपोग्गला भवंति। पंच भंते! परमाणुपोग्गला पुच्छा, गोयमा! पंचपएसिए खंधे भवइ, से भिज्जमाणे दुहा वि तिहा वि, चउहा वि, पंचहा वि. कज्जइ, दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ चउपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ दुपएसिए खंधे, भवइ, एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ, तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ तिप्पएसिए खंधे, भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दो दुपएसिया खंधा भवंति, चउहा कज्जमाणे एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला, एगयओ दुप्पएसिए खंधे भवइ, पंचहा कज्जमाणे पंच परमाणु पोग्गला भवंति। छब्भंते! परमाणुपोग्गला पुच्छा, गोयमा! छप्पएसिए खंधे भवइ, से भिज्जमाणे दुहा वि, तिहा वि जाव छव्विहा वि, कज्जइ, दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ, अहवा, एगयओ दुप्पएसिए खंधे, एगयओ चउपएसिए खंधे भवइ, अहवा, दो तिपएसिया खंधा भवंति, तिहा कज्जमाणे अगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुपएसिए खंधे एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ, अहवा तिन्नि दुपएसिया खंधा भवंति। चउहा कज्जमाणे एगयओ तिन्नि परमाणु

पोग्गला, एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, भवंति, एगयओ दो दुप्पएसिया खंधा भवंति, पंचहा कज्जमाणे एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खंधे भवइ। छहा कज्जमाणे छ परमाणुपोग्गला भवंति। सत्त भंते! परमाणुपोग्गला पुच्छा, गोयमा! सत्तपएसिए खंधे भवइ, से भिज्जमाणे दुहा वि जाव सत्तहा वि कज्जइ, दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ छप्पएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ दुप्पएसिए खंधे भवइ, एगयओ पंच पएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ तिप्पएसिए, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ। तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुप्पएसिए खंधे, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दो तिपएसिया खंधा भवंति, अहवा एगयओ दो दुप्पएसिया खंधा भवंति, एगयओ तिप्पएसिए खंधे भवइ, चउहा कज्जमाणे एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दुप्पएसिए खंधे, एगयओ तिप्पएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गला, एगयओ तिन्नि दुप्पएसिया खंधा भवंति। पंचहा कज्जमाणे एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला, एगयओ तिप्पएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला, एगयओ दो दुप्पएसिया खंधा भवंति। छहा

कज्जमाणे एगयओ पंच परमाणुपोग्गला एगयओ दुप्पएसिए खंधे भवइ। सत्तहा कज्जमाणे सत्त परमाणुपोग्गला भवंति। अट्ठभंते! परमाणुपोग्गला पुच्छा, गोयमा! अट्ठ पएसिए खंधे भवइ, जाव दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गला, एगयओ सत्तपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ दुप्पएसिए खंधे, एगयओ छप्पएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ तिप्पएसिए खंधे भवइ एगयओ पंच पएसिए खंधे भवइ अहवा दो चउप्पएसिया खंधा भवंति। तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ छप्पएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुप्पएसिए खंधे, एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणु पोग्गले एगयओ तिप्पएसिए खंधे एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ दुप्पएसिए खंधे, एगयओ दो तिप्पएसिया खंधा भवंति। चउहा कज्जमाणे एगयओ तिन्नि परमाणु पोग्गला, एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ दोन्नि परमाणुपोग्गला एगयओ दुप्पएसिए खंधे, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ दो-परमाणु पोग्गला, एगयओ दो तिप्पएसिया खंधा भवंति, अहवा एगयओ परमाणु पोग्गले एगयओ दो दुप्पएसिया खंधा, एगयओ तिप्पएसिए खंधे भवइ, अहवा चत्तारि दुप्पएसिया खंधा भवंति। पंचहा कज्जमाणे एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ तिन्नि

परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ दो परमाणु पोग्गला एगयओ तिन्नि दुपएसिया खंधा भवंति। छहा कज्जमाणे एगयओ पंचपरमाणु-पोग्गला, एगयओ तिप्पएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला, एगयओ दो दुप्पएसिया खंधा भवंति। सत्तहा कज्जमाणे एगयओ छ परमाणु पोग्गला, एगयओ दुप्प-एसिए खंधे भवइ। अट्ठहा कज्जमाणे अट्ठपरमाणुपोग्गला भवंति। नव भंते! परमाणुपोग्गला पुच्छा, गोयमा! जाव नवविहा कज्जंति, दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणु पोग्गले एगयओ अट्ठपएसिए खंधे भवइ, एवं एक्केकं संचारेंतेहिं जाव अहवा एगयओ चउप्पएसिए खंधे, एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ, तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणु पोग्गला, एगयओ दो परमाणुपोग्गले एगयओ सत्तपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ दुप्पएसिए खंधे एगयओ छप्पएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणु पोग्गले, एग-यओ तिप्पएसिए खंधे, एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दो चउप्पएसिया खंधा भवंति, अहवा एगयओ दुप्पएसिए खंधे, एगयओ तिपएसिए खंधे, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ, अहवा तिन्नि तिप्पएसिया खंधा भवंति। चउहा कज्जमाणे एगयओ तिन्नि परमाणु पोग्गला, एगयओ छप्पएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ

दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दुप्पएसिए खंधे, एगयओ पंच-पएसिए खंधे भवइ अहवा एगयओ दोपरमाणु पोग्गला, एग-यओ तिप्पएसिए खंधे, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, दो दुप्पएसिया खंधा, एगयओ चउप्प-एसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुप्पएसिए खंधे, एगयओ दो तिप्पएसिया खंधा भवंति, अहवा एगयओ तिन्नि दुप्पएसिया खंधा, एगयओ तिप्पएसिए खंधे भवइ। पंचहा कज्जमाणे एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला, एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ तिन्नि पर-माणुपोग्गला, एगयओ दुप्पएसिए खंधे, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला एगयओ दो तिप्पएसिया खंधा भवंति, अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला एगयओ दो दुप्पएसिया खंधा, एगयओ तिप्पएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ चत्तारि दुपएसिया खंधा, भवंति। छहा कज्जमाणे एगयओ पंचपरमाणुपोग्गला, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ चत्तारि पर-माणुपोग्गला, एगयओ दुप्पएसिए खंधे एगयओ तिप्पएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला, एगयओ तिन्निदुप्पएसिया खंधा भवंति। सत्तहा कज्जमाणे एगयओ छ परमाणुपोग्गला, एगयओ तिप्पएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ पंच परमाणुपोग्गला, एगयओ दो दुप्पएसिया खंधा

भवंति। अट्ठहा कज्जमाणे एगयओ सत्त परमाणु पोग्गला एग-
यओ दुपएसिए खंधे भवइ। नवहा कज्जमाणे नव परमाणु-
पोग्गला भवंति। दस भंते! परमाणुपोग्गला जाव दुहा कज्ज-
माणे एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ नवपएसिए खंधे
भवइ, अहवा एगयओ दुप्पएसिए खंधे, एगयओ अट्ठ पएसिए
खंधे भवइ, एक्केकं संचरेयव्वंति, जाव, अहवा दो पंचपएसिया
खंधा भवंति। तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला,
एगयओ अट्ठ पएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणु-
पोग्गले, एगयओ दुप्पएसिए खंधे भवइ, एगयओ सत्त पएसिए
खंधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ तिप्प-
एसिए खंधे भवइ, एगयओ छप्पएसिए खंधे भवइ, अहवा
एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ चउप्पएसिए खंधे, एगयओ
पंचपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ दुप्पएसिए खंधे भवइ,
एगयओ दो चउप्पएसिया खंधा भवंति, अहवा एगयओ दो ति-
पएसिया खंधा भवंति, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ, चउहा
कज्जमाणे एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला, एगयओ सत्तप-
सिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ दोपरमाणुपोग्गला, एगयओ
दुप्पएसिए खंधे, एगयओ छप्पएसिए खंधे भवइ, अहवा एग-
यओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ तिप्पएसिए खंधे, एगयओ
पंचपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला,
एगयओ दो चउप्पएसिया खंधा भवंति, अहवा एगयओ पर-

माणुपोग्गले एगयओ दुप्पएसिए खंधे, एगयओ तिप्पएसिए खंधे, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणु पोग्गले, एगयओ तिन्नि तिप्पएसिया खंधा भवंति, अहवा एगयओ तिन्नि दुप्पएसिया खंधा भवंति, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ दो दुप्पएसिया खंधा, एगयओ दो तिप्पएसिया खंधा भवंति, पंचहा कज्जमाणे एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला, एगयओ छप्पएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला, एगयओ दुप्पएसिए खंधे भवइ, एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला, एगयओ तिप्पएसिए खंधे एगयओ दुप्पएसिए खंधे भवइ, एगयओ दो तिप्पएसिया खंधा भवंति, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ तिन्नि दुप्पएसिया खंधा, एगयओ तिप्पएसिए खंधे भवइ, अहवा पंच दुपएसिया खंधा भवंति। छहा कज्जमाणे एगयओ पंचपरमाणुपोग्गला एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला, एगयओ दुप्पएसिए खंधे, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला एगयओ दो तिप्पएसिया खंधा भवंति, अहवा एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला, एगयओ दो दुप्पएसिया खंधा भवंति, एगयओ तिप्पएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला एगयओ चत्तारि दुप्पएसिया खंधा भवंति। सत्तहा कज्जमाणे एगयओ

छ परमाणुपोग्गला, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ पंचपरमाणुपोग्गला, एगयओ दुप्पएसिए, एगयओ तिप्पएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला, एगयओ तिन्नि दुप्पएसिया खंधा भवंति। अट्ठहा कज्जमाणे एगयओ सत्त परमाणुपोग्गला, एगयओ तिप्पएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ छ परमाणुपोग्गला, एगयओ दो दुप्पएसिया खंधा भवंति। नवहा कज्जमाणे एगयओ अट्ठपरमाणु पोग्गला, एगयओ दुप्पएसिए खंधे भवइ, दसहा कज्जमाणे दस परमाणु-पोग्गला भवंति। संखेज्जा भंते! परमाणुपोग्गला एगयओ साहन्नंति, एगयओ साहण्णित्ता किं भवइ? गोयमा! संखेज्ज-पएसिए खंधे भवइ, से भिज्जमाणे दुहा वि जाव दसहा वि, संखेज्जहा वि कज्जंति। दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ दुप्पए-सिए खंधे एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ, एवं अहवा एगयओ तिप्पएसिए खंधे, एगयओ संखेज्जप्पएसिए खंधे भवइ, एवं जाव अहवा एगयओ दसपएसिए खंधे, एगयओ संखेज्ज-पएसिए खंधे भवइ, अहवा दो संखेज्जपएसिया खंधा भवंति। तिहाकज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला एगयओ संखेज्ज-पएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ दुप्पएसिए खंधे भवइ, एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ तिप्पएसिए खंधे

भवइ, एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ, एवं जाव अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दसपएसिए खंधे भवइ, एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दो संखेज्जपएसिया खंधा भवंति, अहवा एगयओ, दुप्पएसिए खंधे भवइ, एगयओ दो संखेज्जपएसिया खंधा भवंति, एवं जाव अहवा एगयओ दसपएसिए खंधे भवइ, एगयओ दो संखेज्जपएसिया खंधा भवंति, अहवा तिन्नि संखेज्जपएसिया खंधा भवंति, चउहा कज्जमाणे एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला, एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दुप्पएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ तिप्पएसिए खंधे भवइ, एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ, एवं जाव अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दसपएसिए एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दो संखेज्जपएसिया खंधा भवंति, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुप्पएसिए खंधे एगयओ दो संखेज्जपएसिया खंधा भवंति, जाव अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दसपएसिए खंधे, एगयओ दो संखेज्जपएसिया खंधा भवंति अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ तिन्नि संखेज्जपएसिया खंधा भवंति, अहवा एगयओ दुप्पएसिए खंधे, एगयओ तिन्नि संखेज्जपएसिया खंधा भवंति, जाव अहवा एगयओ दसपए-

सिए खंधे एगयओ तिन्नि संखेज्जपएसिया भवंति, अहवा चत्तारि संखेज्जपएसिया भवंति। एएणं कमेणं पंचग संजोगो वि भाणियव्वो जाव नवगसंजोगो। दसहा कज्जमाणे एगयओ नव परमाणुपोग्गला, एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ अट्ठ परमाणुपोग्गला, एगयओ दुप्पएसिए खंधे, एगयओ संखेज्जप्पएसिए खंधे भवइ। एएणं कमेणं एक्के-क्के पूरेयव्वो जाव अहवा एगयओ दसपएसिए खंधे, एगयओ नव संखेज्जपएसिए खंधा भवंति, अहवा दस संखेज्जपएसिया खंधा भवंति। संखेज्जहा कज्जमाणे संखेज्जा परमाणुपोग्गला, भवंति। असंखेज्जा भंते! परमाणुपोग्गला, एगयओ साह-ण्णंति, एगयओ साहण्णित्ता किं भवइ? गोयमा! असंखेज्जपए-सिए खंधे भवइ, से भिज्जमाणे दुहावि जाव दसहा वि संखेज्जहा वि, असंखेज्जहा वि कज्जइ। दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणु-पोग्गले, एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे भवइ, जाव अहवा एग-यओ दसपएसिए खंधे, एगयओ असंखिज्जपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे, एगयओ, असंखेज्जपएसिए खंधे भवइ, अहवा दो असंखेज्जपएसिया खंधा भवंति। तिहा-कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ असंखेज्ज-पएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ दुप्पएसिए खंधे, एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे, भवइ, जाव, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दसपएसिए खंधे,

एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगे परमाणु-पोग्गले, एगे संखेज्जपएसिए खंधे एगे असंखेज्जपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दो असंखेज्ज-पएसिया खंधा भवंति, अहवा एगयओ दुप्पएसिए खंधे, एगयओ दो संखेज्जपएसिया खंधा भवंति, एवं जाव, अहवा एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ, एगयओ दो असंखेज्ज-पएसिया खंधा भवंति, अहवा तिन्नि असंखिज्जपएसिया खंधा भवंति। चउहा कज्जमाणे एगयओ तिन्नि परमाणु-पोग्गला, एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे भवइ, एवं चउक्क-संजोगो जाव दसगसंजोगो एए जहेव संखेज्जपएसियस्स नवरं असंखेज्जगं एगं अहिगं भाणियव्वं जाव अहवा दस असंखे-ज्जपएसिया खंधा भवंति, संखेज्जहा कज्जमाणे एगयओ संखे-ज्जा परमाणुपोग्गला, एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ संखेज्जा दुप्पएसिया खंधा, एगयओ असंखे-ज्जपएसिए खंधे भवइ, एवं जाव अहवा एगयओ संखेज्जा दसपएसिया खंधा, एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ संखिज्जा संखिज्जपएसिया खंधा, एगयओ असंखिज्जपएसिए खंधे, भवइ, अहवा संखेज्जा असंखेज्जपए-सिया खंधा भवंति, असंखिज्जहा कज्जमाणे असंखेज्जा पर-माणुपोग्गला, भवंति। अणंताणं भंते! परमाणुपोग्गला जाव किं भवइ? गोयमा! अणंतपएसिए खंधे भवइ, से भिज्जमाणे

दुहावि तिहावि जाव दसहावि संखिज्जहा असंखिज्जहा अणंतहा वि कज्जइ। दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ अणंतपएसिए खंधे जाव अहवा दो अणंतपएसिया खंधा भवंति। तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ अणंतपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुप्पएसिए खंधे, एगयओ अणंतपएसिए खंधे भवइ, जाव अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे, एगयओ अणंतपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दो अणंतपएसिया खंधा भवंति, अहवा एगयओ दुप्पएसिए खंधे एगयओ दो अणंतपएसिया खंधा भवंति, एवं जाव अहवा एगयओ दसपएसिए एगयओ दो अणंतपएसिया खंधा भवंति, अहवा एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे, एगयओ दो अणंतपएसिया खंधा भवंति, अहवा एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे, एगयओ दो अणंतपएसिया खंधा भवंति, अहवा तिन्नि अणंतपएसिया खंधा भवंति। चउहा कज्जमाणे एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला, एगयओ अणंतपएसिए खंधे भवइ, एवं चउक्कसंजोगो जाव असंखेज्जसंजोगो, एए सव्वे जहेव असंखेज्जाणं भाणिया तहेव अणंताणवि भाणियव्वा, नवरं एक्कं अणंतगं अब्भहियं भणियव्वं जाव अहवा एगयओ संखेज्जासंखिज्जपएसिया खंधा, एगयओ अणंतपएसिया खंधा भवंति, अहवा एगयओ संखे-

ज्जा असंखेज्जपएसिया खंधा, एगयओ अणंतपएसिए खंधे भवइ, अहवा संखिज्जा अणंतपएसिया खंधा भवंति। असंखेज्जहा कज्जमाणे एगयओ असंखेज्जा परमाणुपोग्गला, एगयओ अणंतपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ असंखिज्जा दुपएसिया खंधा, एगयओ अणंतपएसिए खंधे भवइ, जाव अहवा एगयओ असंखेज्जा संखिज्जपएसिया खंधा, एगयओ अणंतपएसिए खंधे भवइ, अहवा, अगयओ असंखिज्जा असंखिज्जपएसिया खंधा, एगयओ अणंतपएसिए खंधे भवइ, अहवा असंखेज्जा अणंतपएसिया खंधा भवंति। अणंतहा कज्जमाणे अणंता परमाणुपोग्गला भवंति ॥सू०१॥

छाया—राजगृहे यावत्-एवम् अवादीत्-द्वौ भदन्त ! परमाणुपुद्गलौ एकतः संहन्येते, एकतः संहत्य किं भवति ? गौतम ! द्विप्रदेशिकःस्कन्धो भवति, स भिद्यमानो द्विधा क्रियते-एकतः परमाणुपुद्गलः, एकतः परमाणुपुद्गलो भवति। त्रयो भदन्त ! परमाणुपुद्गलाः एकतः संहन्यन्ते, एकतः संहत्य किं भवति ? गौतम ! त्रिप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, स भिद्यमानो द्विधाऽपि त्रिधाऽपि क्रियते, द्विधा क्रियमाणः एकतः परमाणुपुद्गलः, एकतो द्विप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, त्रिधा क्रियमाणः त्रयः परमाणुपुद्गलाः भवन्ति। चत्वारो भदन्त ! परमाणुपुद्गलाः एकतः संहन्यन्ते, यावत् पृच्छा, गौतम ! चतुष्प्रदेशिकः स्कन्धो भवति, स भिद्यमानो द्विधापि, त्रिधापि, चतुर्धापि क्रियते, द्विधा क्रियमाणः एकतः परमाणुपुद्गलः, एकतस्त्रिप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, अथवा द्वौ द्विप्रदेशिकौ स्कन्धौ भवतः, त्रिधा क्रियमाणः एकतो द्वौ परमाणुपुद्गलौ, एकतो द्विप्रदेशिकः स्कन्धो भवति। चतुर्धा क्रियमाणः चत्वारः परमाणुपुद्गलाः भवन्ति। पञ्च भदन्त ! परमाणुपुद्गलाः पृच्छा, गौतम ! पञ्च प्रदेशिकः स्कन्धो भवति, स भिद्यमानो द्विधापि, त्रिधापि, चतुर्धापि, पञ्चधापि क्रियते, द्विधा क्रियमाणः एकतः परमाणुपुद्गलः, एकतश्चतुष्प्रदेशिकः स्कन्धो भवति, अथवा एकतो द्विप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, एकतस्त्रिप्रदेशिकः स्कन्धो भवति। त्रिधा क्रियमाणः एकतो द्वौ परमाणुपुद्गलौ, एकतस्त्रिप्रदे-

शिकः स्कन्धो भवति, अथवा एकतः परमाणुपुद्गलः, एकतो द्वौ द्विप्रदेशिकौ स्कन्धौ भवतः। चतुर्धा क्रियमाणः एकतः त्रयः परमाणुपुद्गलाः एकतो द्विप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, पञ्चधा क्रियमाणः पञ्च परमाणुपुद्गला भवन्ति। षट् भदन्त! परमाणुपुद्गलाः पृच्छा, गौतम! षट्प्रदेशिकः स्कन्धो भवति, स भिद्यमानो द्विधापि, त्रिधापि, यावत् षोडाऽपि क्रियते, द्विधा क्रियमाणः एकतः परमाणुपुद्गलः, एकतः पञ्चप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, अथवा एकतो द्विप्रदेशिकः स्कन्धः, एकतश्चतुष्प्रदेशिकः स्कन्धो भवति, अथवा द्वौ त्रिप्रदेशिकौ स्कन्धौ भवतः। त्रिधा क्रियमाणः एकतो द्वौ परमाणु पुद्गलौ, एकतश्चतुष्प्रदेशिकः स्कन्धो भवति, अथवा एकतः परमाणुपुद्गलः, एकतो द्विप्रदेशिकः स्कन्धः, एकतस्त्रिप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, अथवा त्रयो द्विप्रदेशिकाः स्कन्धाः भवन्ति। चतुर्धा क्रियमाणः एकतस्त्रयः परमाणुपुद्गलाः, एकतस्त्रिप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, अथवा एकतो द्वौ परमाणुपुद्गलौ भवतः, एकतो द्वौ द्विप्रदेशिकौ स्कन्धौ भवतः। पञ्चधा क्रियमाणः, एकतश्चत्वारः परमाणुपुद्गलाः, एकतो द्विप्रदेशिकः स्कन्धो भवति। षोढा क्रियमाणः षट् परमाणुपुद्गलाः भवन्ति। सप्त भदन्त! परमाणुपुद्गलाः पृच्छा, गौतम! सप्त प्रदेशिकः स्कन्धो भवति, स भिद्यमानो द्विधाऽपि यावत् सप्तधापि क्रियते। द्विधा क्रियमाणः, एकतः परमाणुपुद्गलः, एकतः षट्प्रदेशिकः स्कन्धो भवति, अथवा एकतो द्विप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, एकतः पञ्चप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, अथवा एकतस्त्रिप्रदेशिकः स्कन्धः, एकतश्चतुष्प्रदेशिकः स्कन्धो भवति, त्रिधा क्रियमाणः, एकतो द्वौ परमाणुपुद्गलौः, एकतः पञ्चप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, अथवा एकतः परमाणुपुद्गलः एकतो द्विप्रदेशिकः स्कन्धः, एकतश्चतुष्प्रदेशिकः स्कन्धो भवति, अथवा एकतः परमाणुपुद्गलः, एकतो द्वौ त्रिप्रदेशिकौ स्कन्धौ भवतः, अथवा एकतो द्वौ द्विप्रदेशिकौ स्कन्धौ भवतः, एकतस्त्रिप्रदेशिकः स्कन्धो भवति। चतुर्धा क्रियमाणः एकतस्त्रय परमाणुपुद्गलाः, एकतश्चतुष्प्रदेशिकः स्कन्धो भवति, अथवा एकतो द्वौ परमाणुपुद्गलौ, एकतो द्विप्रदेशिकः स्कन्धः, एकतस्त्रिप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, अथवा एकतः परमाणुपुद्गलः, एकतस्त्रयो द्विप्रदेशिकाः स्कन्धा भवन्ति। पञ्चधा क्रियमाणः एकतश्चत्वारः परमाणुपुद्गलाः, एकतस्त्रिप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, अथवा एकतस्त्रयः परमाणुपुद्गलाः, एकतो द्वौ द्विप्रदेशिकौ स्कन्धौ भवतः। षोढा क्रियमाणः एकतः पञ्च परमाणुपुद्गलाः, एकतो द्विप्रदेशिकः स्कन्धो भवति। सप्तधा क्रियमाणः सप्तपरमाणुपुद्गलाः भवन्ति। अष्टौ भदन्त! परमाणुपुद्गलाः पृच्छा, गौतम! अष्टप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, यावत् द्विधा क्रियमाणः एकतः परमाणुपुद्गलः, एकतः सप्तप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, अथवा एकतो द्विप्रदेशिकः स्कन्धः, एकतः षट्प्रदेशिकः स्कन्धो

भवति, अथवा एकतस्त्रिप्रदेशिकः स्कन्धः, एकतः पञ्चप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, अथवा द्वौ चतुष्प्रदेशिकौ स्कन्धौ भवतः। त्रिधा क्रियमाणः एकतो द्वौ परमाणुपुद्गलौ, एकतः षट्प्रदेशिकः स्कन्धो भवति, अथवा एकतः परमाणुपुद्गलः, एकतो द्विप्रदेशिकः स्कन्धः, एकतः पञ्चप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, अथवा एकतः परमाणुपुद्गलः, एकतश्चतुष्प्रदेशिकः स्कन्धः, एकतस्त्रिप्रदेशिकः स्कन्धः, एकतश्चतुष्प्रदेशिकः स्कन्धो भवति, अथवा एकतो द्वौ द्विप्रदेशिकौ स्कन्धौ, एकतश्चतुष्प्रदेशिकः स्कन्धो भवति, अथवा एकतो द्विप्रदेशिकः स्कन्धः, एकतो द्वौ त्रिप्रदेशिकौ स्कन्धौ भवतः। चतुर्धा क्रियमाणः एकतस्त्रयः परमाणुपुद्गलाः, एकतः पञ्चप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, अथवा एकतो द्वौ परमाणुपुद्गलौ, एकतो द्विप्रदेशिकः स्कन्धः, एकतश्चतुष्प्रदेशिकः स्कन्धो भवति, अथवा एकतो द्वौ परमाणुपुद्गलौ, एकतो त्रिप्रदेशिकौ स्कन्धौ भवतः, अथवा एकतः परमाणुपुद्गलः, एकतो द्वौ द्विप्रदेशिकौ स्कन्धौ, एकतस्त्रिप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, अथवा चत्वारो द्विप्रदेशिकाः स्कन्धाः भवन्ति। पञ्चधा क्रियमाणः एकतश्चत्वारः परमाणुपुद्गलाः, एकतश्चतुष्प्रदेशिकः स्कन्धो भवति, अथवा एकतस्त्रयः परमाणुपुद्गलाः, एकतो द्विप्रदेशिकः स्कन्धः, एकतस्त्रिप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, अथवा एकतो द्वौ परमाणुपुद्गलौ, एकतस्त्रयो द्विप्रदेशिकाः स्कन्धाः भवन्ति। षोडा क्रियमाणः एकतः पञ्च परमाणुपुद्गलाः, एकतस्त्रिप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, अथवा एकतश्चत्वारः परमाणुपुद्गलाः, एकतो द्वौ द्विप्रदेशिकौ स्कन्धौ भवतः। सप्तधा क्रियमाणः एकतः षट् परमाणुपुद्गलाः, एकतो द्विप्रदेशिकः स्कन्धो भवति। अष्टधा क्रियमाणः अष्टौ परमाणुपुद्गलाः, भवन्ति। नव भदन्त! परमाणुपुद्गलाः पृच्छा, गौतम! यावत् नवविधा क्रियन्ते, द्विधा क्रियमाणः एकतः परमाणुपुद्गलः, एकतः अष्टप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, एवम् एकैकम् सञ्चारयद्भिः यावत्—अथवा एकतश्चतुष्प्रदेशिकः स्कन्धः, एकत पञ्चप्रदेशिकः स्कन्धो भवति। त्रिधा क्रियमाणः एकतो द्वौ परमाणुपुद्गलौ, एकतः सप्तप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, अथवा एकतः परमाणुपुद्गलः, एकतो द्विप्रदेशिकः, एकतः षट्प्रदेशिकः स्कन्धो भवति, अथवा एकतः परमाणुपुद्गलः, एकतस्त्रिप्रदेशिकः स्कन्धः, एकतः पञ्चप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, अथवा एकतः परमाणुपुद्गलः, एकतो द्वौ चतुष्प्रदेशिकौ स्कन्धौ भवतः, अथवा एकतो द्विप्रदेशिकः स्कन्धः, एकतस्त्रिप्रदेशिकः स्कन्धः, एकतश्चतुष्प्रदेशिकः स्कन्धो भवति, अथवा त्रयस्त्रिप्रदेशिकाः स्कन्धाः भवन्ति। चतुर्धा क्रियमाणः, एकतस्त्रयः परमाणुपुद्गलाः, एकतः षट्प्रदेशिकः स्कन्धो भवति, अथवा एकतो द्वौ परमाणुपुद्गलौ, एकतो द्विप्रदेशिकः स्कन्धः, एकतः पञ्चप्रदे-

शिकः स्कन्धो भवति, अथवा एकतो द्वौ परमाणुपुद्गलौ, एकतः त्रिप्रदेशिकः स्कन्धः, एकतश्चतुष्प्रदेशिकः स्कन्धो भवति, अथवा एकतः परमाणुपुद्गलः, एकतो द्वौ द्विप्रदेशिकौ स्कन्धौ, एकतश्चतुष्प्रदेशिकः स्कन्धो भवति, अथवा एकतः परमाणुपुद्गलः, एकतो द्विप्रदेशिकः स्कन्धः, एकतो द्वौ त्रिप्रदेशिकौ स्कन्धौ भवतः, अथवा एकतस्त्रयो द्विप्रदेशिकाः स्कन्धा एकतस्त्रिप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, पञ्चधा क्रियमाणः एकतश्चत्वारः पराणुपुद्गलाः, एकतः पञ्चप्रदेशिकः स्कन्धो, भवति, अथवा एकतः त्रयः परमाणुपुद्गलाः, एकतो द्विप्रदेशिकः स्कन्धः, एकतश्चतुष्प्रदेशिकः स्कन्धो भवति, अथवा एकतस्त्रयः परमाणुपुद्गला, एकतो द्वौ त्रिप्रदेशिकौ स्कन्धौ भवतः अथवा एकतो द्वौ परमाणुपुद्गलौ, एकतो द्वौ द्विप्रदेशिकौ स्कन्धौ, एकतस्त्रिप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, अथवा एकतः परमाणु पुद्गलः, एकतश्चत्वारो द्विप्रदेशिकाः स्कन्धाः भवन्ति। षोढा क्रियमाण. एकतः पञ्च परमाणुपुद्गलाः, एकतश्चतुष्प्रदेशिकः स्कन्धो भवति, अथवा एकतश्चत्वारः परमाणुपुद्गलाः, एकतो द्विप्रदेशिकः स्कन्धः, एकतस्त्रिप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, अथवा एकतस्त्रयः परमाणुपुद्गलाः, एकतः त्रयो द्विप्रदेशिकाः स्कन्धाः भवन्ति। सप्तधा क्रियमाणः एकतः षट्परमाणु पुद्गलाः, एकतस्त्रिप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, अथवा एकतः पञ्च परमाणुपुद्गलाः, एकतो द्वौ द्विप्रदेशिकौ स्कन्धौ भवतः, अष्टधा क्रियमाण एकतः सप्त परमाणुपुद्गलाः, एकतो द्विप्रदेशिकः स्कन्धो भवति। नवधा क्रियमाणः नव परमाणु पुद्गलाः भवन्ति। दश भदन्त! परमाणु पुद्गलाः यावत् द्विधा क्रियमाणः एकतः परमाणु पुद्गलः, एकतो नवप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, अथवा एकतो द्विप्रदेशिकः स्कन्धः, एकतः अष्टप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, एवम् एकैकम् सञ्चारयितव्यमिति, यावत्–अथवा द्वौ पञ्चप्रदेशिकौ स्कन्धौ भवतः, त्रिधा क्रियमाणः एकतो द्वौ परमाणुपुद्गलौ, एकतः अष्ट प्रदेशिकः स्कन्धो भवति, अथवा एकतः परमाणुपुद्गलः एकतो द्विप्रदेशिकः स्कन्धः, एकतः सप्तप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, अथवा एकतः परमाणुपुद्गलः, एकतः त्रिप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, एकतः षट्प्रदेशिकः स्कन्धो भवति, अथवा एकतः परमाणु पुद्गलः, एकतश्च चतुष्प्रदेशिकः स्कन्धः, एकतः पञ्चप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, अथवा एकतो द्विप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, एकतो द्वौ चतुष्प्रदेशिकौ स्कन्धौ भवतः, अथवा एकतो द्वौ त्रिप्रदेशिकौ स्कन्धौ भवतः, एकतः चतुष्प्रदेशिकः स्कन्धो भवति। चतुर्धा क्रियमाणः एकतस्त्रयः परमाणुपुद्गलाः, एकतः सप्तप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, अथवा एकतो द्वौ परमाणुपुद्गलौ, एकतो द्विप्रदेशिकः स्कन्धः, एकतः षट्प्रदेशिकः स्कन्धो भवति, अथवा एकतो द्वौ परमाणुपुद्गलौ, एकस्त्रिप्रदेशिकः स्कन्धः, एकतः पञ्चप्रदेशिक स्कन्धो भवति, अथवा एकतो द्वौ परमाणुपुद्गलौ एकतो द्वौ चतुष्प्रदेशिकौ स्कन्धौ भवतः, अथवा एकतः परमाणुपुद्गलः, एकतो

द्विप्रदेशिकः स्कन्धः, एकतः त्रिप्रदेशिकः स्कन्धः, एकतश्चतुष्प्रदेशिकः स्कन्धो भवति, अथवा एकतः परमाणुपुद्गलः, एकतस्त्रयस्त्रिप्रदेशिकाः स्कन्धाः भवन्ति, अथवा एकतस्त्रयो द्विप्रदेशिकाः स्कन्धाः, एकतश्चतुष्प्रदेशिकः स्कन्धो भवति, अथवा एकतो द्वौ द्विप्रदेशिकौ स्कन्धौ, एकतो त्रिप्रदेशिकौ स्कन्धौ भवतः। पञ्चधा क्रियमाणः एकतश्चत्वारः परमाणुपुद्गलाः, एकतः षट्प्रदेशिकः स्कन्धो भवति, अथवा एकतस्त्रयः परमाणु पुद्गलाः, एकतो द्विप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, एकतः पञ्चप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, अथवा एकतश्चत्वारः परमाणुपुद्गलाः, एकतो द्विप्रदेशिकः स्कन्धः, एकतः चतुष्प्रदेशिकः स्कन्धो भवति, अथवा एकतश्चत्वारः परमाणुपुद्गलाः, एकतो द्वौ त्रिप्रदेशिकौ स्कन्धौ भवतः, अथवा एकतस्त्रयः परमाणुपुद्गलाः, एकतो द्वौ द्विप्रदेशिकौ स्कन्धौ भवतः, अथवा एकतस्त्रिप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, अथवा एकतो द्वौ परमाणुपुद्गलौ, एकतश्चत्वारो द्विप्रदेशिकाः स्कन्धाः भवन्ति। सप्तधा क्रियमाण एकतः षट्परमाणुपुद्गलाः, एकतश्चतुष्प्रदेशिकः स्कन्धो भवति, अथवा एकतः पञ्चपरमाणुपुद्गलाः, एकतो द्विप्रदेशिकः स्कन्धः, एकतस्त्रिप्रदेशिकस्कन्धो भवति, अथवा एकतश्चत्वारः परमाणुपुद्गलाः, एकतस्त्रयो द्विप्रदेशिकाः स्कन्धा भवन्ति, अष्टधा क्रियमाणः एकतः सप्तपरमाणु पुद्गलाः, एकतस्त्रिप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, अथवा एकतः षट्परमाणु पुद्गलाः, एकतो द्वौ द्विप्रदेशिकौ स्कन्धौ भवतः। नवधा क्रियमाणः एकतः अष्टौ परमाणुपुद्गलाः, एकतो द्विप्रदेशिकः स्कन्धो भवति। दशधा क्रियमाणः, दश परमाणुपुद्गलाः भवन्ति। संख्येयाः भदन्त! परमाणुपुद्गलाः एकतः संहन्यन्ते, एकतः संहत्य किं भवति? गौतम! संख्येयप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, स भिद्यमानो द्विधापि यावत् दशधापि, संख्येयधापि क्रियन्ते, द्विधा क्रियमाणः, एकतः परमाणुपुद्गलः, एकतः संख्येयप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, अथवा एकतो द्विप्रदेशिकः स्कन्धः, एकतः संख्येयप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, एवम्—अथवा एकतस्त्रिप्रदेशिकः स्कन्धः, एकतः संख्येयप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, एवम् अथवा एकतस्त्रिप्रदेशिकः स्कन्धः, एकतः संख्येयप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, एवं यावत्—अथवा एकतो दशप्रदेशिकः स्कन्धः, एकतः संख्येय-

प्रदेशिकः स्कन्धो भवति, अथवा द्वौ संख्येयप्रदेशिकौ स्कन्धौ भवतः। त्रिधा क्रियमाणः एकतो द्वौ परमाणु पुद्गलौ, एकतः संख्येयप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, अथवा एकतः परमाणुपुद्गलः, एकतो द्विप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, एकतः संख्येयप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, अथवा एकतः परमाणु पुद्गलः, एकतस्त्रिप्रदेशिकः स्कन्धः एकतः संख्येयप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, एवम् यावत्—अथवा एकतः परमाणु पुद्गलः, एकतो दशप्रदेशिकः स्कन्धः, एकतः संख्येयप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, अथवा एकतः परमाणु पुद्गलः, एकतो द्वौ संख्येयप्रदेशिकौ स्कन्धौ भवतः, अथवा एकतो द्विप्रदेशिकः स्कन्धः, एकतो द्वौ संख्येयप्रदेशिकौ स्कन्धौ भवतः, एवं यावत्—अथवा एकतो दशप्रदेशिकः स्कन्धः, एकतो द्वौ संख्येयप्रदेशिकौ स्कन्धौ भवतः, अथवा त्रयः संख्येयप्रदेशिकाः स्कन्धा भवन्ति। चतुर्धा क्रियमाणः एकतः त्रयः परमाणुपुद्गलाः, एकतः संख्येयप्रदेशिकः स्कन्धो भवति अथवा एकतो द्वौ परमाणुपुद्गलौ एकतो द्विप्रदेशिकः स्कन्धः, एकतः संख्येयप्रदेशिकः स्कन्धो भवति अथवा एकतो द्वौ परमाणुपुद्गलौ, एकतस्त्रिप्रदेशिकः स्कन्धः, एकतः संख्येयप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, एवं यावत्- अथवा एकतो द्वौ परमाणुपुद्गलौ, एकतो दशप्रदेशिकः स्कन्धः, एकतः संख्येयप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, अथवा एकतो द्वौ परमाणुपुद्गलौ, एकतो द्वौ संख्येयप्रदेशिकौ स्कन्धौ भवतः, अथवा एकतः परमाणुपुद्गलः, एकतो द्विप्रदेशिकः स्कन्धः एकतो द्वौ संख्येयप्रदेशिकौ स्कन्धौ भवतः, यावत्—अथवा एकतः परमाणुपुद्गलः, एकतो दशप्रदेशिकः स्कन्धः, एकतो द्वौ संख्येयप्रदेशिकौ स्कन्धौ भवतः, अथवा एकतः परमाणु पुद्गलः, एकतः त्रयः संख्येयप्रदेशिकाः स्कन्धाः भवन्ति, अथवा एकतो द्विप्रदेशिकः स्कन्धः, एकतस्त्रयः संख्येयप्रदेशिकाः स्कन्धा भवन्ति, यावत्—अथवा एकतो दशप्रदेशिकः स्कन्धः, एकतस्त्रयः संख्येयप्रदेशिकाः स्कन्धाः भवन्ति, अथवा चत्वारः संख्येयप्रदेशिकाः स्कन्धाः भवन्ति, एवम्—एतेन क्रमेण पञ्चक संयोगोऽपि भणितव्यः, यावत्—नवक संयोगः। दशधा क्रियमाणः एकतो नव परमाणुपुद्गलाः, एकतः संख्येयप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, अथवा एकतः अष्ट-परमाणुपुद्गलाः, एकतो द्विप्रदेशिकः स्कन्धः, एकतः संख्येयप्रदेशिकः स्कन्धो भवति। एतेन क्रमेण एकैकः पूरयितव्यः, यावत्—अथवा एकतो दशप्रदेशिकः स्कन्धः, एकतो नव संख्येयप्रदेशिकाः स्कन्धा भवन्ति, अथवा दश संख्येयप्रदेशिकाः स्कन्धाः भवन्ति। संख्येयधा क्रियमाणः संख्येयाः परमाणुपुद्गलाः भवन्ति। असंख्येयाः भदन्त! परमाणुपुद्गलाः एकतः संहन्यन्ते, एकतः संहत्य किं भवति? गौतम! असंख्येयप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, स भिद्यमानो द्विधापि यावत्

दशधापि, संख्येयधापि क्रियते, द्विधा क्रियमाणः एकतः परमाणुपुद्गलः, एकतः असंख्येयप्रदेशिकः एक स्कन्धो भवति अथवा एकतः संख्येयप्रदेशिकः स्कन्धः, एकतः असंख्येयप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, अथवा द्वौ असंख्येयप्रदेशिकौ स्कन्धौ भवतः। त्रिधा क्रियमाणः एकतो द्वौ परमाणुपुद्गलौ, एकतः असंख्येयप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, अथवा एकतः परमाणुपुद्गलः, एकतो द्विप्रदेशिकः स्कन्धः, एकतः असंख्येयप्रदेशिकः स्कन्धो भवति यावत्-अथवा एकतः परमाणुपुद्गलः, एकतो दशप्रदेशिकः स्कन्धः, एकतः असंख्येयप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, अथवा एकतः परमाणुपुद्गलः, एकतः संख्येयप्रदेशिकः स्कन्धः एकतः असंख्येयप्रदेशिकः स्कन्धो भवति अथवा एकतः परमाणुपुद्गलः, एकतो द्वौ असंख्येयप्रदेशिकौ स्कन्धौ भवतः, अथवा एकतः द्विप्रदेशिकः स्कन्धः, एकतो द्वौ असंख्येयप्रदेशिकौ स्कन्धौ भवतः, एवं यावत्-अथवा एकतः संख्येयप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, एकतो द्वौ असंख्येयप्रदेशिकौ स्कन्धौ भवतः, अथवा त्रयः असंख्येयप्रदेशिकाः स्कन्धा भवन्ति। चतुर्धा क्रियमाणः एकतस्त्रयः परमाणुपुद्गलाः, एकतः असंख्येयप्रदेशिकः स्कन्धो भवति। एवं चतुष्कसंयोगो यावत् दशकसंयोग । एते यथैव संख्येयप्रदेशिकस्य, नवरम् असंख्येयकम् एकम् अधिकं भणितव्यम्, यावत्-अथवा दशअसंख्येयप्रदेशिकाः स्कन्धाः भवन्ति। संख्येयधा क्रियमाणः एकतः संख्येयाः परमाणुपुद्गलाः एकतः असंख्येयप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, अथवा एकतः संख्येयाः द्विप्रदेशिकाः एकतः असंख्येयप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, एवं यावत् अथवा एकतः संख्येयाः दशप्रदेशिकाः स्कन्धाः, एकतः असंख्येयप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, अथवा एकतः संख्येयाः संख्येयप्रदेशिकाः स्कन्धाः, एकतः असंख्येयप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, अथवा संख्येयाः असंख्येयप्रदेशिकाः स्कन्धाः भवन्ति। असंख्येयधा क्रियमाणः असंख्येयाः परमाणु पुद्गला भवन्ति। अनन्ताः खलु भदन्त! परमाणु पुद्गलाः यावत् किं भवति? गौतम! अनन्तप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, स भिद्यमानो द्विधापि, त्रिधापि, यावत् दशधापि, संख्येयधा, असंख्येयधा, अनन्तधापि क्रियते। द्विधा क्रियमाणः एकतः परमाणुपुद्गलः, एकतः अनन्तप्रदेशिकः स्कन्धो यावत्-अथवा द्वौ अनन्तप्रदेशिकौ स्कन्धौ भवतः त्रिधा क्रियमाणः एकतो द्वौ परमाणु पुद्गलौ, एकतः अनन्तप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, अथवा एकतः परमाणुपुद्गलः, एकतो द्विप्रदेशिकः स्कन्धः, एकतः अनन्तप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, यावत्-अथवा एकतः परमाणुपुद्गलः, एकतः असंख्येयप्रदेशिकः स्कन्धः, एकतः अनन्तप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, अथवा एकतः परमाणुपुद्गलः, एकतो द्वौ अनन्तप्रदेशिकौ स्कन्धौ भवतः, अथवा एकतो द्विप्रदेशिकः स्कन्धो भवति एकतो द्वौ अनन्तप्रदेशिकौ

स्कन्धौ भवतः, एवं यावत्-अथवा एकतो दशप्रदेशिकः स्कन्धः, एकतो द्वौ अनन्तप्रदेशिकौ स्कन्धौ भवतः, अथवा एकतः संख्येयप्रदेशिकः स्कन्धः, एकतो द्वौ अनन्तप्रदेशिकौ स्कन्धौ भवतः, अथवा एकतः असंख्येयप्रदेशिकः स्कन्धः, एकतो द्वौ अनन्तप्रदेशिकौ स्कन्धौ भवतः, अथवा त्रयः अनन्त प्रदेशिकाः स्कन्धा भवन्ति। चतुर्धा क्रियमाणः एकतः त्रयः परमाणुपुद्गलाः, एकतः अनन्तप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, एवं चतुष्कसंयोगो यावत् असंख्येयकसंयोगः, एते सर्वे यथैव असंख्येयानां भणिताः तथैव अनन्तानामपि भणितव्याः, नवरम् एकम् अनन्तकम् अभ्यधिकं भणितव्यम्, यावत् अथवा एकतः संख्येयाः संख्येयप्रदेशिकाः स्कन्धाः, एकतः अनन्तप्रदेशिकाः स्कन्धाः भवन्ति, अथवा एकतः संख्येयाः असंख्येयप्रदेशिकाः स्कन्धाः, एकतः अनन्तप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, अथवा संख्येयाः अनन्तप्रदेशिकाः स्कन्धाः भवन्ति। असंख्येयधा क्रियमाणः एकतः असंख्येयाः परमाणु पुद्गलाः, एकतः अनन्तप्रदेशिकः स्कन्धो भवति. अथवा एकतः असंख्येयाः द्विप्रदेशिकाः स्कन्धाः, एकतः अनन्तप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, यावत् अथवा एकतः असंख्येयाः संख्येयप्रदेशिकाः स्कन्धाः, एकतः अनन्तप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, अथवा एकतः असंख्येयाः असंख्येयप्रदेशिकाः स्कन्धाः, एकतः अनन्तप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, अथवा असंख्येयाः अनन्तप्रदेशिकाः स्कन्धाः भवन्ति। अनन्तधा क्रियमाणः अनन्ताः परमाणुपुद्गला भवन्ति ॥सू० १॥

टीका—तृतीयोद्देशके रत्नप्रभादि पृथिव्यः प्ररूपिताः तासां च पुद्गलात्मकतया पुद्गलान् प्ररूपयितुं चतुर्थोद्देशकमारभते 'रायगिहे' इत्यादि। 'रायगिहे जाव एवं वयासी'-राजगृहे यावत् नगरे स्वामी समवसृतः, धर्मकथां श्रोतुं पर्षत्

पुद्गलवक्तव्यता—

'रायगिहे जाव एवं वयासी' इत्यादि।

टीकार्थ-तृतीय उद्देशक में रत्नप्रभा आदि पृथिवियों की प्ररूपणा की जा चुकी है ये पृथिवियां पुद्गलात्मक हैं, अतः इसी संबंध को लेकर पुद्गलों की प्ररूपणा करने के लिये सूत्रकार ने इस चतुर्थ उद्देशक को प्रारंभ किया है। 'रायगिहे जाव एवं वयासी' राजगृह यावत्-नगर

—પુદ્ગલવક્તવ્યતા—

"रायगिहे जाव एवं वयासी" इत्यादि—

ટીકાર્થ-ત્રીજા ઉદ્દેશામાં રત્નપ્રભા આદિ પૃથ્વીઓની પ્રરૂપણા કરવામાં આવી છે. તે પૃથ્વીઓ પુદ્ગલાત્મક હોય છે. પૂર્વસૂત્ર સાથે આ પ્રકારના સંબંધને લીધે હવે સૂત્રકાર પુદ્ગલોની પ્રરૂપણા કરે છે-

निर्गच्छति, धर्मकथां श्रुत्वा प्रतिगता पर्षत्, ततो विनयेन शुश्रूषमाणो गौतमः प्राञ्जलिपुटः पर्युपासीनः, एवं-वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत्-'दो भंते ! परमाणुपोग्गला एगयओ साहन्नंति, एगयओ साहण्णित्ता किं भवइ ?' हे भदन्त ! द्वौ परमाणुपुद्गलौ, एकतः-एकतया संहन्येते-संहतौ भवतः संघीभूतौ भवतः इत्यर्थः, एकत -एकतया संहत्य-संहतौ भूत्वा, किं भवति ? किं स्वरूपं वस्तु भवति ? इति प्रश्नः, भगवानाह-'गोयमा ! दुप्पएसिए खंधे भवइ' हे गौतम ! द्वौ परमाणुपुद्गलौ एकत्वेन संहत्य-मिलित्वा, द्विप्रदेशिकः-द्वौ प्रदेशौ अवयवौ यस्य स तथाविधः स्कन्धो भवति, 'से भिज्जमाणे दुहा कज्जइ, एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ परमाणुपोग्गले भवइ' स द्विप्रदेशिकः स्कन्धो, भिद्यमानो द्विधा-द्विभागः

में महावीर स्वामी पधारे, धर्मकथा सुनने के लिये परिषद् निकली और धर्मकथा सुनकर वह अपने २ स्थान पर गई। इतने में प्रश्न पूछने की अभिलाषा वाले गौतम ने बड़े विनय से दोनों हाथ जोड़कर प्रभु से इस प्रकार पूछा 'दो भंते ! परमाणुपोग्गला एगयओ साहन्नंति, एगयओ साहण्णित्ता किं भवइ' भदन्त ! दो पुद्गल परमाणु जब आपस में सङ्गीभूत होते हैं, तब क्या होना है-अर्थात् आपस में सङ्गीभूत (मिले हुए) दो पुद्गल परमाणु किस चीज उत्पन्न करते हैं ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-'गोयमा' हे गौतम ! 'दुप्पएसिए खंधे भवइ' द्विप्रदेशी-दो हैं प्रदेश-अवयव जिसके ऐसा एक स्कंध उनकी संघीभूत अवस्था में उत्पन्न होता है। 'से भिज्जमाणे दुहा कज्जइ, एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ परमाणुपोग्गले भवइ' जब यह द्विप्रदेशी स्कन्ध दो भाग रूप

"रायगिहे जाव एवं वयासी" રાજગૃહ નગરમાં મહાવીર પ્રભુ પધાર્યા તેમને વંદણાનમસ્કાર કરવાને માટે જનસમૂહ નીકળી પડયો. વંદણાનમસ્કાર કરીને તથા ધર્મકથા સાંભળીને પરિષદ્ વિસર્જિત થઇ ત્યાર બાદ ધર્મતત્ત્વને અવધ્ કરવાની અભિલાષાવાળા ગૌતમ સ્વામીએ વિનયપૂર્વક બન્ને હાથ જોડીને શ્રમણ ભગવાન મહાવીરને આ પ્રમાણે પ્રશ્ન પૂછયો-"दो भंते ! परमाणुपोग्गला एगयओ साहन्नंति एगयओ साहण्णित्ता किं भवइ ?" હે ભગવન્ ! જ્યારે બે પુદ્ગલપરમાણુઓનો એક બીજાની સાથે સંયોગ થાય છે ત્યારે શું થાય છે-એટલે કે તેમના સંયોગથી કઇ ચીજ ઉત્પન્ન થાય છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-'गोयमा !" હે ગૌતમ ! "दुप्पएसिए खंधे भवइ" બે પુદ્ગલ પરમાણુઓના પરસ્પરના સંયોગને લીધે દ્વિપ્રદેશી (બે પ્રદેશવાળો અથવા બે અવયવવાળો) એક સ્કંધ ઉત્પન્ન થઇ જાય છે "से भिज्जमाणे दुहा कज्जइ, एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ परमाणुपोग्गले भवइ"

क्रियते एकतः-एकत्वेन एकभागः परमाणुपुद्गलो भवति, अथ च एकतः-एकतया अपरो भागः परमाणुपुद्गलो भवति। गौतमः पृच्छति-तिन्नि भंते ! परमाणुपोग्गला एगयओ साहन्नंति एगयओ साहण्णित्ता किं भवइ?' हे भदन्त ! त्रयः परमाणुपुद्गलाः, एकतः-एकतया संहन्यन्ते-संहता भवन्ति, एकत्री भवन्ति, इत्यर्थः, एकतः-एकतया संहत्य-संघीभूय मिलित्वेत्यर्थः, किं स्वरूपं वस्तु भवति ! भगवानाह-'गोयमा ! तिप्पएसिए खंधे भवइ' हे गौतम ! त्रयः परमाणुपुद्गलाः संहत्य त्रिप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, 'से भिज्जमाणे दुहावि तिहावि कज्जइ' स त्रिप्रदेशिकः स्कन्धः, विभज्यमानः, द्विधापि, त्रिधापि क्रियते, तत्र 'दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुप्पएसिए खंधे भवइ' त्रिप्रदेशिकः स्कन्धो

में किया जाता है-तब एक भाग एक पुद्गलपरमाणु का होता है और दूसरा भाग भी एक पुद्गल परमाणु रूप होता है।

अब गौतम प्रभुसे ऐसा पूछते हैं-' तिन्नि भंते ! परमाणुपोग्गला एगयओ साहन्नंति, एगयओ साहण्णित्ता किं भवइ ' हे भदन्त ! तीन पुद्गलपरमाणु एकत्रित जब होते हैं-तब एकरूप में मिले हुए उन पुद्गल परमाणुओं से क्या वस्तु उत्पन्न होती है ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-' गोयमा ! तिप्पएसिए खंधे भवइ ' उन एकीभूत हुए तीन पुद्गल परमाणुओं से त्रिप्रदेशिक स्कन्ध उत्पन्न होता है। ' से भिज्जमाणे दुहावि तिहावि कज्जइ ' जब इस त्रिप्रदेशी स्कन्धका विभाग किया जाता है-तब यह दो रूप से भी विभक्त होता है और तीनरूप से भी विभक्त होता है 'दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुप्पएसिए

જ્યારે તે દ્વિપ્રદેશી સ્કંધના બે ભાગ પાડવામાં આવે છે ત્યારે એક ભાગ એક પરમાણુ રૂપ હોય છે અને બીજો ભાગ પણ એક પરમાણુ રૂપ જ હોય છે.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-" तिन्नि भंते ! परमाणुपोग्गला एगयओ साहन्नंति, एगयओ साहण्णित्ता किं भवइ ? " હે ભગવન્ ! જ્યારે ત્રણ પુદ્ગલપરમાણુઓ એક બીજા સાથે એકત્રિત થઈ જાય છે, ત્યારે તે ત્રણ પુદ્ગલપરમાણુઓના સંયોગથી કઈ વસ્તુ ઉત્પન્ન થાય છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-" गोयमा ! " હે ગૌતમ ! " तिप्पएसिए खंधे भवइ " એકત્ર થયેલા તે ત્રણ પુદ્ગલપરમાણુઓ વડે એક ત્રિપ્રદેશિક સ્કંધ ઉત્પન્ન થાય છે " से भिज्जमाणे दुहावि तिहावि कज्जइ " જ્યારે તે ત્રિપ્રદેશિક સ્કંધના વિભાગ પાડવામાં આવે છે, ત્યારે બે વિભાગ પણ પડે છે અને ત્રણ વિભાગ પણ પડે છે. " दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ

द्विधा क्रियमाणः,एकतः परमाणुपुद्गलो भवति, एकतः-अपरभागे द्विप्रदेशिकः स्कन्धो भवति. 'तिहा कज्जमाणे तिण्णि परमाणुपोग्गला भवंति' त्रिप्रदेशिकः स्कन्धः त्रिधा क्रियमाणः त्रयः परमाणुपुद्गलाः भवन्ति, गौतमः पृच्छति-'चत्तारि भंते! परमाणुपोग्गला एगयओ साहन्नंति जाव पुच्छा' हे भदन्त! चत्वारः परमाणुपुद्गलाः एकतः संहन्यन्ते-संहता भवन्ति. संघी भवन्तीत्यर्थः, यावत्-संहत्य-संघीभूय, किं स्वरूपं वस्तु भवति? इति पृच्छा, भगवानाह-गोयमा! चउप्पएसिए खंधे भवइ' हे गौतम! चत्वारः परमाणुपुद्गलाः संहत्य-चतुष्प्रदेशिकः स्कन्धो

खंधे भवइ' જ્યારે એના બે વિભાગ થાય છે-ત્યારે એક વિભાગ એક પરમાણુ પુદ્ગલરૂપ હોતા હૈ और દૂસરા વિભાગ દ્વિપ્રદેશિક સ્કન્ધરૂપ હોતા હૈ। 'तिहा कज्जमाणे तिण्णि परमाणु पोग्गला भवंति' જ્યારે યહ ત્રિપ્રદેશિક સ્કંધ તીન વિભાગોં મેં વિભક્ત કિયા જાતા હૈ-તબ તીન પુદ્ગલ પરમાણુરૂપ અર્થાત્ એક પુદ્ગલ પરમાણુરૂપ તીન વિભાગ ઇસકે હો જાતે હૈં।

અબ ગૌતમ પ્રભુ સે ઐસા પૂછતે હૈં-' चत्तारि भंते! परमाणुपोग्गला एगयओ साहन्नंति, जाव पुच्छा' હે ભદન્ત! જબ ચાર પુદ્ગલ પરમાણુ આપસ મેં એકત્રિત હોતે હૈં-એકરૂપ સે મિલ જાતે હૈં તબ ઉનસે કયા વસ્તુ ઉત્પન્ન હોતી હૈ-અર્થાત્-ચાર પુદ્ગલ પરમાણુઓં કી એકતા મેં જો સ્કંધ ઉત્પન્ન હોતા હૈ-ઉસકા કયા નામ હૈ? ઇસકે ઉત્તર મેં પ્રભુ કહતે હૈં-' गोयमा! चउप्पएसिए खंधे भवइ' હે ગૌતમ! ચાર પુદ્ગગ પરમાણુ આપસ મેં જબ મિલતે હૈં-તબ ઉનસે એક ચાર પ્રદેશ વાલા સ્કંધ ઉત્પન્ન

दुप्पएसिए खंधे भवइ" જ્યારે તેના બે વિભાગ થાય છે, ત્યારે એક વિભાગ એક પરમાણુપુદ્ગલ રૂપ અને બીજો વિભાગ દ્વિપ્રદેશિક સ્કંધરૂપ બને છે. "तिहा कज्जमाणे तिण्णि परमाणुपोग्गला भवंति" જ્યારે તે ત્રિપ્રદેશિક સ્કંધને ત્રણ વિભાગોમાં વિભક્ત કરવામાં આવે છે, ત્યારે એક એક પુદ્ગલ-પરમાણુ રૂપ ત્રણ વિભાગોમાં તે વિભક્ત થઈ જાય છે.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-" चत्तारि भंते! परमाणुपोग्गला एगयओ साहण्णंति, जाव पुच्छा " હે ભગવન્! જ્યારે પરમાણુ પુદ્ગલો એક બીજા સાથે એકત્રિત થાય છે, ત્યારે તેમના સંયોગથી શું ઉત્પન્ન થાય છે? એટલે ચાર પુદ્ગલપરમાણુઓ એકત્ર થવાથી જે સ્કંધ ઉત્પન્ન થાય છે તેનું નામ શું છે?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-" गोयमा! चउप्पएसिए खंधे भवइ " હે ગૌતમ! જ્યારે ચાર પરમાણુ પુદ્ગલો અરસપરસની સાથે સંયોગ પામે છે, ત્યારે તેમના સંયોગથી એક ચાર પ્રદેશિક સ્કંધ ઉત્પન્ન થાય છે.

भवति, से भिज्जमाणे दुहावि, तिहावि, चउहावि कज्जइ' स चतुष्प्रदेशिकः स्कन्धो भिद्यमानः पृथग् भवन् द्विधा पि, त्रिधा पि. चतुर्धा पि क्रियते-भवति, तत्र 'दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ तिप्पएसिए खंधे भवइ' द्विधा क्रियमाणः, एकतः-एकभागे परमाणुपुद्गलो भवति, एकतः-अपरभागे त्रिप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, 'अहवा दो दुप्पएसिया खंधा भवंति' अथवा चतुष्प्रदेशिकः स्कन्धो द्विधाक्रियमाणः द्वौ द्विप्रदेशिकौ स्कन्धौ भवतः, 'तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दुप्पएसिए खंधे भवइ' चतुष्प्रदेशिकः स्कन्धः त्रिधा

होता है। अर्थात्-चार पुद्गल परमाणुओं के मिलाप से जो स्कन्ध उत्पन्न होता है उसका नाम चतुष्प्रदेशिक स्कन्ध है-'से भिज्जमाणे दुहा वि तिहा वि चउहावि कज्जइ' यह चतुष्प्रदेशिक स्कंध जब अपनी इस स्कन्ध अवस्था में पृथक् होने लगता है-तब इसके दो टुकड़े भी हो सकते हैं, तीन टुकड़े भी हो सकते हैं और चार टुकड़े भी हो सकते हैं-'दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ तिप्पएसिए खंधे भवइ' जब इसके दो टुकड़े होते हैं तो वे इस प्रकार से होते हैं-एक भाग में एक परमाणुपुद्गल होता है और दूसरे भाग में त्रिप्रदेशिक स्कन्ध होता है। 'अहवा-दो दुप्पएसिया, खंधा भवंति' अथवा दो विभाग दो दो प्रदेशों के भी होते हैं। अर्थात्-एक विभाग द्विप्रदेशी स्कन्धका और दूसरा विभाग भी द्विप्रदेशी स्कन्ध का हो जाता है। 'तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दुप्पएसिए

એટલે કે ચાર પુદ્ગલપરમાણુઓના સંયોગથી જે સ્કંધ બને છે તેનું નામ ચતુષ્પ્રદેશિક સ્કંધ થાય છે. "से भिज्जमाणे दुहा वि, तिहावि, चउहा वि कज्जइ" જ્યારે આ ચતુષ્પ્રદેશિક સ્કંધ પોતાની આ અવસ્થાનો ત્યાગ કરીને વિભક્ત થઇ જાય છે, ત્યારે તેના બે વિભાગ પણ પડી શકે છે, ત્રણ વિભાગ પણ પડી શકે છે અને ચાર વિભાગ પણ પડી શકે છે "दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ तिप्पएसिए खंधे भवइ" જ્યારે તેના બે વિભાગ થાય છે, ત્યારે તેના એક ભાગમાં એક પરમાણુપુદ્ગલ હોય છે અને બીજા ભાગમાં એક ત્રિપ્રદેશિક સ્કંધ હોય છે. "अहवा-दोपएसिया खंधा भवंति" અથવા દ્વિપ્રદેશિક સ્કંધરૂપ બે વિભાગ પણ પડી શકે છે. એટલે કે એક વિભાગ દ્વિપ્રદેશિક સ્કંધ રૂપ અને બીજો વિભાગ પણ દ્વિપ્રદેશિક સ્કંધરૂપ જ હોય છે.

"तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दुप्पएसिए खंधे भवइ" જ્યારે ચતુષ્પ્રદેશિક સ્કંધને ત્રણ વિભાગોમાં વિભક્ત કરવામાં આવે

क्रियमाणः, एकतः-एकभागे द्वौ परमाणुपुद्गलौ भवतः, एकतः अपरभागे द्विप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, 'चउहा कज्जमाणे चत्तारि परमाणुपोग्गला भवंति' चतुष्प्रदेशिकः स्कन्धश्चतुर्धा क्रियमाणः चत्वारः परमाणुपुद्गलाः भवन्ति। गौतमः पृच्छति-'पंच भंते! परमाणुपोग्गला पुच्छा' हे भदन्त! पञ्च परमाणुपुद्गलाः एकत.-एकत्वेन संहन्यन्ते, एकतः संहत्य किं स्वरूपं वस्तु भवति? इति पृच्छा-भगवानाह-'गोयमा! पंच पएसिए खंधे भवइ' हे गौतम! पञ्च परमाणुपुद्गलाः संहत्य पञ्चप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, 'से भिज्जमाणे दुहावि, तिहावि, चउहावि, पंचहावि कज्जइ' स पञ्चप्रदेशिकः स्कन्धो, भिद्यमानो द्विधापि, त्रिधापि, चतुर्धापि,

खंधे भवइ' जब चतुष्प्रदेशिक स्कन्ध को तीन विभाग में विभक्त किया जाता है-तब एक भाग में दो परमाणुपुद्गल होते हैं-अर्थात्-१-१ परमाणुपुद्गल रूप दो भाग होते हैं, और तीसरा भाग द्विप्रदेशिक स्कन्धरूप होता है। 'चउहाकज्जमाणे चत्तारि परमाणुपोग्गला भवंति' जब चतुष्प्रदेशिक स्कन्ध चार विभागों में विभक्त किया जाता है-तो इसके चार परमाणुपुद्गलरूप चार विभाग होते है।

अब गौतम प्रभु से ऐसा पूछते हैं-'पंच भंते! परमाणुपोग्गला पुच्छा' हे भदन्त! परमाणुपुद्गल जब एक रूप से होकर आपस में मिलते है-तब उनके मेल से क्या वस्तु उत्पन्न होती हैं? इस प्रश्न के उत्तर में प्रभु कहते हैं-'गोयमा! पंचपएसिए खंधे भवइ' हे गौतम! जब पांच परमाणु आपस में मिलते हैं-तब इनके मेल से पञ्चप्रदेशिक स्कन्ध होता है। 'से भिज्जमाणे दुहा वि तिहा वि, चउहा वि, पंचहा

છે, ત્યારે એક એક પરમાણુ પુદ્ગલવાળા બે ભાગો અને દ્વિપ્રદેશિક સ્કંધ ૩૫ ત્રીજો ભાગ થાય છે. "चउहा कज्जमाणे चत्तारि परमाणुपोग्गला भवंति" ચતુષ્પ્રદેશિક સ્કંધને જ્યારે ચાર વિભાગોમાં વિભક્ત કરવામાં આવે છે, ત્યારે એક એક પરમાણુ પુદ્ગલરૂપ ચાર ભાગો થઈ જાય છે.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-" पंच भंते! परमाणुपोग्गला पुच्छा " હે ભગવાન્! જ્યારે પાંચ પરમાણુ પુદ્ગલો એકત્રિત થઈ જાય છે ત્યારે તેમના સંયોગથી શું બને છે?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-" गोयमा! पंचपएसिए खंधे भवइ " હે ગૌતમ! જ્યારે પાંચ પરમાણુઓનો પરસ્પરની સાથે સંયોગ થાય છે, ત્યારે તેમના સંયોગને લીધે પંચ પ્રદેશિક સ્કંધ ઉત્પન્ન થાય છે. " से भिज्जमाणे दुहा वि, तिहा वि, चउहा वि, पंचहा वि कज्जइ " જ્યારે આ પંચપ્રદેશિક સ્કંધના

पञ्चधापि क्रियते, तत्र 'दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ' पञ्च प्रदेशिकः स्कन्धो द्विधा क्रियमाणः, एकतः-एकभागे परमाणुपुद्गलो भवति, एकतः-अपरभागे चतुष्प्रदेशिकः स्कन्धो भवति, 'अहवा एगयओ दुप्पएसिए खंधे भवइ, एगयओ तिप्पएसिए खंधे भवइ' अथवा एकतः-एकभागे द्विप्रदेशिकः स्कंधो भवति, एकतः-अपरभागे त्रिप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, 'तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ तिप्पएसिए खंधे भवइ' अथवा एकतः-एकभागे द्विप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, एकतः-अपरभागे त्रिप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, 'तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ तिप्पएसिए खंधे भवइ' त्रिधा क्रियमाणः एकतःएकभागे द्वौ परमाणुपुद्गलौ भवतः, एकतः-अपरभागे त्रिप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, 'अहवा

वि कज्जइ' जब इस पंचप्रदेशिक खंध के विभाग किये जाते हैं तो वे विभाग दो भी हो सकते हैं, तीन भी हो सकते हैं, चार भी हो सकते हैं और पांच भी हो सकते हैं। 'दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ' जब पंचप्रदेशिक स्कन्ध दो विभागों में विभक्त किया जाता है-तब एक विभाग परमाणुपुद्गल रूप होता है, और दूसरा विभाग चतुष्प्रदेशिक स्कन्धरूप होता है। 'अहवा-एगयओ दुप्पएसिए खंधे भवइ, एगयओ तिप्पएसिए खंधे भवइ' अथवा-एक भाग में द्विप्रदेशिक स्कंध होता है और द्वितीय भाग में त्रिप्रदेशिक स्कंध होता है। 'तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ तिप्पएसिए खंधे भवइ' जब इस पंचप्रदेशिक स्कंध को तीन विभागों में विभक्त किया जाता है-तब दो विभाग एक २ परमाणुपुद्गलरूप होते हैं और तीसरा विभाग त्रिप्रदेशिक एक स्कन्धरूप हो

વિભાગ કરવામા આવે છે ત્યારે તેના બે વિભાગ પણ થઈ શકે છે, ત્રણ વિભાગ પણ થઇ શકે છે. "दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ" જ્યારે પંચપ્રદેશિક સ્કંધને બે વિભાગમાં વિભક્ત કરવામાં આવે છે ત્યારે એક વિભાગ એક પરમાણુ પુદ્ગલરૂપ અને બીજો વિભાગ ચતુષ્પ્રદેશિક સ્કંધરૂપ બને છે "अहवा-एगयओ दुप्पएसिए खंधे भवइ, एगयओ तिप्पएसिए खंधे भवइ" અથવા-દ્વિપ્રદેશિક સ્કંધરૂપ એક ભાગ અને ત્રિપ્રદેશિક સ્કંધરૂપ બીજો ભાગ નિષ્પન્ન થાય છે. "तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ तिप्पएसिए खंधे भवइ' જ્યારે આ પંચ પ્રદેશિક સ્કંધને ત્રણ વિભાગોમાં વિભક્ત કરવામાં આવે છે, ત્યારે તેના બે વિભાગો એક એક પરમાણુ પુદ્ગલ રૂપ હોય છે અને ત્રીજો વિભાગ ત્રિપ્રદે-

एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ दो दुप्पएसिया खंधा भवंति' अथवा एकतः-एकभागे, परमाणुपुद्गलो भवति, अथ च एकतः-अपरभागे द्वौ द्विप्रदेशिकौ स्कन्धौ भवतः 'अहवा कज्जमाणे एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला, एगयओ दुप्पएसिए खंधे भवइ' पञ्चप्रदेशिकः स्कन्धः चतुर्धा क्रियमाणः एकतः-एकभागे त्रयः परमाणुपुद्गलाः भवन्ति, एकतः-अपरभागे द्विप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, 'पंचहा कज्जमाणे पंच परमाणुपोग्गला भवंति' पञ्चप्रदेशिकः स्कन्धः पञ्चधा क्रियमाणः पञ्च परमाणुपुद्गलाः भवन्ति। गौतमः पृच्छति-'छव्भंते ! परमाणुपोग्गला पुच्छा' हे भदन्त! षट्परमाणुपुद्गलाः एकतः संहत-

---

जाता है। 'अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दो दुप्पएसिया खंधा भवंति' अथवा इस प्रकार से भी इसे तीन विभागों में विभक्त किया जा सकता है-एक विभाग में एक परमाणुपुद्गल रहता है, और दूसरे एवं तीसरे विभाग में द्विप्रदेशिक स्कंध रहते हैं। 'चउहा कज्जमाणे एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला, एगयओ दुप्पएसिए खंधे भवइ' जब इस को चार विभाग में विभक्त किया जाता है-तब इस प्रकार से उसके चार विभाग हो सकते हैं एक विभाग में स्वतंत्र रूप से तीन परमाणुओं के तीन विभाग होते हैं, और दूसरे विभाग में द्विप्रदेशिक स्कन्धरूप एक विभाग रहता है। 'पंचहा कज्जमाणे पंच परमाणुपोग्गला भवंति' यह पंचप्रदेशिक स्कन्ध जब पांच प्रकार से विभक्त किया जाता है-तब भिन्न २ रूप में वर्तमान पांच परमाणु १-१ एक २ परमाणु ही इसके पांच विभाग हो जाते हैं।

શિક એક સ્કંધ રૂપ હોય છે. "अहवा-एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दो दुप्पएसिया खंधा भवंति" અથવા-આ પ્રમાણે પણ તેના ત્રણ વિભાગ પડે છે-એક વિભાગમાં એક પરમાણુ પુદ્ગલ હોય છે. અને બીજો અને ત્રીજો વિભાગ દ્વિપ્રદેશિક બે સ્કંધો રૂપ હોય છે. "चउहा कज्जमाणे एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला, एगयओ दुप्पएसिए खंधे भवइ" જ્યારે પંચ પ્રદેશિક સ્કંધને ચાર વિભાગોમાં વિભક્ત કરવામાં આવે છે, ત્યારે એક એક પરમાણુપુદ્ગલવાળા ત્રણ વિભાગ થાય છે અને દ્વિપ્રદેશિક સ્કંધ રૂપ એક વિભાગ થાય છે "पंचहा कज्जमाणे पंच परमाणुपोग्गला भवंति" જ્યારે પાંચપ્રદેશિક સ્કંધના પાંચ વિભાગ પાડવામાં આવે છે, ત્યારે એક એક પરમાણુ પુદ્ગલવાળા પાંચ વિભાગોમાં તે વિભક્ત થઈ જાય છે.

न्यन्ते, एकतः संहत्य किं स्वरूपं वस्तु भवति ? इति पृच्छा । भगवानाह-'गोयमा ! छप्पएसिए खंधे भवइ' हे गौतम ! षट्परमाणुपुद्गलाः संहत्य षट्प्रदेशिकः स्कन्धो भवति, 'से भिज्जमाणे दुहावि, तिहावि, जाव छव्विहावि कज्जइ' स षट्प्रदेशिकः स्कन्धो भिद्यमानो द्विधापि, त्रिधापि यावत्-चतुर्धापि, पञ्चधापि, षोढापि क्रियते, तत्र 'दुहाकज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ' द्विधा क्रियमाणः, एकतः-एकभागे परमाणुपुद्गलो भवति, एकतः-अपरभागे पञ्चप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, 'अहवा एगयओ दुप्पएसिए खंधे, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ' अथवा एकतः-एकभागे, द्विप्रदेशिकः स्कन्धो भवति,

---

अब गौतम प्रभु से ऐसा पूछते हैं-' छन्भंते ! परमाणु पोग्गला पुच्छा ' हे भदन्त ! जब छह पुद्गलपरमाणु आपस में मिलते हैं-तब उनके मिलाप से क्या चीज उत्पन्न होती है ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-' गोयमा ! ' हे गौतम ! ' छप्पएसिए खंधे भवइ ' जब छह पुद्गल परमाणु आपस में मिलते हैं-तब उनके मिलाप से छह प्रदेशी स्कन्ध उत्पन्न होता है । ' से भिज्जमाणे दुहा वि, तिहा वि, जाव छव्विहा वि कज्जइ ' जब यह छह प्रदेशी स्कंध भेद को प्राप्त होता है-तब इसके दो भी, तीन भी, चार भी, पांच भी और छह भी विभाग हो सकते हैं-इनमें जब इसके ' दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ ' दो विभाग किये जाते हैं-तब एक विभाग एक पुद्गल परमाणुरूप होता है और दूसरा विभाग पांचप्रदेशिक स्कन्धरूप होता है । ' अहवा एगयओ दुप्पएसिए खंधे, एगयओ चउप्पएसिए

गौतम स्वामीनो प्रश्न-" छन्भंते ! परमाणुपोग्गला पुच्छा " हे भगवन् ! ज्यारे छ परमाणु पुद्गलो एक बीजा साथे एकत्रित थाय छे, त्यारे तेमना संयोगथी कई वस्तु उत्पन्न थाय छे ?

महावीर प्रभुनो उत्तर-" गोयमा ! " हे गौतम ! " छप्पएसिए खंधे भवइ " ज्यारे छ पुद्गलपरमाणुओ एक बीजा साथे संयोग पामे छे, त्यारे तेमना संयोगने लीधे छ प्रदेशिक एक स्कंध उत्पन्न थाय छे " से भिज्जमाणे दुहा वि, तिहा वि जाव छव्विहा वि कज्जइ " ज्यारे आ छ प्रदेशिक स्कंध विभक्त थई जाय छे, त्यारे तेना बे, त्रण, चार, पांच, अथवा छ विभागो थई शके छे. " दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ " ज्यारे तेना बे विभाग थई जाय छे, त्यारे एक विभाग एक पुद्गल परमाणु रूप अने बीजो विभाग पांच प्रदेशिक एक स्कंध रूप संभवी शके छे ' अहवा ' अथवा " एगयओ दुप्पएसिए खंधे, एग-

अथ च एकतः-अपरभागे चतुष्प्रदेशिकः स्कन्धो भवति, 'अहवा दो तिप्पएसिया खंधा भवंति' अथवा द्वौ त्रिप्रदेशिकौ स्कन्धौ भवतः, 'तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ' षट्प्रदेशिकः स्कन्धः त्रिधा क्रियमाणः एकतः-एकभागे द्वौ परमाणुपुद्गलौ भवतः, एकतः-अपरभागे चतुष्प्रदेशिकस्कन्धो भवति, 'अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुप्पएसिए खंधे, एगयओ तिप्पएसिए खंधे भवइ' अथवा एकतः-एकभागे परमाणुपुद्गलः, एकतः-अपरभागे द्विप्रदेशिकः स्कन्धः, एकतः-अन्यभागे त्रिप्रदेशिकः स्कन्धो

खंधे भवइ' अथवा-इस प्रकार से भी इसके दो विभाग हो सकते हैं अर्थात् एक विभाग दो प्रदेशिक स्कंध रूप होता है और दूसरा विभाग चार प्रदेशिक स्कंधरूप होता है। 'अहवा दो तियपएसिया खंधा भवंति' अथवा एक भाग में त्रिप्रदेशिक स्कन्ध और दूसरे भाग में भी त्रिप्रदेशिक स्कंध ऐसे ये त्रिप्रदेशिक दो स्कंधरूप विभाग भी इसके हो सकते हैं। 'तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणु पोग्गला एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ' जब यह षट् प्रदेशिक स्कंध तीन विभागों में विभक्त किया जाता है-तब एक भाग में दो पुद्गलपरमाणु रहते हैं, और दूसरे विभाग में चतुष्प्रदेशिक एक स्कंध रहता है-कहने का तात्पर्य ऐसा है कि एक एक पुद्गलपरमाणुरूप दो विभाग और चतुष्प्रदेशिक स्कंध रूप एक विभाग-ऐसे ये तीन खण्डरूपविभाग षट् पुद्गलपरमाणुओं के मेल से जन्य इस षट् प्रदेशात्मक स्कंध के हो सकते हैं 'अहवा-एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुप्पएसिए खंधे, एगयओ तिप्पएसिए खंधे भवइ' अथवा-एक भाग में एक परमाणुपुद्गल द्वितीय

यओ चउप्पएसिए खंधे भवइ" એ પ્રદેશિક સ્કંધ ૩૫ એક ભાગ અને ચાર પ્રદેશિક સ્કંધ૩૫ બીજો ભાગ પણ સંભવી શકે છે. अहवा-दो तिप्पएसिया खंधा भवंति" અથવા-ત્રિપ્રદેશિક સ્કંધ ૩૫ એક ભાગ બને છે અને બીજો ભાગ પણ ત્રિપ્રદેશિક સ્કંધ ૩૫ જ બને છે

"तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ" જ્યારે આ છ પ્રદેશિક સ્કંધને ત્રણ વિભાગોમાં વિભક્ત કરવામાં આવે છે, ત્યારે એક પુદ્ગલપરમાણુ ૩૫ એક વિભાગ, એક પુદ્ગલપરમાણુ ૩૫ બીજો વિભાગ અને ચારપ્રદેશિક સ્કંધ ૩૫ ત્રીજો વિભાગ થઈ જાય છે. "अहवा-एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुप्पएसिए खंधे, एगयओ तिप्पएसिए खंधे भवइ" અથવા એક પરમાણુ પુદ્ગલ ૩૫એક ભાગ, દ્વિપ્ર-

भवति, 'अहवा तिन्नि दुप्पएसिया खंधा भवंति, अथवा त्रयो द्विप्रदेशिकाः स्कन्धाः भवन्ति 'चउहा कज्जमाणे एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला, एगयओ तिप्पएसिए खंधे भवइ' षट्प्रदेशिकः स्कन्धश्चतुर्धा क्रियमाणः एकतः-एकभागे त्रयः परमाणुपुद्गला भवन्ति, एकतः अपरभागे त्रिप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, 'अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला भवंति, एगयओ दो दुप्पएसिया खंधा भवंति' अथवा एकतः-एकभागे द्वौ परमाणुपुद्गलौ भवतः एकतः-अपरभागे द्वौ द्विप्रदेशिकौ स्कन्धौ भवतः, 'पंचहा कज्जमाणे एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला, एगयओ दुप्पएसिए खंधे भवइ' षट्प्रदेशिकः स्कन्धः पञ्चधा क्रियमाणः एकतः-एकभागे चत्वारः

यभाग में द्विप्रदेशिक स्कन्ध और तीसरे भाग में त्रिप्रदेशिक स्कंध होता है। 'अहवा-तिन्नि दुप्पएसिया खंधा भवंति' अथवा-दो प्रदेशिक स्कंध तीन होते हैं। 'चउहा कज्जमाणे एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला, एगयओ तिप्पएसिए खंधे भवइ' षट् प्रदेशिक स्कंध के जब चार खण्ड किये जाते हैं-तब एक खंड में तीन पुद्गल परमाणु होते हैं और द्वितीय खण्ड में त्रिप्रदेशिक एक स्कंध होता है-अर्थात् एक एक पुद्गलपरमाणु-रूप विभाग इसके होते हैं और चौथा विभाग त्रिप्रदेशिक एक स्कन्ध रूप होता है। 'अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला भवंति, एगयओ दो दुप्पएसिया खंधा भवंति' एक तरफ दो पुद्गलपरमाणुरूप दो विभाग होते हैं और एक तरफ दो द्विप्रदेशिक स्कन्धरूप विभाग होते हैं। 'पंचहा कज्जमाणे एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला, एगयओ दुप्पए-

---

દ્વેશિક સ્કંધ રૂપ બીજો ભાગ અને ત્રિપ્રદેશિક સ્કંધ રૂપ ત્રીજો ભાગ, આ પ્રકારના ત્રણ વિભાગોમાં તે ૬ પ્રદેશિક સ્કંધ વિભક્ત થઈ જાય છે. "अहवा-तिन्नि दुप्पएसिया खधा भवंति" અથવા ત્રણ દ્વિપ્રદેશિક સ્કંધો રૂપે પણ તે વિભક્ત થઈ જાય છે "चउहा कज्जमाणे एगयओ तिन्नि परमाणु पोग्गला, एगयओ तिप्पएसिए खंधे भवइ" ૬ પ્રદેશિક સ્કંધના જ્યારે ચાર વિભાગ કરવામાં આવે છે, ત્યારે એક એક પુદ્ગલપરમાણુ રૂપ ત્રણ વિભાગો અને ત્રિપ્રદેશિક સ્કંધ રૂપ એક વિભાગમાં તે વિભક્ત થઈ જાય છે. "अहवा-एगयओ दो परमाणु पोग्गला भवंति, एगयओ दुप्पएसिया खंधा भवति" અથવા એક એક પુદ્ગલપરમાણુ રૂપ બે વિભાગ થાય છે અને દ્વિપ્રદેશિક બે સ્કંધો રૂપ બીજા બે વિભાગ થાય છે. આ પ્રકારના ચાર વિભાગો પણ સંભવી શકે છે. "पंचहा कज्जमाणे एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला, एगयओ दुप्पएसिए खंधे भवइ" ૬ પ્રદેશિક સ્કંધને જ્યારે પાંચ વિભાગોમાં

परमाणुपुद्गला भवन्ति, एकतः-अपरभागे द्विप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, 'छहा कज्जमाणे छ परमाणुपोग्गला भवंति' षट्प्रदेशिकः स्कन्धः पोढाक्रियमाणः षट् परमाणुपुद्गला भवन्ति। गौतमः पृच्छति-'सत्तभंते! परमाणुपोग्गला पुच्छा' हे भदन्त! सप्तपरमाणुपुद्गलाः एकतः संहन्यन्ते, एकतः संहत्य किं स्वरूपं वस्तु भवति? इति पृच्छा, भगवानाह-गोयमा! सत्तपएसिए खंधे भवइ' हे गौतम! सप्तपरमाणुपुद्गलाः एकतः संहत्य सप्तप्रदेशिकःस्कन्धो भवति, 'से भिज्जमाणे दुहावि जाव सत्तहा वि कज्जइ' सः-सप्तप्रदेशिक स्कन्धो भिद्यमानो द्विधापि यावत्-त्रिधापि, चतुर्धापि, पञ्चधापि, सप्तधापि क्रियते तत्र 'दुहा कज्जमाणे

सिए खंधे भवइ' षट्प्रदेशिक स्कंध के जब पांच विभाग किये जाते हैं तब एक तरफ चार पुद्गल परमाणुरूप चार विभाग होते हैं और एक तरफ द्विप्रदेशी स्कन्धरूप एक विभाग होता है। 'छहा कज्जमाणे छ परमाणुपोग्गला भवंति' षट् प्रदेशिक स्कंध के जब छह विभाग किये जाते हैं तब छह पुद्गल परमाणुरूप छ विभाग होते हैं।

अब गौतम प्रभु से ऐसा पूछते हैं-' सत्त भंते! परमाणुपोग्गला पुच्छा' हे भदन्त! सात परमाणुपुद्गल जब आपस में मिलते हैं-तब उनके मिलने पर कौनसी वस्तु उत्पन्न होती है? इस प्रश्न के उत्तर में प्रभु कहते हैं-' गोयमा' हे गौतम। 'सत्तपएसिए खंधे भवइ' सात प्रदेशों वाला एक स्कन्ध उत्पन्न होता है। 'से भिज्जमाणे दुहावि जाव सत्तहा वि कज्जइ' इस स्कन्ध का जब विभाग किया जाता है-तब इसके दो भी, तीन भी, चार भी, पांच भी, छह भी और सात भी

વિભક્ત કરવામાં આવે છે, ત્યારે એક એક પુદ્ગલ પરમાણુ રૂપ ચાર વિભાગો અને દ્વિપ્રદેશિક સ્કંધ રૂપ એક વિભાગ થઇ જાય છે. "छहा कज्जमाणे छ परमाणुपोग्गला भवंति" જ્યારે છ પ્રદેશિક સ્કંધને છ વિભાગોમાં વિભક્ત કરવામાં આવે છે, ત્યારે એક એક પુદ્ગલપરમાણુવાળા છ વિભાગો થઈ જાય છે

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-(सत्त भंते! परमाणुपोग्गला पुच्छा) હે ભગવન્! જ્યારે સાત પરમાણુ પુદ્ગલો એક બીજાની સાથે મળી જાય છે, ત્યારે તેમના સંયોગથી કઈ વસ્તુ ઉત્પન્ન થાય છે?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-"गोयमा!" હે ગૌતમ! "सत्तप्पएसिए खंधे भवइ" તેમના સંયોગથી એક સાત પ્રદેશિક સ્કંધ બને છે. 'से भिज्जमाणे दुहा वि, जाव सत्तहा वि कज्जइ" આ સાત પ્રદેશિક સ્કંધના જ્યારે વિભાગો કરવામાં આવે છે ત્યારે તેના બે, ત્રણ, ચાર, પાંચ છ અથવા

एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ छप्पएसिए खंधे भवइ' द्विधा क्रियमाणः एकतः-एकभागे परमाणुपुद्गलो भवति, एकतः-अपरभागे षट्प्रदेशिकः स्कन्धो भवति, 'अहवा एगयओ दुप्पएसिए खंधे भवइ, एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ, अथवा एकतः-एकभागे द्विप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, एकतः-अपरे भागे पञ्चप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, 'अहवा एगयओ तिप्पएसिए, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ' अथवा एकतः-एकभागे त्रिप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, एकतः-अपरभागे चतुष्प्रदेशिकः स्कन्धो भवति, 'तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ' सप्तप्रदेशिकः स्कन्धस्त्रिधा क्रियमाणः, एकतः-एकभागे द्वौ परमाणुपुद्गलौ भवतः एकतः-अपरभागे पञ्चप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, 'अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुप्पएसिए खंधे, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ' अथवा एकतः-एकभागे परमाणुपुद्गलो भवति, एकतः अपर-

---

विभाग हो सकते हैं-'तिहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ छप्पएसिए खधे भवइ' जब इसके दो विभाग किये जाते हैं-तब एक विभोग में परमाणुपुद्गल होता है और दूसरे भाग में षट्प्रदेशिक स्कंध होता है 'अहवा एगयओ दुप्पएसिए स्कंधे भवइ' एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ' अथवा-एक विभाग में द्विप्रदेशिक स्कन्ध होता है और दूसरे विभाग में पंचप्रदेशिक स्कन्ध होता है। "अहवा एगयओ तिप्पएसिए, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ" अथवा-एक विभाग में त्रिप्रदेशिक स्कन्ध होता है और दूसरे विभाग में चतुष्प्रदेशिक स्कंध होता है, 'तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ पंच पएसिए खंधे भवइ' जब इस सप्तप्रदेशिक स्कन्ध के तीन विभाग किये जाते हैं-तब एकभाग में दो परमाणु पुद्गल होते हैं और एकभाग में पंचप्रदेशिक स्कंध होता है। 'अहवा-एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुप्पएसिए खंधे, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ'

સાત વિભાગ થઈ શકે છે "तिहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ छप्पएसिए खंधे भवइ" જ્યારે તેના બે વિભાગ કરવામાં આવે છે, ત્યારે એક વિભાગમાં એક પરમાણુપુદ્ગલ હોય છે અને બીજા વિભાગમાં છ પ્રદેશિક સ્કંધ હોય છે. "अहवा-एगयओ दुप्पएसिए खंधे भवइ, एगयओ पंच पएसिए खंधे भवइ" અથવા એક વિભાગમાં દ્વિપ્રદેશિક સ્કંધ હોય છે અને બીજા વિભાગમાં પંચપ્રદેશિક સ્કંધ હોય છે "अहवा-एगयओ तिप्पएसिए, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ" અથવા એક વિભાગમાં ત્રિપ્રદેશિક સ્કંધ હોય છે અને બીજા વિભાગમાં ચાર પ્રદેશિક સ્કંધ હોય છે.

"तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ पंच पएसिए खंधे भवइ" જ્યારે સપ્તપ્રદેશિક સ્કંધના ત્રણ વિભાગ કરવામાં આવે છે, ત્યારે એક પરમાણુપુદ્ગલ રૂપ એક વિભાગ, એક પરમાણુ પુદ્ગલ રૂપ બીજો વિભાગ અને પંચપ્રદેશિક સ્કંધરૂપ ત્રીજો વિભાગ થાય છે. "अहवा-एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुप्पएसिए खंधे, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ"

भागे द्विप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, एकतः-अन्यभागे चतुष्प्रदेशिकः स्कन्धो भवति, 'अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दो तिप्पएसिया खंधा भवंति' अथवा एकतः-एकभागे परमाणुपुद्गलो भवति, एकतः-अपरभागे द्वौ त्रिप्रदेशिकौ स्कन्धौ भवतः 'अहवा एगयओ दो दुप्पएसिया खंधा भवंति, एगयओ तिप्पएसिए खंधे भवइ' अथवा एकतः-एकभागे द्वौ द्विप्रदेशिकौ स्कन्धौ भवत, एकतः-अपरभागे त्रिप्रदेशिकः स्कन्धो भवति 'चउहा कज्जमाणे एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ' सप्तप्रदेशिकः स्कन्धश्चतुर्धा क्रियमाणः, एकतः-एकभागे त्रयः परमाणुपुद्गलाः भवन्ति, एकतः-अपरभागे चतुष्प्रदेशिकः स्कन्धो

अथवा-एक भाग में एक परमाणु पुद्गल होता है, एक भाग में द्विप्रदेशिक स्कन्ध होना है, और अन्य भाग में चतुष्प्रदेशिक स्कन्ध होना है। 'अहवा-एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दो तिप्पएसिया खंधा भवंति' अथवा एक भाग में परमाणुपुद्गल होना है, और दूसरे विभाग में त्रिप्रदेशिक स्कन्ध होते हैं। 'अहवा एगयओ दो दुप्पएसिया खंधा भवंति, एगयओ तिप्पएसिए खंधे भवइ' अथवा-एक भाग में दो द्विप्रदेशिक स्कन्ध होते हैं और दूसरे भाग में एक त्रिप्रदेशिक स्कंध होता है 'चउहा कज्जमाणे एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ' जब सप्तप्रदेशिक स्कन्ध चार भागवाला किया जाता है-तब एक भाग में तीन परमाणुपुद्गल होते हैं और दूसरे भाग में एक चतुष्प्रदेशिक स्कन्ध होता है 'अहवा-एगयओ दो परमाणुपो-

---

અથવા એક પરમાણુ પુદ્ગલ રૂપ એક વિભાગ, દ્વિપ્રદેશિક સ્કંધ રૂપ બીજો વિભાગ, અને ચાર પ્રદેશિક સ્કંધ રૂપ ત્રીજો વિભાગ, આ પ્રકારના ત્રણ વિભાગોમાં તે વિભક્ત થઈ જાય છે. "अहवा-एगयओ प माणुपोग्गले, एगयओ दो तिप्पएसिया खधा भवंति" અથવા એક વિભાગમાં પરમાણુ પુદ્ગલ અને બાકીના બન્ને વિભાગોમાં ત્રિપ્રદેશિક બે સ્કંધો હોય છે. "अहवा-एगयओ दो दुप्पएसिया खधा भवंति, एगयओ तिप्पएसिए खंधे भवइ" અથવા દ્વિપ્રદેશિક સ્કંધ રૂપ બે વિભાગ અને ત્રિપ્રદેશિક સ્કંધ રૂપ એક વિભાગ, આ પ્રકારના ત્રણ વિભાગોમાં તે વિભક્ત થઈ જાય છે. "चउहा कज्जमाणे एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ" જ્યારે તે સપ્તપ્રદેશિક સ્કંધને ચાર વિભાગોમાં વિભક્ત કરવામાં આવે છે, ત્યારે એક-એક પરમાણુપુદ્ગલ રૂપ ત્રણ ભાગો અને ચાર પ્રદેશિક સ્કંધ રૂપ એક ભાગમાં તે વિભક્ત થઈ જાય છે. "अहवा-एगयओ दो परमाणु

भवति, 'अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दुप्पएसिए खंधे, एगयओ तिप्पएसिए खंधे भवइ' अथवा एकतः-एकभागे द्वौ परमाणुपुद्गलौ भवतः, एकतः अपरभागे द्विप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, एकतः-अन्यभागे त्रिप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, 'अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ तिन्नि दुप्पएसिया खंधा भवंति,' अथवा एकतः-एकभागे परमाणुपुद्गलो भवति, एकतः-अपरभागे त्रयो द्विप्रदेशिकाः स्कन्धाः भवन्ति, "पंचहा कज्जमाणे एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला, एगयओ तिप्पएसिए खंधे भवइ' सप्तप्रदेशिकः स्कन्धः पञ्चधा क्रियमाणः, एकतः-एकभागे चत्वारः परमाणुपुद्गला भवन्ति, एकतः-अपरभागे त्रिप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, अहवा एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला, एगयओ दो दुप्पएसिया खंधा

ग्गला, एगयओ दुप्पएसिए खंधे, एगयओ तिप्पएसिए खंधे भवइ' अथवा-एक विभाग में दो परमाणुपुद्गल होते हैं, और दूसरे भाग में एक द्विप्रदेशिक स्कंध होता है, तथा अन्यभाग में एक त्रिप्रदेशिक स्कंध होता है। 'अहवा-एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ तिन्नि दुप्पएसिया, खंधा भवंति' अथवा-एक भाग में एक परमाणुपुद्गल होता है, और दूसरे भाग में तीन द्विप्रदेशिक स्कंध होते हैं-'पंचहा कज्जमाणे एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला, एगयओ तिप्पएसिए खंधे भवइ' सप्तप्रदेशिक स्कंध जब पांच प्रकार से विभक्त किया जाता है तब एक प्रकार में चार परमाणुपुद्गल होते हैं, और दूसरे प्रकार में एक त्रिप्रदेशिक स्कन्ध होता है। 'अहवा एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला, एगयओ दो दुप्पएसिया खंधा भवंति' अथवा-एक भाग में तीन परमाणु-

---

पोग्गला, एगयओ दुप्पएसिए खंधे, एगयओ तिप्पएसिए खंधे भवइ' અથવા એક એક પરમાણુપુદ્ગલવાળા બે વિભાગો, બે પ્રદેશવાળો એક સ્કંધ અને ત્રિપ્રદેશિક સ્કંધ, આ પ્રકારના ચાર વિભાગો પડે છે. "अहवा-एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ तिन्नि दुप्पएसिया, खंधा भवंति" અથવા એક પરમાણુ પુદ્ગલવાળો એક વિભાગ અને દ્વિપ્રદેશિક ત્રણ સ્કંધ રૂપ ત્રણ વિભાગોમાં તે વિભક્ત થઈ જાય છે.

"पंचहा कज्जमाणे एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला, एगयओ तिप्पएसिए खंधे भवइ" સપ્તપ્રદેશિક સ્કંધને જ્યારે પાંચ વિભાગોમાં વિભક્ત કરવામાં આવે છે, ત્યારે એક એક પરમાણુ પુદ્ગલવાળા ચાર વિભાગ અને ત્રિપ્રદેશિક સ્કંધ રૂપ એક વિભાગ, આ પ્રકારના ચાર વિભાગો થઈ જાય છે. "अहवा-एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला, एगयओ दो दुप्पएसिया

भवंति' अथवा एकतः-एकभागे त्रयः परमाणुपुद्गलाः भवन्ति, एकतः-अपरभागे द्वौ द्विप्रदेशिकौ स्कन्धौ भवतः, 'छहा कज्जमाणे एगयओ पंचपरमाणुपोग्गला, एगयओ दुप्पएसिए खंधे भवइ' षोढा क्रियमाणः सप्तप्रदेशिकः स्कन्धः, एकतः-एकभागे पञ्चपरमाणुपुद्गला भवन्ति, एकतः-अपरभागे द्विप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, 'सत्तहा कज्जमाणे सत्तपरमाणुपोग्गला भवंति, सप्तप्रदेशिकः स्कन्धः सप्तधा क्रियमाणः सप्त परमाणुपुद्गलाः भवन्ति। गौतमः पृच्छति-'अट्ठ भंते ! परमाणुपोग्गला पुच्छा' हे भदन्त ! अष्टौ परमाणुपुद्गलाः एकतः संहन्यन्ते, एकतः संहत्य किं स्वरूपं वस्तु भवति ? इति पृच्छा, भगवानाह-'गोयमा ! अट्ठ पएसिए

पुद्गल होते हैं और दूसरे भाग में दो द्विप्रदेशिक स्कंध होते हैं। 'छहा कज्जमाणे एगयओ पंच परमाणुपोग्गला, एगयओ दुप्पएसिए खंधे भवइ, जब सप्तप्रदेशिक स्कन्ध छ प्रकार से किया जाता है-तब इसके एक भाग में पांच परमाणुपुद्गल होते हैं, और दूसरे भाग में एक द्विप्रदेशिक स्कन्ध होता है। 'सत्तहा कज्जमाणे सत्त परमाणुपोग्गला भवंति' सप्तप्रदेशिक स्कंध जब सात प्रकार से विभक्त किया जाता है-तब सात पुद्गल परमाणु होते हैं।

अब गौतम प्रभु से ऐसा पूछते हैं-'अट्ठ भंते! परमाणुपोग्गला पुच्छा' हे भदन्त! आठ परमाणु पुद्गल जब आपस में मिलते हैं तब इनके मिलाप से कौन सी वस्तु उत्पन्न होती है-इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-'गोयमा' हे गौतम! 'अट्ठपएसिए खंधे भवइ' आठ पुद्ग-

---

खंधा भवंति" અથવા એક એક પરમાણુ પુદ્ગલવાળા ત્રણ વિભાગ અને દ્વિપ્રદેશિક બે સ્કંધ રૂપ બે વિભાગો મળીને કુલ પાંચ વિભાગોમાં તે વિભક્ત થઇ જાય છે. "छहा कज्जमाणे एगयओ पंच परमाणुपोग्गला, एगयओ दुप्पएसिए खंधे भवइ" જ્યારે સપ્તપ્રદેશિક સ્કંધ ૬ વિભાગોમાં વિભક્ત કરવામાં આવે છે, ત્યારે એક એક પરમાણુ પુદ્ગલવાળા પાંચ વિભાગો અને દ્વિપ્રદેશિક સ્કંધ રૂપ એક વિભાગ, આ પ્રકારે ૬ વિભાગો થઇ જાય છે. "सत्तहा कज्जमाणे सत्त परमाणु पोग्गला भवंति" જ્યારે સપ્તપ્રદેશિક સ્કંધને સાત વિભાગોમાં વિભક્ત કરવામાં આવે છે, ત્યારે એક એક પરમાણુ પુદ્ગલવાળા સાત વિભાગોમાં તે સ્કંધ વિભક્ત થઈ જાય છે.

ગૌતમસ્વામીનો પ્રશ્ન-" अट्ठ भंते! परमाणुपोग्गला पुच्छा " હે ભગવન્! આઠ પરમાણુ પુદ્ગલોનો જ્યારે પરસ્પરની સાથે સંયોગ થાય છે, ત્યારે તેમના સંયોગથી કઇ વસ્તુ ઉત્પન્ન થાય છે?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-" गोयमा! " હે ગૌતમ! " अट्ठपएसिए खंधे

खंधे भवइ' हे गौतम ! अष्टौ परमाणुपुद्गलाः एकतः संहत्य अष्टप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, 'जाव दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ सत्त पएसिए खंधे भवइ' यावत् सो अष्ट प्रदेशिकः स्कन्धो भिद्यमानो द्विधापि, त्रिधापि, चतुर्धापि, पञ्चधापि, षोढापि, सप्तधापि, अष्टधापि भवति, तत्र द्विधा क्रियमाणः एकतः-एकभागे परमाणुपुद्गलो भवति, एकतः-अपरभागे सप्तप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, 'अहवा एगयओ दुप्पएसिए खंधे, एगयओ छप्पएसिए खंधे भवइ' अथवा एकतः-एकभागे द्विप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, एकतः-अपरभागे षट्प्रदेशिकः स्कन्धो भवति, 'अहवा एगयओ तिप्पएसिए खंधे, एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ' अथवा एकतः-एकभागे त्रिप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, एकतः-अपरभागे

लपरमाणुओं के मेल से आठ प्रदेशोंवाला एक स्कंध होता है-' जाव दुहा कज्जमाणे परमाणुपोग्गले, एगयओ सत्त पएसिए खंधे भवइ ' जब इस अष्टप्रदेशिक स्कंध के विभाग किये जाते हैं-तब इसके दो, तीन, चार, पाँच, छह, सात, और आठ विभागतक भी होते हैं जब इसे दो प्रकार से विभाग किया जाता है-तब एक भाग में एक परमाणुपुद्गल होता है और दूसरे भाग में सप्तप्रदेशिक स्कंध होता है। 'अहवा-एगयओ दुप्पएसिए खंधे एगयओ छप्पएसिए खंधे भवइ' अथवा-एक भाग में द्विप्रदेशिक स्कन्ध होता है और दूसरे भाग में छह प्रदेशिक स्कन्ध होता है। 'अहवा-एगयओ तिप्पएसिए खंधे एगयओ पंच पएसिए खंधे भवइ' अथवा-एक भाग में एक त्रिप्रदेशिक स्कन्ध होता है, और दूसरे भागमें एक पंचप्रदेशिक स्कंध होता है।

भवइ " આઠ પરમાણુ પુદ્ગલોનો એક બીજા સાથે સંયોગ થવાથી આઠ પ્રદેશિક એક સ્કંધ બને છે. " जाव दुहा कज्जमाणे परमाणुपोग्गले, एगयओ सत्त पएसिए खंधे भवइ " જ્યારે આ અષ્ટપ્રદેશિક સ્કંધના વિભાગ કરવામાં આવે છે, ત્યારે તે બે, ત્રણ, ચાર, પાંચ, છ, સાત અથવા આઠ વિભાગમાં વિભક્ત થઈ જાય છે. જ્યારે તેના બે વિભાગ કરવામાં આવે છે, ત્યારે એક વિભાગમાં એક પરમાણુ પુદ્ગલ હોય છે અને બીજો વિભાગ સપ્તપ્રદેશિક સ્કંધ રૂપ હોય છે. " अहवा-एगयओ दुप्पएसिए खंधे, एगएओ छप्पएसिए खंधे भवइ " અથવા એક ભાગ દ્વિપ્રદેશિક સ્કંધ રૂપ હોય છે અને બીજો ભાગ છ પ્રદેશિક સ્કંધરૂપ હોય છે. " अहवा एगयओ तिप्पएसिए खंधे, एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ " અથવા એક ભાગ ત્રિપ્રદેશિક સ્કંધ રૂપ હોય છે અને બીજો ભાગ પાંચ પ્રદેશિક સ્કંધ રૂપ હોય છે. " अहवा दो चउप्प-

पञ्चप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, 'अहवा दो चउप्पएसिया खंधा भवंति,' अथवा द्वौ चतुष्प्रदेशिकौ स्कन्धौ भवतः, 'तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ छप्पएसिए खंधे भवइ' अष्टप्रदेशिकः स्कन्धः त्रिधाक्रियमाणः, एकतः-एकभागे द्वौ परमाणुपुद्गलौ भवतः, एकतः-अपरभागे षट्प्रदेशिकः स्कन्धो भवति, 'अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुप्पएसिए खंधे, एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ' अथवा एकतः-एकभागे परमाणुपुद्गलो भवति, एकतः-अपरभागे द्विप्रदेशिकः स्कन्धो भवति एकतः-अन्यभागे पञ्चप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, 'अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ तिप्पएसिए खंधे, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ' अथवा एकतः-एकभागे परमाणुपुद्गलो भवति, एकतः-अपरभागे त्रिप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, एकतः-अन्यभागे चतुष्प्रदेशिकः स्कन्धो भवति,

---

'अहवा दो चउप्पएसिया खंधा भवंति' अथवा-चतुष्प्रदेशिक दो स्कन्ध होते हैं 'तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ छप्पएसिए खंधे भवइ' अष्टप्रदेशिक स्कन्ध जब तीन विभाग में किया जाता है-तब एक भाग में अलग अलग दो परमाणु पुद्गल होते हैं, और दूसरे भाग में एक छह प्रदेशिक स्कंध होता है। 'अहवा-एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुप्पएसिए खंधे, एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ' अथवा-एक भाग में परमाणुपुद्गल होता है, दूसरे भाग में द्विप्रदेशिक स्कंध होता है और अन्यभाग में पञ्चप्रदेशिक स्कन्ध होता है 'अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ तिप्पएसिए खंधे, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ' अथवा-एक भाग में परमाणुपुद्गल होता है, दूसरे भाग में त्रिप्रदेशिक स्कंध होता है, तथा अन्यभाग में एक चतुष्प्रदेशिक

सिया खंधा भवंति" अथवा ચાર ચાર પ્રદેશિક બે સ્કંધ ૩૫ બે વિભાગો પણ સંભવી શકે છે. "तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ छप्पएसिए खंधे भवइ" જ્યારે અષ્ટપ્રદેશિક સ્કંધને ત્રણ વિભાગોમાં વિભક્ત કરવામાં આવે છે, ત્યારે તેના ત્રણ વિભાગો આ પ્રકારના સંભવી શકે છે-એક એક પરમાણુ પુદ્ગલવાળા બે વિભાગો અને છ પ્રદેશિક સ્કંધ ૩૫ ત્રીજો વિભાગ "अहवा-एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुप्पएसिए खंधे, एगयओ पंच पएसिए खंधे भवइ" અથવા એક પરમાણુપુદ્ગલ ૩૫ એક વિભાગ, દ્વિપ્રદેશિક સ્કંધ ૩૫ બીજો વિભાગ અને પંચ પ્રદેશિક સ્કંધ ૩૫ ત્રીજો વિભાગ પણ સંભવી શકે છે. "अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ तिप्पएसिए खंधे, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ" અથવા-એક પરમાણુ પુદ્ગલ ૩૫ એક વિભાગ, ત્રિપ્રદેશિક સ્કંધ ૩૫ બીજો વિભાગ અને ચાર

'अहवा एगयओ दो दुप्पएसिया खंधा, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ' अथवा एकतः-एकभागे द्वौ द्विप्रदेशिकौ स्कन्धौ भवतः, एकतः-अपरभागे चतुष्प्रदेशिकः स्कन्धो भवति, 'अहवा एगयओ दुप्पएसिए खंधे, एगयओ दो तिप्पएसिया खंधा भवंति' अथवा एकतः-एकभागे द्विप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, एकतः-अपरभागे द्वौ त्रिप्रदेशिकौ स्कन्धौ भवतः, 'चउहा कज्जमाणे एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला, एगयओ पंच पएसिए खंधे भवइ' अष्टप्रदेशिकः स्कन्धश्चतुर्धा क्रियमाणः एकतः-एकभागे त्रयः परमाणुपुद्गला भवन्ति, एकतः-अपरभागे पञ्चप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, 'अहवा एगयओ दोन्नि परमाणुपोग्गला, एगयओ दुप्पएसिए खंधे, एगयओ चउप्पएसिए खंधे, भवइ' अथवा एकतः-एकभागे द्वौ परमाणुपुद्गलौ भवतः,

---

स्कंध होता है। 'अहवा एगयओ दो दुप्पएसिया खंधा, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ' अथवा-एक भाग में दो द्विप्रदेशिक स्कन्ध होते हैं, और दूसरे भाग में एक चतुष्प्रदेशिक स्कन्ध होता है। 'अहवा-एगयओ दुप्पएसिए खंधे, एगयओ दो तिप्पएसिया खंधा भवंति' अथवा-एक भाग में द्विप्रदेशिक स्कन्ध होता है, और एकभाग में दो त्रिप्रदेशिक स्कन्ध होते हैं। 'चउहा कज्जमाणे एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला, एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ' यह अष्ट प्रदेशिक स्कन्ध जब चार भागों में विभक्त किया जाता है-तब एक भाग में तीन परमाणुपुद्गल होते हैं, दूसरे भाग में पंचप्रदेशिक स्कंध होता है। 'अहवा-एगयओ दोन्नि परमाणुपोग्गला, एगयओ दुप्पएसिए खंधे, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ' अथवा-एकभाग में दो परमाणुपुद्गल होते हैं,

---

પ્રદેશિક સ્કંધ ૩૫ ત્રીજો વિભાગ પણ સંભવી શકે છે "अहवा-एगयओ दो दुप्पएसिया खंधा, एगयओ चउप्पएसिए खंधे" અથવા બે દ્વિપ્રદેશિક સ્કંધ ૩૫ બે વિભાગો અને ચાર પ્રદેશિક સ્કંધ ૩૫ એક વિભાગ પણ સંભવી શકે છે. "अहवा-एगयओ दुप्पएसिए खंधे एगयओ दो तिप्पएसिया खंधा भवंति" અથવા એક વિભાગમાં દ્વિપ્રદેશિક એક સ્કંધ અને બાકીના બે વિભાગમાં ત્રિપ્રદેશિક બે સ્કંધ પણ સંભવી શકે છે. "चउहा कज्जमाणे एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला, एगयओ पंचपएसिए खधे, भवइ" જ્યારે, અષ્ટપ્રદેશિક સ્કંધના ચાર વિભાગો કરવામાં આવે છે, ત્યારે તે ચાર વિભાગો આ પ્રકારના સંભવી શકે છે-એક એક પરમાણુ પુદ્ગલવાળા ત્રણ વિભાગો અને પંચપ્રદેશિક સ્કંધ ૩૫ એક વિભાગ સંભવી શકે છે. "अहवा" અથવા-"एगयओ दोन्नि परमाणुपोग्गला, एगयओ दुप्पएसिए खंधे एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ" એક એક પરમાણુ પુદ્ગલ ૩૫ બે વિભાગો, દ્વિપ્ર-

एकतः-अपरभागे द्विप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, एकतः-अन्यभागे चतुष्प्रदेशिकः स्कन्धो भवति, 'अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गले, एगयओ दो दुप्पएसिया खंधा, एगयओ तिप्पएसिए खंधे भवइ' अथवा एकतः-एकभागे द्वि परमाणुपुद्गलो भवंति, एकतः-अपरभागे द्वौ द्विप्रदेशिकौ स्कन्धौ भवतः, एकतः-अन्यभागे त्रिप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, 'अहवा चत्तारि दुप्पएसिया खंधा भवंति' अथवा चत्वारः द्विप्रदेशिकाः स्कन्धाः भवन्ति, 'पंचहा कज्जमाणे एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ' अष्टप्रदेशिकः स्कन्धः पञ्चधा क्रियमाणः एकतः-एकभागे चत्वारः परमाणुपुद्गलाः भवन्ति, एकतः-अपरभागे चतुष्प्रदेशिकः

दूसरे भाग में एक द्विप्रदेशिक स्कन्ध होता है, और अन्यभाग में एक चतुष्प्रदेशिक स्कन्ध होता है। 'अहवा-'एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दो तिप्पएसिया खंधा भवंति' अथवा-एक भाग में दो परमाणु-पुद्गल होते हैं और दूसरे भाग में दो त्रिप्रदेशिक स्कन्ध होते हैं। 'अहवा-एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दो दुप्पसिया खंधा' एगयओ तिप्पसिए खंधे भवइ' अथवा-एक विभाग में एक परमाणुपुगदूल होता है; दूसरे भाग में दो द्विप्रदेशिक स्कन्ध होते हैं और अन्य भाग में एक त्रिप्रदेशिक स्कंन्ध होता है। 'अहवा-चत्तारि दुप्पसिया खंधा भवंति' अथवा चार द्विप्रदेशिक स्कन्ध होते हैं।, "पंचहा कज्जमाणे' एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ' यह अष्ट-प्रदेशिक स्कन्ध जब पांच भागों में विभक्त किया जाता है तब एक भाग में चार परमाणुपुगदूल होते हैं' और दूसरे भाग में एक चतु-

---

શિક સ્કંધ ૩૫ એક વિભાગ અને ચાર પ્રદેશિક સ્કંધ ૩૫ એક વિભાગ પણ સંભવી શકે છે. " अहवा " અથવા "एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दो तिप्पएसिया खंधा भवंति " એક એક પરમાણુ પુદ્ગલ ૩૫ બે વિભાગો અને ત્રિપ્રદેશિક બે સ્કંધ ૩૫ બે વિભાગો પણ સંભવી શકે છે. "अहवा-परमाणुपोग्गले, एगयओ दो दुप्पएसिया खंधा, एगयओ तिप्पएसिए खंधे भवइ " અથવા એક પરમાણુ પુદ્ગલવાળો એક વિભાગ, દ્વિપ્રદેશિક બે સ્કંધ ૩૫ બે વિભાગો અને ત્રિપ્રદેશિક એક સ્કંધ ૩૫ એક વિભાગ, આ પ્રકારના ચાર વિભાગો પણ સંભવી શકે છે. " अहवा चत्तारि दुप्पएसिया खंधा भवंति " અથવા દ્વિપ્રદેશિક ચાર સ્કંધ ૩૫ ચાર વિભાગો પણ સંભવી શકે છે.

"पंचहा कज्जमाणे, "एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ " તે અષ્ટપ્રદેશિક સ્કંધના જ્યારે પાંચ વિભાગો કરવામાં

स्कन्धो भवति, 'अहवा एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला, एगयओ दुप्पएसिए एगयओ तिप्पएसिए खंधे भवइ' अथवा एकतः-एकभागे त्रयः परमाणुपुद्गला भवन्ति, एकतः-अपरभागे द्विप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, भवति, एकतः-अन्यभागे त्रिप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, 'अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ तिन्नि दुप्पएसिया खंधा भवंति' अथवा एकतः-एकभागे द्वौ परमाणुपुद्गलौ भवतः, एकतः-अपरभागे त्रयो द्विप्रदेशिकाः स्कन्धाः भवन्ति। 'छहा कज्जमाणे एगयओ पंच परमाणुपोग्गला, एगयओ तिप्पएसिए खंधे भवइ' अष्टप्रदेशिकः स्कन्धः षोढा क्रियमाणः एकतः-एकभागे पञ्च परमाणुपुद्गला भवन्ति, एकतः-अपरभागे त्रिप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, 'अहवा एगयओ चत्तारि

त्रिप्रदेशिक स्कन्ध होता है-'अहवा-एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला, एगयओ दुप्पएसिए, एगयओ तिप्पएसिए खंधे भवइ, एक भाग में तीन परमाणुपुगद्लरूप भाग होते हैं,और एक भाग में द्विप्रदेशिक स्कन्ध होता हैं और अन्य भाग में त्रिप्रदेशिक स्कन्ध होता है। 'अहवा-'एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ तिन्नि दुप्पएसिया खंधा भवंति, अथवा एक भाग में दो परमाणु पुगद्ल होते हैं, दूसरे भाग में तीन द्विप्रदेशिक स्कन्ध होते हैं। 'छहा कज्जमाणे एगयओ पंच परमाणुपोग्गला, एगयओ तिप्पएसिए खंधे भवइ' यह अष्ट प्रदेशिक स्कन्ध जब छह विभग में विभक्त किया जाता है-तब एक भाग में पांच परमाणुपुद्गल होते हैं और एक विभाग में त्रिप्रदेशिक स्कन्ध होता है। 'अहवा एग-

---

આવે છે, ત્યારે એક એક પરમાણુ પુદ્ગલવાળા ચાર વિભાગો અને ચાર પ્રદેશિક એક સ્કંધ રૂપ એક વિભાગ, આ પ્રકારે પાંચ વિભાગ થાય છે. "अहवा-एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला, एगयओ दुप्पएसिए, एगयओ तिप्पएसिए खंधे भवइ" અથવા એક એક પરમાણુ પુદ્ગલવાળા ત્રણ વિભાગો, એક દ્વિપ્રદેશિક સ્કંધ રૂપ એક વિભાગ અને ત્રિપ્રદેશિક એક સ્કંધ રૂપ એક વિભાગ, આ પ્રકારે પાંચ વિભાગો થાય છે. "अहवा-एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ तिन्नि दुप्पएसिया खंधा भवंति" અથવા એક એક પરમાણુ પુદ્ગલવાળા બે વિભાગો અને ત્રણ ત્રિપ્રદેશિક સ્કંધ રૂપ ત્રણ વિભાગો થાય છે "छहा कज्जमाणे एगयओ पंच परमाणुपोग्गला, एगयओ तिप्पएसिए खंधे भवइ" તે અષ્ટપ્રદેશિક સ્કંધના જ્યારે છ વિભાગ કરવામાં આવે છે, ત્યારે એક એક પુદ્ગલ પરમાણુવાળા પાંચ વિભાગો અને ત્રિપ્રદેશિક સ્કંધ રૂપ એક વિભાગ થાય છે. "अहवा एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला, एग-

परमाणुपोग्गला, एगयओ दो दुप्पएसिया खंधा भवंति' अथवा एकतः-एकभागे चत्वारः परमाणुपुद्गलाः भवन्ति, एकतः-अपरभागे द्वौ द्विप्रदेशिकौ स्कन्धौ भवतः, 'सत्तहा कज्जमाणे एगयओ छ परमाणुपोग्गला, एगयओ दुप्पएसिए खंधे भवइ' अष्टप्रदेशिकः स्कन्धः सप्तधा क्रियमाणः एकतः-एकभागे षट् परमाणुपुद्गला भवन्ति, एकतः-अपरभागे द्विप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, 'अट्ठहा कज्जमाणे अट्ठ परमाणुपोग्गला भवंति' अष्टप्रदेशिकः स्कन्धः अष्टधा क्रियमाणः अष्टपरमाणुपुद्गला भवन्ति। गौतमः पृच्छति-नव भंते ! परमाणुपोग्गला पुच्छा' हे भदन्त! नव परमाणुपुद्गलाः एकतः-एकतया संहन्यन्ते, एकतः संहत्य किं स्वरूपं वस्तु भवति ? इति पृच्छा, भगवानाह-'गोयमा! जाव नवविहा कज्जंति' हे गौतम!

यओ चत्तारि परमाणुपोग्गला, एगयओ दो दुप्पएसिया खंधा भवंति' अथवा-एक भाग में चार परमाणु पुद्गल होते हैं, और एक भाग में दो द्विप्रदेशिक स्कन्ध होते हैं। 'सत्तहा कज्जमाणे एगयओ छ परमाणुपोग्गला, एगयओ दुप्पएसिए खंधे भवइ,' यह आठ प्रदेशिक स्कन्ध जब सात भागों में विभक्त किया जाता है तब एक भाग में छह परमाणु पुद्गल होते हैं, और दूसरे भाग में द्विप्रदेशिक स्कन्ध होता है। 'अट्ठहा कज्जमाणे अट्ठ परमाणुपोग्गला भवंति' अष्टप्रदेशिक स्कंध जब आठ विभागों में विभक्त किया जाता है तब आठ पुद्गल परमाणुरूप आठ विभाग इसके होते हैं।

अब गौतम प्रभु से ऐसा पूछते हैं- 'नव भंते! परमाणुपोग्गला पुच्छा, हे भदन्त! नव परमाणुपुद्गल जब एकरूप में होते हैं-तब उनसे क्या वस्तु उत्पन्न होती है ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं- 'गोयमा'

यओ दो दुपएसिया खंधा भवंति" અથવા એક એક પરમાણુ પુદ્ગલવાળા ચાર વિભાગો અને દ્વિપ્રદેશિક બે સ્કંધ રૂપ બીજા બે વિભાગો થાય છે. "सत्तहा कज्जमाणे एगयओ छ परमाणुपोग्गला, एगयओ दुप्पएसिए खंधे भवइ" જ્યારે તે અષ્ટપ્રદેશિક સ્કંધના સાત વિભાગ કરવામાં આવે છે, ત્યારે એક એક પરમાણુ પુદ્ગલવાળા છ વિભાગો અને દ્વિપ્રદેશિક એક સ્કંધ રૂપ એક વિભાગ થાય છે. "अट्ठहा कज्जमाणे अट्ठ परमाणुपोग्गला भवंति" જ્યારે તે અષ્ટપ્રદેશિક સ્કંધના આઠ વિભાગ કરવામાં આવે છે, ત્યારે એક એક પરમાણુ પુદ્ગલવાળા આઠ વિભાગોમાં તે સ્કંધ વિભક્ત થઈ જાય છે.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-"नव भंते! परमाणुपोग्गला पुच्छा" હે ભગવન્! નવ પરમાણુ પુદ્ગલો જ્યારે એક બીજાની સાથે મળી જાય છે, ત્યારે તેમના સંયોગથી કઈ વસ્તુ ઉત્પન્ન થાય છે.

यावत् नव परमाणुपुद्गलाः एकतः संहत्य नवप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, स खलु नवप्रदेशिकः स्कन्धो भिद्यमानः द्विधापि त्रिधापि, चतुर्धाऽपि, पंचधापि, षोढापि, सप्तधापि अष्टधापि, नवधापि, क्रियते-भवति, तत्र 'दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ अट्ठपएसिए खंधे भवइ' नव प्रदेशिकः स्कन्धो द्विधा क्रियमाणः एकतः-एकभागे परमाणुपुद्गलो भवति, एकतः-अपरभागे अष्टप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, 'एवं एक्केक्कं संचारेंतेहिं जाव' एवं-पूर्वोक्तरीत्या एकैकं प्रत्येकम् संचारयद्भिः-अभिलापक्रमेण प्रतिपादयद्भिः यावत्-पूर्वोक्तं सर्वं संग्राह्यम्, 'अहवा एगयओ चउप्पएसिए खंधे, एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ' अथवा एकतः-एकभागे चतुष्प्रदेशिकः स्कन्धो भवति, एकतः-अपरभागे पञ्च-

---

हे गौतम! 'जाव नवविहा कज्जंति' नव परमाणु पुग्गदल जब एकरूप में होते हैं-तब उनसे नव प्रदेशी स्कन्ध होता है वह नव प्रदेशिक स्कन्ध जब विभक्त होता है-तब उसके दो भी, तीन भी, चार भी, पांच भी छह भी, सात भी, आठ भी और नव भी विभाग हो सकते हैं-'दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ अट्ठपएसिए खंधे भवइ' जब यह नौ प्रदेशिक स्कन्ध दो भागों में विभक्त किया जाता है तब एक भाग में पराणु पुग्दल होता है और दूसरे भाग में अष्ट प्रदेशिक स्कन्ध होता है 'एवं एक्केक्कं संचारेंतेहिं जाव अहवा-एगयओ चउप्पएसिए खंधे; एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ" इस प्रकार से यहां अभिलाप क्रम से एक एक प्रदेश का संचार 'अथवा-एक भाग में चतुष्प्रदेशिक स्कन्ध होता है और दूसरे भाग में पंच प्रदेशिक स्कन्ध होता है, इस

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-' गोयमा ! "-હે ગૌતમ ! "जाव नवविहा कज्जंति " નવ પરમાણુ પુદ્ગલો જ્યારે એકરૂપ થાય છે, ત્યારે નવ પ્રદેશિક સ્કંધ ઉત્પન્ન થાય છે. તે નવ પ્રદેશિક સ્કંધ જ્યારે વિભકત થાય છે, ત્યારે તેના બે, ત્રણ, ચાર, પાંચ છ, સાત, આઠ અથવા નવ વિભાગો થઈ જાય છે. " दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ अट्ठपएसिए खंधे भवइ " જ્યારે આ અષ્ટપ્રદેશિક સ્કંધના બે વિભાગ કરવામાં આવે છે, ત્યારે એક વિભાગમાં એક પરમાણુ પુદ્ગલ હોય છે અને બીજા વિભાગમાં એક અષ્ટપ્રદેશિક સ્કંધ હોય છે " एवं एक्केक्कं संचारेंतेहिं जाव अहवा-एगयओ चउप्पएसिए खंधे, एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ " આ પ્રકારના અભિલાપ ક્રમ અનુસાર એક એક પ્રદેશની વૃદ્ધિ કરીને નીચેના વિકલ્પ પર્યન્તના બધા વિકલ્પોનું કથન થવું જોઇએ-" અથવા એક વિભાગમાં ચાર પ્રદેશિક એક સ્કંધ અને બીજા વિભાગમાં એક પાંચ પ્રદેશિક સ્કંધ હોય છે.

प्रदेशिकः स्कन्धो भवति, 'तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ सत्तपएसिए खंधे भवइ' नवप्रदेशिकः स्कन्धः त्रिधा क्रियमाणः एकतो द्वौ परमाणुपुद्गलौ भवतः, एकतः सप्तप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, 'अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुप्पएसिए, एगयओ छप्पएसिए खंधे भवइ' अथवा एकतः-एकभागे परमाणुपुद्गलो भवति, एकतः-अपरभागे द्विप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, एकतः-अन्यभागे षट्प्रदेशिकः स्कन्धो भवति, 'अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ तिप्पएसिए खंधे, एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ' अथवा एकतः-एकभागे परमाणुपुद्गलो भवति, एकतः-अपरभागे त्रिप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, एकतः-अन्यभागे पञ्चप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, 'अहवा एगयओ परमाणु-

---

अभिलापतक करना चाहिये-'तिहा कज्जमाणे एगयओ दोपरमाणुपोग्गला एगयओ सत्तपएसिए खंधे भवइ' यह नौ प्रदेशी स्कन्ध जब तीन भागों मे विभक्त किया जाता है तब एकभागमें दो परमाणु पुद्गल होते हैं और दूसरे भाग में सप्तप्रदेशिक स्कन्ध होता है 'अहवा एगयओ परमाणु पोग्गले, एगयओ दुप्पएसिए, एगयओ छप्पएसिए खंधे भवइ', अथवा-एकभाग परमाणुपुद्गल होता है और दूसरे भाग में एक द्विप्रदेशिक स्कन्ध होता है तथा अन्य भाग में एक छह प्रदेशिक स्कन्ध होता है-'अहवा-एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ तिप्पएसिए खंधे,एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ, अथवा-एक भाग में एक परमाणुपुद्गल होता है, दूसरे भाग में त्रिप्रदेशिक स्कन्ध होता है, और अन्य भाग में पांच प्रदेशोंवाला एक स्कन्ध होता है 'अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एग-

---

"तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ सत्तपएसिए खंधे भवइ" આ નવ પ્રદેશિક સ્કંધના જ્યારે ત્રણ વિભાગો કરવામાં આવે છે, ત્યારે એક એક પરમાણુ પુદ્ગલવાળા બે વિભાગો અને સપ્તપ્રદેશિક સ્કંધ રૂપ એક વિભાગ થાય છે. "अहवा-एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुप्पएसिए, एगयओ छप्पएसिए खंधे भवइ" અથવા એક પરમાણુ પુદ્ગલ રૂપ એક વિભાગ, દ્વિપ્રદેશિક સ્કંધ રૂપ એક વિભાગ અને છ પ્રદેશિક સ્કંધ રૂપ એક વિભાગ થાય છે. "अहवा-एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ तिप्पएसिए खंधे, एगयओ पंच पएसिए खंधे भवइ" અથવા એક પરમાણુ પુદ્ગલવાળો એક વિભાગ, ત્રિપ્રદેશિક સ્કંધ રૂપ બીજો વિભાગ અને પાંચ પ્રદેશિક સ્કંધ રૂપ ત્રીજો વિભાગ થાય છે. "अहवा-एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दो चउप्पएसिया

पोग्गले, एगयओ दो चउप्पएसिया खंधा भवंति' अथवा एकतः-एकभागे परमाणुपुद्गलो भवति, एकतः-अपरभागे द्वौ चतुष्प्रदेशिकौ स्कन्धौ भवतः, 'अहवा एगयओ दुप्पएसिए खंधे, एगयओ तिप्पएसिए खंधे, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ' अथवा एकत -एकभागे द्विप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, एकतः-अपरभागे त्रिप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, एकतः-अन्यभागे चतुष्प्रदेशिकः स्कन्धो भवति 'अहवा तिन्नि तिप्पएसिया खंधा भवंति' अथवा त्रयस्त्रिप्रदेशिकाः स्कन्धाः भवन्ति। 'चउहा कज्जमाणे एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला, एगयओ छप्पएसिए खंधे भवइ' नवप्रदेशिकः स्कन्धश्चतुर्धा क्रियमाणः एकतः-एकभागे त्रयः परमाणुपुद्गलाः भवन्ति, एकतः-अपरभागे षट्प्रदेशिकः स्कन्धो भवति, 'अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दुप्पएसिए खंधे, एगयओ पंचपएसिए

यओ दो चउप्पएसिया खंधा भवंति' अथवा एक भाग में एक परमाणु-पुद्गल होता है, और दूसरे भाग में दो चतुष्प्रदेशिक स्कन्ध होते हैं- 'अहवा-एगयओ दुप्पएसिए खंधे, एगयओ तिप्पएसिए खंधे, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ" अथवा एकभाग में एक द्विप्रदेशी स्कन्ध होता है एक दूसरे भाग में एक त्रिप्रदेशी स्कन्ध होता है, और अन्य भागमें एक चतुष्प्रदेशिक स्कन्ध होता है। 'अहवा-तिन्नि तिप्पएसिया खंधा भवंति' अथवा-तीन स्कन्ध त्रिप्रदेशिक होते हैं। 'चउहा कज्जमाणे एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला, एगयओ छप्पएसिए खंधे भवइ" यह नौ प्रदेशों वाला स्कन्ध जब चार भागों में विभक्त किया जाता है-तब एक भाग में तीन परमाणुपुद्गल होते हैं- और दूसरे भाग में एक छह प्रदेशों वाला स्कन्ध होता है। 'अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला,

---

खंधा भवंति" અથવા એક પરમાણુ પુદ્ગલ રૂપ એક વિભાગ, અને ચાર ચાર પ્રદેશોવાળા બે સ્કંધો રૂપ બે વિભાગો થાય છે. "अहवा-एगयओ दुप्पएसिए खंधे, एगयओ तिप्पएसिए खंधे, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ" અથવા દ્વિપ્રદેશિક એક સ્કંધ રૂપ એક વિભાગ, ત્રિપ્રદેશિક એક સ્કંધ રૂપ બીજો વિભાગ અને ચાર પ્રદેશિક એક સ્કંધ ત્રીજો વિભાગ થાય છે. "अहवा-तिन्नि तिप्पएसिया खंधा भवंति" અથવા ત્રણ ત્રિપ્રદેશિક સ્કંધ રૂપ ત્રણ વિભાગ થાય છે. "चउहा कज्जमाणे एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला, एगयओ छप्पएसिए खंधे भवइ" જ્યારે તે નવ પ્રદેશિક સ્કંધના ચાર વિભાગો કરવામાં આવે છે, ત્યારે એક એક પરમાણુ પુદ્ગલવાળા ત્રણ વિભાગો અને છપ્રદેશિક એક સ્કંધ રૂપ એક વિભાગ થાય છે. "अहवा-एगयओ दो परमाणु-

खंधे भवइ' अथवा एकतः-अपरभागे द्विप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, 'अहवा एग यओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ तिप्पएसिए खंधे, एगयओ चउप्पएसिए खधे भवइ' अथवा एकतः-एकभागे द्वौ परमाणुपुद्गलौ भवतः, एकतः-अपरभागे त्रिप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, एकतः-अन्यभागे चतुष्प्रदेशिकः स्कन्धो भवति, 'अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दो दुप्पएसिया खंधा, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ' अथवा एकतः-एकभागे परमाणुपुद्गलो भवति, एकतः-अपरभागे द्वौ द्विप्रदेशिकौ स्कन्धौ भवतः, एकतः अन्यभागे चतुष्प्रदेशिकः स्कन्धो भवति, 'अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुप्पएसिए खंधे, एगयओ तिप्पएसिए खंधे भवइ' अथवा एकतः-एकभागे परमाणुपुद्गलो

एगयओ दुप्पएसिए खंधे, एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ,' अथवा-एक भाग में दो परमाणुपुद्गल होते हैं एक भाग में द्विप्रदेशिक स्कन्ध होता हैं, और एक अन्य भाग में पांच प्रदेशों वाला एक स्कंध होता है। 'अहवा-एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ तिप्पएसिए खंधे एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ, अथवा-एक भाग में दो परमाणु-पुद्गल होते हैं, दूसरे भाग में त्रिप्रदेशिक एक स्कन्ध होता है और अन्य भाग में चतुष्प्रदेशिक स्कन्ध होता है- 'अहवा एगयओ परमाणु पोग्गले, एगयओ दो दुप्पएसिया खंधा एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ', अथवा-एक भाग में एक परमाणुपुद्गल होता है, एक दूसरे भाग में दो द्विप्रदेशिक स्कंध होते है और अन्य भाग में एक चतुष्प्रदेशिक स्कन्ध होता है 'अहवा'-एगयओ परमाणुपोग्गले, दुप्पएसिए खंधे

पोग्गला, एगयओ दुप्पएसिए खंधे एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ" અથવા એક એક પરમાણુ પુદ્ગલવાળા બે વિભાગો, દ્વિપ્રદેશિક સ્કંધ ૩૫ એક વિભાગ અને પાંચ પ્રદેશિક સ્કંધ ૩૫ એક વિભાગ થાય છે. "अहवा-एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ तिप्पएसिए खंधे, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ" અથવા એક એક પુદ્ગલ પરમાણુવાળા બે વિભાગો, એક ત્રિપ્રદેશિક સ્કંધ ૩૫ એક વિભાગ અને ચાર પ્રદેશિક સ્કંધ ૩૫ એક વિભાગ થાય છે. "अहवा-एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दो दुप्पएसिया खंधा, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ" અથવા એક પરમાણુ પુદ્ગલ ૩૫ એક વિભાગ, દ્વિપ્રદેશિક બે સ્કંધ ૩૫ બે વિભાગો, અને ચાર પ્રદેશિક સ્કંધ ૩૫ એક વિભાગ થાય છે. "अहवा-एगयओ परमप्पुपोग्गले, एगयओ दुप्पएसिए खंधे, एगयओ दो तिप्पएसिया खंधा भवंति" અથવા એક પરમાણુ પુદ્ગલ ૩૫ એક

भवति, एकतः-अपरभागे द्विप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, एकतः-अन्यभागे द्वौ त्रिप्रदेशिकौ स्कन्धौ भवतः, 'अहवा एगयओ तिन्नि दुप्पएसिया खंधा, एगयओ तिप्पएसिए खंधे भवइ' अथवा एकतः-एकभागे त्रयो द्विप्रदेशिकाः स्कन्धा भवन्ति, एकतः-अपरभागे त्रिप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, 'पंचहा कज्जमाणे एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला, एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ' नव प्रदेशिकः स्कन्धः पञ्चधा क्रियमाणः एकतः-एकभागे चत्वारः परमाणुपुद्गला भवन्ति, एकतः-अपरभागे पञ्चप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, 'अहवा एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला, एगयओ दुप्पएसिए खंधे, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ' अथवा एकतः-एकभागे त्रयः परमाणुपुद्गला भवन्ति, एकतः-अपरभागे द्विप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, एकतः-अन्यभागे चतुष्प्रदेशिकः स्कन्धो भवति, "अहवा एगयओ तिन्नि

एगयओ दो तिप्पएसिया खंधा भवंति, अथवा-एक भाग में एक परमाणु पुद्गल होता है, एकभाग में एक द्विप्रदेशी स्कन्ध होता है और एक अन्य भाग में दो त्रिप्रदेशिक स्कन्ध होते हैं। 'अहवा-एगयओ तिन्नि दुप्पएसिया खंधा, एगयओ तिप्पएसिए खंधे भवइ' अथवा-एक भाग में तीन द्विप्रदेशिक स्कन्ध होते हैं, और दूसरे भाग में एक त्रिप्रदेशिक स्कन्ध होता है। 'पंचहा कज्जमाणे एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ' जब नौ प्रदेशवाले स्कन्ध को पांच हिस्सों में बांटा जाता है-तब एक तरफ चार परमाणुपुद्गल होते हैं—और दूसरी तरफ पांच प्रदेशोंवाला एक स्कन्ध होता है-'अहवा एगयओ तिन्नि परमाणु-पोग्गला एगयओ दुप्पएसिए खंधे, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ' अथवा-एक भाग में तीन परमाणुपुद्गल होते हैं, एक दूसरे भाग में द्विप्रदेशिक स्कन्ध होता है और अन्य

વિભાગ, એક દ્વિપ્રદેશિક સ્કંધ ૩૫ એક વિભાગ અને ત્રિપ્રદેશિક બે સ્કંધ ૩૫ બે વિભાગો થાય છે. "अहवा-एगयओ तिन्नि दुप्पएसिया खंधा, एगयओ तिप्पएसिए खंधे भवइ" અથવા દ્વિપ્રદેશિક ત્રણ સ્કંધ ૩૫ ત્રણ વિભાગો અને ત્રિપ્રદેશિક સ્કંધ ૩૫ એક વિભાગ થાય છે. "पंचहा कज्जमाणे एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला, एगयओ पंच पएसिए खंधे भवइ" તે નવપ્રદેશિક સ્કંધના જ્યારે પાંચ વિભાગો કરવામાં આવે છે, ત્યારે એક એક પુદ્ગલપરમાણુવાળા ચાર વિભાગો અને પાંચપ્રદેશિક સ્કંધ ૩૫ એક વિભાગ થાય છે. "अहवा-एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला, एगयओ दुप्पएसिए खंधे, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ" અથવા એક એક પરમાણુ પુદ્ગલવાળા ત્રણ વિભાગો, એક દ્વિપ્રદેશિક સ્કંધ અને એક ચાર પ્રદેશિક સ્કંધ થાય છે. "अहवा-एग-

परमाणुपोग्गला, एगयओ दो तिप्पएसिया खंधा भवंति' अथवा एकतःएकभागे त्रयः परमाणुपुद्गला भवन्ति, एकतः-अपरभागे द्वौ त्रिप्रदेशिकौ स्कन्धौ भवतः, "अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दो दुप्पएसिया खंधा, एगयओ तिप्पएसिए खंधे भवइ' अथवा एकतः-एकभागे द्वौ परमाणुपुद्गलौ भवतः, एकतः-अन्यभागे त्रिप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, 'अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ चत्तारि दुप्पएसिया खंधा भवंति' अथवा एकतः-एकभागे परमाणुपुद्गलो भवति, एकतः-अपरभागे चत्वारो द्विप्रदेशिकाः स्कन्धा भवन्ति, 'छहा कज्जमाणे एगयओ पंच परमाणुपोग्गला, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ' नवप्रदेशिकः स्कन्धः षोढा क्रियमाणः, एकतः-एकभागे पञ्चपरमाणुपुद्गला

भाग में चतुष्प्रदेशिक एक स्कन्ध होता है 'अहवा-एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला, एगयओ दो तिप्पएसिया खंधा भवंति, अथवा- एक भाग में तीन परमाणुपुद्गल होते हैं और दूसरे भाग में दो त्रिप्रदेशी स्कन्ध होते हैं। 'अहवा-एगयओ दो परमाणुपोग्गला एगयओ दो दुप्पएसिया खंधा भवंति, अथवा एक भाग में दो परमाणुपुद्गल होते हैं, और दूसरे भाग में दो द्विप्रदेशिक स्कन्ध होते हैं, तथा 'एगयओ तिप्पएसिए खंधे' और अन्य भाग में एक त्रिप्रदेशीस्कन्ध होता है। 'अहवा -एगयओ परमाणु पोग्गले, एगयओ चत्तारि दुप्पएसिया खंधा भवंति' अथवा-एक भाग में एक परमाणुपुद्गल होता है, दूसरे भाग में चार द्विप्रदेशिक स्कन्ध होते हैं। 'छहा कज्जमाणे एगयओ पंच परमाणुपोग्गला, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ' यह नवप्रदेशिक स्कन्ध जब छह भागों में विभक्त किया जाता है तब एक भाग में पांच परमाणु-

---

यओ तिन्नि परमाणुपोग्गला, एगयओ दो तिप्पएसिया खंधा भवंति" અથવા એક એક પરમાણુ પુદ્ગલવાળા ત્રણ વિભાગો અને ત્રિપ્રદેશિક બે સ્કંધ રૂપ બે વિભાગો થાય છે. "अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दो दुप्पएसिया खंधा, एगयओ तिप्पएसिए खंधे" અથવા એક એક પરમાણુ પુદ્ગલ રૂપ બે વિભાગો, દ્વિપ્રદેશિક બે સ્કંધ રૂપ બે વિભાગો અને ત્રિપ્રદેશિક એક સ્કંધ રૂપ એક વિભાગ થાય છે "अहवा-एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ चत्तारि दुप्पएसिया खंधा भवंति" અથવા એક પરમાણુ પુદ્ગલ રૂપ એક વિભાગ અને દ્વિપ્રદેશિક ચાર સ્કંધ રૂપ ચાર વિભાગો થાય છે. 'छहा कज्जमाणे एगयओ पंचपरमाणु पोग्गला, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ" તે નવ પ્રદેશિક સ્કંધના જ્યારે છ વિભાગો કરવામાં આવે છે, ત્યારે એક

भवन्ति, एकतः-अपरभागे चतुष्प्रदेशिकः स्कन्धो भवति, 'अहवा एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला, एगयओ दुप्पएसिए खंधे, एगयओ तिप्पएसिए खंधे भवइ' अथवा एकतः-एकभागे चत्वारः परमाणुपुद्गलाः भवन्ति, एकतः-अपरभागे द्विप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, एकतः-अन्यभागे त्रिप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, 'अहवा एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला, एगयओ तिन्नि दुप्पएसिया खंधा भवंति' अथवा एकतः-एकभागे त्रयः परमाणुपुद्गलाः भवन्ति, एकतः-अपरभागे त्रयो द्विप्रदेशिकाः स्कन्धा भवन्ति, 'सत्तहा कज्जमाणे एगयओ छ परमाणुपोग्गला, एगयओ तिप्पएसिए खंधे भवइ' नवप्रदेशिकः स्कन्धः सप्तधा क्रियमाणः, एकतः-एकभागे षट् परमाणुपुद्गला, भवन्ति, एकतः-अपरभागे त्रिप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, 'अहवा एगयओ पंच परमाणुपोग्गला एगयओ दो दुप्पए-

---

पुद्गल होते हैं, और दूसरे भाग में चार प्रदेशी स्कन्ध होता है। 'अहवा-एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला, एगयओ दुप्पसिए खंधे एगयओ तिप्पएसिए खंधे भवइ' अथवा-एक भाग में चार परमाणुपुद्गल होते हैं, एक भाग में द्विप्रदेशिक एक स्कन्ध होता है, तथा और दूसरे भाग में एक त्रिप्रदेशिक स्कन्ध होता है। 'अहवा-एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला, एगयओ दुप्पएसिया खंधा भवंति' अथवा एक भाग में तीन परमाणुपुद्गल होते हैं' एक दूसरे भाग में तीन द्विप्रदेशी स्कन्ध होते हैं-"सत्तहा कज्जमाणे-एगयओ छ परमाणुपोग्गला, एगयओ तिप्पएसिए खंधे भवइ' जब यह नौ प्रदेशोंवाला स्कन्ध सात विभागों में विभक्त किया जाता है-तब एक भाग में ६ परमाणुपुद्गल होते हैं और दूसरे भाग में त्रिप्रदेशीएक स्कन्ध होता है। 'अहवा-एगयओ पंच परमाणुपोग्गला

એક પરમાણુ પુદ્ગલવાળા પાંચ વિભાગો અને એક ચાર પ્રદેશિક સ્કંધ રૂપ એક વિભાગ થાય છે. "अहवा-एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला, एगयओ दुप्पएसिए खंधे, एगयओ तिप्पएसिए खंधे भवइ" અથવા એક એક પરમાણુ પુદ્ગલવાળા ચાર વિભાગો, દ્વિપ્રદેશિક એક સ્કંધરૂપ એક વિભાગ અને ત્રિપ્રદેશિક એક સ્કંધ રૂપ એક વિભાગ થાય છે. "अहवा-एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला, एगयओ तिन्नि दुप्पएसिया खंधा भवंति" અથવા એક એક પરમાણુ પુદ્ગલવાળા ત્રણ વિભાગો અને દ્વિપ્રદેશિક ત્રણ સ્કંધ રૂપ ત્રણ વિભાગો થાય છે. "सत्तहा कज्जमाणे एगयओ छ परमाणुपोग्गला, एगयओ तिप्पएसिए खंधे भवइ" તે નવ પ્રદેશિક સ્કંધના જ્યારે સાત વિભાગો કરવામાં આવે છે, ત્યારે એક એક પરમાણુ પુદ્ગલવાળા છ વિભાગો અને ત્રિપ્રદેશિક

सिया खंधा भवंति' अथवा एकतः-एकभागे पञ्च परमाणुपुद्गला भवन्ति, एकतः अपरभागे द्वौ द्विप्रदेशिकौ स्कन्धौ भवतः 'अट्ठहा कज्जमाणे एगयओ सत्त परमाणुपोग्गला, एगयओ दुप्पएसिए खंधे भवइ' नवप्रदेशिकः स्कन्धः अष्टधा क्रियमाणः, एकतः-एकभागे सप्त परमाणुपुद्गलाः, भवन्ति, एकतः-अपरभागे द्विप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, 'नवहा कज्जमाणे नव परमाणुपोग्गला भवंति' नवप्रदेशिकः स्कन्धो नवधा क्रियमाणो नवपरमाणुपुद्गलाः भवन्ति। गौतमः पृच्छति-'दस भंते! परमाणुपोग्गला जाव दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ नवपएसिए खंधे भवइ' हे भदन्त! दशपरमाणुपुद्गलाः

एगयओ दो दुप्पएसिया खंधा भवंति' अथवा एक भाग में पाँच परमाणु पुद्गल होते हैं और दूसरे एक भाग में दो द्विप्रदेशी स्कन्ध होते हैं। "अट्ठहा कज्जमाणे एगयओ सत्तपरमाणुपोग्गला एगयओ दुप्पएसिए खंधे भवइ" यह नौप्रदेशों वाला स्कन्ध जब आठ विभागों में विभक्त किया जाता है तब एक भाग में सात परमाणुपुद्गल होते हैं, और एक दूसरे भाग में एक द्विप्रदेशी स्कन्ध होता है। 'नवहा कज्जमाणे नव परमाणुपोग्गला हवंति' नौ प्रदेशोंवाला स्कन्ध जब नौ विभागों में विभक्त किया जाता है तब इसके विभक्त नौ परमाणुपुद्गल ही नौ विभाग होते हैं।

अब गौतम प्रभु से ऐसा पूछते हैं-'दस भंते! परमाणुपोग्गला जाव दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ नवपएसिए खंधे भवइ' हे भदन्त! दश परमाणुपुद्गल आपस में मिलते हैं-तब

એક સ્કંધ રૂપ એક વિભાગ થાય છે. "अहवा-एगयओ पंच परमाणुपोग्गला, एगयओ दो दुप्पएसिया खंधा भवंति" અથવા એક એક પરમાણુ પુદ્ગલવાળા પાંચ વિભાગો અને દ્વિપ્રદેશિક બે સ્કંધરૂપ બે વિભાગો થાય છે. "अट्ठहा कज्जमाणे एगयओ सत्त परमाणुपोग्गला, एगयओ दुप्पएसिए खंधे भवइ" તે નવ પ્રદેશિક સ્કંધના જ્યારે આઠ વિભાગ કરવામાં આવે છે, ત્યારે એક એક પરમાણુ પુદ્ગલવાળા સાત વિભાગો અને દ્વિપ્રદેશિક એક સ્કંધ રૂપ એક વિભાગ થાય છે. "नवहा कज्जमाणे नव परमाणुपोग्गला हवंति" તે નવ પ્રદેશિક સ્કંધના જ્યારે નવ વિભાગો કરાય છે, ત્યારે એક એક પરમાણુ પુદ્ગલવાળા નવવિભાગોમાં તે સ્કંધ વિભક્ત થઈ જાય છે

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-"दस भंते! परमाणुपोग्गला पुच्छा" હે ભગવન્! જ્યારે દસ પરમાણુ પુદ્ગલો એક બીજા સાથે મળી જાય છે, ત્યારે કઇ વસ્તુ ઉત્પન્ન થાય છે?

यावत् एकतः संहन्यन्ते, एकतः संहत्य किं स्वरूपं वस्तु भवति ? भगवानाह-हे गौतम ! दश परमाणुपुद्गलाः संहत्य दशप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, स दशप्रदेशिकः स्कन्धो भिद्यमानः द्विधापि, त्रिधापि, चतुर्धापि, पञ्चधापि, षोढापि, सप्तधापि, अष्टधापि, नवधाऽपि, दशधापि क्रियते, तत्र द्विधा क्रियमाणः एकतः-एकभागे परमाणुपुद्गलो भवति, एकतः-अपरभागे नवप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, 'अहवा एगयओ दुप्पएसिए खंधे, एगयओ अट्ठपएसिए खंधे भवइ' अथवा-एकतः-एकभागे द्विप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, एकतः-अपरभागे अष्टप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, 'एवं एक्केक्कं संचारेयव्वंति-जाव अहवा दो पंच पएसिया खंधा भवंति' एवं-पूर्वोक्तरीत्या, एकैकं संचारयितव्यम्-अभिलापक्रमेण वक्तव्यम्,

उनसे किस वस्तु का उत्पाद होता है ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-गौतम ! दश पुद्गलपरमाणु जब आपस में मिलते हैं-तब उनके मिलाप से एक दशप्रदेशिक स्कन्ध उत्पन्न होता है ! जब इस दशप्रदेशिक स्कन्ध का विभाग किया जाता है-तब इसके दो भी, तीन भी, चार भी, पांच भी, छह भी, सात भी, आठ भी, नौ भी और दश भी विभाग हो सकते हैं-जब इसके दो विभाग किये जाते हैं-तब एक भाग में एक परमाणुपुद्गल होता है, और दूसरे भाग में नौ प्रदेशोंवाला एक स्कन्ध होता है 'अहवा-एगयओ दुप्पएसिए खंधे, एगयओ अट्ठपएसिए खंधे भवइ' अथवा-एक भाग में द्विप्रदेशी स्कन्ध होता है, और एक दूसरे भाग में अष्टप्रदेशिक एक स्कन्ध होता है-'एवं एक्केक्कं संचारेयव्वंति जाव अहवा दो पंचपएसिया, खंधा भवंति' इस प्रकार

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-"जाव दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ नवपएसिए खंधे भवइ" હે ગૌતમ ! જ્યારે દસ પરમાણુ પુદ્ગલો એક બીજા સાથે મળી જાય છે, ત્યારે તેમના સંયોગથી એક દસપ્રદેશિક સ્કંધ ઉત્પન્ન થાય છે. જ્યારે તેનાં વિભાગો કરવામાં આવે છે. ત્યારે બે, ત્રણ, ચાર, પાંચ, છ, સાત, આઠ, નવ અથવા દસ વિભાગો થઈ શકે છે. જ્યારે તેનાં બે વિભાગ કરવામાં આવે છે, ત્યારે તેના એક વિભાગમાં એક પરમાણુ પુદ્ગલ હોય છે અને બીજા વિભાગમાં નવ પ્રદેશોવાળો એક સ્કંધ હોય છે. "अहवा-एगयओ दुप्पएसिए खंधे, एगयओ अट्ठ पएसिए खंधे भवइ" અથવા એક ભાગ દ્વિપ્રદેશિક સ્કંધ રૂપ હોય છે અને બીજો ભાગ અષ્ટપ્રદેશિક સ્કંધરૂપ હોય છે. "एवं एक्केक्कं संचारेयव्वंति जाव अहवा दो पंच पएसिया खंधा भवंति" આ ક્રમે પૂર્વોક્ત પદ્ધતિ પ્રમાણે એક એક પ્રદેશની

यावत्-पूर्वोक्तं सर्वं संग्राह्यम्, अन्तिममभिलापमाह-अथवा द्वौ पञ्चप्रदेशिकौ स्कन्धौ भवतः, 'तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला एगयओ अट्ठपएसिए खंधे भवइ' दशप्रदेशिकः स्कन्धः त्रिधा क्रियमाणः एकतः-एकभागे द्वौ परमाणुपुद्गलौ भवतः, एकतः-अपरभागे अष्टप्रदेशिकः स्कन्धो भवति "अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुप्पएसिए खंधे, एगयओ सत्तपएसिए खंधे भवइ' अथवा एकतः-एकभागे परमाणुपुद्गलो भवति, एकतः-अपरभागे द्विप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, एकतः-अन्यभागे सप्तप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, "अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ तिप्पएसिए खंधे भवइ, एगयओ छप्पएसिए खंधे भवइ' अथवा एकतः-एकभागे परमाणुपुद्गलो भवति, एकतः-अपरभागे

पूर्वोक्तरीति के अनुसार एक एक की वृद्धि करना चाहिये-यावत् अथवा दो पांच प्रदेशिक स्कंध होते हैं, यह इसका अन्तिम भंग है। 'तिहाकज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला एगयओ अट्ठपएसिए खंधे भवइ' जब इस दशप्रदेशी स्कन्ध को तीन भागो में बांटा जाता है-तब एक भाग में दो परमाणुपुद्गल होते हैं, और दूसरे भाग में आठ प्रदेशोंवाला एक स्कन्ध होता है! 'अहवा-एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुप्पएसिए खंधे, एगयओ सत्तप्पएसिए खंधे भवइ' अथवा-एक भाग में एक परमाणुपुद्गल होता है, एक दूसरे भाग में द्विप्रदेशी स्कन्ध होता है, और अन्यभाग में एक सप्तप्रदेशी स्कन्ध होता है! 'अहवा-एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ तिप्पएसिए खंधे भवइ, एगयओ छप्पएसिए खंधे भवइ' अथवा एक भाग में एक परमाणुपुद्गल होता है,

---

વૃદ્ધિ કરીને બાકીના ત્રણ વિકલ્પો પણ બનાવી લેવા જોઇએ છેલ્લો વિકલ્પ આ પ્રમાણે બનશે-" અથવા પાંચપ્રદેશિક બે સ્કંધ રૂપ બે વિભાગોમાં તે દસપ્રદેશિક સ્કંધ વિભક્ત થાય છે. " तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ अट्ठपएसिए खंधे, भवइ " તે દસ પ્રદેશિક સ્કંધના જ્યારે ત્રણ વિભાગો કરવામાં આવે છે, ત્યારે એક એક પુદ્ગલ પરમાણુવાળા બે વિભાગો અને એક અષ્ટપ્રદેશિક સ્કંધરૂપ એક વિભાગ થાય છે. " अहवा-एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ दुप्पएसिए खंधे एगयओ सत्तप्पएसिए खंधे भवइ " અથવા એક પરમાણુ પુદ્ગલવાળો એક વિભાગ, દ્વિપ્રદેશિક એક સ્કંધરૂપ બીજો વિભાગ અને સપ્તપ્રદેશિક એક સ્કંધરૂપ ત્રીજો વિભાગ થાય છે. अहवा-एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ तिप्पएसिए खंधे भवइ, एगयओ छप्पएसिए खंधे भवइ " અથવા એક પરમાણુ પુદ્ગલ રૂપ એક વિભાગ, ત્રિપ્રદેશિક

त्रिप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, एकतः-अन्यभागे षट् प्रदेशिकः स्कन्धो भवति, 'अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ चउप्पएसिए, एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ' अथवा एकतः एकभागे परमाणुपुद्गलो भवति, एकतः-अपरभागे चतुष्प्रदेशिकः स्कन्धो भवति, एकतः पञ्चप्रदेशिकः स्कन्धो भवति 'अहवा एगयओ दुप्पएसिए खंधे भवइ, एगयओ दो चउप्पएसिया खंधा भवंति' अथवा एकतः-एकभागे द्विप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, एकतः-अपरभागे द्वौ चतुष्प्रदेशिकौ स्कन्धौ भवतः 'अहवा एगयओ दो तिप्पएसिया खंधा भवंति, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ' अथवा एकतः-एकभागे द्वौ त्रिप्रदेशिकौ स्कन्धौ भवतः, एकतः-अपरभागे चतुष्प्रदेशिकः स्कन्धो भवति, 'चउहा कज्जमाणे एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला, एगयओ सत्तपएसिए खंधे भवइ' दशप्रदेशिकः स्कन्धश्चतुर्धा क्रियमाणः, एकतः-एकभागे त्रयः परमाणुपुद्गलाः भवन्ति, एकतः-

---

एक दूसरे भाग में त्रिप्रदेशिक स्कन्ध होता है और अन्यभाग में एक षट्प्रदेशिक स्कन्ध होता है। 'अहवा-एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ चउप्पएसिए, एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ' अथवा एक भाग में एक परमाणुपुद्गल होता है, एक दूसरे भाग में चतुष्प्रदेशिक स्कन्ध होता है, और अन्य भाग में एक पंच प्रदेशिक स्कन्ध होता है। 'अहवा-एगयओ दुप्पएसिए खंधे भवइ' एगयओ दो चउप्पएसिया खंधा भवंति' अथवा-एक भाग में द्विप्रदेशिक स्कन्ध होता है एवं एक दूसरे भाग में दो चतुष्प्रदेशिक स्कन्ध होते हैं। 'अहवा-एगयओ दो तिप्पएसिया खंधा भवंति, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ' अथवा-एक भाग में दो त्रिप्रदेशिक स्कन्ध होते हैं, और एक दूसरे भाग में चतुष्प्रदेशिक स्कन्ध होता है 'चउहा कज्जमाणे एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला, एगयओ सत्तपएसिए खंधे भवइ' यह दशप्रदेशिक

સ્કંધ ૩૫ બીજો વિભાગ અને છપ્રદેશિક સ્કંધ ૩૫ ત્રીજો વિભાગ થાય છે. "अहवा-एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ चउप्पएसिए, एगयओ पंच पएसिए खंधे भवइ" અથવા એક પરમાણુ પુદ્ગલ ૩૫ વિભાગ, ચાર પ્રદેશિક સ્કંધ. ૩૫ બે વિભાગ અને પાંચ પ્રદેશિક સ્કંધ૩૫ ત્રીજો વિભાગ બને છે. "अहवा-एगयओ दुप्पएसिए खंधे भवइ, एगयओ दो चउप्पएसिया, खंधा भवंति" અથવા દ્વિપ્રદેશિક સ્કંધ ૩૫ એક વિભાગ અને ચાર પ્રદેશિક બે સ્કંધ ૩૫ બે વિભાગ થાય છે. "अहवा-एगयओ दो तिप्पएसिया खंधा भवंति, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ" અથવા બે ત્રિપ્રદેશિક સ્કંધ ૩૫ બે વિભાગો અને ચાર પ્રદેશિક એક સ્કંધ ૩૫ ત્રીજો વિભાગ થાય છે. "चउहा कज्जमाणे एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला, एगयओ सत्तपएसिए खंधे भवइ" જ્યારે તે

अपरभागे सप्तप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, 'अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दुप्पएसिए खंधे, एगयओ छप्पएसिए खंधे भवइ' अथवा एकतः-एकभागे द्वौ परमाणुपुद्गलौ भवतः, एकतः-अपरभागे द्विप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, एकतः-अन्यभागे षट् प्रदेशिकः स्कन्धो भवति, 'अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ तिप्पएसिए खंधे, एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ' अथवा एकतः-एकभागे द्वौ परमाणुपुद्गलौ भवतः, एकतः-अपरभागे त्रिप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, एकतः-अन्यभागे पञ्चप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, 'अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दो चउप्पएसिया खंधा भवंति' अथवा एकतः-एकभागे द्वौ परमाणुपुद्गलौ भवतः, एकतः-अपरभागे द्वौ चतुष्प्रदेशिकौ स्कन्धौ भवतः,

---

स्कन्ध जब चार भागों में विभक्त किया जाता है-तब एक भाग में तीन परमाणुपुद्गल होते हैं और एक दूसरे भाग में सातप्रदेशोंवाला स्कन्ध होता है 'अहवा-एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दुप्पएसिए खंधे, एगयओ छप्पएसिए खंधे भवइ' अथवा-एक भाग में दो परमाणुपुद्गल होते हैं, एक दूसरे भाग में द्विप्रदेशिक स्कन्ध होता है, और अन्यभाग में छह प्रदेशिक एक स्कन्ध होता है 'अहवा-एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ तिप्पएसिए खंधे, एगयओ पंच पएसिए खंधे भवइ' अथवा-एक भाग में दो परमाणु पुद्गल होते हैं, एक दूसरे भाग में त्रिप्रदेशी स्कन्ध होता है और अन्यभाग में पांच प्रदेशोंवाला स्कन्ध होता है। 'अहवा-एगयओ परमाणुपोग्गला, एगयओ दो चउप्पएसिया खंधा भवंति' अथवा-एक भाग में दो परमाणुपुद्गल होते हैं, एवं एकभाग में दो चतुष्प्रदेशिक स्कन्ध होते हैं।

દસ પ્રદેશિક સ્કંધના ચાર વિભાગ કરવામાં આવે છે, ત્યારે એક એક પરમાણુ પુદ્ગલવાળા ત્રણ વિભાગો અને સપ્તપ્રદેશિક સ્કંધ રૂપ એક વિભાગ થાય છે. "अहवा-एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दुप्पएसिए खंधे, एगयओ छप्पएसिए खंधे भवइ" અથવા એક એક પરમાણુ પુદ્ગલ રૂપ બે વિભાગો, દ્વિપ્રદેશિક એક સ્કંધ રૂપ ત્રીજો વિભાગ અને છપ્રદેશિક સ્કંધ રૂપ ચોથો વિભાગ થાય છે. "अहवा-एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ तिप्पएसिए खंधे, एगयओ पंचपएसिए खंधे, भवइ" અથવા એક એક પરમાણુ પુદ્ગલવાળા બે વિભાગો, ત્રિપ્રદેશક સ્કંધ રૂપ એક વિભાગ અને પાંચ પ્રદેશિક સ્કંધ રૂપ એક વિભાગ થાય છે, "अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दो चउप्पएसिया खंधा भवंति" અથવા એક એક પરમાણુ પુદ્ગલવાળા બે વિભાગો, અને ચાર પ્રદેશિક બે સ્કંધ રૂપ,

'अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ दुप्पएसिए, एगयओ तिप्पएसिए, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ' अथवा एकतः-एकभागे परमाणुपुद्गलो भवति, एकतः अपरभागे द्विप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, एकतः-अन्यभागे त्रिप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, एकतः-अन्यभागे चतुष्प्रदेशिकः स्कन्धो भवति, 'अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ तिन्नि तिप्पएसिया खंधा भवंति,' अथवा एकतः-एकभागे परमाणुपुद्गलो भवति, एकतः-अपरभागे त्रयस्त्रिप्रदेशिकाः स्कन्धा भवन्ति, 'अहवा एगयओ तिन्नि दुप्पएसिया खंधा, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ' अथवा एकतः-एकभागे त्रयो द्विप्रदेशिकाः स्कन्धा भवन्ति, एकतः-अपरभागे चतुष्प्रदेशिकः स्कन्धो भवति, 'अहवा एगयओ दो दुप्पएसिया खंधा, एगयओ दो तिप्पएसिया खंधा भवंति' अथवा एकतः-एकभागे द्वौ द्विप्रदेशिकौ स्कन्धौ

'अहवा-एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुप्पएसिए, एगयओ तिप्पएसिए एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ' अथवा-एकभाग में एक परमाणुपुद्गल होता है, एकभाग में द्विप्रदेशिक स्कन्ध होता है एक भाग में त्रिप्रदेशिक स्कंध होता है, अन्यभाग में एक चतुष्प्रदेशिक स्कन्ध होता है। 'अहवा-एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ तिन्नि तिप्पएसिया खंधा भवंति' अथवा-एक भाग में एक परमाणुपुद्गल होता है एवं एक भाग में तीन त्रिप्रदेशिक स्कन्ध होते हैं-'अहवा-एगयओ तिन्नि दुप्पएसिया खंधा एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ' अथवा-एकभाग में तीन द्विप्रदेशिक स्कन्ध होते हैं, एवं एक भाग में एक चतुष्प्रदेशिक स्कंध होता है। 'अहवा-एगयओ दो दुप्पएसिया खंधा, एगयओ दो तिप्पएसिया खंधा भवंति' अथवा-एकभाग में दो

એ વિભાગો થાય છે. "अहवा-एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुप्पएसिए, एगयओ तिप्पएसिए, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ" અથવા એક પરમાણુ પુદ્ગલ રૂપ એક વિભાગ, દ્વિપ્રદેશિક સ્કંધ રૂપ બીજો વિભાગ, ત્રિપ્રદેશિક સ્કંધરૂપ ત્રીજો વિભાગ અને ચાર પ્રદેશિક સ્કંધરૂપ ચોથો વિભાગ થાય છે. "अहवा-एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ तिन्नि तिप्पएसिया खंधा भवति" અથવા એક પરમાણુ પુદ્ગલવાળો એક વિભાગ અને ત્રણ ત્રિપ્રદેશિક સ્કંધ રૂપ ત્રણ વિભાગ થાય છે "अहवा-एगयओ तिन्नि दुप्पएसिया खंधा, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ" અથવા દ્વિપ્રદેશિક ત્રણ સ્કંધરૂપ ત્રણ વિભાગો અને ચાર પ્રદેશિક સ્કંધ રૂપ એક વિભાગ થાય છે.

"अहवा-एगयओ दो दुप्पएसिया खंधा, एगयओ दो तिप्पएसिया खंधा भवंति" અથવા દ્વિપ્રદેશિક બે સ્કંધ રૂપ બે વિભાગો અને ત્રિપ્રદેશિક બે

भवतः, एकतः-अपरभागे द्वौ त्रिप्रदेशिकौ स्कन्धौ भवतः, 'पंचहा कज्जमाणे एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला, एगयओ छप्पएसिए खंधे भवइ' पञ्चधा क्रियमाणे दशप्रदेशिकः स्कन्धः, एकतः-एकभागे चत्वारः परमाणुपुद्गला भवन्ति, एकतः-अपरभागे षट्प्रदेशिकः स्कन्धो भवति, 'अहवा एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला, एगयओ दुप्पएसिए खंधे भवइ, एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ' अथवा एकतः-एकभागे त्रयः परमाणुपुद्गला भवन्ति, एकतः-अपरभागे द्विप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, एकतः-अन्यभागे पञ्चप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, 'अहवा एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला एगयओ तिप्पएसिए, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ' अथवा एकतः-एकभागे त्रयः परमाणुपुद्गलाः भवन्ति, एकतः-अपरभागे त्रिप्रदेशिकः स्कन्धो भवति एकतः-अन्यभागे चतुष्प्रदेशिकः स्कन्धो भवति, 'अहवा एगयओ

द्विप्रदेशिक स्कन्ध होते हैं और एक दूसरे भाग में दो त्रिप्रदेशिक स्कन्ध होते हैं-'पंचहा कज्जमाणे चत्तारि परमाणुपोग्गला, एगयओ छपएसिए खंधे भवइ' यह दशप्रदेशिक स्कंध जब पांच भागों में विभक्त किया जाता है-तब एकभाग में चार परमाणुपुद्गग होते हैं, एवं एकभाग में छहप्रदेशिक स्कन्ध होता है 'अहवा-'एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला, एगयओ दुप्पएसिए खंधे भवइ' अथवा-एक भाग में तीन परमाणुपुद्गल होते हैं, और एकभाग में द्विप्रदेशिक स्कंध होता है, 'एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ' एवं एक अन्यभाग में पंच प्रदेशिक स्कंध होता है।' अहवा-एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला, एगयओ तिप्पएसिए, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ' अथवा एकभाग में तीन परमाणुपुद्गल होते हैं, एक दूसरे भाग में एक त्रिप्रदेशिक स्कन्ध होता है, और एक अन्यभाग में एक चतुष्प्रदेशिक स्कन्ध होता

સ્કંધ ૩૫ બે વિભાગો થાય છે. "पंचहा कज्जमाणे एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला, एगयओ छप्पएसिए खंधे भवइ" તે દશ પ્રદેશિક સ્કંધના જ્યારે પાંચ વિભાગો કરવામાં આવે છે, ત્યારે એક પરમાણુ પુદ્ગલવાળા ચાર વિભાગો અને ૬ પ્રદેશિક એક સ્કંધ ૩૫ એક વિભાગ થાય છે. "अहवा-एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला, एगयओ दुप्पएसिए खंधे भवइ, एगयओ पंच पएसिए खंधे भवइ" અથવા એક એક પરમાણુ પુદ્ગલવાળા ત્રણ વિભાગો, દ્વિપ્રદેશિક સ્કંધ ૩૫ એક વિભાગ અને પાંચ પ્રદેશિક સ્કંધ ૩૫ એક વિભાગ બને છે. "अहवा-एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला, एगयओ तिप्पएसिए, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ" અથવા એક એક પુદ્ગલ પરમાણુવાળા ત્રણ વિભાગો, ત્રિપ્રદેશિક સ્કંધ ૩૫ એક વિભાગ અને ચાર પ્રદેશિક સ્કંધ૩૫

दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दुप्पएसिए खंधे, भवइ' एगयओ दो तिप्पएसिया खंधा भवंति' अथवा एकतः-एकभागे द्वौ परमाणुपुद्गलौ भवतः एकतः-अपरभागे द्विप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, एकतः-अन्यभागे द्वौ त्रिप्रदेशिकौ स्कन्धौ भवतः; 'अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ तिन्नि दुप्पएसिया खंधा, एगयओ तिप्पएसिए खंधे, भवइ' अथवा एकतः-एकभागे परमाणुपुद्गलो भवति, एकतः-अपरभागे त्रयो द्विप्रदेशिकाः स्कन्धाः भवन्ति, एकतः-अन्यभागे त्रिप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, 'अहवा पञ्च दुप्पएसिया खंधा भवंति,' अथवा द्विपञ्चप्रदेशिकाः स्कन्धा भवन्ति, 'छहाकज्जमाणे एगयओ पंचपरमाणुपोग्गला एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ' दशप्रदेशिकः स्कन्धः षोढा क्रियमाणः, एकतः-एकभागे पञ्च-

---

है। 'अहवा-एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दुप्पएसिए खंधे भवइ, एगयओ दो तिप्पएसिया खंधा भवंति' अथवा-एकभाग में दो परमाणुपुद्गल होते हैं, एक दूसरे भाग में एक द्विप्रदेशिक स्कन्ध होता है और एक एक अन्य भाग में दो त्रिप्रदेशिक स्कन्ध होते है। 'अहवा-एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ तिन्नि दुप्पएसिया खंधा, एगयओ तिप्पएसिए खंधे भवइ' अथवा-एकभाग में एक परमाणुपुद्गल होता है, एकभाग में तीन द्विप्रदेशिक स्कन्ध होते हैं, और एक अन्यभाग में एक त्रिप्रदेशिक स्कन्ध होता है। 'अहवा-पंच दुप्पएसिया खंधा भवंति' अथवा-पांच द्विप्रदेशी स्कंध होते हैं। 'छहा कज्जमाणे एगयओ पंच परमाणुपोग्गला, एगयओ पंच पएसिए खंधे भवइ,' यह दशप्रदेशिक स्कंध जब छह विभागों में विभक्त किया जाता है-तब एक भाग में

એક વિભાગ થાય છે. "अहवा-एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दुप्पएसिए खंधे भवइ, एगयओ दो तिप्पएसिया खंधा भवंति" અથવા એક એક પરમાણુ પુદ્ગલવાળા બે વિભાગો, દ્વિપ્રદેશિક સ્કંધ રૂપ એક વિભાગ અને ત્રિપ્રદેશિક બે સ્કંધ રૂપ બે વિભાગો પડી જાય છે. "अहवा-एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ तिन्नि दुप्पएसिया खंधा, एगयओ तिप्पएसिए खंधे भवइ" અથવા એક પરમાણુ પુદ્ગલરૂપ એક વિભાગ, ત્રણ દ્વિપ્રદેશિક સ્કંધ રૂપ ત્રણ વિભાગ અને ત્રિપ્રદેશિક એક સ્કંધ રૂપ એક વિભાગ થાય છે. "अहवा-पंच दुप्पएसिया खंधा, भवंति" અથવા દ્વિપ્રદેશિક પાંચ સ્કંધ રૂપ પાંચ વિભાગો થાય છે. "छहा कज्जमाणे एगयओ पंच परमाणुपोग्गला, एगयओ पंच पएसिए खंधे भवइ" દસ પ્રદેશિક સ્કંધના જ્યારે છ વિભાગો કરવામાં આવે છે, ત્યારે એક એક પરમાણુ પુદ્ગલવાળા પાંચ વિભાગો અને પાંચ

परमाणुपुद्गला भवन्ति, एकतः-अपरभागे पञ्चप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, 'अहवा एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला, एगयओ दुप्पएसिए खंधे एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ' अथवा एकतः-अपरभागे चत्वारः परमाणुपुद्गलाः भवन्ति, एकतः-अपरभागे द्विप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, एकतः-अन्यभागे चतुष्प्रदेशिकः स्कन्धो भवति, 'अहवा एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला, एगयओ दो तिप्पएसिया खंधा भवंति, अथवा एकतः-एकभागे चत्वारः परमाणुपुद्गला भवन्ति, एकतः-अपरभागे द्वौ त्रिप्रदेशिकौ स्कन्धौ भवत', 'अहवा एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला, एगयओ दो दुप्पएसिया खंधा भवंति एगयओ तिप्पएसिए खंधे, भवइ' अथवा एकतः-एकभागे त्रयः परमाणुपुद्गलाः भवन्ति, एकतः-अन्यभागे द्वौ द्विप्रदेशिकौ स्कन्धौ भवतः एकतः-अन्यभागे त्रिप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, 'अहवा एगयओ दो पर-

---

पांच परमाणुपुद्गल होते हैं, अपरभाग में पांचप्रदेशोंवाला एक स्कंध होता है, 'अहवा-एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला, एगयओ दुप्पएसिए खंधे, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ' अथवा-एक भाग में चार परमाणुपुद्गल होते हैं, एक भाग में एक द्विप्रदेशी स्कंध होता है, और एक अन्यभाग में एक चतुष्प्रदेशिक स्कन्ध होता है। 'अहवा-एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला, एगयओ दो तिप्पएसिया खंधा भवंति' अथवा-एकभाग में चार परमाणुपुद्गल होते हैं, दूसरे भाग में दो त्रिप्रदेशिक स्कन्ध होते हैं, 'अहवा-एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला, एगयओ दो दुप्पएसिया खंधा भवंति एगयओ तिप्पएसिए खंधे' अथवा-एकभाग में तीन परमाणुपुद्गल होते हैं, एक दूसरे भाग में दो द्विप्रदेशी स्कंध होते हैं और अन्यभाग में एक त्रिप्रदेशी स्कंध होता है 'अहवा-एगयओ दो पर-

---

પ્રદેશિક એક સ્કંધ ૩૫ છઠ્ઠો વિભાગ થાય છે. "अहवा-एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला, एगयओ दुप्पएसिए खधे, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ" અથવા એક એક પરમાણુ પુદ્ગલ રૂપ ચાર વિભાગો, દ્વિપ્રદેશિક સ્કંધ રૂપ એક વિભાગ અને ચાર પ્રદેશિક સ્કંધ રૂપ એક વિભાગ થાય છે. "अहवा-एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला, एगयओ दो तिप्पएसिया खंधा भवंति" અથવા એક એક પરમાણુ પુદ્ગલવાળા ચાર વિભાગો અને ત્રિપ્રદેશિક બે સ્કંધ રૂપ બે વિભાગો થાય છે. "अहवा-एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला, एगयओ दुप्पएसिया खंधा, एगयओ तिप्पएसिए खंधे" અથવા એક એક પરમાણુ પુદ્ગલવાળા ત્રણ વિભાગો, બે દ્વિપ્રદેશિક સ્કંધ રૂપ બે વિભાગો અને એક ત્રિપ્રદેશિક સ્કંધ રૂપ એક વિભાગ થાય છે. "अहवा-एगयओ दो पर-

माणुपोग्गला एगयओ चत्तारि दुप्पएसिया खंधा भवंति' अथवा एकतः-एकभागे द्वौ परमाणुपुद्गलौ भवतः, एकतः-अपरभागे चत्वारो द्विप्रदेशिकाः स्कन्धा भवन्ति, "सत्तहा कज्जमाणे एगयओ छपरमाणुपोग्गला, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ" दशप्रदेशिकः स्कन्धः, सप्तधा क्रियमाणः, एकतः-एकभागे षट् परमाणुपुद्गलाः भवन्ति, एकतः-अपरभागे चतुष्प्रदेशिकः स्कन्धो भवति, 'अहवा एगयओ पंच-परमाणुपोग्गला, एगयओ दुप्पएसिए, एगयओ तिप्पएसिए खंधे भवइ' अथवा एकतः-एकभागे पञ्च परमाणुपुद्गलाः भवन्ति, एकतः-अपरभागे द्विप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, एकतः-अन्यभागे त्रिप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, 'अहवा एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला, एगयओ तिन्नि दुप्पएसिया खंधा भवंति' अथवा एकतः-एकभागे चत्वारः परमाणुपुद्गला भवन्ति, एकतः-अपरभागे त्रयः द्विप्रदेशिकाः स्कन्धा भवन्ति।

माणुपोग्गला, एगयओ चत्तारि दुप्पएसिया खंधा भवंति' अथवा-एक-भाग में दो परमाणुपुद्गल होते हैं, एक दूसरे भाग में चार द्विप्रदेशिक स्कंध होते हैं, 'सत्तहा कज्जमाणे एगयओ छ परमाणुपोग्गला, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ' इस दशप्रदेशिक स्कन्ध के जब सातविभाग किये जाते हैं, तब एक भाग में षट् परमाणुपुद्गल होते हैं, और दूसरे भाग में एक चतुष्प्रदेशिक स्कंध होता है। 'अहवा-एगयओ पंच पर-माणुपोग्गला, एगयओ दुप्पएसिए, एगयओ तिप्पएसिए खंधे भवइ' अथवा-एकभाग में पांच परमाणुपुद्गल होते हैं, एक भाग में एक द्विप्रदेशिक स्कन्ध होता है और एक अन्यभाग में एक त्रिप्रदेशिक स्कन्ध होता है। 'अहवा-एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला, एगयओ तिन्नि दुप्पएसिया खंधा भवंति' अथवा-एकभाग में चार परमाणुपुद्-

---

માણુપોગ્ગલા, 'एगयओ चत्तारि दुप्पएसिया खंधा भवंति" અથવા એક એક પરમાણુ પુદ્ગલવાળા બે વિભાગો અને દ્વિપ્રદેશિક ચાર સ્કંધ રૂપ ચાર વિભાગો થાય છે. "सत्तहा कज्जमाणे एगयओ छ परमाणुपोग्गला, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ" દસ પ્રદેશિક સ્કંધના જ્યારે સાત વિભાગો કરવામાં આવે છે, ત્યારે એક એક પરમાણુ પુદ્ગલવાળા છ વિભાગો અને એક ચાર પ્રદેશિક સ્કંધ રૂપ એક વિભાગ થાય છે. "अहवा-एगयओ पंच परमाणु-पोग्गला, एगयओ दुप्पएसिए, एगयओ तिप्पएसिए खंधे भवइ" અથવા એક એક પરમાણુ પુદ્ગલવાળા પાંચ વિભાગો, દ્વિપ્રદેશિક એક સ્કંધ રૂપ એક વિભાગ અને ત્રિપ્રદેશિક સ્કંધ રૂપ એક વિભાગ થાય છે. "अहवा-एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला, एगयओ तिन्नि दुप्पएसिया खंधा भवंति" અથવા એક

'अट्ठहा कज्जमाणे एगयओ सत्त परमाणुपोग्गला, एगयओ तिप्पएसिए खंधे भवइ' दश प्रदेशिकः स्कन्धः अष्टधा क्रियमाणः एकतः-एकभागे सप्त परमाणुपुद्गलाः भवन्ति, एकतः-अपरभागे त्रिप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, 'अहवा एगयओ छ परमाणुपोग्गला, एगयओ दो दुप्पएसिया खंधा भवंति,' अथवा एकतः-एकभागे षट्परमाणुपुद्गलाः भवन्ति, एकतः-अपरभागे द्वौ द्विप्रदेशिकौ स्कन्धौ भवतः, 'नवहा कज्जमाणे एगयओ अट्ठ परमाणुपोग्गला, एगयओ दुप्पएसिए खंधे भवइ' नवधा क्रियमाणो दशप्रदेशिकः स्कन्धः, एकतः-एकभागे अष्ट परमाणुपुद्गलाः भवन्ति, एकतः-अपरभागे द्विप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, 'दसहा कज्जमाणे दस परमाणुपोग्गला भवंति' दशप्रदेशिकः स्कन्धो दशधा क्रियमाणः दश परमाणुपुद्गलाः भवन्ति।

गल होते हैं, और एक दूसरे भाग में तीन द्विप्रदेशी स्कन्ध होते हैं। 'अट्ठहा कज्जमाणे एगयओ सत्तपरमाणुपोग्गला, एगयओ तिप्पएसिए खंधे भवइ' इस दशप्रदेशिक स्कन्ध के जब आठ विभाग किये जाते हैं तब एक भाग में सातपरमाणुपुद्गल होते हैं, दूसरे भाग में एक त्रिप्रदेशिक स्कन्ध होता है 'अहवा-एगयओ छ परमाणुपोग्गला, एगयओ दो दुप्पएसिया खंधा भवंति' अथवा-एकभाग में ६ परमाणुपुद्गल होते हैं, और एक दूसरे भाग में दो द्विप्रदेशिक स्कन्ध होते हैं। 'नवहा-कज्जमाणे एगयओ अट्ठपरमाणुपोग्गला, एगयओ दुप्पएसिए खंधे भवइ' जब यह दशप्रदेशिक स्कन्ध नौ विभागों में विभक्त किया जाता है तब एक भाग में आठ परमाणुपुद्गल होते हैं और एक दूसरे भाग में एक द्विप्रदेशिक स्कन्ध होता है 'दसहा कज्जमाणे दस परमा-

---

એક પરમાણુ પુદ્ગલવાળા ચાર વિભાગો અને દ્વિપ્રદેશિક ત્રણ સ્કંધ ૩૫ ત્રણ વિભાગો થાય છે. 'अट्ठहा कज्जमाणे एगयओ सत्त परमाणुपोग्गला, एगयओ तिप्पएसिए खंधे भवइ" તે દસ પ્રદેશિક સ્કંધના જ્યારે આઠ વિભાગ કરવામાં આવે છે, ત્યારે એક એક પરમાણુ પુદ્ગલવાળા સાત વિભાગો અને ત્રિપ્રદેશિક સ્કંધ ૩૫ એક વિભાગ થાય છે. "अहवा-एगयओ छ परमाणुपोग्गला, एगयओ दो दुप्पएसिया खंधा भवंति" અથવા એક એક પરમાણુ પુદ્ગલવાળા ૬ ભાગો અને દ્વિપ્રદેશિક બે સ્કંધ ૩૫ બીજા બે વિભાગો થાય છે. "नवहा कज्जमाणे एगयओ अट्ठ परमाणुपोग्गला, एगयओ दुप्पएसिए खंधे भवइ" તે દસ પ્રદેશિક સ્કંધના જ્યારે નવ વિભાગ કરવામાં આવે છે, ત્યારે એક એક પુદ્ગલ પરમાણુવાળા આઠ વિભાગો અને દ્વિપ્રદેશિક એક સ્કંધ ૩૫ એક વિભાગ થાય છે. "दसहा कज्जमाणे दस परमाणुपोग्गला

गौतमः पृच्छति–'संखेज्जा भंते ! परमाणुपोग्गला एगयओ साहन्नंति, एगयओ साहण्णित्ता किं भवइ ?' हे भदन्त ! संख्येयाः परमाणुपुद्गलाः एकतः एकतया संहन्यन्ते, संहता भवन्ति, संघी भवन्तीत्यर्थः, एकतः–एकत्वेन संहत्य–संघीभूय किं स्वरूपं वस्तु भवति ? इति प्रश्नः, भगवानाह–'गोयमा ! संखेज्जपएसिए खंधे भवइ' हे गौतम ! संख्येयाः परमाणुपुद्गलाः एकत्वेन संहत्य संख्येयप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, 'से भिज्जमाणे दुहावि जाव दसहा वि संखेज्जहा वि कज्जइ' स खलु संख्येयप्रदेशिकः स्कन्धो भिद्यमानो द्विधापि, यावत्–त्रिधापि, चतुर्धापि, पञ्चधापि, षोढापि, सप्तधापि, अष्टधापि, नवधापि, दशधापि, संख्येयधापि क्रियते, तत्र

णुपोग्गला, भवंति' जब यह दश प्रदेशिकस्कंध दश विभागों में विभक्त किया जाता है तब दश परमाणुपुद्गल ही इसके दश विभाग होते हैं।

अब गौतमस्वामी प्रभु से ऐसा पूछते हैं–'संखेज्जा भंते ! परमाणुपोग्गला एगयओ साहन्नंति, एगयओ साहण्णित्ता किं भवइ' हे भदन्त ! संख्यात परमाणुपुद्गल जब एकरूप से आपस में मिलते हैं– तब उनसे क्या उत्पन्न होता है ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं–'गोयमा! संखेज्जपएसिए खंधे भवइ' हे गौतम ! संख्यातपुद्गलपरमाणु जब आपस में मिल जाते हैं तब उनसे संख्यात प्रदेशी एक स्कंध उत्पन्न होता है। 'से भिज्जमाणे दुहा वि जाव दसहा वि संखेज्जहा वि कज्जइ' जब इस संख्यातप्रदेशी स्कंध का विभाग किया जाता है तब इसके दो भी, तीन भी, चार भी, पांच भी, छह भी, सात भी, आठ भी, नौ

भवंति" જ્યારે તે દસ પ્રદેશિક સ્કંધના દસ વિભાગો કરવામાં આવે છે ત્યારે દસે વિભાગમાં એક એક પરમાણુ પુદ્ગલ હોય છે.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન–" संखेज्जा भंते ! परमाणुपोग्गला एगयओ साहन्नंति, एगयओ साहण्णित्ता किं भवइ ?" હે ભગવન્ ! સંખ્યાત પરમાણુ પુદ્ગલો જ્યારે એક બીજા સાથે મળી જાય છે, ત્યારે તેમના સંયોગથી શું ઉત્પન્ન થાય છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર–" गोयमा ! संखेज्जपएसिए खंधे भवइ" હે ગૌતમ ! જ્યારે સંખ્યાત પરમાણુ પુદ્ગલો એક બીજા સાથે મળી જાય છે, ત્યારે તેમના સંયોગથી સંખ્યાત પ્રદેશી એક સ્કંધ ઉત્પન્ન થાય છે. " से भिज्जमाणे दुहा वि जाव दसहा वि संखेज्जहा वि कज्जइ" આ સંખ્યાત પ્રદેશી સ્કંધના જ્યારે વિભાગો કરવામાં આવે છે, ત્યારે બે, ત્રણ, ચાર, પાંચ, છ, સાત, આઠ, નવ, દસ અથવા સંખ્યાત વિભાગોમાં તે

'दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ' संख्येयप्रदेशिकः स्कन्धो द्विधाक्रियमाणः एकतः-एकभागे परमाणुपुद्गलो भवति, एकतः-अपरभागे संख्येयप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, 'अहवा एगयओ दुप्पएसिए खंधे एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ' अथवा एकतः-एकभागे द्विप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, एकतः-अपरभागे संख्येयप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, 'एवं अहवा एगयओ तिप्पएसिए, एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ' एवंरीत्या अथवा एकतः-एकभागे त्रिप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, एकतः-अपरभागे संख्येयप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, 'एवं जाव, अहवा एगयओ दसपएसिए खंधे, एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ' एवं-पूर्वोक्तरीत्या, यावत्-एकतश्चतुष्प्रदेशिकः, पञ्चप्रदेशिकः

भी, दश एवं संख्यात भी विभाग हो सकते हैं। 'दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ' जब इस संख्यातप्रदेशी स्कंध के दो विभाग किये जाते हैं तब एकभाग में एक परमाणुपुद्गल होता है और अपरभाग में एक संख्यातप्रदेशी स्कन्ध होता है 'अहवा-एगयओ दुप्पएसिए खंधे, एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ' अथवा-एक भाग में एक द्विप्रदेशी स्कन्ध होता है और अपरभाग में संख्यातप्रदेशी स्कन्ध होता है, 'एवं अहवा एगयओ तिप्पएसिए, एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ' इस रीति से अथवा एकभाग में त्रिप्रदेशी स्कन्ध होता है और अपरभाग में संख्यातप्रदेशी स्कंध होता है 'एवं जाव अहवा-एगयओ दसपएसिए खंधे भवइ, एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ' इसी पूर्वोक्तरीति के अनुसार

વિભક્ત થઈ જાય છે. "दुहा कज्जमाणे 'एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ" જ્યારે તે સંખ્યાત પ્રદેશી સ્કંધના બે વિભાગ કરવામાં આવે છે, ત્યારે એક ભાગમાં એક પરમાણુપુદ્ગલ અને બીજા ભાગમાં સંખ્યાત પ્રદેશી એક સ્કંધ હોય છે. "अहवा-एगयओ दुप्पएसिए खंधे, एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ" અથવા દ્વિપ્રદેશિક સ્કંધ રૂપ એક વિભાગ અને સંખ્યાત પ્રદેશી સ્કંધ રૂપ બીજો વિભાગ થાય છે. "एवं अहवा एगयओ तिप्पएसिए, एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ" અથવા ત્રિપ્રદેશિક સ્કંધ રૂપ એક વિભાગ અને સંખ્યાત પ્રદેશી સ્કંધ રૂપ બીજો વિભાગ થાય છે. "एवं जाव अहवा-एगयओ दस पएसिए खंधे भवइ, एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ', આ પૂર્વોક્ત પદ્ધતિ અનુસાર પહેલા વિભાગમાં એક એક પ્રદે-

षट्प्रदेशिकः, सप्तप्रदेशिकः, अष्टप्रदेशिकः, नवप्रदेशिकश्च स्कन्धो भवति एकतः-अपरभागेतु सर्वत्रैव संख्येयप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, अथवा एकतः-एकभागे दशप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, एकतः-अपरभागे संख्येयप्रदेशिकः स्कन्धो भवति 'अहवा दो संखेज्जपएसिया खंधा भवंति' अथवा द्वौ संख्येयप्रदेशिकौ स्कन्धौ भवतः, 'तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ' संख्येयप्रदेशिकः स्कन्ध स्त्रिधा क्रियमाणः, एकभागे द्वौ परमाणु-

---

यावत्-एक भाग में चतुष्प्रदेशिक स्कन्ध होता है, अपरभाग में संख्यातप्रदेशी स्कंध होता है, अथवा-एकभाग में पंच प्रदेशी स्कंध होता है, और अपरभाग में एक संख्यातप्रदेशी स्कन्ध होता है अथवा-एक भाग में षट्प्रदेशी स्कन्ध होता है, और अपरभाग में संख्यातप्रदेशी स्कन्ध होता है, अथवा-एकभाग में सप्तप्रदेशी स्कन्ध होता है और अपरभाग में संख्यातप्रदेशी स्कन्ध होता है। अथवा एकभाग में अष्टप्रदेशी स्कन्ध होता है और अपरभाग में एक संख्यातप्रदेशी स्कन्ध होता है अथवा एक भाग में नौ प्रदेशी स्कन्ध होता है और अपरभाग में संख्यातप्रदेशी स्कंध होता है अथवा-एकभाग में दश प्रदेशी स्कन्ध होता है और अपरभाग में संख्यात प्रदेशी स्कंध होता है 'अहवा-दो संखेज्जपएसिया खंधा भवंति' अथवा-दो संख्यातप्रदेशिक स्कन्ध होते हैं 'तिहा-कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ' यह संख्यातप्रदेशी स्कंध जब तीन भागों में

शनी वृद्धि કરતાં આકીના વિકલ્પો આ પ્રમાણે બનશે–અથવા એક ભાગમાં ચાર પ્રદેશિક સ્કંધ અને બીજા ભાગમાં સંખ્યાત પ્રદેશી સ્કંધ હોય છે. અથવા એક ભાગમાં પાંચ પ્રદેશી સ્કંધ અને બીજા ભાગમાં સંખ્યાત પ્રદેશી સ્કંધ હોય છે. અથવા એક ભાગમાં ૬ પ્રદેશી સ્કંધ અને બીજા ભાગમાં સંખ્યાત પ્રદેશી સ્કંધ હોય છે એથવા એક ભાગમાં સાત પ્રદેશી સ્કંધ અને બીજા ભાગમાં સંખ્યાત પ્રદેશી સ્કંધ હોય છે અથવા એક ભાગમાં આઠ પ્રદેશિક સ્કંધ અને બીજા ભાગમાં સંખ્યાત પ્રદેશી સ્કંધ હોય છે. અથવા એક ભાગમાં નવ પ્રદેશિક સ્કંધ અને બીજા ભાગમાં સંખ્યાત પ્રદેશી સ્કંધ હોય છે. અથવા એક ભાગમાં દસ પ્રદેશિક સ્કંધ અને બીજા ભાગમાં સંખ્યાત પ્રદેશી સ્કંધ હોય છે "अहवा दो संखेज्जपएसिया खंधा भवंति" અથવા બે સંખ્યાત પ્રદેશી સ્કંધો રૂપે પણ તે સ્કંધ વિભક્ત થઈ જાય છે.

"तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ" તે સંખ્યાત પ્રદેશી સ્કંધના જ્યારે ત્રણ વિભાગો કરવામાં

पुद्गलौ भवतः, एकतः-अपरभागे संख्येयप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, 'अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ दुप्पएसिए खंधे भवइ' एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ' अथवा एकतः-एकभागे परमाणुपुद्गलो भवति, एकतः-अपरभागे द्विप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, एकतः-अन्यभागे संख्येयप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, 'अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ तिप्पएसिए खंधे, एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ' अथवा एकतः-एकभागे परमाणुपुद्गलो भवति, एकतः-अपरभागे त्रिप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, एकतः-अन्यभागे संख्येयप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, 'एवं जाव अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दस पएसिए खंधे भवइ' एवं-पूर्वोक्तरीत्या, यावत्-एकतः परमाणुपुद्गलो भवति, एकतः चतुः

विभक्त किया जाता है-तब एकभाग में दो परमाणुपुद्गल होते हैं, और एक दूसरे भाग में संख्यातप्रदेशिक स्कन्ध होता है 'अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ दुप्पएसिए खंधे भवइ' अथवा एकभाग में एक परमाणुपुद्गल होता है और अपरभाग में द्विप्रदेशिक एक स्कंध होता है तथा 'एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ' अन्यभाग में संख्यातप्रदेशिक एक स्कन्ध होता है। 'अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ तिप्पएसिए खंधे, एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ' अथवा-एक भाग में एकपरमाणुपुद्गल होता है, अपरभाग में एक त्रिप्रदेशिक स्कन्ध होता है, और अन्यभाग में एक संख्यातप्रदेशिक स्कन्ध होता है। 'एवं जाव अहवा-एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दसपएसिए खंधे भवइ' एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ' इसी प्रकार से यावत् अथवा-एकभाग में एक परमाणुपुद्गल होता है, अपरभाग में

આવે છે, ત્યારે એક એક પરમાણુ પુદ્ગલવાળા બે વિભાગો અને સંખ્યાત પ્રદેશી સ્કંધ રૂપ ત્રીજો વિભાગ થાય છે. " अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुप्पएसिए खंधे, एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ " અથવા એક વિભાગમાં એક પરમાણુ પુદ્ગલ, બીજા વિભાગમાં દ્વિપ્રદેશિક સ્કંધ અને ત્રીજા વિભાગમાં સંખ્યાત પ્રદેશી સ્કંધ હોય છે. " अहवा-एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ तिप्पएसिए खंधे, एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे, અથવા એક વિભાગમાં એક પરમાણુ પુદ્ગલ, બીજા વિભાગમાં ત્રિપ્રદેશિક સ્કંધ અને ત્રીજા વિભાગમાં સંખ્યાત પ્રદેશી સ્કંધ હોય છે. " एवं जाव-अहवा-एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दसपएसिए खंधे भवइ, एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ " એજ પ્રમાણે બીજા વિભાગમાં એક એક પ્રદેશની વૃદ્ધિ કરવાથી બાકીના વિકલ્પો આ પ્રમાણે બનશે-અથવા એક વિભાગમાં એક પરમાણુ

पञ्चषट्सप्ताष्टनवप्रदेशिकः स्कन्धो वा भवति, एकतश्च संख्येयप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, अथवा एकतःएकभागे परमाणुपुद्गलो भवति, एकतः-अपरभागे दशमदेशिकः स्कन्धो भवति, एकतः-अन्यभागे संख्येयप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, 'अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दो संखेज्जपएसिया खंधा भवंति' अथवा

चतुष्प्रदेशिक एक स्कन्ध होता है और अन्यभाग में संख्यात प्रदेशिक स्कंध होता है अथवा-एक भाग में एक परमाणुपुद्गल होता है, अपरभाग में पंचप्रदेशी स्कन्ध होता है और अन्यभाग में संख्यातप्रदेशी स्कन्ध होता है, अथवा-एकभाग में एक परमाणुपुद्गल होता है, अपरभाग में छहप्रदेशी स्कन्ध होता है, और अन्यभाग में एक संख्यातप्रदेशी स्कन्ध होता है अथवा-एकभाग में एक परमाणुपुद्गल होता है, अपरभाग में सप्तदेशी स्कंध होता है, और अन्यभाग में संख्यातप्रदेशी स्कन्ध होता है अथवा-एकभाग में एकपरमाणुपुद्गल होता है, अपरभाग में आठप्रदेशी एक स्कन्ध होता है और अन्यभाग में संख्यातप्रदेशी एक स्कन्ध होता है, अथवा-एक भाग में एक परमाणुपुद्गल होता है, अपरभाग में नौ प्रदेशी एक स्कन्ध होता है, और अन्यभाग में संख्यातप्रदेशी एक स्कंध होता है, अथवा एकभाग में एक परमाणुपुद्गल होता है, अपरभाग में दशप्रदेशी एक स्कन्ध होता है और अन्यभाग में संख्यातप्रदेशी एक स्कन्ध होता है, 'अहवा-एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दो संखेज्जपएसिया खंधा भवंति'

પુદ્ગલ, બીજા વિભાગમાં ચાર પ્રદેશિક સ્કંધ અને ત્રીજા વિભાગમાં સંખ્યાત પ્રદેશી સ્કંધ હોય છે. અથવા-એક વિભાગમાં એક પરમાણુ પુદ્ગલ, બીજા વિભાગમાં પાંચ પ્રદેશિક અને ત્રીજા વિભાગમાં સંખ્યાત પ્રદેશી સ્કંધ હોય છે. અથવા-એક વિભાગમાં એક પરમાણુ પુદ્ગલ, બીજા વિભાગમાં છ પ્રદેશિક સ્કંધ અને ત્રીજા વિભાગમાં સંખ્યાત પ્રદેશી સ્કંધ હોય છે. અથવા એક ભાગમાં એક પરમાણુ પુદ્ગલ, બીજા ભાગમાં સાત પ્રદેશિક સ્કંધ અને ત્રીજા ભાગમાં સંખ્યાત પ્રદેશી સ્કંધ હોય છે. અથવા-એક ભાગમાં એક પરમાણુ પુદ્ગલ, બીજા ભાગમાં આઠ પ્રદેશિક સ્કંધ અને ત્રીજા ભાગમાં સંખ્યાત પ્રદેશી સ્કંધ હોય છે. અથવા એક ભાગમાં એક પરમાણુ પુદ્ગલ, બીજા ભાગમાં નવ પ્રદેશિક સ્કંધ અને ત્રીજા ભાગમાં સંખ્યાત પ્રદેશી સ્કંધ હોય છે. અથવા એક ભાગમાં એક પરમાણુ પુદ્ગ, બીજામાં દસ પ્રદેશિક સ્કંધ અને ત્રીજા ભાગમાં સંખ્યાત પ્રદેશી સ્કંધ હોય છે. "अहवा-एगयओ

एकतः-एकभागे परमाणुपुद्गलो भवति, एकतः-अपरभागे द्वौ संख्येयप्रदेशिकौ स्कन्धौ भवतः, 'अहवा एगयओ दुप्पएसिए खंधे, एगयओ दो संखेज्जपएसिया खंधा भवंति' अथवा एकतः-एकभागे द्विप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, एकतः-अपरभागे द्वौ संख्येयप्रदेशिकौ स्कन्धौ भवतः 'एवं जाव अहवा एगयओ दसपएसिए खंधे, एगयओ दो संखेज्जपएसिया खंधा भवंति' एवं-पूर्वोक्तरीत्या यावत्-एकतः त्रिचतुः पञ्चषट्सप्ताष्टनवप्रदेशिकश्च स्कन्धो भवति, एकतो-द्वौ संख्येयप्रदेशिकौ च

अथवा-एकभाग में एक परमाणुपुद्गल होता है, और अपरभाग में दो संख्यातप्रदेशिक स्कन्ध होते हैं। 'अहवा-एगयओ दुप्पएसिए खंधे, एगयओ दो संखेज्जपएसिया खंधा भवंति' अथवा-एकभाग में एक द्विप्रदेशिक स्कन्ध होता है, और अपरभाग में दो संख्यातप्रदेशिक स्कन्ध होते हैं-'एवं जाव अहवा-एगयओ दसपएसिए खंधे, एगयओ दो संखेज्जपएसिया खंधा भवंति' इसी पूर्वोक्त रीति के अनुसार एक भाग में त्रिप्रदेशी स्कन्ध होता है, और अपरभाग में दो संख्यात प्रदेशी स्कन्ध होते हैं, अथवा-एक भाग में चतुष्प्रदेशी स्कंध और अपरभाग में दो संख्यातप्रदेशी स्कंध, अथवा एकभाग में पंचप्रदेशी स्कंध और अपरभाग में दो संख्यातप्रदेशी स्कन्ध, अथवा एक भाग में छह प्रदेशी स्कंध और अपरभाग में दो संख्यातप्रदेशी स्कंध, अथवा एकभाग में सात प्रदेशी स्कंध और अपरभाग में दो संख्यातप्रदेशी स्कंध, अथवा-

परमाणुपोग्गले, एगयओ दो संखेज्जपएसिया खंधा भवंति" અથવા એક ભાગમાં એક પરમાણુ પુદ્ગલ હોય છે અને બાકીના બે ભાગમાં સંખ્યાત પ્રદેશી બે સ્કંધ હોય છે. "अहवा-एगयओ दुप्पएसिए खंधे, एगयओ दो संखेज्जपएसिया खंधा भवंति" અથવા દ્વિપ્રદેશિક સ્કંધ રૂપ એક વિભાગ અને સંખ્યાત પ્રદેશી બે સ્કંધ રૂપ બે વિભાગ પડે છે. "एवं जाव अहवा-एगयओ दसपएसिए खंधे, एगयओ दो संखेज्जपएसिया खंधा भवंति" આ પૂર્વોક્ત પદ્ધતિ અનુસાર પહેલા વિભાગમાં એક એક પ્રદેશની વૃદ્ધિ કરવાથી બાકીના વિકલ્પો આ પ્રમાણે બને છે-અથવા એકભાગમાં ત્રિપ્રદેશિક સ્કંધ અને બાકીના બે ભાગોમાં સંખ્યાત પ્રદેશી બે સ્કંધ હોય છે. અથવા એક ભાગમાં ચાર પ્રદેશિક સ્કંધ અને બાકીના બે ભાગોમાં સંખ્યાત પ્રદેશી બે સ્કંધ હોય છે. અથવા એક ભાગમાં પાંચ પ્રદેશી એક સ્કંધ અને બાકીના બે ભાગોમાં સંખ્યાત પ્રદેશી બે સ્કંધ હોય છે. અથવા એક ભાગમાં છ પ્રદેશિક એક સ્કંધ અને બાકીના બે ભાગોમાં સંખ્યાત પ્રદેશી બે સ્કંધ હોય છે. અથવા-એક ભાગમાં સાત પ્રદેશિક એક સ્કંધ અને બાકીના બે

स्कन्धौ भवतः, अथवा एकतः-एकभागे दशप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, एकतः-अपरभागे द्वौ संख्येयप्रदेशिकौ स्कन्धौ भवतः 'अहवा तिन्नि संखेज्जपएसिया खंधा भवंति' अथवा त्रयः संख्येयप्रदेशिकाः स्कन्धाः भवन्ति, 'चउहा कज्जमाणे एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला, एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ' संख्येयप्रदेशिकः स्कन्धश्चतुर्धा क्रियमाणः एकतः-एकभागे त्रयः परमाणुपुद्गलाः भवन्ति एकतः-अपरभागे संख्येयप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, 'अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला एगयओ दुप्पएसिए खंधे, एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ' अथवा एकतः-एकभागे द्वौ परमाणुपुद्गलौ भवतः, एकतः-अपरभागे द्विप्रदेशिकः स्कन्धो

एक भाग में आठ प्रदेशी स्कन्ध और अपरभाग में दो संख्यातप्रदेशी स्कंध, अथवा एक भाग में नौ प्रदेशी स्कन्ध और अपरभाग में दो संख्यात प्रदेशी स्कन्ध, एवं एकभाग में दशप्रदेशी स्कंध और अपरभाग में दो संख्यात प्रदेशी स्कन्ध होते हैं। 'अहवा तिन्नि संखेज्जपएसिया खंधा भवंति' अथवा-तीन संख्यातप्रदेशिक स्कंध होते हैं। 'चउहा-कज्जमाणे एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला, एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ' जब संख्यात प्रदेशिक स्कंध को चार भागों में विभक्त किया जाता है, तब एकभाग में तीन परमाणुपुद्गल होते हैं, और अपरभाग में संख्यातप्रदेशिक एक स्कंध होता है 'अहवा-एगयओ दो परमाणुपुग्गला, एगयओ दुप्पएसिए खंधे, एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ' अथवा-एक भाग में दो परमाणुपुद्गल होते हैं, अपरभाग में एक द्विप्रदेशी

ભાગોમાં સંખ્યાત પ્રદેશી બે સ્કંધ હોય છે અથવા એક ભાગમાં અષ્ટપ્રદેશિક એક સ્કંધ અને બીજા બે ભાગોમાં સંખ્યાત પ્રદેશી બે સ્કંધ હોય છે. અથવા એક ભાગમાં નવ પ્રદેશિક એક સ્કંધ અને બાકીના બે ભાગોમાં સંખ્યાત પ્રદેશી બે સ્કંધ હોય છે અને બાકીના બે ભાગોમાં સંખ્યાત પ્રદેશી બે સ્કંધ હોય છે "अहवा तिन्नि संखेज्जपएसिया खंधा भवंति" અથવા ત્રણે વિભાગો ત્રણ સંખ્યાત પ્રદેશી સ્કંધો રૂપ હોય છે.

"चउहा कज्जमाणे एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला, एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ" તે સંખ્યાત પ્રદેશી સ્કંધના જ્યારે ચાર વિભાગો કરવામાં આવે છે, ત્યારે એક એક પરમાણુ પુદ્ગલવાળા ત્રણ વિભાગો અને સંખ્યાત પ્રદેશી એક સ્કંધ રૂપ ચોથો વિભાગ થાય છે. "अहवा-एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दुप्पएसिए खंधे, एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ" અથવા એક એક પરમાણુ પુદ્ગલવાળા બે વિભાગો, દ્વિપ્રદેશિક એક સ્કંધ

भवति, 'अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ तिप्पएसिए खंधे, एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ' अथवा एकतः-एकभागे द्वौ परमाणुपुद्गलौ भवतः एकतः-अपरभागे द्विप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, एकतः-अन्यभागे संख्येयप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, 'अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ तिप्पएसिए खंधे, एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ' अथवा एकतः-एकभागे द्वौ परमाणुपुद्गलौ भवतः, एकतः-अपरभागे त्रिप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, एकतः-अन्यभागे संख्येयप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, 'एवं जाव अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दसपएसिए, एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ' एवंपूर्वोक्तरीत्या, यावत्-एकतो द्वौ परमाणुपुद्गलौ भवतः, एकतः-चतुः पञ्चषट्सप्ताष्टनवप्रदेशिकश्च स्कन्धो भवति, एकतः संख्येयप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, अथवा एकतः-एकभागे द्वौ परमाणुपुद्गलौ भवतः, एकतः-अन्यभागे दशप्रदेशिकः

स्कन्ध होता है, और अन्यभाग में संख्यातप्रदेशी एक स्कन्ध होता है। 'अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ तिप्पएसिए खंधे, एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ' अथवा-एकभाग में दो परमाणुपुद्गल होते हैं, अन्यभाग में त्रिप्रदेशी एक स्कन्ध होता है और अपरभाग में संख्यातप्रदेशी एक स्कन्ध होता है, 'एवं जाव अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दस पएसिए, एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ' इसी पूर्वोक्तरीति के अनुसार यावत् एकभाग में दो परमाणुपुद्गल होते हैं, अपरभाग में चार पांच, छह, सात, आठ, नौ प्रदेशी स्कन्ध होता है-और अन्यभाग में संख्यातप्रदेशी स्कन्ध होता है

અને સંખ્યાત પ્રદેશી એક સ્કંધ, આ પ્રકારના ચાર વિભાગો થાય છે. "अहवा-एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ तिप्पएसिए खंधे, एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ" અથવા એક એક પરમાણુ પુદ્ગલવાળા બે વિભાગો, ત્રિપ્રદેશિક એક સ્કંધ રૂપ ત્રીજો વિભાગ અને સંખ્યાત પ્રદેશી સ્કંધ રૂપ ચોથો વિભાગ થાય છે. "एवं जाव अहवा-एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दसपएसिए, एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ" આ પૂર્વોકત પદ્ધતિ અનુસાર ત્રીજા વિભાગમાં એક એક પ્રદેશની વૃદ્ધિ કરવી અને બાકીના વિભાગો પહેલાના વિભાગ પ્રમાણે જ સમજી લેવા આ રીતે બીજા સાત વિકલ્પો બનશે જેમ કે-અથવા એક એક પરમાણુ પુદ્ગલવાળા બે વિભાગો, ચાર, પાંચ, છ, સાત આઠ અથવા નવ પ્રદેશવાળા એક સ્કંધ રૂપ ત્રીજો વિભાગ અને સંખ્યાત પ્રદેશી સ્કંધ રૂપ ચોથો વિભાગ થાય છે.

स्कन्धो भवति, एकतः-अपरभागे संख्येयप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, 'अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दो संखेज्जपएसिया खंधा भवंति' "अथवा-एकतः-एकभागे द्वौ परमाणुपुद्गलौ भवतः, एकत-अपरभागे द्वौ संख्येयप्रदेशिकौ स्कन्धौ भवतः, 'अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुप्पएसिए, एगयओ दो संखेज्जपएसिया खंधा भवंति' अथवा एकतः-एकभागे परमाणुपुद्गलो भवति, एकतः-अपरभागे द्विप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, एकतः-अन्यभागे द्वौ संख्येयप्रदेशिकौ स्कन्धौ भवतः, 'जाव अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दसपएसिए खंधे, एगयओ दो संखेज्जपएसिया खंधा भवंति' यावत्-एकतः परमाणुपुद्गलो भवति, एकतः त्रिप्रदेशिकः, चतुष्प्रदेशिकः, पञ्चप्रदेशिकः षट्प्रदेशिकः,

---

अथवा एक भाग में दो परमाणुपुद्गल होते हैं, अपर भागमें एक दशप्रदेशी स्कन्ध होता है और अन्य भाग में एक संख्यातप्रदेशी स्कंध होता है, (अहवा-एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दो संखेज्जपएसिया खंधा भवंति,) अथवा एक भाग में दो परमाणुपुद्गल होते हैं, और अपरभाग में दो संख्यातप्रदेशी स्कन्ध होते हैं, 'अहवा-एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुप्पएसिए एगयओ दो संखेज्जपएसिया खंधा भवंति' अथवा-एकभाग में एक परमाणुपुद्गल होता है, एक भाग में एक द्विप्रदेशी स्कंध होता है, और एक भाग में दो संख्यात प्रदेशी स्कंध होते हैं, 'जाव अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दसपएसिए खंधे, एगयओ दो संखेज्जपएसिया खंधा भवंति' यावत् अथवा एक परमाणुपुद्गल होता है, एक भाग में त्रिप्रदेशिक, चतुष्प्रदेशिक, पंचप्रदेशिक, छह-

---

અથવા એક એક પરમાણુ પુદ્ગલવાળા બે વિભાગો, દસ પ્રદેશિક સ્કંધ રૂપ ત્રીજો વિભાગ અને સંખ્યાત પ્રદેશી સ્કંધ રૂપ ચોથો વિભાગ થાય છે. "अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दो संखेज्जपएसिया खंधा भवंति" અથવા એક એક પરમાણુ પુદ્ગલવાળા બે વિભાગો અને સંખ્યાત પ્રદેશી બે સ્કંધરૂપ બીજા બે વિભાગો થાય છે, "अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुप्पएसिए, एगयओ दो संखेज्जपएसिया खंधा भवंति" અથવા એક પરમાણુપુદ્ગલવાળો પહેલો વિભાગ, દ્વિપ્રદેશિક એક સ્કંધ રૂપ બીજો વિભાગ અને સંખ્યાતપ્રદેશી સ્કંધરૂપ ત્રીજો અને ચોથો વિભાગ બને છે, "जाव अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दसपएसिए खंधे, एगयओ दो संखेज्ज पएसिया खंधा भवंति" અથવા-એક ભાગમાં એક પરમાણુપુદ્ગલ, બીજા ભાગમાં ત્રિપ્રદેશિક અથવા ચાર પ્રદેશિક, અથવા પાંચ પ્રદેશિક, અથવા છ

सप्तप्रदेशिकः, अष्टप्रदेशिकः, नवप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, एकतश्च द्वौ संख्येयप्रदेशिकौ स्कन्धौ भवतः, अथवा एकतः-एकभागे परमाणुपुद्गलो भवति, एकतः-अपरभागे दशप्रदेशिकः स्कन्धो भवति; एकतः-अन्यभागे द्वौ संख्येयप्रदेशिकौ स्कन्धौ भवतः, 'अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ तिन्नि संखेज्जपएसिया खंधा भवंति' अथवा एकतः-एकभागे परमाणुपुद्गलो भवति, एकतः-अपरभागे त्रयः संख्येयप्रदेशिकाः स्कन्धा भवन्ति, 'अहवा एगयओ दुप्पएसिए खंधे, एगयओ तिन्नि संखेज्जपएसिया खंधा भवंति' अथवा एकतः-एकभागे द्विप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, एकतः-अपरभागे त्रयः संख्येयप्रदेशिकाः स्कन्धा भवन्ति, 'जाव अहवा एगयओ दसपएसिए, एगयओ तिन्नि संखेज्जपएसिया भवंति' यावत्-एकतस्त्रिप्रदेशिकः, चतुःप्रदेशिकः, पञ्चप्रदेशिकः, षट्प्रदेशिकः, सप्तप्रदेशिकः, अष्ट-

---

प्रदेशिक, सातप्रदेशिक, आठप्रदेशिक, नौप्रदेशिक, स्कंध होता है, और एक भाग में दो संख्यातप्रदेशी स्कन्ध होते हैं। 'अथवा-एक भाग में एक परमाणुपुद्गल होता है, अपरभागमें एक दशप्रदेशी स्कंध होता है और अन्य भाग में दो संख्यात प्रदेशी स्कंध होते हैं, 'अहवा-एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ तिन्नि संखेज्जपएसिया खंधा भवंति' अथवा-एकभाग में एक परमाणुपुद्गल होता है, और अपर भाग में तीन संख्यात-प्रदेशी स्कन्ध होते हैं। 'अहवा-एगयओ दुप्पएसिए खंधे एगयओ तिन्नि संखेज्जपएसिया खंधा भवंति' अथवा-एक भाग में द्विप्रदेशी स्कन्ध होता है और अपरभाग में तीन संख्यातप्रदेशी स्कन्ध होते हैं। 'जाव 'अहवा-एगयओ दसपएसिए, एगयओ तिन्नि संखेज्जपएसिया खंधा भवंति' अथवा एक भाग में त्रिप्रदेशिक, चतुष्प्रदेशिक, पञ्चप्रदेशिक, षट्प्रदे-

---

પ્રદેશિક, અથવા સાત પ્રદેશિક, અથવા આઠ પ્રદેશિક અથવા નવ પ્રદેશિક સ્કંધ, અને ત્રીજા અને ચોથા વિભાગમાં બે સંખ્યાત પ્રદેશી સ્કંધ હોય છે, અથવા એક વિભાગમાં એક પરમાણુ પુદ્ગલ, બીજા વિભાગમાં દસ પ્રદેશિક એક સ્કંધ અને બાકીના બે વિભાગોમાં સંખ્યાત પ્રદેથી બે સ્કંધ હોય છે, "अहवा-एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ तिन्नि संखेज्जपएसिया खधा भवंति" અથવા એક પરમાણુ પુદ્ગલ રૂપ એક વિભાગ અને ત્રણ સંખ્યાત પ્રદેશી સ્કંધ રૂપ ત્રણ વિભાગો થાય છે, "अहवा-एगयओ दुप्पएसिए खंधे एगयओ तिन्नि संखेज्जपएसिया खंधा भवति" અથવા એક ભાગમાં દ્વિપ્રદેશિક એક સ્કંધ હોય છે અને બાકીના ત્રણ ભાગો ત્રણ સંખ્યાત પ્રદેશી સ્કંધ રૂપ હોય છે, "जाव अहवा-एगयओ दसपएसिए, एगयओ तिन्नि संखेज्जपएसिया खंधा भवंति" અથવા-એક ભાગમાં એક ત્રિપ્રદેશિક, ચાર પ્રદેશિક,

प्रदेशिकः, नवप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, एकतः त्रयः संख्येयप्रदेशिकाः स्कन्धाः भवन्ति, अथवा एकतः-एकभागे दशप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, एकतः—अपरभागे त्रयः संख्येयप्रदेशिकाः स्कन्धा भवन्ति, 'अहवा चत्तारि संखेज्जपएसिया खंधा भवंति' अथवा चत्वारः संख्येयप्रदेशिकाः स्कन्धा भवन्ति, 'एवं एएणं कमेणं पंचगसंजोगो वि भाणियव्वो जाव नवगसंजोगो' एवं-पूर्वोक्तरीत्या, एतेन उपर्युक्तेन अभिलापक्रमेण पञ्चकसंयोगोऽपि भणितव्यः, यावत्-षट्कसंयोगोऽपि, सप्तसंयोगोऽपि, अष्टकसंयोगोऽपि, नवकसंयोगोऽपि भणितव्यः। 'दसहा कज्जमाणे एगयओ नव परमाणुपोग्गला, एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ' दशधा क्रियमाणः संख्येयप्रदेशिकः स्कन्धः एकत -एकभागे नवपरमाणुपुद्गला भवन्ति,

शिक, सप्तप्रदेशिक, अष्टप्रदेशिक, नौप्रदेशिक स्कन्ध होता है, और अपरभाग में तीन संख्यातप्रदेशिक स्कन्ध होते हैं-अथवा एक भाग में दश प्रदेशिक एक स्कन्ध होता है और अपरभाग में तीन संख्यातप्रदेशी स्कन्ध होते हैं, 'अहवा-चत्तारि संखेज्जपएसिया खंधा भवंति' अथवा-चार संख्यातप्रदेशी चार स्कन्ध होते हैं-'एवं एएणं कमेणं पंचगसंजोगो वि भाणियव्वो जाव नवगसंजोगो' इसी पूर्वोक्त रीति के अनुसार पंचकसंयोग भी कहना चाहिये यावत् षट्कसंयोग भी, सप्तकसंयोग भी, अष्टकसंयोग भी, और नवकसंयोग भी कहना चाहिये, 'दसहा कज्जमाणे एगयओ नवपरमाणुपोग्गला, एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ' संख्यातप्रदेशी स्कन्ध को जब दश विभागों में विभक्त किया जाता है-तब एक विभाग में नौ पुद्गलपरमाणु होते हैं, एवं अपर-

-પાંચ પ્રદેશિક, ૬ પ્રદેશિક, સાત પ્રદેશિક, આઠ પ્રદેશિક કે નવ પ્રદેશિક સ્કંધ હોય છે અને બાકીના ત્રણ વિભાગો ત્રણ સંખ્યાત પ્રદેશી સ્કંધો રૂપ હોય છે. અથવા એક ભાગમાં દસ પ્રદેશિક સ્કંધ હોય છે અને બાકીના ત્રણ ભાગોમાં સંખ્યાત પ્રદેશી ત્રણ સ્કંધો રૂપ હોય છે, "अहवा-चत्तारि संखेज्जपएसिया खंधा भवंति" અથવા ચારે વિભાગો સંખ્યાત પ્રદેશી ચાર સ્કંધો રૂપ પણ હોય છે. "एवं एएणं कमेणं पचगसंजोगो वि भाणियव्वो जाव नवगसंजोगो" આ પૂર્વોક્ત પદ્ધતિ અનુસાર સંખ્યાત પ્રદેશી સ્કંધના પાંચ વિભાગો, ૬ વિભાગો, સાત વિભાગો, આઠ વિભાગો અને નવ વિભાગો પાડવામાં આવે ત્યારે જે વિકલ્પો બને છે, તેમનું કથન પણ થવું જોઇએ.

"दसहा कज्जमाणे एगयओ नव परमाणुपोग्गला, एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ" તે સંખ્યાત પ્રદેશી સ્કંધના જ્યારે દસ વિભાગો કરવામાં આવે છે, ત્યારે એક એક પરમાણુ પુદ્ગલવાળા નવ વિભાગો અને સંખ્યાત પ્રદેશી

एकतः-अपरभागे संख्येयप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, 'अहवा एगयओ अट्ठपरमाणुपोग्गला, एगयओ दुप्पएसिए, एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ' अथवा एकतः-एकभागे द्विप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, एकतः-अन्यभागे संख्येयप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, 'एएणं कमेणं एक्केको पूरेयव्वो जाव' एतेन-उपर्युक्तेन अभिलापक्रमेण एकैकः अभिलापः पूरयितव्यः-आदाय परिपूरणीयः यावत्-एकतः अष्टौ परमाणुपुद्गला भवन्ति, एकतः त्रिचतुःपञ्चषट्सप्ताष्टनवप्रदेशिकश्च स्कन्धो भवति, एकतः-संख्येयप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, 'अहवा एगयओ दसपएसिए खंधे एगयओ नव संखेज्जपएसिया खंधा भवंति' अथवा एकतः-एकभागे दशप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, एकतः-अपरभागे नव संख्येयप्रदेशिकाः स्कन्धा भवन्ति, 'अहवा

विभाग में एक संख्यातप्रदेशी स्कन्ध होता है-' अहवा-एगयओ अट्ठ परमाणुपोग्गला, एगयओ दुप्पएसिए, एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ' अथवा-एक भाग में आठ पुद्गलपरमाणु होते हैं, अपरभाग में एक द्विप्रदेशी स्कन्ध होता है, और अन्यभाग में एक संख्यातप्रदेशी स्कन्ध होता है। 'एएणं कमेणं एक्केको पूरेयव्वो जाव' इस क्रम से एक एक अभिलाप पूरित करना चाहिये-यावत् एकभाग में आठ परमाणुपुद्गल होते हैं, अपरभाग में तीन, चार, पांच छह सात आठ और नौ प्रदेशी स्कन्ध होता है, और अन्यभाग में संख्यात प्रदेशिक एक स्कन्ध होता है-' अहवा-एगयओ दसपएसिए खंधे, एगयओ नव संखेज्ज पएसिया खंधा भवंति' अथवा एकभाग में एक दशप्रदेशिक स्कन्ध होता है, और अपरभाग में नौ संख्यात प्रदेशिक स्कन्ध होते हैं।

એક સ્કંધ ૩૫ દસમો વિભાગ થાય છે. "अहवा-एगयओ अट्ठ परमाणुपोग्गला, एगयओ दुप्पएसिए, एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ" અથવા એક એક પરમાણુ પુદ્ગલવાળા આઠ વિભાગો, દ્વિપ્રદેશિક એક સ્કંધ રૂપ એક વિભાગ અને સંખ્યાત પ્રદેશી સ્કંધ રૂપ એક વિભાગ થાય છે. "एएणं कमेणं एक्केक्को पूरेयव्वो जाव" આ ક્રમે બાકીના વિકલ્પો પણ બનાવી શકાય છે. દરેક વિકલ્પના નવમાં વિભાગમાં એક એક પ્રદેશની વૃદ્ધિ કરીને બાકીના વિકલ્પો બનાવી શકાય છે. જેમ કે...અથવા એક એક પરમાણુ પુદ્ગલવાળા આઠ વિભાગો, ત્રણ-ચાર-પાંચ-છ-સાત-આઠ અથવા નવ પ્રદેશોવાળા સ્કંધ રૂપ નવમો વિભાગ અને સંખ્યાત પ્રદેશી સ્કંધ રૂપ દસમો વિભાગ થાય છે. "अहवा-एगयओ दसपएसिए खंधे, एगयओ नव संखेज्जपएसिया खंधा भवंति" અથવા દસપ્રદેશિક સ્કંધ રૂપ એક વિભાગ થાય છે અને સંખ્યાત પ્રદેશી

दस संखेज्जपएसिया खंधा भवंति,' अथवा दश संख्येयप्रदेशिकाः स्कन्धा भवन्ति, 'संखेज्जहा कज्जमाणे संखेज्जा परमाणुपोग्गला भवंति' संख्येयप्रदेशिकः स्कन्धः संख्येयधा क्रियमाणः संख्येयाः परमाणुपुद्गला भवन्ति। गौतमः पृच्छति-'असंखेज्जा भंते! परमाणुपोग्गला, एगयओ साहण्णंति, एगयओ साहण्णित्ता किं भवइ?' हे भदन्त! असंख्येयाः परमाणुपुद्गलाः-एकतः-एकतया संहन्यन्ते-संहता भवन्ति, एकतः-एकतया संहत्य-संघीभूय किं स्वरूपं वस्तु भवति? भगवानाह-'गोयमा! असंखेज्जपएसिए खंधे भवइ' हे गौतम! असंख्येयाः परमाणुपुद्गलाः एकतया संहत्य असंख्येयप्रदेशिकः स्कन्धो भवति' 'से भिज्जमाणे दुहावि जाव दसहावि संखेज्जहावि, असंखेज्जहा वि कज्जइ' सो

'अहवा दस संखेज्जपएसिया खंधा भवंति' इसके दश संख्यातप्रदेशिक स्कन्ध होते हैं। 'संखेज्जहा कज्जमाणे संखेज्जा परमाणुपोग्गला भवंति' संख्यात विभागों में विभक्त जब यह संख्यातप्रदेशी स्कन्ध किया जाता है, तब संख्यात पुद्गलपरमाणु के संख्यात विभाग होते हैं।

अब गौतम प्रभु से ऐसा पूछते हैं-'असंखेज्जा भंते! परमाणुपोग्गला एगयओ साहण्णंति, एगयओ साहण्णित्ता किं भवइ' हे भदन्त! असंख्यात परमाणुपुद्गल जब एकट्ठे होते हैं-तब उनसे क्या वस्तु उत्पन्न होती है? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-'गोयमा! असंखेज्जपएसिए खंधे भवइ' हे गौतम! असंख्यात पुद्गलपरमाणु जब आपस में एकत्रित हो जाते हैं-तब उनके उस मिलाप से असंख्यातप्रदेशी एक स्कन्ध उत्पन्न होता है। 'से भिज्जमाणे दुहावि जाव दसहा वि संखेज्जहा

ત્રણ સ્કંધો ૩૫ નવ વિભાગો થાય છે "अहवा- दस संखेज्जपएसिया खंधा भवंति" અથવા સંખ્યાત પ્રદેશોવાળા દસ સ્કંધ ૩૫ દસ વિભાગો પણ થઈ શકે છે. "संखेज्जहा कज्जमाणे संखेज्जा परमाणुपोग्गला भवंति" તે સંખ્યાત પ્રદેશી સ્કંધના જ્યારે સંખ્યાત વિભાગો કરવામાં આવે છે, ત્યારે એક એક પરમાણુ પુદ્ગલવાળા સંખ્યાત વિભાગોમાં તે સ્કંધ વિભક્ત થઈ જાય છે.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-"असंखेज्जा भंते! परमाणुपोग्गला एगयओ साहण्णंति, एगयओ साहण्णित्ता किं भवइ?" હે ભગવન્! અસંખ્યાત પરમાણુ પુદ્ગલો જ્યારે એક બીજા સાથે એકત્ર થાય છે, ત્યારે શું ઉત્પન્ન થાય છે?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-"गोयमा! असंखेज्जपएसिए खंधे भवइ" હે ગૌતમ! અસંખ્યાત પરમાણુ પુદ્ગલો જ્યારે એક બીજા સાથે એકત્રિત થાય છે, ત્યારે તેમના સંયોગથી અસંખ્યાત પ્રદેશી એક સ્કંધ ઉત્પન્ન થાય છે.

ऽसंख्येयप्रदेशिकः स्कन्धो भिद्यमानः द्विधापि, यावत्-त्रिधापि, चतुर्धापि, पञ्चधापि, षोढापि, सप्तधापि, अष्टधापि, नवधापि, दशधापि, संख्येयधापि, असंख्येयधापि क्रियते, तत्र 'दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे भवइ' असंख्येयप्रदेशिकः स्कन्धो द्विधा क्रियमाणः एकतः-एकभागे परमाणुपुद्गलो भवति, एकतः-अपरभागे असंख्येयप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, 'जाव अहवा एगयओ दसपएसिए खंधे, एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे, भवइ' यावत्-एकतः द्वित्रिचतुःपञ्चषट्सप्ताष्टनवप्रदेशिकश्च स्कन्धो भवति, एकतश्च असंख्येयप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, अथवा एकतः-एकभागे दशप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, एकतः-अपरभागे असंख्येयप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, 'अहवा एगयओ

वि कज्जइ' जब वह असंख्यातप्रदेशी स्कन्ध विभक्त किया जाता है-तब उसके दो भी, यावत् तीन भी, चार भी, पांच भी, छह भी, सात भी, आठ भी, नौ भी, दश भी, संख्यात भी और असंख्यात भी प्रकार होते हैं-'दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे भवइ' जब असंख्यात प्रदेशी स्कन्ध के दो प्रकाररूप विभाग किये जाते हैं-तब एक भाग में एक परमाणुपुद्गल होता है, और अपरभाग में असंख्यातप्रदेशिक स्कन्ध होता है। 'जाव अहवा एगयओ दसपएसिए खंधे, एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे भवइ' यावत्-एक भाग में दशप्रदेशिक स्कन्ध होता है, और अपरभाग में असंख्यातप्रदेशिक एक स्कन्ध होता है। यहां यावत् पद से "एक भाग में, दो, तीन, चार, पांच, छह, सात, आठ, नौ प्रदेशोंवाला एक स्कन्ध होता है और अपर भाग में असंख्यातप्रदेशिक स्कन्ध होता

"से भिज्जमाणे दुहा वि, जाव दसहा वि, संखेज्जहा वि, असंखेज्जहा वि कज्जइ" જ્યારે તે અસંખ્યાત પ્રદેશી સ્કંધને વિભક્ત કરવામાં આવે છે, ત્યારે તેના બે, ત્રણ, ચાર, પાંચ, છ, સાત, આઠ, નવ, દસ, સંખ્યાત અથવા અસંખ્યાત વિભાગો થઇ શકે છે. "दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे भवइ" જ્યારે તે અસંખ્યાત પ્રદેશી સ્કંધના બે વિભાગો કરવામાં આવે છે, ત્યારે એકપરમાણુપુદ્ગલ રૂપ એક વિભાગ અને અસંખ્યાત પ્રદેશી સ્કંધ રૂપ બીજા વિભાગમાં તે સ્કંધ વિભક્ત થઇ જાય છે. "जाव अहवा एगयओ दसपएसिए खंधे, एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे भवइ" અથવા એક ભાગમાં બે, ત્રણ, ચાર, પાંચ, છ, સાત, આઠ, નવ અથવા દસ પ્રદેશોવાળો સ્કંધ હોય છે અને બીજા ભાગમાં

संखेज्जपएसिए खंधे, एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे भवइ' अथवा एकतः-एकभागे संख्येयप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, एकतः-अपरभागे असंख्येयप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, 'अहवा दो असंखेज्जपएसिया खंधा भवंति' अथवा द्वौ असंख्येयप्रदेशिकौ स्कन्धौ भवतः, 'तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे भवइ' असंख्येयप्रदेशिकः स्कन्धस्त्रिधा क्रियमाणः, एकतः-एकभागे द्वौ परमाणुपुद्गलौ भवतः, एकतः-अपरभागे असंख्येयप्रदेशिकः स्कन्धो भवति 'अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुप्पएसिए, एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे भवइ' अथवा एकतः-एकभागे परमाणुपुद्गलो भवति, एकतः-अपरभागे द्विप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, एकतः-अन्यभागे असं-

---

है" इस पाठ का ग्रहण हुआ है। 'अहवा-एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे, एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे भवइ' अथवा-एकभाग में संख्यातप्रदेशी स्कन्ध होता है, और अपरभाग में असंख्यातप्रदेशी स्कन्ध होता है। 'अहवा दो असंखेज्जपएसिया खंधा भवंति' अथवा दो असंख्यातप्रदेशी स्कंध होते हैं। 'तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे भवइ' जब असंख्यातप्रदेशी एक स्कन्ध के तीन प्रकार रूप विभाग किये जाते हैं तब एक भाग में दो परमाणुपुद्गल होते हैं और अपर भाग में असंख्यातप्रदेशी एक स्कन्ध होता है। 'अहवा-एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुप्पएसिए, एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे भवइ' अथवा-एकभाग में एक परमाणुपुद्गल होता है, अपरभाग में एक द्विप्रदेशिक स्कन्ध होता है, और अन्यभाग में एक असंख्यातप्रदेशिक स्कन्ध होता है-

---

અસંખ્યાત પ્રદેશી સ્કંધ હોય છે. "अहवा-एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे, एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे भवइ" અથવા એક વિભાગમાં સંખ્યાત પ્રદેશી સ્કંધ હોય છે અને બીજા વિભાગમાં અસંખ્યાત પ્રદેશી સ્કંધ હોય છે. "अहवा-दो असंखेज्जपएसिए खंधा भवंति" અથવા બે અસંખ્યાત પ્રદેશી સ્કંધ રૂપ બે વિભાગો થાય છે. "तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे भवइ" જ્યારે તે અસંખ્યાત પ્રદેશી સ્કંધના ત્રણ વિભાગો કરવામાં આવે છે, ત્યારે બે વિભાગોમાં એક એક પરમાણુ પુદ્ગલ હોય છે અને એક વિભાગમાં અસંખ્યાત પ્રદેશી એક સ્કંધ હોય છે "अहवा-एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुप्पएसिए, एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे भवइ" અથવા એક પરમાણુ પુદ્ગલવાળો પહેલો વિભાગ, દ્વિપ્રદેશિક સ્કંધ રૂપ બીજો વિભાગ અને અસંખ્યાત પ્રદેશી સ્કંધ

खंधे असंख्येयप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, 'जाव अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दसपएसिए, एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे भवइ' यावत्—एकतः परमाणुपुद्गलो भवति, एकतः त्रिचतुःपञ्चषट्सप्ताष्टनव प्रदेशिकश्च स्कन्धो भवति, एकतः असंख्येयप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, अथवा एकतः—एकभागे परमाणुपुद्गलो भवति, एकतः-अपरभागे दशप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, एकतः—अन्यभागे असंख्येयप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, 'अहवा एगे परमाणुपोग्गले, एगे संखेज्जपएसिए खंधे भवइ' अथवा एकः परमाणुपुद्गलो भवति, एकः संख्येयप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, एकः असंख्येयप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, 'अहवा एगयओ एगे परमाणुपोग्गले, एगयओ दो असंखेज्जपएसिया खंधा भवंति' अथवा एकतः एकः परमाणुपुद्गलो

'जाव अहवा-एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दसपएसिए खंधे, एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे भवइ' यावत् अथवा- एकभाग में एक परमाणुपुद्गल होता है, एकभाग में तीन, चार, पांच, छह, सात, आठ, नौ, प्रदेशिक स्कन्ध होता है और एक अन्यभाग में असंख्यात-प्रदेशिक स्कन्ध होता है, अथवा-एक भाग में एक परमाणुपुद्गल होता है, अपरभाग में एक दशप्रदेशिक स्कन्ध होता है, और अन्यभाग में असंख्यातप्रदेशी एक स्कन्ध होता है, 'अहवा-एगे परमाणुपोग्गले, एगे संखेज्जपएसिए, एगे असंखेज्जपएसिए खंधे भवइ' अथवा-एक भाग में एक परमाणुपुद्गल होता है, एकभाग में संख्यातप्रदेशी स्कन्ध होता है, और अन्यभाग में असंख्यातप्रदेशी एक स्कन्ध होता है, 'अहवा-एगयओ एगे परमाणुपोग्गले, एगयओ दो असंखेज्जपएसिया खंधा भवंति' अथवा-एक भाग में एक परमाणुपुद्गल होता है एवं अपरभाग

---

૩૫ ત્રીજો વિભાગ બને છે. "जाव अहवा-एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दसपएसिए खंधे, एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे भवइ" અથવા-એક ભાગમાં એક પરમાણુ પુદ્ગલ હોય છે, બીજા ભાગમાં ત્રણ, ચાર, પાંચ, છ, સાત, આઠ, નવ અથવા દસ પ્રદેશોવાળો સ્કંધ હોય છે, અને ત્રીજા ભાગમાં અસંખ્યાત પ્રદેશી સ્કંધ હોય છે

"अहवा-एगे परमाणुपोग्गले, एगे संखेज्जपएसिए एगे दो असंखेज्जपएसिए खंधे भवइ" અથવા એક ભાગમાં એક પરમાણુપુદ્ગલ બીજા ભાગમાં સંખ્યાત પ્રદેશી એક સ્કંધ અને ત્રીજા ભાગમાં અસંખ્યાત પ્રદેશી સ્કંધ હોય છે. "अहवा एगयओ एगे परमाणुपोग्गले, एगयओ दो संखेज्जपएसिया खंधा भवंति"

भवति, एकतः-अपरभागे द्वौ असंख्येयप्रदेशिकौ स्कन्धौ भवतः, 'अहवा एगयओ एगे दुप्पएसिए, एगयओ दो असंखेज्जपएसिया खधा भवंति' अथवा एकतः एको द्विप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, एकतः-अपरभागे द्वौ असंख्येयप्रदेशिकौ स्कन्धौ भवतः 'एवं जाव अहवा एगे संखेज्जपएसिए खंधे भवइ, एगयओ दो असंखेज्जपएसिया खंधा भवंति' एवं-पूर्वोक्तरीत्या, यावत्-अथवा एकतः एकः त्रिचतुः पञ्चषट्सप्ताष्टनवदशप्रदेशिकश्च स्कन्धो भवति, एकतः-अपरभागे द्वौ असंख्येयप्रदेशिकौ स्कन्धौ भवतः, अथवा एकतः एकः संख्येयप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, एकतः-अपरभागे द्वौ असंख्येयप्रदेशिकौ स्कन्धौ भवतः, 'अहवा तिन्नि असंखेज्जपएसिया खंधा भवंति' अथवा त्रयः असंख्येयप्रदेशिकाः स्कन्धा भवन्ति। चउहा कज्जमाणे

में दो असंख्यातप्रदेशी स्कन्ध होते हैं 'अहवा-एगयओ एगे दुप्पएसिए, एगयओ दो असंखेज्जपएसिया खंधा भवंति' अथवा-एकभाग में एक द्विप्रदेशी स्कन्ध होता है, और अपरभाग में दो असंख्यातप्रदेशी स्कन्ध होते हैं, 'एवं जाव अहवा एगे संखेज्जपएसिए, खंधे भवइ, एगयओ दो असंखेज्जपएसिया खंधा भवंति' इसी प्रकार से पूर्वोक्तरीति के अनुसार यावत् अथवा एकभाग में एक त्रिप्रदेशी, चतुष्प्रदेशी, पंचप्रदेशी, छहप्रदेशी, सातप्रदेशी, आठप्रदेशी, नौप्रदेशी दशप्रदेशी स्कन्ध होता है, और अपरभाग में दो असंख्यातप्रदेशी स्कन्ध होते हैं, अथवा एकभाग में एक संख्यातप्रदेशी स्कन्ध होता है, एवं अपरभाग में दो असंख्यातप्रदेशी स्कन्ध होते हैं। 'अहवा तिन्नि असंखेज्जपएसिया

અથવા એક વિભાગમાં એક પરમાણુ પુદ્ગલ હોય છે અને બાકીના બે વિભાગોમાં અસંખ્યાત પ્રદેશી બે સ્કંધો હોય છે "अहवा-एगयओ एगे दुप्पएसिए, एगयओ दो असंखेज्जपएसिया खंधा भवंति" અથવા એક વિભાગમાં દ્વિપ્રદેશિક એક સ્કંધ હોય છે અને બાકીના બન્ને વિભાગો અસંખ્યાત પ્રદેશી બે સ્કંધ રૂપ હોય છે. "एवं जाव-अहवा एगे संखेज्जपएसिए खंधे भवइ, एगयओ दो असंखेज्जपएसिया खंधा भवंति" આ પૂર્વોક્ત પદ્ધતિ અનુસાર પહેલા વિભાગમાં એક એક પ્રદેશની વૃદ્ધિ થતી જાય છે, અને આ પ્રકારના વિકલ્પો બને છે-અથવા એક વિભાગમાં ત્રિપ્રદેશી, અથવા ચાર પ્રદેશી, અથવા પાંચ પ્રદેશી, અથવા છ પ્રદેશી, અથવા સાત પ્રદેશી, અથવા આઠ પ્રદેશી, અથવા નવ પ્રદેશી અથવા દસ પ્રદેશી એક સ્કંધ હોય છે, અને બાકીના બન્ને વિભાગમાં અસંખ્યાત પ્રદેશી બે સ્કંધો હોય છે. અથવા-એક વિભાગમાં સંખ્યાત પ્રદેશી એક સ્કંધ હોય છે અને બાકીના બન્ને વિભાગોમાં અસંખ્યાત પ્રદેશી બે સ્કંધ હોય છે. "अहवा-तिन्नि

एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला, एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे भवति' असंख्येय-प्रदेशिकः स्कन्धश्चतुर्धा क्रियमाणः एकतः-एकभागे त्रयः परमाणुपुद्गला भवन्ति, एकतः-अपरभागे असंख्येयप्रदेशिकः स्कन्धो भवति 'एवं चउक्कगसंजोगो जाव दसगसंजोगो' एवं पूर्वोक्तरीत्या चतुष्कसंयोगः, यावत्-पञ्चक संयोगः, षट्क संयोगः, सप्तकसंयोगः, अष्टकसंयोगः, नवकसंयोगः, दशकसंयोगश्च वक्तव्यः, 'एए जहेव संखेज्जपएसियस्स, नवरं असंखेज्जगं एगं अहिगं भाणियव्वं जाव अहवा दस असंखेज्जपएसिया खंधा भवंति' एते उपर्युक्ताः सर्वे अभिलापाः, यथैव संख्येयप्रदेशिकस्य स्कन्धस्य प्रतिपादिता स्तथैव, असंख्येयप्रदेशिकस्यापि स्कन्धस्य

खंधा भवंति' अथवा तीन असंख्यातप्रदेशी स्कन्ध होते हैं। 'चउहा कज्जमाणे एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला, एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे भवइ' असंख्यातप्रदेशी स्कन्ध जब चार भागों में विभक्त किया जाता है-तब एकभाग में तीन परमाणुपुद्गल होते हैं, और अपरभाग में एक असंख्यातप्रदेशी स्कन्ध होता है, 'एवं चउक्कगसंजोगो जाव दसगसंजोगो' इसी प्रकार से पूर्वोक्तरीति के अनुसार चतुष्कसंयोग, यावत्-पंचकसंयोग, षट्कसंयोग, सप्तकसंयोग, अष्टकसंयोग, नवक-संयोग और दशकसंयोग कहना चाहिये। 'एए जहेव संखेज्जपएसियस्स, नवरं असंखेज्जगं एगं अहिगं भाणियव्वं जाव अहवा दस असंखेज्जपएसिया खंधा भवंति' ये उपर्युक्त सब आलापक जैसे संख्यात प्रदेशिक स्कन्ध की अपेक्षा इस असंख्यातप्रदेशी स्कन्ध की वक्तव्यता

असंखेज्जपएसिया खंधा भवंति" અથવા અસંખ્યાત પ્રદેશી ત્રણ સ્કંધ રૂપ ત્રણ વિભાગોમાં પણ તે વિભક્ત થઈ શકે છે

"चउहा कज्जमाणे एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला, एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे भवइ" જ્યારે તે અસંખ્યાત પ્રદેશી સ્કંધના ચાર વિભાગો કરવામાં આવે છે, ત્યારે એક એક પરમાણુ પુદ્ગલવાળા ત્રણ વિભાગો થાય છે અને ચોથો વિભાગ અસંખ્યાત પ્રદેશી એક સ્કંધ રૂપ હોય છે. "एवं चउक्कसंजोगो जाव दसगसंजोगो" એજ પૂર્વોક્ત પદ્ધતિ અનુસાર ચતુષ્કસંયોગ, પંચકસંયોગ, ષટ્કસંયોગ, સપ્તકસંયોગ, અષ્ટકસંયોગ, નવકસંયોગ અને દશકસંયોગનું કથન કરવું જોઈએ. "एए जहेव संखेज्जपएसियस्स, नवरं असंखेज्जगं एगं अहिगं भाणियव्वं जाव अहवा दस असंखेज्जपएसिया खंधा भवंति" સંખ્યાત પ્રદેશી સ્કંધના વિભાગો વિષે જેવા વિકલ્પો આગળ બતાવવામાં આવ્યા છે, એવાં જ વિકલ્પો અસંખ્યાત પ્રદેશી સ્કંધના દસ પર્યન્તના વિભાગો વિષે પણ સમજવા પૂર્વોક્ત આલાપકો (વિકલ્પો) કરતાં

प्रतिपत्तव्याः, नवरं संख्येयप्रदेशिकस्कन्धापेक्षया विशेषस्तु अत्र असंख्येयकम् एकम् अधिकम् भणितव्यम्, यावत्-द्वित्रिचतुःपञ्चषट्सप्ताष्टनव असंख्येयप्रदेशिकाः स्कन्धाः भवन्ति, अथवा दश असंख्येयप्रदेशिकाः स्कन्धा भवन्ति। 'संखेज्जहा कज्जमाणे एगयओ संखेज्जा परमाणुपोग्गला, एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे भवइ' असंख्येयप्रदेशिकः स्कन्धः संख्येयधा क्रियमाणः एकतः-एकभागे संख्येयाः परमाणुपुद्गलाः भवन्ति, एकतः-अपरभागे असंख्येयप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, 'अहवा एगयओ संखेज्जा दुप्पएसिया खंधा, एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे भवइ' अथवा एकतः-एकभागे संख्येयाः द्विप्रदेशिकाः स्कन्धाः भवन्ति, एकतः-अपरभागे असंख्येयप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, 'एवं जाव अहवा एगयओ संखेज्जा दसपएसिया

में यही विशेषता है कि यहां पर असंख्यात पदका प्रयोग करना चाहिये यावत्-दो, तीन, चार, पांच, छह, सात, आठ, नौ असंख्यातप्रदेशिक स्कन्ध होते हैं, अथवा दश असंख्यातप्रदेशोंवाले स्कन्ध होते हैं 'संखेज्जहा कज्जमाणे एगयओ संखेज्जा परमाणुपोग्गला, एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे भवइ' असंख्यातप्रदेशी स्कन्ध जब संख्यात प्रकाररूप विभागोंवाला किया जाता है तब एकभाग में संख्यात परमाणुपुद्गल होते हैं, और अपरभाग में असंख्यातप्रदेशोंवाला एक स्कन्ध होता है। 'अहवा-एगयओ संखेज्जा दुप्पएसिया खंधा, एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे भवइ' अथवा-एकभाग में संख्यात द्विप्रदेशिक स्कन्ध होते हैं, और अपरभाग में असंख्यातप्रदेशोंवाला एक स्कन्ध होता है 'एवं जाव अहवा एगयओ संखेज्जा दसपएसिया खंधा, एगयओ असंखे-

---

અસંખ્યાત પ્રદેશી સ્કંધના વિભાગો વિષેના વિકલ્પોમાં માત્ર એટલી જ વિશેષતા છે કે આ વિકલ્પોમાં 'સંખ્યાત' ને બદલે 'અસંખ્યાત' પદનો પ્રયોગ કરવો જોઇએ અસંખ્યાત પ્રદેશી સ્કંધના ૧૦ વિભાગોવિષયક છેલ્લો વિકલ્પ આ પ્રમાણે બનશે-"અથવા તે અસંખ્યાત પ્રદેશી સ્કંધના અસંખ્યાત પ્રદેશોવાળા દસ સ્કંધ રૂપ દસ વિભાગો થઈ જાય છે."

"संखेज्जहा कज्जमाणे एगयओ संखेज्जा परमाणुपोग्गला, एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे भवइ" તે અસંખ્યાત પ્રદેશી સ્કંધના જ્યારે સંખ્યાત વિભાગો કરવામાં આવે છે, ત્યારે એક એક પરમાણુ પુદ્ગલવાળા સંખ્યાત વિભાગો થાય છે અને અસંખ્યાત પ્રદેશી એક સ્કંધ રૂપ એક વિભાગ થાય છે.

अहवा-एगयओ संखेज्जा दुप्पएसिया खंधा, एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे भवइ" અથવા એક એક દ્વિપ્રદેશીક સ્કંધ રૂપ સંખ્યાત વિભાગો થાય છે અને અસંખ્યાત પ્રદેશી એક સ્કંધ રૂપ એક વિભાગ થાય છે.

खंधा, एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे भवइ ' एवं-पूर्वोक्तरीत्या, यावत्-एकतः संख्येयास्त्रिचतुःपञ्चषट्सप्ताष्टनवप्रदेशिकाः स्कन्धा भवन्ति, एकतः-अपरभागे असंख्येयप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, अथवा एकतः-एकभागे संख्येया दशप्रदेशिकाः स्कन्धा भवन्ति, एकतः-अपरभागे असंख्येयप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, ' अहवा एगयओ संखिज्जा संखिज्जपएसिया खंधा, एगयओ असंखिज्जपएसिए खंधे भवइ ' अथवा एकतः-एकभागे संख्येयाः संख्येयप्रदेशिकाः स्कन्धा भवन्ति, एकतः-अपरभागे असंख्येयप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, ' अहवा संखेज्जा असंखेज्जपएसिया खंधा भवंति ' अथवा संख्येयाः असंख्येयप्रदेशिकाः स्कन्धा भवन्ति, ' असंखिज्जहा कज्जमाणे असंखेज्जा परमाणुपोग्गला भवंति ' असंख्येयप्रदेशिकः स्कन्धः असंख्येयधा क्रियमाणः असंख्येयाः परमाणुपुद्गलाः भवन्ति ।

ज्जपएसिए खंधे भवइ ' इसी प्रकार से पूर्वोक्तरीति के अनुसार यावत्-एकभाग में संख्यात स्कन्ध तीन, चार, पांच, छह, सात, आठ, नौ प्रदेशोंवाले होते हैं और अपरभाग में असंख्यातप्रदेशोंवाला एक स्कन्ध होता है, ' अहवा-एगयओ संखिज्जा संखिज्जपएसिया खंधा, एगयओ संखिज्जपएसिया खंधा, एगयओ असंखिज्जपएसिए खंधे भवइ' अथवा एकभाग में संख्यातप्रदेशोंवाले संख्यात स्कन्ध होते हैं, और अपरभाग में असंख्यातप्रदेशोंवाला एक स्कन्ध होता है, 'अहवा संखेज्जा असंखेज्जपएसिया खंधा भवंति ' अथवा-असंख्यातप्रदेशोंवाले संख्यात स्कन्ध होते हैं ' असंखिज्जहा कज्जमाणे असंखेज्जा परमाणुपोग्गला भवंति ' जब असंख्यातप्रदेशोंवाला स्कन्ध असंख्यात प्रकाररूप विभाग वाला किया जाता है तब असंख्यात परमाणुपुद्गल होते हैं।

" एवं जाव-अहवा एगयओ संखेज्जा दसपएसिया खंधा, एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे भवंति " એજ પ્રમાણે ત્રણ, ચાર, પાંચ, છ, સાત, આઠ અથવા નવ પ્રદેશોવાળા સંખ્યાતસ્કંધો હોય છે અને અસંખ્યાત પ્રદેશોવાળો એક સ્કંધ હોય છે. અથવા દસપ્રદેશિક સંખ્યાત સ્કંધો અને અસંખ્યાત પ્રદેશી એક સ્કંધ હોય છે. " अहवा-एगयओ संखिज्जा संखिज्जपएसिया खंधा, एगयओ असंखिज्जपएसिए खंधे भवइ " અથવા સંખ્યાત પ્રદેશોવાળા સંખ્યાત સ્કંધો અને અસંખ્યાત પ્રદેશી એક સ્કંધ હોય છે. " अहवा-संखेज्जा असंखेज्जपएसिया खंधा भवंति " અથવા તે અસંખ્યાત પ્રદેશી સ્કંધ અસંખ્યાત પ્રદેશોવાળા સંખ્યાત સ્કંધોમાં વિભક્ત થઈ જાય છે " असंखिज्जहा कज्जमाणे असंखेज्जा परमाणुपोग्गला भवंति " જ્યારે તે અસંખ્યાત પ્રદેશી સ્કંધના અસંખ્યાત વિભાગો કરવામાં આવે છે, ત્યારે એક એક પરમાણુ પુદ્ગલવાળા અસંખ્યાત વિભાગોમાં તે સ્કંધ વિભક્ત થઈ જાય છે.

गौतमः पृच्छति–'अणंता णं भंते ! परमाणुपोग्गला जाव किं भवइ ?' हे भदन्त ! अनन्ताः खलु परमाणुपुद्गलाः यावत्–एकतया संहन्यन्ते–संहता भवन्ति, एकत्वेन संहत्य किं स्वरूपं वस्तु भवति ? भगवानाह–'गोयमा ! अणंतपएसिए खंधे भवइ' हे गौतम ! अनन्ताः परमाणुपुद्गला एकतः संहत्य अनन्त प्रदेशिकः स्कन्धो भवति, 'से भिज्जमाणे दुहावि, तिहावि जाव दसहावि, संखिज्जहा, असंखिज्जहा, अणंतहावि कज्जइ' सोऽनन्तप्रदेशिकः स्कन्धो भिद्यमानो द्विधापि, त्रिधापि, यावत्–चतुर्धापि, पञ्चधापि, षोढापि, सप्तधापि, अष्टधापि, नवधापि, दशधापि, संख्येयधापि, असंख्येयधापि, अनन्तधापि क्रियते–भवति, तत्र 'दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ अणंतपएसिए खंधे जाव अहवा दो अणंतपए-

---

अब गौतम स्वामी प्रभु से ऐसा पूछते हैं–'अणंताणं भंते ! परमाणुपोग्गला जाव किं भवइ' हे भदन्त ! अनन्त परमाणुपुद्गल क्या आपस में मिलते हैं और उनके मिलाप से कौन सी वस्तु उत्पन्न होती है? इसके उत्तरमें प्रभु कहते हैं–'गोयमा ! अणंतपएसिए खंधे भवइ' हे गौतम ! अनन्त परमाणुपुद्गल आपस में मिलते हैं और उनके मेल से अनन्तप्रदेशोंवाला एक स्कन्ध उत्पन्न होता है। 'से भिज्जमाणे दुहावि, तिहावि, जाव दसहावि, संखिज्जहा असंखिज्जहा, अणंतहा वि कज्जइ' वह अनन्तप्रदेशी स्कन्ध जब विभक्त किया जाता है, तब इसके दो प्रकार भी, तीनप्रकार भी, चार प्रकार भी, पांच प्रकार भी, छह प्रकाररूप भी, सात प्रकार रूप भी, आठ प्रकार रूप भी, नौ प्रकाररूप भी, दशप्रकार रूप भी, संख्यात प्रकार रूप भी, असंख्यातप्रकाररूप भी और अनन्तप्रकार रूप भी विभाग हो सकते हैं 'दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले,

---

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન–"अणंताण भंते ! परमाणुपोग्गला, जाव किं भवइ" હે ભગવન્! જ્યારે અનંત પરમાણુ પુદ્ગલો એક બીજા સાથે ભળી જાય છે, ત્યારે તેમના સંયોગથી શું ઉત્પન્ન થાય છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર–" गोयमा ! अणंतपएसिए खंधे भवइ " હે ગૌતમ! અનંત પરમાણુ પુદ્ગલો એક બીજા સાથે એકત્રિત થાય ત્યારે તેમના સંયોગથી અનંત પ્રદેશી એક સ્કંધ ઉત્પન્ન થાય છે. " से भिज्जमाणे दुहा वि, जाव दसहा वि, संखिज्जहा वि, असंखिज्जहा वि, अणंतहा वि कज्जइ " જ્યારે તે અનંત પ્રદેશી સ્કંધના વિભાગો કરવામાં આવે છે, ત્યારે બે અથવા ત્રણ અથવા ચાર અથવા પાંચ અથવા છ અથવા સાત અથવા આઠ અથવા નવ અથવા દસ અથવા સંખ્યાત અથવા અસંખ્યાત અથવા અનંત વિભાગો થઈ

सिया खंधा भवंति ' द्विधाक्रियमाणः, एकतः-एकभागे परमाणुपुद्गलो भवति, एकतः-अपरभागे अनन्तप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, यावत्-पूर्वोक्तवदेव सर्वमूह्यम्, तदन्तिममाह-अथवा द्वौ अनन्तप्रदेशिकौ स्कन्धौ भवतः, ' तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ अणंतपएसिए खंधे भवइ ' अनन्तप्रदेशिकः स्कन्ध स्त्रिधाक्रियमाणः एकतः-एकभागे द्वौ परमाणुपुद्गलौ भवतः, एकतः-अपरभागे अनन्तप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, ' अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुप्पएसिए, एगयओ अणंतपएसिए खंधे भवइ' अथवा एकतः-एकभागे परमाणुपुद्गलो भवति, एकतः-अपरभागे द्विप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, एकतः-अन्यभागे अनन्त-

---

एगयओ अणंतपएसिए खंधे जाव अहवा दो अणंतपएसिया खंधा भवंति ' જ્યા इसके दो प्रकाररूप विभाग किये जाते हैं तब एक विभाग में एक परमाणुपुद्गल होता है, और अपर भाग में अनन्त प्रदेशिक स्कन्ध होता है, 'यहां पूर्वोक्त प्रकार से ही सब कथन जानना चाहिये। यावत् दो अनन्तप्रदेशिक स्कन्ध होते हैं, ' तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला एगयओ अणंतपएसिए खंधे भवइ ' अनन्तप्रदेशों-वाला यह स्कंध जब तीन प्रकाररूप विभागों में विभक्त किया जाता है-तब एक भाग में दो परमाणुपुद्गल होते हैं, और अपर भाग में अनन्त-प्रदेशोंवाला एक स्कन्ध होता है, 'अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एग-यओ दुप्पएसिए एगयओ अणंतपएसिए खंधे भवइ ' अथवा-एकभाग में एक परमाणुपुद्गल होता है, अपरभाग में एक द्विप्रदेशी स्कन्ध होता

शके छे. " दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ अणंतपएसिए खंधे जाव अहवा दो अणंतपएसिए खंधे भवंति " ते अनंत प्रदेशी स्कंधना જ્યારે બે વિભાગ કરવામાં આવે છે, ત્યારે એક વિભાગમાં એક પરમાણુ પુદ્ગલ અને બીજા વિભાગમાં અનંત પ્રદેશી એક સ્કંધ હોય છે અહીં પૂર્વોકત કથન અનુસાર બીજા વિકલ્પો પણ સમજવા-એટલે કે એક વિભાગમાં દ્વિપ્રદેશિક, ત્રિપ્રદેશિક આદિ અસંખ્યાત પ્રદેશી પર્યન્તનો કોઈ પણ એક સ્કંધ હોય છે અને બીજા વિભાગમાં અનંત પ્રદેશી એક સ્કંધ હોય છે. અથવા-" અનંત પ્રદેશી બે સ્કંધ રૂપ બે વિભાગોમાં પણ તે અનંત પ્રદેશી સ્કંધ વિભકત થાય છે " આ દ્વિકસંયોગી છેલ્લો વિકલ્પ છે. " तिहाकज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ अणंतपएसिए खंधे भवइ " જ્યારે તે અનંત પ્રદેશી સ્કંધના ત્રણ વિભાગો કરવામાં આવે છે, ત્યારે એક એક પરમાણુ પુદ્ગલવાળા બે વિભાગો થાય છે અને અનંત પ્રદેશી એક સ્કંધ રૂપ ત્રીજો વિભાગ થાય છે. " अहवा-एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुप्पएसिए, एग-यओ अणंतपएसिए खंधे भवइ " અથવા-એક વિભાગમાં એક પરમાણુ પુદ્ગલ,

प्रदेशिकः स्कन्धो भवति, 'जाव अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ असंखेज्जपएसिए, एगयओ अणंतपएसिए खंधे भवइ' यावत्-एकतः परमाणुपुद्गलो भवति, एकत्रस्त्रिचतुःपञ्चषट्सप्ताष्टनवदशसंख्येयप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, एकतः-अनन्तप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, अथवा एकतः-परमाणुपुद्गलो भवति, एकतः-असंख्येयप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, एकतः-अनन्तप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, 'अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दो अणंतपएसिया खंधा भवंति' अथवा एकतः-परमाणुपुद्गलो भवति, एकतो द्वौ अनन्तप्रदेशिकौ स्कन्धौ भवतः, 'अहवा एगयओ

है 'जाव अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ असंखेज्जपएसिए, एगयओ अणंतपएसिए खंधे भवइ' यावत् एकभाग में एक परमाणुपुद्गल होता है, एकभाग में तीनप्रदेशी, चार प्रदेशी, पांच प्रदेशी, छहप्रदेशी, सातप्रदेशी, आठप्रदेशी, नौ प्रदेशी दशप्रदेशी, एवं संख्यातप्रदेशी स्कंध होता है और अन्यभाग में अनन्तप्रदेशिक एक स्कंध होता है। अथवा-एकभाग में एक परमाणुपुद्गल होता है, अपरभाग में असंख्यातप्रदेशिक स्कंध होता है, और अन्यभाग में अनन्तप्रदेशिक एक स्कंध होता है 'अहवा-एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ दो अणंतपएसिया खंधा भवंति' अथवा-एकभाग में एक परमाणुपुद्गल होता है एवं अपरभाग में दो अनन्तप्रदेशिक स्कन्ध होते हैं, 'अहवा-एगयओ दुप्पएसिए, एगयओ दो अणंतपएसिया खंधा भवंति' अथवा-एकभाग में

બીજા વિભાગમાં દ્વિપ્રદેશિક એક સ્કંધ અને ત્રીજા વિભાગમાં અનંત પ્રદેશી એક સ્કંધ હોય છે. "जाव अहवा-एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ असंखेज्जपएसिए, एगयओ अणंतपएसिए खंधे भवइ" અથવા એક ભાગમાં એક પરમાણુ પુદ્ગલ હોય છે, બીજા ભાગમાં ત્રણપ્રદેશી, ચારપ્રદેશી, પાંચપ્રદેશી, છ પ્રદેશી, સાત પ્રદેશી, આઠ પ્રદેશી, નવ પ્રદેશી, દસ પ્રદેશી અથવા સંખ્યાત પ્રદેશી સ્કંધ હોય છે અને ત્રીજા વિભાગમાં અનંત પ્રદેશી એક સ્કંધ હોય છે. અથવા એક ભાગમાં એક પરમાણુ પુદ્ગલ હોય છે, બીજા ભાગમાં અસંખ્યાત પ્રદેશી એક સ્કંધ હોય છે અને ત્રીજા ભાગમાં અનંત પ્રદેશી એક સ્કંધ હોય છે. "अहवा-एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दो अणंतपएसिया खंधा भवंति" અથવા-એક વિભાગમાં એક પરમાણુ પુદ્ગલ હોય છે અને બાકીના બે વિભાગમાં અનંત પ્રદેશી એક એક સ્કંધ હોય છે. "अहवा-एगयओ दुप्पएसिए, एगयओ दो अणंतपएसिया खंधा भवंति" અથવા એક

दुप्पएसिए, एगयओ दो अणंतपएसिया खंधा भवंति ' अथवा एकतो द्विप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, एकतो द्वौ अनन्तप्रदेशिकौ स्कन्धौ भवतः, 'एवं जाव अहवा एगयओ दसपएसिए, एगयओ दो अणंतपएसिया खंधा भवंति ' एवं-पूर्वोक्तरीत्या, यावत्-एकतस्त्रिचतुःपञ्चषट्सप्ताष्टनवप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, एकतो द्वौ अनन्तप्रदेशिकौ स्कन्धौ भवतः, अथवा एकतो दशमदेशिकः स्कन्धो भवति, एकतो द्वौ अनन्तप्रदेशिकौ स्कन्धौ भवतः 'अहवा एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे, एगयओ दो अणंतपएसिया खंधा भवंति ' अथवा एकतः-एकभागे संख्येयप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, एकतः-अपरभागे द्वौ अनन्तप्रदेशिकौ स्कन्धौ भवतः 'अहवा एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे, एगयओ दो अणंतपएसिया खंधा भवंति' अथवा-एकतः-एकभागे असंख्येयप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, एकतः-अपरभागे द्वौ अनन्तप्रदेशिकौ स्कन्धौ

एक द्विप्रदेशी स्कन्ध होता है, और अपरभाग में दो अनन्तप्रदेशी स्कन्ध होते हैं ' एवं जाव अहवा एगयओ दसपएसिए, एगयओ दो अणंतपएसिया खंधा भवंति ' इसी प्रकार से पूर्वोक्त रीति के अनुसार यावत् एकभाग में तीनप्रदेशी, चारप्रदेशी, पांचप्रदेशी, छहप्रदेशी, सातप्रदेशी, आठप्रदेशी, नौ प्रदेशी एक स्कन्ध होता है, एवं अपरभाग में दो अनन्तप्रदेशी स्कंध होते हैं अथवा-एकभाग में दशप्रदेशिक स्कन्ध होता है और अपरभाग में दो अनन्तप्रदेशी स्कन्ध होते हैं। 'अहवा-एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे, एगयओ दो अणंतपएसिया खंधा भवंति ' अथवा-एकभाग में संख्यातप्रदेशी स्कंध होता है, अपरभाग में दो अनन्तप्रदेशी स्कंध होते हैं ' अहवा-एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे, एगयओ दो अणंतपएसिया खंधा भवंति ' अथवा-एकभाग में असंख्यातप्रदेशी एक स्कन्ध होता है, अपरभाग में दो अनन्तप्रदेशी स्कन्ध होते हैं

ભાગમાં દ્વિપ્રદેશિક એક સ્કંધ હોય છે અને બાકીના બે વિભાગોમાં અનંત-પ્રદેશી એક એક સ્કંધ હોય છે. " एवं जाव अहवा एगयओ दस पएसिए, एगयओ दो अणंतपएसिया खधा भवंति" એજ પ્રમાણે પૂર્વોકિત પદ્ધતિ અનુસાર એક ભાગમાં ત્રણપ્રદેશી, ચારપ્રદેશી, પાંચ પ્રદેશી, છ પ્રદેશી, સાત પ્રદેશી, આઠ પ્રદેશી, નવ પ્રદેશી અથવા દસ પ્રદેશી સ્કંધ હોય છે અને બાકીના બે ભાગોમાં અનંતપ્રદેશી એક એક સ્કંધ હોય છે. " अहवा-एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे, एगयओ दो अणंतपएसिया खंधा भवंति " અથવા એક ભાગમાં એક સંખ્યાત પ્રદેશી સ્કંધ હોય છે અને બાકીના બે વિભાગોમાં એક એક અનંતપ્રદેશી સ્કંધ હોય છે. ' अहवा- एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे, एगयओ दो अणंतपएसिया खंधा भवंति " અથવા અસંખ્યાત પ્રદેશી સ્કંધરૂપ એક વિભાગ થાય છે અને અનંત પ્રદેશી એક એક સ્કંધરૂપ બે વિભાગો થાય

भवंतः, 'अहवा तिन्नि अणंतपएसिया खंधा भवंति' अथवा त्रयः अनन्तप्रदेशिकाः स्कन्धा भवन्ति। 'चउहा कज्जमाणे एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला, एगयओ अणंतपएसिए खंधे भवइ' अनन्तप्रदेशिकः स्कन्धश्चतुर्धा क्रियमाणः एकतस्त्रयः परमाणुपुद्गलाः भवन्ति, एकतः अनन्तप्रदेशिकः स्कन्धो भवति। 'एवं चउक्क संजोगो जाव असंखेज्जगसंजोगो' एवं-पूर्वोक्तरीत्या, चतुष्कसंयोगो यावत्-पञ्चक षट्क सप्तकाष्टकनवकदशकसंख्येयकसंयोगः, असंख्येयकसंयोगश्च भणितव्यः। 'एए सव्वे जहेव असंखेज्जाणं भणिया तहेव अणंताणा वि भाणियव्वा' एते उपर्युक्ताः सर्वे अभिलापकाः यथैव असंख्यकानां भणिताः-उक्तास्तथैव अनन्तानामपि भणितव्याः-वक्तव्याः, 'नवरं एक्कं अणंतगं अब्भहियं भाणियव्वं

'अहवा-तिन्नि अणंतपएसिया खंधा भवंति' अथवा तीन अनन्तप्रदेशोंवाले स्कंध होते हैं। 'चउहा कज्जमाणे एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला, एगयओ अणंतपएसिए खंधे भवइ' यह अनन्त प्रदेशिक स्कंध जब चार प्रकाररूप भागों में विभक्त किया जाता है-तब एक भाग में तीन परमाणुपुद्गल होते हैं, और अपरभाग में एक अनन्तप्रदेशी स्कन्ध होता है। 'एवं चउक्कसंजोगो जाव असंखेज्जगसंजोगो' पूर्वोक्त रीति के अनुसार चतुष्कसंयोग यावत् पंचक, षट्क, सप्तक, अष्टक, नवक, दशक संख्येयक और असंख्येयक संयोग कहना चाहिये 'एए सव्वे जहेव असंखेज्जाणं भणिया तहेव अणंताणा वि भाणियव्वा' ये उपर्युक्त समस्त अभिलापक जिस प्रकार असंख्यातों के कहे गये हैं उसी प्रकार से अनन्तों के भी कहना चाहिये 'नवरं एक्कं अणंतगं अब्भहियं

છે. "अहवा-तिन्नि अणंतपएसिया खंधा भवंति" અથવા અનંત પ્રદેશી ત્રણ સ્કંધ ૩૫ ત્રણ ભાગો પણ થઈ શકે છે. "चउहा कज्जमाणे एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गले, एगयओ अणंतपएसिए खंधे भवइ" તે અનંત પ્રદેશી સ્કંધના જ્યારે ચાર વિભાગો કરવામાં આવે છે, ત્યારે એક એક પરમાણુ પુદ્ગલ વાળા ત્રણ વિભાગો થાય છે અને અનંત પ્રદેશી સ્કંધ રૂપ ચોથો વિભાગ થાય છે. "एवं चउक्कसंजोगो जाव असंखेज्जगसंजोगो" ત્યાર બાદના ચતુષ્ક-સંયોગી, પંચકસંયોગી, ષટ્કસંયોગી, સપ્તકસંયોગી, અષ્ટકસંયોગી, નવકસંયોગી, દશકસંયોગી, સંખ્યેયકસંયોગી અને અસંખ્યેકસંયોગી વિકલ્પોનું કથન પૂર્વોકત પદ્ધતિ અનુસાર કરવું જોઇએ. "एए सव्वे जहेव असंखेज्जाणं भणिया तहेव अणंताणा वि भाणियव्वा" અસંખ્યાત પ્રદેશી સ્કંધના સંબંધમાં જેવા વિકલ્પો પ્રકટ કરવામાં આવ્યા છે, એવાં જ વિકલ્પો અનંત પ્રદેશી સ્કંધના ઉપર્યુંકત વિભાગો વિષે પણ સમજવા જોઇએ. "नवरं एक्कं अणंतगं अब्भ-

जाव ' नवरम्-असंख्येयापेक्षया विशेषस्तु अत्र एकम्-अनन्तकम् अभ्यधिकम् भणितव्यम्, यावत्-पूर्वोक्तरीत्या सर्वमुह्यम्, 'अहवा एगयओ संखेज्जा संखिज्जपएसिया खंधा, एगयओ अणंतपएसिया खंधा भवंति ' एकतः-एकभागे संख्येयाः संख्येयप्रदेशिकाः स्कन्धा भवन्ति, एकतः-अपरभागे अनन्तप्रदेशिकाः स्कन्धा भवन्ति, 'अहवा एगयओ संखेज्जा असंखेज्जपएसिया खंधा, एगयओ अणंतपएसिए खंधे भवइ ' अथवा एकतः-एकभागे संख्येयाः असंख्येयप्रदेशिकाः स्कन्धाः भवन्ति, एकतः-अपरभागे अनन्तप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, अहवा संखिज्जा अणंतपएसिया खंधा भवंति ' अथवा संख्येयाः अनन्तप्रदेशिकाः स्कन्धा भवन्ति। 'असंखेज्जहा कज्जमाणे एगयओ असंखेज्जा परमाणुपोग्गला, एगयओ अणंतपएसिए खंधे भवइ ' अनन्तप्रदेशिकः स्कन्धः असंख्येयधा क्रियमाणः एकतः-

---

भाणियव्वं जाव ' परन्तु असंख्यात के अभिलापकों की अपेक्षा इन अनंत के अभिलापकों में विशेषता केवल यही है कि इनमें असंख्यात के स्थान में अनन्त शब्द जोड़कर इन अभिलापकों का उच्चारण करना चाहिये ' अहवा एगयओ संखेज्जा संखिज्जपएसिया खंधा, एगयओ अणंतपएसिए खंधे भवइ' अथवा-एकभागमें संख्यात, संख्यात प्रदेशिक स्कन्ध होते हैं और अपरभाग में एक अनन्तप्रदेशिक स्कन्ध होता है। ' अहवा-एगयओ संखेज्जा असंखेज्जपएसिया खंधा, एगयओ अणंतपएसिए खंधे, भवइ ' अथवा-एकभाग में संख्यातप्रदेशों वाले स्कंध होते हैं, और अपरभाग में एक अनन्तप्रदेशिक स्कंध होता है ' अहवा-संखिज्जा अणंतपएसिया खंधा भवंति ' अथवा-संख्यात अनन्तप्रदेशिक स्कन्ध होते हैं। ' असंखेज्जहा कज्जमाणे एगयओ असं-

---

हियं जाव " परन्तु असंख्यात प्रदेशी स्कंधना आलापको करता अनंत प्रदेशी स्कंधना आलापकोमां એટલી જ વિશેષતા છે કે તે આલાપકોમાં જ્યાં ' असंख्यात ' પદ આવે છે, ત્યાં આ આલાપકોમાં " अनंत " પદ મૂકવું જોઇએ. " अहवा एगयओ संखेज्जा संखिज्जपएसिया खंधा, एगयओ अणंतपएसिया खंधा भवंति " અથવા સંખ્યાત પ્રદેશોવાળા સંખ્યાત સ્કંધો રૂપ સંખ્યાત વિભાગો થાય છે અને અનંત પ્રદેશી સ્કંધો રૂપ અન્ય વિભાગો હોય છે. " अहवा-एगयओ सखेज्जा असंखेज्जपएसिया खंधा, एगयओ अणंतपएसिए खंधे भवइ " અથવા અસંખ્યાત પ્રદેશોવાળા સંખ્યાત સ્કંધો અને અનંત પ્રદેશોવાળો એક સ્કંધ બને છે. " अहवा-संखिज्जा अणंतपएसिया खंधा भवंति " અથવા અનંત પ્રદેશોવાળા સંખ્યાત સ્કંધો બને છે. असंखेज्जहा कज्जमाणे एगयओ असंखेज्जा परमाणुपोग्गला, एगयओ अणंतपएसिए खंधे भवइ "

असंख्येयाः परमाणुपुद्गला भवन्ति, एकतः अनन्तप्रदेशिकः स्कन्धो भवति 'अहवा एगयओ असंखिज्जा दुप्पएसिया खंधा, एगयओ अणंतपएसिए खंधे भवइ जाव' अथवा एकतः असंख्येया द्विप्रदेशिकाः स्कन्धा भवन्ति, एकतः अनन्तप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, यावत्-एकतः असंख्येया स्त्रिचतुःपञ्चषट्सप्ताष्टनवदशप्रदेशिकाः स्कन्धा भवन्ति, एकतः अनन्तप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, 'अहवा एगयओ असंखेज्जा संखिज्जपएसिया, एगयओ अणंतपएसिए खंधे भवइ' अथवा एकतः असंख्येयाः संख्येयप्रदेशिकाः स्कन्धा भवन्ति, एकतः-अनन्तप्रदेशिकः स्कन्धो

खेज्जा परमाणुपोग्गला, एगयओ अणंतपएसिए खंधे भवइ' अनन्तप्रदेशिक स्कन्ध जब असंख्यात प्रकाररूप विभागों में विभक्त किया जाता है-तब एकभाग में असंख्यातपरमाणुपुद्गल होते हैं, और अपरभाग में अनन्तप्रदेशिक एक स्कन्ध होता है 'अहवा-एगयओ असंखिज्जा दुप्पएसिया खंधा, एगयओ अणंतपएसिए खंधे भवइ' जाव 'अथवा-एकभाग में असंख्यात द्विप्रदेशिक स्कन्ध होते हैं, और अपरभाग में एक अनन्तप्रदेशिक स्कंध होता है। यावत्-एकभाग में असंख्यात त्रिप्रदेशिक, चतुष्प्रदेशिक, पंचदेशिक, षट्प्रदेशिक, सप्तप्रदेशिक, अष्टप्रदेशिक नवप्रदेशिक और दश प्रदेशिक स्कन्ध होते है, और अपरभाग में एक अनन्तप्रदेशिक स्कन्ध होता है। 'अहवा-एगयओ असंखेज्जा संखिज्जपएसिया, एगयओ अणंतपएसिए खंधे भवइ' अथवा-एकभाग में असंख्यात संख्यातप्रदेशिक स्कन्ध होते हैं और अपरभाग में

જ્યારે તે અનંત પ્રદેશી સ્કંધના અસંખ્યાત વિભાગો કરવામાં આવે છે, ત્યારે એક એક પરમાણુ પુદ્ગલવાળા અસંખ્યાત વિભાગો અને અનંત પ્રદેશોવાળા એક સ્કંધમાં તે અનંત પ્રદેશી સ્કંધ વિભક્ત થઈ જાય છે. "अहवा-एगयओ असंखिज्जा दुप्पएसिया खंधा, एगयओ अणंतपएसिए खंधे भवइ" અથવા દ્વિપ્રદેશિક સ્કંધ રૂપ અસંખ્યાત વિભાગો થાય છે અને અનંત પ્રદેશી સ્કંધ રૂપ એક વિભાગ થાય છે. "जाव अहवा एगयओ असंखेज्जा संखिज्जपएसिया, एगयओ अणंतपएसिए खधे भवइ" અથવા ત્રણ, ચાર, પાંચ, છ, સાત, આઠ, નવ અથવા દસ પ્રદેશોવાળા સ્કંધોરૂપ અસંખ્યાત વિભાગો થાય છે અને અનંત પ્રદેશી સ્કંધ રૂપ એક વિભાગ થાય છે અથવા સંખ્યાત પ્રદેશોવાળા સ્કંધો રૂપ અસંખ્યાત વિભાગો થાય છે અને અનંતપ્રદેશી સ્કંધ રૂપ એક વિભાગ થાય છે. "अहवा-एगयओ असंखिज्जा असखिज्जपएसिया खंधा, एगयओ अणंतपएसिए खंधे भवइ" અથવા અસંખ્યાત પ્રદેશોવાળા સ્કંધો રૂપ અસંખ્યાત વિભાગો થાય છે અને અનંત

भवति, 'अहवा एगयओ असंखिज्जा असंखिज्जपएसिया खंधा, एगयओ अणंतपएसिए खंधे भवइ' अथवा एकतः असंख्येयाः असंख्येयप्रदेशिकाः स्कन्धा भवन्ति, एकतः अनन्तप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, 'अहवा असंखेज्जा अणंतपएसिया खंधा भवंति' अथवा असंख्येयाः अनन्तप्रदेशिकाः स्कन्धा भवन्ति। 'अणंतहा कज्जमाणे अणंता परमाणुपोग्गला भवंति' अनन्तप्रदेशिकः स्कन्धः अनन्तधा क्रियमाणः अनन्ताः परमाणुपुद्गला भवन्ति, तथा चात्र द्विप्रदेशिकस्य स्कन्धस्य भिद्यमानत्वे एको विकल्पः, त्रिप्रदेशिकस्य द्वौ, चतुष्प्रदेशिकस्य चत्वारः पञ्चप्रदेशिकस्य षट्, षट् प्रदेशिकस्य दश, सप्तप्रदेशिकस्य चतुर्दश, अष्टप्रदेशिकस्य एकविंशतिः नव-

---

अनन्तप्रदेशिक एक स्कन्ध होता है 'अहवा-एगयओ असंखिज्जा असंखिज्जपएसिया खंधा, एगयओ अणंतपएसिए खंधे भवइ' अथवा-एकभाग में असंख्यात असंख्यातप्रदेशिक स्कंध होते हैं और अपरभाग में एक अनन्तप्रदेशिक स्कन्ध होता है। 'अहवा-असंखेज्जा अणंतपएसिया खंधा भवंति' अथवा-असंख्यात अनन्तप्रदेशिक स्कंध होते हैं। 'अणंतहा कज्जमाणे अणंता परमाणुपोग्गला भवंति' जब इस अनन्तप्रदेशिक स्कन्ध के अनन्त विभाग किये जाते हैं-तब अनन्तपुद्गलपरमाणु होते हैं। तथाच यहां पर द्विप्रदेशी स्कन्ध के विभाग में एक विकल्प, त्रिप्रदेशी स्कन्ध के विभाग में दो विकल्प, चतुष्प्रदेशी स्कन्ध के विभाग में चार विकल्प, पांच प्रदेशी स्कंध के विभाग में छह विकल्प. छहप्रदेशी स्कन्ध के विभाग में दशविकल्प, सप्तप्रदेशी स्कंध के विभाग में १४

પ્રદેશી સ્કંધ ૨૫ એક વિભાગ થાય છે. "अहवा-असंखेज्जा अणंतपएसिया खंधा भवंति" અથવા અસંખ્યાત અનંત પ્રદેશિક સ્કંધો ૨૫ પણ તે અનંત પ્રદેશી સ્કંધ વિભકત થઈ શકે છે. "अणंतहा कज्जमाणे अणंता परमाणुपोग्गला भवंति" જ્યારે તે અનંત પ્રદેશી સ્કંધના અનંત વિભાગો કરવામાં આવે છે, ત્યારે એક એક પરમાણુ પુદ્ગલવાળા અનંત વિભાગોમાં તે સ્કંધ વિભકત થઈ જાય છે.

હવે દ્વિપ્રદેશિકથી લઈને અનંતપ્રદેશી પર્યન્તના પ્રત્યેક સ્કંધના જ્યારે વિભાગો કરવામાં આવે છે, ત્યારે કેટલા વિકલ્પો બને છે, તે પ્રકટ કરવામાં આવે છે—

દ્વિપ્રદેશી સ્કંધના વિભાગમાં એક વિકલ્પ, ત્રિપ્રદેશી સ્કંધના વિભાગમાં બે વિકલ્પ, ચાર પ્રદેશી સ્કંધના વિભાગમાં ચાર વિકલ્પ, પાંચ પ્રદેશી સ્કંધના વિભાગમાં છ વિકલ્પ, છ પ્રદેશી સ્કંધના વિભાગમાં ૧૦ વિકલ્પ, સાત પ્રદેશી સ્કંધના વિભાગમાં ૧૪ વિકલ્પ, આઠ પ્રદેશી સ્કંધના વિભાગમાં

प्रदेशिकस्याष्टाविंशतिः, दशमदेशिकस्य चत्वारिंशत्, संख्यातप्रदेशिकस्य द्विधा भिद्यमानत्वे एकादश, त्रिधा भिद्यमानत्वे एकविंशतिः, चतुर्धा भेदे एकत्रिंशत्, पञ्चधा भेदे एकचत्वारिंशत्, षोढा भेदे एकपञ्चाशत्, सप्तधा भेदे एकषष्टिः, अष्टधा भेदे एकसप्ततिः, नवधा भेदे एकाशीतिः दशधा भेदे एकनवतिः, संख्येयधा भेदेतु एक एव विकल्पः, तदाह-'संखेज्जहा कज्जमाणे संखेज्जा परमाणुपोग्गला भवंति' त्ति, असंख्यातप्रदेशिकस्य द्विधा भेदे द्वादश १२, त्रिधा भेदे त्रयोविंशतिः२३, चतुर्धा भेदे चतुस्त्रिंशत् ३४, पञ्चधा भेदे पञ्चचत्वारिंशत् ४५, षोढा भेदे षट्पञ्चाशत् ५६, सप्तधा भेदे सप्तषष्टिः ६७, अष्टधा भेदेऽष्टसप्ततिः७८,

---

વિકલ્પ, અષ્ટપ્રદેશી સ્કન્ધ કે વિભાગ મેં ૨૧ વિકલ્પ, નૌ પ્રદેશી સ્કંધ કે વિભાગ મેં ૨૮ વિકલ્પ, દશ પ્રદેશી સ્કન્ધ કે વિભાગ મેં ૪૦ વિકલ્પ, સંખ્યાત પ્રદેશી સ્કંધ કે દો પ્રકાર કે વિભાગોં મેં ૧૧ વિકલ્પ, તીન પ્રકાર કે વિભાગોં મેં ૨૧ વિકલ્પ, ચાર પ્રકાર કે વિભાગોં મેં ૩૧ વિકલ્પ, પાંચપ્રકાર કે ભેદોં મેં ૪૧ વિકલ્પ, છહપ્રકાર કે ભેદોં મેં ૫૧ વિકલ્પ, સાતપ્રકાર કે ભેદોં મેં ૬૧ વિકલ્પ, આઠપ્રકાર કે ભેદ મેં ૭૧ વિકલ્પ, નૌ પ્રકાર કે ભેદ મેં ૮૧ વિકલ્પ, દશ પ્રકાર કે ભેદોં મેં ૯૧ વિકલ્પ, ઔર સંખ્યાત પ્રકાર કે ભેદ મેં ૧ હી વિકલ્પ હોતા હૈ। સો હી કહા કિ-'संखेज्जहा कज्जमाणे संखेज्जा परमाणुपोग्गला भवंति' त्ति' અસંખ્યાત પ્રદેશી સ્કન્ધ કે દો પ્રકાર કે ભેદ મેં ૧૨ વિકલ્પ, તીન પ્રકાર સે ભેદ કરને પર ૨૩, ચાર પ્રકાર સે ભેદ કરને પર ૩૪, પંચપ્રકાર સે ભેદ કરને પર ૪૫, છહ પ્રકાર સે ભેદ કરને પર ૫૬, સાત પ્રકાર સે ભેદ કરને પર ૬૭, આઠ પ્રકાર સે ભેદ કરને પર ૭૮, નૌ

---

૨૧ વિકલ્પ, નવપ્રદેશી સ્કંધના વિભાગમાં ૨૮ વિકલ્પ, અને દસ પ્રદેશી સ્કંધના વિભાગોમાં ૪૦ વિકલ્પ થાય છે. સંખ્યાત પ્રદેશી સ્કંધના બે વિભાગ કરવામાં આવે ત્યારે ૧૧ વિકલ્પ, ત્રણ વિભાગ કરવામાં આવે ત્યારે ૨૧ વિકલ્પ, ચારથી લઈને દસ પર્યન્તના વિભાગ કરવામાં આવે ત્યારે અનુક્રમે ૩૧, ૪૧, ૫૧, ૬૧, ૭૧, ૮૧, અને ૯૧ વિકલ્પ અને સંખ્યાત વિભાગો કરવામાં આવે ત્યારે માત્ર એક જ વિકલ્પ બને છે. એજ વાત નીચેના સૂત્રપાઠ દ્વારા પ્રકટ કરવામાં આવી છે-" संखेज्जहा कज्जमाणे संखेज्जा परमाणु पोग्गला भवंति त्ति " અસંખ્યાત પ્રદેશી સ્કંધના જ્યારે બે વિભાગ કરવામાં આવે છે, ત્યારે ૧૨ વિકલ્પો અને ત્રણથી લઈને ૧૦ પર્યન્તના વિભાગો કરવામાં આવે ત્યારે અનુક્રમે ૨૩, ૩૪, ૪૫, ૫૬, ૬૭, ૭૮, ૮૯ અને

नवधाभेदे एकोननवतिः ८९, दशधा भेदे शतमेकम् १००, संख्येयधा भेदे द्वादश१२, असंख्यातभेदेतु एक एव, तदाह-"असंखेज्जा परमाणुपोग्गला भवंति" अनन्तप्रदेशिकस्य तु द्विधात्वे त्रयोदश१३, त्रिधात्वे पञ्चविंशतिः२५, चतुर्धात्वे सप्तत्रिंशत्३७, पञ्चधात्वात्वे एकोनपञ्चाशत्४९, षोढात्वे एकषष्टिः६१, सप्तधात्वे त्रिसप्ततिः७३, अष्टधात्वे पञ्चाशीतिः८५, नवधात्वे सप्तनवतिः९७, दशधात्वे नवोत्तरशतम् १०९, संख्यातत्वे द्वादश १२, असंख्यातत्वे त्रयोदश१३, अनन्तत्वेतु एकएव विकल्पः, तदाह-"अणंतहा कज्जमाणे अणंता परमाणुपोग्गला भवंति' त्ति, ॥सू० १॥

मूलम्-एएसि णं भंते ! परमाणुपोग्गलाणं साहणणाभेयाणुवाएणं अणंताणंता पोग्गलपरियट्टा समणुगंतव्वा भवंतीति

प्रकार से भेद करने पर ८९, दश प्रकार से करने पर १००, संख्यात-प्रकार से भेद करने पर १२ और असंख्यात प्रकार से भेद करने पर १ ही होता है। सो ही कहा है-' असंखेज्जा परमाणुपोग्गला भवंति' अनंतप्रदेशिक स्कन्ध के दो प्रकार के भेद में १३, तीन प्रकार के भेद में २५, चार प्रकार के भेद में ३७, पांचप्रकार के भेद में ४९, छह प्रकार के भेद में ६१, सात प्रकार के भेद में ७३, आठ प्रकार के भेद में ८५, नौ प्रकार के भेद में ९७, दश प्रकार के भेद में १०९, संख्यात प्रकार के भेद में १२, असंख्यातप्रकार के भेद में १३, और अनन्तप्रकार के भेद में १ ही विकल्प होता है। सो ही कहा है, 'अणंतहा कज्जमाणे अणंता परमाणुपोग्गला भवंति' त्ति ॥सू० १॥

---

૧૦૦ વિકલ્પો બને છે. અસંખ્યાત પ્રદેશી સ્કંધના જ્યારે સંખ્યાત વિભાગો કરવામાં આવે છે ત્યારે ૧૨ અને અસંખ્યાત વિભાગો કરવામાં આવે ત્યારે એક જ વિકલ્પ બને છે. એજ વાત "असंखेज्जा परमाणुपोग्गला भवंति" આ સૂત્રપાઠ દ્વારા પ્રકટ કરી છે. અનંત પ્રદેશિક સ્કંધના બે વિભાગો કરવામાં આવે ત્યારે ૧૩ વિકલ્પો, ત્રણથી લઈને અસંખ્યાત પર્યન્તના વિભાગો કરવામાં આવે ત્યારે અનુક્રમે ૨૫, ૩૭, ૪૯, ૬૧, ૭૩, ૮૫, ૯૭, ૧૦૯, ૧૨ અને ૧૩ વિકલ્પો બને છે. અને જ્યારે તેના અનંત વિભાગો કરવામાં આવે છે ત્યારે એક જ વિકલ્પ બને છે. એજ વાત "अणंतहा कज्जमाणे अणंता परमाणुपोग्गला भवंति" त्ति" આ સૂત્રપાઠ દ્વારા પ્રકટ કરવામાં આવી છે. ॥સૂ૦૧॥

मक्खाया ? हंता, गोयमा ! एएसिणं परमाणुपोग्गलाणं साह-णणा जाव मक्खाया । कइविहेणं भंते ! पोग्गलपरियट्टे पण्णत्ते ? गोयमा ! सत्तविहे पोग्गलपरियट्टे पण्णत्ते, तंजहा-ओरालिय पोग्गलपरियट्टे, वेउव्वियपोग्गलपरियट्टे, तेया पोग्गलपरियट्टे, कम्मा पोग्गलपरियट्टे, मणपोग्गलपरियट्टे, वइ पोग्गलपरियट्टे, आणापाणु पोग्गलपरियट्टे। नेरइयाणं भंते ! कइविहे पोग्गलपरि-यट्टे पण्णत्ते ? गोयमा ! सत्तविहे पोग्गलपरियट्टे पण्णत्ते, तंजहा-ओरालियपोग्गलपरियट्टे, वेउव्वियपोग्गलपरियट्टे, तेयापोग्गल-परियट्टे, कम्मा पोग्गलपरियट्टे, मण पोग्गलपरियट्टे, वइ पोग्गल-परियट्टे, आणापाण पोग्गलपरियट्टे। एवं जाव वेमाणियाणं। एगमेगस्स णं भंते ! नेरइयस्स केवइया ओरालियपोग्गलपरि-यट्टा अईया ? अणंता। केवइया पुरेक्खडा ? कस्सइ अत्थि, कस्सइ नत्थि, जस्सत्थि जहण्णेणं एक्कोवा, दोवा, तिन्निवा, उक्कोसेणं संखेज्जा वा असंखेज्जा वा, अणंता वा। एगमेगस्स णं भंते ! असुरकुमारस्स केवइया ओरालियपोग्गलपरियट्टा० ? एवं चेव, एवं जाव वेमाणियस्स। एगमेगस्स णं भंते ! नेरइयस्स केवइया वेउव्वियपोग्गलपरियट्टा अईया ? अणंता, एवं जहेव ओरालिय-पोग्गलपरियट्टा तहेव वेउव्विय पोग्गलपरियट्टा वि भाणियव्वा, एवं जाव वेमाणियस्स एवं जाव आणापाणु पोग्गलपरियट्टा। एए एगत्तिया सत्तदंडगा भवंति, नेरइयाणं भंते ! केवइया ओरालिय-पोग्गलपरियट्टा अईया ? गोयमा ! अणंता, केवइया पुरेक्खडा ?

अणंता, एवं जाव वेमाणिया णं, एवं वेउव्वियपोग्गलपरियट्टा वि एवं जाव आणापाणुपोग्गलपरियट्टा वेमाणियाणं। एवं एए पोह-त्तिया सत्तचउव्वीसइदंडगा। एगमेगस्स णं भंते! नेरइयस्स नेर-इयत्ते केवइया ओरालियपोग्गलपरियट्टा अईया? नत्थि एक्कोवि। केवइया पुरेक्खडा? नत्थि एक्कोवि। एगमेगस्सणं भंते! नेरइ-यस्स असुरकुमारत्ते केवइया ओरालियपोग्गलपरियट्टा अईया? एवं चेव, एवं जाव थणियकुमारत्ते जहा असुरकुमारत्ते। एगमेग-स्स णं भंते! नेरइयस्स पुढविकाइयत्ते केवइया ओरालियपोग्गल-परियट्टा अईया? अणंता केवइया पुरेक्खडा? कस्सइ अत्थि, कस्सइ नत्थि, जस्सत्थि तस्स जहण्णे णं एक्को वा, दोवा, उक्कोसेणं संखेज्जा वा असंखेज्जा वा, अणंता वा। एवं जाव मणुस्सत्ते। वाणमं-तरजोइसियवेमाणियत्ते जहा असुरकुमारत्ते एगमेगस्स णं भंते! असुरकुमारस्स नेरइयत्ते केवइया अईया, ओरालियपोग्गलपरि-यट्टा एवं जहा नेरइयस्स वत्तव्वया भणिया तहा असुरकुमारस्स वि भाणियव्वा, जाव वेमाणियस्स। एवं जाव थणियकुमारस्स, एवं पुढविकाइयस्स वि, एवं जाव वेमाणियस्स, सव्वेसिं एक्को गमो। एगमेगस्स णं भंते! नेरइयस्स नेरइयत्ते केवइया वेउव्विय-पोग्गलपरियट्टा अईया? अणंता। केवइया पुरेक्खडा? एको-त्तरिया जाव अणंता, एवं जाव थणियकुमारत्ते। पुढविकाइयत्ते पुच्छा, नत्थि एक्को वि, केवइया पुरेक्खडा? नत्थि एक्को वि एवं जत्थ वेउव्वियसरीरं अत्थि तत्थ एगुत्तरिओ, जत्थ नत्थि

तत्थ जहा पुढविकाइयत्ते तथा भाणियव्वं जाव वेमाणियस्स वेमाणियत्ते, तेया पोग्गलपरियट्टा, कम्मा पोग्गलपरियट्टा य, सव्वत्थ एक्कोत्तरिया भाणियव्वा, मणपोग्गलपरियट्टा सव्वेसु पंचिंदिएसु एगोत्तरिया, विगलिंदिएसु नत्थि, वइपोग्गलपरियट्टा, एवं चेव, नवरं एगिंदिएसु नत्थि, भाणियव्वा, आणापाणु पोग्गलपरियट्टा सव्वत्थ एगोत्तरिया जाव वेमाणियस्स वेमाणियत्ते। नेरइयाणं भंते! नेरइयत्ते केवइया ओरालियपोग्गलपरियट्टा अईया? नत्थि एक्को वि। केवइया पुरेक्खडा? नत्थि एक्को वि। एवं जाव थणियकुमारत्ते पुढविकाइयत्ते पुच्छा गोयमा! अणंता। केवइया पुरेक्खडा? अणंता। एवं जाव मणुस्सत्ते, वाणमंतरजोइसियवेमाणियत्ते जहा नेरइयत्ते, एवं जाव वेमाणियाणं वेमाणियत्ते, एवं सत्तवि पोग्गलपरियट्टा भाणियव्वा, जत्थ, अत्थि तत्थ अईया वि ुरेक्खडा वि, अणंता भाणियव्वा, जत्थ नत्थि तत्थ दोवि नत्थि भाणियव्वा, जाव वेमाणियाणं वेमाणियत्ते केवइया आणापाणपोग्गलपरियट्टा अईया। अणंता, केवइया ुरेक्खडा? अणंता, ॥सू० २॥

छाया- एतेषां खलु भदन्त! परमाणुपुद्गलानां संहननभेदानुपातेन अनन्तानन्ताः पुद्गलपरिवर्ताः समनुगन्तव्याः भवन्तीति आख्याताः? हन्त! गौतम! एतेषां खलु परमाणुपुद्गलानां संहननं यावत् आख्याताः। कतिविधाः खलु भदन्त! पुद्गलपरिवर्ताः प्रज्ञप्ताः? गौतम! सप्तविधः पुद्गलपरिवर्तः प्रज्ञप्तः, तद्यथा-औदारिकपुद्गलपरिवर्तः, वैक्रियपुद्गलपरिवर्तः, तैजसपुद्गलपरिवर्तः, कार्मणपुद्गलपरिवर्तः, मनःपुद्गलपरिवर्तः, वचःपुद्गलपरिवर्तः, आनप्राणपुद्गलपरिवर्तः। नैरयिकाणां भदन्त! कतिविधः पुद्गलपरिवर्तः प्रज्ञप्तः? गौतम!

सप्तविधः पुद्गलपरिवर्तः प्रज्ञप्तः, तद्यथा–औदारिकपुद्गलपरिवर्तः वैक्रियपुद्गलपरिवर्तः, तैजसपुद्गलपरिवर्तः, कार्मणपुद्गलपरिवर्तः, मनः पुद्गलपरिवर्तः, वचः पुद्गलपरिवर्तः, आनप्राणपुद्गलपरिवर्तः, एवं यावत् वैमानिकानाम्, एकैकस्य खलु भदन्त! नैरयिकस्य कियन्तः औदारिकपुद्गलपरिवर्त्ताः अतीताः? अनन्ताः कियन्तः पुरस्कृताः? कस्यचिदस्ति, कस्यचिन्नास्ति, यस्यास्ति जघन्येन एको वा, द्वौ वा, त्रयो वा, उत्कृष्टेन संख्येया वा, असंख्येया वा, अनन्ता वा। एकैकस्य खलु भदन्त! असुरकुमारस्य कियन्तः औदारिकपुद्गलपरिवर्ताः अतीताः? एवमेव, एवं यावत् वैमानिकस्य। एकैकस्य खलु भदन्त! नैरयिकस्य कियन्तो वैक्रियपुद्गलपरिवर्ताः अतीताः? अनन्ताः, एवं यथैव औदारिकपुद्गलपरिवर्ता स्तथैव वैक्रियपुद्गलपरिवर्ता अपि भणितव्याः, एवं यावत्-वैमानिकस्य एवं यावत् आनप्राणापुद्गलपरिवर्ताः, एते एकत्विकाः सप्तदण्डका भवन्ति। नैरयिकाणां भदन्त! कियन्तः औदारिकपुद्गलपरिवर्ताः अतीताः? गौतम! अनन्ताः, कियन्तः पुरस्कृताः? अनन्ताः, एवं यावत् वैमानिकानाम्। एवं वैक्रियपुद्गलपरिवर्ता अपि, एवं यावत् आनप्राणपुद्गलपरिवर्ताः वैमानिकानाम्। एवम् एते पृथक्त्वकाः सप्तचतुर्विंशतिः दण्डकाः। एकैकस्य खलु भदन्त! नैरयिकस्य नैरयिकत्वे कियन्तः औदारिकपुद्गलपरिवर्ताः अतीताः? नास्ति एकोऽपि कियन्तः पुरस्कृताः? नास्ति एकोऽपि। एकैकस्य खलु भदन्त! नैरयिकस्य असुरकुमारत्वे कियन्तः औदारिकपुद्गलपरिवर्ताः अतीताः? एवमेव, एवं यावत् स्तनितकुमारत्वे, यथा असुरकुमारत्वे। एकैकस्य खलु भदन्त! नैरयिकस्य पृथिवीकायिकत्वे कियन्तः औदारिकपुद्गलपरिवर्ताः अतीताः? अनन्ताः, कियन्तः पुरस्कृताः? कस्यचित् अस्ति कस्यचित् नास्ति, यस्यास्ति, तस्य जघन्येन एको वा, द्वौ वा, त्रयो वा, उत्कृष्टेन संख्येया वा, असंख्येया वा, अनन्ता वा, एवं यावत् मनुष्यत्वे, वानव्यन्तरज्योतिषिकवैमानिकत्वे यथा असुरकुमारत्वे। एकैकस्य खलु भदन्त! असुरकुमारस्य नैरयिकत्वे कियन्तः अतीताः औदारिकपुद्गलपरिवर्ताः? एवं यथा नैरयिकस्य वक्तव्यता भणिता तथा असुरकुमारस्यापि भणितव्या, यावत्–वैमानिकानाम्, एवं यावत्–स्तनितकुमारस्य, एवं पृथिवीकायिकस्यापि, एवं यावत् वैमानिकस्य, सर्वेषाम् एको गमः। एकैकस्य खलु भदन्त! नैरयिकस्य कियन्तो वैक्रियपुद्गलपरिवर्ताः अतीताः? अनंताः, कियन्तः पुरस्कृताः? एकोत्तरिकाः यावत् अनन्ताः, एवं यावत् स्तनितकुमारत्वे। पृथिवी कायिकत्वे पृच्छा, नास्ति एकोऽपि, कियन्तः पुरस्कृताः? नास्ति एकोऽपि, एवं यस्य वैक्रियशरीरम् अस्ति, तत्र एकोत्तरिकाः, यत्र नास्ति तत्र यथा पृथिवीकायिकत्वे तथा भणितव्यम्, यावत् वैमानिकस्य, वैमानिकत्वे। तैजसपुद्गलपरिवर्ताः कार्मणपुद्गल-

परिवर्ताश्च सर्वत्र एकोत्तरिकाः भणितव्याः। मनःपुद्गलपरिवर्ताः सर्वेषु पञ्चेन्द्रियेषु एकोत्तरिकाः, विकलेन्द्रियेषु नास्ति। वचः पुद्गलपरिवर्ताः एवमेव, नवरम्-एकेन्द्रियेषु नास्ति भणितव्यम्, आनप्राणपुद्गलपरिवर्ताः सर्वत्र एकोत्तरिकाः यावत् वैमानिकस्य वैमानिकत्वे। नैरयिकाणाम् भदन्त! नैरयिकत्वे कियन्तः औदारिकपुद्गलपरिवर्ताः अतीताः? नास्ति एकोऽपि, कियन्तः पुरस्कृताः? नास्ति एकोऽपि, एवं यावत् स्तनितकुमारत्वे, पृथिवीकायिकत्वे पृच्छा, गौतम! अनन्ताः, कियन्तः पुरस्कृताः? अनन्ताः, एवं यावत् मनुष्यत्वे वानव्यन्तरज्योतिषिकवैमानिकत्वे यथा नैरयिकत्वे, एवं यावत् वैमानिकानाम् वैमानिकत्वे, एवं सप्तापि पुद्गलपरिवर्ताः भणितव्याः, यत्र सन्ति तत्र अतीता अपि, पुरस्कृता अपि, अनन्ताः, भणितव्याः, यत्र न सन्ति तत्र द्वात्रपि नस्तः भणितव्यौ, यावत् वैमानिकानां वैमानिकत्वे कियन्तः आनप्राणपुद्गलपरिवर्ताः अतीताः? अनन्ताः, कियन्तः पुरस्कृताः? अनन्ताः ॥सू० २॥

टीका—पूर्वं पुद्गलानां संहननादिकं प्रोक्तम् साम्प्रतं तदेव प्रकारान्तरेणाह-'एएसि णं' इत्यादि। 'एएसि णं भंते! परमाणुपोग्गलाणं साहणणाभेयाणुवाएणं अणंताणंता पोग्गलपरियट्टा समणुगंतव्वा भवंतीति मक्खाया?' हे भदन्त! एतेषां खलु पूर्वोक्तानां परमाणुपुद्गलानाम् संहननभेदानुपातेन-संहननं-संघातः एकीभवनम् भेदश्च वियोजनम्-पृथक्त्वम्, तयोरनुपातः योगः संहननभेदानुपा-

पुद्गलपरिवर्त्तवक्तव्यता—

'एएसिणं भंते! परमाणुपोग्गलाणं' इत्यादि।

टीकार्थ-इसके पहिले पुद्गलों का संयोग आदि कहा जा चुका है। उसी को सूत्रकार अब प्रकारान्तर से कह रहे हैं-'एएसिं णं भंते! परमाणुपोग्गलाणं साहणणाभेयाणुवाएणं अणंताणंता पोग्गलपरियट्टा समणुगंतव्वा भवंतीति मक्खाया' संहनन नाम संघात का और भेद नाम वियोग-विश्लेष पृथक् होने का है। जितने पुद्गलद्रव्य हैं, उनके साथ परमाणुओं का जो संयोग-एकीभावरूप संबंध और वियोग

—પુદ્ગલપરિવર્ત્તવક્તવ્યતા—

"एएसिणं भंते! परमाणुपोग्गलाणं" इत्यादि—

ટીકાર્થ-આગલા સૂત્રમાં પુદ્ગલોના સંયોગ આદિનું કથન કરવામાં આવ્યું છે, એજ વાતનું સૂત્રકાર હવે અન્ય પ્રકારે પ્રતિપાદન કરે છે-एएसिणं भंते! परमाणुपोग्गलाणं साहणणा भेयाणुवाएणं पोग्गल परियट्टा समणुगंतव्वा भवंतीति मक्खाया" સંહનન એટલે સંઘાત અને ભેદ એટલે વિયોગ અથવા અલગ થવું તે જેટલાં પુદ્ગલ દ્રવ્યો છે, તેમની સાથે પરમાણુઓનો જે સંયોગ-

तस्तेन, सर्वपुद्गलद्रव्यैः सह परमाणूनां संयोगेन वियोगेन चेति भावः। अनन्तानन्ताः-अनन्तेन गुणिताः अनन्ताः अनन्तानन्ताः एकोऽपि परमाणुः द्व्यणुकादिभिरनन्ताणुकान्तै र्द्रव्यैः सह संयुज्यमानोऽनन्तान् परावर्तान् प्राप्नोति, प्रतिद्रव्यं परिवर्तभावेन परमाणूनामनन्तत्वेन च, प्रतिपरमाणुपरिवर्तानामनन्तत्वात्, परमाणुपुद्गलपरिवर्तानामनन्तानन्तत्वमवसेयम् इत्यभिप्रायेणाह-अनन्तानन्ताः पुद्गलपरिवर्ताः-पुद्गलैः पुद्गलद्रव्यैः सह परिवर्ताः-परमाणूनां मेलनम्-पुद्गलपरिवर्ताः समनुगन्तव्याः-अवगन्तव्याः भवन्तीति हेतोः आख्याताः प्ररूपिताः किमिति

होता रहता है-इसी का नाम संहननभेदानुपात है इस संहनन और भेद को लेकर एक भी पुद्गलपरमाणु द्व्यणुकादि पुद्गलद्रव्य से लेकर अनन्ताणुक द्रव्यों तक के साथ संयुक्त होता हुआ अनंत परावर्तों को प्राप्त करता है। पुद्गल परमाणु स्वयं अनन्त हैं, और वे प्रत्येक द्रव्य के साथ मिलते रहते हैं और बिछुडते रहते हैं- यही इनका परिवर्तभाव है। ऐसा परिवर्तभाव प्रत्येक परमाणु के साथ होता रहता है। इस प्रकार से प्रत्येक परमाणु का परिवर्तभाव अनंत होता है। इसी कारण यहां इस परिवर्तभाव को अनंतानंत कहा गया है। अनंत को अनंत से गुणा करना-इसका नाम अनंतानंत है। यहांपर इसी बात को गौतम ने प्रभु से पूछा है-कि हे भदन्त! जब जब पुद्गलद्रव्यों के साथ परमाणुओं के मिलने आदि रूप ये अनंतानंत पुद्गलपरिवर्त होते रहते हैं ऐसा जानने

એટલી ભાવરૂપ સંબંધ-અને વિયોગ થતો રહે છે, તેનું જ નામ 'સંહનનભેદાનુપાત' છે આ સંહનન અને ભેદની અપેક્ષાએ વિચાર કરવામાં આવે તો એક પુદ્ગલપરમાણુ પણ બે અણુવાળાથી લઈને અનંત પર્યંતના અણુઓવાળાં દ્રવ્યોની સાથે સંયુકત થવા રૂપ અનંત પરાવર્તો પ્રાપ્ત કરતું રહે છે. પુદ્ગલપરમાણુ પોતે જ અનંત છે, અને તેઓ પ્રત્યેક દ્રવ્યની સાથે મળતાં રહે છે, અને તે દ્રવ્યોમાંથી અલગ થતાં રહે છે, એજ તેમનો પરિવર્તભાવ છે. પ્રત્યેક પરમાણુની સાથે એવો પરિવર્તભાવ થતો રહે છે. આ રીતે પ્રત્યેક પરમાણુનો પરિવર્તભાવ અનંત હોય છે. એજ કારણે તે પરિવર્તભાવને અહીં અનંતાનંત કહેવામાં આવ્યો છે. અનંતના અનંતગણાં કરવાથી અનંતાનંત આવે છે. અહીં એજ વાતને અનુલક્ષીને ગૌતમ સ્વામીએ મહાવીર પ્રભુને એવો પ્રશ્ન પૂછયો છે કે....હે ભગવન્! પુદ્ગલદ્રવ્યોની સાથે પરમાણુઓના સંયોગ આદિ રૂપ જે અનંતાનંત પુદ્ગલપરિવર્ત થતાં રહે છે, તે શું જાણવા લાયક હોવાને કારણે તેમનું અહીં પ્રતિપાદન કરવામાં આવ્યું છે?

प्रश्नः, भगवानाह-'हंता, गोयमा ! एएसि णं परमाणुपोग्गलाणं साहणणा जाव मक्खाया' हे गौतम ! हन्त, सत्यम्, एतेषां खलु पूर्वोक्तानां परमाणुपुद्गलानां संहननं यावत् भेदानुपातेन-संयोगवियोगेन अनन्तानन्ताः पुद्गलपरिवर्ताः समनुगन्तव्याः भवन्तीति कृत्वा आख्याताः-मरूपिताः, अथ पुद्गलपरावर्तस्यैव भेदान् गौतमः पृच्छति-'कइविहेणं भंते ! पोग्गलपरियट्टे पण्णत्ते ?' हे भदन्त ! कतिविधः खलु पुद्गलपरिवर्तः प्रज्ञप्तः ? भगवानाह-' गोयमा ! सत्तविहा पोग्गलपरियट्टा पण्णत्ता ' हे गौतम ! सप्तविधाः खलु पुद्गलपरिवर्ताः प्रज्ञप्ताः, तं जहा ओरालियपोग्गलपरियट्टे, वेउव्वियपोग्गलपरियट्टे, तेयापोग्गलपरियट्टे, कम्मा पोग्गलपरियट्टे, मणपोग्गलपरियट्टे, वइपोग्गलपरियट्टे, आणापाणुपोग्गलपरियट्टे ' तद्यथा औदारिकपुद्गलपरिवर्तः १, वैक्रियपुद्गलपरि-

---

योग्य है, तो क्या इसीलिये ये कहे गये हैं ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-'हंता, गोयमा ! एएसि णं परमाणुपोग्गलाणं साहणणा जाव मक्खया' हां, गौतम ! इन पूर्वोक्त परमाणुपुद्गलों के संयोग वियोगरूप संहनन भेदानुपात से जायमान अनंतानंत पुद्गलपरावर्त होते हैं-ऐसा है-और इसी कारण से ये कहे गये हैं।

अब गौतम प्रभु से इस पुद्गलपरावर्त के भेदों को पूछते हैं-"कइविहेणं भंते ! पोग्गलपरियट्टे पण्णत्ते" हे भदन्त ! पुद्गलपरावर्त कितने प्रकार का कहा गया है ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-'गोयमा !' हे गौतम ! 'सत्तविहा पोग्गलपरियट्टा पण्णत्ता' पुद्गलपरावर्त सात प्रकार के कहे गये हैं। 'तं जहा' जो इस प्रकार से हैं 'ओरालियपोग्गलपरियट्टे' औदारिक पुद्गलपरिवर्त "वेउव्वियपोग्गलपरियट्टे" वैक्रियपुद्गलपरावर्त,

---

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-" हंता, गोयमा ! एएसिणं परमाणुपोग्गलाण साहणणा जाव मक्खाया " હા, ગૌતમ ! આ પૂર્વોક્ત પરમાણુ પુદ્ગલોના સંયોગવિયોગરૂપ સંહનનભેદાનુપાતથી જાયમાન (જનિત) અનંતાનંત પુદ્ગલપરાવર્ત થતા રહે છે, આ વિષય જાણવા જેવો છે. તે કારણે જ અહીં તેની પ્રરૂપણા કરવામાં આવી છે.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-" कइविहेणं भंते ! पोग्गलपरियट्टे पण्णत्ते " હે ભગવાન્ ! પુદ્ગલપરાવર્તના કેટલા પ્રકારો કહ્યા છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-" गोयमा ! " હે ગૌતમ ! " सत्तविहा पोग्गलपरियट्टा पण्णत्ता " પુદ્ગલપરાવર્તના સાત પ્રકારો કહ્યા છે. " तंजहा " તે પ્રકારો નીચે પ્રમાણે છે-" ओरालियपोग्गलपरियट्टे " ઔદારિકપુદ્ગલપરાવર્ત, " वेउव्वियपोग्गलपरियट्टे " વૈક્રિયપુદ્ગલપરાવર્ત, " तेयापोग्गलपरियट्टे " તૈજસ-

वर्तः२, तैजसपुद्गलपरिवर्तः३, कार्मणपुद्गलपरिवर्तः४, मनःपुद्गलपरिवर्तः५, वचःपुद्गलपरिवर्तः६, आनप्राणपुद्गलपरिवर्तः७, तत्र औदारिकशरीरे वर्तमानेन जीवेन यदौदारिकशरीरप्रायोग्यद्रव्याणामौदारिकशरीरतया साकल्येन ग्रहणम् स औदारिकपुद्गलपरिवर्तः कथ्यते। एवमेव वैक्रियपुद्गलपरिवर्ताः अपि अत्रसेयाः। गौतमः पृच्छति-'नेरइयाणं भंते! कइविहे पोग्गलपरियट्टे पण्णत्ते' हे भदन्त! नैरयिकाणां खलु जीवानां कतिविधः पुद्गलपरिवर्तः प्रज्ञप्तः? भगवानाह-'गोयमा! सत्तविहे पोग्गलपरियट्टे पण्णत्ते' हे गौतम! नैरयिकजीवानामनादौ संसारे परिभ्रमतां सप्तविधः पुद्गलपरिवर्तः प्रज्ञप्तः 'तंजहा-ओरालियपोग्गल-

---

'तेयापोग्गलपरियट्टे' तैजसपुद्गलपरिवर्त 'कम्मा पोग्गलपरियट्टे' कार्मणपुद्गलपरिवर्त, 'मणपोग्गलपरियट्टे' मनः पुगद्लपरिवर्त 'वइपोग्गपरियट्टे वचःपुगद्ल परिवर्त और 'आणापाणुपोग्गलपरियट्टे' आनप्राणपुगद्लपरिवर्त, औदारिक शरीर में वर्तमान जीव के द्वारा जो औदारिक शरीर के योग्य द्रव्यों का औदारिक शरीर रूप से सम्पूर्णरूप में ग्रहण किया जाता है इसका नाम औदारिक पुगद्लपरिवर्त है इसी प्रकार से वैक्रियपुगद्ल परिवर्त यावत् आनप्राणपुद्गल परिवर्त तक जानना चाहिये।

अब गौतम प्रभु से ऐसा पूछते हैं-'नेरइयाणं भंते! कइविहे पोग्गलपरियट्टे पण्णत्ते' हे भदन्त! नैरयिकों के कितने प्रकार का पुद्गल परिवर्त कहा गया है? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-'गोयमा' हे गौतम! अनादिकाल से संसार में परिभ्रमण करनेवाले नैयरिक जीवों को 'सत्तविहे पोग्गलपरियट्टे पण्णत्ते' सात प्रकार को पुगद्लपरिवर्त

पुद्गलपरिवर्त "कम्मपोग्गलपरियट्टे" કાર્મણપુદ્ગલપરાવર્ત, "मणपोग्गपरियट्टे" मनःपुद्गलपरिवर्त, "वइपोग्गलपरियट्टे" वच पुद्गलपरिवर्त, अने "आणापाणुपोग्गलपरियट्टे" आनप्राण पुद्गलपरिवर्त औदारिक शरीरमां रहेला જીવ દ્વારા જે औदारिक शरीरने योग्य द्रव्योने औदारिक शरीररूपे संपूर्णरूपे ग्रहण करवामां आवे छे, तेनुं नाम औदारिक पुद्गलपरिवर्त छे. એજ प्रमाणे वैक्रियपुद्गलपरिवर्त आदि विषे पण समजवुं.

गौतम स्वामीनो प्रश्न-"नेरइयाणं भंते! कइविहे पोग्गलपरियट्टे पण्णत्ते?" हे भगवन्! नारकोमां केटला प्रकारना पुद्गलपरिवर्तनो सद्भाव होय छे?

महावीर प्रभुनो उत्तर-"गोयमा!" हे गौतम! अनादिकाळथी संसारमां परिभ्रमण करनारा नारकोमां "सत्तविहे पोग्गलपरियट्टे पण्णत्ते" सात प्रकारना पुद्गलपरिवर्तनो सद्भाव कह्यो छे. "तंजहा" ते सात प्रकारो

परियट्टे, वेउव्वियपोग्गलपरियट्टे, तेयापोग्गलपरियट्टे, कम्मापोग्गलपरियट्टे, मणपोग्गलपरियट्टे, वइपोग्गलपरियट्टे, आणापाणुपोग्गलपरियट्टे' तद्यथा-औदारिकपुद्गलपरिवर्तः, वैक्रियपुद्गलपरिवर्तः, तैजसपुद्गलपरिवर्तः, कार्मणपुद्गलपरिवर्तः, मनःपुद्गलपरिवर्तः, वचःपुद्गलपरिवर्तः, आनमाणपुद्गलपरिवर्तः श्वासोच्छ्वास पुद्गलपरिवर्तः इत्यर्थः, 'एवं जाव वेमाणियाणं' एवं-पूर्वोक्तनैरयिकजीवपुद्गलपरिवर्तरीत्या, यावत्-वैमानिकानां वैमानिकदेवपर्यन्तानां पुद्गलपरिवर्त्तौ वाच्यः, गौतमः पृच्छति-'एगमेगस्स णं भंते! नेरइयस्स केवइया ओरालियपोग्गलपरियट्टा अईया?' हे भदन्त! एकैकस्य खलु नैरयिकस्य कियन्तः औदारिकपुद्गलपरिवर्ताः अतीताः-व्यतिक्रान्ताः? भगवानाह-'अणंता' हे गौतम!

कहा गया है। 'तं जहा' जो इस प्रकार से हैं-'ओरालियपोगलपरियट्टे, वेउव्वीयपोग्गलपरियट्टे तेया पोग्गलपरियट्टे, कम्मा पोग्गलपरियट्टे, मणपोग्गलपरियट्टे' वइपोग्गलपरियट्टे, आणापाणुपोग्गलपरियट्टे,' औदारिकपुद्गलपरिवर्त, वैक्रियपुद्गलपरिवर्त तैजस पुद्गलपरिवर्त कार्मणपुद्गल परिवर्त, मनःपुद्गलपरिवर्त वचःपुद्गल परिवर्त और आनप्राण पुद्गल परिवर्त, आनप्राणपुद्गल परिवर्त का नाम श्वासोच्छ्वास पुग्गद्गलपरिवर्त भी है 'एवं जाव वेमाणियाणं', जिस प्रकार से नैयरिक जीवों के पुद्गलपरिवर्त कहा गया है उसी प्रकार से यावत् वैमानिक देवो पर्यन्त के पुद्गलपरिवर्तक कहना चाहिये।

अब गौतम प्रभु से पूछते हैं 'एगमेगस्स णं भंते! नेरइयस्स केवइया ओरालियपोग्गलपरियट्टा अईया' हे भदन्त! एक एक नैरिक को कितने औदारिकपुद्गलपरिवर्त हो चुके हैं? अर्थात् एक एक नैरिकने कितने

नीचे प्रमाणे छे-"ओरालियपोग्गलपरियट्टे, वेउव्वियपोग्गलपरियट्टे, तेयापोग्गलपरियट्टे, कम्मापोग्गलपारयट्टे, मणपोग्गलपरियट्टे, वइपोग्गलपरियट्टे आणापाणुपोग्गलपरियट्टे" (१) औहारिकपुद्गलपरिवर्त, (२) वैक्रियपुद्गलपरिवर्त, (३) तैजसपुद्गलपरिवर्त, (४) कार्मणपुद्गलपरिवर्त, (५) मनःपुद्गलपरिवर्त, (६) वचनपुद्गलपरिवर्त, अने (७) आनप्राणपुद्गलपरिवर्त आनप्राणपुद्गलपरिवर्तनुं बीजुं नाम श्वासोच्छ्वास पुद्गलपरिवर्त पण छे. वैमानिक देव पर्यन्तना जीवोना पुद्गलपरिवर्त विषे नारकोना पुद्गलपरिवर्तना जेवुं ज कथन समजवुं.

गौतम स्वामीनो प्रश्न-"एगमेगस्स णं भंते! नेरइयस्स केवइया ओरालियपोग्गलपरियट्टा" हे भगवन्! एक एक नारकना केटला औहारिक पुद्गलपरिवर्त थई चुकया छे? एटले के एक एक नारके केटला औहारिक पुद्गलपरिवर्त कर्या छे?

एकैकस्य नैरयिकस्य अनन्ताः औदारिकपुद्गलपरिवर्ताः अतीताः अतीतकालस्य अनादित्वात्, जीवस्य चानादित्वात्, अपरापरपुद्गलग्रहणस्वरूपत्वाच्च। गौतमः पृच्छति-'केवइया पुरेक्खडा?' हे भदन्त! एकैकस्य नैरयिकस्य कियन्तः औदारिकपुद्गलपरिवर्ताः पुरस्कृताः-भविष्यत्कालभाविनः इति प्रश्नः भगवानाह-'कस्सइ अत्थि, कस्सइ नत्थि' हे गौतम! कस्यचित् नैरयिकस्य औदारिकपुद्गलपरिवर्तो भविष्यत्कालभावि नास्ति, नरकादितः उद्वृत्य यो मानुषत्वं प्राप्य सिद्धिं यास्यति, यश्च संख्येयैरसंख्येयैर्वा भवैः सिद्धिं यास्यति, तस्यापि

औदारिकपुगद्ल परिवर्त किये हैं? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-'अणंता, हे गौतम! एक २ नैरयिक के अनन्त औदारिक पुगद्ल परिवर्त हो चुके हैं। क्योंकि अतीतकाल अनादि है, और जीव भी अनादि है तथा जीव की संसारदशा में अपरापर पुद्गल ग्रहण करने की स्वरूपता है। अब गौतम प्रभु से ऐसा पूछते हैं 'केवइयापुरेक्खडा' हे भदन्त! एक एक नारक के भविष्यत्काल भावी कितने औदारिक पुद्गल परिवर्त हैं? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-'कस्सइ अत्थि' कस्सइ नत्थि' हे गौतम! दूरभविक होने से और अभव्य होने से किसी नारकजीव को भविष्यत्कालभावी औदारिक परिवर्त है और किसी नारकजीव को भविष्यत्काल भावी औदारिकपुद्गलपरिवर्त नहीं है क्योंकि जो जीव नरकादि से निकल करके मनुष्य भव लेकर सिद्धि प्राप्त करेगा उसको या संख्यात, असंख्यात भवों के बाद जो सिद्धि प्राप्त करेगा उसके भी

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-"अणंता" હે ગૌતમ! એક એક નારકમાં અનંત પુદ્ગલપરિવર્ત થઈ ચુકયા છે, કારણ કે અતીતકાળ અનાદિ છે, અને જીવ પણ અનાદિ છે તથા જીવની સંસારદશામાં અપરાપર પુદ્ગલ ગ્રહણ કરવાની સ્વરૂપતા (સંભવિતતા) છે.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-केवइया पुरेक्खडा?" હે ભગવન્! એક એક નારકના ભવિષ્યકાળભાવી કેટલા ઔદારિક પુદ્ગલપરિવર્ત કહ્યા છે?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-"कस्सइ अत्थि, कस्सइ नत्थि" હે ગૌતમ! દૂરભવિક અને અભવ્ય હોવાને કારણે કોઈ નારક જીવમાં ભવિષ્યકાળભાવી ઔદારિક પુદ્ગલપરિવર્તનો સદ્ભાવ હોય છે, અને કોઇ નારક જીવમાં ભવિષ્યકાળભાવી ઔદારિક પુદ્ગલપરિવર્તનો સદ્ભાવ હોતો નથી, કારણ કે જે જીવ નરકાદિમાંથી નીકળીને મનુષ્ય ભવમાં ઉત્પન્ન થઇને સિદ્ધિ પ્રાપ્ત કરશે તેમનામાં તથા સંખ્યાત અથવા અસંખ્યાત ભવો કરીને સિદ્ધિ પ્રાપ્ત કરશે

पुद्गलपरिवर्तो भावीनास्ति, तस्य अनन्तकालपुरणीयत्वात्, अत्रापि-'जस्सत्थि जहण्णेणं एक्को वा, दो वा, तिन्नि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा वा, असंखेज्जा वा, अणंता वा' यस्य नैरयिकस्य औदारिक पुद्गलपरिवर्तो भावी अस्ति, तस्य जघन्येन एको वा, द्वौ वा, त्रयो वा भाविनो भवन्ति, उत्कृष्टेन तु संख्येया वा, असंख्येया वा, अनन्ता वा औदारिकपुद्गलपरिवर्ताः भाविनो भवन्ति। गौतमः पृच्छति-'एगमेगस्स णं भंते ! असुरकुमारस्स केवइया ओरालियपोग्गलपरियट्टा अईया?' हे भदन्त ! एकैकस्य खलु असुरकुमारस्य कियन्तः औदारिकपुद्गलपरिवर्ताः अतीताः ? व्यतिक्रान्ताः ? भगवानाह-'एवं चेव एवं जाव वेमाणियस्स' हे गौतम ! एवमेव-पूर्वोक्तनैरयिकवदेव एकैकस्य असुरकुमारस्य अनन्ताः औदा

भावी औदारिकपुद्गलपरिवर्त नहीं है क्योंकि यह औदारिक पुद्गल परिवर्त अनन्त काल में पूरणीय होता है। 'जस्सत्थि जहण्णेणं एक्को वा, दो वा, तीन्नि वा, उक्कोसेणं संखेज्जावा, असंखेज्जा वा' अणंता वा' जिस नैरयिक जीव को औदारिकपुद्गलपरिवर्त है, उसको वह जघन्य रूप में एक होगा, अथवा दो होगें, या तीन होगें, उत्कृष्ट रूप में संख्यात या असंख्यात या अनंत होगें। अब गौतम प्रभु से ऐसा पूछते हैं-एगमेगस्स णं भंते ! असुरकुमारस्स केवइया ओरलियपोग्गलपरियट्टा अईया' हे भदन्त ! एक २ असुरकुमार को भूतकाल में औदारिक पुद्गल परिवर्त कितने हो चुके हैं? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-'एवं चेव एवं जाव वेमाणियस्स', हे गौतम ! इस विषय में जैसा कथन एक नैरयिक जीवके विषय में किया गया है, वैसा ही कथन यहां पर भी जानना चाहिये

તેમનામાં પણ ઔદારિક પુદ્ગલપરિવર્તનો સદ્ભાવ હોતો નથી કારણ કે આ ઔદારિક પુદ્ગલપરિવર્ત અનંતકાળમાં પૂરણીય હોય છે. "जस्सत्थि जहण्णेणं-एक्को वा, दो वा, तिन्नि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा वा, असंखेज्जा वा, अणंतावा" જે નારક જીવમાં ભાવી ઔદારિક પુદ્ગલપરિવર્તનો સદ્ભાવ હોય છે, તેમને તે ઓછામાં ઓછા એક અથવા બે અથવા ત્રણ થશે અને વધારેમાં વધારે સંખ્યાત, અસંખ્યાત અથવા અનંત થશે.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-" एगमेगस्स णं भंते ! असुरकुमारस्स केवइया ओरालियपोग्गलपरियट्टा अईया ?" હે ભગવન્! એક એક અસુરકુમારના કેટલા પુદ્ગલપરિવર્ત થઇ ચુકયા છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-" एवं चेव एवं जाव वेमाणियस्स " હે ગૌતમ ! આ વિષયને અનુલક્ષીને એક નારક જીવના વિષયમાં જેવું કથન કરવામાં આવ્યું છે, એવું જ કથન અહીં પણ સમજવું. એટલે કે એક એક અસુ-

रिकपुद्गलपरिवर्ताः अतीताः, एवं-पूर्वोक्तैकैकनैरयिकवदेव यावत्-एकैकस्य वैमानिकस्य वैमानिकपर्यन्तस्य अनन्ताः औदारिकपुद्गलपरिवर्ताः अतीताः, भावी औदारिकपुद्गलपरिवर्तस्तु नैरयिकवदेव कस्यापि भवनपत्यादि वैमानिकान्तस्य अस्ति, कस्यापि नास्ति, यस्यापि अस्ति, तस्यापि जघन्येन एको वा, द्वौ वा, त्रयो वा भाविनः सन्ति, उत्कृष्टेन तु संख्येया वा, असंख्येया वा, अनन्ता वा भाविनः सन्तीति भावः, गौतमः पृच्छति-'एगमेगस्स णं भंते ! नेरइयस्स केवइया वेउव्वियपोग्गलपरियट्टा अईया ?' हे भदन्त ! एकैकस्य खलु नैरयिकस्य

अर्थात् एक एक असुरकुमार के भूतकाल में औदारिक पुद्गलपरिवर्त अनन्त हो चुके है, इसी प्रकार से यावत्-एक एक वैमानिक पर्यन्त-देव के अतीत औदारिक पुद्गलपरिवर्त अनन्त हो चुके हैं, तथा भावी औदारिक पुद्गलपरिवर्त नैरयिक की तरह से ही किसी भवनपति से लेकर वैमानिकान्त-देव को होता भी है और कीसी को नहीं भी होता है। जिसको यह भावी औदारिक पुद्गल परिवर्त है उसको वह जघन्य से एक, दो, और तीन तक होता है और उत्कृष्ट से संख्यात, असंख्यात और अनन्त रूप से होता है।

अब गौतमस्वामी प्रभु से ऐसा पूछते हैं-'एगमेगस्स णं भंते ! नेरइयस्स केवइया वेउव्वियपोग्गलपरियट्टा अईआ' हे भदन्त ! एक एक

કુમારના ભૂતકાલીન ઔદારિક પુદ્ગલપરિવર્ત અનંત થઈ ચુકયા છે. એજ પ્રમાણે એક એક વૈમાનિક પર્યન્તના દેવના પણ ભૂતકાલીન ઔદારિક પુદ્ગલપરિવર્ત અનંત થઈ ચુકયા છે. ભાવી ઔદારિક પુદ્ગલપરિવર્ત વિષે પણ નારકોના ભાવી ઔદારિક પુદ્ગલપરિવર્તના જેવું જ કથન સમજવું એટલે કે કોઈ ભવનપતિમાં ભાવી ઔદારિક પુદ્ગલપરિવર્તનો સદ્ભાવ હોતો નથી અને કોઇમાં ભાવી ઔદારિક ભાવી પુદ્ગલપરિવર્તનો સદ્ભાવ હોય છે. વૈમાનિક દેવો પર્યન્તના જીવો વિષે પણ આ પ્રકારનું જ કથન ગ્રહણ કરવું જોઇએ. જે જીવમાં ભાવી ઔદારિક પુદ્ગલપરિવર્તનો સદ્ભાવ હોય છે, તે જીવમાં ઓછામાં ઓછા એક, બે અથવા ત્રણનો અને વધારેમાં વધારે સંખ્યાત, અસંખ્યાત અથવા અનંત ભાવી ઔદારિક પુદ્ગલપરિવર્તનો સદ્ભાવ હશે, એમ સમજવું.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-"एगमेगस्स णं भंते ! नेरइयस्स केवइया वेउव्विय पोग्गलपरियट्टा अईया ?" હે ભગવન્! એક એક નારકે ભૂતકાળમાં કેટલા વૈક્રિય પુદ્ગલપરિવર્ત કર્યા છે ?

कियन्तो वैक्रियपुद्गलपरिवर्ताः अतीताः ? भगवानाह-'अणंता, एवं जहेव ओरालियपोग्गलपरियट्टा तहेव वेउव्वियपोग्गलपरियट्टा वि भाणियव्वा' हे गौतम ! एकैकस्य नैरयिकस्य अनन्ताः वैक्रियपुद्गलपरिवर्ताः अतीताः, एवं-पूर्वोक्तरीत्या, यथैव औदारिकपुद्गलपरिवर्ता प्रतिपादिता स्तथैव वैक्रियपुद्गलपरिवर्ता अपि भणितव्याः प्रतिपत्तव्याः; 'एवं जाव वेमाणियस्स, एवं जाव आणापाणुपोग्गलपरियट्टा, एए एगत्तिया सत्त दंडगा भवंति' एवं-पूर्वोक्तरीत्या यावत्-वैमानिकस्य वैमानिकपर्यन्तस्य एकैकस्य वैक्रियपुद्गलपरिवर्ताः अनन्ताः अतीताः, भाविनस्तु जघन्येन एको वा, द्वौ वा, त्रयो वा, उत्कृष्टेन संख्येया वा, असंख्येया वा, अनन्ता वा भवन्ति, एवं-पूर्वोक्तौदारिकवैक्रियपुद्गलपरिवर्तवदेव, यावत्-तैजसपुद्गलपरिवर्ताः, कार्मणपुद्गलपरि-

---

नैरयिक को भूत काल में वैक्रियपुद्गलपरिवर्त कितने हो चुके हैं ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-'अणंता, एवं जहेव ओरालियपोग्गलपरियट्टा तहेव वेउव्वियपोग्गलपरियट्टा वि भाणियव्वा' हे गौतम ! एक एक नैरयिक को भूत कालमें वैक्रियपुद्गलपरिवर्त अनन्त हो चुके हैं, इस प्रकार पूर्वोक्तरीति के द्वारा जिस प्रकार से औदारिक-पुद्गलपरिवर्त कहे जाचुके हैं, उसी प्रकार से वैक्रियपुगद्लपरिवर्त भी कहना चाहिये, 'एवं जाव वेमाणियस्स एवं जाव आणापाणुपोग्गलपरियट्टा एए एगत्तिया सत्तदंडगा भवंति' इस प्रकार पूर्वोक्तरीति के अनुसार यावत् वैमानिक पर्यन्त एक एक के भूतकालिक वैक्रियपुद्गलपरिवर्त अनन्त हो चुके हैं, तथा भावी वैक्रियपुगद्लपरिवर्त जघन्य से एक, दो या तीन होंगे, और उत्कृष्ट से वे संख्यात, असंख्यात या अनंत होंगे इस प्रकार पूर्वोक्त औदारिक वैक्रियपुद्गलपरिवर्त के जैसे ही यावत्-अतात तैजसपुद्गलपरिवर्त एवं

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-"अणता, एवं जहेव ओरालियपोग्गलपरियट्टा तहेव वेउव्वियपोग्गलपरियट्टा वि भाणियव्वा" હે ગૌતમ ! એક એક નારક ભૂતકાળમાં અનંત વૈક્રિયપુદ્ગલપરિવર્ત કરી ચુકયો છે. પહેલાં ઔદારિક પુદ્ગલપરિવર્તના વિષયમાં જેવું કથન કરવામાં આવ્યું છે, એવું જ કથન અહીં વૈક્રિયપુદ્ગલપરિવર્ત વિષે પણ ગ્રહણ કરવાનું છે. "एवं जाव वेमाणियस्स एव जाव आणापाणु पोग्गलपरियट्टा, एए एगत्तिया सत्त दंडगा भवंति" આ પૂર્વોક્ત રીત અનુસાર વૈમાનિક પર્યન્તના એક જીવના ભૂતકાલિક વૈક્રિયપુદ્ગલપરિવર્ત અનત થઇ ચુકયા છે, તથા ભાવી વૈક્રિયપુદ્ગલપરિવર્ત જઘન્ય (ઓછામાંઓછા) એક, બે અથવા ત્રણ થશે અને વધારેમાં વધારે સંખ્યાત, અસંખ્યાત અથવા અનંત થશે-પૂર્વોકત ઔદારિક અને વૈક્રિયપુ-

वर्ताः, मनःपुद्गलपरिवर्ताः, वचःपुद्गलपरिवर्ताः, आनपाणपुद्गलपरिवर्ताः अपि एकैकस्य नैरयिकादेर्वैमानिकपर्यन्तस्य अनन्ताः अतीताः, भाविनस्तु जघन्येन एको वा, द्वौ वा, त्रयो वा, उत्कृष्टेन संख्येया वा, असंख्येया वा, अनन्ता वा भवन्ति। एवं च एते पूर्वोक्ताः एकत्विकाः-एकैकनैरयिकाद्याश्रयाः सप्तदण्डकाः औदारिकादि सप्तविधपुद्गलविषयत्वात्, एते सप्तदण्डकाश्चतुर्विंशतिदण्डकेषु प्रत्येकं भवन्ति इति भावः। अथ बहुवचनमाश्रित्य गौतमः पृच्छति-'नेरइयाणं भंते! केवइया ओरालियपोग्गलपरियट्टा अईया?' हे भदन्त! नैरयिकाणां कियन्तः औदारिकपुद्गलपरिवर्ताः अतीताः? भगवानाह-'गोयमा! अणंता,' हे

कार्मणपुद्गलपरिवर्त, मनः पुद्गलपरिवर्त, वचः पुद्गलपरिवर्त और आनप्राण पुद्गलपरिवर्त भी एक एक नैरयिकादि से लेकर वैमानिक देवतक अनन्त हो चुके हैं, तथा भावी जो ये परिवर्त हैं वे जघन्य से एक, अथवा दो, या तीन होंगे और उत्कृष्ट से संख्यात, या असंख्यात या अनन्त होंगे। इसप्रकार ये पूर्वोक्त सातदण्डक एक एक नैरयिक आदि के आश्रय से हुए हैं तथा औदारिक आदि सातप्रकार के पुद्गलों को विषय करते हैं, और चौबीस दण्डकों में से प्रत्येक नैरयिकादि को होते हैं।

अब गौतम स्वामी बहुवचन को आश्रित करके ऐसा पूछते हैं— 'नेरइयाणं भंते! केवइया ओरालियपोग्गलपरियट्टा' हे भदन्त! नैरयिक जीवों को भूत काल में औदारिकपुद्गलपरिवर्त कितने हो चुके हैं? उत्तर में प्रभु कहते हैं- 'गोयमा' हे गौतम! 'अणंता' नैरयिक जीवों को भूत

દ્ગલપરિવર્તની જેમ જ ભૂતકાલીન તૈજસપુદ્ગલપરિવર્ત, કાર્મણપુદ્ગલપરિવર્ત, મનઃપુદ્ગલપરિવર્ત, વચઃપુદ્ગલપરિવર્ત અને આનપ્રાણપુદ્ગલપરિવર્ત પણ એક એક નારકથી લઇને વૈમાનિક પર્યન્તના જીવ દ્વારા અનંત થઇ ચુકયા છે, તથા આનપ્રાણપુદ્ગલપરિવર્ત પર્યન્તના જે સાતે ભાવી પરિવર્તો છે, તે જઘન્યની અપેક્ષાએ વિચાર કરવામાં આવે તો એક, બે, અથવા ત્રણ થશે અને ઉત્કૃષ્ટની અપેક્ષાએ વિચારવામાં આવે તો સંખ્યાત અસંખ્યાત અથવા અનંત થશે આ રીતે પૂર્વોકત નારક આદિ વૈમાનિક પર્યન્તના ૨૪ દંડકના જીવોને વિષે સાત પ્રકારના પુદ્ગલપરિવર્તને અનુલક્ષીને સાત-સાત પ્રશ્નોત્તરો સમજવા જોઇએ આ પ્રકારે એક એક નારકાદિ વિષે સાત દંડક સમજવાના છે.

હવે ગૌતમ સ્વામી બહુવચનનો આધાર લઇને મહાવીર પ્રભુને એવો પ્રશ્ન પૂછે છે કે-" नेरइयाण भंते! केवइया ओरालियपोग्गलपरियट्टा?" હે ભગવન્! નારક જીવોના ભૂતકાલિક ઔદારિક પુદ્ગલપરિવર્ત કેટલા થઈ ચુકયા

गौतम! नैरयिकाणां अनन्ताः औदारिकपुद्गलपरिवर्ताः अतीताः। गौतमः पृच्छति-'केवइया पुढेक्खडा?' नैरयिकाणां कियन्तः औदारिकपुद्गलपरिवर्ताः पुरस्कृताः भविष्यन्तः सन्ति? भगवानाह-'अणंता, एवं जाव वेमाणियाणं' हे गौतम! नैरयिकाणाम् अनन्ताः औदारिकपुद्गलपरिवर्ताः भाविनः सन्ति, एवं-पूर्वोक्तरीत्या, यावत् वैमानिकानाम् अनन्ताः औदारिकपुद्गलपरिवर्ताः भाविनः सन्ति। 'एवं वेउव्वियपोग्गलपरियट्टा वि, एवं जाव आणापाणु पोग्गलपरियट्टा वेमाणियाणं' एवं-पूर्वोक्तरीत्या नैरयिकादीनाम् वैक्रियपुद्गलपरिवर्ताः अपि-अनन्ताः अतीताः एवं-पूर्वोक्तरीत्या, यावत् नैरयिकादि वैमानिकान्तानामिति भावः, 'एवं एए पोहत्तिया सत्त चउव्वीसतिदंडगा' एवं रीत्या, एते पूर्वोक्ताः पृथक्त्विकाः बहुवचनविषयकाः सप्तदण्डकाश्चतुर्विंशतिदण्डकाः भवन्ति एते

काल में औदारिकपुद्गलपरिवर्त अनंत हो चुके हैं। अब पुनः गौतम प्रभु से ऐसा पूछते हैं-हे भदन्त! नैरयिक जीवों को भावी औदारिक पुद्गल-परिवर्त कितने होते हैं? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-'अणंता' हे गौतम! नैरयिक जीवों को भावी औदारिकपुद्गलपरिवर्त अनंत होते हैं। इसी प्रकार से पूर्वोक्तरीति के अनुसार यावत्-वैमानिकों के भावी औदारिकपुद्गलपरिवर्त अनंत होते हैं।' एवं वेउव्वियपोग्गलपरियट्टा वि, एवं जाव आणापाणुपोग्गलपरियट्टा वेमाणियाणं' इसी पूर्वोक्तरीति के अनुसार नैरयिक से लेकर वैमानिक देवों को भूत काल में वैक्रियपुद्गलपरिवर्त भी अनंत होते हैं। 'एवं एए पोहत्तिया सत्त चउव्वीसइदंडगा'

છે? ઉત્તર-" गोयमा! " હે ગૌતમ! " अणंता " નારક જીવોએ ભૂતકાળમાં અનંત ઔદારિકપુદ્ગલપરિવર્ત કર્યા છે.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-" હે ભગવન્! નારક જીવોના ભાવી ઔદારિક-પુદ્ગલ પરિવર્ત કેટલા થશે? ઉત્તર-" अणंता " હે ગૌતમ! નારક જીવો ભવિષ્યમાં અનંત ઔદારિક પુદ્ગલપરિવર્ત કરશે વૈમાનિક પર્યન્તના જીવોના ભૂત અને ભાવી ઔદારિક પુદ્ગલપરિવર્તના વિષયમાં પણ નારકોના ભૂત અને ભાવી ઔદારિક પુદ્ગલપરિવર્તના જેવું જ કથન ગ્રહણ કરવું જોઈએ.

" एवं वेउव्वियपोग्गलपरियट्टा वि, एवं जाव आणापाणुपोग्गलपरियट्टा वेमाणियाणं " એજ પ્રમાણે નારકોથી લઈને વૈમાનિકો પર્યન્તના જીવોના ભૂતકાલીન અને ભવિષ્યકાલીન વૈક્રિયપુદ્ગલપરિવર્તો પણ અનંત જ સમજવા એજ પ્રમાણે તેમના આણુપ્રાણુપુદ્ગલપરિવર્ત પર્યંતના પરિવર્તો પણ અનંત જ સમજવા. " एवं एए पोहत्तिया सत्त चउव्वीसइदंडगा " આ પ્રકારે નારકોથી

सप्तदण्डकाश्चतुर्विंशतिदण्डकेषु प्रत्येकं भवन्तीति भावः। तत्र एकत्वपृथक्त्व-दण्डकानां चायं विशेषः-एकत्वदण्डकेषु भाविपुद्गलपरावर्ताः कस्यचिन्न सन्त्यपि, बहुत्वदण्डकेषु तु भाविपुद्गलपरावर्ताः सन्त्येव, तत्र समुच्चयजीवाश्रयणात्, इति भावः, गौतमः पृच्छति-'एगमेगस्स णं भंते ! नेरइयस्स नेरइयत्ते केवइया ओरालियपोग्गलपरियट्टा अईया ?' हे भदन्त ! एकैकस्य खलु नैरयिकस्य नैरयिकत्वे-नारकावस्थायाम् कियन्त औदारिकपुद्गलपरिवर्ताः अतीताः ? भगवानाह-' नत्थि एक्को वि ' हे गौतम ! एकैकस्य नैरयिकस्य नैरयिकावस्थायाम् औदारिकपुद्गलपरिवर्तः एकोऽपि अतीतो नास्ति, नारकावस्थायां वर्तमानस्य

इस प्रकार से ये बहुवचन विषयक सात दण्डक चौवीस दण्डकों में-प्रत्येक को होते हैं इन एकत्व और पृथक्त्व-दण्डकों में यह विशेषता है कि-एकत्व दन्डकों में भावी पुद्गलपरावर्त किसी जीव को नहीं भी होते हैं तबकि बहुत्व दण्डकों में भावी पुद्गलरूपपरावर्त अवश्य ही होते हैं क्योंकि वहां समुच्चय रूप से जीवों का आश्रयण हुआ है।

अब गौतम स्वामी प्रभु से ऐसा पूछते हैं-'एगमएगस्स णं भंते ! नेरइ-यस्स नेरइत्ते केवइया ओरालियपोग्गलपरियट्टा अईआ' हे भदन्त! एक एक नैरयिक को नारकावस्था में भूत कालीक औदारिकपुद्गलपरिवर्त कितने होते हैं ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-'नत्थि एक्को वि' एक एक नैरयिक को नैरयिक अवस्था में भूत कालिक औदारिक पुद्गलपरिवर्त एक भी नहीं होता है-क्यों कि नारकावस्था में वर्तमान जीव को-नैरयिक जीव को-

લઈને વૈમાનિકો પર્યન્તના ૨૪ દંડકના જીવોમાંના પ્રત્યેક દંડકના જીવો વિષે બહુવચન વિષયક સાત સાત આલાપકો થાય છે આ એકત્વ અને બહુત્વ દંડકોમાં એટલો જ તફાવત છે કે-"એકત્વ દંડકોમાં કોઈ જીવના ભાવી પુદ્ગલપરિવર્તનો અભાવ બતાવવામાં આવ્યો છે પરન્તુ બહુત્વ દંડકમાં તો સઘળા જીવોમાં ભાવી પુદ્ગલપરાવર્તનો સદ્ભાવ અવશ્ય હોય જ છે, એમ કહેવામાં આવ્યું છે, કારણ કે ત્યાં સમુચ્ચય રૂપે જીવોની વાત કરવામાં આવી છે."

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-" एगमेगस्स णं भंते ! नेरइयस्स नेरइत्ते केवइया ओरालियपोग्गलपरियट्टा अईया ?" હે ભગવન્ ! એક એક નારકને નારકા-વસ્થામાં ભૂતકાલીન ઔદારિક પુદ્ગલપરિવર્ત કેટલા થાય છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-" नत्थि एक्को वि " એક એક નારકને નારકા-વસ્થામાં ભૂતકાલીન ઔદારિક પુદ્ગલપરિવર્ત એક પણ સંભવી શકતો નથી, કારણ કે નારક અવસ્થામાં રહેલા જીવમાં (નારક જીવમાં) ઔદારિક પુદ્ગ-લોને ગ્રહણ કરવાનો જ અભાવ રહે છે

नैरयिकजीवस्य औदारिकपुद्गलग्रहणाभावात्। गौतमः पृच्छति-'केवइया पुरेक्खडा?' हे भदन्त! एकैकस्य नैरयिकत्वे वर्तमानस्य कियन्तः औदारिक पुद्गलपरिवर्ताः पुरस्कृताः भविष्यन्तः सन्ति? भगवानाह-'नत्थि एक्को वि' हे गौतम! नैरयिकत्वे वर्तमानस्य नैरयिकस्य भावी औदारिकपुद्गलपरिवर्तः एकोऽपि नास्ति, नैरयिकत्वे औदारिकपुद्गलग्रहणस्यैवाभावेन तत्परिवर्तस्यापि भावित्वासंभवात्। गौतमः पृच्छति-'एगमेगस्स णं भंते! नेरइयस्स असुरकुमारत्ते केवइया ओरालियपोग्गलपरियट्टा अईया?' हे भदन्त! एकैकस्य खलु नैरयिकस्य वर्तमानकालिकनैरयिकभवयोग्यस्य जीवस्य असुरकुमारत्वे चातीतानागत-

औदारिकपुद्गलों के ग्रहण करने का अभाव रहता है। अब गौतम प्रभु से ऐसा पूछते हैं-'केवइया पुरेक्खडा' हे भदन्त! एक एक नैरयिक की जो नैरयिक अवस्था में वर्तमान है भावी औदारिकपुद्गलपरिवर्त कितने होते हैं? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-'नत्थिएक्कोवि' हे गौतम' नैरयिक अवस्था में वर्तमान नैरयिक को भावी औदारिक पुद्गल परिवर्त एक भी नहीं होता है-क्यों कि नैरयिक अवस्था में वर्तमान नारक जीव को औदारिक पुद्गलों के ग्रहण करने का ही जब अभाव है तब उसके परिवर्त में भावित्व का सद्भाव कैसे हो सकता है? अर्थात् नहीं हो सकता है। अब गौतम प्रभु से ऐसा पूछते हैं-"एगमेगस्सणं भंते! नेरइस्स असुरकुमारत्ते केवइया ओरालियपोग्गलपरियट्टा अईया" हे भदन्त! एक एक नैरयिक को वर्तमान कालिक नैरयिकभव के योग्य जीव को-अतीत अनागतकाल संबंधी असुरकुमारावस्था में अतीतका-

---

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-" केवइया पुरेक्खडा?" હે ભગવન્! નારક અવસ્થામાં રહેલા એવા એક એક નારકના ભાવી ઔદારિક પુદ્ગલપરિવર્ત કેટલા કહ્યા છે?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-" नत्थि एक्को वि " હે ગૌતમ! નારક અવસ્થામાં રહેલા એક એક નારક જીવમાં ભાવી ઔદારિક પુદ્ગલપરિવર્ત એક પણ સંભવી શકતા નથી કારણ કે એવો જીવ ઔદારિક પુદ્ગલો જ ગ્રહણ કરતો નથી તેથી ઔદારિક પુદ્ગલોને ગ્રહણ કરવાનો જ જ્યાં અભાવ હોય ત્યાં ભવિષ્યમાં તેમના પરિવર્તની વાત જ કેવી રીતે સંભવી શકે! એટલે કે ભાવી ઔદારિક પુદ્ગલપરિવર્તનો ત્યાં અભાવ જ રહે છે.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-" एगमेगस्स णं भंते! नेरइयस्स असुरकुमारत्ते केवइया ओरालियपोग्गलपरियट्टा? " હે ભગવન્! એક એક નારકને વર્તમાનકાલિક નારકભવને યોગ્ય જીવને-અતીતઅનાગત કાળસંબંધી અસુરકુમારાવ-

कालसम्बन्धीनि कियन्तः औदारिकपुद्गलपरिवर्ताः अतीताः ? कियन्तश्च भाविनः ? भगवानाह-'एवं चेव, एवं जाव थणियकुमारत्ते जहा असुरकुमारत्ते' हे गौतम ! एवमेव-पूर्वोक्तनैरयिकस्य नैरयिकत्ववदेव, एकैकस्य नैरयिकभवयोग्यस्य नैरयिकस्य असुरकुमारत्वेऽपि अतीतानागतकालसम्बन्धीनि एकोऽपि औदारिकपुद्गलपरिवर्तः अतीतो नास्ति उक्तयुक्तेः, एवमेव एकोऽपि औदारिकपुद्गलपरिवर्तो भावीनास्ति, युक्तेरुक्तत्वात्, एवं-पूर्वोक्तरीत्या यावत्-एकैकस्य नैरयिकस्य वर्तमानकालिकस्य स्तनितकुमारत्वे अतीतानागतकालसम्बन्धीनि यथा असुरकुमारत्वे नैकोऽपि औदारिकपुद्गलपरिवर्तः अतीतः, भावी वा प्रतिपादितस्तथैव नैकोऽपि औदारिकपुद्गलपरिवर्तः अतीतः, भावी वा भवति इतिभावः। गौतमः पृच्छति-'एगमेगस्स णं भंते ! नेरइयस्स पुढविकाइयत्ते केवइया ओरालियपोग्गलपरियट्टा

लिक कितने औदारिक पुद्गलपरिवर्त होते है? तथा कितने भावी औदारिक परिवर्त होते हैं? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं 'एवंचेव, एवं जाव थणिय कुमारत्ते, जहा असुरकुमारत्ते' हे गौतम! नैरयिक भवयोग्य एक एक नैरयिक को अतीत अनागत काल संबंधी असुरकुमारावस्था में भूत कालिक और भाविकालिक एक भी औदारिकपुद्गलपरिवर्त नहीं हैं। क्योंकि इस विषय में नैरयिक सूत्र में अभी युक्ति कही जा चुकी है। इसी प्रकार से वर्तमानकालिक एक एक नैरयिक को अतीत अनागतकाल संबंधी स्तनितकुमारावस्थामें असुरकुमारावस्था के जैसे भूतकालिक एक भी औदारिक पुद्गलपरिवर्त तथा भाविकालिक एक भी औदारिक परिवर्त नहीं होता है। अब गौतम प्रभुसे ऐसा पूछते हैं 'एगमेगस्सणं भंते ! नेरइस्स पुढवि-

---

સ્થામાં અતીતકાલિક કેટલા ઔદારિક પુદ્ગલપરિવર્ત થાય છે ? તથા કેટલા ભાવી ઔદારિક પરિવર્ત થાય છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-" एवं चेव, एवं जाव थणियकुमारत्ते, जहा असुरकुमारत्ते " હે ગૌતમ ! નરકભવયોગ્ય એક એક નારકમાં અતીત અનાગત કાળસંબંધી અસુરકુમારાવસ્થામાં ભૂતકાલિક અને ભવિષ્યકાલિક એક પણ ઔદારિક પુદ્ગલપરિવર્તનો સદ્ભાવ હોતો નથી તેનું કારણ નારકસૂત્રમાં કહ્યા પ્રમાણે જ સમજવાનું છે વર્તમાનકાલિક એક એક નારકને અતીત અનાગતકાળસંબંધી સ્તનિતકુમાર પર્યન્તની અવસ્થામાં પણ અસુરકુમારાવસ્થાની જેમ ભૂતકાલિક એક પણ ઔદારિક પરિવર્તનો અને ભવિષ્યકાલિક એક પણ ઔદારિક પરિવર્તનો પણ અભાવ જ હોય છે.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-" एगमेगस्स णं भंते ! नेरइयस्स पुढविकाइयत्ते

अईया ?' हे भदन्त ! एकैकस्य खलु वर्तमानकालिकस्य नैरयिकस्य पृथिवीकायिकत्वे अतीतानागतकालसम्बन्धिनि कियन्तः औदारिकपुद्गलपरिवर्ताः अतीताः ? भगवानाह-'अणंता' हे गौतम ! एकैकस्य नैरयिकस्य पृथिवीकायिकत्वे अतीतानागतकालसम्बन्धिनि अनन्ताः औदारिकपुद्गलपरिवर्ताः अतीताः। गौतमः पृच्छति-'केवइया पुरेक्खडा ?' हे भदन्त ! एकैकस्य नैरयिकस्य अतीतानागतकालसम्बन्धिनि पृथिवीकायिकत्वे कियन्तः औदारिकपुद्गलपरिवर्ताः पुरस्कृताः भविष्यन्तः सन्ति ? भगवानाह-'कस्सइ अत्थि, कस्सइ नत्थि' हे गौतम ! कस्यापि नैरयिकस्य पृथिवीकायिकत्वे औदारिकपुद्गलपरिवर्ताः भाविनः सन्ति, कस्यापि न सन्ति। 'जस्सत्थि तस्स जहण्णेणं एक्को वा, दो वा, तिन्नि वा उक्को-

---

काइयत्ते केवइया ओरालियपोग्गलपरियट्टा अईया' वर्तमान कालिक एक २ नैरयिक को अतीतकाल संबंधी पृथिवीकायावस्था में भूतकालिक कितने औदारिकपुद्गलपरिवर्त होते हैं ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-'अणंता' हे गौतम ! वर्तमानकालिक एक एक नैरयिक के अतीतकाल संबंधी पृथवीकायिक अवस्था में भूतकालिक औदारिक परिवर्त अनंत होते हैं। अब गौतम प्रभु से ऐसा पूछते हैं। 'केवइया पुरेक्खडा' हे भदन्त ! एक एक नरयिक को अनागत काल संबंधी पृथवीकायिक अवस्था में भविष्यत्कालिक औदारिकपुद्गलपरिवर्त कितने होते हैं ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-'कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि' हे गौतम ! किसी एक नैरयिक को पृथवीकायिक अवस्था में भावी औदारिकपुद्गल-

---

केवइया ओरालियपोग्गलपरियट्टा अईया ?" हे भगवन् ! वर्तमानकालिक એક એક નારકને અતીત અનાગત કાળસંબંધી પૃથ્વીકાયિક અવસ્થામાં ભૂતકાલિક કેટલા ઔદારિક પુદ્ગલપરિવર્ત થાય છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-" अणंता " હે ગૌતમ ! વર્તમાનકાલિક એક એક નારકને અતીત અનાગત કાળસંબંધી પૃથ્વીકાયિક અવસ્થામાં ભૂતકાલિક ઔદારિક પરિવર્ત અનંત થાય છે.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-" केवइया पुरेक्खडा ?" હે ભગવન્ ! એક એક નારકને અતીત અનાગત કાળસંબંધી પૃથ્વીકાયિક અવસ્થામાં ભવિષ્યકાલિક ઔદારિક પુદ્ગલપરિવર્ત કેટલા થાય છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-' कस्सइ अत्थि, कस्सइ नत्थि " હે ગૌતમ ! કોઈ એક નારકને પૃથ્વીકાયિક અવસ્થામાં ભાવી ઔદારિક પુદ્ગલ પરિવર્ત થાય છે, તથા કોઈ એક નારકને ભાવી ઔદારિક પુદ્ગલ પરિવર્ત થતા નથી,

सेणं संखेज्जा वा असंखेज्जा वा, अणंता वा, एवं जाव मणुस्सत्ते' यस्य नैरयिकस्य पृथिवीकायिकत्वे भाविनः औदारिकपुद्गलपरिवर्ताः सन्ति, तस्य जघन्येन एको वा, द्वौ वा, त्रयो वा सन्ति उत्कृष्टेन संख्येया वा, असंख्येया वा, अनन्ता वा औदारिकपुद्गलपरिवर्ता भाविनः सन्ति। एवं-पूर्वोक्तरीत्या यावत् एकैकस्य नैरयिकस्य अप्कायिकत्वे, तेजः कायिकत्वे, वायुकायिकत्वे, वनस्पतिकायिकत्वे, विकलेन्द्रियत्वे, पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकत्वे, मनुष्यत्वे च अतीतानागतकालसम्बन्धिनि अनन्ताः औदारिकपुद्गलपरिवर्ताः अतीताः, अनागतास्तु कस्यापि सन्ति औदारिकपुद्गलपरिवर्ताः, कस्यापि न सन्ति इतिभावः। 'वाणमंतरजोइसियवेमाणियत्ते जहा असुरकुमारत्ते' वानव्यन्तरज्योतिषिकवैमानिकत्वे एकैकस्य

परावर्त होते हैं तथा किसी को नहीं होते हैं। 'जस्स अत्थि, तस्स जहण्णेणं एक्को वा, दो वा, तिन्नि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा वा, असंखेज्जा वा अणंता वा, एवं जाव मणुस्सत्ते' जिस नैरयिक को पृथवीकायिक अवस्था में भावी औदारिकपुद्गलपरिवर्त होते हैं, वे उसको जघन्य से एक, अथवा दो, अथवा तीन होते हैं, और उत्कृष्ट से संख्यात अथवा असंख्यात या अनंत होते हैं। इसी प्रकार से पूर्वोक्तरीति के अनुसार यावत् एक एक नैरयिक को अतीत अनागत काल भावी अप्कायिक अवस्था में, तेजः कायिक अवस्था में, वायुकायिक अवस्था में, वनस्पतिकायिक अवस्था में, विकलेन्द्रिय अवस्था में, पंचेन्द्रियतिर्यग् और मनुष्य अवस्था में और भूतकालिक औदारिक-पुद्गलपरावर्त अनंत होते हैं, तथा अनागतकाल भावी औदारिक पुद्गलपरिवर्त किसी जीवको होते हैं और किसी जीव को नहीं भी होते हैं। 'वाणमंतरजोइसियवेमाणियत्ते जहा असुरकुमारत्ते' नैयरिक अव-

---

"जस्स अत्थि, तस्स जहण्णेणं एक्को वा, दो वा, तिन्निवा, उक्कोसेणं संखेज्जा वा, असंखेज्जा वा, अणंता वा, एवं जाव मणुस्सत्ते" જે નારકને પૃથ્વીકાયિક અવસ્થામાં ભાવી ઔદારિક પુદ્ગલપરિવર્તનો સદ્ભાવ હોય છે, ઓછામાં ઓછા એક, બે અથવા ત્રણનો સદ્ભાવ હોય છે અને વધારેમાં વધારે સંખ્યાત અથવા અસંખ્યાત અથવા અનંત ઔદારિક પુદ્ગલપરિવર્તનો સદ્ભાવ રહે છે. આ પૂર્વોક્ત પદ્ધતિ અનુસાર એક એક નારકના અતીત અનાગત કાળ-ભાવી અપ્કાયિક અવસ્થામાં, તૈજસ્કાયિક અવસ્થામાં, વાયુકાયિક અવસ્થામાં, વનસ્પતિકાયિક અવસ્થામાં, વિકલેન્દ્રિય અવસ્થામાં, પંચેન્દ્રિય તિર્યંગ્યોનિક અવસ્થામાં અને મનુષ્ય અવસ્થામાં ભૂતકાલિક ઔદારિક પુદ્ગલપરિવર્ત અનંત થાય છે, તથા ભવિષ્યકાળભાવી ઔદારિક પુદ્ગલ પરિવર્તનો કોઈ જીવમાં સદ્ભાવ હોય છે, અને કોઈ જીવમાં અભાવ હોય છે. "वाणमंतरजोइसिय-

नैरयिकत्वे वर्तमानस्य नैरयिकस्य जीवस्य अतीतभाविकालसम्बन्धिनि वानव्यन्तरत्वे ज्योतिषिकत्वे, वैमानिकत्वे च यथा अतीतकालसम्बन्धिनि असुरकुमारत्वे एकोऽपि औदारिकपुद्गलपरिवर्तो नातीतः, अनागतकालसम्बन्धिनि चापि असुरकुमारत्वे एकोऽपि औदारिकपुद्गलपरिवर्तो भावी नास्ति तथैव एकोऽपि औदारिकपुद्गलपरिवर्तो नातीतः नापि भावी अस्तीति भावः। 'एगमेगस्स णं भंते ! असुरकुमारस्स नेरइयत्ते केवइया अईया ओरालियपोग्गलपरियट्टा' गौतमः पृच्छति-हे भदन्त ! एकैकस्य खलु असुरकुमारस्य असुरकुमारत्वे वर्तमानस्य अतीतभाविकालसम्बन्धिनि नैरयिकत्वे कियन्तः औदारिकपुद्गलपरिवर्ताः अतीताः ? अनागता वा सन्ति ? भगवानाह-'एवं जहा नेरइयस्स वत्तव्वया भणिया

स्था में वर्तमान एक एक नैरयिक जीव को अतीत काल एवं भाविकाल संबंधी वानव्यन्तर अवस्था में ज्यौतिषिक अवस्था में और वैमानिक अवस्था में अतीत काल संबंधी असुर कुमारावस्था की तरह भूतकाल संबंधी एक भी औदारिक पुद्गलपरिवर्त नहीं होता है, और अनागत (भविष्यत्) कालसंबंधी असुरकुमारावस्था की तरह भाविकाल संबंधी एक भी औदारिक पुद्गल परिवर्त नहीं होता है।

अब गौतम स्वामी प्रभु से ऐसा पूछते हैं-'एगमेगस्स णं भंते ! असुरकुमारस्स नेरइयत्ते केवइया अईया ओरालियपोग्गलपरियट्टा' हे भदन्त ! एक एक असुरकुमार को जो कि असुरकुमारावस्था में वर्तमान है, अतीत काल एवं भाविकाल संबंधी नैरयिक अवस्था में, भूत काल भावी कितने औदारिकपुद्गलपरिवर्त हुए हैं और अनागतकाल भावी

वेमाणियत्ते जहा जहा असुरकुमारत्ते" નારક અવસ્થામાં વર્તમાન એવા એક નારક જીવના અતીત અને અનાગત કાળસંબંધી વાનવ્યંતર અવસ્થામાં, જ્યોતિષિક અવસ્થામાં અને વૈમાનિક અવસ્થામાં અતીતકાળસંબંધી અસુરકુમારાવસ્થાની જેમ ભૂતકાળસંબંધી એક પણ ઔદારિક પુદ્ગલ પરિવર્તનો સદ્ભાવ હોતો નથી, અને ભવિષ્યકાળસંબંધી અસુરકુમારાવસ્થાની જેમ ભવિષ્યકાલિક એક પણ ઔદારિક પુદ્ગલપરિવર્તનો પણ સદ્ભાવ હોતો નથી.

ગૌતમ સ્વામી પ્રશ્ન-"एगमेगस्स णं भंते ! असुरकुमारस्स नेरइयत्ते केवइया अईया ओरालियपोग्गलपरियट्टा?" હે ભગવન્! પ્રત્યેક અસુરકુમાર કે જે અસુરકુમારાવસ્થામાં રહેલો છે, તેણે અતીતકાળ અને અનાગતકાળ સંબંધી નૈરયિક અવસ્થામાં, ભૂતકાલિક કેટલા ઔદારિક પુદ્ગલ પરિવર્ત કર્યાં છે? અને ભવિષ્યકાલિક કેટલા ઔદારિક પુદ્ગલ પરિવર્ત કરશે?

तहा असुरकुमारस्स वि भाणियव्वा जाव वेमाणियत्ते' हे गौतम ! एवं-पूर्वोक्तरीत्या, यथा नैरयिकस्य असुरकुमारत्वे वक्तव्यता भणिता उक्ता, तथैव असुरकुमारस्यापि नैरयिकत्वे वक्तव्यता भणितव्या-वक्तव्या, तथा च यथा नैरयिकस्य एकैकस्यापि असुरकुमारत्वे एकोऽपि औदारिकपुद्गलपरिवर्तः अतीतो नास्ति अनागतो वा नास्ति तथा एकैकस्य असुरकुमारस्यापि नैरयिकत्वे एकोऽपि औदारिक पुद्गलपरिवर्तो नातीतः, नापि अनागतोऽस्तीति भावः। एवं रीत्या यावत्-एकैकस्य असुरकुमारस्य वानव्यन्तरत्वे ज्योतिषिकत्वे वैमानिकत्वे च अतीतानागतकालसम्बन्धिनि एकोऽपि औदारिकपुद्गलपरिवर्तो नातीतः, नापि अना-

---

कितने औदारिकपुद्गलपरिवर्त होंगे ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं 'एवं जहा नेरइयस्स वत्तव्वया भणिया, तहा असुरकुमारस्स वि भाणियव्वा जाव वेमाणियत्ते' हे गौतम ! जैसी पहिले नैरयिककी असुरकुमारावस्था में वक्तव्यता कही जा चुकी है, उसी उकार असुरकुमार की भी नैरयिकावस्था में कहनी चाहिये, तथा च जैसे एक एक के असुरकुमारावस्था में एक भी अतीत औदारिकपुद्गलपरिवर्त नहीं है, अनागत भी नहीं हैं, उसी प्रकार एक २ असुरकुमार को भी नैरयिक अवस्था में एक भी अतीत औदारिक पुद्गलपरिवर्त नहीं है, और अनागत भी नहीं है। इसरीति के अनुसार यावत्-एक एक असुरकुमार को अतीत अनागत कालसंबंधी वानव्यन्तर अवस्था में ज्योतिष्क अवस्था में, वैमानिक अवस्था में एक भी अतीत औदारिक पुद्गल परिवर्त नहीं है और अनागत भी औदारिकपुद्गलपरिवर्त नहीं है। क्यों कि वानव्यन्तर

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-" एवं जहा नेरइयस्स वत्तव्वया भणिया, तहा असुरकुमारस्स वि भाणियव्वा जाव वेमाणियत्ते " હે ગૌતમ ! વર્તમાન નારકાવસ્થાવાળા જીવની ભૂત અને ભવિષ્યકાલીન અસુરકુમારાવસ્થાને અનુલક્ષીને જેવું કથન પહેલાં કરવામાં આવ્યું છે, એવું જ કથન અસુરકુમારની પણ ભૂત અને ભવિષ્યકાળ સંબંધી નારકાવસ્થા વિષે પણ કરવું જોઈએ જેમ કે પ્રત્યેક નારકને ભૂત અને ભવિષ્ય કાલિક અસુરકુમારાવસ્થામાં એક પણ અતીતકાલીન ઔદારિક પુદ્ગલપરિવર્તનો પણ સદ્ભાવ હોતો નથી અને ભવિષ્યકાલિક ઔદારિક પુદ્ગલપરિવર્તનો પણ સદ્ભાવ હોતો નથી, એજ પ્રમાણે પ્રત્યેક અસુરકુમારમાં પણ ભૂતકાલિક નારકાવસ્થામાં એક પણ અતીત પુદ્ગલપરિવર્તનો સદ્ભાવ હોતો નથી અને ભવિષ્યકાલિક એક પણ પુદ્ગલપરિવર્તનો પણ સદ્ભાવ હોતો નથી એજ પ્રમાણે પ્રત્યેક અસુરકુમારની અતીત અને અનાગત કાળસંબંધી વાનવ્યંતર અવસ્થામાં જ્યોતિષ્ક અવ-

गतोऽस्ति, वानव्यन्तरत्वादिषु औदारिकपुद्गलग्रहणाभावेन तत्परिवर्तासंभवात्। पृथिवीकायिकत्वादिविकलेन्द्रियत्वे पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकत्वे मनुष्यत्वे च अतीतानागतकालसम्बन्धिनि, एकैकस्य असुरकुमारस्य अनन्ता औदारिकपुद्गलपरिवर्ताः अतीताः, अनागतास्तु औदारिकपुद्गलपरिवर्ताः कस्यापि असुरकुमारस्य सन्ति, कस्यापि न सन्ति, यस्यापि सन्ति, तस्यापि जघन्येन एको वा, द्वौ वा, त्रयो वा, उत्कृष्टेन संख्येया वा, असंख्येया वा, अनन्ता वा सन्तीति भावः 'एवं जाव थणियकुमारस्स' एवं-पूर्वोक्तासुरकुमाररीत्या, यावत् एकैकस्य स्तनितकुमारस्य नैरयिकत्वादि वैमानिकत्वान्ते अतीतानागतकालसम्बन्धिनि

आदि अवस्थाओं में औदारिक पुद्गलों के ग्रहण का अभाव है, अतः इनके अभाव से उसके परिवर्त का भी अभाव है। अतीत काल एवं अनागतकाल संबंधी पृथवीकायिक आदि अवस्था में विकलेन्द्रिय अवस्था में पंचेन्द्रियतिर्यग्योनि अवस्था में, और मनुष्यावस्था में, एक एक असुरकुमार के अतीत औदारिकपुद्गलपरिवर्त अनंत हैं, तथा अनागत औदारिक पुद्गलपरिवर्त किसी एक असुरकुमार को हैं, और किसी एक असुरकुमार को नहीं हैं जिसको वे हैं उसके भी जघन्य से एक अथवा दो या तीन हैं और उत्कृष्ट से संख्यात, या असंख्यात, या अनंत हैं "एवं जाव 'थणियकुमारस्स' पूर्वोक्त असुरकुमार के कथन अनुसार यावत्-एक एक स्तनितकुमार के अतीत काल एवं अनागतकाल संबंधी

સ્થામાં અને વૈમાનિક અવસ્થામાં એક પણ અતીત ઔદારિક પુદ્ગલ પરિવર્તનો અભાવ હોય છે અને અનાગતકાલીન ઔદારિક પુદ્ગલપરિવર્તનો પણ અભાવ જ હોય છે, કારણ કે વાનવ્યંતર આદિ અવસ્થાઓમાં ઔદારિક પુદ્ગલોના ગ્રહણનો અભાવ હોય છે. તેના ગ્રહણનો અભાવ હોવાથી તેના પરિવર્તનો પણ અભાવ જ હોય છે ભૂત અને ભવિષ્યકાળ સંબંધી પૃથ્વીકાયિક આદિ અવસ્થામાં, વિકલેન્દ્રિય અવસ્થામાં, પંચેન્દ્રિય તિર્યંગ્યોનિક અવસ્થામાં અને મનુષ્ય અવસ્થામાં પ્રત્યેક અસુરકુમારના અતીત (ભૂતકાલીન) ઔદારિક પુદ્ગલ પરિવર્ત અનંત કહ્યા છે, પરન્તુ ભવિષ્યકાલિક ઔદારિક પુદ્ગલપરિવર્તનો કોઇ એક અસુરકુમારમાં સદ્ભાવ હોય છે અને કોઇ એકમાં અભાવ હોય છે. જે અસુરકુમારમાં તેનો સદ્ભાવ હોય છે, તે અસુરકુમારમાં ઓછામાં ઓછા એક, બે અથવા ત્રણનો સદ્ભાવ હોય છે અને વધારેમાં વધારે સંખ્યાત અથવા અસંખ્યાત અથવા અનંતનો સદ્ભાવ હોય છે. "एवं जाव थणियकुमारस्स" અસુરકુમારોના જેવું જ કથન પ્રત્યેક સ્તનિતકુમાર પર્યન્તના ભવનપતિ દેવો વિષે સમજવું જોઇએ પ્રત્યેક સ્તનિતકુમા-

एकोऽपि औदारिकपुद्गलपरिवर्तो नातीतः, नो भावी वा अस्ति, विकलेन्द्रियत्वे तिर्यग्योनिकपञ्चेन्द्रियमनुष्यत्वे तु अनन्ताः औदारिकपुद्गलपरिवर्ताः अतीताः अनागतास्तु पूर्वोक्तरीत्या कस्यापि जघन्येन एको वा, द्वौ वा, त्रयो वा, उत्कृष्टेन संख्येया वा, असंख्येया वा, अनन्ता वा सन्ति, कस्य तु न सन्त्येव इति भावः। 'एवं पुढविकायस्स वि, एवं जाव वेमाणियस्स, सव्वेसिं एक्कोगमो' एवं-पूर्वोक्तरीत्या पृथिवीकायिकस्यापि एकैकस्य नैरयिकत्वे असुरकुमारादिभवनपतित्वे, वानव्यन्तरत्वे, ज्योतिषिकत्वे, वैमानिकत्वे च अतीतानागतकालसम्बन्धिनि

नैरयिक से लेकर वैमानिक तक की अवस्था में अतीत एक भी औदारिक पुद्गलपरिवर्त नहीं है, और न भावी औदारिक पुद्गल परिवर्त भी है। विकलेन्द्रिय अवस्था में तिर्यक्योनिकपंचेन्द्रियअवस्था में और मनुष्यावस्था में तो एक स्तनित कुमार के भूतकालिक अनंत औदारिक पुद्गल परिवर्त होते हैं, तथा अनागत जो औदारिक पुद्गल परिवर्त हैं वे किसी स्तनितकुमार को होते भी हैं, और किसी को नहीं भी हैं। जिसको ये होते हैं उसको एक अथवा दो या तीन तक कम से कम होते हैं, और अधिक से अधिक संख्यात या असंख्यात या अनंत होते हैं। 'एवं पुढविकायस्स वि, एवं जाव वेमाणियस्स सव्वेसिं एक्कोगमो' इसी पूर्वोक्तरीति के अनुसार एक एक पृथ्वीकायिक जीवको भी अतीत काल और अनागत काल संबंधी नैरयिक अवस्था में, असुरकुमारादि भवनपति अवस्था में वानव्यन्तर अवस्था में ज्योतिषिक अवस्था में और

રની ભૂત અને ભવિષ્યકાળ સંબંધી નારકથી લઈને વૈમાનિક પર્યન્તની અવસ્થામાં ભૂતકાલિક એક પણ ઔદારિક પુદ્ગલ પરિવર્તનો અને ભવિષ્યકાલીન એક પણ ઔદારિક પુદ્ગલપરિવર્તનો અભાવ જ સમજવાનો છે. વિકલેન્દ્રિય અવસ્થામાં, તિર્યંગ્યોનિક પંચેન્દ્રિય અવસ્થામાં, અને મનુષ્ય અવસ્થામાં તો પ્રત્યેક સ્તનિતકુમારમાં ભૂતકાલીન અનંત ઔદારિક પુદ્ગલપરિવર્તનો સદ્ભાવ રહે છે, તથા ભવિષ્યકાલિક ઔદારિક પુદ્ગલપરિવર્તનો કોઈ સ્તનિતકુમારમાં સદ્ભાવ હોય છે અને કોઇમાં અભાવ હોય છે. જે સ્તનિતકુમારોમાં તેનો સદ્ભાવ હોય છે તે સ્તનિતકુમારમાં ઓછામાં ઓછા એક, બે અથવા ત્રણનો અને વધારેમાં વધારે સંખ્યાત, અસંખ્યાત અથવા અનંતનો સદ્ભાવ હોય છે. "एवं पुढविकायस्स वि, एव जाव वेमाणियस्स सव्वेसिं एक्कोगमो" આ પૂર્વોક્ત કથન પ્રમાણે પ્રત્યેક પૃથ્વીકાયિક જીવમાં પણ ભૂત અને ભવિષ્યકાળ સંબંધી નારકાવસ્થામાં, અસુરકુમારાદિ ભવનપતિ અવસ્થામાં, વાનવ્યંતર અવસ્થામાં, જ્યોતિષિક અવસ્થામાં અને વૈમાનિક અવસ્થામાં

एकोऽपिऔदारिकपुद्गलपरिवर्तो नातीतः, नो अनागतो वा एकोऽप्यस्ति, नैरयिकत्वादि वैमानिकत्वान्तेषु औदारिकपुद्गलग्रहणाभावेन तत्परिवर्तो संभवात्, स्वभिन्नविकलेन्द्रियत्वे पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकमनुष्यत्वे तु यथायथम् अनन्ताः औदारिकपुद्गलपरिवर्ताः अतीताः, अनागतास्तु कस्यापि सन्ति, कस्यापि न सन्ति, इत्यादि रीत्या पूर्ववदेव बोध्यम्, एवं-पूर्वोक्तरीत्या, यावत्-अप्कायिकादिविकलेन्द्रियस्य, पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकस्य, मनुष्यस्य, वानव्यन्तरस्य, ज्योतिषिकस्य वैमानिकस्य च नैरयिकत्वादिभवनपतित्व वानव्यन्तरज्योतिषिकवैमानिकत्वान्ते स्व स्वभिन्ने अतीतानागतकाल

वैमानिक अवस्था में अतीत कालिक एक भी औदारिक पुद्गलपरिवर्त नहीं होता है, और न अनागत-कालिक अनागत एक भी औदारिक पुद्गल परिवर्त होता है क्यों कि नैरयिक से लेकर वैमानिकान्त तक चौदह दन्डकों के जीवों में औदारिक पुद्गल ग्रहण करने का अभाव रहता है इसके अभाव से वहां औदारिक पुगलपरिवर्त का अभाव कहा गया है एकेन्द्रिय विकलेन्द्रिय अवस्था में एवं पंचेन्द्रियतिर्यग्योनिक अवस्था में और मनुष्यावस्था में तो अतीत काल संबंधी अनंत औदारिक पुद्गलपरिवर्त यथायोग्यरूप से हैं, तथा अनागत संबंधी जो औदारिक पुद्गलपरिवर्त हैं वे किसी को होते भी हैं और किसी को नहीं भी होते हैं, इत्यादि रीति के अनुसार पूर्वके जैसा समझना चाहिये इसी प्रकार पूर्वोक्त पद्धति के अनुसार यावत् अप्कायिक से लेकर विकलेन्द्रिय के, पंचेन्द्रियतिर्यग्योनिक जीव के, मनुष्य वानव्यन्तर के, ज्योतिष्क के, और वैमानिक के, नैरयिक से लेकर भवनपति, वानव्यन्तर, ज्योतिष्क

અતીતકાલિક એક પણ ઔદારિક પુદ્ગલપરિવર્ત સંભવતો નથી અને ભવિષ્યકાલિક એક પણ પુદ્ગલપરિવર્ત સંભવતો નથી, કારણ કે નારકથી લઈને વૈમાનિક પર્યન્તના જીવોમાં ઔદારિક પુદ્ગલ ગ્રહણ કરવાનો અભાવ કહ્યો છે. તેના અભાવને લીધે ત્યાં ઔદારિક પુદ્ગલ પરિવર્તનો પણ અભાવ જ કહ્યો છે પરન્તુ સ્વભિન્ન વિકલેન્દ્રિય અવસ્થામાં, પંચેન્દ્રિયતિર્યંચયોનિક અવસ્થામાં અને મનુષ્ય અવસ્થામાં તો ભૂતકાલિક અનંત ઔદારિક પુદ્ગલ પરિવર્તનો સદ્ભાવ કહ્યો છે, તથા ભવિષ્યકાલિક ઔદારિક પુદ્ગલપરિવર્તનો કોઈ પૃથ્વીકાયિકમાં સદ્ભાવ હોય છે અને કોઈમાં અભાવ હોય છે, ઇત્યાદિ કથન અનુસાર સમજવું એજ પ્રકારની પૂર્વોક્ત પદ્ધતિ અનુસાર અપ્કાયિકથી લઈને વિકલેન્દ્રિયના, પંચેન્દ્રિયતિર્યંચયોનિક જીવના, મનુષ્યના, વાનવ્યંતરના, જ્યોતિષ્કના, અને વૈમાનિકના પોતપોતાનાથી ભિન્ન એવી નારકથી લઈને ભવનપતિ, વાનવ્યંતર, જ્યોતિષ્ક અને વૈમાનિક પર્યન્તની અતીત અને

सम्बन्धिनि, एकोऽपि औदारिकपुद्गलपरिवर्तो नातीतः, नो वा अनागतः, नैरयिकत्वादौ औदारिकपुद्गलग्रहणस्यैवाभावेन तत्परिवर्तस्य दूरापास्तत्वात्, स च स्वभिन्ने अतीतानागतकालसम्बन्धिनि विकलेन्द्रियत्वे पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकमनुष्यत्वे तु यथायथम् अनन्ताः औदारिकपुद्गलपरिवर्ताः अतीताः, अनागतास्तु कस्यापि सन्ति, कस्यापि न सन्ति, यस्यापि सन्ति तस्यापि जघन्येन एको वा, द्वौ वा, त्रयो वा, उत्कृष्टेन तु संख्येया वा, असंख्येया वा अनन्ता वा सन्ति, इत्यभिप्रायेणाह-सर्वेषाम् नैरयिकादि वैमानिकान्तानां चतुर्विंशतिदण्डकप्रतिपाद्यानां जीवानाम्, एकोगमः

एवं वैमानिक तक की अतीतकाल एवं अनागतकाल संबंधी अवस्थाओं में एक भी भूतकाल संबंधी औदारिक पुद्गलपरिवर्त नहीं है, और न यहां एक भी अनागत काल संबंधी औदारिक पुद्गल परिवर्त है क्यों कि नैयरिक आदि अवस्थाओं में औदारिक पुगद्ल को ग्रहण करने का अभाव रहता है अतः इसके अभाव से वहां इसके परिवर्त होने का सवाल ही नही उठता है ऐसी अतीतानागत काल संबंधी एकेन्द्रिय विकलेन्द्रिय अवस्था में, एवं पंचेन्द्रिय तिर्यग्योनिकावस्था में, एवं मनुष्यावस्था में अतीत काल संबंधी औदारिकपुद्गलपरिवर्त यथा योग्य रूप से अनंत होते हैं, तथा अनागत काल संबंधी औदारिक पुद्गल परिवर्त किसी को होते भी हैं और किसी को नहीं भी होते हैं-जिसको ये होते हैं उसको ये जघन्य से एक या दो अथवा तीन तक होते हैं और उत्कृष्ट से संख्यात, असंख्यात तथा अनन्ततक होते हैं। इसी अभिप्राय को लेकर सूत्रकार ने ऐसा कहा है-कि समस्त नैरयिक से लेकर

અનાગત કાળસંબંધી અવસ્થાઓમાં પણ એક પણ ભૂતકાલિન ઔદારિક પુદ્ગલ પરિવર્તનો પણ સદ્ભાવ નથી અને ભવિષ્યકાલિક એક પણ ઔદારિક પુદ્ગલ પરિવર્તનો પણ સદ્ભાવ નથી, કારણ કે નારક આદિ અવસ્થાઓમાં ઔદારિક પુદ્ગલોને ગ્રહણ કરવાનો જ અભાવ હોય છે, તેથી ત્યાં તેમના પરિવર્તની શક્યતા જ હોતી નથી પરન્તુ પોતપોતાનાથી ભિન્ન એવી ભૂત અને ભવિષ્યકાળ સંબંધી વિકલેન્દ્રિય અવસ્થામાં, પંચેન્દ્રિ તિર્યંગ્યોનિક અવસ્થામાં અને મનુષ્ય અવસ્થામાં તો ભૂતકાળ સંબંધી ઔદારિક પુદ્ગલપરિવર્ત યથાયોગ્ય રૂપે અનંત થાય છે, તથા ભવિષ્યકાળ સંબંધી ઔદારિક પુદ્ગલ પરિવર્તનો કોઈ અપ્કાયિક આદિમાં સદ્ભાવ હોય છે અને કોઈમા અભાવ હોય છે. જે જીવોમાં તેનો સદ્ભાવ હોય છે. તે જીવ ઓછામાં ઓછા એક બે અથવા ત્રણ અને વધારેમાં વધારે સંખ્યાત, અસંખ્યાત અથવા અનંત ઔદારિક પુદ્ગલપરિવર્ત કરે છે. એજ વાતને અનુલક્ષીને સૂત્રકારે એવું કહ્યું છે કે

समान एव अभिलापक्रमोऽवसेय इति भावः। गौतमः पृच्छति-' एगमेगस्स णं भंते ! नेरइयस्स केवइया वेउव्वियपोग्गलपरियट्टा अईया ?' हे भदन्त! एकैकस्य खलु नैरयिकस्य कियन्तो वैक्रियपुद्गलपरिवर्ताः अतीताः ? भगवानाह-' अणंता ' हे गौतम! एकैकस्य नैरयिकस्य अनन्ताः वैक्रियपुद्गलपरिवर्ताः अतीताः सन्ति, गौतमः पृच्छति-' केवइया पुरेक्खडा ?' हे भदन्त ! एकैकस्य नैरयिकस्य कियन्तो वैक्रियपुद्गलपरिवर्ताः पुरस्कृताः भविष्यन्त ? भाविनः सन्ति भगवानाह-" एकोत्तरिया जाव अणंता " हे गौतम। एकैकस्य नैरयिकस्य एकोत्तरकाः एकप्रभृतयो यावत्-द्वौ वा, त्रयो वा जघन्येन, उत्कृष्टेन तु संख्येया वा, असंख्येया वा, अनन्ता वा वैक्रियपुद्गलपरिवर्ताः कस्यापि भाविनः सन्ति,

वैमानिक देवों तक के जीवों का-चौवीस दन्डक प्रतिपाद्य जीवों का अभिलापक्रम समान ही है।

अब गौतमस्वमी प्रभु से ऐसा पूछते हैं " एगमेगस्स णं भंते! नेरइयस्स केवइया वेउव्वियपोग्गलपरियट्टा अईया " हे भदन्त! एक एक नैरयिक के वैक्रिय पुगद्ल परिवर्त कितने हो चुके हैं? इसके उत्तर में प्रभु ने कहा कि हे गौतम! 'अणंता' एक एक नैरयिक को वैक्रियपुद्गलपरिवर्त अनन्त हो चुके हैं। अब गौतम प्रभु से ऐसा पूछते हैं-'केवइया' पुरेक्खडा' हे भदन्त! एक एक नैरयिक को कितने वैक्रिय पुगद्लपरिवर्त आगे होना है? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-'एकोत्तरिया जाव अणंता' हे गौतम! एक एक नैरयिक को एक से लेकर यावत्-दो अथवा तीन तक वैक्रिय पुगद्ल परिवर्त जघन्यरूप से होना है, तथा उत्कृष्ट रूप से किसी एक को संख्यात, असंख्यात.—

નારકથી લઈને વૈમાનિક દેવો પર્યન્તના સમસ્ત જીવોનો-૨૪ દંડકના જીવોનો-અભિલાપક્રમ એક સરખો જ છે.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-" एगमेगस्स णं भंते! नेरइयस्स केवइया वेउव्विय पोग्गलपरियट्टा अईया ?" હે ભગવન્! પ્રત્યેક નારકના કેટલા વૈક્રિયપુદ્ગલ-પરિર્ત થઇ ચુકયા છે?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-" अणंता " હે ગૌતમ! નારક અનંત વૈક્રિય પુદ્ગલપરિવર્ત કરી ચુકયો છે

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-" केवइया पुरेक्खडा ?" હે ભગવન્! પ્રત્યેક નારક ભવિષ્યમા કેટલા વૈક્રિયપુદ્ગલપરિવર્ત કરશે?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-" एकोत्तरिया जाव अणंता " હે ગૌતમ! પ્રત્યેક નારક ઓછામાં ઓછા એક બે અથવા ત્રણ વૈક્રિયપુદ્ગલપરિવર્ત કરશે અને કોઈ નારક વધારેમાં વધારે સંખ્યાત, અસંખ્યાત અથવા અનંત

कस्यतु न सन्त्येवेतिभावः। 'एवं जाव थणियकुमारत्ते' एवं-पूर्वोक्तरीत्या, यावत्-एकैकस्य नैरयिकत्वे असुरकुमारत्वादि स्तनितकुमारत्वान्ते अनन्ता वैक्रिय-पुद्गलपरिवर्ताः अतीताः, अनागतास्तु वैक्रियपुद्गलपरिवर्ताः कस्यापि जघन्येन एको वा, द्वौ वा, त्रयो वा उत्कृष्टेन तु संख्येया वा असंख्येया वा, अनन्ता वा सन्ति, कस्य तु न सन्त्येव। 'पुढविकाइयत्ते पुच्छा' पृथिवीकायिकत्वे गौतमस्य प्रश्नः। हे भदन्त! एकैकस्य नैरयिकस्य पृथिवीकायिकत्वे अतीतानागतकाल सम्बन्धिनि कियन्तो वैक्रियपुद्गलपरिवर्ताः अतीताः? इति पृच्छा. 'नत्थि एक्कोऽवि' हे गौतम! एकैकस्य नैरयिकस्य पृथिवीकायिकत्वे एकोऽपि वैक्रियपुद्गलपरिवर्तो

अथवा अनंत वैक्रिय पुद्गल परिवर्त होना है. तथा किसी नैरयिक को ये नहीं भी होता है—'एवंजाव थणियकुमारत्ते' इसी पूर्वोक्तरीति के अनुसार एक एक नैरयिक अवस्था में तथा इसकी अतीतकाल एवं अनागत काल संबंधी असुरकुमार अवस्था से लेकर स्तनितकुमार अवस्था तक में, अनंत अनंत वैक्रियपुद्गलपरिवर्त हो चुके हैं। तथा भविष्यत् काल भावी जो वैक्रियपुद्गलपरावर्त हैं वे किसी को होते भी हैं और किसी को नहीं भी होते हैं जिसको ये होते हैं उसको जघन्य से एक अथवा दो तीन तक होते हैं। 'पुढविकाइयत्ते पुच्छा' हे भदन्त! एक एक नैरयिक को अतीत काल संबंधी एवं पृथवीकायिक अवस्था में कितने वैक्रियपुद्गलपरिवर्त हो चुके हैं? 'नत्थि एक्कोवि' इस प्रश्न के उपर में प्रभु कहते हैं—हे गौतम! एक एक नैरयिक को पृथवी कायिक अवस्था में एक भी वैक्रियपुगदलपरिवर्त

વૈક્રિયપુદ્ગલપરિવર્ત કરશે અને કોઇ નારક એક પણ વૈક્રિયપુદ્ગલપરિવર્ત નહીં કરે. "एवं जाव थणियकुमारत्ते" એજ પ્રમાણે પ્રત્યેક નારકને નારકાવસ્થામાં તથા ભૂત અને ભવિષ્યકાળ સંબંધી અસુરકુમારથી લઈને સ્તનિતકુમાર પર્યન્તની અવસ્થામાં અનંત વૈક્રિયપુદ્ગલપરિવર્ત થઇ ચુકયા છે, તથા ભવિષ્યકાલિક વૈક્રિયપુદ્ગલપરિવર્તનો કોઇમાં સદ્ભાવ હોય છે અને કોઈમાં સદ્ભાવ હોતો નથી જે જીવમાં તેનો સદ્ભાવ હોય છે તે જીવમાં ઓછામાં ઓછા એક, બે અથવા ત્રણનો અને વધારેમાં વધારે સંખ્યાત, અસંખ્યાત અથવા અનંતનો સદ્ભાવ હોય છે

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-"पुढविकाइयत्ते पुच्छा" હે ભગવન્! પ્રત્યેક નારક પોતપોતાની ભૂત અને ભવિષ્યકાળ સંબંધી પૃથ્વીકાયિક અવસ્થામાં કેટલા વૈક્રિયપુદ્ગલપરિવર્ત કરી ચુકયો છે?

ઉત્તર-"नत्थि एक्को वि" હે ગૌતમ! પ્રત્યેક નારકે પૃથ્વીકાયિક અવ-

नो अतीतोऽस्ति, पृथिवीकायिकत्वे वर्तमानस्य वैक्रियपुद्गलग्रहणस्यैवाभावेन तत्र तत्परिवर्तासंभवात्, गौतमः पृच्छति-'केवइया पुरेक्खडा' हे भदन्त! एकैकस्य नैरयिकस्य पृथिवीकायिकत्वे कियन्तो वैक्रियपुद्गलपरिवर्ताः पुरस्कृताः भविष्यन्तः सन्ति? भगवानाह-'नत्थि एक्को वि' हे गौतम! एकैकस्य नैरयिकस्य पृथिवीकायिकत्वे अनागतकालसम्बन्धिनि, एकोऽपि वैक्रिय-पुद्गलापरिवर्तो भावी नास्ति, तत्र वैक्रियपुद्गलग्रहणाभावात्, 'एवं जत्थ वेउव्वियसरीरं अत्थि, तत्थ एगुत्तरिओ' एवं-पूर्वोक्तरीत्या यत्र भवे वैक्रियशरीरमस्ति तत्र भवे एकोत्तरको वक्तव्यस्तथा च वायुकायिकत्वे मनुष्यपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिषु वानव्यन्तरादिषु च वैक्रियशरीरस्य सद्भावेन तत्र

नहीं हुआ है, क्योंकि पृथवीकायिक अवस्था में वर्तमान जीव को वैक्रिय पुगद्लों को ग्रहण करने का ही अभाव रहता है अतः इसके अभाव से वहां उसके परिवर्त की असंभवता है। अब गौतम प्रभु-से ऐसा पूछते हैं-'केवइया पुरेक्खडा' हे भदन्त! एक एक नैरयिक को पृथवीकायिक अवस्था में कितने वैक्रियपुगद्लोंपरिवर्त होनहार हैं? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं कि हे गौतम! 'नत्थि एक्को वि' एक एक नरयिक को अनागत काल-संबंधी पृथवीकायिक अवस्था में एक भी वैक्रियपुगद्लपरावर्त होनहार नहीं है क्यों कि उस अवस्थामें वैक्रियपुगद्लों को ग्रहण करने का अभाव रहता है 'एवं जत्थ वेउव्वियसरीरं अत्थि तत्थ एगुत्तरिओ' जहां पर-जिस भव में वैक्रियशरीर है वहां पर-उस भव में जैसे वायुकायिक अवस्था में, मनुष्य अवस्था में, पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिक अवस्था में, वानव्यन्तरादिकों में, वैक्रियशरीर का सद्भाव होता है-

---

સ્થામાં એક પણ વૈક્રિયપુદ્ગલપરિવર્ત કરેલ નથી, કારણ કે પૃથ્વીકાયિક અવસ્થામાં રહેલો જીવ વૈક્રિયપુદ્ગલપરિવર્ત પણ સંભવી શકતો નથી

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-" केवइया पुरेक्खडा ? " હે ભગવન્! પ્રત્યેક નારક પોતાની ભવિષ્યકાલીન પૃથ્વીકાયિક અવસ્થામા કેટલા વૈક્રિયપુદ્ગલપરિવર્ત કરશે?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-" नत्थि एक्को वि " હે ગૌતમ! પ્રત્યેક નારકની આગામીકાળની પૃથ્વીકાયિક અવસ્થામાં એક પણ વક્રિયપુદ્ગલપરિવર્તનો સદ્ભાવ નહીં હોય, કારણ કે તે અવસ્થામાં વૈક્રિય પુદ્ગલોને ગ્રહણ કરવાનો જ અભાવ હોય છે "एवं जत्थ वेउव्वियसरीरं अत्थि तत्थ एगुत्तरिओ" જે ભવમાં વૈક્રિયશરીરનો સદ્ભાવ હોય છે તે ભવમાં (વાયુકાયિક, પંચેન્દ્રિય તિર્યંગ્યોનિક, મનુષ્ય, વાનવ્યંતર આદિકોમાં વૈક્રિયશરીરનો સદ્ભાવ હોય છે)

तत्र जघन्येन एको वा, द्वौ वा, त्रयो वा, उत्कृष्टेन संख्येया वा, असंख्येया वा, अनन्ता वा वैक्रियपुद्गलपरिवर्ताः अतीताः अनादिगता वा सन्ति, किन्तु, 'जत्थ नत्थि तत्थ जहा पुढविकाइयत्ते तहा भाणियव्वं जाव वेमाणियस्स वेमाणियत्ते' यत्र अप्कायिकादौ नास्ति वैक्रियशरीरम्, तत्र यथा पृथिवीकायिकत्वे उक्तं, तथा वाच्यम्--न तत्र वैक्रियपुद्गलपरिवर्ताः अतीताः अनागता वा सन्ति इति भावः, एवं यावत्--असुरकुमारादि भवनपतेः पृथिवीकायिकादि विकलेन्द्रियस्य मनुष्यपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकस्य, वानव्यन्तरस्य, ज्योतिषिकस्य वैमानिकस्य च अप्कायिकत्वादौ विकलेन्द्रियत्वे मनुष्यत्वे पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकत्वे भवनपतित्वे

इससे वहां अतीतकाल सम्बन्धी अनन्त हो चुके हैं और अनागत-कालसम्बन्धी कोई करेगा कोई नहीं करेगा। यदि करेगा तो जघन्य से एक, अथवा दो, अथवा तीन तथा उत्कृष्ट से वे वहां संख्यात या असंख्यात, या अनन्त तक भी होंगे किन्तु 'जत्थ नत्थि तत्थ जहा पुढविकाइयत्ते तहा भाणियव्वं, जाव वेमाणियस्स वेमाणियत्ते' अप्कायादिभव में वैक्रियशरीर नहीं होता है, तब वहां जैसा पृथिवीकायिक भव में कहा गया है वैसा कहना चाहिये-तात्पर्य कहने का यही है कि यहां पर न भूतकालिक वैक्रिय पुद्गलपरिवर्त हैं और न भावी वैक्रियपुद्गलपरिवर्त हैं। इसी प्रकार से यावत्-असुरकुमारादि भवनपति को, पृथिवीकायिकादि को, विकलेन्द्रिय को, मनुष्य को पंचेन्द्रियतिर्यञ्च को, वानव्यन्तर को, ज्योतिष्क को और वैमानिक को, अप्कायादि भव में विकलेन्द्रियभव में, मनुष्यभव में, पंचेन्द्रियतिर्यञ्चभव में, भवनपति-

---

ભૂતકાલીન એક, બે અથવા ત્રણ ઓછામા ઓછા વૈક્રિયપુદ્ગલપરિવર્ત સંભવી શકે છે અને વધારેમાં વધારે સંખ્યાત, અસંખ્યાત અથવા અનંત વૈક્રિયપુદ્ગલપરિવર્ત વ્યતીત થઇ ચુકયા છે. "जत्थ नत्थि तत्थ जहा पुढविकाइयत्ते तहा भाणियव्वं, जाव वेमाणियस्स वेमाणियत्ते" અપ્કાયિક ભવમાં વૈક્રિય શરીરનો સદ્ભાવ હોતો નથી, ત્યાં પૃથ્વીકાયિકોના જેવું જ વૈક્રિયપુદ્ગલ-પરિવર્તનું કથન કરવું જોઈએ આ કથનનો ભાવાર્થ એ છે કે અપ્કાયિકાવસ્થામાં ભૂતકાલિક વૈક્રિય પુદ્ગલપરિવર્તનો પણ અભાવ સમજવાનો છે અને ભવિ-ષ્યકાલિક વૈક્રિય પુદ્ગલપરિવર્તનો પણ અભાવ સમજવાનો છે. એજ પ્રમાણે અસુરકુમારાદિ ભવનપતિના, પૃથ્વીકાયિકાદિના, વિકલેન્દ્રિયના, મનુષ્યના, પંચેન્દ્રિયતિર્યંચના, વાનવ્યંતરના, જ્યોતિષિકના અને વૈમાનિકના અપ્કાય આદિ ભવમાં, વિકલેન્દ્રિયભવમાં, મનુષ્યભવમાં, પંચેન્દ્રિયતિર્યંચભવમાં,

वानव्यन्तरत्वे ज्योतिष्कत्वे वैमानिकत्वे च वैक्रियपुद्गलपरिवर्ताः यथायोग्यम् अतीताः, अनागता वा स्वयमूहनीयाः। 'तेया पोग्गलपरियट्टा, कम्मापोग्गलपरियट्टा, य सव्वत्थ एकोत्तरिया भाणियव्वा' तैजसपुद्गलपरिवर्ताः, कार्मणपुद्गलपरिवर्ताश्च सर्वत्र नारकादि चतुर्विंशतिदण्डकप्रतिपाद्येषु एकोत्तरकाः, जघन्येन एको वा, द्वौ वा, त्रयो वा, उत्कृष्टेन संख्येया वा, असंख्येया वा, अनन्ता वा अनागताः भणितव्या वक्तव्याः, तैजसकार्मणयोः सर्वेषु सद्भावात् 'मणपोग्गलपरियट्टा सव्वेसु पंचिंदिएसु एगोत्तरिया' मनःपुद्गलपरिवर्ताः सर्वेषु पञ्चेन्द्रियेषु मनुष्यादिषु एव सन्ति भविष्यन्तस्ते एकोत्तरका जघन्येन एको वा, द्वौ वा, त्रयो वा, उत्कृष्टेन संख्याता वा, असंख्याता वा, अनन्ता वा सन्ति। 'विगलिं-

---

भव में, वानव्यन्तरभव में, ज्योतिष्कभव में और वैमानिकभव में, यथायोग्यरूप से-अतीत, अनागत वैक्रियपुद्गलपरिवर्त अपने आप समझ लेना चाहिये 'तेया पोग्गलपरियट्टा, कम्मापोग्गलपरियट्टा य सव्वत्थ एकोत्तरिया भाणियव्वा' तैजसपुद्गलपरिवर्त और कार्मण-पुद्गलपरिवर्त, ये दो पुद्गलपरिवर्तनरकादि चौवीसदण्डकप्रतिपाद्य सब जीवों में जघन्य से एक अथवा दो अथवा तीन तक तथा उत्कृष्ट से संख्यात, अथवा असंख्यात, या अनंत तक अनागतकाल में होनहार हैं। क्यों कि तैजस और कार्मण ये सब जीवों में पाये जाते हैं। 'मण-पोग्गलपरियट्टा सव्वेसु पंचिंदिएसु एगोत्तरिया' मनःपुद्गलपरिवर्त समस्तपंचेन्द्रिय मनुष्यादिकों में ही होते हैं, इसलिये ये भविष्य में जघन्य से एक, अथवा दो, या तीन तक होनहार हैं और उत्कृष्ट से संख्यात,

---

ભવનપતિભવમાં, વાનવ્યંતરભવમાં, જ્યોતિષ્કભવમાં અને વૈમાનિકભવમાં યથાયોગ્ય રૂપે ભૂત અને ભવિષ્યકાળ સંબંધી વૈક્રિય પુદ્ગલપરિવર્ત વાચકે પોતાની જાતે જ સમજી લેવો જોઈએ.

"तेया पोग्गलपरियट्टा, कम्मापोग्गलपरियट्टा य सव्वत्थ एकोत्तरिया भाणियव्वा" નારકાદિ ૨૪ દંડકોના સમસ્ત જીવોમાં તૈજસપુદ્ગલપરિવર્ત અને કાર્મણપુદ્ગલપરિવર્ત જઘન્ય એક, બે અથવા ત્રણ સુધી અને અધિકમાં અધિક સંખ્યાત, અસંખ્યાત અથવા અનંત સુધી સંભવી શકે છે, કારણ કે તૈજસ અને કાર્મણ પુદ્ગલોનો સમસ્ત જીવોમાં સદ્ભાવ હોય છે. "मणपोग्गलपरियट्टा सव्वेसु पंचिंदिएसु एगोत्तरिया" મનુષ્ય આદિ સમસ્ત પંચેન્દ્રિય જીવોમાં જ મનઃપુદ્ગલપરિવર્તનો સદ્ભાવ હોય છે. તે જીવોમાં ઓછામાં ઓછા એક, બે અથવા ત્રણ અને વધારેમાં વધારે સંખ્યાત, અસંખ્યાત અથવા અનંત મનઃપુદ્ગલપરિવર્ત સંભવી શકે છે.

दिएसु नत्थि' विकलेन्द्रियेषु पृथिवीकायिकादिषु च एकेन्द्रियादि चतुरिन्द्रिय पर्यन्तेषु असंज्ञिपञ्चेन्द्रियेषु मनःपुद्गलपरिवर्ताः न सन्ति, एकेन्द्रियाणामपि जीवानाम् इन्द्रियादपूर्णत्वात् मनोवृत्तेरभावाच्च तेष्वपि मनःपुद्गलपरावर्ताः न सन्ति, 'वइपोग्गलपरियट्टा एवं चेव' वचः पुद्गलपरिवर्ताः एवमेव-पूर्वोक्ततैजसादिपुद्गलपरिवर्तवत् सर्वेषु नैरयिकादिजीवेषु वक्तव्याः किन्तु-'नवरं एगिंदिएसु नत्थि भणितव्वा' नवरं-विशेषस्तत्र एकेन्द्रियेषु नवचोयोगाभावात् वचःपुद्गलपरिवर्ता न सन्तीति भणितव्यम् इति भावः। 'आणापाणुपोग्गलपरियट्टा सव्वत्थ एक्कोत्तरिया जाव वेमाणियस्स वेमाणियत्ते' आनप्राणपुद्गलपरिवर्ताः सर्वत्र नैरयिकादिचतुर्विंशतिदण्डकपदप्रतिपाद्येषु जीवेषु एकोत्तरकाः-जघन्येन एको वा,

---

असंख्यात या अनंत तक होनहार हैं। 'विगलिंदिएसु नत्थि' पृथिवीकायिकादिक एकेन्द्रियों में, तथा द्विइन्द्रिय, तेइन्द्रिय और चौइन्द्रिय इन विकलेन्द्रिय जीवों में, एवं असंज्ञि पञ्चेन्द्रियजीवों में मनःपुद्गलपरिवर्त नहीं है। एकेन्द्रिय जीवों में भी इन्द्रियोंकी अपूर्णता होने से एवं मनोवृत्ति का अभाव होने से इन में भी मनःपुद्गलपरिवर्त नहीं है। 'वइपोग्गलपरियट्टा एवं चेव' वचःपुद्गलपरिवर्त पूर्वोक्त तैजसादि पुद्गलपरिवर्त की तरह समस्त नैरयिकादि जीवों में कहना चाहिये, किन्तु 'नवरं एगिंदिएसु नत्थि भाणियव्वा' एकेन्द्रिय जीवों में वचोयोग के अभाव से वचःपुद्गलपरिवर्त नहीं है ऐसा कहना चाहिये. 'आणापाणुपोग्गलपरियट्टा सव्वत्थ एक्कोत्तरिया जाव वेमाणियस्स वेमाणियत्ते' आनप्राणपुद्गलपरिवर्त नैरयिकादि चतुर्विंशति दण्डक-

---

"विगलिंदिएसु नत्थि" પૃથ્વીકાયિક આદિ એકેન્દ્રિય જીવોમાં તથા દ્વીન્દ્રિય, ત્રીન્દ્રિય અને ચતુરિન્દ્રિયરૂપ વિકલેન્દ્રિય જીવોમાં અને અસંજ્ઞી પંચેન્દ્રિય જીવોમાં મનઃપુદ્ગલપરિવર્તનો અભાવ હોય છે. એકેન્દ્રિય જીવોમાં પણ ઇન્દ્રિયોની અસંપૂર્ણતા અને મનોવૃત્તિનો અભાવ હોવાથી મનઃપુદ્ગલ પરિવર્તનો સદ્ભાવ હોતો નથી.

"वइ पोग्गलपरियट्टा एवं चेव" સમસ્ત નારકાદિ જીવોમાં તૈજસ પુદ્ગલપરિવર્તની જેમ વચઃપુદ્ગલપરિવર્તનો પણ સદ્ભાવ સમજવો જોઇએ. પરન્તુ "नवरं एगिंदिएसु नत्थि भाणियव्वा" એકેન્દ્રિય જીવોમાં વાગ્યોગનો અભાવ હોય છે, તે કારણે તે જીવોમાં વચઃપુદ્ગલપરિવર્તનો પણ અભાવ જ કહેવો જોઇએ. "आणापाणुपोग्गलपरियट्टा सव्वत्थ एक्कोत्तरिया जाव वेमाणियस्स वेमाणियत्ते" નારકાદિ ચોવીશ દંડકના જીવોમાં આનપ્રાણ પુદ્ગલપ-

द्वौ वा, त्रयो वा, उत्कृष्टेन संख्येया वा, असंख्येया वा, अनन्ता वा भविष्यन्तः सन्ति, यावत्-एकैकस्य नैरयिकस्य असुरकुमारादि भवनपतेः पृथिवीकायिकादि विकलेन्द्रियस्य मनुष्यपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकस्य वानव्यन्तरस्य ज्योतिष्कस्य वैमानिकस्य च नैरयिकत्वे भवनपतित्वे, विकलेन्द्रियत्वे मनुष्यत्वे पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकत्वे वानव्यन्तरत्वे ज्योतिष्कत्वे वैमानिकत्वे च स्वस्मिन्ने अनागतकालसम्बन्धिनि, आनप्राणपुद्गलपरिवर्ताः भविष्यन्तः सन्ति इति पूर्वेणान्वयः, अनन्ताश्च अतीताः सन्तीति भावः। अथ बहुवचनमाश्रित्य गौतमः पृच्छति-'नेरइयाणं भंते। नेरइयत्ते केवइया ओरालियपोग्गलपरियट्टा अईया?' हे भदन्त! नैरयिकाणां नैरयिकत्वे वर्तमानानां कियन्तः औदारिकपुद्गलपरिवर्ताः अतीताः

प्रतिपाद्य समस्त जीवों में भविष्यमें जघन्य से एक, अथवा दो या तीन तक होनहार हैं, और उत्कृष्ट से संख्यात, असंख्यात या अनन्ततक होनहार हैं। यावत्-एक एक नैरयिकको, असुरकुमारादि भवनपति को, पृथिवीकायिक से लेकर विकलेन्द्रिय के, मनुष्य को, पञ्चेन्द्रियतिर्यञ्च को, वानव्यन्तर को, ज्योतिष्क को, और वैमानिक को क्रमशः अनागत कालसबन्धी नैरयिक भव में, भवनपति भव में, विकलेन्द्रियभव में, मनुष्यभव में, पञ्चेन्द्रियतिर्यञ्चभव में, वानव्यन्तरभव में, ज्योतिष्कभव में, और वैमानिकभव में आनप्राणपुद्गलपरिवर्त होनहार हैं, तथा भूतकालिक आनप्राणपुद्गलपरिवर्त अनन्त हैं।

अब बहुवचन को आश्रित करके गौतम स्वामी प्रभु से ऐसा पूछते हैं-'नेरइयाणं भंते! नेरइयत्ते केवइया ओरालियपोग्गलपरियट्टा अईया'

રિવર્ત ઓછામાં આછો એક, બે અથવા ત્રણ સુધી અને વધારેમાં વધારે સંખ્યાત, અસંખ્યાત અથવા અનંત સુધી સંભવી શકે છે પ્રત્યેક નારકના, અસુરકુમારાદિ ભવનપતિના, પૃથ્વીકાયિકથી લઈને ચતુરિન્દ્રિયના, મનુષ્યના, પંચેન્દ્રિયતિર્યંચના; વાનવ્યંતરના, જ્યોતિષ્કના અને વૈમાનિકના અનુક્રમે પોતપોતા કરતાં ભિન્ન એવાં ભવિષ્યકાળસંબંધી નારકભવમાં, ભવનપતિ. ભવમાં, વિકલેન્દ્રિયભવમાં, મનુષ્યભવમાં, પંચેન્દ્રિયતિર્યંચભવમાં, વાનવ્યંતરભવમાં, જ્યોતિષ્કભવમાં અને વૈમાનિકભવમાં આનપ્રાણ પુદ્ગલપરિવર્ત થવાના છે, તથા ભૂતકાલિક આનપ્રાણ પુદ્ગરપરિવર્ત અનંત છે.

હવે અનેક જીવોની અપેક્ષા એ પુદ્ગલપરિવર્તનું નિરૂપણ કરવામાં આવે છે-

ગૌતમ સ્વામીના પ્રશ્ન-"नेरइयाणं भंते! नेरइयत्ते केवइया ओरालिय पोग्गलपरियट्टा अईया?" હે ભગવન્! નારકના ભવમાં રહેલા નારકોના ભૂતકાળ સંબંધી ઔદારિક પુદ્ગલપરિવર્ત કેટલા વ્યતીત થઈ ચુકયા હોય છે?

सन्ति ? भगवानाह-'नत्थि एक्को वि' हे गौतम ! नैरयिकत्वे वर्तमानानां नैरयिकाणाम् एकोऽपि औदारिकपुद्गलपरिवर्तो नास्ति, नैरयिकत्वे औदारिकपुद्गलग्रहणाभावात् । गौतमः पृच्छति-'केवइया पुरेक्खडा ?' हे भदन्त ! नैरयिकत्वे वर्तमानानां नैरयिकाणां कियन्तः औदारिकपुद्गलपरिवर्ताः पुरस्कृताः भविष्यन्तः सन्ति ? भगवानाह-'नत्थि एक्को वि' हे गौतम ! नैरयिकत्वे वर्तमानानां नैरयिकाणाम् औदारिकपुद्गलग्रहणाभावेन एकोऽपि औदारिकपुद्गलपरावर्तो भावी नास्ति, 'एवं जाव थणियकुमारत्ते' एवं-पूर्वोक्तनैरयिकवत् यावत्-असुरकुमारत्वे, इत्यारभ्यस्तनितकुमारत्वे इति पर्यन्तम् अतीतानागतकालसम्बन्धिनि नैरयिकाणाम् औदारिकपुद्गलग्रहणाभावेन तत्परिवर्तस्यापि असंभवेन एकोऽपि औदा-

---

हे भदन्त ! नैरयिकभव में वर्तमान नैरयिकों के अतीत औदारिकपुद्गलपरिवर्त कितने हैं? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-'नत्थि एक्को वि' हे गौतम ! नैरयिकों के एक भी औदारिक पुद्गलपरिवर्त नहीं होता है क्यों कि नैरयिकभव में औदारिक पुद्गलों के ग्रहण होनेका अभाव रहता है-अब गौतम प्रभु से ऐसा पूछते हैं-' केवइया पुरेक्खडा ' हे भदन्त ! नैरयिकभव में वर्तमान नैरयिकों के भाविकाल भावी कितने औदारिकपरिवर्त हैं? उत्तर में प्रभु कहते हैं-'नत्थि एक्को वि' हे गौतम ! नैरयिकभव में नारकों को औदारिकपुद्गलों के ग्रहण के अभाव से भाविकाल संबंधी एक भी औदारिकपुद्गलपरिवर्त नहीं है । 'एवं जाव थणियकुमारत्ते' पूर्वोक्त नैरयिक भवकी तरह यावत् अतीतकाल एवं अनागतकाल संबंधी असुरकुमारभव से लेकर स्तनितकुमार तकके भवमें

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-" नत्थि एक्को वि " હે ગૌતમ ! નારકભવમાં વર્તમાન એવાં નારક જીવોમાં ઔદારિક પુદ્ગલપરિવર્તનો સદ્ભાવ જ હોતો નથી, કારણ કે નારકભવમાં ઔદારિક પુદ્ગલોના ગ્રહણનો જ અભાવ રહે છે.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-" केवइया पुरेक्खडा? " હે ભગવન્ ! નારકભવમાં વર્તમાન નારક જીવોમાં કેટલા ભવિષ્યકાલિક ઔદારિક પુદ્ગલપરિવર્તનો સદ્ભાવ હોય છે

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-" नत्थि एक्को वि " હે ગૌતમ ! નારક જીવોમાં ઔદારિક પુદ્ગલોને ગ્રહણ કરવાનો જ અભાવ હોય છે તેથી તેમનામાં ભવિષ્યકાલીન એક પણ ઔદારિક પુદ્ગલપરિવર્તનો અભાવ હોય છે. " एवं जाव थणियकुमारत्ते " પૂર્વોક્ત નારક ભવની જેમ અતીતકાળ અને અનાગતકાળ સંબંધી અસુરકુમાર ભવથી લઈને સ્તનિતકુમાર પર્યન્તના

रिकपुद्गलपरिवर्तोऽतीतो नास्ति, अनागतो वा तत्परिवर्तो नास्ति एकोऽपि, इति भावः। 'पुढविकाइयत्ते पुच्छा' हे भदन्त! नैरयिकाणां पृथिवीकायिकत्वे अतीतकालसम्बन्धिनि कियन्तः औदारिकपुद्गलपरिवर्ताः अतीताः? इति गौतमस्य पृच्छा-प्रश्नः, भगवानाह-'गोयमा! अणंता' हे गौतम! नैरयिकाणाम् अतीतकालसम्बन्धिनि पृथिवीकायिकत्वे अनन्ताः औदारिकपुद्गलपरिवर्ताः अतीताः सन्ति, गौतमः पृच्छति-'केवइया पुरेक्खडा?' हे भदन्त! नैरयिकाणाम् अनागतकालसम्बन्धिनि पृथिवीकायिकत्वे कियन्तः औदारिकपुद्गलपरिवर्ताः पुरस्कृताः-भविष्यन्तः सन्ति? भगवानाह-'अणंता' हे गौतम! नैरयिकाणाम् अनागतकालसम्बन्धिनि पृथिवीकायिकत्वे अनन्ताः औदारिकपुद्गलपरिवर्ताः

नैरयिकों को औदारिकपुद्गलों के ग्रहण के अभाव में उसको परिवर्तका भी अभाव है, इस कारण एक भी औदारिकपरिवर्त अतीत नहीं है, इसी प्रकार यहां अनागत भी एक भी औदारिकपुद्गलपरिवर्त नहीं है। 'पुढविकाइयत्ते पुच्छा' हे भदन्त! नैरयिकों के अतीतकाल संबंधी पृथिवीकायिकभव में कितने औदारिकपुद्गलपरिवर्त हुए हैं? इस प्रश्न के उत्तर में प्रभु कहते हैं-'गोयमा! अणंता' हे गौतम! नैरयिकों के अतीतकाल संबंधी पृथिवीकायिक भव में अनंत औदारिकपुद्गलपरिवर्त हुए हैं। अब गौतम प्रभु से ऐसा पूछते हैं 'केवइया पुरेक्खडा' हे भदन्त! नैरयिकों को अनागतकाल संबंधी पृथिवीकायिक भव में कितने औदारिकपुद्गलपरिवर्त होंगे? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-'अणंता' हे गौतम! नैरयिकों को अनागतकाल संबंधी पृथिवीकायिक भव में

ભવોમાં પણ નારકોમાં ઔદારિક પુદ્ગલોના ગ્રહણનો અભાવ હોય છે. તે કારણે ભૂતકાળ સંબંધી એક પણ ઔદારિક પુદ્ગલપરિવર્તનો સદ્ભાવ હોતો નથી અને ભવિષ્યકાળ સંબંધી એક પણ ઔદારિક પુદ્ગલપરિવર્તનો સદ્ભાવ હોતો નથી.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-"पुढविकाइयत्ते पुच्छा" હે ભગવન્! નારકોના ભૂતકાલીન પૃથ્વીકાયિક ભવમા કેટલા ઔદારિક પુદ્ગલપરિવર્ત થયા હોય છે?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-"गोयमा! अणंता" હે ગૌતમ! નારકોના ભૂતકાલીન પૃથ્વીકાયિક ભવમાં અનંત ઔદારિક પુદ્ગલપરિવર્ત થયા હોય છે.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-"केवइया पुरेक्खडा?" હે ભગવન્ નારકોના ભવિષ્યકાળ સંબંધી પૃથ્વીકાયિક ભવમાં કેટલા ઔદારિક પુદ્ગલપરિવર્ત થશે?

ઉત્તર-"अणंता" હે ગૌતમ! નારકોના ભવિષ્યકાળ સંબંધી પૃથ્વીકાયિક ભવમાં અનંત ઔદારિકપુદ્ગલપરિવર્ત થશે. "एवं जाव मणुस्सत्ते"

अनागताः सन्ति। 'एवं जाव मणुस्सत्ते' एवं-पूर्वोक्तरीत्या, यावत्-नैरयिकाणाम् अप्कायिकत्वे, तेजःकायिकत्वे, वायुकायिकत्वे वनस्पतिकायिकत्वे विकलेन्द्रियत्वे पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकत्वे मनुष्यत्वे च अतीतानागतकालसम्बन्धिनि अनन्ताः औदारिकपुद्गलपरिवर्ताः अतीताः सन्ति अनन्ताश्च औदारिकपुद्गलपरिवर्ताः अनागताः सन्ति, 'वाणमंतरजोइसियवेमाणियत्ते जहा नेरइयत्ते' नैरयिकाणाम्, अतीतानागतकालसम्बन्धिनि वानव्यन्तरत्वे, ज्योतिषिकत्वे, वैमानिकत्वे च यथा नैरयिकत्वे औदारिकपुद्गलग्रहणाभावेन एकोऽपि औदारिकपुद्गलपरिवर्तोऽतीतो नास्ति, अनागतो वा नास्ति, तथैव अतीतः अनागतो वा एकोऽपि औदारिकपुद्गलपरिवर्तो नास्ति, 'एवं जाव वेमाणियाणं वेमाणियत्ते एवं-पूर्वोक्त बहुवचनविशिष्ट नैरयिकवदेव यावत्-असुर-

---

अनन्त औदारिकपुद्गलपरिवर्त होंगे। 'एवं जाव मणुस्सत्ते' इसी प्रकार से यावत्-नैरयिकों के अतीतकाल एवं अनागतकाल संबंधी अप्कायिक भव में, तेजःकायिक भव में, वायुकायिक भव में, वनस्पतिकायिक भव में, विकलेन्द्रियभव में, पञ्चेन्द्रियतिर्यञ्चके भव में और मनुष्यभव में अतीतकाल संबंधी औदारिकपुद्गलपरिवर्त तो अनन्त हो चुके हैं, और अनागतकालसंबंधी औदारिकपुद्गलपरिवर्त भी अनन्त होंगे। 'वाणमंतरजोइसियवेमाणियत्ते जहा नेरइयत्ते' नैरयिकों को अतीत अनागतकाल संबंधी वानव्यन्तरभव में, ज्योतिष्कभव में और वैमानिक भव में जैसे नैरयिकभव में औदारिक शरीर योग्यपुद्गलों के ग्रहण के अभाव से एक भी औदारिक पुद्गलपरिवर्त नहीं हुआ है, और न भविष्यत् काल में भी वह वहां होगा, उसी प्रकार से अतीतकाल संबंधी और अनागतकाल संबंधी एक भी औदारिकपुद्गलपरिवर्त न हुआ है और न होगा, 'एवं जाव वेमाणियाणं वेमाणियत्ते' पूर्वोक्त

એજ પ્રમાણે નારકોના ભૂતકાળ સંબંધી અપ્કાયિક ભવમાં, તેજસ્કાયિક ભવમાં, વાયુકાયિકભવમાં, વનસ્પતિકાયિકભવમાં, વિકલેન્દ્રિયભવમાં, પંચેન્દ્રિયતિર્યંચભવમાં અને મનુષ્યભવમાં અનંત ઔદારિક પુદ્ગલપરિવર્ત થયા છે. અને ભવિષ્યકાળ સંબંધી એ ભવોમાં અનંત પુદ્ગલપરિવર્ત થશે "वाणमंतरजोइसियवेमाणियत्ते जहा नेरइयत्ते" નારકોના ભૂતકાળ સંબંધી વાનવ્યંતર ભવમાં, જ્યોતિષ્ક ભવમાં અને વૈમાનિક ભવમાં નારક ભવની જેમ એક પણ ઔદારિક પુદ્ગલપરિવર્તનો અભાવ હોય છે એજ પ્રમાણે ભવિષ્યકાળ સંબંધી આ ભવોમાં ઔદારિક પુદ્ગલપરિવર્તોનો પણ અભાવ જ હોય છે, કારણ કે આ ભવોમાં ઔદારિક શરીરને માટે યોગ્ય પુદ્ગલોને ગ્રહણ કરવાનો જ અભાવ હોય છે. "एवं जाव वेमाणियाणं वेमाणियत्ते"

कुमारादि भवनपतीनाम्, पृथिवीकायिकादीनां विकलेन्द्रियाणां पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां मनुष्याणां वानव्यन्तराणां, ज्योतिषिकाणाम्, वैमानिकानां च यथायोग्यं स्वस्वभिन्ने अतीतानागतकालसम्बन्धिनि नैरयिकत्वे, भवनपतित्वे, पृथिवीकायिकादित्वे विकलेन्द्रियत्वे पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकत्वे, मनुष्यत्वे वानव्यन्तरत्वे, ज्योतिषिकत्वे वैमानिकत्वे च अतीताः अनागताश्च औदारिकपुद्गलपरिवर्ताः यथायथं स्वयमूहनीयाः 'एवं सत्त वि पोग्गलपरियट्टा भाणियव्वा' एवं-पूर्वोक्तरीत्या सप्ता पि औदारिक-वैक्रिय-तैजस-कार्मण-मनो-वचः-आनप्राणपुद्गलपरिवर्ताः अतीताः अनागताश्च यथायोग्यं भणितव्याः-वक्तव्याः, तदाह-'जत्थ अत्थि, तत्थ अईया वि पुरेक्खडा वि अणंता भाणियव्वा' यत्र पृथिवीकायिक-

---

बहुवचन विशिष्ट नैरयिकों की तरह ही यावत्-असुरकुमारादि भवनपतियों के, पृथिवीकायिकादिकों के, विकलेन्द्रियों के पञ्चेन्द्रियतिर्यञ्च योनिकों के मनुष्यों के, वानव्यन्तरों के, ज्योतिष्कों के और वैमानिकों के यथायोग्य अतीत अनागतकाल संबंधी नैरयिकभव में, भवनपतिभव में, पृथिवीकायिक आदि भव में, विकलेन्द्रियभव में, पंचेन्द्रियतिर्यग्योनिकभव में, मनुष्यभव में, वानव्यन्तरभव में, ज्योतिषिकभव में और वैमानिकभव में अतीत एवं अनागत औदारिक पुद्गलपरिवर्त जहां जैसे हों-उसके अनुसार अपने आप समझलेना चाहिये 'एवं सत्त वि पोग्गलपरियट्टा भाणियव्वा' इस प्रकार से ये पूर्वोक्त रीति के अनुसार अतीत सातों ही औदारिक-वैक्रिय-तैजस-कार्मण-मनो-वचः एवं आनप्राण पुद्गलपरिवर्त यथायोग्यरूप से कहना चाहिये-' जत्थ अत्थि,

---

પૂર્વોક્ત બહુવચનાન્ત નારકોની જેમ અસુરકુમારાદિ ભવનપતિઓના, પૃથ્વીકાયિકાદિ એકેન્દ્રિયોના, વિકલેન્દ્રિયોના, પંચેન્દ્રિયતિર્યંચોના, મનુષ્યોના, વાનવ્યંતરોના, જ્યોતિષિકોના અને વૈમાનિકોના યથાયોગ્ય પોતપોતાનાથી ભિન્ન એવા અતીત (ભૂત)કાળ સંબંધી અને ભવિષ્ય કાળસંબંધી નૈરયિક ભવમાં ભવનપતિ ભવમાં, પૃથ્વીકાયિક આદિ ભવમાં, વિકલેન્દ્રિય ભવમાં, પંચેન્દ્રિયતિર્યંચ ભવમાં, મનુષ્ય ભવમાં, વાનવ્યંતર ભવમાં, જ્યોતિષિક ભવમાં અને વૈમાનિક ભવમાં, ભૂત અને ભવિષ્યકાલીન ઔદારિક પુદ્ગલપરિવર્ત, જ્યાં જેટલા હોય એટલા જાતે જ સમજી લેવા જોઇએ. " एवं सत्त वि पोग्गलपरियट्टा भाणियव्वा " એજ પ્રમાણે પૂર્વોકિત પદ્ધતિ અનુસાર અતીત અને અનાગતકાળ સંબંધી સાતે પ્રકારના (ઔદારિક, વૈક્રિય, તૈજસ, કાર્મણ, મનઃ, વચઃ અને આનપ્રાણ) પુદ્ગલપરિવર્તોનું યથાયોગ્ય રૂપે કથન થવું

त्वादौ औदारिकादिपुद्गलपरिवर्ताः सन्ति, तत्र अतीता अपि, पुरस्कृताः भविष्यन्तोऽपि अनन्ताः भणितव्याः, किन्तु 'जत्थ नत्थि तत्थ दो वि नत्थि, भाणियव्वा' यत्र नैरयिकत्वादौ न सन्ति औदारिकपुद्गलपरिवर्ता स्तत्र द्वौ अपि-अतीतपुरस्कृतपदवाच्यौ नस्तः इति न अतीता न च भविष्यन्तः औदारिकपुद्गलपरिवर्ताः सन्तीत्यर्थः इति भणितव्यौ, तथा च नैरयिकत्वे भवनपतित्वे वानव्यन्तरत्वे ज्योतिषिकत्वे वैमानिकत्वे च नैरयिकादीनाम् औदारिकपुद्गलग्रहणाभावेन तेषु अतीतः अनागतश्च एकोऽपि औदारिकपुद्गलपरिवर्तो नास्तीति वक्तव्यम् एवमेव वायुकाये मनुष्यपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिषु नैरयिकादिषु च वैक्रियशरीरसद्भावेन वैक्रिय-

---

तत्थ अईया वि, पुरेक्खडा वि अणंता भाणियव्वा' जहां-पृथिवीकायिकत्वादिक में औदारिकादिपुद्गलपरिवर्त हैं वहां पर अतीत भी और अनागत भी वे अनन्त हैं ऐसा कहना चाहिये तथा 'जत्थ नत्थि तत्थ दो वि नत्थि भाणियव्वा' जहां नैरयिकादिभव में ये औदारिकपुद्गलपरिवर्त नहीं हैं वहां पर अतीत भी और अनागत भी दोनों प्रकारके औदारिकादि पुद्गलपरावर्त नहीं हैं ऐसा कहना चाहिये तथा नैरयिकभव में, भवनपति भव में, वानव्यन्तरभव में, ज्योतिषिकभव में और वैमानिकभव में नैरयिक आदि जीव औदारिकशरीर के योग्य-पुद्गलों का ग्रहण नहीं करते हैं-क्योंकि यहां तो वैक्रियशरीर के योग्य ही पुद्गलों का ग्रहण होता है-अतः औदारिकशरीरके योग्यपुद्गलों के ग्रहण के अभाव से यहां अतीत अनागत संबंधी एक भी औदारिक पुद्गलपरिवर्त नहीं होता है। इसी प्रकार से वायुकाय में, मनुष्यों में

જોઈએ. "जत्थ अत्थि, तत्थ अईया वि, पुरेक्खडा वि अणंता भाणियव्वा" જ્યાં ઔદારિક આદિ પુદ્ગલપરિવર્તનો સદ્ભાવ છે, તે પૃથ્વીકાયિક આદિ ભવોમાં ભૂત અને ભવિષ્યકાલીન ઔદારિક આદિ પુદ્ગલપરિવર્ત અનંત કહેવા જોઈએ. "जत्थ नत्थि तत्थ दो वि नत्थि भाणियव्वा" નારકાદિ જે ભવોમાં ઔદારિક પુદ્ગલપરિવર્તનો અભાવ છે, ત્યાં ભૂતકાલીન અને ભવિષ્યકાલીન ઔદારિક પુદ્ગલપરિવર્તનો અભાવ કહેવો જોઈએ. જેમ કે-નારક ભવમાં, ભવનપતિ ભવમાં, વાનવ્યંતર ભવમાં, જ્યોતિષ્ક ભવમાં અને વૈમાનિક ભવમાં નારકાદિ જીવો ઔદારિક શરીરને માટે યોગ્ય હોય એવાં પુદ્ગલોને ગ્રહણ કરતા નથી તેઓ વૈક્રિય શરીરને માટે યોગ્ય હોય એવાં પુદ્ગલોને જ ગ્રહણ કરે છે. તેથી તે જીવોમાં ભૂત અને ભવિષ્યકાળ સંબંધી ઔદારિક પુદ્ગલપરિવર્તનો અભાવ હોય છે. એજ પ્રમાણે વાયુકાયોમાં, મનુષ્યોમાં,

पुद्गलपरिवर्तसंभवात् तेषु द्वावपि-अतीतः अनागतश्च वैक्रियपुद्गलपरिवर्तौ वक्तव्यौ पृथिवीकायिकत्वे अप्कायिकत्वे, तेजःकायिकत्वे वनस्पतिकायिकत्वे विकलेन्द्रियेषु वैक्रियशरीराभावेन तत्पुद्गलग्रहणाभात् तेषु द्वावपि अतीतः अनागतश्च वैक्रियपुद्गलपरिवर्तौ न वक्तव्यौ। तैजसकार्मणपुद्गलानां सर्वेषु सद्भावेन तैजसकार्मणपुद्गलपरिवर्तौ द्वौ अपि अतीतानागतौ सर्वेष्वेव वक्तव्यौ। मनःपुद्गलानां पञ्चेन्द्रियेष्वेव सद्भावेन तेष्वेव अतीताः अनागताश्च मनःपुद्गलपरिवर्ताः वक्तव्याः, वचःपुद्गलानां तु एकेन्द्रियान् विहाय अन्येषु सर्वशरीरेषु सत्त्वेन एकेन्द्रियभिन्नेषु

पञ्चेन्द्रियतिर्यञ्चों में और नैरयिक आदि कों में वैक्रियशरीर के सद्भाव से वैक्रियपुद्गलपरिवर्त होता है-इससे इनमें अतीत अनागतरूप दोनों प्रकार के वैक्रियपुद्गलपरिवर्त वक्तव्य है, पृथिवीकायिक भव में, अप्कायिक भव में, तेजःकायिकभव में, वनस्पतिकायिक भव में और विकलेन्द्रियों में वैक्रियशरीर का अभाव होता है, इससे यहां वैक्रियशरीर योग्य पुद्गलों का ग्रहण नहीं होता है इसलिये इन में अतीत अनागत दोनों प्रकारके वैक्रियपुद्गलपरिवर्त नहीं होते हैं। तैजसपुद्गल और कार्मणपुद्गल सब जीवों में-एकेन्द्रिय से लेकर पंचेन्द्रियतक के सब प्राणियों में रहते हैं-इसलिये अतीत अनागत दोनों प्रकार के तैजसकार्मणपुद्गलपरिवर्त सब जीवों में वक्तव्य हैं। मनःपुद्गल केवल पञ्चेन्द्रियजीवों में ही होते हैं-इस कारण उनमें ही अतीत अनागत मनःपुद्गलपरिवर्त कहना चाहिये अन्यत्र एकेन्द्रियादिकों में नहीं, वचःपुद्गलपरिवर्त एके-

---

પંચેન્દ્રિયતિર્યંચોમાં, અને નારકાદિકોમાં વૈક્રિય શરીરનો સદ્ભાવ હોય છે, તે કારણે વૈક્રિય પુદ્ગલપરિવર્તનો પણ સદ્ભાવ હોય છે તેથી આ બધાં જીવોમાં અતીત અનાગત બન્ને કાળસંબંધી વૈક્રિય પુદ્ગલપરિવર્તનું કથન કરવું જોઇએ પૃથ્વીકાયિક અપ્કાયિક, તૈજસ્કાયિક, વનસ્પતિકાયિક અને વિકલેન્દ્રિય, આ ભવોમાં વૈક્રિય શરીરનો અભાવ હોય છે, તેથી વૈક્રિયશરીર યોગ્ય પુદ્ગલોના ગ્રહણનો પણ ત્યાં અભાવ હોય છે. તેથી તે ભવોમાં અતીત અને અનાગત કાળસંબંધી વૈક્રિય પુદ્ગલપરિવર્તનો અભાવ કહેવો જોઇએ સમસ્ત જીવોમાં તૈજસ અને કાર્મણ પુદ્ગલોનો સદ્ભાવ હોય છે. તેથી એકેન્દ્રિયથી લઇને પંચેન્દ્રિય પર્યન્તના સમસ્ત જીવોમાં અતીત અનાગત કાળસંબંધી તૈજસ અને કાર્મણ પુદ્ગલપરિવર્તનો સદ્ભાવ સમજવો જોઇએ પંચેન્દ્રિય જીવોમાં જ મનઃપુદ્ગલનો સદ્ભાવ હોય છે, તેથી પંચેન્દ્રિયોમાં જ અતીત અને અનાગત કાળસંબંધી મનઃપુદ્ગલપરિવર્તનો સદ્ભાવ સમજવો અને એકેન્દ્રિયાદિકોમાં અભાવ સમજવો. એકેન્દ્રિયો સિવાયના

सर्वेषु जीवेषु वचःपुद्गलपरिवर्ताः अतीताः अनागताश्च वक्तव्याः, इति सूचयन्नाह-'जाव वेमाणियाणं वेमाणियत्ते केवइया आणापाणुपोग्गलपरियट्टा अईया ?' यावत्-पूर्वोक्तानां नैरयिकादीनां वैमानिकानां च वैमानिकत्वे-नैरयिकत्वादिवैमानिकत्व पर्यन्ते कियन्तः आनपाणपुद्गलपरिवर्ताः अतीताः ? 'अणंता' अनन्ताः अतीताः, 'केवइया पुरेक्खडा' कियन्तः पुरस्कृताः भविष्यन्तः सन्ति ? भगवानाह-'अणंता' अनन्ताः आनपाणपुद्गलाः भविष्यन्तः सन्ति ॥सू० २॥

औदारिकपुद्गलपरावर्तानां निवर्त्तनाकालवक्तव्यता।

मूलम्-"से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ-ओरालियपोग्गलपरियट्टे? ओरालियपोग्गलपरियट्टे? गोयमा! जं णं जीवेणं

न्द्रियों को छोड़कर द्वीन्द्रियादिक सब जीवों में पाये जाते हैं, इसलिये अतीत अनागता दोनों प्रकार के वचःपुद्गलपरिवर्त द्वीन्द्रियादिक सब जीवों में कहना चाहिये। इसी बात को सूचित करते हुए सूत्रकार प्रश्नोत्तर के रूप में इस प्रकार से कहते हैं-'जाव वेमाणियाणं वेमाणियत्ते केवइया आणापाणुपोग्गलपरियट्टा अईया' नैरयिक भव से लेकर वैमानिकभव तक के जीवों में अतीत आनप्राणपुद्गलपरिवर्त कितने हैं? तो इसके उत्तर में कहा गया है कि अतीत आनप्राणपुद्गलपरिवर्त नैरयिकभव से लेकर वैमानिक भव तक के सब जीवों में अनन्त हैं, 'केवइया पुरेक्खडा' तथा आगे होनेवाले ऐसे भावि काल संबंधी आनप्राणपुद्गलपरिवर्त कितने हैं ? तो इसके उत्तर में कहा गया है कि 'अणंता' भविष्यत्काल संबंधी आनप्राणपुद्गलपरिवर्त सब जीवों में अनन्त हैं ॥सू० २॥

સમસ્ત જીવોમાં વચઃપુદ્ગલપરિવર્તનો સદ્ભાવ રહે છે તેથી દ્વીન્દ્રિયાદિક સમસ્ત જીવોમાં ભૂત અને ભવિષ્યકાલીન વચઃપુદ્ગલપરિવર્તનું કથન કરવું જોઇએ એજ વાતને સૂચિત કરવા માટે સૂત્રકારે નીચેના પ્રશ્નોત્તરો આપ્યા છે-

"जाव वेमाणियाणं वेमाणियत्ते केवइया आणापाणुपोग्गलपरियट्टा अईया?" નારકોથી લઈને વૈમાનિક પર્યન્તના ભવવાળા જીવો કેટલા આણુપાણુ પુદ્ગલપરિવર્ત કરી ચુકયા છે? ઉત્તર-નારક ભવથી લઈને વૈમાનિક પર્યન્તના ભવવાળા સમસ્ત જીવો અનંત આનપ્રાણુ પુદ્ગલપરિવર્ત કરી ચુકયા છે. "केवइया पुरेक्खडा?" હે ભગવન્! નારકાદિ જીવો ભવિષ્યમાં કેટલા આનપ્રાણુ પુદ્ગલપરિવર્ત કરશે? ઉત્તર-"अणंता" સમસ્ત જીવો ભવિષ્યમાં અનંત આનપ્રાણુ પુદ્ગલ પરિવર્ત કરશે. ॥સૂ૦૨॥

ओरालियसरीरे वट्टमाणेणं ओरालियसरीरप्पाओग्गाइं दव्वाइं ओरालियसरीरत्ताए गहियाइं बद्धाइं पुट्ठाइं कडाइं पट्ठवियाइं, निविट्ठाइं अभिनिविट्ठाइं अभिसमन्नागयाइं परियाइयाइं परिणामियाइं निज्जिन्नाइं, निसिरियाइं निसिट्ठाइं भवंति से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—ओरालियपोग्गलपरियट्टे ओरालियपोग्गलपरियट्टे, एवं वेउव्वियपोग्गलपरियट्टे वि, नवरं वेउव्वियसरीरे वट्टमाणेणं वेउव्वियसरीरप्पाओग्गाइं सेसं तं चेव सव्वं, एवं जाव, आणापाणुपोग्गलपरियट्टे, नवरं आणापाणुप्पाओग्गाइं सव्वं दव्वाइं आणापाणुत्ताए सेसं तं चेव ॥सू० ३॥

छाया—तत्केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते–औदारिकपुद्गलपरिवर्तः औदारिकपुद्गलपरिवर्तः ? गौतम ! यत् खलु जीवेन औदारिकशरीरे वर्तमानेन औदारिकशरीरप्रायोग्याणि द्रव्याणि औदारिकशरीरतया गृहीतानि, बद्धानि, स्पृष्टानि कृतानि, प्रस्थापितानि निविष्टानि, अभिनिविष्टानि, अभिसमन्वागतानि, पर्यादत्तानि, परिणामितानि, निर्जीर्णानि, निःसृतानि, निःसृष्टानि भवन्ति, तत् तेनार्थेन गौतम ! एवमुच्यते–औदारिकपुद्गलपरिवर्तः औदारिकपुद्गलपरिवर्तः। एवं वैक्रियपुद्गलपरिवर्तोऽपि, नवरं वैक्रियशरीरे वर्तमानेन वैक्रियशरीरप्रायोग्यानि, शेषं तदेव सर्वम्, एवं यावत् आनप्राणपुद्गलपरिवर्तः, नवरम् आनप्राणप्रायोग्याणि सर्वद्रव्याणि आनप्राणतया शेषं तदेव ॥सू० ३॥

टीका—अथ पूर्वोक्तानाम् औदारिकादिपुद्गलपरावर्तानामेव स्वरूपं प्ररूपयितुमाह–'से केणट्ठेणं भंते !' इत्यादि, 'से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—ओरा-

औदारिकपुद्गलपरावर्तोंकी निर्वर्तनाकालवक्तव्यता

'से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ' इत्यादि।

टीकार्थ—इस सूत्रद्वारा सूत्रकारने पूर्वोक्त औदारिकपुद्गलपरावर्तोंका ही स्वरूप प्ररूपित किया है–'से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—ओरालिय-

—ઔદારિક પુદ્ગલપરિવર્તોની નિર્વર્તનાકાળવક્તવ્યતા—

"से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ" ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ–સૂત્રકારે આ સૂત્રમાં પૂર્વોક્ત ઔદારિકાદિ પુદ્ગલપરાવર્તોના સ્વરૂપની જ પ્રરૂપણા કરી છે. ગૌતમસ્વામી આ વિષયને અનુલક્ષીને એવો

लियपोग्गलपरियट्टे ओरालियपोग्गलपरियट्टे' गौतमः पृच्छति-हे भदन्त! तत् अथ केनार्थेन कथं तावत्-एवमुच्यते-औदारिकपुद्गलपरिवर्तः, औदारिकपुद्गल परिवर्तः? इति, किम् औदारिकपुद्गलपरिवर्तस्वरूपमितिप्रश्नः, भगवानाह-'गोयमा! जं णं जीवेणं ओरालियसरीरे वट्टमाणेणं ओरालियसरीरप्पाओग्गाइं दव्वाइं' हे गौतम! यत्-यस्मात् कारणात्, खलु जीवेन औदारिकशरीरे वर्तमानेन औदारिक-शरीरप्रायोग्यानि-औदारिकशरीरनिर्माणयोग्यानि पुद्गलद्रव्याणि, 'ओरालिय-सरीरत्ताए गहियाइं, बद्धाइं, पुट्ठाइं, कडाइं, पट्ठवियाइं, निविट्ठाइं, अभिनिविट्ठाइं, अभिसमन्नागयाइं' औदारिकशरीरतया-औदारिकशरीररूपत्वेन गृहीतानि-स्वी-कृतानि, बद्धानि-जीवप्रदेशैरात्मीकरणात् संबद्धानि, अत एव स्पृष्टानि-पूर्वतनौ रेणुवत् स्पर्शविषयीकृतानि, अथवा पुष्टानि-अन्यायग्रहणतः पोषितानि, कृतानि-

---

पोग्गलपरियट्टे, ओरालियपुग्गलपरियट्टे' हे भदन्त! ऐसा किस कारण से कहा जाता है कि यह औदारिकपुद्गलपरिवर्त है, यह औदारिकपुद्गल-परिवर्त है? अर्थात् औदारिक पुद्गलपरिवर्तका क्या स्वरूप है? इस प्रश्न के उत्तर में प्रभु कहते हैं-'गोयमा' हे गौतम! 'जं णं जीवेणं ओरालियसरीरे वट्टमाणेणं ओरालियसरीरप्पाओग्गाइं दव्वाइं' जिस कारण से औदारिकशरीर में वर्तमान इस जीवने औदारिकशरीर के निर्माणयोग्य पुद्गलद्रव्यों को 'ओरालियसरीरत्ताए गहियाइं, बद्धाइं, पुट्ठाइं, कडाइं, पट्ठवियाइं, अभिनिविट्ठाइं, अभिसमन्नागयाइं' औदा-रिकशरीररूप से ग्रहण किया है, स्वीकृत किया है, उन्हें जीवप्रदेशों के साथ बांधा है, शरीर में धूलिकी तरह पहिले उनका स्पर्श किया है, अथवा अन्य अन्य ग्रहणरूप से उन्हें पोषित किया है, कृत-पूर्व परि-

---

પ્રશ્ન પૂછે છે કે-"से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ-ओरालियपोग्गलपरियट्टे, ओरालिय-पोग्गलपरियट्टे" હે ભગવન્! આપ શા કારણે એવું કહો છો કે "આ ઔદારિક પુદ્ગલપરિવર્ત છે આ ઔદારિક પુદ્ગલપરિવર્ત છે?" એટલે કે ઔદારિકપુદ્ગલપરિવર્તનું સ્વરૂપ કેવું છે?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-"जं णं जीवेणं ओरालियसरीरे वट्टमाणेणं ओरा-लियसरीरप्पाओग्गाइं दव्वाइं" જે કારણે ઔદારિક શરીરમાં રહેલા આ જીવે ઔદારિક શરીરના નિર્માણને યોગ્ય પુદ્ગલદ્રવ્યોને "ओरालियसरीरत्ताए गहि-याइं, बद्धाइं, पुट्ठाइं, कडाइं, पट्ठवियाइं, निविट्ठाइं, अभिनिविट्ठाइं, अभिसमन्नाग-याइं" ઔદારિક શરીર રૂપે ગ્રહણ કર્યા છે, તેમને જીવપ્રદેશોની સાથે બાંધ્યાં છે, શરીરમાં ધૂળની જેમ પહેલાં તેમનો સ્પર્શ કર્યો છે, અથવા અન્ય અન્ય ગ્રહણ રૂપે તેમને પોષિત કર્યા છે, કૃત-પૂર્વપરિણામમાંથી અન્ય પરિણામ

पूर्वपरिणामापेक्षया परिणाममन्तरेण विहितानि, प्रस्थापितानि-स्थिरीकृतानि, निविष्टानि-यतः प्रस्थापितानि अतोजीवेन स्वयं निविष्टानि, प्रविष्टानि, अभिनिविष्टानि-अभितः-सामस्त्येन निविष्टानि-समस्तानि जीवे संलग्नानि, अभिसमन्वागतानि-अभिविधिना व्याप्तिन्यायेन सर्वाणि समन्वागतानि जीवेन रसानुभूतिं समाश्रित्य सम्प्राप्तानि, 'परियाइयाइं, परिणामियाइं, निज्जिन्नाइं, निसिरियाइं, निसिट्ठाइं भवंति' पर्याप्तानि-जीवेन सर्वावयवावच्छेदेन तद्रसादानद्वारेण आत्तानि-गृहीतानि परिणामितानि-रसानुभूतिद्वारैव परिणामान्तरं प्रापितानि, निर्जीर्णानि-क्षीणरसीकृतानि, निःसृतानि-जीवप्रदेशेभ्यो निर्गतानि, अतो

णाम की अपेक्षा और दूसरे परिणामरूप से उन्हें किया है-परिणमाया है, प्रस्थापित-उन्हें स्थिर किया है, निविष्ट-स्थिर किया है इसी कारण जीवने उन्हें स्वयं प्रवेश कराया है, अभिनिविष्ट-प्रवेशकराया है इसीलिये वे सम्पूर्णरूप से जीव के साथ संलग्न हो गये हैं, अभिसमन्वागत जीव के साथ या जीव में जब वे सम्पूर्णरूप से संलग्न हो चुके हैं-तब ही जीवने उन्हें रसानुभूति को लेकर प्राप्त किया है-अर्थात्-औदारिकशरीर के प्रायोग्य लगे हुए उन पुद्गलद्रव्यों का रसानुभव किया है, 'परियाइयाइं, परिणामियाइं, निज्जिन्नाइं, निसिरियाइं, निसिट्ठाइं, भवंति' रसानुभव भी ऐसा किया है कि एक भी अवयव उनका ऐसा नहीं बचा जो अपने रसप्रदान के बिना रह गया हो, इस रूप से जीवने उन्हें ग्रहण किया है, परिणामित-रसानुभूतिद्वारा फिर वे परिणामान्तरको प्राप्त करा दिये गये हैं, निर्जीण-क्षीणरसवाले किये गये हैं, निर्गत-जीवप्रदेशों से निकले हुए हैं, इसीलिये जीवने उन्हें अपने

३पे तेमने परिणुमित कर्या छे, तेमने प्रस्थापित (स्थिर) कर्या छे, तेमने निविष्ट कराव्या छे-स्थिर करेल होवाने कारणे जीवे पोते तेमनो प्रवेश कराव्यो छे, अभिनिविष्ट कराव्या छे-प्रवेश करावीने आत्मानी साथे संपूर्णरूपे संलग्न कराव्या छे, अभिसमन्वागत कर्या छे-जीवनी साथे अथवा जीवमां ज्यारे तेओ संपूर्णरूपे संलग्न थई चुकया होय छे त्यारे ज जीवे तेमने रसानुभूतिनी अपेक्षाओ प्राप्त कर्या छे-एटले के औदारिक शरीरने योग्य एवां ते संलग्न पुद्गलद्रव्योनो रसानुभव कर्यो छे, परियाइयाइं, परिणामियाइं निज्जिन्नाइं, निसिरियाइं, निसिट्ठाइं भवंति" रसानुभव पण एवो कर्यो छे के एक पण अवयव रसप्रदान विनानुं रही न जाय ओ रीते जीवे ते पुद्गलोने ग्रहण कर्या छे, तेमने अन्य परिणाम रूपे परिणुमित कराववामां आवेल छे, निर्जीर्ण (क्षीणरसवाळां) करायल छे, निर्गत (जीवप्रदेशोमांथी

निःसृष्टानि-जीवेन प्रदेशेभ्यस्त्याजितानि भवन्ति। अत्र प्रथमचत्वारिविशेषणानि औदारिकपुद्गलानां ग्रहणविषयाणि, तदुत्तराणि पञ्च स्थितिविषयाणि, तदुत्तराणि चत्वारि तु अन्तिमानि परित्यागविषयाणि अवसेयानि। पूर्वोक्तार्थमुपसंहरन्नाह-'से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ-ओरालियपोग्गलपरियट्टे" हे गौतम! तत् तेनार्थेन एवमुच्यते-औदारिकपुद्गलपरिवर्तः औदारिकपुद्गलपरिवर्त इति। 'एवं वेउव्वियपोग्गलपरियट्टे वि' एवं-पूर्वोक्तौदारिकपुद्गलपरिवर्तस्वरूपरीत्या वैक्रिय-पुद्गलपरिवर्तोऽपि अवसेयः, पूर्वापेक्षया विशेषमाह-'नवरं वेउव्वियसरीरे वट्टमाणेणं वेउव्वियसरीरप्पाओग्गाइं, सेसं तं चेव सव्वं' नवरम् औदारिकपुद्गल-परिवर्तापेक्षया विशेषस्तु-वैक्रियशरीरे वर्त्तमानेन जीवेन वैक्रियशरीरप्रायोग्यानि-

---

प्रदेशों से अलग कर दिया है, इनमें पहिले के चार विशेषण तो औदारिक पुद्गलोंको ग्रहण करने के विषय में हैं, उनके बाद के पांचविशेषण स्थिति के विषय में हैं, और अन्तिम चार विशेषण उनके त्याग के विषय में हैं। 'से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ, ओरालियपोग्गलपरि-यट्टे, ओरालियपोग्गलपरियट्टे' इस कारण हे गौतम! ऐसा कहा जाता है कि यह औदारिकपुद्गलपरिवर्त है, यह औदारिकपुद्गलपरिवर्त है। 'एवं वेउव्वियपोग्गलपरियट्टे वि' जिस प्रकार पूर्वोक्तरीति से औदारिक पुद्गलपरिवर्त का स्वरूप कहा गया है, इसी प्रकार से वैक्रियपुद्गलपरि-वर्त का स्वरूप भी जान लेना चाहिये उसके स्वरूप कथन में और इसके स्वरूपकथन में 'नवरं वेउव्वियसरीरे वट्टमाणेणं वेउव्वियसरीर-प्पाओग्गाइं, सेसं तंचेव सव्वं' यदि कोई विशेषता है तो वह ऐसी है

અલગ) કરવામાં આવેલ છે આ સૂત્રમાં પહેલાં ચાર વિશેષણો ઔદારિક પુદ્ગલોને ગ્રહણ કરવા વિષે છે, ત્યાર બાદના પાંચ વિશેષણો સ્થિતિના વિષયમાં છે, અને છેલ્લાં ચાર વિશેષણો તેમના ત્યાગના વિષયમાં છે. "से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ, ओरालियपोग्गलपरियट्टे, ओरालियपोग्गल-परियट्टे" તે કારણે, હે ગૌતમ! એવું કહેવામાં આવે છે કે 'આ ઔદા-રિક પુદ્ગલપરિવર્ત છે.' "एवं वेउव्वियपोग्गलपरियट्टे वि" જે પ્રકારે પૂર્વોક્ત ઔદારિક પુદ્ગલપરિવર્તનું સ્વરૂપ પ્રકટ કરવામાં આવ્યું છે, એજ પ્રકારે વૈક્રિય પુદ્ગલપરિવર્તનું સ્વરૂપ પણ સમજવું જોઇએ. "नवरं वेउव्विय-सरीरे वट्टमाणेणं वेउव्वियसरीरप्पाओग्गाइं सेसं तं चेव सव्व" ઔદારિક પુદ્ગલપરિવર્તના સ્વરૂપના કથન કરતાં વૈક્રિય પુદ્ગલપરિવર્તના સ્વરૂપના કથનમાં એટલી જ વિશેષતા છે કે-વૈક્રિય શરીરમાં રહેલા જીવે વૈક્રિયશ-

वैक्रियशरीरनिर्माणयोग्यानि द्रव्याणि-पुद्गलद्रव्याणि, वैक्रियशरीरतया गृहीतानि, बद्धानि, स्पृष्टानि, कृतानि, प्रस्थापितानि, निविष्टानि, अभिनिविष्टानि, अभिसमन्वागतानि, पर्याप्तानि, परिणामितानि, निर्जीर्णानि, निःसृतानि, निःसृष्टानि भवन्ति, तत् तेनार्थेन एवमुच्यते-वैक्रियपुद्गलपरिवर्तशब्दमतिपाद्यो वैक्रियपुद्गलपरिवर्तः उक्तस्वरूपोऽवसेय इत्याशयेनाह-शेषं तदेव पूर्वोक्तवदेव सर्वं विज्ञेयम्, तथा प्रदर्शितमेवेति, 'एवं जाव आणापाणुपोग्गलपरियट्टे' एवं पूर्वोक्तरीत्या, यावत्-तैजसपुद्गलपरिवर्तः, कार्मणपुद्गलपरिवर्तः, मनःपुद्गलपरिवर्तः, वचःपुद्गलपरिवर्तः, आनप्राणपुद्गलपरिवर्तश्च अवसेयः। विशेषमाह-'नवरं आणापाणुप्पाओग्गाइं

वैक्रियशरीर में वर्तमान जीव ने वैक्रियशरीर के निर्माणयोग्य द्रव्यों को-पुद्गलद्रव्यों को-वैक्रियशरीररूप से ग्रहण किया है, उन्हें बद्ध किया है, स्पृष्ट किया है, विहित किया है, प्रस्थापित किया है, निविष्ट किया है, अभिनिविष्ट किया है, अभिसमन्वागत किया है, परितःगृहीत किया है, परिणामित किया है, निर्जीर्ण किया है, निःसृत किया है, निःसृष्ट किया है, इस कारण वैक्रियपुद्गलपरिवर्त इस शब्दद्वारा प्रतिपाद्य यह वैक्रियपुद्गलपरिवर्त उक्तस्वरूपवाला है ऐसा जानना चाहिये-इसी आशय को लेकर सूत्रकारने 'सेसं तंचेव सव्वं' ऐसा कहा है सो हमने यह बात ऊपर दिखला ही दी है। 'एवं जाव आणापाणुपोग्गलपरियट्टे' इसी प्रकार से यावत्-तैजसपुद्गलपरिवर्त, कार्मणपुद्गलपरिवर्त, मनःपुद्गलपरिवर्त, वचःपुद्गलपरिवर्त, और आनप्राणपुद्गलपरिवर्तका स्वरूप जानना चाहिये, इनके स्वरूप कथन में ऐसा कहना

રીરનું નિર્માણ કરવાયોગ્ય પુદ્ગલ દ્રવ્યોને વૈક્રિય શરીર રૂપે ગ્રહણ કર્યાં છે, બદ્ધ કર્યા છે, સ્પૃષ્ટ કર્યા છે, વિહિત કર્યા છે, પ્રસ્થાપિત કર્યા છે, નિવિષ્ટ કર્યા છે, અભિનિવિષ્ટ કર્યા છે, અભિસમન્વાગત કર્યા છે, પરિતઃગૃહીત કર્યા છે, પરિણામિત કર્યા છે, નિર્જીર્ણ કર્યા છે, નિઃસૃત કર્યા છે, નિઃસૃષ્ટ કર્યા છે. હે ગૌતમ! તે કારણે "वेउव्विय पुद्गलपरिवर्त" આ શબ્દ વડે પ્રતિપાદ્યમાન આ વૈક્રિય પુદ્ગલપરિવર્તનું ઉપર દર્શાવ્યા પ્રમાણેનું સ્વરૂપ સમજવાનું છે. "सेसं तं चेव सव्वं" આ સૂત્રપાઠ દ્વારા સૂચિત થતી વાતનું સ્પષ્ટીકરણ ઉપર કરવામાં આવ્યું છે "एवं जाव आणापाणुपोग्गलपरियट्टे" એજ પ્રમાણે તૈજસપુદ્ગલપરિવર્ત, કાર્મણપુદ્ગલપરિવર્ત, મનઃપુદ્ગલપરિવર્ત, વચઃપુદ્ગલપરિવર્ત અને આનપ્રાણપુદ્ગલપરિવર્તનું સ્વરૂપ પણ સમજવું જોઇએ તેમના સ્વરૂપના કથનમાં એવું કહેવું જોઇએ કે—

सव्वदव्वाइं आणापाणुत्ताए, सेसं तं चेव' नवरम् पूर्वापेक्षया विशेषस्तु-तैजस-कार्मणमनोवच आनप्राणेषु वर्तमानैः जीवैः तैजसकार्मणमनोवचःप्रायोग्यानि द्रव्याणि आनप्राणप्रायोग्यानि तु सर्वद्रव्याणि-सर्वप्रकाराणि द्रव्याणि तैजसकार्मणमनोवच आनप्राणतया गृहीतानि, बद्धानि, स्पृष्टानि, कृतानि, प्रस्थापितानि, निविष्टानि अभिनिविष्टानि अभिसमन्वागतानि, पर्याप्तानि, परिणामितानि, निर्जीर्णानि, निःसृतानि निःसृष्टानि भवन्ति, शेषं तदेव-पूर्वोक्तवदेव सर्वमवसेयम् ॥सू० ३॥

मूलम्-ओरालियपोग्गलपरियट्टे णं भंते! केवइकालस्स निव्वत्तिज्जइ? गोयमा! अणंताहिं उस्सप्पिणीओसप्पिणीहिं एवइकालस्स निव्वतिज्जइ। एवं वेउव्वियपोग्गलपरियट्टे वि, एवं जाव आणापाणुपोग्गलपरियट्टे वि एयस्स णं भंते! ओरालियपोग्गलपरियट्टनिव्वत्तणाकालस्स वेउव्वियपोग्गल जाव आणापाणुपोग्गलपरियट्टनिव्वत्तणाकालस्स य कयरे कयरे हिंतो जाव विसेसाहिया वा? गोयमा! सव्वत्थोवे कम्मगपो-ग्गलपरियट्टनिव्वत्तणाकाले तेयापोग्गलपरियटनिव्वत्तणाकाले

चाहिये-तैजस, कार्मण, मनः, वचन, एवं आनप्राण इनमें वर्तमान जीवने तैजस, कार्मण, मनः, वचन, और आनप्राण के प्रायोग्य समस्त द्रव्योंका सब प्रकारके द्रव्यों को तैजस कार्मण, मनः, वचन, एवं आनप्राणरूप से गृहीत किया है, बद्ध किया है स्पृष्ट किया है, विहित किया है, प्रस्थापित किया है, निविष्ट किया है, अभिनिविष्ट किया है, अभिसमन्वागत किया है, परितःगृहीत किया है, परिणामित किया है, निर्जीर्ण किया है, निःसृत किया है और निःसृष्ट किया है, इसके आगे की और सब वक्तव्यता पूर्वोक्तरूप से जाननी चाहिये ॥सू० ३॥

તૈજસ, કાર્મણ, મનઃ, વચન અને આનપ્રાણ, આ શરીરોમાં રહેલા જીવે તૈજસ, કાર્મણ, મનઃ, વચન અને આનપ્રાણ ચોગ્ય સમસ્ત પુદ્ગલ દ્રવ્યોને તૈજસ, કાર્મણ, મનઃ, વચન અને આનપાણરૂપે ગૃહીત કર્યા છે, બદ્ધ કર્યા છે, સ્પૃષ્ટ કર્યા છે, વિહિત કર્યા છે, પ્રસ્થાપિત કર્યા છે, નિવિષ્ટ કર્યા છે, અભિનિવિષ્ટ કર્યા છે, અભિસમન્વાગત કર્યા છે, પરિતઃગૃહીત કર્યા છે, પરિણામિત કર્યા છે, નિર્જીર્ણ કર્યા છે, નિઃસૃત કર્યા છે, નિઃસૃષ્ટ કર્યા છે, આદિ પૂર્વોક્ત સમસ્ત કથન અહીં પણ ગ્રહણ કરવું જોઇએ. ॥સૂ૦૩॥

अणंतगुणे, ओरालियपोग्गलपरियट्टकाले अणंतगुणे आणापाणुपोग्गलपरियट्टनिव्वत्तणाकाले अणंतगुणे, मणपोग्गलपरियट्टनिव्वत्तणाकाले अणंतगुणे, वइपोग्गलपरियट्टनिव्वत्तणाकाले अणंतगुणे, वेउव्वियपोग्गलपरियट्टनिव्वत्तणाकाले अणंतगुणे ॥सू० ४॥

छाया—औदारिकपुद्गलपरिवर्तः खलु भदन्त ! कियता कालेन निर्वर्त्यते ? गौतम ! अनन्ताभिः उत्सर्पिण्यवसर्पिणीभिः इयत्कालेन निर्वर्त्यते, एवं वैक्रियपुद्गलपरिवर्तोऽपि, एवं यावत् आनप्राणपुद्गलपरिवर्तोऽपि । एतस्य खलु भदन्त ! औदारिकपुद्गलपरिवर्तनिर्वर्तनाकालस्य वैक्रियपुद्गल यावत् आनप्राणपुद्गलपरिवर्तनिर्वर्तनाकालस्य च कतरे कतरेभ्यो यावत् विशेषाधिका वा ? गौतम ! सर्वस्तोकः कार्मणपुद्गल परिवर्त निर्वर्तनाकालः तैजसपुद्गलपरिवर्तनिर्वर्तनाकालः अनन्तगुणः, औदारिकपुद्गलपरिवर्तनिर्वर्तनाकालः अनन्तगुणः, आनप्राणपुद्गलपरिवर्तनिर्वर्तनाकालः अनन्तगुणः, मनःपुद्गलपरिवर्तनिर्वर्तनाकालः अनन्तगुणः, वचःपुद्गलपरिवर्तनिर्वर्तनाकालः अनन्तगुणः वैक्रियपुद्गलपरिवर्तनिर्वर्तनाकालः अनन्तगुणः ॥सू० ४॥

टीका—अथ औदारिकादिपुद्गलपरावर्तानां निर्वर्तनाकालं तेषामल्पबहुत्वं च प्ररूपयितुमाह-'ओरालियपोग्गल' इत्यादि । 'ओरालियपोग्गलपरियट्टे णं भंते ! केवइकालस्स निव्वत्तिज्जइ ?' गौतमः पृच्छति-हे भदन्त ! औदारिकपुद्गलपरिवर्तः खलु कियता कालेन निर्वर्त्यते ? निष्पाद्यते ? 'केवइकालस्स' इत्यत्र तृतीयार्थे षष्ठी

औदारिकपुद्गलपरावर्तन के कालकी वक्तव्यता—

'ओरालियपोग्गलपरियट्टे णं भंते !' इत्यादि ।

टीकार्थ-इस सूत्र द्वारा सूत्रकार ने औदारिकपुद्गलपरिवर्त की निवर्तना का काल और उसके अल्पबहुत्व की प्ररूपणा की है-'ओरालियपोग्गलपरियट्टेणं भंते ! केवइ कालस्स निव्वत्तिज्जइ' हे भदन्त ! औदारिकपुद्गलपरिवर्त कितने काल के बाद निष्पादित किया जाता है ? अर्थात्

—औदारिक पुद्गलपरावर्तनना कालनी वक्तव्यता—

" ओरालियपोग्गलपरियट्टे णं भंते ! इत्यादि—

टीकार्थ—आ सूत्र द्वारा सूत्रकारे औदारिक पुद्गलपरिवर्तनी निर्वर्तनाना कालनी अने तेना अल्पबहुत्वनी प्ररूपणा करी छे—

गौतम स्वामीनो प्रश्न—" ओरालियपोग्गलपरियट्टेणं भंते ! केवइकालस्स निव्वत्तिज्जइ ?" हे भगवन् ! औदारिक पुद्गलपरिवर्त केटलो काळ व्यतीत

आर्षत्वात्, भगवानाह-'गोयमा ! अणंताहिं उस्सप्पिणिओसप्पिणीहिं एवइकालस्स निव्वत्तिज्जइ' हे गौतम ! औदारिकपुद्गलपरिवर्तः अनन्ताभिः उत्सर्पिण्यवसर्पिणीभिः इयता कालेन निर्वर्त्त्यते-निष्पाद्यते, 'एवं वेउव्वियपोग्गलपरियट्टे वि' एवं-पूर्वोक्तरीत्या, वैक्रियपुद्गलपरिवर्तोऽपि अनन्ताभिः उत्सर्पिण्यवसर्पिणीभिः निर्वर्त्यते। 'एवं जाव आणापाणुपोग्गलपरियट्टे वि' एवं-पूर्वोक्तरीत्या, यावत्-तैजसकार्मणमनोवचःआनप्राणपुद्गलपरिवर्ता अपि प्रत्येकम् अनन्ताभिः अनन्ताभिः उत्सर्पिण्यवसर्पिणीभिः निर्वर्त्यते, एकस्य जीवस्य ग्राहकत्वात्, पुद्गलानां चानन्तत्वात्, पूर्व-

औदारिकपुद्गलपरिवर्त की निष्पत्ति होने का काल कितना है ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-' गोयमा ' हे गौतम ! ' अणंताहिं उस्सप्पिणिओसप्पिणीहिं एवइकालस्स निव्वत्तिज्जइ ' औदारिकपुद्गलपरिवर्त अनन्त उत्सर्पिणी काल के बाद निष्पादित किया जाता है-अर्थात्-औदारिकपुद्गलपरिवर्त की निष्पत्ति होने का काल अनन्त उत्सर्पिणी अवसर्पिणीकालरूप है तात्पर्य-कहने का यह है कि औदारिकपुद्गलपरिवर्त की निष्पत्ति अनन्त उत्सर्पिणी अवसर्पिणीकाल में होती है। 'एवं वेउव्वियपोग्गलपरियट्टे वि' इसी प्रकार से वैक्रियपुद्गलपरिवर्त की निष्पत्ति का काल है अर्थात् वैक्रियपुद्गलपरिवर्त की निष्पत्ति अनन्त उत्सर्पिणी अवसर्पिणीकाल में होती है 'एवं जाव आणापाणुपोग्गलपरियट्टे वि' इसी प्रकार से तैजस, कार्मण, मनः वचन, और आनप्राणपुद्गलपरिवर्त इन सब की निष्पत्ति अनन्त अनन्त उत्सर्पिणी अवसर्पिणी काल में होती है।

થયા બાદ નિષ્પાદિત કરાય છે ? એટલે કે ઔદારિક પુદ્ગલપરિવર્તની નિષ્પત્તિ થવાનો કાળ કેટલો કહ્યો છે ?

ઉત્તર-" गोयमा ! હે ગૌતમ ! " अणंताहिं उस्सप्पिणिओसप्पिणीहिं एवइकालस्स निव्वत्तिज्जइ " ઔદારિક પુદ્ગલપરિવર્ત અનંત ઉત્સર્પિણી કાળ વ્યતીત થયા બાદ નિષ્પાદિત કરાય છે. એટલે કે ઔદારિક પુદ્ગલપરિવર્તની નિષ્પત્તિ થવાનો કાળ અનંત ઉત્સર્પિણી અવસર્પિણી કાળરૂપ હોય છે. આ કથનનો ભાવાર્થ એ છે કે ઔદારિકપુદ્ગલપરિવર્તની નિષ્પત્તિ અનંત ઉત્સર્પિણી અવસર્પિણી કાળમાં થાય છે. " एवं वेउव्वियपोग्गलपरियट्टे वि " એજ પ્રમાણે વૈક્રિયપુદ્ગલપરિવર્તની નિષ્પત્તિ પણ અનંત ઉત્સર્પિણી અવસર્પિણી કાળમાં થાય છે. " एवं जाव आणापाणुपोग्गलपरियट्टे वि " એજ પ્રમાણે તૈજસ, કાર્મણ, મનઃ વચન અને આનપ્રાણ, આ પાંચે પ્રકારના પુદ્ગલપરિવર્તની નિષ્પત્તિ પણ અનંત-અનંત ઉત્સર્પિણી અવસર્પિણી કાળમાં

गृहीतानां च ग्रहणस्यापरिगण्यमानत्वात् अनन्ताभिः उत्सर्पिण्यवसर्पिणीभिः इत्यादिसम्यगेवोक्तमितिभावः। गौतमः पृच्छति-'एयस्स णं भंते ! ओरालियपोग्गलपरियट्टनिव्वत्तणाकालस्स वेउव्वियपोग्गल जाव आणापाणुपोग्गलपरियट्टनिव्वत्तणाकालस्स य कयरेकयरेहिंतो जाव विसेसाहिया वा ?' हे भदन्त ! एतस्य खलु औदारिकपुद्गलपरिवर्तनिर्वर्तनाकालस्य, वैक्रियपुद्गल यावत् परिवर्तनिर्वर्तनाकालस्य, तैजसपुद्गलपरिवर्तनिर्वर्तनाकालस्य, कार्मणपुद्गलपरिवर्त-

अनन्त उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी में इन सबकी निष्पत्ति होने का कारण यह है कि एकजीव इनका ग्राहक होता है और पुद्गल अनन्त होते हैं तथा पूर्व गृहीत पुद्गलों को दुबारा ग्रहण करने पर उनकी यहां गिनती की नहीं जाती है-अर्थात् पूर्वगृहीत पुद्गल पुनः गृहीत होने पर यहां गणना में नहीं लिये जाते हैं-अगृहीत पुद्गल ही गणना में लिये जाते हैं अतः अगृहीत पुद्गलों को ग्रहण करने में अनन्त उत्सर्पिणी अवसर्पिणी जैसा काल लग जाता है-इसीलिये यहां प्रत्येक की निष्पत्ति का काल इतना कहा गया है। अब गौतम प्रभु से ऐसा पूछते हैं-' एयस्स णं भंते! ओरालियपोग्गपरियट्टनिव्वत्तणाकालस्स, वेउव्वियपोग्गलपरियट्ट निव्वत्तणाकालस्स जाव आणापाणुपोग्गलपरियट्ट निव्वत्तणाकालस्स कयरे कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया वा' हे भदन्त ! इस औदारिकपुद्गलपरिवर्त निर्वर्तनाकाल के, वैक्रियपुद्गलपरिवर्त निर्वर्तनाकाल के तैजसपुद्गलपरिवर्त निर्वर्तनाकाल के, कार्मणपुद्गपरिवर्त निर्वर्तना काल के,

થાય છે. આ બધાની નિષ્પત્તિ અનંત ઉત્સર્પિણી અવસર્પિણી કાળમાં થવાનું કારણ નીચે પ્રમાણે છે-

એક જીવ તેમનો ગ્રાહક હોય છે અને પુદ્ગલો અનંત હોય છે. તથા પૂર્વગૃહીત પુદ્ગલોને અહીં ગણતરીમાં લેવામાં આવતા નથી-અગૃહીત પુદ્ગલોને જ ગણતરીમાં લેવામાં આવે છે. તેથી અગૃહીત પુદ્ગલોને ગ્રહણ કરવામાં અનંત ઉત્સર્પિણી અવસર્પિણી જેટલો કાળ થઇ જાય છે તે કારણે અહીં પ્રત્યેકની નિષ્પત્તિનો કાળ અનંત ઉત્સર્પિણી જેટલો કહેવામાં આવ્યો છે.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-" एयस्सणं भंते ! ओरालियपोग्गलपरियट्टनिव्वत्तणाकालस्स, वेउव्वियपोग्गलपरियट्टनिव्वत्तणाकालस्स जाव आणापाणु-पोग्गलपरियट्टनिव्वत्तणाकालस्स य कयरे कयरेहितो जाव विसेसाहिया वा ?" હે ભગવન્ ! આ ઔદારિક પુદ્ગલપરિવર્ત નિર્વર્તનાકાળ, વૈક્રિય પુદ્ગલપરિવર્ત નિર્વર્તનાકાળ, તૈજસ પુદ્ગલપરિવર્ત નિર્વર્તનાકાળ, કાર્મણ પુદ્ગલપરિવર્ત

निर्वर्तनाकालस्य, मनःपुद्गलपरिवर्तनिर्वर्तनाकालस्य, वचःपुद्गलपरिवर्तनिर्वर्तना कालस्य, आनपाणपुद्गलपरिवर्तनिर्वर्तनाकालस्य च मध्ये कतरे के तथाविधनिर्वर्तनाकालाः कतरेभ्यो निर्वर्तनाकालेभ्यः केभ्यो यावत्—रतोका वा, बहुका वा, तुल्या वा, विशेषाधिका वा भवन्ति ? भगवानाह—'गोयमा ! सव्वत्थोवे कम्मगपोग्गलपरियट्टनिव्वत्तणाकाले' हे गौतम ! सर्वस्तोकः—सर्वेभ्योऽल्पः, कार्मणपुद्गलपरिवर्तनाकालो भवति, कार्मणपुद्गलानां सूक्ष्मत्वात् बहुतमपरमाणुनिष्पन्नत्वाच्च बहूनां तेषां सकृदपि ग्रहणं भवति, सर्वेषु च नैरयिकादिषु वर्तमानस्य जीवस्य अनुसमयं तेषां गृह्यमाणत्वात् स्वल्पकालेनापि सकलतत्पुद्गलग्रहणं भवतीति भावः।

मनःपुद्गलपरिवर्त निर्वर्तनाकाल के, वचःपुद्गलपरिवर्तनिर्वर्तनाकाल के, और आनप्राणपुद्गलपरिवर्त निर्वर्तनाकाल के बीच में कौन निर्वर्तनाकाल किन निर्वर्तनाकालों से स्तोक हैं ? कौन निर्वर्तनाकाल किन निर्वर्तनाकाल से बहुत हैं ? कौन निर्वर्तनाकाल किन निर्वर्तनाकालों के बराबर हैं ? और कौन निर्वर्तनाकाल किन निर्वर्तनाकाल से विशेषाधिक हैं ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं—'गोयमा' हे—गौतम ! सव्वत्थोवे कम्मगपोग्गलपरियट्टनिव्वत्तणाकाले' सबों से कम—अल्प—कार्मणपुद्गलपरिवर्त का निर्वर्तनाकाल है क्यों कि कार्मण पुद्गल सूक्ष्म होते हैं और ये बहुतम-परमाणुओं से निष्पन्न होते हैं, इस कारण एकबार में बहुतपुद्गलों का ग्रहण हो जाता है। तात्पर्य कहने का यह है कि समस्त नैरयिक आदि पर्यायों में वर्तमान जीव के द्वारा प्रत्येक समय में बहुत कार्मण पुद्गलों

નિર્વર્તનાકાળ, મનઃપુદ્ગલપરિવર્ત નિર્વર્તનાકાળ, વચનપુદ્ગલપરિવર્તનિર્વર્તનાકાળ અને આનપ્રાણુ પુદ્ગલપરિવર્તનિર્વર્તનાકાળ, આ સાતે નિર્વર્તના કાળોમાંથી કયો નિર્વર્તનાકાળ બધાં નિર્વર્તનાકાળો કરતાં ન્યૂનપ્રમાણ છે ? કયો નિર્વર્તનાકાળ કયા નિર્વર્તના કાળોથી અધિક પ્રમાણ છે ? કયો નિર્વર્તનાકાળ કયા કયા નિર્વર્તના કાળોની બરાબર છે ? અને કયો નિર્વર્તના કાળ કયા નિર્વર્તના કાળ કરતાં વિશેષાધિક છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર—"गोयमा ! હે ગૌતમ ! "सव्वत्थोवे कम्मगपोग्गलपरियट्टनिव्वत्तणाकाले" કાર્મણ પુદ્ગલપરિવર્તનો નિર્વર્તના કાળ બધાં નિર્વર્તના કાળ કરતાં અલ્પપ્રમાણ છે. કારણ કે કાર્મણપુદ્ગલો સૂક્ષ્મ હોય છે, અને તેઓ બહુતમ પરમાણુઓ વડે નિષ્પન્ન થાયછે, તે કારણે તે બધાં પુદ્ગલોનું એક વારમાં પણ ગ્રહણ થઈ જાય છે. આ કથનનો ભાવાર્થ એ છે કે નારકાદિ સમસ્ત પર્યાયોમાં વર્તમાન જીવદ્વારા પ્રત્યેક સમયે કાર્મણ

'तेयापोग्गलपरियट्टनिव्वत्तणाकाले अणंतगुणे' कार्मणपुद्गलपरिवर्तनिर्वर्तनाकालापेक्षया तैजसपुद्गलपरिवर्तनिर्वर्तनाकालः अनन्तगुणोऽधिको भवति, यतः तैजसपुद्गलानां स्थूलत्वेन अल्पानामेव एकदाग्रहणम्, एकदाग्रहणे चाल्पप्रदेशनिष्पन्नत्वेन तेषामल्पानामेव तद्ग्रहणं भवत्यतोऽनन्तगुणोऽसौ भवति, 'ओरालियापोग्गलपरियट्टनिव्वत्तणाकाले अणंतगुणे' तैजसपुद्गलपरिवर्तनिर्वर्तनाकालापेक्षया औदारिकपुद्गलपरिवर्तनिर्वर्तनाकालः अनन्तगुणोऽधिको भवति, यतः औदारिकपुद्गलानामतिस्थूलत्वात्, स्थूलानां चाल्पानामेव एकदा ग्रहणं भवति, तेषामल्प-

---

का ग्रहण होता रहता है इसीलिये इसका निर्वर्तनाकाल सब से अल्प कहा गया है-'तेयापोग्गलपरियट्टनिव्वत्तणाकाले अणंतगुणे' कार्मणपुद्गलपरिवर्त के निर्वर्तनाकाल की अपेक्षा तैजसपुद्गलपरिवर्त का निर्वर्तनाकाल अनन्तगुणाधिक है, क्योंकि तैजसपुद्गल स्थूल होते हैं, इसलिये थोड़ेरूप में ही उनका एक समय में ग्रहण होना है, और वे स्कन्ध अल्पप्रदेशों से ही निष्पन्न होते हैं। इसलिये अल्परूप में ही तैजस परमाणुओं का ग्रहण होता रहता है इसलिये इसका निर्वर्तनाकाल कार्मणपुद्गलपरिवर्त के निर्वर्तनाकाल की अपेक्षा अनन्तगुणाधिक कहा गया है। 'ओरालियपोग्गलपरियट्टनिव्वत्तणाकाले अणंतगुणे' तैजसपुद्गलपरिवर्त के निर्वर्तनाकाल की अपेक्षा औदारिकपुद्गलपरिवर्त का जो निर्वर्तनाकाल है वह अनन्तगुणाधिक होता है-क्यों कि औदारिक पुद्गल अतिस्थूल होते हैं-अतः वे अल्पतरप्रदेशवाले होते हैं,

---

પુદ્ગલોનું સમસ્ત રૂપે ગ્રહણ થતું રહે છે તેથી તેનો નિર્વર્તનાકાળ સૌથી ન્યૂન કહ્યો છે. "तेया पोग्गलपरियट्टनिव्वट्टणाकाले अणंतगुणे" કાર્મણપુદ્ગલપરિવર્તના નિર્વર્તનાકાળ કરતાં તૈજસપુદ્ગલપરિવર્તનો નિર્વર્તન કાળ અનંતગણો અધિક કહ્યો છે, કારણ કે તૈજસપુદ્ગલો સ્થૂલ હોય છે, તેથી એક સમયમાં થોડાં તૈજસ પુદ્ગલોનું જ ગ્રહણ થાય છે. આ રીતે થોડા પ્રમાણમાં ગ્રહણ થવાથી તે અલ્પ પ્રદેશો વડે જ તે સમયે નિષ્પન્ન થાય છે તેથી અલ્પ રૂપે જ તૈજસ પરમાણુઓનું ગ્રહણ થતું રહે છે. તેથી તેનો નિર્વર્તનાકાળ કાર્મણ પુદ્ગલપરિવર્તના નિર્વર્તના કાળ કરતાં અનંતગણો અધિક કહ્યો છે. "ओरालियपोग्गलपरियट्टनिव्वत्तणाकाले अणंतगुणे" તૈજસ પુદ્ગલપરિવર્તના નિર્વર્તના કાળ કરતાં ઔદારિક પુદ્ગલપરિવર્તનો નિર્વર્તનાકાળ અનંતગણો અધિક છે. તેનું કારણ નીચે પ્રમાણે છે-ઔદારિકપુદ્ગલો અતિ સ્થૂલ હોય છે અને તેઓ અતિ સ્થૂલ હોવાને કારણે એક સમયમાં અલ્પ

तरप्रदेशत्वात्, तद्ग्रहणेऽपि एकदाऽल्पानामेव अणूनां ग्रहणं भवति, नतु कार्मण-तैजसपुद्गलवत् तेषां सर्वपदेषु ग्रहणमस्ति, औदारिकशरीरिणामेव तद्ग्रहणात्, अतो महतैव कालेन तेषां ग्रहणं भवति 'आणापाणुपोग्गलपरियट्टनिव्वत्तणा काले अणंतगुणे' औदारिकपुद्गलपरिवर्तनिर्वर्तनाकालापेक्षया आनप्राणपुद्गल-परिवर्तनिर्वर्तनाकालोऽनन्तगुणोऽधिको भवति, अपर्याप्तकावस्थायाम् आनप्राण-पुद्गलानामग्रहणाद्, पर्याप्तकावस्थायामपि औदारिकशरीरपुद्गलापेक्षया अल्पी-यसामेव तेषां ग्रहणेन न शीघ्रम् आनप्राणपुद्गलग्रहणं भवतीति औदारिकपुद्गल-परिवर्तनिर्वर्तनाकालापेक्षया आनप्राणपुद्गलपरिवर्तनिर्वर्तनाकालस्यानन्तगुण-

---

इसलिये इनका ग्रहण होने पर भी एक समय में अल्प ही परमाणुओं का ग्रहण होता है तैजस और कार्मण पुद्गलों की तरह उनका समस्त पदों में अर्थात् सर्व दण्डकों में ग्रहण नहीं होता है क्योंकि औदारिक शरीरवाले ही उनका ग्रहण करते हैं, इसलिये अधिक कालसे ही उनका ग्रहण होता है। 'आणापाणुपोग्गलपरियट्ट-निव्वत्तणाकाले अणंतगुणे' औदारिकपुद्गलपरिवर्त के निर्वर्तनाकाल की अपेक्षा आनप्राणपुद्गलपरिवर्त का निर्वर्तनाकाल अनन्तगुण अधिक होता है, क्योंकि प्रायः अपर्याप्तावस्था में आनप्राणपुद्गलों का ग्रहण नहीं होता है पर्याप्तावस्था में भी औदारिक शरीर पुद्गल की अपेक्षा थोड़ेरूप में ही उनका ग्रहण होता है, इस कारण शीघ्रता से आनप्राण-पुद्गलों का ग्रहण नहीं होता है। इस प्रकार औदारिकपुद्गलपरिवर्त निर्वर्तनाकाल की अपेक्षा से आनप्राणपुद्गलपरिवर्त का निर्वर्तनाकाल

રૂપે જ ગ્રહણ થાય છે અલ્પ રૂપે ગ્રહણ થવાને કારણે અલ્પતર પ્રદેશોવાળાં હોય છે. તેથી જ્યારે તેમને ગ્રહણ કરવામાં આવે છે ત્યારે એક સમયમાં અલ્પ પરમાણુઓનું જ ગ્રહણ થાય છે તૈજસ અને કાર્મણ પુદ્ગલોની જેમ તેમનું સમસ્ત પદોમાં અર્થાત્ સર્વ દંડકોમાં ગ્રહણ થતું નથી, કારણ કે ઔદારિક શરીરવાળા જીવો જ તેમને ગ્રહણ કરે છે તે કારણે અધિક કાળે જ તેમનું ગ્રહણ થાય છે.

"आणापाणुपोग्गलपरियट्टनिव्वत्तणाकाले अणंतगुणे" ઔદારિક પુદ્ગલ-પરિવર્તના નિર્વર્તના કાળ કરતાં આનપ્રાણ પુદ્ગલપરિવર્તનો નિર્વર્તનાકાળ અનંતગણો અધિક છે તેનું કારણ નીચે પ્રમાણે છે—અપર્યાપ્તાવસ્થામાં આન-પ્રાણ પુદ્ગલો ગ્રહણ કરાતાં નથી પર્યાપ્તાવસ્થામાં પણ ઔદારિક શરીર પુદ્ગલો કરતાં અલ્પ પ્રમાણમાં તેમનું ગ્રહણ થાય છે. તે કારણે શીઘ્રતાથી આનપ્રાણ પુદ્ગલોનું ગ્રહણ થતું નથી આ રીતે ઔદારિક પુદ્ગલપરિવર્ત નિર્વર્તના કાળ કરતાં આનપાણ પુદ્ગલપરિવર્ત નિર્વર્તના કાળ અનંતગણો

त्वमधिकं युक्तमेव प्रतिपादितमित्यर्थः, 'मणपोग्गलपरियट्टनिव्वत्तणाकाले अणंतगुणे' आनप्राणपुद्गलपरिवर्तनिर्वर्तनाकालापेक्षया मनःपुद्गलपरिवर्त-निर्वर्तनाकालः अनन्तगुणोऽधिको भवति, एकेन्द्रियादिकायस्थितिवशात् मनसश्चिरेण उपलब्धेः मनःपुद्गलपरिवर्तस्य अधिककालसाध्यतया आनप्राणपुद्गलपरिवर्तकालापेक्षया अनन्तगुणत्वं मनःपुद्गलपरिवर्तनिर्वर्तनाकालस्य भवत्येवेति भावः 'वइपोग्गलपरियट्ट निव्वत्तणाकाले अणंतगुणे' मनःपुद्गलपरिवर्तनिर्वर्तनाकालापेक्षया वचःपुद्गलपरिवर्तनिर्वर्तनाकालः अनन्तगुणोऽधिको भवति, मनोद्रव्येभ्यो भाषाद्रव्याणामतिस्थूलतया अल्पानामेव तेषामेकदाग्रहणात् तदपेक्षया वचःपुद्गलपरिवर्तनिर्वर्तनाकालस्यानंतगुणत्वमधिकं भवति। "वेउव्वियपोग्गलपरियट्टनिव्वत्तणाकाले अणंतगुणे" वचःपुद्गलपरिवर्तनिर्वर्तनाकालापेक्षया, वैक्रियपुद्गलपरि-

---

अनन्तगुणाधिक कहा गया है। 'मणपोग्गलपरियट्टनिव्वत्तणाकाले अणंतगुणे' आनप्राणपुद्गलपरिवर्त के निर्वर्तनाकाल की अपेक्षा मनःपुद्गलपरिवर्त निर्वर्तनाकाल अनन्तगुणाधिक है। क्यों कि एकेन्द्रियादिक की कायस्थिति के वश से मन की उपलब्धि चिरकाल में होती है इसलिये मनःपुद्गल को अधिक काल में साध्य होने के कारण उसका निर्वर्तनाकाल आनप्राणपुद्गलपरिवर्त के काल की अपेक्षा से अनन्तगुणा कहा गया है। 'वइपोग्गलपरियट्टनिव्वत्तणाकाले अणंतगुणे' मनःपुद्गलपरिवर्त के निर्वर्तनाकाल की अपेक्षा वचःपुद्गलपरिवर्त का निर्वर्तनाकाल जो अनन्तगुणा अधिक कहा गया है उसका कारण यह है कि मनो द्रव्यों की अपेक्षा भाषाद्रव्य अतिस्थूल होते हैं, इसलिये उनका एक समय में अल्परूप में ही ग्रहण होता है, 'वेउव्वियपोग्गल-

---

અધિક કહ્યો છે. "मणपोग्गलपरियट्टनिव्वत्तणाकाले अणंतगुणे" આનપ્રાણ પુદ્ગલપરિવર્તના નિર્વર્તનાકાળ કરતાં મનઃ પુદ્ગલપરિવર્તનો નિર્વર્તના કાળ અનંતગણો અધિક છે. તેનું કારણ નીચે પ્રમાણે છે—એકેન્દ્રિયાદિની કાયસ્થિતિની અપેક્ષાએ વિચાર કરવામાં આવે, તો મનની ઉપલબ્ધિ ચિર કાળે થાય છે તેથી મનઃપુદ્ગલ અધિક કાળમાં સાધ્ય હોવાને કારણે મનઃપુદ્ગલપરિવર્તનો નિર્વર્તનાકાળ આનપ્રાણ પુદ્ગલપરિવર્તના નિર્વર્તના કાળ કરતાં અનંતગણો અધિક કહ્યો છે. "वइपोग्गलपरियट्टनिव्वत्तणाकाले अणंतगुणे" મનઃપુદ્ગલપરિવર્તનિર્વર્તના કાળ કરતાં વચન પુદ્ગલપરિવર્તનો નિર્વર્તના કાળ અનંત ગણો અધિક છે. તેનું કારણ એ છે કે મનઃ દ્રવ્યો કરતાં ભાષાદ્રવ્યો અતિસ્થૂલ હોય છે, તે કારણે તેમનું ગ્રહણ એક સમયમાં અલ્પ

वर्तनिर्वर्तनाकालः अनन्तगुणोऽधिको भवति, वैक्रियशरीरस्य अत्यधिककाल-लभ्यत्वादिति भावः ॥सू० ४॥

पुद्गलपरिवर्ताल्पबहुत्ववक्तव्यता

मूलम्—एएसि णं भंते! ओरालियपोग्गलपरियट्टाणं जाव आणापाणुपोग्गलपरियट्टाण य कयरे कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया वा? गोयमा! सव्वत्थोवा वेउव्वियपोग्गलपरियट्टा, वइपोग्गलपरियट्टा अणंतगुणा मणपोग्गलपरियट्टा अणंतगुणा आणापाणुपोग्गलपरियट्टा अणंतगुणा, ओरालियपोग्गलपरियट्टा अणंतगुणा तेयापोग्गलपरियट्टा अणंतगुणा, कम्मगपोग्गलपरियट्टा अणंतगुणा, सेवं भंते! सेवं भंते त्तिभगवं जाव विहरइ ॥सू०५॥

बारसमसए चउत्थो उद्देसो समत्तो ॥१२-४

छाया—एतेषां खलु भदन्त! औदारिकपुद्गलपरिवर्तानां यावत् आनप्राण-पुद्गलपरिवर्तानां च कतरे कतरेभ्यो यावत्-विशेषाधिका वा? गौतम! सर्वस्तोकाः वैक्रियपुद्गलपरिवर्ताः, वचःपुद्गलपरिवर्ताः अनन्तगुणाः, मनःपुद्गलपरिवर्ताः अनन्त-गुणाः, आनप्राणपुद्गलपरिवर्ता अनन्तगुणाः, औदारिकपुद्गलपरिवर्ताः अनन्तगुणाः, तैजसपुद्गलपरिवर्ताः अनन्तगुणाः, कार्मणपुद्गलपरिवर्ता. अनंतगुणाः तदेवं भदन्त! तदेवं भदन्त! इति भगवान् यावद् विहरति ॥सू० ५॥

द्वादशशतके चतुर्थोद्देशकः समाप्तः ॥१२-४॥

परियट्टनिव्वत्तणाकाले अणंतगुणे' वचःपुद्गलपरिवर्त के निर्वर्तनाकाल की अपेक्षा वैक्रियपुद्गलपरिवर्त का निर्वर्तनाकाल अनन्तगुणा अधिक कहा गया है-इसका कारण यह है कि वैक्रिय शरीर अत्यधिककाल में लभ्य होता है ॥सू० ४॥

રૂપે જ થાય છે. "वेउव्वियपोग्गलपरियट्टनिव्वत्तणाकाले अणंतगुणे" वचः પુદ્ગલપરિવર્તનો નિર્વર્તના કાળ કરતાં વૈક્રિય પુદ્ગલપરિવર્તનો નિવર્તના કાળ અનંત ગણો વધારે છે. તેનું કારણ એ છે કે વૈક્રિયશરીર ઘણા અધિક કાળેલભ્ય હોયછે. ॥સૂ૦૪॥

टीका—अथ पुद्गलपरिवर्तानामल्पबहुत्वं प्ररूपयितुमाह-'एएसिणं भंते!' इत्यादि, 'एएसि णं भंते! ओरालियपोग्गलपरियट्टाणं जाव आणापाणुपोग्गलपरियट्टाण य कयरे कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया वा?' गौतमः पृच्छति-हे भदन्त! एतेषां खलु पूर्वोक्तानाम् औदारिकपुद्गलपरिवर्तानां यावत्-वैक्रियपुद्गलपरिवर्तानाम्, तैजसपुद्गलपरिवर्तानाम्, कार्मणपुद्गलपरिवर्तानां, मनःपुद्गलपरिवर्तानाम्, आनपाणपुद्गलपरिवर्तानाम् च मध्ये कतरे के पुद्गलपरिवर्ताः कतरेभ्यः केभ्यः पुद्गलपरिवर्तेभ्यो यावत्-स्तोका वा, बहुका वा, तुल्या वा, विशेषाधिका

पुद्गलपरिवर्तकी अल्पबहुत्वक्तव्यता

'एएसि णं भंते! ओरालियपोग्गलपरियट्टाणं' इत्यादि।

टीकार्थ—सूत्रकारने इस सूत्रद्वारा पुद्गलपरिवर्तों के अल्पबहुत्व की वक्तव्यता पर प्रकाश डाला है-'एएसि णं भंते ओरालियपोग्गलपरियट्टाणं जाव आणापाणुपोग्गलपरियट्टाण य कयरे कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया वा' गौतम प्रभु से ऐसा पूछते हैं-हे भदन्त! इन पूर्वोक्त औदारिकपुद्गलपरिवर्तों के बीच में अर्थात्-औदारिकपुद्गलपरिवर्त, वैक्रियपुद्गलपरिवर्त, तैजसपुद्गलपरिवर्त, कार्मणपुद्गलपरिवर्त, मनःपुद्गलपरिवर्त, वचःपुद्गलपरिवर्त और आनप्राणपुद्गलपरिवर्त-इन सात पुद्गलपरिवर्तों में-कौन पुद्गलपरिवर्त किनपुद्गलपरिवर्तों से कम हैं? कौन पुद्गलपरिवर्त किनपुद्गलपरिवर्तों से बहुत हैं?, कौन पुद्गलपरिवर्त किनपुद्गलपरिवर्तों से तुल्य हैं, और कौन पुद्गलपरिवर्त किन पुद्ग-

—પુદ્ગલપરિવર્તની અલ્પબહુત્વવક્તવ્યતા—

"एएसिं णं भंते! ओरालियपोग्गलपरियट्टाणं" ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ—સૂત્રકારે આ સૂત્ર દ્વારા પુદ્ગલપરિવર્તોના અલ્પબહુત્વનું નિરૂપણ કર્યું છે—"एएसिं णं ओरालियपोग्गलपरियट्टाणं जाव आणापाणुपोग्गलपरियट्टाण य कयरे कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया वा?" ગૌતમ સ્વામી મહાવીર પ્રભુને એવો પ્રશ્ન પૂછે છે કે હે ભગવન્! ઔદારિક પુદ્ગલપરિવર્ત, વૈક્રિય પુદ્ગલપરિવર્ત, તૈજસપુદ્ગલપરિવર્ત, કાર્મણ પુદ્ગલપરિવર્ત, મનઃ પુદ્ગલપરિવર્ત, વચઃ પુદ્ગલપરિવર્ત, અને આનપ્રાણ પુદ્ગલપરિવર્ત, આ સાતે પુદ્ગલપરિવર્તોમાં કયાં કયાં પુદ્ગલપરિવર્તો કયાં કયાં પુદ્ગલપરિવર્તો કરતાં અલ્પ છે? કયાં પુદ્ગલપરિવર્તો કયાં પુદ્ગલપરિવર્તો કરતાં અધિક છે? કયાં પુદ્ગલપરિવર્તો કયાં પુદ્ગલપરિવર્તોની બરાબર છે અને કયાં પુદ્ગલપરિવર્તો કયાં પુદ્ગલપરિવર્તો કરતાં વિશેષાધિક છે?

वा सन्ति? भगवानाह-'गोयमा! सव्वत्थोवा, वेउव्वियपोग्गलपरियट्टा' हे गौतम! सर्वस्तोकाः सर्वेभ्योऽल्पाः वैक्रियपुद्गलपरिवर्ताः भवन्ति, तेषां बहुतमकालनिर्वर्तनीयत्वात्, 'वइपोग्गलपरियट्टा अणंतगुणा' वैक्रियपुद्गलपरिवर्तापेक्षया वचःपुद्गलपरिवर्ताः अनन्तगुणाः सन्ति, तेषामल्पतरकालनिर्वर्त्यत्वात्, 'मणपोग्गलपरियट्टा अणंतगुणा' वचःपुद्गलपरिवर्तापेक्षया मनःपुद्गलपरिवर्ताः अनन्तगुणाः सन्ति, 'आणापाणुपोग्गलपरियट्टा अणंतगुणा' मनःपुद्गलपरिवर्तापेक्षया आनप्राणपुद्गलपरिवर्ताः अनन्तगुणा भवन्ति, 'ओरालियपोग्गलपरियट्टा अणंतगुणा' आनप्राणपुद्गलपरिवर्तापेक्षया औदारिकपुद्गलपरिवर्ताः अनन्तगुणा भवन्ति, 'तेयापोग्गलपरियट्टा अणंतगुणा' औदारिकपुद्गलपरिवर्तापेक्षया तैजसपुद्गलपरिवर्ताः अनन्तगुणाः भवति "कम्मापोग्गलपरियट्टा अणंतगुणा" तैजसपुद्गलपरिवर्त्तापेक्षया

लपरिवर्तों से विशेषाधिक हैं? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं? 'गोयमा' हे गौतम! 'सव्वत्थोवा वेउव्वियपोग्गलपरियट्टा' सब से कम वैक्रियपुद्गलपरिवर्त हैं-क्यों कि ये बहुत अधिक काल में निष्पन्न होते हैं। 'वइपोग्गलपरियट्टा अणंतगुणा' वैक्रियपुद्गलपरिवर्तकी अपेक्षा वचःपुद्गलपरिवर्त अनन्तगुणे हैं। क्योंकि अल्पतर काल में निष्पन्न होते हैं। 'मणपोग्गलपरियट्टा अणंतगुणा' वचःपुद्गलपरिवर्त की अपेक्षा मनःपुद्गलपरिवर्त अनन्तगुणे हैं। आणापाणुपोग्गलपरियट्टा अणंतगुणा' मनःपुद्गलपरिवर्तकी अपेक्षा आनप्राणपुद्गलपरिवर्त अनन्तगुणे हैं। 'ओरालियपोग्गलपरियट्टा अणंतगुणा' आनप्राणपुद्गलपरिवर्तकी अपेक्षा औदारिकपुद्गलपरिवर्त अनन्तगुणे हैं। 'तेयापोग्गलपरियट्टा अणंतगुणा' औदारिकपुद्गलपरिवर्तकी अपेक्षा तैजसपुद्गलपरिवर्त अनन्त-

---

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-"गोयमा! सव्वत्थोवा वेउव्वियपोग्गलपरियट्टा" વૈક્રિયપુદ્ગલપરિવર્ત બધાં પુદ્ગલપરિવર્તો કરતાં અલ્પપ્રમાણવાળું હોય છે. તેનું કારણ એ છે કે તે ઘણા જ અધિક કાળમાં નિષ્પન્ન થાય છે.

"वइपोग्गलपरियट्टा अणंतगुणा" વૈક્રિયપુદ્ગલપરિવર્ત કરતાં વચનપુદ્ગલપરિવર્ત અનંતગણું કહ્યું છે, કારણ કે અલ્પતર કાળમાં તેમનું નિર્માણ થાય છે. "मणपोग्गलपरियट्टा अणंतगुणा" વચઃપુદ્ગલપરિવર્ત કરતાં મનઃપુદ્ગલપરિવર્ત અનંતગણું છે. "आणापाणुपोग्गलपरियट्टा अणंतगुणा" મનઃપુદ્ગલપરિવર્ત કરતાં આનપ્રાણપુદ્ગલપરિવર્ત અનંતગણું છે. "ओरालियपोग्गलपरियट्टा अणंतगुणा" આનપ્રાણપુદ્ગલપરિવર્ત કરતાં ઔદારિક પુદ્ગલપરિવર્ત અનંતગણું છે. "तेया पोग्गलपरियट्टा अणंतगुणा" ઔદારિકપુદ્ગલપરિ-

कार्मणपुद्गलपरिवर्ताः अनन्तगुणा भवन्ति । अन्ते गौतमो भगवद्वाक्यं प्रमाणयन्नाह-'सेवं भंते ! सेवं भंते त्ति भगवं जाव विहरइ' हे भदन्त ! तदेवं भवदुक्तं सत्यमेव, हे भदन्त ! तदेवं भवदुक्तं सर्वं सत्यमेवेति कथयन् भगवान् यावद्गौतमः संयमेन तपसा आत्मानं भावयमानो विहरति-तिष्ठति ॥सू० ५॥

॥ इति श्री विश्वविख्यात-जगद्वल्लभ-प्रसिद्धवाचक पञ्चदशभाषा-
कलितललितकलापालापक-प्रविशुद्धगद्यपद्यनैकग्रन्थनिर्मापक
वादिमानमर्दक श्री शाहू छत्रपति कोल्हापुरराजप्रदत्त-
'जैनाचार्य' पदभूषित—कोल्हापुरराजगुरु-
बालब्रह्मचारि—जैनाचार्य—जैनधर्मदिवाकर
-पूज्य श्री घासीलालव्रतिविरचितायां
श्री "भगवतीसूत्रस्य" प्रमेयचन्द्रिका-
ख्यायां व्याख्यायां द्वादशशतके
चतुर्थोद्देशकः समाप्तः ॥१२-४॥

गुणे हैं। 'कम्मगपोग्गलपरियट्टा अणंतगुणा' तैजसपुद्गलपरिवर्त की अपेक्षा कार्मणपुद्गलपरिवर्त अनन्तगुणे हैं। अब अन्त में भगवान् के वचनों में सत्यता व्यापित करने के निमित्त गौतम स्वामी कहते हैं-'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति भगवं जाव विहरइ' हे भदन्त ! आपके द्वारा कहा सर्व सत्य ही है, हे भदन्त ! आपके द्वारा कहा गया सब कथन सत्य ही है-इस प्रकार कह कर वे गौतम भगवान् संयम और तप से आत्मा को भावित करते हुए अपने स्थानपर विराजमान हो गये ॥सू० ५॥

जैनाचार्य जैनधर्मदिवाकर श्री घासीलालजी महाराज कृत "भगवतीसूत्र" की प्रमेयचन्द्रिका व्याख्याके बारहवें शतक का चौथा उद्देशक समाप्त ॥१२-४॥

વર્ત કરતાં તૈજસપુદ્ગલપરિવર્ત અનંતગણુ છે. "कम्मापोग्गलपरियट्टा अणंतगुणा" તૈજસપુદ્ગલપરિવર્ત કરતાં કાર્મણપુદ્ગલપરિવર્ત અનંતગણું છે.

ભગવાનના વચનોને પ્રમાણભૂત ગણીને ગૌતમસ્વામી કહે છે કે "सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति भगवं जाव विहरइ" "હે ભગવન્ ! આપે જે કહ્યું તે સત્ય જ છે હે ભગવન્ ! આપે આ વિષયનું જે પ્રતિપાદન કર્યું તે યથાર્થ જ છે." આ પ્રમાણે કહીને મહાવીર પ્રભુને વંદણા નમસ્કાર કરીને, તપ અને સંયમથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા ભગવાન ગૌતમ પોતાને સ્થાને વિરાજમાન થઈ ગયા. ॥સૂ૦૫॥

॥બારમાં શતકનો ચોથો ઉદ્દેશક સમાપ્ત॥૧૨-૪॥

अथ पञ्चमोद्देशकः प्रारभ्यते

द्वादशशतके पञ्चमोद्देशकस्य संक्षिप्तविषयविवरणम् ।

प्राणातिपातप्रभृतयः कियद्वर्णादियुक्ताः सन्ति ? इत्यादि प्ररूपणम्, क्रोधादयः कियद्वर्णादियुक्ताः सन्तीति ? निरूपणम्, मानप्रभृतयः कियद्वर्णादियुक्ताः सन्तीति प्ररूपणम्, एवं मायालोभरागद्वेषप्रभृतयः कियद्वर्णादिसहिताः सन्तीति प्ररूपणम्, ततः प्राणातिपातविरमणादिः कतिवर्णादियुक्तोऽस्तीति प्ररूपणम्, ततश्चतुष्प्रकारकमितिप्ररूपणम्, अवग्रहादिप्ररूपणंच, उत्थानादयः कियद्वर्णादियुक्ताः सन्तीतिप्ररूपणम् ततः सप्तमावकाशान्तरप्ररूपणम्, सप्तमतनुवातप्ररूपणंच, नैरयिकाणां वर्णादिप्ररूपणं च, पृथिवीकायिकानां प्ररूपणम्, ततो

पांचवे उद्देशेका प्रारंभ

बारहवें शतक के पांचवें उद्देशेका प्रारंभ

बारहवें शतक के इस पांचवें उद्देशक में जो विषय कहा गया है उसका संक्षिप्त रूप से विवरण इस प्रकार है-प्राणातिपात आदि कितने वर्ण आदि वाले हैं इत्यादि कथन, क्रोधादिक कितने वर्णादिवाले हैं-ऐसा कथन, मान वगैरह कितने वर्णादिवाले हैं-ऐसा कथन, माया, लोभ, राग, द्वेष आदि कितने वर्णवाले हैं ऐसा कथन, प्राणातिपातविरमण आदि कितने वर्णादियुक्त है ऐसा कथन, औत्पत्तिकी आदि चार प्रकार की बुद्धि का वर्णन, अवग्रह आदि कितने वर्णादिवाले हैं ऐसा कथन, उत्थान आदि कितने वर्णादिवाले हैं ऐसा कथन सातवीं पृथिवी के अवकाशान्तरका कथन सातवीं पृथिवी का तनुवातवलय कितने वर्णादिवाला है? ऐसा कथन, नैरयिक आदिकों के वर्णादिको

પાંચમા ઉદ્દેશાનો પ્રારંભ—

બારમાં શતકના આ પાંચમાં ઉદ્દેશામાં પ્રતિપાદિત વિષયનું સંક્ષિપ્ત વર્ણન

બારમાં શતકના આ પાંચમાં ઉદ્દેશામાં પ્રતિપાદિત વિષયનું સંક્ષિપ્ત વર્ણન આ પ્રમાણે છે-પ્રાણાતિપાત આદિ કેટલાં વર્ણાદિવાળાં છે ? ક્રોધાદિક કેટલાં વર્ણાદિવાળાં છે ? માન, માયા, લોભ, રાગ, દ્વેષ આદિ કેટલાં વર્ણાદિવાળાં છે ? પ્રાણાતિપાતવિરમણ આદિ કેટલાં વર્ણાદિવાળાં છે ? ઇત્યાદિ પ્રશ્નો અને તેમના ઉત્તરો ઔત્પત્તિકી આદિ ચાર પ્રકારની બુદ્ધિઓનું વર્ણન અવગ્રહ આદિ કેટલાં વર્ણાદિવાળાં છે ? ઉત્થાન આદિ કેટલાં વર્ણાદિવાળાં છે? સાતમી પૃથ્વીના અવકાશાન્તરનું કથન સાતમી પૃથ્વીનું તનુવાતવલય કેટલાં વર્ણાદિવાળું છે ? નારકાદિકોના વર્ણાદિકોની પ્રરૂપણા, પૃથ્વીકાયિકાદિના

मनुष्याणां प्ररूपणम्, ततो वानव्यन्तरप्रभृतीनां प्ररूपणम् ततो धर्मास्तिकायादीनां प्ररूपणम्, ततो ज्ञानावरणादीनां प्ररूपणम्, तदनन्तरं कृष्णलेश्यादीनां प्ररूपणम्, ततः सम्यग्दृष्टि मिथ्यादृष्टि-तदुभयदृष्टीनां प्ररूपणम्, ततः औदारिकादिशरीरप्ररूपणम्, तदनन्तरं साकारोपयोगस्य, अनाकारोपयोगस्य च प्ररूपणम्, ततः सर्वद्रव्यप्ररूपणम्, गर्भव्युत्क्रामतो जीवस्य प्ररूपणम्, जीवोजीवसमूहः जगच्चकर्मवशात् विविधरूपेण परिणमतीति।

कर्मपुद्गलवक्तव्यता

मूलम्-"रायगिहे जाव एवं वयासी-अह भंते! पाणाइवाए१, मुसावाए२, अदिन्नादाणे३, मेहुणे४, परिग्गहे५, एसणं कइवन्ने, कइगंधे, कइरसे, कइफासे, पण्णत्ते? गोयमा! पंचवन्ने, दुगंधे, पंचरसे, चउफासे पण्णत्ते। अह भंते! कोहे१, कोवे२, रोसे३,

---

की प्ररूपणा पृथिवीकायिक कितने वर्णादिवाले हैं-ऐसा कथन, मनुष्य कितने वर्णादि वाले हैं? ऐसा कथन, वानव्यन्तर वगैरह कितने वर्णादिवाले हैं-ऐसा कथन, धर्मास्तिकाय आदि कितने वर्णादिवाले हैं-ऐसा कथन, ज्ञानावरणादिक कर्मों में वर्णादिकका कथन कृष्णलेश्या आदिकों में वर्णादिक का कथन, सम्यग्दृष्टि, मिथ्यादृष्टि, तदुभयदृष्टि ये सब वर्णादिरहित हैं ऐसा कथन औदारिकशरीर आदि में वर्णादिक का कथन साकार उपयोग और निराकार उपयोग ये दोनों वर्णादिरहित हैं ऐसा कथन, समस्त द्रव्यों में कितने द्रव्य वर्णादिवाले हैं? ऐसा कथन, गर्भ में उत्पाद होते हुए जीव के वर्णादिक का कथन जीव, जीवसमूह रूपजगत् ये कर्मवश विविधरूप से परिणमते हैं ऐसा कथन।

વર્ણાદિની પ્રરૂપણા, મનુષ્યના વર્ણાદિની પ્રરૂપણા, વાનવ્યન્તર આદિ કેટલાં વર્ણાદિવાળાં છે, તેનું નિરૂપણ, ધર્માસ્તિકાય આદિ કેટલાં વર્ણાદિવાળાં છે, તેનું નિરૂપણ, જ્ઞાનાવરણીય આદિ કર્મો કેટલાં વર્ણાદિવાળાં હોય છે, તેનું નિરૂપણ કૃષ્ણલેશ્યા આદિના વર્ણાદિનું કથન સમ્યગ્દૃષ્ટિ, મિથ્યાદૃષ્ટિ, અને તદુભયદૃષ્ટિ, આ ત્રણે વર્ણાદિથી રહિત છે એવું કથન ઔદારિક શરીર આદિમાં વર્ણાદિનું કથન સાકાર ઉપયોગ અને નિરાકાર ઉપયોગ, આ બન્ને વર્ણાદિથી રહિત છે એવું કથન સમસ્ત દ્રવ્યો વર્ણાદિવાળાં છે, તેનું કથન ગર્ભમાં ઉત્પન્ન થતાં જીવના વર્ણાદિનું કથન જીવ અને જીવસમૂહ રૂપ જગતનું કર્મવશ વિવિધ સ્વરૂપે પરિણમન થવાનું કથન.

दोसे४, अखमे५, संजलणे६, कलहे७, चंडिक्के८, भंडणे९, विवादे १०, एसणं केइवन्ने जाव कइफासे पण्णत्ते ? गोयमा ! पंचवन्ने, दुगंधे, पंचरसे चउफासे पण्णत्ते। अह भंते ! माणे१, मदे२, दप्पे३, थंभे४, गव्वे५, अत्तुक्कोसे६, परपरिवाए७, उक्कोसे८, अवक्कोसे९, उण्णए१०, उन्नामे११, दुन्नामे१२, एसणं कइवण्णे, कइगंधे, कइरसे, कइफासे पण्णत्ते ? गोयमा ! पंचवन्ने जहा कोहे तहेव। अह भंते ! माया१, उवही२, नियडी३, वलये४, गहणे५, णूमे६, कक्के७, कुरुए८, जिम्हे९, विविवसे१०, आयरणया११, गूहणया१२, वंचणया१३, पालिउंचणया१४, सातिजोगे य१५ एसणं कइवन्ने, कइगंधे, कइरसे कइफासे ? गोयमा ! पंचवन्ने जहेव कोहे। अह भंते ! लोभे१, इच्छा२, मुच्छा३, कंखा४, गेही, तण्हा६, भिज्झा७, अभिज्झा८, आसासणया९, पत्थणया१० लालप्पणया११, कामासा१२, भोगासा१३, जीवियासा१४, मरणासा१५, नंदीरागे१६, एसणं कइवण्णे कइगंधे कइरसे कइफासे ? जहेव कोहे। अह भंते ! पेज्जे१, दोसे२, कलहे३, जाव मिच्छादंसणसल्ले, एसणं कइवण्णे कइगंधे कइरसे, कइफासे ? जहेव कोहे तहेव चउफासे ॥सू०१॥

छाया—राजगृहे यावत्-एवम् अवादीत्-अथ भंते ! प्राणातिपातः१, मृषावादः२, अदत्तादानम्३, मैथुनम्४, परिग्रहः५ एष खलु कतिवर्णः, कतिगन्धः, कतिरसः, कतिस्पर्शः प्रज्ञप्तः ? गौतम ! पञ्चवर्णः, द्विगन्धः, पञ्चरसः, चतुःस्पर्शः, प्रज्ञप्तः। अथ भदन्त ! क्रोधः१, कोपः२, रोषः३, दोषः४, अक्षमा५, संज्वलनम्६, कलहः७, चाण्डिक्यम्८, भण्डनम्९, विवादः१०, एष खलु कतिवर्णः, यावत् कतिस्पर्शः, प्रज्ञप्तः ? गौतम ! पञ्चवर्णः, द्विगन्धः, पञ्चरसः, चतुःस्पर्शः, प्रज्ञप्तः। अथ भदन्त ! मानं, मदः, दर्पः, स्तम्भः, गर्वः, आत्मोत्कर्षः, परपरिवादः,

उत्कर्षः, अपकर्षः. उन्नयः, उन्नामः. दुर्नामः, १२, एष खलु कतिवर्णः, कतिगन्धः, कतिरसः, कतिस्पर्शः प्रज्ञप्तः ? गौतम ! पञ्चवर्णः, यथा क्रोधस्तथैव । अथ भदन्त ! माया. उपधिः, निकृतिः, वलयम्, गहनम्, नूमः, कल्कम् कुरूपम्, जैह्मयम्, किल्बिषः१८, आदरणता, गूहनता, वञ्चनता, प्रतिकुञ्चनता, सातियोगश्च१५, एष खलु कतिवर्णः, कतिगन्धः, कतिरसः, कतिस्पर्शः ? गौतम ! पञ्चवर्णः यथैव क्रोधः। अथ भदन्त ! लोभः१, इच्छा२, मूर्च्छा३, काङ्क्षा४, गृद्धिः५, तृष्णा६, भिध्या७, अभिध्या८, आशंसनता९, प्रार्थनता१०, लालपनता११, कामाशा१२, भोगाशा१३, जीविताशा१४, मरणाशा१५, नन्दिरागः१६, एष खलु कतिवर्णः, कतिगन्धः, कतिरसः कतिस्पर्शः? यथैव क्रोधः। अथ भदन्त ! प्रेम द्वेषः. कलहो. यावत् मिथ्यादर्शनशल्यः. एष खलु कतिवर्णः४ ? यथैव क्रोधस्तथैव चतुःस्पर्शः ॥सू० १॥

टीका—पूर्वोद्देशके पुद्गलपरिवर्तानामुक्तत्वेन तत्सम्बन्धात् कर्मपुद्गलस्वरूपं प्ररूपयितुमाह–'रायगिहे' इत्यादि, 'रायगिहे जाव एवं वयासी' राजगृहे यावत् नगरे स्वामी समवसृतः, धर्मकथां श्रोतुं पर्षत् निर्गच्छति. धर्मकथां श्रुत्वा प्रतिगता पर्षत्, ततो विनयेन शुश्रूषमाणो गौतमः प्राञ्जलिपुटः पर्युपासीनः भगवन्तम्, एवं–वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत्–'अहभंते ! पाणाइवाए, मुसावाए अदि-

कर्मपुद्गलवक्तव्यता–

'रायगिहे जाव एवं वयासी' इत्यादि।

टीकार्थ–इससे पूर्व उद्देशक में पुद्गलपरिवर्तों का कथन किया गया है सो इसी प्रस्ताव को लेकर सूत्रकार ने यहां पर कर्मपुद्गलों के स्वरूप का कथन किया है–' रायगिहे जाव एवं वयासी ' राजगृह नगर में महावीर स्वामी पधारे उनसे धर्मकथा को सुनने के लिये परिषदा निकली और वह धर्मकथा को सुनकर पीछे अपने २ स्थान पर पीछे चली गई इसके बाद प्रश्न पूछने की इच्छावाले श्री गौतमने दोनों हाथ जोड़कर बडे विनय के साथ प्रभु की सेवा में मन को लगाते हुए

"रायगिहे जाव एवं वयासी" इत्यादि—

ટીકાર્થ–આગલા ઉદ્દેશામાં પુદ્ગલપરિવર્તોનું નિરૂપણ કરવામાં આવ્યું હવે સૂત્રકારે કર્મપુદ્ગલોના સ્વરૂપનું નિરૂપણ કરે છે–

"रायगिहे जाव एवं वयासी" રાજગૃહ નગરમાં મહાવીર પ્રભુ પધાર્યા ધર્મકથા સાંભળવાને માટે પરિષદ નીકળી અને ધર્મ કથા સાંભળીને 'પરિષદ નિસર્જિત' ઇત્યાદિ પૂર્વોક્ત કથન અહીં ગ્રહણ કરવું જોઇએ ત્યારે આદ ધર્મતત્ત્વનું શ્રવણ કરવાની અભિલાષાવાળા ગૌતમસ્વામીએ બન્ને હાથ જોડીને વિનયપૂર્વક મહાવીર પ્રભુને આ પ્રકારનો પ્રશ્ન પૂછયો–" अह भंते !

न्नादाणे, मेहुणे, परिग्गहे, एसणं कइवन्ने, कइगंधे, कइरसे, कइफासे पण्णत्ते?' हे भदन्त ! अथ पाणातिपातः-प्राणव्यपरोपणम् तज्जनितं तज्जनकं वा चारित्र-मोहनीयं कर्मपाणातिपात-एवोपचारात् तच्च कर्मपुद्गलस्वरूपं भवति अतएव अत्र वर्णादि संभव मश्नः, एवं मृषावादः तज्जन्यं तज्जनकं वा तथाविधं कर्म मृषावाद एव, अदत्तादानम्-अदत्तस्य आदानम्-अदत्तादानम्, तज्जन्यं तज्जनकं वा तथाविधं कर्म अदत्तादानमेव, मैथुनम्-अब्रह्मचर्यम्, तज्जन्यं तज्जनकं वा तथाविधं कर्म मैथुनमेव, परिग्रहः-धनादिवस्तूनां

भगवान् से इस प्रकार पूछा-'अह भंते ! पाणाइवाए, मुसावाए, अदि-न्नादाणे, मेहुणे, परिग्गहे, एस णं कइवन्ने, कइगंधे, कइरसे, कइफासे पण्णत्ते' हे भदन्त ! प्राणातिपातरूप प्राणव्यपरोपण से जनित कर्म अथवा प्राणव्यपरोपण का जनक ऐसा जो चारित्र मोहनीय कर्म है वह यहां उपचार से प्राणव्यपरोपण शब्दद्वारा गृहीत हुआ है, क्योंकि यह चारित्रमोहनीय कर्मपुद्गलरूप होता है-इसीलिये इस में वर्णादिके होने का प्रश्न किया गया है। इसी प्रकार से मृषावाद शब्द से मृषावाद का जनककर्म अथवा मृषावाद से जन्य ऐसा जो कर्म है वह भी उपचार से मृषावाद ही है, अदत्त का आदान करना-इसका नाम अदत्तादान है इस अदत्तादान के द्वारा जन्य कर्म अथवा अदत्तादान का जनक ऐसा जो कर्म है वह भी उपचार से अदत्तादान ही है, अब्रह्मचर्यका नाम मैथुन है, इस मैथुन से जन्य कर्म अथवा इस मैथुन का जनक जो कर्म

पाणाइवाए, मुसावाए, अदिन्नादाणे, मेहुणे, परिग्गहे, एसणं कइ वन्ने, कइ गंधे, कइ रसे कइ फासे पण्णत्ते ?" હે ભગવન્ ! પ્રાણાતિપાત, મૃષાવાદ, અદત્તાદાન, મૈથુન અને પરિગ્રહના કેટલાં વર્ણો છે ? કેટલા ગંધો છે ? કેટલા રસો છે ? અને કેટલા સ્પર્શો છે ? આ પ્રશ્નનો ભાવાર્થ નીચે પ્રમાણે છે-પ્રાણાતિપાત પદ અહીં પ્રાણવ્યપરોપણના (પ્રાણોનો વિયોગ કરવાથી) જનિત કર્મના અર્થમાં અથવા પ્રાણવ્યપરોપણજનક એવા ચારિત્રમોહનીય કર્મના અર્થમાં પ્રયુક્ત થયુ છે, કારણ કે તે ચરિત્રમોહનીયકર્મ પુદ્ગલરૂપ હોય છે. તેથી તેમાં વર્ણાદિનો સદ્ભાવ રહે છે.
તે કારણે જ આ પ્રશ્ન પૂછવામાં આવેલ છે. એજ પ્રમાણે મૃષાવાદના જનક કર્મને ગ્રહણ કરવામાં આવ્યું છે. અથવા મૃષાવાદ વડે જન્ય કર્મને પણ ઔપચારિક રીતે મૃષાવાદ જ કહે છે. અદત્ત વસ્તુનું આદાન (ગ્રહણ) કરવું તેનું નામ અદત્તાદાન છે આ અદત્તાદાન દ્વારા જન્ય કર્મને અથવા અદત્તા-દાનનું જનક જે કર્મ છે તેને પણ ઔપચારિક રીતે અદત્તાદાન જ કહે છે. અબ્રહ્મચર્યનું નામ મૈથુન છે આ મૈથુનજન્ય કર્મને અથવા મૈથુનજનક કર્મને

ग्रहणम्, आसक्तिर्वा, तज्जन्यं तज्जनकंवा तथाविधं कर्म परिग्रहएव, तेषां च कर्मणां पुद्गलरूपत्वात्, एष खलु प्राणातिपातादिः कतिवर्णः, कतिगन्धः, कतिरसः, कतिस्पर्शः प्रज्ञप्तः ? भगवानाह–'गोयमा ! पंचवण्णे, दुगंधे, पंचरसे, चउफासे पण्णत्ते ' हे गौतम ! प्राणातिपातादिकर्मणः पुद्गलस्वरूपत्वात् स पञ्चवर्णः कालनीलादि भेदात्, द्विगन्धः सुरभिदुरभिभेदात्, पञ्चरसः तिक्तकटुकादिभेदात्, चतुःस्पर्शः कर्कशानाम् अष्टानां केषामपि चतुर्णां भेदात्, प्रज्ञप्तः,

है वह भी उपचार से अब्रह्म-मैथुन ही है, धनादि वस्तुओं का ग्रहण करना इसका नाम परिग्रह है अथवा-मूर्च्छा का नाम परिग्रह है इसके द्वारा जन्य कर्म अथवा इसका जनक जो कर्म है वह भी उपचार से परिग्रह ही है-क्योंकि उन कर्मों में पुद्गलरूपता होती है इसीलिये यहां पर ऐसा प्रश्न किया गया है कि यह प्राणातिपातादि कितने वर्णोंवाला, कितने गंधोंवाला, कितने रसोंवाला, और कितने स्पर्शोंवाला कहा गया है ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-'गोयमा' हे गौतम ! 'पंचवण्णे, दुगंधे, पंचरसे, चउफासे, पण्णत्ते' यह प्राणातिपातादि पांच वर्णोंवाला दो गंधोवाला, पांच रसोंवाला और चार स्पर्शोंवाला कहा गया है। क्योंकि यह प्राणातिपातादि कर्मपुद्गलरूप है। कृष्ण, नील आदि के भेद से वर्ण पांच प्रकारका होता है, सुरभि दुरभि के भेद से गंध दो प्रकार का होता है। तिक्त कटुक आदि के भेद से रस पांच प्रकार का

પણ ઔપચારિક રીતે અબ્રહ્મ-મૈથુન જ કહે છે. ધનાદિ વસ્તુઓને ગ્રહણ કરવી તેનું નામ પરિગ્રહ છે. અથવા મૂર્ચ્છાભાવનું નામ પરિગ્રહ છે તેના દ્વારા જન્ય કર્મને પરિગ્રહ કહે છે અથવા તેનું જનક જે કર્મ છે તેને પણ ઔપચારિક રીતે પરિગ્રહ જ કહે છે. તે કર્મોમાં પુદ્ગલરૂપતા હોય છે, તે કારણે અહીં એવો પ્રશ્ન પૂછવામાં આવ્યો છે કે " હે ભગવન્ ! પ્રાણાતિપાત આદિને કેટલાં વર્ણોવાળાં, કેટલી ગંધોવાળાં, કેટલા રસોવાળા અને કેટલા સ્પર્શોવાળા કહ્યા છે ? "

આ પ્રશ્નનો ઉત્તર આપતા મહાવીર પ્રભુ કહે છે કે–" गोयमा ! " હે ગૌતમ ! " पंचवण्णे, दुगंधे, पंचरसे, चउफासे, पण्णत्ते " પ્રાણાતિપાત આદિને પાંચ વર્ણોવાળાં, બે ગંધોવાળાં, પાંચ રસોવાળાં અને ચાર સ્પર્શોવાળાં કહ્યાં છે. આ પ્રમાણે કથન કરવાનું કારણ એ છે કે પ્રાણાતિપાત આદિ કર્મ, પુદ્ગલોનું રૂપ છે કૃષ્ણ, નીલ, આદિના ભેદથી વર્ણ પાંચ પ્રકારના કહ્યા છે. ગંધના સુરભિગંધ અને દુરભિગંધ રૂપ બે પ્રકાર છે. તીખો, કડવો આદિ પાંચ પ્રકારના રસો કહ્યા છે. કર્કશ આદિના ભેદથી સ્પર્શના આઠ પ્રકારે

गौतमः पृच्छति-'अह भंते ! कोहे१, कोवे२, रोसे३, दोसे४, अखमे५, संजलणे६, कलहे७, चंडिक्के८, भंडणे९. विवादे१०, एसणं कइवण्णे जाव कइफासे पण्णत्ते ?' हे भदन्त ! अथ क्रोधः-क्रोधपरिणामजनकं कर्म, कोपः क्रोधोदयात्स्वभावाच्चलनमात्रम्, तत्र क्रोधः इतिसामान्यं नाम वर्तते, कोपादयस्तु तत्प्रभवत्वात् तद्विशेषाः, रोषः-क्रोधस्यैव परम्परानुबन्धः, दोषः स्वस्य परस्य वा

होता है। कर्कश आदि के भेद से स्पर्श आठ प्रकार का कहा गया है इन आठ में से इन में ये चार स्पर्श होते हैं। यथा-शीत, उष्ण, स्निग्ध और रूक्ष। सो ही कहा है-'पंच रस पंचवन्नेहिं परिणयं दुविहगंधचउफासं दुविधमणंतपएसं सिद्धेहिं अणंतगुणहीणं' ॥१॥ सिद्धों से अनन्तगुणहीन-अनंत प्रदेशोंवाला द्रव्य पांच रसोंवाला, पांच वर्णोंवाला, दो गंधोंवाला और चार स्पर्शोंवाला द्रव्य होता है।

अब गौतम प्रभु से ऐसा पूछते हैं-'अह भंते! कोहे१, कोवे२, रोसे३, दोसे४, अखमे५, संजलणे६, कलहे७, चंडिक्के८, भंडणे९, विवादे१०, एस णं, कइवण्णे जाव कइफासे पण्णत्ते' क्रोध परिणामजनक कर्म का नाम क्रोध है, एवं क्रोध के उदय से अपने निजस्वभाव से विचलित होना, इसका नाम कोप है इन में क्रोध यह सामान्य नाम है और कोपादिक उसके विशेष नाम हैं-क्योंकि ये कोपादिक उससे उत्पन्न होते हैं। कोप की जो परम्परा चलती है इसका नाम रोष है अपने को या दूसरे को जो दूषण लगाया जाता है इसका नाम दोष

કહ્યા છે. આ આઠ સ્પર્શોમાંથી કોઇ પણ ચાર સ્પર્શોનો પ્રાણાતિપાત આદિ કર્મપુદ્ગલોમાં સદ્ભાવ હોય છે. એજ વાત નીચેની ગાથા દ્વારા પ્રકટ કરવામાં આવી છે. "पंच रस पंचवन्नेहिं परिणयं दुविहगंधचउफासं दुविधमणंतपएसं सिद्धेहिं अणंतगुणहीणं ॥१॥ અનંત પ્રદેશોવાળું દ્રવ્ય પાંચ રસોવાળું, પાંચ વર્ણોવાળું, બે ગંધોવાળું અને ચાર સ્પર્શોવાળું હોય છે.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-" अह भंते ! कोहे१, कोवे२, रोसे३, दोसे४, अखमे५, संजलणे६, कलहे७, चंडिक्के८, भंडणे९, विवादे१०, एसणं कइवण्णे जाव कइ फासे पण्णत्ते ?" ક્રોધપરિણામ જનક કર્મનું નામ ક્રોધ છે અને ક્રોધના ઉદયને કારણે પોતાના નિજ સ્વભાવથી વિચલિત થવું તેનું નામ કોપ છે, આ બધાં નામોમાં ક્રોધ સામાન્ય નામ છે અને કોપાદિક તેના વિશેષ નામ છે, કારણ કે કોપાદિકની ઉત્પત્તિ ક્રોધમાંથી થાય છે. કોપની જે પરંપરા ચાલે છે, તેનું નામ રોષ છે, પોતાના ઉપર કે અન્યના ઉપર

दूषणम्, एतत्तु क्रोधजन्यत्वात् क्रोधकार्यम्, द्वेषोवा अप्रीतिमात्रम्, अक्षमा-परकृतापराधस्यासहनम्. संज्वलनः-पौनःपुन्येन क्रोधवह्निना ज्वलनम्, कलहः-परस्परकोलाहलकरणम् परस्परमुच्चैरनुचितभाषणमित्यर्थः, एतच्चापि क्रोध-कार्यम्. चाण्डिक्यम्-रौद्राकारकरणम्, एतदपि क्रोधजन्यमेव, भण्डनम्-दण्डना-दिभिः-युद्धम् परदोषोद्घाटनम्, गालीप्रदानेन वा, एतस्यापि क्रोधजन्यत्वात्, विवादः-विरुद्धवचनानि, अयमपि क्रोधजन्य एव। एष खलु क्रोधादिः कतिवर्णः, यावत् कतिगन्धः, कतिरसः कतिस्पर्शः प्रज्ञप्तः? भगवानाह-'गोयमा! पंचवण्णे दुगंधे

है यह क्रोध से जन्य होता है इसलिये क्रोध का कार्य है। अथवा द्वेष-अप्रीति का नाम है। दूसरों द्वारा किये गये अपराध को सहन करनेकी अक्षमता का नाम अक्षमा है क्रोध से बारंबार जलना इसका नाम संज्वलन है आपस में एक दूसरे के प्रति बुरी तरह से जो जोर २ से बोलचाल हो जाती है उसका नाम कलह है यह भी क्रोध का एक कार्य है। रौद्र आकार का धारण करना इसका नाम चाण्डिक्य है यह भी क्रोध का एक कार्य है। दण्ड आदि से युद्ध करना अथवा गाली देने पूर्वक दूसरों के दोषों का उद्घाटन करना इसका नाम भण्डन है। यह भी क्रोध का एक कार्य है, परस्पर विरोध से उत्पन्न हुए वचनों का नाम विवाद है, यह भी क्रोध से ही जन्य होता है अतः उसका एक कार्य है। ये क्रोधादि परिणाम कितने वर्णोंवाले, यावत् कितने गंधो-वाले, कितने रसोंवाले, और कितने स्पर्शोंवाले कहे गये हैं? इसके

જે દૂષણ લગાડવામાં આવે છે તેનું નામ દ્વેષ છે તે ક્રોધ જન્ય હોવાથી ક્રોધના કાર્ય રૂપ ગણાય છે. અથવા અપ્રીતિનું નામ દ્વેષ છે. અન્ય દ્વારા થયેલા અપરાધને સહન કરવાની અક્ષમતાનું નામ અક્ષમા છે. ક્રોધથી વાર વાર પ્રજ્વલિત થવું તેનું નામ સંજ્વલન છે. એક બીજાની વચ્ચે ઉગ્ર વાગ્યુદ્ધ થવું તેનું નામ કલહ છે. તે કલહ પણ ક્રોધના કારણે જ ઉદ્ભવતો હોવાથી તેને પણ ક્રોધના એક કાર્ય રૂપ ગણવામા આવે છે. રૌદ્ર સ્વરૂપને ધારણ કરવું તેનું નામ ચાંડિક્ય છે. આ ચાંડિક્ય પણ ક્રોધના એક કાર્ય રૂપ છે, દંડા આદિ વડે લડવું અથવા ગાલીપ્રદાનપૂર્વક બીજાના દોષોને પ્રકટ કરવા તેનું નામ ભંડન છે. તે પણ ક્રોધના એક કાર્ય રૂપ છે પરસ્પરના વિરોધને કારણે જે વચનોનું ઉચ્ચારણ થાય છે તેનું નામ વિવાદ છે. આ વિવાદ પણ ક્રોધના જ એક કાર્ય રૂપ છે. ગૌતમ સ્વામીના પ્રશ્નનો ભાવાર્થ એવો છે કે ક્રોધાદિ પરિણામો કેટલાં વર્ણવાળાં, કેટલા ગંધવાળાં, કેટલા રસવાળાં અને અને કેટલા સ્પર્શવાળાં છે?

पंचरसे चउफासे पण्णत्ते' हे गौतम ! क्रोधादि परिणामजनककर्मणः पुद्गलरूपत्वात्, स क्रोधादिपरिणत कर्मपुद्गलः पञ्चवर्णः, पञ्चरसः, द्विगन्धः, चतुःस्पर्शः प्रज्ञप्तः। गौतमः पृच्छति -'अहभंते ! माणे१, मदे२, दप्पे३, थंभे४, गव्वे५, अत्तुक्कोसे६, परपरिवाए७, उक्कोसे८, अवक्कोसे९, उण्णए१०, उन्नामे११, दुन्नामे१२, एसणं कइवण्णे, कइगंधे, कइरसे, कइफासे पण्णत्ते?' हे भदन्त ! अथ मानम्-मानपरिणामजनकं कर्म, तत्र मानम्-अभिमानपदवाच्यम् सामान्यं नाम, मदादयस्तु तत्प्रभवत्वात् तद्विशेषा

उत्तर में प्रभु कहते हैं-' गोयमा ' हे गौतम ! ' पंचवण्णे, दुगंधे, पंचरसे, चउफासे पण्णत्ते' क्रोधादिपरिणामजनककर्मपुद्गलरूप होने के कारण वह क्रोधादिरूपपरिणत कर्मपुद्गल पांचवर्णोंवाला, दो गंधोंवाला, पांच रसोंवाला एवं चार स्पर्शोंवाला कहा गया है।

अब गौतम प्रभु से ऐसा पूछते हैं-' अह भंते ! माणे, मदे, दप्पे, थंभे, गव्वे, अत्तुक्कोसे, परपरिवाए, उक्कोसे, अवक्कोसे, उण्णए, उन्नामे, दुन्नामे१२ एसणं कइवण्णे, कइगंधे, कइरसे, कइफासे पण्णत्ते ' हे भदन्त ! मान, मद, दर्प, स्तंभ, गर्व, आत्मोत्कर्ष, परपरिवाद, उत्कर्ष, अपकर्ष, उन्नय, उन्नाम, दुर्नाम-ये सब कितने वर्णवाले, कितने गंधवाले, कितने रसवाले और कितने स्पर्शवाले होते हैं ? अभिमानपदवाच्य मान को उत्पन्न करनेवाले कर्मका नाम मान है। यहां मान यह सामान्य नाम है तथा मद आदि इसके विशेष नाम हैं। क्योंकि ये सब

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-" गोयमा ! पंचवण्णे, दुगंधे, पंचरसे, चउफासे पण्णत्ते " હે ગૌતમ ! ક્રોધાદિ પરિણામજનક કર્મો પુદ્ગલરૂપ હોવાને કારણે, તે ક્રોધાદિરૂપે પરિણત કર્મપુદ્ગલો પાંચ વર્ણોવાળાં, બે ગંધોવાળાં, પાંચ રસોવાળાં અને ચાર સ્પર્શોવાળાં કહ્યાં છે.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-" अह भंते ! माणे, मदे, दप्पे, थंभे, गव्वे, अत्तुक्कोसे, परपरिवाए, उक्कोसे, अवक्कोसे, उण्णए, उन्नामे, दुन्नामे, १२ एसणं कइ वण्णे, कइ गंधे, कइ रसे, कइ फासे पण्णत्ते ? " હે ભગવન્ ! માન, મદ, દર્પ, સ્તંભ, ગર્વ, આત્મોત્કર્ષ, પરપરિવાદ, ઉત્કર્ષ, અપકર્ષ, ઉન્નય, ઉન્નામ અને દુર્નામ રૂપે પરિણત કર્મપુદ્ગલો કેટલાં વર્ણ, કેટલા ગંધ, કેટલા રસ અને કેટલા સ્પર્શથી યુક્ત હોય છે ?

અભિમાન પદના સમાનાર્થી માનને ઉત્પન્ન કરનારા કર્મનું નામ માન છે અહીં માન સામાન્ય નામ રૂપે તથા મદ આદિ તેના વિશેષનામો રૂપે-પ્રયુક્ત થયાં છે, કારણ કે તેમની ઉત્પત્તિનું કારણ માનપરિણામ જ છે.

एव, तत्र मदो-मत्तता, दर्पः-दृप्तता, स्तम्भः-स्तब्धता, अनम्रतेत्यर्थः, गर्वः-अहङ्कारः, आत्मोत्कर्षः-परापेक्षया आत्मनो गुणैः उत्कृष्टता प्रतिपादनम्, परपरिवादः-परेषामपवदनम् निन्दनम् परेषां परिपातो वा-गुणेभ्यः परिपातनम्, उत्कर्षः-आत्मनः परस्य वा किञ्चित् क्रियया उत्कृष्टताकरणम्, अपकर्षः अभिमानात् स्वापेक्षया परस्य हीनताप्रतिपादनम्, उन्नतः-उच्छिन्ने नतं पूर्वप्रवृत्तं नमनम् अभिमानादेव अथवा उच्छिन्नो नयः नीतिरभिमानात् इति उन्नयः, नयाभावः इतिभावः। उन्नामः-प्रणतस्य अनुप्रवेशा दुन्नमनम्, दुर्नामः-मदादुदुष्टं नमनं दुर्नामः, एष खलु मानादिपरिणतकर्मपुद्गलः कतिवर्णः, कतिगन्धः, कतिरसः, कतिस्पर्शः, प्रज्ञप्तः? भगवानाह-'गोयमा ! पंचवन्ने जहा कोहे तहेव' हे गौतम!

उससे उत्पन्न होते हैं। मत्तता का नाम मद है, दृप्तता का नाम दर्प है, अनम्रता का नाम स्तंभ-स्तब्धता है, अहङ्कार का नाम गर्व है पर की अपेक्षा से अपने को अपने गुणों द्वारा उत्कृष्ट कहना इसका नाम आत्मोत्कर्ष है दूसरों की निन्दा करना, अथवा गुणों से दूसरों को गिराना इसका नाम परपरिवाद है मान से अपनी तथा दूसरे की क्रिया को कुछ उत्कृष्ट कहना इसका नाम उत्कर्ष है, अभिमान में आकर अपनी अपेक्षा दूसरे में हीनता का कथन करना इसका नाम अपकर्ष है अभिमान से पूर्वप्रवृत्त नमन का त्याग करना, अथवा अभिमान से नीति का त्याग करना, इसका नाम उन्नत है, नमस्कार करनेवाले को भी नमस्कार नहीं करना इसका नाम उन्नाम है अभिमान के वशवर्ती होकर दुष्टरीति से नमन करना इसका नाम दुर्नाम है। उत्तर में प्रभु कहते हैं-'गोयमा' हे गौतम! 'पंचविहे जहा कोहे तहेव' मानादि परिणतपुद्गल पांच वर्णों वाला है। इस विषय में जैसा क्रोध-

---

મત્તતાનું નામ મદ છે દૃપ્તતાનું નામ દર્પ છે, અનમ્રતાનું નામ સ્તંભ-સ્તબ્ધતા છે, અહંકારનું નામ ગર્વ છે, અન્ય કરતાં પોતાને ગુણોની અપેક્ષા એ ઉત્કૃષ્ટ કહેવા તેનું નામ આત્મોત્કર્ષ છે, અન્યની નિન્દા કરવી અથવા અન્યમાં દુર્ગુણોનુ આરોપણ કરવું તેનું નામ પરપરિવાદ છે, માનને વશ થઈને અન્યની ક્રિયા કરતાં પોતાની ક્રિયાને ઉત્કૃષ્ટ બતાવવી તેનું નામ ઉત્કર્ષ છે. અભિમાનને કારણે પોતાના કરતાં અન્યમા હીનતા હોવાનું કથન કરવું તેનું નામ અપકર્ષ છે. અભિમાનને કારણે પૂર્વપ્રવૃત્ત નમનનો ત્યાગ કરવો, અથવા અભિમાનને લીધે નીતિનો ત્યાગ કરવો તેનું નામ ઉન્નત છે. નમસ્કાર કરનારને પણ નમસ્કાર ન કરવા, તેનું નામ ઉન્નામ છે. અભિમાનને કારણે દુષ્ટ રીતે નમન કરવું તેનું નામ દુર્નામ છે.

मानादिपरिणतकर्मपुद्गलः पञ्चवर्णः यथाक्रोधः—क्रोधादिपरिणतकर्मपुद्गलः प्रति पादितस्तथैव द्विगन्धः पञ्चरसः, चतुःस्पर्शः प्रतिपत्तव्यः। गौतमः पृच्छति—'अहभंते ! माया१, उवही२, नियडी३, वलये४, गहणे५, णूमे६, कक्के७ कुरुए८, जिम्हे९, किब्विसे१०, आयरणया११, गूहणया१२, वंचणया१३, पलिउंचणया१४, सातिजोगे य१५, एसणं कइवण्णे, कइगंधे कइरसे कइफासे पण्णत्ते?' हे भदन्त ! अथ माया—कपटम् अज्ञानम्—अविद्या, इति सामान्यं नाम, उपध्यादयस्तु तत्प्रभवत्वात् तद्विशेषाः, तत्र उपधिः—उपधीयते—नीयते दुर्गतौ प्राणी येन असौ उपधिः कपटजन्य परप्रतारणरूपाऽऽत्मपरिणतिः। निकृतिः—नितरां

परिणतपुद्गल कहा गया है, उसी प्रकार से यह मानादिपरिणतपुद्गल दो गंधोंवाला, पांच रसोंवाला और चार स्पर्शोंवाला जानना चाहिये।

अब गौतम प्रभु से ऐसा पूछते हैं—'अह भंते ! माया, उवही, नियडी, वलये, गहणे, णूमे कक्के, कुरुए, जिम्हे, किब्बिसे, आयरणया, गूहणया, वंचणया, पलिउंचणया, सातिजोगे य १५, एसणं कइवण्णे, कइगंधे, कइरसे, कइफासे पण्णत्ते' हे भदन्त ! माया कपट, अज्ञान—अविद्या यह सामान्य नाम है और उपधि आदि इससे ही उत्पन्न होने के कारण माया के ही विशेष भेद हैं प्राणी जिसके द्वारा दुर्गति में ले जाया जावे उसका नाम उपधि है प्रतारणीय ठगने योग्य—मनुष्य के पास जाने का कारणभूत भाव का नाम उपधि है।

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર—'गोयमा ! पंच विहे जहा कोहे तहेव" હે ગૌતમ ! માનાદિ પરિણત કર્મપુદ્ગલો પાંચ વર્ણોવાળાં હોય છે ક્રોધપરિણત-પુદ્ગલોના વિષયમાં જેવું કથન પહેલા કરવામાં આવ્યું છે, એવું જ કથન માનાદિ પરિણત પુદ્ગલો વિષે પણ સમજવું એટલે કે તે પુદ્ગલો બે ગંધોવાળાં, પાંચ રસોવાળાં અને ચાર સ્પર્શોવાળાં હોય છે, એવું કથન સમજી લેવું જોઇએ.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન—"अह भंते ! माया, उवही, नियडी वलये, गहणे, णूमे कक्के, कुरुए, जिम्हे, किब्बिसे, आयरणया, गूहणया, वंचणया पलिउंचणया, सातिजोगे य १५, एस णं कइ वण्णे, कइ गंधे, कइ रसे, कइ फासे पण्णत्ते ?"

માયા—કપટ, અજ્ઞાન—અવિદ્યા, આ સામાન્ય નામ છે અને માયાને લીધે જ ઉત્પન્ન થતાં ઉપધિ આદિ ભાવો માયાના જ વિશેષ ભેદ રૂપ છે. જેના દ્વારા જીવને દુર્ગતિમાં લઈ જવામાં આવે છે તે ભાવનું નામ ઉપધિ છે. અથવા પ્રતારણીય (ઠગવાને યોગ્ય) મનુષ્યની પાસે જવાના કારણ ભૂત ભાવનું

करणम् आदरकरणेन परवञ्चनम्, पूर्वकृतमायाप्रच्छादनार्थं वा मायान्तरकरणम्, वल यभावेन वलयमिव वक्रं वचनं चेष्टावा प्रवर्तते स भावो वलयम्, गहनम्—परेषां वञ्चनाय यद् वचनजालं तद्गहनमिव गहनम्, नूमम्—परप्रतारणाय निकृतताया नीचतायाः निम्नस्थानस्य वा आश्रयणम्, कल्कः—जीववधादिरूपं पापं, तन्निमित्तो वञ्चनाभिप्रायः कल्कः इत्युच्यते, कुरूपम्—कुत्सितं यथास्यात्तथा रूपयति—विमोहयति इति कुरूपम्—भाण्डादिकर्ममाया विशेष एव निन्दितरीत्या मोहोत्पादकोऽभिप्रायः जैह्मयम्—येन परवञ्चनाभिप्रायेण जिह्मताक्रियासु कौटिल्यमालम्बते स भावो जैह्मयम् किल्बिषम्—यस्मात् माया-

---

आदर करने द्वारा दूसरों को ठगना इसका नाम निकृति है अथवा पूर्वकृतमाया को छिपाने के लिये दूसरी माया करना इसका भी नाम निकृति है। जिस भाव के वशवर्ती होकर जीव वलय के समान टेढे वचन या टेढी चेष्टा करता है उस भावका नाम वलय है दूसरों को ठगने के लिये ऐसी वचनजाल की रचना करना कि जिससे वह स्वयं न सके इसका नाम गहन है दूसरों को ठगने के लिये नीचता का या नीचे स्थान का—विल्कुल गुप्त स्थान का आश्रयण करना इसका नाम नूम है, जीववधादिरूप पाप का नाम कल्क है, इस निमित्त ठगने का जो अभिप्राय है वह भी कल्क ऐसा कहा जाता है। निन्दितरीति से जो किसी को ठगना होता है वह कुरूप है—जैसे भांड आदि जो क्रियाएँ करते हैं वह यह भी एक माया विशेषरूप होता है क्योंकि इसमें निन्दितरीति से मोहोत्पादन करने का अभिप्राय रहता है। दूसरों को ठगने के जिस अभिप्राय के वशवर्ती होकर मनुष्य अपनी क्रियाओं में

નામ ઉપધિ છે. આદર દ્વારા અન્યને ઠગવા તેનું નામ નિકૃતિ છે કે ભાવને વશવર્તી થઈને જીવ વલયના સમાન વક્રતા યુક્ત ચેષ્ટા કરે છે તેનું નામ વલય છે. અન્યને ઠગવાને માટે તેઓ સમજી ન શકે એવી વચનની જાળની રચના કરવી તેનું નામ 'ગહન' છે. અન્યને ઠગવાને માટે નીચતાનો અથવા નીચા સ્થાનનો—બિલકુલ ગુપ્તસ્થાનનો આધાર લેવો તેનું નામ 'નૂમ છે જીવવધાદિ રૂપ પાપનું નામ કલ્ક છે તે નિમિત્ત ઠગવાનો જે અભિપ્રાય છે તેને પણ કલ્ક કહેવામાં આવે છે. નિંદિત રીતે કોઈને ઠગવાની જે પ્રવૃત્તિ થાય છે તેનું નામ કુરૂપ છે જેમ કે ભાંડ આદિ જે ક્રિયાઓ કરે છે તે પણ એક માયાવિશેષ રૂપ જ હોય છે કારણ કે તેમાં નિંદિત રીતે મોહોત્પાદન કરવામાં આવતું હોય છે. બીજાને ઠગવાના જે ભાવને વશવર્તી થઈને મનુષ્ય પોતાની ક્રિયાઓમાં કુટિલતા લાવે છે, તે ભાવનું

विशेषात् अस्मिन् जन्मनि किल्बिषः-किल्बिषिको भवति स मायाविशेष एव, आदरणम्-यस्मात् मायाविशेषात् कस्यापि वस्तुनः आदरणम् अभ्युपगमं करोति असौ मायाविशेषः आदरणम्, स्वार्थे तल् आदरणता, अथवा-आचरणम्-परवञ्चनाय नानाप्रकारक्रियाणामाचरणम्, अत्रापि स्वार्थे तल् गूहनता, वञ्चनम्-परप्रतारणम्, स्वार्थे तल् वञ्चनता, प्रतिकुञ्चनम्-सरलतया प्रदत्तस्य धनस्य खण्डनम्, स्वार्थे तल् वञ्चनता, सातियोगश्च अविभक्तसम्बन्धः, सातिशयेन वा प्रशस्तेन द्रव्येण निरतिशयस्य अप्रशस्तस्य द्रव्यस्य सम्बन्धः योगः, १५, एतानि पञ्चदशनामानि मायाकषायस्य। एष खलु मायादिपरिणतकर्मपुद्गलः कतिवर्णः कतिगन्धः, कतिरसः, कतिस्पर्शः प्रज्ञप्तः? भगवानाह-'गोयमा! पंचवन्ने जहेव कोहे' हे गौतम! मायादिपरिणतकर्मपुद्गलः पञ्चवर्णः, यथैव क्रोधः प्रतिपादित-

---

जो कुटिलता करता है ऐसे उस भाव का नाम जैह्मयभाव है। जिस मायाविशेष से जीव-करनेवाला व्यक्ति-इस जन्म में किल्बिषक जैसा होता है वह मायाविशेष ही किल्बिष है मायाविशेष के भाव से किसी भी वस्तु का आदर करना-स्वीकार करना-इसका नाम आदरण है-अथवा-दूसरों को ठगने के लिये अनेक प्रकार की क्रियाओं का करना इसका नाम आचरणता है। यहां पर भी आचरण शब्द से स्वार्थ में तलप्रत्यय हुआ है गूहनता-अपने स्वरूपको छुपाना, यहां पर भी गूहन से तलप्रत्यय करने पर "गूहनता" बना है। वंचनता-दूसरों को ठगना यहां पर भी तलप्रत्यय हुआ है-सरलता से कहे गये वचनों को खण्डन करना इसका नाम प्रतिकुंचनता है। उत्तमवस्तु के साथ हीनद्रव्य का सम्बन्ध करना इसका नाम सातियोग है। ये १५ नाम मायाकषाय के हैं। मायादिरूप में परिणत हुआ यह कर्मपुद्गल कितने वर्णोंवाला,

---

નામ 'જૈહ્મયભાવ' છે. જે માયાવિશેષ વડે જીવ (વ્યક્તિ) આ જન્મમાં કિલ્બિષક જેવો થઈ જાય છે,તે માયાવિશેષને જ કિલ્બિષ કહે છે માયાવિશેષ રૂપ ભાવપૂર્વક કોઈ પણ વસ્તુનો આદર કરવો-સ્વીકાર કરવો, તેનું નામ આદરણ છે. અથવા-અન્યને ઠગવાને માટે અનેક પ્રકારની જે ક્રિયાઓ કરવામાં આવે છે, તેનું નામ 'આચરણતા' છે, આચરણને "તા" પ્રત્યય લાગવાથી આ પદ બન્યું છે. પોતાના સ્વરૂપને છુપાવવું તેનું નામ ગૂહનતા છે. અન્યને ઠગવા તેનું નામ વંચનતા છે. સરલતાપૂર્વક કહેવામાં આવેલી વાતનું પણ ખંડન કરવું તેનું નામ પ્રતિકુંચનતા છે સારી વસ્તુમાં હલકી જાતીની વસ્તુનું મિશ્રણ કરવું તેનું નામ સાતિયોગ છે. ઉપધિ આદિ સાતિયોગ પર્યન્તના આ ૧૫ નામો માયાકષાયને માટે જ અહીં વપરાયાં છે. તેમને અનુલક્ષીને ગૌતમસ્વામીનો આ પ્રકારનો પ્રશ્ન છે-હે ભગવન્!

स्तथैव द्विगन्धः, पञ्चरसः, चतुःस्पर्शः प्रज्ञप्तः, गौतमः पृच्छति-'अहभंते! लोभे, इच्छा, मुच्छा, कंखा, गेही, तण्हा, भिज्झा, अभिज्झा, आसासणया, पत्थणया१०, लालप्पणया, कामासा, भोगासा, जीवियासा, मरणासा, नंदीरागे १६ एसणं कइवण्णे, कइगंधे कइरसे, कइफासे पण्णत्ते?' हे भदन्त! अथ लोभः-लिप्सा कितने गंधोंवाला, कितने रसोंवाला, और कितने स्पर्शोंवाला होता है? उत्तर में प्रभु कहते हैं-' गोयमा ' हे गौतम! ' पंचवन्ने जहेव कोहे ' मायादिरूप में परिणत हुआ कर्मपुद्गल, क्रोध की तरह पांच वर्णोंवाला, दो गंधोंवाला, पांच रसोंवाला और चार स्पर्शोंवाला होता है।

अब गौतम स्वामी प्रभु से ऐसा पूछते हैं-' अह भंते! लोभे, इच्छा, मुच्छा, कंखा, गेही, तण्हा, भिज्झा, अभिज्झा, असासणया, पत्थणया, लालप्पणया, कामासा, भोगासा, जीवियासा, मरणासा, नंदीरागे १६ एसणं कइवण्णे, कइगंधे, कइरसे, कइफासे पण्णत्ते' हे भदन्त! लोभ-लिप्सा, मूर्च्छा, कांक्षा, गृद्धि, तृष्णा, भिध्या, अभिध्या; आशंसना, प्रार्थना, लालपनता, कामाशा, भोगाशा, जीविताशा, मरणाशा, और नंदिराग ये सब कितने वर्णोंवाले, कितने गंधोवाले, कितने रसोंवाले और कितने स्पर्शोंवाले होते हैं? लोभ-लिप्सा यह सामान्य है और इच्छा

માયાદિ રૂપે પરિણત થયેલાં કર્મપુદ્ગલો કેટલાં વર્ણવાળાં, કેટલા ગંધોવાળાં, કેટલા રસોવાળાં અને કેટલા સ્પર્શોવાળાં હોય છે.

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-" गोयमा! " હે ગૌતમ! " पंचवन्ने जहेव कोहे " ક્રોધપરિણત પુદ્ગલની જેમ માયાદિ રૂપે પરિણમિત કર્મપુદ્ગલો પણ પાંચ વર્ણોવાળાં, બે ગંધોવાળાં, પાંચ રસોવાળાં અને ચાર સ્પર્શોવાળાં હોય છે.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-" अह भंते! लोभे, इच्छा, मुच्छा, कंखा गेही तण्हा, भिज्झा, अभिज्झा, असासणया, पत्थणया, लालप्पणया, कामासा, भोगासा, जीवियासा, मरणासा, नंदीरागे १६ एसणं कइवण्णे, कइ गंधे, कइ रसे, कइ फासे पण्णत्ते? " હે ભગવન્! લોભ, ઇચ્છા, મૂર્ચ્છા, કાંક્ષા, ગૃદ્ધિ, તૃષ્ણા, ભિધ્યા, અભિધ્યા, આશંસના, પ્રાર્થના, લાલપનતા, કામાશા, ભોગાશા, જીવિતાશા, મરણાશા અને નંદિરાગ આ ૧૬ ભાવો રૂપે પરિણત કર્મપુદ્ગલો કેટલાં વર્ણવાળાં, કેટલા ગંધોવાળાં, કેટલા રસોવાળાં અને કેટલા સ્પર્શોવાળાં હોય છે?

લોભ અથવા લિપ્સા સામાન્ય નામ છે, અને ઇચ્છા આદિ ભાવો તેના

इति सामान्यं नाम, इच्छादयस्तद्विशेषाः, तत्र इच्छा-अभिलाषः, मूर्च्छा-संरक्षण-निरन्तरानुबन्धः, काङ्क्षा-अप्राप्तार्थशंसनम्, गृद्धिः-गार्ध्यम्, प्राप्तार्थेषु आसक्तिः, तृष्णा-प्राप्तार्थानां प्रदानेच्छाया अभावः। भिध्या-अमितः कात्स्न्येन व्याप्त्या विषयाणां ध्यानम्-तदेकाग्रता अभिध्या-पिधानादिवदकारलोपेन भिध्या अभिध्या-नभिध्या-मिथ्यासदृशं भावान्तरम्, तत्र दृढाभिनिवेशो भिध्या, तस्या ध्यानस्वरूपत्वात्, अदृढाभिनिवेशरतु अभिध्या तस्याश्चित्तलक्षणत्वात् चलायमानचित्तस्थितिः ध्यानचित्तयोस्तु परस्परमयं विशेषः 'जं थिरमज्झवसाणं तं झाणं जं चलं तयं चित्तं' छाया-यत् स्थिरमध्यवसानं तद्ध्यानं, यत् चलं तत्

आदि इसके विशेष नाम हैं। अभिलाष का नाम इच्छा है संरक्षण करनेके लिये निरन्तर अभिलाषाका बना रहना इसका नाम मूर्च्छा है अप्राप्तपदार्थ की इच्छा करना इसका नाम कांक्षा है प्राप्तार्थों में अधिक आसक्ति का होना इसका नाम गृद्धि है। प्राप्तपदार्थों का खर्च न हो अर्थात् प्राप्तार्थ को किसी दूसरे के लिये नहीं देने का भाव होना इसका नाम तृष्णा है। विषयों के संग्रह करनेका ही रातदिन ध्यान बना रहना इसका नाम भिध्या है। अदृढ आग्रह-चलायमान चित्त की स्थिति इसका नाम अभिध्या है। दृढ अभिनिवेश का नाम भिध्या यह भिध्या ध्यानरूप होती है और अभिध्या अदृढ अभिनिवेशरूप होती है। अभिध्या चित्तलक्षणवाली कही गई है-अर्थात्-चलायमानस्थितिका नाम अभिध्या है। ध्यान और चित्त में इस प्रकार से फर्क है-'जं थिर मज्झवसाणं तं झाणं जं चलं तयं चित्त' स्थिर अध्यवसाय का नाम ध्यान और

વિશેષનામો રૂપ છે. અભિલાષાને ઈચ્છા કહે છે પ્રાપ્ત પદાર્થના સંરક્ષણને માટે નિરંતર અભિલાષા રાખ્યા કરવી તેનું નામ મૂર્છા છે. અપ્રાપ્ત પદાર્થની ઈચ્છા કરવી તેનું નામ કાંક્ષા છે. પ્રાપ્ત પદાર્થોમાં વધારે પડતી આસક્તિ રાખવી તેનું નામ ગૃદ્ધિ છે. પ્રાપ્ત પદાર્થોનો અન્યને દેવા રૂપ ઉપયોગના અભાવનું નામ તૃષ્ણા છે. વિષયોનો સંગ્રહ કરવામાં જ નિરન્તર લીન રહેવું તેનું નામ 'ભિધ્યા' છે. અદૃઢ આગ્રહ અથવા ચિત્તની ચલાયમાન સ્થિતિનું નામ 'અભિધ્યા' છે. અથવા દૃઢ અભિનિવેશનું નામ ભિધ્યા છે-આ ભિધ્યા ધ્યાન રૂપ હોય છે અને અભિધ્યા અદૃઢ અભિનિવેશ રૂપ હોય છે. અભિધ્યાને ચલાયમાન સ્થિતિવાળી કહી છે. ધ્યાન અને ચિત્ત વચ્ચે આ પ્રકારનો તફાવત છે-"जं थिर मज्झवसाणं तं झाणं, जं चलं तयं चित्तं" સ્થિર અધ્યવસાયનું નામ ધ્યાન છે અને અસ્થિર મનોભાવનું નામ ચિત્ત છે મને મારા

चित्तम् ॥इति। आशंसनम्-मम पुत्रस्य शिष्यस्य वा इदमिदं भूयादित्यादिरूपा आशंसा, स्वार्थे तल् आशंसनता, प्रार्थनम्-परं प्रति इष्टार्थस्य याच्ञामार्गणम् लालपनता-प्रार्थनमेव, भृशं लपनम्-लालपनम्-स्वार्थे तल् लालपनता, कामाशा-इष्टशब्दरूपप्राप्तिवाञ्छा, भोगाशा-इष्टगन्धरसस्पर्शप्राप्तिवाञ्छा, जीविताशा-जीवितव्यवाञ्छा, मरणाशा-कस्याश्चिदवस्थायां मरणवाञ्छा, नन्दिरागः-नन्दौ-समृद्धौ सत्यां रागः-हर्षः नन्दिरागः। एष खलु लोभादिपरिणतकर्मपुद्गलः कति-गन्धः, कतिरसः, कतिस्पर्शः प्रज्ञप्तः ? भगवान् आह-'जहेव कोहे' हे गौतम! लोभादिपरिणतकर्मपुद्गलः यथैव क्रोधः पञ्चवर्णादितया प्रतिपादित स्तथैव अयमपि पञ्चवर्णः, द्विगन्धः, पञ्चरसः, चतुःस्पर्शः प्रतिपत्तव्यः, गौतमः पृच्छति अहंते!

चंचल चित्त का नाम चित्त है। मेरेलिये पुत्र के लिये अथवा शिष्य के लिये यह यह इष्ट वस्तु मिल जावे इस प्रकार से इष्ट अर्थ की इच्छा का होना इसका नाम आशंसना है। दूसरों से इष्ट पदार्थ के प्राप्त होने की याचना करना इसका नाम प्रार्थना है इष्ट वस्तु की प्राप्ति के लिये दूसरे से बारंबार आग्रहपूर्वक प्रार्थना करना इसका नाम लालपनता है। इष्टरूप और इष्ट शब्द को प्राप्त करनेकी चाहना रखना इसका नाम कामाशा है। इष्टरस, इष्टगंध और इष्टस्पर्श को प्राप्त करनेकी चाहना रखना इसका नाम भोगाशा है। अधिकजीने की इच्छा रखना इसका नाम जीविताशा है। किसी भी अवस्था में मरने की चाहना करना इसका नाम मरणाशा है। नन्दि शब्द का अर्थ समृद्धि है नन्दि के होने पर जो हर्ष होता है, यह नन्दिराग है इन लोभ के १६ रूपो में परिणत

પુત્રને, મારા શિષ્યાદિને અમુક ઈષ્ટ વસ્તુની પ્રાપ્તિ થઈ જાય, આ પ્રકારે ઈષ્ટ પદાર્થને પ્રાપ્ત કરવાની ઈચ્છાનું નામ આશંસના છે બીજાની પાસેથી ઈષ્ટ પદાર્થો મેળવવાની યાચના કરવી તેનું નામ પ્રાર્થના છે. કોઈ પણ ઈષ્ટ વસ્તુની અન્યની પાસેથી પ્રાપ્તિ કરવા માટે વારંવાર આગ્રહપૂર્વક પ્રાર્થના કરવી તેનું નામ 'લાલપનતા' છે. ઈષ્ટ રૂપ અને ઈષ્ટ શબ્દને પ્રાપ્ત કરવાની ચાહનાનું નામ કામાશા છે, ઈષ્ટ રસ, ગંધ અને સ્પર્શને પ્રાપ્ત કરવાની ચાહના કરવી તેનું નામ ભોગાશા છે. અધિક જીવવાની આશા રાખવી તેનું નામ મરણાશા છે. નન્દિ એટલે સમૃદ્ધિ સમૃદ્ધિ પ્રાપ્ત થવાથી જે હર્ષ થાય છે તેનું નામ નન્દિરાગ છે ગૌતમ સ્વામીના આ પ્રશ્નનો જવાબ આપતા મહાવીર પ્રભુ કહે છે કે-હે ગૌતમ! લોભના ઉપર્યુક્ત ૧૬ રૂપે પરિણમિત

पेज्जे, दोसे, कलहे जाव मिच्छादंसणसल्ले, एस णं कइवण्णे, कइगंधे, कइरसे, कइफासे पण्णत्ते ?' हे भदन्त ! अथ प्रेम-पुत्रकलत्रादिविषयकः स्नेहः, द्वेषः-अप्रीतिः, कलहः-प्रणयहासादिजन्ययुद्धम्, यावत्-'अब्भक्खाणे पेसुन्ने, अरइरई, परपरिवाए, मायामोसे' अभ्याख्यानम्-असद्दोषारोपणम्, पैशून्यम्, अरतिरतिः धर्मेऽरुचिः विषये रुचिः, परपरिवादः-परनिन्दा, मायामृषा-कपटपूर्वकमिथ्या-

हुआ कर्मपुद्गल हे गौतम ! क्रोध की तरह पांच वर्णोंवाला, दो गंधोंवाला, पांच रसोंवाला और चारस्पर्शोंवाला होता है ।

अब गौतम प्रभु से ऐसा पूछते हैं-'अह भंते ! पेज्जे, दोसे, कलहे जाव मिच्छादंसणसल्ले-एसणं कइवण्णे, कइगंधे, कइरसे, कइफासे पण्णत्ते' हे भदन्त ! पुत्रकलत्र आदि विषयक जो स्नेह होता है वह, तथा द्वेष, कलह, यावत् मिथ्यादर्शनशल्य८ ये सब कितने वर्णवाले, कितने गंधवाले, कितने रसवाले और कितने स्पर्शवाले होते हैं ? अप्रीति का नाम द्वेष है, प्रणय एवं हास्य आदि से जो आपस में मनमुटाव हो जाता है उसका नाम कलह है-यहां यावत् शब्द से 'अब्भक्खाणे, पेसुन्ने, अरइरई, परपरिवाए, मायामोसे' इस पाठका संग्रह हुआ है, असद्दोषों का आरोपण करना इसका नाम अभ्याख्यान है, चुगली करना इसका नाम पैशुन्य है धर्ममें अरुचि और विषयमें रुचि रखना इसका नाम अरतिरति है। दूसरों की निन्दा करना इसका नाम पर-

થયેલાં કર્મપુદ્ગલો પાંચ વર્ણોવાળાં, બે ગંધોવાળાં, પાંચ રસોવાળાં અને ચાર સ્પર્શોવાળાં હોય છે.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-" अह भंते ! पेज्जे, दोसे, कलहे जाव मिच्छादंसणसल्ले एसणं कइ वण्णे, कइ गंधे, कइ रसे, कइ फासे पण्णत्ते ?" હે ભગવન્ ! પુત્રપુત્રી આદિ વિષયક જે સ્નેહ હોય છે તે સ્નેહરૂપે પરિણત કર્મપુદ્ગલો, તથા દ્વેષ, કલહ અને મિથ્યાદર્શનશલ્યપર્યન્તના ભાવો રૂપે પરિણત કર્મપુદ્ગલો કેટલા વર્ણવાળાં, કેટલા ગંધોવાળાં, કેટલા રસોવાળાં અને કેટલા સ્પર્શોવાળાં હોય છે ? અપ્રીતિને દ્વેષ કહે છે પ્રણય અને હાસ્ય આદિને કારણે અરસપરસની વચ્ચે અણબનાવ થાય છે તેનું નામ કલહ છે. સૂત્રમાં કલહ પદ પછી જે 'યાવત્' પદ વપરાયું છે તેના દ્વારા " अब्भक्खाणे, पेसुन्ने, अरइरई मायामोसे " આ પાંચ પદોનો સમાવેશ થયો છે જે દોષોનો સદ્ભાવ ન હોય તે દોષોનું કોઈ વ્યક્તિમાં આરોપણ કરવું, તેને અભ્યાખ્યાન કહે છે. ચાડી કરવી તેનું નામ પૈશુન્ય છે. ધર્મ પ્રત્યે અરુચિ અને વિષયો પ્રત્યે રુચિ રાખવી તેનું નામ અરતિરતિ

भाषणम्, मिथ्यादर्शनशल्यः-कुदेवकुगुरुकुधर्मश्रद्धानम्, एष खलु प्रेमादिपरिणत-कर्मपुद्गलः कतिवर्णः, कतिगन्धः, कतिरसः कतिस्पर्शः, प्रज्ञप्तः? भगवानाह-'जहेव कोहे तहेव चउफासे' हे गौतम! प्रेमादिपरिणतकर्मपुद्गलो यथैव क्रोधः पञ्चवर्णादितया प्रतिपादितस्तथैव पञ्चवर्णः, द्विगन्धः, पञ्चरसः, चतु-स्पर्शः प्रतिपत्तव्यः इति भावः ॥सू० १॥

प्राणातिपातादि विरमणवक्तव्यता ॥

मूलम्-अह णं भंते! पाणाइवायवेरमणे जाव परिग्गहवेर-मणे कोहविवेगे जाव मिच्छादंसणसल्लविवेगे, एस णं कइ-वन्ने जाव कइफासे पण्णत्ते? गोयमा! अवण्णे, अगंधे, अरसे, अफासे पण्णत्ते! अहभंते! उप्पत्तिया, वेणइया कम्मिया, परिणा-मिया, एसणं कइवन्ना, तंचेव जाव अफासा पण्णत्ता। अह-भंते! उग्गहे, ईहा, अवाए, धारणा, एसणं कइवण्णा? एवं चेव जाव अफासा पन्नत्ता। अह भंते! उट्ठाणे, कम्मे, बले, वीरिए, पुरिसकारपरक्कमे, एसणं कइवण्णे? तं चेव जाव अफासे पण्णत्ते। सत्तमेणं भंते! उवासंतरे कइवण्णे? एवं चेव जाव

परिवाद है कपटपूर्वक मिथ्याभाषण करना इसका नाम मायामृषावाद है कुदेव, कुगुरु, और कुधर्म में श्रद्धा रखना इसका नाम मिथ्यादर्शन-शल्य है, उत्तर में प्रभु कहते हैं-'जहेव कोहे तहेव चउफासे' हे गौतम! प्रेमादिरूप से परिणत हुआ कर्मपुद्गल क्रोध की तरह पांच वर्णोंवाला, दो गंधोवाला, पांच रसोंवाला और चार स्पर्शोंवाला होता है ॥सू० १॥

છે. અન્યની નિન્દા કરવી તેનું નામ પરપરિવાદ છે. કપટપૂર્વક મિથ્યા ભાષણ કરવું તેનું નામ માયામૃષાવાદ છે કુદેવ, કુગુરુ અને કુધર્મમાં શ્રદ્ધા રાખવી તેનું નામ મિથ્યાદર્શન શલ્ય છે.

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-"जहेव कोहे तहेव चउफासे" હે ગૌતમ! સ્નેહાદિ રૂપે પરિણમિત થયેલાં કર્મપુદ્ગલો પણ ક્રોધ રૂપે પરિણત કર્મપુદ્ગલોની જેમ પાંચ વર્ણોવાળાં, બે ગન્ધોવાળાં, પાંચ રસોવાળાં અને ચાર સ્પર્શોવાળાં હોય છે ॥સૂ૦૧॥

अफासे पण्णत्ते। सत्तमेणं भंते ! तणुवाए कइवण्णे ? जहा पाणाइवाए, नवरं अट्ठफासे, एवं जहा सत्तमे तणुवाए तहा सत्तमे घणवाए, घणोदही पुढवी, छट्ठे उवासंतरे अवण्णे, तणुवाए जाव छट्ठी पुढवी, एयाइं अट्ठ फासाइं, एवं जहा सत्तमाए पुढवीए वत्तव्वया भणिया तहा जाव पढमाए पुढवीए भाणियव्वा, जंबुद्दीवे दीवे सयंभुरमणे समुद्दे सोहम्मे कप्पे, जाव ईसिपब्भारा पुढवी नेरइयावासा जाव वेमाणियावासा इयाणि सव्वाणि अट्ठ फासाणि। नेरइयाणं भंते! कइवन्ना, जाव कइफासा पण्णत्ता ? गोयमा! वेउव्वियतेयाइं पडुच्च पंचवन्ना, पंचरसा, दुगंधा, अट्ठ फासा पण्णत्ता, कम्मगं पडुच्च पंचवन्ना, पंचरसा, दुगंधा, चउफासा पण्णत्ता। जीवं पडुच्च अवन्ना जाव अफासा पण्णत्ता, एवं जाव थणियकुमारा। पुढविकाइयपुच्छा, गोयमा! ओरालियतेयगाइं पडुच्च पंचवन्ना, जाव अट्ठफासा पण्णत्ता, कम्मगं पडुच्च जहा नेरइया, जीवं पडुच्च तहेव, एवं जाव चउरिंदिया, नवरं वाउक्काइया ओरालियवेउव्वियतेयगाइं पडुच्च पंचवन्ना, जाव अट्ठफासा पण्णत्ता, सेसं जहा नेरइयाणं। पंचिंदिया तिरिक्खजोणिया जहा वाउक्काइया। मणुस्साणं पुच्छा, ओरालियवेउव्वियआहारगतेयगाइं पडुच्च पंचवन्ना, जाव अट्ठफासा पण्णत्ता। कम्मगं जीवं च पडुच्च जहा नेरइया, वाणमंतरजोइसियवेमाणिया जहा नेरइया, धम्मत्थिकाए जाव पोग्गलत्थिकाए एए सव्वे अवण्णा नवरं

पोग्गलत्थिकाए पंचवण्णे, पंचरसे, दुगंधे, अट्ठफासे पण्णत्ते। णाणावरणिज्जे जाव अंतराइए, एयाणि चउफासाणि। कण्हलेस्सा णं भंते ! कइवण्णा, कइगंधा, कइरसा, कइफासा, पुच्छा ? दव्वलेस्सं पडुच्च पंचवन्ना, जाव अट्ठफासा पण्णत्ता भावलेसं पडुच्च अवण्णा, अरसा, अगंधा, अफासा, एवं जाव सुक्कलेस्सा, सम्मदिट्ठी, मिच्छादिट्ठी, सम्मामिच्छादिट्ठी। चक्खुदंसणे,४। आभिणिबोहियणाणे जाव विब्भंगणाणे आहारसन्ना जाव परिग्गहसन्ना, एयाणि अवण्णाणि अरसाणि, अगंधाणि, अफासाणि, ओरालियसरीरे जाव तेयगसरीरे एयाणि अट्ठ फासाणि। कम्मगसरीरे चउफासे। मणजोगे वयजोगे य चउफासे। कायजोगे अट्ठफासे। सागारोवओगे य अणागारोवओगे य अवन्ने। सव्वद्दव्वा णं भंते! कइवन्ना ? पुच्छा, गोयमा ! अत्थे गइया सव्वदव्वा पंचवण्णाजाव अट्ठफासा पण्णत्ता, अत्थेगइया सव्व दव्वा पंचवण्णा, चउफासा पण्णत्ता, अत्थेगइया सव्वदव्वा एकगंधा एगवण्णा, एगरसा, दुफासा पण्णत्ता, अत्थेगइया सव्वदव्वा अवण्णा, जाव अफासा पण्णत्ता, एवं सव्व पएसा वि, सव्व पज्जवा वि. तीयद्धा अवण्णा जाव अफासा पण्णत्ता, एवं अणागयद्धा वि, एवं सव्वद्धा वि ॥सू० २॥

छाया—अथ भदन्त ! प्राणातिपातविरमणम्, यावत् परिग्रहविरमणम्, क्रोधविवेकः, यावत् मिथ्यादर्शनशल्यविवेकः, एष खलु कतिवर्णः, यावत् कतिस्पर्शः प्रज्ञप्तः ? गौतम ! अवर्णः, अगन्धः, अरसः, अस्पर्शः, प्रज्ञप्तः, अथ भदन्त ! औत्पत्तिकी, वैनयिकी, कार्मिकी, पारिणामिकी, एषा खलु कतिवर्णा ? तच्चैव यावत् अस्पर्शा, प्रज्ञप्ता, अथ भदन्त ! अवग्रहः, ईहा, अवायः, धारणा, एषा खलु कतिवर्णा ? एवं चैव यावत् अस्पर्शा प्रज्ञप्ता, अथ भदन्त ! उत्थानं, कर्म, बलम्,

वीर्यम्, पुरुषकारपराक्रमः, एष खलु कतिवर्णः ? तच्चैव यावत्, अस्पर्शः प्रज्ञप्तः, सप्तमं खलु भदन्त ! अवकाशान्तरं कतिवर्णम् ? एवं चैव यावत् अस्पर्शम् प्रज्ञप्तम्, सप्तमः खलु भदन्त ! तनुवातः कतिवर्णः ? यथा प्राणातिपातः, नवरम् अष्टस्पर्शः, प्रज्ञप्तः, एवं यथा सप्तमस्तनुवातस्तथा सप्तमो घनवातः, घनोदधिः, पृथिवी, षष्ठम् अवकाशान्तरम् अवर्णम्, तनुवातो यावत् षष्ठी पृथिवी, एतानि अष्टस्पर्शानि, एवं यथा सप्तम्याः पृथिव्याः वक्तव्यता भणिता, तथा यावत् मघमायाः पृथिव्याः भणितव्यम्, जम्बूद्वीपो द्वीपः, स्वयम्भूरमणः समुद्रः, सौधर्मः कल्पो यावत् ईषत्प्राग्भारा पृथिवी, नैरयिकावासाः, यावत् वैमानिकावासाः, एतानि सर्वाणि अष्टस्पर्शानि, नैरयिकाः खलु भदन्त ! कतिवर्णाः यावत् कतिस्पर्शाः, प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! वैक्रियतैजसानि प्रतीत्य पञ्चवर्णाः, पञ्चरसाः, द्विगन्धाः, अष्टस्पर्शाः, प्रज्ञप्ताः, कार्मणं प्रतीत्य पञ्चवर्णाः, पञ्चरसाः, द्विगन्धाः, चतुःस्पर्शाः, प्रज्ञप्ताः, जीवं प्रतीत्य अवर्णाः यावत् अस्पर्शाः, प्रज्ञप्ताः, एवं यावत् स्तनितकुमाराः, पृथिवीकायिक-पृच्छा, गौतम ! औदारिक, तैजसानि प्रतीत्य पञ्चवर्णाः यावत् अष्टस्पर्शाः, प्रज्ञप्ताः, कार्मणं प्रतीत्य यथा नैरयिकाः, जीवं प्रतीत्य तथैव, एवं यावत् चतुरिन्द्रियाः, नवरं वायुकायिकाः औदारिकवैक्रियतैजसानि प्रतीत्य पञ्चवर्णाः यावत्-अष्टस्पर्शाः, प्रज्ञप्ताः, शेषं यथा नैरयिकाणाम्, पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः यथा वायुकायिकाः, मनुष्याः खलु पृच्छा, औदारिकवैक्रियाहारकतैजसानि प्रतीत्य पञ्चवर्णाः, यावत् अष्टस्पर्शाः, प्रज्ञप्ताः ? कार्मणं जीवं च प्रतीत्य यथा नैरयिकाः, वानव्यन्तरज्योतिषिकवैमानिका यथा नैरयिकाः, धर्मास्तिकायः, यावत् पुद्गलास्तिकायः एते सर्वे अवर्णाः नवरम् पुद्गलास्तिकायः पञ्चवर्णः, पञ्चरसः, द्विगन्धः, अष्टस्पर्शः, प्रज्ञप्तः, ज्ञानावरणीयम्, यावत्-आन्तरायिकम् एतानि चतुःस्पर्शानि, कृष्णलेश्या खलु भदन्त ! कतिवर्णा ? कतिगंधा कतिरसा कतिस्पर्शा पृच्छा, द्रव्यलेश्यां प्रतीत्य पञ्चवर्णा, यावत् अष्टस्पर्शा, प्रज्ञप्ता, भावलेश्यां प्रतीत्य अवर्णी, अरसा, अगन्धा, अस्पर्शा, एवं यावत् शुक्ललेश्या, सम्यग्दृष्टिः, मिथ्यादृष्टिः, सम्यग्मिथ्यादृष्टिः, चक्षुर्दर्शनम् ४, आभिनिबोधिक ज्ञानं यावत् विभङ्गज्ञानम्, आहारसंज्ञा, यावत् परिग्रहसंज्ञा, एतानि अवर्णानि, अरसानि, अगन्धानि, अस्पर्शानि, औदारिकशरीरं यावत् तैजसशरीरम्, एतानि अष्टस्पर्शानि, कार्मणशरीरं चतुःस्पर्शम्, मनोयोगः, वचोयोगश्च चतुःस्पर्शः, काययोगः अष्ट स्पर्शः, साकारोपयोगश्च अनाकारोपयोगश्च अवर्णः, सर्वद्रव्याणि खलु भदन्त ! कतिवर्णानि ? पृच्छा, गौतम ! अस्त्येककानि सर्वद्रव्याणि पञ्चवर्णानि, यावत् अष्टस्पर्शानि, प्रज्ञप्तानि, अस्त्येककानि सर्वद्रव्याणि पञ्चवर्णानि चतुःस्पर्शानि प्रज्ञप्तानि अस्त्येककानि सर्वद्रव्याणि

एकगन्धानि, एकवर्णानि, एकरसानि, द्विस्पर्शानि प्रज्ञप्तानि, अस्त्येककानि सर्वद्रव्याणि अवर्णानि यावत् अस्पर्शानि प्रज्ञप्तानि, एवं सर्वप्रदेशा अपि, सर्वपर्यवा अपि, अतीताद्धा अवर्णा यावत् अस्पर्शा प्रज्ञप्ता, एवम् अनागताद्धापि एवं सर्वाद्धापि ॥सू० २॥

टीका—अथ प्राणातिपाताद्यष्टादशपापानां वर्णादिकं निरूपितम् तत्प्रसङ्गात् तद्विरमणानां वर्णादिकं प्ररूपयितुमाह—'अहभंते' इत्यादि, 'अहभंते पाणाइवायवेरमणे कोहविवेगे जाव मिच्छादंसणसल्लविवेगे, एसणं कइवन्ने जाव कइफासे पण्णत्ते ?' गौतमः पृच्छति—'हे भदन्त ! अथ प्राणातिपातविरमणम्, यावत्—मृषावादविरमणम्, अदत्तादानविरमणम्, मैथुनविरमणम्, परिग्रहविरमणम्, क्रोधविवेकः—क्रोधत्यागः, यावत्—मानमायालोभरागद्वेषकलहाभ्याख्यानपैशुन्यपरपरिवादमायामृषारूपाणां सप्तदशानां विवेकः तथा मिथ्यादर्शनशल्यविवेकः,

---

प्राणातिपातादिविरमणवक्तव्यता

'अह णं भंते ! पाणाइवायवेरमणे जाव' इत्यादि

टीकार्थ—इसके पहिले प्राणातिपात आदि १८ पापों का वर्णादिक कहा जा चुका है, सो उसी प्रसङ्ग को लेकर प्राणातिपात विरमण आदि के अब वर्णादिकों की प्ररूपणा सूत्रकार इस सूत्रद्वारा कर रहे हैं 'अह भंते! पाणाइवायवेरमणे जाव परिग्गहवेरमणे, कोहविवेगे जाव मिच्छादंसणसल्लविवेगे, एस णं कइवण्णे जाव कइ फासे पण्णत्ते' इसमें गौतम ने प्रभु से ऐसा पूछा है—हे भदन्त ! प्राणातिपातविरमण यावत् मृषावादविरमण, अदत्तादानविरमण, मैथुनविरमण, परिग्रहविरमण, क्रोध का त्याग यावत् मान, माया, लोभ, राग, द्वेष, कलह, अभ्याख्यान, पैशुन्य परपरिवाद एवं मायामृषा इनका त्याग तथा मिथ्यादर्शनशल्य का त्याग—इस प्रकार से यह प्राणातिपातविरमण से

પ્રાણાતિપાતાદિ વિરમણવક્તવ્યતા—

" अहणं भंते ! पाणाइवायवेरमणे " ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ—પૂર્વ સૂત્રમાં પ્રાણાતિપાત આદિ ૧૮ પાપોનાં વર્ણાદિનું કથન કરવામાં આવ્યું, હવે પ્રાણાતિપાત વિરમણ આદિના વર્ણાદિની સૂત્રકાર પ્રરૂપણા કરે છે.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન—" अह भंते ! पाणाइवायवेरमणे जाव परिग्गहवेरमणे, कोहविवेगे जाव मिच्छादंसणसल्लविवेगे, एसणं कइ वण्णे जाव कइ फासे पण्णत्ते ? " હે ભગવન્ ! પ્રાણાતિપાતવિરમણ, મૃષાવાદવિરમણ, અદત્તાદાનવિરમણ, મૈથુનવિરમણ, પરિગ્રહવિરમણ, ક્રોધવિરમણ, માન-માયા—લોભ—રાગ દ્વેષ,—કલહ—અભ્યાખ્યાન—પૈશુન્ય—રતિ પરિવાદ—અને માયામૃષાવાદવિરમણ, તથા મિથ્યાદર્શનશલ્યવિરમણ, આ પ્રકારના પ્રાણાતિપાત વિરમણથી લઇને મિથ્યા-

एष खलु प्राणातिपातविरमणादि मिथ्यादर्शनशल्यविवेकान्ताष्टादशपापत्यागः, कतिवर्णः, यावत् कतिगन्धः, कतिरसः, कतिस्पर्शः प्रज्ञप्तः ? भगवानाह-'गोयमा! अवन्ने, अगंधे, अरसे, अफासे पण्णत्ते' हे गौतम! प्राणातिपातविरमणादिः, अवर्णः-वर्णरहितः, अगन्धः-गन्धवर्जितः, अरसः-रसरहितः, अस्पर्शः-स्पर्शवर्जितः प्रज्ञप्तः, प्राणातिपातविरमणादीनां जीवोपयोगस्वरूपतया जीवोपयोगस्य चामूर्तत्वात्-प्राणातिपातविरणादीनामपि अमूर्तत्वेन वर्णादिरहितत्वात्, इतिभावः।

लेकर मिथ्यादर्शनशल्य त्याग तक जो अठारह प्रकार के पापका विरमण-त्याग है वह कितने वर्णोंवाला है ? कितने गंधवाला है ? कितने रसोंवाला है ? और कितने स्पर्शोंवाला है ? पूछने का तात्पर्य संक्षेप से ऐसा है कि १८ पापस्थानों का त्याग-रूप जो आत्मा का परिणाम है-वह कितने वर्णादिकोंवाला है ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-'गोयमा' हे गौतम! 'अवन्ने, अगंधे, अरसे, अफासे पण्णत्ते' प्राणातिपातविरमण आदि जो हैं सो न वर्णवाले हैं, न गंधवाले हैं, न रसवाले हैं, और न स्पर्शवाले हैं-कहने का तात्पर्य ऐसा है कि प्राणातिपातविरमण आदि आत्मा के उपयोगरूप होते हैं और उपयोग आत्मा का लक्षण है-अतः वह अमूर्त कहा गया है इसलिये जब प्राणातिपातविरमण आदि आत्मा के उपयोग स्वभाव रूप हैं तब ये भी अमूर्त ही हैं-और अमूर्त होने के कारण इनमें वर्ण, गंध, रस और स्पर्श ये पौद्गलिक गुण नहीं हैं।

દર્શનશલ્યવિરમણ પર્યન્તના ૧૮ પ્રકારના પાપના વિરમણ (ત્યાગ) રૂપ જે ભાવો છે, તે કેટલાં વર્ણોવાળાં, કેટલા ગંધોવાળાં, કેટલા રસોવાળાં અને કેટલા સ્પર્શોવાળાં હોય છે ?

આ પ્રશ્નનો ભાવાર્થ એ છે કે ૧૮ પાપસ્થાનોના ત્યાગ રૂપ જે આત્માનું પરિણામ છે, તે કેટલાં વર્ણાદિકોવાળું છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-" गोयमा ! " હે ગૌતમ ! " अवण्णे, अगंधे, अरसे, अफासे पण्णत्ते " પ્રાણાતિપાતવિરમણ આદિ આત્મપરિણામો વર્ણવાળાં પણ નથી, ગંધવાળાં પણ નથી, રસવાળાં પણ નથી અને સ્પર્શવાળાં પણ નથી.

આ પ્રકારના કથનનું કારણ એ છે કે પ્રાણાતિપાતવિરમણ આદિ પરિણામો આત્માના ઉપયોગ રૂપ જ હોય છે, અને ઉપયોગ આત્માનું લક્ષણ છે, તેથી તેને અમૂર્ત માનવામાં આવે છે. તેથી પ્રાણાતિપાતવિરમણ આદિને આત્માના ઉપયોગસ્વભાવ રૂપ માનવાને કારણે, આ અઢારે પાપસ્થાનોના ત્યાગ રૂપ પરિણામોને અમૂર્ત જ માનવામાં આવે છે. અમૂર્ત હોવાને કારણે તેઓ વર્ણ, ગંધ, રસ અને સ્પર્શ રૂપ પૌદ્ગલિક ગુણોવાળાં હોતાં નથી.

अथ जीवस्वरूपविशेषमेवाधिकृत्य गौतमः पृच्छति-अहभंते ! उप्पत्तिया, वेणइया, कम्मिया, पारिणामिया, एस णं कइवन्ना ? हे भदन्त ! अथ औत्पत्तिकी-उत्पत्तिरेव प्रयोजनं यस्याः सा औत्पत्तिकी स्वभावाज्जायमाना बुद्धिः सा हि अन्यच्छास्त्र-कर्माभ्यासादिकं नापेक्षते, क्षयोपशमप्रयोजनं तु सर्वबुद्धिसाधारणम् वर्तते अत स्तन्नात्र विवक्षितम् १। वैनयिकी-विनयो गुरुशुश्रूषा शास्त्राभ्यासादिः स कारण-मस्याः, तत्प्रधाना वा, बुद्धिः-वैनयिकी२। कार्मिकी कर्म अनाचार्यकम्, साचा-र्यकं शिल्पं कादाचित्कं वा कर्म तस्माज्जाता कार्मिकीबुद्धिः३, पारिणामिकी-

अब गौतम जीव के स्वरूप विशेष को लेकर प्रभु से ऐसा पूछते हैं-' अह भंते ! उप्पत्तिया, वेणइया, कम्मिया, पारिणामिया, एस णं कइवन्ना ' हे भदन्त ! औत्पत्तिकी, वैनयिकी, कार्मिकी और पारिणा-मिकी ये जो चार बुद्धियां हैं-वे कितने वर्णोंवाली हैं ? कितने गन्धों-वाली हैं ? कितने रसोंवाली हैं और कितने स्पर्शोंवाली हैं ? उत्पत्ति यही जिसका प्रयोजन है, परन्तु जिसे शास्त्र, कर्म और अभ्यास आदि की अपेक्षा नहीं है वह औत्पत्तिकी बुद्धि है यह बुद्धि स्वभाव से ही उत्पन्न होती है यद्यपि ज्ञानावरणीय कर्म का क्षयोपशमरूप प्रयोजन सर्व बुद्धियों में सापेक्ष होता है परन्तु उसकी यहां विवक्षा नहीं है। जिस बुद्धि में गुरु विनय-गुरुसेवा, शास्त्राभ्यास आदि कारणभूत हैं वह वैनयिकी बुद्धि है-कर्म-अनाचार्यक, अथवा साचार्यक शिल्प रूप कर्म से जो बुद्धि उत्पन्न होती है वह कार्मिकी बुद्धि है। चिरकालतक

હવે ગૌતમ સ્વામી જીવના સ્વરૂપવિશેષને અનુલક્ષીને મહાવીર પ્રભુને એવો પ્રશ્ન પૂછે છે કે-" अह भंते ! उप्पत्तिया, वेणइया, कम्मिया, पारिणामिया, एसणं कइ वण्णा ?" હે ભગવન્ ! ઔત્પત્તિકી, વૈનયિકી, કાર્મિકી અને પારિ-ણામિકી, આ ચાર જે બુદ્ધિઓ છે, તે કેટલા વર્ણવાળી, કેટલી ગંધવાળી, કેટલા રસવાળી અને કેટલા સ્પર્શવાળી કહી છે ?

આ બુદ્ધિઓનું સ્વરૂપ આ પ્રકારનું છે-ઉત્પત્તિ એજ જેનું પ્રયોજન છે, પરન્તુ જેને શાસ્ત્ર, કર્મ અને અભ્યાસ આદિની અપેક્ષા રહેતી નથી, એવી બુદ્ધિનું નામ ઔત્પત્તિકી બુદ્ધિ છે. આ બુદ્ધિ સ્વાભાવિક રીતે જ ઉત્પન્ન થાય છે. જો કે જ્ઞાનાવરણીય કર્મના ક્ષયોપશમ રૂપ પ્રયોજન તો સર્વ બુદ્ધિઓમાં સાપેક્ષ હોય છે, પરન્તુ અહીં તેની વાત કરી નથી. જે બુદ્ધિની પ્રાપ્તિમાં ગુરુવિનય-ગુરુની સેવા, શાસ્ત્રાભ્યાસ આદિ કારણભૂત હોય છે, તે બુદ્ધિને વૈનયિકી બુદ્ધિ કહે છે, કર્મ-અનાચાર્યક અથવા સાચાર્યક શિલ્પરૂપ

परि-समन्तात्-नमनं परिणामः-चिरकालपूर्वापरार्थावलोकनपरिशीलनजन्यः आत्मधर्मः, स कारणं यस्याः सा पारिणामिकी बुद्धिः४। एताः खलु चतस्रो बुद्धयः कतिवर्णाः, कतिगन्धाः, कतिरसाः, कतिस्पर्शाः प्रज्ञप्ताः? भगवानाह-'तं चेव जाव अफासा पन्नता' हे गौतम! तदेव-पूर्वोक्तप्राणातिपातविरमणादिवदेव औत्पत्तिक्यादिबुद्धयोऽपि यावत्-अवर्णाः, अगन्धाः, अरसाः, अस्पर्शाः प्रज्ञप्ताः, तासां जीवस्वभावत्वेन अमूर्ततया वर्णादिरहितत्वात्। अथ जीवधर्माधिकारात् अवग्रहादि जीवधर्मस्वरूपं प्ररूपयितुमाह-गौतमः पृच्छति-'अहभंते! उग्गहे, ईहा, अवाये, धारणा, एस णं कइवन्ना?' हे भदन्त! अथ अवग्रह-सामान्यज्ञानम्, ईहा-विचारणा, अवायः-निश्चयः, धारणा-स्मृतिः उपयोगसातत्यं वा

पूर्वापर अर्थ के अवलोकन परिशीलन से उत्पन्न जो आत्मधर्म वह जिसका कारण होता है वह पारिणामिकी बुद्धि है। इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-'तंचेव जाव अफासा पन्नत्ता' हे गौतम! पूर्वोक्त प्राणातिपातविरमण आदि की तरह ही औत्पत्तिकी आदि बुद्धियां भी यावत् वर्णरहित हैं, गंधरहित हैं, रसरहित हैं, और स्पर्शरहित हैं! क्यों कि ये जीव के स्वभावरूप होने के कारण अमूर्त होती हैं-अतः इनमें वर्ण, गंध, रस और स्पर्श नहीं होते हैं।

अब गौतम जीवधर्म को लेकर अवग्रहादि रूप धर्म के विषय में प्रभु से ऐसा पूछते हैं-'अह भंते! उग्गहे, ईहा, अवाये, धारणा, एस णं कइवन्ना' हे भदन्त! अवग्रह, ईहा, अवाय और धारणा ये जो मतिज्ञान के भेद हैं-वे कितने वर्णोंवाले, कितने गंधोंवाले, कितने रसोंवाले

કર્મ-દ્વારા જે બુદ્ધિની ઉત્પત્તિ થાય છે, તે બુદ્ધિને કાર્મિકી બુદ્ધિ કહે છે. ચિર કાળ પર્યંત પૂર્વાપર અર્થના અવલોકન પરિશીલન વડે ઉત્પન્ન થયેલી જે બુદ્ધિ છે, તેને પારિણામિકી બુદ્ધિ કહે છે.

ગૌતમ સ્વામીના પ્રશ્નનો ઉત્તર આપતા મહાવીર પ્રભુ કહે છે કે-"तंचेव जाव अफासा पण्णत्ता" હે ગૌતમ! પૂર્વોક્ત પ્રાણાતિપાતવિરમણ આદિની જેમ ઔત્પત્તિકી આદિ બુદ્ધિઓ પણ વર્ણરહિત, ગંધરહિત, રસરહિત અને સ્પર્શરહિત કહી છે, કારણ કે તેઓ જીવના સ્વભાવ રૂપ હોવાને કારણે અમૂર્ત હોય છે. તે કારણે તેમનામાં વર્ણ, ગંધ, રસ અને સ્પર્શ રૂપ પૌદ્ગલિક ગુણો હોતા નથી. હવે ગૌતમ સ્વામી અવગ્રહ આદિ રૂપ જીવધર્મો વિષે મહાવીર પ્રભુને આ પ્રકારનો પ્રશ્ન પૂછે છે-"अह भंते! उग्गहे, ईहा, अवाये, धारणा, एस णं कइ वण्णा?" હે ભગવન્! અવગ્રહ, ઈહા, અવાય અને ધારણા રૂપ મતિજ્ઞાનના જે ચાર ભેદો છે, તેમનામાં કેટલાં વર્ણો, કેટલા

एते-अवग्रहादि धारणान्ताः मतिज्ञानभेदाः, खलु कतिवर्णाः, कतिगन्धाः कतिरसाः, कतिस्पर्शाः प्रज्ञप्ताः? भगवानाह-'एवं चेव जाव अफासा पन्नता' हे गौतम! एवमेव-पूर्वोक्तरीत्यैव, अवग्रहादिधारणान्ताश्चत्वारः यावत्-अवर्णाः, अगन्धाः, अरसाः, अस्पर्शाः प्रज्ञता। एतेषामपि चतुर्णाम् जीवधर्मतया अमूर्तत्वेन वर्णादिरहितत्वादिति भावः। अथ गौतमो जीवधर्माधिकारात् उत्थानादि स्वरूपं प्ररूपयितुमाह-गौतमः पृच्छति-'अहभंते! उट्ठाणे कम्मे, बले वीरिए, पुरिसकारपरक्कमे, एसणं कइवण्णे०?' हे भदन्त! अथ उत्थानम्-ऊर्ध्वभवनरूपकल्प-

और कितने स्पर्शों वाले हैं? सामान्यज्ञान का नाम या अत्यन्तसूक्ष्मज्ञान का नाम अवग्रहज्ञान है अवग्रह के बाद निर्णय के सन्मुख झूकते हुए ज्ञान का नाम ईहा है। निश्चय जिस ज्ञान में हो जावे उसका नाम अवाय है और कालान्तर में अविस्मरण होने का नाम धारणा है। इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-'एवं चेव जाव अफासा पन्नत्ता' हे गौतम! पूर्वोक्त रीति के अनुसार अवग्रह से लेकर धारणापर्यन्त मतिज्ञान के ये चार भेद यावत्-न वर्णवाले हैं, न गंधवाले हैं, न रसवाले हैं, और न स्पर्शवाले ही हैं। क्यों कि ये भी जीव के धर्म होने के कारण अमूर्त हैं, इसलिये इनमें वर्णादि का अभाव हैं।

अब गौतम प्रभु से ऐसा पूछते हैं-' अह भंते। उट्ठाणे, कम्मे, बले, वीरिए, पुरिसक्कारपरक्कमे, एस णं कइवण्णे०' हे भदन्त! उत्थान-

ગંધો, કેટલા રસો અને કેટલા સ્પર્શોના સદ્ભાવ હોય છે? (સામાન્ય જ્ઞાનનું નામ અથવા અત્યન્ત સૂક્ષ્મ જ્ઞાનનું નામ અવગ્રહજ્ઞાન છે, અવગ્રહજ્ઞાન થયા બાદ નિર્ણયની તરફ ઝૂકતા એટલે કે નિર્ણયની આછી પ્રાપ્તિ કરાવતા જ્ઞાનનું નામ ઈહા છે જે જ્ઞાનમાં નિશ્ચય થઈ જાય છે તે જ્ઞાનનું નામ અવાય છે, અને કાળાન્તરે પણ વિસ્મરણ ન થવું સ્મરણ પટલ પર અંકીત થઈ જવું તેનું નામ ધારણા છે)

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-" एवं चेव जाव अफासा पण्णत्ता " હે ગૌતમ! મતિજ્ઞાનના અવગ્રહથી લઈને ધારણા પર્યન્તના ભેદોને પણ પૂર્વોક્ત પ્રકારે વર્ણરહિત, ગંધરહિત, રસરહિત અને સ્પર્શરહિત કહ્યા છે. કારણ કે અવગ્રહ આદિ પણ જીવના (આત્માના) ધર્મ હોવાને કારણે અમૂર્ત છે. તે કારણે તેમનામાં વર્ણ, ગંધ, રસ અને સ્પર્શ રૂપ પૌદ્ગલિક ગુણો સંભવી શકતા નથી.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-" अह भंते! उट्ठाणे, कम्मे, बले, वीरिए, पुरिसक्कारपरक्कमे, एसणं कइवण्णे? " હે ભગવન્! ઉત્થાન, કર્મ, બલ, વીર્ય

चेष्टाविशेषः-कर्मभ्रमणादिक्रिया, बलम्-शरीरसामर्थ्यम्, वीर्यम्-जीवभवम् सामर्थ्यम् पुरुषकारपराक्रमः पुरुषकारः-अभिमानविशेषः पराक्रमो-निष्पादित-स्वविषयः पुरुषकार एव, एते खलु उत्थानादयः, कतिवर्णाः, कति-गन्धाः, कतिरसाः, कतिस्पर्शाः प्रज्ञप्ताः? भगवानाह-'तं चेव जाव अफासे पण्णत्ते' हे गौतम! तदेव-पूर्वोक्तरीत्यैव उत्थानादयः, यावत्-अवर्णाः, अगन्धाः, अरसाः, अस्पर्शाः प्रज्ञप्ता, एतेषामपि पंचानां जीवधर्मतया अमूर्तत्वेन वर्णादिरहितत्वात्। अथ अमूर्तमस्तावात् अव-काशान्तरस्वरूपं प्ररूपयितुमाह-गौतमः पृच्छति-'सत्तमेणं भंते! उवासंतरे कइ-वण्णे?' हे भदन्त! सप्तमं खलु अवकाशान्तरं सप्तमनरकपृथिव्याः अधस्तनमा-काशखण्डम्, कतिवर्णम्, कतिगन्धम्, कतिरसम्, कतिस्पर्शम्, प्रज्ञप्तम्? भगवा-

---

उठना-खड़े होना, कर्म-भ्रमणादिक्रिया, बल-शारीरिक सामर्थ्य, वीर्य-आत्मिक बल, पुरुषकारपराक्रम-अभिमान विशेष रूप पुरुषकार तथा अपने विषय में सफलता देनेवाला पुरुषार्थ ये सब उत्थान आदिक कितने वर्णवाले, कितने गंधवाले, कितने स्पर्शवाले हैं? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-'तंचेव जाव अफासे पण्णत्ते' हे गौतम! पूर्वोक्त पद्धति के अनुसर ये उत्थान आदि विना वर्ण के, विना गंध के, विना रस के और विना स्पर्श के कहे गये हैं। क्यों कि ये पांचों ही जीव के धर्म हैं-इसलिये अमूर्त होने के कारण वर्णादिगुणों से रहित हैं।

अब गौतम प्रभु से ऐसा पूछते हैं-'सत्तमेणं भंते! उवासंतरे कइ-वण्णे' हे भदन्त! सातवी नरक पृथिवी का नीचे का आकाशखंडरूप अवकाशान्तर, कितने वर्णवाला है, कितने गंधवाले है, कितने रसवाला है, और कितने स्पर्शों वाला है? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-'एवं चेव

અને પુરુષકારપરાક્રમ કેટલાં વર્ણવાળાં, કેટલા ગંધવાળાં, કેટલા રસોવાળાં અને કેટલા સ્પર્શોવાળાં છે? (ઉત્થાન એટલે ઊભા થવું તે, બળ એટલે શારીરિક સામર્થ્ય વીર્ય એટલે આત્મિકબળ, પુરુષકાર પરાક્રમ એટલે અભિ-માન વિશેષરૂપ પુરુષકાર તથા પોતાના વિષયમાં સફળતા દેનારો પુરુષાર્થ.)

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-"तंचेव जाव अफासे पण्णत्ते" હે ગૌતમ! પૂર્વોક્ત પ્રકારે ઉત્થાન આદિને પણ વર્ણરહિત, ગંધરહિત, રસરહિત અને સ્પર્શરહિત કહ્યા છે. કારણ કે ઉત્થાન આદિ પાંચે જીવનાધર્મ રૂપ છે, તે કારણે અમૂર્ત હોવાને કારણે વર્ણાદિ ગુણોથી રહિત હોય છે.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-"सत्तमेणं भंते! उवासंतरे कइ वण्णे?" હે ભગવન્! સાતમી નરકપૃથ્વીની નીચેનું આકાશખંડ રૂપ અવકાશાન્તર કેટલાં વર્ણોવાળું, કેટલા ગંધોવાળું, કેટલા રસોવાળું અને કેટલા સ્પર્શોવાળું છે?

नाह-'एवं चेव जाव अफासे पण्णत्ते' हे गौतम! सप्तमम् अवकाशान्तरम्, एव मेव-पूर्वोक्तरीत्यैव, यावत्-अवर्णम्, अरसम्, अगन्धम्, अस्पर्शम् प्रज्ञप्तम्। अत्रेदं बोध्यम्-प्रथमद्वितीययोर्नारकपृथिव्यो र्मध्यवर्ति आकाशखण्डं प्रथमम् अवकाशान्तरमुच्यते, तदपेक्षया सप्तमनारकपृथिव्याः अधस्तात् आकाशखण्डम् सप्तमम् अवकाशान्तरमुच्यते, तस्योपरि सप्तमस्तनुवातोऽस्ति, तस्योपरि सप्तमो घनवातोऽस्ति, तस्याप्युपरि सप्तमो घनोदधिः तस्याप्युपरि सप्तमीनारकपृथिवी वर्तते, तत्र सप्तमस्य उपर्युक्ताकाशखण्डस्वरूपावकाशान्तरस्य अमूर्तत्वेन वर्णादिरहितत्वं प्रतिपादितम्' अथ तनुवातादीनां पौद्गलिकत्वेन मूर्ततया पञ्चवर्णादिकत्वम् अष्टस्पर्शत्वञ्च प्रतिपादयितुमाह-'सत्तमेणं भंते! तणुवाए कइवण्णे?' हे भदन्त!

जाव अफासे पण्णत्ते' हे गौतम! सप्तम अवकाशान्तर पूर्वोक्त रीति के अनुसार यावत् विना वर्ण का है, विना गंध का है, विना रस का है, और विना स्पर्श का है। यहां पर इस प्रकार से समझना चाहिये-प्रथम पृथिवी और द्वितीय पृथिवी के मध्य में रहा हुआ जो अन्तराल-रूप आकाशखण्ड है वह प्रथम अवकाशान्तर है इस अपेक्षा सप्तमनारकपृथिवी के नीचे का जो आकाशखण्ड है वह सप्तम अवकाशान्तर कहा गया है उसके ऊपर सातवां तनुवात है-उसके ऊपर सातवां घनवात है, उसके भी ऊपर सातवां घनोदधि है उसके भी ऊपर सातवीं नारक पृथिवी है। इस सप्तमनारक पृथिवी के नीचे का जो आकाशखंड-रूप अवकाशान्तर है वह अमूर्त होने के कारण वर्णादिकों से रहित कहा

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-"एवं चेव जाव अफासे पण्णत्ते" હે ગૌતમ! સાતમી નરકપૃથ્વીની નીચેનું અવકાશાન્તર પણ પૂર્વોકત પ્રકારે વર્ણ વિનાનું, ગંધ વિનાનું, રસ વિનાનું અને સ્પર્શ વિનાનું કહ્યું છે. તે અવકાશાન્તર અમૂર્ત હોવાને કારણે તેને વર્ણાદિ વિનાનું કહ્યું છે.

આ અવકાશાન્તરના સ્થાનનું સ્પષ્ટીકરણ આ પ્રમાણે છે- પહેલી નરક પૃથ્વી અને બીજી નરક પૃથ્વીની વચ્ચે જે અન્તરાલ રૂપ આકાશખંડ છે તેને પ્રથમ અવકાશાન્તર કહે છે. આ પ્રકારે વિચાર કરતાં, સાતમી નરક પૃથ્વીની નીચેનો જે આકાશખંડ છે તેને સાતમું અવકાશાન્તર કહે છે, તેની ઉપર સાતમું તનુવાત છે સાતમા તનુવાતની ઉપર સાતમું ઘનવાત છે. સાતમા ઘનવાતની ઉપર સાતમો ઘનોદધિ છે. અને સાતમા ઘનોદધિની ઉપર સાતમી નારક પૃથ્વી છે. આ સાતમી નારક પૃથ્વીની નીચેના આકાશખંડ રૂપ જે અવકાશાન્તર છે તે અમૂર્ત હોવાને કારણે તેને વર્ણાદિક ગુણોથી રહિત કહ્યું છે.

सप्तमः खलु पूर्वोक्तस्तनुवातः कतिवर्णः, कतिगन्धः, कतिरसः, कतिस्पर्शः प्रज्ञप्तः ? भगवानाह–'जहा–पाणाइवाए, नवरं अट्ठफासे पण्णत्ते' हे गौतम ! सप्तमः पूर्वोक्त स्तनुवातो यथा प्राणातिपातः पञ्चवर्णः, द्विगन्धः, पञ्चरसः प्रतिपादित स्तथैवायमपि पञ्चवर्णः, द्विगन्धः, पञ्चरसः प्रज्ञप्तः, किन्तु नवरम्–प्राणातिपातापेक्षया विशेषस्तु सप्तमस्तनुवातः अष्टस्पर्शः प्रज्ञप्तः, कर्कशमृदुगुरुकघुस्निग्धरूक्षभेदात्, तनुवातादीनां बादरपरिणामत्वात् तत्रोक्ताष्टस्पर्शसंभवात्, इत्यभिप्रायेणाह–'एवं जहा सत्तमे तणुवाए तहा सत्तमे घणवाए, घणोदही, पुढवी' एवं–पूर्वोक्तरीत्या यथा सप्तमस्तनुवातः प्रतिपादितः तथा सप्तमो घनवातः, सप्तमो

गया है। 'सत्तमेणं भंते। तणुवाए कइवण्णे' हे भदन्त ! सातवां जो तनुवात है वह कितने वर्णोंवाला है, कितने गंधोंवाला है, कितने रसोंवाला है, और कितने स्पर्शोंवाला है ? गौतम के इस प्रश्न के उत्तर में प्रभु कहते हैं–' जहा पाणाइवाए नवरं अट्ठफासे पण्णत्ते' हे गौतम ! सातवां जो पूर्वोक्त तनुवात है वह प्राणातिपात की तरह पांचवर्णोंवाला, दो गंधोवाला, पांच रसोंवाला, कहा गया है, किन्तु प्राणातिपात की तरह यह चार स्पर्शोंवाला नहीं है अपि तु आठ स्पर्शोंवाला है। आठ स्पर्श ये हैं–हलका, भारी, चिकना, गरम, ठण्डा, रूखा, कडा और नरम। तनुवात आदि बादर परिणामवाले होते हैं–इस कारण वहां आठ स्पर्शों का सद्भाव बन जाता है इसी अभिप्राय से ऐसा कहा गया है–' एवं जहा सत्तमे तणुवाए तहा सत्तमे घणवाए, घणोदही, पुढवी ' कि जिस प्रकार

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન–" सत्तमेणं भंते ! तणुवाए कइ वण्णे ?" હે ભગવન્! સાતમો જે તનુવાત છે, તે કેટલાં વર્ણોવાળો છે ? કેટલા ગંધોવાળો છે ? કેટલા રસોવાળો છે ? કેટલા સ્પર્શોવાળો છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર–" जहा पाणाइवाए नवरं अट्ठ फासे पण्णत्ते " હે ગૌતમ ! સાતમો તનુવાત, પ્રાણાતિપાત પરિણત કર્મપુદ્ગલોની જેમ, પાંચ વર્ણોવાળો, બે ગંધોવાળો અને પાંચ રસોવાળો કહ્યો છે. પરન્તુ પ્રાણાતિપાત પરિણત કર્મપુદ્ગલોની જેમ તે ચાર સ્પર્શોવાળો નથી પણ આઠ સ્પર્શોવાળો છે. તે આઠ સ્પર્શોનાં નામ નીચે પ્રમાણે છે–હલકો, ભારે, સ્નિગ્ધ, રૂક્ષ, ઉષ્ણ, શીત, કઠણ અને નરમ તનુવાત આદિ બાદર પરિણામવાળાં હોય છે, તે કારણે ત્યાં આઠ સ્પર્શોનો સદ્ભાવ સંભવી શકે છે. એજ કારણે એવું કહેવામાં આવ્યું છે કે–" एवं जहा सत्तमे तणुवाए तहा सत्तमे घणवाए घणोदही, पुढवी " જે પ્રકારે સાતમા તનુવાતના વિષયમાં વર્ણવિન્યુ,

घनोदधिः, सप्तमी नारकपृथिवी च पञ्चवर्णद्विगन्धपञ्चरसाष्टस्पर्शवत्त्वेन वक्तव्या, 'छट्ठे उवासंतरे अवण्णे' षष्ठम् अवकाशान्तरम् आकाशखण्डात्मकम् अमूर्तत्वेन अवर्णम्, अगन्धम्, अरसम्, अस्पर्शम् अवसेयम्, 'तणुवाए जाव छट्ठी पुढवी, एयाइं अट्ठफासाइं' षष्ठः तनुवातो यावत् षष्ठो घनवातः, षष्ठो घनोदधिः, षष्ठी पृथिवी च, एतानि चत्वारि वस्तूनि पौद्गलिकत्वेन मूर्ततया पञ्चवर्णादियुक्तानि अष्टस्पर्शानि प्रज्ञप्तानि, 'एवं जहा सत्तमाए पुढवीए वत्तव्वया भणिया, तहा जाव पढमाए पुढवीए भाणियव्वं' एवं-पूर्वोक्तरीत्या, यथा सप्तम्याः पृथिव्याः वक्तव्यता पञ्चवर्णाद्यष्टस्पर्शवत्त्वेन भणिता तथा यावत्-पञ्चम्याश्चतुर्थ्याः तृतीयायाः द्वितीयायाः प्रथमायाश्च नारकपृथिव्या भणितव्यम्, पञ्चवर्णद्विगन्ध

से सातवें तनुवात के विषय में कहा जा चुका है-उसी प्रकार से सातवां घनवात, सातवां घनोदधि और सातवीं नारक पृथिवी ये सब पांच वर्णोंवाले, पांच रसोंवाले, और आठ स्पर्शवाले हैं ऐसा कहना चाहिये 'छट्ठे उवासंतरे अवण्णे' छठा जो अवकाशान्तर-आकाशखण्डात्मक खाली स्थान-अमूर्त होने से वर्ण विना का है गंध विना का है, रस विना का है और स्पर्श विना का है। (तणुवाए जाव छट्ठी पुढवी, एयाइं अट्ठफासाइं' तनुवात यावत्-छठा घनवात, छठा घनोदधि और छठी पृथिवी पौद्गलिक होने के कारण मूर्तमान् हैं इसीलिये ये पांचेवर्ण आदि गुणोंवाले हैं, एवं आठ स्पर्शवाले हैं। 'एवं जहा-सत्तमाए पुढवीए वत्तव्वया भणिया, तहा जाव पढमाए पुढवीए भाणियव्वं' पूर्वोक्त रीति के अनुसार जैसी वक्तव्यता सप्तमी पृथिवी के विषय में कही गई है उसी प्रकार की पंचवर्ण, दो गंध, पांच रस और आठ स्पर्श से

કથન કરવામાં આવ્યું છે, એજ પ્રમાણે સાતમા ઘનવાત, સાતમા ઘનોદધિ અને સાતમી નરક પૃથ્વીને પણ પાંચ વર્ણ, બે ગંધ, પાંચ રસો અને આઠ સ્પર્શોવાળા સમજવા. "छट्ठे उवासंतरे अवण्णे" જે છઠ્ઠું અવકાશાન્તર-(આકાશખંડાત્મક ખાલી સ્થાન) છે, તે પણ અમૂર્ત હોવાને કારણે વર્ણરહિત, ગંધરહિત, રસરહિત અને સ્પર્શરહિત છે. "तणुवाए जाव छट्ठी पुढवी; एयाइं अट्ठ फासाइ" છઠ્ઠું તનુવાત, છઠ્ઠું ઘનવાત, છઠ્ઠો ઘનોદધિ અને છઠ્ઠી પૃથ્વી આ ચારે પૌદ્ગલિક હોવાને કારણે મૂર્ત છે, તે કારણે તેમને પાંચ વર્ણ, બે ગંધ, પાંચ રસ અને આઠ સ્પર્શોથી યુક્ત સમજવા જોઈએ. "एव जहा सत्तमाए पुढवीए वत्तव्वया भणिया, तहा जाव पढमाए पुढवीए भाणियव्वं" વર્ણાદિના વિષયમાં જેવી વક્તવ્યતા સાતમી પૃથ્વી વિષે કરવામાં આવી છે, એવી જ વક્તવ્યતા પાંચમી, ચોથી, ત્રીજી, બીજી અને પહેલી પૃથ્વીના વિષયમાં પણ થવી જોઈએ એટલે કે આ નરક પૃથ્વીઓને પણ પાંચ વર્ણોવાળી, બે ગંધોવાળી, પાંચ રસોવાળી

पञ्चरसाष्टस्पर्शवक्तव्यता भणितव्या, 'जंबुद्दीवे दीवे जाव सयंभूरमणे समुद्दे सोहम्मे कप्पे, जाव इसिपब्भारा पुढवी, नेरइयावासा जाव वेमाणियावासा, एयाणि सव्वाणि अट्ठफासाणि' जम्बूद्वीपो द्वीपः यावत् लवणसमुद्रादिः धातकिखण्डः स्वयम्भूरमणः समुद्रः, सौधर्मः कल्पः, यावत्-ईशान-सनत्कुमार-माहेन्द्र-ब्रह्मलोक-लान्तक-महाशुक्र-सहस्रारानतप्राणता-रण-च्युतकल्पाः, नवग्रैवेयकाणि, विजयवैजयन्तजयन्तापराजिताः, ईषत्प्राग्भारा पृथिवी, नैरयिकावासाः यावत्-असुरकुमारादिभवनपतिवासाः, ज्योतिषिकावासाः, वैमानिकावासाः एतानि सर्वाणि वस्तूनि पञ्चवर्णाष्टस्पर्शानि प्रज्ञप्तानि। गौतमः पृच्छति-नेरइयाणं भंते! कइवण्णा, जाव कइफासा पण्णत्ता?' हे भदन्त! नैरयिकाः खलु

सहित होने की वक्तव्यता पांचवीं पृथिवी में, चौथी पृथिवी में तीसरी में, दूसरी पृथिवी में, और पहिली पृथिवी में कहना चाहिये किन्तु अवकाशान्तर सभी अरूपी हैं अतः उनमें वर्णादि नहीं हैं। "जंबूद्दीवे दीवे, जाव सयंभूरमणे समुद्दे, सोहम्मे कप्पे, जाव ईसिपब्भारापुढवी, नेरइयावासा जाव वेमाणियावासा एयाणि सव्वाणि अट्ठफासाणि" जम्बूद्वीप नामका द्वीप, यावत्-लवण समुद्र, धातकीखण्ड, यावत् स्वयंभूरमण-समुद्र, सौधर्मकल्प यावत्-ईशान-सनत्कुमार-माहेन्द्र-ब्रह्मलोक, लान्तक, महाशुक्र, सहस्रार, आनत, प्राणत, आरण, अच्युत, ये कल्प, नौ ग्रैवेयक, विजय, वैजयन्त, जयन्त, अपराजित, सर्वार्थसिद्ध, ईषत्प्राग्भारापृथिवी, नैरयिकावास, यावत्-असुरकुमारादि भवनपत्यावास, ज्योतिषिकावास, एवं वैमानिकावास, ये सब पांचवर्ण, दो गंध, पांचरस और आठ स्पर्शवाले हैं।

અને આઠ સ્પર્શોવાળી કહેવી જોઇએ. "जंबुद्दीवे दीवे, जाव सयंभूरमणे समुद्दे सोहम्मे कप्पे जाव ईसिपब्भारा पुढवी, नेरइयावासा जाव वेमाणियावासा, एयाणि सव्वाणि अट्ठ फासाणि" જંબૂદ્વીપ નામનો દ્વીપ, લવણસમુદ્ર આદિ સમુદ્રો, ધાતકીખંડ, સ્વયંભૂરમણ સમુદ્ર, સૌધર્મ કલ્પ, ઈશાનસનત્કુમાર માહેન્દ્ર-બ્રહ્મલોક-લાન્તક-મહાશુક્ર-સહસ્રાર-આનત-પ્રાણત-આરણ અને અચ્યુત, આ બાર કલ્પો, નવ ગ્રૈવેયકત્રિમાનો, વિજય, વૈજયન્ત, જયન્ત, અપરાજિત અને સર્વાર્થસિદ્ધ, આ પાંચ અનુત્તર વિમાનો, ઈષત્પ્રાગ્ભારા પૃથ્વી, નારકાવાસો, અસુરકુમારાદિ ભવનપતિ દેવાવાસો, જ્યોતિષિકાવાસો, વૈમાનિકાવાસો, ઇત્યાદિ પૌદ્ગલિક પદાર્થો પણ પાંચ વર્ણોવાળા, બે ગંધોવાળા, પાંચ રસોવાળા અને આઠ સ્પર્શોવાળા છે.

कतिवर्णाः यावत्–कतिगन्धाः, कतिरसाः, कतिस्पर्शाः प्रज्ञप्ताः? भगवानाह–'गोयमा ! वेउव्वियतेयाइं पडुच्च पंचवन्ना, पंचरसा, दुगंधा, अट्ठफासा पण्णत्ता' हे गौतम ! नैरयिकाः खलु वैक्रियतैजसानि पुद्गलानि प्रतीत्य–आश्रित्य वैक्रिय-तैजसशरीरपुद्गलापेक्षयेत्यर्थः पञ्चवर्णाः, द्विगन्धाः, पञ्चरसाः, अष्टस्पर्शाः प्रज्ञप्ताः, वैक्रियतैजसशरीरयोः बादरपरिणामपुद्गलरूपत्वात् तयोर्बादरत्वेन तदपेक्षया नैरयिकाणाम् अष्टस्पर्शवत्त्वमवसेयम्, किन्तु–'कम्मगं पडुच्च पंचवन्ना, दुगंधा, पंचरसा, चउफासा पण्णत्ता' कार्मणपुद्गलशरीरं प्रतीत्य–आश्रित्य कार्मणपुद्गलशरीरापेक्षया इत्यर्थः नैरयिकाः पञ्चवर्णाः, द्विगन्धाः, पञ्चरसाः, चतुःस्पर्शाः प्रज्ञप्ताः, कार्मणशरीरस्य सूक्ष्मपरिणामपुद्गलरूपत्वात्, तेषां चतुःस्पर्शत्वं बोध्यम्, किन्तु–

अब गौतम प्रभु से ऐसा पूछते है–"नेरइयाणं भंते ! कइवण्णा, जाव कइफासा पण्णत्ता' हे भदन्त ! नैरयिक कितने वर्णों वाले, कितने गंधो-वाले, कितने रसोंवाले, और कितने स्पर्शोंवाले कहे गये हैं ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं–'गोयमा ! वेउव्वियतेयाइं पडुच्च पंचवन्ना, पंचरसा, दुगंधा, अट्ठफासा पण्णत्ता' हे गौतम ! नैरयिक वैक्रिय और तैजसपुद्गलों की अपेक्षा लेकर पांच वर्णोंवाले, दो गंधोंवाले, पांच रसों-वाले और आठ स्पर्शवाले कहे गये हैं। क्यों कि वैक्रिय और तैजस शरीर बादर परिणामवाले पुद्गलरूप होते हैं। इन दोनों की बादरता को लेकर नैरयिकों में आठ स्पर्शवत्ता कही गई है। किन्तु 'कम्मगं पडुच्च पंचवन्ना दुगंधा, पंचरसा चउफासा पण्णत्ता' कार्मणशरीररूप पुद्गल की अपेक्षा करके नैरयिक पांचवर्णोंवाले, दो गंधोंवाले, पांच रसोंवाले,

---

ગૌતમસ્વામીનો પ્રશ્ન–'नेरइयाणं भंते ! कइवण्णा, जाव कइफासा पण्णत्ता ?' હે ભગવન્ ! નારકો કેટલાં વર્ણવાળાં, કેટલા ગંધોવાળા, કેટલા રસોવાળાં અને કેટલા સ્પર્શોવાળાં છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર–"गोयमा ! હે ગૌતમ ! "वेउव्वियतेयाइं पडुच्च पंचवन्ना, पंच रसा, दुगधा, अट्ठफासा पण्णत्ता" તૈજસ અને વૈક્રિય પુદ્ગલોની અપેક્ષાએ વિચાર કરવામાં આવે, તો નારકોને પાંચ વર્ણોવાળાં, બે ગંધો-વાળાં, પાંચ રસોવાળાં અને આઠ સ્પર્શોવાળાં, કહ્યાં છે. કારણ કે વૈક્રિય અને તૈજસ શરીર બાદર પરિણામવાળાં પુદ્ગલો રૂપ હોય છે તે બન્નેની બાદરતાને કારણે નારકોમાં આઠ સ્પર્શોનો સદ્ભાવ કહ્યો છે. પરન્તુ "कम्मगं पडुच्च पंचवन्ना, दुगंधा, पंचरसा चउफासा पण्णत्ता" કાર્મણશરીર રૂપ પુદ્ગલની અપેક્ષાએ નારકોને પાંચ વર્ણોવાળાં, બે ગંધોવાળાં, પાંચ રસોવાળાં અને ચાર

'जीवं पडुच्च अवण्णा जाव अफासा पण्णत्ता' जीवं प्रतीत्य-आश्रित्य जीवापेक्षयेत्यर्थः नैरयिकाः अवर्णाः, यावत्-अगन्धाः, अरसाः, अस्पर्शाः प्रज्ञप्ताः, जीवस्य अमूर्तत्वेन वर्णादिरहिततया तदपेक्षया नैरयिकाणामपि वर्णादिरहितत्वमवसेयम्, 'एवं जाव थणियकुमारा' एवं-पूर्वोक्त नैरयिकरीत्या यावत्-असुरकुमारादारभ्य स्तनितकुमारपर्यन्ता अपि वैक्रियतैजसशरीरपुद्गलापेक्षया पञ्चवर्णाद्यष्टस्पर्शवंतः, कार्मणशरीरपुद्गलापेक्षया पञ्चवर्णादि चतुःस्पर्शवन्तः, जीवापेक्षया अवर्णादिस्पर्शवन्तः

और चार स्पर्शोंवाले कहे गये हैं। क्यों कि कार्मणशरीर सूक्ष्मपरिणामवाले पुद्गलरूप होता है इसलिये यहां चारस्पर्शवत्ता इस अपेक्षा से जानना चाहिये किन्तु-'जीवं पडुच्च अवण्णा जाव अफासा पण्णत्ता' जीव की अपेक्षा लेकर जब नैरयिकों में वर्णादिमत्ता का विचार करते हैं-तब ये वर्ण विना के हैं, गंध विना के हैं, रस विना के हैं और स्पर्श विना के हैं-क्यों कि जीव अमूर्त होता है इस कारण वह पौद्गलिक वर्णादि गुणों से रहित माना गया है अतः इस अपेक्षा नारकों के भी वर्णादि से रहितता जाननी चाहिये 'एवं जाव थणियकुमारा' नैरयिकोक्त पद्धति के अनुसार यावत्-असुरकुमार से लेकर स्तनितकुमार तक भी वैक्रिय तैजस शरीर के पुद्गलों की अपेक्षा पंचवर्णोंवाले, दो गंधोंवाले, पांच रसोंवाले, और आठ स्पर्शोंवाले, होते हैं। कार्मण शरीर के पुद्गलों की अपेक्षा से वे पांच वर्णादिवाले और चार स्पर्शों-

---

સ્પર્શોવાળાં કહ્યા છે. કારણ કે કાર્મણશરીર સૂક્ષ્મપરિણામવાળાં પુદ્ગલો રૂપ હોય છે તે કારણે તેમાં ચાર સ્પર્શોનો જ સદ્ભાવ સમજવો. પરન્તુ "जीवं पडुच्च अवण्णा जाव अफासा पण्णत्ता" જીવની અપેક્ષાએ નારકોમાં વર્ણાદિમત્તાનો વિચાર કરવામાં આવે, તો તેઓ વર્ણવિનાના, ગંધવિનાના, રસવિનાના અને સ્પર્શવિનાના છે, કારણ કે જીવ અમૂર્ત હોય છે. તે કારણે તેને પૌદ્ગલિક વર્ણાદિ ગુણોથી રહિત માનવામાં આવેલ છે. તે દૃષ્ટિએ વિચાર કરવામાં આવે, તો નારકોમાં પણ વર્ણાદિ રહિતતા સમજવી જોઇએ. "एवं जाव थणियकुमारा" અસુરકુમારોથી લઈને સ્તનિતકુમાર પર્યન્તના ભવનપતિ દેવોના વર્ણાદિના વિષયમાં નારકોના જેવું જ કથન થવું જોઈએ એટલે કે વૈક્રિય અને તૈજસ શરીરોની અપેક્ષાએ વિચાર કરવામાં આવે, તો તેઓ પાંચ વર્ણવાળાં, બે ગંધવાળાં, પાંચ રસોવાળાં અને આઠ સ્પર્શોવાળાં હોય છે, પરન્તુ કાર્મણ શરીરના પુદ્ગલોની અપેક્ષાએ વિચારવામાં આવે, તો તેઓ

मज्ञप्ताः इति भावः। गौतमः पृच्छति–'पुढविकाइय पुच्छा' हे भदन्त! पृथिवीकायिकाः कतिवर्णाः, कतिगन्धाः, कतिरसाः, कतिस्पर्शाः मज्ञप्ताः इति पृच्छा, भगवानाह–'गोयमा! ओरालियतेयगाइं पडुच्च पंचवन्ना जाव अट्ठफासा पण्णत्ता' हे गौतम! पृथिवीकायिकाः औदारिकतैजसानि शरीराणि प्रतीत्य–आश्रित्य–औदारिकतैजसशरीरपुद्गलापेक्षयेत्यर्थः पञ्चवर्णाः यावत् द्विगन्धाः पञ्चरसाः, अष्ट स्पर्शाः मज्ञप्ताः 'कम्मगं पडुच्च जहा नेरइया' कार्मणशरीरं प्रतीत्य–आश्रित्य कार्मणशरीरपुद्गलापेक्षयेत्यर्थः पृथिवीकायिकाः यथा नैरयिकाः पञ्चवर्णादि चतुःस्पर्शान्ताः प्रतिपादिता स्तथैव पञ्चवर्णाः, द्विगन्धाः, पञ्चरसाः, चतुःस्पर्शाः प्रतिपत्तव्याः, 'जीवं पडुच्च तहेव' पृथिवीकायिकाः जीवं प्रतीत्य आश्रित्य–जीवा-

---

वाले होते हैं। तथा जीव की अपेक्षा से विना वर्ण के, विना गंध के, विना रस के और विना स्पर्श के होते हैं।

अब गौतम प्रभु से ऐसा पूछते हैं–'पुढविकाइय पुच्छा' हे भदन्त! पृथिवीकायिक कितने वर्णोंवाले, कितने गंधोंवाले, कितने रसोंवाले, और कितने स्पर्शोंवाले होते हैं? इस प्रश्न के उत्तर में प्रभु कहते हैं–'गोयमा' हे गौतम! 'ओरालियतेयगाइं पडुच्च पंचवन्ना, जाव अट्ठफासा, पण्णत्ता' औदारिक और तैजसशरीर के पुद्गलों की अपेक्षा से वे पांच वर्णोंवाले, दो गंधोंवाले, पांच रसोंवाले, और आठ स्पर्शों वाले होते हैं। 'कम्मगं पडुच्च जहा नेरइया' कार्मण शरीर के पुद्गलों की अपेक्षा से पृथिवीकायिक नारकों के जैसा पांचवर्णोंवाले, दो गंधोंवाले, पांच रसोंवाले और चार स्पर्शोंवाले होते हैं, 'जीवं पडुच्च तहेव'

પાંચ વર્ણાદિવાળાં અને ચાર સ્પર્શોવાળાં હોય છે જીવની અપેક્ષાએ વિચારવામાં આવે, તો વિના વર્ણના, વિના ગંધના, વિના રસના અને સ્પર્શ વિનાના હોય છે.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન–"पुढविकाइय पुच्छा" હે ભગવન્! પૃથ્વીકાયિકો કેટલા વર્ણવાળા, કેટલા ગંધવાળા, કેટલા રસવાળા અને કેટલા સ્પર્શવાળા હોય છે?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર–"गोयमा!" હે ગૌતમ! "ओरालियतेयगाइं पडुच्च पंचवन्ना जाव अट्ठफासा पण्णत्ते" ઔદારિક અને તૈજસ શરીરોનાં પુદ્ગલોની અપેક્ષાએ વિચાર કરવામાં આવે, તો પૃથ્વીકાયિકો પાંચ વર્ણોવાળા, બે ગંધોવાળા, પાંચ રસોવાળા અને આઠ સ્પર્શોવાળા હોય છે. "कम्मगं पडुच्च जहा नेरइया" કાર્મણ શરીરનાં પુદ્ગલોની અપેક્ષાએ વિચાર કરવામાં આવે, તો પૃથ્વીકાયિકો નારકોની જેમ પાંચ વર્ણોવાળા, બે ગંધોવાળા, પાંચ રસોવાળા અને ચાર સ્પર્શોવાળા હોય છે. "जीवं पडुच्च तहेव" જીવની

पेक्षयेत्यर्थः तथैव–नैरयिकवदेव, अवर्णाः, अगन्धाः, अरसा, अस्पर्शाः अवसेयाः। 'एवं जाव चउरिंदिया०' एवं–पूर्वोक्तरीत्या यावत्- अप्कायिकाः, तेजस्कायिकाः, वनस्पतिकायिकाः, एकेन्द्रियाः द्वीन्द्रियाः, त्रीन्द्रियाः, चतुरिन्द्रियाः औदारिक-तैजसशरीराणि प्रतीत्य–आश्रित्य, पञ्चवर्णाः, द्विगन्धाः पञ्चरसाः, अष्टस्पर्शाः प्रज्ञप्ताः, कार्मणशरीरं प्रतीत्य–आश्रित्य, पञ्चवर्णाः, द्विगन्धाः, पञ्चरसाः, चतुः-स्पर्शाः प्रज्ञप्ताः, जीवं प्रतीत्य–आश्रित्य तु अवर्णाः, अगन्धाः, अरसाः, अस्पर्शाः प्रज्ञप्ताः इति भावः। 'नवरं वाउक्काइया ओरालियवेउव्वियतेयगाइं पडुच्च पंचवन्ना, जाव अट्ठफासा पण्णत्ता, सेसं जहा नेरइयाणं' नवरम्–पृथिवीकायिका-ध्यपेक्षया विशेषस्तु वायुकायिकाः औदारिकवैक्रियतैजसानि शरीराणि, प्रतीत्य-

---

तथा जीव की अपेक्षा से पृथिवीकायिक जीव नैरयिक के जैसा ही विना वर्ण के, विना गंध के, विना रस के और विना स्पर्श के कहे गये हैं। 'एवं जाव चउरिंदिया०' इसी प्रकार से अप्कायिक, तैजस्कायिक, वनस्पतिकायिक एकेन्द्रिय तथा द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय औदारिक तैजस शरीर के पुद्गलों की अपेक्षा से पांच वर्णोंवाले, दो गंधोंवाले, पांच रसोंवाले और आठ स्पर्शोंवाले होते हैं, तथा कार्मण-शरीर की अपेक्षा से पांच वर्णोंवाले, दो गंधोंवाले, पांच रसोंवाले और चार स्पर्शोंवाले होते हैं, एवं 'जीवं पडुच्च' जीव की अपेक्षा से विना वर्ण के, विना गंध के, विना रस के और विना स्पर्श के होते हैं। 'नवरं वाउक्काइया ओरालियवेउव्वियतेयगाइं पडुच्च पंचवण्णा, जाव अट्ठफासा, पण्णत्ता' सेसं जहा नेरइयाणं' पृथिवीकायिक की वक्तव्यता की अपेक्षा से वायुकायिक की वक्तव्यता में यदि अन्तर है तो

અપેક્ષાએ વિચાર કરવામાં આવે, તો નારકોની જેમ પૃથ્વીકાયિક જીવો વર્ણ-રહિત, રસરહિત અને સ્પર્શરહિત હોય છે. "एवं जाव चउरिंदिया" એજ પ્રમાણે અપ્કાયિક, તૈજસ્કાયિક, વનસ્પતિકાયિક તથા દ્વીન્દ્રિય, ત્રીન્દ્રિય અને ચતુરિન્દ્રિય જીવો, ઔદારિક અને તૈજસ શરીરનાં પુદ્ગલોની અપેક્ષાએ પાંચ વર્ણોવાળા, બે ગંધોવાળા, પાંચ રસોવાળા અને આઠ સ્પર્શોવાળા હોય છે, તથા કાર્મણશરીરની અપેક્ષાએ તેઓ પાંચ વર્ણોવાળા, બે ગંધોવાળા, પાંચ રસોવાળા અને ચાર સ્પર્શોવાળા હોય છે. "जीवं पडुच्च" અને જીવની અપેક્ષાએ તેઓ વર્ણરહિત, ગંધરહિત, રસરહિત અને સ્પર્શરહિત હોય છે. "नवरं वाउक्काइया ओरालियवेउव्वियतेयगाइं पडुच्च पंचवण्णा जाव अट्ठफासा पण्णत्ता, सेसं जहा नेरइयाणं" પૃથ્વીકાયિકોના વર્ણાદિના કથન કરતાં વાયુ-કાયિકોના વર્ણાદિના કથનમાં એવી વિશેષતા છે કે વાયુકાયિક જીવો ઔદા-

आश्रित्य-औदारिकवैक्रियतैजसशरीरपुद्गलापेक्षयेत्यर्थः पञ्चवर्णाः, यावत्-द्विगन्धाः, पञ्चरसाः, अष्टस्पर्शाः प्रज्ञप्ताः,-शेषं यथा नैरयिकाणाम् प्रतिपादितं तथैव प्रतिपत्तव्यम्, तथा च वायुकायिकाः कार्मणशरीरं प्रतीत्य-आश्रित्य पञ्चवर्णाः, द्विगन्धाः, पञ्चरसाः, चतुःस्पर्शाः प्रज्ञप्ताः, जीवं प्रतीत्य-आश्रित्य तु अवर्णाः, अगन्धाः, अरसाः, अस्पर्शाः प्रज्ञप्ताः इतिभावः। 'पंचिंदियतिरिक्खजोणिया जहा वाउकाइया' पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः यथा वायुकायिकाः प्रतिपादितास्तथैव प्रतिपत्तव्याः, तथा च पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः अपि औदारिकवैक्रियतैजसशरीराणि प्रतीत्य पञ्चवर्णाद्यष्टस्पर्शाः, प्रज्ञप्ताः, कार्मणशरीरं प्रतीत्य पञ्चवर्णादि

वह औदारिक वैक्रिय, एवं तैजस शरीर के पुद्गलों की अपेक्षा से है। अर्थात् वायुकायिक जीव औदारिक, वैक्रिय और तैजसशरीर के पुद्गलों की अपेक्षा से पाँच वर्णोंवाले, यावत्-दो गंधोंवाले, पांच रसोंवाले और आठ स्पर्शोंवाले कहे गये हैं-इसके आगे का और कथन नैरयिकों के जैसा जानना चाहिये तथा-वायुकायिक जीव कार्मण शरीर के पुद्गलों की अपेक्षा से पांच वर्णोंवाले, दो गंधोंवाले, एवं चार स्पर्शोंवाले होते हैं। 'जीवं पडुच्च' तथा जीव की अपेक्षा से वायुकायिक जीव विना वर्ण के विना गंध के, विना रस के और विना स्पर्श के होते हैं। 'पंचिंदियतिरिक्खजोणिया जहा वाउक्काइया' प्रतिपादित वायुकायिकों के जैसा पंचेन्द्रियतिर्यग्योनिक जीव कहे गये हैं तथा च पंचेन्द्रियतिर्यग्योनिक भी औदारिक, वैक्रिय, एवं तैजसशरीर के पुद्गलों की अपेक्षा से पांच वर्णोंवाले, दो गंधोंवाले, पांच रसोंवाले और आठ

રિક, તૈજસ, અને વૈક્રિય શરીરનાં પુદ્ગલોની અપેક્ષાએ પાંચ વર્ણોવાળા, બે ગંધોવાળા, પાંચ રસોવાળા અને આઠ સ્પર્શોવાળા હોય છે. ત્યાર પછીનું સમસ્ત કથન નારકોના કથન પ્રમાણે જ સમજવું જેમ કે-વાયુકાયિક જીવો કાર્મણશરીરના પુદ્ગલોની અપેક્ષાએ પાંચ વર્ણોવાળા, બે ગંધોવાળા, પાંચ રસોવાળા અને ચાર સ્પર્શોવાળા હોય છે. "जीवं पडुच्च" જીવની અપેક્ષાએ વિચાર કરવામાં આવે, તો તેઓ વર્ણરહિત, ગંધરહિત, રસરહિત અને સ્પર્શરહિત હોય છે.

"पंचिंदियतिरिक्खजोणिया जहा वाउक्काइया" વાયુકાયિકોના જેવું જ કથન પંચેન્દ્રિય તિર્યંચોના વર્ણાદિના વિષયમાં પણ સમજવું એટલે કે ઔદારિક, વૈક્રિય અને તૈજસ શરીરના પુદ્ગલોની અપેક્ષાએ પંચેન્દ્રિયતિર્યંચોને પણ પાંચ વર્ણોવાળા, બે ગંધોવાળા, પાંચ રસોવાળા અને આઠ સ્પર્શોવાળા

चतुःस्पर्शाः प्रज्ञप्ताः, जीवं प्रतीत्य तु अवर्णाद्यस्पर्शाः प्रज्ञप्ताः इति भावः। 'मणुस्साणं पुच्छा' मनुष्याणां पृच्छा, तथा च मनुष्याः, कतिवर्णाः कतिगन्धाः, कतिरसाः, कतिस्पर्शाः प्रज्ञप्ताः? भगवानाह-'ओरालियवेउव्वियआहारग तेयगाइं पडुच्च पंचवन्ना, जाव अट्ठफासा पण्णत्ता' हे गौतम! मनुष्याः औदारिकवैक्रियाहारकतैजसानि शरीराणि, प्रतीत्य-आश्रित्य-औदारिकाद्यपेक्षया. इत्यर्थः, पञ्चवर्णाः, यावत्-द्विगन्धाः, पञ्चरसाः, अष्टस्पर्शाः प्रज्ञप्ताः, 'कम्मगं जीवं च पडुच्च जहा नेरइया' कार्मणशरीरं, जीवं च प्रतीत्य-आश्रित्य यथा नैरयिकाः प्रतिपादिता स्तथैव मनुष्या अपि प्रतिपत्तव्याः तथा च मनुष्याः कार्मणशरीरा-

---

स्पर्शों वाले कहे गये हैं-कार्मण-शरीर के पुद्गलों की अपेक्षा से पांच वर्णों वाले, दो गंधोंवाले, पांच रसोंवाले और चार स्पर्शों वाले कहे गये हैं। 'मणुस्साणं पुच्छा' हे भदन्त! मनुष्य कितने वर्णोंवाले, कितने गंधोंवाले, कितने रसोंवाले और कितने स्पर्शों वाले कहे गये हैं? इसके उत्तर में प्रभु करते हैं-'ओरालिय-वेउव्विय-आहारग-तेयगाइं पडुच्च पंचवन्नाइं जाव अट्ठफासा पण्णत्ता' हे गौतम! मनुष्य-औदारिक, वैक्रिय, आहारक एवं तैजस शरीर के पुद्गलों की अपेक्षा से पांचवर्णों वाले, दो गंधोंवाले, पांच रसोंवाले एवं आठ स्पर्शोंवाले कहे गये हैं। 'कम्मगं जीवं च पडुच्च जहा नेरइया' कार्मणशरीर और जीव की अपेक्षा लेकर जैसा नारक के सम्बन्ध में कहा गया है उसी प्रकार से मनुष्यों के सम्बन्ध में भी जानना चाहिये तथा-च-मनुष्य कार्मणशरीर

કહ્યા છે. પરન્તુ કાર્મણશરીરના પુદ્ગલોની અપેક્ષાએ તેમને પાંચ વર્ણોવાળા, બે ગંધોવાળા, પાંચ રસોવાળા અને ચાર સ્પર્શોવાળા કહ્યા છે જીવની અપેક્ષાએ તેમને વર્ણરહિત, ગંધરહિત, રસરહિત અને સ્પર્શરહિત-કહ્યા છે.

मणुस्साणं पुच्छा "હે ભગવન્! મનુષ્યો કેટલાં વર્ણવાળા, કેટલા ગંધવાળા, કેટલા રસવાળા અને કેટલા સ્પર્શવાળા હોય છે? આ પ્રશ્નનો ઉત્તર આપતા મહાવીર પ્રભુ કહે છે કે. "ओरालिय-आहारग-तेयगाइं पडुच्च पंच वण्णाइं जाव अट्ठफासा पण्णत्ता" હે ગૌતમ! ઔદારિક, વૈક્રિય, આહારક, અને તૈજસ શરીરનાં પુદ્ગલોની અપેક્ષાએ મનુષ્યોને પાંચ વર્ણોવાળા, બે ગંધોવાળા, પાંચ રસોવાળા અને આઠ સ્પર્શોવાળા કહ્યા છે. "कम्मगं जीवं च पडुच्च जहा नेरइया" કાર્મણ શરીર અને જીવની અપેક્ષાએ તેમના વર્ણાદિનું કથન નારકોના વર્ણાદિના કથન જેવું જ સમજવું એટલે કે કાર્મણ શરીરના પુદ્ગલોની અપેક્ષાએ મનુષ્યોને પાંચ વર્ણોવાળા, બે ગંધોવાળા, પાંચ

पेक्षया पञ्चवर्णाः, द्विगन्धाः, पञ्चरसाः, चतुःस्पर्शाः प्रज्ञप्ताः जीवापेक्षया तु अवर्णाः, अगन्धाः, अरसाः अस्पर्शाः प्रज्ञप्ताः, 'वाणमंतरजोइसियवेमाणिया जहा नेरइया' वानव्यन्तरज्योतिष्कवैमानिकाः यथा नैरयिकाः प्रतिपादितास्तथैव प्रतिपत्तव्याः, तथा च वानव्यन्तरज्योतिष्कवैमानिकाः वैक्रियतैजसशरीरापेक्षया पञ्चवर्णाः, द्विगन्धाः, पञ्चरसाः, अष्टस्पर्शाः प्रज्ञप्ताः, कार्मणशरीरापेक्षया पञ्चवर्णाः, द्विगन्धाः, पञ्चरसाः, चतुःस्पर्शाः प्रज्ञप्ताः, जीवापेक्षया तु अवर्णाः, अगन्धाः, अरसाः, अस्पर्शाः प्रज्ञप्ता इति भावः 'धम्मत्थिकाए जाव पोग्गलत्थिकाए, एए सव्वे अवन्ना०' धर्मास्तिकायो यावत्-अधर्मास्तिकायः, आकाशास्तिकायः, अद्धासमयः, एते सर्वे अवर्णाः, अगन्धाः, अरसाः, अस्पर्शाः प्रज्ञप्ताः, 'नवरं पोग्गलकाए

की अपेक्षा से पांच वर्णोंवाले, दो गंधोवाले, पांच रसोंवाले और चार स्पर्शोंवाले कहे गये हैं। एवं जीव की अपेक्षा से विना वर्ण के, विना गंध के, विना रस के और विना स्पर्श के कहे गये हैं। 'वाणमंतर जोइसियवेमाणिया जहा नेरइया' वानव्यन्तर, ज्योतिष्क एवं वैमानिक ये सब जैसे नैरयिक कहे गये हैं-वैसे कहना चाहिये तथा-वानव्यन्तर, ज्योतिष्क, एवं वैमानिक ये वैक्रिय तैजस शरीर की अपेक्षा से पांच वर्णोंवाले, दो गंधोवाले, पांच रसोंवाले और आठ स्पर्शोंवाले कहे गये हैं कार्मणशरीर की अपेक्षा पांच वर्णवाले, दो गंधोंवाले, पांच रसोंवाले और चारस्पर्शोवाले कहे गये हैं। जीव की अपेक्षा से विना वर्ण के, विना गंध के, विना रस के और विना स्पर्श के कहे गये हैं। 'धम्मत्थिकाए जाव पोग्गलत्थिकाए एए सव्वे अवन्ना०' धर्मास्तिकाय, यावत्-अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय, अद्धासमय, ये सब विना

રસોવાળા અને ચાર સ્પર્શોવાળા કહ્યા છે, અને જીવની અપેક્ષાએ વર્ણરહિત, ગંધરહિત, રસરહિત, અને સ્પર્શરહિત કહ્યા છે. "वाणमंतरजोइसियवेमाणिया जहा नेरइया" વાનવ્યંતરો, જ્યોતિષિકો અને વૈમાનિક દેવોના વર્ણાદિકોના વિષયમાં નારકોના જેવું જ કથક કરવું જોઈએ એટલે કે વૈક્રિય અને તૈજસ શરીરનાં પુદ્ગલોની અપેક્ષાએ તેમને પાંચ વર્ણોવાળા, બે ગંધોવાળા, પાંચ રસોવાળા અને આઠ સ્પર્શોવાળા કહ્યા છે. કાર્મણ શરીરની અપેક્ષાએ તેમને પાંચ વર્ણોવાળા, બે ગંધોવાળા, પાંચ રસોવાળા અને ચાર સ્પર્શોવાળા કહ્યા છે અને જીવની અપેક્ષાએ તેમને વર્ણરહિત, ગંધરહિત, રસરહિત અને સ્પર્શરહિત કહ્યા છે.

"धम्मत्थिकाए जाव पोग्गलत्थिकाए, एए सव्वे अवण्णा०" ધર્માસ્તિકાય, અધર્માસ્તિકાય, આકાશાસ્તિકાય અને અદ્ધાસમય (કાળ) ને વર્ણરહિત, ગંધ-

पंचवन्ने, दुगंधे, पंचरसे, अट्ठफासे पण्णत्ते' नवरं धर्मास्तिकायापेक्षया पुद्गलास्तिकायः, पञ्चवर्णः, द्विगन्धः, पञ्चरसः, अष्टस्पर्शो प्रज्ञप्तः, धर्मास्तिकायादीनाममूर्तत्वेन वर्णादिरहितत्वात्, पुद्गलास्तिकायस्य तु मूर्तत्वेन पञ्चवर्णाद्यष्टस्पर्शसंभवादितिभावः। 'णाणावरणिज्जे जाव अंतराइए एयाणि चउफासाणि' ज्ञानावरणीयं कर्म यावत्-दर्शनावरणीयं, मोहनीयं, वेदनीयम्, आयुष्यं, नाम गोत्रम्, आन्तरायिकं कर्म, एतानि चतुःस्पर्शानि प्रज्ञप्तानि। गौतमः पृच्छति-'कण्हलेस्सा णं भंते! कइवन्ना०? पुच्छा' हे भदन्त! कृष्णलेश्या खलु कतिवर्णा, कतिगन्धा, कतिरसा, कतिस्पर्शा प्रज्ञप्ता इति पृच्छा, भगवानाह-'दव्वलेस्सं पडुच्च पञ्चवन्ना, जाव

वर्ण के, विना गंध के, विना रस के और विना स्पर्श के कहे गये हैं। 'नवरं पोग्गलकाए पंचवन्ने, दुगंधे, पंचरसे, अट्ठफासे पण्णत्ते' परन्तु जो पुद्गलास्तिकाय है-वह पांच वर्णोंवाला, दो गंधोंवाला, पांच रसोंवाला और आठ स्पर्शोंवाला कहा गया है। क्योंकि पुद्गलास्तिकाय मूर्त है-तथा-धर्मास्तिकाय आदि अमूर्त हैं-इसलिये वे वर्णादि पौद्गलिक गुणों से हीन हैं। 'णाणावरणिज्जे जाव अंतराइए एयाणि चउफासाणि' ज्ञानावरणीयकर्म यावत्-दर्शनावरणीय, वेदनीय, मोहनीय, आयु, नाम एवं गोत्र तथा अन्तराय ये आठों ही कर्म पांच वर्णोंवाले, दो गंधोंवाले, पांच रसोंवाले एवं चार स्पर्शोंवाले होते हैं। अब गौतम प्रभु से ऐसा पूछते हैं-'कण्हलेस्सा णं भंते! कइवन्ना०' हे भदन्त! कृष्णलेश्या कितने वर्णवाली, कितने गंधवाली, कितने रसवाली और कितने स्पर्शवाली है? इसके उत्तर में प्रभु कहते

રહિત, રસરહિત અને સ્પર્શરહિત કહ્યા છે. "नवर पोग्गलकाए पंचवन्ने, दुगंधे, पंचरसे, अट्ठफासे पण्णत्ते" પરન્તુ જે પુદ્ગલાસ્તિકાય છે તેને પાંચ વર્ણોવાળું, બે ગંધોવાળું, પાંચ રસોવાળું અને આઠ સ્પર્શોવાળું કહ્યું છે, કારણ કે પુદ્ગલાસ્તિકાય મૂર્ત છે અને ધર્માસ્તિકાય આદિ અમૂર્ત છે તેથી ધર્માસ્તિકાય આદિને વર્ણાદિ પૌદ્ગલિક ગુણોથી રહિત કહ્યા છે. "णाणावरणिज्जे जाव अंतराइए, एयाणि चउफासाणि" જ્ઞાનાવરણીયકર્મ, દર્શનાવરણીયકર્મ, મોહનીયકર્મ, વેદનીયકર્મ, આયુકર્મ, નામકર્મ ગોત્રકર્મ અને અન્તરાયકર્મ, આ આઠે કર્મો પાંચવર્ણવાળાં, બે ગંધવાળાં પાંચ રસવાળાં અને ચાર સ્પર્શવાળાં હોય છે.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-"कण्हलेस्साणं भंते! कइवण्णा०?" હે ભગવન્! કૃષ્ણ લેશ્યા કેટલા વર્ણવાળી, કેટલા ગંધવાળી, કેટલા રસવાળી અને કેટલા સ્પર્શવાળી હોય છે? આ પ્રશ્નનો ઉત્તર આપતા મહાવીર પ્રભુ કહે છે કે-

अट्ठफासा पण्णत्ता' हे गौतम ! कृष्णलेश्या द्रव्यलेश्यां प्रतीत्य-आश्रित्य-द्रव्यलेश्यापेक्षयेत्यर्थः पञ्चवर्णा, यावत्-द्विगन्धा, पञ्चरसा, अष्टस्पर्शा प्रज्ञप्ता, 'भाव लेस्सं पडुच्च अवण्णा०' भावलेश्याम्-जीवपरिणामं प्रतीत्य-आश्रित्य जीवपरिणामरूपभावलेश्यापेक्षया तु कृष्णलेश्या अवर्णा, अगन्धा, अरसा, अस्पर्शा प्रज्ञप्ता, जीवपरिणामरूपाया भावलेश्याया अमूर्ततया वर्णादिरहितत्वात्, 'एवं जाव सुक्कलेस्सा' एवं-कृष्णलेश्योक्तरीत्या, यावत् नीललेश्या, कापोतलेश्या, तेजोलेश्या, पद्मलेश्या, शुक्ललेश्या एताः सर्वा अपि द्रव्यलेश्यां प्रतीत्य पञ्चवर्णाः, द्विगन्धाः, पञ्चरसाः, अष्टस्पर्शाः प्रज्ञप्ताः, भावलेश्यां प्रतीत्य तु अवर्णाः,

---

हैं-दव्वलेस्सं पडुच्च पंचवन्ना जाव अट्ठफासा पण्णत्ता' हे गौतम! कृष्णलेश्या द्रव्यलेश्या की अपेक्षा लेकर पांच वर्णोंवाली, दो गंधोवाली, पांच रसोंवाली और आठ स्पर्शोंवाली कही गई है। तथा-'भावलेस्सं पडुच्च अवण्णा०' भावलेश्या की अपेक्षा लेकर वह विना वर्ण की, विना गंध की, विना रस की और विना स्पर्श की कही गई है। क्योंकि भावलेश्या जीव के परिणामरूप होती है और जीव का परिणाम अमूर्त कहा गया है-इसलिये अमूर्त में वर्णादिरहितता होती है। 'एवं जाव सुक्कलेस्सा०' कृष्णलेश्या में जैसा यह कथन किया गया है उसी प्रकार का कथन यावत्-नीललेश्या, कापोतलेश्या, तेजोलेश्या, पद्मलेश्या एवं शुक्ललेश्या इन सब लेश्याओं में जानना चाहिये अर्थात् ये सब लेश्याएँ द्रव्यलेश्या की अपेक्षा पांचवर्णोंवाली, दो गंधोंवाली, पांचरसोंवाली और आठ स्पर्शोंवाली कही गई हैं। तथा भावलेश्या

"दव्वलेस्स पडुच्च पंचवन्ना जाव अट्ठफासा पण्णत्ता" દ્રવ્યલેશ્યાની અપેક્ષાએ વિચાર કરવામાં આવે, તો કૃષ્ણલેશ્યા પાંચ વર્ણોવાળી, બે ગંધોવાળી, પાંચ રસોવાળી અને આઠ સ્પર્શોવાળી હોય છે. તથા-"भावलेस्सं पडुच्च अवण्णा०" ભાવલેશ્યાની અપેક્ષાએ વિચાર કરવામાં આવે, તો તે વર્ણ, ગંધ, રસ અને સ્પર્શ વિનાની હોય છે, કારણ કે ભાવલેશ્યા જીવના પરિણામ રૂપ હોય છે અને જીવના પરિણામને અમૂર્ત કહ્યું છે. તેથી અમૂર્તમાં વર્ણાદિનો સદ્ભાવ હોતો નથી. "एवं जाव सुक्कलेस्सा" કૃષ્ણલેશ્યાના વર્ણાદિના વિષયમાં જેવું કથન કરવામાં આવ્યું છે. એવું જ કથન નીલલેશ્યા, કાપોતલેશ્યા, તેજોલેશ્યા, પદ્મલેશ્યા અને શુકલલેશ્યાના વર્ણાદિ વિષે સમજવું એટલે કે દ્રવ્યલેશ્યાની અપેક્ષાએ આ બધી લેશ્યાઓને પાંચવર્ણવાળી, બે ગંધવાળી, પાંચ રસવાળી અને આઠ સ્પર્શોવાળી કહી છે તથા ભાવલેશ્યાની અપેક્ષાએ તેમને

अगन्धाः, अरसाः, अस्पर्शाः प्रज्ञप्ताः। 'सम्मद्दिट्ठी३ चक्खुदंसणे४, आभिणिबोहिय-णाणे जाव विब्भंगणाणे, आहारसन्ना जाव परिग्गहसन्ना, एयाणि अवण्णाणि४' सम्यग्दृष्टिः-सम्यग्दर्शनम्, मिथ्यादृष्टिः मिथ्याज्ञानम्; सम्यग्मिथ्यादृष्टिः-मिश्रदृष्टिः, चक्षुर्दर्शनम्, अचक्षुर्दर्शनम्, अवधिदर्शनम्, केवलदर्शनम्, आभिनि-बोधिकज्ञानम्-मतिज्ञानम्, यावत्-श्रुतज्ञानम्, अवधिज्ञानम्, मनःपर्यवज्ञानं केवलज्ञानम्, मत्यज्ञानम्, श्रुताज्ञानम्, विभङ्गज्ञानम्, आहारसंज्ञा, यावत्-भयसंज्ञा मैथुनसंज्ञा परिग्रहसंज्ञा, एतानि सम्यग्दृष्टिमारभ्य परिग्रहसंज्ञा पर्यन्तानि अवर्णानि, अगन्धानि, अरसानि, अस्पर्शानि प्रज्ञप्तानि, सम्यग्दृष्ट्यादीनामान्तर-

---

की अपेक्षा से ये सब जीव के परिणामरूप होने के कारण अमूर्त होने से विना वर्ण के, विना गंध के, विना रस के और विना स्पर्श के कही गई हैं। 'सम्मद्दिट्ठी३, चक्खुदंसणे४, आभिणिबोहियनाणे, जाव विब्भंगणाणे, आहारसन्ना, जाव परिग्गहसन्ना-एयाणि अवण्णाणि४' गौतम ने अब प्रभु से ऐसा पूछा है-हे भदन्त! सम्यग्दृष्टि,-सम्यग्दर्शन, मिथ्यादृष्टि-मिथ्यादर्शन सम्यग्मिथ्यादृष्टि-मिश्रदृष्टि, चक्षुर्दर्शन, अचक्षुर्दर्शन, अवधिदर्शन, केवलदर्शन, आभिनिबोधिकज्ञान,-मति-ज्ञान, यावत्-श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्यवज्ञान, केवलज्ञान, मत्यज्ञान, श्रुताज्ञान, विभंगज्ञान, आहारसंज्ञा, यावत्-भयसंज्ञा, मैथुनसंज्ञा, परिग्रहसंज्ञातक के पदार्थ विना वर्ण के, विना गंध के, विना रस के, और विना स्पर्श के कहे गये हैं। क्योंकि ये सब जीव के आन्तर परिणामरूप होते हैं-

---

વર્ણરહિત, ગંધરહિત, રસરહિત અને સ્પર્શરહિત કહેવામાં આવી છે કારણ કે ભાવલેશ્યા જીવના પરિણામ રૂપ હોવાને કારણે અમૂર્ત હોય છે તેથી તેમાં વર્ણાદિનો સદ્ભાવ હોતો નથી. "सम्मद्दिट्ठी३, चक्खुदंसणे४, आभिणिबोहियनाणे, जाव विब्भंगणाणे, आहारसन्ना जाव परिग्गहसन्ना, एयाणि अवण्णाणि०" મહાવીર પ્રભુ ગૌતમ સ્વામીને કહે છે કે હે ગૌતમ! સમ્યગ્દૃષ્ટિ મિથ્યાદૃષ્ટિ (મિથ્યાજ્ઞાન), સમ્યગ્મિથ્યાદૃષ્ટિ (મિશ્રદૃષ્ટિ,) ચક્ષુઃદર્શન અચક્ષુદર્શન, અવધિદર્શન, કેવલદર્શન, આભિનિબોધિકજ્ઞાન (મતિજ્ઞાન), શ્રુતજ્ઞાન, અવધિજ્ઞાન, મનઃપર્યવજ્ઞાન, કેવળજ્ઞાન, મત્યજ્ઞાન, શ્રુતાજ્ઞાન, વિભંગજ્ઞાન, આહારસંજ્ઞા, ભયસંજ્ઞા, મૈથુનસંજ્ઞા, અને પરિગ્રહસંજ્ઞા, આ બધાને વર્ણવિનાના, ગંધવિનાના, રસવિનાના અને સ્પર્શવિનાના કહ્યા છે તેઓ જીવના આન્તરપરિણામ રૂપ હોવાને કારણે અમૂર્ત છે. તે કારણે તેમને વર્ણાદિ

परिणामतया अमूर्तत्वेन वर्णादिरहितत्वात्। एवञ्चात्र कृष्णलेश्यामभृतीनि परिग्रहसंज्ञान्तानि जीवपरिणामत्वात् अवर्णादीनि अवसेयानि। औदारिकतैजसवैक्रियाहारकाणि चत्वारि शरीराणि पञ्चवर्णादीनि अष्टस्पर्शानि च बादरपरिणामपुद्गलरूपत्वात्, सर्वत्र चतुःस्पर्शत्वे सूक्ष्मपरिणामः कारणम्, अष्टस्पर्शत्वे च बादरपरिणामः कारणमवसेयम्, इत्यभिप्रायेणाह-'ओरालियसरीरे जाव-तेयगसरीरे एयाणि अट्ठफासाणि' औदारिकशरीर यावत्-वैक्रियशरीरम्, आहारकशरीरम्, तैजसशरीरम्, एतानि चत्वारि शरीराणि अष्टस्पर्शानि बोध्यानि, 'कम्मगसरीरे चउफासे' कार्मणशरीरं चतुःस्पर्शम्, 'मणजोगे, वयजोगे य चउफासे' मनोयोगः, वचोयोगश्च चतुःस्पर्शः प्रज्ञप्तः, कायजोगे अट्ठफासे' काययोगः अष्टस्पर्शः प्रज्ञप्तः,

---

अतः अमूर्त कहे गये हैं इसलिये इनमें वर्णादिमत्ता का अभाव रहता है। इस प्रकार यहां कृष्णलेश्या से लगाकर परिग्रह संज्ञातक के सब पदार्थ जीव परिणामरूप होने से अवर्णादिवाले हैं ऐसा जानना चाहिये। औदारिक, तैजस, वैक्रिय, एवं आहारक ये चार शरीर पांचवर्णादिवाले एवं आठ स्पर्शवाले हैं-क्योंकि ये बादरपरिणामवाले पुद्गलों से जन्य हैं। सर्वत्र चतुःस्पर्शवत्ता में सूक्ष्मपरिणाम कारण कहा गया है, एवं अष्टस्पर्शवत्ता में बादरपरिणाम कारण कहा गया है। इसी अभिप्राय को लेकर 'ओरालियसरीरे जाव तेयगसरीरे एयाणि अट्ठफासाणि' ऐसा यह सूत्र सूत्रकारने कहा है-औदारिक शरीर यावत् वैक्रियशरीर, आहारकशरीर, तैजसशरीर, ये चार शरीर आठ स्पर्शवाले, तथा-'कम्मगसरीरे, चउफासे' कार्मणशरीर चार स्पर्शवाला होता है 'मणजोगे, वयजोगे, य चउफासे' मनोयोग और वचनयोग ये चार स्पर्शवाले

વિનાના કહેવામાં આવેલ છે. આ રીતે કૃષ્ણલેશ્યાથી લઇને પરિગ્રહસંજ્ઞા પર્યન્તના સઘળા પદાર્થો જીવપરિણામરૂપ હોવાથી વર્ણાદિ વિનાના હોય છે, એમ સમજવું જોઇએ જ્યાં જ્યાં ચાર સ્પર્શોનો સદ્ભાવ કહેવામાં આવ્યો છે, ત્યાં ત્યાં સૂક્ષ્મપરિણામ રૂપ કારણ સમજવાનું છે અને જ્યાં જ્યાં આઠ સ્પર્શોનો સદ્ભાવ બતાવ્યો છે, ત્યાં ત્યાં બાદરપરિણામ રૂપ કારણ સમજવાનું છે. તેથી જ સૂત્રકારે કહ્યું છે કે "ओरालियसरीरे जाव तेयगसरीरे, एयाणि अट्ठफासाणि" ઔદારિકશરીર, વૈક્રિયશરીર, આહારકશરીર અને તૈજસશરીર, આ ચાર શરીર આઠ સ્પર્શોવાળાં હોય છે, તથા "कम्मगसरीरे चउफासे" કાર્મણશરીર ચાર સ્પર્શોવાળું હોય છે. "मणजोगे, वयजोगे य चउफासे" મનોયોગ અને વચનયોગને ચાર સ્પર્શોવાળા કહેવામાં આવ્યા છે, "कायजोगे

कायजोगस्य बादरपुद्गलपरिणामत्वात् अष्टस्पर्शत्वम्, 'सागारोवओगे य, अणागारोवओगे य अवण्णा' साकारोपयोगश्च, अनाकारोपयोगश्च आन्तरपरिणामत्वात् अमूर्तत्वेन अवर्णः, अगन्धः, अरसः, अस्पर्शश्च प्रज्ञप्तः। गौतमः पृच्छति—'सव्वदव्वाणं भंते ! कइवन्ना ? पुच्छा' हे भदन्त ! सर्वद्रव्याणि धर्मास्तिकायादीनि कतिवर्णानि, कतिगन्धानि, कतिरसानि, कतिस्पर्शानि प्रज्ञप्तानि ? इति पृच्छा, भगवानाह—'गोयमा ! अत्थेगइया सव्वदव्वा पंचवन्ना जाव अट्ठफासा पण्णत्ता' हे गौतम ! अस्त्येककानि कानिचित् सर्वद्रव्याणि बादरपुद्गलद्रव्यरूपाणि पञ्चवर्णानि, द्विगन्धानि, पञ्चरसानि, चतुःस्पर्शानि प्रज्ञप्तानि, "अत्थेगइया सव्वदव्वा पंचवण्णा, चउफासा पण्णत्ता" अस्त्येककानि कानिचित् द्रव्याणि सूक्ष्मपुद्गलद्रव्यरूपाणि पञ्चवर्णानि, द्विगन्धानि, पञ्चरसानि, चतुःस्पर्शानि प्रज्ञप्तानि 'अत्थेगइया सव्वदव्वा एग-

---

कहे गये है। 'कायजोगे अट्ठफासे' काययोग आठस्पर्शवाला कहा गया है। क्योंकि काययोग बादरपुद्गलोंका परिणामरूप होता है। 'सागारोवओगे य अणागारोवओगे य अवण्णा' साकारोपयोग और अनाकारोपयोग ये दोनों जीव के आन्तर परिणामरूप होते हैं इसलिये अमूर्त होते हैं—अतः इनमें वर्ण, गंध, रस और स्पर्श का अभाव कहा गया है।

अब गौतम प्रभु से ऐसा पूछते हैं—'सव्वदव्वाणं भंते ! कइवन्ना, पुच्छा' हे भदन्त ! समस्त धर्मास्तिकायादिक द्रव्य कितने वर्णोंवाले, कितने गंधोंवाले, कितने रसोंवाले और कितने स्पर्शोंवाले कहे गये हैं ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं—'गोयमा' हे गौतम ! 'अत्थेगइया सव्वदव्वा पंचवन्ना जाव अट्ठफासा पण्णत्ता' समस्त द्रव्यों में से कितनेक द्रव्य—बादरपुद्गलरूपद्रव्य—पांचवर्णोंवाले, यावत् दो

अट्ठफासे" પણ કાયયોગને આઠ સ્પર્શોવાળો કહ્યો છે, કારણ કે કાયયોગ બાદર પુદ્ગલોના પરિણામરૂપ હોય છે. "सागारोवओगे य अणागारोवओगेय अवण्णा" સાકારઉપયોગ અને અનાકારઉપયોગ, આ બન્ને ઉપયોગો જીવના આન્તરપરિણામ રૂપ હોય છે તે કારણે તેઓ અમૂર્ત હોય છે. તેથી તેમને વર્ણરહિત, ગંધરહિત, રસરહિત અને સ્પર્શરહિત કહેવામાં આવેલ છે.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન—" सव्व दव्वाणं भंते ! कइवण्णा० पुच्छा " હે ભગવન્ ! સમસ્ત ધર્માસ્તિ કાયાદિક દ્રવ્યો કેટલા વર્ણવાળાં, કેટલા રસવાળાં અને કેટલા સ્પર્શવાળા હોય છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર—" अत्थेगइया सव्वदव्वा पंचवण्णा जाव अट्ठफासा पण्णत्ता " હે ગૌતમ ! સમસ્ત દ્રવ્યોમાંથી કેટલાક દ્રવ્યો—બાદર પુદ્ગલ રૂપ દ્રવ્યો—પાંચ વર્ણોવાળાં, બે ગંધોવાળાં, પાંચ રસોવાળાં અને આઠ સ્પર્શો

गंधा, एगवण्णा, एगरसा, दुफासा पन्नत्ता' अस्त्येककानि कानिचित् सर्वद्रव्याणि परमाणुद्रव्यरूपाणि एकवर्णानि, एकगन्धानि, एकरसानि, द्विस्पर्शानि, प्रज्ञप्तानि, तथा चोक्तं परमाणुद्रव्यमाश्रित्य-"कारणमेव तदन्त्यं, सूक्ष्मो नित्यश्च भवति परमाणुः। एकरसवर्णगन्धो द्विस्पर्शः कार्यलिङ्गश्च"॥१॥ इति, स्पर्शद्वयञ्च सूक्ष्मसम्बन्धिनाम् चतुर्णां स्पर्शानामन्यतरदविरुद्धं भवति, 'अत्थेगइया सव्वदव्वा अवन्ना जाव अफासा पण्णत्ता' अस्त्येककानि कानिचित् सर्वद्रव्याणि-धर्मास्तिकायादिद्रव्याणि अवर्णानि, यावत् अगन्धानि, अरसानि, अस्पर्शानि प्रज्ञप्तानि,

गंधोंवाले, पांच रसोंवाले और आठ स्पर्शोंवाले कहे गये हैं 'अत्थेगइया सव्वदव्वा पंचवण्णा चउफासा, पण्णत्ता' समस्त द्रव्यों में से कितनेक सूक्ष्मपुद्गलद्रव्य पांचवर्णवाले, दो गंधवाले, पांचरसवाले और चार स्पर्शवाले कहे गये हैं। 'अत्थेगइया सव्वदव्वा एगवण्णा एगगंधा, एगरसा दुफासा पन्नत्ता' समस्त द्रव्यों में से परमाणुरूप पुद्गलद्रव्य एकवर्णवाले, एकगंधवाले, एकरसवाले और दो स्पर्शवाले कहे गये हैं। सो ही कहा है-'एकरसवर्णगंधो, द्विस्पर्शः कार्यलिङ्गश्च' परमाणु एकवर्ण, एकगंध एकरस और दो स्पर्शवाला होता है, इसका ज्ञान इनके संयोग से उत्पन्न हुए कार्य से होता है। सूक्ष्म संबंधी चार स्पर्शों में कोई दो अविरुद्धस्पर्श में रहते हैं। 'अत्थेगइया सव्वदव्वा अवन्ना जाव अफासा पण्णत्ता' तथा समस्त द्रव्यों में से कितनेक द्रव्य-धर्मास्तिकायादिकद्रव्य विना वर्ण के, यावत् विना गंध के, विना रस के और विना स्पर्श के कहे गये हैं। 'एवं सव्व-

વાળાં હોય છે. "अत्थेगइया सव्वदव्वा पचवण्णा०, जाव चउफासा पण्णत्ता" સમસ્ત દ્રવ્યોમાંથી કેટલાક દ્રવ્યોને-સૂક્ષ્મ પુદ્ગલ દ્રવ્યોને-પાંચ વર્ણોવાળાં, બે ગંધોવાળાં, પાંચ રસોવાળાં, અને ચાર સ્પર્શોવાળાં કહ્યા છે, "अत्थेगइया सव्वगंधा, एगगंधा, एगवण्णा, एगरसा, दुफासा पण्णत्ता', સમસ્ત દ્રવ્યોમાંથી કેટલાક દ્રવ્યોને- પરમાણુ પુદ્ગલ રૂપ દ્રવ્યોને-એક ગંધવાળાં એક રસવાળાં, એક વર્ણવાળાં અને બે સ્પર્શવાળાં કહ્યા છે. એજ વાત નીચેના સૂત્રપાઠ દ્વારા વ્યક્ત થાય છે-" एकरसवर्णगंधो, द्विस्पर्शः कार्यलिङ्गश्च " " પરમાણુ રસ એક વર્ણ, એક ગંધ, એક રસ અને બે સ્પર્શવાળો હોય છે, તેનું જ્ઞાન તેમના સંયોગથી ઉત્પન્ન થયેલા કાર્યથી થાય છે. " સૂક્ષ્મસંબંધી ચાર સ્પર્શોમાંના કોઈ બે અવિરુદ્ધ સ્પર્શોનો સદ્ભાવ રહે છે. " अत्थेगइया सव्वदव्वा अवण्णा जाव अफासा पण्णत्ता " સમસ્ત દ્રવ્યોમાંથી કેટલાક દ્રવ્યો-ધર્માસ્તિકાયાદિ દ્રવ્યો-વર્ણરહિત, ગંધરહિત, રસરહિત અને સ્પર્શરહિત હોય

'एवं सव्व पएसा वि, सव्व पज्जवा वि' एवं-पूर्वोक्तद्रव्यरीत्या अस्त्येकके केचन सर्वप्रदेशाः अपि पञ्चवर्णाः, द्विगन्धाः, पञ्चरसाः, अष्टस्पर्शाश्च, प्रज्ञप्ताः, अस्त्येकके केचन द्रव्यप्रदेशाः अवर्णाः अगन्धाः, अरसाः, अस्पर्शाश्च प्रज्ञप्ताः, तत्र मूर्तद्रव्यप्रदेशाः मूर्तद्रव्यवत्पञ्चवर्णादयः, अमूर्तद्रव्यप्रदेशाश्च अमूर्तद्रव्यवदवर्णादयः सन्ति, एवं सर्वपर्यवाः अपि-अस्त्येकके केचन द्रव्यस्य धर्मरूपाः पर्यवाः द्रव्यवदेव पञ्चवर्णाः, द्विगन्धाः, पञ्चरसाः, अष्टस्पर्शाः प्रज्ञप्ताः, अस्त्येकके केचन पर्यवाः अवर्णाः, अरसाः, अगन्धाः, अस्पर्शाश्च प्रज्ञप्ताः, तत्र मूर्तद्रव्यपर्यवाः मूर्तद्रव्यवत्पञ्चवर्णादयः, अमूर्तद्रव्यपर्यवाश्च अमूर्तद्रव्यवदवर्णादयः सन्तीति भावः। 'तीयद्धा

पएसा वि, सव्वपज्जवा वि' इसी प्रकार से कितनेक सर्वप्रदेश भी पांचवर्णवाले, द्विगंधवाले, पांच रसवाले और आठ स्पर्शवाले कहे गये हैं; यावत् कितनेक सर्वप्रदेश विना वर्ण के, विना गंध के, विना रस के और विना स्पर्श के कहे गये हैं। इनमें मूर्तद्रव्य के प्रदेश पुद्गल की तरह पांच वर्णवाले, दो गंध आदि वाले कहे गये हैं, और अमूर्तद्रव्य-धर्मास्तिकायादिक के प्रदेश अमूर्तद्रव्य के समान विना वर्णादि के कहे गये हैं। इसी प्रकार से कितनेक पर्याय भी-कितनेक द्रव्यों की धर्मरूपक्रमभावी पर्यायें भी-द्रव्य की तरह ही पांच वर्णवाली, दो गंधवाली, और आठ स्पर्शवाली कही गई हैं, यावत् कितनेक द्रव्यों की पर्यायें विना वर्णकी विना गंध की विना रस की और विना स्पर्श की कही गई हैं। इनमें मूर्तद्रव्यों की पर्यायें मूर्तद्रव्य की तरह वर्ण, गंध, रस और स्पर्शवाली कही गई हैं और अमूर्तद्रव्य की पर्यायें अमूर्तद्रव्य की तरह विना

છે. "एवं सव्व पएसा वि, सव्व पज्जवा वि" એજ પ્રમાણે કેટલાક દ્રવ્ય-પ્રદેશો પાંચ વર્ણવાળા, બે ગંધવાળા, પાંચ રસવાળા અને આઠ સ્પર્શવાળા હોય છે, અને કેટલાક દ્રવ્યપ્રદેશો વર્ણરહિત, ગંધરહિત, રસરહિત અને સ્પર્શ રહિત હોય છે એટલે કે મૂર્ત દ્રવ્યના પ્રદેશોને, મૂર્ત દ્રવ્યપુદ્ગલોની જેમ, પાંચ વર્ણવાળાં, અને બે ગંધાદિવાળા કહ્યા છે. અમૂર્તદ્રવ્ય પ્રદેશોને-ધર્માસ્તિકાયાદિના પ્રદેશોને, અમૂર્ત દ્રવ્યની જેમ વર્ણાદિ વિનાના કહ્યા છે. એજ પ્રમાણે કેટલાક દ્રવ્યોની પર્યાયોને પણ-કેટલાક દ્રવ્યની ધર્મરૂપ ક્રમભાવી પર્યાયોને પણ-દ્રવ્યની જેમ પાંચ વર્ણવાળી, બે ગંધવાળી, પાંચ રસવાળી અને આઠ સ્પર્શવાળી કહી છે, તથા કેટલાક દ્રવ્યોની પર્યાયોને વર્ણ-વિનાની, ગંધવિનાની, રસવિનાની અને સ્પર્શ વિનાની કહી છે. એટલે કે મૂર્ત દ્રવ્યોની પર્યાયોને મૂર્ત દ્રવ્યની જેમ વર્ણ, ગંધ રસ અને સ્પર્શવાળી કહી છે અને અમૂર્ત દ્રવ્યોની પર્યાયોને, અમૂર્ત દ્રવ્યોની જેમ, વર્ણ, ગંધ,

अवण्णा, जाव अफासा, पण्णत्ता, एवं आणागयद्धा वि, एवं सव्वद्धा वि' अतीताद्धा वि-अतीतकालः, अवर्णा यावत्-अगन्धा, अरसा, अस्पर्शा प्रज्ञप्ता, एवम्-अतीताद्धावत्, अनागताद्धा अपि-अनागतकालोऽपि, अवर्णा, अगन्धा, अरसा, अस्पर्शा प्रज्ञप्ता, एवम् अतीताद्धादिवदेव सर्वाद्धा अपि-सर्वकालोऽपि, अवर्णा, अगन्धा, अरसा, अस्पर्शा प्रज्ञप्ता, एतेषाम् अतीताद्धादिकालत्रयाणामपि अमूर्तत्वेन वर्णादिरहितत्वादिति भावः ॥सू० २॥

जीवपरिणामवक्तव्यता।

मूलम्-'जीवे णं भंते ! गब्भं वक्कममाणे कइवन्नं, कइगंधं, कइरसं, कइफासं परिणामं परिणमइ? गोयमा ! पंचवन्नं, दुगंधं पंचरसं अट्ठफासं परिणामं परिणमइ ॥सू० ३॥

छाया—जीवः खलु भदन्त ! गर्भं व्युत्क्रामन् कतिवर्णम्, कतिगन्धम्, कतिरसं, कतिस्पर्शम् परिणामं परिणमति ? गौतम ! पञ्चवर्णम्, द्विगन्धम्, पञ्चरसम्, अष्टस्पर्शम् परिणामं परिणमति ॥सू० ३॥

वर्णादि की कही गई हैं। 'तीयद्धा अवण्णा, जाव अफासा, पण्णत्ता, एवं अणागयद्धा वि, एवं सव्वद्धा वि' अतीत-भूतकाल, भी विना वर्णका, विना गंध का, विना रस का और विना स्पर्श का कहा गया है। इसी प्रकार से अनागतकाल भी-भविष्यत् काल भी विना वर्णादि का कहा गया है। अतीताद्धा की तरह सर्वकाल भी विना वर्ण का, विना गंध का, विना रस का और विना स्पर्श का कहा गया है। क्यों कि भूत, भविष्यत् और वर्तमान ये तीनों ही काल अमूर्त कहे गये हैं। अतः अमूर्त होने के कारण इनमें पौद्गलिकगुण वर्णादिक नहीं होते हैं, उनसे ये रहित होते हैं ॥सू० २॥

રસ અને સ્પર્શ વિનાની કહી છે. "तीयद्धा अवण्णा, जाव अफासा, एवं अणागयद्धा वि, एवं सव्वद्धा वि" ભૂતકાળને પણ વર્ણ વિનાનો, ગંધવિનાનો, રસવિનાનો અને સ્પર્શવિનાનો કહ્યો છે એજ પ્રમાણે અનાગત (ભવિષ્ય) કાળને પણ વર્ણ, ગંધ, રસ અને સ્પર્શોથી રહિત કહ્યો છે ભૂતકાળની જેમ સર્વ કાળને પણ વર્ણ, ગંધ, રસ અને સ્પર્શ વિનાનો કહ્યો છે, કારણ કે ભૂત, ભવિષ્ય અને વર્તમાન, એ ત્રણે કાળને પણ અમૂર્ત કહ્યા છે. તેઓ અમૂર્ત હોવાને કારણે તેમનામાં પૌદ્ગલિક ગુણોનો સદ્ભાવ સંભવી શકતો નથી. ॥સૂ૦૨॥

टीका—वर्णादि मस्तावात् जीवस्य व्युत्क्रमणकाले वर्णादिपरिणामं प्ररूपयितुमाह-'जीवे णं भंते' इत्यादि, 'जीवे णं भंते ! गब्भं वक्कममाणे कइवन्नं, कइगंधं, कइरसं, कइफासं परिणामं परिणमइ ? गौतमः पृच्छति-हे भदन्त ! जीवः खलु गर्भं व्युत्क्रामन् गर्भे उत्पद्यमानः गर्भोत्पत्तिकाले इत्यर्थः, कतिवर्णं, कतिगंधं, कतिरसं, कतिस्पर्शं परिणामं परिणमति-कतिवर्णादिना रूपेण परिणमतीतिभावः। भगवानाह-'गोयमा ! पंचवन्नं दुगंधं पंचरसं अट्ठफासं परिणामं परिणमइ' हे गौतम ! जीवः गर्भव्युत्क्रमणकाले, पञ्चवर्णं द्विगन्धम्, पञ्चरसम् अष्ट-

जीवपरिणामवक्तव्यता—

'जीवे णं भंते ! गब्भं वक्कममाणे' इत्यादि।

टीकार्थ-वर्णादि के प्रस्ताव को लेकर सूत्रकार ने इस सूत्र द्वारा जीव के व्युत्क्रमण काल में उसके वर्णादि की प्ररूपणा की है। इसमें गौतम ने प्रभु से ऐसा पूछा है-हे भदन्त ! जीव जब गर्भ में आने लगता है-तब गर्भोत्पत्तिकाल में वह कितने वर्णादिरूप से वह परिणाम को प्राप्त होता है ? अर्थात् उस समय वह जीव कितने वर्णवाला, कितने गंधवाला, कितने रसवाला और कितने स्पर्शवाला होता है ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-'गोयमा' हे गौतम ! 'पंचवन्नं, दुगंधं, पंचरसं, अट्ठफासं परिणमइ' जीव जब गर्भ में आने लगता है तब वह उस काल में पांच वर्णवाला, दो गंधवाला, पांच रसवाला और आठ

—જીવપરિણામની વક્તવ્યતા—

"जीवे णं भंते ! गब्भं वक्कममाणे" ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ—આ સૂત્ર દ્વારા સૂત્રકારે જીવના વ્યુત્ક્રમણ કાળમાં તેનાવર્ણાદિની નીચે પ્રમાણે પ્રરૂપણા કરી છે—

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન—"जीवे णं भंते ! गब्भं वक्कममाणे कइवन्नं, कइगंधं, कइ रसं, कइफासं परिणामं परिणमइ ?" હે ભગવન્ ! જ્યારે જીવ ગર્ભમાં આવે છે, ત્યારે એટલે કે ગર્ભોત્પત્તિકાળમાં-જીવ કેટલાં વર્ણાદિ રૂપ પરિણામને પ્રાપ્ત કરે છે ? એટલે કે જીવ જ્યારે ગર્ભમાં આવે છે, ત્યારે કેટલાં વર્ણવાળો હોય છે ? કેટલા ગંધવાળો હોય છે ? કેટલા રસવાળો હોય છે ? કેટલા સ્પર્શવાળો હોય છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર—"गोयमा !" હે ગૌતમ ! ગર્ભવ્યુત્ક્રાન્ત જીવ "पंचवन्नं, दुगंधं, पंचरसं, अट्ठफासं परिणमइ" પાંચ વર્ણવાળો, બે ગંધવાળો, પાંચ રસવાળો અને આઠ સ્પર્શવાળો હોય છે, કારણ કે ગર્ભવ્યુત્ક્રમણ

स्पर्शम्, परिणामं परिणमति-गच्छति गर्भव्युत्क्रमणकाले जीवशरीरस्य पञ्चवर्णादिमत्वात् तद्व्युत्क्रमणकाले जीवपरिणामस्य पञ्चवर्णं, द्विगन्धं, पञ्चरसाष्टस्पर्शत्वमवसेयमिति भावः तथा च गर्भं व्युत्क्रामन् जीवो वर्णादिभिर्विचित्रं परिणामं परिणमतीति सिद्धम्॥सू० ३॥

जीवस्य विचित्रपरिणामहेतुवक्तव्यता।

मूलम्-'कम्मओ णं भंते! जीवे नो अकम्मओ विभत्तिभावं परिणमइ, कम्मओ णं जए नो अकम्मओ विभत्तिभावं परिणमइ? हंता, गोयमा! कम्मओ णं तं चेव जाव परिणमई, नो अकम्मओ विभत्ति भावं परिणमइ सेवं भंते! सेवं भंते त्ति॥सू०४॥

बारससयगे पंचमे उद्देसए

छाया-कर्मतः खलु भदन्त! जीवो, नो अकर्मतो विभक्तिभावं परिणमति? कर्मतः खलु जगत् नो अकर्मतो विभक्तिभावं परिणमति? हन्त, गौतम! कर्मतः

स्पर्शवाला होता है क्यों कि गर्भव्युत्क्रमण काल में जीवशरीर पांच वर्णादिवाला होता है इसलिये गर्भव्युत्क्रमण काल में जीव को पांच वर्णादि परिणामोंवाला-पांचवर्णवाला, दो गंधवाला, पांचरसवाला और आठ स्पर्शवाला-कहा गया है-ऐसा जानना चाहिये तात्पर्य कहने का यह है कि जीव स्वभावतः अमूर्तिक होने से वर्णादिरूप परिणाम विना का है परन्तु इसके साथ शरीर का सम्बन्ध लगा हुआ है। अतः जबतक मुक्ति में यह प्राप्त नहीं हुआ है तबतक संसारी होने के कारण शरीर के सम्बन्ध को लेकर यह विचित्र वर्णादिरूप परिणामवाला बना रहता है॥सू० ३॥

કાળમાં (જ્યારે ગર્ભમાં જીવ આવે છે ત્યારે) જીવશરીર પાંચ વર્ણાદિવાળું હોય છે તેથી ગર્ભવ્યુત્ક્રમણ કાળમાં જીવને પાંચ વર્ણાદિ પરિણામોવાળો-પાંચ વર્ણવાળો, બે ગંધવાળો, પાંચ રસવાળો અને આઠ સ્પર્શવાળો-કહેવામાં આવ્યો છે. એવું સમજવું જોઇએ આ કથનનો ભાવાર્થ એ છે કે જીવ સ્વભાવતઃ અમૂર્ત હોવાને કારણે વર્ણાદિ રૂપ પરિણામો વિનાનો હોય છે. પરન્તુ તેની સાથે શરીરનો સંબંધ તો ચાલુ જ રહ્યા કરે છે આ શરીર-સંબંધને કારણે, જ્યાં સુધી તે મુક્તિ પ્રાપ્ત કરતો નથી, ત્યાં સુધી તો સંસારી અવસ્થાવાળો રહેવાને કારણે શરીરના સંબંધવાળો જ રહે છે, તે કારણે તે વિચિત્ર વર્ણાદિરૂપ પરિણામોવાળો જ બની રહે છે. ॥સૂ૦૩॥

खलु तच्चैव यावत्-परिणमति, नो अकर्मतो विभक्तिभावं परिणमति, तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति ॥सू० ४॥ द्वादशशतके पञ्चमोदेशकः ॥

टीका—अथ जीवस्य विचित्रपरिणामहेतुं प्ररूपयितुमाह-'कम्मओ णं' इत्यादि 'कम्मओ णं भंते ! जीवे, नो अकम्मओ विभत्तिभावं परिणमइ ?' हे भदन्त ! किं कर्मतः खलु कर्मणः सकाशात्, नो अकर्मतः-न कर्माणि विना, जीवो, विभक्तिभावं-विभागरूपं भावं-नैरयिकतिर्यग्मनुष्यदेवभवेषु नानारूपं परिणामं, परिणमति ? प्राप्नोति ? एवम् 'कम्मओ णं जए' नो अकम्मओ विभत्ति भावं परिणमइ ?' किम् कर्मतः-कर्मणः सकाशात् खलु, नो अकर्मतः-न कर्माणि विना जगत् गच्छति-प्राप्नोति तांस्तान् नारकादि भावानिति जगत्-जीवसमुदायः, विभक्तिभावं-नैरयिकादि नानारूपं परिणामं परिणमति-प्राप्नोति ?

जीव के विचित्रपरिणाम की वक्तव्यता-

'कम्मओणं भंते ! जीवे नो अकम्मओ' इत्यादि।

टीकार्थ-इस सूत्र द्वारा सूत्रकार ने जीव के विचित्र परिणाम का हेतु क्या है ? इस बात की प्ररूपणा की है इसमें गौतम ने प्रभु से ऐसा पूछा है-'कम्मओ णं भंते। जीवे नो अकम्मओ विभत्तिभावं परिणमइ' हे भदंत! क्या जीव कर्म से ही विभक्तिभाव को-नैरयिक, तिर्यग्, मनुष्य एवं देव इन भवों में नानारूप परिणाम को-प्राप्त करता है? विना कर्म के नहीं करता है क्या ? इसी प्रकार से 'कम्मओणं जए, नो अकम्मओ विभत्तिभावं परिणमइ' क्या जगतउन२ नारकादि पर्यायों को प्राप्त करनेवाला जीवसमूह भी कर्म से ही नैरयिक आदि

—જીવના વિચિત્ર પરિણામની વક્તવ્યતા—

"कम्मओणं भंते ! जीवे नो अकम्मओ" ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ—આ સૂત્ર દ્વારા સૂત્રકારે જીવના વિચિત્ર પરિણામના કારણોની પ્રરૂપણા કરી છે—આ વિષયને અનુલક્ષીને ગૌતમ સ્વામી મહાવીર ભગવાનને એવો પ્રશ્ન પૂછે છે કે "कम्मओ णं भंते ! जीवे नो अकम्मओ विभत्तिभावं परिणमइ ?" હે ભગવન્! શું જીવ કર્મ દ્વારા જ વિભક્તિભાવ ને—નારક, તિર્યંચ, મનુષ્ય અને દેવ, આ ભવોમાં વિવિધ પરિણામને—પ્રાપ્ત કરે છે ? શું કર્મ વિના જીવ વિભક્તિભાવને પ્રાપ્ત કરતો નથી ? એજ પ્રમાણે "कम्मओणं जए, नो अकम्मओ विभत्तिभावं परिणमइ" શું નારકાદિ પર્યાયોને પ્રાપ્ત કરનારો જીવસમૂહ પણ કર્મ વડે જ નૈરયિક આદિ વિવિધ પરિણામોની પ્રાપ્તિ કરે છે ? અને કર્મવિના શું તેઓ નૈરયિક આદિ વિવિધ પરિણામોને પ્રાપ્ત કરતા નથી ?

भगवानाह-'हंता, गोयमा ! कम्मओ णं तंचेव जाव परिणमइ, नो अकम्मओ विभत्तिभावं परिणमइ' हे गौतम ! हन्त ! सत्यम्, कर्मतः खलु तदेवं-पूर्वोक्तरीत्या यावत्-नो अकर्मतो जीवो विभक्तिभावं-नैरयिकादि नानारूपपरिणामं परिणमति-प्राप्नोति, एवं कर्मतः खलु जगत्-जीवसमूहः विभक्तिभावं परिणमति-प्राप्नोति, नो अकर्मतः-न कर्माणि विना जगत् विभक्तिभावं नैरयिकादिनानारूपपरिणामं परिणमति-प्राप्नोति अन्ते गौतमो भगवद्वाक्यं प्रमाणयन्नाह-'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' हे भदन्त ! तदेवं-भवदुक्तं सर्वं सत्यमेव, हे भदन्त ! तदेवं-भवदुक्तं सर्वं सत्यमेवेति ॥सू० ४॥

॥ इति श्री विश्वविख्यात-जगद्वल्लभ-प्रसिद्धवाचक पञ्चदशभाषाकलितललितकलापालापकप्रविशुद्धगद्यपद्यनैकग्रन्थनिर्मापक वादिमानमर्दक श्री शाहू छत्रपति कोल्हापुरराजप्रदत्त-'जैनाचार्य' पदभूषित—कोल्हापुरराजगुरु-बालब्रह्मचारि—जैनाचार्य—जैनधर्मदिवाकर -पूज्य श्री घासीलालव्रतिविरचितायां श्री "भगवतीसूत्रस्य" प्रमेयचन्द्रिकाख्यायां व्याख्यायां द्वादशशतके पञ्चमोद्देशकः समाप्तः ॥१२-५॥

नानारूप परिणामों को प्राप्त करता है ? विना कर्म के नहीं करता है क्या ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-' हंता, गोयमा ! कम्मओणं तंचेव जाव परिणमइ, नो अकम्मओ विभत्तिभावं परिणमइ ' हे गौतम ! हां, यह ऐसी ही बात है कि जीव या जीवसमूहरूप जगत कर्म से ही-विना कर्म के नहीं, नैरयिकादि नानारूप परिणाम को प्राप्त करता है अब-अन्त में गौतमस्वामी प्रभु से उनके वचनों में सत्यता ख्यापित करने के निमित्त कहते हैं-' सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति, हे भदन्त !

ગૌતમ સ્વામીના પ્રશ્નનો ઉત્તર આપતા મહાવીર પ્રભુ કહે છે કે " हंता, गोयमा ! कम्मओणं तचेव जाव परिणमइ, नो अकम्मओ विभत्तिभावं परिणमइ " હે ગૌતમ ! હા, એવું જ બને છે જીવ અથવા જીવસમૂહ રૂપ જગત કર્મ વડે જ નૈરયિક આદિ વિવિધ પ્રકારના પરિણામને પ્રાપ્ત કરે છે, કર્મ વિના જીવ અથવા જીવસમૂહ રૂપ જગત નૈરયિક આદિ વિવિધ પરિણામોને પ્રાપ્ત કરતા નથી હવે સૂત્રનો ઉપસંહાર કરવા નિમિત્તે ગૌતમ સ્વામીના આ વચનો દ્વારા પ્રભુનાં વચનોને પ્રમાણભૂત ગણવામાં આવેલ છે-

आपने जो यह विषय कहा है-वह सब बिलकुल सत्य ही है। हे भदन्त! आपने जो यह विषय कहा है-वह बिलकुल सत्य ही है। इस प्रकार कहकर वे गौतम अपने स्थानपर तप और संयम से आत्मा को भावित करते हुए बैठ गये ॥सू०४॥

जैनाचार्य जैनधर्मदिवाकर श्री घासीलालजी महाराज कृत "भगवतीसूत्र" की प्रमेयचन्द्रिका व्याख्याके बारहवें शतकका पांचवा उद्देशक समाप्त ॥१२-५॥

"सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति" "हे भगवन्! आपे जे कह्युं ते सत्य ज छे. हे भगवन्! आपे आ विषयनुं जे प्रतिपादन कर्युं ते सर्वथा सत्य ज छे." आ प्रमाणे कहीने भगवानने वंदणा नमस्कार करीने, गौतम स्वामी पेताने स्थाने बेसी गया. ॥सू०४॥

जैनाचार्य जैनधर्मदिवाकर श्री घासीलालजी महाराज कृत "भगवतीसूत्र" नी प्रमेयचन्द्रिका व्याख्याना बारमा शतकनो पांचमो उद्देशक समाप्त ॥१२-५॥

अथ षष्ठोद्देशकः प्रारभ्यते

द्वादशशतके षष्ठोद्देशकस्य संक्षिप्तविषयविवरणम्॥

राहोश्चन्द्रग्रसनविषये अन्यतीर्थिकवक्तव्यता खण्डनम्, तदनन्तरं राहुदेवस्य-वर्णनम्, राहुनामानि, राहुविमानवर्णनम्, राहोर्यातायातसमये चन्द्रप्रकाशाच्छादनवर्णनम्, राहुप्रकारप्ररूपणम् च। राहोश्चन्द्रसूर्यावरणकालप्ररूपणम्, चन्द्रस्य सश्रीकत्वव्यवहारबीजप्ररूपणम्, सूर्यस्य आदित्यव्यवहारहेतुकथनम्, चन्द्रस्य अग्रमहिषीवक्तव्यता प्ररूपणम्, चन्द्रसूर्ययोः विशेषप्रकारकामभोगवर्णनम्॥

राहुवक्तव्यता।

मूलम्—"रायगिहे जाव एवं वयासी--बहुजणे णं भंते! अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ, जाव एवं परूवेइ-एवं खलु राहू

छट्ठे उद्देशेका प्रारंभ

बारहवें शकत के इस छठे उद्देशे में जो जो विषय कहा गया है-उसका विवरण संक्षेप से इस प्रकार है—राहु जब चन्द्रमा को ग्रसता है-तब चन्द्रग्रहण होता है-इस विषय में अन्यतीर्थिकजनों की जो मान्यता है वह ठीक नहीं है-ऐसा कथन राहुदेव का वर्णन राहु के नाम राहु विमान का वर्णन राहु के गमनागमन के समय में चन्द्रप्रकाश के आच्छादन का वर्णन राहुप्रकारप्ररूपण राहु के चन्द्र और सूर्य को आवरण करने के काल का प्ररूपण चन्द्र को 'सश्री' कहने का कारण सूर्य को आदित्य कहने में हेतु का कथन चन्द्र की अग्रमहिषियों का कथन चन्द्र और सूर्य के विशेषप्रकार के कामभोग का वर्णन.

છઠ્ઠા ઉદ્દેશાનો પ્રારંભ—

આ છઠ્ઠા ઉદ્દેશકમાં પ્રતિપાદિત વિષયનો સંક્ષિપ્ત સારાંશ નીચે પ્રમાણે છે-"રાહુ જ્યારે ચન્દ્રમાનો ગ્રાસ કરે છે, ત્યારે ચન્દ્રગ્રહણ થાય છે," આ પ્રકારની અન્યતીર્થિકોની માન્યતા મિથ્યા હોવાનું પ્રતિપાદન રાહુદેવનું વર્ણન-રાહુનાં નામોનું કથન-રાહુના વિમાનનું વર્ણન રાહુની અવરજવર થાય ત્યારે ચન્દ્રપ્રકાશના આચ્છાદનનું કથન રાહુના પ્રકારોનું કથન-સૂર્ય ચન્દ્રને રાહુ ક્યારે આચ્છાદિત કરે છે, તેનું કથન ચન્દ્રને 'સશ્રી' કહેવાના કારણનું નિરૂપણ-સૂર્યને 'આદિત્ય' કહેવાના કારણનું નિરૂપણ ચન્દ્રની અગ્રમહિષીઓનું કથન ચન્દ્ર અને સૂર્યના વિશિષ્ટ કામભોગોનું વર્ણન.

चंदं गेण्हइ, एवं खलु राहू चंदं गेण्हइ, से कहमेयं भंते ! एवं ? गोयमा ! जं णं से बहुजणेणं अन्नमन्नस्स जाव, मिच्छंते एवमाहंसु, अहं पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि जाव एवं परूवेमि-एवं खलु राहू देवे महिड्ढिए जाव महासोक्खे, वरवत्थधरे, वरमल्लधरे, वरगंधधरे, वराभरणधारी। राहुस्स णं देवस्स नव नामधेज्जा पण्णत्ता, तं जहा-सिंघाडए१, जडिलए२, खंभए३, खरए४, दद्दुरे५, मगरे६, मच्छे७, कच्छभे८, कण्हसप्पे९। राहुस्स णं देवस्स विमाणा पंचवण्णा पण्णत्ता, तं जहा-किण्हा, नीला, लोहिया, हालिद्दा, सुक्किल्ला, अत्थिकालए राहुविमाणे, खंजणवण्णाभे, पण्णत्ते। अत्थिनीलए राहु विमाणे लाउय-वन्नाभे, पण्णत्ते। अत्थिलोहिए राहुविमाणे मंजिट्ठ-वण्णाभे पण्णत्ते। अत्थि पीतए राहुविमाणे हालिद्दवण्णाभे पण्णत्ते। अत्थि सुक्किल्लए राहुविमाणे भासरासिवन्नाभे पण्णत्ते। जयाणं राहू आगच्छमाणे वा, गच्छमाणे वा, विउव्वमाणे वा, परियारेमाणे वा, चंदलेस्सं पुरत्थिमेणं आवरेत्ताणं पच्चत्थिमेणं वीईवयइ, तया णं पुरत्थिमेणं चंदे उवदंसेइ, पच्चत्थिमेणं राहू। जया णं राहू आगच्छमाणे वा, गच्छमाणे वा, विउव्व-माणे वा परियारेमाणे वा, चंदलेस्सं, पच्चत्थिमेणं आवरेत्ताणं पुरत्थिमेणं वीईवयइ, तया णं पच्चत्थिमेणं चंदे उवदंसेइ, पुर-पुरत्थिमेणं राहू। एवं जहा पुरत्थिमेणं पच्चत्थिमेणं दो आलावगा भणिया, तहा दाहिणेणं उत्तरेणय दो आलावगा भाणियव्वा। एवं उत्तरपुरत्थिमेण दाहिणपच्चत्थिमेण य,

दो आलावगा भाणियव्वा। दाहिणपुरत्थिमेणं उत्तरपच्चत्थिमेण य दो आलावगा भाणियव्वा एवं चेव जाव तयाणं उत्तरपच्चत्थिमेणं चंदे उवदंसेइ, दाहिणपुरत्थिमेणं राहू। जया णं राहू आगच्छमाणे वा, गच्छमाणे वा, विउव्वमाणे वा, परियारेमाणे वा चंदस्स लेस्सं आवरेमाणे आवरेमाणे चिट्ठई, तदाणं मणुस्सलोए मणुस्सा वयंति-एवं खलु राहू चंदं गेण्हइ, एवं खलु राहू चंदं गेण्हइ। जया णं राहू आगच्छमाणे वा गच्छमाणे, विउव्वमाणे वा, परियारेमाणे वा चंदस्स लेस्सं आवरेत्ताणं पासेणं वीई वयइ, तयाणं मणुस्सलोए मणुस्सा वयंति-एवं खलु चंदेणं राहुस्स कुच्छी भिन्ना, एवं खलु चंदेणं राहुस्स कुच्छी भिन्ना। जया णं राहू आगच्छमाणे वा गच्छमाणे वा, विउव्वमाणे वा, परियारेमाणे वा चंदस्स लेस्सं आवरेत्ताणं पच्चोसक्कइ, तयाणं मणुस्सलोए मणुस्सा वयंति-एवं खलु राहुणा चंदे वंते, एवं खलु राहुणा चंदे वंते। जयाणं राहू आगच्छमाणे वा, गच्छमाणे वा, विउव्वमाणे वा, परियारेमाणे वा चंदस्स लेस्सं अहे सपक्खिं सपडिदिसिं आवरेत्ताणं चिट्ठइ, तयाणं मणुस्सलोए मणुस्सा वयंति एवं खलु राहुणा चंदे घत्थे, एवं खलु राहुणा चंदे घत्थे। कइविहेणं भंते! राहू पण्णत्ते? गोयमा! दुविहे राहू पण्णत्ते, तं जहा-धुवराहू, पव्वराहू य। तत्थ णं जे से धुवराहू, से णं बहुलपक्खस्स पाडिवए पन्नरसतिभागेणं पन्नरसइभागं चंदस्स लेस्सं आवरेमाणे आवरेमाणे चिट्ठइ, तं जहा पढमाए पढमं भागं बितियाए बितियं भागं जाव पन्नरसेसु पन्नरसमं भागं, चरिमसमए चंदे रत्ते भवइ,

अवसेसे समए चंदरत्ते वा विरत्ते वा भवइ, तमेव सुक्कपक्खस्स उवदंसेमाणे उवदंसेमाणे चिट्ठइ, पढमाए पढमं भागं जाव पन्नरसेसु पन्नरसमं भागं, चरिमसमए चंदे विरत्ते भवइ, अवसेसे समए चंदे रत्ते वा, विरत्ते वा भवइ। तत्थ णं जे से पव्वराहू से जहण्णेणं छण्हं मासाणं, उक्कोसेणं बायालीसाए मासाणं चंदस्स, अडयालीसाए संवच्छराणं सूरस्स ॥सू० १॥

छाया—राजगृहे यावत् एवम् अवादीत्—बहुजनः खलु भदन्त ! अन्योन्यस्य एवमाख्याति, यावत्—एवं मरूपयति—एवं खलु राहुश्चन्द्रं गृह्णाति, एवं खलु राहुश्चन्द्रं गृह्णाति, तत्कथमेतत् भदन्त ! एवम् ?। गौतम ! यत् खलु स बहुजनः खलु अन्योन्यस्य यावत्, मिथ्या ते एवमाहुः, अहं पुनः गौतम ! एवमाख्यामि, यावत् एवं मरूपयामि, एवं खलु राहुः देवो महर्द्धिकः, यावत्—महासौख्यः, वरवस्त्रधरः, वरमाल्यधरः, वरगन्धधरः, वराभरणधारी। राहोः खलु देवस्य नव नामधेयानि प्रज्ञप्तानि, तद्यथा—शृङ्गाटकः१, जटिलकः२, स्तम्भः (क्षत्रकः)३, खरः४, दर्दुरः५, मकरः६, मत्स्यः७, कच्छपः८, कृष्णसर्पः९। राहोः खलु देवस्य विमानाः पञ्चवर्णाः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा—कृष्णाः, नीलाः, लोहिताः, हारिद्राः, शुक्लाः। अस्ति कालको राहुविमानः खञ्जनवर्णाभः, प्रज्ञप्तः। अस्ति नीलको राहुविमानः अलाबूवर्णाभः प्रज्ञप्तः। अस्ति लोहितो राहुविमानो मञ्जिष्ठवर्णाभः प्रज्ञप्तः अस्ति पीलको राहुविमानः हारिद्रवर्णाभः प्रज्ञप्तः। अस्ति शुक्लो राहुविमानो भस्मराशिवर्णाभः प्रज्ञप्तः। यदा खलु राहुः आगच्छन् वा, गच्छन् वा, विकुर्वन् वा, परिचारयन् वा चन्द्रलेश्यां पौरस्त्ये आवृत्य खलु पश्चिमे व्यतिव्रजति तदा खलु पौरस्त्ये चन्द्रः उपदर्शयति, पश्चिमे राहुः। यदा खलु राहुः आगच्छन् वा, गच्छन् वा, विकुर्वन् वा, परिचारयन् वा, चन्द्रलेश्यां पश्चिमे आवृत्य पौरस्त्ये व्यतिव्रजति तदा खलु पश्चिमे चन्द्रः उपदर्शयति, पौरस्त्ये राहुः। एवं यथा पौरस्त्ये पश्चिमे द्वौ आलापकौ भणितौ, एवं दक्षिणे उत्तरे च द्वौ आलापकौ भणितव्यौ। एवम् उत्तरपौरस्त्ये दक्षिणपश्चिमे च द्वौ आलापकौ भणितव्यौ। दक्षिणपौरस्त्ये, उत्तरपश्चिमे द्वौ आलापकौ भणितव्यौ। एवमेव यावत् तदा खलु उत्तरपश्चिमे चन्द्रः उपदर्शयति, दक्षिणपौरस्त्ये राहुः। यदा खलु राहुः आगच्छन् वा, गच्छन् वा, विकुर्वन् वा, परिचारयन् वा, चन्द्रस्य लेश्याम् आवृण्वन् २ तिष्ठति, तदा

खलु मनुष्यलोके मनुष्या वदन्ति-एवं खलु राहुश्चन्द्रं गृह्णाति, एवं खलु राहुश्चन्द्रं गृह्णाति। यदा खलु राहुः आगच्छन् वा, गच्छन् वा, विकुर्वन् वा, परिचारयन् वा, चन्द्रस्य लेश्याम् आवृण्वन् पार्श्वेन खलु व्यतिव्रजति, तदा खलु मनुष्यलोके मनुष्या वदन्ति-एवं खलु चन्द्रेण राहोः कुक्षिः भिन्नः, एवं खलु चन्द्रेण राहोः कुक्षिः भिन्नः। यदा खलु राहुः आगच्छन् वा, गच्छन् वा, विकुर्वन् वा, परिचारयन् वा, चन्द्रस्य लेश्याम् आवृण्वन् अत्यवष्वष्कते, तदा खलु मनुष्यलोके मनुष्या वदन्ति-एवं खलु राहुणा चन्द्रो वान्तः, एवं खलु राहुणा चन्द्रो वान्तः। यदा खलु राहुः आगच्छन् वा, गच्छन् वा, विकुर्वन् वा, परिचारयन् वा चन्द्रस्य लेश्याम् अधः सपक्षं समन्ति दिक् आवृत्य तिष्ठति, तदा खलु मनुष्यलोके मनुष्या वदन्ति, एवं राहुणा चन्द्रो ग्रस्तः, एवं खलु राहुणा चन्द्रो ग्रस्तः। कतिविधः खलु भदन्त! राहुः प्रज्ञप्तः, गौतम! द्विविधो राहुः प्रज्ञप्तः तद्यथा-ध्रुवराहुः, पर्वराहुश्च, तत्र खलु यः स ध्रुवराहुः स खलु बहुलपक्षस्य प्रतिपदः पञ्चदशत्रिभागेन पञ्चदशभागं चन्द्रस्य लेश्याम् आवृण्वन् आवृण्वन् तिष्ठति, तद्यथा-प्रथमायां प्रथमं भागं द्वितीयायां द्वितीयं भागम्, यावत्-पञ्चदशसु पञ्चदशं भागम्, चरमसमये चन्द्रः रक्तो भवति, अवशेषे समये चन्द्रो रक्तो वा, विरक्तो वा भवति, तमेव शुक्लपक्षस्य उपदर्शयन् उपदर्शयन् तिष्ठति, प्रथमेन प्रथमं भागं' यावत्-पञ्चदशसु पञ्चदशं भागम्, चरमसमये चन्द्रो विरक्तो भवति, अवशेषे समये चन्द्रो रक्तो वा, विरक्तो वा भवति, तत्र खलु यः स पर्वराहुः स जघन्येन षण्णां मासानाम्, उत्कृष्टेन द्वाचत्वारिंशता मासानां चन्द्रस्य, अष्टाचत्वारिंशता संवत्सराणां सूरस्य ॥सू० १॥

टीका—पूर्वोद्देशके कर्मवशतो जगतो नैरयिकादि विचित्रभवप्राप्तिरूपभावः प्रतिपादितः, स च भावो राहुग्रसने चन्द्रस्यापि भवे दित्याशङ्कानिरासाय षष्ठो-

---

राहुवक्तव्यता-

'रायगिहे जाव एवं वयासी' इत्यादि।

टीकार्थ-इससे पूर्व उद्देशक में यह प्रतिपादित किया गया है कि जगत जीवों का जो नैरयिक आदि विचित्र भावों की प्राप्तिरूप भाव होता है वह उनके कर्म के वश से होता है ऐसा वह भाव राहु से

—રાહુ વિષયક વક્તવ્યતા—

"रायगिहे जाव एवं वयासी" ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ—આના પહેલાના ઉદ્દેશકમાં એવું પ્રતિપાદન કરવામાં આવ્યું છે કે જગતના જીવોને નૈરયિક આદિ ભવોની પ્રાપ્તિ થાય છે. આ ભવોની પ્રાપ્તિ રૂપ જે ભાવ છે, તે તેમના કર્મના કારણભૂત હોય છે. એવો તે ભાવ રાહુ વડે

देशकमारभते 'रायगिहे' इत्यादि, 'रायगिहे जाव एवं वयासी' राजगृहे यावत् नगरे स्वामी समवसृतः, धर्मकथां श्रोतुं पर्षत् निर्गच्छति, धर्मकथां श्रुत्वा प्रति गता पर्षत्, ततो विनयेन शुश्रूषमाणो गौतमः प्राञ्जलिपुटः पर्युपासीनः, एवम्-वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत्-'बहुजणे णं भंते ! अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ, जाव परूवेइ' हे भदन्त ! बहुजनः अन्यतीर्थिकः खलु अन्योन्यस्य-परस्परम्-एवं-वक्ष्यमाणप्रकारेण, आख्याति, यावत् भाषते, प्रज्ञापयति, प्ररूपयति च-'एवं खलु राहू चंदं गेण्हइ' एवं खलु राहू चंदं गेण्हइ, एवं खलु निश्चयेन राहुश्चन्द्रं गृह्णाति-ग्रसति, एवं खलु निश्चयेन राहुश्चन्द्रं गृण्हाति-ग्रसति, 'से कहमेयं भंते ! एवं ?' हे भदन्त ! तत् कथमेतत्-अन्यतीर्थिकस्य कथनम्-एवं-सत्यं मन्ये ? अन्यतीर्थिकस्य

ગ્રસિત હોને પર ચન્દ્ર કો ભી હો સકતા હૈ, સો ઇસ આશંકા કી નિવૃત્તિ કે લિયે સૂત્રકાર ને ઇસ છઠે ઉદ્દેશક કા કથન કિયા હૈ-' રાયગિહે જાવ એવં વયાસી ' રાજગૃહ નગર મેં યાવત્-મહાવીર સ્વામી પધારે ઉનસે ધર્મકથા સુનને કે લિયે પરિષદ્ અપને ૨ સ્થાન સે નિકલકર ઉનકે પાસ ગઈ પ્રભુને ધર્મકથા કહી-ધર્મકથા સુનકર પરિષદ્ પીછે અપને ૨ સ્થાન પર ચલી ગઈ ઇસકે બાદ પ્રશ્ન પૂછને કી અભિલાષાવાલે ગૌતમ ને દોનોં હાથ જોડકર બડે વિનય કે સાથ પ્રભુ સે ઇસ પ્રકાર પૂંછા -' બહુજણેણં ભંતે ! અન્નમન્નસ્સ એવમાઇક્ખઇ ' હે ભદન્ત ! અન્ય-તીર્થિક જન પરસ્પર મેં ઐસા કહતે હૈં, યાવત્-ભાષણ કરતે હૈં, પ્રજ્ઞાપિત કરતે હૈં, પ્રરૂપિત કરતે હૈં-' એવં ખલુ રાહૂ ચંદં ગેણ્હઇ ' એવં ખલુ રાહૂ ચંદં ગેણ્હઇ ' રાહુ ચન્દ્રમા કો ગ્રસતા હૈ, રાહુ ચન્દ્રમા કો ગ્રસતા હૈ ' સે કહમેયં ભંતે ! એવં ' સો ઐસા અન્યતીર્થિકજનોં કા યહ કથન ક્યા

ગ્રસિત થાય ત્યારે ચન્દ્રમાં પણ સંભવી શકે છે, આ આશંકાનું સૂત્રકારે અહીં નિવારણ કર્યું છે-" રાયગિહે જાવ એવ વયાસી " રાજગૃહ નગરમાં મહાવીર પ્રભુ પધાર્યા, પરિષદ નીકળી, ધર્મકથા સાંભળીને પરિષદ વિખરાઈ ગઈ, ઇત્યાદિ સમસ્ત કથન અહીં ગ્રહણ કરવું જોઇએ ત્યાર બાદ ધર્મતત્ત્વને સાંભળવાની ઇચ્છાવાળા ગૌતમ સ્વામીએ બન્ને હાથ જોડીને વિનયપૂર્વક મહાવીર પ્રભુને આ પ્રમાણે પૂછયું-" बहु जणेणं भंते ! अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ, " હે ભગવન્ ! અન્યતીર્થિકો પરસ્પરમાં એવું કહે છે, એવું ભાખે છે, એવી પ્રજ્ઞાપના કરે છે અને એવી પ્રરૂપણા કરે છે કે-" एवं खलु राहू चदं गेण्हइ, एवं खलु राहू चंदं गेण्हइ " રાહુ ચન્દ્રમાનો ગ્રાસ કરે છે, રાહુ ચન્દ્રમાનો ગ્રાસ કરે છે, " से कहमेयं भंते ! एवं " હે ભગવન્ ! અન્ય તીર્થિ-

कथनं किं सत्यमेवेति प्रश्नः, भगवानाह-'गोयमा ! जं णं से बहुजणे णं अन्नमन्नस्स जाव, मिच्छंते एवमाहंसु' हे गौतम ! यत् खलु स बहुजनः अन्यतीर्थिकः खलु अन्योन्यस्य-परस्परम्, यावत्-एवमाख्याति, भाषते, प्रज्ञापयति, प्ररूपयति 'एवं खलु निश्चितं राहुश्चन्द्रं ग्रसतीति, तत् ते अन्यतीर्थिकाः मिथ्या एवम्-पूर्वोक्तमाहुः तद्वचनस्य मिथ्यात्वम् अप्रामाणिकत्वात् कुप्रवचनसंस्कारोपनीतत्वाच्च, ग्रहणस्य राहुचन्द्रयोर्विमानापेक्षकतया, विमानयोर्न ग्रासकग्रास्यभावः, अपितु आच्छाद्याच्छादकभावो वर्त्तते, 'अहं पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि जाव एवं परूवेमि' हे गौतम ! अहं पुनरत्र राहुचन्द्रग्रहणविषये, एवं-वक्ष्यमाणरीत्या, आख्यामि यावत् भाषे, प्रज्ञापयामि, एवं-प्ररूपयामि-'एवं खलु राहू देवे महिड्ढिए

सत्य है ? इसके उत्तर में प्रभु ने गौतम से ऐसा कहा-' गोयमा ! जे णं से बहुजणेणं अण्णमण्णस्स जाव मिच्छंते एवमाहंसु " हे गौतम ! जो वे अन्यतीर्थिकजन आपस में ऐसा कहते हैं-यावत् भाषण करते हैं, प्रज्ञापित करते हैं, प्ररूपित करते हैं-कि राहु चन्द्रमा को ग्रसता है-सो उनका ऐसा कथन अप्रमाणिक होने से तथा कुप्रावचन के संस्कार से प्राप्त किया गया होने से मिथ्या है। क्यों कि ग्रहण राहु और चन्द्रमा के विमानों की अपेक्षावाला होता है इसलिये दोनों में ग्रासक ग्रास्य भाव नहीं बनता है। अपि तु आच्छाद्य, आच्छादक भाव बनता है। ' अहं पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि जाव एवं परूवेमि ' हे गौतम ! मैं इस राहु द्वारा चन्द्र के ग्रहण के विषय में ऐसा कहता हूं यावत् ऐसा भाषण करता हूं, ऐसी प्रज्ञापना करता हूं ऐसी प्ररूपणा करता हूं

કોનું આ કથન શું સત્ય છે ખરૂં ? તેનો ઉત્તર આપતાં મહાવીર પ્રભુ કહે છે કે " गोयमा ! जे णं से बहुजणेणं अण्णमण्णस्स जाव मिच्छं ते एवमाहंसु " હે ગૌતમ ! તે અન્ય તીર્થિકો પરસ્પરને એવું જે કહે છે, એવું ભાખે છે, એવી પ્રજ્ઞાપનો કરે છે અને એવી પ્રરૂપણા કરે છે, કે રાહુ ચન્દ્રનો ગ્રાસ કરે છે, તે કથન અપ્રામાણિક હોવાથી તથા, કુપ્રાવચનના સંસ્કાર વડે પ્રાપ્ત કરાયેલું હોવાથી મિથ્યા છે કારણ કે ગ્રહણમાં રાહુ અને ચન્દ્રમાનાં વિમાનોની અપેક્ષા રહે છે. તે કારણે વિમાનોમાં ગ્રાસક ગ્રાસ્ય ભાવ સંભવી શકતો નથી, પરન્તુ આચ્છાદ્ય, આચ્છાદક ભાવ જ સંભવી શકે છે.

" अहं पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि जाव एवं परूवेमि " હે ગૌતમ ! રાહુ દ્વારા ચન્દ્રના ગ્રહણના વિષયમાં હું તો એવું કહું છું, એવું પ્રતિપાદિત કરૂં છું એવું પ્રજ્ઞાપિત કરૂં છું અને એવું પ્રરૂપિત કરૂં છું કે " एवं

जाव महासोक्खे, वरवत्थधरे, वरमल्लधरे, वरगंधधरे, वराभरणधारी' एवं खलु निश्चितं राहुः देवो महर्द्धिकः अत्यन्तसमृद्धिशाली, यावत्–महाद्युतिकः, महाबलः, महायशाः, महासौख्यः, वरवस्त्रधरः–उत्तमपट्टवस्त्रधारी, वरमाल्यधरः–श्रेष्ठमालाधारी, वरगन्धधरः–श्रेष्ठचन्दनपुष्पपरिमलवासितः, वराभरणधारी–महार्घ्यभूषणालङ्कृतशरीरो वर्तते, 'राहुस्स णं देवस्स नवनामधेज्जा पण्णत्ता' राहोः खलु देवस्य नवनामधेयानि प्रज्ञप्तानि, 'तं जहा सिंघाडए१, जडिलए२, खंभए३, खइए४, दद्दुरे५, मगरे६, मच्छे७, कच्छभे८, कण्हसप्पे९' तद्यथा–शृङ्गाटकः१, जटिलकः२, स्तम्भः३, खरकः४, दर्दुरः५, मकरः६, मत्स्यः७, कच्छपः८, कृष्णसर्पः९, 'राहुस्स णं देवस्स विमाणा पंचवण्णा, पण्णत्ता' राहोः खलु देवस्य विमानाः पञ्च-

---

' एवं खलु राहू देवे महिड्ढिए जाव महासोक्खे, वरवत्थधरे, वरमल्लधरे, वरगंधधरे, वराभरणधारी ' राहु एक देव है, और वह महाऋद्धिवाला है–यावत्–महाद्युतिवाला, महाबलवाला, महायशवाला, महासुखवाला, उत्तमवस्त्र धारण करनेवाला, श्रेष्ठमाला धारण करनेवाला एवं श्रेष्ठचन्दन, एवं पुष्पों की गंध से वासित देहवाला है तथा उसका शरीर श्रेष्ठ आभरणों से सदा सुशोभित रहता है, ऐसा वह राहु देव है! 'राहुस्स णं देवस्स नव नामधेज्जा पण्णत्ता ' उस राहु देव के नाम नौ कहे गये हैं। 'तंजहा '–'१ सिंघाडए, २ जडिलए, ३ खंभए, ४ खरए, ५ दद्दुरे, ६ मगरे, ७ मच्छे, ८ कच्छभे, ९ कण्हसप्पे ' इस प्रकार से है–शृङ्गाटक१, जटिलक२, स्तंभ,३, खरक४, दर्दुर५, मकर६, मत्स्य७, कच्छप८, और कृष्णसर्प९, ' राहुस्स णं देवस्स विमाणा पंचवण्णा

खलु राहू देवे महिड्ढिए जाव महासोक्खे, वरवत्थधरे, वरमल्लधरे, वरगंधधरे, वराभरणधारी " રાહુ એક દેવ છે, અને તે મહાઋદ્ધિવાળો, મહાદ્યુતિવાળો, મહાબલવાળો, મહાયશવાળો અને મહાસુખવાળો છે. તથા તે ઉત્તમ વસ્ત્રોને ધારણ કરનારો, ઉત્તમ માલાઓને ધારણ કરનારો, ઉત્તમ ચન્દન, પુષ્પો આદિની ગંધથી યુક્ત ગંધવાળો તથા શ્રેષ્ઠ આભરણોથી વિભૂષિત દેહવાળો છે. " राहुस्स णं देवस्स नव नामधेज्जा पण्णत्ता " તે રાહુ દેવના નવ નામ કહ્યા છે, " तंजहा " તે નામો નીચે પ્રમાણે છે–" सिंघाडए, जडिलए, खंभए, खरए, दद्दुरे, मगरे, मच्छे, कच्छभे, कण्हसप्पे " (૧) શૃંગાટક, (૨) જટિલક, (૩) સ્તંભ, (૪) ખરક, (૫) દદુંર; (૬) મકર, (૭) મત્સ્ય, (૮) કચ્છપ અને (૯) કૃષ્ણસર્પ.

"राहुस्स णं देवस्स विमाणा पंचवण्णा पण्णत्ता–तंजहा" રાહુ દેવનાં વિમાનો નીચે પ્રમાણે પાંચ વર્ણના કહ્યા છે–" किण्हा, नीला, लोहिया, हालिद्दा,

वर्णाः प्रज्ञप्ताः, तंजहा-किण्हा, नीला, लोहिया, हालिद्दा सुक्किल्ला' तद्यथा-कृष्णाः, नीलाः, लोहिताः, हारिद्राः, शुक्लाः, अत्थिकालए राहु विमाणे खंजण-वण्णाभे पण्णत्ते ' अस्ति तावत् कालः कृष्णः, राहुविमानः खञ्जनवर्णाभः-खञ्जनं दीपमल्लिकामलस्तस्य यो वर्ण स्तद्वदाभा कान्तिर्यस्य स तथाविधः प्रज्ञप्तः-उक्तः 'अत्थि नीलए राहुविमाणे लाउयवण्णाभे पण्णत्ते' अस्ति-नीलो राहुविमानः अलाबूवर्णाभः-आलाबूः-तुम्बकम्, तदिव आभा-कान्तिर्यस्य स तथाविधः प्रज्ञप्तः, 'अत्थि लोहिए राहुविमाणे मंजिट्ठवन्नाभे पण्णत्ते ' अस्ति तावत् लोहितः-रक्त-वर्णः, राहुविमानः, मञ्जिष्ठावर्णाभः प्रज्ञप्तः, 'अत्थि पीतए राहुविमाणे हालिद्द-वण्णाभे पण्णत्ते' अस्ति-संभवति, पीतो राहुविमानः, हारिद्रावर्णाभः-पीतवर्णः

पण्णत्ता ' राहुदेव के विमान पांच वर्ण के कहे गये हैं ' तंजहा-किण्हा, नीला, लोहिया, हालिद्दा, सुक्किल्ला ' कृष्ण, नील, लोहित, हारिद्र और शुक्ल ' अत्थि कालए राहुविमाणे खंजणवण्णाभे पण्णत्ते ' राहु का जो कृष्णविमान है वह खंजन वर्ण केजैसी आभावाला कहा गया है। दीप-मल्लिका का जो मल होता है-उसका नाम खंजन है। इस खंजन की जैसी कान्ति होती है-वैसी ही कान्ति इस विमान की है। ' अत्थि नीलए राहुविमाणे लाउयवण्णाभे पण्णत्ते ' तथा राहु का जो नीलविमान है-वह हरी तुंबड़ी के जैसी कान्तिवाला कहा गया है। ' अलाबू ' नाम-तूंबड़ी का है। ' अत्थिलोहिए राहुविमाणे मंजिट्ठवण्णाभे पण्णत्ते ' राहु-देव का जो लोहितविमान है वह मजीठ की जैसी कान्ति होती है वैसी कान्तिवाला कहा गया है। ' अत्थि पीतए राहुविमाणे हालिद्दवण्णाभे पण्णत्ते ' तथा राहु का जो पीतविमान है वह हल्दी की कान्ति जैसा

सुक्किल्ला " (૧) કૃષ્ણ, (૨) નીલ, (૩) લોહિત (લાલ), (૪) હારિદ્ર (પીળા) અને (૫) શુકલ " अत्थिकालए राहुविमाणे खंजणवण्णाभे पण्णत्ते " રાહુનું જે કૃષ્ણવિમાન છે તે અંજનના વર્ણની આભાવાળું-એટલે કે કાજળ અથવા મેશના જેવી કાન્તિવાળું (દીપકની જ્યોત વડે જે કાજળ ઉત્પન્ન થાય છે. તેને અંજન કહે છે.) " अत्थि नीलए राहुविमाणे लाउयवण्णाभे पण्णत्ते " રાહુનું જે નીલ વિમાન છે, તે લીલી તુંબડીના જેવી કાન્તિવાળું કહ્યું છે. " अलाबू " આ પદ તુંબડી માટે વપરાયું છે. " अत्थिलोहिए राहुविमाणे मज्जिट्ठवण्णाभे पण्णत्ते " રાહુદેવનું જે લોહિત વર્ણનું વિમાન છે, તે મંજીઠના જેવી કાન્તિ-વાળું કહ્યું છે. " अत्थि पीतए राहुविमाणे हालिद्दवण्णाभे पण्णत्ते " રાહુનું જે પીળા રંગનું વિમાન છે, તેની કાન્તિ હળદરની કાન્તિ જેવી છે. " अत्थि-

मज्ञप्तः। "अत्थि सुक्किल्लए राहुविमाणे भासरासिवण्णाभे पण्णत्ते" अस्ति संभवति शुक्लो राहुविमानः भस्मराशिवर्णाभः प्रज्ञप्तः। प्रस्तुतवक्तव्यविषयमाह-'जया णं राहू आगच्छमाणे वा, गच्छमाणे वा, विउव्वमाणे वा, परियारेमाणे वा, चंदलेस्सं पुरत्थिमेणं आवरेत्ताणं पच्चत्थिमेणं वीईवयइ, तदाणं पुरत्थिमेणं चंदे उवदंसेइ, पच्चत्थिमेणं राहू' यदा खलु राहुः आगच्छन् वा अतिचारेण गत्वा ततः कृष्णवर्णादिना विमानेन प्रतिनिवर्तमानः गच्छन् वा-स्वभावचारेण चरणं कुर्वन्, एतेन पदद्वयेन स्वाभाविकी गतिः प्रतिपादिता, अथ अस्वाभाविकविमानगतिग्रहणाय आह-विकुर्वन् वा-विकुर्वणां कुर्वन् वा, परिचारयन् वा-कामक्रीडां कुर्वन् वा, एतस्मिन् द्वये अतित्वरया प्रवर्तमानो विसंस्थुलचेष्टया स्वविमानम् असामञ्जस्येन चालयति इत्युक्तं भवति, तथा

कहा गया है। 'अत्थि सुक्किल्लए राहुविमाणे भासरासिवण्णाभे पण्णत्ते' राहु का जो शुक्ल विमान है-वह भस्मराशि की कान्ति जैसा कहा गया है। 'जयाणं राहू आगच्छमाणे वा गच्छमाणे वा विउव्वमाणे वा परियारेमाणे वा चंदलेस्सं पुरत्थिमेणं आवरेत्ताणं पच्चत्थिमेणं वीईवयइ' जब राहु बहुत तेज चाल से कृष्णवर्णादि विमान द्वारा चलकर बाद में जब उसी विमान से उसी चाल से लौटता है, अथवा-अपनी स्वाभाविक चाल से कृष्णवर्णादि विमान द्वारा चलता है, (इन दो पदों द्वारा राहु की स्वाभाविक गति कही गई है-) अथवा-जब वह विक्रिया करता है या कामक्रीडा करता है (इन दोनों पदों से अस्वाभाविक विमानगति प्रकट की गई है क्यों कि-इन दोनों अवस्थाओं में वह अतित्वरा से प्रवृत्ति करता है, इसलिये विसंस्थुल चेष्टावाला होने के कारण वह अपने विमान को ठीक प्रकार से नहीं चलाता है) इस प्रकारसे करता हुआ वह

सुक्किल्लए राहुविमाणे भासरासिवण्णाभे पण्णत्ते" રાહુનું જે શુકલ વિમાન છે તેની કાન્તિ ભસ્મરાશિની કાન્તિ જેવી કહી છે.

"जयाणं राहू आगच्छमाणे वा गच्छमाणे वा विउव्वमाणे वा परियारेमाणे वा चंदलेस्सं पुरत्थिमेणं आवरेत्ताणं पच्चत्थिमेणं वीईवयइ" જ્યારે રાહુ ઘણી જ ઝડપી ગતિ વડે કૃષ્ણાદિ વિમાન દ્વારા જાય છે અને એજ વિમાન દ્વારા એવી જ ગતિથી પાછો ફરે છે-એટલે કે પોતાની સ્વાભાવિક ગતિથી કૃષ્ણાદિ વિમાનમાં અવરજવર કરે છે (આ બે પદો દ્વારા રાહુની સ્વાભાવિક ગતિની વાત કરવામાં આવી છે), અથવા જ્યારે તે વિક્રિયા કરે છે અથવા કામક્રીડા કરે છે (આ બે પદો દ્વારા અસ્વાભાવિક વિમાન ગતિ પ્રકટ કરવામાં આવી છે, કારણ કે આ બન્ને અવસ્થાઓમાં તે અતિત્વરાથી પ્રવૃત્તિ કરે છે, તેથી વિસંસ્થુલ ચેષ્ટાવાળો હોવાને કારણે તે પોતાના વિમાનને યોગ્ય રીતે ચલા-

कुर्वाणः चन्द्रलेश्यां चन्द्रज्योत्स्नादीप्तिम्, पौरस्त्ये-पूर्वदिग्भागे आवृत्य-आच्छाद्य पश्चिमे-पश्चिमदिग्भागे, व्यतिव्रजति-गच्छति, स्वविमानेन चन्द्रविमानावरणे चन्द्रदीप्तेरावृतत्वात् चन्द्रलेश्यां-ज्योत्स्नारूपाम् पुरस्तादाच्छाद्य, चन्द्रापेक्षया परेण याति तदा खलु पौरस्त्ये-पूर्वदिग्भागे, राहुपेक्षया पूर्वस्यां दिशि चन्द्रः आत्मानमुपदर्शयति, पश्चिमे चन्द्रापेक्षया पश्चिमायां दिशि राहुरात्मानमुपदर्शयतीत्यर्थः, 'जया णं राहू आगच्छमाणे वा, गच्छमाणे वा, विउव्वमाणे वा, परियारेमाणे वा, चंदलेस्सं पच्चत्थिमेणं आवरेत्ताणं, पुरत्थिमेणं वीईवयइ, तया णं पच्चत्थिमेणं चंदे उवदंसेइ, पुरत्थिमेणं राहू' यदा खलु राहुः आगच्छन् वा, गच्छन् वा, विकुर्वन् वा-विकुर्वणां कुर्वन् वा परिचारयन् वा-कामक्रीडां कुर्वन् वा, चन्द्रलेश्यां-चन्द्रदीप्तिम्, पश्चिमे, आवृत्य-आच्छाद्य, पौरस्त्ये-पूर्वदिग्भागे, व्यतिव्रजति-

---

राहु चन्द्र की लेश्या को-चन्द्र की ज्योत्स्ना को-पूर्वदिग्भाग में आवृत्त करके-आच्छादित करके-पश्चिमदिग्भाग में जाता है इस प्रकार यह राहु अपने विमान द्वारा चन्द्रविमान के आवरण करने पर उस चन्द्र की दीप्ति को आवृत कर लेता है-इस कारण ज्योत्स्नारूप चन्द्रलेश्या को सामने से आच्छादित करके चन्द्र की अपेक्षा यह दूसरी दिशा की ओर चला जाता है। उस समय राहु की अपेक्षा चन्द्र अपने को पूर्वदिशा में दिखाता है और चन्द्र की अपेक्षा राहु अपने को पश्चिमदिशा में दिखलाता है। 'जयाणं राहू आगच्छमाणे गच्छमाणे वा विउव्वमाणे वा, परियारेमाणे वा चंदलेस्सं पच्चत्थिमेणं आवरेत्ताणं पुरत्थिमेणं वीईवयइ, तया णं पच्चत्थिमेणं चंदे उवदंसेइ, पुरत्थिमेणं राहू' तथा-जिस समय आता हुआ या जाता हुआ या विक्रिया करता हुआ या कामक्रीडा करता हुआ राहु चन्द्र की दीप्ति को पश्चिमदिशा में

વતો નથી) આ પ્રમાણે ગમનાગમન કરતો તે રાહુ ચન્દ્રની લેશ્યાને (ચન્દ્રની જ્યોત્સ્નાને-ચન્દ્રના પ્રકાશને) પૂર્વ દિગ્ભાગમાં આવૃત (આચ્છાદિત) કરીને પશ્ચિમ દિગ્ભાગમાં જાય છે. આ પ્રકારે પોતાના વિમાન દ્વારા ચન્દ્રના વિમાનને આવૃત કરતો તે રાહુ ચન્દ્રની દીપ્તિને (પ્રકાશને) આવૃત કરી લે છે, આ કારણે જ્યોત્સ્ના રૂપ ચન્દ્રલેશ્યાને સામેથી આચ્છાદિત કરીને ચન્દ્રની અપેક્ષાએ બીજી દિશા તરફ તે ચાલ્યો જાય છે તે સમયે રાહુની અપેક્ષાએ ચન્દ્ર પૂર્વદિશામાં દેખાય છે અને ચન્દ્ર કરતાં પશ્ચિમ દિશામાં રાહુ દેખાય છે. "जयाणं राहू आगच्छमाणे गच्छमाणे वा विउव्वमाणे वा, परियारेमाणे वा चंदलेस्सं पच्चत्थिमेणं आवरेत्ताणं पुरत्थिमेणं वीईवयइ तया णं पच्चत्थिमेणं चंदे उवदंसेइ, पुरत्थिमेणं राहू" તથા-આવતો અથવા જતો અથવા વિક્રિયા કરતો

गच्छति, तदा खलु पश्चिमे-राहुपेक्षया पश्चिमायां दिशि चन्द्रः स्वस्वरूपमुपदर्शयति, पौरस्त्ये-चन्द्रापेक्षया पूर्वस्यां दिशि राहुः स्वस्वरूपमुपदर्शयति. 'एवं जहा पुरत्थिमेणं, पच्चत्थिमेणं दो आलावगा भणिया, एवं दाहिणेणं उत्तरेण य, दो आलावगा भाणियव्वा ? एवं-रीत्या यथा पौरस्त्ये, पश्चिमे च द्वौ आलापकौ भणितौ, एवं-तथैव, दक्षिणे, उत्तरे चापि द्वौ आलापकौ भणितव्यौ, 'एवं उत्तरपुरत्थिमेण, दाहिणपच्चत्थिमेणं य, दो आलावगा भाणियव्वा' एवं-पूर्वोक्तरीत्या, उत्तरपौरस्त्ये-ईशानकोणे, दक्षिणपश्चिमे-नैर्ऋत्यकोणे च द्वौ आलापकौ भणितव्यौ, 'दाहिणपुरत्थिमेणं, उत्तरपच्चत्थिमेणं दो आलावगा भाणियव्वा' दक्षिणपौरस्त्ये-आग्नेयकोणे, उत्तरपश्चिमे-वायव्यकोणे द्वौ आलापकौ भणितव्यौ 'एवं चेव जाव तयाणं उत्तरपच्चत्थिमेणं चंदे उवदंसेइ, दाहिणपुरत्थिमेणं राहू' एवमेव-पूर्वोक्तरीत्या, यावत्-यदा राहुः आगच्छन् वा४,

---

'आवृत्त करके पूर्वदिग्भाग में आता है, तब चन्द्र राहु की अपेक्षा अपने को पश्चिमदिशा में दिखलाता है, और चन्द्र की अपेक्षा से राहु अपने को पूर्वदिशा में दिखलाता-' एवं जहा पुरत्थिमेणं पच्चत्थिमेणं दो आलावगा भणिया, एवं दाहिणेणं उत्तरेण य दो आलावगा भाणियव्वा' जैसे पूर्वदिशा और पश्चिम दिशा में ये पूर्वोक्तरूप से दो आलापक कहे गये हैं-उसी प्रकार से दक्षिण और उत्तरदिशा में भी दो आलापक कहना चाहिये ' एवं उत्तरपुरत्थिमेणं, दाहिणपच्चत्थिमेण य दो आलावगा भाणियव्वा ' इसी प्रकार से ईशानकोण में एवं नैर्ऋत्यकोन में भी दो आलापक कहना चाहिये तथा-' दाहिणपुरत्थिमेणं उत्तरपच्चत्थिमेणं दो आलावगा भाणियव्वा ' आग्नेयकोन में और वायव्यकोन में भी इसी प्रकार से दो आलापक कहना चाहिये ' एवं चेव जाव तयाणं उत्तरपच्चत्थिमेणं चंदे उवदंसेइ, दाहिणपुरत्थिमेणं राहू ' इसी पूर्वोक्त-

---

અથવા કામક્રીડા કરતો એવો રાહુ ચન્દ્રની દીપ્તિને પશ્ચિમ દિશામાં આવૃત કરીને પૂર્વ દિશામાં આવે છે, ત્યારે રાહુ કરતાં પશ્ચિમ દિશામાં ચન્દ્ર દેખાય છે અને ચન્દ્ર કરતાં પૂર્વદિશામાં રાહુ દેખાય છે. " एवं जहा पुरत्थिमेणं पच्चत्थिमेणं दो आलावगा भाणिया, एवं दाहिणेणं उत्तरेण य दो आलावगा भाणियव्वा " જેવી રીતે પૂર્વ અને પશ્ચિમ દિશાને અનુલક્ષીને બે આલાપકો કહેવામાં આવ્યા છે, એજ પ્રકારે દક્ષિણદિશા અને ઉત્તરદિશાને અનુલક્ષીને પણ બે આલાપકો કહેવા જોઇએ. " दाहिणपुरत्थिमेणं उत्तरपच्चत्थिमेणं दो आलावगा भाणियव्वा " અગ્નિકોણ અને વાયવ્ય કોણના પણ બે આલાપકો કહેવા જોઈએ " एवं चेव जाव तयाणं उत्तरपच्चत्थिमेणं चंदे उवदंसेइ, दाहिणपुरत्थिमेणं राहू " એજ

गच्छन् वा विकुर्वन् वा परिचारयन् वा चन्द्रलेश्याम् उत्तरे आवृत्य, दक्षिणे व्यतिव्रजति तदा उत्तरस्यां दिशि चन्द्रः, दक्षिणस्यां दिशि राहुश्च स्वस्वात्मानम् उपदर्शयतः, एवं यदा राहुः आगच्छन् वा गच्छन् वा विकुर्वन् वा परिचारयन् वा दक्षिणे चन्द्रलेश्याम् आवृत्य उत्तरे याति तदा दक्षिणस्यां दिशि चन्द्रः; उत्तरस्यां दिशि राहुश्च स्वस्वात्मानम् उपदर्शयतः, तथा यदा राहुः आगच्छन् वा, गच्छन् वा विकुर्वन् वा परिचारयन् वा४ उत्तरपौरस्त्ये-ईशाने चन्द्रलेश्याम् आवृत्य दक्षिणपश्चिमे नैऋत्ये याति तदा उत्तरपौरस्त्ये ईशाने चन्द्रः, दक्षिणपश्चिमे-नैर्ऋत्ये राहुश्च स्वस्वात्मानम् उपदर्शयतः, एवं यदा राहुः आगच्छन् वा गच्छन् वा विकुर्वन् वा

रीति के अनुसार यावत्-जब राहु आता हुआ, या जाता हुआ, या विक्रिया करता हुआ या कामक्रीडा करता हुआ चन्द्रलेश्या को उत्तरदिशा में आच्छादित करके दक्षिणदिशामें जाता है तब चन्द्रमा अपने को उत्तरदिशा में और राहु अपने को दक्षिणदिशामें दिखलाता है। इसी प्रकार से जब आता हुआ या जाता हुआ, या विक्रिया करता हुआ या कामक्रीडा करता हुआ राहु दक्षिणदिशा में चन्द्र की कान्ति को आवृत करके उत्तरदिशा में जाता है, तब दक्षिणदिशा में चन्द्र और उत्तरदिशा में राहु अपने को दिखलाते हैं। तथा-जब आता हुआ, या जाता हुआ, विक्रिया करता हुआ या कामक्रीडा करता हुआ राहु ईशानकोन में चन्द्रलेश्या को आच्छादित करके दक्षिणपश्चिम के कोने में-नैर्ऋत्यकोन में जाता है, तब चन्द्रमा अपने को उत्तरपौरस्त्यकोने में-ईशानकोन में दिखलाता है, और राहु अपने को नैर्ऋत्यदिशा में दिखलाता है। इसी प्रकार आता हुआ या जाता हुआ, या विक्रिया करता

પૂર્વોક્ત પદ્ધતિ અનુસાર, આવતો, જતો, વિક્રિયા કરતો અથવા કામક્રીડા કરતો થકો રાહુ જ્યારે ચન્દ્રની લેશ્યાને (જ્યોત્સ્નાને) ઉત્તરદિશામાં આચ્છાદિત કરીને દક્ષિણ દિશામાં જાય છે, ત્યારે ચન્દ્રમા ઉત્તર દિશામાં અને રાહુ ચન્દ્રની દક્ષિણ દિશામાં દેખાય છે. એજ પ્રમાણે આવતો, જતો, વિક્રિયા કરતો અથવા કામક્રીડા કરતો થકો રાહુ જ્યારે દક્ષિણ દિશામાં ચન્દ્રની દીપ્તિને આવૃત કરીને ઉત્તર દિશામાં જાય છે, ત્યારે રાહુથી દક્ષિણ દિશામાં ચન્દ્ર અને ચન્દ્રથી ઉત્તર દિશામાં રાહુ દેખાય છે. તથા-આવતો, જતો, વિક્રિયા કરતો અથવા કામક્રીડા કરતો કરતો રાહુ જ્યારે ઇશાનકોણમાં ચન્દ્રની લેશ્યાને આચ્છાદિત કરીને નૈઋત્ય કોણમાં જાય છે, ત્યારે ચન્દ્રમા ઈશાનકોણમાં દેખાય છે અને રાહુ નૈઋત્ય દિશામાં દેખાય છે તથા આવતો, જતો, વિક્રિયા કરતો અથવા કામક્રીડા કરતો રાહુ જ્યારે નૈઋત્ય કોણમાં ચન્દ્રની

परिचारयन् वा दक्षिणपश्चिमे नैर्ऋत्ये चन्द्रलेश्याम् आवृत्य उत्तरपौरस्त्ये याति तदा दक्षिणपश्चिमायां-नैर्ऋत्यां दिशि चन्द्रः, उत्तरपूर्वस्यां ईशान्यांदिशि राहुश्च स्वस्वात्मानम् उपदर्शयतः, एवं यदा राहुः आगच्छन् वा गच्छन् वा विकुर्वन् वा परिचारयन् वा दक्षिणपौरस्त्ये-आग्नेय्यां चन्द्रलेश्याम् आवृत्य उत्तरपश्चिमे-वायव्ये याति तदा दक्षिणपूर्वस्यां-आग्नेय्यां दिशि चन्द्रः, उत्तरपश्चिमायां-वायव्यां दिशि राहुश्च स्वस्वात्मानम् उपदर्शयतः, एवमेव यदा राहुः आगच्छन् वा, गच्छन् वा, विकुर्वन् वा, परिचारयन् वा उत्तरपश्चिमे चन्द्रलेश्याम् आवृत्य दक्षिणपौरस्त्ये याति तदा उत्तरपश्चिमायां दिशि चन्द्रः स्वात्मानम् उपदर्शयति, दक्षिणपूर्वस्यां दिशि तु राहुः स्वात्मानम् उपदर्शयतीतिभावः। तथाचैवंविधायां राहोश्चन्द्रस्य च स्वभावतायां फलितार्थ-

---

हुआ या कामक्रीडा करता हुआ राहु नैर्ऋत्यकोन में चन्द्रलेश्या को आच्छादित कर के जब ईशानकोन में जाता है तब चन्द्रमा अपने को नैर्ऋत्यदिशा में और राहु अपने को ईशानदिशा में दिखलाता है। इसी प्रकार से जब राहु आता हुआ, या जाता हुआ, या विक्रिया करता हुआ, या कामक्रीडा करता हुआ आग्नेयदिशा में चन्द्रलेश्या को आच्छादित करके उत्तरपश्चिमकोने में-वायव्यदिशा में जाता है, तब चन्द्र अपने को आग्नेयदिशा में, और राहु अपने को वायव्यदिशा में दिखलाता है। इसी प्रकार से जब राहु आता हुआ, या जाता हुआ, विक्रिया करता हुआ या कामक्रीडा करता हुआ उत्तरपश्चिम में वायव्यदिशा में चन्द्रलेश्या को आवृत करके दक्षिणपौरस्त्य-आग्नेयदिशा में जाता है तब चन्द्र अपने को वायव्यदिशा में दिखलाता है और राहु अपने को दक्षिण पूर्वदिशा में-आग्नेयदिशा में दिखलाता है तथा-इस प्रकार की राहु और चन्द्र की स्वभावता में जो फलितार्थ निकलता है उसे

જ્યોત્સ્નાને આચ્છાદિત કરીને ઇશાન કોણમાં જાય છે, ત્યારે ચન્દ્રમા પોતાને નૈઋત્ય દિશામાં અને રાહુ પોતાને ઈશાન દિશામાં દેખાડે છે—એટલે કે તે દિશામાં દેખાય છે તથા આવતો, જતો, અથવા વિક્રિયા કરતો અથવા કામ-ક્રીડા કરતો રાહુ અગ્નિ કોણમાં ચન્દ્રની જ્યોત્સ્નાને આવૃત કરીને, જ્યારે વાયવ્ય કોણમાં જાય છે, ત્યારે ચન્દ્ર અગ્નિકોણમાં અને રાહુ વાયવ્ય કોણમાં દેખાય છે એજ પ્રમાણે આવતો, અથવા જતો અથવા વિક્રિયા કરતો અથવા કામક્રીડા કરતો રાહુ જ્યારે વાયવ્ય દિશામાં ચન્દ્રની જ્યોત્સ્નાને આવૃત કરીને અગ્નિ દિશામાં જાય છે, ત્યારે ચન્દ્ર રાહુ કરતાં વાયવ્યમાં દેખાય છે અને રાહુ ચન્દ્ર કરતાં અગ્નિકોણમાં દેખાય છે આ પ્રકારની રાહુ અને ચન્દ્રની સ્વભાવતામાં જે અર્થ ફલિત થાય છે તેનું સૂત્રકાર આ સૂત્ર દ્વારા કથન

माह--'जयाणं राहू आगच्छमाणे वा, गच्छमाणे वा, विउव्वमाणे वा, परियारेमाणे वा चंदस्स लेस्सं आवरेमाणे आवरेमाणे चिट्ठइ। तयाणं मणुस्सलोए मणुस्सा वयंति-एवं खलु राहू चंदं गेण्हइ' यदा खलु राहुः आगच्छन् वा, गच्छन् वा, विकुर्वन् वा, परिचारयन् वा, चन्द्रस्य लेश्याम् आवृण्वन् आवृण्वन्-पौनःपुन्येन आच्छादयन् तिष्ठति, तदा खलु मनुष्यलोके मनुष्याः वदन्ति-एवं खलु निश्चितम् राहुश्चन्द्रं गृह्णाति-ग्रसति. एवं खलु राहुश्चन्द्रं गृह्णाति-ग्रसति' इति भ्रान्त्यैव ते एवं वदन्ति, नतु वस्तुगत्या, इति, किन्तु चन्द्रविम्बमाच्छादयतीतिभावः। एवमेव-'जयाणं राहू आगच्छमाणे वा, गच्छमाणे वा, विउव्वमाणे वा, परियारेमाणे वा चंदस्स लेस्सं आवरेत्ताणं पासेणं वीईवयइ, तदा णं मणुस्सलोए मणुस्सा वयंति-एवं खलु चंदेणं राहुस्स कुच्छी भिन्ना एवं खलु चंदेणं राहुस्स कुच्छी-

---

'जया णं राहू आगच्छमाणे वा, गच्छमाणे वा, विउव्वमाणे वा परियारेमाणे वा चंदस्स लेस्सं आवरेमाणे आवरेमाणे चिट्ठइ' इस सूत्र द्वारा प्रकट करते हुए सूत्रकार कहते हैं-कि जब राहु आता हुवा या जाता हुआ, या विक्रिया करता हुआ या कामक्रीडा करता हुआ बारंबार चन्द्र की लेश्या को आवृत करता है 'तया णं मणुस्सलोए मणुस्सा वयंति-एवं खलु राहू चंदं गेण्हइ' तब मनुष्यलोक में मनुष्य कहते हैं कि राहु ने चन्द्रमा को ग्रस लिया है-इस प्रकार राहु ने चन्द्रमा को ग्रस लिया है इस भ्रान्ति से ही वे ऐसा कहते हैं परन्तु वस्तुस्थिति ऐसी नहीं है वस्तुस्थिति तो ऐसी ही है कि राहु चन्द्रबिम्ब को आच्छादित कर देता है। इसी प्रकार 'जया णं राहू आगच्छमाणे वा गच्छमाणे वा, विउव्वमाणे वा, परियारेमाणे वा चंदस्स लेस्सं आवरेत्ताणं पासेणं वीईवयइ' तयाणं मणुस्सलोए मणुस्सा वयंति, एवं खलु चंदेणं राहुस्स कुच्छी

કરે છે-"जया णं राहू आगच्छमाणे वा, गच्छमाणे वा, विउव्वमाणे वा, परियारेमाणे वा चंदस्स लेस्सं आवरेमाणे आवरेमाणे चिट्ठइ" જ્યારે આવતો અથવા જતો અથવા વિક્રિયા કરતો અથવા કામક્રીડા કરતો રાહુ વારંવાર ચન્દ્રની લેશ્યાને આવૃત કરે છે, "तयाणं मणुस्सलोए मणुस्सा वयंति-एवं खलु राहू चंदं गेण्हइ" ત્યારે મનુષ્ય લોકમાં મનુષ્યો કહે છે કે રાહુ ચન્દ્રમાને ગળી ગયો છે. બરોબર તો આ તેમનો ભ્રમ જ છે. બરી વાત તો એવી છે કે રાહુએ આ સમયે ચન્દ્રબિંબને આચ્છાદિત કરી લીધું હોય છે. એજ પ્રમાણે "जया णं राहू आगच्छमाणे वा, गच्छमाणे वा, विउव्वमाणे वा, परियारेमाणे वा, चंदस्सलेस्सं आवरेत्ताणं पासेणं वीईवयइ, तया णं मणुस्सलोए मणुस्सा वयंति, एवं खलु चंदेणं राहुस्स कुच्छी भिन्ना एवं खलु चंदेण राहुस्स कुच्छी भिन्ना"

भिन्ना' यदा खलु राहुः आगच्छन् वा, गच्छन् वा, विकुर्वन् वा, परिचारयन् वा, चन्द्रस्य लेश्याम् आवृत्य, पार्श्वेन-सान्निध्येन व्यतिव्रजति-गच्छति, तदा खलु मनुष्यलोके मनुष्या वदन्ति-एवं खलु निश्चितम्, चन्द्रेण राहोः कुक्षिः-उदरम्, भिन्नः, राहोः कुक्षौ चन्द्रः प्रविष्टः-राहोरंशस्य मध्येन चन्द्रो गत इत्यर्थः एवं खलु चन्द्रेण राहोः कुक्षिः भिन्न इति व्यपदिशन्ति वस्तुतस्तु नैवमितिभावः। 'जया णं राहू आगच्छमाणे वा, गच्छमाणे वा, विउव्वमाणे वा, परियारेमाणे वा, चंदस्स-लेस्सं आवरेत्ताणं पच्चोसक्कइ, तयाणं मणुस्सलोए मणुस्सा वयंति-एवं खलु राहुणा चंदे वंते, एवं खलु राहुणा चंदे वंते' यदा खलु राहुः आगच्छन् वा, गच्छन् वा, विकुर्वन् वा, परिचारयन् वा, चन्द्रस्य लेश्याम् आवृत्य प्रत्यवष्वष्कते-व्यावर्तते-

---

भिन्ना एवं खलु चंदेणं राहुस्स कुच्छी भिन्ना' अब राहु आता हुआ, या जाता हुआ या विक्रिया करता हुआ, या कामक्रीडा करता हुआ चन्द्रकान्ति को आच्छादित करके पास से होकर निकलता है तब मनुष्यलोक में मनुष्य कहते हैं कि राहु की कुक्षि में चन्द्र प्रविष्ट हो गया है अर्थात् राहु के अंश के मध्य से होकर चन्द्र निकल गया-इस प्रकार चन्द्र के द्वारा राहु की कुक्षि भिन्न-विदीर्ण की गई ऐसा मनुष्य अपनी व्यावहारिक भाषा में कहते हैं-वास्तव में विचार किया जावे तो ऐसा कुछ नहीं है। 'जया णं राहू आगच्छमाणे वा गच्छमाणे वा, विउव्वमाणे वा, परियारेमाणे वा चंदस्स लेस्सं आवरेत्ताणं पच्चोसक्कइ, तया णं मणुस्सलोए मणुस्सा-वयंति-एवं खलु राहुणा चंदे वंते-एवं खलु राहुणा चंदे वंते' जब आता हुआ या जाता हुआ या विक्रिया करता

આવતો, અથવા જતો, અથવા વિક્રિયા કરતો અથવા કામક્રીડા કરતો રાહુ જ્યારે ચન્દ્રબિમ્બને આચ્છાદિત કરીને પાસે થઇને નીકળી જાય છે, ત્યારે મનુષ્યલોકમાં મનુષ્યો કહે છે કે રાહુની કુક્ષિમાં ચન્દ્ર પ્રવિષ્ટ થઈ ગયો-એટલે કે રાહુના અંશની મધ્યમાં થઈને ચન્દ્ર નીકળી ગયો આ રીતે ચન્દ્રના દ્વારા રાહુની કુક્ષિ ભેદાઇ ગઇ-વિદીર્ણ કરી નાખવામાં આવી, એવું મનુષ્યો પોતાની વ્યાવહારિક ભાષામાં કહે છે. જો વાસ્તવિક દૃષ્ટિએ વિચાર કરવામાં આવે, તો એવું કશું બનતું જ નથી. " जया णं राहू आगच्छमाणे वा, गच्छमाणे वा, विउव्वमाणे वा, परियारेमाणे वा, चंदस्स लेस्सं आवरेत्ताणं पच्चोसक्कइ, तया णं मणुस्सलोए मणुस्सा वयंति-एवं खलु राहुणा चंदे वंते-एवं खलु राहुणा चंदे वंते " આવતો, અથવા જતો, અથવા વિક્રિયા કરતો અથવા કામક્રીડા કરતો

अपगच्छति, तदा खलु मनुष्यलोके मनुष्या वदन्ति-एवं खलु राहुणा चन्द्रो वान्तः परित्यक्तः, एवं खलु राहुणा चन्द्रो वान्त इति ते व्यपदिशन्ति, वस्तु तस्तु नैवमिति भावः। 'जया णं राहू आगच्छमाणे वा, जाव परियारेमाणे वा, चंदस्स लेस्सं अहे सपक्खिं सपडिदिसिं आवरेत्ताणं चिट्ठइ, तया णं मणुस्सलोए मणुस्सा वदंति-'एवं खलु राहुणा चंदे घत्थे, एवं खलु राहुणा चंदे घत्थे' यदा खलु राहुः आगच्छन् वा, यावत् गच्छन् वा, विकुर्वन् वा, परिचारयन् वा, चन्द्रस्य लेश्याम् अधः, सपक्षं-समानदिग् यथा भवति तथा, सप्रतिदिक्-समानविदिग् यथा भवति तथा, आवृत्य-अवष्टभ्य तिष्ठति, तदा खलु मनुष्यलोके, मनुष्या एवं वदंति-एवं खलु निश्चितम्, राहुणा चन्द्रः ग्रस्तः, एवं खलु राहुणा चन्द्रो ग्रस्तः! इति, उपचारादेव एवं व्यपदिशन्ति ते न तु एवं वस्तुस्थितिरिति

हुआ या कामक्रीडा करता हुआ राहु चन्द्रकी लेश्या को आवृत करके लौटता है-दूर हो जाता है-तब मनुष्यलोक में मनुष्य कहते हैं कि राहु ने चन्द्र को उगल दिया है, परन्तु राहु ने चन्द्र को उगल दिया है ऐसा उनका कहना केवल कहना ही मात्र है क्यों कि राहु चन्द्र को जब ग्रसता ही नहीं है, तो वह उसे उगल कैसे सकता है? 'जया णं राहू आगच्छमाणे वा, गच्छमाणे वा, जाव परियारेमाणे वा, चंदस्स लेस्सं अहे सपक्खिं सपडिदिसिं आवरेत्ताणं चिट्ठइ, तया णं मणुस्सलोए मणुस्सा वयंति' जब आता हुआ, या जाता हुआ, या विक्रिया करता हुआ, या कामक्रीडा करता हुआ राहु चन्द्र की लेश्या को नीचे दिशा एवं विदिशाओं में आवृत करलेता है-तब मनुष्यलोक में मनुष्य ऐसा कहते हैं-नियम से राहु ने चन्द्रमा को ग्रस लिया है परन्तु राहु ने चन्द्रमा को ग्रस लिया है ऐसा उनका यह कथन

રાહુ જ્યારે ચન્દ્રની લેશ્યાને આવૃત કરીને દૂર થઈ જાય છે-ત્યાંથી ખસી જાય છે, ત્યારે મનુષ્યલોકમાં લોકો કહે છે કે "રાહુએ ચન્દ્રને મુક્ત કરી નાખ્યો ! રાહુએ ચન્દ્રને મુક્ત કરી નાખ્યો." પરન્તુ માણસોની માન્યતા પણ માત્ર કાલ્પનિક જ છે. કારણ કે રાહુએ ચન્દ્રનો ગ્રાસ જ કર્યો ન હોય, તો મુક્ત કરવાની વાત જ કેવી રીતે સંભવી શકે !

"जया णं राहू आगच्छमाणे वा, गच्छमाणे वा, जाव परियारेमाणे वा चंदस्स लेस्सं अहे सपक्खिं सपडिदिसिं आवरेत्ताणं चिट्ठइ, तया णं मणुस्स लोए मणुस्सा वयंति" આવતો, અથવા જતો, અથવા વિક્રિયા કરતો અથવા કામક્રીડા કરતો રાહુ જ્યારે ચન્દ્રલેશ્યાને અધિ દિશા અને વિદિશાઓમાં આવૃત કરી નાખે છે, ત્યારે મનુષ્યલોકના લોકો એવું કહે છે કે "રાહુ ચન્દ્રને ચોક્કસ ગળી

भावः, एवं च आवरणमात्रमेवेदं वैस्रसिकं चन्द्रस्य राहुणा ग्रसनं न तु कार्मणं न तु कर्मवशतः, अथ राहोर्भेदमाह-' कइविहेणं भंते ! राहू पण्णत्ते ! हे भदन्त ! कतिविधः खलु राहुः प्रज्ञप्तः ? भगवानाह-' गोयमा ! दुविहे राहू पण्णत्ते ' हे गौतम! द्विविधो राहुः प्रज्ञप्तः, 'तंजहा-धुवराहू, पव्वराहूय ' तद्यथा-ध्रुवराहुः, पर्वराहुश्च, तत्र यः सदैव चन्द्रस्य सन्निहितः संचरति स ध्रुवराहु रुच्यते तथा चोक्तम्-

"किण्हं राहुविमाणं निच्चं चंदेण होइ अविरहियं।
चउरंगुलमप्पत्तं हेट्ठा चंदस्स तं चरइ ॥१॥

छाया—कृष्णं राहुविमानं नित्यं चन्द्रेण भवति अविरहितम्।
चतुरङ्गुलमप्राप्तम् अधश्चन्द्रस्य तत् चरति, इति,।

केवल उपचार से ही है वस्तुस्थिति को लिये हुए नहीं है। चन्द्र के ऊपर राहु की छाया पड़जाती है अतः यह चन्द्र का राहु के द्वारा ग्रसन कार्य एकरूप से आवरणमात्र ही है। जो वैस्रसिक-स्वाभाविक है कर्मकृत नहीं है.

अब सूत्रकार राहु के भेदों का कथन करते हैं-' कइविहेणं भंते। राहू पण्णत्ते ' इसमें गौतम ने प्रभु से ऐसा पूछा है-हे भदन्त ! राहु कितने प्रकार का कहा गया है ? उत्तर में प्रभु ने कहा-' गोयमा ! दुविहे राहू-पण्णत्ते, हे गौतम ! राहु दो प्रकार का कहा गया है 'तंजहा-'धुवराहू, पव्वराहू य ' एक ध्रुवराहु और दूसरा पर्वराहु इनमें जो राहु चन्द्र के सन्निहित हुआ संचरण करता रहता है वह ध्रुवराहु कहा गया है सो ही कहा है-' किण्हं राहु विमाणं ' इत्यादि। राहु का विमान कृष्ण होता है

गयेा छे." પરન્તુ તેમનું આ કથન માત્ર ઔપચારિક કથન રૂપ જ છે. વાસ્તવિક રીતે એવું બનતું જ નથી. ચન્દ્રની ઉપર રાહુનેા પડછાયેા પડવાથી એવું દેખાય છે એટલે તેને બદલે આવરણ જ કહેવું જોઇએ- તે વૈસ્રસિક (સ્વાભાવિક) છે, કર્મકૃત નથી.

હવે સૂત્રકાર રાહુના પ્રકારેાનું કથન કરે છે—

ગૌતમ સ્વામીનેા પ્રશ્ન-" कइविहे णं भंते ! राहू पण्णत्ते " હે ભગવન્! રાહુ કેટલા પ્રકારના કહ્યા છે ? તેનેા ઉત્તર આપતા મહાવીર પ્રભુ કહે છે કે- "गोयमा ! दुविहे राहू पण्णत्ते" હે ગૌતમ ! રાહુ બે પ્રકારના કહ્યા છે. "तंजहा" રાહુના બે પ્રકારેા નીચે પ્રમાણે છે-"धुवराहू, पव्वराहू य" (૧) ધ્રુવરાહુ અને (૨) પર્વરાહુ -જે રાહુ ચન્દ્રની સમીપમાં જ રહીને સંચરણ કરે છે, તેને ધ્રુવરાહુ કહે છે એજ વાત " किण्हं राहू विमाणं " ઇત્યાદિ સૂત્ર દ્વારા સૂત્રકારે પ્રકટ કરી છે રાહુનું વિમાન કૃષ્ણવર્ણનું હેાય છે તે હંમેશા ચન્દ્રમાની

यस्तु पर्वणि-पौर्णमास्यमावास्ययोश्चन्द्रसूर्ययोरुपरागं-सम्बन्धं करोति स पर्वराहु रित्युच्यते, 'तत्थ णं जे से धुवराहू, से णं बहुलपक्खस्स पाडिवए पन्नरसइ-भागेणं पन्नरसइभागं चंदस्स लेस्सं आवरेमाणे आवरेमाणे चिट्ठइ' तयो ध्रुवराहु पर्वराह्वोर्मध्ये खलु यः स ध्रुवराहुः वर्तते, स खलु बहुलपक्षस्य-कृष्णपक्षस्य प्रतिपद आरभ्य स्वकीयेन पञ्चदशभागेन, चन्द्रस्य लेश्यायाः पञ्चदशं भागं चन्द्र-बिम्बसम्बन्धिनं, पञ्चदशं भागमित्यर्थः, आवृण्वन् आवृण्वन्-पौनःपुन्येन आच्छा-दयन् प्रत्यहं तिष्ठति, प्रतिदिनमावरणप्रकारमाह-'तंजहा-पढमाए पढमं भागं, बितियाए बितियं भागं, जाव पन्नरसेसु पन्नरसमं भागं' तद्यथा-प्रथमायां तिथौ-प्रतिपदायां चन्द्रबिम्बसम्बन्धिनं प्रथमं भागम्, द्वितीयायां तिथौ द्वितीयं भागं, यावत्-तृतीयायां तृतीयं भागम्, चतुर्थ्यां चतुर्थं भागम्, पञ्चम्यां पञ्चमं भागम्,

---

और वह नित्य चन्द्रमा के साथ रहता है चन्द्रमा से चार अंगुल नीचे रहकर वह चलता है तथा जो पर्व में-पूर्णिमासी एवं अमावास्या इनमें चन्द्र और चन्द्र में उपरागरूप सम्बध को करता है उसका नाम पर्वराहु है। 'तत्थ णं जे से धुवराहू से णं बहुलपक्खस्स पाडिवए पन्नरसइभागेणं पन्नरसइभागं चंदस्स लेस्सं आवरेमाणे आवरेमाणे चिट्ठइ' इन दोनों राहुओं में से जो ध्रुवराहु है वह बहुलपक्ष-कृष्णपक्ष की प्रतिपदातिथि से लेकर प्रतिदिन अमावस्या तक अपने पञ्चदश भाग द्वारा चन्द्रलेश्या के पञ्चदश भाग को-चन्द्रबिम्बसंबंधी पंचदश भाग को-पन्द्रहवें भाग को आच्छादित करता रहता है 'तंजहा-पढमाए पढमं भागं, बितियाए बितियं भागं जाव पन्नरसेसु पन्नरसमं भागं' प्रतिपदा तिथि में वह चन्द्रबिम्ब संबंधी प्रथमभाग को, आवृत करता है द्वितीया में द्वितीय भाग को

સાથે જ રહે છે-તે ચન્દ્રમા કરતાં ચાર આંગળ નીચે રહીને સંચરણ કરે છે. જે પર્વમાં એટલે કે પૂર્ણિમાસી અને અમાવાસ્યા, આ બે તિથિઓમાં ચન્દ્રમાં ઉપરાગ રૂપ સંબંધ કરે છે, તેનું નામ પર્વરાહુ છે. " तत्थ णं जे से धुवराहू से ण बहुलपक्खस्स पाडिवए पन्नरसभागेणं पन्नरसइभागं चंदस्स लेस्सं आव रेमाणे आवरेमाणे चिट्ठइ " આ બન્ને રાહુમાંથી જે ધ્રુવરાહુ નામનો રાહુ છે તે કૃષ્ણપક્ષના પડવેથી શરૂ કરીને અમાવાસ્યા સુધી દરરોજ પોતાના પંદરમાં ભાગ દ્વારા ચન્દ્રલેશ્યાના (ચન્દ્રના બિંબના) પંદરમાં ભાગને આચ્છાદિત કરતો રહે છે. " तंजहा-पढमाए पढमं भाग, बितियाए बितियं भागं, जाव पन्नरसेसु पन्नरसम भागं " પ્રતિપદા (વદ એકમ)ની તિથિએ તે ચન્દ્રબિંબના પહેલા ભાગને આવૃત કરે છે, બીજની તિથિએ બીજા ભાગને આવૃત કરે છે, ત્રીજની

षष्ठ्यां षष्ठं भागं, सप्तम्यां सप्तमं भागम्, अष्टम्याम् अष्टमं भागम्, नवम्यां नवमम्, दशम्यां दशमम्, एकादश्याम् एकादशम्, द्वादश्यां द्वादशम्, त्रयोदश्यां त्रयोदशम्, चतुर्दश्यां चतुर्दशं भागम्, पञ्चदश्याम्-अमावस्यायाम् पञ्चदशं भागम् आच्छादयतीतिभावः, 'चरिमसमये चंदे रत्ते भवइ, अवसेसे समए चंदे रत्ते वा, विरत्ते वा, भवइ' तथा च चरमसमये-पञ्चदशभागयुक्तस्य कृष्णपक्षस्य अन्तिमे भागे, कालविशेषे अमावास्यारूपे वा, चन्द्रो रक्तो भवति-राहुणा उपरक्तो भवति, एकां कलां विहाय सर्वथाच्छादितो भवतीतिभावः, अवशेषे समये-प्रतिपदादिकाले चन्द्रो रक्तो वा, विरक्तो वा भवति,-किञ्चिदंशावच्छेदेन राहुणा उपरक्तो भवति, किञ्चिदंशान्तरावच्छेन च राहुणा अनुपरक्तो भवति, आच्छादितानाच्छादित इति भावः, 'तमेव सुक्कपक्खवरस्स उवदंसेमाणे उवदंसेमाणे चिट्ठइ' अथ च ध्रुवराहुः

આવૃત કરતા છે, યાવત્ તૃતીયા માં તૃતીયભાગ કો આવૃત કરતા હૈ, ચતુર્થી માં ચતુર્થભાગ કો, પંચમી માં પંચમ ભાગ કો, ષષ્ઠીમેં છઠે ભાગ કો, સપ્તમી માં સાતવેં ભાગ કો, અષ્ટમી માં આઠવેં ભાગ કો, નૌમી માં નૌવેં ભાગ કો, દશમી માં દશવેં ભાગ કો, એકાદશી માં ગ્યારહવેં ભાગ કો, દ્વાદશી માં બારહવેં ભાગ કો, ત્રયોદશી માં તેરહવેં ભાગ કો, ચતુર્દશી માં ચૌદહવેં ભાગ કો ઔર અમાવસ્યા માં પન્દ્રહવેં ભાગ કો આચ્છાદિત કરતા હૈ। 'चरिमसमये चंदे रत्ते' પન્દ્રહવેં ભાગ સે યુક્ત કૃષ્ણપક્ષ કે અન્તિમભાગ માં અથવા અમાવસ્યા માં ચન્દ્ર અપની એક કલા કો છોડકર રાહુ દ્વારા સર્વથા આચ્છાદિત હો જાતા હૈ 'अवसेसे समए चंदे रत्ते वा विरत्ते वा भवइ' તથા-પ્રતિપદા આદિરૂપ સમય માં વહ રાહુ દ્વારા કિતનેક અંશોં માં આચ્છાદિત રહતા હૈ ઔર કિતનેક અંશોં માં

તિથિએ ત્રીજા ભાગને, ચોથની તિથિએ ચોથા ભાગને, પાંચમની તિથિએ પાંચમા ભાગને, છઠ્ઠની તિથિએ છઠ્ઠા ભાગને, સાતમે સાતમાં ભાગને, આઠમે આઠમાં ભાગને, નોમની તિથિએ નવમાં ભાગને, દશમની તિથિએ દસમાં ભાગને, અગિયારશે અગિયારમાં ભાગને, બારશે બારમાં ભાગને, તેરશે તેરમાં ભાગને, ચૌદશે ચૌદમાં ભાગને અને અમાવાસ્યાએ પંદરમાં ભાગને આવૃત કરે છે. "चरिमसमये चंदे रत्ते" પંદરમાં ભાગથી યુક્ત એવી કૃષ્ણપક્ષની આખરી તિથિએ-અમાવાસ્યાએ ચન્દ્ર પોતાની એકેએક કલાને છોડીને રાહુ દ્વારા સંપૂર્ણતઃ આચ્છાદિત થઈ જાય છે. "अवसेसे समए चंदे रत्ते वा विरत्ते वा भवइ" પણ પ્રતિપદા આદિ બાકીની તિથિઓમાં તે રાહુ દ્વારા કેટલાક અંશોમાં આવૃત રહે છે અને કેટલાક અંશોમાં આવૃત

तमेव चन्द्रबिम्बसम्बन्धिनं पञ्चदशं भागं शुक्लपक्षस्य प्रतिपदादिषु तिथिषु उपदर्शयन् उपदर्शयन्, पञ्चदशभागेन स्वयमपसरणतः प्रकटयन् प्रकटयन् तिष्ठति, तदाह-

'पढमाए पढमं भागं जाव पन्नरसेसु पन्नरसमं भागं'

प्रथमायां प्रतिपदायां प्रथमं भागं, यावत्-द्वितीयादिषु द्वितीयादिकं भागम् एवं रीत्या पञ्चदश्यां पूर्णिमायाम् पञ्चदशं भागम् उपदर्शयन् तिष्ठति इति पूर्वेणान्वयः, तथासति-'चरिमसमए चंदे विरत्ते भवइ, अवसेसे समए चंदे रत्ते वा, विरत्ते वा भवइ' चरमसमये-पूर्णिमारूपकालविशेषे चन्द्रो विरक्तो भवति-राहुणा रहितो भवति, सर्वथा शुक्ली भवति, इतिभावः, सर्वथैव अनाच्छादित-

---

आच्छादित नहीं रहता है। 'तमेव सुक्कपक्खस्स उवदंसेमाणे चिट्ठइ' ध्रुवराहु चन्द्रबिम्ब-संबंधी पन्द्रहवें भाग को शुक्लपक्ष की प्रतिपदा आदि तिथियों में, अपने पन्द्रहवें भाग से हटता हटता हुआ प्रकट करता रहता है सो ही 'पढमाए पढमं भागं जाव पन्नरसेसु पन्नरसमं भागं' इस सूत्रद्वारा सूत्रकार ने प्रकट किया है शुक्लपक्ष की प्रतिपदामें वह चन्द्र के प्रथम भाग को, यावत् द्वितीयादि तिथियों में द्वितीयादिभाग को इस रीति से पूर्णिमा में पन्द्रहवें भाग को प्रकट कर देता है। इस प्रकार होने पर वह 'चरिमसमए चंदे विरत्ते भवइ, अवसेसे समए चंदे रत्ते वा विरत्ते वा भवइ' पूर्णिमारूप कालविशेष के दिन चन्द्र ध्रुवराहु से सर्वथा रहित हो जाता है अर्थात् बिलकुल शुभ्र हो जाता है क्यों कि

(આચ્છાદિત) રહેતો નથી. "तमेव सुक्कपक्खस्स उवदंसेमाणे उवदंसेमाणे चिट्ठइ" શુકલપક્ષની એકમથી શરૂ કરીને પૂર્ણિમા પર્યન્તની પંદર તિથિઓમાં ધ્રુવરાહુ પોતાના પંદરમાં ભાગપ્રમાણ દૂર થતો થતો દરરોજ ચન્દ્રબિંબના પંદરમાં ભાગપ્રમાણ આચ્છાદનને દૂર કરતો રહે છે. એજ વાત સૂત્રકારે "पढमाए पढमं भागं जाव पन्नरसेसु पन्नरसम भागं" આ સૂત્રપાઠ દ્વારા પ્રકટ કરી છે-શુકલપક્ષની એકમે રાહુ ચન્દ્રબિંબના એક ભાગને પ્રકટ કરે છે (એક ભાગ પરનું આવરણ દૂર કરે છે), બીજની તિથિએ બીજા ભાગને, અને એજ ક્રમે દરરોજ એક એક ભાગને પ્રકટ કરતો કરતો પૂર્ણિમાની તિથિએ પંદરમાં ભાગને પ્રકટ કરે છે આ પ્રમાણે થવાથી "चरिमसमए चंदे विरत्ते भवइ, अवसेसे समए चंदे रत्ते वा विरत्ते वा भवइ" પૂર્ણિમાની તિથિએ ચન્દ્રબિંબ ધ્રુવરાહુથી સર્વથા રહિત થઈ જાય છે. એટલે કે બિલકુલ શુભ્ર થઈ જાય છે, કારણ કે તે તિથિએ ચન્દ્ર બધી તરફથી અનાચ્છાદિત રહે છે શુકલપક્ષની બાકીની તિથિઓમાં ચન્દ્રબિંબ રાહુ દ્વારા અંશતઃ આચ્છાદિત અને અંશતઃ અનાચ્છાદિત રહે છે.

त्वादिति 'तत्थ णं जे से पव्वराहू से जहण्णे णं छण्हं मासाणं, उक्कोसेणं बायालीसाए मासाणं चंदस्स, अडयालीसाए संवच्छराणं सूरस्स' तत्र तयोर्ध्रुवराहुपर्वराह्वोर्मध्ये, खलु यः स पर्वराहुः वर्तते, स जघन्येन षण्णां मासानाम्, षण्मासानन्तरमित्यर्थः चन्द्रं सूर्यं वा आवृणोति, उत्कृष्टेन द्वाचत्वारिंशता मासानाम्, द्वाचत्वारिंशन्मासानन्तरमित्यर्थः चन्द्रमावृणोति, सार्द्धत्रिपञ्चयानन्तरं चन्द्रस्य लेश्यामावृत्य तिष्ठतीत्यर्थः सूरस्य तु लेश्याम् उत्कृष्टतया संवत्सराणाम् अष्टाचत्वारिंशता, अष्टचत्वारिंशद्वर्षानन्तरमित्यर्थः आवृत्य तिष्ठति, सूर्यमावृणोतीतिभावः ॥सू० १॥

चन्द्रस्य सश्री नामार्थवक्तव्यताप्रस्तावः

मूलम्—'से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—चंदे ससी, चंदे ससी ? गोयमा ! चंदस्स णं जोइसिंदस्स जोइसरण्णो मियंके विमाणे कंता देवा कंताओ देवीओ, कंताइं आसणसयणखंभभंडमत्तोवगरणाइं अप्पणोऽवि य, णं चंदे जोइसिंदे जोइसराया सोमे कंते, सुभए पियदंसणे सुरूवे, से तेणट्ठेणं जाव ससी" ॥सू० २॥

छाया—तत् केनार्थेन भदन्त ! एव मुच्यते—चन्द्रः सश्रीः चन्द्रः सश्रीः ? गौतम ! चन्द्रस्य खलु ज्योतिषिकेन्द्रस्य ज्योतिषिकराजस्य मृगाङ्के विमाने कान्ता देवाः, कान्ता देव्यः, कान्तानि आसनशयनस्तम्भभाण्डामत्रोपकरणानि, आत्मनापि च खलु, चन्द्रो ज्यौतिषिकेन्द्रो ज्योतिषिकराजः सौम्यः, कान्तः, सुभगः, प्रियदर्शनः, सुरूपः, तत् तेनार्थेन यावत्—सश्रीः ॥सू० २॥

वह उस समय सब तरफ से अनाच्छादित रहता है। 'तत्थ णं जे से पव्वराहू से जहण्णेणं छण्हं मासाणं उक्कोसेणं बायालीसाए मासाणं चंदस्स, अडयालीसाए संवच्छराणं सूरस्स' ध्रुवराहु से भिन्न जो पर्वराहु होता है—वह जघन्य से छहमास के बाद चन्द्र अथवा सूर्य को आवृत करता है और उत्कृष्ट से ४२ महिनों के बाद चन्द्रमा को आवृत करता है, तथा ४८ वर्ष के बाद सूर्य को आवृत करता है ॥सू० १॥

"तत्थ णं जे से पव्वराहू से जहण्णेणं छण्हं मासाणं उक्कोसेणं बायालीसाए मासाणं चंदस्स, अडयालीसाए संवच्छराणं सूरस्स" ધ્રુવરાહુથી ભિન્ન એવો જે પર્વરાહુ છે, તે ઓછામાં ઓછો છ માસ બાદ ચન્દ્ર અથવા સૂર્યને આવૃત કરે છે, અને વધારેમાં વધારે ૪૨ માસ બાદ—૩॥ વર્ષ પછી—ચન્દ્રને આવૃત કરે છે તથા ૪૮ વર્ષ પછી સૂર્યને આવૃત કરે છે. ॥સૂ૦૧॥

टीका—अथ चन्द्रस्य 'ससी' इत्यभिधानस्य अन्वर्थतां प्ररूपयितुमाह–' से केणट्ठेणं भंते ! इत्यादि, ' से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ–चंदे ससी, चंदे ससी ?' गौतमः पृच्छति–हे भदन्त ! तत्–अथ, केनार्थेन एवमुच्यते–चन्द्रः सश्रीः, चन्द्रः सश्रीरिति, चन्द्रस्य ' ससी ' इति अभिधाने को हेतुरिति प्रश्नः, भगवानाह– 'गोयमा ! चंदस्स णं जोइसिंदस्स, जोइसरण्णो मियंके विमाणे ' हे गौतम ! चन्द्रस्य खलु ज्योतिषिकेन्द्रस्य, ज्योतिषिकराजस्य मृगाङ्के मृगचिह्नत्वात् मृगाङ्के विमाने अधिकरणभूते 'कंता देवा, कंताओ देवीओ, कंताइं आसणसयणखंभ-भंडमत्तोवगरणाइं ' कान्ताः कान्तियोगात् कमनीयाः देवाः, कान्ताः कान्तिमय-त्वात् परमरमणीयाः देव्यः, कान्तानि–कान्तियुक्तानि आसनशयनस्तम्भभाण्डाम-

चन्द्र के सश्री नाम के अर्थ की वक्तव्यता—

' से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ ' इत्यादि ।

टीकार्थ–सूत्रकारने चंद्रमा का नाम जो 'सश्री' कहा है उस विषय की अन्वर्थता इस सूत्र द्वारा प्रकट की है–इसमें गौतम ने प्रभु से ऐसा पूछा है–'से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ, चंदे ससी' हे भदन्त चन्द्र का नाम जो सश्री है–सो इस ' सश्री ' नाम होने में क्या कारण है ? इस प्रश्न के उत्तर में प्रभु कहते हैं ' गोयमा ' हे गौतम ! ' चंदस्स णं जोइसिंदस्स जोइसरण्णो मियंके विमाणे ' ज्योतिषिकेन्द्र एवं ज्योतिषिकराज चन्द्र के मृगाङ्कविमान में 'कंता देवा, कंताओ देवीओ, कंताइं आसणसयणखंभभंडमत्तोवगरणाइं ' कान्तिविशिष्ट होने से कमनीय देव, कान्तिमय होने से परमरमणीय देवियां, कान्तिसहित आसन, शयन, स्तंभ, पात्र

—ચન્દ્રના સશ્રી નામના અર્થની વક્તવ્યતા—

"से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ" ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ–ચન્દ્રમાનું ' સશ્રી ' નામ છે તેની સાર્થકતાનું સૂત્રકારે આ સૂત્રદ્વારા પ્રતિપાદન કર્યું છે આ વિષયને અનુલક્ષીને ગૌતમ સ્વામી મહાવીર પ્રભુને એવો પ્રશ્ન પૂછે છે કે " से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ, चंदे ससी " હે ભગવન્ ! ચન્દ્રનું જે ' સશ્રી ' નામ છે તે નામ પાડવાનું કારણ શું છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર–गोयमा ! चंदस्स णं जोइसिंदस्स जोइसरण्णो मियंके विमाणे" હે ગૌતમ ! જ્યોતિષિકોના ઇન્દ્ર, જ્યોતિષિક રાજ ચન્દ્રના મૃગચિહ્નવાળા મૃગાંક વિમાનમાં " कंता देवा, कंताओ देवीओ, कंताइं आसणसयणखंभभंडमत्तोवगरणाइं " વિશિષ્ટ કાન્તિયુક્ત દેવો, વિશિષ્ટ કાન્તિયુક્ત દેવીઓ, કાન્તિયુક્ત આસન, શયન, સ્તંભ, પાત્ર આદિ ઉપકરણો સદા શોભતા હોય છે, અને " अप्पणो वि य णं

त्रोपकरणानिच विलसन्ति, अथ च 'अप्पणोऽवि य णं चंदे जोइसिंदे, जोइसराया सोमे, कंते, सुभए, पियदंसणे, सुरूवे, से तेणट्ठेणं जाव ससी' आत्माना स्वयमपि च खलु चन्द्रो ज्योतिषिकेन्द्रः ज्योतिषिकराजः, सौम्यः, भद्रः, कान्तः-कान्तिशाली, सुभगः-सौभाग्यशालित्वात् लोकप्रियः, प्रियदर्शनः-परमाह्लादकः, यतः-सुरूपः-परमसुन्दरश्च वर्तते, तत् तेनार्थेन तेन कारणेन यावत् एवमुच्यते-चन्द्रः सश्रीः-सहश्रिया वर्तते यः स सश्रीरिति, तदीयदेवदेवीप्रभृतीनां, स्वस्य च कान्त्यादि-युक्तत्वादिति भावः। प्राकृतापेक्षया 'ससी' इति सिद्धम् ॥सू० २॥

सूर्यस्य आदित्यनामान्वर्थतावक्तव्यता

मूलम्-"से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ-सूरे आइच्चे, सूरे आइच्चे ? गोयमा ! सूरादिया णं समयाइ वा, आवलियाइ वा, जाव उस्सप्पिणीइ वा, अवसप्पिणीइ वा, से तेणट्ठेणं जाव आइच्चे ॥सू० ३॥

आदि उपकरण सदा सुहावने बने रहते हैं और 'अप्पणो वि य णं चंदे जोइसिंदे जोइसराया सोमे कंते, सुभए, पियदंसणे, सुरूवे, से तेणट्ठेणं जाव ससी' स्वयं ज्योतिषिक इन्द्र और ज्योतिषिक राजा चन्द्र भी सौम्य-भद्र है, कान्त-कान्तिशाली है, सुभग-सौभाग्यशाली होने से लोक प्रिय है, प्रियदर्शन-परम आह्लादकारक है, और इसी से वह परमसुन्दर है इस कारण हे गौतम ! चन्द्र 'सश्री' श्री-शोभा सहित इसलिये वह 'सश्री' है ऐसा कहा गया है तात्पर्य कहने का यही है कि चन्द्र देव की देवदेवियां आदि सब चीजें कान्त्यादि युक्त हैं और चन्द्र स्वयं भी कान्ति आदि से युक्त है-इसलिये चन्द्र को 'सश्री' ऐसा सार्थक नाम से अभिहित किया गया है ॥सू०२॥

चंदे जोइसिंदे जोइसराया सोमे, कंते, सुभए, पियदंसणे, सुरूवे, से तेणट्ठेणं जाव ससी" જ્યોતિષિકેન્દ્ર, જ્યોતિષિકે રાજ ચન્દ્ર પોતે પણ સૌમ્ય (ભદ્ર), કાન્ત (કાન્તિયુક્ત), સુભગ (સૌભાગ્યસંપન્ન) અને પ્રિયદર્શન (જેનું દર્શન લોકોને આહ્લાદજનક થઇ પડે એવો) હોવાથી અતિશય સુંદર છે તે કારણે, હે ગૌતમ! ચન્દ્રને "સશ્રી" (શોભાયુક્ત) કહેવામાં આવે છે. આ સમસ્ત કથનનો ભાવાર્થ એ છે કે ચન્દ્રદેવની દેવદેવીઓ આદિ સમસ્ત ચીજો કાન્તિ આદિથી યુક્ત છે અને ચન્દ્ર પોતે પણ કાન્તિ આદિથી યુક્ત છે, તેથી ચન્દ્રને "સશ્રી" એવી સાર્થક નામસંજ્ઞા આપવામાં આવી છે. ॥સૂ૦૨॥

छाया—तत् केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते—सूरः आदित्यः ?२ गौतम ! सूरादिकाः खलु समया इति वा, आवलिका इति वा यावत्—उत्सर्पिण्यः इति वा, अवसर्पिण्यः इति वा, तत् तेनार्थेन यावत्—आदित्यः ॥सू० ३॥

टीका—अथ आदित्यशब्दस्य अन्वर्थतां प्रतिपादयितुमाह—से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—सूरे आइच्चे, सूरे आइच्चे ?' गौतमः पृच्छति—हे भदन्त ! तत्—अथ, केनार्थेन—केन प्रकारेण एवमुच्यते—सूरः आदित्यः ? इति सूर्यस्य आदित्याभिधाने को हेतुरिति प्रश्नः, भगवानाह—'गोयमा ! सूरादिया णं समयाइ वा, आवलियाइ वा, जाव उस्सप्पिणीइ वा, अवसप्पिणीइ वा, से तेणट्ठेणं जाव आइच्चे' हे गौतम ! सूरादिकाः—सूरः—सूर्यः, आदिः—प्रथमो येषां ते सूरादिकाः खलु समयाः इतिवा अहोरात्रादि कालविशेषाणां निर्विभागाः अंशाः इतिवा व्यवहारो भवति, अत-

---

सूर्य के आदित्य नाम के अन्वर्थता की वक्तव्यता—

'से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ, सूरे आइच्चे, सूरे आइच्चे' इत्यादि।

टीकार्थ—सूत्रकार ने सूर्य के 'आदित्य' इस नामकी सार्थकता का प्रतिपादन इस सूत्रद्वारा किया है इसमें गौतम ने प्रभु से ऐसा पूछा है—'से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ सूरे आइच्चे, सूरे आइच्चे' हे भदन्त! सूर्य का जो आदित्य ऐसा नाम है सो इस आदित्य नाम के होने में हेतु क्या है ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं—'गोयमा' हे गौतम ! 'सूरादियाणं समयाइ वा आवलियाइ वा जाव उस्सप्पिणीइ वा, अवसप्पिणीइ वा—से तेणट्ठेणं जाव आइच्चे' हे गौतम ! ये समय अहोरात्रादिरूपकाल विशेषों के निर्विभाग अंश, आवलिका यावत्—मुहूर्त आदि उत्सर्पिणी, अवसर्पिणीरूप जो कालविशेष हैं—इनके व्यवहारका

—સૂર્યના 'આદિત્ય' નામની સાર્થકતા વિષયક વક્તવ્યતા—

"से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ, सूरे आइच्चे, सूरे आइच्चे" ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ—સૂત્રકારે આ સૂત્ર દ્વારા સૂર્યના 'આદિત્ય' આ નામની સાર્થકતાનું પ્રતિપાદન કર્યું છે આ વિષયને અનુલક્ષીને ગૌતમ સ્વામી મહાવીર પ્રભુને એવો પ્રશ્ન પૂછે છે કે—"से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ, सूरे आइच्चे, सूरे आइच्चे" હે ભગવન્ ! સૂર્યનું જે આદિત્ય નામ છે, તે નામ શા કારણે આપવામાં આવ્યું છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર—"गोयमा ! હે ગૌતમ ! "सूरादियाण समयाइ वा, आवलियाइ वा, जाव उस्सप्पिणीइ वा, अवसप्पिणीइ वा, से तेणट्ठेणं जाव आइच्चे" આ સમય, આવલિકા, મુહૂર્ત આદિ ઉત્સર્પિણી અને અવસર્પિણી પર્યન્તના જે કાળવિશેષો છે તેમના વ્યવહારનો પ્રવર્તક સૂર્ય જ છે એટલે

लिकाः इति वा व्यवहारो भवति, यावत्-मुहूर्तादयः इतिवा व्यवहारो भवति, अवसर्पिण्य इति वा व्यवहारो भवति, एतेषां सर्वेषां समयावलिकाद्युत्सर्पिण्यवसर्पिणीपर्यन्तानां कालविशेषाणां व्यवहारप्रवर्तकः सूर एव वर्तते, तथाहि-सूर्योदयमवधिं कृत्वा अहोरात्रारम्भकः समयो व्यपदिश्यते, एवं रीत्यैव आवलिका मुहूर्तादयश्च व्यपदिश्यन्ते, तत्-अथ, तेनार्थेन-तेन कारणेन, यावत्-सूरः आदित्य इति व्यपदिश्यते, अहोरात्रसमयादीनाम् आदौ भवः आदित्यः इति व्युत्पत्तेः ॥सू० ३॥

चन्द्रसूर्ययोरग्रमहिष्यादिवक्तव्यता

मूलम्--चंदस्स णं भंते! जोइसिंदस्स जोइसरन्नो कई अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, जहा दसमसए जाव णो चेवणं मेहुणवत्तियं। सूरस्स वि तहेव। चंदिमसूरियाणं भंते जोइसिंदा, जोइसरायाणो केरिसए कामभोगे पच्चणुब्भवमाणा विहरंति? गोयमा! से जहानामए केइपुरिसे पढमजोव्वणुट्ठाणबलत्थे पढमजोव्वणुट्ठाणबलत्थाए भारियाए सद्धिं अचिरवत्तविवाहकज्जे अत्थगवेसणयाए सोलसवासविप्पवासिए, से णं तओ लद्धट्ठे कयकज्जे अणहसमग्गे पुणरवि नियगगिहं

प्रवर्तक सूर्य ही है-अर्थात् यह समय है, ऐसा जो व्यवहार होता है, यह आवलिका है ऐसा जो व्यवहार होता है, यह मुहूर्त है ऐसा जो व्यवहार है तथा यह अवसर्पिणीकाल है यह उत्सर्पिणीकाल है ऐसा जो व्यवहार होता है सो इन सब व्यवहारों का आदिरूप में प्रवर्तक सूर्य ही है इसलिये इसका नाम अहोरात्र समय आदिकों की आदि में जो होता है वह आदित्य है इस व्युत्पत्ति के अनुसार आदित्य हुआ है ॥सू० ३॥

કે આ સમય છે, એવો જે વ્યવહાર થાય છે આ આવલિકા છે, એવો જે વ્યવહાર થાય છે, આ મુહૂર્ત છે એવો જે વ્યવહાર થાય છે, આ અવસર્પિણી કાળ છે આ ઉત્સર્પિણી કાળ છે, એવો જે વ્યવહાર થાય છે તે બધા વ્યવહારોનો આદિ પ્રવર્તક સૂર્ય જ છે તેથી તેનું નામ, અહોરાત્ર સમય આદિકોની આદિમાં જે હોય છે તે આદિત્ય છે આ પ્રકારની વ્યુત્પત્તિ અનુસાર સૂર્યનું 'આદિત્ય' નામ પડયું છે, અને તે નામ સાર્થક છે. ॥સૂ૦૩॥

हव्वमागए कयबलिकम्मे कयकोउयमंगलपायच्छित्ते सव्वालंकारविभूसिए मणुन्नं थालिपागसुद्धं अट्ठारसवंजणाकुलं भोयणं भुत्ते समाणे तंसि तारिसगंसि वासघरंसि वण्णओ, महब्बलकुमारे जाव सयणोवयारकलिए ताए तारिसियाए भारियाए सिंगारागारचारुवेसाए जाव कलियाए अणुरत्ताए अविरत्ताए मणोणुकूलाए, सद्धिं इट्ठे सद्दे जाव फरिसे पंचविहे माणुस्सए कामभोगे पच्चणुब्भवमाणे विहरइ, से णं गोयमा! पुरिसे विउसमणकालसमयंसि, केरिसयं सायासोक्खं पच्चणुब्भवमाणो विहरइ? ओरालं समणाउसो। तस्स णं गोयमा! पुरिसस्स कामभोगेहिंतो वाणमंतराणं देवाणं एत्तो अणंतगुणविसिट्ठतराए चेव कामभोगा, वाणमंतराणं देवाणं कामभोगेहिंतो असुरिंदवज्जियाणं भवणवासिणं देवाणं एत्तो अणंतगुणविसिट्ठत्तराए चेव कामभोगा, असुरिंदवज्जियाणं भवणवासियाणं देवाणं कामभोगेहिंतो असुरकुमाराणं देवाणं एत्तो अणंतगुणविसिट्ठत्तराए चेव कामभोगा, असुरकुमाराणं देवाणं कामभोगेहिंतो गहगणनक्खत्त तारारूवाणं जोइसियाणं देवाणं एत्तो अणंतगुणविसिट्ठत्तराए चेव कामभोगा, गहगणनक्खत्त-जाव कामभोगेहिंतो चंदिमसूरियाणं जोइसियाणं जोइसराईणं, एत्तो अणंतगुणविसिट्ठतयराए चेव कामभोगा, चंदिमसूरियाणं गोयमा! जोतिसिंदा जोइसरायाणो एरिसे कामभोगे

पच्चणुब्भवमाणा विहरंति। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं जाव विहरइ ॥सू० ४॥

बारसमे सए छट्ठो उद्देसो समत्तो ॥१२-६॥

छाया—चन्द्रस्य खलु भदन्त! ज्योतिषिकेन्द्रस्य ज्योतिषिकराजस्य कति अग्रमहिष्यः प्रज्ञप्ताः? यथा दशमशतके यावत् नो चैव खलु मैथुनमत्ययिकम्, सूरस्यापि तथैव, चन्द्रसूर्यौ खलु भदन्त! ज्योतिषिकेन्द्रौ ज्योतिषिकराजौ कीदृशान् कामभोगान् प्रत्यनुभवन्तौ विहरतः? गौतम! स यथानाम कश्चित् पुरुषः प्रथमयौवनोत्थानबलस्थः प्रथमयौवनोत्थानबलस्थया भार्यया सार्द्धम् अचिरवृत्तविवाहकार्यः अर्थगवेषणतायै षोडशवर्षविप्रोषितः स खलु ततो लब्धार्थः कृतकार्यः, अनघसमग्रः, पुनरपि निजकगृहं शीघ्रमागतः कृतबलिकर्मा कृतकौतुकमङ्गलप्रायश्चित्तः, सर्वालङ्कारविभूषितः मनोज्ञं स्थालीपाकशुद्धम् अष्टादशव्यञ्जनाकुलं भोजनं भुक्तः सन् तस्मिन् तादृशके वासगृहे वर्णकः, महाबलः कुमारो यावत् शयनोपचारकलितः तया तादृश्या भार्यया शृङ्गारागारचारुवेषया, यावत् कलितया अनुरक्तया, अविरक्तया मनोनुकूलया सार्द्धम्, इष्टान् शब्दान् यावत् स्पर्शान् पञ्चविधान् मानुष्यकान् कामभोगान् प्रत्यनुभवन् विहरति, स खलु गौतम! पुरुषो व्यवशमनकालसमये कीदृशं शाता सौख्यं प्रत्यनुभवन् विहरति? उदारं श्रमणायुष्मन्! तस्य खलु गौतम! पुरुषस्य कामभोगेभ्यो वानव्यन्तराणां देवानाम् एभ्यः अनन्तगुणविशिष्टतराश्चैव कामभोगाः, वानव्यन्तराणां देवानां कामभोगेभ्यः असुरेन्द्रवर्जितानां भवनवासिनां देवानाम् एतेभ्यः अनन्तगुणविशिष्टतराश्चैव कामभोगा, असुरेन्द्रवर्जितानां भवनवासिनाम् देवानां कामभोगेभ्यः असुरकुमाराणां देवानाम् एतेभ्यः अनन्तगुणविशिष्टतराश्चैव कामभोगाः, असुरकुमाराणां देवानां कामभोगेभ्यो ग्रहगणनक्षत्रतारारूपाणां ज्योतिषिकाणां देवानाम् एतेभ्यः अनन्तगुणविशिष्टतराश्चैव कामभोगाः, ग्रहगणनक्षत्र यावत् कामभोगेभ्यश्चन्द्रसूर्ययो ज्योतिषिकयोः ज्योतिषिकराजयोः एतेभ्यः अनन्तगुणविशिष्टतराश्चैव कामभोगाः। चन्द्रसूर्यौ खलु गौतम! ज्योतिषिकेन्द्रौ ज्योतिषिकराजौ ईदृशान् कामभोगान् प्रत्यनुभवन्तौ विहरतः। तदेवं भदन्त! तदेवं भदन्त! इति भगवान् गौतमः श्रमणं भगवन्तं महावीरं यावत् विहरति ॥सू० ४॥

द्वादशशतके षष्ठोद्देशः समाप्तः ॥

टीका—अथ चन्द्रसूर्ययोरेव अग्रमहिष्यादि स्वरूपं प्ररूपयितुमाह–' चंदस्स णं भंते ' इत्यादि, 'चंदस्स णं भंते ! जोइसिंदस्स जोइसरण्णो कइ अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ ?' गौतमः पृच्छति–हे भदन्त ! चन्द्रस्य खलु ज्योतिषिकेन्द्रस्य ज्योतिषिकराजस्य कतिअग्रमहिष्यः प्रज्ञप्ताः ? भगवानाह–'जहा दसमसए जाव णो चेव णं मेहुणवत्तियं' हे गौतम ! यथा दशमशतके पञ्चमोद्देशके अग्रमहिष्यादिवर्णनं कृतं तथैव अत्रापि कर्तव्यं, तथा च यावत्–चन्द्रस्य ज्योतिषिकेन्द्रस्य ज्योतिषिकराजस्य चतस्रः अग्रमहिष्यः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा–चन्द्रप्रभा, ज्योत्स्नाभा,

चन्द्र सूर्य की अग्रमहिषीयां आदि की वक्तव्यता—

' चंदस्सणं भंते ! जोइसिंदस्स जोइसरन्नो ' इत्यादि ।

टीकार्थ–इस सूत्रद्वारा सूत्रकार ने चन्द्र और सूर्य की ही अग्रमहिषियों आदि के स्वरूप की प्ररूपणा की है–इसमें गौतम ने प्रभु से ऐसा पूछा है–' चंदस्स णं भंते ! जोइसिंदस्स जोइसरण्णो कइ अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ ! हे भदन्त ! ज्योतिषिकों के इन्द्र और ज्योतिषिकों के राजा जो चन्द्रदेव हैं–उनकी अग्रमहिषियां कितनी कही गई हैं ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं–' जहा दसमसए जाव णो चेव णं मेहुणवत्तियं ' हे गौतम ! दशवें शतक में पंचम उद्देशक में जैसा अग्रमहिषी आदि का वर्णन किया गया है उसी प्रकारका वर्णन उनका यहां पर भी जानना चाहिये तथा-ज्योतिषिकेन्द्र और ज्योतिषिक राजा जो चन्द्रदेव है उसकी चार अग्रमहिषियां कही गई हैं जिनके नाम इस प्रकार से

—ચન્દ્ર સૂર્યની અગ્રમહિષીઓ આદિની વક્તવ્યતા—

" चंदस्स णं भंते ! जोइसिंदस्स जोइसरन्नो " ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ–આ સૂત્ર દ્વારા સૂત્રકારે ચન્દ્ર અને સૂર્યની અગ્રમહિષીઓ આદિના સ્વરૂપનું નિરૂપણ કર્યું છે આ વિષયને અનુલક્ષીને ગૌતમ સ્વામી મહાવીર પ્રભુને એવો પ્રશ્ન પૂછે છે કે–" चंदस्स णं भंते ! जोइसिंदस्स जोइसरण्णो कइ अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ ? " હે ભગવન્ ! જ્યોતિષિક દેવોના ઇન્દ્ર અને જ્યોતિષિક દેવોના રાજા એવા જે ચન્દ્રદેવ છે તેમને કેટલી અગ્રમહિષીઓ છે?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર ' जहा दसमसए जाव णो चेव णं मेहुणवत्तियं " હે ગૌતમ ! દસમાં શતકના પાંચમા ઉદ્દેશકમાં અગ્રમહિષીઓ આદિ વિષે જેવું વર્ણન કરવામાં આવ્યું છે, એવું જ તેમનું વર્ણન અહીં પણ ગ્રહણ કરવું જોઈએ તે ઉદ્દેશકમાં આ પ્રકારનું વર્ણન કરવામાં આવ્યું છે–જ્યોતિષિકેન્દ્ર અને જ્યોતિષિકરાજ એવા જે ચન્દ્રદેવ છે, તેમને ચાર અગ્રમહિષીઓ

अर्चिमाली, प्रभंकरा इत्यादि वर्णनं बोध्यम् 'सूरस्स वि तहेव' सूर्यस्यापि तथैव चन्द्रवदेव, सूर्यस्यापि अग्रमहिष्यादि वर्णनं कर्तव्यम्, तथाच सूर्यस्य ज्योतिषिकेन्द्रस्य ज्योतिषिकराजस्य चतस्रः अग्रमहिष्यः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा-सूर्यप्रभा, आतपाभा, अर्चिर्माली, प्रभंकरा, इत्यादिरीत्या दशमशतकस्य पञ्चमोद्देशकानुसारमेव वर्णनं कर्तव्यम्, गौतमः पृच्छति-चंदिमसूरियाणं भंते! जोइसिंदा जोइसरायाणो केरिसए कामभोगे पच्चणुब्भवमाणा विहरंति?' हे भदन्त! चन्द्रसूर्यौ खलु ज्योतिषिकेन्द्रौ ज्योतिषिकराजानौ, कीदृशान् कामभोगान् प्रत्यनुभवन्तौ विहरतः? तिष्ठतः? भगवानाह-गोयमा! से जहानामए केइपुरिसे पढम जोव्वणुट्ठाणबलत्थे'

हैं-चन्द्रप्रभा, ज्योत्स्नाभा, अर्चिर्माली और प्रभंकरा इसके आगे का और भी वर्णन है जो वहीं से देख लेना चाहिये 'सूरस्स वि तहेव' चन्द्रके वर्णन के जैसे ही सूर्य की भी अग्रमहिषियां आदि का वर्णन है अर्थात्-ज्योतिषिकेन्द्र और ज्योतिषिकराज सूर्य की भी अग्रमहिषियां चार ही कही गई हैं-जिनके नाम ये हैं-सूर्यप्रभा, आतपाभा, अर्चिर्माली एवं प्रभंकरा-इत्यादिरीति से इस विषय से लगता हुआ वर्णन दशवें शतक के पांचवें उद्देशक के अनुसार यहां कर लेना चाहिये.

अब गौतम प्रभु से ऐसा पूछते हैं-'चंदिमसूरियाणं भंते। जोइसिंदा जोइसरायाणो, केरिसए कामभोगे पच्चणुब्भवमाणा विहरंति' हे भदन्त! ज्योतिषिकों के इन्द्र और ज्योतिषिकों के राजा जो चंद्र और सूर्य हैं-वे कैसे कामभोगों को भोगते हैं? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-'गोयमा' हे गौतम! 'से जहा नामए केइ पुरिसे' जैसे कोई एक पुरुष

છે. તેમનાં નામ નીચે પ્રમાણે છે-ચન્દ્રપ્રભા, જ્યોત્સ્નાભા, અર્ચિર્માલી અને પ્રભંકરા ત્યાર બાદનું જે વર્ણન છે, તે ત્યાંથી જ વાંચી લેવું "सूरस्स वि तहेव" ચન્દ્રના વર્ણનના જેવું જ સૂર્યની અગ્રમહિષીઓ આદિનું વર્ણન પણ સમજવું એટલે કે જ્યોતિષિકેન્દ્ર અને જ્યોતિષિકરાજ સૂર્યને પણ ચાર અગ્રમહિષીઓ છે. તેમનાં નામ નીચે પ્રમાણે છે-સૂર્યપ્રભા, આતપાભા, અર્ચિર્માલી અને પ્રભંકરા, ઈત્યાદિ સમસ્ત વર્ણન દસમાં શતકના પંચમા ઉદ્દેશકમાં કથિત વર્ણન અનુસાર અહીં પણ ગ્રહણ કરવું જોઈએ.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-"चंदिमसूरियाणं भंते! जोइसिंदा जोइसरायाणो केरिसए कामभोगे पच्चणुब्भवमाणा विहरंति" હે ભગવન્! જ્યોતિષિકોના ઇન્દ્રો અને જ્યોતિષિકોના રાજા એવા જે સૂર્ય અને ચન્દ્ર છે, તેઓ કેવા કામભોગો ભોગવે છે?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-"गोयमा!" હે ગૌતમ! "से जहानामए केइ

हे गौतम ! तत्-अथ, यथानाम कश्चित् पुरुषः प्रथमयौवनोत्थानबलस्थः प्रथमयौवनोत्थाने-प्रथमयौवनोद्गमे यद्बलं प्राणः सत्त्वं वा तत्र तिष्ठतीति प्रथमयौवनोत्थानबलस्थः 'पढमजोव्वणुट्ठाणबलट्ठाए भारियाए सद्धिं अचिरवत्तविवाहकज्जे' प्रथमयौवनोत्थानबलस्थया-नवयौवनोद्गमावस्थया, भार्यया-युवत्या सार्द्धम्, अचिरद्वृत्तविवाहकार्यः-अचिरं-शीघ्रमेव, वृत्तं-निष्पन्नम्, विवाहकार्यं यस्य स तथाविधः-नूतनकृतपरिणयः, 'अत्थगवेसणयाए सोलसवासविप्पवासिए' अर्थगवेषणया-अर्थोपार्जनभावनया, षोडशवर्षपर्यन्तकृतविदेशवासः 'से णं तओ लद्धट्ठे कयकज्जे अणहसमग्गे पुणरवि नियगगिहं हव्वमागए' स खलु पुरुषः ततो लब्धार्थः षोडशवर्षप्रवासेन कृतवित्तोपार्जनः, अतएव कृतकार्यः-लब्धप्रयोजनः, अनघसमग्रः-विघ्नपुञ्जरहितः सन् पुनरपि, निजकगृहं-स्वगृहम्, शीघ्रमागतः, 'कयबलिकम्मे कयकोउयमंगलपायच्छित्ते, सव्वालंकारविभूसिए' कृतबलिकर्मा-

'पढमजोव्वणुट्ठाणबलत्थे' प्रथम युवावस्था के उद्गम जन्य बल से युक्त हुआ 'पढमजोव्वणुट्ठाणबलट्ठाए भारियाए सद्धिं' प्रथम यौवन अवस्थावाली युवती के साथ 'अचिरवत्तविवाहकज्जे' नवीन विवाह करे-अर्थात् पहिले पहिल ही विवाह करे, और विवाह करने के उपरान्त ही वह 'अत्थगवेसणयाए सोलहवास विप्पवासिए' पैसा-द्रव्य कमाने के लिये परदेश चला जावे-वहां वह १६ वर्षतक पैसा कमाता रहे-'से णं तओ लद्धट्ठे कयकज्जे' इस प्रकार परदेश में सोलह वर्षतक रहकर जिसने वित्त का अच्छी तरह से उपार्जन कर लिया है ऐसा वह पुरुष कृतकार्य होता हुआ 'अणहसमग्गे, पुणरवि नियगगिहं हव्वमागए' निर्विघ्नरीति से पुनः अपने घरपर वापिस आ जाता है 'कयबलिकम्मे, कयकोउयमंगलपायच्छित्ते सव्वालंकारविभूसिए'

પુરિસે” જેમ કોઈ એક પુરુષ “पढमजोव्वणुट्ठाणबलत्थे” પ્રથમ યુવાવસ્થાના ઉદ્ગમજન્ય બલથી યુક્ત થયેલ હોય “पढमजोव्वणुट्ठाणबलट्ठाए भारियाए सद्धिं अचिरवत्तविवाहकज्जे” જેણે પ્રથમ યૌવનની પ્રાપ્તિ કરેલી છે એવી યુવતીની સાથે તેના પહેલા જ લગ્ન થયા છે આ પ્રકારે તેના લગ્ન થયા બાદ તુરત જ તે “अत्थगवेसणयाए सोलहवासविप्पवासिए” દ્રવ્યોપાર્જન કરવાને માટે પરદેશ ચાલ્યો જાય છે ત્યા ૧૬ વર્ષ સુધી વસવાટ કરીને તે દ્રવ્ય કમાતો રહે છે. “से णं तओ लद्धट्ठे कयकज्जे” આ પ્રકારે ૧૬ વર્ષ સુધી પરદેશમાં રહીને જેણે પૂર્ણ જ ધનનું ઉપાર્જન કર્યું છે એવો તે પુરુષ કૃતકૃત્ય થઇને “अणहसमग्गे, पुणरवि नियगगिहं हव्वमागए” નિર્વિઘ્ને પોતાને ઘેર પાછો ફરે છે. “कयबलिकम्मे, कयकोउयमंगलपायच्छित्ते सव्वालंकार

वायसादिभ्यो दत्तान्नः, कृतकौतुकमङ्गलप्रायश्चित्तः, सर्वालङ्कारविभूषितः, 'मणुन्नं थालिपागसुद्धं अट्ठारसवंजणाकुलं' मनोज्ञम्-सरसम्, स्थालीपाकशुद्धम्-स्थाल्यां पाकेन शुद्धम्, अष्टादशव्यञ्जनाकुलम्-अष्टादशप्रकारकशाकादियुक्तम्, 'भोयणं भुत्ते समाणे तंसि तारिसगंसि वासघरंसि, वण्णओ महब्बलकुमारे' भोजनं भुक्तः सन् तस्मिन्-पूर्वोक्ते, तादृशके-विलक्षणे वासगृहे, वर्णकः-अस्य वासगृहस्य वर्णनम् एकादशशतके एकादशोद्देशके महाबलकुमारप्रकरणे कृतवर्णनानुसारमवसेयम्, 'जाव सयणोवयारकलिए ताए तारिसियाए भारियाए सिंगारागारचारु-

वहां वह स्नान आदि से निश्चिन्त बनकर बलिकर्म करता है-वायस आदिकों के लिये अन्न का विभाग कर वितरण करता है एवं दुःस्वप्न आदि के फल के विनाश के निमित्त कौतुक, मंगल एवं प्रायश्चित्त करता है। बाद में वह अपने समस्त अलंकारों से शरीर को विभूषित करता है। 'मणुन्नं थालिपागसुद्धं, अट्ठारसवंजणाकुलं भोयणं' और इस प्रकार से सुसज्जित बनकर वह फिर सरस भोजन को जो स्थाली में पकाने से बिलकुल अच्छी रीति से पक्व हुआ है-जरा भी कच्चा नहीं है-१८ प्रकार के शाकादि के साथ 'भुत्ते समाणे' बहुत ही रुचिपूर्वक खाता है। 'तंसि तारिसगंसि वासघरंसि-वण्णओ' भोजनक्रिया समाप्त होने पर फिर वह अपने भाग्यशालियों के योग्य-विलक्षण-वासगृह में जाता है-इस वासगृह का वर्णन ग्यारहवें शतक में, ग्यारहवें उद्देशक में महाबलकुमार के प्रकरण में किया गया है सो वैसा ही जानना चाहिये

जिभूसिए" त्यार બાદ તે स्नानादि विधि पतावीने બલિકર્મ કરે છે-વાયસ આદિને માટે અન્નનો વિભાગ કરીને વાયસાદિને તેનું દાન કરે છે, અને દુઃસ્વપ્ન આદિના ફલના વિનાશને નિમિત્તે કૌતુક, મંગલ અને પ્રાયશ્ચિત્ત કરે છે. ત્યાર બાદ તે સમસ્ત અલંકારો વડે પોતાના શરીરને વિભૂષિત કરે છે. "मणुन्नं थालिपागसुद्धं, अट्ठारसवंजणाकुलं भोयणं" ત્યાર બાદ બધી જ સારી રીતે રંધાયેલા, બિલકુલ કાચા ન હોય એવાં ૧૮ પ્રકારના શાકાદિથી યુક્ત મનોજ્ઞ ભોજનનું "भुत्ते समाणे" રુચિપૂર્વક આસ્વાદન કરે છે "तंसि तारिसगंसि वासघरंसि-वण्णओ" આ પ્રકારના ભોજનો આરોગીને તે પોતાના વાસગૃહમાં-શયનખંડમાં-જાય છે તે શયનખંડ ભાગ્યશાળીઓને યોગ્ય, વિલક્ષણ આદિ વિશેષણોવાળો છે અગિયારમાં શતકના અગિયારમાં ઉદ્દેશકમાં મહાબલકુમારના શયનખંડનું જેવું વર્ણન કરવામાં આવ્યું છે, એવું જ શયનખંડનું વર્ણન અહીં પણ ગ્રહણ કરવું જોઇએ. "जाव सयणोवयारकलिए ताए तारिसियाए भारियाए सिंगारागारचारुवेसाए सद्धिं."

वेसाए' यावत्-आभ्यन्तरतः सचित्र कर्माणि, बाह्यतः विचित्रालोकचिल्लितले, मणिरत्नप्रणाशितान्धकारे, बहुसमसुविभक्तभागे, पञ्चवर्णसरससुरभिमुक्तपुष्पपुञ्जोपचारकलिते, सुगन्धिवरगन्धिते, रत्नसूत्रसंवृते, सुरम्ये सुगन्धवरकुसुमचूर्णशयनोपचारकलिते वासगृहे इति पूर्वेण सम्बन्धो बोध्यः, तया-पूर्वोक्तया, तादृश्या-परमकमनीयसौन्दर्यशालिन्या, भार्यया, शृङ्गाराकारचारुवेषया-शृङ्गारस्य आकारः-आकृतिः तद्योग्यः चारुवेषः रमणीयनेपथ्यं यस्या, सा तया, 'जाव कलियाए, अणुरत्ताए, अविरत्ताए, मणोणुकूलाए सद्धिं' यावत् सक्थन्दनपुष्पमाल्यादिकलितया, अनुरक्तया-अनुरागवत्या, अविरक्तया-प्रियाचरणे विरक्तिरहितया, मनोऽनुकूलया-भर्तृमनसोऽनुकूलवर्तिन्या सार्द्धम् 'इट्ठे सद्दे जाव फरिसे

'जाव सयणोवयारकलिए ताए तारिसियाए भारियाए सिंगारागारचारुवेसाए सद्धिं' यहां यावत् शब्द से "आभ्यन्तरतः सचित्रकर्माणि, बाह्यतः विचित्रालोकचिल्लितले, मणिरत्नप्रणाशितान्धकारे, बहुसमसुविभक्तभागे- पञ्चवर्णसरससुरभिमुक्तपुष्पपुञ्जोपचारकलिते, सुगंधिवरगन्धिके, रत्नसूत्रसंवृते, सुरम्ये, सुगन्धवरकुसुमचूर्णशयनोपचारकलिते, इस पाठ का संग्रह हुआ है। इस प्रकार के वासगृह में पूर्वोक्त परमकमनीय सौन्दर्यशाली भार्या के साथ, कि जिसका वेष साक्षात् शृङ्गार की आकृति के जैसा है 'जाव कलियाए अणुरत्ताए, अविरत्ताए, मणोणुकूलाए,' और जो यावत्-सक्थ, चन्दन, पुष्पमाला आदि से सुशोभित हो रही है, अनुराग जिसमें भरा हुआ है, प्रिय आचरण करने में जिसके चित्त में थोड़ी सी भी विरक्ति नहीं है, एवं जो पति के मन के अनुकूल प्रवृत्तिवाली है 'इट्ठे सद्दे जाव फरिसे पंचविहे माणु-

---

અહીં 'जाव (यावत्)' પદ દ્વારા નીચેના સૂત્રપાઠ અહણ કરવામાં આવ્યો છે-"आभ्यन्तरतः सचित्रकर्माणि, बाह्यतः विचित्रालोकचिल्लितले, मणिरत्नप्रणाशितान्धकारे, बहुसमसुविभक्तभागे, पञ्चवर्णसरससुरभिमुक्तपुष्पपुञ्जोपचारकलिते, सुगंधिवरगन्धिते, रत्नसूत्रसंवृते, सुरम्ये, सुगन्धवरकुसुमचूर्णशयनोपचारकलिते" આ પ્રકારના શયનખંડમાં પૂર્વોક્ત, પરમકમનીય સૌદર્યશાળી, સુંદર વેષભૂષાને કારણે સાક્ષાત્ શૃંગારની મૂર્તિ જેવી, "जाव कलियाए अणुरत्ताए, अविरत्ताए, मणोणुकूलाए" ચન્દન, પુષ્પમાલાઓ આદિ વડે સુશોભિત દેખાતી, જેમાં અનુરાગ ભરેલો છે એવી, પ્રિય આચરણ કરવામાં જેના ચિત્તમાં સહેજે વિરક્તિ દેખાતી નથી એવી અને પતિની ઇચ્છાને અનુકૂળ પ્રવૃત્તિ કરનારી એવી ભાર્યાની સાથે તે પુરુષ "इट्ठे, सद्दे, जाव फरिसे पंचविहे माणुस्सए

पंचविहे माणुस्सए कामभोगे पच्चणुब्भवमाणे विहरइ' इष्टान्-अभीप्सितान्, शब्दान्-प्रियशब्दान्, यावत्-रूपान् गन्धान् रसान् स्पर्शान्, पञ्चविधान् मानुष्यकान्-मनुष्यसम्बन्धिनः कामभोगान् प्रत्यनुभवन्-अनुभवं कुर्वन् विहरति-तिष्ठति, 'से णं गोयमा! पुरिसे विउसमणकालसमयंसि केरिसयं सायासोक्खं पच्चणुब्भवमाणे विहरइ?' हे गौतम! स खलु पूर्वोक्तः पुरुषः, व्यवशमनकालसमये-व्यवशमनं-पुंवेदविकारोपशमस्तस्य यः कालसमयः तस्मिन् कीदृशं साता सौख्यम्-आनन्दविशेषम्, प्रत्यनुभवन् विहरति? तिष्ठति? 'ओरालं समणाउसो' हे श्रमणायुष्मन्! स उदारं खलु कामभोगसुखं प्रत्यनुभवन् तिष्ठति, अत्र प्राकृतजनापेक्षया कामभोगसुखम् उदारतया कथितम्, वस्तुतस्तु कामभोगस्य आपातरमणीयतया दुःखरूपत्वमेवावसेयम्,

---

स्सए कामभोगे पच्चणुब्भवमाणे विहरइ' मनुष्य संबंधी पांचप्रकार के कामभोगों का इष्ट शब्दों का यावत्-अभीप्सित रूपों का, गंधों का, रसों का, और स्पर्शों का-भोग करे 'से णं गोयमा! पुरिसे विउसमणकालसमयंसि केरिसयं सायासोक्खं पच्चणुब्भवमाणे विहरइ' तो हे गौतम! कहो, उस पुरुष को पुंवेद विकारोपशम होने पर उस समय कैसे सातासौख्य का-आनन्दविशेष का-अनुभव होता है? 'ओरालं समणाउसो' हे श्रमणायुष्मन्! उसे उस समय उदार कामभोग के सुख का अनुभव होता है। यहां जो कामभोगजन्य सुखको उदाररूप से कहा गया है वैसे यदि वस्तुस्थिति को लेकर विचार किया जावे तो कामभोग आपाततः ही रमणीय लगते हैं। वास्तव में तो वे दुःख रूप

कामभोगे पच्चणुब्भवमाणे विहरइ" मनुष्य संबंधी पांच प्रकारना कामभोगोनो ईष्ट शब्दो, अभिलषित रूपो, गन्धो अने स्पर्शोनो भोग करे छे. "से णं गोयमा! पुरिसे विउसमणकालसमयंसि केरिसयं सायासोक्खं पच्चणुब्भवमाणे विहरइ" हे गौतम! ते पुरुषने पुंवेदविकारोपशम थतां ते समये केवा सातासौख्यनो-आनंदविशेषनो अनुभव थाय छे? "ओरालं समणाउसो" हे श्रमणायुष्मन्! तेने ते समये उदार कामभोगना सुखनो अनुभव थाय छे अहीं जे कामभोग जन्य सुखने उदार विशेषण लगाडवामां आव्युं छे, ते प्राकृत जनोनी अपेक्षाओ लगाडवामां आव्युं छे. परन्तु जो वास्तविक रीते विचार करवामां आवे, तो कामभोग आपाततः ज रमणीय लागे छे अरी रीते तो ते कामभोगो दुःखरूप ज छे.

वक्तव्यमस्तुतविषयं प्ररूपयितुमाह-'तस्स णं गोयमा ! पुरिसस्स कामभोगेहिंतो वाणमंतराणं देवाणं एत्तो अणंतगुणविसिट्ठत्तराए चेव कामभोगा' हे गौतम ! तस्य खलु पुरुषस्य उक्तकामभोगेभ्यो वानव्यन्तराणां देवानाम् एतेभ्यः अनन्तगुणविशिष्टतराश्चैव अनन्तगुणाधिकाः कामभोगा भवन्ति, अथ च 'वाणमंतराणं देवाणं कामभोगेहिंतो असुरिंदवज्जियाणं भवणवासीणं देवाणं एत्तो अणंतगुणविसिट्ठतराए चेव कामभोगा' वानव्यन्तराणां देवानां कामभोगेभ्यः एतेभ्यः पूर्वोक्तेभ्यः असुरेन्द्रवर्जितानां भवनवासिनां देवानाम् अनन्तगुणावशिष्टतराश्चैव कामभोगा भवन्ति, 'असुरिंदवज्जियाणं भवणवासियाणं देवाणं कामभोगेहिंतो असुरकुमाराणं देवाणं एत्तो अणंतगुणविसिट्ठतराए चेव कामभोगा' असुरेन्द्रवर्जि-

---

ही हैं 'तस्स णं गोयमा! पुरिसस्स कामभोगेहिंतो वाणमंतराणं देवाणं एत्तो अणंतगुणविसिट्ठतराए चेव कामभोगा' इस प्रकार कह कर अब प्रभु गौतम को इस सूत्र द्वारा ऐसा समझा रहे हैं-हे गौतम! तो जैसा कामभोग जन्य सुख का अनुभव इस पुरुष को होता है-तो इससे भी अनन्तगुणविशिष्टतर कामभोगजन्य सुख का अनुभव वानव्यन्तर देवों को होता है। क्यों कि इनके कामभोग उस साधारण मनुष्य के कामभोगों से भी अनन्तगुणविशिष्टतर होते हैं। 'वाणमंतराणं देवाणं कामभोगेहिंतो असुरिंदवज्जियाणं भवणवासीणं देवाणं एत्तो अणंतगुणविसिट्ठतराए चेव कामभोगा' इन वानव्यन्तर देवों के कामभोगों से अनन्तगुणविशिष्टतर कामभोग असुरेन्द्रवर्ज भवनवासी देवों के होते हैं। 'असुरिंदवज्जियाणं भवणवासियाणं देवाणं कामभोगेहिंतो असुरकुमाराणं देवाणं एत्तो अणंतगुणविसिट्ठतराए चेव कामभोगा' असुरे-

---

"तस्सणं गोयमा ! पुरिसस्स कामभोगेहिंतो वाणमंतराणं देवाणं एत्तो अणंतगुणविसिट्ठतराए चेव कामभोगा" હે ગૌતમ ! જેવા કામભોગ જન્ય સુખનો અનુભવ તે પુરુષને થાય છે, તેના કરતાં અનંત ગણું કામભોગ જન્ય સુખનો અનુભવ વાનવ્યન્તર દેવોને થાય છે, કારણ કે સાધારણ મનુષ્યના કામભોગો કરતાં તે વાનવ્યંતર દેવોના કામભોગો અનંતગણું વિશિષ્ટતર હોય છે. "वाणमंतराणं देवाणं कामभोगेहिंतो असुरिंदवज्जियाणं भवणवासीणं देवाणं एत्तो अणंतगुणविसिट्ठतराए चेव कामभोगा" અસુરેન્દ્ર સિવાયના ભવનવાસી દેવોના કામભોગો કરતાં અસુરકુમાર દેવોના કામભોગો અનંત ગણું વિશિષ્ટતર હોય છે. "असुरिंदवज्जियाणं भवणवासियाणं देवाणं कामभोगेहिंतो असुरकुमाराणं देवाणं एत्तो अणंतगुणविसिट्ठतराए चेव कामभोगा"

तानां भवनवासिनां देवानाम् एतेभ्यः पूर्वोक्तेभ्यः कामभोगेभ्यः असुरकुमाराणाम् देवानाम् अनन्तगुणविशिष्टतरा एव कामभोगा भवन्ति, 'असुरकुमाराणं देवाणं कामभोगेहिंतो गहगणनक्खत्ततारारूवाणं जोइसियाणं देवाणं एत्तो अणंतगुणविसिट्ठतराए चेव कामभोगा' असुरकुमाराणां देवानाम् एतेभ्यः पूर्वोक्तेभ्यः कामभोगेभ्यो ग्रहगणनक्षत्रतारारूपाणां ज्योतिषिकाणां देवानाम् अनन्तगुणविशिष्टतरा एव कामभोगा भवन्ति, 'गहगणनक्खत्त जाव कामभोगेहिंतो चंदिमसुरियाणं जोइसियाणं एत्तो अणंतगुणविसिट्ठतराए चेव कामभोगा' ग्रहगणनक्षत्र यावत् तारारूपाणां ज्योतिषिकाणां देवानाम् एतेभ्यः पूर्वोक्तेभ्यः कामभोगेभ्यः चन्द्रसूर्ययोः ज्योतिषिकयोः ज्योतिष्कराजयोः अनन्तगुणविशिष्टतरा एव कामभोगाः भवन्ति, 'चंदिमसुरियाणं गोयमा ! जोइसिंदा जोइसरायाणो एरिसे कामभोगे पच्चणुब्भवमाणा विहरंति' हे गौतम ! चन्द्रसूर्यौ खलु ज्योतिषिकेन्द्रौ ज्योति-

---

न्द्रवर्ज भवनवासी देवों के कामभोगों से अनन्तगुणविशिष्टतर काम भोग असुरकुमार देवों के होते हैं। 'असुरकुमाराणं देवाणं कामभोगेहिंतो गहगणनक्खत्ततारारूवाणं जोइसियाणं देवाणं एत्तो अणंतगुणविसिट्ठतराए चेव कामभोगा', असुरकुमारदेवों के इन पूर्वोक्त कामभोगों से अनन्तगुणविशिष्टतर कामभोग ज्योतिषिक देव ग्रहगणनक्षत्र एवं तारारूपों के होते हैं। 'गहगणनक्खत्त जाव कामभोगेहिंतो चंदिमसूरियाणं जोइसियाणं जोइसराईणं एत्तो अणंतगुणविसिट्ठतराए चेव कामभोगा' ज्योतिषिकदेव ग्रहगण, नक्षत्र एवं तारारूपों के इन कामभोगों से अनन्तगुणविशिष्टतर चन्द्र और सूर्यरूप ज्योतिषिक राजों के कामभोग होते हैं। 'चंदिमसूरियाणं गोयमा ! जोइसिंदा

અસુરેન્દ્ર સિવાયના ભવનવાસી દેવોના કામભોગો કરતા અસુરકુમાર દેવોના કામભોગો અનંતગણું વિશિષ્ટતર હોય છે. "असुरकुमाराणं देवाण कामभोगेहिंतो गहगणनक्खत्ततारारूवाणं जोइसियाणं देवाणं एत्तो अणंतगुणविसिट्ठतराए चेव कामभोगा" અસુરકુમારોના તે પૂર્વોક્ત કામભોગો કરતાં અનંત ગણું વિશિષ્ટતર કામભોગોને જ્યોતિષિક દેવો-ગ્રહગણ નક્ષત્રો અને તારાઓ અનુભવ કરે છે. "गहगणनक्खत्त जाव कामभोगेहिंतो चंदिमसूरियाणं जोइसियाणं जोइसराईणं एत्तो अणंतगुणविसिट्ठतराए चेव" જ્યોતિષિક દેવો-ગ્રહગણ, નક્ષત્ર અને તારાઓના તે કામભોગો કરતાં અનંત ગણું વિશિષ્ટતર કામભોગોને જ્યોતિષિકોના રાજાઓ રૂપ સૂર્ય અને ચન્દ્ર અનુભવ કરે છે. "चंदिमसूरियाणं गोयमा ! जोइसिंदा जोइसरायाणो एरिसे कामभोगे पच्चणुब्भवमाणा विहर-

षिकराजौ ईदृशान्-उपरिवर्णितान् कामभोगान् प्रत्यनुभवन्तौ विहरतः-तिष्ठतः।

अंते गौतमो भगवद्वाक्यं प्रमाणयन्नाह-'सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं जाव विहरइ' हे भदन्त! तदेवं भवदुक्तं सत्यमेव, हे भदन्त! तदेवं भवदुक्तं सत्यमेवेति कथयन् भगवान् गौतमः श्रमणं भगवन्तं महावीरं यावत्-वन्दित्वा नमस्थित्वा संयमेन तपसा आत्मानं भावयमानो विहरति तिष्ठति॥सू० ४॥

इति श्री विश्वविख्यात जगद्वल्लभादिपदभूषित बालब्रह्मचारि 'जैनाचार्य' पूज्यश्री घासीलालव्रतिविरचितायां श्री "भगवती" सूत्रस्य प्रमेयचन्द्रिकाख्यायां व्याख्यायां द्वादशशतकस्य षष्ठोद्देशकः समाप्तः ॥सू० १२-६॥

जोइसराघाणो एरिसे कामभोगे पच्चणुब्भवमाणा विहरंति' हे गौतम! ये चन्द्र और सूर्य ज्योतिषिक देवों के इन्द्र और उनके राजा हैं, अतः ये उपर्युक्त कामभोगों को भोगते हैं। अब अन्त में गौतम भगवान् के वचनों में प्रमाणता ख्यापन करने के निमित्त कहते हैं-' सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं जाव विहरइ' हे भदन्त! आप के द्वारा कहा गया सब यह विषय बिलकुल सत्य ही है, हे भदन्त! आपके द्वारा कहा गया यह सब विषय बिलकुल सत्य ही है। ऐसा कहकर वे भगवान् गौतम श्रमण भगवान् महावीर को वन्दना एवं नमस्कार करके संयम और तप से आत्मा को भावित करते हुए अपने स्थानपर विराजमान हो गये ॥सू० ४॥

जैनाचार्य जैनधर्मदिवाकर श्री घासीलालजी महाराज कृत "भगवतीसूत्र" की प्रमेयचन्द्रिका व्याख्याके बारहवें शतकका छठा ॥ उद्देशक समाप्त ॥१२-६॥

रंति" હે ગૌતમ! ચન્દ્ર અને સૂર્ય જ્યોતિષ્કોના ઇન્દ્રો અને તેમના રાજાઓ છે, તેથી તેઓ પૂર્વોક્ત કામભોગોને ભોગવે છે. ઉદ્દેશકને અન્તે મહાવીર પ્રભુના વચનને પ્રમાણભૂત ગણીને ગૌતમ સ્વામી કહે છે કે-" सेवं भंते! सेव भंते! त्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीर जाव विहरइ" " હે ભગવન્! આપના દ્વારા આ વિષયનું જે પ્રતિપાદન કરવામાં આવ્યું તે સત્ય છે હે ભગવન્! આપે જે કહ્યું તે યથાર્થ જ છે" આ પ્રમાણે કહીને શ્રમણ ભગવાન મહાવીરને વંદણા નમસ્કાર કરીને, ભગવાન ગૌતમ સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા પોતાના સ્થાને બેસી ગયા ॥સૂ૦૪॥ જૈનાચાર્ય જૈનધર્મદિવાકર શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ કૃત "ભગવતીસૂત્ર"ની પ્રમેયચન્દ્રિકા વ્યાખ્યાના બારમાં શતકનો છઠ્ઠો ઉદ્દેશક સમાપ્ત ॥૧૨-૬॥

अथ सप्तमोद्देशकः प्रारभ्यते-

द्वादशशतके सप्तमोद्देशकस्य संक्षिप्तविषयविवरणम्-

लोकस्य महत्त्ववर्णनम्, नारकपृथिवीप्ररूपणम्, जीवस्य रत्नप्रभादिप्रत्येकनरकावासे पृथिवीकायिकादितया उत्पत्तिवर्णनम्, सर्वजीवानां शर्कराप्रभानरकावासे पृथिवीकायिकादितया उत्पत्तिवर्णनम्, तमापृथिव्यामुत्पत्तिवर्णनंच, सप्तमपृथिवीनरकावासे पूर्वोत्पत्तिवर्णनम्, ततः असुरकुमारस्य पृथिवीकायिकाद्यावासेषु पूर्वमुत्पत्तिवर्णनम्, द्वीन्द्रियावासेषु पूर्वमुत्पत्तिवर्णनम्. ततः सनत्कुमारकल्पे, ग्रैवेयकविमानावासे, अनुत्तरविमानावासे च पूर्वमुत्पत्तिवर्णनम्। जीवस्य सर्वजीवानां

सातवें उद्देशेका प्रारंभ—

बारहवें शतक के इस सप्तम उद्देशक में जो विषय कहा गया है उसका विवरण संक्षेप के इस प्रकार है—

लोक के महत्त्व का वर्णन, नारकपृथिवियों की प्ररूपणा, रत्नप्रभा आदि प्रत्येक नरकावास में जीव की पृथिवीकायिकादि रूप से उत्पत्ति, का वर्णन, शर्कराप्रभानरकावास में समस्त जीवों की पृथिवीकायिकादिरूप से उत्पत्ति का कथन, इसी प्रकार यावत् तमापृथिवी में भी जीव की पृथिवीकायिकादिरूप से उत्पत्ति होने का वर्णन, सप्तमपृथिवी के नरकावास में पूर्वोत्पत्ति का वर्णन, असुरकुमारों के आवासों में जीव का पृथिवीकायिक आदि रूप से उत्पत्ति होने का वर्णन, पृथिवीकायिक आदि आवासों में जीव की पूर्वोत्पत्ति का वर्णन इसी प्रकार से द्वीन्द्रियावासों में जीव की पूर्वोत्पत्ति का वर्णन, यावत् ईशान तक इसके बाद सनत्कुमारादि कल्पों में, ग्रैवेयक विमानावास में और अनुत्तरविमा-

---

સાતમા ઉદ્દેશાનો પ્રારંભ—

આ સાતમાં ઉદ્દેશકમાં પ્રતિપાદિત વિષયનો સંક્ષિપ્ત સારાંશ નીચે પ્રમાણે છે.

લોકના મહત્ત્વનું વર્ણન, નારક પૃથ્વીઓની પ્રરૂપણા, રત્નપ્રભા આદિ પ્રત્યેક નરકાવાસમાં પૃથ્વીકાયિક આદિ રૂપે જીવોની ઉત્પત્તિનું વર્ણન, શર્કરાપ્રભા નરકાવાસમાં જીવોની પૃથ્વીકાયિક આદિ રૂપે ઉત્પત્તિનું વર્ણન, એજ પ્રમાણે તમઃપ્રભા અને સાતમી તમસ્તમા પૃથ્વીમાં પણ જીવની પૃથ્વીકાયિકાદિ રૂપે પૂર્વોત્પત્તિનું વર્ણન, અસુરકુમારોના આવાસોમાં જીવની પૃથ્વીકાયિક આદિ રૂપે ઉત્પત્તિ થવાનું કથન, પૃથ્વીકાયિક આદિ આવાસોમાં જીવની પૂર્વોત્પત્તિનું વર્ણન, એજ પ્રમાણે દ્વીન્દ્રિયાદિ આવાસોમાં જીવની પૂર્વોત્પત્તિનું વર્ણન, સનત્કુમારાદિ કલ્પોમાં ગ્રૈવેયક વિમાનાવાસોમાં, અને અનુત્તરવિમાના-

मातापित्रादिसम्बन्धरूपेण उत्पत्तिवर्णनम्, सर्वजीवानाम् एतज्जीवस्य मातापित्रादि सम्बन्धरूपेण उत्पत्तिवर्णनम्, एतज्जीवस्य सर्वजीवानां शत्रुरूपेण उत्पत्तिवर्णनम्, एवमेव सर्वजीवानामपि एतज्जीवस्य शत्रुरूपेण उत्पत्तिवर्णनम्, एतज्जीवस्य सर्वजीवराजरूपेण उत्पत्तिवर्णनम्, एतज्जीवस्य सर्वजीवदासरूपेण उत्पत्तिवर्णनम्, सर्वजीवानाम् एतज्जीवस्य दासरूपेणउत्पत्तिवर्णनं चेति ॥

लोकविस्तारवक्तव्यता।

मूलम्–'तेणं कालेणं, तेणं समएणं जाव एवं वयासी–के महालए णं भंते! लोए पण्णत्ते? गोयमा! महतिमहालए लोए पण्णत्ते, पुरत्थिमेणं असंखेज्जाओ जोयणकोडाकोडीओ दाहिणे णं असंखिज्जाओ, एवं चेव, एवं पच्चत्थिमेण वि, एवं उत्तरेण वि, एवं उड्ढं पि, अहं असंखेज्जाओ जोयणकोडाकोडीओ आयामविक्खंभेणं। एयंसि णं भंते! एमहालयंसि लोगंसि अत्थि केइ परमाणुपोग्गलमेत्ते वि पएसे जत्थ णं अयं जीवे न जाए

निवास में जीव की पूर्वोत्पत्ति का वर्णन, सर्वजीवों के माता पिता आदि रूप से जीव की उत्पत्ति होने का वर्णन, समस्त जीव भी इस जीव के माता पिता आदि रूप से उत्पन्न हुए हैं ऐसा वर्णन, यह जीव समस्त जीवों का शत्रुरूप से उत्पन्न हुआ है ऐसा कथन, इसी प्रकार से सब जीव भी इस जीव के शत्रुरूप से उत्पन्न हुए हैं ऐसा कथन, सब जीवों का यह जीव राजारूप से उत्पन्न हुआ है ऐसा कथन, यह जीव सब जीवों का दासरूप से उत्पन्न हुआ है ऐसा कथन, तथा सब जीव इस जीव के दासरूप से उत्पन्न हुए हैं ऐसा कथन.

વાસોમાં જીવની પૂર્વોત્પત્તિનું વર્ણન, સર્વ જીવોના માતા, પિતા આદિ રૂપે જીવની ઉત્પત્તિ થવાનું વર્ણન, સમસ્ત જીવોના માતા પિતા આદિ રૂપે ઉત્પન્ન થઈ ચુકયા છે એવું કથન, આ જીવ સમસ્ત જીવોના શત્રુરૂપે ઉત્પન્ન થયો છે, એવું કથન, એજ પ્રમાણે સમસ્ત જીવો આ જીવના શત્રુરૂપે ઉત્પન્ન થયા છે એવું કથન, આ જીવ સમસ્ત જીવોના રાજા રૂપે ઉત્પન્ન થયો છે, એવું કથન, આ જીવ સમસ્ત જીવોના દાસ રૂપે ઉત્પન્ન થયો છે એવું કથન, સમસ્ત જીવો આ જીવના દાસ રૂપે ઉત્પન્ન થઈ ચુકયા છે એવુ કથન.

वा, न मएज्जा वि? गोयमा! णो इणट्ठे समट्ठे। से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ-एयंसि णं एमहालयंसि लोगंसि नत्थि केइ परमाणु-पोग्गलमेत्ते वि पएसे, जत्थ णं अयं जीवे ण जाए वा, न मए वा वि? गोयमा! से जहा नामए-केइपुरिसे अयासयस्स एगं महं अयावयं करेज्जा, से णं तत्थ जहण्णेणं एक्कं वा, दोवा, तिन्नि वा, उक्कोसेणं अयासहस्सं पविखवेज्जा लाओ णं तत्थ पउर-गोयराओ, पउरपाणियाओ जहण्णेणं एगाहं वा, वियाहं वा, तियाहं वा, उक्कोसेणं छम्मासे परिवसेज्जा, अत्थि णं गोयमा! तस्स अयावयस्स केई परमाणुमेत्ते वि पएसे जेणं तासिं अयाणं उच्चारेण वा, पासवणेण वा, खेलेण वा, सिंघाणएण वा, वंते-णवा, पित्तेण वा, पूएण वा, सुक्केण वा, सोणिएण वा, चम्मेहिं वा, रोमेहिं वा, सिंगेहिं वा, खुरेहिं वा, नहेहिं वा, अणाक्कंते-पुव्वे भवइ? भगवं णो इणट्ठे समट्ठे। होज्जा वि णं गोयमा! तस्स अयावयस्स केई परमाणुपोग्गलमेत्ते वि पएसे, जे णं तासिं अयाणं, उच्चारेण वा जाव णहेहिं वा, अणक्कंतपुव्वे, णो चेवणं एयंसि एमहालयंसि लोगंसि, लोगस्स य सासयं भावं संसारस्स य अणादि भावं, जीवस्स य णिच्चभावं, कम्मबहुत्तं जम्मण-मरणबाहुल्लं च, पडुच्च नत्थि केइ परमाणुपोग्गलमेत्ते वि पएसे, जत्थ णं अयं जीवे न जाए वा, न मए वा वि से तेण-ट्ठेण, तं चेव जाव न मए वा वि ॥सू० १॥

छाया—तस्मिन् काले, तस्मिन् समये, यावत् एवम् अवादीत्—कियन्महालयः खलु भदन्त ! लोकः प्रज्ञप्तः ? गौतम ! महतिमहालयो लोकः प्रज्ञप्तः, पौरस्त्ये असंख्येयाः योजनकोटाकोटयः, दक्षिणे असंख्येयाः एवमेव। एवं पश्चिमेऽपि, एवम् उत्तरेऽपि, एवम् ऊर्ध्वमपि, अधः असंख्येया योजन कोटाकोटयः आयामविष्कम्भेण। एतस्मिन् खलु भदन्त ! इयन्महालये लोके अस्ति कश्चित् परमाणुपुद्गलमात्रोऽपि प्रदेशः, यत्र खलु अयं जीवो न जातो वा, न मृतो वा पि ? गौतम ! नायमर्थः समर्थः। तत् केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते—एतस्मिन् खलु इयन्महालये लोके नास्ति कश्चित् परमाणुपुद्गलमात्रोऽपि प्रदेशः, 'यत्र खलु अयं जीवो न जातो वा, न मृतो वा पि ? गौतम ! तत् यथानाम—कश्चित् पुरुषः अजाशतस्य एकं महान्तम् अजाव्रजं कुर्यात्, स खलु तत्र जघन्येन एकां वा, द्वे वा, तिस्रो वा, उत्कृष्टेन अजासहस्रं प्रक्षिपेत्, ताः खलु तत्र प्रचुरगोचराः प्रचुरपानीयाः जघन्येन एकाहं वा, द्व्यहं वा, त्र्यहं वा, उत्कृष्टेन षण्मासान् परिवसेयुः, अस्ति खलु गौतम ! तस्य अजाव्रजस्य कश्चित् परमाणुपुद्गलमात्रोऽपि प्रदेशः, यः खलु तासाम् अजानाम् उच्चारेण वा, प्रस्रवणेन वा, श्लेष्मणा वा, सिंघाणकेन वा, वान्तेन वा, पित्तेन वा, पूयेन वा, शुक्रेण वा, शोणितेन वा, चर्मणि वा, रोमभि र्वा, शृङ्गै र्वा, खुरै र्वा, नखै र्वा अनाक्रान्तपूर्वो भवति ? भगवन् ! नायमर्थः समर्थः। भवेदपि खलु गौतम ! तस्य अजाव्रजस्य कश्चित् परमाणुपुद्गलमात्रोऽपि प्रदेशः, य खलु तासाम् अजानाम् उच्चारेण वा, यावत् नखै र्वा अनाक्रान्तपूर्वो नो चैव खलु एतस्मिन् इयन्महालये लोके लोकस्य च शाश्वतं भावं, संसारस्य अनादि भावं, जीवस्य च नित्यभावं कर्मबहुत्वं जन्ममरणबाहुल्यं च प्रतीत्य नास्ति कश्चित् परमाणुपुद्गलमात्रोऽपि प्रदेशः, यत्र खलु अयं जीवो न जातो वा, न मृतो वा पि, तत् तेनार्थेन तदेव यावत् न मृतो वा पि ॥सू० १॥

टीका—पूर्वोद्देशके चन्द्रादीनामतिशयसौख्यस्य प्रतिपादितत्वेन तेषां च लोकस्यांशे सद्भावाम् लोकांशे जीवजन्ममरणवक्तव्यतां प्ररूपयितुमाह—'तेणं

लोकविस्तार वक्तव्यता—

'तेणं कालेणं तेणं समएणं' इत्यादि।

टीकार्थ—इससे पहिले के उद्देशक में चन्द्रादिकों के अतिशय सुख का प्रतिपादन किया गया है, ये चन्द्रादिक लोक के एक भाग में रहते

—લોકના વિસ્તાર આદિનું વર્ણન—

"तेणं कालेणं तेणं समएणं" ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ—આગલા સૂત્રમાં ચન્દ્રાદિના અતિશય સુખનું પ્રતિપાદન કરવામાં આવ્યું છે. તે ચન્દ્રાદિ લોકના એક ભાગમાં રહે છે તેથી લોકાંશમાં જીવન જન્મમરણની વક્તવ્યતાનું કથન સૂત્રકારે આ સૂત્ર દ્વારા કર્યું છે—

कालेणं' इत्यादि। 'तेणं कालेणं, तेणं समएणं जाव एवं वयासी'-तस्मिन् काले, तस्मिन् समये, यावत्-राजगृहे नगरे स्वामी समवसृतः, धर्मकथां श्रोतुं पर्षत् निर्गच्छति, धर्मकथां श्रुत्वा प्रतिगता पर्षद्, ततो विनयेन शुश्रूषमाणो नमस्यन् गौतमः प्राञ्जलिपुटः पर्युपासीनः, एवं-वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादीत्-'के महालए णं भंते! लोए पण्णत्ते?' हे भदन्त! कियन्महालयः-कीदृग्विशालः खलु लोकः प्रज्ञप्तः? भगवानाह-'गोयमा! महइमहालए लोए पण्णत्ते' हे गौतम! महातिमहालयः-अति विशालः लोकः प्रज्ञप्तः। तमेव लोकविस्तारमाह-'पुरत्थिमेणं

हैं,-अतः लोकांश में जीव के जन्ममरण की वक्तव्यता का कथन सूत्रकार ने इस सूत्र द्वारा किया है, इसमें गौतम ने प्रभु से जिस समय जो पूछा है-उस समय के प्रसङ्ग को प्रकट करने के लिये सूत्रकार कहते हैं-'तेणं कालेणं तेणं समएणं जाव एवं वयासी' उस काल और उस समय में यावत् राजगृह नगर में महावीर स्वामी पधारे उनसे धर्मकथा को सुनने के लिये परिषदा-जनसमूह-अपने २ घर से निकली धर्मकथा को सुनकर वह विसर्जित हो गई, तब विनय से दोनों हाथ जोड़कर प्रश्न पूछने की अभिलाषावाले गौतम ने प्रभु को नमस्कार कर, इस प्रकार उनसे पूछा-'के महालए णं भंते! लोए पण्णत्ते' हे भदन्त! कैसा विशाल यह लोक कहा गया है? इसके उत्तर में प्रभु ने कहा-'महइमहालए लोए पण्णत्ते' हे गौतम! यह लोक अतिविशाल कहा गया है? इस लोकविस्तार को अब सूत्रकार प्रकट करते हैं-'पुरत्थिमेणं,

---

ગૌતમ સ્વામીએ કયારે આ વિષયને અનુલક્ષીને પ્રશ્ન પૂછયો હતો, તે નીચેના સૂત્ર દ્વારા પ્રગટ કરવામાં આવેલ છે-'तेणं कालेणं तेणं समएणं जाव एवं वयासी" "તે કાળે અને તે સમયે રાજગૃહ નામે નગર હતું" આ કથનથી શરૂ કરીને "ગૌતમ સ્વામીએ આ પ્રમાણે પૂછયું" ત્યાં સુધીનું સમસ્ત પૂર્વોક્ત કથન અહીં ગ્રહણ કરવું જોઇએ એટલે કે રાજગૃહ નગરમાં મહાવીર પ્રભુનું આગમન પરિષદનું વંદણા નમસ્કાર માટે ગમન-ધર્મકથા શ્રવણ કરીને પરિષદનું વિસર્જન અને ત્યાર બાદ ધર્મતત્ત્વને જાણવાની જિજ્ઞાસાવાળા ગૌતમ સ્વામીનો આ પ્રકારનો પ્રશ્ન-આ સમસ્ત કથન અહીં ગ્રહણ કરવું જોઇએ. "के महालएणं भंते! लोए पण्णत्ते" હે ભગવન્! આ લોકને કેટલો વિશાળ કહ્યો છે?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-"महइमहालए लोए पण्णत्ते!" હે ગૌતમ! આ લોકને અતિવિશાળ કહ્યો છે. તેના વિસ્તારનું હવે વર્ણન કરવામાં આવે છે-

असंखेज्जाओ जोयणकोडाकोडीओ, दाहिणेणं असंखिज्जाओ एव चेव ' लोकः पौरस्त्ये पूर्वदिग्भागे, असंख्येयाः योजनकोटाकोट्यः-असंख्येयकोटाकोटि योजनपरिमितः, एवं दक्षिणे-दक्षिणदिग्भागे, असंख्येयाः, एवमेव पूर्वोक्तरीत्या योजनकोटाकोट्यो वर्तते, 'एवं पच्चत्थिमेण वि, एवं उत्तरेण वि, एवं उड्ढंपि, अहे असंखेज्जाओ जोयणकोडाकोडीओ, आयामविक्खंभेणं ' एवं-पूर्वोक्तरीत्या, पश्चिमेऽपि-एवम् उत्तरेऽपि, एवम् ऊर्ध्वमपि, अधोऽपि असंख्येयाः योजनकोटाकोट्यः, आयामविष्कम्भेण-आयामेन-दैर्घ्येण, विष्कम्भेण-विस्तारेण, ईदृग् विस्तारः खलु अयं लोकः प्रज्ञप्तः इति पूर्वेणान्वयः, गौतमः पृच्छति-'एएसि णं भंते ! एमहालयंसि लोगंसि, अत्थि केइ परमाणुपोग्गलमेत्ते वि पएसे, जत्थ अयं जीवे न जाए वा, न मए वा वि ? हे भदन्त ! एतस्मिन् खलु इयन्महालये-

---

असंखेज्जाओ जोयणकोडीओ, दाहिणेणं असंखिज्जाओ एवं चेव' यह लोक पूर्वदिग्भाग में असंख्यात कोटाकोटि योजन के विस्तार-वाला है, इसी प्रकार से दक्षिणदिग्भाग में भी यह असंख्यात कोटा-कोटि योजनतक विस्तृत है-' एवं पच्चत्थिमेण वि, एवं उत्तरेण वि, एवं उड्ढंपि, अहे असंखेज्जाओ जोयणकोडाकोडीओ आयामविक्खंभेणं ' इसी प्रकार से यह पश्चिमदिशा में भी और उत्तरदिशा में भी हैं। इसी प्रकार से यह ऊर्ध्वदिशा में और अधोदिशा में भी असं-ख्यात कोडा कोडी योजन तक लंबा चौड़ा है। ऐसे अति विस्तार वाला यह लोक कहा गया है।

अब गौतम प्रभु से ऐसा पूछते हैं-(एएसि णं भंते ! एमहालयंसि लोगंसि अत्थि केई परमाणुपोग्गलमेत्ते वि पएसे जत्थ णं अयं

" पुरत्थिमेणं असंखेज्जाओ जोयणकोडाकोडीओ, दाहिणेणं असखिज्जाओ एवं चेव"
આ લોક પૂર્વ દિશામાં અસંખ્યાત કોટાકોટિ યોજન સુધી વિસ્તરેલો છે, દક્ષિણમાં પણ તે અસંખ્યાત કોટાકોટિ યોજન સુધી વિસ્તૃત છે. " एव पच्च-त्थिमेणं वि, एवं उत्तरेणं वि, एवं उड्ढं वि अहे असंखेज्जाओ जोयणकोडाकोडीओ आयामविक्खभेणं " એજ પ્રમાણે પશ્ચિમદિશામાં અને ઉત્તરદિશામાં પણ આ લોક અસંખ્યાત કોટાકોટિ યોજન સુધી વિસ્તરેલો છે એજ પ્રમાણે ઉર્ધ્વ-દિશામાં અને અધોદિશામાં પણ આ લોક અસંખ્યાત કોટાકોટિ યોજન પર્યન્ત લાંબો પહોળો (વિસ્તૃત) છે એવો અતિશય વિસ્તારવાળો આ લોક કહ્યો છે.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-" एएसि णं भंते ! एमहालयंसि लोगंसि अत्थि केइं परमाणुपोग्गलमेत्ते वि पएसे, जत्थ णं अयं जीवे न जाए, न मए वा, वि " હે

अतिविस्तृते, लोके, अस्ति सम्भवति किञ्चित् परमाणुपुद्गलमात्रोऽपि प्रदेशः, यत्र खलु अयं जीवो न जातो वा न उत्पन्नो वा, न मृतो वापि भवेत् ? अपि शब्दः संभावनायां प्रयुक्तः, भगवानाह-'गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे' हे गौतम ! नायमर्थः समर्थः, नैतत्संभवति। गौतम स्तत्र कारणं पृच्छति-'से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ-एयंसि णं एमहालयंसि लोगंसि, नत्थि केइ परमाणुपोग्गलमेत्ते वि पएसे, जत्थ णं अयं जीवे ण जाए वा, न मए वावि ?' हे भदन्त ! तत् केनार्थेन-केन प्रकारेण, एवमुच्यते-एतस्मिन् खलु इयन्महालये लोके नास्ति कश्चित् परमाणु-पुद्गलमात्रोऽपि प्रदेशो वर्तते, यत्र खलु अयं जीवो न जातो वा, न मृतो वापि भवेत् ? इति, भगवानाह-'गोयमा ! से जहा नामए-केइपुरिसे अयासयस्स एगं

जीवे न जाए न मएवा वि' हे भदन्त ऐसे इस लोक में-अति विस्तृत लोक में-क्या कोई परमाणुपुद्गलमात्र प्रदेश भी ऐसा है:कि जहां पर यह जीव उत्पन्न न हुआ हो, और मरा भी न हो यहां "अपि" शब्द संभावना में प्रयुक्त हुआ है। उत्तर में प्रभु कहते हैं-'गोयमा' हे गौतम 'णो इणट्ठे समट्ठे' यह अर्थ समर्थ नहीं है, अर्थात् ऐसी बात संभवित नहीं होती है। गौतम. इस विषय में 'से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ, प्रभु से ऐसा पूछते हैं कि हे भदन्त ! ऐसा आप किस कारण से कहते हैं कि इतने बड़े विशाल इस लोक में कोई भी ऐसा प्रदेश नहीं है कि जिसमें जीव उत्पन्न नहीं हुआ है, और मरा नहीं है ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-'गोयमा' हे गौतम! 'से जहा नामए केइ पुरिसे अयासयस्स एगं महं अयावयं करेज्जा' समझो-जैसे कोई एक पुरुष ऐसा विशाल एक अजाव्रज बनावे कि

ભગવન્! આ પ્રકારના આ અતિવિશાળલોકમાં-અતિવિસ્તૃતલોકમાં-એક પરમાણુ પુદ્ગલપ્રમાણ કોઇ પ્રદેશ પણ શું એવો છે કે જ્યાં આ જીવ ઉત્પન્ન થયો ન હોય અને મરણ પામ્યો ન હોય? (અહીં "अपि" પદ સંભાવના અર્થમાં પ્રયુક્ત થયું છે.)

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-"गोयमा !" હે ગૌતમ! णो इणट्ठे समट्ठे" એવી વાત સંભવી શકતી નથી આ પ્રકારના ઉત્તરનું કારણ જાણવા માટે ગૌતમ સ્વામી મહાવીર પ્રભુને પૂછે છે કે-"से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ" હે ભગવન્! આપ શા કારણે એવું કહો છો કે આટલા બધા વિસ્તારવાળા લોકમાં કોઈ પણ એવો પ્રદેશ નથી કે જ્યાં જીવ ઉત્પન્ન થયો ન હોય અને મર્યો ન હોય?

તેનો ઉત્તર આપતા મહાવીર પ્રભુ કહે છે કે-"गोयमा !" હે ગૌતમ! से जहा नामए केइ पुरिसे अयासयस्स एगं महं अयावयं करेज्जा" ધારો કે કોઈ માણસ એક એવો વિશાળ વાડો બનાવે છે કે જેમાં ૧૦૦ બકરીઓ

महं अयावयं करेज्जा' हे गौतम ! तत् यथानाम कश्चित् पुरुषः अजाशताय एकं महान्तम्-विशालम्, अजाव्रजम्-अजावाटकं कुर्यात्, 'से णं तत्थ जहण्णेणं, एक्कं वा, दो वा, तिन्नि वा, उक्कोसेणं अयासहस्सं पक्खिवेज्जा' स खलु पुरुषः तत्र अजाशतस्य वाटके, जघन्येन, एकां वा, अजाम्, द्वे वा अजे, तिस्रो वा अजाः, उत्कृष्टेन अजासहस्रं प्रक्षिपेत्, अत्राजाशतसमावेशयोग्ये व्रजे उत्कृष्टेन अजासहस्रप्रक्षेपणाभिधानं तासामति संकीर्णतयाऽवस्थानसूचनार्थं बोध्यम्। 'ताओ णं तत्थ पउरगोयराओ, पउरपाणियाओ, जहण्णेणं एगाहं वा, वियाहं वा, तियाहं वा, उक्कोसेणं छम्मासे परिवसेज्जा' ताः खलु सहस्रसंख्यकाः अजाः तत्र-अजाशतव्रजे, प्रचुरगोचराः-भक्षणार्थिप्रभूततृणसमूहाः प्रचुरपानीयाः-प्रचुराणि पानियानि पातुं यासां तास्तथाविधाः जघन्येन एकाहं वा, द्व्यहं वा, त्र्यहं वा, उत्कृष्टेन

जिसमें सौ बकरियों को ठहरने के लायक स्थान हो 'से णं तत्थ जहण्णेणं एक्कं वा, दो वा, तिन्नि वा' अब वह उसमें कम से कम एक बकरी, या दो बकरियों या तीन बकरियों को और 'उक्कोसेणं अयासहस्सं पक्खिवेज्जा' अधिक से अधिक एक हजार बकरियों को रखे। यहां सौ बकरियों के ठहरने योग्य स्थान में जो एक हजार बकरियों के ठहरने-रखने की बात कही गई है-वह उनके अतिसंकीर्णरूप से रहने के लिये कही गई है-अर्थात् वहां जगह तो केवल सौ बकरियों के ठहरने के लिये ही है-परन्तु जब उसमें एक हजार बकरियां रहेंगी-तब वे आपस में बहुत ही अधिक घिसपिसरूप में संकीर्ण होकर ही रहेंगी 'ताओ णं तत्थ पउरगोयराओ, पउरपाणियाओ, जहण्णेणं एगाहं वा बियाहं वा तियाहं वा', वहां वह उन बकरियों को चरने के लिये पत्ती-घास आदि की व्यवस्था और पीने को जल की भी व्यवस्था कर

રહી શકે એટલી જગ્યા છે. "सेणं तत्थ जहण्णेणं एक्कं वा, दो वा, तिन्नि वा" હવે તે માણસ તે વાડામાં ઓછામાં ઓછી એક અથવા બે અથવા ત્રણ બકરીઓને "उक्कोसेणं अया सहस्सं पक्खिवेज्जा" અને વધારેમાં વધારે એક હજાર બકરીઓને રાખે છે અહીં સો બકરીઓને રહેવા લાયક સ્થાનમાં હજાર બકરીઓને રાખવાની જે વાત કરવામાં આવી છે તેનો ભાવાર્થ એવો છે કે તે વાડામાં ભેગાશપૂર્વક તો ૧૦૦ બકરીઓ જ રાખી શકાય છે પણ બે બકરીઓ વચ્ચે બિલકુલ ખાલી જગ્યા ન રાખવામાં આવે તો એક હજાર બકરીઓ પણ ત્યાં રહી શકે તેમ છે હા, તેમને સંકડાશ પડે ખરી ધારો કે તે માણસ આ વાડામાં એક હજાર બકરીઓને રાખે છે. "ताओणं तत्थ पउरगोयराओ, पउरपाणियाओ, जहण्णेणं एगाहं वा, तियाहं वा, ત્યાં તે માણસ તે બકરીઓને ખાવાને માટે ઘાસચારાની અને પીવાને માટે પાણીની પણ

षण्मासान् परिवसेयुः, एतावता तासां सहस्रसंख्यकाजानाम् प्रचुरमूत्रपुरीषसम्भवः, बुभुक्षापिपासाविरहेण सुस्थतया अधिककालजीवित्वं फलितम् तथाच वक्तव्य विषयमाह-'अत्थि णं गोयमा ! तस्स अयावयस्स केई परमाणुपोग्गलमेत्ते वि पएसे, जे णं तासिं अयाणं उच्चारेण वा, पासवणेण वा, खेलेण वा, सिंघणएण वा, वंतेण वा, पित्तेण वा, पूएण वा, सुक्केण वा, सोणिएण वा, चम्मेहिं वा, रोमेहिं वा, सिंगेहिं वा, खुरेहिं वा, नहेहिं वा, अणाकंतपुव्वे भवइ ?' हे गौतम ! अस्ति-संभवति खलु तस्य अजाव्रजस्य कश्चिदपि परमाणुपुद्गलमात्रोऽपि प्रदेशो वर्तते ? यः खलु तथाविधः प्रदेशः तासां सहस्रसंख्यकानाम्, उच्चारेण वा-

---

देता है ताकि वें भूखी और प्यासी नहीं रह सकें और आनन्द से उसी बाडे में वे 'जहण्णेणं एगाहं वा, बियाहं वा' कम से कम एक दो तीन दिन तक और 'उक्कोसेणं छम्मासे परिवसेज्जा' अधिक से अधिक छह मास तक रहे। इतने अधिक काल तक वहां निवास करने की इस बात से सूत्रकार यह प्रकट करना चाहते हैं कि जब वे वहां मनमाना खावेंगी और यथेच्छ जलपान करेंगी तब इससे उन हजार बकरियों की वहां अधिक मात्रा में उच्चार और पेशाब होगी तथा स्वस्थ बनीं रहने से वे वहां सुरक्षित जीवन में भी रहेंगी अर्थात् अधिक काल तक जीती रहेंगी 'अत्थि णं गोयमा ! तस्स अयावयस्स केई परमाणुपोग्गलमेत्ते वि पएसे' अब ध्यान देने की बात कि हे गौतम ! क्या उस अजाव्रज का कोई सा परमाणुपुद्गलमात्र भी प्रदेश ऐसा बचा रहेगा 'जे णं' जो इतने समय तक 'तासिं अयाणं'

વ્યવસ્થા કરે છે, કે જેથી તેઓ ભૂખ અને તૃષાને કારણે મરી ન જાય, પણ આનંદથી રહી શકે આ પ્રકારે તે હજાર બકરીઓ તે વાડામાં એક અથવા બે અથવા ત્રણ દિવસ સુધી રહે છે, "उक्कोसेणं छम्मासे परिवसेज्जा" અને વધારેમાં વધારે છ માસ સુધી રહે છે. (આટલા લાંબા સમય સુધી તે બકરીઓને ત્યાં રાખવાની વાત દ્વારા સૂત્રકાર એ વાતનું પ્રતિપાદન કરવા માગે છે કે ત્યાં પુરતા ઘાસચ્યારા અને પાણીની સગવડ મળવાથી તે બકરીઓ ત્યાં અધિક માત્રામાં મળમૂત્ર છોડશે અને તેમના મૂત્ર અને લીંડીઓ વિનાનો તે વાડાનો એક પણ પ્રદેશ રહી જશે નહીં અને તેઓ વાડામાં સુરક્ષિત અને સ્વસ્થ રહેવાને કારણે અધિક કાળ સુધી જીવતી રહેશે.)

મહાવીર સ્વામીનો પ્રશ્ન-"अत्थिणं गोयमा ! तस्स अयावयस्स केई परमाणुपोग्गलमेत्ते वि पएसे" હે ગૌતમ ! શું તે વાડાનો એક પરમાણુ પુદ્ગલ પ્રમાણ કોઈ પ્રદેશ પણ એવો રહી શકશે કે "जे णं उच्चारेणं वा" જે બકરીની

पुरीषेण वा, प्रस्रवणेन वा, मूत्रेण वा, श्लेष्मणा वा-कफविशेषेण वा, सिङ्घाण-केन वा-नासिकामलविशेषेण वा, वान्तेन वा, उद्वमनेन वा, पित्तेन वा, पूयेन वा-विकृतशोणितेन वा, शुक्रेण वा, शोणितेन वा, चर्मभि र्वा, रोमभि र्वा, शृङ्गै र्वा, खुरै र्वा, नखै र्वा, खुराग्रभागै र्वा अनाक्रान्तपूर्वो भवति ? अस्पृष्टपूर्वो भवेत् किमिति प्रश्नः, गौतम आह-'भगवं णो इणट्ठे समट्ठे' हे भगवन् ! नायमर्थः समर्थः-नैतत्संभवति न अनाक्रान्तपूर्वः स्यात् अपितु अनाक्रान्तपूर्व एवेति कदाचित् तत्संभाव्यापि प्रस्तुतार्थस्यासंभावनामाह-'होज्जा वि णं गोयमा ! तस्स अया-यस्स केई परमाणुपोग्गलमेत्ते वि पएसे, जेणं तासिं अयाणं उच्चारेण वा जाव णहेहिं वा अणाकंतपुव्वे' हे गौतम ! भवेदपि कदाचित् खलु तस्य अजात्रजस्य

उन बकरियों की 'उच्चारेणं वा' लेंडियों से 'पासवेणं वा' अथवा उनके पेशाब से, 'खेलेणवा' या उनके श्लेष्म से, 'सिंघाणएण वा' या उनके नाक के मैल से 'वंतेण वा' या उनके वमन से 'पित्तेण वा' या उनके पित्त से 'पूएण वा' विकृत खून से-पीप से, 'सुक्केण' या उनके शुक्र से-वीर्य से 'सोणिएण वा' या उनके खून से 'चम्मेहिं वा' या उनके चमड़े से, 'रोमेहिं वा' या उनके रोमों से, 'सिंगेहिं वा' या उनके सींगों से, 'खुरेहिं वा, या उनके खुरों से 'नहेहिंवा' या उनके नखों से, 'अणाक्कंतपुव्वे भवइ' अना-क्रान्त पूर्व बना रहे ? अर्थात् इन सब में किसी एक से भी वह अछूता-छूआ न गया बना रहे है ?

उत्तर में गौतम ने कहा-'भगवं णो इणट्ठे समट्ठे' हे भदन्त ! यह अर्थ समर्थ नहीं है-ऐसी वहां संभावना नहीं हो सकती, किन्तु ऐसी

લીંડીઓથી અથવા "पासवेणं वा" તેમના મૂત્રથી અથવા "खेलेण वा" તેમના કફ વડે, "सिंघाणएण वा" અથવા તેમના નાકમાંથી નીકળતા ચીકણા પ્રવાહી વડે, "वंतेण वा" અથવા તેમના વમન વડે, 'पित्तेण वा" અથવા તેમના પિત્ત વડે, "पूएण वा" અથવા તેમના પરુ વડે, "सुक्केण वा" અથવા તેમના વીર્ય વડે, "सोणिएण वा" અથવા તેમના લોહી વડે, "चम्मेहिं वा" અથવા તેમની ચામડી વડે, "रोमेहिं वा" અથવા તેમની રુવાંટી વડે, "सिंगेहिं वा" અથવા તેમના શિંગડાઓ વડે, "खुरेहिं वा" અથવા તેમની ખરીઓ વડે, "नहेहिं वा" અથવા તેમના નખ વડે, "अणाक्कंतपुव्वे भवइ" અનાક્રાન્તપૂર્વ હશે ? એટલે કે લીંડીઓ આદિ પદાર્થોમાંથી કોઈ પણ એક દ્વારા પણ સ્પર્શ થયા વિનાનો તેનો એક પણ પ્રદેશ રહેશે ખરો ?

ગૌતમ સ્વામીનો ઉત્તર-"भगवं णो इणट्ठे समट्ठे" હે ભગવન્ ! એવું સંભવી શકે નહીં એટલે કે લીંડીઓ આદિથી જેનો સ્પર્શ ન થયો હોય

कश्चित् परमाणुपुद्गलमात्रोऽपि प्रदेशः, यः खलु तासां सहस्रसंख्याकानाम् अजानाम्, उच्चारेण वा-पुरीषेण वा, यावत्-प्रस्रवणेन वा-मूत्रेण, श्लेष्मणा वा, सिङ्घाणकेन वा, वान्तेन वा, पित्तेन वा, पूयेन वा, शुक्रेण वा, शोणितेन वा, चर्मभि र्वा, रोमभि र्वा, शृङ्गै र्वा, खुरै र्वा, नखै र्वा, अनाक्रान्तपूर्वः-अस्पृष्टपूर्वः कदाचित् संभवेदपि,। किन्तु-नैतत्संभवतीत्याह-'णो चेवणं एयंसि एमहालयंसि लोगंसि लोगस्स सासयं भावं संसारस्सय अणादिभावं, जीवस्सय णिच्चभावं कम्मबहुत्तं, जम्मणमरणबाहुल्लं च पडुच्च नत्थि केइ परमाणुपोग्गलमेत्ते वि पएसे'

ही वहां संभावना होती है कि वहां का कोईसा भी प्रदेश ऐसा नहीं बच सकता है कि जो उनकी लेंडियों आदि से स्पर्शित न हो चुका हो 'होज्जा वि णं गोयमा! तस्स अयावयस्स केई परमाणुपोग्गलमेत्ते वि पएसे' खैर, हे गौतम! यह बात भी कदाचित् स्वीकार कर ली जावे कि उस अजाव्रज का कोई सा परमाणुमात्र भी प्रदेश ऐसा हो सकता है 'जे णं तासिं अयाणं उच्चारेण वा जाव णहेहिं वा अणाक्कंतपुव्वे' जो उन हजार बकरियों की लेंडियों से यावत् उनकी पेशाब से, श्लेष्म से, सिङ्घाणनाक के मैल से, वमन से, पित्त से, शुक्र से, शोणित से, चमड़े से, रोमों से, शृङ्गों से, खुरों से या उनके नखों से या खुरों के अग्रभागों से अनाक्रान्त पूर्व भी हो परन्तु 'णो चेव णं एयंसि' ए महालयंसि लोगंसि लोगस्स य सासयं भावं संसारस्स य अणादिभावं, जीवस्स य णिच्चभावं' इतने बड़े

એવો એક પણ પ્રદેશ ત્યાં બાકી રહ્યો નહીં હોય તેનો એક એક પ્રદેશ લીંડીઓ આદિ વડે સ્પર્શિત થઈ ચુકયો જ હશે "होज्जा वि णं गोयमा! तस्स अयावयस्स केई परमाणुपोग्गमेत्ते वि पएसे" હે ગૌતમ! કદાચ એ વાત પણ સંભવી શકે કે તે બકરીના વાડાનો એક પરમાણુ પુદ્ગલ પ્રમાણ પ્રદેશ એવો રહી જાય, "जेणं तासिं अयाणं उच्चारेण वा जाव णहेहिं वा अणाक्कंतपुव्वे" કે જે તે બકરીની લીંડીઓ વડે તેમના મૂત્ર વડે, તેમના કફ વડે, તેમના નાકના મેલ વડે, વમન વડે, પિત્ત વડે, પરૂ વડે, વીર્ય વડે, લોહી વડે, ચામડી વડે, રુવાંટી વડે, શૃંગો વડે, ખરીઓ વડે અને નખો વડે (ખરી ઓના અગ્રભાગ વડે) અનાક્રાન્તપૂર્વ (સ્પૃષ્ટ થયા વિનાનો) પણ હોય પરન્તુ "णोचेवणं एयंसि एमहालयंसि लोगस्स य सासयं भावं संसारस्स य अणादिभावं, जीवस्स य णिच्चभावं कम्मबहुत्तं, जन्ममरणबाहुल्लं च, पडुच्च नत्थि केई परमाणु पोग्गलमेत्ते वि पएसे, जत्थणं अयं जीवे न जाए वा, न मए वा वि से तेणट्ठेणं, तंचेव

जत्थ णं अयं जीवे न जाए वा, न मए वा वि, नो चैव खलु, एतस्मिन्-पूर्वोक्ते, ईदृग्महालये-अतिविस्तारे, लोके, लोकस्य च शाश्वतं भावं-स्थितिम्, संसारस्य च अनादिभावं, जीवस्य च नित्यभावं, कर्मबहुत्वम्-कर्मणामाधिक्यम्, जन्ममरण-बाहुल्यं च प्रतीत्य-आश्रित्य-लोकस्य शाश्वतभावाद्यपेक्षयेत्यर्थः नास्ति कश्चित् परमाणुपुद्गलमात्रोऽपि प्रदेशः, यत्र खलु लोकप्रदेशे, अयं जीवो न जातो वा नोत्पन्नो वा भवेत्, न मृतो वापि भवेत्। इदमुक्तं भवति अत्र लोकस्य शाश्वत-त्वेऽपि संसारस्य सादित्वे सति नैवं स्यादित्यत स्तस्यानादित्वमुक्तम्, नाना-जीवापेक्षया संसारस्यानादित्वेऽपि विवक्षितजीवस्यानित्यत्वेनोक्तार्थः स्यादतो जीवस्य नित्यत्वमुक्तम्, जीवस्य नित्यत्वेऽपि कर्मणामल्पत्वे तथाविधसंसरणाभावात्

विशाल इस लोक में लोककी शाश्वत स्थिति को, संसार के अनादि-भाव को, जीव के नित्यभाव को, कर्मों की अधिकता को और जन्म-मरण की बहुलता को आश्रित करके-अर्थात्-लोक के शाश्वतभाव आदि की अपेक्षा लेकरके लोक का ऐसा कोई सा भी परमाणुपुद्गलमात्र भी प्रदेश नहीं है, कि जिस लोक प्रदेश में यह जीव जन्मा न हो और मरा भी न हो इस कथन का सारांश ऐसा है कि-लोक की स्थिति को शाश्वत होने पर भी यदि संसार को सादि माना जावे तो जीवकी-जो इस प्रकार से नाना जीवों की अपेक्षा लेकर के लोकाकाश के प्रत्येक प्रदेश पर अनादिरूप से जन्म मरण परंपरा प्रतिपादित की गई है वह नहीं बन सकेगी अतः लोक को शाश्वत मानने पर भी संसार को अनादि कहा गया है तब ही जाकर लोकाकाश के प्रत्येक प्रदेश पर जीवों की अनादिरूप से जन्म मरण परम्परा सध सकती है इस प्रकार

जाव न मए वा वि” લોકની શાશ્વતસ્થિતિ, સંસારનો અનાદિભાવ, જીવનો નિત્યભાવ, કર્મોની અધિકતા અને જન્મમરણની બહુલતા, આ બધાની અપે-ક્ષાએ વિચાર કરવામાં આવે, તો આ અતિ વિશાળ લોકનો એવો કોઈ પરમાણુપુદ્ગલપ્રમાણ પ્રદેશ પણ એવો નથી કે જ્યાં આ જીવ જન્મ્યો ન હોય અને મર્યો ન હોય આ કથનનો ભાવાર્થ નીચે પ્રમાણે છે-

લોકની સ્થિતિ શાશ્વત હોવા છતાં પણ જો સંસારને સાદિ (આદિ યુક્ત) માનવામાં આવે, તો જીવની જે આ પ્રકારે વિવિધ જીવોની અપેક્ષાએ લોકા-કાશના પ્રત્યેક પ્રદેશમાં અનાદિ રૂપે જન્મમરણ પરંપરા પ્રતિપાદિત કરવામાં આવી છે, તે પ્રતિપાદિત કરી શકાત નહીં તેથી લોકને શાશ્વત માનવા છતાં પણ સંસારને અનાદિ કહેવામાં આવ્યો છે આ પ્રકારની પરિસ્થિતિ હોય તો

नोक्तं वस्तुस्यादतः कर्मणां बाहुल्यं प्रतिपादितम्, कर्मणां बाहुल्येऽपि जन्मादेरल्पत्वेनोक्तार्थः स्यादतो जन्मादि बाहुल्यं प्रतिपादितमवसेयम्, प्रकृतमुपसंहरन्नाह-'से तेणट्ठेणं तंचेव जाव न मएवा वि' तत् तेनार्थेन-तेन कारणेन, तदेव यावत् उक्तलोकस्य नास्ति कश्चित् परमाणुपुद्गलमात्रोऽपि प्रदेशः, यत्र खलु अयं जीवो न जातो वा-नोत्पन्नो वा भवेत्, न मृतो वापि भवेदिति भावः ॥सू० १॥

से नाना जीवों की अपेक्षा से संसार में अनादिता होने पर भी यदि विवक्षित जीव को अनित्यमाना जावे तो इस उक्तार्थ की सङ्गति नहीं बनसकती है अतः जीव में नित्यता कही गई है। जीव को नित्य मानने पर भी कर्मों में अल्पता मानी जावे तो तथाविध संसार में जीव का परिभ्रमण नहीं हो सकेगा, अतः उक्तार्थ का कथन बन सकेगा-इसलिये उक्तार्थ का कथन बन जावे, इसी कारण से कर्मों में बाहुल्यता प्रतिपादित की गई है। कर्मों की बहुलता होने पर भी यदि जन्मादि में अल्पता मानी जावे तो उक्तार्थ नहीं बन सकता है-इसलिये यह उक्तार्थ बन जावे-इसीलिये जन्मादि में बहुलता कही गई है, ऐसा जानना चाहिये 'से तेणट्ठेणं तं चेव जाव न मए वा वि' इसी कारण हे गौतम! ऐसा कहा गया है कि इस लोक का कोईसा भी ऐसा परमाणुपुद्गलमात्र प्रदेश भी नहीं है कि जहां पर यह जीव उत्पन्न न हुआ हो और मरा भी न हो ॥सू०१॥

જ લોકાકાશના પ્રત્યેક પ્રદેશમાં જીવોની અનાદિ રૂપે જન્મમરણ પરમ્પરા ઘટિત થઈ શકે આ પ્રકારે વિવિધ જીવોની અપેક્ષાએ સંસારમાં અનાદિતા હોવા છતાં પણ જો વિવક્ષિત જીવને અનિત્ય માનવામાં આવે, તો ઉપર્યુક્ત અર્થની સંગતતા સંભવી શકતી નથી, તેથી જીવમાં નિત્યતા કહી છે જીવને નિત્ય માનવા છતાં જો કર્મોમાં અલ્પતા માનવામાં આવે, તો તથાવિધ સંસારમાં જીવોનું પરિભ્રમણ સંભવી શકશે નહીં, તેથી ઉપર્યુક્ત કથન સંગત બની શકે, તે માટે બહુલતા પ્રતિપાદિત કરાઈ છે કર્મોની બહુલતા હોવા છતાં પણ જન્માદિમાં અલ્પતા માનવામાં આવે, તો ઉપર્યુક્ત કથન અસંગત જાય છે, તે કારણે મેં એવું કહ્યું છે કે આ લોકનો કોઈ પરમાણુપુદ્ગલપ્રમાણ પ્રદેશ પણ એવો નથી કે જ્યાં આ જીવ ઉત્પન્ન થયો ન હોય અને મર્યો પણ ન હોય. ॥સૂ૦૧॥

मूलम्—कइणं भंते ! पुढवीओ पण्णत्ताओ ? गौतम ! सत्त-पुढवीओ पण्णत्ताओ, जहा पढमसए पंचम उद्देसए तहेव आवासा ठावेयव्वा, जाव अणुत्तरविमाणे त्ति जाव अपराजिए सव्वट्ठसिद्धे, अयं णं भंते ! जाव इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए, तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु एगमेगंसि निरयावासंसि पुढ-विकाइयत्ताए जाव वणस्सइकाइयत्ताए, नरगत्ताए, नेरइय-त्ताए उववन्नपुव्वे ? हंता, गोयमा ! असइं अदुवा, अणंतखुत्तो, सव्व जीवा वि णं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु तं चेव जाव अणंतखुत्तो, अयं णं भंते! जीवे सक्करप्पभाए पुढवीए पणवीसाए, एवं जहा रयणप्पभाए तहेव दो आलावगा भाणियव्वा, एवं जाव धूमप्पभाए, अयं णं भंते ! जीवे तमाए पुढवीए पंचूणे निरयावाससयसहस्से एगमेगंसि सेसं तं चेव, अयं णं भंते! जीवे अहे सत्तमाए पुढवीए पंचसु अणुत्तरेसु महतिमहालएसु महानिरएसु एग-मेगंसि निरयावासंसि सेसं जहा रयणप्पभाए, अयं णं भंते ! जीवे चोसट्ठीए असुरकुमारावाससयसहस्सेसु एगमेगंसि असु-रकुमारावासंसि पुढवीकाइयत्ताए जाव वणस्सइकाइयत्ताए, देवत्ताए, देवीत्ताए, आसणसयणभंडमत्तोवगरणत्ताए उव-वन्नपुव्वे ? हंता, गोयमा ! जाव अणंतखुत्तो, सव्वजीवा वि णं भंते ! एवं चेव, एवं जाव थणियकुमारेसु, नाणत्तं आवासेसु, आवासा पुव्वभणिया, अयं णं भंते ! जीवे असंखेज्जेसु पुढवि-

काइयावाससयसहस्सेसु एगमेगंसि, पुढविकाइयावासंसि पुढविकाइयत्ताए जाव वणस्सइकाइयत्ताए उववन्नपुव्वे? हंता, गोयमा! जाव अणंतखुत्तो, एवं सव्वजीवा वि, एवं जाव वणस्सइकाइएसु। अयं णं भंते! जीवे असंखेज्जेसु बेंदियावाससय-सहस्सेसु एगमेगंसि बेंदियावासंसि, पुढविकाइयत्ताए जाव वणस्सइकाइयत्ताए बेइंदियत्ताए उववन्नपुव्वे! हंता, गोयमा! जाव अणंतखुत्तो, सव्वजीवा वि णं एवं चेव, एवं जाव मणुस्सेसु, नवरं तेंदिएसु जाव वणस्सइकाइयत्ताए तेंदियत्ताए, चउरिंदिएसु चउरिंदियत्ताए, पंचिंदियतिरिक्खजोणिएसु पंचिंदियतिरिक्खजोणियत्ताए, मणुस्सेसु मणुस्सत्ताए, सेसं जहा बेंदियाणं। वाणमंतरजोइसिय सोहम्मीसाणाण य जहा असुरकुमाराणं। अयं णं भंते! जीवे सणंकुमारे कप्पे बारससु विमाणावाससयसहस्सेसु एगमेगंसि विमाणावासंसि पुढवि काइयत्ताए सेसं जहा, असुरकुमाराणं जाव अणंतखुत्तो, नो चेवणं देवित्ताए, एवं सव्वजीवावि, एवं जाव आणयपाणएसु, एवं आरणच्चुएसु वि। अयं णं भंते! जीवे तिसु वि अट्ठारसुत्तरेसु गेविज्जविमाणावाससएसु एवं चेव। अयं णं भंते! जीवे पंचसु अणुत्तरविमाणेसु एगमेगंसि अणुत्तरविमाणंसि पुढवि तहेव जाव अणंतखुत्तो, णो चेव णं देवत्ताए वा, देवित्ताए वा, एवं सव्वजीवा वि। अयं णं भंते! जीवे सव्वजीवाणं माइत्ताए पिइत्ताए, भाइत्ताए भगिणित्ताए, भज्जत्ताए, पुत्तत्ताए,

धूयत्ताए, सुण्हत्ताए उववन्नपुव्वे? हंता, गोयमा! असइं अदुवा अणंतखुत्तो। सव्वजीवावि णं भंते! इमस्स जीवस्स माइत्ताए जाव उववन्नपुव्वे? हंता, गोयमा! जाव अणंतखुत्तो। अयं णं भंते! जीवे सव्वजीवाणं अरित्ताए वेरियत्ताए घायगत्ताए वहगत्ताए, पडिणीयत्ताए, पच्चामित्तत्ताए उववन्नपुव्वे! हंता, गोयमा! जाव अणंतखुत्तो। सव्वजीवा वि णं भंते! एवं चेव। अयं णं भंते! जीवे सव्वजीवाणं रायत्ताए जुवरायत्ताए, जाव सत्थवाहत्ताए उववन्नपुव्वे? हंता, गोयमा! असइं अदुवा अणंतखुत्तो, सव्वजीवाणं एवं चेव। अयं णं भंते! जीवे सव्वजीवाणं दासत्ताए पेसत्ताए भयगत्ताए, भाइल्लगत्ताए भोगपुरिसत्ताए, सीसत्ताए वेसत्ताए, उववन्नपुव्वे? हंता, गोयमा! जाव अणंतखुत्तो, एवं सव्वजीवा वि अणंतखुत्तो! सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति जाव विहरइ॥सू० २॥

बारसमे सए सत्तमो उद्देसो समत्तो॥१२-७॥

छाया—कति खलु भदन्त! पृथिव्यः प्रज्ञप्ताः? गौतम! सप्त पृथिव्यः प्रज्ञप्ताः, यथा प्रथमशतके पञ्चमोद्देशके तथैव आवासाः स्थापयितव्याः यावत् अनुत्तर विमान इतियावत्-अपराजितः सर्वार्थसिद्धः। अयं खलु भदन्त! जीवः अस्यां रत्नप्रभायां पृथिव्यां त्रिंशति निरयावासशतसहस्रेषु एकैकस्मिन् निरयावासेषु पृथिवीकायिकतया यावत् वनस्पतिकायिकतया, नरकतया, नैरयिकतया, उत्पन्नपूर्वः? हन्त गौतम! असकृद्, अथवा अनन्तकृत्वः। सर्वजीवा अपि भदन्त! अस्यां रत्नप्रभायां पृथिव्यां त्रिंशति निरयावासशतसहस्रेषु तदेव यावत्-अनन्तकृत्वः। अयं खलु भदन्त! जीवः शर्कराप्रभायां पृथिव्यां, पञ्चविंशतौ, एवं यथा रत्नप्रभायां तथैव द्वौ आलापकौ भणितव्यौ, एवं यावत् धूमप्रभायाम्, अयं खलु भदन्त! जीवस्तमायां पृथिव्यां पञ्चोने निरयावासशतसहस्रे एकैकस्मिन् शेषं तदेव। अयं खलु भदन्त! जीवः, अधः सप्तम्यां पृथिव्याम्, पञ्चसु अनुत्तरेषु महातिमहालयेषु महानिरयेषु एकैकस्मिन् निरयावासे शेषं यथा रत्नप्रभायाम्। अयं खलु भदन्त! जीवः चतुष्षष्ट्याम् असुरकुमारावासशतसहस्रेषु एकैकस्मिन् असुरकुमारावासे-

पृथिवीकायिकतया यावत्, वनस्पतिकायिकतया, देवत्वेन, देवीत्वेन, आसन शयनभाण्डामत्रोपकरणतया उत्पन्नपूर्वः? हन्त, गौतम! यावत्-अनन्त कृत्वः। सर्वजीवा अपि खलु भदन्त! एवमेव, एवं यावत्-स्तनितकुमारेषु, नानात्वम् आवासेषु, आवासाः पूर्व भणिताः। अयं खलु भदन्त! जीवः असंख्येयेषु पृथिवीकायिकावासशतसहस्रेषु एकैकस्मिन् पृथिवीकायिकावासे पृथिवीकायिकतया यावत् वनस्पतिकायिकतया उत्पन्नपूर्वः? हन्त, गौतम! यावत् अनन्तकृत्वः, एवं सर्वजीवा अपि, एवं यावत्-वनस्पतिकायिकेषु, अयं खलु भदन्त! जीवः असंख्येयेषु द्वीन्द्रियावासशतसहस्रेषु एकैकस्मिन् द्वीन्द्रियावासे पृथिवीकायिकतया यावत् वनस्पतिकायिकतया द्वीन्द्रियतया उत्पन्नपूर्वः, हन्त, गौतम! यावत् अनन्तकृत्वः। सर्वे जीवा अपि खलु एवमेव, एवं यावत् मनुष्येषु, नवर त्रीन्द्रियेषु यावत् वनस्पतिकायिकतया त्रीन्द्रियतया, चतुरिन्द्रियेषु चतुरिन्द्रियतया, पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकेषु पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकतया, मनुष्येषु मनुष्यतया, शेषं यथा द्वीन्द्रियाणाम्, वानव्यन्तरज्योतिषिक सौधर्मेशानानां च यथा असुरकुमाराणाम्, अयं खलु भदन्त! जीवः सनत्कुमारे कल्पे द्वादशसु विमानावासशतसहस्रेषु एकैकस्मिन् वैमानिकावासे पृथिवीकायिकतया, शेषं यथा असुरकुमाराणां, यावत्-अनन्तकृत्वः, नो चैव खलु देवीत्वेन, एवं सर्वजीवाः अपि, एवं यावत्-आनतप्राणतेषु, एवम् आरण-अच्युतेष्वपि। अयं खलु भदन्त! जीवस्त्रिष्वपि अष्टादशोत्तरेषु ग्रैवेयकविमानावासशतेषु एवमेव। अयं खलु भदन्त! जीवः पञ्चसु अनुत्तरविमानेषु एकैकस्मिन् अनुत्तरविमाने पृथिवी तथैव यावत् अनन्तकृत्वः, नोचैव खलु देवतया वा, देवीतया वा, एवं सर्वजीवा अपि। अयं खलु भदन्त! जीवः सर्वजीवानां मातृतया पितृतया, भ्रातृतया, भगिनीतया, भार्यातया, पुत्रतया, दुहितृतया, स्नुषातया उत्पन्नपूर्वः? हन्त, गौतम! असकृत्, अथवा अनन्तकृत्वः। सर्वजीवा अपि खलु भदन्त! अस्य जीवस्य मातृतया यावत्-उत्पन्नपूर्वः? हन्त, गौतम! यावत्-अनन्तकृत्वः। अयं खलु भदन्त! जीवः सर्वजीवानाम् अरितया, वैरिकतया, घातकतया, व्यधकतया, प्रत्यनीकतया, प्रत्यमित्रतया उत्पन्नपूर्वः? हंत, गौतम! यावत् अनन्तकृत्वः, सर्व जीवानां अपि खलु भदन्त! एव मेव। अयं खलु भदन्त! जीवः सर्वजीवानां राजतया युवराजतया यावत्-सार्थवाहतया, उत्पन्नपूर्वः? हन्त, गौतम! असकृत्, यावत्-अनन्तकृत्वः सर्वजीवानाम् एवंचैव, अयं खलु भदन्त! जीवः सर्वजीवानां दासतया, प्रेष्यतया, भृतकतया, भागिकतया, भोगपुरुषतया, शिष्यतया द्वेष्यतया, उत्पन्नपूर्वः? हन्त, गौतम! यावत्-अनन्तकृत्वः, एवं सर्वजीवा अपि, अनन्तकृत्वः तदेवं भदन्त! तदेवं भदन्त! इति यावद् विहरति ॥सू०२॥

द्वादशशतके सप्तमोद्देशः समाप्तः ॥

टीका—अथ प्रकारान्तरेण लोकस्वरूपं प्ररूपयितुमाह-'कइणं भंते!' इत्यादि, 'कइणं भंते! पुढवीओ पण्णत्ताओ' हे भदन्त! कति खलु पृथिव्यः प्रज्ञप्ताः? भगवानाह-'गोयमा! सत्तपुढवीओ पण्णत्ताओ' हे गौतम! सप्त पृथिव्यः प्रज्ञप्ताः, 'जहा पढमसए पंचमउद्देसए तहेव आवासा ठावेयव्वा जाव अणुत्तरविमाणेत्ति जाव अपराजिए सव्वट्ठसिद्धे' यथा प्रथमशतके पञ्चमोद्देशके आवासाः स्थापिताः, तथैव अत्रापि आवासाः स्थापयितव्याः- वक्तव्याः यावत्—भवनपति — वानव्यन्तर-ज्योतिषिकवैमानिकनवग्रैवेयकपञ्चानुत्तरविमान यावत्-विजयवैजयन्तजयन्ता-पराजितसर्वार्थसिद्धपर्यन्तमित्यर्थः, गौतमः पृच्छति-"अयं णं भंते! जीवे इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु एगमेगंसि निरयावासंसि, पुढविकाइयत्ताए जाव वणस्सइ-

---

जीवोत्पत्तिवक्तव्यता—

'कइ णं भंते! पुढवीओ पण्णत्ताओ' इत्यादि।

टीकार्थ-सूत्रकार ने इस सूत्र द्वारा प्रकारान्तर से लोक के स्वरूप की प्ररूपणा की है। इसमें गौतमने प्रभु से ऐसा पूछा है कि-'कइणं भंते! पुढवीओ पण्णत्ताओ' हे भदन्त! पृथिवियां कितनी कही गई है? उत्तर में प्रभुने कहा-'गोयमा! सत्त पुढवीओ पण्णत्ताओ' हे गौतम! पृथिवियां सात कही गई हैं। 'जहा पढमसए पंचमउद्देसए तहेव आवासा ठावेयव्वा' जिस प्रकार से प्रथमशतक के पंचम उद्देशक में भवनपति, वानव्यन्तर, ज्योतिष्क, वैमानिक, नवग्रैवेयक, पंच अनुत्तर विमान-विजय, वैजयन्त, जयन्त, अपराजित एवं सर्वार्थसिद्ध तक आवास कहे गये हैं उसी प्रकार से यहां पर भी आवास कहना चाहिये।

—જીવોત્પત્તિ વિષયક વક્તવ્યતા—

"कइ णं भंते! पुढवीओ पण्णत्ताओ" ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ-સૂત્રકારે આ સૂત્ર દ્વારા લોકના સ્વરૂપની અન્ય પ્રકારે પ્રરૂપણા કરી છે ગૌતમ સ્વામી આ વિષયને અનુલક્ષીને મહાવીર પ્રભુને એવો પ્રશ્ન પૂછે છે કે-"कइणं भंते! पुढवीओ पण्णत्ताओ?" હે ભગવન્! પૃથ્વીઓ કેટલી કહી છે?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-"गोयमा! सत्त पुढवीओ पण्णत्ताओ" હે ગૌતમ! પૃથ્વીઓ સાત કહી છે. "जहा पढमसए पंचम उद्देसए तहेव आवासा ठवियव्वा" પહેલા શતકના પાંચમાં ઉદ્દેશકમાં જે પ્રકારે રત્નપ્રભા આદિ નરકાવાસોનું, ભવનપતિ, વાનવ્યન્તર, જ્યોતિષિક, વૈમાનિક, નવગ્રૈવેયક, અને વિજય-વૈજયન્ત-જયન્ત-અપરાજિત અને સર્વાર્થસિદ્ધ, આ પાંચ અનુત્તર વિમાનો પર્યન્તના આવાસોનું વર્ણન કરવામાં આવ્યું છે, એજ પ્રમાણે અહીં પણ તે આવાસોનું કથન કરવું જોઇએ.

काइयत्ताए नरगत्ताए नेरइयत्ताए उववन्न पुव्वे ?" हे भदन्त ! अयं खलु जीवः अस्यां रत्नप्रभायाम्, पृथिव्याम् त्रिंशति-त्रिंशत्संख्यकेषु निरयावासशतसहस्रेषु-त्रिंशल्लक्षनरकावासेषु च इत्यर्थः। एकैकस्मिन्, निरयावासे-नरकावासे, पृथिवीकायिकतया यावत्-अप्कायिकतया तेजःकायिकतया, वायुकायिकतया, वनस्पतिकायिकतया नरकतया-नरकावासपृथिवीकायिकतया, नैरयिकतया, उत्पन्नपूर्वः ? भगवानाह-'हंता, गोयमा ! असइं, अदुवा अणंतखुत्तो' हे गौतम ! हन्त, सत्यम्, असकृत्-अनेकवारम्, अथवा अनन्तकृत्वः-अनन्तवारम्, जीवः रत्नप्रभापृथिव्यां तस्यांश्च त्रिंशल्लक्षनरकावासेषु एकैकस्मिन् नरकावासे पृथिवीकायिकादित्वेन पूर्वं

अब गौतम प्रभु से ऐसा पूछते हैं-'अयं णं भंते ! जीवे इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु एगमेगंसि निरयावासंसि पुढविकाइयत्ताए जाव वणस्सइकाइयत्ताए नरगत्ताए, नेरइयत्ताए उववन्नपुव्वे' हे भदन्त ! यह जीव इस रत्नप्रभापृथिवी में और उसके ३० लाख नरकावासों में से एक एक नरकावास में पृथिवीकायिकरूप से यावत्-अप्कायिकरूपसे, तेजः कायिकरूप से, वनस्पतिकायिकरूप से, नरकावास पृथिवीकायिक रूप से एवं नैरयिक रूप से क्या पहिले उत्पन्न हो चुका है ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-'हंता, गोयमा ! असइं अदुवा अणंतखुत्तो' हां, गौतम ! अनेक वार अथवा अनंतवार यह जीव रत्नप्रभा पृथिवी में, और उसके ३० लाख नरकावासों में से एक एक नरकावास में पृथिवीकायिक आदि रूप से उत्पन्न हो चुका है।

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-" अयं णं भंते ! जीवे इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु एगमेगंसि निरयावासंसि पुढविकाइयत्ताए जाव वणस्सइकाइयत्ताए नरगत्ताए, उववन्नपुव्वे ?" હે ભગવન્ ! આ જીવ આ રત્નપ્રભા પૃથ્વીમાં અને તેના ૩૦ લાખ નરકાવાસોમાંના પ્રત્યેક નરકાવાસમાં પૃથ્વીકાયિકરૂપે, અપ્કાયિકરૂપે, તેજસ્કાયિકરૂપે, વાયુકાયિકરૂપે, વનસ્પતિકાયિકરૂપે, નરકાવાસ પૃથ્વીકાયિકરૂપે અને નારક રૂપે શું પૂર્વે ઉત્પન્ન થઈ ચુકયો છે?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-" हंता, गोयमा ! असइं अदुवा अणंतखुत्तो " હા ગૌતમ ! આ જીવ અનેક વાર અથવા અનંત વાર રત્નપ્રભા પૃથ્વીમાં અને તેના ૩૦ લાખ નરકાવાસોમાંના પ્રત્યેક નરકાવાસોમાં પૃથ્વીકાયિક આદિ રૂપે પહેલાં ઉત્પન્ન થઇ ચુકયો છે.

मुत्पन्नो वर्तते। गौतमः पृच्छति-'सव्व जीवा वि णं भंते! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए, तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु' हे भदन्त! सर्वजीवा अपि खलु अस्यां रत्नप्रभायां पृथिव्यां, त्रिंशत् निरयावासशतसहस्रेषु-त्रिंशल्लक्षनिरयावासेषु एकैकस्मिन् निरयावासे पृथिवीकायिकादितया किम् उत्पन्नपूर्वाः? पूर्वमुत्पन्नाः वर्तन्ते? भगवानाह-'तं चेव जाव अणंतखुत्तो' हे गौतम! तदेव-पूर्वोक्तरीत्यैव, यावत् सर्वजीवा अपि त्रिंशल्लक्षनिरयावासेषु एकैकस्मिन् निरयावासे पृथिवीकायिकादितया असकृत्-अनेकवारम् अथवा अनन्तकृत्वः-अनन्तवारम् उत्पन्नपूर्वाः-पूर्वमुत्पन्नाः सन्ति। गौतमः पृच्छति-'अयं णं भंते? जीवे सक्करप्पभाए पुढवीए पणवीसाए एवं जहा रयणप्पभाए तहेव दो आलावगा भाणियव्वा, एवं जाव धूमप्पभाए' हे भदन्त! अयं खलु जीवः शर्करा-

---

अब गौतमस्वामी प्रभु से ऐसा पूछते हैं-'सव्वजीवा वि णं भंते! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए, तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु०, हे भदन्त! सबजीव भी क्या इस रत्नप्रभा पृथिवी में और उसके तीस लाख नरकावासों में से एक एक नरकावास में पृथिवीकायिक आदि रूप से पहिले उत्पन्न हो चुके हैं? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-'तं चेव जाव अणंतखुत्तो' हे गौतम! सब जीव भी रत्नप्रभा पृथिवी में और उसके ३० तीस लाख नरकावासो में से एक एक नरकावास में पृथिवीकायिक आदिरूपसे अनेकवार अथवा अनन्तवार पहिले उत्पन्न हो चुके हैं। अब गौतम प्रभुसे ऐसा पूछते हैं-'अयं णं भंते! जीवे सक्करप्पभाए पुढवीए पणवीसाए एवं जहा रयणप्पभाए तहेव दो आलावगा भाणियव्वा' एवं जाव धूमप्पभाए' हे भदन्त! क्या यह जीव शर्कराप्रभा पृथिवी में और

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-"सव्व जीवा वि णं भंते! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए, तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु" હે ભગવન્! સઘળા જીવો પણ શું આ રત્નપ્રભા પૃથ્વીમાં અને તેના ૩૦ લાખ નરકાવાસોમાંના પ્રત્યેક નરકાવાસમાં પૃથ્વીકાયિક આદિ રૂપે પહેલાં ઉત્પન્ન થઈ ચુકયા છે?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-"तंचेव जाव अणंतखुत्तो" હા, ગૌતમ! સમસ્ત જીવો પણ આ રત્નપ્રભા પૃથ્વીમાં અને તેના ત્રીસ લાખ નરકાવાસોમાં પ્રત્યેક નરકાવાસમાં પૃથ્વીકાયિક આદિ રૂપે પૂર્વે અનેક-વાર અથવા અનંત વાર ઉત્પન્ન થઈ ચુકયા છે.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-"अयं णं भंते! जीवे सक्करप्पभाए पुढवीए पणवीसाए एव जहा रयणप्पभाए, तहेव दो आलावगा भाणियव्वा एवं जाव धूमप्प-

प्रभायां पृथिव्यां पञ्चविंशतौ निरयावासशतसहस्रेषु-पञ्चविंशति लक्ष निरयावासेषु एकैकस्मिन् निरयावासे पृथिवीकायिकादितया किम् उत्पन्नपूर्वः? पूर्वमुत्पन्नो वर्तते किम्? भगवानाह-एवं-पूर्वोक्तरीत्या, यथा रत्नप्रभायां पृथिव्यां द्वौ आलापकौ भणितौ, तथैव शर्कराप्रभायामपि पृथिव्यां द्वौ आलापकौ एकत्वबहुत्वविशिष्टजीवविषयकौ द्वौ अभिलापकौ भणितव्यौ, तथा च एको जीव· सर्वजीवाश्च शर्कराप्रभायामपि पञ्चविंशतिलक्षनिरयावासे-पृथिवीकायिकादितया असकृत्-अनेकशः, अनन्तकृत्वः-अनन्तवारांश्च उपपन्न-पूर्वाः- पूर्वमुत्पन्नाः सन्ति, एवं-रीत्या यावत् वालुकाप्रभायाम्, पङ्कप्रभायाम् धूमप्रभायां च पृथिव्याम्, एको जीवः, सर्वजीवाश्च पञ्चदश दश त्रिलक्षनिरया-वासेषु एकैकस्मिन् निरयावासे पृथिवीकायिकादितया असकृत्-अनेकवारम्, अनन्तकृत्वः-अनन्तवारं च उपपन्नपूर्वाः-पूर्वमुत्पन्नाः सन्ति! गौतमः पृच्छति-

---

उसके २५ लाख नरकावासों में से प्रत्येक नरकावास में पृथिवीकायि-कादि रूप से पहिले उत्पन्न हो चुका है? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-हे गौतम! पूर्वोक्त रीति से जैसे दो आलापक रत्नप्रभा पृथिवी में कहे गये हैं-उसी प्रकार से शर्करा पृथिवी में भी दो आलापक कहना चाहिये तथा एक जीव और सर्वजीव शर्कराप्रभा पृथिवी में भी और उसके २५ लाख नरकावासों में से एक एक नरकावास में भी पृथिवीकायिक आदि रूप से अनेकवार अथवा अनन्तवार पहिले उत्पन्न हो चुके हैं। इसी प्रकार से एक जीव और अनेक जीव भी वालुकाप्रभा में, पङ्कप्रभा में, धूमप्रभा में, और उनके क्रमशः १५ लाख, दश लाख और तीन लाख निरयावासों में से एक एक निरयावास में पृथिवीकायिक आदिरूप से अनेकवार अथवा अनन्तवार उत्पन्न हो चुके हैं।

भाए" હે ભગવન્! શું આ જીવ, શર્કરાપ્રભા પૃથ્વીમાં અને તેના ૨૫ લાખ નરકાવાસોમાંના પ્રત્યેક નરકાવાસમાં પૃથ્વીકાયિક આદિ રૂપે પહેલાં ઉત્પન્ન થઈ ચુકયો છે? આ પ્રશ્નનો ઉત્તર આપતા મહાવીર પ્રભુ કહે છે કે-હે ગૌતમ! રત્નપ્રભા પૃથ્વીમાં જેવા બે આલાપકો કહેવામાં આવ્યા છે, એવાં જ બે આલાપકો શર્કરાપ્રભા પૃથ્વીમાં પણ કહેવા જોઇએ જેમ કે-એક જીવ અથવા સમસ્ત જીવો શર્કરાપ્રભા પૃથ્વીમાં અને તેના પચીશ લાખ નરકાવા-સોમાંના પ્રત્યેક નરકાવાસમાં પૃથ્વીકાયિક આદિ રૂપે અનેક વાર અથવા અનંત વાર પૂર્વે ઉત્પન્ન થઈ ચુકયા છે. એજ પ્રમાણે એક જીવ અને સમસ્ત જીવો પણ વાલુકાપ્રભામાં, પંકપ્રભામાં, ધૂમપ્રભામાં અને તેમના ક્રમશઃ પંદર લાખ, દસ લાખ અને ત્રણ લાખ નરકાવાસોમાંના પ્રત્યેક નરકાવાસમાં પૃથ્વીકાયિક આદિ રૂપે અનેક વાર અથવા અનંત વાર ઉત્પન્ન થઈ ચુકયા છે.

'अयं णं भंते! जीवे तमाए पुढवीए पंचूणे निरयावाससयसहस्से एगमेगंसि०' हे भदन्त! अयं खलु जीवः तमायां पृथिव्यां पञ्चोने निरयावासशतसहस्रे-पञ्चन्यूनैकलक्षनिरयावासेषु एकैकस्मिन् निरयावासे पृथिवीकायिकादितया किम् उत्पन्नपूर्वः? भगवानाह-'सेसं तं चेव' हे गौतम! शेषं तदेव-पूर्वोक्तरीत्यैव, एको जीवः, सर्वे जीवाश्च तमःप्रभायां पृथिव्यां पञ्चन्यूनलक्षैकनिरयावासेषु एकैकस्मिन् निरयावासे असकृत्-अनेकवारम्, अथवा अनन्तकृत्वः-अनेकवारम्, उत्पन्नपूर्वाः-पूर्वमुत्पन्ना वर्तन्ते, 'अयं णं भंते! जीवे अहे सत्तमाए पुढवीए पंचसु अणुत्तरेसु-महतिमहालएसु महानिरएसु एगमेगंसि निरयावासंसि०' हे भदन्त! अयं खलु जीवः अधः सप्तम्यां पृथिव्याम् पञ्चसु अनुत्तरेषु, महातिमहालयेषु-अतिविशालेषु, महानिरयेषु एकैकस्मिन् निरयावासे पृथिवीकायिकादितया किम्

अब गौतमस्वामी प्रभु से ऐसा पूछते हैं-'अयं णं भंते! जीवे तमाए पुढवीए पंचूणे निरयावाससयसहस्से एगमेगंसि०' हे भदन्त! यहजीव तमा पृथिवी में और उसके पांच कम एक लाख निरयावासों में से एक एक निरयावास में क्या पृथिवीकायिक आदि रूप से पहिले उत्पन्न हो चुका है? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-'सेसं तं चेव' हे गौतम एक जीव अथवा अनेक जीव तमःप्रभा पृथिवी में और उसके पांच कम एक लाख निरयावासों में से प्रत्येक निरयावास में अनेकवार अथवा अनन्तवार पहिले उत्पन्न हो चुके हैं।

अब गौतम स्वामी प्रभु से ऐसा पूछते हैं-'अयं णं भंते! जीवे अहे सत्तमाए पुढवीए पंचसु अणुत्तरेसु महइमहालएसु महानिरएसु एगमेगंसि निरयावासंसि०' हे भदन्त! यह जीव अधः सप्तमी पृथिवी में और उसके पांच अनुत्तर अति विशाल महानिरयों में से एक एक निरयावास

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-" अयं णं भंते! जीवे तमाए पुढवीए पंचूणे निरयावाससयसहस्से एगमेगंसि " હે ભગવન્! આ જીવ તમઃપ્રભા પૃથ્વીમાં અને તેના ૯૯૯૯૫ નરકાવાસોમાંના પ્રત્યેક નરકાવાસમાં શું પૂર્વે પૃથ્વીકાયિક આદિ રૂપે ઉત્પન્ન થઈ ચુકયો છે?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-" सेसं तं चेव " હા, ગૌતમ! એક જીવ અને સમસ્ત જીવો પણ તમઃપ્રભા પૃથ્વીમાં અને તેના ૯૯૯૯૫ નરકાવાસોમાંના પ્રત્યેક નરકાવાસમાં પહેલાં અનેક વાર અથવા અનંતવાર ઉત્પન્ન થઈ ચુકયા છે.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-" अयं णं भंते! जीवे अहे सत्तमाए पुढवीए पंचसु अणुत्तरेसु महइमहालएसु महानिरएसु एगमेगंसि निरयावासंसि० " હે ભગવન્! આ જીવ અધઃસપ્તમી પૃથ્વીમાં અને તેના પાંચ અનુત્તર અને અતિવિશાળ નિરયાવાસોમાંના પ્રત્યેક નિરયાવાસમાં શું પૂર્વે પૃથ્વીકાયિક રૂપે ઉત્પન્ન થઈ ચુકયો છે?

उत्पन्नपूर्वः-पूर्वमुत्पन्नो वर्तते? भगवानाह-' सेसं जहा-रयणप्पभाए ' हे गौतम! शेषं यथा रत्नप्रभायां पृथिव्यां प्रतिपादितम् तथैव अधःसप्तम्यामपि पृथिव्यां प्रतिपत्तव्यम्, तथा च एको जीवः सर्वजीवा श्च अधःसप्तम्यामपि पञ्चानुत्तरेषु महानिरयेषु एकैकस्मिन् निरयावासे पृथिवीकायिकादितया असकृत्-अनेकवारम् अनन्तकृत्वः अनेकवारं वा, उत्पन्नपूर्वाः-पूर्वमुत्पन्नाः सन्ति इति भावः। गौतमः पृच्छति-' अयं णं भंते ? जीवे चोसट्ठीए असुरकुमारावाससयसहस्सेसु एगमेगंसि असुर कुमारावासंसि पुढविकाइयत्ताए जाव वणस्सइ काइयत्ताए, देवत्ताए, देवीत्ताए, आसणसयणभंडमत्तोवगरणत्ताए उववन्नपुव्वे ' ? हे भदन्त ! अयं खलु जीवः चतुः षष्टौ असुरकुमारावासशतसहस्रेषु-चतुष्षष्टि लक्षासुरकुमारावासेषु, एकैकस्मिन् असुरकुमारावासे, पृथिवीकायि-

---

में क्या पहिले उत्पन्न हो चुका है? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-हे गौतम! जैसा कथन इस विषय को लेकर रत्नप्रभा पृथिवी में किया गया है-वैसा ही कथन यहां पर भी इस विषय के सम्बन्ध में जानना चाहिये तथा च-एक जीव और सर्वजीव सप्तमी पृथिवी में और पांच अनुत्तर महा-निरयों में से एक एक निरयावास में पृथिवीकायिकादि रूप से अनेकवार अथवा अनन्तवार पहिले उत्पन्न हो चुके हैं।

अब गौतमस्वामी प्रभु से ऐसा पूछते हैं-'अयं णं भंते! जीवे चोसट्ठीए असुरकुमारावाससयसहस्सेसु एगमेगंसि असुरकुमारावासंसि पुढीविकाइयत्ताए जाव वणस्सइकाइयत्ताए देवत्ताए देवित्ताए आसणसयणभंडमत्तोवगरणत्ताए उववन्नपुव्वे' हे भदन्त! यह जीव चौसठ लाख असुरकुमारावासों में से एक एक असुरकुमारावास में पृथिवी

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-હા, ગૌતમ! એક જીવ અને સમસ્ત જીવ સાતમી તમસ્તમપ્રભા નામની પૃથ્વીમાં અને તેના પાંચ અનુત્તર અતિવિશાળ નિરયાવાસોમાંના પ્રત્યેક નિરયાવાસમાં પૂર્વે પૃથ્વીકાયિક આદિ રૂપે અનેકવાર અથવા અનંત વાર ઉત્પન્ન થઈ ચુકયા છે. (આ રીતે સાતે પૃથ્વીઓમાં પૃથ્વીકાયિક આદિ રૂપે એક જીવ અથવા સમસ્ત જીવોની પૂર્વોત્પત્તિનું કથન એક સરખું સમજવું.)

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-" अयं णं भंते ! जीवे चोसट्ठीए असुरकुमारावाससयसहस्सेसु एगमेगंसि असुरकुमारावासंसि पुढविकाइयत्ताए, जाव वणस्सइकाइयत्ताए, देवत्ताए, देवित्ताए आसणसयणभंडमत्तोवगरणत्ताए उववन्नपुव्वे?" હે ભગવન્! આ જીવ, ચોસઠ લાખ અસુરકુમારાવાસોમાંના પ્રત્યેક અસુરકુમારાવાસમાં શું

कतया, यावत्-अप्कायिकतया, तेजःकायिकतया, वायुकायिकतया, वनस्पतिकायिकतया, देवत्वेन, देवीत्वेन, आसनशयनभाण्डामत्रोपकरणतया किम् उत्पन्नपूर्वः-पूर्वमुत्पन्नो वर्तते ? भगवानाह-' हंता, गोयमा जाव अणंतखुत्तो ' हे गौतम ! हन्त सत्यम् यावत्-एको जीवः चतुःषष्टिलक्षासुरकुमारावासेषु एकैकस्मिन् असुरकुमारावासे पृथिवीकायिकादितया असकृत्-अनेकवारम्, अथवा अनन्तकृत्वः-अनन्तवारम् उत्पन्नपूर्वः-पूर्वमुत्पन्नो वर्तते। गौतमः पृच्छति-'सव्वजीवा वि णं भंते ? ' हे भदन्त ! सर्वजीवा अपि खलु चतुष्पष्टि लक्षासुरकुमारावासेषु एकैकस्मिन् असुरकुमारावासे पृथिवीकायिकादितया किम् उत्पन्नपूर्वाः पूर्वमुत्पन्नाः वर्तन्ते ? भगवानाह-' एवं चेव, एवं जाव थणियकुमारेसु,

---

कायिक रूप से, यावत्-अप्कायिक रूप से, तेजःकायिकरूप से, वायुकायिक रूप से, वनस्पतिकायिक रूप से, देवरूप से, देवीरूप से और आसन, शयन, भाण्ड आदि उपकरणरूप से क्या पहिले उत्पन्न हो चुका है ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-' हंता गोयमा ! जाव अणंतखुत्तो ' हां गौतम ! यावत् एक जीव चौसठ लाख असुरकुमारावासों मेंसे प्रत्येक असुरकुमारावास में पृथिवीकायिक आदिरूप से अनेक बार अथवा अनंतबार पहिले उत्पन्न हो चुका है।

अब गौतम पुनः प्रभु से ऐसा पूछते हैं-' सव्वजीवा वि णं भंते ! ' हे भदन्त ! सब जीव भी क्या चौंसठ लाख असुरकुमारावासों में से एक एक असुरकुमारावास में पृथिवीकायिक आदिरूप से पहिले उत्पन्न हो चुके हैं ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-' एवं चेव-एवं जाव थणिय-

---

પૂર્વે પૃથ્વીકાયિકરૂપે, અપ્કાયિકરૂપે, તેજસ્કાયિકરૂપે, વાયુકાયિકરૂપે, વનસ્પતિકાયિકરૂપે, દેવરૂપે, દેવીરૂપે, અને આસન, શયન, ભાંડાદિ ઉપકરણ રૂપે ઉત્પન્ન થઈ ચુકયેા છે ?

મહાવીર પ્રભુનેા ઉત્તર-" हंता, गोयमा ! जाव अणंतखुत्तो " હે ગૌતમ ! એક જીવ, ચેાસઠ લાખ અસુરકુમારાવાસેામાંના પ્રત્યેક અસુરકુમારાવાસમાં પૃથ્વીકાયિક આદિ રૂપે અનેકવાર અથવા અનંત વાર પૂર્વે ઉત્પન્ન થઈ ચુકયેા છે.

ગૌતમ સ્વામીનેા પ્રશ્ન-" सव्व जीवा वि णं भंते ! " ઇત્યાદિ-હે ભગવન્ ! સઘળા જીવેા શું ચેાસઠ લાખ અસુરકુમારાવાસેામાંના પ્રત્યેક અસુરકુમારાવાસમાં પૂર્વે પૃથ્વીકાયિકાદિ રૂપે ઉત્પન્ન થઇ ચુકયા છે ?

મહાવીર પ્રભુનેા ઉત્તર-' एवं चेव, एवं जाव थणियकुमारेसु, नाणत्तं आवासेसु, आवासा पुव्वभणिया " હે ગૌતમ ! સઘળા જીવેા પણ, ચેાસઠ લાખ અસુ-

णाणत्तं आवासेसु, आवासा पुव्वभणिया' एवमेव पूर्वोक्तरीत्यैव, सर्वजीवा अपि चतुरशीति लक्षासुरकुमारावासेषु एकैकस्मिन् असुरकुमारावासे पृथिवीकायिकादितया असकृत्-अनेकवारम्, अथवा-अनन्तकृत्वः-अनन्तवारम्, उपपन्नपूर्वाः-पूर्वमुत्पन्ना वर्तन्ते, एवं रीत्या, यावत् स्तनितकुमारेषु-एतेषां नागकुमारादीनामावासेषु एकैकस्मिन् नागकुरावासे पृथिवीकायिकादितया एको जीवः सर्वजीवाश्च असकृत् अथवा अनन्तकृत्वः उत्पन्नपूर्वाः पूर्वमुत्पन्नाः सन्ति, केवलम् नानात्वम् विशेषः आवासेषु-नागकुमारावासेषु बोध्यम्, तेषां तत्तन्न्यूनाधिकावासाः पूर्वभणिताः प्रथमशतके पञ्चमोद्देशके प्रतिपादिताः सन्ति, गौतमः पृच्छति-'अयं णं भंते ? जीवे असंखेज्जेसु पुढविकाइया

कुमारेसु, णाणत्तं आवासेसु, आवासा पुव्वभणिया' हे गौतम ! सर्व जीव भी ६४ लाख असुरकुमारावासों में से हरएक असुरकुमारावास में पृथिवीकायिक आदिरूप से अनेकवार अथवा अनन्तवार पहिले उत्पन्न हो चुके हैं। इसी प्रकार का कथन यावत् स्तनितकुमारों में भी जानना चाहिये-यावत्पद से नागकुमारादिकों के आवासों का ग्रहण हुआ है। अर्थात् एक जीव और अनेक जीव नागकुमारादिकों के आवासों में से प्रत्येक नागकुमारादि आवास में पृथिवीकायिक आदिरूप से अनेकवार अथवा अनन्तवार पहिले उत्पन्न हो चुके हैं। विशेषता इन नागकुमारादिक आवासों में केवल नानात्व को लेकर ही है-कथन को लेकर कोई विशेषता नहीं है। नागकुमारादिकों में कौन २ के कितने २ आवास हैं यह विषय प्रथमशतक के पांचवें उद्देशक में कहा जा चुका है।

કુમારાવાસોમાંના પ્રત્યેક અસુરકુમારાવાસમાં પૂર્વે પૃથ્વીકાયિકાદિ રૂપે અનેક વાર અથવા અનંત વાર ઉત્પન્ન થઈ ચુકયા છે એજ પ્રકારનું કથન સ્તનિતકુમારોના આવાસોમાં એક જીવ અને અનેક જીવોની પૂર્વોત્પત્તિના વિષયમાં પણ ગ્રહણ કરવું અહીં "યાવત્" પદ વડે નાગકુમારાદિક ભવનપતિ દેવોના આવાસો ગ્રહણ કરવામાં આવેલ છે એટલે કે એક જીવ અને સમસ્ત જીવો, નાગકુમારાદિકોના જેટલા આવાસો છે તે આવાસોમાં પ્રત્યેક આવાસમાં પૃથ્વીકાયિક આદિ રૂપે પહેલાં અનેકવાર અથવા અનંત વાર ઉત્પન્ન થઇ ચુકયા છે. આ નાગકુમારાદિકોના આવાસોની સંખ્યામાં જ વિશેષતા છે, કથનમાં કોઈ વિશેષતા નથી નાગકુમારોથી લઇને સ્તનિતકુમારો પર્યન્તના ભવનવાસીઓના આવાસોની સંખ્યા પહેલા શતકના પાંચમા ઉદ્દેશકમાં આપવામાં આવેલ છે, તો ત્યાંથી વાંચી લેવી.

वाससयसहस्सेसु एगमेगंसि पुढविकाइयावासंसि पुढविकाइयत्ताए जाव वणस्सइकाइयत्ताए उववन्नपुव्वे?' हे भदन्त! अयं खलु जीवः असंख्येयेषु पृथिवीकायिकावासशतसहस्रेषु-असंख्यातलक्षपृथिवीकायिकावासेषु एकैकस्मिन् पृथिवीकायिकावासे पृथिवीकायिकतया, यावत्-अप्कायिकतया, तेजःकायिकतया, वायुकायिकतया, वनस्पतिकायिकतया उत्पन्नपूर्वः-पूर्वमुत्पन्नो वर्तते किम्? भगवानाह-'हंता, गोयमा! जाव अणंतखुत्तो, एवं सव्व जीवा वि एवं जाव वणस्सइकाइएसु' हे गौतम! हन्त-सत्यम्, यावत्-एको जीवः, असंख्यात लक्षपृथिवीकायिकावासेषु एकैकस्मिन् पृथिवीकायिकावासे पृथिवीकायिकादितया असकृत्-अनेकवारम्, अनन्त कृत्वः-अनन्तवारं वा उत्पन्नपूर्वः-पूर्वमुत्पन्नो वर्तते! एवं रीत्यैव सर्वजीवा अपि, असकृत्-अनेकवारम्, अनन्तकृत्वः-

---

अब गौतम प्रभु से ऐसा पूछते हैं-'अयं णं भंते! जीवे असंखेज्जेसु पुढविक्काइयावाससयसहस्सेसु एगमेगंसि पुढविक्काइयावासंसि पुढविकाइयत्ताए जाव वणस्सइकाइयत्ताए उववन्नपुव्वे' हे भदन्त! यह जीव असंख्यात लाख प्रमाण पृथिवीकायिकावासों में से एक एक पृथिवीकायिकावास में पृथिवीकायिकरूप से यावत्-अप्कायिकरूप से, तेजःकायिकरूप से, वायुकायिकरूप से, वनस्पतिकायिकरूप से पहिले उत्पन्न हो चुका है? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-'हंता, गोयमा! जाव अणंतखुत्तो एवं सव्वजीवा वि, एवं जाव वणस्सइकाइएसु' हां, गौतम! यावत्-एक जीव असंख्यात लाख पृथिवीकायिकावासों में से प्रत्येक एक एक पृथिवीकायिकावास में पृथिवीकायिक आदिरूप से अनेकवार अथवा अनन्तवार पहिले उत्पन्न हो चुका है इसी प्रकार से सब जीव भी अने-

---

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-"अयं णं भंते! जीवे असंखेज्जेसु पुढविक्काइयावाससयसहस्सेसु एगमेगंसि पुढविकाइयावासंसि पुढविकाइयत्ताए जाव वणस्सइकाइयत्ताए उववन्नपुव्वे?" હે ભદન્ત! આ જીવ, અસંખ્યાત લાખ પ્રમાણ પૃથ્વીકાયિકાવાસોમાનાં પ્રત્યેક પૃથ્વીકાયિક આવાસમાં પૂર્વે પૃથ્વીકાયિકરૂપે, અપ્કાયિકરૂપે, તેજસ્કાયિકરૂપે, વાયુકાયિકરૂપે અને વનસ્પતિકાયિક રૂપે શું ઉત્પન્ન થઇ ચુકયો છે?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-"हंता, गोयमा! जाव अणंतखुत्तो, एवं सव्व जीवा वि, एवं जाव वणस्सइकाइएसु" હા, ગૌતમ! એક જીવ અસંખ્યાત લાખ પૃથ્વીકાયિકાવાસોમાંના પ્રત્યેક પૃથ્વીકાયિકાવાસમાં પૃથ્વીકાયિક આદિ રૂપે પૂર્વે અનેકવાર અથવા અનંત વાર ઉત્પન્ન થઇ ચૂકયો છે. એજ પ્રમાણે સમસ્ત જીવો પણ ત્યાં પૂર્વે અનેક વાર અથવા અનંત વાર ઉત્પન્ન થઈ ચૂકયા છે

अनन्तवारम्, उपपन्नाः सन्ति, एवं-पूर्वोक्तरीत्या यावत् अप्कायिक-तेजः-कायिक-वायुकायिक-वनस्पतिकायेषु-एतेषाम् असंख्यातपृथिवीकायिकावासशत-सहस्रेषु एकैकस्मिन् अप्कायिकाद्यावासे अप्कायिकादितया एको जीवः सर्वजीवाश्च, असकृत्-अनेकवारम्, अथवा, अनन्तकृत्वः-अनन्तवारम्, उत्पन्नपूर्वाः-पूर्व-मुत्पन्नाः सन्ति, गौतमः पृच्छति-'अयं णं भंते! जीवे असंखेज्जेसु बेंदियावास-सयसहस्सेसु एगमेगंसि बेंदियावासंसि पुढविकाइयत्ताए जाव वणस्सइकाइय-त्ताए, बेंदियत्ताए उववन्नपुव्वे?' हे भदन्त! अयं खलु जीवः असंख्येयेषु, द्वीन्द्रियावासशतसहस्रेषु, एकैकस्मिन् द्वीन्द्रियावासे, पृथिवीकायिकतया, यावत् अप्कायिकतया, तेजःकायिकतया, वायुकायिकतया, वनस्पतिकायिक-

---

कबार और अनंतवार वहां उत्पन्न हो चुके हैं। इसी प्रकार से असंख्यात लाख अप्कायिकावासों में से एक एक अप्कायिकावास में, असंख्यात लाख तेजःकायिकावासों में से एक एक तेजःकायिकावास में, असंख्यात लाख वायुकायिकावासों में से एक एक वायुकायिकावास में और असं-ख्यात लाख वनस्पतिकायिकावासों में से एक एक वनस्पतिकायिका-वास में एक जीव और सर्व जीव अनेकवार अथवा अनन्तवार अप्-कायिकादिरूप से उत्पन्न हो चुके हैं।

अब गौतमस्वामी प्रभु से ऐसा पूछते हैं-'अयं णं भंते। जीवे असंखेज्जेसु बेइंदियावाससयसहस्सेसु एगमेगंसि बेइंदियावासंसि पुढ-विकाइयत्ताए जाव वणस्सइकाइयत्ताए, बेइंदियत्ताए उववन्नपुव्वे' हे भदन्त! यह जीव असंख्यात लाख दो इन्द्रियावासों में एक द्वि इन्द्रि-यावास में पृथिवीकायिकरूप से यावत्-अप्कायिकरूप से, तेजःकायि-

---

એજ પ્રમાણે અસંખ્યાત લાખ અપ્કાયિકાવાસોમાંના પ્રત્યેક અપ્કાયિકાવા-સમાં, અસંખ્યાત લાખ તેજસ્કાયિકાવાસોમાંના પ્રત્યેક તેજસ્કાયિકાવા-સમાં અને અસંખ્યાત લાખ વાયુકાયિકાવાસોમાંના પ્રત્યેક વાયુકાયિકાવાસમાં અને અસંખ્યાત લાખ વનસ્પતિકાયિકાવાસોમાંના પ્રત્યેક વનસ્પતિકાયિકાવા-સમાં પણ એક જીવ અને સમસ્ત જીવો પૂર્વે અનેક વાર અથવા અનંત-વાર અપ્કાયિકાદિ રૂપે ઉત્પન્ન થઇ ચુકયા છે.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-" अयं णं भंते! जीवे असंखेज्जेसु बेइंदियावास-सयसहस्सेसु एगमेगंसि बेइंदियावासंसि पुढविकाइयत्ताए जाव वणस्सइकाइयत्ताए, बेइंदियत्ताए उववन्नपुव्वे?" હે ભગવન્! આ જીવ, અસંખ્યાત લાખ દ્વીન્દ્રિયાવાસોમાંના પ્રત્યેક દ્વીન્દ્રિયાવાસમાં શું પૂર્વે પૃથ્વીકાયિક રૂપે, અપ્-

तया-द्वीन्द्रियतया किम् उत्पन्नपूर्वः-पूर्वमुत्पन्नो वर्तते? भगवानाह-'हंता, गोयमा! जाव अणंतखुत्तो? सव्वजीवा वि णं एवंचेय' हे गौतम! हन्त-सत्यम् यावत्-एको जीवः असंख्यातद्वीन्द्रियावासलक्षेषु एकैकस्मिन् द्वीन्द्रियावासे पृथिवीकायिकादितया असकृत्-वारं वारम्, अथवा, अनन्तकृत्व-अनन्तवारम् उत्पन्नपूर्वः-पूर्वमुत्पन्नो वर्तते, सर्वजीवा अपि खलु एवमेव-पूर्वोक्तरीत्यैव, असंख्यात द्वीन्द्रियावासलक्षेषु एकैकस्मिन् द्वीन्द्रियावासे पृथिवीकायिकादितया असकृत्-अनेकवारम्, अथवा अनन्तकृत्व-अनन्तवारम्, उपपन्नपूर्वाः-पूर्वमुत्पन्नाः सन्ति, 'एवं जाव मणुस्सेसु, नवरं तेंदियएसु जाव वणस्सइकाइयत्ताए तेंदियत्ताए, चउरिंदिएसु चउरिंदियत्ताए, पंचिंदियतिरिक्खजोणिएसु

કરૂપ સે, વાયુકાયિકરૂપસે, વનસ્પતિકાયિકરૂપ સે, એવં દ્વીન્દ્રિયરૂપ સે ક્યા પહિલે ઉત્પન્ન હો ચુકા હૈ? ઇસકે ઉત્તર મેં પ્રભુ કહતે હૈં-' હંતા, ગોયમા! જાવ અણંતખુત્તો, સવ્વજીવા વિ ણં એવં ચેવ ' હાં, ગૌતમ! એક જીવ અસંખ્યાત લાખ પ્રમાણ દ્વીન્દ્રિયાવાસોં મેં સે એક એક દ્વીન્દ્રિયાવાસ મેં પૃથિવીકાયિકાદિરૂપ સે અનેકબાર અથવા અનંતબાર ઉત્પન્ન હો ચુકા હૈ। ઇસી પ્રકાર સે સબ જીવ ભી અસંખ્યાત લાખ દ્વીન્દ્રિયાવાસોં મેં સે એક એક દ્વીન્દ્રિયાવાસ મેં પૃથિવીકાયિક આદિ રૂપ સે અનેકબાર અથવા અનન્તબાર ઉત્પન્ન હો ચુકે હૈં। ' एवं जाव मणुस्सेसु, नवरं तेइंदिएसु जाव वणस्सइकाइयत्ताए तेइंदियत्ताए, चउरिंदिएसु चउरिंदियत्ताए, पंचिंदियतिरिक्खजोणिएसु पंचिंदियतिरिक्खजोणियत्ताए, मणुस्सेसु मणुस्सत्ताए, सेसं जहा वेइंदियाणं' ઇસી પ્રકાર સે

કાયિક રૂપે, તેજસ્કાયિક રૂપે, વાયુકાયિક રૂપે, વનસ્પતિકાયિક રૂપે અને દ્વીન્દ્રિય રૂપે ઉત્પન્ન થઈ ચુકયો છે?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-' હંતા, ગોયમા! જાવ અણંત ખુત્તો, સવ્વ જીવા વિ ણં એવં ચેવ " હા, ગૌતમ! એક જીવ, અસંખ્યાત લાખ દ્વીન્દ્રિયાવાસોમાંના પ્રત્યેક દ્વીન્દ્રિયાવાસમાં પૃથ્વીકાયિક આદિ રૂપે પૂર્વે અનેકવાર અથવા અનંતવાર ઉત્પન્ન થઈ ચુકયો છે એજ પ્રમાણે સમસ્ત જીવો પણ અસંખ્યાત લાખ દ્વીન્દ્રિયાવાસોમાના પ્રત્યેક દ્વીન્દ્રિયાવાસમાં પૂર્વે અનેકવાર અથવા અનંતવાર ઉત્પન્ન થઈ ચુકયા છે. " एव जाव मणुस्सेसु, नवर तेइंदिएसु जाव वणस्सइकाइयत्ताए, तेइंदियत्ताए, चउरिंदिएसु चउरिंदियत्ताए, पचिंदियतिरिक्खजोणिएसु पंचिंदियतिरिक्खजोणियत्ताए, मणुस्सेसु मणुस्सत्ताए, सेसं जहा वेइंदियाणं "

पंचिंदियतिरिक्खजोणियत्ताए, मणुस्सेसु मणुस्सत्ताए, सेसं जहा बेंदियाणं' एवम्-पूर्वोक्तरीत्या, यावत्-त्रीन्द्रिय-चतुरिन्द्रिय-पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिक मनुष्येषु-एतेषाम् त्रीन्द्रियाद्यसंख्यातलक्षावासेषु एको जीवः सर्वजीवाश्च पृथिवीकायिकादितया असकृत्-अनेकवारम्, अथवा अनन्तकृत्वः-अनन्तवारम् उत्पन्नपूर्वाः-पूर्वमुत्पन्नाः सन्ति, किन्तु नवरम्-द्वीन्द्रियापेक्षया विशेषस्तु-त्रीन्द्रियेषु-त्रीन्द्रियावासेषु यावत्-पृथिवीकायिकतया, अप्कायिकतया, तेजःकायिकतया, वायुकायिकतया, वनस्पतिकायिकतया त्रीन्द्रियतया, चतुरिन्द्रियेषु-चतुरिन्द्रियावासेषु चतुरिन्द्रियतया, पचेन्द्रियतिर्यग्योनिकेषु पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकावासेषु, पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकतया, मनुष्येषु-मनुष्यावासेषु, मनुष्यतया एको जीवः सर्वजीवाश्च असकृत्-अथवा अनन्तकृत्वः उत्पन्नपूर्वाः सन्ति, इत्यभिप्रायेणाह-शेषं यथा

यावत्-असंख्यात लाख तेइन्द्रियावासों में से एक एक तेइन्द्रियावास में, असंख्यातलाख चौइन्द्रियावासों में से एक एक चौइन्द्रियावास में, एक जीव और सर्वजीव पृथिवीकायिकादिरूप से अनेकवार अथवा अनन्तवार उत्पन्न हो चुके हैं इसी प्रकार का कथन पंचेन्द्रियतिर्यगावासों में और मनुष्यावासों में भी जानना चाहिये-परन्तु जो विशेषता इस कथन में है वह इस प्रकार की है-कि असंख्यात लाख तेइन्द्रियादिक आवासों में से प्रत्येक तेइन्द्रियादिक आवास में जो एक जीव या सर्वजीव अनेकवार या अनन्तवार उत्पन्न हो चुके हैं सो वे वहां पृथिवीकायिकादिरूप से ही अनेकवार या अनंतवार उत्पन्न नहीं हुए हैं किन्तु एक एक तेइन्द्रियावास में वे तेइन्द्रियरूप से भी अनेकवार या अनन्तवार उत्पन्न हो चुके हैं। इसी प्रकार से असंख्यातलाख चौइन्द्रियावासों में से एक एक चौइन्द्रियावास में भी जानना चाहिये-अर्थात् असंख्यात चौइन्द्रियावासों में से एक २ आवास में एक अथवा अनेक

એજ પ્રમાણે અસંખ્યાત લાખ ત્રીન્દ્રિયાવાસોમાંના પ્રત્યેક ત્રીન્દ્રિયાવાસમાં, અસંખ્યાત લાખ ચતુરિન્દ્રિયાવાસોમાંના પ્રત્યેક ચતુરિન્દ્રિયાવાસોમાં, અસંખ્યાત લાખ પંચેન્દ્રિય તિર્યંચાવાસોમાંના પ્રત્યેક પંચેન્દ્રિય તિર્યંચાવાસમાં અને અસંખ્યાત લાખ મનુષ્યાવાસોમાના પ્રત્યેક મનુષ્યાવાસમાં, એક જીવ અને અનેક જીવ પૂર્વે પૃથ્વીકાયિક આદિ રૂપે અનેકવાર અથવા અનંતવાર ઉત્પન્ન થઈ ચુકયા છે દ્વીન્દ્રિયોના ઉપર્યુક્ત કથન કરતા આ કથનમાં જે વિશેષતા છે તે હવે પ્રકટ કરવામાં આવે છે. પ્રત્યેક ત્રીન્દ્રિયાવાસમાં તેઓ પૃથ્વીકાયિકથી લઈને વનસ્પતિકાયિક રૂપે અને ત્રીન્દ્રિય રૂપે, પ્રત્યેક ચતુરિન્દ્રિયાવાસમાં તેઓ પૃથ્વીકાયિકથી લઈને વનસ્પતિ કાયિક રૂપે અને ચતુરિ-

द्वीन्द्रियाणाम् प्रतिपादितं तथैव प्रतिपत्तव्यम्, 'वाणमंतरजोइसिय सोहम्मीसाणाण य जहा असुरकुमाराणं' वानव्यन्तरज्योतिषिकसौधर्मेशानानां च एतेषामावासेषु यथा असुरकुमाराणाम् आवासेषु चतुःषष्टिलक्षेषुएकैकस्मिन् आवासे पृथिवीकायादितया एको जीवः सर्वजीवाश्च असकृत्, अथवा अनन्तकृत्वः पूर्वमुत्पन्नाः सन्ति इति प्रतिपादितम्, तथैव वानव्यन्तरादारभ्य ईशानपर्य-

---

जीव अनेक बार अथवा अनन्तबार पृथिवीकायिकरूप से अप्कायिकरूप से, तेजःकायिकरूप से और वनस्पतिकायिकरूप से तो उत्पन्न हुए ही हैं-पर वे वहां अनेकबार अथवा अनन्तबार द्वीन्द्रिरूप से भी उत्पन्न हो चुके हैं। इसी प्रकार से असंख्यात लाख पंचेन्द्रियतिर्यञ्चावासों में से एक २ आवास में एक जीव अथवा सर्व जीव अपनी पंचेन्द्रियतिर्यञ्चपर्याय से भी उत्पन्न हो चुके हैं। इसी प्रकार का कथन असंख्यातलाख मनुष्यावासों में से एक २ मनुष्यावास में भी जानना चाहिये अर्थात् एक जीव अथवा सब जीव पंचेन्द्रियावासों में से एक २ आवास में अनेकबार अथवा अनन्तबार अपनी मनुष्य पर्याय से भी उत्पन्न हो चुके हैं। इसी अभिप्राय को लेकर सूत्रकारने ऐसा कहा है कि शेष और कथन द्वीन्द्रियोंकी तरह से जानना चाहिये। 'वाणमंतरजोइसियसोहम्मीसाणाण य जहा असुरकुमाराणं' जैसा कथन ६४ लाख असुरकुमारावासों में से एक जीव और सर्वजीव अनेकबार अथवा अनन्तबार पृथिवीकायिकादिरूप से पहिले उत्पन्न हो चुके

न्द्रिय રૂપે, પ્રત્યેક પંચેન્દ્રિયતિર્યંચાવાસમાં તેઓ પૃથ્વીકાયિકથી લઈને વનસ્પતિકાયિક રૂપે અને પંચેન્દ્રિયતિર્યંચ રૂપે અને પ્રત્યેક મનુષ્યાવાસમાં તેઓ પૃથ્વીકાયિકથી લઈને વનસ્પતિકાયિક રૂપે તથા મનુષ્ય રૂપે પૂર્વે અનેકવાર અથવા અનંતવાર ઉત્પન્ન થઈ ચુકયા છે. આ પ્રકારે પૃથ્વીકાયિકરૂપે, અપ્કાયિકરૂપે, તેજસ્કાયિકરૂપે, વાયુકાયિકરૂપે અને વનસ્પતિકાયિકરૂપે ઉત્પન્ન થવાનું કથન તો બધે એક સરખું જ છે. દ્વીન્દ્રિયોના કથન કરતા ત્રીન્દ્રિયાદિકોના કથનમાં જે અંતર છે તે ઉપર પ્રકટ કરવામાં આવ્યું છે. આ પ્રકારે "नवरं" આ સૂત્રપાઠથી લઈને "सेसं जहा बेइंदियाण" આ સૂત્રપાઠ પર્યન્તના કથનનો અર્થ સ્પષ્ટ કરવામાં આવ્યો છે.

"वाणमंतरजोइसियसोहम्मीसाणाण य जहा असुरकुमाराणं" ६४ લાખ અસુરકુમારાવાસોમાંના પ્રત્યેક અસુરકુમારાવાસમાં એક જીવ અને સમસ્ત જીવો પૂર્વે પૃથ્વીકાયિકાદિ રૂપે અનેકવાર અથવા અનંતવાર ઉત્પન્ન થઈ ચુકયા

न्तेषु अपि आवासेषु एकैकस्मिन् आवासे एको जीवः सर्वे जीवाश्च पृथिवीकायादिकतया असकृत्-अथवा अनन्तकृत्वः उत्पन्नपूर्वाः सन्ति इति प्रतिपत्तव्यम्। गौतमः पृच्छति-'अयं णं भंते ! जीवे सणंकुमारे कप्पे बारससु विमाणावाससयसहस्सेसु एगमेगंसि विमाणावासंसि पुढविकाइयत्ताए' हे भदन्त ! अयं खलु जीवः सनत्कुमारे कल्पे द्वादशसु विमानावाससतसहस्रेषु-द्वादशलक्षविमानावासेषु एकैकस्मिन् विमानावासे पृथिवीकायिकादितया उपपन्नपूर्वः-पूर्वमुत्पन्नः किम्? भगवानाह-'सेसं जहा असुरकुमाराणं जाव अणंतखुत्तो, णो चेव णं देवित्ताए एवं सव्वजीवावि एवं जाव आणयपाणएसु, एवं आरणच्चुएसु वि' हे गौतम! शेषं यथा असुरकुमाराणाम् यावत् चतुःषष्टि लक्षावासेषु एकैकस्मिन् आवासे पृथिवीकायिकादितया एकस्य जीवस्य असकृत्, अनन्तकृत्वो वा पूर्वोत्पादः प्रति-

---

प्रकट किये गये हैं-इसी प्रकार से वानव्यन्तर से लेकर ईशान तक के आवासों में से एक २ आवास में एक जीव पृथिवीकायिकादिरूप से अनेकबार अथवा अनन्तबार उत्पन्न हो चुके कहे गये हैं।

अब गौतमस्वामी प्रभु से ऐसा पूछते हैं-'अयं णं भंते! जीवे सणंकुमारे कप्पे बारससु विमाणावाससयसहस्सेसु एगमेगंसि विमाणावासंसि पुढविकाइयत्ताए' हे भदन्त! यह जीव सनत्कुमार कल्प में वहां के १२ लाख विमानावासों में एक २ विमानावास में पृथिवीकायिकादिरूप से पहिले उत्पन्न हो चुका है? उसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-'सेसंजहा असुरकुमाराणं जाव अणंतखुत्तो' हे गौतम! जैसा ६४ लाख असुरकुमारावासों में एक एक आवास में पृथिवीकायिकादिरूप से एक जीव का अनेकबार अथवा अनन्तबार पूर्वोत्पाद कहा गया है इसी प्रकार

છે, એજ પ્રમાણે વાનવ્યન્તરથી લઇને ઈશાન પર્યન્તના જેટલા આવાસો કહ્યા છે તે આવાસોમાંના પ્રત્યેક આવાસમાં, એક જીવ અને સમસ્ત જીવો પૃથ્વીકાયિક દિ રૂપે પૂર્વે અનેકવાર અથવા અનંતવાર ઉત્પન્ન થઈ ચુક્યા છે, એમ સમજવું

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-" अयं णं भंते ! जीवे सणंकुमारे कप्पे बारससु विमाणावाससयसहस्सेसु एगमेगंसि विमाणावासंसि पुढविकाइयत्ताए० " હે ભગવન્! આ જીવ, સનત્કુમાર કલ્પના બાર લાખ વિમાનાવાસોમાંના પ્રત્યેક વિમાનાવાસમાં શું પૃથ્વીકાયિક આદિ રૂપે પૂર્વે ઉત્પન્ન થઇ ચુક્યો છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-" सेसं जहा असुरकुमाराणं जाव अणंतखुत्तो " હે ગૌતમ ! જેવી રીતે ૬૪ લાખ અસુરકુમારાવાસોમાંના પ્રત્યેક અસુરકુમારાવાસમાં એક જીવનો પૃથ્વીકાયિક આદિ રૂપે અનેકવાર અથવા અનંતવાર

पादितः तथैव सनत्कुमारस्य द्वादशलक्षविमानावासेषु एकैकस्मिन् विमानावासे पृथिवीकायिकादितया एको जीवः असकृत्, अनन्तकृत्वो वा पूर्वमुत्पन्न इति प्रतिपत्तव्यम्, किन्तु सनत्कुमारावासे नो चैव खलु जीवो देवीतया उत्पद्यते, ईशानान्तेष्वेव देवस्थानेषु देव्यः उत्पद्यन्ते, सनत्कुमारादिषु पुनर्नोत्पद्यन्ते देव्यः इति विशेषः। एवं-पूर्वोक्तरीत्या सर्वजीवा अपि सनत्कुमारावासेषु एकैकस्मिन् आवासे पृथिवीकायिकादिदेवान्ततया न तु देवीतया, असकृत्, अनन्तकृत्वो वा पूर्वमुत्पन्नाः सन्ति, एवं-पूर्वोक्तरीत्या, यावत्-माहेन्द्रब्रह्मलान्तकशुक्रसहस्रारानतप्राणतेषु-एतेषामावासेषु एकैकस्मिन् आवासे एको जीवः सर्वजीवाश्च, अथवा-अनन्तकृत्वः पूर्वमुत्पन्नाः, एवं-पूर्वोक्तरीत्यैव आरणाच्युत

से सनत्कुमार के १२लाख विमानावासों में एक २ विमानावास में पृथिवीकायिकादिरूप से एक जीव अनेकबार अथवा अनन्तबार पहिले उत्पन्न हो चुका है ऐसा जानना चाहिये किन्तु 'णो चेव णं देवित्ताए-एवं सव्वजीवा वि, एवं जाव आणयपाणएसु, एवं आरणच्चुएसु वि, सनत्कुमारावास में यह जीव देवीरूप से पूर्वोत्पन्न नहीं हुआ है क्यों कि ईशान तक के देवस्थानों में ही देवियां उत्पन्न होती हैं, सनत्कुमारादि कों में उत्पन्न नहीं होती हैं। इसी प्रकार से समस्तजीव भी सनत्कुमारावासों में एक एक आवास में पृथिवीकायिक आदि रूप से तथा देवरूप से ही अनेकवार अथवा अनन्तबार उत्पन्न हो चुके हैं-देवीरूप से नहीं। इसी प्रकार से माहेन्द्र, ब्रह्म, लान्तक, शुक्र, सहस्रार, आनत और प्राणत इनके आवासों में एक एक आवास के एक जीव और सर्वजीव पृथिवीकायि

પૂર્વોત્પાદ કહેવામા આવ્યો છે, એજ પ્રમાણે સનત્કુમારના બાર લાખ વિમાનાવાસોમાંના પ્રત્યેક વિમાનાવાસમાં પૃથ્વીકાયિક આદિ રૂપે એક જીવ પૂર્વે અનેકવાર અથવા અનંતવાર ઉત્પન્ન થઇ ચુકયો છે, એમ સમજવું પરન્તુ "णो चेवणं देवित्ताए-एवं सव्व जीवा वि, एवं जाव आणयपाणएसु, एव आरणच्चुएसु वि" સનત્કુમારાવાસમાં આ જીવ દેવી રૂપે ઉત્પન્ન થયેા નથી, કારણ કે ઈશાન કલ્પ સુધીના દેવલોકોમાં જ દેવીઓ ઉત્પન્ન થાય છે, સનત્કુમારિક દેવલોકમાં દેવીઓ ઉત્પન્ન થતી નથી એજ પ્રમાણે સમસ્ત જીવો પણ બાર લાખ સનત્કુમારાવાસોમાંના પ્રત્યેક સનત્કુમારાવાસમા (વિમાનાવાસમાં) પૃથ્વીકાયિક આદિ રૂપે તથા દેવ રૂપે અનેકવાર અથવા અનંતવાર પૂર્વે ઉત્પન્ન થઈ ચુકયા છે. ત્યાં તેઓ દેવી રૂપે ઉત્પન્ન થયા નથી એજ પ્રમાણે માહેન્દ્ર, બ્રહ્મ, લાન્તક, શુક્ર, સહસ્રાર, આનત, પ્રાણત, આ કલ્પોના જે વિમાનાવાસો છે તે વિમાનાવાસોમાંના પ્રત્યેક વિમાનાવા-

तयोरपि आवासेषु एकैकस्मिन् आवासे पृथिवीकायिकादि देवान्ततया, न तु देवीतया एको जीवः सर्वजीवाश्च असकृत्, अनन्तकृत्वः पूर्वमुत्पन्नाः। गौतमः पृच्छति-'अयं णं भंते! जीवे तिसु वि अट्ठारसुत्तरेसु गेविज्जविमाणावाससयेसु एवंचेव' हे भदन्त! अयं खलु जीवः त्रिष्वपि अष्टादशोत्तरेषु नव ग्रैवेयक विमानावासशतेषु प्रथमत्रिके एकादशोत्तरं शतम्, द्वितयत्रिके सप्तोत्तरं शतम्, तृतीयत्रिके शतम्, एवमष्टादशाधिकशतत्रयनवग्रैवेयकविमानावासेषु एवमेव-पूर्ववदेव तथाहि-एकैकस्मिन् विमानावासे पृथिवीकायिकादिकतया एको जीवः सर्वजीवाश्च किम् पूर्वमुत्पन्नाः सन्ति? भगवानाह-हे गौतम! एकैकस्मिन् नव-ग्रैवेयकविमानावासे एको जीवः सर्वजीवाश्च पृथिवीकायिकादिकतया अम-

---

कादिरूप से एवं देवरूप से अनेकवार अथवा अनन्तवार पूर्वोत्पन्न हो चुके हैं-देवीरूप से नहीं इसी प्रकार से आरण एवं अच्युत के आवासों में से एक एक आवासमें इसी प्रकार का कथन जानना चाहिये। वहां पर भी एक जीव और सर्वजीव अनेकवार अथवा अनन्तवार पृथिवीकायिकादिरूप से तथा देवरूप से पूर्वोत्पन्न हो चुके हैं-देवीरूप से नहीं।

अब गौतमस्वामी प्रभु से ऐसा पूछते हैं-' अयं णं भंते! जीवे तिसु वि अट्ठारसुत्तरेसु-गेविज्जविमाणावाससयेसु एवं चेव'-हे भदन्त! यह जीव तीन ग्रैवेयकों के-उर्ध्व मध्य और अधोग्रैवेयक के ३१८ विमानावासों में-प्रथमत्रिक के १११, द्वितीयत्रिक में १०७ और तृतीयत्रिक में १०० विमानावासों में से प्रत्येक विमानावास में क्या पृथिवीकायिकादिरूप से पहिले उत्पन्न हो चुका है? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-हां, गौतम! ३१८ ग्रैवेयक विमानावासों में से प्रत्येक विमा-

---

સમાં, એક જીવ અને સમસ્ત જીવો પૂર્વે અનેકવાર અથવા અનંતવાર પૃથ્વીકાયિક આદિ રૂપે તથા દેવ રૂપે ઉત્પન્ન થઇ ચુકયા છે. આ વિમાનાવાસોમાં તેમની દેવી રૂપે પૂર્વે ઉત્પત્તિ થઈ નથી.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-" अयं णं भंते! जीवे तिसु वि अट्ठारसुत्तरेसु-गेविज्ज विमाणावाससयेसु एवं चेव " હે ભગવન્! આ જીવ, ગ્રૈવેયકોના ૩૧૮ વિમાનાવાસોમાંના (નવગ્રૈવેયકોના ઉર્ધ્વ, મધ્યમ અને અધોરૂપ ત્રણ ત્રિક છે. તે દરેક ત્રિકમાં અનુક્રમે ૧૧૧, ૧૦૭ અને ૧૦૦ વિમાનાવાસો છે) પ્રત્યેક વિમાનાવાસમાં શું પૂર્વે પૃથ્વીકાયિકાદિ રૂપે ઉત્પન્ન થઈ ચુકયો છે?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-હા, ગૌતમ! આ જીવ ગ્રૈવેયકોના ૩૧૮ વિમાનાવાસોમાંના પ્રત્યેક વિમાનાવાસમાં પૂર્વે અનેકવાર અથવા અનંતવાર

तयोरपि आवासेषु एकैकस्मिन् आवासे पृथिवीकायिकादि देवान्ततया, न तु देवीतया एको जीवः सर्वजीवाश्च असकृत्, अनन्तकृत्वः पूर्वमुत्पन्नाः। गौतमः पृच्छति–'अयं णं भंते! जीवे तिसु वि अट्ठारसुत्तरेसु गेविज्जविमाणावाससयेसु एवंचेव' हे भदन्त! अयं खलु जीवः त्रिष्वपि अष्टादशोत्तरेषु नव ग्रैवेयक विमानावासशतेषु प्रथमत्रिके एकादशोत्तरं शतम्, द्वितयत्रिके सप्तोत्तरं शतम्, तृतीयत्रिके शतम्, एवमष्टादशाधिकशतत्रयनवग्रैवेयकविमानावासेषु एवमेव-पूर्ववदेव तथाहि-एकैकस्मिन् विमानावासे पृथिवीकायिकादिकतया एको जीवः सर्वजीवाश्च किम् पूर्वमुत्पन्नाः सन्ति? भगवानाह–हे गौतम! एकैकस्मिन् नव-ग्रैवेयकविमानावासे एको जीवः सर्वजीवाश्च पृथिवीकायिकादिकतया अम-

---

कादिरूप से एवं देवरूप से अनेकवार अथवा अनन्तवार पूर्वोत्पन्न हो चुके हैं-देवीरूप से नहीं इसी प्रकार से आरण एवं अच्युत के आवासों में से एक एक आवासमें इसी प्रकार का कथन जानना चाहिये। वहां पर भी एक जीव और सर्वजीव अनेकवार अथवा अनन्तवार पृथिवीकायिकादिरूप से तथा देवरूप से पूर्वोत्पन्न हो चुके हैं-देवीरूप से नहीं।

अब गौतमस्वामी प्रभु से ऐसा पूछते हैं–' अयं णं भंते! जीवे तिसु वि अट्ठारसुत्तरेसु–गेविज्जविमाणावाससयेसु एवं चेव'–हे भदन्त! यह जीव तीन ग्रैवेयकों के–उर्ध्व मध्य और अधोग्रैवेयक के ३१८ विमानावासों में–प्रथमत्रिक के १११, द्वितीयत्रिक में १०७ और तृतीयत्रिक में १०० विमानावासों में से प्रत्येक विमानावास में क्या पृथिवीकायिकादिरूप से पहिले उत्पन्न हो चुका है? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं–हां, गौतम! ३१८ ग्रैवेयक विमानावासों में से प्रत्येक विमा-

---

સમાં, એક જીવ અને સમસ્ત જીવો પૂર્વે અનેકવાર અથવા અનંતવાર પૃથ્વીકાયિક આદિ રૂપે તથા દેવ રૂપે ઉત્પન્ન થઇ ચુક્યા છે. આ વિમાનાવાસોમાં તેમની દેવી રૂપે પૂર્વે ઉત્પત્તિ થઈ નથી.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન–" अयं णं भंते! जीवे तिसु वि अट्ठारसुत्तरेसु–गेविज्ज विमाणावाससयेसु एवं चेव " હે ભગવન્! આ જીવ, ગ્રૈવેયકોના ૩૧૮ વિમાનાવાસોમાંના (નવગ્રૈવેયકોના ઉર્ધ્વ, મધ્યમ અને અધોરૂપ ત્રણ ત્રિક છે. તે દરેક ત્રિકમાં અનુક્રમે ૧૧૧, ૧૦૭ અને ૧૦૦ વિમાનાવાસો છે) પ્રત્યેક વિમાનાવાસમાં શું પૂર્વે પૃથ્વીકાયિકાદિ રૂપે ઉત્પન્ન થઈ ચુક્યો છે?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર–હા, ગૌતમ! આ જીવ ગ્રૈવેયકોના ૩૧૮ વિમાનાવાસોમાંના પ્રત્યેક વિમાનાવાસમાં પૂર્વે અનેકવાર અથવા અનંતવાર

कृत्, अनन्तकृत्वो वा पूर्वमुत्पन्नाः सन्ति, गौतमः पृच्छति–'अयं णं भंते! जीवे पंचसु अणुत्तरविमाणेसु एगमेगंसि अणुत्तरविमाणंसि पुढवि? हे भदन्त! अयं खलु जीवः पञ्चसु अनुत्तरविमानेषु विजयवैजयन्तजयन्तापराजितसर्वार्थसिद्धेषु एकैकस्मिन् अनुत्तरविमाने पृथिवीकायिकादिकतया एको जीवः सर्वजीवाश्च किम् पूर्वमुत्पन्नाः सन्ति? भगवानाह–'तहेव जाव अणंतखुत्तो, नो चेव णं देवत्ताएवा, देवित्ताएवा, एवं सव्वजीवावि' हे गौतम! तथैव–पूर्वोक्तरीत्यैव, यावत्–एको जीवः पञ्चानुत्तरविमानेषु एकैकस्मिन् विमाने पृथिवीकायिकादिकतया, अनेकशः, अथवा अनन्तकृत्वः पूर्वमुत्पन्नः, किन्तु नो चैव खलु देवतया वा, देवीतया वा अनन्तकृत्वः पूर्वमुत्पन्नः, अनुत्तरविमानेषु देवाः अनन्तकृत्वो नोत्पद्यन्ते

नावास में अनेकवार अथवा अनन्तवार यह जीव पृथिवीकायिकादिरूप से पहिले उत्पन्न हो चुका है इसी प्रकार का कथन सर्वजीवों के सम्बन्ध में भी जानना चाहिये.

अब गौतम प्रभु से ऐसा पूछते हैं–'अयं णं भंते! जीवे पंचसु अणुत्तरविमाणेसु एगमेगंसि अणुत्तरविमाणंसि पुढवि' हे भदन्त! विजय, वैजयन्त, जयन्त, अपराजित और सर्वार्थसिद्ध इन पांच अनुत्तर विमान में क्या पृथिवीकायिक आदिरूप से यह जीव और सर्वजीव पहिले उत्पन्न हो चुके हैं? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं–'तहेव जाव अणंतखुत्तो, नो चेव णं देवत्ताए वा, देवीताए वा एवं सव्वजीवा वि' हे गौतम! पूर्वोक्तरीति के अनुसार यावत् एक जीव पांच अनुत्तरविमानों में से एक एक विमान में पृथिवीकायिक आदिरूप से अनेक वार अथवा अनन्तवार पहिले उत्पन्न हो चुका है। परन्तु वहां यह देवरूप से और

પૃથ્વીકાયિક આદિ રૂપે ઉત્પન્ન થઈ ચુકયેા છે એજ પ્રકારનુ કથન સમસ્ત જીવેાની ત્યાં ઉત્પત્તિના વિષે પણ સમજવું.

ગૌતમ સ્વામીનેા પ્રશ્ન–" अय णं भंते! जीवे पंचसु अणुत्तरविमाणेसु एगमेगंसि अणुत्तरविमाणंसि पुढवि०" હે ભગવન્! વિજય, વૈજયન્ત, જયન્ત, અપરાજિત અને સર્વાર્થસિદ્ધ, આ પાંચ અનુત્તર વિમાનેામાંના પ્રત્યેક અનુત્તર વિમાનમાં શું પ્રત્યેક જીવ તથા સમસ્ત જીવેા પૃથ્વીકાયિક આદિ રૂપે પૂર્વે ઉત્પન્ન થઈ ચુકયા છે?

મહાવીર પ્રભુનેા ઉત્તર–" तहेव जाव अणंतखुत्तो, नो चेवणं देवत्ताए वा देवित्ताए वा, एवं सव्व जीवा वि ' હે ગૌતમ! પૂર્વોક્ત કથન અનુસાર પ્રત્યેક જીવ પાંચ અનુત્તર વિમાનેામાંના પ્રત્યેક અનુત્તર વિમાનમાં પૃથ્વીકાયિક આદિ રૂપે પૂર્વે અનેકવાર અથવા અનંતવાર ઉત્પન્ન થઈ ચુકયેા છે. પરન્તુ ત્યાં

देव्यश्च सर्वथैव नोत्पद्यन्ते इति भावः। चतुर्षु अनुत्तरविमानेषु भवद्वयानन्तरं मोक्षसद्भावात् सर्वार्थसिद्धेषु एकभवानन्तरं मोक्षसद्भावात्, एवं-पूर्वोक्तरीत्या, सर्वजीवा अपि, पञ्चानुत्तरविमानेषु पृथिवीकायिकादिकनया, नो देवतया, नो वा देवीतया असकृत्, अनन्तकृत्वश्च पूर्वमुत्पन्नाः सन्ति। गौतमः पृच्छति-अयं णं भंते! जीवे सव्वजीवाणं माइत्ताए, पिइत्ताए, भाइत्ताए, भगिणीत्ताए, भज्जत्ताए, पुत्तत्ताए, धूयत्ताए, सुण्हत्ताए, उववन्नपुव्वे?' हे भदन्त! अयं खलु

देवीरूप से अनन्तबार उत्पन्न नहीं हुआ है, क्यों कि चार अनुत्तरविमानों में भवद्वय के बाद जीव की मुक्ति होती है तथा सर्वार्थसिद्ध में गये हुए जीव को एक भव के बाद मोक्षप्राप्त होता है। इसी प्रकार से सब जीव भी इन पांच अनुत्तर विमानों में पृथिवीकायिक आदिरूप से अनेकबार अथवा अनन्तबार उत्पन्न हो चुके होते हैं परन्तु मनुष्य देवरूप से वे वहां-चार अनुत्तरविमानों में दो बार और सर्वार्थ सिद्ध विमान में सिर्फ एक ही बार उत्पन्न हुए है-इस प्रकार अनेकबार अथवा अनन्तबार वे वहां देवरूप से उत्पन्न नहीं हुए हैं।

अब गौतमस्वामी प्रभु से ऐसा पूछते हैं-' अयं णं भंते! जीवे सव्वजीवाणं माइत्ताए, पिइत्ताए, भाइत्ताए, भगिणीत्ताए, भज्जत्ताए, धूयत्ताए, सुण्हत्ताए उववन्नपुव्वे ' हे भदन्त! यह जीव सब जीवों की माता के रूप से, पिता के रूप से, भाई के रूप से, बहिन के रूप से,

---

તે જીવ દેવ રૂપે અથવા દેવી રૂપે અનંતવાર ઉત્પન્ન થયેા નથી, કારણ કે પહેલા ચાર અનુત્તર વિમાનેામાં ગયેલેા જીવ બે ભવ કરીને મેાક્ષે જાય છે અને સર્વાર્થસિદ્ધ વિમાનમાં ગયેલા જીવ એક ભવ કરીને મેાક્ષ પ્રાપ્ત કરે છે એજ પ્રમાણે સમસ્ત જીવેા પણ આ પાંચ અનુત્તર વિમાનેામાંના પ્રત્યેક વિમાનમાં પૂર્વે પૃથ્વીકાયિક આદિ રૂપે અનેકવાર અથવા અનંતવાર ઉત્પન્ન થઇ ચુકયા છે. પરન્તુ પહેલા ચાર વિમાનેામાં તેઓ બે વાર દેવ રૂપે પૂર્વે ઉત્પન્ન થયા છે. અને સર્વાર્થસિદ્ધ વિમાનમાં માત્ર એક જ વાર તેઓ દેવ રૂપે ઉત્પન્ન થયા છે આ રીતે તેમની ત્યાં અનેકવાર અથવા અનંતવાર દેવ રૂપે ઉત્પત્તિ થઈ નથી, એમ સમજવું જોઇએ.

ગૌતમ સ્વામીનેા પ્રશ્ન-" अयं णं भंते! जीवे सव्व जीवाणं माइत्ताए, पिइत्ताए, भाइत्ताए, भागिणीत्ताए, भज्जत्ताए, पुत्तत्ताए, धूयत्ताए, सुण्हत्ताए उववन्नपुव्वे?" હે ભગવન્! આ જીવ શું સમસ્ત જીવેાની માતારૂપે, પિતારૂપે,

जीवः सर्वजीवानां मातृतया, पितृतया, भातृतया, भगिनीतया, भार्यातया, पुत्रतया, दुहितृतया, स्नुषातया उत्पन्नपूर्वः-पूर्वमुत्पन्नः किम् ? भगवानाह 'हंता, गोयमा ! असइं, अदुवा अणंतखुत्तो,' हे गौतम ! हन्त-सत्यम्, एको जीवः सर्वजीवानां मात्रादिकतया, असकृत्-अनेकवारम्, अथवा अनन्तकृत्वः-अनन्तवारम् उत्पन्नपूर्वः-पूर्वमुत्पन्नो वर्तते। गौतमः पृच्छति-'सव्वजीवा वि णं भंते ! इमस्स जीवस्स माइत्ताए जाव उववन्नपुव्वे ?' हे भदन्त ! सर्वजीवा अपि खलु अस्य जीवस्य मातृतया यावत् उपपन्नपूर्वाः-पूर्वमुत्पन्नाः सन्ति ? भगवानाह- हंता गोयमा ! जाव अणंतखुत्तो' हे गौतम ! हन्त-सत्यम्, यावत्-सर्वजीवा अपि अस्य जीवस्य मात्रादिकतया असकृत्, अथवा अनन्तकृत्वः पूर्वमुत्पन्नाः सन्ति। गौतमः पृच्छति-'अयं णं भंते ! जीवे सव्वजीवाणं अरित्ताए, वेरियत्ताए, घायकत्ताए, वहगत्ताए,

---

भार्या के रूप से, पुत्र के रूप से, दुहिता के रूप से, और पुत्रवधू के रूप से क्या पहिले उत्पन्न हो चुका हैं ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-'हंता, गोयमा ! असइं, अदुवा अणंतखुत्तो' हां, गौतम ! यह जीव सब जीवों की माता के रूप में, पिता के रूप में, और भाई आदि के रूप में अनेकवार और अनन्तवार पहिले उत्पन्न हो चुका हैं।

अब गौतम प्रभु से ऐसा पूछते हैं-'सव्वजीवा वि णं भंते ! इमस्स जीवस्स माइत्ताए, जाव उववन्नपुव्वे' हे भदन्त ! सब जीव क्या इस एक जीव के माता आदिरूप से पहिले उत्पन्न हो चुके हैं ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-'हंता, गोयमा ! जाव अणंतखुत्तो' हां, गौतम ! सर्वजीव भी इस एक जीव के पहिले अनेकवार अथवा अनन्तवार माता आदि-रूप से उत्पन्न हो चुके हैं।

ભાઈરૂપે, બહેનરૂપે, ભાર્યારૂપે, પુત્રરૂપે, પુત્રીરૂપે, અને પુત્રવધૂ રૂપે પહેલાં ઉત્પન્ન થઈ ચુકયો છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-" હંતા, ગોયમા ! અસઇં, અદુવા, અણતખુત્તો " હા, ગૌતમ ! આ જીવ સમસ્ત જીવોની માતારૂપે, પિતારૂપે અને ભાઈ આદિ રૂપે અનેક વાર અથવા અનંતવાર પહેલાં ઉત્પન્ન થઈ ચુકયો છે

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-" સવ્વ જીવા વિ ણ ભંતે ! ઇમસ્સ જીવસ્સ ભાઇત્તાએ જાવ ઉવવન્નપુવ્વે ?" હે ભગવન્ ! સમસ્ત જીવો પણ શું આ એક જીવના માતા, પિતા આદિ રૂપે પહેલાં ઉત્પન્ન થઈ ચુકયા છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-" હંતા, ગોયમા ! જાવ અણંતખુત્તો " હે ગૌતમ ! સમસ્ત જીવો પણ આ એક જીવના માતા, પિતા આદિ રૂપે પૂર્વે અનેક વાર અથવા અનંત વાર ઉત્પન્ન થઈ ચુકયા છે.

पडिणीयत्ताए, पच्चमित्तत्ताए उववन्नपुव्वे?' हे भदन्त! अयं खलु जीवः सर्वं जीवानाम् अरितया=सामान्यशत्रुतया, वैरितया विशेषशत्रुतया घातकतया-मारकतया, वधकतया-तारकतया, प्रत्यनीकतया-कार्योपघातकतया, प्रत्यमित्रतया शत्रुसहायकतया, किम् उपपन्न पूर्वः-पूर्वमुत्पन्नो वर्त्तते? भगवानाह-हंता, गोयमा! जाव अणंतखुत्तो' हे गौतम! हन्त-सत्यम्, यावत्-एको जीवः सर्वजीवानाम् अरितया, वैरिकादितया, असकृत्, अनन्तकृत्वो वा पूर्वमुत्पन्नो वर्तते। गौतमः पृच्छति-सव्वे जीवा वि णं भंते!०' हे भदन्त! सर्वजीवा अपि खलु अस्य जीवस्य अरितया, वैरिकादितया पूर्वमुत्पन्नाः किम्? भगवानाह-'एवमेव'

अब गौतम प्रभु से ऐसा पूछते हैं-' अयं णं भंते! जीवे सव्वजीवाणं अरित्ताए, वेरियत्ताए, घायकत्ताए, पडिणियत्ताए वहगत्ताए, पच्चामित्तत्ताए उववन्नपुव्वे' हे भदन्त! यह जीव सबजीवों का शत्रुरूप से-सामान्यतया अरिरूप से, वैरीरूप से-विशेष शत्रुरूप से, मारकरूप से, वधकरूप से, प्रत्यनीक-कार्योपघातकरूप से, प्रत्यमित्र-शत्रुसहायकरूप से, क्या पहिले उत्पन्न हो चुका है? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-'हंता, गोयमा! हां गौतम! 'जाव अणंतखुत्तो' यावत्-यह एक जीव सर्व-जीवों का शत्रुरूप से, एवं वैरी आदिरूप से, एकबार नहीं, किन्तु अनेकबार और अनन्तबार उत्पन्न हो चुका है।

अब गौतम प्रभु से ऐसा पूछते हैं—' सव्वजीवा वि णं भंते!' हे भदन्त! सबजीव भी क्या इस एक जीव के पहिले शत्रु, वैरी, आदिरूप से, पहिले उत्पन्न हो चुके हैं? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-' एवमेव'

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-" अयं णं भंते! जीवे सव्वजीवाण अरित्ताए, वेरियत्ताए, घायकत्ताए, वहगत्ताए, पडिणियत्ताए, पच्चमित्तत्ताए उववन्नपुव्वे?" હે ભગવન્! આ જીવ, શું સમસ્ત જીવોના શત્રુરૂપે, વૈરીરૂપે, (સામાન્ય શત્રુને અરિ અને વિશેષ શત્રુત્વ રાખનારને વૈરી કહે છે), મારકરૂપે, વધ-કર્તારૂપે, પ્રત્યનીકરૂપે (કાર્યોપઘાતકરૂપે) અને પ્રત્યમિત્રરૂપે (શત્રુના સહાયક-રૂપે) પહેલાં ઉત્પન્ન થઇ ચુક્યો છે?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-" हंता, गोयमा! जाव अणंतखुत्तो" હા, ગૌતમ! આ જીવ સમસ્ત જીવોના શત્રુરૂપે અને વૈરી આદિ રૂપે એક જ વાર નહીં પણ અનેક વાર અથવા અનંતવાર પૂર્વે ઉત્પન્ન થઈ ચુક્યો છે.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-" सव्व जीवा वि णं भंते!" ઇત્યાદિ હે ભગવન્! સમસ્ત જીવો પણ આ જીવના શત્રુ, વૈરી આદિ રૂપે શું પહેલાં ઉત્પન્ન થઈ ચુક્યા છે?

हे गौतम! एवमेव-पूर्वोक्तरीत्यैव ते जीवा अपि अस्य जीवस्य अरितया वैरिकादितया असकृत्, अनन्तकृत्वो वा उत्पन्नपूर्वाः सन्ति। गौतमः पृच्छति-'अयं णं भंते! जीवे सव्वजीवाणं रायत्ताए, जुवरायत्ताए, जाव सत्थवाहत्ताए उववन्नपुव्वे?' हे भदन्त! अयं खलु जीवः सर्वजीवानां राजतया, युवराजतया, यावत्-सार्थवाहतया उपपन्नपूर्वः? पूर्वमुत्पन्नो वर्तते? भगवानाह-'हंता गोयमा! असइं अणंत खुत्तो, सव्वजीवाणं एवंचेव' हे गौतम! हन्त-सत्यम् एको जीवः सर्वजीवानाम् राजत्वादिना असकृत्-अनेकवारम्, अनन्तकृत्वः-अनेकवारम्, उपपन्नपूर्वः-पूर्वमुत्पन्नो वर्तते, एवं सर्वजीवा अपि खलु एवमेव पूर्वोक्तरीत्यैव

हे गौतम! हां, सबजीव इस एक जीव के पहिले शत्रु-वैरी आदि रूप में अनेकवार अथवा अनन्तवार उत्पन्न हो चुके हैं।

अब गौतम प्रभु से ऐसा पूछते हैं-'अयं णं भंते! जीवे सव्वजीवाणं रायत्ताए, जुवरायत्ताए जाव सत्थवाहत्ताए उववन्नपुव्वे' हे भदन्त! यह जीव समस्त जीवोंका राजारूप से, यावत् सार्थवाहरूपसे पहिले उत्पन्न हो चुका है क्या? उत्तर में प्रभु कहते हैं-'हंता, गोयमा! असइं अणंतखुत्तो सव्वजीवाणं एवंचेव' हां, गौतम! यह एक जीव सब जीवों का राजा भी हो चुका है, युवराज भी हो चुका है यावत् सार्थवाह भी हो चुका है! इस प्रकार की परिस्थिति वाला यह एक ही बार नहीं हुआ है, किन्तु अनेकबार अथवा अनन्तबार हुआ है। इसी प्रकार का कथन सर्वजीवों के संबंध में भी जानना चाहिये।

મહાવીર પ્રભુનો જવાબ-"एवमेव" હે ગૌતમ! સમસ્ત જીવો પણ આ જીવના શત્રુ, વૈરી આદિ રૂપે પહેલાં અનેક વાર અથવા અનંતવાર ઉત્પન્ન થઈ ચુકયા છે.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-"अयं णं भंते! जीवे सव्वजीवाणं रायत्ताए, जुवरायत्ताए जाव सत्थवाहत्ताए उववन्नपुव्वे?" હે ભગવન્! આ જીવ શું પહેલાં સમસ્ત જીવોના રાજા રૂપે, યુવરાજ રૂપે અને સાર્થવાહ પર્યન્તના રૂપે પણ ઉત્પન્ન થઇ ચુકયો છે?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-"हंता, गोयमा! असइं अणंत खुत्तो सव्वजीवाणं एवं चेव" હા, ગૌતમ! આ જીવ અનેક વાર અને અનંતવાર, સમસ્ત જીવોના રાજા, યુવરાજ આદિ રૂપે પૂર્વે ઉત્પન્ન થઈ ચુકયો છે. સમસ્ત જીવો પણ આ જીવના રાજા, યુવરાજ આદિ રૂપે પૂર્વે અનેક વાર અથવા અનંતવાર ઉત્પન્ન થઈ ચુકયા છે.

अस्य जीवस्य राजत्वादिना असकृत्–अनन्तकृत्वः, पूर्वमुत्पन्नाः सन्ति। गौतमः पृच्छति–'अयं णं भंते! जीवे सव्वजीवाणं दासत्ताए, भाइल्लगत्ताए, भोगपुरिसत्ताए, सीसत्ताए, वेसत्ताए उववन्नपुव्वे?' हे भदन्त! अयं खलु जीवः सर्वजीवानां दासतया–गृहदासीपुत्रतया, प्रेष्यतया–आज्ञाप्यतया भृतकतया, दुष्कालादौ पोषिततया, भागिकतया–कृष्यादिलाभस्य भागग्राहकतया, भोगपुरुषतया, भागिकतया–अन्यजनोपार्जितार्थानां भोगकारितया शिष्यतया, द्वेष्यतया उपपन्नपूर्वः–पूर्वमुत्पन्नो वर्तते किम्? भगवानाह–'हंता, गोयमा! जाव अणंतखुत्तो, एवं 'सव्वजीवा वि अणंतखुत्तो' हे गौतम! हन्त–सत्यम्, यावत् एको जीवः सर्वजीवानां दासादिकतया असकृत्–अनेकवारम्' अनन्तकृत्वो वा पूर्वमुत्पन्नो वर्तते, एवं–पूर्वोक्तरीत्या सर्वजीवा अपि अस्य जीवस्य दासादिकतया असकृत्, अथवा अनन्तकृत्वः पूर्वमुत्पन्नाः सन्ति। अन्ते गौतमो भग

अब गौतम प्रभु से ऐसा पूछते हैं–'अयं णं भंते! जीवे सव्वजीवाणं दासत्ताए, पेसत्ताए, भयगत्ताए, भाइल्लगत्ताए, भोगपुरिसत्ताए, सीसत्ताए वेसत्ताए, उववन्नपुव्वे' हे भदन्त! यह जीव समस्त जीवों का क्या दास भी हुआ है? दासी के पुत्ररूप से भी हुआ है? प्रेष्य–आज्ञा देने योग्य भी हुआ है? भृतक–दुष्काल आदि में पोषित किया गया भी हुआ है? अन्यजनोपार्जित द्रव्यका भोगकरने वाला भी हुआ है? शिष्यरूप से भी हुआ है? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं–'हंता, गोयमा! जाव अणंतखुत्तो, एवं सव्वजीवा वि अणंतखुत्तो' हां, गौतम! एकजीव सब जीवों का दास आदिरूप से अनेकवार अथवा अनन्तवार उत्पन्न हो चुका है। इस प्रकार का कथन सब जीवों के संबंध में भी जानना चाहिये – अर्थात् – सब जीव इस जीव के अने-

---

गौतम स्वामीनो प्रश्न–"अयं णं भंते! जीवे सव्वजीवाणं दासत्ताए, पेसत्ताए, भयगत्ताए, भाइल्लगत्ताए, भोगपुरिसत्ताए, सीसत्ताए, वेसत्ताए उववन्नपुव्वे?" હે ભગવન્! આ જીવ શું સમસ્ત જીવોના દાસ રૂપે પૂર્વે ઉત્પન્ન થઇ ચુકયો છે? દાસીપુત્ર રૂપે પણ શું ઉત્પન્ન થઈ ચુકયો છે? આજ્ઞાપાલક રૂપે પણ ઉત્પન્ન થયો છે? ભૃતક રૂપે (દુષ્કાળ આદિમાં જેનું અન્યના દ્વારા પોષણ કરાતુ હોય એવા રૂપે) પણ ઉત્પન્ન થઇ ચુકયો છે? ભાગીદાર રૂપે પણ ઉત્પન્ન થઈ ચુકયો છે? અન્ય જનોપાર્જિત દ્રવ્યના ભોગકર્તા રૂપે પણ ઉત્પન્ન થઇ ચુકયો છે? અને શિષ્ય રૂપે ઉત્પન્ન થઇ ચુકયો છે?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર–"हंता, गोयमा! जाव अणंतखुत्तो, एवं सव्व जीवा वि अणंतखुत्तो" હા, ગૌતમ! આ જીવ સમસ્ત જીવોના દાસ આદિ રૂપે અનેક વાર અને અનંતવાર પહેલાં ઉત્પન્ન થઈ ચુકયો છે. એજ પ્રમાણે

वद्वाक्यं प्रमाणयन्नाह-'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरइ' हे भदन्त ! तदेवम्-भवदुक्तं सर्वं सत्यमेव, हे भदन्त ! तदेवं भवदुक्तं सर्वं सत्यमेवेति-यावत् भगवान् गौतमः श्रमणं भगवन्तं महावीरं वन्दमानो नमस्यन् विहरति-तिष्ठति संयमेन तपसा आत्मानं भावयमानः ॥ सू० २ ॥

इति श्री विश्वविख्यात जगद्वल्लभादिपदभूषित बालब्रह्मचारि 'जैनाचार्य' पूज्यश्री घासीलालव्रतिविरचितायां श्री "भगवती" सूत्रस्य प्रमेयचन्द्रिकाख्यायां व्याख्यायां द्वादशशतकस्य सप्तमोद्देशकः समाप्तः ॥सू० १२-७॥

कबार अथवा अनन्तवार दासादिरूप से उत्पन्न हो चुके हैं। अब अन्त में भगवान् के वचनों में सत्यता ख्यापन करने के लिये गौतम कहते हैं-'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरइ' हे भदन्त ! आपका कहा गया यह सब विषय सर्वथा सत्य ही है, हे भदन्त ! आपका कहा गया यह सब विषय सर्वथा सत्य ही है इस प्रकार कहकर भगवान् गौतमने श्रमण भगवान् को वन्दनाकी, उन्हें नमस्कार किया-बाद में वे संयम और तप से आत्मा को भावित करते हुए अपने स्थान पर विराजमान हो गये ॥सू० २॥

जैनाचार्य जैनधर्मदिवाकर पूज्यश्री घासीलालजी महाराज कृत "भगवतीसूत्र" की प्रमेयचन्द्रिका व्याख्याके बारहवें शतकका ॥ सातवां उद्देशक समाप्त ॥१२-७॥

સઘળા જીવો પણ પૂર્વે અનેક અથવા અનંત વાર આ જીવના દાસ આદિ રૂપે ઉત્પન્ન થઈ ચુકયા છે.

હવે સૂત્રનો ઉપસંહાર કરવામાં આવે છે-"सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरइ" ગૌતમ સ્વામી મહાવીર પ્રભુનાં વચનોને પ્રમાણભૂત ગણીને કહે છે કે "હે ભગવન્ ! આપે આ વિષયનું જે પ્રતિપાદન કર્યું, તે સત્ય જ છે. હે ભગવન્ ! આપનું આ કથન સર્વથા સત્ય છે," આ પ્રમાણે કહીને મહાવીર પ્રભુને વંદણા નમસ્કાર કરીને, સંયમ અને તપથી આત્માને યુક્ત કરતા થકા ભગવાન ગૌતમ પોતાને સ્થાને બેસી ગયા. ॥સૂ૦૨॥

જૈનાચાર્ય જૈનધર્મદિવાકર પૂજ્યશ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ કૃત "ભગવતીસૂત્ર"ની પ્રમેયચન્દ્રિકા વ્યાખ્યાના બારમાં શતકનો સાતમો ઉદ્દેશક સમાપ્ત ॥૧૨-૭॥

अथ अष्टमोद्देशकः प्रारभ्यते

द्वादशशतकस्य अष्टमोद्देशकस्य संक्षिप्तविषयविवरणम्।

महर्द्धिकदेवस्य उद्वर्तनानन्तरं द्विशरीरकनागलोकमात्रे उत्पत्तिविषयकप्रश्नोत्तरम्, ततो नागलोके जन्मग्रहणे अर्चनपूजनादिकवक्तव्यतामरूपणम्, तदनन्तरम् महर्द्धिकदेवस्य द्विशरीरकनागजन्मग्रहणानन्तरं द्विशरीरकमणिषु उत्पत्ति मरूपणम्, ततो द्विशरीरकवृक्षेषु उत्पत्तिवर्णनम्, ततो वानरप्रभृतिजीवानां रत्नप्रभायामुत्पत्तिवर्णनम्, ततः सिंहप्रभृतिजीवानामपि नैरयिकत्वेन उत्पत्ति वर्णनं च, ततः काकगृद्ध्र प्रभृतिजीवानामपि नैरयिकतया उत्पत्तिवर्णनमिति ॥

आठवें उद्देशे का प्रारंभ—

बारहवें शतक के इस अष्टम उद्देशक में कहे हुए विषय का विवरण संक्षेप से इस प्रकार है—

महर्द्धिक देव उद्वर्त्तन के बाद तुरत ही क्या दो शरीर को धारण करनेवाले नागों में उत्पन्न होता है? ऐसा प्रश्न और उत्पन्न होता है ऐसा उत्तर नागलोक में जन्म लेने पर अर्चन पूजनादिक की वक्तव्यता की प्ररूपणा महर्द्धिकदेव की दो शरीर नागों में ग्रहण करने के बाद दो शरीरवाले मणियों में उत्पत्ति की प्ररूपणा दो शरीरवाले वृक्षों में उत्पत्ति का वर्णन वानव्यन्तर आदि जीवों की रत्नप्रभा में उत्पत्ति का वर्णन सिंह आदि जीवों की भी नैरयिकरूप से उत्पत्ति का वर्णन काक, गृद्ध्र आदि जीवों की नैरयिकरूप से उत्पत्ति होने का वर्णन ।

આઠમા ઉદ્દેશાનો પ્રારંભ—

આ આઠમાં ઉદ્દેશકમાં જે વિષયનું પ્રતિપાદન કરવામાં આવ્યું છે, તેનો સંક્ષિપ્ત સારાંશ નીચે પ્રમાણે છે—

મહર્દ્ધિક આદિ વિશેષણવાળો દેવ તે ભવસંબંધી આયુષ્ય પૂરું કરીને શું બે શરીરો ધારણ કરનારા નાગોમાં ઉત્પન્ન થાય છે અરો? આ પ્રકારનો પ્રશ્ન અને તેનો હકારમાં ઉત્તર નાગલોકમાં ઉત્પન્ન થયા બાદ તેનું જે અર્ચન પૂજન આદિ થાય છે, તેનું વર્ણન મહર્દ્ધિક દેવની બે શરીરવાળા મણિઓમાં ઉત્પત્તિની પ્રરૂપણા, બે શરીરવાળાં વૃક્ષોમાં તેની ઉત્પત્તિની પ્રરૂપણા વાનવ્યંતર આદિ જીવોની રત્નપ્રભા પૃથ્વીમાં ઉત્પત્તિનું વર્ણન સિંહ આદિ જીવોની પણ નારકો રૂપે ઉત્પત્તિની પ્રરૂપણા કાગડા, ગીધ આદિ જીવોની પક્ષ નારકો રૂપે ઉત્પત્તિની પ્રરૂપણા.

प्रकारान्तरेण जीवोत्पत्तिवक्तव्यता।

मूलम्–"तेणं कालेणं, तेणं समएणं, जाव एवं वयासी–देवेणं भंते ! महिड्ढिए जाव महासोक्खे अणंतरं चयं चइत्ता बिसरीरेसु नागेसु उववज्जेज्जा? हंता, गोयमा! उववज्जेज्जा। से णं तत्थ अच्चियवंदियपूइयसक्कारियसम्माणिए दिव्वे सच्चे सच्चोवाए, संनिहियपाडिहेरे यावि भवेज्जा हंता भवेज्जा। से णं भंते ! तओहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता, सिज्झेज्जा, बुज्झेज्जा जाव अंतं करेज्जा? हंता, सिज्झेज्जा जाव अंतं करेज्जा। देवे णं भंते ! महिड्ढिए, एवं चेव जाव बिसरीरेसु मणीसु उववज्जेज्जा, एवं चेव जहा नागाणं। देवे णं भंते ! महिड्ढिए जाव बिसरीरेसु रुक्खेसु उववज्जेज्जा? हंता उववज्जेज्जा, एवं चेव नवरं इमं नाणत्तं जाव सन्निहियपाडिहेरे लाउल्लो इयमहिते यावि भवेज्जा, सेसं तं चेव जाव अंतं करेज्जा ॥सू० १॥

छाया– तस्मिन् काले, तस्मिन् समये, यावत् एवम् अवादीत् देवः खलु भदन्त ! महर्द्धिको यावत् महासौख्यः अनन्तरं चयं च्युत्वा, द्विशरीरेषु नागेषु उपपद्येत ? हंत, गौतम ! उपपद्येत। स खलु तत्र अर्चितवन्दितपूजितसत्कारित सम्मानितो दिव्यः सत्यः सत्यावपातः सन्निहितपातिहार्यश्चापि भवेत् ? हन्त भवेत्, स खलु भदन्त ! तेभ्यः अनन्तरम् उद्वृत्य, सिध्येत्, बुध्येत्, यावत् अन्तं कुर्यात् ? हन्त, सिध्येत् यावत्–अन्तं कुर्यात्, देवः खलु भदन्त ? महर्द्धिकः एवमेव यावत्–द्विशरीरेषु मणिषु उपपद्येत, एवमेव यथा नागानाम्। देवः खलु भदन्त ! महर्द्धिको यावत्–द्विशरीरेषु वृक्षेषु उपपद्येत ? हन्त, उपपद्येत, एवमेव, नवरम् इदं नानात्वं यावत्–सन्निहितप्रातिहार्यः लापितोल्लोचितमहितश्चापि भवेत् ? शेषं तदेव यावत् अन्तं कुर्यात्। ॥ मू० १ ॥

टीका—पूर्वोद्देशके जीवानामुत्पादः प्ररूपितः, अस्मिन्नपि उद्देशके जीवोत्पादमेव प्रकारान्तरेण प्ररूपयितुमाह–'तेणं काळे णं' इत्यादि, 'तेणं

कालेणं, तेणं समयेणं जाव एवं वयासी' तस्मिन् काले, तस्मिन्समये, यावत् स्वामी समवसृतः, धर्मकथां श्रोतुं पर्षत् निर्गच्छति, धर्मकथां श्रुत्वा प्रतिगता-पर्षत्, ततो विनयेन शुश्रूषमाणो गौतमः प्राञ्जलिपुटः पर्युपासीनः, एवं-वक्ष्य-माणप्रकारेण, अवादीत्-'देवेणं भंते! महड्ढिए जाव महासोक्खे अणंतरं चयं चइत्ता, विसरीरेसु नागेसु उववज्जेज्जा?' हे भदन्त! देवः खलु महर्द्धिकः, यावत्-महाद्युतिकः, महाबलः, महायशा, महासौख्यः, अनन्तरं ततः पश्चात्, चयं शरीरं च्युत्वा-त्यक्त्वा देवभवात् प्रच्युत्येत्यर्थः द्विशरीरेषु-द्वेशरीरे येषां ते द्विशरीरास्तेषु, ये खलु नागशरीरं परित्यज्य मनुष्यशरीरमवाप्य सेत्स्यन्ति, ते द्विशरीराः उच्यन्ते, तथाविधेषु नागेषु भुजङ्गेषु उपपद्येत? भगवानाह-हंता

प्रकारान्तर (दूसरे प्रकार) से जीवोत्पत्ति की वक्तव्यता—

'तेणं कालेणं तेणं समएणं' इत्यादि—

टीकार्थ-सूत्रकार ने इससे पहिले जीवों का उत्पाद कहा है इस उद्देशक में भी वे इसी जीवोत्पाद को प्रकारान्तर से प्ररूपित कर रहे हैं-'तेणं कालेणं तेणं समएणं जाव एवं वयासी' उस काल और उस समय में महावीरस्वामी पधारे उनसे धर्मकथा को सुनने के लिये परिषद उनके पास आई धर्मकथा सुनकर फिर वह वापिस चली गई, इतने में प्रश्न पूछने के अभिलाषी गौतम ने दोनों हाथ जोड़कर बड़े विनय के साथ प्रभु से इसप्रकार पूछा-'देवे णं भंते! महिड्ढिए जाव महासोक्खे अणंतरं चइं चइत्ता विसरीरेसु नागेसु उववज्जेज्जा' हे भदन्त! जो देव महर्द्धिक है यावत् महाद्युतिवाला है, महाबलसंपन्न है, महायशोभिराम है, महासौख्यशाली है, वह देव, देव संबंधी चय-शरीर को छोड़कर अर्थात् देवभव से चव कर, दो शरीरवाले नागों में-भुजङ्गों में

—જીવોની ઉત્પત્તિની બીજે પ્રકારે વક્તવ્યતા—

તેણં કાલેણં તેણં સમએણં" ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ-આગલા સૂત્રમાં સૂત્રકારે જીવોના ઉત્પાદનની પ્રરૂપણા કરી છે હવે આ સૂત્રમાં સૂત્રકાર અન્ય પ્રકારે જીવોત્પાદની પ્રરૂપણા કરે છે-" તેણં કાલેણં તેણં સમએણં જાવ એવં વયાસી" તે કાળે અને તે સમયે રાજગૃહ નામનું નગર હતું તે નગરમા મહાવીર પ્રભુ પધાર્યા પરિષદ નીકળી, ધર્મ-કથા સાંભળીને પરિષદ પાછી ફરી ત્યાર બાદ ધર્મતત્ત્વને સમજવાની અભિ-લાષાવાળા ગૌતમ સ્વામીએ વિનયપૂર્વક બન્ને હાથ જોડીને, મહાવીર પ્રભુને આ પ્રમાણે પ્રશ્ન પૂછયો-" देवेणं भंते! महिड्ढिए जाव महासोक्खे अणंतर चइ चइत्ता विसरीरेसु नागेसु उववज्जेज्जा" હે ભગવન્! જે દેવ મહર્દ્ધિક,

'गोयमा ! उववज्जेज्जा, हे गौतम ! हन्त-सत्यम्, स देवो देवलोकाच्च्युत्वा द्विशरीरेषु नागेषु उपपद्येत, गौतमः पृच्छति-' से णं तत्थ अच्चियवंदियपूइय सक्कारियसम्माणिए दिव्वे सच्चे सच्चोवाए, संनिहियपाडिहेरे यावि भवेज्जा ? हे भदन्त ! स खलु देवो नागेषु, उत्पन्नः सन्, तत्र-नागेषु, अर्चितवन्दित पूजितसत्कारितसम्मानितः-अर्चितश्चासौ वन्दितश्चेत्यादिरीत्या कर्मधारयः कर्त्तव्यः तत्र चन्दनादिना अर्चितः स्तुत्यादिना वन्दितः कायेन पूजितः, वस्त्रादिना

अथवा हाथियों में उत्पन्न हो सकता है ? दो शरीर जिन्हों के हैं वे द्विशरीर हैं नाग के शरीर को छोड़ करके मनुष्य के शरीर को प्राप्त कर जो सिद्ध होंगे वे दो शरीरवाले नाग कहे गये हैं। ऐसा देव क्या ऐसे नागों में उत्पन्न हो सकता है ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-' हंता, गोयमा ! उववज्जेज्जा ' हां गौतम ! ऐसा देव देवलोक से मर कर ऐसे नागों में उत्पन्न हो सकता है।

अब गौतमस्वामी पुनः प्रभु से ऐसा पूछते हैं-' से णं तत्थ अच्चिय वंदिय-पूइयसक्कारियसम्माणिय दिव्वे सच्चे सच्चोवाए संनिहियपाडिहरे यावि भवेज्जा ' नागों में उत्पन्न हुआ वह देव हे भदन्त ! वहां नागों में चन्दनादिद्वारा अर्चित हुआ, स्तुति आदि द्वारा वंदित हुआ, काय द्वारा पूजित हुआ, वस्त्रादि द्वारा सत्कारयुक्त हुआ, विन-

મહાદ્યુતિક, મહાબલસંપન્ન, મહાયશસંપન્ન અને મહાસુખસંપન્ન છે, તે દેવ, દેવસંબંધી શરીરને છોડીને એટલે કે દેવભવમાંથી ચ્યવીને, બે શરીરવાળા નાગોમાં (ભુજગોમાં) ઉત્પન્ન થઇ શકે ખરો ? (જેમને બે શરીર હોય છે, તેમને દ્વિશરીરી કહે છે નાગને બે શરીરવાળા કહેવાનું કારણ એ છે કે તેઓ નાગનું શરીર છોડીને મનુષ્યનું શરીર ધારણ કરીને સિદ્ધિ ગતિની પ્રાપ્તિ કરનારા હોય છે) પ્રશ્નનું તાત્પર્ય એ છે કે મહર્દ્ધિક આદિ વિશેષણોવાળો દેવ પોતાના તે ભવનું આયુષ્ય પૂરું કરીને શું બે શરીર ધારણ કરનારા (બે ભવ કરીને સિદ્ધ પદ પામનારા) નાગોમાં ઉત્પન્ન થઇ શકે છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-"हंता, गोयमा ! उववज्जेज्जा" હા, ગૌતમ ! એવો દેવ દેવલોકમાંથી ચ્યવીને એવા નાગોમાં ઉત્પન્ન થઈ શકે છે.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-" से णं तत्थ अच्चियवंदियपूइयसक्कारियसम्माणिय दिव्वे सच्चे सच्चोवाए संनिहियपाडिहेरे यावि भवेज्जा ?" હે ભગવન્ ! નાગોમાં ઉત્પન્ન થયેલો તે દેવ, શું નાગો દ્વારા ચન્દનાદિ દ્વારા અર્ચિત, સ્તુતિ આદિ દ્વારા વંદિત, કાયા દ્વારા પૂજિત, વસ્ત્રાદિ દ્વારા સત્કારિત અને વિનયાદિ

सत्कारितः विनयादिना सम्मानितः, दिव्यः-प्रधानः, सत्यः-प्रामाणिकः स्वप्नादि प्रकारेण तदुपदिष्टस्य सत्यभूतत्वात्, सत्यः अवपातः वैयावृत्यं सेवा-यस्य स तथाविध सफलसेव, यतोहि-सन्निहितमातिहार्यश्चापि सन्निहितं-निकटवर्ति मातिहार्यं-पूर्वकालिकसुहृद्भूतदेवकृतं प्रतिहारकर्म यस्य स तथाविधः-समीप वर्तिदेवकृतप्रतिहारकर्मा, चापि किं भवेत्? भगवनाह-'हंता, भवेज्जा' हे गौतम! हन्त-सत्यम्, स नागेषु उत्पन्नो देवः तत्र अर्चितादिसन्निहितमातिहार्य-श्चापि भवेत्, गौतमः पृच्छति-'से णं भंते! तओहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता सिज्झे-

यादि द्वारा सम्मानित हुआ, दिव्य-प्रधान हुआ, सत्य-स्वप्नादिरूप से तदुपदिष्ट कथन को सत्यभूत होने से प्रामाणिक हुआ, एवं सफल सेवा-वाला हुआ क्या अपने पूर्वकालिक सुहृद्भूत देवकृत प्रतिहार कर्मवाला होता है? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-हंता, भवेज्जा' हां गौतम! ऐसा होता है। अर्थात् ऐसा देव जब नागों में उत्पन्न होते हैं-तब वहाँ उसकी चन्दनादि से अर्चना भी होती है, लोग उसे चन्दनादि सुगंधि-तद्रव्यों से पूजते हैं, बड़ी २ उसकी स्तुतियां करते हैं, साष्टाङ्ग उसे नमस्कार भी करते हैं, वस्त्रादिकों द्वारा उसका सत्कार भी करते हैं, विनयादि करने से उसका सन्मान भी प्रदर्शित करते हैं, उसे बहुत ऊँचा भी मानते हैं, प्रमाणिक भी मानते हैं-क्योंकि जो स्वप्न वह देता है वह दिया हुआ स्वप्न भी उसका सत्य निकलता है, उसकी जो कोई जिस भावको लेकर सेवा करता है-वह सेवा उसकी सफल भी हो जाती है तथा

દ્વારા સમ્માનિત થાય છે ખરાં? તેને તેઓ પ્રધાન (મુખ્ય) દેવરૂપ ગણે છે ખરાં? તેઓ તેનાં વચનોને સત્ય અને પ્રમાણભૂત ગણે છે ખરાં? શું તે સફલ સેવાવાળો હોય છે ખરો? શું દેવભવમાં તેના સુહૃદ્ભૂત જે દેવો હતા તેઓ તે નાગનું પ્રતિહાર કર્મ (મહિમા અને સત્કાર) કરે છે ખરાં?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-"हंता, भवेज्जा" હા, ગૌતમ! એવું જ બને છે એટલે કે એવો દેવ જ્યારે નાગોમાં ઉત્પન્ન થાય છે, ત્યારે ત્યાં તેની ચન્દનાદિ વડે અર્ચના પણ થાય છે, લોકો ચન્દનાદિ સુગંધિત દ્રવ્યો વડે તેની પૂજા પણ કરે છે, તેની ખૂબ ખૂબ સ્તુતિ કરે છે, તેને સાષ્ટાંગ નમસ્કાર પણ કરે છે, વસ્ત્રાદિકો દ્વારા તેનો સત્કાર પણ કરે છે, વિનયાદિ દ્વારા તેનું સન્માન પણ કરે છે, તેને ઘણો જ ઊંચો (દિવ્ય) માને છે, તેને પ્રમાણિક પણ માને છે-કારણ કે તે જે સ્વપ્ન આપે છે, તે સ્વપ્ન સાચું જ પડે છે, તેની સેવા કરનાર જે ભાવથી તેની સેવા કરે છે, તે તેનો ભાવ તેની સેવા

ज्जा, बुज्झेज्जा जाव अंतं करेज्जा ? हे भदन्त स खलु नागेषु उत्पन्नो देवः, तेभ्यो नागेभ्यः अनन्तरम्-ततः पश्चात्, उद्वृत्य-नागभवं परित्यज्येत्यर्थः किं सिद्ध्येत्-सिद्धिं गच्छेत् ? बुध्येत-बोधं प्राप्नुयात् ? यावत्-सर्वदुःखानामन्तं कुर्यात् ? भगवानाह-'हंता, सिज्झिज्जा जावअन्तं करेज्जा' हे गौतम स नाग-लोकेभ्यः उद्वृत्य, सिध्येत्, यावत् सर्वदुःखानामन्तं कुर्यात् गौतमः पृच्छति-'देवे णं भंते! महड्ढिए एवं चेव जाव विसरीरेसु मणीसु उववज्जेज्जा ?' हे भदन्त! देवः खलु महर्द्धिकः, एवमेव-पूर्वोक्तरीत्या, यावत्-महाद्युतिकः, महाबलः,

देवभव में जो इसके सुहृद्भूत देव होते हैं वे इसका प्रतिहार कर्म (महिमा और सत्कार) भी करते हैं.

अब गौतम प्रभु से ऐसा पूछते हैं-'से णं भंते! तओहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता सिज्झेज्जा, बुज्झेज्जा जाव अंतं करेज्जा' हे भदन्त! नागों में उत्पन्न हुआ वह देव उस नाग की पर्याय को छोडकर क्या सिद्धि को पा सकता है? बोध को प्राप्त कर सकता है? यावत् समस्त दुःखों का नाश कर सकता है? इस के उत्तर में प्रभु कहते हैं-'हंता, सिज्झिज्जा जाव अन्तं करेज्जा' हां, गौतम! वह नागलोक से निकल कर सिद्धिको पा सकता है, यावत् समस्तदुःखों का नाश कर सकता है।

अब गौतम प्रभु से ऐसा पूछते हैं-'देवे णं भंते! महड्ढिए एवं चेव जाव विसरीरेसु मणीसु उववज्जेज्जा' हे भदन्त! जो देव महर्द्धिक यावत्

દ્વારા સફળ થઈ જાય છે દેવભવમાં જે તેના સુહૃદ્‌ભૂત (તેના પ્રત્યે સહાનુ-ભૂતિ રાખનારા) દેવો હતા તેઓ પણ તેનું પ્રતિહાર કર્મ કરે છે એટલે કે તેનો મહિમા ગાય છે અને સત્કાર કરે છે.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-" से णं भंते! तओहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता सिज्झेज्जा, बुज्झेज्जा, जाव अंतं करेज्जा " હે ભગવન્! નાગોમાં ઉત્પન્ન થયેલો તે દેવ શું તે નાગની પર્યાયને છોડીને સિદ્ધિ પ્રાપ્ત કરશે? બુદ્ધ થશે? મુક્ત થશે? અને સમસ્ત દુઃખનો અંત કરી નાખશે?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-हंता, गोयमा! सिज्झेज्जा, जाव अंतं करेज्जा " હા, ગૌતમ! તે દેવ નાગલોકમાંથી નીકળીને સિદ્ધિ પ્રાપ્ત કરી શકશે, બુદ્ધ, મુક્ત આદિ થઈ શકશે અને સમસ્ત દુઃખનો અન્તકર્તા પણ થઈ શકશે.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-" देवेणं भंते! महिड्ढिए एवं चेव जाव विसरीरेसु मणीसु उववज्जेज्जा " હે ભગવન્! મહાઋદ્ધિ, મહાદ્યુતિ, મહાબળ, મહાયશ અને

महयशाः, महासौख्यो द्विशरीरेषु मणिषु- पृथिवीकायरूपेषु ,उपपद्येत ? भगवानाह-'एवंचेव, जहा नागाणं' हे गौतम! एवमेव-पूर्वोक्तरीत्यैव, यथा नागानां प्रतिपादितं तथैव द्विशरीरेषु मणिष्वपि प्रतिपत्तव्यम्। गौतमः पृच्छति-'देवेणं भंते! महड्ढिए जाव विसरीरेसु रुक्खेसु उववज्जेज्जा?' हे भदन्त! देवः खलु महर्द्धिको यावत् महाद्युतिको महाबलः, महायशाः महासौख्यः किम् द्विशरीरेषु वृक्षेषु उपपद्येत! भगवानाह-'हंता, उववज्जेज्जा, एवं चेव' हे गौतम! हन्त, सत्यम् देवो द्विशरीरेषु देवाधिष्ठितवृक्षेषु उपपद्येत, इत्यादि-एवमेव-पूर्वोक्तरीत्यैव अवसेयम्. किन्तु-'नवरं इमं नाणत्तं जाव सन्निहिय

महाद्युतिक, महाबलवाला महायशस्वी, महासुखी, होता है-वह दो शरीरवाले पृथिवी कायरूप मणियों में क्या उत्पन्न हो सकता है? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-'एवंचेव' जहा नागाणं' हे गौतम! जैसा नागों के संबंध में कथन किया गया है, उसी प्रकार का कथन इन मणियों के विषय में भी जानना चाहिये.

अब गौतमस्वामी प्रभु से ऐसा पूछते हैं-'देवेणं भंते! महड्ढिए जाव विसरीरेसु रुक्खेसु उववज्जेज्जा' हे भदन्त! महाऋद्धिवाला यावत् महाद्युतिवाला महाबलवाला, महायशावाला, महासुखवाला, देव क्या दो शरीर वाले वृक्षों में उत्पन्न हो सकता है? उत्तर में प्रभु कहते हैं-'हंता उववज्जेज्जा एवंचेव' हां, गौतम! ऐसा देव दो शरीर वाले देवाधिष्ठित वृक्षों में उत्पन्न होता है इत्यादि सब कथन पूर्वोक्तरीति के अनुसार जानना

મહાસુખથી સંપન્ન હોય એવો દેવ, શું દેવભવ સંબંધી આયુષ્ય પૂરું કરીને બે શરીરવાળા પૃથ્વીકાય રૂપ મણિઓમાં ઉત્પન્ન થઇ શકે છે?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-"एवं चेव जहा नागाणं" હે ગૌતમ! નાગોના વિષયમાં જેવું કથન કરવામાં આવ્યું છે, એવું જ કથન આ મણિઓના વિષયમાં પણ કરવું જોઇએ.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-"देवेणं भंते! महड्ढिए जाव विसरीरेसु रुक्खेसु उववज्जेज्जा?" હે ભગવન્! મહાઋદ્ધિવાળો, મહાદ્યુતિવાળો, મહાયશવાળો અને મહાસુખવાળો દેવ, શું દેવભવ સંબંધી આયુષ્ય પૂરું થતાં બે શરીરવાળાં વૃક્ષોમાં ઉત્પન્ન થઇ શકે છે ખરો?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-"हंता, उववज्जेज्जा, एवं चेव" હા, ગૌતમ! એવો દેવ બે શરીરવાળાં દેવાધિષ્ઠિત વૃક્ષોમાં ઉત્પન્ન થઈ શકે છે. બાકીનું સમસ્ત કથન પૂર્વોક્ત નાગવિષયક કથન અનુસાર સમજવું. "नवरं इमं

पाडिहेरे लाउल्लोइयमहिए यावि भवेज्जा ?' नवरम्-पूर्वापेक्षया विशेषस्तु-इद नानात्वम्-भेदः, यावत्- अर्चितवन्दितपूजितसत्कारितसम्मानितो दिव्यः सत्यः सत्यावपातः सन्निहितप्रातिहार्यः, लाञ्छितोल्लोचितमहितम्-तत्र लाञ्छितं-छगणादिना भूमेर्लेपनम्, उल्लोचितं सोटिकादिना कुड्यादेर्धवलनम्, ताभ्यां महित इव महितः पूजित इव कृतो भवेत् यः स तथाविधः, एतच्च विशेषणं वृक्षस्य पीठापेक्षया बोध्यम्, विशिष्टवृक्षो बद्धपीठो भवतीति भावः, 'सेसं तंचेव जाव, अंतं करेज्जा' शेषं तदेव-पूर्वोक्तरीत्यैव, यावत्-सिद्धयेत्, बुध्येत, मुच्येत, सर्वदुःखानमन्तं कुर्यादिति ॥सू० १॥

चाहिये। किन्तु 'नवरं इमं नाणत्तं जाव सन्निहियपाडिहेरे लाउल्लोइयमहिए यावि भवेज्जा' पूर्वकथन की अपेक्षा इस कथन में इतनी विशेषता समझनी चाहिये कि-जिस वृक्ष में ऐसा देव उत्पन्न होता है वह वृक्ष अर्चित, वन्दित, पूजित, सत्कारित, सन्मानित, दिव्य, प्रामाणिक, एवं सत्यावपात होता हुआ अपने पूर्वकालिक सुहृद्भूत देव द्वारा कृत प्रतिहार कर्मवाला होता है-और साथ में बद्धपीठवाला होता है इस की भूमि गोबर आदि से लिपी रहती है, एवं मिट्टी आदि से पुती रहती है। यह तो जाहिर है कि जो विशिष्ट वृक्ष होता है वह बद्धपीठवाला होता है। 'सेसं तं चेव जाव अंतं करेज्जा' बाकी का और सब कथन पहिले हीजैसा जानना चाहिये यावत् वह सिद्धिको पासकता है, समस्त कर्मों से रहित हो सकता है और समस्त दुःखोंका अन्त कर सकता है॥सू.१॥

नाणत्तं जाव सन्निहिपाडिहेरे, लाउल्लोइयमहिए यावि होज्जा" पूर्व કથન કરતાં વૃક્ષવિષયક આ કથનમાં એવી વિશેષતા છે કે-જે વૃક્ષમાં એવો દેવ ઉત્પન્ન થાય છે, તે વૃક્ષ અર્ચિત, વંદિત, પૂજિત, સત્કારિત, સન્માનિત, દિવ્ય, પ્રામાણિક અને સત્યાવપાત, અને પોતાના પૂર્વકાલિક (દેવભના) સુહૃદ્ભૂત દેવો દ્વારા પ્રતિહાર કર્મવાળું પણ હોય છે. અને સાથે સાથે બદ્ધપીઠવાળું પણ હોય છે એટલે કે તેની આસપાસ ગોળાકારનું ચણતર કરેલું હોય છે અને તેની ભૂમિને છાણ આદિ વડે લીંપવામાં આવે છે અને માટી આદિ વડે લીંપવામાં આવે છે એ વાત તો જાહેર જ છે કે વિશિષ્ટ વૃક્ષ હોય છે, તે બદ્ધપીઠવાળું હોય છે. "सेसं तंचेव जाव अंतं करेज्जा" બાકીનું સમસ્ત કથન નાગવિષયક કથન જેવું જ છે કહેવાનું તાત્પર્ય એ છે કે તે દેવ, એ શરીરવાળા વૃક્ષોમાં ઉત્પન્ન થઇને ત્યાંથી નીકળીને (મરીને) સિદ્ધ, બુદ્ધ, મુક્ત, અને સમસ્ત દુઃખોનો અતકર થઈ શકે છે. ॥સૂ૦૧॥

तिर्यग्योनिविशेषवक्तव्यता।

मूलम्–"अह भंते! गोलंगुलवसभे, कुक्कुडवसभे, मंडुक्क वसभे, एए णं निस्सीला, निव्वया, निग्गुणा, निम्मेरा निप्पच्चक्खाणपोसहोववासा कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उक्कोसेणं सागरोवमट्ठितियंसि नरगंसि नेरइयत्ताए उववज्जेज्जा? समणे भगवं महावीरे वागरेइ–उववज्जमाणे उववन्ने त्ति वत्तव्वं सिया, अह भंते! सीहे वग्घे जहा उस्सप्पिणी उद्देसए जाव परस्सरे एए णं निस्सीला एवं चेव, जाव वत्तव्वं सिया। अह भंते! ढंके, कंके, विलए, मग्गुए सिखिए, एए णं निस्सीला० सेसं तं चेव जाव वत्तव्वं सिया। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति जाव विहरइ॥सू० २॥

छाया—अथ भदन्त! गोलाङ्गुलवृषभः' कुक्कुटवृषभः, मण्डुक वृषभः, एते खलु निःशीलाः, निर्व्रताः, निर्गुणाः, निर्मर्यादाः निष्प्रत्याख्यानपौषधोपवासाः, कालमासे कालं कृत्वा अस्यां रत्नप्रभायां पृथिव्याम् उत्कृष्टेन सागरोपमस्थितिकेनरकेनैरयिकतया उपपद्येरन्? श्रमणो भगवान् महावीरो व्याकरोति–उत्पत्स्यमानः उत्पन्नः इति वक्तव्यं स्यात्। अथ भदन्त! सिंहः, व्याघ्रः यथा उत्सर्पिण्युद्देशके यावत्–परासरः, एते खलु निःशीलाः, एवमेव यावत् वक्तव्यं स्यात्? अथ भंते! ढंकः, कङ्कः, विलयः, मण्डूकः, शिखी एते खलु निःशीलाः, शेषं तदेव यावत् वक्तव्यं स्यात्, तदेवं भदन्त! तदेवं भदन्त! इति यावत्–विहरति॥ सू० २॥

टीका—अथ वानरादि तिर्यग्योनिकानामुत्पत्तिविषयं प्रतिपादयन्नाह–'अह भंते इत्यादि'

तिर्यग्योनि विशेषवक्तव्यता—

'अह भंते! गोलंगुलवसभे' इत्यादि।

તિર્યંગ્યોનિ વિશેષ વક્તવ્યતા—

"अह भंते! गोलंगुलवसभे" इत्यादि—

गौतमः पृच्छति–'अह भंते ! गोलंगूलवसभे कुक्कुडवसभे, मण्डूक्कवसभे, एएणं निस्सीला, निव्वया, निग्गुणा, निम्मेरा, निप्पच्चक्खाणपोसहोववासा' हे भदन्त ! अथ–गोलाङ्गूलवृषभः–गोलीङ्गूलमिव लाङ्गूलं येषां ते गोलांङ्गूलाः वानरास्तेषां मध्ये वृषभो महान् श्रेष्ठो वा, वृषभशब्दस्य प्रशस्तवाचकत्वात्, एवं कुक्कुटवृषभः–कुक्कुटानां मध्ये वृषभः प्रशस्तो महान् वा, तथैव मण्डूक वृषभः–मण्डूकानां मध्ये वृषभः श्रेष्ठो महान् वा, एते त्रयः खलु निःशीलाः–सदाचाररहिताः, निर्व्रताः–अणुव्रतरहिताः, निर्गुणाः–गुणव्रतैः रहिताः निर्मर्यादाः–मर्यादारहिताः, निष्प्रत्याख्यानपौषधोपवासाः–प्रत्याख्यानपौषधोपवासरहिता एते 'कालमासे कालं किच्चा, इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उक्कोसेणं सागरोवमट्ठिइयंसि नरगंसि नेरइयत्ताए उववज्जेज्जा ?' कालमासे कालं कृत्वा,

टीकार्थ–इस सूत्र द्वारा सूत्रकार ने वानर आदि तिर्यंच जीवों की उत्पत्ति के विषय में कथन किया है–इसमें गौतमने प्रभु से ऐसा पूछा है– 'अह भंते ! गोलंगुलवसभे, कुक्कुडवसभे, मंडुक्कवसभे, एएणं निस्सीला, निव्वया, निग्गुणा, निम्मेरा, निप्पच्चक्खाणपोसहोववासा' हे भदंत ! गोलाङ्गूल वृषभ (गोके पूंछ जैसा पूंछवाला यूथपति बन्दर), कुक्कुटवृषभ एवं मंडूक वृषभ ये तीन निःशील–सदाचार रहित होकर, निर्व्रत–अणुव्रतरहित होकर, निर्गुण–गुणव्रतरहित होकर, निर्मर्याद–मर्यादारहित होकर तथा प्रत्याख्यान एवं पौषधोपवासरहित होकर 'कालमासे कालं किच्चा' मरण समय में मर कर 'इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उक्कोसेणं सागरोवमट्ठिइयंसि नरगंसि नेरइयत्ताए उववज्जेज्जा' इस रत्नप्रभापृथिवी में उत्कृष्ट से एक सागरोपम की स्थितिवाले नरक

ટીકાર્થ–આ સૂત્ર દ્વારા સૂત્રકારે વાનર આદિ તિર્યંચ જીવોની ઉત્પત્તિના વિષયમાં પ્રરૂપણા કરી છે. આ વિષયને અનુલક્ષીને ગૌતમ સ્વામી મહાવીર પ્રભુને એવો પ્રશ્ન–પૂછે છે કે–" अह भंते ! गोलंगुलवसभे कुक्कुडवंसभे, मंडुकवसभे, एएणं निस्सीला, निव्वया, निग्गुणा, निम्मेरा, निप्पच्चक्खाणपोसहोववासा " હે ભગવન્ ! ગોલાંગૂલવૃષભ (ગાયના પૂંછડા જેવી પૂંછડીવાળો યૂથપતિ વાનર), કુકકુટવૃષભ, અને મંડૂકવૃષભ, આ ત્રણે નિઃશીલ (સદાચાર રહિત), નિર્વ્રત–અણુવ્રતરહિત, નિર્ગુણ–ગુણવ્રતરહિત, નિર્મર્યાદ–મર્યાદારહિત, તથા પ્રત્યાખ્યાન અને પૌષધોપવાસરહિત, "कालमासे काल किच्चा " જીવન વ્યતીત કરીને મોતનો અવસર આવે કાળધર્મ પામીને "इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उक्कोसेणं सागरोवमट्ठिइयसि नरगंसि नेरइयत्ताए

अस्यां रत्नप्रभायां पृथिव्याम् उत्कृष्टेन, सागरोपमस्थितिके-सागरोपमायुक्ते नरके नैरयिकतया कथम् उपपद्येरन् ? भगवानाह-'समणे भगवं महावीरे वागरेइ-उववज्जमाणे उववन्ने त्ति वत्तव्वं सिया' गोलाङ्गूलादीनाम् सम्प्रति तिर्यग्योनौ वर्तमानत्वेन यस्मिन् काले ते गोलाङ्गूलादयो वर्तन्ते, न तस्मिन् काले ते नारकाः सन्ति अतः कथं ते नारकतया उत्पद्येरन् ? इति त्वया नाशङ्कनीयम् यतः उत्पत्स्यमानः उत्पन्नः इति वक्तव्यं स्यात्, वर्तमानक्रियाकालभाविकालयो रभेदात्,

में नैरयिक रूप से क्या उत्पन्न हो सकते हैं ? 'समणे भगवं महावीरे वागरेइ, उववज्जमाणे उववन्ने त्ति वत्तव्वं सिया' इस पर श्रमण भगवान् महावीर ने ऐसा कहा-हां, गौतम ! वे सब नैरयिक रूप से उत्पन्न हो सकते हैं। तात्पर्य कहने का ऐसा है कि "जिस समय गोलाङ्गूल आदि तिर्यग्योनि में गोलाङ्गूल आदि की पर्याय में मौजूद हैं-तबतक वे-उस कालमें नारक नहीं हैं, अतः वे नारकरूप से उत्पन्न हो सकते हैं-ऐसा कैसे कहा जा सकता है" सो ऐसी आशंका तुम्हें नहीं करनी चाहिये क्यों कि "उत्पत्स्यमान उत्पन्नः" होनेवाला होता है-वह उत्पन्न हो चुका है" इस नियम के अनुसार भविष्य में नारकरूप से उत्पन्न होनेवाले वे अभी वर्तमान में भी नारकरूप से उत्पन्न हुए मान लिये जाते हैं। वर्तमान क्रियाकाल और भाविक्रियाकाल इन दोनों

उववज्जेज्जा ?" આ રત્નપ્રભા પૃથ્વીમાં એક સાગરોપમની ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિવાળા નારકોમાં નૈરયિક રૂપે શું ઉત્પન્ન થઈ શકે છે ?

"समणे भगवं महावीरे वागरेइ, उववज्जमाणे, उववन्ने, त्ति वत्तव्वं सिया" શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે આ પ્રશ્નના જવાબ રૂપે એવું કહ્યું કે હા, ગૌતમ ! તેઓ બધાં નારક રૂપે ઉત્પન્ન થઈ શકે છે, કારણ કે જેઓ ઉત્પન્ન થનારા હોય છે તેમને માટે એવું કથન પણ કરી શકાય છે કે "જે સમયે ગોલાંગૂલ આદિ તિર્યંગ્યોનિમાં ગોલાંગૂલ આદિની પર્યાયમાં મોજૂદ હોય છે, ત્યારે તો તેઓ નારક હોતા નથી, તેથી તેઓ નારક રૂપે ઉત્પન્ન થઈ ચુકયા છે, એવું કથન કેવી રીતે કરી શકાય ?" આ પ્રકારની આશંકા કરવી જોઈએ નહીં કારણ કે "उत्पत्स्यमानः उत्पन्नः" "જે ઉત્પન્ન થવાના હોય છે, તે ઉત્પન્ન થઈ ચુકયા છે," આ નિયમ અનુસાર ભવિષ્યમાં નારક રૂપે ઉત્પન્ન થનારા તે ગોલાંગૂલવૃષભ આદિ જીવોને વર્તમાન કાળે પણ નારક રૂપે ઉત્પન્ન થયેલા માની લેવામાં આવે છે. વર્તમાન ક્રિયાકાળ અને ભાવિક્રિયા કાળ, આ બન્નેમાં વિવક્ષાને અધીન અભેદ માની લેવામાં આવે છે તેથી

अतस्ते गोलाङ्गूलादयो नैरयिकतया उत्पत्तुकामा अपि नैरयिका एव व्यपदिश्यन्ते इति श्रमणो भगवान् महावीरः स्वयं व्याकरोति-व्याख्याति, नतु जमालयादिरित्यवसेयम् । गौतमः पृच्छति-'अह भंते ! सीहे वग्घे जहा उस्सप्पिणी उद्देसए जाव परस्सरे, एएणं निस्सीला ?' हे भदन्त ! अथ सिंहः, व्याघ्रः, यथा उत्सर्पिण्युद्देशके-सप्तमशतकस्य षष्ठोद्देशके प्रतिपादितं तथैवात्रापि प्रतिपत्तव्यम्, यावत्-भल्लूकः, तरक्षुः खड्गी, परासरः शरभः, एते खलु सिंहप्रभृतयः परासरान्ताः पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनयः, निःशीलाः-सदाचाररहिताः, निर्व्रताः-अणुव्रत-

---

में विवक्षा के अधीन अभेद मान लिया जाता है। इसलिये वे गोलाङ्गूल आदि जीव नैरयिक रूप से आगे उत्पन्न होने के कारण अभीसे नैरयिक ही हैं ऐसा उनमें व्यपदेश हो जाता है। गाय की पूंछ के समान जिन की पूंछ होती है-वे गोलाङ्गूल हैं और इनमें जो वृषभ-श्रेष्ठ हैं वे गोलाङ्गूलवृषभ हैं। यहां वृषभ शब्द प्रशस्त अर्थ का वाचक है। कुक्कुटवृषभ आदि पदों में भी ऐसा ही जानना चाहिये। इस प्रकार का यह कथन स्वयं भगवान् महावीर ने ही किया है-जमालि आदिकों ने नहीं।

अब गौतम प्रभु से ऐसा पूछते हैं-' अह भंते ! सीहे, वग्घे, जहा उस्सप्पिणी उद्देसए जाव परस्सरे ' एएणं निस्सीला० हे भदन्त ! सिंह, व्याघ्र, एवं उत्सर्पिणी उद्देशक में सप्तमशतक के छठे उद्देशक में-प्रतिपादित यावत् भल्लूक, तरक्षु खड्गी, परासर, शरभ ये सब सिंह से लेकर परासर तक के पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनि के जीव सदाचाररहित, अणुव्रतर-

---

ગોલાંગૂલવૃષભ આદિ જીવ નારકો રૂપે ભવિષ્યમાં ઉત્પન્ન થવાના હોવાથી, "નારકો જ છે" એવો વ્યવહાર વર્તમાન કાળે પણ તેમના માટે કરી શકાય છે. ગાયની પૂછડી જેવું જેને પૂંછડું હોય છે એવા વાનરોના સમૂહના નાયક રૂપ વાનરને ગોલાંગૂલવૃષભ કહે છે અહીં વૃષભ પદ પ્રશસ્ત અર્થનું વાચક છે. કુક્કુટવૃષભ આદિનો અર્થ પણ એવો જ સમજવો. આ પ્રકારનું કથન ખુદ મહાવીર ભગવાને કર્યું છે, જમાલિ આદિ દ્વારા આ પ્રકારનું કથન કરાયું નથી

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-"अह भंते! सीहे, वग्घे, जहा उस्सप्पिणी उद्देसए जाव परस्सरे, एएणं निस्सीला०" હે ભગવન્! સિંહ, વાઘ અને સાતમાં શતકના છઠ્ઠા ઉત્સર્પિણી ઉદ્દેશકમાં પ્રતિપાદિત રીંછ, તરસ, ગેંડા, પરાસર, શરભ, ઈત્યાદિ પંચેન્દ્રિય તિર્યંગ્યોનિક જીવો કે જેઓ સદાચાર રહિત,

रहिताः, निर्गुणाः गुणव्रतैः रहिताः, निर्मर्यादाः, निष्प्रत्याख्यानपौषधोपवासाः प्रत्याख्यानपौषधोपवासरहिताः, कालमासे कालं कृत्वा, अस्यां रत्नप्रभायां पृथिव्याम्, उत्कृष्टेन सागरोपमस्थितिके नरके नैरयिकतया कथम् उपपद्येरन् ? भगवानाह–'एवं चेव जाव वत्तव्वं सिया' एवमेव–पूर्वोक्तरीत्या, यावत्–उत्पत्स्यमानः उत्पन्न इति वक्तव्यं स्यात्, तथा च वर्तमानक्रियाकाल भाविकाल-योरभेदात् नैरयिकतया उत्पत्स्यमाना अपि सिंहादयः सम्प्रति पञ्चेन्द्रियतिर्यग्यो नौ वर्तमाना अपि नैरयिका एव व्यपदिश्यन्ते इति भावः। गौतमः पृच्छति–'अह भंते ? ढंके, कंके, विलए, मग्गुए सिखिए, एएणं निस्सीला ?' हे भदन्त!

हित, गुणव्रतरहित, मर्यादारहित एवं प्रत्याख्यान पौषधोपवासरहित होकर मरणसमय में मर कर इस रत्नप्रभा पृथिवी में उत्कृष्ट से एक सागर की स्थितिवाले नरक में क्या नारकरूप से उत्पन्न हो सकते हैं? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं–'एवं चेव जाव वत्तव्वं सिया' हे गौतम! उत्पत्स्यमान जो होता है वह उत्पन्न हुआ माना जाता है इस सिद्धान्त के अनुसार वर्तमान क्रियाकाल और भाविक्रियाकाल में अभेद होने के कारण नैरयिक रूप से आगे उत्पन्न होने वाले भी सिंहादिक इस समय यद्यपि पंचेन्द्रियतिर्यग्योनि में वर्तमान हैं, फिर भी नैरयिकरूप से ही कहे गयेहैं। अतः नैरयिक ही नैरयिक रूप से उत्पन्न होते हैं ऐसा सिद्ध होता है।

अब गौतम प्रभु से ऐसा पूछते हैं–'अह भंते! ढंके, कंके, विलए, मग्गुए, सिखीए एएणं निस्सीला०' हे भदन्त! ढङ्क–गृध्र, कंक–काक,

અણુવ્રતરહિત, ગુણવ્રતરહિત, મર્યાદારહિત અને પ્રત્યાખ્યાન તથા પોષધોપવાસથી રહિત હોય છે, તેઓ કાળનો અવસર આવે કાળધર્મ (મરણ) પામીને આ રત્નપ્રભા પૃથ્વીમાં એક સાગરોપમની ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિવાળા નારકોમાં નૈરયિક રૂપે ઉત્પન્ન થઈ શકે છે ખરાં ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર–"एवं चेव जाव वत्तव्वं सिया" હે ગૌતમ! "જે ઉત્પત્સ્યમાન હોય છે, તેને ઉત્પન્ન થયેલા માનવામાં આવે છે," આ સિદ્ધાંત અનુસાર વર્તમાન ક્રિયાકાળ અને ભાવિ ક્રિયાકાળમાં અભેદ હોવાને કારણે નારકો રૂપે ભવિષ્યમાં ઉત્પન્ન થનારા સિંહાદિકોને લે કે તેઓ હાલમાં પંચેન્દ્રિય તિર્યંગ્યોનિમા રહેલા છે–છતાં પણ નારકો રૂપે જ કહેવામાં આવે છે. તેથી એ વાત સિદ્ધ થાય છે કે નારકો જ નારક રૂપે ઉત્પન્ન થાય છે.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન–"अह भंते! ढंके, कंके, विलए, मग्गुए, सिखीए, एएणं निस्सीला०" હે ભગવન્! ગીધ, કાગડા, વિલય (પક્ષી વિશેષ),

ढङ्कः-गृध्रः, काकः-वायसः, विलकः-पक्षिविशेषः, मद्गुकः, शिखी-मयूरः, एते खलु ढङ्कादयः शिखिपर्यन्ताः पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनयः, निःशीलाः, निर्व्रताः, निर्गुणाः निर्मर्यादाः, निष्प्रत्याख्यानपौषधोपवासाः कालमासे कालं कृत्वा, अस्यां रत्नप्रभायां पृथिव्याम् उत्कृष्टेन सागरोपमस्थितिके नरके कथं नैरयिकतया उपपद्येरन्? भगवानाह-'सेसं तं चेव जाव वत्तव्वं सिया' हे भदन्त! शेषं तदेव-पूर्वोक्तरीत्यैव, यावत्-उत्पत्स्यमानः उत्पन्न इतिवक्तव्यं स्यात्, तथा च सम्प्रति गृध्रादयः पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनौ वर्तमाना अपि वर्तमानक्रियाकालभाविकालयोरभेदात्, नैरयिकतया उत्पत्स्यमाना अपि, नैरयिका एव व्यपदिश्यन्ते इतिभावः।

विलय-पक्षिविशेष, मद्गुक और शिखी तक के पंचेन्द्रियतिर्यञ्चजीव निःशील, निर्व्रत, निर्गुण, निर्मर्याद, निष्प्रत्याख्यानपोषधोपवासवाले हुए कालमास में काल करके इस रत्नप्रभापृथिवी में उत्कृष्ट से एक सागरोपम की स्थितिवाले नरक में क्या नैरयिक रूप से उत्पन्न हो सकते हैं? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-'सेसं तं चेव जाव वत्तव्वं सिया' हे गौतम! यहां पर भी 'जो उत्पद्यमान होता है वह उत्पन्न हुआ माना जाता है' इस सिद्धान्तके अनुसार वर्तमान क्रियाकाल और भाविक्रियाकाल में अभेद माना जाने के कारण नैरयिक रूप से उत्पन्न होने वाले भी ये ढङ्कादिक जीव इस समय यद्यपि पंचेन्द्रियतिर्यग्योनि में वर्तमान है, फिर भी नैरयिकरूप से ही कहे गये हैं। अब अन्त में गौतम प्रभु के वचन को प्रमाणित करते हुए ऐसा कहते हैं-

---

મુદ્ગશક (પક્ષીવિશેષ) અને મોર, આ પંચેન્દ્રિય તિર્યંગ્ યોનિક જીવો કે જે નિઃશીલ, નિર્વ્રત, નિર્ગુણ, નિર્મર્યાદ અને નિષ્પ્રત્યાખ્યાન પોષધોપવાસવાળા હોય છે, એટલે કે સદાચાર આદિથી રહિત હોય છે, તેઓ શું કાળનો અવસર આવે કાળ કરીને આ રત્નપ્રભા પૃથ્વીમાં એક સાગરોપમની ઉત્કૃષ્ટ-સ્થિતિવાળા, નારકો રૂપે ઉત્પન્ન થઈ શકે છે ખરાં?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-"सेसं तंचेव जाव वत्तव्वयं सिया" હે ગૌતમ! અહીં પણ "જેઓ ઉત્પદ્યમાન હોય છે, તેમને ઉત્પન્ન થઈ ચુકેલા માનવામાં આવે છે." આ સિદ્ધાંત અનુસાર વર્તમાન ક્રિયાકાળ અને ભાવિક્રિયાકાળમાં અભેદ માનીને પંચેન્દ્રિય તિર્યંગ્યોનિમાં રહેલા તે ગીધ આદિ જીવોને નારકો રૂપ જ કહેવામાં આવ્યા છે, કારણ કે તેઓ નારકો રૂપે ઉત્પન્ન થવાના છે. "सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति जाव विहरइ" ઉદ્દેશકનો ઉપસંહાર કરવા માટે

अन्ते गौतमः भगवद् वाक्यं प्रमाणयन्नाह-'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरइ' हे भदन्त ! तदेवम्-भवदुक्तं सत्यमेव, हे भदन्त ! तदेवम्-भवदुक्तं सत्यमेवेति, यावत्-भगवान् गौतमो विहरति । ॥ सू० २ ॥

॥ इति श्री विश्वविख्यात-जगद्वल्लभ-प्रसिद्धवाचक पञ्चदशभाषा-
कलितललितकलापालापकप्रविशुद्धगद्यपद्यनैकग्रन्थनिर्मापक
वादिमानमर्दक श्री शाहू छत्रपति कोल्हापुरराजप्रदत्त-
'जैनाचार्य' पदभूषित—कोल्हापुरराजगुरु-
बालब्रह्मचारि—जैनाचार्य—जैनधर्मदिवाकर
-पूज्य श्री घासीलालव्रतिविरचितायां
श्री "भगवतीसूत्रस्य" प्रमेयचन्द्रिका-
ख्यायां व्याख्यायां द्वादशशतके
अष्टमोद्देशकः समाप्तः ॥१२-८॥

'सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति जाव विहरइ' हे भदन्त! आपका कहा हुआ यह सब विषय सर्वथा सत्य ही है, हे भदन्त! आपका कहा हुआ यह सब विषय सर्वथा सत्य ही है,इस प्रकार कहकर वे गौतम यावत् अपने स्थान पर विराजमान हो गये ॥सू० २॥

जैनाचार्य जैनधर्मदिवाकर पूज्यश्री घासीलालजी महाराज कृत
"भगवतीसूत्र" की प्रमेयचन्द्रिका व्याख्याके बारहवें शतक का
॥ अष्टम उद्देशक समाप्त १२-८ ॥

સૂત્રકાર આ કથન દ્વારા મહાવીર પ્રભુનાં વચનોની પ્રમાણ ભૂતતાનું પ્રતિપાદન કરે છે. "હે ભગવન્! આ વિષયનું આપે જે પ્રતિપાદન કર્યું તે સત્ય જ છે. હે ભગવન્! આપનું આ કથન સર્વથા યથાર્થ જ છે," આ પ્રમાણે કહીને, પ્રભુને વંદણાનમસ્કાર કરીને, પોતાના આત્માને સંયમ અને તપથી યુક્ત કરતા થકા ગૌતમ સ્વામી પોતાના સ્થાને વિરાજમાન થઇ ગયા. ॥સૂ૦૨॥

જૈનાચાર્ય જૈનધર્મદિવાકર પૂજ્યશ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ કૃત
"ભગવતીસૂત્ર" ની પ્રમેયચન્દ્રિકા વ્યાખ્યાના બારમા શતકનો
આઠમો ઉદ્દેશક સમાપ્ત ॥૧૨-૮॥

अथ नवमोद्देशकः प्रारभ्यते—

द्वादशशतके नवमोद्देशकस्य संक्षिप्तविषयविवरणम्-

देवानां भव्यद्रव्यदेवादिप्रकारप्ररूपणम्, भव्यद्रव्यदेवादि व्यपदेशकारण-प्ररूपणम्, नरदेव-धर्मदेव-देवाधिदेव-भावदेवा-भव्यद्रव्यदेवाः कुतः आगत्य उत्पद्यन्ते ? इत्यादि प्ररूपणम्, नरदेवः कुत आगत्योत्पद्यते ? रत्नप्रभा पृथिवीषु कस्याः नरकपृथिव्याः आगत्योत्पद्यन्ते ? अथवा भवनवासिप्रभृतिदेवेभ्यः कस्माद्देवादागत्योत्पद्यते ? धर्मदेवः कुतः आगत्योत्पद्यते ? देवाधिदेवः कुत आगत्योत्पद्यते ? रत्नप्रभादिनरक पृथिवीषु कस्याः नरकपृथिव्याः आगत्य उत्प-

---

नववें उद्देशे का प्रारंभ—

बारहवें शतक के इस नौवें उद्देशक में जो विषय कहा गया है उसका संक्षेप से विवरण इस प्रकार है—देवों में भव्य द्रव्य देवादि प्रकारों की प्ररूपणा भव्यद्रव्य देव आदिरूप के व्यपदेश होने के कारण की प्ररूपणा नरदेव, धर्मदेव, देवाधिदेव, भावदेव और भव्य द्रव्यदेव ये कहां से आकर उत्पन्न होते हैं ? ऐसी प्ररूपणा नरदेव कहां से आकरके उत्पन्न होता है? रत्नप्रभा आदि पृथिवियों में से किस पृथिवी से आकर वह उत्पन्न होता है? अथवा—भवनवासी आदि देवों में से किस देव में से वह आकर उत्पन्न होता है। धर्मदेव कहां से उत्पन्न होता है रत्न-प्रभा आदि पृथिवियों में से किस नरक पृथिवी में से आकर के उत्पन्न

નવમા ઉદ્દેશાનો પ્રારંભ—

બારમાં શતકના આ નવમાં ઉદ્દેશકમાં પ્રતિપાદિત વિષયનો સંક્ષિપ્ત સારાંશ નીચે પ્રમાણે છે-

દેવોના ભવ્યદ્રવ્યદેવ આદિ પાંચ પ્રકારોનું કથન ભવ્યદ્રવ્યદેવ આદિ રૂપે તેમને માનવાનું કારણ-નરદેવ, ધર્મદેવ, દેવાધિદેવ, ભાવદેવ અને દ્રવ્ય દેવ તેઓ કયાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે, આ પ્રશ્નના જવાબનું નિરૂપણ નરદેવ કયાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? રત્નપ્રભા આદિ સાત નારકપૃથ્વીઓ-માંની કોઈ એક નારકપૃથ્વીમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે, અથવા ભવનવાસી આદિ દેવોમાંથી આવીને તે ત્યાં ઉત્પન્ન થાય છે ? ધર્મદેવ કયાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? દેવાધિદેવ કયાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? શું તે નરક

धते ? किं देवेषु सर्ववैमानिकदेवेभ्यः आगत्योत्पद्यते ? भावदेवः कुतः आगत्य उत्पद्यते ? इत्यादि प्रश्नः, भव्यद्रव्यदेवानां स्थितिप्ररूपणम्, नरदेवानां स्थिति प्ररूपणम्, धर्मदेवानां स्थितिप्ररूपणं, देवाधिदेवानां स्थितिप्ररूपणम्, भावदेवानां स्थितिप्ररूपणम् च, ततो भव्यद्रव्यदेवानां विकुर्वणाशक्तिप्ररूपणम्, देवाधिदेवानां विकुर्वणाशक्तिनिरूपणं च, ततो भव्यद्रव्यदेवानाम् उद्वर्तनानन्तरं भवान्तरोत्पत्तिविचारः, नरदेवानां चोद्वर्तनानन्तरं भवान्तरोत्पत्तिविचारः, धर्मदेवानामुद्वर्तनानन्तरं भवान्तरोत्पत्तिनिचारश्च, ततो धर्मदेवानां देवविशेषेषु उत्पत्तिप्ररूपणम्, देवाधिदेवानां चोद्वर्तनानन्तरं भवान्तरोत्पत्तिविचारः, भावदेवानामुद्व-

---

होता है ? भाव देव कहां से आकर के उत्पन्न होता है ? इत्यादि प्रश्न भव्य द्रव्यदेवों की स्थिति की प्ररूपणा नरदेवों की स्थिति की प्ररूपणा धर्मदेवों की स्थिति की प्ररूपणा देवाधिदेवों की स्थिति की प्ररूपणा भावदेवों की स्थिति की प्ररूपणा भव्यद्रव्यदेवों की विकुर्वणाशक्ति की प्ररूपणा देवाधिदेवों की विकुर्वणाशक्ति की प्ररूपणा भावदेवों की विकुर्वणाशक्ति की प्ररूपणा भव्यद्रव्यदेवों की उद्वर्त्तना के बाद भवान्तर में उत्पत्ति का विचार नरदेवों की उद्वर्त्तना के बाद भवान्तर में उत्पत्ति का विचार धर्मदेवों की देवविशेषों में उत्पत्ति का विचार देवाधिदेवों की उद्वर्त्तना के बाद भवान्तर में उत्पत्ति का विचार भावदेवों की उद्वर्त्तना के बाद भवान्तर में उत्पत्ति का विचार भव्यद्रव्यदेवों की काल की अपेक्षा से स्थिति का विचार भव्यद्रव्यदेवों का कितने कालतक अन्तर रहता है ऐसा कथन नरदेवों का परस्पर में कितने कालतक

પૃથ્વીઓમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? કે ભવનવાસી દેવોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? કે શું તે સર્વવૈમાનિક દેવોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? ભાવદેવ કયાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? ઈત્યાદિ પ્રશ્નો અને તેમના ઉત્તરોની પ્રરૂપણા ભવ્યદ્રવ્યદેવોની સ્થિતિની પ્રરૂપણા નરદેવોની સ્થિતિની પ્રરૂપણા ધર્મદેવોની સ્થિતિની પ્રરૂપણા દેવાધિદેવોની સ્થિતિની પ્રરૂપણા ભાવદેવોની સ્થિતિની પ્રરૂપણા ભવ્યદ્રવ્યદેવોની વિકુર્વણા શક્તિની પ્રરૂપણા દેવાધિદેવોની વિકુર્વણાશક્તિની પ્રરૂપણા ભાવદેવોની વિકુર્વણાશક્તિની પ્રરૂપણા ભવ્યદ્રવ્યદેવોની ઉદ્વર્ત્તના (તે ભવમાંથી ચ્યવન) થયા બાદ ભવાન્તરમાં ઉત્પત્તિવિષયક પ્રરૂપણા ધર્મદેવોની, નરદેવોની અને ભાવદેવોની ઉદ્વર્ત્તના બાદ ભવાન્તરમાં ઉત્પત્તિ થવા વિષેની પ્રરૂપણા ધર્મદેવોની દેવવિશેષોમાં ઉત્પતિ

र्तनानन्तरं भवान्तरोत्पत्तिविचारश्च, तदनन्तरम् भव्यद्रव्यदेवानां कालापेक्षया स्थितिप्ररूपणम्, ततो भव्यद्रव्यदेवानां कियत्कालमन्तरं भवतीति प्ररूपणम्, नरदेवानां परस्परं कियन्तं कालमन्तरं भवति ? इति प्रश्नः, धर्मदेवानां परस्परं कियन्तं कालमन्तरं भवतीति प्ररूपणम्, देवाधिदेवानां परस्परमन्तरविचारः, भावदेवानां परस्परमन्तरविचारश्च, ततश्च भव्यद्रव्यदेवादीनां परस्परमल्पबहुत्वप्ररूपणमिति ॥

द्वादशशतके नवमोद्देशकः

देववक्तव्यता।

मूलम्–"कइ विहाणं भंते! देवा पण्णत्ता? गोयमा! पंचविहा देवा पण्णत्ता, तं जहा–भवियदव्वदेवा१, नरदेवा२, धम्मदेवा३, देवाहिदेवा४, भावदेवा५। से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ–भवियदव्व देवा, भवियदव्वदेवा? गोयमा! जे भविया पंचिंदियतिरिक्खजोणिया वा, मणुस्सा वा, देवेसु उववज्जित्तए, से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ–भवियदव्वदेवा, भवियदव्वदेवा। से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ–नरदेवा, नरदेवा? गोयमा! जे इमे रायाणो चाउरंतचक्कवट्टी उप्पन्नसमत्तचक्करयणप्पहाणा, नवनिहिपइणो समिद्धकोसा बत्तीसं रायवरसहस्साणुजायमग्गा सागरवरमेहलाहिवइणो मणुस्सिंदा, से तेणट्ठेणं जाव

अन्तर रहता है ऐसा विचार देवाधिदेवों के परस्पर के अन्तर का विचार भावदेवों के परस्पर के अन्तर का विचार इसके बाद भव्यद्रव्यदेव आदिकों के परस्पर में अल्प बहुत्व की प्ररूपणा।

દેવોના વિરહકાળની (એજ ભવપ્રાપ્તિમાં જે કાળનું અંતર પડે છે તેને વિરહકાળ કહે છે) પ્રરૂપણા નરદેવોમાં પરસ્પરમાં કેટલા કાળનું અન્તર રહે છે, તેની પ્રરૂપણા દેવાધિદેવોમાં પરસ્પરમાં કેટલા કાળનું અંતર રહે છે, તેની પ્રરૂપણા ભાવદેવોમાં પરસ્પરમાં કેટલા કાળનું અંતર રહે છે, તેની વિચારણા ભવ્યદ્રવ્યદેવ આદિ પાંચે પ્રકારના દેવોના અલ્પબહુત્વનું નિરૂપણ.

नरदेवा। से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—धम्मदेवा, धम्मदेवा? गोयमा ! जे इमे अणगारा भगवंता ईरिया समिया जाव गुत्तबंभयारी, से तेणट्ठेणं जाव धम्मदेवा, धम्मदेवा। से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—देवाधिदेवा, देवाधिदेवा? गोयमा ! जे इमे अरिहंता भगवंतो उप्पन्ननाणदंसणधरा जाव सव्वदरिसी, से तेणट्ठेणं जाव देवाधिदेवा, से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—भावदेवा, भावदेवा? गोयमा ! जे इमे भवणवइवाणमंतरजोइसवेमाणिया देवा देवगतिनामगोयाइं कम्माइं वेदेंति, से तेणट्ठेणं जाव भावदेवा ॥सू० १॥

छाया—कतिविधाः खलु भदन्त ! देवाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! पञ्चविधाः देवाः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा—भव्य द्रव्यदेवाः१, नरदेवाः२, धर्मदेवाः३, देवाधिदेवाः४, भावदेवाः५। तत् केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते—भव्यद्रव्यदेवाः, भव्यद्रव्यदेवाः? गौतम ! ये भव्याः पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिका वा, मनुष्या वा देवेषु उपपत्तुम्, तत् तेनार्थेन गौतम ! एवमुच्यते—भव्यद्रव्यदेवाः, भव्यद्रव्यदेवाः ? तत् केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते—नरदेवाः, नरदेवाः ? गौतम ! ये इमे राजानश्चातुरन्तचक्रवर्तिनः, उत्पन्नसमस्तचक्ररत्नप्रधानाः नवनिधिपतयः समृद्धकोशाः, द्वात्रिंशद्राजवरसहस्रानुयातमार्गा, सागरवरमेखलाधिपतयो मनुष्येन्द्राः तत्तेनार्थेन यावन्नरदेवाः। तत् केनार्थेन भदंत ! एवं उच्यते धर्मदेवाः धर्मदेवाः। गौतम ये इमे अनगारा भगवंता ईरियासमिताः यावत् गुप्त ब्रह्मचारी तत् तेनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते—धर्मदेवाः, धर्मदेवाः ? गौतम ! ये इमे अनगारा भगवन्तः ऐर्यासमितिका यावत् गुप्तब्रह्मचारिणः, तत् तेनार्थेन यावत् धर्मदेवाः, धर्मदेवाः, तत् केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते—देवाधिदेवाः, देवाधिदेवाः? गौतम ! ये इमे अर्हन्तो भगवन्तः उत्पन्नज्ञानदर्शनधराः यावत् सर्वदर्शिनः, तत् तेनार्थेन यावत्—देवाधिदेवाः, देवाधिदेवाः। तत् केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते—भावदेवा, भावदेवा ? गौतम ! ये इमे भवनपतिवानव्यन्तरज्योतिषिकवैमानिका देवाः देवगति नामगोत्राणि कर्माणि वेदयन्ति, तत् तेनार्थेन यावत्—भावदेवाः ॥सू० १॥

टीका—पूर्वोद्देशके देवस्य नागादिलोकेषु उत्पत्तेः प्ररूपितत्वेन, तत्प्रस्तावात् नवमोद्देशके देवानामेव प्ररूपणार्थम् नामद्वारमाह—'कइ विहाणं भंते' इत्यादि,

'कइ विहाणं भंते ! देवा पण्णत्ता ?' हे भदन्त ! कतिविधाः कियत्प्रकाराः खलु देवाः प्रज्ञप्ताः? भगवानाह-'गोयमा ! पंचविहा देवा पण्णत्ता' हे गौतम ! पञ्चविधाः देवाः प्रज्ञप्ताः, तत्र दीव्यन्ति-क्रीडादिकं कुर्वन्ति इति देवाः, दीव्यन्ते वा स्तूयन्ते आराध्यतयेति देवाः, तानेव पञ्चविधान् देवानाह-'तं जहा-भविय दव्व देवा१, नरदेवा२, धम्मदेवा३, देवाहिदेवा४ भावदेवा५' तद्यथा-भव्यद्रव्य-देवाः१, नरदेवाः२, धर्मदेवा३, देवाधिदेवाः४, भावदेवा ५, अथार्थद्वारमाह-

देववक्तव्यता—

'कइविहाणं भंते ! देवा पण्णत्ता' इत्यादि।

टीकार्थ-पूर्व उद्देशक में देवकी नागादिलोकों में उत्पत्ति प्ररूपित की गई है इस कारण उसके सम्बन्धको लेकर इस नौवें उद्देशक में देवों की ही प्ररूपणा के लिये नामद्वार की प्ररूपणा की गई है इसमें गौतम ने प्रभु से ऐसा पूछा है-'कइविहा णं भंते देवा पण्णत्ता' हे भदन्त ! देव कितने प्रकार के कहे गये हैं ? उत्तर में प्रभु कहते हैं-' गोयमा ! पंचविहा देवा पण्णत्ता, हे गौतम ! देव पांच प्रकार के कहे गये हैं ! ' दीव्यन्ते-क्रीडा-दिकं कुर्वन्ति, इति देवाः, दीव्यन्ते वा स्तूयन्ते आराध्यतया इति देवाः' देव शब्द की इस व्युत्पत्ति के अनुसार विविध प्रकार की क्रीडा करने-वाले जो होते हैं, वे देव हैं या जो जनता द्वारा आराध्यरूप से स्तुति के विषयभूत किये जाते हैं वे देव हैं-ऐसे ये देव पांच प्रकार के कहे गये हैं-'तं जहा' जो इस प्रकार से हैं-' भविषद्रव्यदेवा,१ नरदेवा,२ धर्मदेवा,३ देवाहिदेवा,४ भावदेवा५' भव्यद्रव्यदेव१, नरदेव२, धर्मदेव३, देवाधिदेव४, भावदेव५,

—દેવવક્તવ્યતા—

" कइ विहाणं भंते ! देवा पण्णत्ता " ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ-પૂર્વોદ્દેશકમાં નાગકુમાર આદિ દેવલોકોમાં ઉત્પત્તિની પ્રરૂપણા કરવામાં આવી છે. આ પ્રકારના પૂર્વોદ્દેશક સાથેના સંબંધને લીધે સૂત્રકારે આ નવમાં ઉદ્દેશકમાં દેવોની જ પ્રરૂપણા કરી છે. આ વિષયને અનુલક્ષીને ગૌતમ સ્વામી મહાવીર પ્રભુને એવો પ્રશ્ન પૂછે છે કે-" कइविहाणं भंते ! देवा पण्णत्ता? "

હે ભગવન્ ! દેવોના કેટલા પ્રકાર કહ્યા છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-" गोयमा ! पंचविहा देवा पण्णत्ता " હે ગૌતમ ! દેવોના પાંચ પ્રકાર કહ્યા છે. " तंजहा " તે પ્રકારો નીચે પ્રમાણે છે- " भवियद्व्वदेवा, नरदेवा, धम्मदेवा, देवाहिदेवा, भावदेवा " (૧) ભવ્યદ્રવ્ય

गौतमः पृच्छति 'से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ-भवियदव्वदेवा, भवियदव्वदेवा ?' हे भदन्त ! तत्-अथ, केनार्थेन, एवमुच्यते-भव्यद्रव्यदेवाः, भव्यद्रव्य देवाः ? इति, भव्यद्रव्यदेवशब्दस्य कोर्थः इति प्रश्नः, भगवानाह-'गोयमा ! जे भविया पंचिंदियतिरिक्खजोणिया वा, मणुस्सा वा, देवेसु उववज्जित्तए' हे गौतम ! ये भव्याः-योग्याः खलु पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिका वा, मनुष्या वा, देवेषु उपपत्तुम्-जन्मग्रहीतुं, योग्या भवन्ति इति पूर्वेणान्वयः तथा च भविष्यत्काले देवत्वप्राप्तिकर्तारो जीवाः भव्यदेवाः उच्यन्ते, इति भावः, 'से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ-भवियदव्वदेवा, भवियदव्वदेवा' हे गौतम ! तत्-अथ, तेनार्थेन-तेन कारणेन, एवम्-उक्तरीत्या, उच्यते-भव्यद्रव्यदेवाः, भवद्रव्यदेवाः इति,

अब गौतम प्रभु से इस प्रकार से पूछते हैं-'से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ, भवियदव्वदेवा, भवियदव्वदेवा' हे भदन्त ! 'भव्यद्रव्यदेव' इस शब्द का क्या अर्थ है ? अर्थात् भव्यद्रव्यदेव किसे कहते हैं? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-'गोयमा ! जे भविया पंचिंदियतिरिक्खजोणिया वा मणुस्सा वा देवेसु उववज्जित्तए' हे गौतम ! जो पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिक अथवा मनुष्य, देवों में जन्म ग्रहण करने के लिये योग्य होते हैं-अर्थात् जो जीव भविष्यत् काल में देवत्व की प्राप्ति करनेवाले हैं ऐसे जीव भव्य द्रव्य देव कहे गये हैं। 'से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ, भवियदव्वदेवा, भवियदव्वदेवा' इस कारण हे गौतम ! मैंने देवों के प्रकार में इस भव्यद्रव्यदेव का ग्रहण किया है।

દેવ, (૨) નરદેવ, (૩) ધર્મદેવ, (૪) દેવાધિદેવ, અને (૫) ભાવદેવ. દેવ શબ્દની વ્યુત્પત્તિ આ પ્રકારની છે-"दीव्यन्ते-क्रीडादिकं कुर्वन्ति, इति देवाः, दीव्यन्ते वा स्तूयन्ते आराध्यतया इति देवाः" આ વ્યુત્પત્તિ અનુસાર "જેઓ વિવિધ પ્રકારની ક્રીડા કરનારા હોય છે, તેમને દેવો કહેવામાં આવે છે. "અથવા" લોકો દ્વારા આરાધ્ય રૂપે જેમની સ્તુતિ કરવામાં આવે છે, તેમને દેવો કહે છે."

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-"से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ, भवियदव्वदेवा, भवियदव्वदेवा?" હે ભગવન્ ! દેવોના એક પ્રકારને 'ભવ્યદ્રવ્યદેવ' નામ શા કારણે આપવામાં આવ્યું છે ? એટલે કે 'ભવ્યદ્રવ્યદેવ' આ પદનો અર્થ શો થાય છે અને ભવ્યદ્રવ્યદેવ કોને ગણવામાં આવે છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-"गोयमा ! जे भविया पंचिंदियतिरिक्खजोणिया, वा मणुस्सा वा, देवेसु उववज्जित्तए" હે ગૌતમ ! જે પંચેન્દ્રિયતિર્યંચ યોનિક અથવા મનુષ્ય, દેવોમાં જન્મ ગ્રહણ કરવાને યોગ્ય હોય છે-એટલે કે જે જીવ ભવિષ્યમાં દેવત્વની પ્રાપ્તિ કરવાનો છે, તે જીવને ભવ્યદ્રવ્ય કહે છે.

गौतमः पृच्छति–'से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ–नरदेवा, नरदेवा?' हे भदन्त! तत्–अथ, केनार्थेन–केन कारणेन, एवमुच्यते–नरदेवाः नरदेवाः इति? नरदेवशब्दस्य कोऽर्थः इति प्रश्नः, नराणां मध्ये देवाः–आराध्याः, कान्त्यादियुक्ता वा, नराश्च ते देवताश्चेति वा नरदेवा इत्यभिप्रायेण भगवानाह–'गोयमा! जे इमे रायाणो चाउरंतचक्कवट्टी उप्पन्न समत्तचक्करयणप्पहाणा, नवनिहिपइणो, समिद्धकोसा, बत्तीसं रायवरसहस्साणुजायमग्गा सागरवरमेह-लाहिवइणो मणुस्सिंदा' हे गौतम! ये इमे राजानः चातुरन्तचक्रवर्तिनः चतुर्दिगन्तस्वामिनः, उत्पन्नसमस्तचक्ररत्नप्रधानाः–प्राप्तसर्वरत्नप्रधानचक्ररत्नाः,

---

अब गौतम प्रभु से ऐसा पूछते हैं–'से केणट्ठेणं भंते। एवं वुच्चइ–नरदेवा नरदेवा' हे भदन्त! आप नरदेव नरदेव ऐसा कहते हैं–सो इस नरदेव शब्द का क्या अर्थ है–अर्थात् नरदेव किसको कहते हैं? इसके उत्तर में प्रभु इस अभिप्राय से कि "मनुष्यों के बीच में जो आराध्य हो, अथवा कान्त्यादिगुणों से जो युक्त हो, या नररूप से जो देव जैसा हो वह नरदेव है" उत्तर में गौतम से प्रभु कहते हैं–'गोयमा! जे इमे रायाणो चाउरंतचक्कवट्टी, उप्पन्नसम्मत्तचक्करयणप्पहाणा, नवनिहिपइणो, समिद्धकोसा, बत्तीसं रायवरसहस्साणुजायमग्गा, सागरवर मेहलाहिवइणो मणुस्सिंदा' हे गौतम! जो ये चारदिशाओं के स्वामी होते हैं, जिन्हें सर्वरत्नों में प्रधान चक्ररत्न–प्राप्त होता है, जो नौं

"से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ, भवियद्दव्वदेवा, भवियद्दव्वदेवा" હે ગૌતમ! તે કારણે મેં દેવોના એક પ્રકારનું નામ "ભવ્યદ્રવ્યદેવ" કહ્યું છે.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન–"से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ, नरदेवा, नरदेवा" હે ભગવન્! આપે દેવોના બીજા પ્રકારનું નામ "નરદેવ" શા કારણે કહ્યું છે? એટલે કે નરદેવનો શો અર્થ થાય છે? અને કોને નરદેવ કહેવામાં આવે છે?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર–મનુષ્યોમાં જેઓ આરાધ્ય ગણાતાં હોય છે, અથવા કાન્તિ આદિ ગુણોથી જેઓ યુક્ત હોય છે, અથવા નરરૂપે જન્મ ધારણ કરવા છતાં પણ જેઓ દેવતુલ્ય છે, તેમને નરદેવ કહેવામાં આવે છે. આ વાત સૂત્રકારે નીચેના સૂત્રપાઠ દ્વારા વ્યક્ત કરી છે–"गोयमा! जे इमे रायाणो चाउरंतचक्कवट्टी, उप्पन्नसमत्तचक्करयणप्पहाणा, नवनिहिपइणो, समिद्ध कोसा, बत्तीसं रायवरसहस्साणुजायमग्गा, सागरवरमेहलाहिवइणो मणुस्सिंदा" હે ગૌતમ! જેઓ ચાર દિશાઓના સ્વામી હોય છે, સર્વ રત્નોમાં પ્રધાન એવાં

नवनिधिपतयः-नवनिधीनां स्वामिनः, समृद्धकोशाः-परिपूर्णभाण्डागाराः, द्वात्रिंशद्राजवरसहस्रानुयातमार्गाः - द्वात्रिंशत्सहस्रसंख्यकश्रेष्ठराजानुसृतपन्थानः, सागरवरमेखलाधिपतयः-महासागररूपश्रेष्ठमेखलापर्यन्तपृथिवीस्वामिनः, मनुष्येन्द्राः भवन्ति, ते एव नरदेवा इत्युच्यन्ते, इत्यभिप्रायेणाह-' से तेणट्ठेणं जाव नरदेवा, नरदेवा ' हे गौतम ! तत्-तेनार्थेन, यावत् एवमुच्यते-नरदेवाः, नरदेवाः इति । गौतमः पृच्छति-' से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ-धम्मदेवा, धम्मदेवा ? हे भदन्त ? तत्-अथ, केनार्थेन-केन कारणेन, एवमुच्यते धर्मदेवाः धर्मदेवाः इति ? धर्मदेवशब्दस्य कोर्थः ? इति प्रश्नः, धर्मेण-श्रुतादिना देवाः, धर्मप्रधाना वा देवाः धर्मदेवाः उच्यन्ते इत्यभिप्रायेण भगवानाह-' गोयमा !

निधियों के स्वामी होते हैं, जिनका भाण्डागार सदा परिपूर्ण बना रहता है, ३२ हजार श्रेष्ठ राजा जिनकी आज्ञा के वशवर्ती रहा करते हैं महासागररूप श्रेष्ठ मेखलावाली इस समस्त भूमीपर जिनका अखण्ड साम्राज्य छाया रहता है, ऐसे जो मनुष्येन्द्र-चक्रवर्ती छहखण्ड-५ म्लेच्छखण्ड और एक आर्यखण्ड-पृथिवी के स्वामी होते हैं वे ही नर-देव-कहलाते हैं। ' से तेणट्ठेणं जाव नरदेवा ' इसी कारण हे गौतम! ऐसे मानवरत्न नरदेव कहे गये हैं।

अब गौतम प्रभु से ऐसा पूछते हैं-' से केणट्ठेणं भंते। एवं वुच्चइ, धम्मदेवा धम्मदेवा ' हे भदन्त। ये धर्मदेव हैं ये धर्मदेव हैं ऐसा आप किस कारण से कहते हैं ? अर्थात् धर्मदेव का शब्दार्थ क्या है ? इसके उत्तर में "श्रुतादि को लेकर जो देव-आराध्य बने हैं अथवा धर्मकी प्रधानता से

ચક્રરત્નની જેમને પ્રાપ્તિ થઈ હોય છે, જેઓ નવ નિધિઓના સ્વામી હોય છે, જેમનો ભંડાર સદા ભરપુર રહે છે, બત્રીસ હજાર શ્રેષ્ઠ રાજાઓ જેમની આજ્ઞાને આધીન હોય છે, મહાસાગર રૂપ શ્રેષ્ઠ મેખલા (કંદોરા)વાળી આ સમસ્ત ભૂમિ પર જેમનું અખંડ સામ્રાજ્ય વ્યાપેલું રહે છે, જેઓ ૬ ખંડ (પાંચ મ્લેચ્છખંડો અને એક આર્યખંડ) પૃથ્વીના સ્વામી હોય છે, એવાં મનુષ્યેન્દ્રને (ચક્રવર્તીને) જ " નરદેવ " કહેવામાં આવે છે. " से तेणट्ठेणं जाव नरदेवा " હે ગૌતમ! તે કારણે મેં દેવોના એક પ્રકારને " નરદેવ " રૂપે ઓળખાવ્યો છે. એટલે કે મનુષ્યોમાં રત્નસમાન અથવા દેવતુલ્ય પુરુષોને ' નરદેવ ' કહેવામાં આવે છે.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-" से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ, धम्मदेवा, धम्मदेवा " હે ભગવન્! આપે દેવોનો " ધર્મદેવ " એવો ત્રીજો પ્રકાર શા કારણે

जे इमे अणगारा भगवन्तो ईरियासमिया जाव गुत्तबंभयारी' हे गौतम ! ये इमे खलु अनगाराः-श्रमणाः, भगवन्तः, ऐर्यासमिताः-ईर्यासमितियुक्ताः, यावत्-भाषासमितियुक्ताः, एषणासमितियुक्ताः, आदानभाण्डामत्रनिक्षेपणासमितियुक्ताः, उच्चारप्रस्रवण-श्लेष्मसिंघाणजल्लपरिष्ठापनासमितियुक्ताः उत्तमक्षमा मार्दवार्जवशौचसत्यसंयमतपस्त्यागाकिञ्चन्ययुक्ताः गुप्ताः, गुप्तेन्द्रियाः गुप्त-ब्रह्मचारिणो भवन्ति, ते एव धर्मदेवाः इत्युच्यन्ते इत्यभिप्रायेणाह-'से तेणट्ठेणं जाव धम्मदेवा, धम्मदेवा' तत्-अथ, तेनार्थेन-तेन कारणेन खलु यावत्-एव-मुच्यते-धर्मदेवाः, धर्मदेवाः इति । गौतमः पृच्छति-से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ देवाहिदेवा, देवाहिदेवा ? हे भदन्त ! तत् अथ, केनार्थेन-केन कारणेन, एवमु-

---

जो देव बने हैं" इस अभिप्राय से प्रभु कहते हैं-'गोयमा ! जे इमे अणगारा भगवंतो ईरियासमिया जाव गुत्तबंभयारी' हे गौतम ! जो ये अनगार-श्रमण भगवन्त हैं कि जो ईर्यासमिति से युक्त हैं, यावत् भाषासमिति से युक्त हैं, एषणासमिति से युक्त हैं, आदान भाण्डामत्रनिक्षेपणसमिति से युक्त हैं, उच्चारप्रस्रवण-श्लेष्म-सिंघाण-जल्लपरिष्ठापनासमिति से युक्त हैं, उत्तमक्षमा-मार्दव-आर्जव-शौच-सत्य-संयम-तप-अकिंचन ब्रह्मचर्य इन दश धर्मों से युक्त हैं, गुप्त हैं, गुप्तेन्द्रियवाले हैं, गुप्तब्रह्म-चारी हैं-वे ही धर्मदेव हैं अतः 'से तेणट्ठेणं जाव धम्मदेवा २' इस कारण से मैं ने उन्हें धर्मदेव शब्द का वाच्यार्थ कहा है।

अब गौतम प्रभु से ऐसा पूछते हैं-'से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ-देवाहिदेवा, देवाहिदेवा' हे भदन्त ! आप किस कारण से देवाधिदेव२

કહ્યો છે ? એટલે કે 'ધર્મદેવ' પદનો શો અર્થ થાય છે, અને આપ કોને ધર્મદેવ કહો છો ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-" गोयमा ! जे इमे अणगारा भगवंतो ईरियास-मिया जाव गुत्तबंभयारी" ઈર્યાસમિતિથીયુક્ત, ભાષાસમિતિથીયુક્ત, એષણા-સમિતિથીયુક્ત, આદાનભાંડામત્રનિક્ષેપણાસમિતિથીયુક્ત, ઉચ્ચાર-પ્રસ્રવણ-શ્લેષ્મ-સિંઘાણ-જલ્લપરિષ્ઠાપના સમિતિથીયુક્ત, તથા ઉત્તમ ક્ષમા-માર્દવ-આર્જવ-શૌચ-સત્ય-સંયમ-તપ-ત્યાગ-અકિંચનતા-અને બ્રહ્મચર્ય રૂપ દસ ધર્મોથી યુક્ત, ગુપ્ત, ગુપ્તેન્દ્રિય અને ગુપ્તબ્રહ્મચારી, એવા જે શ્રમણ ભગવંતો છે, તેમને જ 'ધર્મદેવ' કહેવામાં આવે છે. તે કારણે જ હે ગૌતમ ! મેં દેવોનો ત્રીજો પ્રકાર 'ધર્મદેવ' કહ્યો છે.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-" से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ, देवाहिदेवा, देवाहिदेवा" હે ભગવન્ ! આપે શા કારણે દેવોના ચોથા પ્રકારનું નામ

च्यते-देवाधिदेवाः, देवाधिदेवाः इति ? देवाधिदेवशब्दस्य कोऽर्थः इति प्रश्नः, देवानां मध्ये पारमार्थिकदेवत्वयोगादधिकाः देवाः देवाधिदेवाः इत्यभिप्रायेणाह-'गोयमा ! जे इमे अरिहंता भगवंतो उप्पन्ननाणदंसणधरा जाव, सव्वदरिसी' हे गौतम ! ये इमे अर्हन्तः-जिनेश्वराः, भगवन्तः, उत्पन्नज्ञानदर्शनधराः केवलिनः, यावत्-वीतरागाः सर्वज्ञाः सर्वदर्शिनः सन्ति, ते एव देवाधिदेवा उच्यन्ते, इत्यभिप्रायेण उपसंहरन्नाह-'से तेणट्ठेणं जाव देवाहिदेवा, देवाहिदेवा' हे गौतम ! तत्-अथ, तेनार्थेन-तेन कारणेन, यावत्-एवमुच्यते-देवाधिदेवाः देवाधिदेवाः इति। गौतमः पृच्छति-'से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ-भावदेवा, भावदेवा ?' हे भदन्त ! तत् अथ, केनार्थेन-केन कारणेन, एवमुच्यते-भावदेवाः भावदेवाः

ऐसा कहते हैं-अर्थात् देवाधिदेव शब्द का अर्थ क्या है ? उसके उत्तर में प्रभु इस अभिप्राय से कि "जो देवों के बीच में पारमार्थिक देवत्व के योग से अधिकरूप में देव होते हैं वे देवाधिदेव हैं" गौतम से कहते हैं-'गोयमा ! जे अरिहंता भगवंता, उप्पन्ननाणदंसणधरा जाव सव्वदरिसी' हे गौतम ! जो ये अर्हन्त भगवन्त हैं कि जो उत्पन्न केवलज्ञान और केवलदर्शन के धारी हैं-केवली हैं यावत्-वीतराग हैं, सर्वज्ञ हैं, सर्वदर्शी हैं, वे ही देवाधिदेव कहलाते हैं-'से तेणट्ठेणं जाव देवाहिदेवा' देवाहिदेवा, इसी कारण से मैं ने उन्हें देवाधिदेव कहा है।

अब गौतम स्वामी प्रभु से ऐसा पूछते हैं-'से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ भावदेवा भावदेवा' हे भदन्त ! ऐसा आप किस कारण से कहते हैं कि ये भावदेव हैं, ये भावदेव हैं ? अर्थात् भावदेव इस शब्द का

'देवाधिदेव' કહ્યું છે ? એટલે કે આપ દેવાધિદેવ કોને કહો છો ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-જેમને પારમાર્થિક દેવત્વના યોગથી, દેવો પણ પોતાના દેવ રૂપે સ્વીકારે છે, તેમને દેવાધિદેવ કહે છે. એજ વાત નીચેના સૂત્રપાઠ દ્વારા સૂત્રકારે પ્રકટ કરી છે. "जे इमे अरिहंता भगवंता, उप्पन्ननाणदंसणधरा, जाव सव्वदरिसी" હે ગૌતમ ! ઉત્પન્ન કેવળજ્ઞાન અને કેવળદર્શનના ધારક, વીતરાગ, સર્વજ્ઞ અને સર્વદર્શી એવાં અર્હંત ભગવાનોને 'દેવાધિદેવ' કહેવામાં આવે છે. "से केणट्ठेणं जाव देवाहिदेवा, देवाहिदेवा" હે ગૌતમ ! તે કારણે મેં તેમને-સર્વજ્ઞ અર્હંત ભગવાનોને-દેવાધિદેવ કહ્યા છે.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-"से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ, भाव देवा, भावदेवा?" હે ભગવન્ ! આપે શા કારણે દેવોના પાંચમા પ્રકારને "ભાવદેવ" નામ આપ્યું છે ? એટલે કે 'ભાવદેવ' પદનો શો અર્થ થાય છે અને આપ કોને ભાવદેવ કહો છો ?

इति ? भावदेवशब्दस्य कोऽर्थः ? इति प्रश्नः, भावेन–देवगत्यादिकर्मोदयजात-पर्यायेण देवाः भावदेवा उच्यन्ते, इत्यभिप्रायेण भगवानाह–'गोयमा ! जे इमे भवणवइवाणमंतरजोइसवेमाणिया देवा देवगइनामगोयाइं कम्माइं वेदेंति' हे गौतम ! ये इमे भवनपति–वानव्यन्तर–ज्योतिषिक–वैमानिका देवा देवगति-नामगोत्राणि कर्माणि देवगतिसम्बन्धिनामगोत्रकर्माणि वेदयन्ति–अनुभवन्ति यस्मादतस्ते भावदेवा उच्यन्ते, इत्यभिप्रायेणाह–'से तेणट्ठेणं जाव भावदेवा' तत्–अथ, तेनार्थेन, यावत्–एवमुच्यते–भावदेवाः, भावदेवाः इति ॥सू० १॥

देवोत्पादवक्तव्यता ।

मूलम्–"भावियदव्वदेवाणं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति ?, किं नेरइएहिंतो उववज्जंति ? तिरिक्खजोणिएहिंतो मणुस्सेहिंतो देवेहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! नेरइएहिंतो उववज्जंति, तिरि-क्खजोणिएहिंतो मणुस्सेहिंतो, देवेहिंतो वि उववज्जंति, भेया

अर्थ क्या है ? " भावसे–देवगत्यादिक कर्मोदय से उत्पन्न हुई पर्याय से जो देव हैं–वे भावदेव हैं " इस अभिप्राय को लेकर प्रभु गौतम से कहते हैं–' गोयमा ! जे इमे भवणवइ, वाणमंतरजोइस–वेमाणिया देवा देवगइ नामगोयाइं कम्माइं वेदेंति ' हे गौतम ! जो ये भवनपति, वान-व्यन्तर, ज्योतिषिक एवं वैमानिक देव जो कि देवगति संबंधी नाम गोत्र कर्मों का वेदन कर रहे हैं–भोग रहे हैं–इस प्रकार वे भावदेव कहे गये हैं। ' से तेणट्ठेणं जाव भावदेवा ' इसी कारण से ' भावदेव भावदेव ' इस रूप से कहलाते हैं. ॥सू०१॥

ભાવની અપેક્ષાએ દેવગતિ આદિ કર્મોદયના દ્વારા ઉત્પન્ન થયેલા પર્યાયની અપેક્ષાએ જે દેવ છે, તેને ભાવદેવ કહે છે. એજ વાત મહાવીર પ્રભુએ ગૌતમ સ્વામીને આપેલા નીચે પ્રમાણેના જવાબ દ્વારા પ્રકટ થાય છે. " गोयमा ! जे इमे भवणवइ, वाणमंतर, जोइसवेमाणिया देवा देवगइ नामगो-याइं कम्माइं वेदेंति " હે ગૌતમ આ ભવનપતિ, વાનવ્યન્તર, જ્યોતિષિક અને વૈમાનિક દેવો, કે જેઓ દેવગતિ સંબંધી નામ ગોત્ર કર્મોનું વેદન કરી રહ્યા છે–દેવગતિ ભોગવી રહ્યા છે, તેમને ભાવદેવ કહેવાય છે. " से तेणट्ठेणं जाव भावदेवा " હે ગૌતમ ! તે કારણે તે દેવોને 'ભાવદેવ' કહેવામાં આવે છે ॥સૂ૦૧॥

जहा वक्कंतीए सव्वेसु उववाएयव्वा जाव अणुत्तरोववाइयत्ति, नवरं असंखेज्जवासाउय अकम्मभूमगअंतरदीवगसव्वट्ठसिद्ध-वज्जं जाव अपराजियदेवेहिंतो वि, उववज्जंति ? णो सव्वट्ठसिद्ध-देवेहिंतो उववज्जंति। नरदेवाणं भंते! कओहिंतो उववज्जंति? किं नेरइएहिंतो०? पुच्छा, गोयमा ! नेरइएहिंतो वि उववज्जंति, णो तिरिक्खजोणिएहिंतो, णो मणुस्सेहिंतो, देवेहिंतो वि उव-वज्जंति। जइ नेरइएहिंतो, उववज्जंति किं रयणप्पभापुढवि नेरइएहिंतो उववज्जंति, जाव अहे सत्तमा पुढवि नेरइएहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! रयणप्पभापुढवि नेरइएहिंतो उववज्जंति, णो सक्कर जाव, नो अहे सत्तमा पुढवि नेरइएहिंतो उववज्जंति। जइ देवेहिंतो उववज्जंति, किं भवणवासिदेवेहिंतो उवव-ज्जंति ? वाणमंतरदेवेहिंतो, जोइसियदेवेहिंतो, वेमाणिय-देवेहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! भवणवासि देवेहिंतो वि, उववज्जंति, वाणमंतरदेवेहिंतो वि उववज्जंति, एवं सव्वदेवेसु उववाएयव्वा, वक्कंती भेदे णं जाव सव्वट्ठसिद्धत्ति। धम्मदेवाणं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति ? किं नेरइएहिंतो उववज्जंति ? एवं वक्कंतीभेदेणं सव्वेसु उववाएयव्वा जाव सव्वट्ठसिद्धत्ति, नवरं तमा, अहे सत्तमाए, तेऊ वाऊ असंखिज्जवासाउय अकम्म भूमगअंतरदीवगवज्जेसु। देवाधिदेवाणं भंते ! कओ-हिंतो उववज्जंति ? किं नेरइएहिंतो उववज्जंति ? पुच्छा, गोयमा! नेरइएहिंतो उववज्जंति, णो तिरिक्खजोणिएहिंतो, णो मणु-

स्सेहिंतो, देवेहिंतो वि उववज्जंति। जइ नेरइएहिंतो, एवं तिसु पुढवीसु उववज्जंति, सेसाओ खोडेयव्वाओ। जइ देवेहिंतो उववज्जंति ? किं वेमाणिएसु सव्वेसु उववज्जंति ? जाव सव्वट्ठसिद्धत्ति, सेसा खोडेयव्वा। भावदेवाणं भंते! कओहिंतो उववज्जंति ? एवं जहा वक्कंतीए भवणवासीणं उववाओ तहा भाणियव्वो ॥सू० २॥

छाया—भव्यद्रव्यदेवाः खलु भदन्त ! केभ्य उपपद्यन्ते ? किं नैरयिकेभ्य उपपद्यन्ते ? तिर्यग्योनिकेभ्य उपपद्यन्ते ? मनुष्येभ्य उपपद्यन्ते, देवेभ्य उपपद्यन्ते ? गौतम ! नैरयिकेभ्यः उपपद्यन्ते, तिर्यग्योनिकेभ्य उपपद्यन्ते, मनुष्येभ्योऽपि उपपद्यन्ते, देवेभ्योऽपि उपपद्यन्ते, भेदा यथा व्युत्क्रान्तौ, सर्वेषु उपपादयितव्याः, यावत्—अनुत्तरौपपातिके इति, नवरम्—असंख्येयवर्षायुष्क कर्मभूमिजान्तरद्वीपजसर्वार्थसिद्धिवर्जं यावत् अपराजितदेवेभ्योऽपि उपपद्यन्ते, नो सर्वार्थसिद्धदेवेभ्यः उपपद्यन्ते। नरदेवाः खलु भदन्त ! केभ्य उपपद्यन्ते ? किं नैरयिकेभ्यः ? गौतमः ! नैरकेभ्योऽपि उपपद्यन्ते, नो तिर्यग्योनिकेभ्यः, नो मनुष्येभ्यः, देवेभ्योऽपि उपपद्यन्ते, यदि नैरयिकेभ्य उपपद्यन्ते किं रत्नप्रभा पृथिवी नैरयिकेभ्य उपपद्यन्ते, ? यावत्—अधः सप्तमी पृथिवी नैरयिकेभ्य उपपद्यन्ते ? गौतम ! रत्नप्रभापृथिवी नैरयिकेभ्य उपपद्यन्ते, नो शर्करा यावत्—नो अधः सप्तमी पृथिवी नैरयिकेभ्य उपपद्यन्ते। यदि देवेभ्यः उपपद्यन्ते, किं भवनवासि देवेभ्य उपपद्यन्ते ? वानव्यन्तरदेवेभ्यः उपपद्यन्ते ? ज्योतिषिकदेवेभ्य उपपद्यन्ते ? वैमानिक देवेभ्य उपपद्यन्ते ? गौतम ! भवनवासि देवेभ्योऽपि उपपद्यन्ते, वानव्यन्तरदेवेभ्योऽपि उपपद्यन्ते, एवं सर्वदेवेषु उपपादयितव्याः व्युत्क्रान्तिभेदेन यावत् सर्वार्थ सिद्धे इति, धर्मदेवाः खलु भदन्त ? केभ्य उपपद्यन्ते ? किं नैरयिकेभ्यः ? एवं व्युत्क्रान्तिभेदेन सर्वेषु उपपादयितव्याः यावत् सर्वार्थसिद्धे इति, नवरम् तमा अधः सप्तमी तैजस वायु वा असंख्येय वर्षायुष्के कर्मभूमिजान्तरद्वीपजवर्जेषु, देवातिदेवाः खलु भदन्त ! केभ्य उपपद्यन्ते ? किं नैरयिकेभ्य उपपद्यन्ते ? पृच्छा, गौतम ! नैरयिकेभ्योऽपि उपपद्यन्ते, नो तिर्यग्योनिकेभ्यः, नो मनुष्येभ्यः, देवेभ्योऽपि उपपद्यन्ते, यदि नैरयिकेभ्यः, एवं तिसृषु पृथिवीषु उपपद्यन्ते, शेषास्त्यक्तव्याः यदि देवेभ्यः उपपद्यन्ते ? वैमानिकेषु सर्वेषु उपपद्यन्ते, यावत् सर्वार्थसिद्धे इति, शेषास्त्यक्तव्याः, भावदेवाः

खलु भदन्त ! केभ्य उपपद्यन्ते? एवं यथा व्युत्क्रान्तौ भवनवासिनाम् उपपातस्तथा भणितव्यः ॥सू० २॥

टीका—पूर्वोक्तरीत्या देवान् प्ररूप्य तेषामेव प्ररूपयितुमाह–'भवियदव्व-देवाणं' इत्यादि, भवियदव्वदेवाणं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति ? किं नेरइएहिंतो उववज्जंति ? तिरिक्खजोणिएहिंतो, मणुस्सेहिंतो, देवेहिंतो उववज्जंति ?' गौतमः पृच्छति–हे भदन्त ! भव्यद्रव्यदेवा खलु केभ्य आगत्य उपपद्यन्ते ? किं नैरयि-केभ्य आगत्य उपपद्यन्ते ? किंवा तिर्यग्योनिकेभ्य आगत्य उपपद्यन्ते ? किंवा मनुष्येभ्य आगत्य उपपद्यन्ते ? किंवा देवेभ्य आगत्य उपपद्यन्ते ? भगवानाह–'गोयमा ! नेरइएहिंतो उववज्जंति, तिरिक्खजोणिएहिंतो, मणुस्सेहिंतो, देवेहिंतो

देवोत्पादवक्तव्यता—

'भवियदव्वदेवाणं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति' इत्यादि—

टीकार्थ–पूर्वोक्तरीति के अनुसार देवों की प्ररूपणा करके अब सूत्र-कार इस सूत्र द्वारा उनकी उत्पत्ति की प्ररूपणा कर रहे हैं–इसमें गौतम ने प्रभु से ऐसा पूछा हैं–'भवियदव्वदेवाणं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति' हे भदंत ! जो भव्यद्रव्यदेव हैं–वे कहां से आकर के उत्पन्न होते हैं ? क्या 'नेरइएहिंतो उववज्जंति ? तिरीक्खजोणिएहिंतो, मणुस्सेहिंतो देवेहिंतो उववज्जंति' वे नैरयिकों में से आकर के उत्पन्न होते है ? या तिर्यंचों में से या मनुष्यों में से या देवों में से आकर के उत्पन्न होते हैं ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं–'गोयमा' हे गौतम ! 'नेरइएहिंतो उववज्जंति, तिरिक्खजोणिएहिंतो, मणुस्सेहिंतो, देवेहिंतो वि उवव-

---

—દેવોત્પાદવક્તવ્યતા—

"भवियदव्वदेवाणं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति" ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ–પૂર્વ સૂત્રમાં દેવોના પ્રકારોની પ્રરૂપણા કરવામાં આવી હવે સૂત્રકાર આ સૂત્ર દ્વારા તેમની ઉત્પત્તિની પ્રરૂપણા કરે છે–

આ વિષયને અનુલક્ષીને ગૌતમ સ્વામીએ મહાવીર પ્રભુને આ પ્રમાણે પ્રશ્ન પૂછ્યો છે–"भवियदव्वदेवाणं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति" હે ભગવન્ ભવ્યદ્રવ્યદેવો કયાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? "नेरइएहिंतो उववज्जंति? तिरिक्खजोणिएहिंतो, मणुस्सेहिंतो, देवेहिंतो उववज्जंति?" શું તેઓ નારકોમાંથી આવીને ભવ્યદ્રવ્યદેવો રૂપે ઉત્પન્ન થાય છે? કે તિર્યંચોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? કે મનુષ્યોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? કે દેવલોકમાંથી આવીને ભવ્યદ્રવ્યદેવો રૂપે ઉત્પન્ન થાય છે?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર–"गोयमा !" હે ગૌતમ ! नेरइएहिंतो उववज्जंति, तिरिक्खजोणिएहिंतो, मणुस्सेहितो, देवेहिंतो वि उववज्जंति" ભવ્યદ્રવ્યદેવો

वि उववज्जंति' हे गौतम! भव्यद्रव्यदेवाः नैरयिकेभ्य आगत्य उपपद्यन्ते, तिर्यग्योनिकेभ्य आगत्य उपपद्यन्ते, मनुष्येभ्य आगत्य उपपद्यन्ते, देवेभ्योऽपि आगत्य उपपद्यन्ते, 'भेदो जहा वक्कंतीए सव्वेसु उववाएयव्वा जाव अणुत्तरोववाइयत्ति' भेदः-अवान्तरप्रकारो यथा-व्युत्क्रान्तिके-प्रज्ञापनायाः षष्ठपदे प्रतिपादितस्तथैवात्रापि प्रतिपत्तव्यः, तथा च 'यदि नैरयिकेभ्य आगत्य उपपद्यन्ते तर्हि किं रत्नप्रभापृथिवी नैरयिकेभ्य आगत्योपपद्यन्ते ? इत्यादि-भेदो वक्तव्यः। एवं रीत्या सर्वेषु-नैरयिकादि वैमानिकान्तेषु उपपादयितव्याः-भव्यद्रव्यदेवानामुत्पादवर्णनं कर्तव्यम्, यावत्-पृथिवीकायिकाद्येकेन्द्रियादि भवनवासिवानव्यन्तरज्योतिष्कवैमानिकनवग्रैवेयकपञ्चानुत्तरौपपातिका इति, एतेभ्यः सर्वेभ्यः

ज्जंति' भव्यद्रव्यदेव नैरयिकों में से आकर के भी उत्पन्न होते हैं, तिर्यंचों में से भी आकर के उत्पन्न होते हैं, मनुष्यों में से भी आकर के उत्पन्न होते हैं, तथा, देवों में से भी आकर के उत्पन्न होते हैं। 'भेदो जहा वक्कंतीए सव्वेसु उववाएयव्वा जाव अणुत्तरोववाइयत्ति' अवान्तर प्रकार जैसा प्रज्ञापना के छठे पद व्युत्क्रान्तिपद में कहा गया है वैसा ही यहां पर भी समझना चाहिये तथा "यदि वे नैरयिकों में से आकर के उत्पन्न होते हैं--तो क्या रत्नप्रभापृथिवी के नैरयिकों में से आकर के उत्पन्न होते हैं" इत्यादि भेद कहना चाहिये इस प्रकार से भव्य द्रव्यदेवों के उत्पाद का वर्णन नैरयिक से लेकर वैमानिकान्तों में करलेना चाहिये इस प्रकार से इस कथन का सारांश यह है कि भव्यद्रव्यदेव यावत् पृथिवीकायिकादि से लेकर भवनवासि, वानव्यन्तर,

---

નારકોમાંથી આવીને પણ ઉત્પન્ન થાય છે તિર્યંચોમાંથી આવીને પણ ઉત્પન્ન થાય છે, મનુષ્યોમાંથી આવીને પણ ઉત્પન્ન થાય છે અને દેવોમાંથી આવીને પણ ઉત્પન્ન થાય છે. "भेदो जहा वक्कंतीए सव्वेसु उववाएयव्वा जाव अणुत्तरोववाइयत्ति" પ્રજ્ઞાપનાસૂત્રના છઠ્ઠા વ્યુત્ક્રાન્તિ પદમાં અવાન્તર પ્રકારોની જેવી પ્રરૂપણા કરવામાં આવી છે, એવી પ્રરૂપણા અહીં પણ સમજવી જોઇએ એટલે કે "જો તેઓ નારકોમાંથી આવીને ભવ્યદ્રવ્યદેવ રૂપે ઉત્પન્ન થતા હોય, તો શું રત્નપ્રભા પૃથ્વીના નારકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે." ઇત્યાદિ ભેદોનું કથન થવું જોઈએ આ પ્રકારે નારકોથી લઇને વૈમાનિકો પર્યન્તના દેવોમાંથી આવીને જીવ ભવ્યદ્રવ્યદેવ રૂપે ઉત્પન્ન થાય છે, એમ સમજવું જોઇએ આ કથનનો સારાંશ એ છે કે "પૃથ્વીકાયિક આદિથી લઈને ભવનપતિ, વાનવ્યંતર, જ્યોતિષિક, વૈમાનિક, નવગ્રૈવેયક અને પાંચ

आगत्य भव्यद्रव्यदेवाः उपपद्यन्ते, किन्तु-'नवरं असंखेज्जवासाउय अकम्मभूमग अंतरदीवग सव्वट्ठसिद्धवज्जं जाव अपराजियदेवेहिंतो वि उववज्जंति, णो सव्वट्ठसिद्धदेवेहिंतो उववज्जंति' नवरं-विशेषस्तु असंख्येयवर्षायुष्काऽकर्मभूमिजान्तरद्वीपज सर्वार्थसिद्धवर्जम्-असंख्यातवर्षायुष्काऽकर्मभूमिजाः-पञ्चेन्द्रियतिर्यग्मनुष्याः, अन्तरद्वीपजाः एतेभ्यश्चोद्वृत्ताः भव्यद्रव्यदेवा न भवन्ति, भावदेवेष्वेव तेषामुत्पादात्, सर्वार्थसिद्धिकास्तु भव्यद्रव्यसिद्धा भवन्ति इत्यतः एतेभ्योऽन्ये सर्वे भव्यद्रव्यदेवतयोत्पादयितव्याः, इतिभावः, तदवधिमाह-यावत्-नैरयिकादिभ्यो विजयवैजयन्तजयन्तापराजितदेवेभ्योऽपि आगत्य भव्यद्रव्यदेवाः उपपद्यन्ते, नो

ज्योतिष्क, वैमानिक, नवग्रैवेयक, अनुत्तर इन सब से आकर के उत्पन्न होते हैं। किन्तु 'नवरं असंखेज्जवासाउय अकम्मभूमग अंतरदीवग-सव्वट्ठसिद्ध वज्जं जाव अपराजिय' असंख्यात वर्ष की आयुवाले अकर्मभूमिज पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च और मनुष्य तथा अन्तरद्वीपज एवं सर्वार्थसिद्धक ये भव्यद्रव्यदेवरूप से उत्पन्न नहीं होते हैं। क्यों कि ये सब असंख्यातवर्षकी आयुवाले अकर्मभूमिज मनुष्य तथा तिर्यञ्च, तथा अन्तरद्वीपज मरकर भव्यद्रव्यदेवरूप से उत्पन्न न होकर भावदेवरूप से ही उत्पन्न होते हैं। सर्वार्थसिद्धिक जो हैं-वे भव्यद्रव्यसिद्ध होते हैं-इन्हें फिर दूसरा भव नहीं लेना पड़ता है-उसी गृहीत भव से मोक्ष चले जाते हैं। इसलिये यहां भव्यद्रव्यदेव होने में उनको वर्जित किया गया है। इसीलिये नैरयिक आदिकों में से आकरके तथा विजय, वैजयन्त, जयन्त और अपराजित इन देवों में से आकरके भव्यद्रव्य-

અનુત્તર, આ બધા સ્થળેથી આવીને જીવ ભવ્યદ્રવ્યદેવ રૂપે ઉત્પન્ન થતો હોય છે. "नवरं असंखेज्जवासाउय अकम्मभूमगअंतरदीवगसव्वट्ठसिद्धवज्जं जाव अपराजिय" પરંતુ અસંખ્યાત વર્ષના આયુષ્યવાળા અકર્મભૂમિજ પંચેન્દ્રિય તિર્યંચ અને મનુષ્ય તથા અન્તરદ્વીપજ તથા સર્વાર્થસિદ્ધક, આ જીવો ભવ્યદ્રવ્યદેવ રૂપે ઉત્પન્ન થતા નથી. કારણ કે અસંખ્યાત વર્ષના આયુષ્યવાળા અકર્મભૂમિજ મનુષ્યો અને તિર્યંચો તથા અન્તરદ્વીપજો મરીને ભવ્યદ્રવ્યદેવ રૂપે ઉત્પન્ન થતા નથી, પણ ભાવદ્રવ્યદેવ રૂપે જ ઉત્પન્ન થાય છે. જે સર્વાર્થસિદ્ધિકો છે, તેઓ ભવ્યદ્રવ્યસિદ્ધ થાય છે, તેમને ફરી બીજો ભવ લેવો પડતો નથી-એજ ગૃહીત ભવમાંથી તેઓ મોક્ષે ચાલ્યા જાય છે. તેથી ભવ્યદ્રવ્યદેવ રૂપે તેમની ઉત્પત્તિનો નિષેધ કર્યો છે. તેથી જ એવું કહેવામાં આવ્યું છે કે નરકાદિમાંથી આવીને તથા વિજય, વૈજયન્ત, જયન્ત, અને અપરાજિત આ ચાર અનુત્તર વિમાનોમાંથી આવીને (તે વિમાનોમાંના

सर्वार्थसिद्धदेवेभ्य आगत्य भव्यद्रव्यदेवा उपपद्यन्ते इति भावः। गौतमः पृच्छति-'नरदेवा णं भंते! कओहिंतो उववज्जंति? किं नेरइएहिंतो० ? पुच्छा' हे भदन्त! नरदेवाः खलु केभ्य आगत्य उपपद्यन्ते ? किं नैरयिकेभ्य आगत्य उपपद्यन्ते ? किं वा तिर्यग्योनिकेभ्य आगत्य उत्पद्यन्ते ? किं वा मनुष्येभ्य आगत्य उत्पद्यन्ते ? किं वा देवेभ्य आगत्य उत्पद्यन्ते ? इति पृच्छा, भगवानाह-'गोयमा! नेरइएहिंतो वि, उववज्जंति, णो तिरिक्खजोणिएहिंतो, णो मणुस्सेहिंतो, देवेहिंतो वि उववज्जंति' हे गौतम! नरदेवाः खलु नैरयिकेभ्योऽपि आगत्य उपपद्यन्ते, किन्तु नो तिर्यग्योनिकेभ्य आगत्य नरदेवाः उपपद्यन्ते, नो वा मनुष्येभ्य आगत्य ते उपपद्यन्ते, अथ च देवेभ्योऽपि

देव उत्पन्न हो जाते हैं, सर्वार्थसिद्ध के देवों में से आकरके जीव भव्य-द्रव्यदेवरूप से उत्पन्न नहीं होता है, ऐसा कहा गया है।

अब गौतमस्वामी प्रभु से ऐसा पूछते हैं-'नरदेवा णं भंते! कओहिंतो उववज्जंति' हे भदन्त! नरदेव कहां से आकरके उत्पन्न होता है? 'किं नेरइएहिंतो० पुच्छा' क्या नैरयिकों में से आकरके उत्पन्न होते हैं? किं वा तिर्यंग्योनिकों में से आकरके उत्पन्न होते हैं? या मनुष्यों में से आकरके उत्पन्न होते हैं? या देवों में से आकरके उत्पन्न होते हैं? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-'गोयमा' हे गौतम! 'नेरइएहिंतो वि उववज्जंति, णो तिरिक्खजोणिएहिंतो, णो मणुस्सेहिंतो, देवेहिंतो वि उववज्जंति' नरदेव नैरयिकों में से तथा मनुष्यो में से आकर नरदेव रूप से उत्पन्न नहीं होते, अब इसी बात को विशेषरूपसे जानने

દેવોમાંથી આવીને) જીવ ભવ્યદ્રવ્યદેવ રૂપે ઉત્પન્ન થઇ જાય છે, પરન્તુ સર્વાર્થસિદ્ધ અનુત્તર વિમાનના દેવોમાંથી આવીને જીવ ભવ્યદ્રવ્યદેવ ઉત્પન્ન થતો નથી.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-"नरदेवाणं भंते! कओहिंतो उववज्जंति?" હે ભગવન્! જીવ ક્યાંથી આવીને નરદેવ રૂપે ઉત્પન્ન થઇ છે? "किं नेरइएहिंतो० पुच्छा" શું નારકોમાંથી, કે તિર્યંચોમાંથી, કે મનુષ્યોમાંથી, કે દેવોમાંથી આવીને જીવ નરદેવ રૂપે ઉત્પન્ન થઈ જાય છે?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-"गोयमा!" હે ગૌતમ! "नेरइएहिंतो वि, उववज्जंति, णो तिरिक्खजोणिएहिंतो, णो मणुस्सेहिंतो, देवेहिंतो वि उववज्जंति" જીવો નારકોમાથી આવીને પણ નરદેવો રૂપે ઉત્પન્ન થાય છે, દેવોમાંથી આવીને પણ નરદેવો રૂપે ઉત્પન્ન થાય છે, પરન્તુ તિર્યંચોમાંથી તથા મનુષ્યોમાંથી આવીને નરદેવો રૂપે ઉત્પન્ન થતા નથી આ વાતને વિશેષ રૂપે જાણવાને માટે ગૌતમ સ્વામી આ પ્રમાણે પ્રશ્ન પૂછે છે-"जइ नेरइएहिंतो

आगत्य उपपद्यन्ते ! गौतमः पृच्छति–'जइ नेरइएहिंतो उववज्जंति, किं रयणप्पभा पुढवि नेरइएहिंतो उववज्जंति, जाव अहे सत्तमा पुढवि नेरइएहिंतो उववज्जंति ?' यदि नैरयिकेभ्यः आगत्य नरदेवा उपपद्यन्ते, तत् किं रत्नप्रभा पृथिवी नैरयिकेभ्यः आगत्य उपपद्यन्ते ? यावत् किं वा शर्कराप्रभा पृथिवी नैरयिकेभ्य आगत्य उपपद्यन्ते ? किं वा वालुकाप्रभा पृथ्वी नैरयिकेभ्य आगत्य उपपद्यन्ते किं वा पङ्कप्रभा पृथिवी नैरयिकेभ्य आगत्य उपपद्यन्ते ? किं वा धूमप्रभा पृथिवी नैरयिकेभ्य आगत्योपपद्यन्ते ? किं वा तमःप्रभा पृथिवी नैरयिकेभ्य आगत्योपपद्यन्ते किं वा अधःसप्तमी पृथिवी नैरयिकेभ्य आगत्योपपद्यन्ते ? भगवानाह–'गोयमा ! रयणप्पभापुढवि नेरइएहिंतो उववज्जंति, नो सक्कर जाव, नो अहे सत्तमा पुढवि नेरइएहिंतो उववज्जंति' हे गौतम ! नरदेवाः खलु रत्नप्रभा पृथिवी नैरयिकेभ्यः उद्वृत्य उपपद्यन्ते, नो शर्कराप्रभा यावत्, नो अधःसप्तमी

के निमित्त गौतम प्रभु से ऐसा पूछते हैं–' जइ नेरइएहिंतो उववज्जंति, किं रयणप्पभापुढवि नेरइएहिंतो उववज्जंति, जाव अहे सत्तमापुढवि नेरइएहिंतो उववज्जंति' हे भदन्त ! यदि नरदेव नैरयिकों में से आकर के उत्पन्न होते हैं तो क्या वे रत्नप्रभा पृथिवी के नैरयिकों में से आकरके उत्पन्न होते हैं? या शर्कराप्रभापृथिवी के नैरयिकों में से आकरके उत्पन्न होते हैं ? या वालुकाप्रभापृथिवी के नैरयिकों में से आकरके उत्पन्न होते हैं ? किंवा–पङ्कप्रभापृथिवी के नैरयिकों में से आकरके उत्पन्न होते हैं ? या धूमप्रभापृथिवी के नैरयिकों में से आकरके उत्पन्न होते हैं ? या तमःप्रभापृथिवी के नैरयिकों में से आकरके उत्पन्न होते हैं ? या अधःसप्तमी पृथिवी के नैरयिकों में से आकरके उत्पन्न होते हैं ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं–हे गौतम ! नरदेव रत्नप्रभापृथिवी के नैरयिकों में से

उववज्जंति," ઈત્યાદિ હે ભગવન્ ! નારકોમાંથી આવીને તેઓ નરદેવ રૂપે ઉત્પન્ન થતા હોય, તો કયા નરકના નારકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? શું રત્નપ્રભાના નારકોમાંથી આવીને નરદેવ રૂપે ઉત્પન્ન થાય છે ? કે શર્કરાપ્રભાના નારકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? કે વાલુકાપ્રભાના નારકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? કે પંકપ્રભાના નારકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? ધૂમપ્રભાના નારકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? કે તમઃપ્રભાના નારકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? કે અધઃસપ્તમી પૃથ્વીના નારકોમાંથી આવીને નરદેવ રૂપે ઉત્પન્ન થાય છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર–" હે ગૌતમ ! " રત્નપ્રભા પૃથ્વીના નારકોમાંથી નીકળીને જીવ નરદેવ રૂપે ઉત્પન્ન થાય છે, પરન્તુ શર્કરાપ્રભાથી લઈને

नैरयिकेभ्यो वा आगत्य उपपद्यन्ते। गौतमः पृच्छति-'जइ देवेहिंतो उववज्जंति, किं भवणवासिदेवेहिंतो उववज्जंति, वाणमंतरदेवेहिंतो, जोइसियदेवेहिंतो, वेमाणियदेवेहिंतो उववज्जंति?' हे भदन्त! यत् खलु नरदेवा देवेभ्यः आगत्योपपद्यन्ते, तत् किं भवनवासिदेवेभ्य आगत्य उपपद्यन्ते? किं वा वानव्यन्तरदेवेभ्य आगत्य उपपद्यन्ते? किं वा ज्योतिष्कदेवेभ्य आगत्योपपद्यन्ते? किं वा वैमानिकदेवेभ्य आगत्य उपपद्यन्ते? भगवानाह-'गोयमा! भवणवासिदेवेहिंतो वि उववज्जंति, वाणमंतरदेवेहिंतो० एवं सव्वदेवेसु उववाएयव्वा वक्कंतीभेदेणं जाव सव्वट्ठसिद्धत्ति' हे गौतम! नरदेवा भवनवासिदेवेभ्योऽपि आगत्योपपद्यन्ते, एवं

निकलकर उत्पन्न होते हैं किन्तु शर्कराप्रभापृथिवी के नैरयिकों में से यावत् अधःसप्तमी पृथिवी के नैरयिकों में से निकलकर उत्पन्न नहीं होते हैं।

अब गौतमस्वामी प्रभु से ऐसा पूछते हैं-'जइ देवेहिंतो उववज्जंति; किं भवणवासिदेवेहिंतो उववज्जंति, वाणमंतरदेवेहिंतो उववज्जंति, जोइसियदेवेहिंतो उववज्जंति, वेमाणियदेवेहिंतो उववज्जंति' हे भदन्त! यदि नरदेव देवों में से आकरके उत्पन्न होते हैं तो क्या वे भवनवासिदेवों में से आकरके उत्पन्न होते हैं? या वानव्यन्तर देवों में से आकरके उत्पन्न होते हैं? अथवा ज्योतिष्क देवों में से आकर के उत्पन्न होते हैं? या वैमानिक देवों में से आकरके उत्पन्न होते हैं? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-'गोयमा' हे गौतम! 'भवणवासिदेवेहिंतो वि उववज्जंति, वाणमंतर देवेहिंतो० एवं सव्वदेवेसु उववाएयव्वा, वक्कंतीभेएणं जाव सव्वट्ठ सिद्धत्ति' नरदेव भवनवासि देवों से भी आकरके उत्पन्न होते हैं, वानव्यन्तर देवों में से भी आकर

અધઃસપ્તમી પૃથ્વી પર્યન્તની પૃથ્વીઓના નારકોમાંથી નીકળીને જીવો નરદેવ રૂપે- ઉત્પન્ન થતા નથી.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-"जइ देवेहिंतो उववज्जंति, किं भवणवासिदेवेहिंतो उववज्जंति, वाणमंतरदेवेहिंतो उववज्जंति? जोइसियदेवेहिंतो उववज्जंति, वेमाणियदेवेहिंतो उववज्जंति?" હે ભગવન્! જો જીવો દેવોમાંથી આવીને નરદેવ રૂપે ઉત્પન્ન થતા હોય, તો શું ભવનવાસી દેવોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? કે વાનવ્યંતર દેવોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? કે જ્યોતિષિક દેવોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? કે વૈમાનિક દેવોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-"गोयमा!" હે ગૌતમ! "भवणवासिदेवेहिंतो वि उववज्जंति, वाणमंतरदेवेहिंतो० एवं सव्वदेवेसु उववाएयव्वा, वक्कंतीभेएणं जाव सव्वट्ठसिद्धत्ति" નરદેવ, ભવનવાસી દેવોમાથી આવીને પણ ઉત્પન્ન થાય

वानव्यन्तरदेवेभ्योऽपि आगत्य उपपद्यन्ते, एवं-पूर्वोक्तरीत्या सर्वदेवेषु नरदेवा उपपादयितव्याः-नरदेवानाम् उत्पादवक्तव्यता वक्तव्या, व्युत्क्रान्तिभेदेन-प्रज्ञापनायाः षष्ठपदानुसारेण, यावत्-ज्योतिष्कदेवेभ्योऽपि आगत्योपपद्यन्ते, वैमानिकदेवेभ्योऽपि आगत्योपपद्यन्ते, नवग्रैवेयकेभ्योऽपि आगत्योपपद्यन्ते, पञ्चानुत्तरौपपातिकेभ्योऽपि, सर्वार्थसिद्धिभ्योऽपि आगत्योपपद्यन्ते इति भावः। गौतमः पृच्छति-'धम्मदेवाणं भंते! कओहिंतो उववज्जंति? किं नेरइएहिंतो उववज्जंति?' हे भदन्त! धर्मदेवाः खलु केभ्य आगत्योपपद्यन्ते? किं नैरयिकेभ्य आगत्योपपद्यन्ते? किं वा तिर्यग्योनिक मनुष्य भवनवासि वानव्यन्तरज्योतिषिक-वैमानिकनवग्रैवेयकपञ्चानुत्तरौपपातिकसर्वार्थसिद्धेभ्य आगत्योपपद्यन्ते? इति

उत्पन्न होते हैं-इस प्रकार पूर्वोक्तरीति के अनुसार प्रज्ञापना के छठे व्युत्क्रान्ति पद के अनुसार-ज्योतिषिक देवों में से भी आकरके उत्पन्न होते हैं, वैमानिक देवों में से भी आकरके उत्पन्न होते हैं, नवग्रैवेयकों में से भी आकर उत्पन्न होते हैं, विजय, वैजयन्त, जयन्त, अपराजित और सर्वार्थसिद्ध इन पांच अनुत्तरविमानों में से आकरके भी उत्पन्न होते हैं।

अब गौतम प्रभु से पूछते हैं-' धम्मदेवाणं भंते! कओहिंतो उववज्जंति? किं नेरइएहिंतो उववज्जंति' हे भदंत! धर्मदेव कहां से आकरके उत्पन्न होते हैं? क्या नैरयिकों में से आकरके उत्पन्न होते हैं? या तिर्यञ्चयोनिकों में से आकरके उत्पन्न होते हैं? या मनुष्यों में से आकरके उत्पन्न होते हैं? या भवनवासी, वानव्यन्तर, ज्योतिषिक, वैमानिक, नवग्रैवेयक, पंच अनुत्तरौपपातिक-विजय, वैजयन्त, जयन्त, अपराजित एवं सर्वार्थसिद्ध इनमें से आकर के उत्पन्न होते हैं? इसके

છે, વાનવ્યન્તર દેવોમાંથી આવીને પણ ઉત્પન્ન થાય છે, એજ પ્રમાણે પ્રજ્ઞાપનાસૂત્રના છઠ્ઠા વ્યુત્ક્રાન્તિ પદના પૂર્વોક્ત કથન અનુસાર જ્યોતિષિક દેવોમાંથી આવીને પણ ઉત્પન્ન થાય છે, વૈમાનિક દેવોમાંથી આવીને પણ ઉત્પન્ન થાય છે, નવગ્રૈવેયકના દેવોમાંથી આવીને પણ ઉત્પન્ન થાય છે અને વિજયથી લઈને સર્વાર્થસિદ્ધ પર્યન્તના પાંચ અનુત્તર વિમાનોમાંથી આવીનેપણ ઉત્પન્ન થાય છે.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-" धम्मदेवाणं भंते! कओहिंतो उववज्जंति? किं नेरइएहिंतो उववज्जति० " ઇત્યાદિ-હે ભગવન્! ધર્મદેવ ક્યાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? શું નારકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? કે તિર્યંચોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? કે મનુષ્યોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? કે ભવનવાસી, વાનવ્યંતર, જ્યોતિષિક, વૈમાનિક, નવગ્રૈવેયક, અને પાંચ અનુત્તર વિમાનોના દેવોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે?

प्रश्नः। भगवानाह-'एवं वक्कंतीभेदेणं सव्वेसु उववाएयव्वा जाव सव्वट्ठसिद्धत्ति" हे गौतम ! एवं पूर्वोक्तरीत्या, व्युत्क्रान्तिभेदेन-प्रज्ञापनायाः षष्ठपदानुसारेण, सर्वेषु भवेषु धर्मदेवाः उपपादयितव्याः, यावत्-नैरयिकादि सर्वार्थसिद्धपर्यन्तेभ्यः आगत्य धर्मदेवा उपपद्यन्ते किन्तु वर्जनीयमवानाह-'नवरं तमा अहे सत्तमाए तेऊ वाऊ असंखिज्ज वासाउय अकम्मभूमग अंतरदीवगवज्जेसु' नवरं-पूर्वापेक्षया विशेषस्तु धर्मदेवानां तमःप्रभा षष्ठपृथिवी, अधःसप्तमी पृथिवी, तैजस वायुकायिकासंख्यातवर्षायुष्ककर्मभूमिजान्तरद्वीपजतिर्यग्योनिकमनुष्यवर्जेषु भवेषु उत्पादवक्तव्यता वक्तव्या एतेभ्य आगत्य-धर्मदेवा नोत्पद्यन्ते इति भावः। तथा च तमःप्रभा पृथिवी नैरयिकेभ्यः उद्वृत्तानां जीवानां चारित्रं नास्ति, तथा अधः सप्तम्या स्तेजसोर्वायोरसंख्यातवर्षायुष्ककर्मभूमिजेभ्योऽकर्मभूमिजेभ्योऽन्तरद्वीपजेभ्यश्च ति-

---

उत्तर में प्रभु कहते हैं-' एवं वक्कंतीभेएणं सव्वेसु उववाएयव्वा ' हे गौतम ! प्रज्ञापना के छठे व्युत्क्रान्तिपद के अनुसार समस्त भवों में से धर्मदेव उपपादयितव्य हैं-यावत् नैरयिक आदि से लेकर सर्वार्थसिद्धतक के जीवों में से आकरके धर्मदेव उत्पन्न होते हैं। किन्तु-' नवरं तमा अहे सत्तमाए तेऊ वाऊ असंखिज्जवासाउय अकम्मभूमग अंतरदीवगवज्जेसु ' पूर्व की अपेक्षा से विशेषता ऐसी है कि धर्मदेवों का उत्पाद तमःप्रभा के नैरयिकों में से, अधःसप्तमीपृथिवी में नैरयिकों में से, तैजस्कायिकों में से, तथा असंख्यातवर्ष की आयुवाले कर्मभूमिज अकर्मभूमिज एवं अन्तर द्वीपज मनुष्य तिर्यग्योनिकों में से आकर धर्मदेव उत्पन्न नहीं होते हैं। क्यों कि जो नैरयिक जीव तमःप्रभापृथिवी से निकलते हैं-उनके चारित्र नहीं होता है तथा अधः

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-" एवं वक्कंतीभेएणं सव्वेसु उववाएयव्वा " હે ગૌતમ ! પ્રજ્ઞાપના સૂત્રના છઠ્ઠા વ્યુત્ક્રાન્તિ પદમાં કહ્યા પ્રમાણે, નારકોથી લઇને સર્વાર્થસિદ્ધક પર્યન્તના સમસ્ત જીવોમાંથી આવીને જીવ ધર્મદેવ રૂપે ઉત્પન્ન થાય છે. " नवरं " પરન્તુ " तमा, अहेसत्तमाए, तेऊवाऊ असंखिज्जवासाउय अकम्मभूमगअंतरदीवगवज्जेसु " પૂર્વના કથન કરતાં ધર્મદેવના કથનમાં એટલી જ વિશેષતા છે કે...તમઃપ્રભાના નારકોમાંથી, અધઃ સપ્તમીના નારકોમાંથી, તેજસ્કાયિકોમાંથી, વાયુકાયિકોમાંથી, તથા અસંખ્યાત વર્ષના આયુષ્યવાળા કર્મભૂમિજ, અકર્મભૂમિજ, અને અન્તર દ્વીપજ મનુષ્યો અને તિર્યંચોમાંથી આવીને જીવો ધર્મદેવ રૂપે ઉત્પન્ન થતા નથી કારણ કે જે નારકો તમઃપ્રભા પૃથ્વીમાંથી નીકળે છે, તેમનામાં ચારિત્ર હોતું નથી તથા અધઃસપ્તમીમાંથી, તેજસ્કાયિકોમાંથી, વાયુકાયિકોમાંથી, અસંખ્યાત વર્ષના આયુ-

यग्योनिकेभ्य उद्वृत्तानां मनुष्ये मानुषत्वाभावान्नचारित्रं वर्तते, अत एव-एतेभ्य उद्वृत्तानां न धर्मदेवत्वमितिभावः। गौतमः पृच्छति-'देवाधिदेवाणं भंते! कओहिंतो उववज्जंति? किं नेरइएहिंतो उववज्जंति पुच्छा' हे भदन्त! देवाधिदेवाः केभ्यः आगत्य उपपद्यन्ते? किं नैरयिकेभ्य आगत्य उपपद्यन्ते? किं वा भवनपति पृथिवीकायिकाद्येकेन्द्रियादि तिर्यग्योनिकमनुष्यवानव्यन्तरज्योतिषिकवैमानिक नवग्रैवेयकपञ्चानुत्तरौपपातिकसर्वार्थसिद्धिकेभ्यो वा आगत्योपपद्यन्ते? इति पृच्छा, भगवानाह-'गोयमा! नेरइएहिंतो उववज्जंति, नो तिरिक्खजोणिएहिंतो,

ससमी से तैजस्कायिकों से, वायुकायिकों से, असंख्यातवर्ष की आयु-वाले अकर्मभूमिजों में से, एवं कर्मभूमिजों में से, एवं अन्तरद्वीपजों में से, तिर्यञ्चों में से, मनुष्यों में से-निकले हुए जीव मनुष्य नहीं होते हैं, मनुष्य नहीं होने के कारण चारित्र के अभाव में वे चारित्रयुक्त अन-गार रूप धर्मदेव नहीं होते हैं।

अब गौतम प्रभु से ऐसा पूछते हैं-' देवाहिदेवाणं भंते! कओहिंतो उववज्जंति, किं नेरइएहिंतो उववज्जंति, पुच्छा० ' हे भदन्त! देवाधि-देव कहां से आकर के उत्पन्न होते हैं? क्या नैरयिकों से आकरके उत्पन्न होते हैं? किंवा-भवनपति से पृथिवीकायिकादिक एकेन्द्रियादि-तिर्यग्योनिकों में से, मनुष्यों में से, वानव्यन्तरों में से ज्योतिषिकों में से, वैमानिकों में से, या पंच अनुत्तरौपपातिक-विजय-वैजयन्त जयन्त, अपराजित, एवं सर्वार्थसिद्ध-इन पांच में से आकरके देवाधिदेव उत्पन्न होते हैं? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-' गोयमा ' हे गौतम! ' नेरइ-

વાળા અકર્મભૂમિજ, કર્મભૂમિજ, અને અન્તરદ્વીપજ મનુષ્યો અને તિર્યં-ચોમાંથી નીકળેલા જીવો મનુષ્ય રૂપે ઉત્પન્ન થઇ શકતા નથી અને મનુષ્ય રૂપે ઉત્પન્ન નહીં થવાને કારણે ચારિત્રનો અભાવ હોવાને કારણે તેઓ અણગાર રૂપ ધર્મદેવ પણ થતા નથી.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-" देवाहिदेवाणं भंते! कओहिंतो उववज्जंति " હે ભગવન્! દેવાધિદેવ કયાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? " किं नेरइएहिंतो उववज्जंति, पुच्छा० " શું નારકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? કે ભવન-પતિ દેવોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? કે પૃથ્વીકાયિક વિગેરે એકેન્દ્રિયાદિ તિર્યંચયોનિકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? કે મનુષ્યોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે? કે વાનવ્યંતર દેવોમાંથી, જ્યોતિષિકોમાંથી, વૈમાનિકોમાંથી નવ-ગ્રૈવેયકોમાંથી, કે વિજય આદિ પાંચ અનુત્તરોપપાતિક દેવોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે?

नो मणुस्सेहिंतो, देवेहिंतो वि उववज्जंति' हे गौतम ! देवाधिदेवा अर्हन्तः केवलिनो नैरयिकेभ्य आगत्य उपपद्यन्ते, किन्तु नो तिर्यग्योनिकेभ्यः, नो वा मनुष्येभ्य आगत्य उपपद्यन्ते, अथ च देवेभ्योऽपि-भवनपतिवानव्यन्तरादि सर्वार्थसिद्धपर्यन्तेभ्य आगत्य उपपद्यन्ते। गौतमः पृच्छति-'जइ नेरइएहिंतो०' हे भदन्त ! यत् खलु देवाधिदेवाः नैरयिकेभ्यः आगत्योपपद्यन्ते ? तत् किं रत्नप्रभा पृथिवीनैरयिकेभ्यः, किं वा शर्कराप्रभावालुकाप्रभापङ्कप्रभाधूमप्रभातमःप्रभाऽधः सप्तमीपृथिवीनैरयिकेभ्यः आगत्योपपद्यन्ते ? भगवानाह-'एवं तिसु पुढवीसु

एहिंतो, उववज्जंति, नो तिरिक्खजोणिएहिंतो, ना मणुस्सेहिंतो, देवेहिंतो वि उववज्जंति ' देवाधिदेव-अर्हन्त केवली नैरयिकों में से आकरके भी उत्पन्न होते हैं एवं देवों में से भी आकरके उत्पन्न होते हैं-परन्तु वे तिर्यञ्चगति से, एवं मनुष्यगति से आकर के उत्पन्न नहीं होते हैं। देवों में से आकरके वे उत्पन्न होते हैं-इसका तात्पर्य यह है कि वे भवनपति, वानव्यन्तर आदि से लेकर सर्वार्थसिद्धपर्यन्त के देवों में से आकरके उत्पन्न होते हैं।

अब गौतमस्वामी प्रभु से ऐसा पूछते हैं-' जइ नेरइएहिंतो० ' हे भदन्त ! देवाधिदेव यदि नैरयिकों में से आकरके उत्पन्न होते हैं तो क्या रत्नप्रभापृथिवी के नैरयिकों में से आकर के उत्पन्न होते हैं ? या शर्कराप्रभा के, या वालुकाप्रभा के, या पंकप्रभा के, या धूमप्रभा के, अथवा तमःप्रभा के या अधः सप्तमीपृथिवी के नैरयिकों में से आकरके उत्पन्न

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-' गोयमा ! " હે ગૌતમ ! " नेरइएहिंतो उववज्जंति, नो तिरिक्खजोणिएहिंतो, नो मणुस्सेहिंतो, देवेहिंतो वि उववज्जंति " (અર્હંત કેવળી) નારકોમાંથી આવીને પણ ઉત્પન્ન થાય છે, દેવોમાંથી આવીને પણ ઉત્પન્ન થાય છે, પરન્તુ તિર્યંચગતિ અને મનુષ્યગતિમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થતા નથી. " દેવોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે. " એટલે કે વૈમાનિક આદિથી લઈને સર્વાર્થસિદ્ધવિમાનના દેવો પર્યન્તના દેવોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-" जइ नेरइएहिं० " ઇત્યાદિ હે ભગવન્ ! દેવાધિદેવ જો નારકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે, તો કઈ નરકપૃથ્વીના નારકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? શું રત્નપ્રભાના નારકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ? કે શર્કરાપ્રભાના, કે વાલુકાપ્રભાના, કે પંકપ્રભાના, કે ધૂમપ્રભાના, કે તમઃપ્રભાના, કે અધઃસપ્તમીના નારકોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે ?

उववज्जंति, सेसाओ खोडेयव्वाओ' हे गौतम ! एवं-पूर्वोक्तरीत्या, देवाधिदेवाः खलु तिसृषु पृथिवीषु-रत्नप्रभाशर्कराप्रभावालुकाप्रभाभ्य उद्वृत्त्य उपपद्यन्ते, शेषास्तु पङ्कप्रभा धूमप्रभा तमःप्रभाऽधःसप्तमी पृथिव्यः प्रतिषेधयितव्याः, ताभ्यः उद्वृत्तानां जीवानां देवाधिदेवत्वस्याभावादितिभावः, गौतमः पृच्छति-'जइ देवेहिंतो उववज्जंति ?' हे भदन्त ! यत् खलु देवाधिदेवाः देवेभ्य आगत्य उपपद्यन्ते, तत् किं भवनपतिदेवेभ्यः, किं वा वानव्यन्तरदेवेभ्यः, किं वा ज्योतिष्कदेवेभ्यः, किं वा वैमानिकदेवेभ्यः, किं वा नवग्रैवेयकेभ्यः, किं वा पञ्चानुत्तरौपपातिकदेवेभ्यः, सर्वार्थसिद्धदेवेभ्यः आगत्य उपपद्यन्ते ? भगवानाह-'वेमाणिएसु सव्वेसु उववज्जंति जाव सव्वट्ठसिद्धत्ति, सेसा खोडेयव्वा' हे गौतम !

होते हैं ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-' एवं तिसु पुढवीसु उववज्जंति, सेसाओ खोडेयव्वाओ ' हे गौतम ! देवाधिदेव रत्नप्रभापृथिवी से, शर्कराप्रभापृथिवी से, एवं वालुकाप्रभापृथिवी से निकलकर उत्पन्न होते हैं, पंकप्रभा, धूमप्रभा, तमःप्रभा और अधः सप्तमीपृथिवी इन चार पृथिवियों से निकल कर उत्पन्न नहीं होते हैं। अर्थात्-इन चार पृथिवियों से निकले हुए जीवों में देवाधिदेवत्व होने का अभाव रहता है।

अब गौतम प्रभु से ऐसा पूछते हैं-' जइ देवेहिंतो उववज्जंति ' हे भदन्त ! यदि देवगति से निकले हुए जीव देवाधिदेव होते हैं-तो क्या भवनपति से, या वानव्यन्तर से, या ज्योतिष्क देवों से, या वैमानिक देवों से, या नवग्रैवेयकों से, या पंच अनुत्तर औपपातिकदेवों से या सर्वार्थसिद्ध के देवों से निकले हुए जीव देवाधिदेव होते हैं ? इसके उत्तर में

' મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-' एवं तिसु पुढवीसु उववज्जंति, सेसाओ खोडेयव्वाओ " હે ગૌતમ ! દેવાધિદેવ રત્નપ્રભાપૃથ્વીમાંથી, શર્કરાપ્રભાપૃથ્વીમાંથી અને વાલુકાપ્રભાપૃથ્વીમાંથી નીકળીને ઉત્પન્ન થાય છે. પરન્તુ પંકપ્રભા, ધૂમપ્રભા, તમઃપ્રભા અને અધઃ સપ્તમી પૃથ્વીમાંથી નીકળેલા જીવો દેવાધિદેવ રૂપે ઉત્પન્ન થતા નથી એટલે કે છેલ્લી ચાર પૃથ્વીઓમાંથી નીકળેલા જીવોમાં દેવાધિદેવત્વ સંભવી શકતું નથી.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-" जइ देवेहिंतो उववज्जंति " ઇત્યાદિ-હે ભગવન્! જો દેવગતિમાંથી નીકળેલા જીવો દેવાધિદેવ થતા હોય, તો શું ભવનપતિ દેવોમાંથી કે વાનવ્યંતરોમાંથી, કે જ્યોતિષિકોમાંથી, કે વૈમાનિકોમાંથી, કે નવગ્રૈવેયકોમાંથી, કે પાંચ અનુત્તરૌપપાતિક દેવોમાંથી નીકળેલા જીવો દેવાધિદેવ થાય છે ?

देवाधिदेवाः खलु वैमानिकेषु सर्वेषु द्वादशस्वपि सौधर्मेशानाद्यच्युतान्तेभ्य उद्वृत्य उपपद्यन्ते, यावत्-नवग्रैवेयकेभ्यः, पञ्चानुत्तरौपपातिकेभ्यः, सर्वार्थसिद्धपर्यन्तेभ्यश्चोद्वृत्योपपद्यन्ते, शेषाः असुरकुमारादि भवनपतिवानव्यन्तरज्योतिषिकाः प्रतिषेधयितव्याः, एतेभ्यो भवनपत्यादि ज्योतिषिकान्तेभ्यो देवेभ्यः उद्वृत्य देवाधिदेवा नोपपद्यन्ते इति भावः। गौतमः पृच्छति-'भावदेवाणं भंते! कओहिंतो उववज्जंति?' हे भदन्त! भावदेवाः खलु केभ्य आगत्य उपपद्यन्ते? किं नैरयिकेभ्यः? इत्यादि प्रश्नः स्वयमूहनीयः, भगवानाह-'एवं जहा वक्कंतीए भवणवासीणं उववाओ तहा भाणियव्वो' हे गौतम! एवम्-पूर्वोक्तरीत्या, यथा व्युत्क्रा-

---

प्रभु कहते हैं-' वेमाणिएसु सव्वेसु उववज्जंति, जाव सव्वट्ठसिद्धत्ति सेसा खोडेयव्वा' हे गौतम! सौधर्मादि १२ देवलोकों में से यावत् नवग्रैवेयकों में से, सर्वार्थसिद्ध पर्यन्त के पांच अनुत्तरों में से आकरके देवाधिदेव उत्पन्न होते हैं असुरकुमारादि भवनपति में से, वानव्यन्तर में से एवं ज्योतिषिकों में से आकरके देवाधिदेव उत्पन्न नहीं होते हैं।

अब गौतम प्रभु से ऐसा पूछते हैं-' भावदेवाणं भंते! कओहिंतो उववज्जंति ' हे भदन्त! भावदेव कहां से आकरके उत्पन्न होते हैं? क्या नैरयिकों में से आकरके उत्पन्न होते हैं? या तिर्यञ्च योनिकों में से आकरके उत्पन्न होते हैं? या मनुष्यों में आकर के उत्पन्न होते हैं? या देवों में से आकर के उत्पन्न होते हैं? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-' एवं जहा वक्कंतीए भवणवासीणं उववाओ तहा भाणियव्वो ' हे

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-" गोयमा! " હે ગૌતમ! " वेमाणिएसु सव्वेसु उववज्जंति, जाव सव्वट्ठसिद्धत्ति, सेसा खोडेयव्वा ' સૌધર્મ આદિ બાર દેવલોકમાંથી, નવગ્રૈવેયકોમાંથી, અને સર્વાર્થસિદ્ધ પર્યન્તના પાંચ અનુત્તરોમાંથી આવીને જીવો દેવાધિદેવ રૂપે ઉત્પન્ન થઈ શકે છે, પરન્તુ ભવનપતિ, વાનવ્યંતર અને જ્યોતિષિક દેવોમાંથી નીકળીને દેવાધિદેવ રૂપે જીવો ઉત્પન્ન થતા નથી.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-" भावदेवाणं भंते! कओहिंतो उववज्जंति?' હે ભગવન્! કઈ ગતિના જીવો ભાવદેવ રૂપે ઉત્પન્ન થાય છે? શું નારકોમાંથી આવીને જીવો ભાવદેવ રૂપે ઉત્પન્ન થાય છે? કે તિર્યંચોમાંથી આવીને ભાવદેવ રૂપે ઉત્પન્ન થાય છે? કે મનુષ્યોમાંથી આવીને ભાવદેવ રૂપે ઉત્પન્ન થાય છે? કે દેવોમાંથી આવીને ભાવદેવ રૂપે ઉત્પન્ન થાય છે?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-" एवं जहा वक्कंतीए भवणवासीणं उववाओ तहा भाणियव्वो " હે ગૌતમ! પ્રજ્ઞાપના સૂત્રના છઠ્ઠા પદમાં અસુરકુમાર આદિ

न्तिके—प्रज्ञापनायाः षष्ठपदे, भवनवासिनाम्—असुरकुमारादीनां दशानां देवानाम् उपपात—उत्पादो भणित स्तथैव अत्रापि भावदेवानाम् उत्पादो भणितव्यः, बहुतरस्थानेभ्यः उद्वृत्ता भवनवासितयोपपद्यन्ते असंज्ञिनामपि तेषूत्पादात् इत्याशयेनोक्तम् 'जहा वक्कंतीए' इत्यादि ॥सू० २॥

भव्यद्रव्यदेवादिस्थितिवक्तव्यता ।

मूलम्—"भवियदव्वदेवाणं भंते! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता? गोयमा! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाइं। नरदेवाणं पुच्छा, गोयमा! जहण्णेणं सत्तवाससयाइं, उक्कोसेणं चउरासीई पुव्वसयसहस्साइं। धम्मदेवाणं भंते! पुच्छा, गोयमा! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी। देवाहिदेवाणं पुच्छा, गोयमा! जहण्णेणं वावत्तरिं वासाइं, उक्कोसेणं चउरासीइं पुव्वसयसहस्साइं। भावदेवाणं पुच्छा, गोयमा! जहण्णेणं दसवाससहस्साइं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ॥सू० ३॥

छाया—भव्यद्रव्यदेवानां भदन्त! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता? गौतम! जघन्येन अन्तर्मुहूर्तम्, उत्कृष्टेन त्रीणि पल्योपमानि, नरदेवानां पृच्छा, गौतम!

गौतम! प्रज्ञापना के छठे पदमें जैसा असुरकुमार आदि १० भवनपतियों का उत्पाद कहा गया है, उसी प्रकार से यहां पर भी भावदेवों का उत्पाद कहना चाहिये अनेक स्थानों से आकरके जीव भवनपतिदेवरूप से उत्पन्न होते हैं। यहां तक कि असंज्ञी जीवों का भी उनमें उत्पाद हो जाता है। इसी आशय से 'जहा वक्कंतीए' ऐसा पद कहा गया है ॥सू० २॥

---

૧૦ પ્રકારના ભવનપતિ દેવોના ઉત્પાદ વિષે જેવું કથન કરવામાં આવ્યું છે, એજ પ્રમાણે અહીં ભાવદેવોના ઉત્પાદનું કથન કરવું જોઇએ અનેક સ્થાનોમાંથી આવીને જીવ ભવનપતિ દેવરૂપે ઉત્પન્ન થાય છે, અસંજ્ઞી જીવોનો પણ ભવનપતિ દેવોમાં ઉત્પાદ થઈ જાય છે. તેથી જ "जहा वक्कंतीए" "व्युत्क्रान्तिपદમાં કહ્યા અનુસારનું કથન અહીં ગ્રહણ કરવાનુ કહેવામાં આવ્યું છે." ॥સૂ૦૨॥

जघन्येन सप्त वर्षशतानि, उत्कृष्टेन चतुरशीतिपूर्वशतसहस्राणि, धर्मदेवानां भदन्त ! पृच्छा, गौतम ! जघन्येन अन्तर्मुहूर्तम् , उत्कृष्टेन देशोनपूर्वकोटी, देवाधिदेवानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येन द्वासप्ततिः वर्षाणि, उत्कृष्टेन चतुरशीतिपूर्वशतसहस्राणि, भावदेवानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येन दशवर्षसहस्राणि, उत्कृष्टेन त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाणि ॥सू० ३॥

टीका—अथ पूर्वोक्त भव्यद्रव्यदेवादीनां स्थितिद्वारं प्ररूपयितुमाह-'भविय दव्वदेवाणं' इत्यादि, 'भवियदव्वदेवाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ?' गौतमः पृच्छति-हे भदन्त ! भव्यद्रव्यदेवानां कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? भगवानाह-'गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाइं' हे गौतम ! भव्यद्रव्यदेवानाम् जघन्येन अन्तर्मुहूर्तं स्थितिः प्रज्ञप्ता, अन्तर्मुहूर्तायुषः-पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकस्य देवेषूत्पादात् भव्यद्रव्यदेवस्य जघन्यान्तर्मुहूर्तस्थिति-

भव्यद्रव्यदेवादिस्थितिवक्तव्यता

'भवियदव्वदेवाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता' इत्यादि ।

टीकार्थ-सूत्रकार ने इस सूत्र द्वारा भव्यद्रव्यदेवादिकों की स्थिति की प्ररूपणा की है। इसमें गौतम ने प्रभु से ऐसा पूछा है-' भवियदव्वदेवाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ' हे भदन्त ! भव्यद्रव्यदेवों की स्थिति कितने कालतक की कही गई है? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-' गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाइं ' हे गौतम ! भव्यद्रव्य देवों की जघन्य से अन्तर्मुहूर्त की स्थिति कही गई है, क्यों कि अंतमुंहूर्त की आयुषवाला पंचेन्द्रियतिर्यंच देवों में उत्पन्न हो जाता है। इसलिये भव्यद्रव्यदेव की स्थिति जघन्य से

—ભવ્યદ્રવ્યદેવ આદિની સ્થિતિવિષયક વક્તવ્યતા—

" भवियदव्वदेवाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता " ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ–સૂત્રકારે આ સૂત્ર દ્વારા ભવ્યદ્રવ્યદેવ આદિ પાંચે પ્રકારના દેવોની સ્થિતિ (આયુષ્ય)ની પ્રરૂપણા કરી છે–આ વિષયને અનુલક્ષીને ગૌતમસ્વામીએ મહાવીર પ્રભુને આ પ્રમાણે પ્રશ્ન પૂછ્યો છે–" भवियदव्वदेवाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ?" હે ભગવન્! ભવ્યદ્રવ્યદેવોની સ્થિતિ કેટલા કાળ સુધીની કહી છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર–" गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिन्नि-पलिओवमाइं " હે ગૌતમ ! ભવ્યદ્રવ્યદેવોની જઘન્ય (ઓછામાં ઓછી) અન્તર્મુહૂર્તની સ્થિતિ કહી છે અને ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ ત્રણ પલ્યોપમની કહી છે. તેમની અન્તર્મુહૂર્તપ્રમાણ જઘન્ય સ્થિતિ કહેવાનું કારણ એ છે કે અંતર્મુ-

रितिभावः। उत्कृष्टेन तु त्रीणि पल्योपमानि स्थितिः प्रज्ञप्ता उत्तरकुर्वादि मनुजादीनां देवेष्वेवोत्पादात्, ते च भव्यद्रव्यदेवाः सन्ति, अत स्तेषा मुत्कर्षतः त्रीणि पल्योपमानि स्थितिरिति भावः। गौतमः पृच्छति-'नरदेवाणं पुच्छा?' हे भदन्त! नरदेवानां कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता? इति पृच्छा, भगवानाह-'गोयमा! जहन्नेणं सत्तवाससयाइं, उक्कोसेणं चउरासीई पुव्वसयसहस्साइं' हे गौतम! नरदेवानां चक्रवर्त्यादीनां जघन्येन सप्तवर्षशतानि स्थितिः प्रज्ञप्ता, यथा-ब्रह्मदत्तस्य प्रतिपादिता, उत्कृष्टेन तु चतुरशीति पूर्वशतसहस्राणि-चतुरशीतिलक्षपूर्वाणि स्थितिः प्रज्ञप्ता, यथा भरतस्य प्रतिपादिता। गौतमः पृच्छति-

---

अन्तर्मुहूर्त की कही गई है। तथा उत्कृष्ट से जो इसकी स्थिति तीन पल्योपम की कही गई है उसका कारण यह है कि उत्तरकुरु आदि में वहां के मनुष्य तिर्यचों की उत्कृष्ट स्थिति तीन पल्योपम की होती है एवं वे मरकर नियम से देवरूप से ही उत्पन्न होते हैं। ये उत्तरकुरु आदि के जीव भव्यद्रव्यदेव हैं-इसलिये, कि ये देवों में ही उत्पन्न होने वाले होते हैं-अन्यत्र नहीं।

अब गौतम प्रभु से ऐसा पूछते हैं-'नरदेवाणं पुच्छा' हे भदन्त! नरदेवों की स्थिति कितने काल की होती है? उत्तर में प्रभु कहते हैं-'गोयमा' हे गौतम! 'जहण्णेणं सत्तवाससयाइं, उक्कोसेणं चउरासीई-पुव्वसयसहस्साइं' चक्रवर्ती रूप नरदेवों की स्थिति जघन्य से सातसौ वर्ष की कही गई है, जैसी कि ब्रह्मदत्तचक्रवर्ती की और उत्कृष्ट से इनकी स्थिति चौरासी लाखपूर्व की कही गई है-जैसी कि भरतचक्रवर्ती की.

હૂર્તના આયુષ્યવાળાં પંચેન્દ્રિયતિર્યંચો દેવોમાં ઉત્પન્ન થઈ જાય છે. તેમની ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ ત્રણ પલ્યોપમની કહેવાનું કારણ એ છે કે ઉત્તરકુરુ આદિમાં મનુષ્યતિર્યંચોની ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ ત્રણ પલ્યોપમની હોય છે, અને તેઓ મરીને નિયમથી જ દેવ રૂપે ઉત્પન્ન થાય છે. આ ઉત્તરકુરુ આદિના જીવોને ભવ્યદ્રવ્યદેવો જ ગણવામાં આવે છે, કારણ કે તેઓ મરીને દેવોમાં જ ઉત્પન્ન થાય છે-અન્ય ગતિમાં ઉત્પન્ન થતા નથી

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-"नरदेवाणं पुच्छा" હે ભગવન્! નરદેવોની સ્થિતિ કેટલા કાળની કહી છે?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-"गोयमा!" હે ગૌતમ! "जहण्णेणं सत्तवाससयाइं, उक्कोसेणं चउरासीई पुव्वसयसहस्साइं" ચક્રવર્તી આદિ રૂપ નરદેવોની જઘન્ય સ્થિતિ ૭૦૦ વર્ષની અને ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ ૮૪ લાખ પૂર્વની કહી છે.

'धम्मदेवाणं भंते ! पुच्छा' हे भदन्त ! धर्मदेवानां कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? इति पृच्छा, भगवानाह-'गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी' हे गौतम ! धर्मदेवानां जघन्येन अन्तर्मुहूर्तं स्थितिः प्रज्ञप्ता, इदम् अप्रमत्तसंयमापेक्षया बोध्यम्, प्रमत्तसंयमस्यतु-अत्रैव तृतीयशतकस्य तृतीयोद्देशके मण्डितपुत्रप्रश्नोत्तरे जघन्यत एकसमयस्य प्रतिपादितत्वात्। यद्वा योऽन्तर्मुहूर्तविशेषायुष्कश्चारित्रं प्रतिपद्यते तदपेक्षया इदं बोध्यम्, उत्कृष्टेन तु धर्मदेवानां देशोना पूर्वकोटी स्थितिः प्रज्ञप्ता, तथा च यो देशोन देशोनता च पूर्वकोट्या, पूर्वकोट्यायुष्कश्चारित्र प्रतिपद्यते तदपेक्षयेदमवसेयम्,

अब गौतमस्वामी प्रभु से पूछते हैं-'धम्मदेवाणं भंते ! पुच्छा' हे भदन्त ! धर्मदेवों की स्थिति कितने काल की कही गई है ? उत्तर में प्रभु ने कहा-'गोयमा' हे गौतम ! 'जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी' धर्मदेवों की जघन्यस्थिति एक अन्तर्मुहूर्त की कही गई है, (यहस्थिति कथन अप्रमत्तसंयत की अपेक्षा से है। नहीं तो प्रमत्तसंयत की तो इसी तृतीयशतक के तृतीय उद्देशक में मण्डितपुत्र के प्रश्नोत्तर में जघन्यस्थिति एक समय की कही गई है) अथवा जिसकी आयु अन्तर्मुहूर्त्त की बाकी रही है-ऐसा जीव जब चारित्र को धारण करलेता है तो इस अपेक्षा से यह जघन्य स्थिति का कथन बन जाता है। तथा धर्मदेवों की उत्कृष्ट से स्थिति जो देशोनपूर्वकोटि की कही गई है-वह देशोनपूर्वकोटि की आयुवाले जीव को चारित्रग्रहण

જેમ કે બ્રહ્મદત્ત ચક્રવર્તીની આયુસ્થિતિ ૭૦૦ વર્ષની અને ભરત ચક્રવર્તીની આયુસ્થિતિ ૮૪ લાખ પૂર્વની હતી.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-" धम्मदेवाणं भंते ! पुच्छा " હે ભગવન્ ! ધર્મદેવોની સ્થિતિ કેટલા કાળની કહી છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-" गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं देसूणा-पुव्वकोडी " હે ગૌતમ ! ધર્મદેવોની જઘન્યસ્થિતિ એક અન્તર્મુહૂર્તની કહી છે, આ સ્થિતિ અપ્રમત્ત સંયતની અપેક્ષાએ કહી છે. પ્રમત્ત સંયતની જઘન્યસ્થિતિ તો ત્રીજા શતકના ત્રીજા ઉદ્દેશકના મંડિતપુત્રના પ્રશ્નોત્તરોમાં જણાવ્યા અનુસાર એક સમયની કહી છે. અથવા-જેનું આયુષ્ય એક અન્તર્મુહૂર્ત પ્રમાણ જ બાકી રહ્યું હોય એવો જીવ જો ચારિત્રને ધારણ કરી લે તો, તે દૃષ્ટિએ વિચાર કરવાથી આ જઘન્યસ્થિતિ વિષયક કથન ઘટિત થઈ જાય છે. ધર્મદેવોની ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ દેશોનપૂર્વકોટિની કહી છે. દેશોનપૂર્વકોટિના આયુષ્યવાળા જીવના ચરિત્રગ્રહણની અપેક્ષાએ આ ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ કહેવામાં આવી છે. પૂર્વકોટિમાં જે દેશોનતા કહેવામાં આવી છે, તે પૂર્વ-

अष्टाभिर्वर्षैः, अष्टवर्षस्यैव मत्रज्यार्हत्वात्। गौतमः पृच्छति-' देवाहिदेवाणं पुच्छा ' हे भदन्त ! देवाधिदेवानां कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? इति पृच्छा, भगवानाह-'गोयमा ! जहण्णेणं बावत्तरिं वासाइं, उक्कोसेणं चउरासीइं पुव्वसयसहस्साइं' हे गौतम ! देवाधिदेवानां जघन्येन द्वासप्ततिः वर्षाणि स्थितिः प्रज्ञप्ता यथा महावीरस्य, उत्कृष्टेन तु चतुरशीति पूर्वशतसहस्राणि-चतुरशीति लक्षाणि-स्थितिः प्रज्ञप्ता यथा ऋषभस्वामिनः, गौतमः पृच्छति-'भावदेवाणं पुच्छा' हे भदन्त ! भावदेवानां कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? इति पृच्छा, भगवानाह-

करने की अपेक्षा से कही गई है। पूर्वकोटि में जो देशोनता कही गई है वह सातिरेक आठवर्ष कम होने की अपेक्षा से कही गई है क्यों कि सातिरेक आठवर्ष के पहिले जीव में चारित्र धारण करनेकी योग्यता नहीं आती है-सातिरेक आठवर्ष के होने पर ही आती है अर्थात् गर्भ के समय को मिलाकर नौ वर्ष के होने पर ही आती है।

अब गौतम प्रभु से ऐसा पूछते हैं-' देवाहिदेवाणं पुच्छा ' हे भदन्त ! देवाधिदेवों की स्थिति कितने काल की होती है ? उत्तर में प्रभु कहते हैं-' गोयमा ' हे गौतम ! ' जहण्णेणं बावत्तरिं वासाइं, उक्कोसेणं चउरासीइं पुव्वसयसहस्साइं, देवाधिदेवों की जघन्य से स्थिति ७२ वर्ष की होती है जैसे महावीर स्वामी की तथा उत्कृष्ट से स्थिति चौरासी लाख पूर्व की होती है जैसे-ऋषभदेव भगवान् की।

अब गौतमस्वामी प्रभु से ऐसा पूछते हैं-' भावदेवाणं पुच्छा ' हे भदन्त ! भावदेवों की स्थिति कितने काल की कही गई है ? उसके

કોટિમાં આઠ વર્ષ ઓછાં થવાને કારણે કહેવામાં આવી છે, કારણ કે આઠ વર્ષની ઉમર થયાં પહેલાં જીવમાં ચારિત્ર ગ્રહણ કરવાની યોગ્યતા સંભવતી નથી આઠ વર્ષનો થયા બાદ જ તેનામાં ચારિત્રગ્રહણ કરવાની યોગ્યતા આવે છે.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-" देवाहिदेवाणं पुच्छा " હે ભગવન્ ! દેવાધિદેવોની સ્થિતિ કેટલા કાળની કહી છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-" जहण्णेणं बावत्तरिं वासाइं, उक्कोसेणं चउरासीइं पुव्वसयसहस्साइं " હે ગૌતમ ! દેવાધિદેવોની જઘન્યસ્થિતિ ૭૨ વર્ષની હોય છે, જેમ કે મહાવીર સ્વામીની આયુસ્થિતિ ૭૨ વર્ષની હતી, અને દેવાધિદેવોની ઉત્કૃષ્ટસ્થિતિ ચોર્યાસી લાખ પૂર્વની હોય છે. જેમ કે ઋષભદેવ ભગવાનનું આયુષ્ય ૮૪ લાખ પૂર્વનું હતું.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-" भावदेवाणं पुच्छा " હે ભગવન્ ! ભાવદેવોની સ્થિતિ કેટલા કાળની કહી છે ?

'गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्साइं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं' हे गौतम ! भावदेवानां जघन्येन दशवर्षसहस्राणि स्थितिः प्रज्ञप्ता यथा व्यन्तराणाम् उत्कृष्टेन तु त्रयस्त्रिंशत्-सागरोपमाणि स्थितिः प्रज्ञप्ता, यथा सर्वार्थसिद्धदेवानामिति भावः॥सू. ३॥

भव्यद्रव्यदेवादिविकुर्वणावक्तव्यता ।

मूलम्–"भवियदव्वदेवाणं भंते किं एगत्तं पभू विउव्वित्तए, पुहुत्तं पभू विउव्वित्तए ? गोयमा ! एगत्तं पि पभू विउव्वित्तए, पुहुत्तं पि पभू विउव्वित्तए, एगत्तं विउव्वमाणे एगिंदियरूवं वा जाव पंचिंदियरूवं वा, पुहुत्तं विउव्वमाणे एगिंदियरूवाणि वा, जाव पंचिंदियरूवाणि वा, ताइं संखेज्जाणि वा, असंखेज्जाणि वा, संबद्धाणि वा, असंबद्धाणि वा, सरिसाणि वा, असरिसाणि वा, विउव्वंति, विउव्वित्ता तओ पच्छा अप्पणो अहिच्छियाइं कज्जाइं करेंति। एवं नरदेवा वि, एवं धम्मदेवा वि। देवाहिदेवाणं पुच्छा, गोयमा ! एगत्तं पि पभू विउव्वित्तए, पुहुत्तं पि पभू विउव्वित्तए, णो चेवणं संपत्तीए विउव्विंसु वा, विउव्विंति वा, विउव्विस्संति वा, भावदेवाणं पुच्छा, जहा भवियदव्वदेवा"॥सू. ४॥

छाया—भव्यद्रव्यदेवाः खलु भदन्त ! किम् एकत्वं प्रभु विंकुर्वितुम् ? पृथुत्वं प्रभु विंकुर्वितुम्? गौतम ! एकत्वमपि प्रभु विंकुर्वितुम्, पृथुत्वमपि प्रभु विंकुर्वि-

उत्तर में प्रभु कहते हैं–'गोयमा' हे गौतम ! 'जहण्णेणं दसवाससहस्साइं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं' भावदेवों की जघन्यस्थिति १० हजार वर्ष की कही गई है, जैसे व्यन्तरों की, एवं उत्कृष्ट स्थिति ३३ सागरोपम की कही गई है जैसे सर्वार्थसिद्धदेवों की ॥सू० ३॥

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર–" गोयमा ! " હે ગૌતમ ! " जहण्णेणं दसवाससहस्साइं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं " ભાવદેવોની જઘન્યસ્થિતિ દસ હજાર વર્ષની અને ઉત્કૃષ્ટસ્થિતિ ૩૩ સાગરોપમની કહી છે. જેમ કે વાનવ્યંતર દેવોની સ્થિતિ દસ હજાર વર્ષની અને સર્વાર્થસિદ્ધ અનુત્તર વિમાનવાસી દેવોની સ્થિતિ ૩૩ સાગરોપમની કહી છે. ॥સૂ૦૩॥

तुम्, एकत्वं विकुर्वन्तः एकेन्द्रियरूपं वा, यावत्–पञ्चेन्द्रियरूपं वा, पृथुत्वं विकुर्वन्तः एकेन्द्रियरूपाणि वा, यावत् पञ्चेन्द्रियरूपाणि वा, तानि संख्येयानि वा, असंख्येयानि वा, अत्र 'असंख्येयानि' इति यदुक्तं तत् तेषां शक्तिनात्रमदर्शनार्थम्, नतु तत्करणतयेति सम्बद्धानि वा, असंबद्धानि वा, सदृशानि वा, असदृशानि वा, विकुर्वन्ति विकुर्वित्वा ततः पश्चात् आत्मनो यथेच्छानि कार्याणि कुर्वन्ति, एवं नरदेवा अपि, एवं धर्मदेवाः अपि, देवाधिदेवानां पृच्छा, गौतम ! एकत्वमपि प्रभु विकुर्वितुम्, पृथुत्वमपि प्रभु विकुर्वितुं, नो चैव संप्राप्त्या व्यकुर्विषुः वा, विकुर्वन्ति वा, विकुर्विष्यन्ति वा, भावदेवानां पृच्छा, यथा भव्यद्रव्यदेवाः ॥सू० ४॥

टीका—अथ भव्यद्रव्यदेवादीनामेव वैक्रियद्वारं प्ररूपयितुमाह–'भवियदव्वदेवाणं' इत्यादि। 'भवियदव्वदेवाणं भंते! किं एगत्तं पहू विउव्वित्तए, पुहुत्तं पभू विउव्वित्तए?' गौतमः पृच्छति–हे भदन्त! भव्यद्रव्यदेवाः खलु मनुष्याः पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः वा वैक्रियलब्धिसम्पन्नाः किम्, किंवा, एकत्वम्–एकरूपम्, विकुर्वितुं–विकुर्वणया निष्पादयितुं प्रभवः–समर्थाः भवन्ति? किंवा

भव्यद्रव्यदेवादिविकुर्वणावक्तव्यता—

'भवियदेव्वदेवाणं भंते!' इत्यादि।

टीकार्थ–इस सूत्रद्वारा सूत्रकारने भव्यद्रव्यदेव आदिकों के वैक्रियद्वार की प्ररूपणा की है। इसमें गौतम ने प्रभु से ऐसा पूछा है–'भवियदव्वदेवाणं भंते! किं एगत्तं पहू विउव्वित्तए, पुहुत्तं पभू विउव्वित्तए' हे भदन्त! वैक्रियलब्धिसंपन्न मनुष्य अथवा पंचेन्द्रियतिर्यञ्च अपनी विकुर्वणाशक्तिद्वारा क्या एकरूप को निष्पन्न करने में समर्थ होते हैं? या अनेकरूपों को निष्पन्न करने में समर्थ होते हैं? इसके

—ભવ્યદ્રવ્યદેવ આદિની વિકુર્વણાની વક્તવ્યતા—

"भवियदव्वदेवाणं भंते" इत्यादि—

ટીકાર્થ–સૂત્રકારે આ સૂત્ર દ્વારા ભવ્યદ્રવ્યદેવ આદિના વૈક્રિયદ્વારની પ્રરૂપણા કરી છે. આ વિષયને અનુલક્ષીને ગૌતમ સ્વામી મહાવીર પ્રભુને એવો પ્રશ્ન પૂછે છે કે–"भवियदव्वदेवाणं भंते! किं एगत्तं पहू विउव्वित्तए, पुहुत्तं पभू विउव्वित्तए?" હે ભગવન્! વૈક્રિયલબ્ધિસંપન્ન મનુષ્ય અથવા પંચેન્દ્રિયતિર્યંચ શું પોતાની વિકુર્વણાશક્તિ દ્વારા એક રૂપનું નિર્માણ કરવાને સમર્થ હોય છે? અથવા અનેક રૂપોને નિષ્પન્ન કરવાને સમર્થ હોય છે?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર–"गोयमा! एगत्तं पि पहू विउविव्वत्तए, पुहुत्तं वि

पृथुत्वम्-बहुत्वम् अनेकरूपाणि, विकुर्वितुं-विकुर्वणया निष्पादयितुं, प्रभवः-समर्था भवन्ति ? भगवानाह-'गोयमा ! एगत्तं पि पहू विउव्वित्तए, पुहुत्तं पि पहू विउव्वित्तए' हे गौतम ! भव्यद्रव्यदेवाः खलु वैक्रियलब्धिसम्पन्नाः मनुष्या वा, पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिका वा, एकत्वमपि-एकरूपमपि, विकुर्वितुं प्रभवः-समर्थाः, भवन्ति, अथ च पृथुत्वमपि बहुत्वमपि-अनेकरूपाण्यपि विकुर्वितुम्, प्रभवः-समर्थाः भवन्ति, तत्र 'एगत्तं विउव्वमाणे एगिंदियरूवं वा, जाव पंचिंदियरूवं वा, पुहुत्तं विउव्वमाणे एगिंदियरूवाणि वा, जाव पंचिंदियरूवाणि वा,' एकत्वम्-एकरूपम्, विकुर्वन्तः, एकेन्द्रियरूपं वा, यावत्-द्वीन्द्रियरूप वा, त्रीन्द्रियरूपं वा, चतुरिन्द्रियरूपं वा, पञ्चेन्द्रियरूपं वा विकुर्वन्ति, अथ च पृथुत्वम्-अनेकरू-

---

उत्तर में प्रभु कहते हैं-' गोयमा ! एगत्तं पि पहू विउव्वित्तए, पुहुत्तं पि पभू विउव्वित्तए ' हे गौतम ! भव्यद्रव्यदेव-वैक्रियलब्धिसंपन्न मनुष्य एवं पंचेन्द्रियतिर्यञ्च-एकरूप की भी अपनी वैक्रियशक्तिद्वारा विकुर्वणा करने में समर्थ होते हैं, और अनेक रूपों की भी अपनी वैक्रियशक्ति द्वारा विकुर्वणा करने में समर्थ होते हैं। इनमें यदि वे ' एगत्तं विउव्वमाणे एगिंदियरूवं वा, जाव पंचिंदियरूवं वा, पुहुत्तं विउव्वमाणे एगिंदियरूवाणि वा जाव पंचिंदियरूवाणिवा ' अपनी विक्रियाशक्ति द्वारा जब एक रूप की विकुर्वणा करते हैं-एक रूप को निष्पन्न करते हैं-तब वह एकरूप किसी भी एकेन्द्रिय जीव का हो सकता है, अर्थात् वे किसी भी एकेन्द्रिय जीव के रूप को बना सकते हैं-किसी भी दो इन्द्रिय जीव के रूप को बना सकते हैं, किसी भी तेइन्द्रिय जीव के रूप को बना सकते हैं, किसी भी चौइन्द्रिय जीव के रूप को-बना सकते हैं, तथा किसी भी पंचेन्द्रिय जीव के एक रूप को बना सकते हैं।

पभू विउव्वित्तए" હે ગૌતમ ! भव्यद्रव्यदेव-वैक्रियलब्धिसंपन्न मनुष्य अने પંચેન્દ્રિયતિર્યંચ-પોતાની વિકુર્વણા શક્તિદ્વારા એક રૂપની પણ વિકુર્વણા કરવાને સમર્થ હોય છે, અને અનેક રૂપોની પણ પોતાની વૈક્રિય શક્તિદ્વારા વિકુર્વણા કરવાને સમર્થ હોય છે જ્યારે તેઓ " एगत्तं विउव्वमाणे एगिंदियरूवंवा, जाव पंचिंदियरूवं वा, पुहुत्तं विउव्वमाणे एगिंदियरूवाणि वा जाव पंचिंदियरूवाणि वा" પોતાની વૈક્રિયશક્તિ દ્વારા એક રૂપની વિકુર્વણા કરે છે, ત્યારે જે એક રૂપ નિષ્પન્ન થાય છે તે કેઇ એકેન્દ્રિય જીવનું પણ હોઈ શકે છે, દ્વીન્દ્રિય જીવનું પણ હોઇ શકે છે, ત્રીન્દ્રિય જીવનું પણ હોઇ શકે છે, ચતુરિન્દ્રિય જીવનું પણ હોઈ શકે છે, પંચેન્દ્રિય જીવનું પણ હોઇ શકે છે, એટલે કે તે પોતાની વૈક્રિયશક્તિ દ્વારા કોઈ પણ એકેન્દ્રિય જીવના

पाणि, विकुर्वन्तः, एकेन्द्रियरूपाणि वा, यावत्-द्वीन्द्रियरूपाणि वा, त्रीन्द्रियरूपाणि वा, चतुरिन्द्रियरूपाणि वा, पञ्चेन्द्रियरूपाणि वा, विकुर्वन्ति, 'ताइं संखेज्जाणि वा, असंखेज्जाणि वा, संबद्धाणि वा, असंबद्धाणि वा, सरिसाणि वा, असरिसाणि वा, विउव्वंति' तानि-अनेकरूपाणि, संख्येयानि वा असंख्येयानि वा, सम्बद्धानि वा, आत्मना सह सम्बद्धानि पुद्गलरूपाणि, असंबद्धानि वा असम्बद्धानि दूरस्थितानि वा पुद्गलद्रव्याणि, सदृशानि वा, समानवर्णादियुक्तानि, असदृशानि वा-असमानवर्णादियुक्तानि वा विकुर्वन्ति, 'विउव्वित्ता', तओ पच्छा अप्पणो अहिच्छियाइं कज्जाइं करेंति' विकुर्वित्वा, ततः पश्चात्, आत्मनो यथेच्छानि-इच्छानुसाराणि, कार्याणि

और जब वे अपनी विकुर्वणाशक्ति द्वारा अनेक रूपों की विकुर्वणा करते हैं-तब वे रूप अनेक एकेन्द्रिय जीवों के भी हो सकते हैं, अनेक दो इन्द्रिय जीवों के भी हो सकते हैं, अनेक ते इन्द्रिय जीवों के भी हो सकते हैं, अनेक चौइन्द्रिय जीवों के भी हो सकते हैं और अनेक पंचेन्द्रिय जीवों के भी हो सकते हैं। ये सब संख्या में 'संखेज्जाणि वा, असंखेज्जाणि वा, संबद्धाणि वा, असंबद्धाणि वा, सरिसाणि वा, असरिसाणि वा विउव्वंति' विकुर्वित हुए रूप संख्यात भी हो सकते हैं और संख्या से बाहिर असंख्यात भी हो सकते हैं। संबद्ध-अपने साथ संबद्ध-पुद्गल द्रव्यरूप भी होते हैं और असंबद्ध-दूरस्थित पुद्गल-द्रव्यरूप भी होते हैं। तथा ये समानवर्णादिकों से भी युक्त होते हैं और असमानवर्णादिकों से भी युक्त होते हैं। 'विउव्वित्ता तओ पच्छा अप्पणो अहिच्छियाइं कज्जाइं करेंति' इन रूपों की विकुर्वणा करके

અથવા દ્વીન્દ્રિય જીવના, અથવા ત્રંન્દ્રિય જીવના અથવા ચતુરિન્દ્રિય જીવના અથવા પંચેન્દ્રિય જીવના રૂપનું નિર્માણ કરી શકે છે. જ્યારે તેઓ પોતાની વૈક્રિય શક્તિ દ્વારા અનેક રૂપોનું નિર્માણ કરે છે, ત્યારે તેઓ અનેક એકેન્દ્રિય જીવોની, અથવા દ્વીન્દ્રિય જીવોની, અથવા ત્રીન્દ્રિય જીવોની અથવા ચતુરિન્દ્રિય જીવોની અથવા પંચેન્દ્રિય જીવોની પણ વિકુર્વણા કરી શકે છે. તે વિકુર્વિત રૂપો "संखेज्जाणि वा, असंखेज्जाणि वा, संबद्धाणि वा, असंबद्धाणि वा, सरिसाणि वा, असरिसाणि वा विउव्वंति" સંખ્યાત પણ હોઇ શકે છે, અસંખ્યાત પણ હોઈ શકે છે, સંબદ્ધ-પોતાની સાથે સંબંદ્ધ-પુદ્ગલ દ્રવ્ય રૂપ પણ હોઇ શકે છે, અસંબદ્ધ-દૂર સ્થિત પુદ્ગલ દ્રવ્ય રૂપ પણ હોઇ શકે છે, તથા તેઓ સમાન વર્ણાદિથી યુક્ત પણ હોઈ શકે છે અને અસમાન વર્ણાદિકોથી યુક્ત પણ હોઇ શકે છે. "विउव्वित्ता तओ पच्छा अप्पणो अहिच्छियाइं कज्जाइं करेंति" આ રૂપોની વિકુર્વણા કર્યા બાદ તેઓ ઇચ્છાનુસાર

कुर्वन्ति। एवं नरदेवावि एवं धम्मदेवा वि' एवं-पूर्वोक्तरीत्या, नरदेवा अपि, 'धर्मदेवा अपि वाच्याः। गौतम पृच्छति-'देवाहिदेवाणं पुच्छा' हे भदन्त! देवाधिदेवाः किम् एकत्वम्-एकरूपं विकुर्वितुं प्रभवः-समर्थाः भवन्ति? किंवा पृथुत्वम् अनेक रूपाणि, विकुर्वितुं प्रभवः-समर्थाः भवन्ति? इति पृच्छा, भगवानाह-'गोयमा! एगत्तंपि पहू विउव्वित्तए, पुहुत्तं पि पहू विउव्वित्तए' हे गौत्तम! देवाधिदेवाः खलु एकत्वमपि-एकरूपमपि, विकुर्वितुं प्रभवः-समर्थाः भवन्ति, अथ च पृथुत्वमपि-अनेकरूपाण्यपि विकुर्वितुं प्रभवः-समर्था भवन्ति, किन्तु 'णो चेवणं संपत्तीए विउव्विसु वा, विउव्वित्ति वा, विउव्विस्संति वा' नो चैव खलु, सम्प्राप्त्या-तद्देशावगाहनेन वैक्रियरूपसंपादनेनेत्यर्थः कदाचित् व्यकुर्विषुर्वा, विकुर्वन्ति वा, विकुर्विष्यन्ति वा, केवलं तेषां वैक्रियशक्तेः सामर्थ्यमतिपादनपदमेतदवसेयम्।

फिर वे इच्छानुसार अपने कामों को करते हैं। 'एवं नरदेवावि, एवं धम्मदेवा वि' इसी प्रकार का कथन नरदेव और धर्मदेवों के विषय में भी कहना चाहिये अब गौतमस्वामी प्रभु से ऐसा पूछते हैं-'देवाहिदेवाणं पुच्छा' हे भदन्त! देवाधिदेव क्या एक रूप को विकुर्वणा करने में समर्थ होते हैं या अनेक रूपों की विकुर्वणा करने में समर्थ होते हैं? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-'गोयमा' हे गौतम! 'एगत्तं पि पभू विउव्वित्तए, पुहुत्तंपि पभू विउव्वित्तए' देवाधिदेव एकरूप की भी अपनी विकुर्वणा शक्ति द्वारा निष्पत्ति कर सकते हैं और अनेक रूपों की भी निष्पत्ति कर सकते हैं-किन्तु 'णो चेव णं संपत्तीए विउव्विसु वा, विउव्वित्ति वा, विउव्विस्संति वा' उन्होंने वैक्रियरूप संपादन द्वारा न पहले कभी ऐसा किया है न वे वर्तमान काल में भी ऐसा करते हैं

પોતાના કાર્યોને કરે છે. "एवं नरदेवा वि, एवं धम्मदेवा वि" એજ પ્રકારનું કથન નરદેવો અને ધર્મદેવોની વિકુર્વણા શક્તિ વિષે પણ સમજવું.

ગૌતમ સ્વામીના પ્રશ્ન-"देवाहिदेवाणं पुच्छा" હે ભગવન્! દેવાધિદેવો શું એક રૂપની વિકુર્વણા કરવાને સમર્થ હોય છે, કે અનેક રૂપોની વિકુર્વણા કરવાને સમર્થ હોય છે?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-"एगत्तं पि पभू विउव्वित्तए, पुहुत्तं वि पभू विउव्वित्तए" હે ગૌતમ! દેવાધિદેવ પોતાની વૈક્રિયશક્તિ દ્વારા એક રૂપનું પણ નિર્માણ કરી શકે છે અને અનેક રૂપોનું નિર્માણ પણ કરી શકે છે પરંતુ "णोचेवणं संपत्तीए विउव्विसु वा विउव्वंति वा, विउव्विस्संति वा" તેમણે પોતાની વૈક્રિયશક્તિ દ્વારા પહેલાં કદી પણ એવાં વૈક્રિય રૂપોની નિષ્પત્તિ કરી નથી, વર્તમાન કાળમાં પણ તેઓ એવું કરતા નથી અને ભવિષ્યમાં પણ એવું

गौतमः पृच्छति–'भावदेवाणं पुच्छा' हे भदन्त ! भावदेवाः खलु किम्, एकत्वम्–एकरूपं विकुर्वितुं प्रभवः समर्थाः भवन्ति ? किंवा पृथुत्वम्–अनेकरूपाणि, विकुर्वितुं प्रभवः-समर्थाः भवन्ति ? भगवानाह–'जहा भवियदव्वदेवा' हे गौतम ! यथा भव्यद्रव्यदेवाः एकत्वमपि विकुर्वितुं प्रभवः, अथ च पृथुत्वमपि विकुर्वितुं प्रभवः समर्थाः भवन्ति, तथैव भावदेवा अपि एकत्वमपि विकुर्वितुं प्रभवः, अथ च पृथुत्वमपि विकुर्वितुं प्रभवः समर्थाः भवन्तीति भावः ॥सू० ४॥

और न आगे भी वे ऐसा करेंगे ही एतावता उनमें ऐसा करने की वैक्रिय शक्ति नहीं है–ऐसा मत समझना शक्ति तो है परन्तु कृतकृत्य होने से वे ऐसा त्रिकाल में भी नहीं करते हैं अर्थात् उस शक्ति का इस रूप में वे उपयोग नहीं करते। अब गौतम प्रभु से ऐसा पूछते हैं–'भावदेवा णं भंते ! पुच्छा' हे भदन्त ! भावदेव क्या एक रूप की विकुर्वणा करने में समर्थ होते हैं या अनेकरूपों की विकुर्वणा करने में समर्थ होते हैं ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं–'जहा भवियदव्वदेवा' हे गौतम ! जिस प्रकार से भव्यद्रव्यदेव एकरूप भी और अनेक रूप भी अपनी विकुर्वणाशक्ति द्वारा निष्पन्न करने में समर्थ होते हैं उसी प्रकार से भावदेव भी एकरूप भी और अनेकरूप भी अपनी विकुर्वणाशक्ति द्वारा निष्पन्न करने में समर्थ होते हैं ॥ सू० ४ ॥

કરશે નહીં તેથી એવું ન સમજવું જોઇએ કે તેમનામાં એવું કરવાની શક્તિ (વૈક્રિયશક્તિ) નથી શક્તિ હોવા છતાં પણ તે શક્તિનો તેઓ ત્રણે કાળમાં ઉપયોગ કરતા નથી કારણ કે તેઓ કૃતકૃત્ય થઈ ગયેલા છે.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન–"भावदेवाणं भंते ! पुच्छा" હે ભગવન્ ! ભાવદેવો શું પોતાની વૈક્રિયશક્તિ દ્વારા એક રૂપની વિકુર્વણા કરવાને સમર્થ હોય છે, કે અનેક રૂપોની વિકુર્વણા કરવાને સમર્થ હોય છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર–"जहा भवियदव्वदेवा" હે ગૌતમ ! જેમ ભવ્યદ્રવ્યદેવ પોતાની વૈક્રિયશક્તિ દ્વારા એક રૂપની વિકુર્વણા કરી શકે છે અને અનેક રૂપોની વિકુર્વણા પણ કરી શકે છે, એજ પ્રમાણે ભાવદેવ પણ પોતાની વૈક્રિયશક્તિ દ્વારા એક રૂપની પણ વિકુર્વણા કરવાને સમર્થ હોય છે અને અનેક રૂપોની વિકુર્વણા કરવાને પણ સમર્થ હોય છે. ॥સૂ૦૪॥

भव्यद्रव्यदेवाद्युद्वर्तनावक्तव्यता।

मूलम्—'भवियदव्वदेवा णं भंते! अणंतरं उव्वट्टित्ता कहिं गच्छंति? कहिं उववज्जंति? किं नेरइएसु उववज्जंति? जाव देवेसु उववज्जंति? गोयमा! नो नेरइएसु उववज्जंति, नो तिरिक्खजोणिएसु, नो मणुस्सेसु उववज्जंति, देवेसु उववज्जंति, जइ देवेसु उववज्जंति, सव्वदेवेसु उववज्जंति, जाव सव्वट्ठसिद्धत्ति, नरदेवा णं भंते! अणंतरं उव्वट्टित्ता पुच्छा, गोयमा! नेरइएसु उववज्जंति, नो तिरिक्खजोणिएसु, नो मणुस्सेसु, णो देवेसु उववज्जंति, जइ नेरइएसु उववज्जंति०, सत्तसु वि पुढवीसु उववज्जंति, धम्मदेवा णं भंते! अणंतरं पुच्छा, गोयमा! नो नेरइएसु उववज्जंति णो तिरिक्खजोणिएसु, णो मणुस्सेसु, देवेसु उववज्जंति, जइ देवेसु उववज्जंति किं भवणवासि पुच्छा, गोयमा! नो भवणवासि देवेसु उववज्जंति, णो वाणमंतरेसु, नो जोइसियदेवेसु, वेमाणियदेवेसु, उववज्जंति, सव्वेसु वेमाणिएसु, उववज्जंति, जाव सव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइएसु उववज्जंति, अत्थे गइया सिज्झंति, जाव अंतं करेंति, देवाहिदेवा, अणंतरं उव्वट्टित्ता कहिं गच्छंति, कहिं उववज्जंति? गोयमा! सिज्झंति जाव अंतं करेंति, भावदेवा णं भंते! अणंतरं उव्वट्टित्ता पुच्छा, जहा वक्कंतीए असुरकुमाराणं उव्वट्टणा तहा भाणियव्वा॥

भवियदव्वदेवे णं भंते! भवियदव्वदेवेत्ति कालओ केवच्चिरं होइ? गोयमा! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तिन्नि पलिओ-

वमाइं, एवं जच्चेव ठिई, सच्चेव संचिट्ठणा वि, जाव भावदेवस्स, नवरं धम्मदेवस्स जहण्णेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी।

भवियद्ववदेवस्स णं भंते! केवइयं कालं अंतरं होइ? गोयमा! जहण्णेणं दसवाससहस्साइं, अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं अणंतं कालं वणस्सइ कालो, नरदेवस्स पुच्छा, गोयमा! जहण्णेणं सातिरेगं सागरोवमं, उक्कोसेणं अणंतं कालं, अवड्ढं पोग्गलपरियट्टं देसूणं धम्मदेवस्स णं पुच्छा, गोयमा! जहण्णेणं पलिओवमपुहुत्तं, उक्कोसेणं अणंतं कालं अवड्ढं पोग्गलपरियट्टं देसूणं, देवाहिदेवाणं पुच्छा, गोयमा! नत्थि अंतरं, भावदेवस्स णं पुच्छा, गोयमा! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं अणंतं कालं वणस्सइ कालो।

एएसिणं भंते! भवियद्ववदेवाणं नरदेवाणं जाव भावदेवाण य कयरे कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया वा? गोयमा! सव्वत्थोवा नरदेवा, देवाहिदेवा संखेज्जगुणा, धम्मदेवा संखेज्जगुणा, भवियद्ववदेवा असंखेज्जगुणा भावदेवा असंखेज्जगुणा ॥सू. ५॥

छाया—भव्यद्रव्यदेवाः खलु भदन्त! अनन्तरम् उद्वृत्य कुत्र गच्छन्ति? कुत्र उपपद्यन्ते? किं नैरयिकेषु उपपद्यन्ते? यावत् देवेषु उपपद्यन्ते? गौतम! नो नैरयिकेषु उपपद्यन्ते, नो तिर्यग्योनिकेषु, नो मनुष्येषु उपपद्यन्ते, देवेषु उपपद्यन्ते, यद् देवेषु उपपद्यन्ते, सर्वदेवेषु उपपद्यन्ते, यावत् सर्वार्थसिद्धे इति, नरदेवाः खलु भदन्त! अनन्तरम् उद्वृत्य, पृच्छा, गौतम! नैरयिकेषु उपपद्यन्ते, नो तिर्यग्योनिकेषु, नो मनुष्येषु उपपद्यन्ते, नो देवेषु उपपद्यन्ते, यदि नरयिकेषु उपपद्यन्ते०, सप्तस्वपि पृथिवीषु उपपद्यन्ते, धर्मदेवाः खलु भदन्त! अनन्तरं पृच्छा, गौतम! नो नैरयिकेषु उपपद्यन्ते नो तिर्यग्योनिकेषु, नो मनुष्येषु उपपद्यन्ते, देवेषु उपपद्यन्ते, यदि देवेषु उपपद्यन्ते, किं भवनवासिदेवेषु० पृच्छा,

गौतम ! नो भवनवासिदेवेषु उपपद्यन्ते, नो वानव्यन्तरदेवेषु, नो ज्योतिषिक देवेषु उपपद्यन्ते, वैमानिकदेवेषु उपपद्यन्ते, सर्वेषु वैमानिकेषु उपपद्यन्ते, यावत्-सर्वार्थसिद्धानुत्तरौपपातिकेषु उपपद्यन्ते, अस्त्येकके सिध्यन्ति, यावत्-अन्तं कुर्वन्ति, देवाधिदेवाः अनन्तरम् उद्वृत्य कुत्र गच्छन्ति ? कुत्र उपपद्यन्ते ? गौतम ! सिध्यन्ति, यावत्-अन्तं कुर्वन्ति, भावदेवाः खलु भदन्त ! अनन्तरम् उद्वृत्य पृच्छा, यथा व्युत्क्रान्तौ असुरकुमाराणाम् उद्वर्तना तथा भणितव्या । भव्यद्रव्यदेवः खलु भदन्त ! भव्यद्रव्यदेव इति कालतः कियच्चिरं भवति ? गौतम ! जघन्येन अन्तर्मुहूर्तम्, उत्कृष्टेन त्रीणि पल्योपमानि, एवं यत्रैव स्थितिस्तत्रैव संस्थानमपि, यावत्- भावदेवस्य, नवरं धर्मदेवस्य जघन्येन एकं समयम्, उत्कृष्टेन देशोना पूर्वकोटिः । भव्यद्रव्यदेवस्य खलु भदन्त ! कियन्तं कालम् अन्तरं भवति ? गौतम ! जघन्येन दशवर्षसहस्राणि, अन्तर्मुहूर्ताभ्यधिकानि । उत्कृष्टेन अनन्तं कालं वनस्पतिकालः, नरदेवस्य पृच्छा, गौतम ! जघन्येन सातिरेकं सागरोपमम्, उत्कृष्टेन अनन्तं कालम्, अपार्द्धं पुद्गलपरिवर्तम् देशोनम्, धर्मदेवस्य खलु पृच्छा, गौतम ! जघन्येन पल्योपमपृथक्त्वम्, उत्कृष्टेन अनन्तं कालं, अपार्द्धं पुद्गलपरिवर्तं देशोनं, देवाधिदेवानां पृच्छा, गौतम ! नास्ति अन्तरम्, भावदेवस्य खलु पृच्छा गौतम ! जघन्येन अन्तर्मुहूर्तम्, उत्कृष्टेन अनन्तं कालम्, वनस्पतिकालः, एतेषाम् खलु भदन्त ! भव्यद्रव्यदेवानां नरदेवानां, यावत्-भावदेवानां च कतरे कतरेभ्यो यावत् विशेषाधिका वा ? गौतम ! सर्वस्तोकाः नरदेवाः, देवाधिदेवाः संख्येयगुणाः, धर्मदेवाः संख्येयगुणाः, भव्यद्रव्यदेवाः असंख्येयगुणाः, भावदेवाः असंख्येयगुणाः ॥सू० ५॥

टीका—अथ गतिद्वारमाह-'भवियदव्वदेवाणं भंते' इत्यादि । 'भवियदव्वदेवाणं भंते ! अणंतरं उव्वट्टित्ता कहिं गच्छंति ? कहिं उववज्जंति ?' गौतमः

भव्यद्रव्यदेवाद्युद्वर्तना (उत्पत्ति) वक्तव्यता-

'भवियदव्वदेवाणं भंते ! अणंतरं उव्वट्टित्ता कहिं गच्छंति' इत्यादि ।

टीका—सूत्रकार ने इस सूत्र द्वारा गतिद्वार की प्ररूपणा की है इसमें गौतम ने प्रभु से ऐसा पूछा है-' भवियदव्वदेवाणं भंते ! अणंतरं उव्वट्टित्ता कहिं गच्छंति ? कहिं उववज्जंति ' हे भदन्त ! जो भव्य-

—ભવ્યદ્રવ્યદેવ આદિની ઉદ્વર્તના (ઉત્પત્તિ)ની વક્તવ્યતા—

" भवियदव्वदेवाणं भंते ! अणंतरं उव्वट्टित्ता कहिं गच्छति " ઇત્યાદિ-

ટીકાર્થ-સૂત્રકારે આ સૂત્રદ્વારા ગતિદ્વારની પ્રરૂપણા કરી છે. આ વિષયને અનુલક્ષીને ગૌતમસ્વામી મહાવીર પ્રભુને એવો પ્રશ્ન પૂછે છે કે- " भवियदव्वदेवाणं भंते ! अणंतरं उव्वट्टित्ता कहिं गच्छंति ? कहिं उववज्जति "

पुच्छति-हे भदन्त ! भव्यद्रव्यदेवाः, खलु अनन्तरम्-भव्यद्रव्यदेवभवानन्तरम्, उद्वृत्त्य, कुत्र गच्छन्ति ? कुत्र उपपद्यन्ते ? जायन्ते ? तदेव निशदयति-'किं नेरइएसु उववज्जंति, जाव देवेसु उववज्जंति ?' किं नैरयिकेषु उपपद्यन्ते ? यावत्-किंवा पृथिव्याद्येकेन्द्रियादिपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकेषु उपपद्यन्ते, किंवा मनुष्येषु उपपद्यन्ते ? किंवा असुरकुमारादि भवनवासिषु उपपद्यन्ते ? किंवा वानव्यन्तरेषु उपपद्यन्ते ? किंवा ज्योतिषिकेषु उपपद्यन्ते ? किंवा वैमानिकदेवेषु उपपद्यन्ते ? किंवा नवग्रैवेयकादि देवेषु उपपद्यन्ते ? भगवानाह-'गोयमा ! नो नेरइएसु उववज्जंति, णो तिरिक्खजोणिएसु, णो मणुस्सेसु उववज्जंति, देवेसु उववज्जंति' हे गौतम ! भव्यद्रव्यदेवाः खलु नो नैरयिकेषु उपपद्यन्ते, नो तिर्यग्योनिकेषु

द्रव्यदेव हैं-वे अपने भव्यद्रव्यदेव के भव को छोड़ते ही कहां पर जाते हैं ? कहां पर उत्पन्न होते हैं ? 'किं नेरइएसु उववज्जंति, जाव देवेसु उववज्जंति' क्या वे नैरयिकों में उत्पन्न होते हैं ? किं वा-पृथिवी कायिकादि रूप एकेन्द्रिय से लेकर द्वीन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चौइन्द्रिय एवं पंचेन्द्रियतिर्यञ्चों में उत्पन्न होते हैं ? या मनुष्यों में उत्पन्न होते हैं ? या असुरकुमारादि भवनवासियों में उत्पन्न होते हैं ? या वानव्यन्तरों में उत्पन्न होते हैं ? या ज्योतिषिकों में उत्पन्न होते हैं ? या वैमानिक देवों में उत्पन्न होते हैं या नवग्रैवेयक आदि देवों में उत्पन्न होते हैं ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-' गोयमा ! नो नेरइएसु उववज्जंति, णो तिरिक्खजोणिएसु, णो मणुस्सेसु उववज्जंति, देवेसु उववज्जंति ' हे गौतम ! भव्यद्रव्यदेव नैरयिकों में उत्पन्न नहीं होते हैं, न तिर्यंचों में उत्पन्न

હે ભગવન્ ! ભવ્યદ્રવ્યદેવો પોતાના ભવ્યદ્રવ્યદેવના ભવને છોડીને (તે ભવનું આયુષ્ય પૂરું કરીને) કયાં જાય છે ? કયાં ઉત્પન્ન થાય છે ? "किं नेरइएसु उववज्जंति जाव देवेसु उववज्जंति ?" શું તેઓ નારકોમાં ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા પૃથ્વીકાયિક આદિ એકેન્દ્રિયોથી લઈને દ્વીન્દ્રિય, ત્રીન્દ્રિય, ચતુરિન્દ્રિય અને પંચેન્દ્રિયતિર્યંચોમાં ઉત્પન્ન થાય છે ? કે મનુષ્યોમાં ઉત્પન્ન થાય છે ? કે ભવનપતિ દેવોમાં ઉત્પન્ન થાય છે ? કે વાનવ્યંતર દેવોમાં ઉત્પન્ન થાય છે ? કે જ્યોતિષિક દેવોમાં ઉત્પન્ન થાય છે ? કે વૈમાનિક દેવોમાં ઉત્પન્ન થાય છે ? કે નવગ્રૈવેયકોમાં ઉત્પન્ન થાય છે ? કે પાંચ અનુત્તર વિમાનોમાં ઉત્પન્ન થાય છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-" गोयमा ! नो नेरइएसु उववज्जंति, णो तिरिक्खजोणिएसु, णो मणुस्सेसु उववज्जंति, देवेसु उववज्जंति " હે ગૌતમ ! ભવ્યદ્રવ્યદેવો નારકોમાં પણ ઉત્પન્ન થતા નથી, તિર્યંચોમાં પણ ઉત્પન્ન થતા

उपपद्यन्ते, नो मनुष्येषु उपपद्यन्ते, किन्तु देवेषु-भवनपत्यादि सर्वार्थसिद्धपर्यन्तेषु उपपद्यन्ते, तथा चात्र भव्यद्रव्यदेवानां भाविदेवभवस्वभावत्वान्नैरयिकादि भवप्रतिषेधोऽवसेयः। गौतमः पृच्छति-'जइ देवेसु उववज्जंति०?' हे भदन्त ! भविकद्रव्यदेवाः खलु यदि देवेषु उपपद्यन्ते तत् किम् असुरकुमारादि भवनवासिषु उपपद्यन्ते ? वानव्यन्तरेषु उपपद्यन्ते ? किंवा ज्योतिषिकेषु उपपद्यन्ते ? किंवा वैमानिकेषु उपपद्यन्ते ? नवग्रैवेयकेषु उपपद्यन्ते ? किंवा पञ्चानुत्तरौपपातिकेषु सर्वार्थसिद्धपर्यन्तेषु उपपद्यन्ते ? भगवानाह-'सव्वदेवेसु उववज्जंति, जाव सव्वट्ठसिद्धत्ति' हे गौतम !

होते हैं, न मनुष्यों में उत्पन्न होते हैं ? किन्तु वे देवों में उत्पन्न होते हैं, अर्थात् भवनपति आदि से लेकर सर्वार्थ सिद्ध तक के देवोंमें उत्पन्न होते हैं। कहने का तात्पर्य ऐसा है कि भव्यद्रव्यदेवों में जो नैरयिकादि भव का प्रतिषेध किया गया है, वह उनमें देवभव स्वभावता भावी (होने वाली) है-इस कारण से किया गया है। अब गौतम प्रभु से ऐसा ही पूछते हैं-' जइ देवेसु उववज्जंति ' हे भदन्त ! ये भविक द्रव्यदेव यदि देवों में उत्पन्न होते हैं-तो क्या असुरकुमारादि भवनवासियों में उत्पन्न होते हैं ? किंवा वानव्यन्तरों में उत्पन्न होते हैं ? या ज्योतिषिकों में उत्पन्न होते हैं ? या वैमानिकों में उत्पन्न होते हैं ? किं वा-नव ग्रैवेयकों उत्पन्न होते हैं ? या सर्वार्थसिद्ध पर्यन्त पंच अनुत्तरों में उत्पन्न होते हैं ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-' सव्वदेवेसु उववज्जंति जाव सव्वट्ठसिद्धत्ति ' हे गौतम ! भव्यद्रव्यदेव पूर्वोक्त सब देवों में

નથી, મનુષ્યોમાં પણ ઉત્પન્ન થતા નથી પરંતુ તેઓ દેવોમાં જ ઉત્પન્ન થાય છે. ભવ્યદ્રવ્યદેવોની નારકાદિ ભવોમાં ઉત્પત્તિ થવાનો નિષેધ કર્યો છે, કારણ કે તેમનામાં દેવભવ સ્વભાવતઃ ભાવી છે-એટલે કે દેવગતિમાં જ ઉત્પન્ન થવાનાં લક્ષણોનો સદ્ભાવ હોય છે.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-" जइ देवेसु उववज्जंति " ઇત્યાદિ-હે ભગવન્! જો ભવ્યદ્રવ્યદેવોની ઉત્પત્તિ દેવોમાં જ થતી હોય, તો કયા દેવોમાં થાય છે ? શું તેઓ અસુરકુમારાદિ ભવનવાસી દેવોમાં ઉત્પન્ન થાય છે ? કે વાનવ્યંતરોમાં ઉત્પન્ન થાય છે ? કે જ્યોતિષિકોમાં ઉત્પન્ન થાય છે ? કે વૈમાનિક દેવોમાં ઉત્પન્ન થાય છે ? નવગ્રૈવેયક વિમાનોમાં ઉત્પન્ન થાય છે ? કે સર્વાર્થસિદ્ધ પર્યન્તના પાંચ અનુત્તર વિમાનોમાં ઉત્પન્ન થાય છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-" गोयमा ! सव्व देवेसु उववज्जंति जाव सव्वट्ठसिद्धत्ति " હે ગૌતમ ! ભવ્યદ્રવ્યદેવો પૂર્વોક્ત સઘળા દેવોમાં ઉત્પન્ન થાય

भव्यद्रव्यदेवाः पूर्वोक्तेषु सर्वदेवेषु उपपद्यन्ते, यावत्-भवनपतिवानव्यन्तरज्योतिषिक-वैमानिकनवग्रैवेयकपञ्चानुत्तरौपपातिकसर्वार्थसिद्धपर्यन्तेषु उपपद्यन्ते इति भावः। गौतमः पृच्छति-'नरदेवा णं भंते ! अणंतरं उव्वट्टित्ता पुच्छा' हे भदन्त ! नरदेवाः खलु अनन्तरम्-नरदेवभवान्तरम् उद्वृत्त्य कुत्र उपपद्यन्ते ? इति पृच्छा, भगवानाह-'गोयमा ! नेरइएसु उववज्जंति, नो तिरिक्खजोणिएसु, णो मणुस्सेसु, णो देवेसु उववज्जंति' हे गौतम ! नरदेवा उद्वर्तनानन्तरं नैरयिकेषु एवोत्पद्यन्ते, नो तिर्यग्यो-निकेषु उपपद्यन्ते, नो वा मनुष्येषु उपपद्यन्ते, नो वा देवेषु-भवनपत्यादिसर्वार्थ-सिद्धिकपर्यन्तेषु उपपद्यन्ते, तथा च अपरित्यक्तकामभोगा नरदेवा नैरयिकेषूत्पद्यन्ते, शेषत्रये तिर्यङ्मनुष्यदेवरूपे तु तत्प्रतिषेधोऽवसेयः, तत्र केषांचिच्चक्रवर्तिनां

उत्पन्न होते हैं यावत् भवनपति वानव्यन्तर ज्योतिषिक, वैमानिक, नवग्रैवेयक, पांचअनुत्तरौपपातिक इन सब देवों में वे उत्पन्न होते हैं। अब गौतम प्रभु से ऐसा पूछते हैं-' नरदेवाणं भंते ! अणंतरं उव्वट्टिता पुच्छा ' हे अदन्त ! नरदेव नरदेवभव को छोड़ने के बाद ही कहां उत्पन्न होते हैं ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-' गोयमा ' हे गौतम ! ' नेरइएसु उववज्जंति, नो तिरिक्खजोणिएसु, णो मणुस्सेसु, णो देवेसु उववज्जंति ' नरदेव नरदेवभव को छोड़ने के बाद ही नैरयिकों में ही उत्पन्न होते हैं, तिर्यग्योनिकों में उत्पन्न नहीं होते हैं, न मनुष्यों में उत्पन्न होते हैं, और न भवनपति से लेकर सर्वार्थसिद्धपर्यन्त के देवों में वे उत्पन्न होते हैं। क्यों कि कामभोगों को नहीं छोड़ने वाले नरदेव बहु आरम्भ-परिग्रही होने के कारण मरकर नैरयिकों में ही उत्पन्न होते हैं। तिर्यञ्चों में, मनुष्यों में, एवं देवों में वे उत्पन्न नहीं होते हैं। यद्यपि कितनेक

છે એટલે કે ભવનપતિથી લઇને પાંચ અનુત્તર વિમાનવાસી પર્યન્તના કોઇ પણ પ્રકારના દેવોમાં ઉત્પન્ન થાય છે.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-" नरदेवाणं भंते ! अणंतरं उव्वट्टित्ता पुच्छा " હે ભગવન્ ! નરદેવો નરદેવ ભવ છોડયા પછી કયાં ઉત્પન્ન થાય છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-" गोयमा ! नेरइएसु उववज्जति नो तिरिक्जोणिएसु, णो मणुस्सेसु, णो देवेसु उववज्जेति " નરદેવો, નરદેવ ભવનું આયુષ્ય પૂરું કરીને નારકોમાં જ ઉત્પન્ન થાય છે, તિર્યંચોમાં પણ ઉત્પન્ન થતા નથી, મનુષ્યોમાં પણ ઉત્પન્ન થતા નથી અને ભવનપતિથી લઇને સર્વાર્થસિદ્ધક પર્યન્તના દેવોમાં પણ ઉત્પન્ન થતા નથી તેનું કારણ એ છે કે નરદેવો કામભોગોમાં રચ્યાપચ્યા રહે છે. તેઓ અતિશય આરંભ અને પરિગ્રહથી યુક્ત હોય છે, તેથી તેઓ નારકોમાં જ ઉત્પન્ન થાય છે. જો કે કેટલાક

नरदेवानां देवेषूत्पादो लभ्यते तत्तेषां नरदेवत्वत्यागेन धर्मदेवत्वप्राप्तावेव देवेषूत्पादो भवतीति न कश्चित्प्रकृते विरोधः। गौतमः पृच्छति–'जइ नेरइएसु उववज्जंति०?' हे भदन्त! यत् खलु नरदेवा नैरयिकेषु उत्पद्यन्ते, तत् किं रत्नप्रभापृथिवी नैरयिकेषु? किंवा शर्कराप्रभापृथिवी नैरयिकेषु? किंवा वालुकाप्रभापृथिवी नैरयिकेषु? किंवा पङ्कप्रभापृथिवी नैरयिकेषु? किंवा धूमप्रभापृथिवी नैरयिकेषु? किंवा तमःप्रभापृथिवी नैरयिकेषु? किंवा अधःसप्तमीपृथिवी नैरयिकेषु उपपद्यन्ते? भगवानाह–'सत्तसु वि पुढवीसु उववज्जंति' हे गौतम! नरदेवा उद्वर्तनानन्तरं

चक्रवर्तीरूप नरदेवों का देवों में उत्पाद भी सुना जाता है सो इसका कारण यह है कि वे नरदेवत्व का त्याग कर धर्मदेवत्व को प्राप्त करके ही देवों में उत्पन्न होते हैं–नरदेवत्व की स्थिति में रहते हुए वे देवगति के बन्धक नहीं होते हैं। इस प्रकार से प्रकृति कथन में कोई विरोध नहीं आता है। अब गौतम स्वामी प्रभु से ऐसा पूछते हैं–भाना कि नरदेव नैरयिकों में ही उत्पन्न होते हैं–सो क्या वे रत्नप्रभा पृथिवी के नैरयिकों में उत्पन्न होते हैं? किंवा शर्कराप्रभा पृथिवी के नैरयिकों में उत्पन्न होते हैं? या वालुकाप्रभापृथिवी के नैरयिकों में उत्पन्न होते हैं? या पङ्कप्रभा पृथिवी के नैरयिकों में उत्पन्न होते हैं? या धूमप्रभापृथिवी के नैरयिकों में उत्पन्न होते हैं? या तमः प्रभा पृथिवी के नैरयिकों में उत्पन्न होते हैं? या अधः सप्तमी पृथिवी के नैरयिकों में उत्पन्न होते हैं? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं–' सत्तसु वि पुढवीसु उववज्जंति '

ચક્રવર્તી ૩૫ નરદેવોમાં ઉત્પાદ થયાનું પણ જાણવામાં આવે છે, તેનું કારણ એ છે કે તેમણે નરદેવત્વ (ચક્રવર્તીત્વ)નો પરિત્યાગ કરીને ધર્મદેવત્વ અંગીકાર કર્યું હોય છે આ રીતે તેમને દેવગતિ પ્રાપ્ત થઇ શકે છે પરંતુ નરદેવત્વની સ્થિતિમાં જ રહેનાર જીવો તો દેવગતિના બન્ધક હોતા નથી.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન–હે ભગવન્! નરદેવો નરદેવ સંબંધી આયુષ્ય પૂરું કરીને નારકોમાં ઉત્પન્ન થતા હોય, તો સાત નરકો પૈકી કઈ નરકના નારકોમાં ઉત્પન્ન થાય છે? શું રત્નપ્રભાના નારકોમાં ઉત્પન્ન થાય છે? કે શર્કરાપ્રભાના નારકોમાં ઉત્પન્ન થાય છે? કે વાલુકાપ્રભાના નારકોમાં ઉત્પન્ન થાય છે? કે પંકપ્રભાના નારકોમાં ઉત્પન્ન થાય છે? કે ધૂમપ્રભાના નારકોમાં ઉત્પન્ન થાય છે? કે તમઃપ્રભાના નારકોમાં ઉત્પન્ન થાય છે? કે અધઃ સપ્તમી પૃથ્વીના નારકોમાં ઉત્પન્ન થાય છે?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર–"सत्तसु वि पुढवीसु उववज्जंति" હે ગૌતમ! તેઓ નરદેવભવસંબંધી આયુષ્ય પૂરું કરીને સાતે પૃથ્વીઓના નારકોમાં ઉત્પન્ન થાય છે,

सप्तस्वपि पृथिवीषु पूर्वोक्तासु उपपद्यन्ते। गौतमः पृच्छति–'धम्मदेवा णं भंते ? अणंतरं पुच्छा' हे भदन्त ! धर्मदेवाः खलु अनन्तरं–धर्मदेवभवानन्तरम्, उद्वृत्य कुत्रोपपद्यन्ते ? इति पृच्छा, भगवानाह–'गोयमा ! नो नेरइएसु उववज्जेज्जा णो तिरिक्खजोणिएसु, णो मणुस्सेसु उववज्जंति, देवेसु उववज्जंति' हे गौतम ! धर्मदेवाः नो नैरयिकेषु उपपद्यन्ते, नो तिर्यग्योनिकेषु, नो वा मनुष्येषु उपपद्यन्ते, किन्तु देवेषु उपपद्यन्ते। गौतमः पृच्छति–'जइ देवेसु उववज्जंति, किं भवणवासि पुच्छा' हे भदन्त ! यत्खलु धर्मदेवा उद्वर्तनानन्तरं देवेषु उपपद्यन्ते, तत् किं भवनवासिषु–असुरकुमारादिषु ? किंवा वानव्यन्तरेषु ? किंवा ज्योतिषिकेषु ?

हे गौतम ! नरदेव उद्वर्त्तन के बाद सातों ही पृथिवियों के नैरयिकों में उत्पन्न होते हैं। अब गौतम प्रभु से ऐसा पूछते हैं–' धम्मदेवा णं भंते ! अणंतरं पुच्छा ' हे भदन्त ! धर्मदेव अपने धर्मदेवभव को छोड़ते ही कहां उत्पन्न होते हैं ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं–' गोयमा ' हे गौतम ! ' नो नेरइएसु उववज्जंति, णो तिरिक्खजोणिएसु, णो मणुस्सेसु उववज्जंति, देवेसु उववज्जंति ' धर्मदेव नैरयिकों में उत्पन्न नहीं होते हैं, तिर्यञ्चों में उत्पन्न नहीं होते हैं, मनुष्यों में उत्पन्न नहीं होते हैं, वे तो देवों में ही उत्पन्न होते हैं। क्योंकि चारित्र के सद्भाव में देवायु के सिवाय दूसरी आयु का बन्ध नहीं होता है। अब गौतम इसी बात को विशेषरूप से प्रभु से पूछते हैं–' जइ देवेसु उववज्जंति, किं भवणवासि पुच्छा ' हे भदन्त ! यदि धर्मदेव उद्वर्त्तन के बाद देवों में उत्पन्न होते हैं ? तो क्या वे भवनवासियों में उत्पन्न होते हैं ?

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન–" धम्मदेवा णं भंते ! अणंतरं पुच्छा " હે ભગવન્! धर्मदेवो, પોતાના ધર્મદેવભવને છોડીને ક્યાં ઉત્પન્ન થાય છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર–" गोयमा ! णो नेरइएसु उववज्जंति, णो तिरिक्खजोणिसु, णो मणुस्सेसु उववज्जंति देवेसु उववज्जंति " હે ગૌતમ ! ધર્મદેવ નારકોમાં ઉત્પન્ન થતા નથી, તિર્યંચોમાં ઉત્પન્ન થતા નથી, મનુષ્યોમાં પણ ઉત્પન્ન થતા નથી તેઓ દેવોમાં જ ઉત્પન્ન થાય છે, કારણ કે દેવાયુના બંધવાળાને જ ચારિત્રની પ્રાપ્તિ થાય છે.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન–" जइ देवेसु उववज्जंति, किं भवणवासि पुच्छा " હે ભગવન્! જો ધર્મદેવો પોતાના ધર્મદેવભવના આયુષ્યને પરિપૂર્ણ કરીને દેવોમાં ઉત્પન્ન થતા હોય, તો કયા દેવોમાં ઉત્પન્ન થાય છે ? શું ભવનપતિ-

किंवा वैमानिकादिषु सर्वार्थसिद्धपर्यन्तेषु उपपद्यन्ते ? इति पृच्छा, भगवानाह-'गोयमा ! नो भवणवासिदेवेसु उववज्जंति, णो वाणमंतरदेवेसु, णो जोइसिएसु, वेमाणियदेवेसु उववज्जंति, सव्वेसु वेमाणिएसु उववज्जंति, जाव सव्वट्ठसिद्ध अणुत्तरोववाइएसु उववज्जंति' हे गौतम ! धर्मदेवा नो भवनवासिषु उपपद्यन्ते, नो वानव्यन्तरदेवेषु, नो वा ज्योतिषिकदेवेषु उपपद्यन्ते, अपितु वैमानिकदेवेषु उपपद्यन्ते, तत्रापि सर्वेषु-सौधर्मेशानाद्यच्युतान्तेषु द्वादशसु वैमानिकेषु उपपद्यन्ते, यावत्-नवग्रैवेयक-विजयवैजयन्तादिसर्वार्थसिद्धपर्यन्तपञ्चानुत्तरौपपातिकेषु देवेषु उपपद्यन्ते, तत्रापि 'अत्थेगइया सिज्झंति जाव अंतं करेंति' अस्त्येकके

या वानव्यन्तरों में उत्पन्न होते हैं ? या ज्योतिषियों में उत्पन्न होते हैं ? या सर्वार्थसिद्धपर्यन्त के वैमानिकों में उत्पन्न होते हैं ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-' गोयमा ' हे गौतम ! नो भवणवासिदेवेसु उववज्जंति, णो वाणमंतरदेवेसु उववज्जंति, णो जोइसिएसु उववज्जंति, वेमाणियदेवेसु उववज्जंति सव्वेसु वेमाणिएसु उववज्जंति, जाव सव्वट्ठसिद्ध अणुत्तरोववाइएसु उववज्जंति ' धर्मदेव असुरकुमार आदि भवनवासियों में उत्पन्न नहीं होते हैं, वानव्यन्तरदेवों में उत्पन्न नहीं होते हैं, ज्योतिषिक देवों में उत्पन्न नहीं होते हैं, वे तो वैमानिकों में ही उत्पन्न होते हैं और उनमें भी सब वैमनिकों में उत्पन्न हो जाते हैं-ऐसा कोई उनके लिये भेद नहीं है कि वे अमुकवैमानिकों में ही उत्पन्न हों सौधर्मदेवलोक से लगाकर सर्वार्थसिद्धनक के अनुत्तर विमान में वे उत्पन्न हो सकते हैं (अत्थेगइया सिज्झंति जाव अंतंकरेंति) तथा इन धर्मदेवों

દેવોમાં ઉત્પન્ન થાય છે? કે વાનવ્યંતર દેવોમાં ઉત્પન્ન થાય છે? કે જ્યોતિષિક દેવોમાં ઉત્પન્ન ઉત્પન્ન થાય છે? કે સર્વાર્થસિદ્ધ પર્યન્તના વૈમાનિક દેવોમાં ઉત્પન્ન થાય છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-" गोयमा ! " હે ગૌતમ ! " नो भवणवासी देवेसु उववज्जंति, णो वाणमंतरदेवेसु उववज्जंति, णो जोइसिएसु उववज्जंति " ધર્મદેવો ભવનપતિ દેવોમાં ઉત્પન્ન થતા નથી, વાનવ્યંતર દેવોમાં પણ ઉત્પન્ન થતા નથી, જ્યોતિષિક દેવોમાં પણ ઉત્પન્ન થતા નથી, " वेमाणियदेवेसु उववज्जंति, सव्वेसु वेमाणिएसु उववज्जंति, जाव सव्वट्ठसिद्ध अणुत्तरोववाइएसु उववज्जंति " પરન્તુ તેઓ વૈમાનિક દેવોમાં જ ઉત્પન્ન થાય છે તેઓ અમુક વૈમાનિક દેવોમાં જ ઉત્પન્ન થાય છે, એવું નથી, પરન્તુ સૌધર્મ દેવલોકથી લઇને સર્વાર્થસિદ્ધ અનુત્તર વિમાન પર્યન્તના કોઇ પણ વિમાનમાં તેઓ દેવરૂપે ઉત્પન્ન થતા હોય છે તથા " अत्थेगइया सिज्झंति जाव अंतं करेंति "

केचन क्षपितसर्वकर्माणः धर्मदेवाः सिध्यन्ति, यावत्-मुच्यन्ते, परिनिर्वान्ति सर्वदुःखानामन्तं कुर्वन्ति च। गौतमः पृच्छति-'देवाहिदेवा अणंतरं उव्वट्टित्ता कहिं गच्छंति? कहिं उववज्जंति?' हे भदन्त! देवाधिदेवास्तीर्थङ्करा अर्हन्तः, अनन्तरम्-तीर्थङ्करभवानन्तरम्, उद्वृत्य, कुत्र गच्छन्ति? कुत्रोपपद्यन्ते? भगवानाह-'गोयमा! सिज्झंति, जाव अंतं करेंति' हे गौतम! देवाधिदेवास्तीर्थङ्करा उद्वर्तनानन्तरं सिध्यन्ति, यावत्-मुच्यन्ते परिनिर्वान्ति सर्वदुःखानामन्तं कुर्वन्ति च। गौतमः पृच्छति-'भावदेवा णं भंते! अणंतरं उव्वट्टित्ता पुच्छा' हे भदन्त! भावदेवाः खलु, अनन्तरम्-भावदेवभवानन्तरम्, उद्वृत्य,

---

में कितनेक धर्मदेव ऐसे भी होते हैं कि जो क्षपितसर्वकर्मा होकर सिद्ध हो जाते हैं, यावत्-बुद्ध हो जाते हैं, संसार से सर्वथा छूट जाते हैं, शीतीभूत हो जाते हैं, और समस्त दुखों के अन्तकर्त्ता हो जाते हैं।

अब गौतमस्वामी प्रभु से ऐसा पूछते हैं- 'देवाहिदेवा अणंतरं उव्वट्टिला कहिं गच्छंति, कहिं उववज्जंति' हे भदन्त! देवाधिदेव-तीर्थंकर अर्हंत-तीर्थंकर भव को छोड़कर कहां जाते हैं? कहां उत्पन्न होते हैं? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-'गोयमा! सिज्झंति, जाव अंतं करेंति' हे गौतम! देवाधिदेव तीर्थंकर उद्वर्तन के बाद सिद्ध हो जाते हैं, मुक्त हो जाते हैं, शीतीभूत हो जाते हैं और समस्तदुःखों के अन्तकर्त्ता बन जाते हैं। अब गौतम प्रभु से ऐसा पूछते हैं-' भावदेवा णं भंते! अणंतरं उवट्टिता पुच्छा' हे भदन्त! भावदेव भावदेवभव को छोड़ने के

તે ધર્મદેવોમાં કેટલાક ધર્મદેવો એવા પણ હોય છે કે જેઓ સમસ્ત કર્મોનો ક્ષય કરીને સિદ્ધ, બુદ્ધ, મુક્ત, શીતલીભૂત અને સમસ્ત દુઃખોનો અંતકર્તા પણ થઈ જાય છે.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-"देवाहिदेवा अणंतरं उव्वट्टित्ता कहिं गच्छंति, कहिं उववज्जंति" હે ભગવન્! દેવાધિદેવ (તીર્થંકર અર્હંત) તીર્થંકર ભવને છોડીને કયાં જાય છે? કયાં ઉત્પન્ન થાય છે?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-"गोयमा! सिज्झंति, जाव अंतं करेंति" હે ગૌતમ! દેવાધિદેવ (તીર્થંકર અર્હંત) તીર્થંકર ભવ પૂરો કરીને સિદ્ધ થઈ જાય છે, બુદ્ધ થઈ જાય છે મુકત થઈ જાય છે શીતલીભૂત થઈ જાય છે અને સમસ્ત દુઃખોના અંતકર્તા બની જાય છે.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-"भावदेवा णं भंते! अणंतरं उव्वट्टित्ता पुच्छा" હે ભગવન્! ભાવદેવો, તેમના ભાવદેવ સંબંધી ભવને છોડીને (તે ભવની આયુસ્થિતિ પૂરી કરીને) કયાં જાય છે? કયાં ઉત્પન્ન થાય છે?

कुत्र गच्छन्ति ? कुत्र उपपद्यन्ते ? इति पृच्छा, भगवानाह-'जहा वक्कंतीए असुरकुमाराणं उव्वट्टगा तहा भाणियव्वा' हे गौतम ! यथा व्युत्क्रान्तिके-प्रज्ञापनायाः षष्ठपदे, असुरकुमाराणाम् उद्वर्तना भणिता, तथा भावदेवानामपि उद्वर्तना भणितव्या-वक्तव्या, तथा च असुरकुमाराः बहुषु जीवस्थानेषु गच्छन्ति, अतस्तैरतिदेशः प्रतिपादितः असुरकुमारादयः ईशानान्ताः देवाः पृथिव्यादिष्वपि गच्छन्तीति भावः ॥

अथ-संस्थिति 'संचिट्ठणा' द्वारमाह-'भवियदव्वदेवेणं' इत्यादि' 'भवियदव्वदेवेणं भंते ! भवियदव्वदेवेत्ति कालओ केवच्चिरं होइ ?' गौतमः पृच्छति-हे भदन्त ! भविकद्रव्यदेवः खलु 'भवियदव्वदेवः' इति पर्यायमपरित्यजन्, कालतः कालापेक्षया, कियच्चिरं-कियत्कालावधि भवति ? तिष्ठति ? भगवानाह-'गोयमा !

बाद ही कहां जाते हैं ? कहां उत्पन्न होते हैं ? उत्तर में प्रभु कहते हैं-'जहा वक्कंतीए असुरकुमाराणं उव्वट्टणा तहा भाणियव्वा' हे गौतम ! जिस प्रकार से प्रज्ञापना के छठे पद में असुरकुमारों की उद्वर्तना कही जा चुकी है, उसी प्रकार से यहां पर भावदेवों की भी उद्वर्तना कहनी चाहिये तथा च-असुरकुमार अनेक जीवस्थानों में जाते हैं इसलिये उनकीवक्तव्यता के समान इनकी वक्तव्यता कही गई है-कहने का तात्पर्य यह है कि असुरकुमारादि ईशानान्त देव पृथिव्यादिकों में भी जाते हैं। अब सूत्रकार 'संचिट्ठणा' संस्थिति द्वार का कथन करते हैं-इसमें गौतम ने प्रभु से ऐसा पूछा है-'भवियदव्वदेवेणं भंते ! भवियदव्वदेवेत्तिकालओ केवच्चिरं होइ' हे भदन्त ! भविकद्रव्यदेव "भविकद्रव्यदेव

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-"जहा वक्कंतीए असुरकुमाराण उव्वट्टणा, तहा भाणियव्वा" હે ગૌતમ ! પ્રજ્ઞાપના સૂત્રના છઠ્ઠા પદમાં અસુરકુમારોની ઉદ્વર્તના વિષે જેવું કથન કરવામાં આવ્યું છે, એવું જ કથન ભાવદેવોની ઉદ્વર્તના વિષે પણ કરવું જોઈએ જેમ કે અસુરકુમારો અનેક જીવસ્થાનોમાં જાય છે. પૃથ્વીકાયાદિકોમાં તેમની ઉત્પત્તિ થાય છે, એવું ત્યાં કહેવામાં આવ્યું છે. એવું જ કથન ભાવદેવોની ઉદ્વર્ત્તના વિષે પણ સમજવું અસુરકુમારથી લઇને ઇશાન પર્યન્તના દેવો પૃથ્વીકાયાદિકોમાં ઉત્પન્ન થાય છે ઇત્યાદિ કથન અહીં પણ ગ્રહણ કરવાનુ છે.

હવે સૂત્રકાર "संचिट्ठणा" સંસ્થિતિ દ્વારનું કથન કરે છે-ગૌતમ સ્વામી આ વિષયને અનુલક્ષીને મહાવીર પ્રભુને એવો પ્રશ્ન પૂછે છે કે-"भवियदव्वदेवेणं भंते ! भवियदव्वदेवे त्ति कालओ केवच्चिरं होइ ?" હે ભગવન્ ! ભવિકદ્રવ્યદેવ,

जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाइं' हे गौतम! भव्यद्रव्यदेवस्य भव्यद्रव्यदेवपर्यायावस्थायां कालापेक्षया, जघन्येन अन्तर्मुहूर्तम्, उत्कृष्टेन तु त्रीणि पल्योपमानि भवन्ति, 'एवं जच्चेव ठिई, सच्चेव संचिट्ठणा वि जाव भावदेवस्स' एवम्-अनया रीत्या, अनेन न्यायेन वा, या चैव स्थितिः-भवस्थितिः पूर्वं प्रतिपादिता, साचैवैषां भव्यद्रव्यदेवादीनां संस्थितिरपि तत्पर्यायानुबन्धरूपाऽपि प्रतिपत्तव्या, यावत्-नरदेवस्य धर्मदेवस्य देवाधिदेवस्य, भावदेवस्य चेति भावः। किन्तु-'नवरं धम्मदेवस्स जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी' की पर्याय को नहीं छोड़ता हुआ काल की अपेक्षा कब तक भविकद्रव्यदेवरूप से बना रहता है? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-'गोयमा! हे गौतम! 'जहण्णेणं अंतो मुहुत्तं, उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाइं' भविकद्रव्यदेव भविकद्रव्यदेव की पर्यायरूप से काल की अपेक्षा कम से कम एक अन्तर्मुहूर्त्त बना रहता है-और अधिक से अधिक वह तीन पल्योपम तक बना रहता है 'एवं जच्चेव ठिई, सच्चेव संचिट्ठणा वि जाव भावदेवस्स' इस प्रकार से भवस्थिति भवद्रव्यदेवादिकों की पहिले कही जा चुकी है, वही इनकी तत्पर्यायानुबन्धरूप संस्थिति जाननी चाहिये यावत् नरदेव, धर्मदेव, देवाधिदेव और भावदेव इन देवों की भी संस्थिति उनकी स्थिति के अनुसार जाननी चाहिये। किन्तु धर्मदेव की स्थिति की अपेक्षा संस्थिति में जो अन्तर है वह 'नवरं धम्मदेवस्स जहण्णेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी' इस सूत्र द्वारा

"भविक द्रव्य देवनी पर्यायने छोड्या विना" कालनी अपेक्षाओ क्यां सुधी भविकद्रव्यदेव रूपे रही शके छे?

महावीर प्रभुनो उत्तर-"गोयमा!" हे गौतम! "जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाइं" भविकद्रव्यदेव, भविकद्रव्यदेव रूपे ओछामां ओछा एक अन्तर्मुहूर्त सुधी अने वधारेमां वधारे त्रण पल्योपम प्रमाण काल सुधी टकी शके छे. "एवं जच्चेव ठिई, सच्चेव संचिट्ठणा वि जाव भावदेवस्स" आ प्रकारे भव्यद्रव्यदेव आदिकोनी जे भवस्थिति पहेलां स्थितिद्वारमां कहेवामां आवी छे, एज तेमनी तत्पर्यायानुबन्ध रूप संस्थिति समजवी एटले के नरदेव, धर्मदेव, देवाधिदेव अने भावदेवनी संस्थितिनुं कथन तेमनी स्थितिना कथन अनुसार ज समजवुं परन्तु धर्मदेवोनी स्थिति अने संस्थितिमां आ प्रमाणे तफावत छे-"नवरं धम्मदेवस्स जहण्णेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी" धर्मदेवनी संस्थिति ओछामां

नवरम्-स्थित्यपेक्षया संस्थिते विशेषस्तु-धर्मदेवस्य संस्थितिः जघन्येन एकं समयं शुभभावमतिपत्तिसमयानन्तरमेव मरणात् उत्कृष्टेन तु देशोना पूर्वकोटी भवति।

अथ अन्तरद्वारमाह-'भवियदव्वदेवस्स णं भंते ! केवइयं कालं अंतरं होइ ?' गौतमः पृच्छति-हे भदन्त ! भव्यद्रव्यदेवस्य खलु कियन्तं कालम्, अन्तरम्-पूर्वभवत्यागानन्तरभवान्तरप्राप्तौ व्यवधानम्, भवति ? भगवानाह-'गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं अणंतं कालं वणस्सइ कालो' हे गौतम ! भव्यद्रव्यदेवस्य अन्तरम्, जघन्येन दशवर्षसहस्राणि अन्तर्मुहूर्त्ताभ्यधिकानि भवन्ति तथाहि भविकद्रव्यदेवो भूत्वा दशवर्षसहस्रस्थितिकेषु

यहां प्रकट किया गया है-अर्थात् धर्मदेव की स्थिति की अपेक्षा संस्थिति में ऐसी विषमता है कि धर्मदेव की संस्थिति, जघन्य से एक समय की होती है-क्यों कि अशुभ भाव में जाकर फिर उन अशुभ भावों से निवृत्त होकर शुभ भावों की प्रतिपत्ति के एक समय के बाद ही मरण हो जाता है, तथा उत्कृष्ट से वह देशोनपूर्वकोटि की होती है।

अब अन्तरद्वार की सूत्रकार प्ररूपणा करते हैं-'भवियदव्वदेवस्स णं भंते ! केवइयं कालं अन्तरं होइ' हे भदन्त ! भविकद्रव्यदेव का कितने काल का अंतर होता है ? अर्थात्-पूर्वभव के त्याग के बाद भवान्तर प्राप्ति हो जाने पर पुनः भविकद्रव्यदेव की पर्याय में आने तक बीच में कितने काल का अन्तर होता है ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-'गोयमा' हे गौतम ! 'जहण्णेणं दसवाससहस्साइं अन्तोमुहुत्तमब्भहियाइं' भव्यद्रव्यदेव का अन्तर जघन्य से अन्तर्मुहूर्त अधिक दशहजार वर्ष का होता है, यह अन्तर इस प्रकार से जानना चाहिये (भविकद्रव्यदेव

ओछी એક સમયની હોય છે (કારણ કે શુભભાવોની પ્રતિપત્તિના સમય બાદ જ મરણ થઈ જાય છે) અને ઉત્કૃષ્ટ સંસ્થિતિ દેશોનપૂર્વકોટિની હોય છે.

હવે સૂત્રકાર અન્તરદ્વારની પ્રરૂપણા કરે છે—

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-"भवियदव्वदेवाणं भंते ! केवइयं कालं अंतरं होइ ? હે ભગવન્ ! ભવિકદ્રવ્ય દેવનું કાળની અપેક્ષાએ કેટલું અંતર કહ્યું છે ? એટલે કે ભવિક દેવની પર્યાયનો ત્યાગ કરીને-ભવાન્તરોમાં ગમન કરીને ફરીથી ભવિકદ્રવ્ય દેવ પર્યાયની ઉત્પત્તિમાં કેટલા કાળનો આંતરો પડી જાય છે?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-"गोयमा ! હે ગૌતમ ! ' जहण्णेणं दसवाससहस्साइं, अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं " ભવિકદ્રવ્ય દેવને પુનઃ ભવિકદ્રવ્યની પર્યાયની પ્રાપ્તિ થવામાં કાળની અપેક્ષાએ ઓછામાં ઓછું દસ હજાર વર્ષ અને એક અંતર્મુહૂર્ત પ્રમાણકાળનું અંતર પડી જાય છે. તે અંતરનું સ્પષ્ટીકરણ આ

वानव्यन्तरादिपूत्पद्य, ततश्च्युत्वा, तिर्यक्पञ्चेन्द्रिये गत्वा अन्तर्मुहूर्तं स्थित्वा पुनर्भव्यद्रव्यदेवत्वेनैव उपजायते इत्यादिरीत्या बोध्यम्, उत्कृष्टेन तु अन्तरम्, अनन्तं कालं वनस्पतिकालपर्यन्तं भवति, गौतमः पृच्छति–'नरदेवस्स णं पुच्छा, हे भदन्त ! नरदेवस्य खलु कियन्तं कालम्, अन्तरं भवति ? इति पृच्छा, भगवानाह–'गोयमा ! जहण्णेणं सातिरेगं सागरोवमं, उक्कोसेणं अणंतं कालं अवड्ढं पोग्गलपरियट्टं देसूणं' हे गौतम ! नरदेवस्यान्तरं जघन्येन सातिरेकं सागरोपमम्, उत्कृष्टेन तु अन्तरम्, अनन्तं कालम् देशोनम् अपार्द्धं पुद्गलपरिवर्तम्–पुद्गलपरा-

होकर कोई जीव दश हजार वर्ष की स्थिति वाले वानव्यन्तरादिकों में उत्पन्न हो जावे–फिर वहां से मरकर वह एक अन्तर्मुहूर्ततक शुभ-तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय में उत्पन्न हो जावे इस प्रकार वहां एक अन्तर्मुहूर्त तक रह कर पुनः वहां से मरकर वह भविक द्रव्यदेव हो जावे–इस रीति से यह अन्तर आता है।) तथा उत्कृष्ट से अन्तर यहां वनस्पति काल प्रमाण है। अब गौतम प्रभु से ऐसा पूछते हैं–' नरदेवस्स णं पुच्छा ' हे भदन्त ! नरदेव को कितने काल का अन्तर–विरहकाल होता है ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं–' गोयमा ! जहण्णेणं सातिरेगं सागरोवमं उक्कोसेणं अणंतं कालं अवड्ढंपोग्गलपरियट्टं देसूणं ' हे गौतम ! नरदेव का अन्तर जघन्य से कुछ अधिक एक सागरोपम का है, और उत्कृष्ट से देशोन अर्धपुद्गल परिवर्तपर्यन्तरूप अनन्तकाल का है। यह तो

પ્રમાણે સમજવું–કોઇપણ જીવ ભવિકદ્રવ્યદેવની પર્યાયનો ત્યાગ કરીને દસ હજાર વર્ષની સ્થિતિવાળા વ્યંતરાદિકોમાં ઉત્પન્ન થાય છે. ત્યાંનું આયુષ્ય પુરૂં કરીને તે એક અંતર્મુહૂર્ત સુધી શુભપૃથ્વીકાયાદિકોમાં ઉત્પન્ન થઈ જાય અને ત્યાંનું આયુષ્ય પૂરૂં કરીને એક અંતર્મુહૂર્તપ્રમાણ કાળ બાદ ભવિકદ્રવ્ય દેવની પર્યાયમાં ફરી ઉત્પન્ન થઇ જાય, તો આ પ્રકારે દસહજાર વર્ષ અને એક અંતર્મુહૂર્ત પ્રમાણ કાળનું જઘન્ય અન્તર આવી જાય છે. અને ઉત્કૃષ્ટ અંતર (વિરહકાળ) વનસ્પતિકાળ પ્રમાણ કહ્યું છે.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન–" नरदेवस्स णं पुच्छा " હે ભગવન્! નરદેવનો વિરહકાળ (કાળની અપેક્ષાએ અંતર) કેટલો કહ્યો છે ?

ઉત્તર–" गोयमा ! जहण्णेणं सातिरेगं सागरोवमं उक्कोसेणं अणंतं कालं अवड्ढंपोग्गलपरियट्टं देसूणं " હે ગૌતમ ! નરદેવનો વિરહકાળ ઓછામાં ઓછો એક સાગરોપમ કાળ કરતાં સહેજ અધિક છે, અને ઉત્કૃષ્ટ વિરહકાળ દેશોન અર્ધપુદ્ગલપરિવર્ત રૂપ અનંતકાળનો છે. એ વાત તો પહેલાં સમજાવવામાં

वर्त्तार्द्धं भवति, तथा च अपरित्यक्तसङ्गानां चक्रवर्तिनां नरदेवानां नरकपृथिवीषूत्पादात्, तासुच तेषामुत्कृष्टस्थितिर्भवति, ततश्च नरदेवो मृतः प्रथमपृथिव्यामुत्पन्नस्तत्र उत्कृष्टां सागरोपममाणां स्थितिमनुभूय पुनर्नरदेवत्वेन उत्पन्नः इत्येवं सागरोपमम्, सातिरेकत्वं तु नरदेवभवे चक्ररत्नोत्पत्तेरनन्तरकालेनावसेयम् इत्यादिरीत्या जघन्येन अन्तरं सातिरेकं सागरोपमं भवति, उत्कृष्टतस्तु अन्तरं किञ्चिन्न्यूनार्द्धपुद्गलपरिवर्तपर्यन्तमनन्तकालं भवति, तथाहि-सम्यग्दृष्टीनामेव चक्रवर्तित्वनिर्वर्तनात् तेषां च देशोनापार्द्धपुद्गलपरिवर्तपर्यन्तमेव संसारो

कहा ही जा चुका है कि चक्रवर्ती अपरित्यक्तसङ्ग होने के कारण मरकर नरक में जाते हैं-वहां वे उत्कृष्ट स्थिति का भोग करते हैं जघन्य रूप से इनका अन्तर इस प्रकार से समझना चाहिये कोई नरदेव-चक्रवर्ती मरा और वह प्रथमपृथिवी में नारक रूप से उत्पन्न हो गया वहां उत्कृष्ट स्थिति एक सागरोपम की है सो इस सागरोपमप्रमाण स्थिति को भोग कर वह पुनः नरदेवरूप से उत्पन्न हो गया यहां जो नरदेव की जघन्य-स्थिति में कुछ अधिकता कही गई है-सो उसका कारण यह है कि चक्ररत्न की उत्पत्ति के बाद ही वह नरदेव रूप से ज्ञात होता है-अतः इतना जो काल है वही एक सागर की स्थिति में अधिक होता है। तथा नरदेव का जो अन्तरकाल उत्कृष्ट से कुछ कम अर्द्धपुद्गलपरिवर्तन पर्यन्त तक का कहा है सो उसका कारण ऐसा है कि सम्यग्दृष्टि जीव ही चक्रवर्ती होते हैं और सम्यग्दृष्टि का संसार में रहने का काल देशोन अपार्द्धपुद्गलपरिवर्तपर्यन्त तक का ही रह जाता है, इसके बाद वह संसार-

---

આવી છે કે ચક્રવર્તી અપરિત્યક્ત સંગ હોવાને કારણે મરીને નરકમાં જાય છે, ત્યાં તે ઉત્કૃષ્ટ આયુસ્થિતિ ભોગવે છે. તેમના જઘન્ય વિરહકાળનું સ્પષ્ટીકરણ આ પ્રમાણે છે-કોઇ નરદેવ (ચક્રવર્તી) મરીને પહેલી રત્નપ્રભામાં નારક રૂપે ઉત્પન્ન થઇ ગયો, ત્યાં ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ એક સાગરોપમ પ્રમાણ હોય છે. એક સાગરોપમ પ્રમાણ આ સ્થિતિ ભોગવીને તે ફરી નરદેવ રૂપે ઉત્પન્ન થઈ જાય છે. હવે એક સાગરોપમકાળ કરતાં થોડો અધિક કાળ પ્રકટ કરવાનું કારણ નીચે પ્રમાણે છે. ચક્રરત્નની પ્રાપ્તિ થયા બાદ જ તેને નરદેવ કહેવામાં આવે છે. ચક્રરત્નની પ્રાપ્તિમાં થોડો કાળ વ્યતીત થઈ જાય છે તે કારણે જઘન્ય વિરહકાળ એક સાગરોપમ કરતાં થોડો અધિક કહ્યો છે. નરદેવનો ઉત્કૃષ્ટ વિરહકાળ અર્ધપુદ્ગલપરિવર્ત કરતાં થોડો ન્યૂન કહેવાનું કારણ-સમ્યગ્દૃષ્ટિ જીવ જ ચક્રવર્તી બને છે, અને સમ્યગ્દૃષ્ટિ જીવનો સંસારમાં રહેવાનો કાળ દેશોન અપાર્દ્ધપુદ્ગલપરિવર્ત પર્યન્તનો હોય છે. ત્યાર બાદ તો તે

भवति, तदन्त्यभवे च कश्चिन्नरदेवत्वं प्राप्नोतीत्येवंरीत्याऽवसेयम्। गौतमः पृच्छति-'धम्मदेवस्स पुच्छा' हे भदन्त ! धर्मदेवस्य कियन्तं कालम्, अन्तरं भवति ? इति पृच्छा, 'गोयमा ! जहण्णेणं पलिओवमपुहुत्तं, उक्कोसेणं अणंतं कालं अवड्ढं पोग्गलपरियट्टं देसूणं' हे गौतम ! धर्मदेवस्य अन्तरम्, जघन्येन पल्योपमपृथक्त्वम् द्वितीयादारभ्य नवपल्योपमपर्यन्तम् भवति, तथाहि कश्चित् चारित्रवान् जीवः सौधर्मे पल्योपमपृथक्त्वायुष्केषु उत्पद्य ततश्च्युत्वा धर्मदेवत्वं प्राप्नोतीत्येवम् उन्नेयम्, यत्तु मनुष्यत्वे उत्पन्नश्चारित्रं विनैवास्ते तदधिकमपि सत् पल्योपम-

से रहित हो जाता है। अब यदि कोई जीव अपने अन्तिम भव में पुनः इस नरदेवत्व को प्राप्त कर लेता है तब ऐसी स्थिति में नरदेवत्व को छोड़कर पुनः नरदेवत्व की प्राप्ति में उत्कृष्टरूप से अन्तर पूर्वोक्तप्रमाण रूप में सध जाता है। अब गौतम प्रभु से ऐसा पूछते हैं-' धम्मदेवस्स पुच्छा ' हे भदन्त ! धर्मदेव का अन्तरकाल कितना है ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-' गोयमा ! जहण्णेणं पलिओवमपुहुत्तं, उक्कोसेणं अणंतं कालं अवड्ढं पोग्गलपरियट्टं देसूणं ' हे गौतम ! धर्मदेव का अन्तर काल जघन्य से पल्योपमपृथक्त्व का है-दो से लेकर नौ पल्योपम तक का है, और वह इस प्रकार से है-कोई चारित्र वाला जीव सौधर्मस्वर्ग में पल्योपमपृथक्त्व की आयु वाले देवों में उत्पन्न हो गया क्यों कि धर्मदेव दोपल्योपम से कम स्थिति वाले देवों में उत्पन्न नहीं होता है। और फिर वह वहां से आयु की समाप्ति के बाद चव कर पुनः धर्मदेव हो

સંસારથી રહિત થઈ જાય છે. જો કોઇ જીવ પોતાના અન્તિમ ભવમાં નરદેવત્વની પુનઃ પ્રાપ્તિ કરી લે, તો એવી પરિસ્થિતિમાં પૂર્વના નરદેવ પર્યાય અને અન્તિમ નરદેવ પર્યાયની વચ્ચે પૂર્વોક્ત ઉત્કૃષ્ટ કાળનું અંતર પડી જાય છે.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-" धम्मदेवस्स पुच्छा " હે ભગવન્ ! ધર્મદેવનો વિરહકાળ કેટલો કહ્યો છે ?

ઉત્તર-" गोयमा ! जहण्णेणं पलिओवमपुहुत्तं, उक्कोसेणं अणंतं कालं अवड्ढं पोग्गलपरियट्टं देसूणं " હે ગૌતમ ! ધર્મદેવનો વિરહકાળ ઓછામાં ઓછો પલ્યોપમપૃથક્ત્વનો (બેથી લઈને નવ પલ્યોપમનો,) અને વધારેમાં વધારે અનંત કાળ સુધીનો હોય છે. તે અનંત કાળ અર્ધપુદ્ગલપરિવર્ત કરતાં સહેજ ન્યૂન હોય છે. જઘન્ય વિરહકાળનું સ્પષ્ટીકરણ-કોઈ ચારિત્રવાળો જીવ, ધારો કે સૌધર્મકલ્પમાં પલ્યોપમપૃથક્ત્વની આયુસ્થિતિવાળા દેવોમાં ઉત્પન્ન થાય છે. ત્યાંની આયુસ્થિતિ ભોગવીને ત્યાંથી ચ્યવીને તે પુનઃ ધર્મદેવ રૂપે ઉત્પન્ન

पृथक्त्वेऽन्तर्भावितमवसेयम्, उत्कृष्टेन तु अन्तरम्, अनन्तं कालम् अपार्द्धं पुद्गलपरिवर्तं देशोनम् भवति, गौतमः पृच्छति-'देवाहिदेवाणं पुच्छा' हे भदन्त! देवाधिदेवानां कियन्तं कालम्, अन्तरं भवति ? इति पृच्छा, भगवानाह-'गोयमा! नत्थि अंतर' हे गौतम! देवाधिदेवानाम् अर्हताम्, नास्ति अन्तरम्, तेषां मोक्षगमनाद् अन्तरं न भवतीति भावः। गौतमः पृच्छति-'भावदेवस्स णं पुच्छा' हे भदन्त! भावदेवस्य खलु कियन्तं कालम् अन्तरं भवति ? इति पृच्छा, भगवानाह-'गोयमा! जहण्णेणं अंतो मुहुत्तं, उक्कोसेणं अणंतं कालं वणस्सइकालो' हे

गया जो वह मनुष्यभव में उत्पन्न होकर वहां विना चारित्र का रहा-ऐसी स्थिति में इतना काल अधिक होने पर भी वह पल्योपमपृथक्त्व में ही अन्तर्भावित जानना चाहिये तात्पर्य कहने का यह है कि पल्योपमपृथक्त्व की स्थिति समाप्त कर वह धर्मदेव का जीव जब मनुष्य पर्याय में आ गया और वहां वह जब तक चारित्र के विना रहा तब तक का समय पल्योपमपृथक्त्व से भी कुछ अधिक हो जाता है-अतः जघन्य अन्तर यहाँ पल्योपमपृथक्त्व से कुछ अधिक होना चाहिये-परन्तु सूत्रकार ने तो ऐसा कहा नहीं है इसलिये इसका निर्वाह इस रूप से ही कर लेना चाहिये कि मनुष्यभव का इतना चारित्र विना का समय पल्योपम पृथक्त्व के भीतर ही अन्तर्भूत हो गया है। तथा उत्कृष्ट से अन्तर अनन्तकाल तक होता है-यह अनन्तकाल कुछ कम अर्धपुद्गल परिवर्तरूप होता है। अब गौतमस्वामी प्रभु से ऐसा पूछते हैं-'भावदेवस्स णं पुच्छा' हे भदन्त! भावदेव का अन्तरकाल कितना होता है ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-' गोयमा! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं

થઈ જાય છે. જો કે મનુષ્યભવમાં ઉત્પન્ન થયા બાદ જેટલો સમય તે ચારિત્ર અંગીકાર ન કરે, તેટલો અધિક સમય ધર્મદેવની પર્યાયની પુનઃ પ્રાપ્તિમાં લાગવો જોઈએ આ ગણુતરી ધ્યાનમાં લઈને પલ્યોપમપૃથક્ત્વ કરતાં અધિક વિરહકાળ કહેવો જોઈતો હતો, પરન્તુ અહીં પલ્યોપમપૃથક્ત્વ પ્રમાણ (એકથી લઈને નવ પલ્યોપમ પ્રમાણ) જે વિરહકાળ કહ્યો છે, તેનું કારણ એ છે કે ચારિત્ર પ્રાપ્તિ વિનાના કાળને આ વિરહકાળની અંદર જ સમાવિષ્ટ કરી લેવામાં આવેલ છે.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-"भावदेवस्स णं भंते! पुच्छा" હે ભગવન્! ભાવદેવનો વિરહકાળ કેટલો કહ્યો છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-"गोयमा! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं अणंतं कालं वणस्सइकालो" હે ગૌતમ! ભાવદેવનો વિરહકાળ ઓછામાં ઓછો

गौतम ! भावदेवस्य अन्तरं जघन्येन अन्तर्मुहूर्तं भवति, तथाहि-भावदेवश्च्युत्वा-ऽन्तर्मुहूर्तम् अन्यत्र तिर्यक्षु स्थित्वा पुनरपि भावदेवतया उत्पन्नः इत्येवं रीत्या जघन्येन अन्तर्मुहूर्तमुन्नेयम्, उत्कृष्टेन तु अन्तरम् अनन्तं कालं वनस्पतिकाल-पर्यन्तं बोध्यम् ॥

अथाल्पबहुत्वद्वारमाह-'एएसि णं भंते ! भवियदव्वदेवाणं नरदेवाणं जाव भावदेवाणय कयरे कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया वा ?' हे भदन्त ! एतेषां खलु पूर्वोक्तानां भव्यद्रव्यदेवानां, नरदेवानां, यावत्-धर्मदेवानां, देवाधिदेवानां, भाव-देवानां च मध्ये कतरे देवाः कतरेभ्यो देवेभ्यो यावत्-स्तोका वा, बहुका वा, तुल्या वा, विशेषाधिका वा सन्ति ? भगवानाह-'गोयमा ! सव्वत्थोवा नरदेवा,

अणंतं कालं वणस्सइकालो' हे गौतम ! भावदेव का अन्तरकाल कम से कम एक अन्तर्मुहूर्त का होता है, और वह इस प्रकार से होता है कि भाव-देव अपनी भावदेव के पर्याय को छोड़कर अन्तर्मुहूर्त तक अन्यत्र तिर्यञ्च में स्थित हो जावे और फिर वहां से मरकर वह पुनः भावदेवरूप से उत्पन्न हो जावे इस रीति से यह जघन्य अन्तर अतर्न्मुहूर्त का सध जाता है तथा उत्कृष्ट से अन्तर वनस्पतिकालपर्यन्त अनन्तकाल रूप होता है।

अब सूत्रकार अल्पबहुत्वद्वार का कथन करते हैं-इसमें गौतम ने प्रभु से ऐसा पूछा है-' एएसिणं भंते, भवियदव्वदेवाणं नरदेवाणं जाव भावदेवाण य कयरे कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया वा ' हे भदन्त ! इन पूर्वोक्त भव्यद्रव्यदेवों के, नरदेवों के यावत् धर्मदेवों के, और देवाधिदेवों के तथा भावदेवों के बीच में कौन देव किन देवों से यावत् स्तोक है ? कौन देव किन देवों से बहुत है ? कौन देव किन देवों के बराबर है ?

એક અંતર્મુહૂર્તનો અને વધારેમાં વધારે વનસ્પતિ કાળ પર્યન્તનો-અનંત-કાળ રૂપ હોય છે. ભાવદેવના જઘન્ય વિરહકાળનું સ્પષ્ટીકરણ આ પ્રમાણે છે-ધારો કે કોઈ ભાવદેવ પોતાની ભાવદેવ પર્યાય સંબંધી આયુસ્થિતિ પૂરી કરીને મનુષ્ય અથવા તિર્યંચ રૂપે ઉત્પન્ન થઈ જાય છે, ત્યાં એક અંતર્મુ-હૂર્ત કાળ રહીને ફરી ભાવદેવ રૂપે ઉત્પન્ન થઈ જાય છે તો એવી પરિસ્થિ-તિમાં એક અંતર્મુહૂર્ત પ્રમાણ જઘન્ય વિરહકાળ ઘટિત થઈ જાય છે.

હવે સૂત્રકાર અલ્પબહુત્વદ્વારનું કથન કરે છે—

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-"एएसि णं भंते ! भवियदव्वदेवाणं नरदेवाणं जाव भावदेवाण य कयरे कयरे हिंतो जाव विसेसाहिया वा?" હે ભગવન્ ! ભવ્ય-દ્રવ્યદેવો, નરદેવો, ધર્મદેવો, દેવાધિદેવો, અને ભાવદેવો, આ પાચે પ્રકારના દેવોમાં કયા દેવો કયા દેવોથી અલ્પપ્રમાણ છે ? કયા દેવો કયા દેવો કરતાં

देवाहिदेवा संखेज्जगुणा, धम्मदेवा संखेज्जगुणा, भवियदव्वदेवा असंखेज्जगुणा, भावदेवा असंखेज्जगुणा' हे गौतम! भव्यद्रव्यदेवादिभावदेवान्तेषु सर्वस्तोका नरदेवाः सन्ति, भरतैरवतेषु प्रत्येकं द्वादशानामेव तेषामुत्पादात्, विजयेषु च वासुदेवसम्भवात् सर्वेषु एकदाऽनुत्पादात्, तदपेक्षया देवाधिदेवाः संख्येयगुणाः भरतादिषु प्रत्येकं देवाधिदेवानां चक्रवर्त्यपेक्षया द्विगुणतयोत्पादात्, विजयेषु च वासुदेवोपेतेष्वपि उत्पादात्, किन्तु तदपेक्षया धर्मदेवाः संख्येयगुणा भवन्ति, श्रमणानामेकदापि कोटीसहस्रपृथक्त्वसद्भावात्, तदपेक्षया भव्यद्रव्यदेवाः तिर्यग्गति-

---

और कौन देव किन देवों से विशेषाधिक है? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं–'गोयमा' हे गौतम! 'सव्वत्थोवा नरदेवा' सब से कम नरदेव हैं। 'देवाहिदेवा संखेज्जगुणा' इन नरदेवों की अपेक्षा देवाधिदेव संख्यातगुणित हैं। नरदेव सबसे कम हैं इसका तात्पर्य यह है कि भरत और ऐरवत क्षेत्र में ये प्रत्येक में १२ ही उत्पन्न होते हैं और विजयों में वासुदेव होते हैं तथा यह भी नियम है कि ये १२ एक साथ उत्पन्न नहीं होते हैं। देवाधिदेवों को जो इनकी अपेक्षा संख्यातगुणा कहा गया है–सो इसका कारण यह है कि भरत और ऐरवत क्षेत्र में चक्रवर्तियों की अपेक्षा ये दूने उत्पन्न होते हैं। तथा वासुदेवयुक्त विजयों में भी इनका उत्पाद होता है। देवाधिदेवों की अपेक्षा धर्मदेव संख्यातगुणित हैं–क्यों कि एकसाथ भी धर्मदेवों का कोटिसहस्रपृथक्त्वरूप में सद्भाव रहता है। इनकी अपेक्षा भव्यद्रव्यदेव तिर्यग्गति को

અધિકપ્રમાણુ છે? કયા દેવો કયા દેવો જેટલા જ છે? કયા દેવો કયા દેવો કરતાં વિશેષાધિક છે?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર–"गोयमा!" હે ગૌતમ! "सव्वत्थोवा नरदेवा" નરદેવોની સંખ્યા સૌથી ઓછી છે "देवाहिदेवा संखेज्जगुणा" નરદેવો કરતાં દેવાધિદેવો સંખ્યાત ગણું હોય છે. નરદેવોની સંખ્યા સૌથી ઓછી કહેવાનું કારણ એ છે કે ભરત અને ઐરવત ક્ષેત્રમાં ૧૨–૧૨ નરદેવો (ચક્રવર્તીઓ) જ ઉત્પન્ન થાય છે, અને વિજયોમાં વાસુદેવો હોય છે. વળી એવો પણ નિયમ છે કે ૧૨ નરદેવો એક સાથે ઉત્પન્ન થતા નથી નરદેવો કરતાં દેવાધિદેવો સંખ્યાત ગણું કહેવાનું કારણ એ છે કે ભરત અને ઐરવત ક્ષેત્રમાં ચક્રવર્તીઓ કરતાં બમણાં દેવાધિદેવો ઉત્પન્ન થાય છે, તથા વાસુદેવ યુકત વિજયોમાં પણ તેમની ઉત્પત્તિ થાય છે દેવાધિદેવો કરતાં ધર્મદેવો સંખ્યાત ગણું હોય છે, કારણ કે એક સાથે પણ ધર્મદેવોનો

माश्रित्य असंख्येयगुणा भवन्ति, देशविरतादीनां देवगतिगामिनामसंख्यातत्वात्, तदपेक्षया भावदेवाः असंख्येयगुणाः भवन्ति, स्वरूपेणैव तेषामत्यधिकत्वात् ॥सू.५॥

भावदेवविशेषाल्पबहुत्ववक्तव्यता।

मूलम्–"एएसिणं भंते ! भावदेवाणं भवणवासीणं वाणमंतराणं, जोइसियाणं, वेमाणियाणं, सोहम्मगाणं जाव अच्चुयगाणं, गेवेज्जगाणं, अणुत्तरोववाइयाण य, कयरे कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया वा? गोयमा! सव्वत्थोवा अणुत्तरोववाइया, भावदेवा उवरिमगेवेज्जा भावदेवा संखेज्जगुणा, मज्झिमगेवेज्जा संखेज्जगुणा, हेट्ठिमगेवेज्जा संखेज्जगुणा, अच्चुए कप्पे देवा संखेज्जगुणा, जाव आणयकप्पे देवा संखेज्जगुणा, एवं जहा जीवाभिगमे तिविहे देवपुरिसे, अप्पाबहुयं जाव जोइसिया भावदेवा असंखेज्जगुणा, सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥सू० ६॥

बारसमयस्स नवमो उद्देसो समत्तो ॥१२–९॥

छाया—एतेषां खलु भदन्त ! भावदेवानां भवनवासिनां, वानव्यन्तराणाम्, ज्योतिषिकाणां, वैमानिकानां, सौधर्मिकाणां, यावत्–अच्युतकानाम्, ग्रैवेयकाणाम्, अनुत्तरौपपातिकानां च, कतरे कतरेभ्यो यावत् विशेषाधिका वा? गौतम! सर्वस्तोकाः अनुत्तरौपपातिका भावदेवाः, उपरिमग्रैवेयका भावदेवाः संख्येयगुणाः, मध्यमग्रैवेयकाः संख्येयगुणाः, अधस्तन ग्रैवेयकाः संख्येयगुणाः अच्युते कल्पे

आश्रित करके असंख्यातगुणित हैं, क्यों कि देवगतिगामी देशविरति जीव असंख्यात होते हैं। इनकी अपेक्षा भावदेव असंख्यातगुणित हैं। क्यों कि स्वरूप से ही इनकी अधिकता है ॥ सू० ५ ॥

કોટિપૃથક્ત્વ સહસ્રરૂપે (એકથી લઈને નવ કોડ પર્યન્ત) સદ્ભાવ રહે છે. ધર્મદેવો કરતાં ભવ્યદ્રવ્યદેવો તિર્યંગ્ગતિની અપેક્ષાએ અસંખ્યાત ગણાં છે, કારણ કે દેવગતિગામી દેશવિરતિયુકત જીવો અસંખ્યાત હોય છે, અને ભવ્યદ્રવ્યદેવો કરતાં ભાવદેવો અસંખ્યાત ગણાં છે, કારણ કે સ્વરૂપની અપેક્ષાએ તેમની અધિકતા છે. ॥સૂ૦૫॥

देवाः संख्येयगुणाः, यावत् आनतकल्पे देवाः संख्येयगुणाः, एवं यथा जीवाभिगमे त्रिविधः पुरुषः, अल्पबहुत्वं यावत् ज्योतिषिका भावदेवाः असंख्येयगुणाः, तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त !" ॥सू० ६॥

इति द्वादशशतकस्य नवमः उद्देशकः समाप्तः ॥

टीका—अथ भावदेवविशेषाणां भवनपत्यादीनाम् अल्पबहुत्वं प्ररूपयितुमाह–'एएसिणं भंते' इत्यादि। 'एएसिणं भंते ! भावदेवाणं भवणवासीणं, वाणमंतराणं, जोइसियाणं, वेमाणियाणं, सोहम्मगाणं, जाव अच्चुयगाणं, गेवेज्जगाणं, अणुत्तरोववाइयाण य कयरे कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया वा?' गौतमः पृच्छति–हे भदन्त ! एतेषां खलु भावदेवानां भवनवासिनां, वानव्यन्तराणाम्, ज्योतिषिकाणाम्, वैमानिकानाम्,–सौधर्मकाणां यावत्–अच्युतकानाम्, ग्रैवेयकाणाम्, अनुत्तरौपपातिकानां च मध्ये कतरे भावदेवाः, कतरेभ्यो–भावदेवेभ्यः, यावत्–अल्पा वा, बहुका वा, तुल्या वा, विशेषाधिका वा सन्ति ? भगवानाह–'गोयमा !

भावदेवविशेषाल्पबहुत्ववक्तव्यता–

'एएसिणं भंते ! भावदेवाणं भवणवासीणं वाणमंतराणं' इत्यादि।

टीकार्थ—इस सूत्र द्वारा सूत्रकार ने भावदेव विशेषरूप भवनपत्यादिकोंका अल्पबहुत्व की प्ररूपणा की है–इसमें गौतम ने प्रभु से पूछा है–' एएसिणं भंते ! भावदेवाणं भवणवासीणं, वाणमंतराणं, जोइसियाणं, वेमाणियाणं, सोहम्मगाणं जाव अच्चुयगाणं, गेवेज्जगाणं, अणुत्तरोववाइयाण य कयरे कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया वा ' हे भदन्त ! ये भावदेव रूप जो भवनवासी, वानव्यन्तर, ज्योतिषिक और वैमानिक सौधर्मक, यावत् अच्युततक, ग्रैवेयक और अनुत्तरौपपातिक हैं–सो इनके बीच में कौन भावदेव किन भावदेवों से यावत्–अल्प हैं ? कौन

—ભાવદેવ વિશેષોની અલ્પબહુત્વ વિષયક વક્તવ્યતા—

"एएसि णं भंते ! भावदेवाणं भवणवासीणं वाणमंतराणं" ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ–સૂત્રકારે આ સૂત્રમાં ભાવદેવ વિશેષ રૂપ ભવનપતિ આદિ દેવોની અલ્પબહુતાની પ્રરૂપણા કરી છે.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન–" एएसि णं भंते ! भावदेवाणं भवणवासीणं, वाणमंतराणं जोइसियाणं वेमाणियाणं, सोहम्मगाणं जाव अच्चुयगाणं, गेवेज्जगाणं, अणुत्तरोववाइयाणं कयरे कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया वा ? હે ભગવન્ ! ભાવદેવરૂપ જે ભવનવાસી, વાનવ્યન્તર, જ્યોતિષિક, વૈમાનિક (સૌધર્મથી લઇને અચ્યુત પર્યન્તના), ગ્રૈવેયક અને અનુત્તરોપપાતિક, દેવો છે, તેમાંથી કયા ભાવદેવો કયા ભાવ દેવો કરતાં ઓછાં છે ? કયા ભાવદેવો કયા ભાવદેવો

सव्वत्थो वा अणुत्तरोववाइया भावदेवा, उवरिमगेवेज्जा भावदेवा संखेज्जगुणा,' हे गौतम ! सर्वस्तोकाः अनुत्तरौपपातिका भावदेवाः सन्ति, तदपेक्षया उपरिमग्रैवेयकाः प्रथमत्रिकग्रैवेयका भावदेवाः संख्येयगुणाः सन्ति, 'मज्झिमगेवेज्जा संखेज्जगुणा, हेट्ठिमगेवेज्जा संखेज्जगुणा' तदपेक्षया मध्यमग्रैवेयकाः-मध्यमत्रिकग्रैवेयकाः भावदेवाः संख्येयगुणाः सन्ति, तदपेक्षया आन्तिमग्रैवेयकाः-अन्तिमत्रिकग्रैवेयका भावदेवाः संख्येयगुणाः सन्ति, 'अच्चुए कप्पे देवाः संखेज्जगुणा, जाव आणयकप्पे देवा असंखेज्जगुणा' अन्तिमत्रिकग्रैवेयकभावदेवापेक्षया अच्युते कल्पे भावदेवाः संख्येयगुणाः सन्ति, यावत्-तदपेक्षया आरणकल्पे

भावदेव किन भावदेवों से बहुत हैं ? कौन भावदेव किन भावदेवों के बराबर हैं ? और कौन भावदेव किन भावदेवों से विशेषाधिक हैं ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं- 'गोयमा ! सव्वत्थोवा अणुत्तरोववाइया भावदेवा' हे गौतम ! सबसे कम अनुत्तरौपपातिक भावदेव हैं। इनकी अपेक्षा 'उवरिमगेवेज्जा भावदेवा संखेज्जगुणा' उपरिम ग्रैवेयक-प्रथमत्रिक ग्रैवेयक के भावदेव संख्यातगुणित हैं 'मज्झिमगेवेज्जा संखेज्जगुणा, हेट्ठिमगेवेज्जा संखेज्जगुणा' इनकी अपेक्षा मध्यमग्रैवेयक के-मध्यमत्रिक ग्रैवेयक के-भावदेव संख्यातगुणित है, इनकी अपेक्षा अन्तिमग्रैवेयक के-अन्तिमत्रिकग्रैवेयकों के-भावदेव संख्यातगुणित हैं, 'अच्चुए कप्पे देवा संखेज्जगुणा जाव आणयकप्पे देवा संखेज्जगुणा' अन्तिमत्रिक ग्रैवेयक के भावदेवों की अपेक्षा अच्युतकल्प में भावदेव

કરતાં વધારે છે? કયા ભાવદેવો કયા ભાવદેવોની બરાબર છે ? કયા ભાવદેવો કયા ભાવદેવો કરતાં વિશેષાધિક છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-"गोयमा ! सव्वत्थोवा अणुत्तरोववाइया भावदेवा" હે ગૌતમ ! અનુત્તરૌપપાતિક ભાવદેવો સૌથી ઓછા છે. "उवरिमगेवेज्जा भावदेवा संखेज्जगुणा" અનુત્તરૌપપાતિક દેવો કરતાં ઉપરિમ ગ્રૈવેયક (પ્રથમ ત્રિકના) વિમાનવાસી દેવો સંખ્યાત ગણું છે. "मज्झिमगेवेज्जा संखेज्जगुणा" ઉપરિમ ગ્રૈવેયક વિમાનવાસી દેવો કરતાં મધ્યમ ગ્રૈવેયક વિમાનવાસી દેવો સંખ્યાત ગણું છે, "हेट्ठिमगेवेज्जा संखेज्जगुणा" મધ્યમ ગ્રૈવેયક વિમાન વાસી દેવો કરતાં અધસ્તન (નીચેનું ત્રિક) ગ્રૈવેયક વિમાનોના ભાવદેવો સંખ્યાત ગણું છે. "अच्चुए कप्पे देवा संखेज्जगुणा जाव आणयकप्पे देवा संखेज्जगुणा" અધસ્તન ત્રણ ગ્રૈવેયક વિમાનવાસી ભાવદેવો કરતાં અચ્યુત કલ્પના દેવો સંખ્યાત ગણું છે, અચ્યુત કરતાં આરણમાં અને આરણ કરતાં

आनतकल्पे भावदेवाः संख्येयगुणाः सन्ति, 'एवं जहा जीवाभिगमे तिविहे देवपुरिसे अप्पाबहुयं जाव जोइसिया भावदेवा असंखेज्जगुणा' एवं रीत्या, यथा जीवाभिगमे त्रिविधः-त्रिविधजीवाधिकारः अथ च देवपुरुषः-देवपुरुषाणामल्पबहुत्वमुक्तम्, तथैवात्रापि वक्तव्यम्, तथा चोक्तं जीवाभिगमे-

'सहस्सारे कप्पे देवा असंखेज्जगुणा, महासुक्के असंखेज्जगुणा, लंतए असंखेज्जगुणा, बंभलोए देवा असंखेज्जगुणा, माहिंदे देवा, असंखेज्जगुणा, सणंकुमारे कप्पे देवा असंखेज्जगुणा, ईसाणे देवा असंखेज्जगुणा, सोहम्मे देवा संखेज्जगुणा, भवणवासिदेवा असंखेज्जगुणा, वाणमंतरा देवा असंखेज्जगुणा' त्ति, तदाह-यावत् ज्योतिषिका भावदेवाः असंख्येयगुणा भवन्ति। अन्ते गौतमो भग-

---

संख्यातगुणित हैं, यावत् इनकी अपेक्षा आरणकल्प में, आनतकल्प में, भावदेव संख्यातगुणित हैं। 'एवं जहा जीवाभिगमे तिविहे देवपुरिसे अप्पाबहुयं जाव जोइसिया भावदेवा असंखेज्जगुणा' इस रीति से जैसे जीवाभिगम में त्रिविध-त्रिविध जीवाधिकार, अथ च देवपुरुष-देवपुरुषों का अल्पबहुत्व कहा गया है, उसी प्रकार से यहां पर भी वह कहना चाहिये। जीवाभिगम में ऐसा कहा गया है 'सहस्सारे कप्पे देवा असंखेज्जगुणा महासुक्के असंखेज्जगुणा, लंतए असंखेज्जगुणा, बंभलोए देवा असंखेज्जगुणा, माहिंदे देवा असंखेज्जगुणा, सणंकुमारे कप्पे देवा असंखेज्जगुणा, ईसाणे देवा असंखेज्जगुणा, सोहम्मे देवा संखेज्जगुणा, भवणवासिदेवा असंखेज्जगुणा, वाणमंतरा देवा असंखेज्जगुणा त्ति' अर्थात्-सहस्रारकल्प में देव भावदेव असंख्यातगुणित हैं महाशुक्र में देव-असंख्यातगुणित हैं लान्तक में देव असंख्यातगुणित हैं ब्रह्मलोक में भावदेव असंख्यातगुणित हैं, माहेन्द्रदेवलोक

આનતકલ્પમાં સંખ્યાત ગણું ભાવદેવો છે. "एवं जहा जीवाभिगमे तिविहे देवपुरिसे अप्पाबहुयं जोइसिया भावदेवा असंखेज्जगुणा" આ પદ્ધતિથી જીવાભિગમ સૂત્રમાં જેવી રીતે ત્રિવિધ જીવાધિકાર-દેવપુરુષોનું અલ્પબહુત્વ-કહેવામાં આવ્યું છે, એજ પ્રમાણે અહીં પણ ભાવદેવોનું અલ્પબહુત્વ કહેવું જોઈએ જીવાભિગમમાં એવું કહ્યું છે કે-' सहस्सारे कप्पे देवा असंखेज्जगुणा, महासुक्के असंखेज्जगुणा, लंतए असंखेज्जगुणा बंभलोए देवा असंखेज्जगुणा, माहिंदे देवा असंखेज्जगुणा, सणंकुमारे कप्पे देवा असंखेज्जगुणा, ईसाणे देवा असंखेज्जगुणा, सोहम्मे देवा संखेज्जगुणा, भवणवासी देवा असंखेज्जगुणा, वाणमंतरा देवा असंखेज्जगुणा त्ति" આનત કરતાં સહસ્રાર કલ્પમાં અસંખ્યાતગણું, મહાશુક્રમાં દેવ અસંખ્યાતગણા છે. લાન્તકમાં દેવ અસંખ્યાતગણા છે.

वद्वाक्यं प्रमाणयन्नाह–'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' हे भदन्त ! तदेवं–भवदुक्तं सत्यमेव, हे भदन्त ! तदेवं–भवदुक्तं सत्यमेवेति ॥सू० ६॥

इति श्री विश्वविख्यात जगद्वल्लभादिपदभूषित बालब्रह्मचारि 'जैनाचार्य' पूज्यश्री घासीलालव्रतिविरचितायां श्री "भगवती" सूत्रस्य प्रमेयचन्द्रिकाख्यायां व्याख्यायां द्वादशशतकस्य नवमोद्देशकः समाप्तः ॥सू० १२–९॥

में देव असंख्यातगुणित हैं, सनत्कुमारदेवलोक में देव असंख्यातगुणित हैं, ईशान में भावदेव असंख्यातगुणित हैं, सौधर्मदेवलोक में भावदेव संख्यातगुणित हैं। भवनवासी देव असंख्यातगुणित हैं, वानव्यन्तर देव असंख्यात गुणित हैं और ज्योतिषिक देव भी असंख्यातगुणित हैं। अब अन्त में भगवान् के वचन में प्रमाणता ख्यापित करते हुये अर्थात् प्रभु के इस कथन को स्वीकार करते हुए गौतम स्वामी कहते हैं–हे भदन्त ! आप का कहा हुआ यह सब विषय सर्वथा सत्य ही है। इस प्रकार कह कर वे गौतम स्वामी अपने स्थाप पर यावत् संयम और तप से आत्मा को भावित करते हुए विराजमान हो गये ॥सू० ६॥

जैनाचार्य जैनधर्मदिवाकर पूज्यश्री घासीलालजीमहाराज कृत "भगवतीसूत्र" की प्रमेयचन्द्रिका व्याख्याके बारहवें शतकका ॥ नववां उद्देशक समाप्त ॥१२–९॥

સહસ્રાર કરતાં બ્રહ્મલોકમાં અસંખ્યાતગણું, બ્રહ્મલોક કરતાં માહેન્દ્રમાં અસંખ્યાત ગણું, માહેન્દ્ર કરતાં સનત્કુમાર કલ્પમાં અસંખ્યાત ગણું, સનત્કુમાર કરતાં ઈશાન કલ્પમાં અસંખ્યાત ગણું અને ઈશાન કલ્પ કરતાં સૌધર્મ કલ્પમાં સંખ્યાત ગણું ભાવદેવો છે. સૌધર્મ કલ્પના ભાવદેવો કરતાં ભવનવાસી ભાવદેવો અસંખ્યાત ગણું છે અને ભવનવાસી ભાવદેવો કરતાં વાનવ્યંતર ભાવદેવો અસંખ્યાત ગણું છે. અને વાનવ્યંતર ભાવદેવો કરતાં જ્યોતિષિક ભાવદેવો અસંખ્યાત ગણું છે.

પ્રભુના આ કથનમાં પ્રમાણિકતાનો સ્વીકાર કરીને ગૌતમ સ્વામી કહે છે કે–"सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति" હે ભગવન્ ! આ વિષયનું આપે જે પ્રતિપાદન કર્યું તે સર્વથા સત્ય છે. હે ભગવન્ ! આપનું કથન સર્વથા સત્ય છે. આ પ્રમાણે કહીને મહાવીર પ્રભુને વંદણા નમસ્કાર કરીને, સંયમ અને તપથી આત્માને યુક્ત કરતા થકા ગૌતમ સ્વામી પોતાના સ્થાને બેસી ગયા. ॥સૂ૦ ૬॥

જૈનાચાર્ય જૈનધર્મદિવાકર પૂજ્યશ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ કૃત "ભગવતીસૂત્ર"ની પ્રમેયચન્દ્રિકા વ્યાખ્યાના બારમાં શતકનો નવમો ઉદ્દેશક સમાપ્ત ॥૧૨–૯॥

अथ दशमोद्देशकः प्रारभ्यते

द्वादशशतके दशमोद्देशकस्य संक्षिप्तविषयविवरणम् ॥

द्रव्यात्मप्रभृतीनामल्पबहुत्ववक्तव्यतारूपणम्, आत्मज्ञानस्वरूपो वर्तते ? अन्यस्वरूपोवेति निरूपणम्, नैरयिकाणामात्मस्वरूपनिरूपणम्, पृथिवीकायिकानाम् आत्मस्वरूपनिरूपणम्, आत्मा दर्शनस्वरूपो वर्तते, तदन्यस्वरूपोवेति प्रश्नादि विचारः, रत्नप्रभापृथिवीसद्रूपा असद्रूपा वा वर्तते ! इत्यादि प्रश्नोत्तरम्, एवं शर्कराप्रभादि सर्वासु पृथिवीषु प्रश्नोत्तराणि विज्ञेयानि। एवमेव सौधर्म देवलोकादारभ्यानुत्तरौपपातिकपर्यन्तं प्रश्नोत्तरनिरूपणम् एकः परमाणुः सद्रूपो वर्तते, असद्रूपो वा वर्तते ? इत्यादि प्रश्नोत्तरम्, द्विप्रदेशिकः स्कन्धः कथं सद्रूपो वर्तते

दशवें उद्देशेका प्रारंभ—

बारहवें शतक के इस दशवें उद्देशक में जो विषय कहा गया है उसका संक्षिप्त विषय विवरण इस प्रकार से है–आत्मा के द्रव्यात्मा आदि भेदों का कथन, और इनके अल्प बहुत्व का कथन, आत्मा ज्ञानरूप है, अथवा अन्य रूप है, ऐसी शंका का उत्तर नैरयिकों की आत्मा में, तथा पृथिवीकायिक आदिकों की आत्मा में ज्ञानादि स्वरूपता का निरूपण आत्मा दर्शन स्वरूप है ? या अन्य स्वरूप है ? इस प्रकार के प्रश्नादिकों का विचार रत्नप्रभापृथिवी सद्रूप है या असद्रूप है ? इत्यादि प्रश्नों का उत्तर इसी प्रकार के प्रश्नोत्तर शर्कराप्रभा आदि पृथिवियों में भी जानना चाहिये। सौधर्मदेवलोक से लेकर अनुत्तरौपपातिक तक इसी प्रकार के प्रश्नोत्तरों का निरूपण। एक परमाणु सद्रूप है या असद्रूप है ? इत्यादि प्रश्न का उत्तर द्विप्रदेशिक स्कन्ध सद्रूप कैसे हैं ?

દશમા ઉદ્દેશાનો પ્રારંભ—

બારમાં શતકના આ દસમાં ઉદ્દેશકમાં પ્રતિપાદિત વિષયનો સંક્ષિપ્ત સારાંશ નીચે પ્રમાણે છે–આત્માના દ્રવ્યાત્મા આદિ આઠ પ્રકારોનું કથન તેમના અલ્પબહુત્વનું કથન આત્મા જ્ઞાન રૂપ છે, અથવા અન્ય રૂપ છે ? આ પ્રકારનો પ્રશ્ન અને તેનો ઉત્તર નારકોના આત્મામાં તથા પૃથ્વીકાયિક આદિકોના આત્મામાં જ્ઞાનાદિ સ્વરૂપતાનું નિરૂપણ આત્મા દર્શનસ્વરૂપ છે, અથવા અન્ય સ્વરૂપ છે ? આ પ્રકારના પ્રશ્નાદિકોની વિચારણા રત્નપ્રભા પૃથ્વી સદ્રૂપ છે, કે અસદ્રૂપ છે ? આ પ્રકારનો પ્રશ્ન અને તેનો ઉત્તર શર્કરાપ્રભા આદિ પૃથ્વીઓને વિષે પણ એજ પ્રકારના પ્રશ્નોત્તરોની પ્રરૂપણા એક પરમાણુ સદ્રૂપ છે કે અસદ્રૂપ છે ? દ્વિપ્રદેશિક સ્કન્ધ સદ્રૂપ છે કે અસદ્રૂપ છે ? ઇત્યાદિ પ્રશ્નો અને તેમના ઉત્તરોની

इत्यादि षड्भङ्गं प्रश्नोत्तरम्, त्रिप्रदेशिकस्कन्धः स्यादात्मा कथंचित् सद्रूपो वर्तते, स्यात् नो आत्मा कथञ्चित् असद्रूपः इत्यादि त्रयोदशभङ्गैः प्ररूपणम्, कथं तावत् त्रिप्रदेशिकस्कन्धस्य 'स्यादात्मा' इत्यादि त्रयोदशभङ्गाः भवन्ति ? इति प्रश्नोत्तरम्, चतुष्प्रदेशिकस्कन्धस्य एकोनविंशतिभङ्गानां प्ररूपणम्, कथं तावत् चतुष्प्रदेशिकस्कन्धस्य 'स्यादात्मा, स्यात् नो आत्मा' इत्यादिभङ्गानां हेतुकथनमिति।

आत्मस्वरूपवक्तव्यता।

मूलम्–"कइविहाणं भंते! आया पण्णत्ता? गोयमा! अट्ठविहा आया पण्णत्ता, तं जहा–दवियाया, कसायाया, जोगाया, उवजोगाया, णाणाया, दंसणाया, चरित्ताया, वीरियाया। जस्स णं भंते! दवियाया तस्स कसायाया, जस्स कसायाया तस्स दवियाया?। गोयमा! जस्स दवियाया तस्स कसायाया सिय अत्थि सिय नत्थि, जस्स पुण कसायाया तस्स दवियाया नियमं अत्थि। जस्स णं भंते! दवियाया तस्स जोगाया?। एवं जहा दवियाया कसायाया भणिया तहा दवियाया जोगाया य भाणियव्वा। जस्स णं भंते! दवियाया तस्स उवजोगाया एवं सव्वत्थ

इस प्रश्न का षड्भंगरूप उत्तर त्रिप्रदेशिक स्कन्ध कथंचित् आत्मा है, कथंचित् सद्रूप है, कथंचित् नो आत्मा है, कथंचित् असद्रूप है–इत्यादि १३ भंगों द्वारा उसकी प्ररूपणा। त्रिप्रदेशी स्कन्ध के 'स्यादात्मा' इत्यादि रूप से १३ भंग कैसे होते हैं इस प्रश्न का उत्तर चतुष्प्रदेशी स्कन्ध के १९ भंगो की प्ररूपणा चतुष्प्रदेशिक स्कन्ध के १९ भंग होने में हेतुकथन।

પ્રરૂપણા દ્વિપ્રદેશિક સ્કન્ધ સદ્રૂપ કેવી રીતે છે? આ પ્રશ્નોનો ૭ ભાંગાઓ દ્વારા ઉત્તર ત્રિપ્રદેશિક સ્કન્ધ અમુક અપેક્ષાએ આત્મા છે, અમુક અપેક્ષાએ સદ્રૂપ છે, અમુક અપેક્ષાએ નો આત્મા છે, અમુક અપેક્ષાએ અસદ્રૂપ છે, ઇત્યાદિ ૧૩ ભાંગાઓ (વિકલ્પો) દ્વારા તેની પ્રરૂપણા ત્રિપ્રદેશી સ્કંધના "સ્યાદાત્મા" ઇત્યાદિ રૂપે ૧૩ ભાંગાઓ કેવી રીતે થાય છે? આ પ્રશ્નનો ઉત્તર ચતુષ્પ્રદેશી સ્કન્ધના ૧૯ ભાંગાઓની પ્રરૂપણા ચતુષ્પ્રદેશી સ્કન્ધના ૧૯ ભાંગાઓ થવાના કારણોનું કથન.

पुच्छा भाणियव्वा। गोयमा! जस्स दवियाया तस्स उवओगाया नियमं अत्थि। जस्स वि उवओगाया तस्स वि दवियाया नियमं अत्थि। जस्स दवियाया तस्स णाणाया भयणाए। जस्स पुण णाणाया तस्स दवियाया नियमं अत्थि। जस्स दवियाया तस्स दंसणाया नियमं अत्थि। जस्स वि दंसणाया तस्स दवियाया नियमं अत्थि। जस्स दवियाया तस्स चरित्ताया भयणाए। जस्स पुण चरित्ताया तस्स दवियाया नियमं अत्थि। एवं वीरियायाए वि समं। जस्स णं भंते! कसायाया तस्स जोगाया पुच्छा, गोयमा! जस्स कसायाया तस्स जोगाया नियमं अत्थि। जस्स पुण जोगाया तस्स कसायाया सिय अत्थि, सिय नत्थि। एवं उवओगायाए वि समं कसायाया नेयव्वा। कसायाया य णाणाया य परोप्परं दोवि भइयव्वाओ। जहा कसायाया य, उवओगाया य तहा कसाया य, दंसणाया य, कसायाया य, चरित्ताया य, दोवि परोप्परं भइयव्वाओ। जहा कसायाया य, जोगाया य, तहा कसायाया य, वीरियाया य, भाणियव्वाओ। एवं जहा कसायायाए वत्तव्वया भणिया तहा जोगायाए वि उवरिमाहिं समं भाणियव्वाओ। जहा दवियायाए वत्तव्वया भणिया, तहा उवयोगायाए वि उवरिल्लाहिं समं भाणियव्वा। जस्स णाणाया तस्स दंसणाया नियमं अत्थि। जस्स पुण दंसणाया तस्स णाणाया भयणाए। जस्स णाणाया तस्स चरित्ताया सिय अत्थि सिय नत्थि। जस्स पुण चरित्ताया तस्स

णाणाया नियमं अत्थि, णाणाया वीरियाया दो वि परोप्परं भयणाए। जस्स दंसणाया तस्स उवरिमाओ दो वि भयणाए। जस्स पुण ताओ तस्स दंसणाया नियमं अत्थि। जस्स चरित्ताया तस्स वीरियाया नियमं अत्थि। जस्स पुण वीरियाया तस्स चरित्ताया सिय अत्थि सिय नत्थि। एयासिणं भंते! दवियाणं कसायायाणं जाव वीरियायाण य कयरे कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया वा? गोयमा! सव्वत्थोवाओ चरित्ताओ। णाणायाओ अणंतगुणाओ। कसायाओ अणंतगुणाओ। जोगायाओ विसेसाहियाओ। वीरियायाओ विसेसाहियाओ। उवयोग दवियदंसणायाओ तिन्नि वि तुल्लाओ विसेसाहियाओ ॥सू० १॥

छाया—कतिविधः खलु भदन्त! आत्मा प्रज्ञप्तः? गौतम! अष्टविधः आत्मा प्रज्ञप्तः, तथथा—द्रव्यात्मा१, कषायात्मा२, योगात्मा३, उपयोगात्मा४, ज्ञानात्मा५, दर्शनात्मा६, चारित्रात्मा७, वीर्यात्मा८, यस्य खलु भदन्त! द्रव्यात्मा तस्य कषायात्मा, यस्य कषायात्मा तस्य द्रव्यात्मा? गौतम! यस्य द्रव्यात्मा तस्य कषायात्मा स्याद् अस्ति स्यान्नास्ति, यस्य पुनः कषायात्मा तस्य द्रव्यात्मा नियमेन अस्ति। यस्य खलु भदन्त! द्रव्यात्मा तस्य योगात्मा? एवं यथा द्रव्यात्मा कषायात्मा भणितस्तथा द्रव्यात्मा योगात्मा च भणितव्यः। यस्य खलु भदन्त! द्रव्यात्मा तस्य उपयोगात्मा, एवं सर्वत्र पृच्छा भणितव्या। गौतम! यस्य द्रव्यात्मा तस्य उपयोगात्मा नियमेन अस्ति यस्यापि उपयोगात्मा तस्यापि द्रव्यात्मा नियमेन अस्ति। यस्य द्रव्यात्मा तस्य ज्ञानात्मा भजनया, यस्य पुन ज्ञानात्मा तस्य द्रव्यात्मा नियमेन अस्ति। यस्य द्रव्यात्मा तस्य दर्शनात्मा नियमेन अस्ति। यस्यापि दर्शनात्मा तस्य द्रव्यात्मा नियमेन अस्ति। यस्य द्रव्यात्मा तस्य चारित्रात्मा भजनया। यस्य पुनश्चारित्रात्मा तस्य द्रव्यात्मा नियमेन अस्ति। एवं वीर्यात्मनापि समम्। यस्य खलु भदन्त! कषायात्मा तस्य योगात्मा पृच्छा, गौतम! यस्य कषायात्मा तस्य योगात्मा नियमेन अस्ति। यस्य पुनर्योगात्मा तस्य कषायात्मा स्यात् अस्ति स्यात् नास्ति। एवम् उपयोगात्मनाऽपि समं कषायात्मा नेतव्यः, कषायात्मा च ज्ञानात्मा च परस्परं द्वावपि भक्तव्यौ, यथा कषायात्मा च उपयोगात्मा च तथा कषायात्मा च दर्शनात्मा च, कषायात्मा च चारित्रात्मा च द्वावपि परस्परं भक्तव्यौ, यथा कषायात्मा च योगात्मा च तथा कष-

यात्मा च वीर्यात्मा च भणितव्यः, एवं यथा कषायात्मनो वक्तव्यता भणिता तथा योगात्मनोऽपि उपरिमैः समं भणितव्या, यथा द्रव्यात्मनो वक्तव्यता भणिता तथा उपयोगात्मनोऽपि उपरिमैः समं भणितव्या, यस्य ज्ञानात्मा तस्य दर्शनात्मा नियमेन अस्ति, यस्य पुनर्दर्शनात्मा तस्य ज्ञानात्मा भजनया, यस्य ज्ञानात्मा तस्य चारित्रात्मा स्यात् अस्ति, स्यात् नास्ति, यस्य पुनश्चारित्रात्मा तस्य ज्ञानात्मा नियमेन अस्ति, ज्ञानात्मा वीर्यात्मा द्वावपि परस्परं भजनया, यस्य दर्शनात्मा तस्य उपरिमौ द्वावपि भजनया, यस्य पुनस्तौ तस्य दर्शनात्मा नियमेन अस्ति, यस्य चारित्रात्मा तस्य वीर्यात्मा नियमेन अस्ति यस्य पुनर्वीर्यात्मा तस्य चारित्रात्मा स्यात् अस्ति, स्यात् नास्ति, एतेषां खलु भदन्त ! द्रव्यात्मनां कषायात्मनां यावत् वीर्यात्मनां च कतरे कतरेभ्यो यावत् विशेषाधिका वा ? गौतम ! सर्वस्तोकाश्चारित्रात्मानः, ज्ञानात्मानः अनन्तगुणाः, कषायात्मानः अनन्तगुणाः, योगात्मानो विशेषाधिकाः, वीर्यात्मानो विशेषाधिकाः, उपयोग-द्रव्यदर्शनात्मानस्त्रयोऽपि तुल्या विशेषाधिकाः ॥सू० १॥

टीका—पूर्वोद्देशके देवानां प्ररूपितत्वेन, तेषां चात्मरूपत्वादात्मस्वरूपं भेदतः प्ररूपयितुं दशमोद्देशकमाह—कइविहाणं भंते' इत्यादि। 'कइविहाणं भंते ! आया पण्णत्ता ?' गौतमः पृच्छति—हे भदन्त ! कतिविधः खलु आत्मा प्रज्ञप्तः ? भगवानाह—'गोयमा ! अट्ठविहा आया पण्णत्ता' हे गौतम ! अष्टविधः आत्मा

आत्मस्वरूपवक्तव्यता

'कइविहाणं भंते ! आया पण्णत्ता' इत्यादि

टीकार्थ—इससे पूर्व उद्देशक में सूत्रकार ने देवों की प्ररूपणा की है और ये देव आत्मरूप होते हैं, अतः आत्मा के स्वरूप को भेदपूर्वक प्ररूपित करने के लिए सूत्रकार ने इस दशवें उद्देशक का कथन किया है—इसमें गौतम ने प्रभु से ऐसा पूछा है—'कइविहा णं भंते ! आया पण्णता' हे भदन्त ! आत्मा कितने प्रकार का कहा गया है ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं—'गोयमा' हे गौतम ! अट्ठविहा आया पण्णत्ता'

—આત્માના સ્વરૂપની વક્તવ્યતા—

"कइ विहाणं भंते ! आया पण्णत्ता" ઈત્યાદિ—

ટીકાર્થ—આગલા સૂત્રમાં સૂત્રકારે દેવોની પ્રરૂપણા કરી છે, તે દેવોમાં આત્માનો સદ્ભાવ હોય છે, આ પ્રકારના પૂર્વસૂત્ર સાથેના સંબંધને લઈને હવે સૂત્રકાર આત્માના સ્વરૂપનું ભેદપૂર્વક નિરૂપણ કરે છે-આ વિષયને અનુલક્ષીને ગૌતમ સ્વામી મહાવીર પ્રભુને એવો પ્રશ્ન પૂછે છે કે—"कइविहाणं भंते ! आया पण्णत्ता ?" હે ભગવન્ ! આત્મા કેટલા પ્રકારનો કહ્યો છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર—"गोयमा !" હે ગૌતમ ! "अट्ठविहा आया पण्णत्ता" આત્મા આઠ પ્રકારનો કહ્યો છે. "तंजहा" તે આઠ પ્રકારો નીચે

प्रज्ञप्तः, 'तं जहा-दवियाया१, कसायाया२, जोगाया३, उवजोगाया४, णाणाया५, दंसणाया६, चरित्ताया७, वीरियाया८,' तद्यथा-द्रव्यात्मा१, कषायात्मा२, योगात्मा३, उपयोगात्मा४, ज्ञानात्मा५, दर्शनात्मा६, चारित्रात्मा७, वीर्यात्मा८, च। तत्र अतति सततं गच्छति नानाविधान् अपरापरान् स्वपरपर्यायानिति आत्मा, अथवा ये ये गत्यर्था स्ते ते ज्ञानार्था इतिन्यायेन अत् धातो र्गत्यर्थत्वेन ज्ञानार्थत्वात्-अतति-सततमवगच्छति उपयोगलक्षणत्वादित्यात्मा, तस्य चोपयोगलक्षणत्वात्सामान्येनैकविधत्वेऽप्युपाधिभेदात् अष्टविधत्वमवसेयम्, तत्र द्रव्यं-त्रिकालानुगामिगुणीकृत कषायादि पर्यायं, तद्भूः आत्मा द्रव्यात्मा सर्वेषां जीवानाम्,

---

आत्मा आठ प्रकार का कहा गया है। 'तं जहा' वह इस प्रकार से है-१ दवियाया, २ कसायाया, ३ जोगाया ४ उवजोगाया, ५ णाणाया, ६ दंसणाया, ७ चरित्ताया, ८ वीरियाया' द्रव्यात्मा, कषायात्मा, योगात्मा, उपयोगात्मा, ज्ञानात्मा, दर्शनात्मा, चरित्रात्मा और वीर्यात्मा जो निरन्तर अपरापर पर्याय को-स्वपर्यायरूप-ज्ञानादिक नानाप्रकार के गुणों को प्राप्त करता रहता है, अथवा-गत्यर्थक जितने भी धातु होते हैं वे सब ज्ञानार्थक होते हैं-इस नियम के अनुसार गत्यर्थक अत् धातु का अर्थ ज्ञान होता है-सो इस व्युत्पत्ति के बल से उपयोग लक्षण वाला होने से यह आत्मा निरन्तर पदार्थों को जानता रहता है इस प्रकार यह आत्मा यद्यपि इस सामान्यरूप उपयोग लक्षण से एक ही प्रकार का है' परन्तु फिर भी उपाधि के भेद से यह आठ प्रकार का कह दिया गया है। जिस आत्मा में जो कि त्रिकालगामी है, जब कषा-

---

પ્રમાણે છે-"दवियाया, कसायाया, जोगाया, उवजोगाया, णाणाया, दंसणाया, चरित्ताया, वीरियाया" (१) द्रव्यात्मा, (२) कषायात्मा, (३) योगात्मा, (४) उपयोगात्मा, (५) ज्ञानात्मा, (६) दर्शनात्मा, (७) चारित्रात्मा अने (८) वीर्यात्मा. જે નિરંતર અપરાપર પર્યાયને-સ્વપર પર્યાય રૂપ જ્ઞાનાદિક વિવિધ પ્રકારના ગુણોને-પ્રાપ્ત કરતો રહે છે, એવો આત્માને સમજવો જોઇએ અથવા-ગતિ અર્થવાચક જેટલા ધાતુઓ છે, તે બધા ધાતુઓ જ્ઞાનાર્થક હોય છે, આ નિયમાનુસાર ગત્યર્થક "अत्" ધાતુનો અર્થ 'જ્ઞાન' થાય છે. આ વ્યુત્પત્તિ અનુસાર આત્મા ઉપયોગ લક્ષણવાળો હોવાને કારણે પદાર્થોને નિરંતર જાણતો રહે છે. આ સામાન્ય ઉપયોગ લક્ષણની અપેક્ષાએ તો આત્મા એક જ પ્રકારનો છે, પરન્તુ ઉપાધિના ભેદની અપેક્ષાએ તેને આઠ પ્રકારનો કહેવામાં આવ્યો છે. ત્રિકાલાનુગામી આત્મામાં જ્યારે કષાયાદિ પર્યાયોને ગૌણ

क्रोधादिकषायविशिष्टः आत्मा कषायात्मा अक्षीणानुपशान्तकषायाणां जीवानाम्, योगाः-मनःप्रभृतिव्यापारा स्तत्प्रधानः आत्मा योगात्मा योगवतामेव जीवानाम्, उपयोगः-साकारानाकारभेदस्तत्प्रधानः आत्मा उपयोगात्मा सिद्धसंसारिस्वरूपः सर्वजीवानाम्, अथवा विवक्षितवस्तूपयोगापेक्षया उपयोगात्मा, ज्ञान-

---

यादिपर्यायें गौण कर दी जाती हैं तब वह शुद्ध द्रव्यरूप जो आत्मा रहता है वह द्रव्यात्मा है ऐसा द्रव्यात्मा सब जीवों को होता है जब यही आत्मा क्रोधादि कषायों से युक्त हो जाता है तब वह कषायात्मा कहा जाता है यह आत्मा-कषायात्मा-तब तक बना रहता है कि जब तक इसकी ये कषायें क्षीण या उपशान्त नहीं हो जाती हैं। अतः अक्षीणकषायों वालों का या अनुपशान्तकषायों वालों का आत्मा कषायात्मा है। मन वचन और काय इनके व्यापार का नाम योग है इस योगप्रधान जो आत्मा है वह योगात्मा है यह आत्मा योग वाले जीवों को होता है। साकार और अनाकार के भेद से उपयोग दो प्रकार का कहा गया है। इस उपयोगप्रधान जो आत्मा है वह उपयोगात्मा है। यह आत्मा सिद्ध एवं संसारी होता है और मुक्त और संसारी सब जीवों को होता है। अथवा-विवक्षित वस्तु के उपयोग से उपयुक्त जो आत्मा होता है-वह उपयोगात्मा है जिस आत्मा में दर्शनादि गुण गौण कर

કરી દેવામાં આવે છે, ત્યારે શુદ્ધ દ્રવ્ય રૂપ જે આત્મા રહે છે, તેનું નામ દ્રવ્યાત્મા છે. બધાં જીવોમાં આ પ્રકારનો દ્રવ્યાત્મા હોય છે જ્યારે એજ આત્મા ક્રોધાદિ કષાયોથી યુકત થઈ જાય છે, ત્યારે તેને કષાયાત્મા કહેવામાં આવે છે. જ્યાં સુધી તેના તે કષાયો ક્ષીણ અથવા ઉપશાન્ત થઈ જતાં નથી, ત્યાં સુધી તે આત્મા કષાયાત્મા રૂપે જ રહે છે, તેથી અક્ષીણ કષાયોવાળાના આત્માને અથવા અનુપશાન્ત કષાયોવાળાના આત્માને કષાયાત્મા કહે છે મન, વચન અને કાયાના વ્યાપાર (પ્રવૃત્તિ)નું નામ યોગ છે. આ યોગ પ્રધાન જે આત્મા છે તેને યોગાત્મા કહે છે. યોગવાળા જીવોનો આત્મા આ પ્રકારનો હોય છે ઉપયોગના બે પ્રકાર કહ્યા છે. (૧) સાકાર ઉપયોગ અને (૨) અનાકાર ઉપયોગ આ ઉપયોગપ્રધાન જે આત્મા હોય છે તેને ઉપયોગાત્મા કહે છે. આ આત્મા સિદ્ધ અને સંસારી રૂપ હોય છે, અને મુકત અને સંસારી સમસ્ત જીવોમાં ઉપયોગાત્માનો સદ્ભાવ રહે છે અથવા વિવક્ષિત વસ્તુના ઉપયોગથી ઉપયુકત જે આત્મા હોય છે, તેનું નામ ઉપયોગાત્મા છે. જે આત્મામાં દર્શનાદિ ગુણોને ગૌણ કરી નાખવામાં આવ્યા

विशेषितो गौणीकृतदर्शनादिरात्मा ज्ञानात्मा सम्यग्दृष्टीनाम्, एवंरीत्या दर्शनात्मादयोऽप्यवसेयाः विशेषस्तु दर्शनात्मा सर्वजीवानाम्, चारित्रात्मा विरतानाम्, वीर्यम्-उत्थानादि तत्स्वरूपात्मा वीर्यात्मा सर्वसंसारिणाम्, तथाचोक्तम्-

"जीवानां द्रव्यात्मा ज्ञेयः, सकषायिणां कषायात्मा ।
योगः सयोगिनां पुनरुपयोगः सर्वजीवानाम् ॥१॥
ज्ञानं सम्यग्दृष्टेर्दर्शनमथ भवति सर्वजीवानाम् ।
चारित्रं विरतानां तु सर्वसंसारिणां वीर्यम् ॥२॥इति॥

तदेवम् आत्मानमष्टधा प्ररूप्य यस्यात्मभेदस्य यदन्यदात्मभेदान्तरं युज्यते, न युज्यते च तस्य तत्प्ररूपयितुमाह-'जस्स णं भंते ! दवियाया तस्स कसायाया, जस्स

दिये गये हों, और ज्ञानगुण मुख्य कर दिया गया हो-ऐसी स्थिति से सम्पन्न जो आत्मा है वह ज्ञानात्मा है ऐसा आत्मा सम्यग्दृष्टि जीवों को होता है। इसी प्रकार से दर्शनात्मा आदि भी जानना चाहिये यह दर्शनात्मा सब जीवों में होता है। चरित्रात्मा विरतिसंपन्न जीवों का होता है उत्थानादि स्वरूप वाला जो आत्मा होता है वह वीर्यात्मा है। यह वीर्यात्मा समस्त संसारी जीवों को होता है। सो ही कहा है 'जीवानां' इत्यादि, 'ज्ञानं सम्यग्दृष्टेः' इत्यादि। इस प्रकार से आत्मा की अष्टविधता की प्ररूपणा करके अब सूत्रकार यह प्ररूपणा करते हैं कि किस आत्मभेद की किस आत्मभेद के साथ समव्याप्ति बनती है और किस की किसके साथ विषम व्याप्ति बनती है-इसी बात को गौतम ने प्रभु से इस प्रकार पूछा है-' जस्स णं भंते ! दवियाया-तस्स कसायाया,

હોય, અને જ્ઞાનગુણનું પ્રાધાન્ય હોય, એવી સ્થિતિથી સંપન્ન જે આત્મા હોય છે, તેને જ્ઞાનાત્મા કહે છે સમ્યગ્દૃષ્ટિ જીવોમાં જ્ઞાનાત્માનો સદ્ભાવ હોય છે. એજ પ્રમાણે દર્શનાત્માનું સ્વરૂપ પણ સમજવું સઘળા જીવોમાં આ દર્શનાત્માનો સદ્ભાવ હોય છે એજ પ્રમાણે ચારિત્રાત્માનું સ્વરૂપ પણ સમજવું વિરતિવાળા જીવોમાં ચારિત્રાત્માનો સદ્ભાવ હોય છે ઉત્થાન આદિ સ્વરૂપવાળો જે આત્મા હોય છે, તેને વીર્યાત્મા કહે છે સમસ્ત સંસારી જીવોમાં આ વીર્યાત્માનો સદ્ભાવ હોય છે એજ વાત "जीवानां" ઇત્યાદિ તથા "ज्ञानं सम्यग्दृष्टेः" ઈત્યાદિ સૂત્રપાઠ દ્વારા પ્રકટ કરવામાં આવી છે. આ પ્રકારે આત્માના આઠ પ્રકારોની પ્રરૂપણા કરીને હવે સૂત્રકાર એ વાતની પ્રરૂપણા કરે છે કે કયા આત્મભેદની કયા આત્મભેદની સાથે સમવ્યાપ્તિ સંભવી શકે છે, અને કયા આત્મભેદની કયા આત્મભેદની સાથે વિષમવ્યાપ્તિ સંભવે છે—

कसायाया तस्स दवियाया?' गौतमः पृच्छति-हे भदन्त! यस्य खलु जीवस्य द्रव्यात्मा-द्रव्यात्मत्वं भवति तस्य किं कषायात्मा-कषायात्मत्वं भवति? एवं यस्य जीवस्य कषायात्मत्वं भवति, तस्य किं द्रव्यात्मत्वं भवति? भगवानाह-'गोयमा! जस्स दवियाया तस्स कसायाया सिय अत्थि सिय नत्थि' हे गौतम! यस्य जीवस्य द्रव्यात्मत्वं भवति तस्य कषायात्मत्वं स्यात् अस्ति-कदाचिदस्ति सकषायावस्थायाम्, स्यान्नास्ति-कदाचिन्नास्ति क्षीणोपशान्तकषायावस्थायाम्, 'जस्स पुण जस्स कसायाया, तस्स दवियाया' हे भदन्त! जिस जीव के द्रव्यात्मा होता है-अर्थात् जिस जीव को आत्मा द्रव्यात्मारूप है-उसका वह आत्मा क्या कषायात्मारूप होता हैं? तात्पर्य-पूछने का यह है कि, जिस जीव में द्रव्यात्मा रहता है वहां क्या कषायात्मा होता है या नहीं होता है? अथवा-जहां कषायात्मा होता है, वहां द्रव्यात्मा होता है, या नहीं होता है? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-' गोयमा! जस्स दवियाया तस्स कसायाया सिय अत्थि सिय नत्थि' हे गौतम! जहां द्रव्यात्मा रहती है वहां कषायात्मता रहती ही हो ऐसा नियम नहीं है-कषायात्मता रहे भी और न भी रहे-द्रव्यात्मता के साथ इस प्रकार से कषायात्मता की भजना है भजना का कारण यह है कि-जीव जब क्षीण कषायावस्था वाला या उपशान्तकषायावस्था वाला होता है उस समय उसकी द्रव्यात्मता के साथ कषायात्मता का अवस्थान नहीं होता है, और जब यह कषायावस्थोपन्न होता है तब द्रव्यात्मता के साथ कषायात्मता

આ વિષયને અનુલક્ષીને ગૌતમસ્વામી મહાવીર પ્રભુને એવો પ્રશ્ન પૂછે છે કે-"जस्स णं भंते! दवियाया-तस्स कसायाया, जस्स कसायाया, तस्स दवियाया?" હે ભગવન્! જે જીવનો આત્મા દ્રવ્યાત્મા રૂપ હોય છે' તે જીવનો તે આત્મા કષાયાત્મા રૂપ હોય છે ખરો? આ પ્રશ્નનું તાત્પર્ય એ છે કે જે જીવમાં દ્રવ્યાત્મા હોય છે, ત્યાં શું કષાયાત્મા પણ હોય છે? અને જે જીવમાં કષાયાત્મા હોય છે, તે જીવમાં શું દ્રવ્યાત્મા પણ હોય છે ખરો?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-"गोयमा! जस्स दवियाया तस्स कसायाया सिय अत्थि, सिय नत्थि" હે ગૌતમ! જ્યાં દ્રવ્યાત્મતા રહેતો હોય, ત્યાં કષાયાત્મતા પણ રહેતો જ હોય છે, એવો નિયમ નથી કષાયાત્મતા રહે પણ ખરી અને ન પણ રહે આ પ્રકારે દ્રવ્યાત્મતાની સાથે કષાયાત્મતાની ભજના (સદ્ભાવ અથવા અભાવ રૂપ વિકલ્પ) સમજવી જ્યારે જીવ ક્ષીણ કષાયાવસ્થાવાળો અથવા ઉપશાન્ત કષાયાવસ્થાવાળો હોય છે, ત્યારે તેના દ્રવ્યા-

कसायाया तस्स दवियाया नियमं अत्थि' किन्तु यस्य पुनर्जीवस्य कषायात्मत्वं भवति, तस्य द्रव्यात्मत्वं नियमादस्ति, जीवत्वं विना कषायाणामभावात्। गौतमः पृच्छति-'जस्स णं भंते ! दवियाया तस्स जोगाया ?' हे भदन्त ! यस्य खलु जीवस्य द्रव्यात्मत्वं भवति, तस्य किं योगात्मत्वं भवति ? एवं यस्य योगात्मत्वं भवति तस्य किं द्रव्यात्मत्वं भवति ? भगवानाह-'एवं जहा दवियाया कसायाया भणिया तहा दवियाया जोगाया य भाणियव्वा' हे गौतम ! एवं-पूर्वोक्तरीत्या, यथा द्रव्यात्मनः कषायात्मना सम्बन्धो भणितस्तथा द्रव्यात्मना योगात्मना च सम्बन्धो भणितव्यः, तथा च यस्य द्रव्यात्मत्वं भवति, तस्य योगात्मत्वं स्यादस्ति योग-

---

का अवस्थान भी पाया जाता है, इस प्रकार भजना से द्रव्यात्मता के साथ कषायात्मता भी उद्भावित कर लेनी चाहिये परन्तु 'जस्स पुण कसायाया तस्स दवियाया नियमं अत्थि' जहां कषायात्मता होती है वहां नियम से द्रव्यात्मता रहती है। क्यों कि द्रव्यात्मता के विना-जीवत्व के विना-कषायों का सद्भाव नहीं होता है।

अब गौतम प्रभु से ऐसा पूछते हैं-'जस्स णं भंते ! दवियाया तस्स जोगाया' हे भदन्त ! जिसमें द्रव्यात्मता होती है-उसमें क्या योगात्मता होती है ? और जिसमें योगात्मता होती है वहां क्या द्रव्यात्मता होती है ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-'एवं जहा दवियाया कसायाया, भणिया, तहा दवियाया जोगाया य भाणियव्वा' हे गौतम ! जिस प्रकार द्रव्यात्मा का कषायात्मा के साथ संबंध कहा गया है, उसी प्रकार द्रव्यात्मा

त्मतानी साथे कषायात्मतानुं अवस्थान (विद्यमानता) होतुं नथी, परन्तु ज्यारे ते कषायावस्थावाळो होय छे; त्यारे द्रव्यात्मतानी साथे कषायात्मतानो पण सद्भाव रहे छे परन्तु "जस्स पुण कसायाया तस्स दवियाया नियमं अत्थि" ज्यां कषायात्मतानो सद्भाव होय छे, त्यां द्रव्यात्मतानो पण नियमथी ज सद्भाव रहे छे, कारण के द्रव्यात्मता विना-जीवत्व विना-कषायोनो सद्भाव होतो नथी.

गौतम स्वामीनो प्रश्न-"जस्सणं भंते ! दवियाया तस्स जोगाया ?" हे भगवन् ! जेमां द्रव्यात्मता होय छे, तेमां योगात्मतानो पण सद्भाव होय छे खरो ? अने जेमां योगात्मता होय छे, तेमां द्रव्यात्मता होय छे खरो ?

महावीर प्रभुनो उत्तर-"एवं जहा दवियाया कसायाया भणिया, तहा दवियाया जोगाया य भाणियव्वा" हे गौतम ! जे प्रकारे द्रव्यात्मतानो कषायात्मता साथेनो संबंध कह्यो, एज प्रकारनो द्रव्यात्मतानो योगात्मता

वतामिव, स्यान्नास्ति चायोगिसिद्धानामिव, किन्तु यस्य योगात्मत्वं भवति, तस्य द्रव्यात्मत्वं नियमादस्ति द्रव्यत्वं विना योगानामसंभवादिति भावः। गौतमः पृच्छति-'जस्स णं भंते ! दवियाया तस्स उवयोगाया, एवं सव्वत्थ पुच्छा भाणियव्वा' हे भदन्त ! यस्य खलु जीवस्य द्रव्यात्मत्वं भवति तस्य किम् उपयोगात्मत्वं भवति ? एवं रीत्या सर्वत्र-अष्टविधेष्वपि आत्मसु परस्परम् पृच्छा भणितव्या-प्रश्नः कर्तव्यः, तथाहि यस्य उपयोगात्मत्वं भवति तस्य किं द्रव्यात्मत्वं भवति ? इत्यादिरीत्या शेषं स्वयमुन्नेयम्, भगवानाह-'गोयमा ! जस्स दवियाया तस्स उवओगाया नियमं अत्थि, जस्स वि उवओगाया तस्स वि दवियाया नियमं

का योगात्मा के साथ संबंध समझना चाहिये तथा-जहां पर द्रव्यात्मता होती है वहां योगवालों की तरह योगात्मता होती भी है, और अयोगी सिद्धों की तरह योगात्मता नहीं भी होती है। किन्तु जहां पर योगात्मता होती है वहां नियम से द्रव्यात्मता होती है। क्योंकि द्रव्यत्व के विना योगों का सद्भाव नहीं होता है।

अब गौतम प्रभु से ऐसा पूछते हैं-' जस्स णं भंते ! दवियाया तस्स उवयोगाया, एवं सवत्थ पुच्छा भाणियव्वा ' हे भदन्त ! जिस जीव में द्रव्यात्मता होती है उसमें क्या उपयोगात्मता होती है? और जिसमें उपयोगात्मता होती है उसमें क्या द्रव्यात्मता होती है ? इसी प्रकार से पूर्वोक्त अष्टविध आत्माओं में परस्पर संबंध होने के विषय में प्रश्न करना चाहिये। इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-' गोयमा ' हे गौतम ! 'जस्स दवियाया तस्स उवयोगाया नियमं अत्थि, जस्स वि उवओगा-

---

સાથેનો સંબંધ પણ કહેવો જોઇએ એટલે કે જ્યાં દ્રવ્યાત્મતા હોય છે, ત્યા યોગવાળા જીવોની જેમ યોગાત્મતા હોય છે પણ ખરી અને અયોગી સિદ્ધોની જેમ યોગાત્મતાનો અભાવ પણ રહે છે. પરન્તુ જ્યાં યોગાત્મતાનો સદ્ભાવ હોય છે, ત્યાં દ્રવ્યાત્માતાનો તો અવશ્ય સદ્ભાવ રહે છે, કારણ કે દ્રવ્યત્વના વિના યોગોનો સદ્ભાવ હોતો નથી.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-" जस्स णं भंते ! दवियाया, तस्स उवयोगाया, एवं सव्वत्थ पुच्छा भाणियव्वा " હે ભગવન્ ! જે જીવમાં દ્રવ્યાત્મતા હોય છે, તે જીવમાં શું ઉપયોગાત્મતાનો સદ્ભાવ હોય છે ખરો ? એજ પ્રમાણે પૂર્વોક્ત આઠ પ્રકારના આત્માઓ ના પરસ્પર સંબંધ વિષયક પ્રશ્નો પણ પૂછવા જોઇએ.

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-' जस्स दवियाया, तस्स उवयोगाया नियमं अत्थि, जस्स उवयोगाया तस्स वि दवियाया नियमं अत्थि " હે ગૌતમ ! જે જીવમાં

अत्थि' हे गौतम ! यस्य जीवस्य द्रव्यात्मत्वं भवति, तस्य उपयोगात्मत्वं नियमादस्ति, यस्यापि उपयोगात्मत्वं भवति, तस्यापि द्रव्यात्मत्वं नियमादस्ति, एतयोः परस्परेणाविनाभावात् यथा सिद्धस्य, तदन्यस्य च द्रव्यात्मत्वमस्ति, उपयोगात्मत्वं चास्ति जीवानामुपयोगलक्षणत्वात्; 'जस्स दवियाया तस्स णाणाया भयणाए' यस्य द्रव्यात्मत्वं भवति, तस्य ज्ञानात्मत्वं भजनया भवति, यथा सम्यग्दृष्टीनां स्यादस्ति, मिथ्यादृष्टीनां स्यान्नास्ति इत्येवं रूपेण भजना बोध्या, 'जस्स पुण णाणाया तस्स दवियाया नियमं अत्थि' किन्तु यस्य पुनर्ज्ञानात्मत्वं भवति, तस्य द्रव्यात्मत्वं नियमादस्ति यथा सिद्धस्य, 'जस्स दवियाया तस्स

या तस्स वि दवियाया नियमं अत्थि' जिस जीव में द्रव्यात्मता होती है, उस जीव में उपयोगात्मता अवश्य होती है तथा जिस जीव में उपयोगात्मता होती है, उसमें द्रव्यात्मता भी नियम से होती है क्योंकि इन दोनों का परस्पर में अविनाभाव संबंध है। जैसा कि इन दोनों का अविनाभाव संबंध सिद्धों में है। इसी प्रकार का अविनाभाव संबंध इन दोनों का परस्पर में सिद्धों से अतिरिक्त जीवों में भी है क्यों कि जीव का स्वभाव उपयोग लक्षण वाला है 'जस्स दवियाया तस्स णाणाया, भयणाए' जिस जीव में द्रव्यात्मता है उस जीव में ज्ञानात्मता भजना से होती है जैसे द्रव्यात्मता सम्यग्दृष्टियों में होती है और ज्ञानात्मता भी होती है परन्तु मिथ्यादृष्टियों में ऐसा नहीं है वहां द्रव्यात्मता होने पर भी ज्ञानात्मता नहीं होती है 'जस्स पुण णाणाया, तस्स दवियाया नियमं अत्थि' परन्तु सिद्ध की तरह जिसमें ज्ञानात्मता है उसमें द्रव्या-

---

દ્રવ્યાત્મતા હોય છે, તે જીવમાં ઉપયોગાત્મતા પણ અવશ્ય હોય છે, તથા જે જીવમાં ઉપયોગાત્મતા હોય છે, તે જીવમાં દ્રવ્યાત્મતા પણ નિયમથી જ હોય છે, કારણ કે તે બન્નેનો આપસમાં અવિનાભાવ સંબંધ છે આ બન્નેનો જેવો અવિનાભાવ સંબંધ સિદ્ધોમાં છે, એજ પ્રકારનો આ બન્નેનો અવિનાભાવ સંબંધ સિદ્ધ સિવાયના જીવોમાં પણ હોય છે, કારણ કે જીવનો સ્વભાવ ઉપયોગ લક્ષણવાળો છે. "जस्स दवियाया तस्स णाणाया भयणाए" જે જીવમાં દ્રવ્યાત્મતા હોય છે, તે જીવમાં જ્ઞાનાત્મતા હોય છે પણ ખરી અને નથી પણ હોતી જેમ કે સમ્યગ્દૃષ્ટિ જીવોમાં દ્રવ્યાત્મતા પણ હોય છે અને જ્ઞાનાત્મતા પણ હોય છે, પરન્તુ મિથ્યાદૃષ્ટિઓમાં દ્રવ્યાત્મતા હોવા છતાં પણ જ્ઞાનાત્મતા હોતી નથી. "जस्स पुण णाणाया, तस्स दवियाया नियमं अत्थि" પરન્તુ સિદ્ધની જેમ જે જીવમાં જ્ઞાનાત્મતા હોય છે, તે જીવમાં

दंसणाया नियमं अत्थि, जस्स वि दंसणाया तस्स दवियाया नियमं अत्थि' यस्य द्रव्यात्मत्वं भवति, तस्य दर्शनात्मत्वं नियमादस्ति, यथा सिद्धस्य केवलदर्शनम् एवं यस्यापि दर्शनात्मत्वं भवति, तस्य द्रव्यात्मत्वं नियमादस्ति यथा चक्षुर्दर्शनादि दर्शनवतां द्रव्यात्मत्वम्, 'जस्स दवियाया तस्स चरित्ताया भयणाए, जस्स पुण चरित्ताया तस्स दवियाया नियमं अत्थि' यस्य द्रव्यात्मत्वं भवति तस्य चारित्रात्मत्वं भजनया भवति, यतः सिद्धस्य अविरतस्य वा द्रव्यात्मत्वे सत्यपि चारित्रात्मत्वं नास्ति, विरतानां चास्तीति भजना बोध्या। यस्य पुनश्चारित्रात्मत्वं भवति, तस्य द्रव्यात्मत्वं नियमादस्ति चारित्रवताम् आत्मत्वस्यावश्यंभावात्, 'एवं वीरियायाए

त्मता नियम से होती है -यहां भजना नहीं है 'जस्स दवियाया तस्स दंसणाया नियमं अत्थि, जस्स वि दंसणाया तस्स दवियाया नियमं अत्थि' जिस जीव में द्रव्यात्मता होती है, उसमें सिद्धों की तरह दर्शनात्मता भी नियम से होती है तथा जिसमें दर्शनात्मता होती है उसमें चक्षुर्दर्शनादि वालों की तरह द्रव्यात्मता भी नियम से होती है 'जस्स दवियाया तस्स चरित्ताया भयणाए, जस्स पुण चरित्ताया तस्स दवियाया नियमं अत्थि' जिस जीव में द्रव्यात्मता होती है, उस जीव में चारित्रात्मता भजना से होती है, क्योंकि सिद्ध के अथवा अविरत-सम्यग्दृष्टि जीव के द्रव्यात्मता होने पर भी चारित्रात्मता नहीं होती है। तथा विरतिसम्पन्न जीवों में यह पाई जाती है इसलिये द्रव्यात्मता के साथ चारित्रात्मता की भजना कही गई है। परन्तु जिसमें चरित्रात्मता होती है,

---

દ્રવ્યાત્મતા નિયમથી જ હોય છે. "जस्स दवियाया, तस्स दंसणाया नियमं अत्थि, जस्स वि दंसणाया, तस्स दवियाया नियमं अत्थि" જે જીવમાં દ્રવ્યાત્મતા હોય છે, તે જીવમાં સિદ્ધોની જેમ દર્શનાત્મતા પણ નિયમથી જ હોય છે અને જે જીવમાં દર્શનાત્મતા હોય છે, તે જીવમાં ચક્ષુર્દર્શનાદિવાળાઓની જેમ દ્રવ્યાત્મતા પણ નિયમથી જ હોય છે. "जस्स दवियाया, तस्स चरित्ताया भयणाए, जस्स पुण चरित्ताया, तस्स दवियाया नियमं अत्थि" જે જીવમાં દ્રવ્યાત્મતા હોય છે તે જીવમાં ચારિત્રાત્મતા હોય છે પણ ખરી અને નથી પણ હોતી જેમ કે સિદ્ધોમાં તથા અવિરત સમ્યગ્દૃષ્ટિ જીવોમાં દ્રવ્યાત્મતા હોવા છતાં ચારિત્રાત્મતા હોતી નથી પરન્તુ વિરતિસંપન્ન જીવોમાં દ્રવ્યાત્મતા અને ચારિત્રાત્મતાનો સદ્ભાવ રહે છે પરન્તુ જે જીવમાં ચારિત્રાત્મતાનો સદ્ભાવ હોય છે, તે જીવમાં દ્રવ્યાત્મતાનો પણ અવશ્ય સદ્ભાવ જ હોય છે, કારણ કે ચારિત્રવાળા જીવોમાં દ્રવ્યાત્મતા અવશ્ય હોય છે,

षायाणामकषायाणां च सद्भावात्, 'एवं उवयोगाएवि समं कसायाया नेयव्वा' एवं-पूर्वोक्तरीत्या, उपयोगात्मनापि समं कषायात्मा नेतव्यः-ज्ञातव्यः, तथा च यस्य कषायात्मत्वं भवति तस्योपयोगात्मत्वमवश्यं भवति, उपयोगरहितस्य कषायाणामभावात्, यस्य पुनरुपयोगात्मत्वे सत्यपि सकषायाणामेव कषायात्मत्वं भवति, कषायरहितानां तु केवलिनां कषायात्मत्वं न भवति इत्येवं भजना अवसेया 'कसायाया य णाणाया य परोप्परं दो वि भइयव्वाओ' कषायात्मा च ज्ञानात्मा च परस्परं द्वावपि भक्तव्यौ-भजनया प्रतिपत्तव्यौ, तथाहि यस्य कषायात्मत्वं

के गुणस्थानों में योगात्मता के साथ कषायात्मता भी है। इसी कारण योगात्मता के साथ कषायात्मता की भजना और कषायात्मता के साथ योगात्मता का नियम कहा गया है। 'एवं उवयोगाएवि समं कसायाया नेयव्वा" इसी प्रकार से उपयोगात्मा के साथ भी कषायात्मा नेतव्य है ऐसा जानना चाहिये जैसे जिस जीव में कषायात्मता होती है उस जीव में उपयोगात्मता अवश्य होती है, क्यों कि उपयोगरहित जीव में कषायों का सद्भाव नहीं होता है। परन्तु जिस जीव में उपयोगात्मता होती है उस जीव में कषायात्मता होती भी है और नहीं भी होती है। उपयोगात्मता के सद्भाव में कषाय सहित जीवों में ही कषायात्मता पाई जाती है परन्तु कषायरहित केवलियों में उपयोगात्मता के सद्भाव में भी कषायात्मता नहीं पाई जाती है इसीलिये यहां भजना प्रकट की गई है। 'कसायाया य णाणाया य परोप्परं दो वि भइयव्वाओ' कषायात्मता और ज्ञानात्मता ये दोनों भी आपस में भक्तव्य हैं। कहने

સદ્ભાવ હોતો નથી. દસમાં આદિ નીચેનાં ગુણસ્થાનોમાં યોગાત્મતાની સાથે કષાયાત્મતાનો પણ સદ્ભાવ હોય છે. એજ કારણે એવું કહેવામાં આવ્યું છે કે "જ્યાં યોગાત્મતા હોય, ત્યાં, કષાયાત્મતા તો નિયમથી જ હોય છે." "एवं उवयोगाए वि समं कसायाया नेयव्वा" એવો જ કષાયાત્મતા સાથે ઉપયોગાત્મતાનો પણ સંબંધ જાણવો એટલે કે જે જીવમાં કષાયાત્મતા હોય તે જીવમાં ઉપયોગાત્મતા અવશ્ય હોય છે, કારણ કે ઉપયોગરહિત જીવોમાં કષાયોનો સદ્ભાવ હોતો નથી પરન્તુ જે જીવમાં ઉપયોગાત્મતા હોય છે, તે જીવમાં કષાયાત્મતા હોય છે પણ ખરી અને નથી પણ હોતી ઉપયોગાત્મતાની સાથે સાથે સકષાયજીવોમાં કષાયાત્મતાનો પણ સદ્ભાવ રહે છે, પરન્તુ કષાયરહિત કેવલીઓમાં ઉપયોગાત્મતાનો સદ્ભાવ હોવા છતાં કષાયાત્મતાનો સદ્ભાવ હોતો નથી. "कसायाया य णाणाया य परोप्परं दो वि भइयव्वाओ"

भवति तस्य ज्ञानात्मत्वं स्यादस्ति, स्यान्नास्ति, यतः सकषायस्य सम्यग्दृष्टे र्ज्ञानात्मत्वमस्ति, मिथ्यादृष्टेस्तु कषायिणो ज्ञानात्मत्वं नास्ति, इत्येवं भजना भवति, तथा यस्य ज्ञानात्मत्वमस्ति तस्य कषायात्मत्वं स्यादस्ति स्यान्नास्ति, ज्ञानिनां सकषायत्वात्, अकषायत्वाच्च, इत्येवं भजना, 'जहा कसायाया य उवओगाया य तहा कसायाया य दंसणायाय', यथा कषायात्मा च उपयोगात्मा च परस्परं प्रतिपादितस्तथा कषायात्मा च दर्शनात्मा च प्रतिपत्तव्यः, तथा च यस्य कषायात्मत्वं भवति तस्य दर्शनात्मत्वं नियमादस्ति दर्शनरहितस्य घटपटादेः कषायात्मत्वाभावत्,

---

का तात्पर्य ऐसा है--कि "यत्र २ कषायात्मत्वं भवति तत्र तत्र ज्ञानात्मत्वं भवति" जिसमें कषायात्मता है वहां पर ज्ञानात्मता है--ऐसा नहीं बन सकता है, किन्तु वहां ज्ञानात्मता की भजना हो सकती है क्योंकि सकषाय मिथ्यादृष्टियों में ज्ञानात्मता नहीं होती है और सकषाय सम्यग्दृष्टि में ज्ञानात्मता होती है। इसलिये सकषायत्व के साथ ज्ञानात्मता की भजना कही गई है। इसी प्रकार से जिस आत्मा में ज्ञानात्मता होती है उस आत्मा में सकषायता होती है --ऐसा भी नियम नहीं बन सकता है क्योंकि ज्ञानी जो होते हैं वे सकषायी भी होते हैं और अकषायी भी होते हैं। 'जहा कसायाया य उवओगायाया य तहा कसायाया य दंसणायाया य' जिस प्रकार से कषायात्मा और उपयोगात्मा का परस्पर के सम्बन्ध में कहा गया है, उसी प्रकार से कषायात्मा और दर्शनात्मा के सम्बन्ध में भी कहना चाहिये। जैसे जिस जीव में कषायात्मता होती है उसमें दर्शनात्मता

જ્યાં કષાયાત્મતાનો સદ્ભાવ હોય છે, ત્યાં જ્ઞાનાત્મતાનો સદ્ભાવ હોય છે પણ ખરો અને નથી પણ હોતો, કારણ કે સકષાય મિથ્યાદૃષ્ટિ જીવોમાં જ્ઞાનાત્મતાનો સદ્ભાવ હોતો નથી અને સકષાય સમ્યગ્દૃષ્ટિ જીવોમાં જ્ઞાનાત્મતાનો સદ્ભાવ હોય છે. એજ પ્રમાણે જે આત્મામાં જ્ઞાનાત્મતા હોય છે, તે આત્મામાં કષાયાત્મતાનો સદ્ભાવ જ હોય, એવો નિયમ નથી, કારણ કે જેઓ જ્ઞાની હોય છે તેઓ કષાયયુક્ત પણ હોય છે અને કષાય રહિત પણ હોય છે, તેથી જે જીવમાં જ્ઞાનાત્મતા હોય, તે જીવમાં કષાયાત્મતા હોય પણ ખરી અને ન પણ હોય. "जहा कसायाया य उवओगाया, तहा कसायाया य दंसणायाया य" જે પ્રકારનો કષાયાત્મતા અને ઉપયોગાત્મતાનો પરસ્પરનો સંબંધ કહ્યો છે, એજ પ્રકારનો કષાયાત્મતા અને દર્શનાત્મતાનો પણ પરસ્પરનો સંબંધ કહેવો જોઈએ જેમ કે જે જીવમાં કષાયાત્મતા હોય

किन्तु यस्य पुनर्दर्शनात्मत्वं भवति तस्य कषायात्मत्वं स्यादस्ति, स्यान्नास्ति, दर्शनवतां सकषायसद्भावात्, तदसद्भावाच्च, इत्येवं पूर्वोक्तदृष्टान्तानुसारमवगन्तव्यम्, 'कसायाया य चरित्ताया य दोवि परोप्परं भइयव्वाओ' कषायात्मा च चरित्रात्मा च द्वावपि परस्परं भक्तव्यौ—भजनया प्रतिपत्तव्यौ, तथा च यस्य कषायात्मत्वं भवति, तस्य चारित्रात्मत्वं स्यादस्ति, स्यान्नास्ति प्रमत्तयतीनामिव सकषायाणां चारित्रस्य सद्भावात्, असंयतानामिव कषायिणां चारित्रा भावाच्च, तथा यस्य चारित्रात्मत्वं भवति तस्य कषायात्मत्वं स्यादस्ति, स्यान्नास्ति, सामायिकादि चारित्रवतां

नियम से होती है—क्योंकि दर्शनरहित घटपटादिकों में कषायात्मता का अभाव रहता है। किन्तु जहां दर्शनात्मता होती है वहां कषायात्मता की भजना होती है क्यों कि दर्शनात्मता वाले जीवों में सकषायता और अकषायता दोनों प्रकार की अवस्थाएँ पाई जाती हैं। इसमें सम्यग्दृष्टि और अकषायावस्था वालों का दृष्टान्त जानना चाहिये 'कसायाया य चरित्ताया य दो वि परोप्परं भइयव्वाओ' कषायात्मा और चारित्रात्मा ये दोनों भी परस्पर में भजनीय हैं—यथा—जिस जीव में कषायात्मता है उस जीव में चारित्रात्मता होती भी है और नहीं भी होती है कषायात्मता प्रमत्त यतियों में होती है और वहां चारित्रात्मा भी होती है। परन्तु असंयतों में कषायात्मता के सद्भाव में भी चारित्रात्मता का अभाव रहता है। तथा—जिस जीव में

છે, તે જીવમાં દર્શનાત્મતા નિયમથી જ હોય છે, કારણ કે દર્શનરહિત ઘટપટાદિકોમાં કષાયાત્મતાનો અભાવ રહે છે. પરન્તુ જે જીવમાં દર્શનાત્મતાનો સદ્ભાવ હોય છે, તે જીવમાં કષાયાત્મતાનો સદ્ભાવ હોય છે પણ અરે અને નથી પણ હોતો, કારણ કે દર્શનાત્મતાના સદ્ભાવવાળા જીવોમાં સકષાયતા અને અકષાયતા, આ બન્ને પ્રકારની અવસ્થાઓ સંભવી શકે છે. સમ્યગ્દૃષ્ટિ અને અકષાયાવસ્થા યુકત જીવોનું દૃષ્ટાન્ત અહીં ગ્રહણ થવું જોઇએ.

"कसायाया य चरित्ताया य दो वि परोप्परं भइयव्वाओ" કષાયાત્મતા અને ચારિત્રાત્મતાનો પરસ્પરની સાથે વિકલ્પે સંબંધ જાણવો એટલે કે જે જીવમાં કષાયાત્મતા હોય છે તે જીવમાં ચારિત્રાત્મતા હોય છે પણ ખરી અને નથી પણ હોતી જેમ કે પ્રમત્ત યતિઓમાં કષાયાત્મતા પણ હોય છે અને ચારિત્રાત્મતા પણ હોય છે પરંતુ અસંયત જીવોમાં કષાયાત્મતાનો સદ્ભાવ હોવા છતાં ચારિત્રાત્મતાનો સદ્ભાવ હોતો નથી તથા જે જીવમાં ચારિત્રાત્મતા હોય છે, તે જીવમાં કષાયાત્મતા હોય છે પણ ખરી અને નથી

सकषायाणां सद्भावात्, यथाख्यातचारित्रवतां च तदभावात्, 'जहा कसायाया य जोगाया य तहा कसाया य, वीरियाया य भाणियव्वाओ' यथा कषायात्मा च योगात्मा च पूर्वं प्रतिपादितस्तथा कषायात्मा च वीर्यात्मा च भणितव्यः, तथा च पूर्वोक्तरीत्यैव यस्य कषायात्मत्वं भवति, तस्य वीर्यात्मत्वं नियमादस्ति, कषायवतां वीर्यरहितत्वाभावात्, यस्य तु वीर्यात्मत्वं भवति तस्य कषायात्मत्वं भजनया भवति, यतो वीर्यवान् सकषायोऽपि स्यात् यथा संयतः, अकषायोऽपि स्यात् यथा केवली, अथ योगात्मनः अग्रेतनपञ्चभिः पदैः प्ररूपणीयत्वे प्राप्ते-

---

चारित्रात्मता होती है उसमें सकषायता होती भी है और नहीं भी होती है। जैसे चारित्रात्मता सामायिकादि चारित्र वाले व्यक्तियों में होती है और वहां सकषायात्मता भी होती है। परन्तु यह सकषायात्मता यथाख्यात चारित्रवाले साधुजनों में नहीं होती है। अतः चारित्रात्मता के साथ सकषायात्मता की भजना कही गई है। "जहा कसायाया य जोगाया य तहा कसाया य वीरियाया य भाणियव्वाओ' जिस प्रकार से कषायात्मता और योगात्मा के विषय में पहिले कहा जा चुका है उसी प्रकार से कषायात्मा और वीर्यात्मा के विषय में भी कहना चाहिये यथा-पूर्वोक्त रीति के अनुसार जिस आत्मा में कषायात्मता होती है उस आत्मा में वीर्यात्मता नियम से होती है, क्योंकि कषायवालों में वीर्यरहितता का अभाव होता है, परन्तु जिसमें वीर्यात्मता होती है, उसमें कषायात्मता होती भी है और नहीं भी होती है। जैसे कि वीर्यात्मता संयत में होती है और वहां सकषायता भी होती

પણ હોતી જેમ કે સામાયિક આદિ ચારિત્રસંપન્ન વ્યક્તિઓમાં ચારિત્રાત્મતા હોય છે, પણ ત્યાં સકષાયાત્મતા હોતી નથી પરન્તુ યથાખ્યાત ચારિત્રવાળા સાધુઓમાં કે સકષાયાત્મતાનો સદ્ભાવ હોતો નથી તે કારણે ચારિત્રાત્મતાની સાથે કષાયાત્મતાની ભજના (વૈકલ્પિક સદ્ભાવ) કહી છે. "जहा कसायाया य जोगाया य, तहा कसायाया य वीरियाया य भाणियव्वाओ" જે પ્રકારનો કષાયાત્મતા અને યોગાત્મતાનો પરસ્પરનો સંબંધ પહેલાં બતાવવામાં આવ્યો છે, એજ પ્રકારનો કષાયાત્મતા અને વીર્યાત્મતાનો પણ પરસ્પરનો સંબંધ કહેવો જોઈએ એટલે કે જે આત્મામાં કષાયાત્મતા હોય છે તે આત્મામાં વીર્યાત્મતા પણ અવશ્ય હોય છે, કારણ કે કષાયવાળા જીવોમાં વીર્યરહિતતાનો અભાવ હોય છે પરન્તુ જે જીવમાં વીર્યાત્મતા હોય છે, તે જીવમાં કષાયાત્મતા હોય છે પણ ખરી અને નથી પણ હોતી જેમ કે સંયતમાં વીર્યાત્મતા પણ હોય છે અને સકષાયતા પણ હોય છે પરન્તુ કેવલીમાં

लाघवार्थम् अतिदिशन्नाह-'एवं जहा कसायायाए वत्तव्वया भणिया तहा जोगायाए वि उवरिमाहिं समं भाणियव्वाओ' एवं-पूर्वोक्तरीत्या, यथा कषायात्मनो वक्तव्यता भणिता तथा योगात्मनोऽपि उपरितनैः समं भणितव्या वक्तव्या तथा च यस्य योगात्मत्वं भवति तस्य उपयोगात्मत्वं नियमतो भवति, यथा सयोगिनाम्, यस्य पुनरुपयोगात्मत्वं भवति तस्य योगात्मत्वं स्यादस्ति यथा सयोगिनाम्, स्यान्नास्ति यथा अयोगिनां सिद्धानां च, तथा यस्य योगात्मत्वं भवति तस्य ज्ञानात्मत्वं स्यादस्ति यथा सम्यग्दृष्टीनाम्, स्यान्नास्ति यथा मिथ्यादृष्टीनाम्, यस्य ज्ञानात्मत्वं भवति, तस्यापि योगात्मत्वं स्यादस्ति यथा सयोगिनाम्,

---

है और केवली में वीर्यात्मता के होने पर भी कषायात्मता नहीं होती है। 'एवं जहा कसायायाए वत्तव्वया भणिया, तहा जोगायाए वि उवरिमाहिं समं भाणियव्वाओ, पूर्वोक्त पद्धति के अनुसार जिस प्रकार से कषायात्मा की वक्तव्यता कही गई है, उसी प्रकार से योगात्मा की भी उपरितन पांच पदों के साथ वक्तव्यता कहनी चाहिये यथा-जिस में योगात्मा होती है, उसमें उपयोगात्मता नियम से होती है, जैसे सयोगियों में, परन्तु जिसमें उपयोगात्मता होती है उसमें योगात्मता होती भी है और नहीं भी होती है होती है, यह सयोगियों में, और नहीं होती है अयोगियों एवं सिद्धों में। इस प्रकार से जिसमें योगात्मता होती है उसमें ज्ञानात्मता होती भी है, और नहीं भी होती है। होती है यह सम्यग्दृष्टियों में और नहीं होती है, मिथ्यादृष्टियों में। इसी प्रकार से जिसमें ज्ञानात्मता होती है उसमें योगात्मता होती भी है और नहीं भी होती है। ज्ञानात्मता के साथ योगात्मता सयोगियों में होती है और

વીર્યાત્મતા હોવા છતાં પણ કષાયાત્મતા હોતી નથી. "एवं जहा कसायायाए वत्तव्वया भणिया, तहा जोगायाए वि उवरिमाहिं समं भाणियव्वाओ" જે પ્રકારે કષાયાત્મતાની પછીનાં છ પદોની સાથે વક્તવ્યતા કહેવામાં આવી છે. એજ પ્રકારે યોગાત્મતાની પણ પછીનાં પાંચ પદો સાથે વક્તવ્યતા કહેવી જોઇએ જેમ કે....જે જીવમાં યોગાત્મતા હોય છે, જીવમાં ઉપયોગાત્મતા નિયમથી જ હોય છે, દાખલા તરીકે સયોગીઓમાં પરન્તુ જે જીવોમાં ઉપયોગાત્મતા હોય છે, તે જીવોમાં યોગાત્મતા હોય છે પણ ખરી અને નથી પણ હોતી, દાખલા તરીકે સયોગીઓમાં હોય છે અને અયોગીઓ અને સિદ્ધોમાં હોતી નથી એજ પ્રમાણે જે જીવમાં યોગાત્મતા હોય છે, તે જીવમાં જ્ઞાનાત્મતા હોય છે પણ ખરી અને નથી પણ હોતી જેમ કે સમ્યગ્દૃષ્ટિઓમાં હોય છે,

स्यान्नास्ति यथा अयोगिनाम्, तथा यस्य योगात्मत्वं भवति तस्य दर्शनात्मत्वमस्त्येव यथा सयोगिनाम्, यस्य च दर्शनात्मत्वं भवति तस्य योगात्मत्वं स्यादस्ति यथा-सयोगिनाम्, स्यान्नास्ति यथा अयोगिनाम्, तथा यस्य योगात्मत्वं भवति, तस्य चारित्रात्मत्वं स्यादस्ति यथा विरतानाम्, स्यान्नास्ति यथा अविरतानाम्, यस्यापि चारित्रात्मत्वं भवति तस्यापि योगात्मत्वं स्यादस्ति यथा सयोगचारित्रिणाम्, स्यान्नास्ति यथा अयोगिनामिति, अथोपयोगात्मना सह अन्येषां चतुर्णां प्ररूपणार्थमतिदेशमाह-'जहा दवियाया वत्तव्वया भणिया तहा उवयोगायाए वि उवरिल्लाहिं समं भाणियव्वा' यथा द्रव्यात्मनो वक्तव्यता भणिता-पूर्वं प्रतिपादिता, तथा उपयोगात्मनोऽपि वक्तव्यता उपरितनैः-

ज्ञानात्मता के साथ योगात्मता अयोगियों में नहीं होती है। तथा जिस में योगात्मता होती है, उसमें चारित्रात्मता होती भी है और नहीं भी होती है। योगात्मता के साथ चारित्रात्मता होती है विरतों में, और योगात्मता के साथ चारित्रात्मता नहीं होती है अविरतों में। तथा जिसमें चारित्रात्मता होती है उसमें योगात्मता होती भी है और नहीं भी होती है-चारित्रात्मता के साथ योगात्मता होती है योगसहित चारित्र वालों में,-सयोगचारित्रवालों में और चारित्रात्मता के साथ योगात्मता नहीं होती है अयोगियों में 'जहा दवियाए वत्तव्वया भणिया, तहा उवओगायाए वि उवरिल्लाहिं समं भाणियव्वा' जिस प्रकार द्रव्यात्मा की वक्तव्यता पहिले कही जा चुकी है उसी प्रकार से उपयोगात्मता की भी

મિથ્યાદૃષ્ટિઓમાં નથી હોતી જે જીવમાં જ્ઞાનાત્મા હોય છે, તે જીવમાં યોગાત્મતા હોય છે પણ ખરી અને નથી પણ હોતી જેમ કે જ્ઞાનાત્મતાની સાથે યોગાત્મતાનો સદ્ભાવ સયોગીઓમાં હોય છે, અને જ્ઞાનાત્મતાની સાથે યોગાત્મતા અયોગીઓમાં હોતી નથી તથા-જે જીવમાં યોગાત્મતા હોય છે, તે જીવમાં ચારિત્રાત્મતા હોય છે પણ ખરી અને નથી પણ હોતી જેમ કે વિરતોમાં યોગાત્મતાની સાથે ચારિત્રાત્મતા હોય છે, અને અવિરતોમાં યોગાત્મતા સાથે ચારિત્રાત્મતા હોતી નથી તથા જે જીવમાં ચારિત્રાત્મતા હોય છે, તે જીવમાં યોગાત્મતા હોય છે પણ ખરી અને નથી પણ હોતી જેમ કે યોગસહિત ચારિત્રવાળાઓમાં ચારિત્રાત્મતાની સાથે યોગાત્મતાનો પણ સદ્ભાવ હોય છે. પરન્તુ અયોગીઓમાં ચારિત્રાત્મતાની સાથે યોગાત્મતા હોતી નથી "जहा दवियाए वत्तव्वया भणिया, तहा उवओगायाए वि उवरिल्लाहिं समं भाणियव्वा" જેવી રીતે દ્રવ્યાત્મતાનો બાકીનાં સાત પદો સાથેનો સંબંધ આગળ પ્રકટ કરવામાં આવ્યો છે, એજ પ્રકારનો ઉપયોગાત્મતાનો પછીનાં ચાર પદો

अग्रेतनैः ज्ञानदर्शनचारित्रवीर्यरूपैश्चतुर्भिः समं भणितव्या, तथा च यस्योपयोगात्मत्वं भवति तस्य ज्ञानात्मत्वं स्यादस्ति सम्यग्दृष्टीनामिव, स्यान्नास्ति मिथ्यादृष्टीनामिव, यस्य च ज्ञानात्मत्वं भवति तस्य नियमतः उपयोगात्मत्वं भवति यथा सिद्धानाम् १, एवं यस्योपयोगात्मत्वं भवति तस्य दर्शनात्मत्वमवश्यम् भवति, यस्यापि दर्शनात्मत्वं भवति तस्यापि उपयोगात्मत्वमवश्यं भवति सिद्धादीनामिव२, तथा यस्योपयोगात्मत्वं भवति तस्य चारित्रात्मत्वं स्यादस्ति यथा संयतानाम्, स्यान्नास्ति यथा असंयतानाम्, यस्य पुनश्चारित्रात्मत्वं भवति तस्य उपयोगात्मत्वमवश्यं भवति

वक्तव्यता ज्ञान, दर्शन, चारित्र और वीर्य इन आगे के चार पदों के साथ कहनी चाहिये। यथा-जिसमें उपयोगात्मता होती है, उसमें ज्ञानात्मता होती भी है और नहीं भी होती है—उपयोगात्मता के साथ ज्ञानात्मता होती है सम्यग्दृष्टियों में, और उपयोगात्मता के साथ ज्ञानात्मता नहीं होती है मिथ्यादृष्टियों में तथा जिनमें ज्ञानात्मता होती है उसमें नियमतः उपयोगात्मता होती है, जैसे सिद्धों में इसी प्रकार से जिस में उपयोगात्मता होती है, उसमें दर्शनात्मता अवश्य होती है, और जिस में दर्शनात्मता होती है उसमें उपयोगात्मता भी अवश्य होती है जैसे सिद्धों में तथा जिसमें उपयोगात्मता होती है उसमें चारित्रात्मता होती भी है और नहीं भी होती। होती है यह उसके साथ संयतो में, और नहीं होती है असंयतों में, तथा जिसमें चारित्रात्मता होती है उसमें उपयोगात्मता

(જ્ઞાનાત્મા, દર્શનાત્મા, ચારિત્રાત્મતા વીર્યાત્મતા સાથેનો સંબંધ કહેવો જોઇએ) જેમ કે જે જીવમાં ઉપયોગાત્મતા હોય છે. તે જીવમાં જ્ઞાનાત્મતા હોય છે, પણ ખરી અને નથી પણ હોતી દાખલા તરીકે સમ્યગ્દૃષ્ટિ જીવોમા ઉપયોગાત્મતાની સાથે જ્ઞાનાત્મતા હોય છે, પરન્તુ મિથ્યાદૃષ્ટિ જીવોમાં ઉપયોગાત્મતાની સાથે જ્ઞાનાત્મતા હોતી નથી તથા—જે જીવમાં જ્ઞાનાત્મતા હોય છે, તે જીવમાં ઉપયોગાત્મતા નિયમથી જ હોય છે, જેમ કે સિદ્ધોમાં એજ પ્રમાણે જે જીવમાં ઉપયોગાત્મતા હોય છે, તે જીવમાં દર્શનાત્મા નિયમથી જ હોય છે, તથા જે જીવમાં દર્શનાત્મતા હોય છે, તે જીવમાં ઉપયોગાત્મતા પણ અવશ્ય હોય છે દાખલા તરીકે સિદ્ધમાં બન્નેનો સદ્ભાવ રહે છે જે જીવમાં ઉપયોગાત્મતા હોય છે, તે જીવમાં ચારિત્રાત્મતા હોય છે પણ ખરી અને નથી પણ હોતી દાખલા તરીકે સંયતોમાં હોય છે અને અસંયતોમાં નથી હોતી પરન્તુ જે જીવમાં ચારિત્રાત્મતા હોય છે તે જીવમાં ઉપયોગાત્મતા

यथा संयतानाम् ३, तथा यस्योपयोगात्मत्वं तस्य वीर्यात्मत्वं स्यादस्ति यथा संसारिणाम्, स्यान्नास्ति यथा सिद्धानाम्, सक्रियवीर्यत्वाभावात्, यस्य पुनर्वीर्यात्मत्वं तस्योपयोगात्मत्वमवश्यमस्ति यथा संसारिणाम् ४, अथ ज्ञानात्मना सह अन्येषां त्रयाणां प्ररूपणमाह-'जस्स नाणाया तस्स दंसणाया नियमं अत्थि, जस्स पुण दंसणाया तस्स णाणाया भयणाए' यस्य ज्ञानात्मत्वं भवति तस्य दर्शनात्मत्वं नियमादस्ति यथा सम्यग्दृष्टिनाम्, यस्य पुनर्दर्शनात्मत्वं भवति तस्य ज्ञानात्मत्वं भजनया-स्यादस्ति यथा सम्यग्दृशां, स्यान्नास्ति यथा मिथ्यादृशाम् १, 'जस्स णाणाया तस्स चरित्ताया सिय अत्थि सिय नत्थि, जस्स पुण चारित्ताया तस्स णाणाया नियमं अत्थि' यस्य ज्ञानात्मत्वं भवति तस्य चारित्रात्मत्वं स्यादस्ति

अवश्य होती है जैसे संयतों में तथा जिसमें उपयोगात्मता होती है; उसमें वीर्यात्मता होती भी है और नहीं भी होती है-होती है यह संसारी जीवों में, और नहीं होती है सिद्धों में क्योंकि उनमें सक्रियवीर्यत्व का अभाव है। जिसमें वीर्यात्मता होती है, उसमें उपयोगात्मता अवश्य होती है, जैसे संसारी जीवों में। 'जस्स णाणाया, तस्स दंसणाया नियमं अत्थि, जस्स पुण दंसणाया तस्स णाणाया भयणाए' जिस जीव में ज्ञानात्मा होती है उसमें दर्शनात्मा नियम से होती है जैसे सम्यग्दृष्टियों में परन्तु जिसमें दर्शनात्मा होती है उसमें ज्ञानात्मा होती भी है और नहीं भी होती है। होती है यह सम्यग्दृष्टियों में और नहीं होती है मिथ्यादृष्टियों में 'जस्स णाणाया तस्स चरित्ताया सिय अत्थि सिय नत्थि, जस्स पुण चरित्ताया तस्स णाणाया नियमं अत्थि

અવશ્ય હોય છે દાખલા તરીકે સંયતોમાં ચારિત્રાત્મતા અને ઉપયોગાત્મતા, બન્નેનો સદ્ભાવ હોય છે જે જીવમાં ઉપયોગાત્મતા હોય છે તે જીવમાં વીર્યાત્મતા હોય છે પણ ખરી અને નથી પણ હોતી જેમ કે સંસારી જીવોમાં હોય છે અને સિદ્ધોમાં હોતી નથી, કારણ કે તેમનામાં સક્રિય વીર્યત્વનો અભાવ છે જે જીવમાં વીર્યાત્મતા હોય છે, તે જીવમાં ઉપયોગાત્મતા અવશ્ય હોય છે જેમ કે સંસારી જીવોમાં વીર્યાત્મતા અને ઉપયોગાત્મતા બન્ને હોય છે. "जस्स णाणाया, तस्स दंसणाया नियमं अत्थि, जस्स पुण दंसणाया तस्स णाणाया भयणाए" જે જીવમાં જ્ઞાનાત્મતા હોય છે, તે જીવમાં દર્શનાત્મતા અવશ્ય હોય છે જેમ કે સમ્યગ્દૃષ્ટિઓમાં પરન્તુ જે જીવમાં દર્શનાત્મતા હોય છે, તે જીવમાં જ્ઞાનાત્મતા હોય છે પણ ખરી અને નથી પણ હોતી જેમ કે સમ્યગ્દૃષ્ટિઓમાં હોય છે અને મિથ્યાદૃષ્ટિઓમાં નથી હોતી. "जस्स णाणाया तस्स चरित्ताया सिय अत्थि, सिय नत्थि, जस्स पुण चरित्ताया तस्स णाणाया

यथा संयतानाम्, स्यान्नास्ति यथा असंयतानाम्, यस्य पुनश्चारित्रात्मत्वं भवति तस्य ज्ञानात्मत्वं नियमादस्ति ज्ञानमन्तरा चारित्रासंभवात् २, 'णाणाया वीरियाया दोवि परोप्परं भयणाए' ज्ञानात्मा वीर्यात्मा द्वावपि परस्परम्-अन्योन्यं भजनया भवतः, तथा च यस्य ज्ञानात्मत्वं भवति तस्य वीर्यात्मत्वं स्यादस्ति यथा केवलयादीनाम्, स्यान्नास्ति यथा सिद्धानाम्, यस्यापि वीर्यात्मत्वं भवति तस्यापि ज्ञानात्मत्वं स्यादस्ति यथा सम्यग्दृष्टीनाम्, स्यान्नास्ति यथा मिथ्यादृष्टीनाम् ३,

जिस जीव में ज्ञानात्मा होती है उसमें चारित्रात्मा की भजना होती है, परन्तु जिस जीव में चारित्रात्मा का सद्भाव होता है उसमें ज्ञानात्मा का सद्भाव अवश्यं भावी होता है भजना वहां इस की नहीं होती है ज्ञानात्मा के साथ चारित्रात्मा की भजना इस कारण से कही गई है कि यह संयतो में होती है और जो असंयत जन है उनमें नहीं होती है। तथा चारित्रात्मा के साथ ज्ञानात्मा का नियम इसलिये कहा गया है कि ज्ञान के विना चारित्र होता नहीं है। 'णाणायावीरियाया दो वि परोप्परं भयणाए' ज्ञानात्मा और वीर्यात्मा ये दोनों भी आपस में भजना से होते हैं-अर्थात् जिसमें ज्ञानात्मा होती है-उसमें वीर्यात्मता होती भी है और नहीं भी होती है। होती है यह ज्ञानात्मता के साथ केवलियों में और नहीं होती है सिद्धों में। तथा जिसमें वीर्यात्मा होती है उसमें ज्ञानात्मता होती भी है-और नहीं भी होती है। सम्यग्दृष्टियों में वीर्यात्मता भी है और ज्ञानात्मता भी है मिथ्यादृष्टियों

नियमं अत्थि" 'જે જીવમાં જ્ઞાનાત્મતા હોય છે, તે જીવમાં ચારિત્રાત્મતા હોય છે પણ ખરી અને નથી પણ હોતી દાખલા તરીકે સંયતોમાં જ્ઞાનાત્મતા સાથે ચારિત્રાત્મતા પણ હોય છે, અસંયોતોમાં જ્ઞાનાત્મતા હોય છે, પણ ચારિત્રાત્મતા હોતી નથી જે જીવમાં ચારિત્રાત્મતા હોય છે, તે જીવમાં જ્ઞાનાત્મતાનો અવશ્ય સદ્ભાવ હોય છે, કારણ કે જ્ઞાન વિના ચારિત્ર સંભવતું જ નથી. "णाणायावीरियाया दो वि परोप्परं भयणाए" જે જીવમાં જ્ઞાનાત્મતા હોય છે, તે જીવમાં વીર્યાત્મતા હોય છે પણ ખરી અને નથી પણ હોતી કેવલીઓમાં જ્ઞાનાત્મતાની સાથે વીર્યાત્મતા હોય છે પણ સિદ્ધોમાં જ્ઞાનાત્મતાની સાથે વીર્યાત્મતા હોતી નથી તથા-જે જીવમાં વીર્યાત્મતા હોય છે, તે જીવમાં જ્ઞાનાત્મતા હોય છે પણ ખરી અને નથી પણ હોતી સમ્યગ્દૃષ્ટિઓમાં વીર્યાત્મતા પણ હોય છે અને જ્ઞાનાત્મતા પણ હોય છે, પરન્તુ મિથ્યાદૃષ્ટિઓમાં વીર્યાત્મતા હોય છે, પણ જ્ઞાનાત્મતા હોતો નથી.

अथ दर्शनात्मना सह द्वयोः प्ररूपणं करोति–'जस्स दंसणाया तस्स उवरिमाओ दोवि भयणाए, जस्स पुण ताओ तस्स दंसणाया नियमं अत्थि' यस्य दर्शनात्मत्वं भवति तस्य उपरितनौ अग्रिमौ चारित्रवीर्यरूपौ द्वावपि भजनया भवतः, यस्य पुनस्तौ–उपरितनौ द्वौ आत्मानौ भवत स्तस्य दर्शनात्मत्वं नियमादस्ति तथाहि यस्य दर्शनात्मत्वं भवति तस्य चारित्रात्मत्वं स्यादस्ति यथा संयतानाम्, स्यान्नास्ति यथा असंयतानाम्, यस्य तु चारित्रात्मत्वं भवति तस्य दर्शनात्मत्वं भवत्येव यथा साधूनाम्, एवं यस्य दर्शनात्मत्वं भवति तस्य वीर्यात्मत्वं स्यादस्ति यथा संसारिणाम्, स्यान्नास्ति यथा–सिद्धानाम्, यस्य च वीर्यात्मत्वं भवति तस्य

में वीर्यात्मता के सद्भाव में भी ज्ञानात्मता नहीं हैं। (जस्स दंसणाया तस्स उवरिमाओ दोवि भयणाए, जस्स पुण ताओ तस्स दंसणाया नियमं अत्थि' जिसमें दर्शनात्मता होती है, उसमें चारित्र और वीर्य ये दोनों भजना से होते हैं तथा जिस आत्मा में चारित्र और वीर्य ये दो आत्माएँ होती हैं उसमें दर्शनात्मता नियम से होती है, तथा जिसमें दर्शनात्मता होती है उसको चारित्रात्मता होती ही है ऐसा नियम नहीं है किन्तु इसकी वहां भजना है यह वहां होती भी है और नहीं भी होती। दर्शन के साथ चारित्रात्मता संयतो में होती है और असंयतो में यह नहीं होती है। परन्तु जिस आत्मा में चारित्रात्मता होती है उस आत्मा में दर्शनात्मता अवश्य ही होती है, जैसे अनगारों में इसी प्रकार से जिस आत्मा में दर्शनात्मता होती है उस आत्मा में वीर्यात्मता होती भी है और नहीं भी होती है–होती है यह दर्शनात्मा के साथ संसारी जीवों में और नहीं होती है सिद्धों में, तथा जीसमें वीर्यात्मता होती है उसमें

"जस्स दंसणाया तस्स उवरिमाओ दो वि भयणाए, जस्स पुण ताओ तस्स दसणाया नियमं अत्थि" જે જીવમાં દર્શનાત્મતા હોય છે તે જીવમાં ચારિત્રાત્મતા અને વીર્યાત્મતાનો વૈકલ્પિક રીતે સદ્ભાવ હોય છે, પરન્તુ જેમાં ચારિત્રાત્મતા અને વીર્યાત્મતા હોય છે, તે જીવમાં દર્શનાત્મતા અવશ્ય હોય છે એટલે કે....જે જીવમાં દર્શનાત્મતા હોય છે, તે જીવમાં ચારિત્રાત્મતા હોય છે પણ ખરી અને નથી પણ હોતી સંયતોમાં દર્શનની સાથે ચારિત્રનો સદ્ભાવ રહે છે, અસંયતોમાં દર્શનાત્મતા હોય છે પણ ચારિત્રાત્મતા હોતી નથી પરન્તુ જે જીવમાં ચારિત્રાત્મતા હોય છે, તે જીવમાં દર્શનાત્મતા અવશ્ય હોય છે. દાખલા તરીકે અણગારોમાં બન્નેનો સદ્ભાવ હોય છે જે આત્મામાં દર્શનાત્મતા હોય છે, તે આત્મામાં વીર્યાત્મતા હોય છે પણ ખરી અને નથી પણ હોતી જેમ કે સંસારી જીવોમાં દર્શનાત્મતા સાથે વીર્યાત્મતા પણ હોય છે સિદ્ધોમાં દર્શનાત્મતા સાથે વીર્યાત્મતાનો સદ્ભાવ હોતો નથી પરન્તુ જે

दर्शनात्मत्वमवश्यं भवति यथा संसारिणाम्। अथान्तिमपदद्वयोः प्ररूपणमाह-'जस्स चरित्ताया तस्स वीरियाया नियमं अत्थि, जस्स पुण वीरियाया तस्स चरित्ताया सिय अत्थि सिय नत्थि' यस्य चारित्रात्मत्वं भवति, तस्य वीर्यात्मत्वं नियमादस्ति वीर्यमन्तरा चारित्रस्यासंभवात्, यस्य पुनर्वीर्यात्मत्वं भवति तस्य चारित्रात्मत्वं स्यादस्ति यथा साधूनाम्, स्यान्नास्ति यथा असंयतानाम्। अथैषामेव आत्मनामल्पबहुत्ववक्तव्यतामाह-'एयासिणं भंते ! दवियायाणं कसायायाणं जाव वीरियायाणय कयरे कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया वा ?' गौतमः पृच्छति-हे भदन्त! एतेषां खलु पूर्वोक्तानां द्रव्यात्मनां, कषायात्मनां यावत्-योगात्म-

---

दर्शनात्मता अवश्य होती है, जैसे संसारी जीवो में 'जस्स चरित्ताया तस्स वीरियाया नियमं अत्थि, जस्स पुण वीरियाया तस्स चरित्ताया सिय अत्थि सिय नत्थि' तथा जिस आत्मा में चारित्रात्मता होती है, उस आत्मा में वीर्यात्मता अवश्य होती है क्योंकि वीर्य के विना चारित्र की असंभवता है। तथा जिस आत्मा में वीर्यात्मता होती है, उस में चारित्रात्मता होती भी है और नहीं भी होती है। वीर्यात्मता के साथ चारित्रात्मता अनगारों में तो होती है, परन्तु असंयतों में नहीं होती है।

अब सूत्रकार इनके अल्पबहुत्व की प्ररूपणा करने के निमित्त कथन करते हैं-'एयासि णं भंते ! दविधायाणं कसायायाणं जाव वीरियायाण य कयरे कयरे हिंतो जाव विसेसाहिया वा' इसमें गौतम ने प्रभु से ऐसा पूछा है-हे भदन्त ! इन पूर्वोक्त द्रव्यात्माओं के, कषायात्माओं के यावत्-

---

જીવમાં વીર્યાત્મતા હોય છે, તે જીવમાં દર્શનાત્મતાનો અવશ્ય સદ્ભાવ હોય છે જેમ કે સંસારી જીવોમાં.

"जस्स चरित्ताया, तस्स वीरियाया नियमं अत्थि, जस्स पुण विरियाया तस्स चरित्ताया सिय अत्थि, सिय नत्थि" જે આત્મામાં ચારિત્રાત્મતા હોય છે, તે આત્મામાં વીર્યાત્મતા અવશ્ય હોય છે, કારણ કે વીર્ય વિના ચારિત્રની અસંભાવના હોય છે પરન્તુ જે આત્મામાં વીર્યાત્મતા હોય છે, તે આત્મામાં ચારિત્રાત્મતા હોય છે પણ ખરી અને નથી પણ હોતી દાખલા તરીકે અણગારોમાં વીર્યાત્મતાની સાથે ચારિત્રાત્મતા હોય છે, પરન્તુ અસંયતોમાં વીર્યાત્મતા હોવા છતાં ચારિત્રાત્મતા હોતી નથી.

હવે સૂત્રકાર આ આઠે પ્રકારના આત્માના અલ્પબહુત્વની પ્રરૂપણા કરે છે-

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-"एयासिणं भंते ! दवियायाणं कसायायाणं जाव वीरियायाण य कयरे कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ?" હે ભગવન્ ! પૂર્વોક્ત

-नाम्, उपयोगात्मनाम्, ज्ञानात्मनाम्, दर्शनात्मनाम्, चारित्रात्मनाम्, वीर्यात्मनां च मध्ये कतरे आत्मानः कतरेभ्य आत्मभ्यो यावत्-अल्पा वा, बहुका वा, तुल्या वा, विशेषाधिका वा भवन्ति ? भगवानाह-'गोयमा ! सव्वत्थोवाओ चरित्तायाओ, नाणायाओ अणंतगुणाओ, कसायाओ अणंतगुणाओ, जोगायाओ विसेसाहियाओ, वीरियायाओ विसेसाहियाओ, उवयोगदवियदंसणायाओ तिन्नि वि तुल्लाओ विसेसाहियाओ' हे गौतम ! सर्वस्तोकाः सर्वेभ्य आत्मभ्यः अल्पाश्चारित्रात्मानो भवन्ति, चारित्रात्मनां संख्यातत्वात्, तदपेक्षया ज्ञानात्मनः अनन्तगुणा भवन्ति, सिद्धादीनां सम्यग्दृशां चारित्रेभ्योऽनन्तगुणत्वात्, तदपेक्षया कषायात्मानः अनन्तगुणा भवन्ति, सिद्धेभ्यः कषायोदयवतामनन्तगुणत्वात्,

योगात्माओं के, उपयोगात्माओं के, ज्ञानात्माओं के, दर्शनात्माओं के चारित्रात्माओं के और वीर्यात्माओं के बीच में कौन आत्माएँ किन आत्माओं से यावत्-अल्प हैं ? बहुत है ? अथवा तुल्य हैं ? अथवा विशेषाधिक हैं ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-'गोयमा' हे गौतम ! 'सव्वत्थोवाओ चरित्तायाओ नाणायाओ अणंतगुणाओ कसायाओ, अणंतगुणाओ जोगायाओ विसेसाहियाओ, वीरियायाओ विसेसाहियाओ, उवयोगदवियदंसणायाओ तिन्नि वि तुल्लाओ विसेसाहियाओ' सब से कम चारित्रात्माएँ हैं क्योंकि चारित्रात्माएँ संख्यात हैं इनकी अपेक्षा ज्ञानात्माएँ अनन्तगुणित हैं, क्योंकि सिद्ध एवं सम्यग्दृष्टि आत्माएँ चारित्रवालों की अपेक्षा अनन्त गुणित हैं। इनकी अपेक्षा कषायात्माएँ अनन्तगुणित होती हैं। क्योंकि कषायोदय वाले जीव सिद्धों की

દ્રવ્યાત્માઓ, કષાયાત્માઓ, યોગાત્માઓ, ઉપયોગાત્માઓ, જ્ઞાનાત્માઓ, દર્શનાત્માઓ, ચારિત્રાત્માઓ અને વીર્યાત્માઓમાં કયા આત્માઓ કયા આત્માઓ કરતાં ઓછાં છે ? કયા વધારે છે ? કયા આત્માઓ તુલ્ય છે અને કયા આત્માઓ કયા આત્માઓ કરતાં વિશેષાધિક છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-" सव्वत्थोवाओ चरित्तायाओ, णाणायाओ अणंतगुणाओ, कसायायाओ अणंतगुणाओ, जोगायाओ विसेसाहियाओ, वीरियायाओ विसेसाहियाओ, उवयोगदवियदंसणायाओ तिन्नि वि तुल्लाओ विसेसाहियाओ " ચારિત્રાત્માઓ સૌથી ઓછાં છે, કારણ કે ચારિત્રાત્માઓ સંખ્યાત છે. ચારિત્રાત્માઓ કરતાં જ્ઞાનાત્માઓ અનંત ગણાં છે, કારણ કે સિદ્ધ અને સમ્યગ્દૃષ્ટિ આત્માઓ ચારિત્રવાળાઓ કરતાં અનંત ગણાં છે જ્ઞાનાત્માઓ કરતાં કષાયાત્માઓ અનંત ગણાં છે, કારણ કે કષાયોદયવાળાં જીવો

योगात्मानस्तु विशेषाधिकाः गतकषायाद्यैर्योगवद्भिरधिका भवन्तीत्यर्थः, वीर्यात्मनो विशेषाधिका अयोगिभिरधिका भवन्तीत्यर्थः अयोगिनां वीर्यत्वात्, किन्तु उपयोगद्रव्यदर्शनात्मानस्त्रयोऽपि परस्परापेक्षया तुल्या भवन्ति सर्वेषां सामान्यात्मरूपत्वात्, वीर्यात्मापेक्षया तु उपयोग द्रव्यदर्शनात्मानो विशेषाधिका भवन्ति, वीर्यात्मनां सिद्धानां च मिलितानामुपयोगाद्यात्मरूपत्वात्, तेषां च वीर्यात्मभ्यः सिद्धराशिनाऽधिकत्वात्, तथा चोक्तम्—

"कोडीसहस्सपुहुत्तं जईण तो थोविया भो चरणाया।
णाणायाऽणंतगुणा, पडुच्च सिद्धे य सिद्धाओ ॥१॥
होन्ति कसायायाओऽणंतगुणा जेण ते सरागाणं।
जोगाया भणियाओ, अयोगिवज्जाण तो अहिया ॥२॥
जे सेलेसिगयाण वि लद्धी वीरियं तओ समहियाओ।
उवयोगदवियदंसणसव्वजियाणं ततो अहिया ॥३॥इति॥

छाया—कोटीसहस्रपृथक्त्वम् यतिनस्ततः स्तोकाश्चरणात्मानः।
ज्ञानात्मानोऽनन्तगुणाः प्रतीत्य सिद्धं च सिद्धाः ॥१॥

अपेक्षा अनन्तगुणित कहे गये हैं। इनकी अपेक्षा योगात्माएँ कषाय-रहित योगवालों से-विशेषाधिक हैं। अयोगियों की अपेक्षा-योगरहित जीवों कीअपेक्षा-वीर्यात्माएँ विशेषाधिक हैं। क्योंकि अयोगी वीर्यवान् होते हैं। किन्तु उपयोग, द्रव्य, एवं दर्शन ये तीनों भी आत्माएँ परस्पर कि अपेक्षा से तुल्य हैं। क्योंकि इन सब में सामान्यरूप से आत्मरूपता हैं। परन्तु वीर्यात्मा की अपेक्षा उपयोगात्मा द्रव्यात्मा और दर्शनात्मा ये विशेषाधिक है यद्यपि वीर्यात्माओं में एवं सिद्धात्माओ में उपयोगादिरूप आत्मरूपता होती हैं। परन्तु उपयोगादि आत्मरूपता वालों में वीर्यात्माओं की अपेक्षा सिद्धराशि को लेकर अधिकता कही गई है।

સિદ્ધો કરતાં અનંત ગણું કહ્યા છે. કષાયાત્માઓ કરતાં યોગાત્માઓ વિશેષાધિક છે અયોગીઓની અપેક્ષાએ–યોગરહિત જીવોની અપેક્ષાએ વીર્યાત્માઓ વિશેષાધિક છે, કારણ કે અયોગી વીર્યવાન્ હોય છે ઉપયોગાત્માઓ, દ્રવ્યાત્માઓ અને દર્શનાત્માઓની સંખ્યા એક સરખી હોય છે, કારણ કે આ ત્રણેમાં સામાન્ય રૂપે આત્મરૂપતા છે. પરન્તુ વીર્યાત્મા કરતાં ઉપયોગાત્માઓ, દ્રવ્યાત્માઓ અને દર્શનાત્માઓ વિશેષાધિક હોય છે જો કે વીર્યાત્માઓમાં અને સિદ્ધાત્માઓમાં ઉપયોગાદિરૂપ આત્મરૂપતા હોય છે, પરન્તુ ઉપયોગાદિ આત્મરૂપતાવાળા વીર્યાત્માઓની અપેક્ષાએ જે અધિકતા દર્શાવી છે તે સિદ્ધરાશિની અપેક્ષાએ કહી છે. એજ વાત નીચેના સૂત્રપાઠમાં વ્યક્ત થઈ

भवन्ति कषायात्मानोऽनन्तगुणा येन ते सरागाणाम् ।
योगात्मानो भणिता अयोगि वर्जास्ततोऽधिकाः ॥२॥
ये शैलेशीगतानामपि लब्धवीर्या स्ततः समधिकाः ।
उपयोगद्रव्यदर्शनात्मानः सर्वजीवानां ततोऽधिकाः॥३॥सू० १॥

आत्मस्वरूपवक्तव्यता ।

मूलम्–"आया भंते! नाणे अन्नाणे? गोयमा! आया सिय नाणे सिय अण्णाणे, णाणे पुण नियमं आया। आया भंते! नेरइयाणं नाणे अन्ने नेरइयाणं नाणे? गोयमा! आया नेरइयाणं सिय नाणे सिय अन्नाणे, नाणे पुण से नियमं आया, एवं जाव थणियकुमाराणं। आया भंते! पुढविकाइयाणं अन्नाणे, अन्ने पुढविकाइयाणं अन्नाणे? गोयमा! आया पुढविकाइयाणं नियमं अण्णाणे, अण्णाणे वि नियमं आया, एवं जाव वणस्सइकाइयाणं, बेइंदियतेइंदिय जाव वेमाणियाणं जहा नेरइयाणं। आया भंते! दंसणे, अन्ने दंसणे? गोयमा! आया नियमं दंसणे, दंसणेऽवि नियमं आया। आया भंते! नेरइयाणं दंसणे, अन्ने नेरइयाणं दंसणे? गोयमा! आया नेरइयाणं नियमा दंसणे, दंसणे वि से नियमं आया, एवं जाव वेमाणिया णं निरंतरं दंडओ ॥सू० २॥

छाया—आत्मा भदन्त! ज्ञानम्, अज्ञानम्? गौतम! आत्मा स्यात् ज्ञानं, स्यात् अज्ञानम्, ज्ञानं पुनर्नियमात् आत्मा, आत्मा भदन्त! नैरयिकाणां ज्ञानम्, अन्यद् नैरयिकाणां ज्ञानम्, गौतम! आत्मा नैरयिकाणां स्याद् ज्ञानम्, स्याद्

सो ही कहा है–'कोडी सहस्सपुहुत्तं' इत्यदि, तथा 'होंति कसायाओ' इत्यादि, 'जे सेलेसगयाण वि' इत्यादि ॥सू० १॥

---

७. "कोडी सहस्सपुहुत्तं" ઇત્યાદિ તથા "होंति कसायाओ" ઇત્યાદિ "जे सेलेसगयाण वि" ઇત્યાદિ. ॥सू० १॥

अज्ञानम्, ज्ञानं पुनस्तत् नियमादात्मा, एवं यावत् स्तनितकुमाराणाम्, आत्मा भदन्त ! पृथिवीकायिकाणाम् अज्ञानम्, अन्यत् पृथिवीकायिकाणाम् अज्ञानम् ? गौतम ! आत्मा पृथिवीकायिकानां नियमाद् अज्ञानम्, अज्ञानमपि नियमाद् आत्मा, एवं यावत् वनस्पतिकायिकानाम्, द्वीन्द्रियत्रीन्द्रिय यावत् वैमानिकानां यथा नैरयिकाणाम्, आत्मा भदन्त ! दर्शनम्, अन्यद् दर्शनम्, गौतम ! आत्मा-नियमात् दर्शनं दर्शनमपि नियमादा-मा, आत्मा भदन्त ! नैरयिकाणां दर्शनम्, अन्यद् नैरयिकाणां दर्शनम् ? गौतम ! आत्मा नैरयिकाणां नियमाद् दर्शनम्, दर्शनमपि तत् नियमादात्मा, एवं यावद् वैमानिकानां निरन्तरं दण्डकः ॥सू० २॥

टीका—अथ आत्मन एव स्वरूपं प्ररूपयितुमाह—'आया भंते' इत्यादि। 'आया भंते ! नाणे, अण्णाणे ?' गौतमः पृच्छति—हे भदन्त ! किम् आत्मा ज्ञानम्? योऽयमात्मा स एव किं ज्ञानम्, न तयोः कश्चिद् भेदः किम्, अथवा आत्मनोऽन्यद् ज्ञानम् ? किमज्ञानं वा आत्मा ? इति प्रश्नः, भगवानाह-'गोयमा ! आया सिय नाणे, सिय अन्नाणे णाणे पुण नियमं आया' हे गौतम ! आत्मा स्यात्—कदाचिद् ज्ञानम्—

आत्मस्वरूप वक्तव्यता—

'आया भंते ! नाणे अन्नाणे' इत्यादि।

टीकार्थ—सूत्रकार ने इस सूत्र द्वारा आत्मा के ही स्वरूप की प्ररूपणा की है—इसमें गौतम ने प्रभु से पूछा है—'आया भंते ! नाणे, अन्नाणे? हे भदन्त ! जो आत्मा है क्या वही ज्ञान है ? इन में क्या कोई भेद नहीं है ? अथवा ज्ञान आत्मा से भिन्न है? आत्मा और ज्ञान में भेद है? अथवा अज्ञान ही आत्मा है ? इस प्रश्न के उत्तर में प्रभु कहते हैं—'गोयमा' हे गौतम ! "आया सिय णाणे सिय अन्नाणे नाणे पुण नियमं आया' आत्मा कदाचित् ज्ञानरूप है—अर्थात्

—આત્મસ્વરૂપ વક્તવ્યતા—

"आया भंते ! नाणे अन्नाणे" ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ—સૂત્રકારે આ સૂત્ર દ્વારા આત્માના સ્વરૂપની જ પ્રરૂપણા કરી છે. આ વિષયને અનુલક્ષીને ગૌતમ સ્વામી મહાવીર પ્રભુને એવો પ્રશ્ન પૂછે છે કે—"आया भंते ! नाणे, अन्नाणे ?" હે ભગવન્ ! જે આત્મા છે, એજ જ્ઞાનરૂપ છે—શું જ્ઞાન અને આત્મા વચ્ચે કોઇ ભેદ નથી ? અથવા જ્ઞાન આત્માંથી શું ભિન્ન છે—જ્ઞાન અને આત્મામાં શું ભિન્નતા છે ? અથવા શું અજ્ઞાન જ આત્મા છે ? એટલે કે આત્મા શું અજ્ઞાન રૂપ જ છે ?

ઉત્તર—"आया सिय नाणे, सिय अन्नाणे नाणे पुण नियमं आया" હે ગૌતમ ! આત્મા કયારેક જ્ઞાનરૂપ હોય છે, એટલે કે આત્મામાં જ્યારે

ज्ञानस्वरूपो भवति, आत्मनः सम्यक्त्वे सति मत्यादिज्ञानस्वभावत्वात्, स्यात्-कदाचिद् आत्मा-अज्ञानम्-अज्ञानस्वरूपो भवति, तस्य आत्मनो मिथ्यात्वे सति मत्यज्ञानादिस्वभावत्वात्, ज्ञानं पुनर्नियमादात्मा भवत्येव, ज्ञानस्य आत्मधर्मतया सर्वथा धर्मिणो धर्मस्य भेदाभावात्, सर्वथा भेदे सति विप्रकृष्टगुणिनो गुण-मात्रोपलब्धौ मतिनियतगुणिविषय एव संशयो न स्यात्, तदन्येभ्योऽपि तस्य भेदविशेषाभावात्, दृश्यते च यदा कश्चिद्दरिततरुणतरुशाखाविसरसन्धोदरान्तरतः किमपि शुक्लं पश्यति तदा किमियं पताका, किमियं बलाका? इत्येवं मतिनियतगुणिविषयोऽसौ संशयः, नापि धर्मिणो धर्मः सर्वथैव अभिन्नः, सर्वथैव अभेदे संशयानुत्पत्तिरेव, गुणग्रहणत एव गुणिनोऽपि गृहीतत्वाद् अतः कथंचिद् भेदपक्षमाश्रित्य ज्ञानं पुनर्नियमादात्मा इति व्यपदिश्यते, अत्रहि आत्मा

आत्मा में जब सम्यक्त्व उत्पन्न हो जाता तब आत्मा में पहिले से अज्ञानरूप हुए मति आदि ज्ञानरूप होजाते हैं-इसलिये उस समय आत्मा उन मत्यादि ज्ञान स्वभाव वाला होता है आत्मा कदाचित् अज्ञान रूप है-अर्थात् आत्मा में जबतक मिथ्यात्व रहता है-तब आत्मा संबंधी मति आदि अज्ञान रूप में रहते हैं-इसलिये उस समय आत्मा मति अज्ञानादि स्वभाववाला होता है। तथा ज्ञान नियम से आत्मरूप कहा जाता है क्योंकि ज्ञान आत्मा का एक धर्म-स्वभाव है, धर्म और धर्मी में सर्वथा भेद होता नहीं है अर्थात् धर्म और धर्मी में कथंचित् भेद होता है यदि धर्म और धर्मी में ज्ञान और आत्मा में सर्वथा भेद स्वीकार किया जावे, तो फिर इस प्रकार से जितने भी धर्म और धर्मी हैं-उन सब में यह भेद स्वीकार किया जावेगा इस प्रकार से जब समस्त

સમ્યક્ત્વ ઉત્પન્ન થઇ જાય છે, ત્યારે આત્મામાં પહેલેથી જ અજ્ઞાન રૂપે રહેલ મતિ આદિ જ્ઞાન રૂપ થઇ જાય છે. તેથી ત્યારે આત્મા તે મતિ આદિ જ્ઞાન-સ્વભાવવાળો થઈ જાય છે ક્યારેક આત્મા અજ્ઞાન રૂપ પણ હોય છે, એટલે કે જ્યાં સુધી આત્મામાં મિથ્યાત્વનો સદ્ભાવ હોય છે, ત્યાં સુધી આત્મા સંબંધી મતિ આદિ અજ્ઞાન રૂપે રહે છે, તે કારણે તે સમયે આત્મા મતિ અજ્ઞાન આદિ સ્વભાવવાળો હોય છે. તથા જ્ઞાનને નિયમથી જ આત્મરૂપ કહેવાય છે, કારણ કે જ્ઞાન આત્માનો એક ધર્મ (સ્વભાવ) છે. ધર્મ અને ધર્મીમાં સર્વથા ભેદ હોતો નથી—એટલે કે ધર્મ અને ધર્મીમાં કથંચિત્ ભેદ હોય છે, પણ સંપૂર્ણતઃ ભેદ હોતો નથી જો ધર્મ અને ધર્મીમાં (જ્ઞાન અને આત્મામાં) સર્વથા (સંપૂર્ણતઃ) ભેદ સ્વીકારવામાં આવે, તો તે પ્રકારના જેટલા ધર્મધર્મિઓ હોય તે બધામાં પણ આ ભેદનો સ્વીકાર કરવો પડશે અને

ज्ञानं विनापि तिष्ठति ज्ञानं तु आत्मानं न परित्यजति खदिरवनस्पतिवदितिभावः। पूर्वोक्तमेवार्थं दण्डकेन प्ररूपयितुमाह-'आया भंते ! नेरइयाणं नाणे, अन्ने नेरइयाणं नाणे ?' गौतमः पृच्छति-हे भदन्त ! किम् नैरयिकाणाम् आत्मा ज्ञानं भवति ? किंवा नैरयिकाणामात्मनोऽन्यद् ज्ञानम् अज्ञानं भवति ? इत्यर्थः नैरयिकाणामात्मस्वरूपं ज्ञानम् उत् अन्यद् नैरयिकाणां ज्ञानं तेभ्यो व्यतिरिक्तम् ?

धर्म धर्मी में भेद स्वीकार किया जावेगा तब किसी विप्रकृष्ट-दूरवर्ती धर्मी गुणमात्र की उपलब्धि होने पर जो उस दूरवर्ती धर्मी विषयक संदेह उत्पन्न होता है-उस गुण को लेकर सो वह नहीं होना चाहिये परन्तु तद्विषयक संदेह उसके गुण की उपलब्धि को लेकर होता तो है जैसे जब कोई व्यक्ति हरेवृक्ष की शाखा के भीतर के छेद में से किसी सफेद पदार्थ-धर्मी को देखता है-तब उसे ऐसा संशय उस पदार्थ विषयक होता हैं कि क्या यह बलाका है ? या पताका है ? अतः ऐसा जो प्रतिनियत धर्मीविषयक संदेह उत्पन्न होता है उससे यही प्रतीत होता है कि धर्म अपने धर्मी से सर्वथा जुदा नहीं है। नहीं तो जैसे संशय उस धर्म को लेकर उस प्रतिनियतपदार्थ में हुआ है वह नहीं होना चाहिये उससे भिन्न किसी और भी पदार्थ के विषय में होना चाहिये था, क्योंकि जैसे वह धर्म उससे भिन्न है-फिर भी उसमें संशयोत्पादक है, इसी प्रकार वह उस प्रतिनियत धर्मी से-विवक्षित धर्मी

જો સમસ્ત ધર્મ-ધર્મીમાં ભેદ સ્વીકારવામાં આવે, તો કોઈ દૂરવર્તી ધર્મીના ગુણમાત્રની ઉપલબ્ધિ થાય ત્યારે તે ગુણને લીધે તે દૂરવર્તી ધર્મીવિષયક જે સંદેહ ઉત્પન્ન થાય છે તે થવો જોઇએ નહીં પરન્તુ તેના ગુણની ઉપલબ્ધિ થવાને કારણે તેના વિષેનો સંદેહ તો થાય છે જ જેમ કે-જ્યારે કોઇ વ્યક્તિ લીલા વૃક્ષની શાખામાંના છિદ્રમાંથી કોઈ સફેદ પદાર્થને દેખે છે, ત્યારે તે પદાર્થના વિષયમાં તેને એવો સંદેહ ઉત્પન્ન થાય છે કે-તે બલાકા છે ? કે પતાકા છે ? આ પ્રકારના પ્રતિનિયત ધર્મી વિષયક જે સંદેહ ઉત્પન્ન થાય છે, તેના દ્વારા એજ પ્રતીત થાય છે કે ધર્મ પોતાના ધર્મી કરતાં સર્વથા ભિન્ન નથી નહીં તો તે ધર્મને લીધે તે પ્રતિનિયત પદાર્થના વિષયમાં જેવો સંશય ઉત્પન્ન થયો, તે ઉત્પન્ન થવો જોઇએ નહીં એવો સંદેહ તેનાથી ભિન્ન એવા કોઇ અન્ય પદાર્થના વિષયમાં થવો જોઈતો હતો, કારણ કે જેવી રીતે ધર્મ તેનાથી ભિન્ન છે છતાં પણ તેમાં સંશયોત્પાદક છે, એજ પ્રમાણે તે ધર્મ તે પ્રતિનિયત ધર્મીથી-વિવક્ષિત ધર્મીથી ભિન્ન એવા અન્ય

से भिन्न अन्य अविवक्षित धर्मी से भी भिन्न है-फिर उसमें वह संशय का उत्पादक क्यों नहीं ? अतः इस प्रतीति से यही होता है कि धर्म अपने धर्मीसे सर्वथा भिन्न नहीं है। इस प्रकार 'धर्म अपने धर्मी से सर्वथा अभिन्न ही है" ऐसा भी नहीं है, क्योंकि सर्वथा अभेद मानने पर संशयकी उत्पत्ति ही नही हो सकेगी क्योंकि गुण के ग्रहण हो जाने पर-धर्मके ग्रहण हो जाने पर गुणी का ग्रहण हो जावेगा. अतः कथंचित् भेदपक्ष को आश्रित करके "ज्ञान नियम से आत्मा है" ऐसा कहा जाता हैं। "ज्ञान आत्मा है" इस कथन से यह प्रकट किया गया है कि आत्मा ज्ञान के विना भी रह सकता है, परन्तु ज्ञान आत्मा के विना नहीं रह सकता. जैसे खैरका वृक्ष वनस्पति के विना नहीं रह सकता परन्तु वनस्पति खैर का वृक्ष के विना भी रह सकती है। 'आया भंते! नेरइयाणं नाणे, अन्ने नेरइयाणं नाणे' गौतम ने प्रभु से इस सूत्र द्वारा ऐसा पूछा है-भदन्त ! नैरयिकों का आत्मा क्या ज्ञानस्वरूप है ? या अज्ञानरूप है ? पूछनेका तात्पर्य ऐसा है कि नैरयिकों का ज्ञान उनकी आत्मास्वरूप होता है ? या उनकी आत्मा से भिन्न होता है ? इसके

અવિવક્ષિત ધર્મીથી-પણ ભિન્ન છે. છતાં પણ તેમાં તે સંશયોત્પાદક કેમ નથી ? આ પ્રકારની પ્રતીતિ દ્વારા એજ વાતને સમર્થન મળે છે કે ધર્મ પોતાના ધર્મી કરતાં સર્વથા ભિન્ન હોતો નથી એજ પ્રમાણે " ધર્મ પોતાના ધર્મીથી સર્વથા અભિન્ન છે, " એવું પણ નથી, કારણ કે સર્વથા અભેદ માનવામાં આવે, તો સંશયની ઉત્પત્તિ જ થઇ શકતી નથી, કારણ કે ગુણનું ગ્રહણ થઈ જવાથી-ધર્મનું ગ્રહણ થઈ જવાથી-ગુણીનું ગ્રહણ થઈ જશે તેથી કથંચિત્ ભેદ પક્ષનો આશ્રય લઈને એવું કહી શકાય છે કે " જ્ઞાન નિયમથી આત્મા છે. " " જ્ઞાન આત્મા છે, " આ કથન દ્વારા એ પ્રકટ કરવામાં આવ્યું છે કે આત્મા જ્ઞાનના વિના પણ રહી શકે છે, પરન્તુ જ્ઞાન આત્મા વિના રહી શકતું નથી જેવી રીતે ખેરનું વૃક્ષ વનસ્પતિ વિના રહી શકતું નથી, પણ વનસ્પતિ ખેરના વૃક્ષ વિના રહી શકે છે, એજ પ્રમાણે જ્ઞાન આત્મા વિના રહી શકતું નથી, પણ આત્મા જ્ઞાન વિના રહી શકે છે.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-" आया भंते ! नेरइयाण नाणे, अन्ने नेरइयाणं नाणे ?" હે ભગવન્ ! નારકોનો આત્મા શું જ્ઞાનસ્વરૂપ હોય છે, કે અજ્ઞાન રૂપ હોય છે ? આ પ્રશ્નનું તાત્પર્ય એ છે કે નારકોનું જ્ઞાન તેમના આત્માથી અભિન્ન હોય છે, કે તેમના આત્માથી ભિન્ન હોય છે ?

भगवानाह-'गोयमा ! आया नेरइयाणं सिय नाणे, सिय अन्नाणे, नाणे पुण से नियमं आया' हे गौतम ! आत्मा नैरयिकाणां स्यात्-कदाचित् ज्ञानं भवति, सम्यग्दर्शन-भावात्, स्यात् कदाचित् अज्ञानं भवति मिथ्यादर्शन भावात्, ज्ञानं पुनस्तन्नैरयिक सम्बन्धिनियमात् आत्मा भवति, न तद् व्यतिरिक्तमित्यर्थः, 'एवं जाव थणिय-कुमाराणं' एवं-पूर्वोक्तनैरयिकरीत्या, यावत्-असुरकुमारादारभ्य स्तनितकुमारपर्य-न्तानाम् आत्मा किम् ज्ञानं भवति ? किं वा अज्ञानं भवति ? इति प्रश्नः, भगवानाह-आत्मा असुरकुमारादीनाम् स्याद् ज्ञानं भवति स्यात् अज्ञानं भवति ज्ञानं पुनर्नियम-

---

उत्तर में प्रभु कहते हैं-'गोयमा' हे गौतम ! 'आया नेरइयाणं सिय नाणे, सिय अन्नाणे, नाणे पुण से नियमं आया' नैरयिकों का आत्मा कदाचित् ज्ञानस्वरूप होता है-क्योंकि नैरयिकों में भी सम्यग्दर्शन होता है तथा कदाचित् वह अज्ञान स्वरूप भी होता है-क्योंकि नैर-यिको में मिथ्यादर्शन का सद्भाव रहता है। तथा-नैरयिक संबंधी जो ज्ञान है-वह नियम से आत्मरूप होता है, आत्मा से भिन्न नहीं होता है 'एवं जाव थणियकुमाराणं' इसी प्रकार का कथन यावत्-असुरकुमार से लेकर स्तनितकुमार तक के देवों की आत्मा के संबंध में जानना चाहिये अर्थात्-असुरकुमार से लेकर स्तनितकुमार तक की आत्मा क्या ज्ञान स्वरूप होती है ? या अज्ञान स्वरूप होती है ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-हे गौतम ! असुरकुमार आदिकों की आत्मा कदाचित् ज्ञानरूप भी होती है ? तथा ज्ञान जो है वह नियम से आत्मस्वरूप होता है।

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-" गोयमा ! " હે ગૌતમ ! " आया नेरइयाण सिय नाणे, सिय अन्नाणे, नाणे पुण से नियमं आया " હે ગૌતમ ! નારકોનો આત્મા કયારેક જ્ઞાનસ્વરૂપ હોય છે, કારણ કે નારકોમાં પણ સમ્યગ્દર્શન સંભવે છે અને કયારેક અજ્ઞાનસ્વરૂપ પણ હોય છે, કારણ કે નારકોમાં મિથ્યાદર્શનનો પણ સદ્ભાવ હોઇ શકે છે. તથા નારકોનું જે જ્ઞાન હોય છે, તે નિયમથી જ આત્મરૂપ હોય છે, આત્માથી ભિન્ન હોતું નથી " एवं जाव थणियकुमाराणं " નારકોના જેવું જ કથન અસુરકુમારોથી લઇને સ્તનિતકુમારો પર્યન્તના દેવોના આત્માના સંબંધમાં પણ સમજવું એટલે કે અસુરકુમા-રોથી લઇને સ્તનિતકુમારો પર્યન્તના દેવોનો આત્મા શું જ્ઞાનસ્વરૂપ હોય છે ? કે અજ્ઞાનસ્વરૂપ હોય છે ?

તેનો ઉત્તર આપતા મહાવીર પ્રભુ કહે છે કે હે ગૌતમ ! અસુરકુમારા-દિકોનો આત્મા કયારેક જ્ઞાનસ્વરૂપ પણ હોય છે અને કયારેક અજ્ઞાનસ્વરૂપ પણ હોય છે. તથા તેમનું જે જ્ઞાન છે, તે નિયમથી જ આત્મરૂપ હોય છે.

मादात्मा भवति । गौतमः पृच्छति–आया भंते ! पुढविकाइयाणं अन्नाणे, अन्ने पुढविकाइयाणं अन्नाणे ?' हे भदन्त ! आत्मा पृथिवीकायिकानाम् अज्ञानस्वरूपो भवति ? किंवा आत्मनोऽन्यत् पृथिवीकायिकानाम् अज्ञानं भवति ? तेषामात्मस्वरूपमज्ञानं भवति, उताहो अन्यत्तत् ? भगवानाह–'गोयमा ! आया पुढविकाइयाणं नियमं अन्नाणे, अन्नाणे वि नियमं आया, एवं जाव वणस्सइकाइयाणं' हे गौतम ! पृथिवीकायिकानामात्मा नियमादज्ञानस्वरूपो भवति, अज्ञानमपि नियमादात्मा भवति, एवं–पूर्वोक्तरीत्या, यावत्–अप्कायिकानां, तेजस्कायिकानाम्, वायुकायिकानाम्, वनस्पतिकायिकानाम् आत्मा नियमादज्ञानस्वरूपो भवति, अज्ञानमपि तेषां नियमादात्मा भवति; तथा च तेषामात्मा अज्ञानस्वरूपो भवति,

अब गौतमस्वामी प्रभु से ऐसा पूछते हैं–'आया भंते ! पुढविकाइयाणं अन्नाणे अन्ने पुढविकाइयाणं अन्नाणे' हे भदन्त ! पृथिवीकायिकों की आत्मा अज्ञानस्वरूप होती है ? और वह अज्ञान क्या उनकी आत्मा से भिन्न होता है ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं–'गोयमा' हे गौतम ! 'आया पुढविकाइयाणं अन्नाणे, अन्ने पुढविकाइयाणं नियमं अन्नाणे, अन्नाणे वि नियमं आया' पृथिवीकायिकों की आत्मा नियम से अज्ञानरूप होती है और वह अज्ञान उसका आत्मस्वरूप होता है ? 'एवं जाव वणस्सइकाइयाणं' इसी प्रकार का कथन यावत्–अप्कायिकों की, तेजस्कायिकों की, वायुकायिकों की एवं वनस्पतिकायिकों की आत्मा के संबंध में भी जानना चाहिये अर्थात्–अप्कायिकों से लेकर वनस्पतिकायिकों की आत्मा नियम से अज्ञानस्वरूप होता है और वह अज्ञान भी उनका नियम से उनकी आत्मरूपता होती है। इससे

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન–"आया भंते ! पुढविकाइयाणं अन्नाणे, अन्ने पुढविकाइयाणं अन्नाणे ?" હે ભગવન્ ! પૃથ્વીકાયિકોનો આત્મા શું અજ્ઞાનસ્વરૂપ હોય છે ? અને તે અજ્ઞાન શું તેમના આત્માથી ભિન્ન હોય છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર–"गोयमा !" હે ગૌતમ ! "आया पुढविकाइयाणं नियमं अन्नाणे, अन्नाणे, वि नियम आया" પૃથ્વીકાયિકોનો આત્મા નિયમથી જ અજ્ઞાનરૂપ હોય છે અને તેમનું તે અજ્ઞાન નિયમથી જ આત્મરૂપ હોય છે. "एवं जाव वणस्सइकाइयाणं" પૃથ્વીકાયિકોના જેવું જ કથન અપ્કાયિકો, તેજસ્કાયિકો, વાયુકાયિકો અને વનસ્પતિકાયિકોના આત્મા વિષે પણ સમજવું એટલે કે અપ્કાયિકોથી લઈને વનસ્પતિકાયિકો પર્યન્તના જીવોનો આત્મા નિયમથી જ અજ્ઞાન સ્વરૂપ હોય છે અને તેમનું તે અજ્ઞાન પણ નિયમથી જ તેમના આત્મસ્વરૂપ હોય છે, એટલે કે તે અજ્ઞાન તેમના

नान्यत्तत्तेभ्य इति भावार्थः, 'वेइंदियतेइंदिय जाव वेमाणियाणं जहा नेरइयाणं द्वीन्द्रियत्रीन्द्रिय यावत् चतुरिन्द्रियपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकमनुष्यवानव्यन्तरज्योतिषिकवैमानिकानाम् आत्मा यथा नैरयिकाणां प्रतिपादितस्तथा प्रतिपत्तव्यः, तथा च द्वीन्द्रियादि वैमानिकान्तानामात्मा स्यात् ज्ञानरूपो भवति, स्यादज्ञानरूपो भवति, ज्ञानं पुन स्तत्सम्बन्धिनियमादात्मा भवत्येवेति भावः। गौतमः पृच्छति-'आया भंते ! दंसणे, अन्ने दंसणे ?' हे भदन्त ! किमात्मा दर्शनरूपो भवति ? किंवा आत्मनः अन्यद्दर्शनं भवति ? भगवानाह-' गोयमा ! आया नियमं दंसणे, दंसणे वि नियमं आया' हे गौतम ! आत्मा नियमाद् दर्शनरूपो भवत्येव, एवं दर्शनमपि नियमादात्मा भवत्येवा, तथा च सम्यग्दृष्टिमिथ्या-

---

कहने का तात्पर्य ऐसा है कि वह अज्ञान उनकी आत्मा से भिन्न नहीं है 'वेइंदियतेइंदिय जाव वेमाणियाणं जहा नेरइयाणं' दो इन्द्रियों की, तेइन्द्रियों की यावत्-चौ इन्द्रियों की, पंचेन्द्रिय-तिर्यञ्चों की, मनुष्यों की, वानव्यन्तरों की, ज्योतिषिकों की, वैमानिकों की आत्मा-कथंचित् ज्ञानस्वरूप होती है और कथंचित् अज्ञानस्वरूप होती है और इनका जो ज्ञान है वह नियम से आत्मस्वरूप होता है-अर्थात् आत्मा से अभिन्न होता है। अब गौतम प्रभु से ऐसा पूछते हैं-'आया भंते ! दंसणे अन्ने दंसणे' हे भदन्त ! क्या आत्मा दर्शन रूप होता है ? या वह आत्मा से भिन्न होता है ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-'गोयमा' हे गौतम ! 'आया नियमं दंसणे, दंसणे वि नियमं आया' आत्मा नियम से दर्शनरूप होता है, और वह दर्शन भी नियम से आत्मरूप होता है।

આત્માથી ભિન્ન હોતું નથી. "वेइंदिय, तेइंदिय जाव वेमाणियाणं जहा नेरइयाणं" દ્વીન્દ્રિયોનો, ત્રીન્દ્રિયોનો, ચતુરિન્દ્રિયોનો, પંચેન્દ્રિયતિર્યંચોનો, મનુષ્યોનો, વાનવ્યન્તરોનો, જ્યોતિષિકોનો અને વૈમાનિકોનો આત્મા, નારકોના આત્માની જેમ કયારેક જ્ઞાનસ્વરૂપ હોય છે અને કયારેક અજ્ઞાનસ્વરૂપ હોય છે. અને તેમનું જે જ્ઞાન છે, તે નિયમથી જ આત્મસ્વરૂપ હોય છે, એટલે કે આત્માથી અભિન્ન હોય છે.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-"आया भंते ! दंसणे, अन्ने दंसणे ?" હે ભગવન્ ! શું આત્મા દર્શનરૂપ હોય છે ? કે તે દર્શન આત્માથી ભિન્ન હોય છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-"गोयमा !" હે ગૌતમ ! "आया नियमं दंसणे, दंसणे वि नियमं आया" આત્મા નિયમથી જ દર્શનરૂપ હોય છે, અને તે દર્શન પણ નિયમથી જ આત્મરૂપ હોય છે, કારણ કે સમ્યગ્દૃષ્ટિ અને

दृष्टयोर्दर्शनस्याविशेषादात्मा दर्शनं भवति, दर्शनमपि आत्मैव भवति, यत्र खलु धर्मे विपर्ययो नास्ति तत्र नियम एव उपनीयते, न व्यभिचारो गृह्यते, यथा अत्रैव दर्शने, यत्र पुनर्विपर्ययोऽस्ति तत्र व्यभिचारो नियमश्चोपनीयते यथाज्ञाने आत्मा ज्ञानरूपोऽज्ञानरूपश्चेति व्यभिचारः, ज्ञानं पुनरात्मैवेति नियमो भवत्येवेति भावः। गौतमः पृच्छति-'आया भंते! नेरइयाणं दंसणे, अन्ने नेरइयाणं दंसणे? हे भदन्त! नैरयिकाणाम् आत्मा किं दर्शनरूपो भवति? आत्मनोऽन्यद् वा नैरयिकाणां दर्शनं भवति? भगवानाह-'गोयमा! आया नेरइयाणं नियमा दंसणे, दंसणे वि से नियमं आया, एवं जाव वेमाणियाणं निरंतरं दंडओ' हे गौतम! नैरयिकाणामात्मा नियमादवश्ययेव दर्शनरूपो भवति, दर्शनमपि तत्सम्बन्धि

तथा-सम्यग्दृष्टि और मिथ्यादृष्टि के दर्शन में विशेषता न होने से आत्मा दर्शनरूप होता है और दर्शन भी आत्मारूप होता है। जहां धर्म में विपर्यय नहीं है वहां नियम ही कहा गया है विपरीत ग्रहण नहीं किया गया है जैसे यहां दर्शन में, जहां विपर्यय है, वहां विपरीत और नियम दोनों कहे गये हैं-जैसे ज्ञान में-आत्मा ज्ञानरूप भी होता है और अज्ञानरूप भी होता है यह विपरीत है और ज्ञान आत्मस्वरूप ही होता है यह नियम है। अब गौतम प्रभु से ऐसा पूछते हैं-' आया भंते! नेरइयाणं दंसणे, अन्ने नेरइयाणं दंसणे' हे भदन्त! नैरयिकों की आत्मा क्या दर्शनरूप होता है? या नैरयिकों के आत्मा से दर्शन भिन्न होता हैं? इसके उत्तर में प्रभु कहते है-'गोयमा' हे गौतम! 'आया नेरइयाणं नियमा दंसणे, दंसणे वि से नियमं आया' नैरयिकों की

મિથ્યાદૃષ્ટિના દર્શનમાં વિશેષતા ન હોવાથી આત્મા દર્શનરૂપ હોય છે. અને દર્શન પણ આત્મારૂપ હોય છે જ્યાં ધર્મમાં વિપર્યય નથી, ત્યાં નિયમથી જ ગ્રહણ કરાયું છે વિપરીત ગ્રહણ કરાયું નથી જેમ કે દર્શનમાં જ્યાં વિપર્યય છે, ત્યાં વિપરીત અને નિયમ, આ બન્ને ગ્રહણ કરાયા છે જેમકે જ્ઞાનના વિષયમાં એવું કહ્યું છે કે-"આત્મા જ્ઞાનરૂપ પણ હોય છે અને અજ્ઞાનરૂપ પણ હોય છે," આ વિપરીત છે, અને "જ્ઞાન આત્મસ્વરૂપ જ હોય છે," આ નિયમ છે.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-"आया भंते! नेरइयाणं दंसणे, अन्ने नेरइयाणं दंसणे?" હે ભગવન્! શું નારકોનો આત્મા દર્શનરૂપ (દર્શનથી અભિન્ન) હોય છે? કે નારકોનો આત્મા દર્શનથી ભિન્ન હોય છે?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-"गोयमा!" હે ગૌતમ! "आया नेरइयाणं नियमा दंसणे, दंसणे वि से नियमं आया" નારકોનો આત્મા નિયમથી જ

नियमात् आत्मा भवति, एवं-पूर्वोक्तरीत्या, यावत्-भवनपतिविकलेन्द्रियपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकमनुष्यवानव्यन्तरज्योतिषिकवैमानिकानां निरन्तरम्-अव्यवधानेन दण्डको वक्तव्यः। तथा च तेषामपि आत्मा नियमाद् दर्शनरूपो भवति, दर्शनमपि नियमादात्मरूपं भवतीति भावः ॥सू० २॥

रत्नप्रभादिविशेषवक्तव्यता।

मूलम्-आया भंते! रयणप्पभा पुढवी, अन्ना रयणप्पभा पुढवी? गोयमा! रयणप्पभा पुढवी सिय आया सिय नो आया, सिय अवत्तव्वं आयाइय नो आयाइय, से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ-रयणप्पभापुढवी सिय आया सिय नो आया, सिय अवत्तव्वं आयाइय नो आयाइय? गोयमा! अप्पणो आइट्ठे आया; परस्स आइट्ठे नो आया, तदुभयस्स आइट्ठे अवत्तव्वं रयणप्पभा पुढवी आयाइय नो आयाइय, से तेणट्ठेणं तं चेव जाव नो आयाइय। आया भंते! सक्करप्पभा पुढवी जहा रयणप्पभा पुढवी तहा सक्करप्पभाए वि, एवं जाव अहे सत्तमा! आया भंते! सोहम्मे कप्पे पुच्छा, गोयमा! सोहम्मे कप्पे सिय आया सिय नो आया जाव नो आयाइय। से केणट्ठेणं भंते! जाव नो

आत्मा नियम से दर्शन रूप होता है-और नैरयिक-आत्म संबंधी दर्शन भी नियम से आत्मरूप होता है! इसी प्रकार से यावत्-भवनपति, विकलेन्द्रिय, पंचेन्द्रिय तिर्यंच, मनुष्य, वानव्यन्तर, ज्योतिषिक, वैमानिक इनका दण्डक भी विना व्यवधान के कहना चाहिये तथाच-इनकी भी आत्मा नियम से दर्शनरूप होता है और इनका दर्शन भी नियम से आत्मरूप होता है ॥सू० २॥

દર્શનરૂપ હોય છે, અને નારકોનું આત્મા સંબંધી દર્શન પણ નિયમથી જ આત્મરૂપ હોય છે. એજ પ્રમાણે ભવનપતિ, વિકલેન્દ્રિય, પંચેન્દ્રિયતિર્યંચ, મનુષ્ય, વાનવ્યન્તર, જ્યોતિષિક અને વૈમાનિકોનો આત્મા નિયમથી જ દર્શન રૂપ હોય છે, અને તેમનું દર્શન પણ નિયમથી જ આત્મરૂપ હોય છે. ॥સૂ૦૨॥

आयाइय? गोयमा! अप्पणो आइट्ठे आया परस्स आइट्ठे नो आया, तदुभयस्स आइट्ठे अवत्तव्वं आयाइय नो आयाइय। से तेणट्ठेणं तं चेव जाव नो आयाइय। एवं जाव अच्चुए कप्पे। आया भंते! गेविज्जविमाणे अन्ने गेविज्जविमाणे एवं जहा रयणप्पभा तहेव। एवं अणुत्तरविमाणा वि। एवं ईसि पब्भारा वि। आया भंते! परमाणुपोग्गले अन्ने परमाणुपोग्गले? एवं जहा सोहम्मे कप्पे तहा परमाणुपोग्गले वि भाणियव्वे।

आया भंते! दुप्पएसिए खंधे अन्ने दुप्पएसिए खंधे! गोयमा! दुप्पएसिए खंधे सिय आया १ सिय नो आया २, सिय अवत्तव्वं आयाइय नो आयाइय ३, सिय आया य नो आया य४, सिय आया य अवत्तव्वं आयाइय नो आयाइय ५, सिय नो आया य अवत्तव्वं आयाइय नो आयाइय ६, से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ तं चेव जाव नो आयाइय अवत्तव्वं आयाइय नो आयाइय, गोयमा! अप्पणो आइट्ठे आया १ परस्स आइट्ठे नो आया२ तदुभयस्स आइट्ठे अवत्तव्वं, दुप्पएसिए खंधे आयाइय, नो आयाइय ३ देसे आइट्ठे सब्भावपज्जवे देसे आइट्ठे असब्भाव-पज्जवे, दुप्पएसिए खंधे आया य, नो आया य४, देसे आइट्ठे सब्भावपज्जवे देसे आइट्ठे तदुभयपज्जवे दुप्पएसिए खंधे आया य अवत्तव्वं आयाइय नो आयाइय५, देसे आइट्ठे असब्भाव-पज्जवे देसे आइट्ठे तदुभयपज्जवे दुप्पएसिए खंधे नो आया य अवत्तव्वं आयाइय नो आयाइय६, से तेणट्ठेणं तं चेव जाव नो आयाइय।

आया भंते! तिप्पएसिए खंधे अन्ने तिप्पएसिए खंधे? गोयमा! तिप्पएसिए खंधे सिय आया१, सिय नो आया२, सिय अवत्तव्वं आयाइय, नोआयाइय३, सिय आया य, नो आया य४, सिय आया य, नो आयाओय५, सिय आयाओय नो आया य६, सिय आया य अवत्तव्वं आयाइय नोआयाइय७, सिय आयाइय अवत्तव्वाइं आयाओ य नो आयाओ य८, सिय आयाओ य अवत्तव्वं आयाइय नो आयाइय९, सिय नो आया य अवत्तव्वं आयाइय नोआयाइय१०, सिय नो आया य अवत्तव्वाइं आयाओ य नो आयाओ य११, सिय नो आयाओ य अवत्तव्वं आयाइय नो आयाइय१२, सिय आया य नो आया य अवत्तव्वं आयाइय नो आयाइय१३। से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ-तिप्पएसिए खंधे सिय आया एवं चेव उच्चारेयव्वं जाव सिय आया य नो आया य अवत्तव्वं आयाइय नो आयाइय१३? गोयमा! अप्पणो आइट्ठे आया१, परस्स आइट्ठे नो आया२, तदुभयस्स आइट्ठे अवत्तव्वं आयाइय नो आयाइय३, देसे आइट्ठे सब्भावपज्जवे देसे आइट्ठे असब्भावपज्जवे तिप्पएसिए खंधे आया य नो आया य४, देसे आइट्ठे सब्भावपज्जवे देसा आइट्ठा असब्भावपज्जवा तिप्पएसिए खंधे आया य नो आयाओ य५, देसा आइट्ठा सब्भावपज्जवा देसे आइट्ठे असब्भावपज्जवे तिप्पएसिए खंधे आयाओय नो आया य६, देसे आइट्ठे सब्भावपज्जवे देसे आइट्ठे तदुभयपज्जवे तिप्पएसिए खंधे आया य

अवत्तव्वं आयाइय नो आयाइय७, देसे आइट्ठे सब्भावपज्जवे देसा आइट्ठा तदुभयपज्जवा तिप्पएसिए खंधे आया य अवत्तव्वाइं आयाओ य नो आयाओ य८, देसा आइट्ठा सब्भावपज्जवा देसे आइट्ठे तदुभयपज्जवे तिप्पएसिए खंधे आयाओ य अवत्तव्वं आयाइय नो आयाइय९। एए तिन्नि भंगा। देसे आइट्ठे असब्भावपज्जवे देसे आइट्ठे तदुभयपज्जवे तिप्पएसिए खंधे नो आया य अवत्तव्वं आयाइय नो आयाइय१०, देसे आइट्ठे असब्भावपज्जवे देसा आइट्ठा तदुभयपज्जवा तिप्पएसिए खंधे नो आया य, अवत्तव्वाइं आयाओ य नो आयाओ य११, देसा आइट्ठा असब्भावपज्जवा, देसे आइट्ठे तदुभयपज्जवे तिप्पएसिए खंधे नो आयाओ य अवत्तव्वं आयाइय नो आयाइय१२, देसे आइट्ठे सब्भावपज्जवे देसे आइट्ठे असब्भावपज्जवे देसे आइट्ठे तदुभयपज्जवे तिप्पएसिए खंधे आया य नो आयाइय अवत्तव्वं आयाइय नो आयाइय१३, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ तिप्पएसिए खंधे सिय आया तं चेव जाव नो आयाइय।

आया भंते ! चउप्पएसिए खंधे अन्ने पुच्छा, गोयमा! चउप्पएसिए खंधे सिय आया१, सिय नो आया२, सिय अवत्तव्वं आयाइय नो आयाइय३, सिय आया य नो आया य१, सिय आयाय नो आयाओ य२, सिय आयाओ य नो आया य३, सिय आयाओ य नो आयाओ य४। सिय आया य अवत्तव्वं आयाइय नो आयाइय१, सिय आया य अवत्तव्वाइं आयाओय नो आयाओ य२, सिय

आयाओ य अवत्तव्वं आयाइय नो आयाइय३, सिय आयाओ य अवत्तव्वाइं आयाओ य नो आयाओ य४, (३×८=११) सिय नो आया य अवत्तव्वं आयाइय नो आयाइय१, सिय नो आया य अवत्तव्वाइं आयाओ य नो आयाओ य२, सिय नो आयाओ य अवत्तव्वं आयाइय नो आयाइय३, सिय नो आयाओ य अवत्तव्वाइं आयाओ य नो आयाओ य ॥४॥(१५) सिय आया य नो आया य अवत्तव्वं आयाइय नो आयाइय१६, सिय आया य नो आया य अवत्तव्वाइं आयाओ य नो आयाओ य१७, सिय आया य नो आयाओ य अवत्तव्वं आयाइय नो आयाइय१८।सिय आयाओ य नो आया य अवत्तव्वं आयाइय नो आयाइय१९। से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ चउप्पएसिए खंधे सिय आया य नो आया य अवत्तव्वं तं चेव अट्ठं पडिउच्चारेयव्वं? गोयमा! अप्पणो आइट्ठे आया१, परस्स आइट्ठे नो आया२, तदुभयस्स आइट्ठे अवत्तव्वं आयाइय नो आयाइय३, देसे आइट्ठे सब्भावपज्जवे देसे आइट्ठे असब्भावपज्जवे चउभंगो४। सब्भावपज्जवेणं तदुभयेणं य चउभंगा४। असब्भावेणं तदुभयेण य चउभंगो ४।(१५) देसे आइट्ठे सब्भावपज्जवे देसे आइट्ठे असब्भावपज्जवे, देसे आइट्ठे तदुभयपज्जवे चउप्पएसिए खंधे आया य नो आया य अवत्तव्वं आयाइय नो आयाइय१६, देसे आइट्ठे सब्भावपज्जवे देसे आइट्ठे असब्भावपज्जवे देसा आइट्ठा तदुभयपज्जवा चउप्पएसिए खंधे भवइ, आया य नो आया य अवत्तव्वाइं आयाओ य नो आयाओ य १७, देसे आइट्ठे सब्भा-

वएज्जवे देसा आइट्ठा असब्भावपज्जवा देसे आइट्ठे तदुभयपज्जवे चउप्पएसिए खंधे आया य नो आयाओ य अवत्तव्वं आयाइय नो आयाइय१८, देसा आइट्ठा सब्भावपज्जवा, देसे आइट्ठे असब्भावपज्जवे, देसे आइट्ठे तदुभयपज्जवे चउप्पएसिए खंधे आयाओ य नो आया य अवत्तव्वं आयाइय नो आयाइय१९। से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ चउप्पएसिए खंधे सिय आया, सिय नो आया, सिय अवत्तव्वं निक्खेव ते चेव भंगा उच्चारेयव्वा जाव नो आयाइय।

आया भंते! पंच पएसिए खंधे अन्ने पंच पएसिए खंधे? गोयमा! पंचपएसिए खंधे सिय आया१, सिय नो आया२, सिय अवत्तव्वं आयाइय नो आयाइय३, सिय आया य नो आया य४, सिय आया य अवत्तव्वेण य४, नो आया य अवत्तव्वेण य(४×१२+३=१५) तियगसंजोगे एक्को ण पडइ७×(२२) से केणट्ठेणं भंते! तं चेव पडिउच्चारेयव्वं? गोयमा! अप्पणो आइट्ठे आया१, परस्स आइट्ठे नो आया२, तदुभयस्स आइट्ठे अवत्तव्वं३, देसे आइट्ठे सब्भावपज्जवे देसे आइट्ठे असब्भावपज्जवे, एवं दुयगसंजोगे सव्वे पडंति, तियगसंजोगे एक्को ण पडइ। छप्पएसिए सव्वे पडंति, जहा छप्पएसिए, एवं जाव अणंतपएसिए, सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति जाव विहरइ॥सू०३॥

दसमो उद्देसो समत्तो—बारसमं सयं समत्तं॥

छाया—आत्मा भदन्त ! रत्नप्रभा पृथिवी, अन्या रत्नप्रभा पृथिवी गौतम ! रत्नप्रभा पृथिवी स्यात् आत्मा, स्यात् नो आत्मा, स्यात् अवक्तव्यम्—आत्मा इतिच नो आत्मा इतिच, तत् केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते—रत्नप्रभा पृथिवी स्यात् आत्मा स्यात् नो आत्मा, स्यात् अवक्तव्यम्—आत्मा इति च नो आत्मा इति च ? गौतम ! आत्मनः आदिष्टे आत्मा, परस्य आदिष्टे नो आत्मा, तदुभयस्य आदिष्टे अवक्तव्यं—रत्नप्रभापृथिवी आत्मा इति च, नो आत्मा इति च, तत् तेनार्थेन तदेव यावत् नो आत्मा इति च, आत्मा भदन्त ! शर्कराप्रभा पृथिवी, यथा रत्नप्रभा पृथिवी तथा शर्कराप्रभाऽपि, एवं यावत् अधः सप्तमी, आत्मा भदन्त ! सौधर्मः कल्पः पृच्छा, गौतम ! सौधर्मः कल्पः स्यात् आत्मा, स्यात् नो आत्मा यावत् नो आत्मा इति च, तत् केनार्थेन भदन्त ! यावत् नो आत्मा इति च ? गौतम ! आत्मनः आदिष्टे आत्मा, परस्य आदिष्टे नो आत्मा तदुभयस्य आदिष्टे अवक्तव्यम्—आत्मा इति च नोआत्मा इति च, तत् तेनार्थेन तदेव यावत् नो आत्मा इति च, एवं यावत् अच्युतः कल्पः, आत्मा भदन्त ! ग्रैवेयकविमानः, अन्यो ग्रैवेयकविमानः' ? एवं यथा रत्नप्रभा तथैव, एवमनुत्तरविमानः अपि, एवम् ईषत्प्राग्भारा अपि, आत्मा भदन्त ! परमाणुपुद्गलः, अन्यः परमाणुपुद्गलः ? एवं यथा सौधर्मः कल्पस्तथा परमाणुपुद्गलोऽपि भणितव्यः । आत्मा भदन्त ! द्विप्रदेशिकः स्कन्धः, अन्यो द्विप्रदेशिकः स्कन्धः ? गौतम ! द्विप्रदेशिकः स्कन्धः स्यात् आत्मा १, स्यात् नो आत्मा २, स्यात् अवक्तव्यम्—आत्मा इति च, नो आत्मा इति च ३ स्यात् आत्मा च नो आत्मा च ४, स्यात् आत्मा च अवक्तव्यम्—आत्मा इति च नो आत्मा इति च ५, स्यात् नो आत्मा च अवक्तव्यम् आत्मा इति च, नो आत्मा इति च ६, तत् केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते—तदेव यावत् नो आत्मा इति च अवक्तव्यम्— आत्मा इति च नो आत्मा इति च ? गौतम ! आत्मनः आदिष्टे आत्मा १, परस्य आदिष्टे नो आत्मा २, तदुभयस्य आदिष्टे अवक्तव्यम्—द्विप्रदेशिकः स्कन्धः आत्मा इति च नोआत्मा इति च ३, देश आदिष्टः सद्भावपर्यवः, देश आदिष्टः असद्भावपर्यवो द्विप्रदेशिकः स्कन्धः आत्मा च नो आत्मा च ४ , देश आदिष्टः सद्भावपर्यवः, देश आदिष्टस्तदुभयपर्यवो द्विप्रदेशिकः स्कन्धः आत्मा च अवक्तव्यम्—आत्मा इति च नो आत्मा इति च ५, देश आदिष्टः असद्भावपर्यवः, देश आदिष्टः तदुभयपर्यवो द्विप्रदेशिकः स्कन्धो नोआत्मा च अवक्तव्यम्—आत्मा इति च नो आत्मा इति च ६, तत् तेनार्थेन तदेव यावत्—नो आत्मा इति च ।

आत्मा भदन्त ! त्रिप्रदेशिकः स्कन्धः, अन्यस्त्रिप्रदेशिकः स्कन्धः ? गौतम ! त्रिप्रदेशिकः स्कन्धः स्यात् आत्मा १, स्यात् नो आत्मा२, स्यात् अवक्तव्यम्-आत्मा इति च नो आत्मा इति च३, स्यात् आत्मा च नोआत्मा च४, स्यात् आत्मा च नोआत्मानौ च५, स्यात् आत्मानौ च नो आत्मा च ६, स्यात् आत्मा च अवक्तव्यः आत्मा इति च नो आत्मा इति च ७, स्यात् आत्मा इति च, अवक्तव्यौ आत्मानौ च नोआत्मानौ च ८, स्यात् आत्मानौ च अवक्तव्यः-आत्मा इति च नोआत्मा इति च९, स्यात् नोआत्मा च अवक्तव्यः-आत्मा इति च नो आत्मा इति च१०, स्यात् नो आत्मा च अवक्तव्यौ-आत्मानौ च नोआत्मानौ च११, स्यात् नो आत्मानौ च अवक्तव्यः-आत्मा इति च नो आत्मा इति च१२, स्यात् आत्मा च नो आत्मा च अवक्तव्यः-आत्मा इति च नो आत्मा इति च१३, तत् केनार्थेन भदन्त! एवमुच्यते-त्रिप्रदेशिकः स्कन्धः स्यात् आत्मा एवमेव उच्चारयितव्यं यावत् स्यात् आत्मा च, नो आत्मा च अवक्तव्यम्-आत्मा इति च, नो आत्मा इति च ? गौतम ! आत्मनः आदिष्टे आत्मा१, परस्य आदिष्टे नो आत्मा२, तदुभयस्य आदिष्टे अवक्तव्यम्-आत्मा इति च, नो आत्मा इति च३, देश आदिष्टः सद्भावपर्यवः देश आदिष्टः असद्भावपर्यवः त्रिप्रदेशिकः स्कन्धः आत्मा च नो आत्मा च४, देश आदिष्टः सद्भावपर्यवः देशौ, आदिष्टौ असद्भावपर्यवौ त्रिप्रदेशिकः स्कन्धः आत्मानौ च नोआत्मानौ च५, देशौ आदिष्टौ सद्भावपर्यवौ देशआदिष्टः असद्भावपर्यवस्त्रिप्रदेशिकः आत्मानौ च नो आत्मा च६, देशे आदिष्टः सद्भावपर्यवो देश आदिष्टस्तदुभयपर्यवस्त्रिप्रदेशिकः स्कन्धः आत्मा च अवक्तव्यः-आत्मा इति च नो आत्मा इति च७, देश आदिष्टः सद्भावपर्यवः, देशौ आदिष्टौ, तदुभयपर्यवौ, त्रिप्रदेशिकः स्कन्धः आत्मा च अवक्तव्यौ आत्मानौ च नो आत्मानौ च८, देशौ आदिष्टौ सद्भावपर्यवौ, देश आदिष्टस्तदुभयपर्यवः त्रिप्रदेशिकः स्कन्धः आत्मानौ च अवक्तव्यः-आत्मा इति च नो आत्मा इति च९, एते त्रयो भङ्गाः९। देश आदिष्टः असद्भावः देश आदिष्टस्तदुभयपर्यवस्त्रिप्रदेशिकः स्कन्धः नो आत्मा च अवक्तव्यः-आत्मा इति च नो आत्मा इति च१०, देश आदिष्टः असद्भावपर्यवो देशौ आदिष्टौ तदुभयपर्यवौ त्रिप्रदेशिकः स्कन्धो नो आत्मा च अवक्तव्यौ आत्मानौ नोआत्मानौ च११, देशौ आदिष्टौ असद्भावपर्यवौ, देश आदिष्टः तदुभयपर्यवस्त्रिप्रदेशिकः स्कन्धो नो आत्मानौ च अवक्तव्यः-आत्मा इति च नो आत्मा इति च१२, देश आदिष्ट सद्भावपर्यवः देश आदिष्टः असद्भावपर्यवः देश आदिष्टस्तदुभयपर्यवस्त्रिप्रदेशिकः स्कन्धः आत्मा च नो आत्मा च अवक्तव्यः-आत्मा इति च नो]

आत्मा इति च१३। तत् तेनार्थेन गौतम! एवमुच्यते त्रिप्रदेशिकः स्कन्धः स्यात् आत्मा तदेव यावत् नो आत्मा इति च।

आत्मा भदन्त! चतुष्प्रदेशिकः स्कन्धः, अन्यः पृच्छा, गौतम! चतुष्प्रदेशिकः स्कन्धः स्यात् आत्मा१, स्यात् नो आत्मा२, स्यात् अवक्तव्यम्–आत्मा इति च नो आत्मा इति च३, स्यात् आत्मा च नो आत्मा च१, स्यात् आत्मा च नो आत्मानश्च२, स्यात् आत्मानश्च नो आत्मा च३, स्यात् आत्मानौ च नो आत्मानौ च४, स्यात् आत्मा च अवक्तव्यम् आत्मा इति च नो आत्मा इति च१, स्यात् आत्मा च अवक्तव्यः आत्मानश्च नो आत्मानश्च २, स्यात् आत्मानश्च अवक्तव्यः–आत्मा इति च नो आत्मा इति च३, स्यात् आत्मानौ च अवक्तव्यौ आत्मानौ च नो आत्मानौ च ४। (८) स्यात् नो आत्मा च अवक्तव्यम्–आत्मा इति च नो आत्मा इति च१, स्यात् नो आत्मा अवक्तव्यौ–आत्मानौ च नो आत्मानौच२, स्यात् नो आत्मानश्च अवक्तव्यः–आत्मा इति च नो आत्मा इति च३, स्यात् नो आत्मानश्च अवक्तव्याः–आत्मानौ च नो आत्मानौ च ४। (१२×३–१५) स्यात् आत्मा च नो आत्मा च अवक्तव्यम्–आत्मा इति च नो आत्मा इति च १६, स्यात् आत्मा च नो आत्मा च अवक्तव्याश्च आत्मानश्च नो आत्मानश्च१७ स्यात्–आत्मा च नो आत्मानश्च अवक्तव्यम्–आत्मा इति च नो आत्मा इति च१८, स्यात् आत्मानश्च नो आत्मा च अवक्तव्यम्–आत्मा इति च नो आत्मा इति च १९, तत् केनार्थेन भदन्त! एवमुच्यते चतुष्प्रदेशिकः स्कन्धः स्यात् आत्मा च नो आत्मा च अवक्तव्यम् 'तंचेव' स एव अर्थः प्रत्युच्चारियितव्यः? गौतम! आत्मनः आदिष्टे आत्मा१, परस्य आदिष्टे नोआत्मा२, तदुभयस्य आदिष्टे अवक्तव्यम्–आत्मा इति च नो आत्मा इति च३, देश आदिष्टः सद्भावपर्यवः, देश आदिष्टः असद्भावपर्यवः१, चतुर्भङ्गी,४ सद्भावपर्यवेण तदुभयेन च चतुर्भङ्गी४, असद्भावेन तदुभयेन च चतुर्भङ्गी४, देश आदिष्टः सद्भावपर्यवः, देश आदिष्टः असद्भावपर्यवः, देश आदिष्टः तदुभयपर्यवश्चतुष्प्रदेशिकः स्कन्धः आत्मा च नो आत्मा च अवक्तव्यम्–आत्मा इति च नो आत्मा इति च१६, देश आदिष्टः सद्भावपर्यवः, देश आदिष्टः असद्भावपर्यवः, देशा आदिष्टाः तदुभयपर्यवाः, चतुष्प्रदेशिकः स्कन्धो भवति, आत्मा च नो आत्मा च अवक्तव्यानि–आत्मानश्च नो आत्मानश्च१७, देश आदिष्टः सद्भावपर्यवः, देशा आदिष्टा

असद्भावपर्यवाः, देश आदिष्टस्तदुभयपर्यवश्चतुष्प्रदेशिकः स्कन्धः आत्मा च नो आत्मानश्च अवक्तव्यः-आत्मा इति च नो आत्मा इति च१८, देशाः आदिष्टाः सद्भावपर्यवाः देश आदिष्टः असद्भावपर्यवः, देश आदिष्टस्तदुभयपर्यवः चतुष्प्रदेशिकः स्कन्धः आत्मानश्च नो आत्मा च अवक्तव्यः-आत्मा इति च नो आत्मा इति च१९ तत् तेनार्थेन गौतम ! एवमुच्यते चतुष्प्रदेशिकः स्कन्धः स्यात् आत्मा, स्यात् नो आत्मा, स्यात् अवक्तव्यम्- निक्षेपः, ते चैव भङ्गा उच्चारयितव्याः, यावत् नो आत्मा इति च ।

आत्मा भदन्त ! पञ्चप्रदेशिकः स्कन्धः, अन्यः पञ्चप्रदेशिकः स्कन्धः ? गौतम ! पञ्चप्रदेशिकः स्कन्धः स्यात् आत्मा १, स्यात् नो आत्मा२, स्यात् अवक्तव्यम्-आत्मा इति च, नो आत्मा इति च३, स्यात् आत्मा च नो आत्मा च४ स्यात् आत्मा च५, नो आत्मा च अवक्तव्येन च४, त्रिकसंयोगे एको नि पतति, तत् केनार्थेन भदन्त! तदेव मस्युच्चारयितव्यम् ? गौतम ! आत्मनः आदिष्टे आत्मा१ परस्य आदिष्टे नो आत्मा२ तदुभयस्य आदिष्टे अवक्तव्यम्३ देश आदिष्टः सद्भावपर्यवः देश आदिष्टः असद्भावपर्यव, एवं द्विकसंयोगे सर्वे पतन्ति, त्रिकसंयोगे एको न पतति२, षट्प्रदेशिके सर्वे पतन्ति३२, यथा षट्प्रदेशिके एवं यावत् अनन्तप्रदेशिके, तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति यावत् विहरति ॥सू. ३॥

दशमोद्देशकः समाप्तः, द्वादशं शतकं समाप्तम् ।

टीका—आत्माधिकाराद् रत्नप्रभादिभावान् आत्मत्वानात्मत्वरूपेण प्ररूपयितुमाह-'आया भंते ! रयणप्पभापुढवी, अन्ना रयणप्पभापुढवी?' गौतमःपृच्छति हे भदन्त ! किं रत्नप्रभापृथिवी आत्मा-अतति-सततं गच्छति तांस्तान् पर्यायान्

रत्नप्रभादि विशेष वक्तव्यता—

'आया भंते ! रयणप्पभा पुढवी' इत्यादि ।

टीकार्थ—सूत्रकार ने इस सूत्र द्वारा आत्माधिकार होने के कारण रत्नप्रभा आदि भावों की आत्मारूप से प्ररूपणा की हैं-इसमें गौतम ने प्रभु से ऐसा पूछा है-, आया भंते ! रयणप्पभापुढवी, अन्ना रयणप्पभापुढवी' हे भदन्त ! रत्नप्रभापृथिवी असद्रूप है ? यहां "अतति सततं

—રત્નપ્રભાદિ વિશેષ વક્તવ્યતા—

"आया भंते ! रयणप्पभा" इत्यादि—

ટીકાર્થ—આત્માનો અધિકાર ચાલી રહ્યો છે, તેથી સૂત્રકારે આ સૂત્ર દ્વારા રત્નપ્રભા આદિ ભાવોની આત્મારૂપે અને અનાત્મા રૂપે પ્રરૂપણા કરી છે—

ગૌતમ સ્વામી આ વિષયને અનુલક્ષીને મહાવીર પ્રભુને એવો પ્રશ્ન પૂછે છે કે—"आया भंते ! रयणप्पभापुढवी, अन्ना रयणप्पभापुढवी ?" હે ભગવન્! રત્નપ્રભા પૃથ્વી સદ્રૂપ છે કે અસદ્રૂપ છે ?

इत्यात्मा सद्रूपा वर्तते ? किंवा अन्य-अनात्मा तद्भिन्ना असद्रूपा रत्नप्रभा पृथिवी वर्तते ? इति प्रश्नः। भगवानाह-'गोयमा ! रयणप्पभा पुढवी सिय आया, सिय नो आया, सिय अवत्तव्वं आयाइय नो आयाइय' हे गौतम ! रत्नप्रभा पृथिवी स्यात् आत्मा-कदाचित् सद्रूपा भवति, स्यात्कदाचित् नो आत्मा-तद्भिन्ना असद्-रूपा भवति, स्यात्कदाचित्, अवक्तव्यम् आत्मत्वेन अनात्मत्वेन च सद्रूपत्वेन असद्रूपत्वेन चेत्यर्थः एकसमयावच्छेदेन व्यपदेष्टुमशक्यं वस्तु वर्तते, तस्या अव-

---

गच्छति तान् तान् पर्यायान्" जो निरन्तर उन२ पर्यायों को प्राप्त करता है वह आत्मा है-इस व्युत्पत्ति के अनुसार आत्मा शब्द का अर्थ सद्रूप है-क्योंकि सद्रूप पदार्थ ही उन२ पर्यायों को प्राप्त करता है असद्रूप पदार्थ नहीं। अतः यहां जो ऐसा प्रश्न गौतम ने प्रभु से किया है वह स्याद्वाद दृष्टि को लक्ष्य में रखकर किया है। इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-'गोयमा' हे गौतम! 'रयणप्पभापुढवी सिय आया, सिय नो आया, सिय अवत्तव्वं आयाइय नो आयाइय' रत्नप्रभा पृथिवी स्यात् कथंचित् आत्मा-सद्रूप है और कथंचित् वह असद्रूप है तथा आत्मा अनात्मारूप से एकसमयावच्छेदेन वक्तुं अशक्य होने के कारण वही अवक्तव्य भी है। तात्पर्य कहने का यह है कि शब्दों की प्रवृत्ति युगपत् नहीं होती है-क्रमशः होती है-इस कारण एक ही काल में वह आत्मा एवं अना-त्मारूप से व्यपदिष्ट नहीं हो सकती है इस कारण वह कथंचित् अवक्त-

---

અહીં "अतति सततं गच्छति तान् तान् पर्यायान्" "જે નિરન્તર તે તે પર્યાયોને પ્રાપ્ત કરે છે તે આત્મા છે," આ વ્યુત્પત્તિ અનુસાર "આત્મા" પદનો અર્થ "સદ્રૂપ" થાય છે, કારણ કે સદ્રૂપ પદાર્થ જ તે તે પર્યાયોની પ્રાપ્તિ કરે છે. અસદ્રૂપ પદાર્થ તે તે પર્યાયોની પ્રાપ્તિ નથી કરતો તેથી ગૌતમ સ્વામીએ અહીં જે પ્રશ્ન પૂછયો છે, તે સ્યાદ્વાદ દૃષ્ટિને ધ્યાનમાં રાખીને કર્યો છે.

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-"गोयमा !" હે ગૌતમ ! "रयणप्पभापुढवी सिय आया, सिय नो आया, सिय अवत्तव्वं आयाइय नो आयाइय" રત્નપ્રભા પૃથ્વી કથંચિત્ (અમુક અપેક્ષાએ વિચાર કરતા) સદ્રૂપ (આત્મારૂપ) છે અને કથંચિત્ અસદ્રૂપ છે તથા આત્મા અનાત્મારૂપે એક સમયાવચ્છેદેન વક્તું (કહેવાને) અશક્ય હોવાને કારણે તે અવક્તવ્ય પણ છે. આ કથનનું તાત્પર્ય એ છે કે શબ્દોની પ્રવૃત્તિ-ઉત્પત્તિ એક સાથે થતી નથી, ક્રમશઃ થાય છે, તે કારણે એક જ કાળે તેને આત્મા અને અનાત્મારૂપે વ્યપદિષ્ટ (વ્યક્ત) કરી શકાતી નથી. આ કારણે તેને કથંચિત્ અવક્તવ્ય કહેવામાં આવેલ છે-સર્વથા અવક્તવ્ય

क्तव्यतामेवाह-आत्मा इति च, नो आत्मा इति च युगपद् वक्तुमशक्यमिति भावः। गौतमस्तत्र कारणं पृच्छति-'से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ-रयणप्पभा पुढवी सिय आया, सिय नो आया, सिय अवत्तव्वं आयाइय नो आयाइय?' हे भदन्त! तत्-अथ, केनार्थेन एवमुच्यते-रत्नप्रभा पृथिवी स्यात् आत्मा-सद्रूपा, स्यात् नो आत्मा-असद्रूपा, स्यात् अवक्तव्यम्-युगपत् आत्मा इति च, नो आत्मा इति च शब्देन वक्तुमशक्यं वस्त्विति? भगवान् हेतुं प्रतिपादयति-'गोयमा! अप्पणो आइट्ठे आया, परस्स आइट्ठे नो आया, तदुभयस्स आइट्ठे अवत्तव्वं रयणप्पभापुढवी आयाइय नो आयाइय' हे गौतम! आत्मनः स्वस्याः रत्नप्रभाया एव वर्णादि-पर्यायैः आदिष्टे-आदेशे सति-वर्णादिपर्यायैर्व्यपदिष्टा सतीत्यर्थः आत्मा भवति स्वपर्यायापेक्षया सद्रूपा भवतीत्यर्थः, परस्य-शर्कराप्रभादिपृथिव्यन्तरस्य

व्य है-सर्वथा नहीं। नहीं तो 'अवक्तव्य' इस शब्द द्वारा भी वह निर्दिष्ट नहीं हो सकती। अब इसी बात को जानने के लिये गौतम स्वामी प्रभु से कारण पूछते हैं-'से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ, रयणप्पभापुढवी सिय आया, सियं नो आया, सिय अवत्तव्वं आयाइय नो आयाइय' हे भदन्त! आपने जो रत्नप्रभा पृथिवी को सद्रूप और असद्रूप तथा अवक्तव्य रूप कहा है-सो इसमें कारण क्या है? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-'गोयमा' हे गौतम! 'अप्पणो आइट्ठे आया, परस्स आइट्ठे नो आया, तदुभयस्स आइट्ठे अवत्तव्वं रयणप्पभापुढवी आयाइय नो आयाइय' रत्नप्रभा पृथिवी अपनी ही वर्णादि-रूप पर्यायों से आदिष्ट होती है-अपने गुणों की अपेक्षा लेकर जब कथित की जाती है-तब वह अपनी पर्यायों की अपेक्षा से ही-सद्रूप होती हैं, दूसरों की-शर्करादि पृथिवि-

---

કહેલ નથી નહીં તો "अवक्तव्य" આ શબ્દ દ્વારા પણ તેનો નિર્દેશ કરી શકાય નહી હવે એજ વાતને જાણવા માટે ગૌતમ સ્વામી મહાવીર પ્રભુને કારણ પૂછે છે-"से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ, रयणप्पभापुढवी सिय आया, सिय नो आया, सिय अवत्तव्वं आयाइय नो आयाइय" હે ભગવન્! આપે રત્નપ્રભા પૃથ્વીને સદ્રૂપ, અને અસદ્રૂપ તથા અવક્તવ્ય રૂપ શા કારણે કહી છે?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-"गोयमा!" હે ગૌતમ! "अप्पणो आइट्ठे आया, परस्स आइट्ठे नो आया, तदुभयस्स आइट्ठे अवत्तव्वं रयणप्पभापुढवी आयाइय नो आयाइय" રત્નપ્રભા પૃથ્વીનો તેની વર્ણાદિ રૂપ પર્યાયોની અપેક્ષાએ જ્યારે વિચાર કરવામાં આવે-તેના ગુણોની અપેક્ષાએ જો તેનું કથન કરવામાં આવે, તો તે સદ્રૂપ હોય છે, અન્ય શર્કરાદિ પૃથ્વીઓની વર્ણાદિ રૂપ

पर्यायैः आदिष्टे-आदेशे सति-तैर्व्यपदिष्टा सती नो आत्मा-अनात्मा भवति, परूपापेक्षया असद्रूपा भवतीति भावः, तदुभयस्य-तयोः स्वपरयोरुभयं तदेव वोभयं तदुभयं तद्द्वयस्य पर्यायैः आदिष्टे-आदेशे सति, तदुभयपर्यायै र्व्यपदिष्टा सतीत्यर्थः अवक्तव्यम् अवाच्यं वस्तु स्यात्, तथाहि रत्नप्रभा पृथिवी आत्मा-सद्रूपा इति च वक्तुमशक्या तस्याः परपर्यायापेक्षयाऽनात्मत्वात्, नापिनो आत्मा अनात्मा असद्रूपा इति च वक्तुं शक्या स्वपर्यायापेक्षया तस्या आत्मत्वात्, इत्यतः अवक्तव्यमिति, अवक्तव्यत्वं चात्रात्मानात्मशब्दापेक्षयैव बोध्यं नतु सर्वथा, अवक्तव्य-

योंकी वर्णादिरूप पर्यायों की अपेक्षा से वह सद्रूप नहीं होती है, उनकी अपेक्षा से तो आदिष्ट होने पर वह नो आत्मा-असद्रूप होती है२ तथा जब इन दोनों पर्यायों को युगपत् कहने की अपेक्षा से उसका विचार किया जाता-है-तब वह सद्रूप और असद्रूप दोनों पर्यायों के द्वारा वह अवक्तव्य हो जाती है क्योंकि उसमें ये दोनो धर्म हैं-जब एक ही समय में इन दोनों धर्मों का उसमें प्रतिपादन करने का प्रयत्न किया जावेगा-तो वह बात युगपत् कैसे बन सकती है? कारण शब्दों की प्रवृत्ति तो क्रमशः ही होगी-जब उसमें सद्रूपता का कथन किया जावेगा तब वह असद्रूपता के कथन से रहित हो जावेगी और असद्रूपता के कथन में सद्रूपता के कथन से तात्पर्य कहने का यही हैं कि सद्रूप और असद्रूप इन दोनों धर्मों से युक्त होने पर भी वह सद्रूपत्व और असद्रूपत्व प्रतिपादक शब्दों से एक काल में वाच्य नहीं हो सकती है। यहां जो

પર્યાયોની અપેક્ષાએ તે સદ્રૂપ હોતી નથી, તેમની અપેક્ષાએ આદિષ્ટ (કથિત) કરવામાં આવે તો તેનો આત્મા (અસદ્રૂપ) હોય છે. અને જ્યારે આ બન્ને પર્યાયોને એક સાથે કહેવાની અપેક્ષાએ તેનો વિચાર કરવામાં આવે, ત્યારે તે સદ્રૂપ અને અસદ્રૂપ, આ બન્ને પર્યાયો દ્વારા અવક્તવ્ય થઈ જાય છે, કારણ કે તેમાં એ બન્ને ધર્મ છે-જ્યારે એક જ સમયે આ બન્ને ધર્મોનું તેમાં પ્રતિપાદન કરવાનો પ્રયત્ન કરવામાં આવે, ત્યારે તે વાત યુગપત્ (એક સાથે) કેવી રીતે સંભવી શકે? કારણ કે શબ્દોની પ્રવૃત્તિ તો ક્રમશઃ જ થશે-જ્યારે તેમાં સદ્રૂપતાનું કથન કરવામાં આવશે, ત્યારે તે અસદ્રૂપતાના કથનથી રહિત થઈ જશે, અને જ્યારે તેમાં અસદ્રૂપતાનું કથન કરવામાં આવશે, ત્યારે તે સદ્રૂપતાથી રહિત થઈ જશે આ કથનનું તાત્પર્ય એ છે કે રત્નપ્રભા પૃથ્વી સદ્રૂપ અને અસદ્રૂપ આ બન્ને ધર્મોથી યુક્ત હોવા છતાં પણ તે સદ્રૂપત્વ અને અસદ્રૂપત્વ પ્રતિપાદક શબ્દો વડે એક કાળે

शब्देनैव तस्याः उच्यमानत्वात्, अनभिलाप्य भावानामपि भावपदार्थवस्तुप्रभृति शब्दैरनभिलाप्यशब्देन वा अभिलाप्यत्वात् । प्रकृतमुपसंहरन्नाह–' से तेणट्ठेणं तं चेव जाव नो आयाइ य ' तत्–अथ, तेनार्थेन, तदेव–पूर्वोक्तरीत्यैव, यावत् एवमुच्यते रत्नप्रभापृथिवी स्यात् आत्मा, स्यात् नो आत्मा, स्यात् अवक्तव्या–आत्मा इति च, नो आत्मा–अनात्मा इति चेति भावः, गौतमः पृच्छति आया भंते ! सक्करप्पभापुढवी ' हे भदन्त ! किं शर्कराप्रभा पृथिवी आत्मा सद्रूपा भवति, किंवा अन्या–अनात्मा–असद्रूपा भवति ? भगवानाह–जहा रयणप्पभा पुढवी

अवाच्यता रत्नप्रभा पृथिवी में कही गई है वह सद्रूपत्व और असद्रूपत्व को आत्मत्व आनात्मत्व शब्द को लेकर ही कही गई जाननी चाहिये सर्वथा नहीं, नही तो वह अवाच्य शब्द से भी वहां वाच्यता नहीं हो सकेगी यहां आत्म अनात्म शब्दों द्वारा ही अवाच्यता कही गई जाननी चाहिये जैसे–जो पदार्थ अनभिलाप्य होते हैं वे भावपदार्थ, वस्तु, आदि शब्दों से या अनभिलाप्य इस शब्द से अभिलाप्य होते हैं। 'से तेणट्ठेणं तंचेव जाव नो आयाइय' इसी कारण हे गौतम ! मैंने ऐसा कहा है कि रत्नप्रभा पृथिवी किसी अपेक्षा सद्रूप है, किसी अपेक्षा असद्रूप है और किसी अपेक्षा–सद्–असद् इन शब्दों द्वारा युगपत् प्रतिपादित नहीं की जा सकने के कारण–वह अवक्तव्य भी है६। अब गौतम प्रभु से ऐसा पूछते हैं–'आया भंते ! सक्करप्पभापुढवी' हे भदन्त ! शर्करा-प्रभानाम की जो पृथिवी है वह क्या सद्रूप है, या असद्रूप है ?–इसके

वाच्य होई शकती नथी अहीं रत्नप्रभा पृथ्वीमां जे अवाच्यता कहेवामां आवी छे ते आत्मत्व (सद्रूपत्व) अने अनात्मत्व (असद्रूपत्व) शब्दोनी अपेक्षाओ ज कहेवामां आवी छे, एम समजवुं–सर्वथा अवाच्यता प्रकट करवामां आवी नथी नहीं तो ते अवाच्य शब्द द्वारा पण त्यां वाच्यता थई शकशे नहीं; तेथी अहीं आत्म अनात्म शब्दो द्वारा ज अवाच्यता कहेवामां आवी छे, एम समजवुं जोईओ जेम के जे पदार्थो अनभिलाप्य होय छे, तेओ भावपदार्थ, वस्तु, आदि शब्दो वडे अथवा 'अनभिलाप्य' आ शब्द वडे अभिलाप्य थाय छे. "से तेणट्ठेणं तंचेव जाव नो आयाइय" हे गौतम ! ते कारणे में एवुं कह्युं छे के रत्नप्रभा पृथ्वी अमुक अपेक्षाओ सद्रूप छे, अमुक अपेक्षाओ असद्रूप छे' अने अमुक अपेक्षाओ (सद्–असद् आ बन्ने शब्दो द्वारा एक साथे प्रतिपादित नहीं करी शकावाने कारणे) अवक्तव्य पण छे.

गौतम स्वामीनो प्रश्न–"आया भंते ! सक्करप्पभा पुढवी" इत्यादि– हे भगवन् ! शर्करा प्रभा नामनी जे पृथ्वी छे ते सद्रूप छे के असद्रूप छे ?

तहा सक्करप्पभाएवि' हे गौतम ! यथा रत्नप्रभा पृथिवी उक्ता तथा शर्कराप्रभायाः पृथिव्यां अपि वक्तव्या बोध्या तथा च शर्कराप्रभा पृथिव्यपि स्यादात्मा स्यात् नोआत्मा, स्यात् अवक्तव्या-आत्मा इति च नो आत्मा इति च शब्देन युगपद् व्यपदेष्टुमशक्या इति भावः, 'एवं जाव अहे सत्तमा' 'एवं-पूर्वोक्तरीत्या, यावत् वालुकाप्रभा, पङ्कप्रभा, धूमप्रभा, तमःप्रभा, अधःसप्तमी पृथिवी चापि स्यात् आत्मा, स्यात् नो आत्मा, स्यात् अवक्तव्या-आत्मा इति च नो आत्मा इति च युगपद् वक्तुम् अशक्या। गौतमः पृच्छति-'आया भंते ! सोहम्मे कप्पे

उत्तरमें प्रभु कहते हैं-जहा रयणप्पभापुढवी तहा सक्करप्पभाए वि' हे गौतम ! जैसा-कथन रत्नप्रभा पृथिवी के विषय में सद्रूपता और असद्रूपता को लेकर किया गया है वैसा ही कथन शार्कराप्रभापृथिवीके संबंध में भी सद्रूपता और असद्रूपता को लेकर करना चाहिये तथा-शार्करा प्रभापृथिवी भी कथंचित् सद्रूप है, कथंचित् आत्मा एवं अनात्मा इन शब्दोद्वारो वह युगपत् वक्तुं अशक्य होने के कारण वह अवक्तव्य भी है६'एवं जाव अहे सत्तमा' इसी प्रकार का कथन वालुकाप्रभा, पङ्कप्रभा धूमप्रभा तमःप्रभा और अधः सप्तमी पृथिवी के संबंध में भी जानना चाहिये अर्थात् ये सब पृथिवियां कथंचित् सद्रूप, कथंचित् असद्रूप और कथंचित् आत्मा नो आत्मा इन शब्दों द्वारा युगपत् वक्तुं अशक्य होने के कारण अवक्तव्य भी हैं। अब गौतम स्वामी प्रभु से पूछते हैं-'आया भंते ! सोहम्मे कप्पे

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-"जहा रयणप्पभा पुढवी तहा सक्करप्पभाए वि" હે ગૌતમ ! જેવું કથન રત્નપ્રભા પૃથ્વીની સદ્રૂપતા અને અસદ્રૂપતાના વિષયમાં કરવામાં આવ્યું છે, એવું જ કથન શર્કરાપ્રભા પૃથ્વીના વિષયમાં પણ સદ્રૂપતા અને અસદ્રૂપતાને અનુલક્ષીને થવું જોઇએ જેમ કે-શર્કરાપ્રભા પૃથ્વી પણ અમુક અપેક્ષાએ સદ્રૂપ છે, અમુક અપેક્ષાએ અસદ્રૂપ છે અને અમુક અપેક્ષાએ અવક્તવ્ય પણ છે. અવક્તવ્ય હોવાનું કારણ એ છે કે-આત્મા અને અનાત્મા, આ બન્ને શબ્દો દ્વારા એક સાથે વક્તું (વ્યક્ત થવાને) અશક્ય હોવાને કારણે તે અવક્તવ્ય પણ છે. "एवं जाव अहे सत्तमाए" એજ પ્રકારનું કથન વાલુકાપ્રભા, પંકપ્રભા, ધૂમપ્રભા, તમઃપ્રભા, અને અધઃસપ્તમી પૃથ્વીના સંબંધમાં પણ જાણવું જોઈએ એટલે કે આ બધી- પૃથ્વીઓ પણ અમુક અપેક્ષાએ સદ્રૂપ છે, અમુક અપેક્ષાએ અસદ્રૂપ છે અને આત્મા અને અનાત્મા, આ બે શબ્દો દ્વારા એક સાથે વ્યક્ત થઈ શકે તેમ ન હોવાને કારણે અવક્તવ્ય પણ છે.

पुच्छा ' हे भदन्त ! सौधर्मः कल्पः किम् आत्मा-सदूरूपः किं वा अन्यः अनात्मा असदूरूपो वर्तते ? इति पृच्छा भगवानाह-' गोयमा ! सोहम्मे कप्पे सिय आया, सिय नोआया जाव नो अवाइयं ' हे गौतम ! सौधर्मः कल्पः स्यात् आत्मा सदूरूपः, स्यात् नो आत्मा-अनात्मा-असदूरूपः, यावत्-स्यात् अवक्तव्यः-आत्मा इति च नो आत्मा-अनात्मा इति च शब्देन युगपदूव्यदेष्टुमशक्यः। गौतमस्तत्र कारणं पृच्छति-' से केणट्ठेणं भंते ! जाव नो आयाइय ? ' हे भदन्त ! तत् अथ, केनार्थेन, यावत् एवमुच्यते सौधर्मः कल्पः स्यात् आत्मा, स्यात् नोआत्मा स्यात् अवक्तव्यः आत्मा इति च, नो आत्मा इति च शब्देन युगपदूव्यपदेष्टु मशक्यः इति भगवानाह-' गोयमा ! अप्पणो आइट्ठे आया परस्स आइट्ठे नो आया, तदुभयस्स

पुच्छा' हे भदन्त ! सौधर्मकल्प आत्मा-सदूरूप है या नो आत्मा-असदूरूप हैं? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-'गोयमा ! सोहम्मे कप्पे सिय आया, जाव नो आयाइय' हे गौतम ! सौधर्मकल्प कथंचित् आत्मा-सदूरूप है, कथंचित् नो आत्मा-असदूरूप है और आत्मा नो आत्मा शब्दों से वह युगपत् वाच्य न होसकने के कारण कथंचित् अवाच्य भी है३ अब गौतम इस विषय में कारण जानने की इच्छा से प्रभु से ऐसा पूछते हैं -'से केणट्ठेणं भंते ! जाव नो आयाइय' हे भदन्त ! आप ऐसा किस कारण से कहते हैं कि सौधर्मकल्प कथंचित् सदूरूप हैं, कथंचित् असदूरूप है, और आत्मा नोआत्मा इन शब्दों द्वारा युगपत् अवाच्य होने के कारण वह कथंचित् अवक्तव्य भी है? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-'गोयमा ! अप्पणो आइट्ठे नो आया, परस्स आइट्टे नो आया, तदुभय-

---

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-"आया भंते ! सोहम्मे कप्पे पुच्छा" હે ભગવન્ ! સૌધર્મકલ્પમાં આત્મા-સદ્રૂપ છે કે નો આત્મા-અસદ્રૂપ છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-"गोयमा ! सोहम्मे कप्पे सिय आया, सिय नो आया, जाव नो आयाइय" હે ગૌતમ! સૌધર્મકલ્પ અમુક અપેક્ષાએ સદ્રૂપ છે, અમુક અપેક્ષાએ અસદ્રૂપ છે, અને આત્મા, નો આત્મા, આ બન્ને શબ્દો વડે એક સાથે વાચ્ય નહીં થઈ શકવાને કારણે અવક્તવ્ય પણ છે.

તેનું કારણ જાણવા માટે ગૌતમ સ્વામી મહાવીર પ્રભુને આ પ્રકારનો પ્રશ્ન પૂછે છે "से केणट्ठेण भंते ! जाव नो आयाइय" હે ભગવન્ ! આપ શા કારણે એવું કહો છો કે સૌધર્મકલ્પ કથંચિત્ (અમુક અપેક્ષાએ) સદ્રૂપ છે, કથંચિત્ અસદ્રૂપ છે, અને આત્મા નો આત્મા, આ બે શબ્દો દ્વારા એક સાથે અવાચ્ય હોવાને કારણે કથંચિત્ અવક્તવ્ય છે? તેનો ઉત્તર આપતા મહાવીર પ્રભુ કહે છે કે-"गोयमा ! अप्पणो आइट्ठे आया, परस्स

आइट्ठे अवत्तव्वं आयाइय नो आयाइय' हे गौतम ! आत्मनः स्वस्य सौधर्मकल्पस्य वर्णादिपर्यायैः आदिष्टे-आदेशे सति तै र्व्यपदिष्टः सन् सौधर्मः कल्पः आत्मा भवति-स्वपर्यायापेक्षया सद्रूपो भवतीत्यर्थः, परस्य-ईशानादिकल्पान्तरस्य पर्यायैः आदिष्टे-आदेशे सति तैर्व्यपदिष्टः सन् नोआत्मा-अनात्मा भवति, परपर्यायापेक्षया असद्रूपो भवतीत्यर्थः, तदुभयस्य पर्यायैः आदिष्टे-आदेशे सति तदुभयस्स आइट्ठे नो अवत्तव्वं आयाइय नो आयाइय' हे गौतम ! सौधर्मकल्पसंबंधी वर्णादिपर्यायों से व्यपदिष्ट होने पर कथंचित् आत्मा-सद्रूप है, कथंचित्-ईशानादि कल्पान्तर की अपेक्षा से वह नो आत्मा-असद्रूप है, अर्थात् परपर्यायों की अपेक्षा से वह अनात्मरूप है, तथा तदुभयपर्यायों से आदिष्ट होने पर वह अवक्तव्य भी है६, तृतीयभंग में जो वह कथंचित् अवक्तव्य कहा गया है-उसका कारण यह है कि वह आत्मा है इस रूप से वक्तुं शक्य नहीं हो सकता हैं क्योंकि वह उस समय परपर्याय की अपेक्षा नोआत्मा भी है, और वह नोआत्मा है ऐसा भी उस समय नहीं कहा जा सकता है, क्योंकि वह स्वपर्यायों की अपेक्षा से सद्रूप भी है। अतः इन शब्दों द्वारा वह युगपत् अवाच्य होने के कारण कथंचित् अवक्तव्य कहा गया है। इसी प्रकार से ईशान सनत्कुमार, माहेन्द्र, ब्रह्म, लान्तक, महाशुक्र, सहस्रार, आनत, प्राणत, आरण, अच्युत, ये कल्प भी कथंचित् सद्रूप है, कथंचित् नोआत्मा-

---

आइट्ठे नो आया, तदुभयस्स आइट्ठे अवत्तव्वं आयाइय नो आयाइय" हे "गौतम ! सौधर्मकल्प पोतानी सौधर्मकल्पसंबंधी वर्णादि पर्यायोनी अपेक्षाओ व्यपदिष्ट (कथित) थाय त्यारे आत्मा-सद्रूप छे, ईशानादि कल्पान्तरोनी अपेक्षाओ व्यपदिष्ट थाय त्यारे नो आत्मा-असद्रूप छे. एटले के पर पर्यायोनी अपेक्षाओ ते अनात्मरूप छे. तथा तदुभय (स्व अने पर) पर्यायोनी अपेक्षाओ आदिष्ट (कथित) थाय त्यारे ते अवक्तव्य पण छे. तेनुं कारण ओ छे के-ते आत्मा छे ओवुं कही शकाय नहीं, कारण के ते समये पर पर्यायनी अपेक्षाओ ते नोआत्मारूप पण छे. ते नोआत्मा छे, ओवुं पण ते समये कही शकाय नहीं, कारण के ते स्वपर्यायनी अपेक्षाओ सद्रूप पण छे तेथी आत्मा अने अनात्मा शब्दो वडे एक साथे अवाच्य होवाने कारणे तेने कथंचित् अवक्तव्य पण कहुं छे. एज प्रमाणे ईशान, सनत्कुमार, माहेन्द्र, ब्रह्म, लान्तक, महाशुक, सहस्रार, आरण, आनत, प्राणत अने अच्युत कल्पो पण कथंचित् सद्रूप छे, कथंचित् असद्रूप छे

पर्यायैः व्यपदिष्टः सन् अवक्तव्यः स्यात्–तथाहि–नहि असौ आत्मेति च वक्तुं शक्यः परपर्यायापेक्षया तस्य अनात्मत्वात्, नापि अनात्मेति च वक्तुं शक्यः स्वपर्यायापेक्षया तस्य आत्मत्वात् इति भावः, तदुपसंहरन्नाह–'से तेणट्ठेणं तं चेव जाव नो आयाइयं, एवं जाव अच्चुए कप्पे' तत्–अथ तेनार्थेन, तदेव–पूर्वोक्तरीत्यैव, यावत्–सौधर्मः कल्पः स्यात् आत्मा, स्यात् नो आत्मा, स्यात् अवक्तव्यः–आत्मा इति च, नो आत्मा इति, च शब्देन युगपद् व्यपदेष्टुमशक्यः, एवं रीत्या यावत्–ईशानसनत्कुमारमाहेन्द्रब्रह्म–लान्तक–महाशुक्र–सहस्रारा–णानतप्राणताच्युतकल्पः स्यात् आत्मा, स्यात् नो आत्मा, स्यात् अवक्तव्यः–आत्मेति च; नो आत्मेति च शब्देन युगपद् व्यपदेष्टुमशक्यः इति भावः। गौतमः पृच्छति–'आया भंते! गेविज्जविमाणे अन्ने गेविज्जविमाणे' हे भदन्त! ग्रैवेयक-विमानः किम् आत्मा सद्रूपो वर्तते? किंवा अन्यः अनात्मा–असद्रूपो ग्रैवेयक-विमानो वर्तते? भगवानाह–'एवं जहा रयणप्पभा तहेव, एवं अणुत्तरविमाणा वि, एवं ईसिपब्भारा वि' एवं–पूर्वोक्तरीत्या, यथा रत्नप्रभा पृथिवी उक्ता, तथैव ग्रैवेयकविमानोऽपि वक्तव्यः, तथा च ग्रैवेयकविमानः स्यात् आत्मा, स्यात् नो

असद्रूप है और आत्मा नो आत्मा इन शब्दों द्वारा युगपत् अवक्तव्य होने का कारण कथंचित्–अवक्तव्य भी है। अब गौतम स्वामी प्रभु से ऐसा पूछते हैं–'आया भंते। गेविज्जविमाणे– अन्ने गेविज्जमाणे' हे भदन्त! ग्रैवेयक विमान सद्रूप है या असद्रूप है? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं–'एवं जहा रयणप्पभा तहेव, अनुत्तरविमाणा वि–एवं ईसिपब्भारा वि' हे गौतम! जैसा रत्नप्रभा पृथिवी के विषय में कहा जा चुका है, उसी प्रकार से ग्रैवेयक–विमान के विषय में कहना चाहिये तथाच–ग्रैवेयक विमान कथंचित् सद्रूप है, कथंचित् असद्रूप है और कथंचित् अवक्तव्य है क्योंकि वह आत्मा एवं नो आत्मा इन

અને આત્મા–અનાત્મા શબ્દો દ્વારા એક સાથે અવાચ્ય હોવાને કારણે કથંચિત્ અવક્તવ્ય પણ છે.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન–"आया भंते! गेविज्जविमाणे अन्ने गेविज्जमाणे" હે ભગવન્! ગ્રૈવેયક વિમાન સદ્રૂપ છે, કે અસદ્રૂપ છે?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર–"एवं जहा रयणप्पभा तहेव, एवं अणुत्तरविमाणा वि, एवं ईसिपब्भारा वि" હે ગૌતમ! જેવું કથન રત્નપ્રભા પૃથ્વીના વિષયમાં કરવામાં આવ્યું છે, એવું જ કથન ગ્રૈવેયક વિમાન વિષે પણ સમજવું જેમ કે–ગ્રૈવેયક વિમાન અમુક અપેક્ષાએ સદ્રૂપ છે, અમુક અપેક્ષાએ અસદ્રૂપ છે અને અમુક અપેક્ષાએ અવક્તવ્ય છે, કારણ કે આત્મા અને નો આત્મા,

आत्मा, स्यात् अवक्तव्यः-आत्मा इति च, नो आत्मा इति च शब्देन युगपद् वक्तुमशक्यः, एवं-पूर्वोक्तरीत्या, अनुत्तरविमानः-विजयवैजयन्तजयन्ता-पराजितः अपि स्यात् आत्मानः सद्रूपाः, स्यात् नो आत्मानः असद्रूपाः, स्यात् अवक्तव्याः-आत्मान इति च-नो आत्मानः इति च शब्देन युगपद् वक्तुमशक्याः एवं पूर्वोक्तरीत्या, ईषत्प्राग्भारा सिद्धशिला अपि स्यात् आत्मा-सद्रूपा, स्यात् नो आत्मा-असद्रूपा, स्यात् अवक्तव्या-आत्मा इति च नो आत्मा इति च शब्देन युगपद्व्यपदेष्टुमशक्या इति भावः। गौतमः पृच्छति-'आया भंते ! परमाणुपोग्गले, अन्ने परमाणुपोग्गले ?' हे भदन्त! परमाणुपुद्गलः किम् आत्मा सद्रूपः ? किं वा अन्यः-नो आत्मा अनात्मा असद्रूपः परमाणुपुद्गलो वर्तते ? भगवानाह-'एवं जहा सोहम्मे कप्पे तहा परमाणुपोग्गले वि भाणियव्वे' एवं पूर्वोक्तरीत्या यथा सौधर्मः कल्पः उक्तस्तथा परमाणुपुद्गलोऽपि भणितव्यः, तथा च परमाणु-

---

शब्दों द्वारा युगपत् कहा जा नहीं सकता इसी प्रकार का कथन विजय, वैजयन्त, जयन्त, अपराजित सर्वार्थसिद्ध इन अनुत्तर विमानो के विषय में भी कहना चाहिये-अर्थात् ये सब विमान भी कथंचित् सद्रूप है, कथंचित असद्रूप है, और सत् एवं असत् शब्दों से ये युगपत् वाच्य न होने के कारण कथंचित् अवक्तव्य भी है। इसी प्रकार से ईषत्प्राग्भारा पृथिवी अर्थात् सिद्धशिला भी कथंचित् सद्रूप कथंचित् असद्रूप और कथंचित् अवक्तव्य है।

अब गौतम स्वामी प्रभु से पूछते हैं-'आया भंते! परमाणुपोग्गले अन्ने परमाणुपोग्गले' हे भदन्त! परमाणु पुद्गल क्या सद्रूप है या असद्रूप है? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-'एवं जहा सोहम्मे कप्पे तहा परमाणुपोग्गले वि भाणियव्वे' जिस प्रकार पूर्वोक्त रीति

આ શબ્દો વડે એક સાથે તે અવાચ્ય છે. એજ પ્રકારનું કથન વિજય, વૈજયન્ત, જયન્ત, અપરાજિત અને સર્વાર્થસિદ્ધ નામના અનુત્તર વિમાનો વિષે પણ સમજવું એટલે કે તે બધા વિમાનો અમુક અપેક્ષાએ સદ્રૂપ છે, અમુક અપેક્ષાએ અસદ્રૂપ છે અને સત્ અને અસત્ શબ્દો દ્વારા એક સાથે વાચ્ય ન હોવાને કારણે કથંચિત્ અવક્તવ્ય પણ છે એજ પ્રકારનું કથન ઈષત્પ્રાગ્ભારા પૃથ્વી વિષે પણ સમજવું.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-"आया भंते! परमाणुपोग्गले, अन्ने परमाणुपोग्गले?" હે ભગવન્! પરમાણુ પુદ્ગલ શું સદ્રૂપ છે કે અસદ્રૂપ છે?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-"एवं जहा सोहम्मे कप्पे तहा परमाणुपोग्गले वि भाणियव्वे" હે ગૌતમ! સૌધર્મ કલ્પની સદ્રૂપતા આદિ વિષે જેવું

पुद्गलः स्यात् आत्मा सदूरूपः, स्यात् नो आत्मा-असदूरूपो वर्तते, स्यात् अवक्तव्यम्-आत्मा इति च नो आत्मा इति च शब्देन युगपद्व्यपदेष्टुमशक्यः इति भावः, एवं परमाणुपुद्गले असंयोगिनस्त्रयोभङ्गाः३। गौतमः पृच्छति-'आया भंते! दुप्पएसिए खंधे अन्ने दुप्पएसिए खंधे' हे भदन्त! द्विप्रदेशिकः स्कन्धः किम्

के अनुसार सौधर्मकल्प कहा गया है उस प्रकार से परमाणुपुद्गल भी कहना चाहिये तथा परमाणुपुद्गल कथंचित् असदूरूप है और आत्मा एवं नो आत्मा इन शब्दों द्वारा वह युगपत् कहने के लिये अशक्य होने से कथंचित् अवक्तव्य भी है। इस प्रकार परमाणुपुद्गल में ये असंयोगी तीन भंग हैं३। तात्पर्य यह है कि-परमाणुपुद्गल में तीन भंग बनते हैं, यथा कथंचित् आत्मा१ कथंचित् नो आत्मा२ कथंचित्-अवक्तव्य३। अर्थात् अपने स्वरूप की अपेक्षा (अपने वर्णादि पर्याय की अपेक्षा) आत्मा (सदूरूप-विद्यमान) है१। परपर्यायों की अपेक्षा नो आत्मा (अनात्मा-असदूरूप अविद्यमान है२। उभय कि अपेक्षा (स्वपर्याय और परपर्याय कि अपेक्षा अवक्तव्य है३। क्योंकि यदि स्वरूप कहा जावे तो वह परपर्याय कि अपेक्षा सदूरूप नहीं हैं। और यदि असदूरूप कहा जाय तो वह स्वपर्याय की अपेक्षा असदूरूप नहीं है अतः सदूरूप और असदूरूप किसी एक शब्द द्वारा न कहा जा सकने के कारण उसे अवक्तव्य शब्द से कहा गया है। यह अवक्तव्यपन आत्मा और नोआत्मा शब्द कि अपेक्षा से है किन्तु सर्वथा अवक्तव्य नहीं हैं। यदि ऐसा हो तब तो उसे 'अवक्तव्य' शब्द से भी नहीं कहा जासकता है। किन्तु ऐसी दशा में उनका कथन अवक्तव्य' शब्द से किया जाता है। परमाणु पुद्गल में जो ये तीन भंग कहे गये है, वे आगे के द्विप्रदेशी आदि सभी स्कन्धों में सम्पूर्ण स्कंध की अपेक्षा बनते हैं और शेष भंग देशकी अपेक्षा से बनते हैं।

अब गौतम स्वामी प्रभु से ऐसा पूछते हैं-'आया भंते! दुप्पएसिए खंधे अन्ने दुप्पएसिए खंधे' हे भदन्त! द्विप्रदेशिक स्कंध क्या सदूरूप है?

કથન કરવામાં આવ્યું છે, એવું જ કથન પરમાણુ પુદ્ગલના વિષયમાં પણ ગ્રહણ કરવું જોઈએ જેમ કે પરમાણુ પુદ્ગલ કથંચિત્ (અમુક અપેક્ષાએ) સદ્રૂપ છે, કથંચિત્ અસદ્રૂપ છે અને આત્મા, નો આત્મા શબ્દો વડે એકી સાથે અવાચ્ય હોવાને કારણે કથંચિત્ અવક્તવ્ય પણ છે પરમાણુ પુદ્ગલમાં આ ત્રણ અસંયોગી ભંગ સંભવી શકે છે.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-" आया भंते! दुप्पएसिए खंधे अन्ने दुप्पएसिए खंधे?" હે ભગવન્! દ્વિપ્રદેશિક સ્કંધ શું સદ્રૂપ છે કે અસદ્રૂપ છે?

आत्मा सद्रूपो वर्तते ? किं वा अन्यः नो आत्मा-अनात्मा असद्रूपो द्विप्रदेशिकः स्कन्धो वर्तते? भगवानाह-'गोयमा ! दुप्पएसिए खंधे सिय आया१, सिय नो आया२, सिय अवत्तव्वं आयाइय, नो आयाइय३' हे गौतम ! द्विप्रदेशिकः स्कन्धः स्यात् आत्मा-सद्रूपः१, स्यात् नो आत्मा-अनात्मा-असद्रूपः२, स्यात् अवक्तव्यः-आत्मा इति च नोआत्मा-अनात्मा इति च शब्देन युगपद्व्यपदेष्टुमशक्यः३, 'सिय आया य, नो आया य४' द्विप्रदेशिकः स्यात् आत्मा च सद्रूपः, नो आत्मा-अनात्मा च असद्रूपः 'सिय आया य अवत्तव्वं आयाइय नो आयाइय५,' द्विप्रदेशिकः स्कन्धः स्यात् आत्मा च सद्रूपश्च, अवक्तव्यः-आत्मा इति च नो आत्मा-अनात्मा इति च शब्देन युगपद्व्यपदेष्टुमशक्य', 'सिय नो आया य अवत्तव्वं आयाइय नो आयाइय६,' द्विप्रदेशिकः स्कन्धः स्यात् नो आत्मा-अनात्मा च, अवक्तव्यः-आत्मा इति च नो आत्मा-अनात्मा इति च शब्देन युगपद्व्यपदेष्टु-

---

या वह असद्रूप है? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-' गोयमा ! दुप्पएसिए खंधे सिय आया१, सिय नो आया २, सिय अवत्तव्वं आयाइय नो आयाइय ३' हे गौतम ! द्विप्रदेशिक स्कन्ध कथंचित् सद्रूप है १ कथंचित् असद्रूप है२, कथंचित् आत्मा और नो आत्मा इन शब्दों द्वारा वह युगपत् कहने को अशक्य होने के कारण अवक्तव्य भी है३, 'सिय आया य नो आया य ४, कथंचित् वह सत् असत् उभयरूप भी है ४' 'सिय आया य अवत्तव्वं आयाइय नो आयाइय ५' कतंचित् वह सद्रूप भी है और आत्मा अनात्मा इन शब्दों से युगपत् कहने को अशक्य होने के कारण अवक्तव्य भी है५, 'सिय नो आया य अवत्तव्वं आयाइय नो आयाइय६' कथंचित् वह असद्रूप भी है और आत्मा नो आत्मा इन शब्दों द्वारा युगपत् कहने को अशक्य होने के कारण

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-" गोयमा ! दुप्पएसिए खंधे सिय आया१, सिय नो आया२, सिय अवत्तव्वं आयाइय नो आयाइय३, सिय आया य नो आया य४, सिय आया य अवत्तव्वं आयाइय नो आयाइय५, सिय नो आया य अवत्तव्वं आयाइय नो आयाइय६ " હે ગૌતમ ! દ્વિપ્રદેશિક સ્કંધ (૧) કથંચિત્ સદ્રૂપ છે, (૨) કથંચિત્ અસદ્રૂપ છે, (૩) આત્મા અને નો આત્મા, આ બે શબ્દો વડે વાચ્ય ન હોવાને કારણે તે કથંચિત્ અવક્તવ્ય પણ છે, (૪) તે કથંચિત્ સત્ અસત્ (સદ્રૂપ-અસદ્રૂપ) બન્ને રૂપ પણ છે, (૫) તે કથંચિત્ સદ્રૂપ પણ છે અને આત્મા અનાત્મા શબ્દો વડે અવાચ્ય હોવાને કારણે અવક્તવ્ય પણ છે. (૬) તે કથંચિત્ અસદ્રૂપ પણ છે અને આત્મા, નો આત્મા, આ બે શબ્દો દ્વારા એક સાથે વાચ્ય ન હોવાને

मशक्यः। गौतमस्तत्रकारणं पृच्छति-" से केणट्ठेणं भंते! एवं तं चेव जाव नो आयाइय अवत्तव्वं आयाइय नो आयाइय?' हे भदन्त! तत् केनार्थेन एवं-पूर्वोक्तरीत्या, तदेव-पूर्वोक्तवदुच्यते-यावत् द्विप्रदेशिकः स्कन्धः स्यात् आत्मा-सद्रूपः, स्यात् नो आत्मा-असद्रूपः इत्यादि षड्भङ्गा वक्तव्याः, तदन्तिममाह-नो आत्मा-अनात्मा-असद्रूप इति च, अवक्तव्यः,-आत्मा इति च नो आत्मा-इति च शब्देन युगपद् नो वक्तुं शक्यः इति? भगवानाह-'गोयमा! अप्पणो आइट्ठे आया१, परस्स आइट्ठे नो आया२ तदुभयस्स आइट्ठे अवत्तव्वं दुप्पएसिए खंधे आयाइय नो आयाइय३' हे गौतम! द्विप्रदेशिकः स्कन्धः आत्मनः स्वस्य-द्विप्रदेशिकस्कन्धस्य वर्णादिपर्यायैः आदिष्टे-आदेशे सति तैः व्यपदिष्टः सन् आत्मा स्वपर्यायापेक्षया सद्रूपो भवति परस्य-त्रिप्रदेशिकादि स्कन्धान्तरस्य

अवक्तव्य भी है ६ अब गौतमस्वामी इस विषय में कारण जानने की इच्छा से प्रभु को ऐसा पूछते हैं-'से केणट्ठेणं भंते! एवं तं चेव जाव नो आयाइय, अवत्तव्वं आयाइय नो आयाइय' हे भदन्त! ऐसा आप किस कारण से कहते हैं कि द्विप्रदेशी स्कंध 'कथंचित्-आत्मा सद्रूप है, कथंचित् नो आत्मा-असद्रूप है" इत्यादि असंयोगी भंग तीन ३ द्विकसंयोगी भंग ३ ऐसे छह६ भंगों वाला है? यहां 'नो आयाइय अवत्तव्वं' इस सूत्रांश से अन्तिम छट्ठा भंग प्रकट किया गया है। इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-'गोयमा! अप्पणो आइट्ठे आया१ परस्स आइट्ठे नो आया २, तदुभयस्स आइट्ठे अवत्तव्वं दुप्पएसिए खंधे आयाइय नो आयाइय' ३, हे गौतम! द्विप्रदेशी स्कंध जब अपनी वर्णादिरूप पर्यायों से विवक्षित होता है, तब वह अपनी पर्यायों की अपेक्षा से सद्रूप है? और त्रिप्रदेशिक आदि स्कन्धान्तर की वर्णा

કારણે અવક્તવ્ય પણ છે હવે આ પ્રકારના કથનનું કારણ જાણવા માટે ગૌતમ સ્વામી મહાવીર પ્રભુને આ પ્રમાણે પ્રશ્ન પૂછે છે-" से केणट्ठेण भंते! एवं तचेव जाव नो आयाइय, अवत्तव्वं आयाइय नो आयाइय?" હે ભગવન્! આપ શા કારણે એવું કહો છો કે દ્વિપ્રદેશી સ્કંધ કથંચિત્ સદ્રૂપ છે, કથંચિત્ અસદ્રૂપ છે, ઇત્યાદિ પૂર્વોક્ત ૬ ભાંગાવાળા છે? અહીં " नो आयाइय अवत्तव्वं " આ સૂત્રાંશ દ્વારા છેલ્લો-છઠ્ઠો-ભાગે પ્રકટ કરવામાં આવ્યો છે.

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-" गोयमा! अप्पणो आइट्ठे आया१, परस्स आइट्ठे नो आया२, तदुभयस्स आइट्ठे अवत्तव्वं दुप्पएसिए खंधे आयाइय नो आयाइय३ " હે ગૌતમ! જ્યારે પોતાના વર્ણાદિ રૂપ પર્યાયો વડે દ્વિપ્રદેશી સ્કંધની વિવક્ષા કરવામાં આવે છે, ત્યારે તે પોતાના પર્યાયોની અપેક્ષાએ સદ્રૂપ છે. અને ત્રિપ્રદેશિક આદિ અન્ય સ્કંધોના વર્ણાદિ રૂપ પર્યાયોની

पर्यायैः आदिष्टे-आदेशे सति तैर्व्यपदिष्टः सन् नो आत्मा-अनात्मा-असद्रूपो भवति, तदुभयस्य स्वपरोभयस्य पर्यायैः आदिष्टे-आदेशे सति तदुभयपर्यायैर्व्यपदिष्ट इत्यर्थः अवक्तव्यः द्विप्रदेशिकः स्कन्धः आत्मा इति च नोआत्मा-अनात्मा इति च शब्देन युगपद्व्यपदेष्टुमशक्यः इत्येवं द्विपदेशिकस्कन्धे षण्णां भङ्गानां मध्ये सर्वस्कन्धापेक्षया आद्यं भङ्गकत्रयमुक्त्वा देशापेक्षया अन्तिमं भङ्गत्रयमाह-'देसे आइट्ठे सब्भावपज्जवे देसे आइट्ठे असब्भावपज्जवे दुप्पएसिए खंधे आया य नो आया य४' तस्य देशः एक आदिष्ट-एकदेशापेक्षया स्वपर्यायैः

द्विरूप पर्यायों की अपेक्षा से आदिष्ट होने पर वह असद्रूप है २ तथा जब वह स्वपर्याय एवं परपर्यायों से युगपत् आदिष्ट होता है-तब वह अवक्तव्य कोटि में आजाता है क्योंकि उस समय वह स्वपर्याय और परपर्यायों से युगपत् वाच्य नहीं हो सकता है३ इस प्रकार के ये तीन भंग द्विप्रदेशिक स्कंध में जो कहे गये हैं वे संपूर्ण स्कन्ध-असंयोगकी अपेक्षा से कहे गये हैं ३ अब अवशिष्ट और जो ३ भंग हैं वे देशापेक्ष -संयोग की अपेक्षा से हैं यही कहने के लिये सूत्रकार कहते हैं-' देसे आइट्ठे सब्भावपज्जवे, देसे आइट्ठे असब्भावपज्जवे दुप्पएसिए खंधे आया य नो आया य४' जब वह द्विप्रदेशिक स्कंध सद्भाव पर्यायवाले अपने एक देश की अपेक्षा से व्यपदिष्ट होता है तब वह देश की वर्णादिरूप पर्यायों से युक्त होने के कारण सद्रूप है, और जब वही द्विप्रदेशिक स्कंध अपने असद्भाव पर्याय वाले द्वितीय देश से आदिष्ट होता है तब वह उसकी वर्णादि पर्यायों से युक्त नहीं होने के कारण असद्रूप है इस प्रकार यह एकदेश की आदिष्ट पर्यायों से सद्भावपर्यायवाला होने के कारण और द्वितीय देश की पर्यायों से असद्भावपर्यायावाला होने के कारण कथंचित सद्रूप एवं कथंचित् असद्रूप कहा गया है४, 'देसे आइट्ठे सब्भावपज्जवे देसे आइट्ठे तदुभयपज्जवे दुप्पएसिए खंधे

અપેક્ષાએ આદિષ્ટ થાય ત્યારે અસદ્રૂપ છે તથા જ્યારે તે સ્વપર્યાયો અને પરપર્યાયોની અપેક્ષાએ એક સાથે આદિષ્ટ થાય છે, ત્યારે તે અવક્તવ્ય કોટિમાં આવી જાય છે, કારણ કે તે સમયે તે સ્વપર્યાય અને પરપર્યાયો વડે એક સાથે વાચ્ય થઈ શકતો નથી. આ પ્રકારના જે ત્રણ ભાંગાઓ કહેવામાં આવ્યા છે, તે દ્વિપ્રદેશિક સ્કંધના સર્વસ્કંધની અપેક્ષાએ કહેવામાં આવ્યા છે. બાકીના જે ત્રણ ભાંગાઓ છે, તેઓ દેશાપેક્ષ છે, એજ વાત સૂત્રકાર પ્રકટ કરે છે-" देसे आइट्ठे सब्भावपज्जवे, देसे आइट्ठे असब्भावपज्जवे

सद्भावपर्यवः द्विप्रदेशिकः स्कन्धः, देशो द्वितीयपरपर्यायैः आदिष्टः असद्भावपर्यवः द्विप्रदेशिकः स्कन्धः आत्मा च सदरूपो नो आत्मा च-अनात्मा असद्रूपो भवति ४, 'देसे आइट्ठे सब्भावपज्जवे देसे आइट्ठे तदुभयपज्जवे दुप्पएसिए खंधे आयाय अवत्तव्वं आयाइय नोआयाइय' तस्य देशः एकः आदिष्टः एकदेशापेक्षया स्वपर्यायै सद्भावपर्यवः, तस्य देशः द्वितीयः आदिष्टस्तदुभयपर्यवस्ततोऽसौ द्विप्रदेशिकः स्कन्धः आत्मा च सद्रूपो भवति, अवक्तव्यः-आत्मा इति च नो आत्मा इति च शब्देन युगपद्व्यपदेष्टुमशक्यः५, 'देसे आदिट्ठे

आया य अवत्तव्वं आयाइय नो आयाइय' तथा जब यह द्विप्रदेशिक स्कंध सद्भावपर्यायवाले एकदेश की अपेक्षा से आदिष्ट होता है तब यह सद्भावपर्यायवाले अपने देश की सद्भाव पर्यायों से तो सद्रूप है और सद्भाव असद्भाववाले दूसरे देश से युगपत् न होने पर वह सद्रूप असद्रूपता से अवक्तव्य भी है। 'देसे आइट्ठे असब्भावपज्जवे देसे

' दुप्पएसिए खंधे आया य नो आया य४ '' જ્યારે તે દ્વિપ્રદેશિક સ્કંધ સદ્ભાવ પર્યાયવાળા પોતાના એકદેશની અપેક્ષાએ વ્યપદિષ્ટ (કથિત) થાય છે, ત્યારે તે દ્વિપ્રદેશી સ્કંધ તે દેશની વર્ણાદિરૂપ પર્યાયોથી યુક્ત હોવાને કારણે સદ્રૂપ છે, અને જ્યારે એજ દ્વિપ્રદેશી સ્કંધ પોતાના અસદ્ભાવ પર્યાયવાળા બીજા દેશથી આદિષ્ટ થાય છે, ત્યારે તે તેની વર્ણાદિ પર્યાયોથી યુક્ત નહીં હોવાને કારણે અસદ્રૂપ છે. આ રીતે તે દ્વિપ્રદેશી સ્કંધ એક દેશની આદિષ્ટ પર્યાયોની અપેક્ષાએ સદ્ભાવપર્યાયવાળો હોવાને કારણે અને બીજા દેશની પર્યાયોની અપેક્ષાએ અસદ્ભાવ પર્યાયવાળો હોવાને કારણે કથંચિત્ સદ્રૂપ અને કથંચિત્ અસદ્રૂપ કહેવામાં આવ્યો છે ' देसे आइट्ठे सब्भावपज्जवे देसे आइट्ठे तदुभयपज्जवे दुप्पएसिए खंधे आया य अवत्तव्वं आयाइय नो आयाइय '' તથા જ્યારે તે દ્વિપ્રદેશી સ્કંધ ક્રમશઃ અને યુગપત્ (એક સાથે) સદ્ભાવ પર્યાયવાળા દેશની અપેક્ષાએ આદિષ્ટ થાય છે, ત્યારે સદ્ભાવ પર્યાયવાળા પોતાના દેશની (અંશની) સદ્ભાવ પર્યાયોની અપેક્ષાએ તો તે સદ્રૂપ છે, અને સદ્ભાવ-અસદ્ભાવ પર્યાયવાળા દેશની અપેક્ષાએ એક સાથે આદિષ્ટ થાય ત્યારે આત્મા નો આત્મા શબ્દો વડે એક સાથે અવક્તવ્ય હોવાને કારણે અવક્તવ્ય પણ છે. આ કથનનો ભાવાર્થ એ છે કે દ્વિપ્રદેશી સ્કંધ બે અંશો (પરમાણુ)વાળો હોય છે. તે બે પરમાણુ રૂપ બે અંશોમાંના એક અંશ (દેશ)ની પર્યાયોની અપેક્ષાએ જ્યારે તેનો વિચાર કરવામાં આવે છે, ત્યારે વિવક્ષિત તે પર્યાયોની અપેક્ષાએ જ તે સદ્રૂપ હોય છે, કારણ કે તે પર્યાયો જ તેમાં સદ્ભૂત હોય છે. અને જે બીજા દેશની પર્યાયોની અપે-

असब्भावपज्जवे देसे आइट्ठे तदुभयपज्जवे दुप्पएसिए खंधे नो आयाय अवत्तव्वं आयाइय नोआयाइय ६' तस्य द्विप्रदेशिकस्कन्धस्य देशः एकः आदिष्टः, पर्यायैः असद्भावपर्यवः, देशो द्वितीय आदिष्टस्तदुभयपर्यवस्ततोऽसौ द्विप्रदेशिकः स्कन्धः नो आत्मा च-अनात्मा च भवति, अवक्तव्यः आत्मा इति च नोआत्मा अनात्मा इति च शब्देन युगपद्वक्तुमशक्यः, इत्येवं द्विप्रदेशिके स्कन्धे षड्भङ्गाः६, सप्तमः पुनरात्मा च नो आत्मा च अवक्तव्यं चेत्येवं रूपो द्विप्रदेशिके स्कन्धे न भवति, अस्य द्व्यंशत्वात्। त्रिप्रदेशिकादौ तु संभवति इति सप्तभङ्गी। प्रकृतमुपसंहरन्नाह-' से तेणट्ठेणं तं चेव जाव नो आयाइय ' तत्-अथ, केनार्थेन, तदेव-

---

आइट्ठे तदुभयपज्जवे दुप्पएसिए खंधे नो आयाय, अवत्तव्वं आयाइय नो आयाइय६, इसी प्रकार वह क्रमशः विचार से कथंचित् असद्रूप भी है और युगपत् दोनों के विचार से वह कथंचित् अवक्तव्य भी है इसीलिये वह नो आत्मा अवक्तव्यरूप है ६ तथा 'वह द्विप्रदेशी स्कन्ध कथंचित् सद्रूप भी है कथंचित् असद्रूप-भी है, और कथंचित् अवक्तव्य भी है' ऐसा जो सात ७ वां भंग है वह यहां द्विप्रदेशी स्कंध में संभवित नहीं होता है क्योंकि यह द्व्यंशरूप अर्थात् केवल दो अंशवाला है। त्रिप्रदेशिक आदि स्कंधो में ही यह-सप्तमभंग संभवित होता है इस प्रकार से यह सप्तभंगी है 'से तेणट्ठेणं तंचेव जाव नो आयाइय' इसी कारण हे गौतम ! मैंने ऐसा कहा है कि द्विप्रदेशी

क्षाએ તે વિવક્ષિત થતો નથી તે દેશની પર્યાયોની અપેક્ષાએ તે અસદ્રૂપ છે, તેથી તે દ્વિપ્રદેશી સ્કંધ દ્વિતીય દેશની અપેક્ષાએ અસદ્રૂપ છે આ રીતે તે દ્વિપ્રદેશી સ્કંધમાં સદ્રૂપ અને અસદ્રૂપ ધર્મોનો સદ્ભાવ તો અવશ્ય છે, પરન્તુ તે બન્નેનું તેમાં યુગપત્ (એક સાથે) કથન થઈ શકતું નથી, તેથી તે દ્વિપ્રદેશી સ્કંધ તે બન્ને ધર્મો દ્વારા અવક્તવ્ય છે. તથા આ બન્ને ધર્મોની અપેક્ષાએ તે દ્વિપ્રદેશી સ્કંધનો વિચાર કરવો હોય તો ક્રમશઃ પણ થઈ શકે છે અને યુગપત્ પણ થઈ શકે છે. આ ક્રમશઃ અને યુગપત્ (એક સાથે) વિચારની અપેક્ષાએ તે કથંચિત્ સદ્રૂપ પણ છે અને કથંચિત્ અવક્તવ્ય રૂપ પણ છે. "देसे आइट्ठे असब्भावपज्जवे देसे आइट्ठे तदुभयपज्जवे दुप्पएसिए खंधे नो आया य, अवत्तव्वं आयाइय नो आयाइय६" એજ પ્રમાણે ક્રમશઃ વિચાર કરવામાં આવે, તો તે દ્વિપ્રદેશી સ્કંધ કથંચિત્ અસદ્રૂપ પણ છે અને બન્નેનો યુગપત્ (એક સાથે) વિચાર કરવામાં આવે, તો તે કથંચિત્ અવક્તવ્ય રૂપ પણ છે. તથા "દ્વિપ્રદેશી સ્કંધ કથંચિત્ સદ્રૂપ પણ છે, કથંચિત્ અસદ્રૂપ પણ છે અને કથંચિત અવક્તવ્ય પણ છે." આ સાતમો ભાંગો (વિકલ્પ) અહીં સંભવી શકતો નથી, કારણ કે દ્વિપ્રદેશી સ્કંધ બે

पूर्वोक्तरीत्या यावत्–द्विप्रदेशिकः स्कन्धः स्यात् आत्मा१, स्यात् नो आत्मा२, इत्यादि स्यात् नो आत्मा च अवक्तव्यम् आत्मा इति च नो आत्मेति च३, तथा च द्विप्रदेशिकस्कन्धस्य द्विप्रदेशत्वात् एको देशः आदिष्टः सद्भावप्रधानाः सत्तानुगताः पर्यवा यस्मिन् स सद्भावपर्यवः स्वपर्यवैः, द्वितीयस्तु देशः आदिष्टः असद्भावपर्यवः परपर्यायैः, परपर्यवाश्च तदीयद्वितीयदेशसम्बन्धिनो वस्त्वन्तर सम्बन्धिनो वेति, ततश्चासौ द्विप्रदेशिकः स्कन्धः क्रमेण आत्मा च नो आत्मा चेति४ तथा तस्य देशः आदिष्टः सद्भावपर्यवः, देशश्चोभयपर्यवस्ततोऽसौ द्विप्रदेशिकः स्कन्धः आत्मा च सद्रूपः, अवक्तव्यं चेति५, तथा तस्यैव द्विप्रदेशिकस्य स्कन्धस्य देशः आदिष्टोऽसद्भावपर्यवः, देशस्तु उभयपर्यवस्ततोऽसौ द्विप्रदेशिकः स्कन्धः नो आत्मा च अवक्तव्यं च स्यादिति६ इति फलितम् ।

गौतमः पृच्छति–'आया भंते ! तिप्पएसिए खंधे अन्ने तिप्पएसिए खंधे ?' हे भदन्त ! त्रिप्रदेशिकः स्कन्धः किम् आत्मा सद्रूपः ? किं वा अन्यः–नो आत्मा–अनात्मा असद्रूपस्त्रिप्रदेशिक स्कन्धो भवति ? भगवानाह–'गोयमा ! तिप्पएसिए खंधे सिय आया१' हे गौतम ! त्रिप्रदेशिकः स्कन्धः स्यात् आत्मा–सद्रूपो

स्कंध कथंचित् सद्रूप आदि धर्मोवाला है। यह अभी ऊपर प्रकट कर दिया गया है।

अब गौतम स्वामी प्रभु से ऐसा पूछते हैं–'आया भंते ! तिप्पएसिए खंधे अन्ने तिप्पएसिए खंधे" हे भदन्त ! त्रिप्रदेशिक स्कन्ध क्या सद्रूप है या अन्य असद्रूप है ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं–'गोयमा तिप्पएसिए खंधे सिय आया सिय नो आया' हे गौतम ! इन त्रिप्रदेशी स्कन्ध में तेरह भंग बनते हैं, जैसे–त्रिप्रदेशिक स्कन्ध स्यात्–कथंचित्

અંશ (દેશ) રૂપ જ હોય છે. ત્રિપ્રદેશી આદિ સ્કંધોમાં જ આ સાતમો ભાંગો સંભવી શકે છે. આ પ્રકારની આ સપ્તભંગી છે. "से तेणट्ठेणं तंचेव जाव नो आयाइय" હે ગૌતમ ! તે કારણે મેં એવું કહ્યું છે કે ' દ્વિપ્રદેશી સ્કંધ સદ્રૂપ પણ છે, ઇત્યાદિ ૬ ભાંગાઓ અહીં સમજી લેવા. " એ વાત તો આગળ પ્રકટ કરવામાં આવી છે કે દ્વિપ્રદેશી સ્કંધ બે અંશોવાળો–બે પ્રદેશોવાળો–હોય છે. જે પ્રકારે સદ્રૂપતા તેનો ધર્મ છે, એજ પ્રમાણે અસદ્રૂપતા પણ તેનો ધર્મ છે, અને અવક્તવ્યતા પણ તેનો ધર્મ છે.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન–"आया भंते ! तिप्पएसिए खंधे अन्ने तिप्पएसिए खंधे ?" હે ભગવન્ ! ત્રિપ્રદેશિક સ્કન્ધ સદ્રૂપ છે, કે અસદ્રૂપ છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર–" गोयमा ! " હે ગૌતમ ! " तिप्पएसिए खंधे सिय आया, सिय नो आया२ " ત્રિપ્રદેશિક સ્કંધ (૧) અમુક અપેક્ષાએ

भवति१, 'सिय नो आया२' स्यात् नो आत्मा-अनात्मा असद्रूपो भवति२, 'सिय अवत्तव्वं आयाइय नो आयाइय३' स्यात्-अवक्तव्यं वस्तु-आत्मा-सद्रूप इति च नो आत्मा-अनात्मा असद्रूप इति शब्देन युगपद्व्यपदेष्टुमशक्यम् ३, 'सिय आया य नो आया य४' स्यात् आत्मा-सद्रूपश्च, नो आत्मा-असद्रूपश्च४, ननु-अत्र 'एक आत्मा एकः नो आत्मा' द्विकसंयोगात्मके प्रथमे भङ्गे त्रिषु प्रदेशेषु द्वौ विकल्पौ कथं घटेते ? इति चेदत्राह-एते त्रयोऽपि प्रदेशद्वयोराकाशप्रदेशयोस्तिष्ठन्ति तदाकाशप्रदेशावगाहनापेक्षया एष द्विक-

किसी अपेक्षा सद्रूप भी है१, और किसी अपेक्षा असद्रूप भी है २ 'सिय अवत्तव्वं आयाइय-नो आयाइय ३ तथा यह त्रिप्रदेशी स्कन्ध सद्रूप से और असद्रूप से एक साथ शब्दों द्वारा कहा नहीं जा सकता है-क्योंकि प्रवृत्ति क्रमशः ही होती है-इस कारण कथंचित् अवक्तव्य भी है ३। 'सिय आया य नो आया य ४' एक काल में कथंचित् यह सद्रूप भी है और असद्रूप भी है४, शंका-यहां 'एक आत्मा एक नो आत्मा' इस द्विकसंयोगी पहले भंग में तीन प्रदेशों में दो विकल्प कैसे घटते हैं अर्थात् त्रिप्रदेशिक स्कन्ध का एक प्रदेश आत्मा और एक अनात्मा हो गया किन्तु तीसरा प्रदेश क्या है ? उत्तर-त्रिप्रदेशी के ये तीनों प्रदेश दो आकाशप्रदेशों में रहते हैं उन दो आकाशप्रदेशों की अवगाहना की अपेक्षा से यह द्विकसंयोगी पहला भङ्ग होता है। इसी प्रकार आगे भी द्विकसंयोगी 'आत्मा अवक्तव्यम्' इस चौथे भंग में

સદ્રૂપ છે, (૨) અમુક અપેક્ષાએ અસદ્રૂપ છે, "सिय अवत्तव्वं आयाइय नो-आयाइय३" (૩) સદ્રૂપ અને અસદ્રૂપ શબ્દો વડે એક સાથે અવાચ્ય હોવાની અપેક્ષાએ તે અવક્તવ્ય રૂપ પણ છે, કારણ કે શબ્દોની પ્રવૃત્તિ ક્રમશઃ જ થાય છે. "सिय आया य नो आया य" (૪) એક જ કાળે તે કથંચિત્ સદ્રૂપ પણ છે અને કથંચિત્ અસદ્રૂપ પણ છે.

શંકા—અહિયાં એક આત્મા એક નો આત્મા આ પ્રમાણેના દ્વિકસંયોગી આ પહેલા ભંગમાં ત્રણ પ્રદેશોમાં બે વિકલ્પો કેવી રીતે ઘટિત થાય છે ?

ઉત્તર—ત્રણ પ્રદેશીના આ ત્રણે પ્રદેશો બે આકાશપ્રદેશોમાં રહે છે. તે બે આકાશપ્રદેશોની અવગાહનાની અપેક્ષાએ આ દ્વિકસંયોગી પહેલો ભંગ બને છે. એજ પ્રમાણે હવે પછી પણ દ્વિકસંયોગી "आत्मा अवक्तव्यम्" આ ચોથા ભંગમાં 'नो आत्मा अवक्तव्यम्' આ સાતમા ભંગમાં સમજી

संयोगिकः प्रथमो भङ्गो घटते। एवमग्रेऽपि चतुर्थे सप्तमे च भंगे विज्ञेयम्। एवं बहुबहुप्रदेशिकस्कन्धेषु सर्वत्र द्विकसंयोगिकभङ्गेषु द्वयोः स्थानयोरेकवचनमवगाहनापेक्षया विभागापेक्षया च ज्ञातव्यमिति। 'सिय आया य नो आयाओ य५' स्यात् आत्मा-सद्रूपश्च एकप्रदेशापेक्षया नो आत्मानौ असद्रूपौ अनेकप्रदेशापेक्षया, एकप्रदेशविवक्षया एकवचनम्, प्रदेशद्वये अनेकत्वविवक्षया सूत्रे बहुवचनम्। एवमग्रेऽपि सर्वत्र बोध्यम्५, 'सिय आयाओ य नो आया य६' स्यात् आत्मानौ सद्रूपौ च, नो आत्मा-असद्रूपश्च६, 'सिय आया य अवत्तव्वं आयाइय नो आयाइय७' स्यात् आत्मा सद्रूपश्च, अवक्तव्यः-आत्मा सद्रूप इति च नो आत्मा

'नो आत्मा अवक्तव्यम्' इस सातवें भंगो में समझ लेना चाहिये इस प्रकार बहु बहु प्रदेशी स्कंधो में सब जगह द्विकसंयोगी भंगो में दोनों स्थानों में एकवचन अवगाहना की अपेक्षा से तथा विभागों की अपेक्षा से जानना चाहिये। 'सिय आया य नो आयाओ य ५' एक प्रदेश की अपेक्षा यह कथंचित् सद्रूप है और इसके अनेक प्रदेश असद्रूप हैं५ यहां कहीं कहीं जो दो प्रदेशों में 'आया' ऐसा एकवचन का प्रयोग किया गया है वह दो प्रदेशों का एकप्रदेश में अवगाढ आदि के एकत्व की विवक्षा से किया गया है तथा 'नो आयाओ' ऐसा जो बहुवचन का प्रयोग किया गया है वह भेद (अलग अलग) की विवक्षा से किया गया है-इसी प्रकार से आगे भी समझ लेना चाहिये 'सिय आयाओय नो आया य६' तथा कथंचित् अनेक सद्रूप है और एक सद्रूप है ६, सिय

લેવું. આ પ્રમાણે બહુ બહુપ્રદેશીસ્કંધોમાં બધેજ દ્વિકસંયોગીભંગોમાં બન્ને સ્થાનોમાં અવગાહનાની અપેક્ષાએ એકવચન અવગાહનાની અપેક્ષાએ તથા વિભાગોની અપેક્ષાએ સમજી લેવું. "सिय आया य नो आयाओ य५" (૫) સ્કંધની અપેક્ષાએ તે કથંચિત્ સદ્રૂપ છે અને પ્રદેશોની અપેક્ષાએ કથંચિત્ અસદ્રૂપ છે અહીં જે પહેલાં "आया" આ એક વચનના પદનો પ્રયોગ કરવામાં આવ્યો છે, તે સ્કંધની અપેક્ષાએ કરવામાં આવ્યો છે, અને "नो आयाओ" આ બહુવચનનો જે પ્રયોગ કરવામાં આવ્યો છે, તે પ્રદેશોની અપેક્ષાએ કરવામાં આવ્યા છે એજ પ્રમાણે આગળ પણ સમજી લેવું. "सिय आयाओ य नो आया य६" (૬) તથા પ્રદેશોની અપેક્ષાએ કથંચિત્ સદ્રૂપ છે અને સ્કંધની અપેક્ષાએ અસદ્રૂપ છે. "सिय आया य अवत्तव्वं आयाइय नो आयाइय७" તે અમુક અપેક્ષાએ

अनात्मा-असद्रूप इति च शब्देन युगपद् वक्तुमशक्यत्वात् अत्र द्वयोः स्थानयोरेक वचनं त्रयाणां प्रदेशानामाकाशप्रदेशद्वयावगाहित्वापेक्षयेति पूर्वं उक्तमेव७, 'सिय आयाइय अवत्तव्वाइं आयाओ य नो आयाओ य८' स्यात् आत्मा सद्रूप इति च अवक्तव्यौ-आत्मानौ-सद्रूपौ च नो आत्मानौ-असद्रूपौ च८, 'सिय आयाओ य अवत्तव्वं आयाइय नो आयाइय९' स्यात् आत्मानौ सद्रूपौ च अवक्तव्यः-आत्मा-सद्रूप इति च नो-आत्मा-असद्रूप इति च शब्देन युगपद्व्यपदेष्टुमशक्यः९, 'सिय नो आया य अवत्तव्व आयाइय नो आयाइय१०' स्यात् नो आत्मा-असद्रूपश्च, अवक्तव्यः-आत्मा सद्रूप इति च नो आत्मा-असद्रूप इति च शब्देन युगपद्व्यपदेष्टुमशक्यः, अत्रापि द्वयोः स्थानयोरेकवचनमाकाशप्रदेश-द्वयावगाहनापेक्षयैव१०, 'सिय नो आया य अवत्तव्वाइं आयाओ य नो आयाओ

आया य अवत्तव्वं आयाइय नो आयाइय ७' कथंचित् यह सद्रूप है और कथंचित् आत्मा एवं नो आत्मा इन शब्दों द्वारा युगपत् नहीं कह सकने के कारण अवक्तव्य भी है ७, 'सिय आयाइय अवत्तव्वाइं, आयाओ य नोआयाओ य ८' कथंचित् एक सद्रूप है और अनेक अव-क्तव्य सद्रूप और असद्रूप इन शब्दों द्वारा युगपत् नहीं कहा जा सकने केकारण अवक्तव्य रूप भी है,८ 'सिय आयाओ य अवत्तव्वं आयाइय' नो आयाइय कथंचित् अनेक सद्रूप हैं और एक अवक्तव्य सद्रूप एवं असद्रूप इन दोनों शब्दों द्वारा युगपत् नहीं कहो जा सकने के कारण अवक्तव्य रूप है ९, 'सिय नो आया य अवत्तव्वं आयाइय नो आयाइय' १० कथंचित् एक असद्रूप हैं और एक अवक्तव्य-आत्मा नो आत्मा रूप से एक साथ कहा नहीं जा सकने के कारण अवक्तव्य रूप भी है १० 'सिय'

સદ્રૂપ પણ છે, અને કથંચિત્ આત્મા અને નો આત્મા શબ્દો વડે એક સાથે અવાચ્ય હોવાને કારણે અવક્તવ્ય રૂપ પણ છે. "सिय आयाइय अव-त्तव्वाइं, आयाओ य नो आयाओ य८" (८) કયારેક સ્કંધની અપેક્ષાએ તે સદ્રૂપ છે, અને પ્રદેશોની અપેક્ષાએ તે સદ્રૂપ અને અસદ્રૂપ આ શબ્દો દ્વારા એક સાથે અવાચ્ય હોવાને કારણે અવક્તવ્ય રૂપ પણ છે. "सिय आयाओय अवत्तव्वं आयाइय नो आयाइय९" (૯) કયારેક પ્રદેશોની અપેક્ષાએ તે સદ્રૂપ પણ હોય છે અને સ્કંધની અપેક્ષાએ તે સદ્રૂપ અને અસદ્રૂપ આ બે શબ્દો દ્વારા એક સાથે અવક્તવ્ય હોવાને કારણે અવક્તવ્ય રૂપ પણ હોય છે. "सिय नो आया य अवत्तव्वं आयाइय नो आयाइय१०" (१०) તે સ્કંધની અપેક્ષાએ કથંચિત્ અસદ્રૂપ પણ છે અને આત્મા નોઆત્મા વડે એક સાથે અવાચ્ય હોવાને કારણે અવક્તવ્ય રૂપ પણ છે. "सिय नो-

य११' स्यात् नो आत्मा असद्रूपश्च अवक्तव्यौ-आत्मानौ च सद्रूपौ नो आत्मानौ च-असद्रूपौ इति च शब्देन युगपद् व्यपदेष्टुमशक्यौ११, 'सिय नो आयाओ य अवत्तव्वं आयाइय नो आयाइय१२' स्यात् नो आत्मानौ असद्रूपौ च, अवक्तव्यः-आत्मा-सद्रूप इति च नो आत्मा असद्रूप इति च युगपद् व्यपदेष्टुमशक्यः१२, 'सिय आया य नो आया य अवत्तव्वं आयाइय नो आयाइय१३' स्यात् आत्मा सद्रूपश्च नो आत्मा-अनात्मा असद्रूपश्च, अवक्तव्यः-आत्मा इति च 'नोआत्मा अनात्मा असद्रूपश्चेति च युगपद् व्यपदेष्टुमशक्यः१३। अत्र त्रयोदशस्वपि भङ्गेषु त्रिप्रदेशिकः स्कन्धः इत्यस्य सम्बन्धोऽवसेयः, एवं त्रिप्रदेशिके स्कन्धे त्रयोदशभङ्गाः १३। गौतमस्तत्र कारणं पृच्छति-'से केणट्ठेणं भंते!

नो आया य अवत्तव्वाइं आयाओ य नो आयाओ य११ कथंचित् एक असद्रूप है और अनेक अवक्तव्य आत्मा रूप से एवं अनात्मा रूप से अवक्तव्य भी हैं ११, 'सिय नो आयाओय, अवत्तव्वं आयाइय नो आयाइय' कथंचित् अनेक नो आत्मारूप और एक अवक्तव्य-आत्मा तथा नो आत्मारूप से युगपत् कहा जा नहीं सकने के कारण अवक्तव्यरूप है १२, 'सिय आया य नो आया य अवत्तव्वं आयाइय नो अयाइय १३, कथंचित् यह सद्रूप भी है, कथंचित् असद्रूप भी है, एवं अवक्तव्य-सद्रूप तथा असद्रूप इन शब्दों द्वारा युगपत् कहा नहीं जा सकने के कारण अवक्तव्य भी है १३ यहां इन तेरह भंगों में त्रिप्रदेशि स्कंध का संबंध जानना चाहिये। त्रिप्रदेशिकस्कन्ध में इन १३ तेरह भंगो के होने में क्या कारण है? इसी बात को गौतम प्रभु से यों पूछते

आया य अवत्तव्वाइं आयाओ य नो आयाओ य११" (११) કયારેક તે સ્કંધની અપેક્ષાએ અસદ્રૂપ પણ છે, અને પ્રદેશોની અપેક્ષાએ અનેક આત્મા રૂપે અને અનેક અનાત્મા રૂપે અવકતવ્ય પણ છે. "सिय नोआयाओ य, अवत्तव्वं आयाइय नो आयाइय१२" (१२) કયારેક તે પ્રદેશોની અપેક્ષાએ અનેક નો આત્મા રૂપ છે, તથા આત્મા અને નોઆત્મા રૂપે એક સાથે અવાચ્ય હોવાને કારણે અવકતવ્ય રૂપ પણ છે. "सिय आया य नो आया य अवत्तव्वं आयाइय नो आयाइय१३" (१३) કયારેક તે સદ્રૂપ પણ હોય છે, અસદ્રૂપ પણ હોય છે અને સદ્રૂપ-અસદ્રૂપ આ બે શબ્દો દ્વારા એક સાથે અવાચ્ય હોવાને કારણે અવક્તવ્ય રૂપ પણ છે. ત્રિપ્રદેશિક સ્કંધમાં આ પ્રકારના ૧૩ ભાંગાઓ (વિકલ્પો) સંભવી શકે છે. હવે ત્રિપ્રદેશિક સ્કંધમાં આ ૧૩ ભાંગાઓનો સદ્ભાવ કયા કારણે હોય છે, તે જાણવા માટે ગૌતમ સ્વામી મહાવીર પ્રભુને આ પ્રમાણે પ્રશ્ન પૂછે છે-"से केणट्ठेणं भंते! एवं

एवं वुच्चइ-तिप्पएसिए खंधे सिय आया एवं चेव उच्चारेयव्वं जाव सिय आया य नो आया य अवत्तव्वं आयाइय नो आयाइय ?' हे भदन्त ! तत्-अथ केनार्थेन एवमुच्यते-त्रिप्रदेशिकः स्कन्धः स्यात् आत्मा-सद्रूपः, एवमेव-पूर्वोक्तरीत्यैव उच्चारयितव्यं वक्तव्यं यावत् स्यात् नो आत्मा, स्यात् अवक्तव्यम्-आत्मा इति च नो आत्मा इति च इत्यादि त्रयोदश उपर्युक्ता भङ्गा बोध्याः। तदन्तिममाह-स्यात् आत्मा च नो आत्मा च अवक्तव्यः-आत्मा इति च नो आत्मा इति चेति१३। भगवानाह-'गोयमा ! अप्पणो आइट्ठे आया१, परस्स आइट्ठे नो आया२, तदुभयस्स आइट्ठे अवत्तव्वं आयाइय नो आयाइय ३' हे गौतम ! त्रिप्रदेशिकः स्कन्धः आत्मनः स्वस्य त्रिप्रदेशिकस्कन्धस्य वर्णादिपर्यायैः आदिष्टे-आदेशे सति

है-'से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ, तिप्पएसिए खंधे सिय आया एवं चेव उच्चारेयव्वं जाव सिय आया य नो आया य अवत्तव्वं आयाइय नो आयाइय' हे भदन्त ! ऐसा आप किस कारण से कहते हैं कि त्रिप्रदेशिक स्कंध कथंचित् सद्रूप है इत्यादि सब "वह कथंचित् सद्रूप भी है कथंचित् असद्रूप भी है और अवक्तव्य रूप भी है" इस १३ तेरहवें भंग तक कहना चाहिये इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-'गोयमा ! अप्पणो आइट्ठे आया' हे गौतम ! त्रिप्रदेशिक स्कंध जब अपनी वर्णादि पर्यायों से आदिष्ट होता है तब वह अपनी पर्यायों की अपेक्षा से सद्रूप है ? और 'परस्स आइट्ठे नो आया' दूसरे चतुष्प्रदेशिकादि स्कन्ध की अपेक्षा से आदिष्ट होने पर वह नो आत्मा-असद्रूप है २। तथा 'तदुभयस्स -आइट्ठे अवत्तव्वं आया इय नो आयाइय' स्वपर्याय की अपेक्षा से

वुच्चइ, तिप्पएसिए खंधे सिय आया एवंचेव उच्चारेयव्वं जाव सिय आया य नो आया य अवत्तव्वं आयाइय नो आयाइय" હે ભગવન્ ! આપ શા કારણે એવું કહો છો કે ત્રિપ્રદેશિક સ્કંધ કથંચિત્ સદ્રૂપ છે, આ પહેલા ભાંગાથી શરૂ કરીને "તે કથંચિત્ સદ્રૂપ પણ છે, કથંચિત્ અસદ્રૂપ છે અને અવક્તવ્ય રૂપ પણ છે." આ તેરમાં ભાંગા પર્યન્તના કથનને પ્રશ્નમાં આવરી લેવું જોઈએ

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-"गोयमा ! अप्पणो आइट्ठे आया" હે ગૌતમ ! જ્યારે પોતાના વર્ણાદિ પર્યાયોની અપેક્ષાએ ત્રિપ્રદેશિક સ્કંધની વિવક્ષા કરાય છે, ત્યારે તે પોતાના પર્યાયોની અપેક્ષાએ સદ્રૂપ ગણાય છે, અને "परस्स आइट्ठे नो आया" ચતુષ્પ્રદેશિક આદિ સ્કંધની અપેક્ષાએ કથિત થાય, તો તે નો આત્મા રૂપ (અસદ્રૂપ) ગણાય છે, "तदुभयस्स आइट्ठे अवत्तव्वं आयाइय नो आयाइय" તથા સ્વપર્યાય અને પરપર્યાયની અપેક્ષાએ કથિત થાય,

आत्मा-स्वपर्यायापेक्षया सदूरूपो भवति१, परस्य चतुष्प्रदेशिकादिस्कन्धान्तरस्य पर्यायैः आदिष्टे-आदेशे सति नो आत्मा-अनात्मा परपर्यायापेक्षया असदूरूपो भवति२, तदुभयस्य स्वपरोभयपर्यायैः आदिष्टे आदेशे सति अवक्तव्यं वस्तु भवति-आत्मा इति च नो आत्मा इति चशब्देन युगपदूव्यपदेष्टुमशक्यं भवति३, "देसे आइट्ठे सब्भावपज्जवे, देसे आइट्ठे असब्भावपज्जवे तिप्पएसिए खंधे आया य नो आया य४' यदा देशः एकः आदिष्टः एकापेक्षया सद्भावपर्यवः देशः अपरः आदिष्टः असद्भावपर्यवः तदा त्रिप्रदेशिकः स्कन्धः आत्मा-सदूरूपश्च नो आत्मा-अनात्मा असदूरूपश्च त्रयाणां प्रदेशानां प्रदेशद्वयावगाहत्वादुभयत्रैकवचनम् ४. 'देसे आदिट्ठे सब्भावपज्जवे देसा आइट्ठा असब्भावपज्जवा तिप्पएसिए खंधे आया य नो आयाओ य५' यदा देशः एकः आदिष्टः सद्भावपर्यवः, देशौ आदिष्टौ असद्भा-

---

आदिष्ट होने पर वह अवक्तव्य होता है क्योंकि इन शब्दों द्वारा वह एक साथ कहा नहीं जा सकता है ३। 'देसे आइट्ठे सब्भावपज्जवे, देसे आइट्ठे असब्भावपज्जवे तिप्पएसिए खंधे आया य नो आया य ४' जब त्रिप्रदेशिक स्कंध अपने एकदेशकी अपेक्षा से आदिष्ट होता है-तब वह उस सद्भाव पर्याय वाले देश की अपेक्षा से सदूरूप है, और असद्भाव पर्याय वाले दूसरे देश की अपेक्षा से आदिष्ट होने पर असदूरूप है इसलिये त्रिप्रदेशिक स्कन्ध कथंचित् आत्मो कथंचित् नो आत्मा रूप है यह चौथा भंग है ४' 'देसे आइट्ठे सब्भावपज्जवे देसा आइट्ठा असब्भावपज्जवा तिप्पएसिए खंधे आया य नो आयाओ य ५' जब त्रिप्रदेशिक स्कन्ध अपने एक-देश से आदिष्ट होता है तब वह उसकी अपेक्षा सद्भावपर्याय वाला होने से सदूरूप है और जब-अनेक असद्भावपर्यायों वाले अनेक देशों

તો તે અવક્તવ્ય રૂપ છે, કારણ કે આત્મા નો આત્મા શબ્દો વડે તે એક સાથે વાચ્ય હોતો નથી પહેલાં ત્રણ ભાંગાનું આ પ્રકારનું સ્પષ્ટીકરણ કરીને, હવે ચોથા ભાંગાનું સ્પષ્ટીકરણ કરવામાં આવે છે-"देसे आइट्ठे सब्भावपज्जवे, देसे आइट्ठे असब्भावपज्जवे तिप्पएसिए खंधे आया य नो आया य४" જ્યારે ત્રિપ્રદેશિક સ્કંધનો તેના એકદેશની અપેક્ષાએ વિચાર કરવામાં આવે છે, ત્યારે તે સદ્ભાવ પર્યાયવાળા દેશની અપેક્ષાએ સદ્રૂપ છે અને અસદ્ભાવ પર્યાયવાળા બીજા દેશની અપેક્ષાએ અસદ્રૂપ છે. (૫) "देसे आइट्ठे सब्भावपज्जवे देसा आइट्ठा असब्भावपज्जवा तिप्पएसिए खंधे आया य नो आयाओ य५" જ્યારે ત્રિપ્રદેશિક સ્કંધનો એક દેશની અપેક્ષાએ વિચાર કરવામાં આવે છે, ત્યારે સદ્ભાવ પર્યાયવાળા એકદેશની અપેક્ષાએ તે સદ્રૂપ હોય છે, અને જ્યારે અનેક અસદ્ભાવ પર્યાયોવાળા અનેક દેશોની અપેક્ષાએ તે આદિષ્ટ થાય

वपर्यवौ, तदा त्रिप्रदेशिकः स्कन्धः आत्मा सद्रूपश्च, नो आत्मानौ असद्रूपौ च५, 'देसा आइट्ठा सब्भावपज्जवा देसे आइट्ठे असब्भावपज्जवे तिप्पएसिए खंधे आयाओ य नो आया य६' यदा देशौ आदिष्टौ, सद्भावपर्यवौ, देशः एकः आदिष्टः असद्भावपर्यवः तदा त्रिप्रदेशिकः स्कन्धः आत्मानौ सद्रूपौ च, नो आत्मा-अनात्मा असद्रूपश्च भवति६, 'देसे आइट्ठे सब्भावपज्जवे देसे आइट्ठे तदुभयपज्जवे तिप्पएसिए खंधे आया य अवत्तव्वं आयाइय नो आयाइय७' यदा देशः एक आदिष्टः सद्भावपर्यवः देशः अपरः आदिष्ट स्तदुभयपर्यवः सद्भावासद्भावोभयपर्यवः तदा त्रिप्रदेशिकः स्कन्धः आत्मा सद्रूपश्च, अवक्तव्यः-आत्मा इति च

से आदिष्ट होता है तब वे पर्यायें उस में न होने के कारण वह अनेक असद्रूप पर्यायों वाला है एक आत्मा और अनेक नो आत्माएँ इस प्रकार का यह पांचवां भंग हुआ ५। 'देसा आइट्ठा सब्भावपज्जवा देसे आइट्ठे असब्भावपज्जवे तिप्पएसिए खंधे आयाओ य नो आया य ६' जब यह त्रिप्रदेशिक स्कन्ध अपने अनेक सद्भाव पर्यायों वाले देशों से आदिष्ट होता है तब वह कथंचित् अनेक सद्रूपों वाला है, और जब वह असद्भावपर्याय वाले अपने एकदेश से आदिष्ट होता तब वह असद्रूप वाला है इसप्रकार का अनेक आत्माएँ और एक नो आत्मा यह छठा भंग हुआ ६, 'देसे आइट्ठे सब्भावपज्जवे, देसे आइट्ठे तदुभयपज्जवे तिप्पएसिए खंधे आया य अवत्तव्वं आयाइय नो आयाइय ७' जब त्रिप्रदेशिक स्कन्ध अपने सद्भावपर्याय वाले एकदेश से आदिष्ट होता है—तब वह सद्रूप है और जब वह सद्भावपर्याय वाले दूसरे देश से आदिष्ट होता है तब ये उभय पर्यायें उसकी एक साथ शब्द

છે, ત્યારે તે પર્યાયો તેમાં ન હોવાને કારણે તે અનેક અસદ્રૂપોવાળો હોય છે. (૬) "देसा आइट्ठा सब्भावपज्जवा, देसे आइट्ठे असब्भावपज्जवा तिप्पएसिए खंधे आयाओ य नो आया य६" જ્યારે તે ત્રિપ્રદેશિક સ્કંધનો તેના અનેક સદ્ભાવ પર્યાયોવાળા દેશોની અપેક્ષાએ વિચાર કરવામાં આવે છે, ત્યારે તે કથંચિત્ અનેક સદ્રૂપવાળો છે, અને જ્યારે તેનો અસદ્ભાવ પર્યાયવાળા એકદેશની અપેક્ષાએ વિચાર કરવામાં આવે છે, ત્યારે તે અસદ્રૂપવાળો (૭) "देसे आइट्ठे सब्भावपज्जवे, देसे आइट्ठे तदुभयपज्जवे तिप्पएसिए खंधे आया य अवत्तव्व आयाइय नो आयाइय७" જ્યારે ત્રિપ્રદેશિક સ્કંધનો તેની સદ્ભાવપર્યાયવાળા એક દેશની અપેક્ષાએ વિચાર કરવામાં આવે છે, ત્યારે તે સદ્રૂપ છે, અને જ્યારે તે સદ્ભાવપર્યાયવાળા અને અસદ્ભાવપર્યાયવાળા

नो आत्मा इति च युगपद्व्यपदेष्टुमशक्यः अत्रापि त्रयाणामाकाशप्रदेशद्वयावगाहित्वापेक्षया उभयत्रैकवचनम् । ७, "देसे आइट्ठे सब्भावपज्जवे देसा आइट्ठा तदुभयपज्जवा, तिप्पएसिए खंधे आया य अवत्तव्वाइं आयाओ य नो आयाओ य८' यदा देश एक आदिष्टः। विवक्षितः सद्भावपर्यवः, देशा आदिष्टाः विवक्षिताः तदुभयपर्यवाः सद्भावासद्भावोभयपर्यवः तदा त्रिप्रदेशिकः स्कन्धः आत्मा-सद्रूपश्च, अवक्तव्यौ-आत्मानौ च सद्रूपौ, नो आत्मानौ असद्रूपौ च-इति युगपद्व्यपदेष्टुमशक्यौ ८, ' देसा आइट्ठा सब्भावपज्जवा- देसे आइट्ठे -तदुभयपज्जवे तिप्पएसिए--खंधे आयाओ-य अवत्तव्वं-आयाइय नो आयाइय ९' यदा देशौ आदिष्टौ सद्भावपर्यवौ, देशा एकः

द्वारा कहीं नहीं जा सकने के कारण वह अवक्तव्य कोटि में आजाता है, इसलिये एक आत्मा है, और दूसरा अवक्तव्य है ऐसा यह सातवां भंग हुआ-(७) 'देसे आइट्ठे सब्भावपज्जवे देसा आइट्ठा तदुभयपज्जवा तिप्पएसिए खंधे आया य अवत्तव्वाइं आयाओ य नो आयाओ य' जब वह त्रिप्रदेशिक स्कन्ध अपने एक सद्भावपर्याय वाले देश से आदिष्ट होता है तब वह सद्रूप वाला है, और जब वह अपने सद्भावपर्यायों वाले एवं असद्भावपर्यायों वाले अनेक देशों से आदिष्ट होता है तब वह त्रिप्रदेशिक स्कन्ध सद्रूप एवं असद्रूप शब्दों द्वारा युगपत् नहीं कहे जा सकने के कारण अवक्तव्य होता है, ऐसे एक आत्मा और अनेक अवक्तव्य ऐसा यह आठवां भंग बनता है-८। 'देसा आइट्ठा सब्भावपज्जवा देसे आइट्ठे तदुभयपज्जवे तिप्पएसिए खंधे आयाओ य अवत्तव्वं आयाइय नो आयाइय' जब सद्भावपर्याय वाले देशों को लेकर वह

અન્ય દેશથી આદિષ્ટ થાય છે, ત્યારે તેની તે બન્ને પર્યાયો એક સાથે અવાચ્ય હોવાને કારણે તે અવક્તવ્ય કોટિમાં આવી જાય છે. (૮) "देसा आइट्ठा सब्भावपज्जवा देसा आइट्ठा तदुभयपज्जवा तिप्पएसिए खंधे आया य अवत्तव्वाइं आयाओ य नो आयाओ य८" જ્યારે તે ત્રિપ્રદેશિક સ્કંધ પોતાના અનેક સદ્ભાવ પર્યાયોવાળા દેશો વડે સ્કંધ રૂપે આદિષ્ટ થાય છે, ત્યારે તે સદ્રૂપવાળો છે, અને જ્યારે તે પોતાના સદ્ભાવપર્યાયવાળા અને અસદ્ભાવપર્યાયોવાળા અનેક દેશો વડે પ્રદેશ રૂપે આદિષ્ટ થાય છે, ત્યારે તે ત્રિપ્રદેશિક સ્કંધ સદ્રૂપ અને અસદ્રૂપ શબ્દો દ્વારા એક સાથે વાચ્ય નહીં થઈ શકવાને કારણે અવક્તવ્ય હોય છે. (૯) "देसा आइट्ठा सब्भावपज्जवा, देसे आइट्ठे तदुभयपज्जवे तिप्पएसिए खंधे आयाओ य अवत्तव्वं आयाइय नो

आदिष्टः तदुभयपर्यवः सद्भावासद्भावोभयपर्यवस्तदा त्रिप्रदेशिकः स्कन्धः आत्मानौ च सद्रूपौ अवक्तव्यः-आत्मा-सद्रूप इति च, नो आत्मा-असद्रूप इति च युगपद्व्यपदेष्टुमशक्यः९। 'एए तिन्नि भंगा' एते पूर्वोक्तास्त्रयो भङ्गाः सप्तमाष्टम-नवमरूपा विज्ञेयाः। अथ दशममाह-' देसे आइट्ठे असब्भावपज्जवे देसे आइट्ठे तदुभयपज्जवे तिप्पएसिए खंधे नो आया य अवत्तव्वं आयाइ य नो आयाइ य१०' यदा देशः एकः आदिष्टः असद्भावपर्यवः, देशः अपरः आदिष्टः तदुभयपर्यवः-सद्भावासद्भावोभयपर्यवस्तदा त्रिप्रदेशिकः स्कन्धः नो आत्मा-अनात्मा अम-द्रूपश्च अवक्तव्यः-आत्मा सद्रूप इति च नो आत्मा -असद्रूप इति च युगपद्

त्रिप्रदेशिक स्कन्ध आदिष्ट होता है तब वह अनेक प्रदेशों से सद्रूप है, और जब सद्रूप और असद्रूप पर्याय वाले एकदेश को लेकर वह आदिष्ट होता है तब वह युगपत् इन दोनों पर्यायों को कहने वाले शब्द के अभाव से अवक्तव्य होता है अतः अनेक आत्माएँ और एक अवक्तव्य है ऐसा यह नववां भंग होता ९। 'एए तिन्नि भंगा' इस प्रकार से ये तीन सातवां, आठवां, नौवां भंग हैं। 'देसे आइट्ठे असब्भावपज्जवे देसे आइट्ठे तदुभयपज्जवे तिप्पएसिए खंधे नो आया य अवत्तव्वं आयाइय नो आयाइय १०' जब त्रिप्रदेशिक स्कन्ध अपने असद्भावपर्याय वाले एकदेश से आदिष्ट होता है तब वह त्रिप्रदेशिक स्कन्ध नो आत्मा-असद्रूप वाला हो जाता है, और जब वह तदुभयपर्याय वाले अपने दूसरे देशसे आदिष्ट होता है तब वह त्रिप्रदेशिक स्कन्ध सद्रूप और असद्रूप से युगपत् नहीं कहा जा सकने वाला होने के कारण अवक्तव्य कोटि में आजाता है, इसलिये

आयाइय" ન્યારે સદ્ભાવપર્યાયવાળા દેશોની અપેક્ષાએ તે ત્રિપ્રદેશિક સ્કંધ આદિષ્ટ (કથિત) થાય છે, ત્યારે તે સદ્રૂપ છે, અને જ્યારે સદ્રૂપ અને અસદ્રૂપપર્યાયોવાળા એક બીજા દેશની અપેક્ષાએ તે આદિષ્ટ થાય છે, ત્યારે તે બન્ને પર્યાયોને એક સાથે પ્રકટ કરનારા શબ્દને અભાવે તે અવક્તવ્ય હોય છે. "एए तिन्नि भंगा" આ પ્રકારે સાતમો, આઠમો અને નવમો આ ત્રણ ભાંગાઓ બને છે. (૧૦) "देसे आइट्ठे असब्भावपज्जवे, देसे आइ तदुभयपज्जवे तिप्पएसिए खंधे नो आया य अवत्तव्वं आयाइय नो आयाइय१०" જ્યારે ત્રિપ્ર-દેશિક સ્કંધ પોતાના અસદ્ભાવ પર્યાયવાળા એકદેશની અપેક્ષાએ આદિષ્ટ થાય છે, ત્યારે તે ત્રિપ્રદેશિકસ્કંધ અસદ્રૂપવાળો થઈ જાય છે, અને જ્યારે તે સદ્રૂપ અને અસદ્રૂપ પર્યાયવાળા પોતાના બીજા દેશની અપેક્ષાએ આદિષ્ટ થાય છે, ત્યારે તે ત્રિપ્રદેશિક સ્કંધ સદ્રૂપ અને અસદ્રૂપ શબ્દો વડે એક સાથે વાચ્ય ન હોવાને કારણે અવક્તવ્ય કોટિમાં આવી જાય છે. (૧૧)

एकदा व्यपदेष्टुमशक्यः१०, ' देसे आइट्ठे असब्भावपज्जवे देसा आइट्ठा तदुभय पज्जवा तिप्पएसिए खंधे नो आया य अवत्तव्वाइं आयाओ य नो आयाओ य११' यदा देशः एकः आदिष्टः असद्भावपर्यवः, देशा आदिष्टाः तदुभयपर्यवाः-सद्भाव-सद्भावपर्यवाः तदा त्रिप्रदेशिकः स्कन्धो नो आत्मा चासद्रूपः अवक्तव्यौ आत्मानौ सद्रूपौ नो आत्मानौ-अनात्मानौ असद्रूपौ चेति युगपद्व्यपदेष्टुमशक्यौ११, 'देसा आइट्ठा असब्भावपज्जवा देसे आइट्ठे तदुभयपज्जवे, तिप्पएसिए खंधे नो आयाओ य अवत्तव्वं आयाइय नो आयाइय१२' यदा देशा आदिष्टाः असद्भावपर्यवाः, देशः एकः आदिष्टः तदुभयपर्यवः-सद्भावासद्भावोभयपर्यव स्तदा त्रिप्रदेशिकः स्कन्धः-

वह नो आत्मा और अवक्तव्य से मिश्र यह दसवां भंग है १० ' देसे आइट्ठे असब्भावपज्जवे, देसा आइट्ठा तदुभयपज्जवा तिप्पएसिए खंधे नो आया य अवत्तव्वाइं आयाओ य नो आयाओ य११' जब वह त्रिप्रदेशिक स्कन्ध असद्भावपर्याय वाले अपने एकदेश से आदिष्ट होता है, तब वह असद्रूप हो जाता है और जब वह अपने सद्भावपर्याय वाले एवं असद्भावपर्याय वाले अनेक देशों से आदिष्ट होता है, तब वह सद्रूप असद्रूप दोनों पर्याय को एक साथ कहने वाले शब्द के अभाव-में अवक्तव्य हो जाता है अतः नो आत्मा एक, अवक्तव्य अनेक, यह ग्यारहवां भंग है ११। 'देसा आइट्ठा असब्भावपज्जवा, देसे आइट्ठे तदुभयपज्जवे तिप्पएसिए खंधे नो आयाओ य अवत्तव्वं आयाइय नो आयाइय' जब त्रिप्रदेशिक स्कन्ध के असद्भावपर्यायवाले अनेकदेश आदिष्ट होते हैं, और जब उसका तदुभयपर्यायवाला एक-देश आदिष्ट होता है-तब वह त्रिप्रदेशिक स्कन्ध अनेक देशों से अस-

"देसे आइट्ठे असब्भावपज्जवे देसा आइट्ठा तदुभयपज्जवा तिप्पएसिए खंधे नो आया य अवत्तव्वाइं आयाओ य नो आयाओ य ११" જ્યારે તે ત્રિપ્રદેશિક સ્કંધ પોતાના અસદ્ભાવપર્યાયવાળા એકદેશની અપેક્ષાએ આદિષ્ટ થાય છે, ત્યારે તે ત્રિપ્રદેશિક સ્કંધ અસદ્રૂપ થઈ જાય છે, અને જ્યારે તે પોતાના સદ્ભાવપર્યાયવાળા અને અસદ્ભાવપર્યાયવાળા અનેક દેશોની અપેક્ષાએ આદિષ્ટ થાય છે, ત્યારે તે સદ્રૂપ અસદ્રૂપ બન્ને પર્યાયોને એક સાથે કહેનારા શબ્દના અભાવને કારણે અવકતવ્ય થઈ જાય છે. (૧૨) "देसा आइट्ठा असब्भावपज्जवा, देसे आइट्ठे तदुभयपज्जवे तिप्पएसिए खंधे नो आयाओ य अवत्तव्वं आयाइय नो आयाइय" જ્યારે ત્રિપ્રદેશિક સ્કંધના અસદ્ભાવ પર્યાયવાળા અનેક દેશોની અપેક્ષાએ આદિષ્ટ થાય છે, અને જ્યારે તેનો તદુભય (સદ્રૂપ અસદ્રૂપ) પર્યાયવાળો એકદેશ આદિષ્ટ થાય છે, ત્યારે તે ત્રિપ્રદેશિક સ્કંધ અસદ્રૂપ

नो आत्मानौ च-असद्रूपौ अवक्तव्यः-आत्मा इति च नो आत्मा इति च युगपद्व्यपदेष्टुमशक्यः१२, 'देसे आइट्ठे सब्भावपज्जवे देसे आइट्ठे असब्भावपज्जवे देसे आइट्ठे तदुभयपज्जवे तिप्पएसिए खंधे आया य नो आया य, अवत्तव्वं आयाइय, नो आयाइय१३, यदा देशः एकः आदिष्टः सद्भावपर्यवः, देशः अपरः आदिष्टः असद्भावपर्यवः, देशः अन्यस्तृतीयः आदिष्टः तदुभयपर्यवस्तदा त्रिप्रदेशिकः स्कन्धः आत्मा च सद्रूपः नो आत्मा च असद्रूप, अवक्तव्यः-आत्मा सद्रूप इति च नो आत्मा-असद्रूप इति च युगपद्व्यपदेष्टुमशक्यः१२, तथा च त्रिप्रदेशिकस्कन्धे त्रयोदश उपर्युक्ता भङ्गा भवन्ति तत्र पूर्वोक्तेषु षट्सु प्रथमाः सकला-

---

द्रूप होता है और आत्मा नो आत्मा इन शब्दों द्वारा वह युगपत् कहा जाने वाला नहीं होने के कारण एकदेश से अवक्तव्य भी है, अतः यहां नो आत्मा अनेक और अवक्तव्य एक ऐसा बारहवां भंग है।१२। 'देसे आइट्ठे सब्भावपज्जवे, देसे आइट्ठे असब्भावपज्जवे देसे आइट्ठे तदुभयपज्जवे तिप्पएसिए खंधे आया य नोआया य अवत्तव्वं आयाइय नो आयाइय १३' जब त्रिप्रदेशिक स्कन्ध का सद्भावपर्यायवाला एकदेश आदिष्ट होता है तथा जब असद्भावपर्यायवाला उसका दूसरा देश आदिष्ट होता है एवं जब उसका तदुभयपर्यायवाला एक तीसरा देश आदिष्ट होता है-तब वह त्रिप्रदेशिक स्कन्ध सद्रूप होता है, असद्रूप भी होता है और सद्रूप असद्रूप इन शब्दों से युगपत् बोले जाने वाला नहीं होने के कारण अवक्तव्य भी हो जाता है इसलिये एक आत्मा एक अनात्मा और एक अवक्तव्य ऐसा यह तेरहवां भंग है १३। इस प्रकार से ये तेरह भंग त्रिप्रदेशिक स्कंध में प्रकट किये गये हैं।' अर्थात्-त्रिप्र-

---

હોય છે અને આત્મા, નો આત્મા આ બન્ને શબ્દો દ્વારા એક સાથે અવાચ્ય હોવાનેકારણે અવક્તવ્ય પણ થઈ જાય છે (૧૩) "देसे आइट्ठे सब्भावपज्जवे, देसे आइट्ठे असब्भावपज्जवे, देसे आइट्ठे तदुभयपज्जवे तिप्पएसिए खंधे आया य नो आया य अवत्तव्वं आयाइय नो आयाइय" જ્યારે ત્રિપ્રદેશિક સ્કંધનો સદ્ભાવપર્યાયવાળો એકદેશ આદિષ્ટ થાય છે, તથા જ્યારે અસદ્ભાવપર્યાયવાળો તેનો બીજો દેશ આદિષ્ટ થાય છે અને જ્યારે તેનો તદુભય (સદ્રૂપ-અસદ્રૂપ બન્ને) પર્યાયવાળો એક ત્રીજો દેશ આદિષ્ટ થાય છે, ત્યારે તે ત્રિપ્રદેશિક સ્કંધ સદ્રૂપ પણ હોય છે, અસદ્રૂપ પણ હોય છે અને સદ્રૂપ, અસદ્રૂપ શબ્દો વડે એક સાથે અવાચ્ય હોવાને કારણે અવક્તવ્ય પણ હોય છે. આ પ્રકારના આ ૧૩ ભાંગાઓ ત્રિપ્રદેશિક સ્કંધમાં પ્રકટ કરવામાં આવ્યા

देशाः-संपूर्णत्रिप्रदेशिकस्कन्धापेक्षया त्रयो द्विप्रदेशिकस्कन्धवदेव३, तदन्येषु त्रिषु त्रयःस्त्रयोभङ्गाः एकवचनबहुवचनभेदात् ? सप्तमस्त्वेकविध एवेति त्रयोदशभङ्गाः, तदुपसंहरन्नाह-' से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ-तिप्पएसिए खंधे सिय

देशिस्कंध में तेरह भंग बनते हैं। इनमें से पहेले के तीन भंग तो सम्पूर्ण स्कंध की अपेक्षा से है। फिर आत्मा और नो आत्मा के साथ तीन भंग अर्थात् चौथा, पांचवां और छठा ये तीन भंग बनते हैं फिर आत्मा और अवक्तव्य के साथ तीन भंग, सातवां, आठवां और नववां' बनते हैं। फिर नो आत्मा और अवक्तव्य के साथ तीन भंग (दसवां, ग्यारहवां, बारहवां) बनते है। आत्मा एक, नो आत्मा एक और अवक्तव्य एक यह आत्मा आदि को एकवचन रखने से त्रिसंयोगी तेरहवां भंग बनता है १३। त्रिप्रदशी स्कंध में तीन ही प्रदेश होने के कारण-किसी भी तरह बहुवचन नहीं आ सकता है। अतः यह एक ही भंग बनता है। आशय यह है कि त्रिप्रदेशी स्कंध में तेरह भंग बनते हैं उनमें से तीन भंग तो सम्पूर्ण स्कंध की अपेक्षा से बनते हैं। जिनकी व्याख्या (स्पष्टना) पहले कर दी गई है। आगे आत्मा और नो आत्मा के साथ द्विसंयोगी तीन भंग बनते हैं। उनमें से 'आत्मा एक और नो आत्मा एक' यह भंग जब त्रिप्रदेशिक स्कंध द्विप्रदेशावगाढ (दो आकाश प्रदेश पर स्थित) होता है तब दोनों तरफ एकवचन रहते हुए बनता है। जब त्रिप्रदेशी स्कंध त्रिप्रदेशावगाढ हो तब 'आत्मा एक और नो आत्मा बहुत' तथा 'आत्मा बहुत और नो आत्मा एक' ये दो भंग (पांचवां और छठा) बनते हैं। इसी प्रकार 'आत्मा और अवक्तव्य' के साथ तीन भंग तथा 'नो आत्मा और अवक्तव्य के साथ तीन भंग बन जाते हैं। किन्तु दोनों तरफ बहुवचन वाला भंग नहीं बनता है क्यों कि यह त्रिप्रदेशी स्कंध है। अतः दोनों तरफ बहुवचन नहीं आ सकता है। किन्तु आगे चतुःप्रदेशी आदि स्कंधों में दोनों तरफ बहुवचन वाला भंग बन सकता है। 'से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ, तिप्पएसिए खंधे सिय

છે. અહીં પૂર્વોક્ત સાત ભાંગાઓમાં જે પહેલાં ત્રણ ભાંગાઓ છે, તેઓ સમસ્ત ત્રિપ્રદેશિક સ્કંધની અપેક્ષાએ પ્રકટ કરાયા છે. દ્વિપ્રદેશિક સ્કંધમાં જેવાં ત્રણ ભાંગાઓ પહેલાં બતાવવામાં આવ્યા છે, એવા જ આ ત્રણ ભાંગાઓ છે. બાકીના ત્રણ ભાંગાઓમાં જે અવાન્તર ત્રણ ત્રણ ભાંગાઓ કહેવામાં આવ્યા છે, તે એકવચન અને બહુવચનની અપેક્ષાએ કહેવામાં આવ્યા છે. તથા જે સાતમો ભાંગો છે તેમાં કોઈ અવાન્તર ભેદ

आया तं चेव जाव नोआयाइय' हे गौतम ! तत्-तेनार्थेन एवमुच्यते-त्रिप्रदेशिकः स्कन्धः स्यात् आत्मा तदेव-पूर्वोक्तवदेव, यावत् स्यात् नो आत्मा, स्यात् अवक्तव्यम्-आत्मा इति च नो आत्मा इति च, इत्यादिरीत्या पूर्वोक्तास्त्रयोदशभङ्गाः विज्ञेयाः। तदन्तिमो भङ्गो यथा-त्रिप्रदेशिकः स्कन्धः स्यात् आत्मा च, नो आत्मा च अवक्तव्यः आत्मा इति च नो आत्मा इति चेति भावः।

त्रिकप्रदेशिकस्कन्धस्य १३ त्रयोदशभङ्गकोष्ठकम्।

(अत्र भङ्गेषु द्वित आरभ्य सर्वत्र 'अनेक'-शब्दः प्रयुक्तः)

संपूर्णस्कन्धापेक्षया सकलादेशिनोऽसंयोगिनस्त्रयो भङ्गा यथा—

आत्मा	—	नो-आत्मा	—अवक्तव्यमिति
(३)—एकः १		एकः २	एकः ३

द्विकसंयोगिनो नवभङ्गा यथा—

आत्मा—नोआत्मा	आत्मा—अवक्तव्यम्	नो आत्मा—अवक्तव्यम्
(१) एकः — एकः	(४) एकः — एकः	(७) एकः — एकः
(२) एकः — अनेके	(५) एकः — अनेके	(८) एकः — अनेके
(३) अनेके — एकः	(६) अनेके — एकः	(९) अनेके — एकः

त्रिकसंयोगी—एको भङ्गो यथा—

आत्मा	—	नो आत्मा	—अवक्तव्यम्
(१)—एकः	—	एकः	— एकः

(सर्वे-३+९+१=१३)

चतुष्प्रदेशिकः स्कन्धः किम्—आत्मा-सद्रूपो भवति ? किं वा अन्यः—नोआत्मा अनात्मा असद्रूपो भवति ? इति पृच्छा भगवानाह-'गोयमा ! चउप्पएसिए खंधे आया तं चेव जाव नो आयाइय' इसी कारण हे गौतम। मैंने तेरहवें भंग तक ऐसा कहा है कि त्रिप्रदेशिक स्कन्ध कथंचित् सद्रूप है इत्यादि।

अब गौतम प्रभु से ऐसा पूछते हैं-'आया भंते ! चउप्पएसिए खंधे अन्ने पुच्छा' हे भदन्त ! जो चतुष्प्रदेशिक स्कन्ध है वह क्या सद्रूप है

નથી, તે તો એકજ પ્રકારનો છે. "से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ, तिप्पएसिए खधे सिय आया, तंचेव जाव नो आयाइय" હે ગૌતમ ! તે કારણે ત્રિપ્રદેશિક સ્કંધ કયારેક સદ્રૂપ હોય છે આ પહેલા ભાંગાથી લઇને "સદ્રૂપ પણ હોય છે, અસદ્રૂપ પણ હોય છે અને અવક્તવ્ય પણ હોય છે." આ ૧૩માં ભાંગા પર્યન્તના ૧૩ વિકલ્પો કહ્યા છે.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-" आया भंते ! चउप्पएसिए खंधे अन्ने पुच्छा ?" હે ભગવન્ ! જે ચાર પ્રદેશિક સ્કંધ છે, તે શું સદ્રૂપ હોય છે કે, અસદ્રૂપ હોય છે ?

सिय आया१, सिय नोआया२,' हे गौतम ! चतुष्प्रदेशिकः स्कन्धः स्यात् आत्मा सद्रूपः१, स्यात् नो आत्मा असद्रूपः२, 'सिय अवत्तव्वं आयाइय नो आया-इय३' स्यात् अवक्तव्यम्-आत्मा सद्रूप इति च नो आत्मा-अनात्मा असद्रूप इति च युगपद्व्यपदेष्टुमशक्यम्३, 'सिय आया य नो आया य१' स्यात् आत्मा च सद्रूपः, नो आत्मा च-असद्रूपः१, 'सिय आया य नो आयाओ य२' स्यात् आत्मा च सद्रूपः स्यात् नो आत्मानश्च असद्रूपाः२, 'सिय आयाओ य नो आया य३' स्यात् आत्मानश्च सद्रूपाः स्यात् नो आत्मा च असद्रूपः३, 'सिय आयाओ य नो आयाओ य४,' स्यात् आत्मानश्च सद्रूपाः नो आत्मानश्च असद्रूपाः४ 'सिय आया य अवत्तव्वं आयाइय नो आयाइ य१,' स्यात् आत्मा

या असद्रूप है ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-' चउप्पएसिए खंधे सिय आया१, सिय नो आया २' हे गौतम ! चतुष्प्रदेशिक स्कंध स्यात् कथंचित् आत्मा-सद्रूप है१, कथंचित् आत्मा-असद्रूप है २, 'सिय अवत्तव्वं आयाइय नो आयाइय' और कथंचित् वह आत्मा और अनात्मा इन शब्दों द्वारा एक ही काल में कहा नहीं जा सकने के कारण अवक्तव्यरूप है ३, 'सिय आया-य नो आया य' कथंचित् वह सद्रूप है और असद्रूप है ४, 'सिय आया य नो आयाओ य' कथंचित् वह एकप्रदेश की अपेक्षा सद्रूप है और अनेक अपने प्रदेशों की अपेक्षा वह असद्रूप है ५, 'सिय आयाओ य नो आया य' कथंचित् वह अपने अनेक प्रदेशों की अपेक्षा सद्रूप है और एक प्रदेश की अपेक्षा असद्रूप है ६ 'सिय आयाओ य नो आयाओ य' कथंचित् वह चतुष्प्रदेशिक स्कंध अनेक प्रदेशों से सद्रूप है, और अनेक प्रदेशों से असद्रूप भी है ७,

---

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-" चउप्पएसिए खंधे सिय आया१, सिय नो आया२ " હે ગૌતમ ! ચારપ્રદેશિક સ્કંધ (૧) અમુક અપેક્ષાએ આત્મરૂપ-સદ્રૂપ છે અને (૨) અમુક અપેક્ષાએ અનાત્મરૂપ-અસદ્રૂપ છે, " सिय अवत्तव्वं आयाइय नो आयाइय३ " અને આત્મા અને નો આત્મા શબ્દો વડે એક સાથે અવાચ્ય હોવાને કારણે તે કથંચિત્ અવક્તવ્ય રૂપ પણ છે. " सिय आया य नो आया य१" (૧) તે અમુક અપેક્ષાએ સદ્રૂપ પણ છે અને અસદ્રૂપ પણ છે, "सिय आया य नो आयाओ य२" (૨) તે સ્કંધની અપેક્ષાએ કયારેક સદ્રૂપ પણ હોય છે અને પોતાના અનેક પ્રદેશોની અપેક્ષાએ તે કયારેક અસદ્રૂપ પણ હોય છે. " सिय आयाओ य, नो आयाइय३ " (૩) કયારેક તે પોતાના પ્રદેશોની અપેક્ષાએ સદ્રૂપ હોય છે અને સ્કંધની અપે-

च सद्रूपः अवक्तव्यम् आत्मेति च नो आत्मेति च१, 'सिय आयाय अवत्तव्वाइं आयाओ य नो आयाओ य२' स्यात् आत्मा च सद्रूपः अवक्तव्यानि-आत्मानश्च नो आत्मानश्च२, 'सिय आयाओ य अवत्तव्वं आयाइय नो आयाइय३' स्यात् आत्मानश्च सद्रूपाः अवक्तव्यम् आत्मा इति च नो आत्मा इति च३, 'सिय आयाओ य अवत्तव्वाइं आयाओ य नो आयाओ य४' स्यात् आत्मानश्च सद्रूपाः अवक्तव्यानि आत्मानश्च नो आत्मानश्च४.(८) 'सिय नोआया य अवत्तव्वं आयाइय

'सिय आया य अवत्तव्वं आयाइय नो आयाइय' कथंचित् वह आत्मा -सद्रूप है, और आत्मा तथा नो आत्मा इन शब्दों के द्वारा वह एक साथ कहना अशक्य होने से अवक्तव्य है८, 'सिय आया य, अवत्तव्वाइं आयाओ य नो आयाओ य' कथंचित् वह एक प्रदेश से सद्रूप है तथा सद्रूप और असद्रूप इन शब्दों द्वारा वह एक साथ कहा जा नहीं सकने के कारण बहुत प्रदेशों से अवक्तव्य है ९ 'सिय आयाओ य अवत्तव्वं आयाइय नो आयाइय' कथंचित् वह अनेक प्रदेशों से सद्रूप है, तथा आत्मा एवं नो आत्मा इन शब्दों-द्वारा युगपत् कहा जा नहीं सकने के कारण अवक्तव्य है १०, 'सिय आयाओ य अवत्तव्वाइं आयाओ य, नो आयाओ य' कथंचित् यह अनेक प्रदेशों से सद्रूप है, तथा अनेक प्रदेशों से सद्रूप और असद्रूप इन शब्दों द्वारा युगपत् नहीं कहा जा सकने के कारण अवक्तव्यरूप है ११, (६×५×८ ३=

क्षाओ असद्भाव होय छे. "सिय आयाओय नो आयाओय४" (४) કયારેક તે ચતુષ્પ્રદેશિક સ્કંધ સદ્ભાવ પણ હોય છે અને અસદ્ભાવ પણ હોય છે. "सिय आया य अवत्तव्वं आयाइय नो आयाइय१" (१) કયારેક તે આત્મા-સદ્ભાવ હોય છે અને આત્મા તથા નો આત્મા શબ્દો દ્વારા એક સાથે અવાચ્ય હોવાને કારણે અવક્તવ્ય હોય છે "सिय आया य, अवत्तव्वाइं आयाओय नो आयाओय२" (२) કયારેક તે સદ્ભાવ હોય છે. અને આત્માઓ અને નો આત્માઓ શબ્દો વડે એક સાથે અવાચ્ય હોવાને કારણે તે અવક્તવ્ય પણ હોય છે. "सिय आयाओय अवत्तव्वं आयाइय नो आयाइय३" (૩) કયારેક તે અનેક સદ્ભાવોવાળો હોય છે અને આત્મા અને નો આત્મા શબ્દો વડે એક સાથે અવાચ્ય હોવાને કારણે અવક્તવ્ય રૂપ પણ હોય છે. "सिय आयाओय अवत्तव्वाइं आयाओय, नो आयाओय" (૪) કયારેક તે અનેક સદ્ભાવોવાળો હોય છે અને અનેક સદ્ભાવો અને અનેક અસદ્ભાવો વડે એક સાથે અવાચ્ય હોવાને કારણે અનેક અવક્તવ્યો રૂપ પણ હોય છે. ॥૮॥

नो आयाइय१, स्यात् नोआत्मा च असद्रूपः अवक्तव्यम्—आत्मा सद्रूप इति च नोआत्मा-असद्रूप इति च युगपद्व्यपदेष्टुमशक्यम् १, 'सिय नो आया य अवत्तव्वाइं आया य नो आयाओ य२' स्यात् नो आत्मा च अवक्तव्यानि आत्मानश्च, नो आत्मानश्च२, 'सिय नो आयाओ य अवत्तव्वं आयाइय नो आयाइय३' स्यात् नो आत्मानश्च, अवक्तव्यम् आत्मा इति च नोआत्मा इति च३, 'सिय नो आयाओ य अवत्तव्वाइं आयाओ य नो आयाओ य४' स्यात् नोआत्मानश्च अवक्तव्यानि-आत्मानश्च नोआत्मानश्चेति४। (१२×३–१५) 'सिय आया य नो आया य अव-

११) 'सिय आया य, अवत्तव्वं आयाइय नो आयाइय' कथचित् वह असद्रूप है, अवक्तव्य है, क्योंकि सद्रूप और असद्रूप इन शब्दों द्वारा वह युगपत् कहा नहीं जा सकता है १२ 'सिय नो आया य, अवत्तव्वाइं आयाओ य नो आयाओ य' कथंचित् आत्मा-असद्रूप है एवं अनेक प्रदेशों की अपेक्षा अवक्तव्यरूप हैं, क्योंकि वह अनेक आत्मा और अनेक नो अनात्माओं द्वारा युगपत् कहा नहीं जा सकता है १३ 'सिय नो आयाओ य अवत्तव्वं आयाइय नो आयाइय' कथंचित् वह अनेक नो आत्मा रूप है, एक अवक्तव्य है क्योंकि आत्मा नो आत्मा-रूप से वह युगपत् कहा नहीं जा सकता है १४; 'सिय नो आयाओ य, अवत्तव्वाइं आयाओ य नो आयाओ य' कथंचित् वह अनेक नो आत्मा रूप है, अपने अनेक प्रदेशों की अपेक्षा अवक्तव्य रूप है, क्योंकि वह अनेक आत्मा रूप से और अनेक नो आत्मारूप से एक साथ कहा जा नहीं सकता है १२, (११×४=१५)

"सिय नो आया य, अवत्तव्वं आयाइय नो आयाइय १" (१) કયારેક તે ચતુષ્પ્રદેશિક સ્કંધ અસદ્રૂપ હોય છે અને સદ્રૂપ અને અસદ્રૂપ શબ્દો દ્વારા એક સાથે અવાચ્ય હોવાને કારણે કથંચિત્ અવકતવ્ય હોય છે. "सिय नो आया य, अवत्तव्वाइं आया य नो आयाओय२" (२) કયારેક તે અસદ્રૂપ હોય છે અને અનેક પ્રદેશોની અપેક્ષાએ અવક્તવ્ય હોય છે, કારણ કે તે અનેક આત્માઓ અને અનેક નો આત્માઓ દ્વારા એક સાથે અવાચ્ય હોય છે. "सिय नो आयाओ य, अवत्तव्वं आयाइय नो आयाइय३" કયારેક તે અનેક નો આત્મા રૂપ હોય છે અને આત્મા, નો આત્મા રૂપે એક સાથે વાચ્ય નહીં હોવાને કારણે અવકતવ્ય રૂપ હોય છે. "सिय नो आयाओय, अवत्तव्वाइं, आयाओय नो आयाओय४" (४) કયારેક તે અનેક નો આત્મા રૂપ હોય છે અને અનેક આત્મા રૂપે અને અનેક નો આત્મા રૂપે તે એક સાથે અવાચ્ય હોવાને કારણે પોતાના અનેક પ્રદેશોની અપેક્ષાએ અવકતવ્ય રૂપ હોય છે (३+१२=१५)

त्तव्वं आया य नो आया य१६' स्यात् आत्मा च सद्रूपः, नोआत्मा च असद्रूपः अवक्तव्यम्–आत्मा इति च सद्रूपः, नोआत्मा इति च असद्रूपः१६, "सिय आया य नो आया य अवत्तव्वाइं आयाओ य नो आयाओ य१७' स्यात् आत्मा च सद्रूपः नो आत्मा च असद्रूपः अवक्तव्यानि–आत्मानश्च सद्रूपा इति च नोआत्मानश्च असद्रूपा इति च युगपद् व्यपदेष्टुमशक्यम् १७, 'सिय आया य नो आयाओ य अवत्तव्वं आयाइय नो आयाइय१८' स्यात् आत्मा च सद्रूपः नो आत्मानश्च असद्रूपाः, अवक्तव्यम् आत्मा-सद्रूप इति च नोआत्मा–असद्रूप इति च युगपद्व्यपदेष्टुमशक्यम्१८, 'सिय आयाओ य नो आया य अवत्तव्वं आयाइय नो आयाइय१९' स्यात् आत्मानश्च सद्रूपाः नो आत्मा च असद्रूपः

अब त्रिसंयोगी चार भंगो को कहते हैं–'सिय आया य नो आया य अवत्तव्वं आया य नो आया य' कथंचित् वह सद्रूप है कथंचित् असद्रूप है और सद्रूप एवं असद्रूपइन शब्दों द्वारा वह कहा नहीं जा सकने के कारण अवक्तव्य है १६, 'सिय आया य, नो आया य, अवत्तव्वाइं आयाओ य नो आयाओ य' वह कथंचित् सद्रूप है, और कथंचित् असद्रूप है एवं अपने अनेक सद्रूपों से तथा अनेक असद्रूपों से अवक्तव्य है। क्योंकि वह इन शब्दों द्वारा एक साथ नहीं कहा जा सकता है १७ 'सिय आया य नो आयाओ य अवत्तव्वं आयाइय नो आयाइय' कथंचित् वह सद्रूप है, अनेक असद्रूप है तथा सद्रूप और असद्रूप इन शब्दों द्वारा वह युगपत् अवक्तव्य है १८, 'सिय आयाओ य नो आया ओ य अवत्तव्वं आयाइय नो आयाइय' कथंचित् वह अनेक सद्रूप है

"सिय आया य नो आया य अवत्तव्वं आया य नो आया य१६" (१६) તે અમુક અપેક્ષાએ સદ્રૂપ પણ છે, અમુક અપેક્ષાએ અસદ્રૂપ પણ છે અને સદ્રૂપ, અસદ્રૂપ શબ્દો વડે એક સાથે અવાચ્ય હોવાને કારણે અવક્તવ્ય પણ છે.
"सिय आया य, नो आया य, अवत्तव्वाइं आयाओय नो आयाओय१७" (१७) તે અમુક અપેક્ષાએ સદ્રૂપ છે, અમુક અપેક્ષાએ અસદ્રૂપ છે અને પોતાના અનેક સદ્રૂપો અને અનેક અસદ્રૂપો વડે એક સાથે અવાચ્ય હોવાને કારણે તે પોતાના અનેક સદ્રૂપો અને અસદ્રૂપો રૂપે અવક્તવ્ય છે. (૧૮) "सिय आया य नो आयाओय अवत्तव्वं आयाइय नो आयाइय१८" કયારેક તે સદ્રૂપ છે, અનેક અસદ્રૂપ છે, તથા સદ્રૂપ અને અસદ્રૂપ શબ્દો દ્વારા એક સાથે અવાચ્ય હોવાને કારણે અવક્તવ્ય રૂપ છે. (૧૯) "सिय आयाओय, नो आया य, अवत्तव्वं आयाइय नो आयाइय१९" અમુક અપેક્ષાએ તે અનેક સદ્રૂપવાળો છે, એક અસદ્રૂપવાળો અને સદ્રૂપ અને

अवक्तव्यम्–आत्मा सद्रूप इति च नोआत्मा असद्रूप इति च युगपद्व्यपदेष्टुमशक्यम्१९, इति। अस्य चतुष्प्रदेशिकस्यैकोनविंशतिर्भङ्गाः१९ भवन्ति, तत्र–एकसंयोगिनस्त्रयः३, द्विकसंयोगिनो द्वादश१२, त्रिकसंयोगिनश्चत्वारः४ इत्येकोनविंशतिरिति। गौतमस्तत्रकारणं पृच्छति–'से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ–चउप्पएसिए खंधे सिय आया य नो आया य अवत्तव्वं तं चेव अट्ठे पडिउच्चारेयव्वं?' हे भदन्त! तत्–अथ केनार्थेन एवमुच्यते–चतुष्प्रदेशिकः स्कन्धः स्यात् आत्मा च नोआत्मा च, अवक्तव्यम्–स एवार्थः–पूर्वोक्तार्थः प्रत्युच्चारयितव्यः पूर्वोक्तार्थस्य सर्वस्य पुनरुच्चारणमत्र कर्तव्यम्?। भगवानाह–'गोयमा! अप्पणो आइट्ठे आया१,

---

एक असद्रूप है और सद्रूप एवं असद्रूप से एक वह युगपत् अवक्तव्य है १९, इस प्रकार से ये चतुष्प्रदेशिक स्कंध के १९ भंग है। इनमें एकसंयोगी तीन ३ भंग हैं द्विकसंयोगी १२ हैं एवं त्रिकसंयोगी ४ भंग हैं। अर्थात्–पहेले के असंयोगी तीन भंग सकलादेशी (सम्पूर्ण स्कंध की अपेक्षा) बनते हैं ३। आगे के बारह भंग द्विकसंयोगी बनते हैं १५ उसके आगे के चार भंग त्रिक संयोगी बनते हैं१९। यद्यपि त्रिकसंयोगी आठ भंग बनते हैं किंतु वे छह प्रदेशी स्कंध से पहले नहीं बन सकते हैं क्योंकि आत्मा, नो आत्मा और अवक्तव्य इन तीनों में बहुवचन (एक से अधिक) कम से कम छह प्रदेशों के बिना नहीं बन सकता है। यहां चतुःप्रदेशी स्कंध में तो त्रिक संयोगी भंगों में किसी एक तरफ बहुवचन आ सकता है। अतः इसमें त्रिक संयोगी चार ही भंग बनते हैं। इस प्रकार चतुःप्रदेशी स्कंध में कुल उन्नीस १९ भंग बनते हैं। अब गौतम प्रभु से ऐसा पूछते हैं–'से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ, चउप्पएसिए खंधे सिय आया य, नो आया य, अवत्तव्वं तंचेव अट्ठे पडिउच्चारेयव्वं' हे भदन्त! अपने जो चतुष्प्रदेशिक स्कंध में १९ भंग कहे हैं सो क्या कारण है? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं–'गोयमा' हे गौतम

અસદ્રૂપ શબ્દો વડે એક સાથે વાચ્ય નહીં થવાને કારણે અવક્તવ્ય રૂપ છે આ પ્રકારે તે ચારપ્રદેશિક સ્કંધના ૧૯ ભાંગાઓ થાય છે. તેમાં ૩ એકસંયોગી ભાંગાઓ, ૧૨ દ્વિકસંયોગી ભાંગાઓ અને ૪ ત્રિકસંયોગી ભાંગાઓ થાય છે.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન–"से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ, चउप्पएसिए खंधे सिय आया य, नो आया य, अवत्तव्वं तंचेव अट्ठे पडिउच्चारेयव्वं" હે ભગવન્! આપે શા કારણે ચતુષ્પ્રદેશિક સ્કંધના સદ્રૂપ, અસદ્રૂપ, અવક્તવ્ય આદિ ૧૯ ભાંગા કહ્યા છે?

परस्स आइट्ठे नो आया२, तदुभयस्स आइट्ठे अवत्तव्वं आयाइय नो आयाइय३' हे गौतम ! चतुष्प्रदेशिकः स्कन्धः आत्मनः स्वस्य चतुष्प्रदेशिकस्कन्धस्य वर्णादि-पर्यायैः आदिष्टे आदेशे सति आत्मा-स्वपर्यायापेक्षया सद्रूपो भवति१ परस्य पञ्चप्रदेशिकादि स्कन्धान्तरस्य पर्यायैः आदिष्टे आदेशे सति नोआत्मा-परपर्याया-पेक्षया असद्रूपो भवति२, तदुभयस्य स्वपररूपस्य पर्यायैः आदिष्टे आदेशे सति अवक्तव्यम्-आत्मा इति च नोआत्मा इति च युगपद् व्यपदेष्टुमशक्यम् ३, 'देसे आइट्ठे सब्भावपज्जवे देसे आइट्ठे असब्भावपज्जवे ? चउभंगो४' यदा देशः एकः आदिष्टः स्वपर्यायैः सद्भावपर्यवः, देशः अपरः आदिष्टः परपर्यायैः असद्भाव-

'अप्पणो आइट्ठे आया १, परस्स आइट्ठे नो आया२, तदुभयस्स आइट्ठे अवत्तव्वं आयाइय नो आयाइय' चतुष्प्रदेशिक स्कंध अपने वर्णादि रूप पर्यायों से आदिष्ट होने पर सद्रूप है ? पञ्चप्रदेशिकादि स्कन्धा-न्तर की पर्यायों से आदिष्ट होने पर वह असद्रूप है२ क्योंकि पर-पर्यायों की अपेक्षा से-वह असद्रूप होता है २, स्वपर्याय एवं परपर्याय इन दोनों पर्यायों से जब वह आदिष्ट होता है, आत्मा नो आत्मा शब्दों से वह युगपत् आदिष्ट नहीं हो सकता है, इसलिये वह अवक्तव्य है। ये असंयोगीको ६ तीन भंग हुए। द्विकसंयोगी १२ भंग इसप्रकार-'देसे आइट्ठे सब्भावपज्जवे देसे आइट्ठे असब्भावपज्जवे चउभंगो' जब अपनी पर्यायों से सद्भाव पर्यायवाला उसका एकदेश आदिष्ट होता है-और परपर्यायों की अपेक्षा से असद्भाव पर्यायवाला दूसरा देश आदिष्ट होता है-तब वह चतुष्प्रदेशिक स्कन्ध सद्रूप होता है

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-"गोयमा !" હે ગૌતમ ! "अप्पणो आइट्ठे आया१ परस्स आइट्ठे नो आया२, तदुभयस्स आइट्ठे अवत्तव्वं आयाइय नो आयाइय३" (૧) ચતુષ્પ્રદેશિક સ્કંધનો તેના પોતાના વર્ણાદિ પર્યાયોની અપે-ક્ષાએ વિચાર કરવામાં આવે, તો તે સદ્રૂપ છે. (૨) પાંચ પ્રદેશિક આદિ સ્કન્ધાન્તરની પર્યાયોની અપેક્ષાએ કહેવામાં આવે, તો તે અસદ્રૂપ છે, કારણ કે પરપર્યાયોની અપેક્ષાએ તે અસદ્રૂપ હોય છે. (૩) સ્વપર્યાયો અને પર-પર્યાયો, આ બન્નેની અપેક્ષાએ જ્યારે કહેવામાં આવે છે, ત્યારે તે આત્મા અને નો આત્મા શબ્દો વડે એક સાથે અવાચ્ય હોવાને કારણે તે અવક્તવ્ય રૂપ હોય છે. "देसे आइट्ठे सब्भावपज्जवे देसे आइट्ठे असब्भावपज्जवे चउ-भंगो" જ્યારે તેની પર્યાયોની અપેક્ષાએ સદ્ભાવ પર્યાયવાળો તેનો એકદેશ આદિષ્ટ (કથિત) થાય છે, અને પરપર્યાયોની અપેક્ષાએ અસદ્ભાવ પર્યાય-વાળો બીજો દેશ આદિષ્ટ થાય છે, ત્યારે તે ચતુષ્પ્રદેશિક સ્કંધ (૧) સદ્રૂપ

पर्यवः तदा चतुष्प्रदेशिकः स्कन्धः आत्मा च सदूरूपः नोआत्मा च असदूरूपो भवति ? इत्यादि पूर्वोक्तरीत्या चतुर्भङ्गी वक्तव्या।

तथाहि-एकोऽयं पूर्वोक्तो भङ्गः १, शेषभङ्गत्रयं यथा-देसे आइट्ठे सब्भावपज्जवे देसा आइट्ठा असब्भावपज्जवा२, देसा आइट्ठा सब्भावपज्जवा देसे आइट्ठे असब्भावपज्जवे३, देसा आइट्ठा सब्भावपज्जवा देसा आइट्ठा असब्भावपज्जवा ४×३=७। 'सब्भावपज्जवेणं तदुभयेण य चउभंगो, असब्भावेणं तदुभयेण य चउभंगो' सद्भावपर्यवेण, तदुभयेन च सद्भावपर्यवासद्भावपर्यवेण चतुर्भङ्गी वक्तव्या, तथाहि-'देसे आइट्ठे सब्भावपज्जवे देसे आइट्ठे तदुभयपज्जवे आयाइय नो आयाइय १, देसे आइट्ठे सब्भावपज्जवे देसा आइट्ठा तदुभयपज्जवा आयाओ य नो आयाओ य२, देसा आइट्ठा सब्भावपज्जवा देसे आइट्ठे तदुभयपज्जवे आयाइय-

---

और असद्रूप होता है इत्यादि पूर्वोक्त रीति से यहां चतुर्भंगी कहनी चाहिये 'देसे आइट्ठे सब्भावपज्जवे देसे आइट्ठे असब्भावपज्जवे' एक तो यह भंग पहिले प्रकट ही कर दिया गया है-१ (४) शेष ३ भंग इस प्रकार हैं-'देसे आइट्ठे सब्भावपज्जवे, देसा आइट्ठा असब्भावपज्जवा२, (५) देसा आइट्ठा सब्भावपज्जवे देसे आइट्ठे असब्भावपज्जवे ३ (६) देसा आइट्ठा सब्भावपज्जवा देसा आइट्ठा असब्भावपज्जवा ४ (७) इस प्रकार से चार ये और पूर्व के तीन भंग, ये-सब मिलकर ७ सात भंग हो जाते हैं। 'सब्भावपज्जवेणं तदुभएण य चउभंगो, असब्भावेणं तदुभयेण य चउभंगो' सद्भावपर्याय को लेकर और तदुभय सद्भाव असद्भाव पर्याय को लेकर चार भंग होते हैं, जो इस प्रकार से हैं-'देसे आइट्ठे सब्भावपज्जवे, देसे आइट्ठा तदुभयपज्जवे आयाइय नो आयाइय १, देसे आइट्ठे सब्भावपज्जवे, देसा आइट्ठा तदुभयपज्जवा

હોય છે અને (२) असद्रूप હોય છે ઇત્યાદિ ચાર ભાંગા પૂર્વોક્ત પદ્ધતિ અનુસાર કહેવા જોઇએ. "देसे आइट्ठे सब्भावपज्जवे, देसे आइट्ठे असब्भावपज्जवे" આ એક ભાંગો તો પહેલાં પ્રગટ કર્યો છે. બાકીના ત્રણ ભાંગા નીચે પ્રમાણે સમજવા-"देसे आइट्ठे सब्भावपज्जवे, देसा आइट्ठा असब्भावपज्जवा२, देसा आइट्ठा सब्भावपज्जवा, देसे आइट्ठे असब्भावपज्जवे३, देसा आइट्ठा सब्भावपज्जवा, देसा आइट्ठा असब्भावपज्जवा४" આ પ્રકારના આ ચાર ભાંગા અને પહેલાનાં ત્રણ ભાંગા મળીને સાત ભાંગા થાય છે. "सब्भावपज्जवेणं तदुभएण य चउभंगो, असब्भावेणं तदुभयेण य चउभंगो" સદ્ભાવ પર્યાયની અપેક્ષાએ તથા સદ્ભાવ અસદ્ભાવ પર્યાયની અપેક્ષાએ ચાર ભાંગા થાય છે. તે ચાર ભાંગા નીચે પ્રમાણે છે-"देसे आइट्ठे सब्भावपज्जवे, देसा आइट्ठा तदुभयपज्जवा आयाइय नो आयाइय१, देसे आइट्ठे सब्भावपज्जवे, देसा आइट्ठा

नो आयाइय३, देसा आइट्ठा सब्भावपज्जवा देसा आइट्ठा तदुभयपज्जवा आयाओ य नो आयाओ य "४×७=११। एवम् असद्भावपर्यवेण, तदुभयेन च-सद्भावाऽसद्भावपर्यवेण चतुर्भङ्गी वक्तव्या, तथाहि-'देसे आइट्ठे असब्भावपज्जवे, देसे आइट्ठे तदुभयपज्जवे आयाइय नो आयाइय१, देसे आइट्ठे असब्भावपज्जवे देसा आइट्ठा तदुभयपज्जवा आयाओ य नो आयाओ य२, देसा आइट्ठा असब्भावपज्जवा देसे आइट्ठे तदुभयपज्जवे आयाइय नो आयाइय३, देसा आइट्ठा असब्भावपज्जवा देसा आइट्ठा तदुभयपज्जवा आयाओ य नो आयाओ य" ४×११=१५। एषामर्थः पूर्ववत् स्वयमूहनीयः।

आयाओ य नो आयाओय २, देसा आइट्ठा सब्भावपज्जवा देसे आइट्ठे तदुभयपज्जवे आयाइ य नो आयाइ य ३, देसा आइट्ठा-सब्भावज्जवा, देसा आइट्ठा तदुभयपज्जवा आयाओ य, नो आयाओ य ४+७=११ पूर्वोक्त सात और ये ४ भंग-आत्मा और अवक्तव्य की विवक्षा से हुए हैं। ११ इस प्रकार से 'असब्भावेणं तदुभएण य चउब्भंगो' असद्भाव पर्याय एवं तदुभय पर्याय-सद्भाव असद्भाव-पर्याय को लेकर चतुर्भंगी होती है-जो इस प्रकार से है-'देसे आइट्ठे असब्भावपज्जवे देसे आइट्ठे तदुभयपज्जवे आयाइय नो आयाइय १ देसे आइट्ठे असब्भावपज्जवे, देसा आइट्ठा तदुभयपज्जवा आयाओ य नो आयाओ य२, देसा आइट्ठा असब्भावपज्जवा देसे आइट्ठे तदुभयपज्जवे आयाइ य नो आयाइ य ३, देसा आइट्ठा असब्भावपज्जवा देसा आइट्ठा तदुभयपज्जवा आयाओ य नो आयाओ य ४' ११+४=१५ इनका अर्थ पहिले की तरह से ही समझ

तदुभयपज्जवा आयाओ य नो आयाओ य२; देसा आइट्ठा सब्भावपज्जवा, देसे आइट्ठे तदुभयपज्जवे आयाइय नो आयाइय३; देसा आइट्ठा सब्भावपज्जवा देसा आइट्ठा तदुभयपज्जवा आयाओ य नो आयाओ य४" પહેલાંના સાત ભાંગાઓ અને આ ચાર ભાંગા મળીને ૧૧ ભાંગા થાય છે. પૂર્વોક્ત ૪ અને આ ૪ ભાંગાઓ એકવચન અને બહુવચનની અપેક્ષાએ બન્યા છે એજ પ્રમાણે અસદ્ભાવ પર્યાયની અપેક્ષાએ અને તદુભય (સદ્ભાવ-અસદ્ભાવ) પર્યાયની અપેક્ષાએ ચાર ભાંગાઓ બને છે. તે ભાંગાઓ નીચે પ્રમાણે છે-" देसे आइट्ठे असब्भावपज्जवे, देसे आइट्ठे तदुभयपज्जवे आयाइ य नो आयाइ य१; देसे आइट्ठे असब्भावपज्जवे, देसा आइट्ठा तदुभयपज्जवा आयाओ य नो आयाओ य२; देसा आइट्ठा असब्भावपज्जवा, देसे आइट्ठे तदुभयपज्जवे आयाइ य नो आयाइ य३; देसा आइट्ठा असब्भावपज्जवा, देसा आइट्ठा तदुभयपज्जवा आयाओ य नो

'देसे आइट्ठे सब्भावपज्जवे देसे आइट्ठे असब्भावपज्जवे देसे आइट्ठे तदुभयपज्जवे चउप्पएसिए खंधे आया य नो आया य अवत्तव्वं आयाइ य नो आयाइ य' यदा देशः एक आदिष्टः स्वपर्यायैः असद्भावपर्यवः देशः परः आदिष्टः परपर्यायैः असद्भावपर्यवः, देशः अपरः आदिष्टस्तदुभयपर्यवः-सद्भावासद्भावपर्यवस्तदा चतुष्प्रदेशिकः स्कन्धः आत्मा च सद्रूपः नो आत्मा च असद्रूपः, अवक्तव्यम्-आत्मा-सद्रूप इति च नो आत्मा असद्रूप इति च युगपद्व्यपदेष्टुमशक्यम् १६, 'देसे आइट्ठे सब्भावपज्जवे देसे आइट्ठे असब्भावपज्जवे देसा आइट्ठा तदुभयपज्जवा चउप्पएसिए खंधे भवइ आया य नो आया य अवत्तव्वाइं आयाओ य नो आया ओ य १७' यदा देशः आदिष्टः

लेना चाहिये। इस प्रकार असंयोगी तीन और द्विकसंयोगी १२ बारह, ऐसे ये पन्द्रह भंग हुए (१५) अब त्रिकसंयोगी चार भंगो को कहते हैं-

'देसे आइट्ठे सब्भावपज्जवे, देसे आइट्ठे असब्भावपज्जवे देसे आइट्ठे तदुभयपज्जवे, चउप्पएसिए खंधे आया य नो आया य अवत्तव्वं आयाइय नो आयाइय' जिस समय अपनी पर्यायों से सद्भावपर्याय वाला एकदेश आदिष्ट होता है, और जिस समय परपर्यायों से असद्भावपर्यायवाला देश आदिष्ट होता है, तथा सद्भावपर्याय वाला और असद्भावपर्याय वाला देश आदिष्ट होता है, तब चतुष्प्रदेशिक स्कन्ध सद्रूप, असद्रूप और आत्मा नो आत्मा इन शब्दों से वह युगपत् अवक्तव्य होने के कारण अवक्तव्य होता है १६, 'देसे आइट्ठे सब्भावपज्जवे देसे आइट्ठे असब्भावपज्जवे देसा आइट्ठा तदुभयपज्जवा चउप्पएसिए खंधे आया य नो आया य अवत्तव्वाइं आयाओ य णो

आयाओ य ४" પહેલાનાં ૧૧ ભાંગા અને આ ૪ ભાંગા મળીને ૧૫ ભાંગા થાય છે. તેમનો અર્થ પહેલા કહ્યા પ્રમાણે સમજી લેવો.

" देसे आइट्ठे सब्भावपज्जवे, देसे आइट्ठे असब्भावपज्जवे, देसे आइट्ठे तदुभयपज्जवे, चउप्पएसिए खंधे आया य नो आया य अवत्तव्वं आयाइय नो आयाइय१६ " (१६) જ્યારે પોતાની પર્યાયોની અપેક્ષાએ સદ્ભાવ પર્યાયવાળો એકદેશ આદિષ્ટ થાય છે, અને જ્યારે પરપર્યાયોની અપેક્ષાએ અસદ્ભાવ-પર્યાયવાળો દેશ આદિષ્ટ થાય છે, તથા સદ્ભાવપર્યાયવાળો અને અસદ્ભાવ-પર્યાયવાળો દેશ આદિષ્ટ થાય છે, ત્યારે ચતુષ્પ્રદેશિક સ્કંધ સદ્રૂપ, અસ-દ્રૂપ અને આત્મા, નો આત્મા આ બે શબ્દો વડે એક સાથે અવક્તવ્ય (અવાચ્ય) હોવાને કારણે અવક્તવ્ય હોય છે. (૧૭) " देसे आइट्ठे सब्भाव-पज्जवे देसे आइट्ठे असब्भावपज्जवे, देसा आइट्ठा तदुभयपज्जवा चउप्पएसिए खंधे भवइ आया य नो आया य अवत्तव्वाइं आयाओ य णो आयाओ य १७ "

स्वयर्यायैः सद्भावपर्यवः, देशः अपरः आदिष्टः परपर्यायैः असद्भावपर्यवः, देशा आदिष्टाः तदुभयपर्यवाः सद्भावासद्भावपर्यवाः तदा चतुष्प्रदेशिकः स्कन्धो भवति आत्मा च सदरूपः, नो आत्मा च असद्रूपः अवक्तव्यानि–आत्मनश्च सदरूपाः नो आत्मनश्च–असद्रूपा इति युगपद् व्यपदेष्टुमशक्यानि १७। 'देसे आइट्ठे सब्भावपज्जवे देसा आइट्ठा असब्भावपज्जवा देसे आइट्ठे तदुभयपज्जवे चउप्पएसिए खंधे आया य नो आयाओ य अवत्तव्वं आयाइ य नो आयाइ य १८' यदा देशः एकः आदिष्टः स्वपर्यायैः सद्भावपर्यवः, देशौ द्वौ आदिष्टौ परपर्यायैः असद्भावपर्यवौ, देशः आदिष्टः तदुभयपर्यवः- सद्भावपर्यवासद्भावपर्यवस्तदा चतुष्प्रदे-

---

आयाओ य १७' જ્યારે અપની પર્યાયો સે સદ્ભાવપર્યાયવાલા એકદેશ આદિષ્ટ હોતા હૈ, પરપર્યાયોં સે અસદ્ભાવપર્યાયવાલા દૂસરા દેશ આદિષ્ટ હોતા હૈ, ઔર સદ્ભાવપર્યાયવાલે ઔર અસદ્ભાવપર્યાયવાલે અનેક દેશ આદિષ્ટ હોતે હૈં તબ વહ ચતુષ્પ્રદેશિક સ્કન્ધ કથંચિત્ સદ્રૂપ, કથંચિત્, અસદ્રૂપ હોતા હૈ ઔર અનેક આત્માઓં એવં અનાત્માઓં સે વહ યુગપત્ અવાચ્ય હોને કે કારણ અવક્તવ્યરૂપ ભી હોતા હૈ ૧૭' 'देसे आइट्ठे सब्भावपज्जवे, देसा आइट्ठा असब्भावपज्जवा देसे आइट्ठे तदुभयपज्जवे चउप्पएसिए खंधे आया य नो आयाओ य अवत्तव्वं आयाइय नो आयाइय १८' જિસ સમય સ્વપર્યાયોં સે સદ્ભાવપર્યાયવાલા એકદેશ આદિષ્ટ હોતા હૈ, ઔર પરપર્યાયોં સે અસદ્ભાવપર્યાયવાલે અનેક દેશ આદિષ્ટ હોતે હૈં, ઔર તદુભયપર્યાયવાલા એકદેશ આદિષ્ટ હોતા હૈ, તબ વહ ચતુષ્પ્રદેશિક સ્કન્ધ કથંચિત્ સદ્રૂપ કથંચિત્

જ્યારે પોતાની પર્યાયોની અપેક્ષાએ સદ્ભાવ પર્યાયવાળો એકદેશ આદિષ્ટ થાય છે, પરપર્યાયોની અપેક્ષાએ અસદ્ભાવ પર્યાયવાળો એકદેશ આદિષ્ટ થાય છે, અને સદ્ભાવપર્યાયવાળા અને અસદ્ભાવપર્યાયવાળા અનેક દેશો આદિષ્ટ થાય છે, ત્યારે તે ચતુષ્પ્રદેશિક સ્કંધ કથંચિત્ સદ્રૂપ, કથંચિત્ અસદ્રૂપ, અને અનેક આત્માઓ અને નો આત્માઓ વડે એક સાથે અવાચ્ય હોવાને કારણે અવક્તવ્ય રૂપ પણ હોય છે.

(૧૮) "देसे आइट्ठे सब्भावपज्जवे, देसा आइट्ठा असब्भावपज्जवा, देसे आइट्ठे तदुभयपज्जवे चउप्पएसिए खंधे आया य नो आयाओ य अवत्तव्वं आयाइय नो आयाइय १८" જે સમયે સ્વપર્યાયોની અપેક્ષાએ સદ્ભાવ પર્યાયવાળો એકદેશ આદિષ્ટ થાય છે, અને પરપર્યાયોની અપેક્ષાએ અસદ્ભાવપર્યાયવાળા બે દેશ આદિષ્ટ થાય છે, અને તદુભય પર્યાયવાળો બીજો દેશ આદિષ્ટ

शिकः स्कन्धः आत्मा च सद्रूपः नो आत्मानौ च असद्रूपौ, अवक्तव्यम्–आत्मा–सद्रूपः इति च नो आत्मा असद्रूप इति च युगपद् व्यपदेष्टुमशक्यम् १८, 'देसा आइट्ठा सब्भावपज्जवा देसे आइट्ठे असब्भावपज्जवे देसे आइट्ठे तदुभयपज्जवे चउप्पएसिए खंधे आयाओ य नो आया य अवत्तव्वं आयाइ य नो आयाइ य १९' यदा देशा आदिष्टाः स्वपर्यायैः सद्भावपर्यवाः, देशः एकः आदिष्टः परपर्यायैः असद्भावपर्यवः देशः आदिष्टस्तदुभयपर्यवः–सद्भावासद्भावपर्यवस्तदा चतुष्प्रदेशिकः स्कन्धः आत्मानश्च सद्रूपाः, नो आत्मा च–असद्रूपः, अवक्तव्यम्–आत्मा सद्रूप इति च नो आत्मा–असद्रूप इति च १९। तदुपसंहरन्नाह–' से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ चउप्पएसिए खंधे सिय आया सिय नो आया सिय अव-

---

अनेक देशों से असद्रूप और आत्मा एवं अनात्मारूप से युगपत् कहे जाना अशक्य होने से अवक्तव्य होता है १८, 'देसा आइट्ठा सब्भावपज्जवा, देसे आइट्ठे असब्भावपज्जवे देसे आइट्ठे तदुभयपज्जवे चउप्पएसिए खंधे आयाओं य नो आया य अवत्तव्वं आयाइय नो आयाइय १९' जिस समय चतुष्प्रदेशिक स्कन्धके देश अपनी पर्यायों से सद्भावपर्यायवाले आदिष्ट होते हैं, तथा परपर्यायों की अपेक्षा से असद्भावपर्यायवाला दूसरा देश जब आदिष्ट होता है, और जब सद्भाव एवं असद्भाव दोनों पर्यायवाला देश आदिष्ट होता है तब वह चतुष्प्रदेशिक स्कंध इन सबकी अपेक्षा से सद्रूपोंवाला होता है, असद्रूपवाला होता है, और सद्रूप एवं असद्रूप इन दोनों रूपों से वह युगपत् अवाच्य होने के कारण अवक्तव्य होता है १९,।

થાય છે, ત્યારે તે ચતુષ્પ્રદેશિક સ્કંધ કથંચિત્ સદ્રૂપ હોય છે, કથંચિત્ બે દેશોની અપેક્ષાએ અસદ્રૂપ હોય છે, અને આત્મા તથા અનાત્મા શબ્દો વડે એક સાથે અવાચ્ય હોવાને કારણે અવક્તવ્ય રૂપ પણ હોય છે.

(૧૯) "देसा आइट्ठा सब्भावपज्जवा, देसे आइट्ठ असब्भावपज्जवे देसे आइट्ठे तदुभयपज्जवे चउप्पएसिए खंधे आयाओ य नो आया य अवत्तव्वं आयाइय नो आयाइय १९" જ્યારે ચાર પ્રદેશિક સ્કંધના દેશ પોતાની પર્યાયોની અપેક્ષાએ સદ્ભાવ પર્યાયવાળા આદિષ્ટ થાય છે અને પરપર્યાયની અપેક્ષાએ અસદ્ભાવપર્યાવાળો બીજો દેશ જ્યારે આદિષ્ટ થાય છે અને જ્યારે સદ્ભાવ અને અસદ્ભાવ પર્યાયવાળો દેશ આદિષ્ટ થાય છે, ત્યારે તે ચાર પ્રદેશિક સ્કંધ તે સૌની અપેક્ષાએ સદ્રૂપોવાળો હોય છે, અને સદ્રૂપ અને અસદ્રૂપ આ બન્ને રૂપે તે એક સાથે અવાચ્ય હોવાને કારણે અવક્તવ્ય હોય છે.

सव्वं निक्खेवे ते चेव भंगा उच्चारेयव्वा जाव नो आयाइय' हे गौतम ! तत्-अथ, तेनार्थेन एवमुच्यते-चतुष्प्रदेशिकः स्कन्धः स्यात् आत्मा सदूरूपः, १ स्यात् नो आत्मा-असदूरूपः, २ स्यात् अवक्तव्यम् आत्मा इति च नो आत्मा इति च ३ अस्मिन् निक्षेपे ते एव पूर्वोक्ताः एकोनविंशतिर्भङ्गाः उच्चारयितव्या वक्तव्याः, यावत्-स्यात् आत्मा च नो आत्मा च, ४ स्यात् आत्मा च अवक्तव्यम्, ४ स्यात् नो आत्मा च अवक्तव्यम्, ४ इत्यादि रीत्या बोध्यम् । तदन्तिममेकोनविंशतितमं भङ्गमाह-स्यात् आत्मानश्च सदूरूपाः, नो आत्मा चासदूरूपः, अवक्तव्यम्-आत्मा सदूरूप इति च, नो आत्मा-असदूरूप-

---

इस प्रकार पहले के पंद्रह भंग और ये त्रिक संयोगी ४ भंग मिलाकर चतुष्प्रदेशी स्कंध के उन्नीस भंग होते हैं। 'से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ चउप्पएसिए खंधे सिय आया, सिय नो आया, सिय अवत्तव्वं, निक्खेवे ते चेव भंगा उच्चारेयव्वा जाव नो आयाइय' इसलिए हे गौतम ! मैंने ऐसा कहा है कि चतुष्प्रदेशिक स्कंध कथंचित् सदूरूप है १, कथंचित् असदूरूप है २, और कथंचित् अवक्तव्य है ३ क्योंकि वह सदूरूप और असदूरूप इन शब्दों द्वारा युगपत् वाच्य नहीं हो सकता है इस निक्षेप में वे ही पूर्वोक्त १९ उन्नीस भंग उच्चारित करना चाहिये यावत्-'स्यात् आत्मा च, नो आत्मा च, स्यात् आत्माच अवक्तव्यम्-स्यात् नो आत्माच अवक्तव्यम् इत्यादिरूप से ये भंग जानना चाहिये अन्तिम भंग की सूचना देने के लिये सूत्रकार ने 'स्यात् आत्मानश्च-सदूरूपाः नो आत्मा चासदूरूपः, अवक्तव्यम् आत्मा सदूरूपः इति च, नो आत्मा असदूरूप इति च' ऐसा कहा है इस प्रकार चतुष्प्रदेशिक स्कन्ध में इन १९ भंगों

"से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ चउप्पएसिए खंधे सिय आया, सिय नो आया, सिय अवत्तव्वं, निक्खेवे ते चेव भंगा उच्चारेयव्वा जाव नो आयाइय" હે ગૌતમ ! તે કારણે મેં એવું કહ્યું છે કે (૧) ચાર પ્રદેશિક સ્કંધ અમુક અપેક્ષાએ સદ્રૂપ છે, (૨) અમુક અપેક્ષાએ અસદ્રૂપ છે, (૩) અને અમુક અપેક્ષાએ અવક્તવ્ય છે, કારણ કે તે સદ્રૂપ અને અસદ્રૂપ શબ્દો વડે એક સાથે અવાચ્ય હોય છે. આ રીતે ૧૯માં ભંગ પર્યન્તના ભંગો અહીં કહેવા જોઇએ ૧૯મો ભંગ આ પ્રમાણે સમજવો-"स्यात् आत्मा च, नो आत्मा च, स्यात् आत्मा च अवक्तव्यं, स्यात् नो आत्मा च अवक्तव्यं" છેલ્લા ભંગને સૂત્રકારે આ સૂત્રપાઠ દ્વારા પ્રકટ કર્યો છે-"स्यात् आत्मानश्च-सदूरूपाः, नो आत्मा चासदूरूपः, अवक्तव्यम् आत्मा सदूरूप इति च, नो आत्मा असदूरूप इति च" આ પ્રકારના ૧૯ ભંગોમાં ત્રણ ભંગ સકલાદેશવાળા છે,

श्चेति १९ तथा च चतुष्प्रदेशिके स्कन्धे एकोनविंशतिर्भङ्गकेषु त्रयः सकलादेशाः, २ शेषेषु चतुर्षु प्रत्येकं चत्वारश्चत्वारो विकल्पा भवन्ति, १६=१९ ।

चतुष्प्रदेशिकस्कन्धस्य १९एकोनविंशतिर्भङ्गकोष्ठकम् ।

संपूर्णस्कन्धापेक्षया सकलादेशिनोऽसंयोगिनस्त्रयो भङ्गाः यथा-

(३)-आत्मा	-	नो आत्मा	-	अवक्तव्यम्
एकः१		एकः२		एकः३

द्विकसंयोगिनो १२द्वादश भङ्गा यथा-

आत्मा -नोआत्मा	आत्मा—अवक्तव्यमिति	नो आत्मा -अवक्तव्यमिति
(१) एकः- एकः	(५)-एकः एकः	(९)-एकः एकः
(२) -एकः- अनेके	(६)- एकः अनेके	(१०)-एकः अनेके
(३) अनेके-एकः	(७)-अनेके एकः	(११)-अनेके एकः
(४) अनेके-अनेके	(८)-अनेके अनेके	(१२)-अनेके अनेके

त्रिकसंयोगिनश्चत्वारो भङ्गा यथा-

आत्मा	— नो आत्मा	- अवक्तव्यमिति ।
(१) एकः	एकः	एकः
(२) एकः	एकः	अनेके
(३) एकः	अनेके	एकः
(४) अनेके	एकः	एकः

। सर्वे-३+१२+४=१९ ।

गौतमः पृच्छति-'आया भंते पंचपएसिए खंधे अन्ने पंचपएसिए खंधे ? हे भदन्त ! पञ्चप्रदेशिकः स्कन्धः किम्-आत्मा-सद्रूपः ? किं वा अन्यः अनात्मा-असद्रूपः पञ्चप्रदेशिकः स्कन्धो भवति ? भगवानाह-'गोयमा ! पंचपएसिए खंधे

में ३ भंग सकलादेश वाले हैं, शेष चारों में प्रत्येक में चार चार विकल्प होते हैं। इस प्रकार से ये १९ भंग हैं।

अब गौतमस्वामी प्रभु से ऐसा पूछते हैं-' आया भंते ! पंचपएसिए खंधे अन्ने पंचपएसिए खंधे ? ' हे भदन्त ! पंचप्रदेशिक स्कन्ध क्या सद्रूप होता है ? या असद्रूप होता है ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-

ભાંગીના ચારેમાં પ્રત્યેકમાં ચાર ચાર વિકલ્પ થાય છે. આ પ્રકારના કુલ ૧૯ ભંગ થાય છે.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-" आया भंते ! पंचपएसिए खंधे अन्ने पंचपएसिए खंधे ? " હે ભગવન્ ! પાંચ પ્રદેશિક સ્કંધ શું સદ્રૂપ હોય છે, કે અસદ્રૂપ હોય છે ?

सिय आया य १ सिय नो आया य २' हे गौतम ! पञ्चमदेशिकः स्कन्धः स्यात् आत्मा सद्रूपः १, स्यात् नो आत्मा-अनात्मा असद्रूपः२, 'सिय अवत्तव्वं आयाइय नो आयाइय ३' स्यात् अवक्तव्यम्-आत्मा सद्रूप इति च, नो आत्मा असद्रूप इति च युगपद् वक्तुमशक्यम् ३, 'सिय आया य नो आया य ४ सिय आया य अवत्तव्वं' ४ स्यात् आत्मा च सद्रूपेण नो आत्मा च असद्रूपेण४, स्यात् कथञ्चित् आत्मा च अवक्तव्यम् युगपदुभयरूपेण व्यपदेष्टुमशक्यम् ४ (११) 'नो आया य अवत्तव्वेण य ४' नो आत्मा च अवक्तव्येन सह चत्वारो भङ्गाः ४ (११-१५) 'तियसंजोगे एक्को ण पडइ' त्रिकसंयोगे संभवत्सु अष्टसु

'गोयमा' हे गौतम ! 'पंचपएसिए खंधे सिय आया य १, सिय नो आया य २' पंच प्रदेशिक स्कन्ध कथंचित् सद्रूप है१, कथंचित् असद्रूप है २, 'सिय अवत्तव्वं आयाइ य नो आयाइ य' कथंचित् वह अवक्तव्यरूप है क्योंकि सद्रूप और असद्रूप इन दोनों शब्दों द्वारा युगपत् वह कहा नहीं जा सकता है३, 'सिय आया य, नो आया य सिय अवत्तव्वं४' कथंचित् वह सद्रूप से आत्मा है, असद्रूप से कथंचित् वह अनात्मा है और कथंचित् वह अवक्तव्य है क्योंकि सद्रूप और असद्रूप इन शब्दों द्वारा वह युगपत् अवक्तव्य होने से अवक्तव्य है ४ (७) 'नो आया य अवत्तव्वेण य४' वह नो आत्मा है और अवक्तव्य है इसको लेकर ४भंग और होते हैं४, इस प्रकार ७ और ये ४ मिलकर११ भंग हो जाते हैं। 'तिय संजोगे एक्को ण पडइ' तीन के संयोग में संभ-

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-"गोयमा ! હે ગૌતમ ! "पंचपएसिए खंधे सिय आया य१, सिय नो आया य२," પાંચ પ્રદેશિક સ્કંધ (૧) અમુક અપેક્ષાએ સદ્રૂપ પણ હોય છે, (૨) અમુક અપેક્ષાએ અસદ્રૂપ પણ હોય છે, "सिय अवत्तव्वं आयाइ य नो आयाइ य" (૩) અમુક અપેક્ષાએ તે અવક્તવ્ય રૂપ પણ છે, કારણ કે સદ્રૂપ અને અસદ્રૂપ શબ્દો દ્વારા તે એક સાથે અવાચ્ય હોય છે. "सिय आया य, नो आया य सिय अवत्तव्वं४" તે પંચપ્રદેશિક સ્કંધ અમુક અપેક્ષાએ સદ્રૂપ છે, અને અમુક અપેક્ષાએ અસદ્રૂપ છે અને અમુક અપેક્ષાએ અવક્તવ્ય છે, કારણ કે સદ્રૂપ અને અસદ્રૂપ, આ બે શબ્દો વડે તે એક સાથે અવાચ્ય છે. એજ પ્રમાણે દ્વિકસંયોગી બીજા ત્રણ ભંગ પણ પૂર્વોક્ત પદ્ધતિ અનુસાર સમજવા. "नो आया य अवत्तव्वेण य४" તે નોઆત્મા રૂપ (અસદ્રૂપ) અને અવક્તવ્ય છે, આ પદ્ધતિ અનુસાર બીજા ચાર પૂર્વોક્ત ભંગ થાય છે. પહેલાંના સાત ભંગ અને આ ચાર ભંગ મળીને કુલ ૧૧ ભંગ થાય છે. "तियसंजोगे एक्को ण पडइ" ત્રણના સંયોગથી બનતા

भङ्गेषु अत्र एकः अष्टमो भङ्गो न पतति-न भवति, तथा च सप्त एव भङ्गाः अत्र त्रिकसंयोगे भवन्तीति भावः ७-२२। एवं च पञ्चप्रदेशिके स्कन्धे द्वाविंशतिर्भङ्गा भवन्ति, तत्र प्रथमे त्रयो भङ्गाः पूर्वोक्तरीत्या सकलादेशविषयकाः, तदनन्तरेषु च त्रिषु प्रत्येकं चत्वारश्चत्वारो भङ्गाः पूर्वोक्तरीत्यैव बोध्याः। द्वादशभङ्गाः १५, सप्तमे तु सप्तभङ्गा भवन्ति ७-२२। तत्र त्रिकसंयोगे खलु संभवत्सु अपि अष्टसु भङ्गकेषु अत्र आद्याः सप्तैव ग्राह्याः, एकस्तु अन्तिमोऽष्टमो भङ्गः असंभवादत्र न प्राप्यते तदेवं सर्वसंकलनया-३+१२+७=२२ द्वाविंशतिर्भङ्गा भवन्ति। गौतमस्तत्र कारणं पृच्छति-'से केणट्ठेणं भंते ! तं चेव पडिउच्चारेयव्वं ? हे भदन्त ! तत् अथ, केनार्थेन तदेव-पूर्वोक्तरीत्यैव-प्रत्युच्चारयितव्यम्-तथा च केन कार-

---

वित आठ भंगों में से यहां एक आठवां भंग नहीं हो सकता है, इसलिये यहां सात ही भंग होते हैं, इस प्रकार से पंचप्रदेशिक स्कंध में २२ भंग हो जाते हैं। इनमें पहिले के ३ भंग पूर्वोक्तरीति से सकलादेश विषयवाले हैं। इनके बाद के तीन द्विकसंयोगियों में प्रत्येक के ४-४ भंग पूर्वोक्तरीति के अनुसार समझना चाहिये-सप्तम त्रिकसंयोगी में सात भंग होते हैं, इनमें त्रिकसंयोगी में संभवित भी आठ भंगों में यहां आदि के सात ही ग्रहण करना चाहिये, एक जो अन्तिम आठवां भंग है वह यहां संभवित नहीं होता है, क्योंकि यहां प्रदेश पांच होते हैं, वह षट्प्रदेशी स्कन्ध में प्राप्त हो सकता है क्योंकि वहां तीनों स्थानों में अनेक शब्द आसकता है। इसलिये उस अष्टम भंग का यहां ग्रहण नहीं किया गया है, इस प्रकार सब मिलकर १२-३-७=२२ भंग हो जाते हैं। अब गौतम प्रभु से ऐसा पूछते हैं-'से केणट्ठेणं भंते ! तं चेव पडिउच्चारेयव्वं' हे भदन्त ! पंचप्रदेशिक स्कंध में किस कारण से ये

આઠ પૂર્વોક્ત ભંગોમાંનો આઠમો ભંગ અહીં સંભવી શકતો નથી, તે કારણે ત્રિકસંયોગી ૭ ભંગ જ અહીં બની શકે છે આ પ્રકારે પંચપ્રદેશિક સ્કંધમાં કુલ ૨૨ ભંગ થાય છે પહેલા ત્રણ ભંગ પૂર્વોક્ત રીત અનુસાર સકળ દેશ-વિષયવાળા છે. ત્યારબાદ દ્વિકસંયોગી ત્રણ ચતુર્ભંગીના કુલ ૧૨ ભંગ બને છે અને ત્રિકસંયોગી ૭ ભંગ બને છે. આ રીતે ૩+૧૨+૭=૨૨ કુલ ભંગ થાય છે. ત્રિકસંયોગી આઠમો ભંગ અહીં સંભવી શકતો નથી તેથી અહીં કુલ ૨૩ ને બદલે ૨૨ ભંગ જ સંભવી શકે છે.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-" से केणट्ठेण भंते ! तं चेव पडिउच्चारेयव्वं " હે ભગવન્ ! પંચપ્રદેશિક સ્કંધ અમુક અપેક્ષાએ સદ્રૂપ છે, અમુક અપેક્ષાએ

णेन एवमुच्यते-पञ्चप्रदेशिकः स्कन्धः स्यात् आत्मा कथञ्चित् सद्रूपः, स्यात् नो आत्मा-कथञ्चित् असद्रूपः, स्यात् अवक्तव्यम्-आत्मा च सद्रूपेण, नो नो-आत्मा च असद्रूपेण युगपद् वक्तुमशक्यमित्यादि? भगवानाह-गोयमा! अप्पणो आइट्ठे आया १, परस्स आइट्ठे नो आया २, तदुभयस्स आइट्ठे अवत्तव्वं ३ देसे आइट्ठे सब्भावपज्जवे, देसे आइट्ठे असब्भावपज्जवे एवं दुयगसंजोगे सव्वे पडंति। तियगसंजोगे एक्को ण पडइ' हे गौतम! पञ्चप्रदेशिकः स्कन्धः आत्मनः स्वस्य पञ्चप्रदेशिकस्कन्धस्य वर्णादि पर्यायैः आदिष्टे सति तैर्व्यपदिष्टः सन् आत्मा-स्वपर्यायापेक्षया सद्रूपो भवति १, परस्य षट्प्रदेशिकादि स्कन्धान्तरस्य पर्यायैः अदिष्टे सति तैर्व्यपदिष्टः सन् नो आत्मा-अनात्मा-परपर्यायापेक्षया असद्रूपो भवति२ तदुभयस्य स्वपरोभयपर्यायैः आदिष्टे सति तदुभय-

---

२२ भंग हुए हैं? कि जिससे आप ऐसा कहते हैं कि वह पंचप्रदेशिक स्कन्ध कथंचित् सद्रूप है, कथंचित् असद्रूप है और कथंचित् वह अवक्तव्यरूप है-क्योंकि सद्रूप से और असद्रूप से वह शब्दों द्वारा एक साथ नहीं कहा जा सकता है? इत्यादि इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-'गोयमा! अप्पणो आइट्ठे आया१, परस्स आइट्ठे नो आया२, तदुभयस्स आइट्ठे अवत्तव्वं३ देसे आइट्ठे सब्भावपज्जवे, देसे आइट्ठे असब्भावपज्जवे एवं दुयगसंजोगे सव्वे पडंति, तियसंजोगे एक्को ण पडइ' हे गौतम! पंचप्रदेशिक स्कंध अपनी पंचप्रदेशिक स्कंध की वर्णादिपर्यायों से आदिष्ट होने पर आत्मा अपनी पर्यायों की अपनी अपेक्षा से सद्रूप होता है१, और षट्प्रदेशिकादि पर-स्कन्धान्तर की अपेक्षा से आदिष्ट होने पर वह नो आत्मा परपर्याय की अपेक्षा से असद्रूप होता है२,

---

અસદ્રૂપ છે અને અમુક અપેક્ષાએ અવક્તવ્ય છે, ઇત્યાદિ ૨૩ પૂર્વોક્ત ભંગ આપ અહીં શા કારણે કહો છો?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-"गोयमा! अप्पणो आइट्ठे आया१, परस्स आइट्ठे नो आया२, तदुभयस्स आइट्ठे अवत्तव्वं३, देसे आइट्ठे सब्भावपज्जवे, देसे आइट्ठे असब्भावपज्जवे एवं दुयगसंजोगे सव्वे पडंति, तियसंजोगे एक्को ण पडइ" હે ગૌતમ! પંચપ્રદેશિક સ્કંધ પોતાના (પંચપ્રદેશિક સ્કંધના) વર્ણાદિ પર્યાયોની અપેક્ષાએ આદિષ્ટ (કથિત) થાય ત્યારે તે પોતાના પર્યાયોની અપેક્ષાએ સદ્રૂપ હોય છે (૨) પંચપ્રદેશિક સ્કંધ જ્યારે ષટ્પ્રદેશિક આદિ સ્કન્ધાન્તરની અપેક્ષાએ આદિષ્ટ થાય છે, ત્યારે તે પરપર્યાયની અપેક્ષાએ નો આત્મા રૂપ-અસદ્રૂપ-હોય છે. (૩) જ્યારે તે તદુભય (સ્વપર્યાય અને પર-

पर्यायै र्व्यपदिष्टः सन् अवक्तव्यम् ३ वस्तु स्यात्-नह्यसौ आत्मा सद्रूप इति वक्तुं शक्यः तस्य परपर्यायापेक्षयाऽनात्मत्वात् असद्रूपत्वात्, नापि असौ अनात्मेति वक्तुं शक्यः स्वपर्यायापेक्षया तस्य आत्मत्वात् सद्रूपत्वात्, अवक्तव्यत्वं चानात्मात्मशब्दापेक्षयैव न तु सर्वथा, अवक्तव्यशब्देनैव तस्योच्यमानत्वात्, अनभिलाप्यमात्रानामपि भावपदार्थवस्तुप्रभृतिशब्दैरनभिलाप्यशब्देन वाऽभिलाप्य-

---

' तथा-तदुभय-स्वपर उभय-पर्यायों से आदिष्ट होने पर अवक्तव्य होता है३, क्योंकि जिस समय ऐसा कहा जाता है कि पंचप्रदेशिक स्कंध आत्मा-सद्रूप है वह उस समय सद्रूप ही है, ऐसा नहीं माना जा सकता क्यों कि परपर्याय की अपेक्षा यह उस समय असद्रूप भी तो है। तथा यह अनात्मारूप है, जब ऐसा कहा जाता है तब यह उस समय अनात्मारूप ही है ऐसा नहीं माना जा सकता क्योंकि स्वपर्याय की अपेक्षा यह उस समय सद्रूप भी है इसलिये युगपत् यह सद्रूप से और असद्रूपसे वक्तुं अशक्य होने से अवक्तव्य कोटि में आ जाता है३, यहां यह इन्हीं शब्दों द्वारा अवक्तव्य कहा गया जानना चाहिये-सर्वथा यह अवक्तव्य है ऐसा नहीं जानना चाहिये क्योंकि यदि सर्वथा इसे अवक्तव्य कहा जावेगा तो यह अवक्तव्य शब्द से भी नहीं कहा जा सकेगा अतः अवक्तव्य शब्द से यह वक्तव्य होता है जैसे कि जो पदार्थ अनभिलाप्य कहे जाते हैं वे भाव, पदार्थ, वस्तु,

---

પર્યાય) પર્યાયેાની અપેક્ષાએ આદિષ્ટ થાય છે, ત્યારે અવક્તવ્ય રૂપ હેાય છે કારણ કે જ્યારે એવું કહેવામાં આવે છે કે પંચપ્રદેશિક સ્કંધ આત્મા-સદ્રૂપ છે, ત્યારે તે સદ્રૂપ જ છે એવું માની શકાતું નથી કારણ કે પરપર્યાયની અપેક્ષાએ તે સમયે તે અસદ્રૂપ પણ હેાય છે. તથા તે અનાત્મ રૂપ (અસદ્રૂપ) છે એવું જ્યારે કહેવામાં આવે ત્યારે તે અનાત્મ રૂપ જ છે એવું માની શકાતું નથી, કારણ કે સ્વપર્યાયની અપેક્ષાએ તે સમયે તે સદ્રૂપ પણ હેાય છે. આ પ્રકારે એક સાથે સદ્રૂપ અને અસદ્રૂપ શબ્દો વડે તેનું કથન થઇ શકતું નથી, તે કારણે તે અવક્તવ્ય કેાટિમાં આવી જાય છે અહીં તેને આ શબ્દો દ્વારા જ અવક્તવ્ય કહેવામાં આવ્યેા છે, એમ સમજવું જોઇએ, તે સર્વથા અવક્તવ્ય છે એવું માનવું જોઇએ નહીં, કારણ કે જો તેને સર્વથા અવક્તવ્ય કહેવામાં આવશે તેા તેને અવક્તવ્ય શબ્દ વડે પણ કહી શકાશે નહીં તેથી અવક્તવ્ય શબ્દ વડે તે વક્તવ્ય હેાય છે જેમ કે જે પદાર્થો અનભિલાપ્ય કહેવાય છે, તેઓ ભાવ, પદાર્થ, વસ્તુ આદિ

शब्देन वाऽभिलाप्यत्वात्। अथ देशापेक्षयाऽऽह-देशः पंचप्रदेशिकस्य एकः आदिष्टः सद्भावपर्यवः-सद्भावप्रधानाः पर्यवाः यस्मिन् स सद्भावपर्यवः, स्वपर्यवैरिति, द्वितीयस्तु देशः आदिष्टः असद्भावपर्यवः परपर्यायैरिति, एवं पूर्वोक्तरीत्या द्विकसंयोगे सर्वे पूर्वोक्ता द्वादशभङ्गाः पतन्ति-भवन्ति। त्रिकसंयोगे एकोऽष्टमो भङ्गः त्रिषु स्थानेषु बहुवचनात्मकोऽत्र न पतति, तस्यात्र प्रदेशानां पञ्चकत्वादसंभवात्।

पञ्चमदेशिस्कन्धस्य २२ द्वाविंशतिर्भङ्गकोष्ठकम्—

संपूर्णस्कन्धापेक्षया सकलादेशिनोऽसंयोगिनस्त्रयोभङ्गाः यथा—

(३) आत्मा १ — नो आत्मा २ — अवक्तव्यमिति ३

द्विकसंयोगिनो १२ द्वादशभङ्गा यथा—

आत्मा नो आत्मा	आत्मा अवक्तव्यमिति	नो आत्मा अवक्तव्यमिति
(१) एकः—एकः	(५) एकः—एकः	(९) एकः—एकः
(२) एकः—अनेके	(६) एकः—अनेके	(१०) एकः—अनेके
(३) अनेके—एकः	(७) अनेके-एकः	(११) अनेके-एकः
(४) अनेके—अनेके	(८) अनेके-अनेके	(१२) अनेके-अनेके

आदि शब्दों द्वारा अथवा अनभिलाप्य शब्द द्वारा कहे ही जाते हैं।

अब देश की अपेक्षा से पंचप्रदेशिक स्कंध के भंगों को प्रकट करने के लिये कहा जाता है कि जब पंचप्रदेशिक स्कंध का अपनी पर्यायों से सद्भावपर्यायवाला एकदेश आदिष्ट होता है तब वह सद्रूप है, परपर्यायों से असद्भाव पर्यायवाला जब द्वितीय देश आदिष्ट होता है तब वह कथंचित् असद्रूप है२, इस प्रकार पूर्वोक्त रीति से द्विकसंयोग में सब पूर्वोक्त भंग होते हैं, त्रिकसंयोग में एक आठवां भंग नहीं होता है, क्योंकि वह यहां पांच ही प्रदेश होने से तीनों स्थानों में

શબ્દો દ્વારા અથવા અનભિલાપ્ય શબ્દ દ્વારા જ કહેવામાં આવે છે.

હવે દેશની અપેક્ષાએ પંચપ્રદેશિક સ્કંધના ભંગો પ્રકટ કરવા માટે આ પ્રમાણે કહી શકાય છે-જ્યારે પંચપ્રદેશિક સ્કંધનો પોતાના પર્યાયોની અપેક્ષાએ સદ્ભાવપર્યાયવાળો એકદેશ આદિષ્ટ થાય છે, ત્યારે તે સદ્રૂપ હોય છે, પરપર્યાયોની અપેક્ષાએ અસદ્ભાવ પર્યાયવાળો જ્યારે બીજો દેશ આદિષ્ટ થાય છે ત્યારે તે કથંચિત્ અસદ્રૂપ હોય છે. (૨) આ પ્રકારે પૂર્વોકત પદ્ધતિ અનુસાર પૂર્વોકત ૧૨ દ્વિકસંયોગી ભંગો થાય છે ત્રિકસંયોગમાં આઠમો ભંગ બનતો નથી, પણ પૂર્વોકત સાત ભંગ બને છે.

त्रिकसंयोगिनः ७ सप्तभङ्गा यथा—

आत्मा	—	नो आत्मा	—	अवक्तव्यमिति
(१) एकः		एकः		एकः
(२) एकः		एकः		अनेके
(३) एकः		अनेके		एकः
(४) एकः		अनेके		अनेके
(५) अनेके		एकः		एकः
(६) अनेके		एकः		अनेके
(७) अनेके		अनेके		एकः

'छप्पएसिए सव्वे पडंति' षट्प्रदेशिके स्कन्धे तु सर्वे पञ्चप्रदेशिकोक्ता द्वात्रिंशतिः, त्रिकसंयोगे एकोऽष्टमोऽधिक इति, त्रयोविंशतिर्भङ्गाः पतन्ति=भवन्ति, अत्र त्रिकसंयोगेऽष्टानामपि भङ्गानां संभवात्, अतोऽत्र षट्प्रदेशिके स्कन्धे द्वात्रिंशतिर्भङ्गाः पञ्चप्रदेशिकवदेव भवन्ति, त्रयोविंशतितमस्तु त्रिषु स्थानेषु बहुवचनान्तो भङ्गो विज्ञेय इति षट्प्रदेशिके स्कन्धे त्रयोविंशतिः (२३) भङ्गा भवन्तीति। प्रदेशानां षट्कत्वात् त्रिष्वपि स्थानेषु बहुवचनान्तशब्दस्य संभवात्। 'जहा छप्पएसिए एवं जाव अणंतपएसिए' यथा षट्प्रदेशिके स्कन्धे त्रयोविंशतिर्भङ्गाः प्रतिपादिताः एवं तथैव यावत्-सप्ताष्टनवदशसंख्यातासंख्यातानन्तप्रदेशिके स्कन्धे प्रत्येकं त्रयोविंशतित्रयोविंशतिर्भङ्गाः प्रतिपत्तव्याः। अन्ते गौतमो भगवद्वाक्यं

बहुवचनान्तपद बनते नहीं है। 'छप्पएसिए सव्वे पडंति' षट्प्रदेशिक स्कंध में तो सब २३ भंग होते है। क्योंकि त्रिकसंयोग में संभवित आठों ही भंग वहां होते हैं। अर्थात् बाईस २२ भंग तो पञ्चप्रदेशिक जैसे ही बनते हैं, तेईसवां तीनों स्थानों में बहुवचन करने से बनता है 'जहा छप्पएसिए जाव अणंतपएसिए' जिस प्रकारसे षट्प्रदेशिक स्कंध में २३ भंग कहे गये हैं, इसी प्रकार से यावत् सात, आठ, नौ, दश, संख्यात एवं अनन्तप्रदेशिक स्कंध में भी प्रत्येक के २३-२३ भंग

"छप्पएसिए सव्वे पडंति, जहा छप्पएसिए, एवं जाव अणंतपएसिए" છપ્રદેશિક સ્કંધમાં બધા ભંગો (૨૩ ભંગો) થાય છે, કારણ કે ત્રિકસંયોગમાં અહીં આઠમો ભંગ પણ સંભવી શકે છે. એજ પ્રકારે સાત, આઠ, નવ, દસ, સંખ્યાત, અસંખ્યાત અને અનંતપ્રદેશિક સ્કંધમાં પણ ૨૩-૨૩ ભંગ બને છે, એમ સમજવું જોઈએ.

હવે સૂત્રનો ઉપસંહાર કરતા સૂત્રકાર ગૌતમ સ્વામીના આ શબ્દો દ્વારા મહાવીર પ્રભુના વચનોને પ્રમાણભૂત ગણાવે છે-"सेवं भंते!

प्रमाणिकतया स्वीकुर्वन्नाह-'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरइ' हे भदन्त! तदेवं-भवदुक्तं सर्वं सत्यमेव, हे भदन्त! तदेवं-भवदुक्तं सर्वं सत्यमेवेति यावत्-ब्रुवन् विहरति-तिष्ठति ॥ सू० ३ ॥

॥ इति श्री विश्वविख्यात-जगद्वल्लभ-प्रसिद्धवाचक पञ्चदशभाषा-
कलितललितकलापालापकप्रविशुद्धगद्यपद्यनैकग्रन्थनिर्मापक
वादिमानमर्दक श्री शाहू छत्रपति कोल्हापुरराजप्रदत्त-
'जैनाचार्य' पदभूषित—कोल्हापुरराजगुरु-
बालब्रह्मचारि—जैनाचार्य—जैनधर्मदिवाकर
-पूज्य श्री घासीलालव्रतिविरचितायां
श्री "भगवतीसूत्रस्य" प्रमेयचन्द्रिका-
ख्यायां व्याख्यायां द्वादशशतके
दशमोद्देशकः समाप्तः ॥१२-१०॥
॥ द्वादशशतकं समाप्तम् ॥

जानलेना चाहिये। अन्त में गौतम भगवान् के वाक्य को प्रामाणिकरूप से स्वीकार करते हुए कहते हैं कि 'सेवं- भंते! सेवं भंते! त्ति जाव विहरइ' हे भदन्त! जैसा आपने कहा है वह ऐसा ही है, हे भदन्त! जैसा आपने कहा है वह ऐसा ही है ऐसा कह कर वे यावत् अपने स्थान पर विराजमान हो गये ॥सू० ३॥

जैनाचार्य जैनधर्मदिवाकर पूज्यश्री घासीलालजी महाराज कृत "भगवतीसूत्र" की प्रमेयचन्द्रिका व्याख्याके बारहवें शतक का

॥ दशवां उद्देशक समाप्त १२-१० ॥
॥बारहवां शतक संपूर्ण हुआ॥१२॥

सेवं भंते ! त्ति जाव विहरइ" હે ભગવન્! આપની વાત સર્વથા સત્ય છે. હે ભગવન્! આપે જે કહ્યું તે સર્વથા સત્ય જ છે. આ પ્રમાણે કહીને મહાવીર પ્રભુને વંદણા નમસ્કાર કરીને તેઓ તેમને સ્થાને વિરાજમાન થઇ ગયા. ॥સૂ૦ ૩॥

જૈનાચાર્ય જૈનધર્મદિવાકર પૂજ્યશ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ કૃત "ભગવતીસૂત્ર"ની પ્રમેયચન્દ્રિકા વ્યાખ્યાના બારમાં શતકનો દસમો ઉદ્દેશો સમાપ્ત ॥૧૨-૧૦॥

॥ બારમું શતક સમાપ્ત ॥

अथ त्रयोदशशतकं प्रथमोद्देशकः प्रारभ्यते ।

त्रयोदशशतके प्रथमोद्देशकस्य संक्षिप्तविषयविवरणम्

नरकपृथिवीवक्तव्यता प्ररूपणम्, रत्नप्रभायां नरकावासवक्तव्यताप्ररूपणम्, संख्यातयोजनविस्तारयुक्तनरकावासेषु एकसमयेन नारकादीनामुत्पादप्ररूपणम्, एकसमयेन नारकादीनामुद्वर्तना प्ररूपणम्, रत्नप्रभायां नारकजीवानां सत्ता प्ररूपणम्, असंख्येययोजनविस्तारयुक्तनरकावासेषु नारकादीनामुत्पादप्ररूपणम्, एवं शर्कराप्रभादिषु सप्तेष्वपि पृथिवीषु नरकावासवक्तव्यता प्ररूपणम् । रत्नप्रभायां संख्यातयोजनविस्तारयुक्तनरकावासेषु सम्यग्दृष्टि-

---

तेरहवें शतकका प्रारंभ-

उद्देशा पहला

इस तेरह १३ वें शतक के प्रथम उद्देशे में जो विषय वर्णित हुआ है उसका विवरण संक्षेप से इस प्रकार है-नरकपृथिवी वक्तव्यता प्ररूपण, रत्नप्रभो में नरकावास वक्तव्यता का कथन, संख्यात योजनविस्तार-युक्तनरकावासों में एक समय में नारकादिकों के उत्पाद की प्ररूपणा एक समय में नारकादिकों की उद्वर्त्तना (नरक से निकलना) की प्ररूपणा, रत्नप्रभा में नारक जीवों की सत्ता की प्ररूपणा, असंख्यात योजन विस्तारवाले नरकावासों में नारकादिकों के उत्पाद की प्ररूपणा इसी प्रकार से शर्कराप्रभा आदि पृथिवियों में भी नरकावासों की वक्तव्यता की प्ररूपणा रत्नप्रभा में संख्यातयोजन विस्तारवाले नरकावासों में

તેરમા શતકનો પ્રારંભ-

ઉદ્દેશક પહેલો

તેરમાં શતકના પહેલા ઉદ્દેશકમાં જે વિષયનું પ્રતિપાદન કરવામાં આવ્યું છે, તેનું સંક્ષિપ્તમાં વિવરણ કરવામાં આવે છે-નારકપૃથ્વીઓનું નિરૂપણ, રત્નપ્રભાના નરકાવાસોનું કથન, સંખ્યાત યોજનના વિસ્તારવાળા નરકાવાસોમાં એક સમયમાં કેટલા નારકોનો ઉત્પાદ થાય છે અને કેટલા નારકોની ઉદ્વર્ત્તના (નરકમાંથી નીકળવાની ક્રિયા) થાય છે, તેની પ્રરૂપણા, રત્નપ્રભામાં નારક જીવોની સત્તાની પ્રરૂપણા, અસંખ્યાત યોજનના વિસ્તારવાળા નરકાવાસોમાં નારકોના ઉત્પાદ આદિની પ્રરૂપણા, એજ પ્રમાણે શર્કરાપ્રભા આદિ નરકપૃથ્વીઓના નરકાવાસોની પ્રરૂપણા, રત્નપ્રભામાં સંખ્યાત યોજનના

प्रभृतीनामुद्वर्तनाप्ररूपणम्, सम्यग्दृष्टिभिरविरहितवक्तव्यताप्ररूपणम्, सप्तनारकपृथिव्यां सम्यग्दृष्टि प्रभृतीनामुत्पत्तिवक्तव्यताप्ररूपणम्, कृष्णादिलेश्यावन्तो भूत्वा कृष्णलेश्यावत्सु नारकेषु उत्पद्यन्ते ? इत्यादि प्रश्नोत्तरम्, नीललेश्यावत्सु नारकेषु उत्पद्यन्ते ? इत्यादि प्रश्नोत्तरम्, तद्धेतुवक्तव्यम्, कापोतलेश्यावत्सु नारकेषु उत्पद्यन्ते ? इत्यादि प्रश्नोत्तरम् ॥

त्रयोदशशतकोद्देशकार्थ संग्रहगाथा—

मूलम्—पुढवी१ देव२ मणंतर३ पुढवी४ आहारमेव५ उववाए६।
भासा७ कम्म८ अणगारे केया घडिया९ समुग्घाए१०'॥१॥

छाया—पृथिवी १ देवः २ अनन्तरम् ३ पृथिवी ४ आहार एव २ उपपातः ६ भाषा ७ कर्म ८ अनगारः केया घटिकः ९ समुद्घातः १० ॥ १ ॥

टीका—द्वादशशतके अनेकधा जीवादिपदार्थानां प्ररूपणं कृतम्, अथ त्रयोदशशतकेऽपि तेषामेव प्रकारान्तरेण प्ररूपणं कर्तुं प्रथमम् दशोद्देशकार्थ संग्रह गाथामाह—' पुढवी ' इत्यादि १, ।

सम्यग्दृष्टि आदिकों के उत्पाद की वक्तव्यता का प्ररूपण सम्यग्दृष्टि आदिकों की उद्वर्त्तना की प्ररूपणा सम्यग्दृष्टियों की अविरहितता की प्ररूपणा सप्तमनारक पृथिवी में सम्यग्दृष्टि आदि जीवों की उत्पत्ति की वक्तव्यता की प्ररूपणा कृष्णादि लेश्यावाले होकर के जीव कृष्णलेश्यावाले नारकों में उत्पन्न होते हैं? इत्यादि प्रश्नों के उत्तर-नीललेश्यावाले नारकों में उत्पन्न होते हैं इत्यादि प्रश्न इसमें हेतु कथन कापोतलेश्यावाले नारकों में उत्पन्न होते हैं इत्यादि प्रश्नोत्तर।

तेरहवें शतक के उद्देश के अर्थ की संग्रहगाथा—

पुढवी१ देव२ मणंतर३ पुढवी४ आहारमेव५ उववाए६।
भासा७ कम्म८ अणगारे केयाघडिया९ समुग्घाए१०॥१॥

વિસ્તારવાળા નરકાવાસોમાં સમ્યગ્દૃષ્ટિ આદિકોના ઉત્પાદની પ્રરૂપણા, સમ્યગ્દૃષ્ટિ આદિકોની ઉદ્વર્ત્તનાની પ્રરૂપણા, સમ્યગ્દૃષ્ટિઓની અવિરહિતતાની પ્રરૂપણા, સાતમી નરકપૃથ્વીમાં સમ્યગ્દૃષ્ટિ આદિ જીવોની ઉત્પત્તિની પ્રરૂપણા, "કૃષ્ણાદિ લેશ્યાવાળા જીવો શું કૃષ્ણ લેશ્યાવાળા નારકોમાં ઉત્પન્ન થાય છે? કે નીલલેશ્યાવાળા નારકોમાં ઉત્પન્ન થાય છે? કે કાપોત લેશ્યાવાળા નારકોમાં ઉત્પન્ન થાય છે?" ઇત્યાદિ પ્રશ્નોત્તરો.

તેરમાં શતકના ઉદ્દેશકોના વિષયનું સૂચન કરતી સંગ્રહગાથા—

"પુઢવી૧ દેવ૨ મણંતર૩ પુઢવી૪ આહારમેવ૫ ઉવવાએ૬।
ભાસા૭ કમ્મ૮ અણગારે કેયાઘડિયા૯ સમુગ્ઘાએ ૧૦॥૧॥"

पृथिवी-नरकपृथिवीविषयकः प्रथमोद्देशकः १, देवः-देवनिरूपणार्थम् द्वितीयोद्देशकः २, अनन्तरम्-अनन्तराहारा नैरयिका इत्याद्यर्थप्रतिपादनार्थं तृतीयोद्देशकः ३, पृथिवी-पृथिवीगतवक्तव्यता प्रतिपादनार्थं चतुर्थोद्देशकः ४, आहारः-नैरयिकाद्याहारनिरूपणार्थं पञ्चमोद्देशकः ५, उपपातः-नारकाद्युत्पादार्थं षष्ठोद्देशकः ६, भाषा-भाषास्वरूपणार्थं सप्तमोद्देशकः ७, कर्म-कर्मप्रकृतिनिरूपणार्थमष्टमोद्देशकः ८, अनगारः केयाघटिकः-अनगारो भावितात्मा श्रमणः लब्धिसामर्थ्यात् केयाघटिकः-रज्जुप्रान्तबद्धघटिकापाणिः सन् आकाशे व्रजेदित्यर्थप्रतिपादनार्थं नवमोद्देशकः ९, समुद्घातः समुद्घातप्रतिपादनार्थं दशमोद्देशकः १० । इति गाथार्थः ॥ १ ॥

नरकपृथिवी के सम्बन्ध में पृथिवी नामका प्रथम उद्देशा१, देव की प्ररूपणा के सम्बन्ध में देव नाम का द्वितीय उद्देशा२, अनन्तराहार-उपपात क्षेत्र की प्राप्ति के समय तुरत ही आहार करनेवाले नारकों के सम्बन्ध में तृतीय उद्देशा३, नरकपृथिवी की वक्तव्यता प्रतिपादन करने के लिये चौथा उद्देशा४, नारकादि के आहार की प्ररूपणा करने के लिये पांचवां उद्देशा५, नारकादिकों के उपपात सम्बन्ध में छठा उद्देशा६, भाषा सम्बन्ध में सातवां उद्देशा७, कर्म की प्ररूपणा सम्बन्ध में आठवाँ उद्देशा८, अनगार-भावितात्मा अनगार वैक्रियलब्धि के सामर्थ्य से केयाघडिया-हाथ में डोरे से बांधी हुई घड़ी लेकर आकाश में गमन कर सकता है इत्यादि अर्थ का प्रतिपादन करने के लिये नौवां उद्देशा९, और समुद्घात का वर्णन करने रूप दशवां उद्देशा१० इस प्रकार से ये १० उद्देशे इस १३वें शतक में कहे गये हैं इस प्रकार से यह गाथा का अर्थ है ॥

પૃથ્વી નામના પહેલા ઉદ્દેશામાં નરકપૃથ્વીઓનું પ્રતિપાદન કર્યું છે. દેવ નામના બીજા ઉદ્દેશામાં દેવોની પ્રરૂપણા કરી છે. "મણુંતર" ઉપપાત ક્ષેત્રની પ્રાપ્તિના સમયમાં તુરત જ આહાર કરનારા નારકોના વિષયનું ત્રીજા ઉદ્દેશામાં પ્રતિપાદન કર્યું છે. ચોથા ઉદ્દેશામાં નરકપૃથ્વીઓની વક્તવ્યતાનું પ્રતિપાદન કર્યું છે છઠ્ઠા ઉદ્દેશામાં નારકાદિના ઉપપાતનું કથન કર્યું છે. સાતમાં ઉદ્દેશામાં ભાષાની અને આઠમાં ઉદ્દેશામાં કર્મની પ્રરૂપણા કરી છે. ભાવિતાત્મા અણગાર વૈક્રિયલબ્ધિના પ્રભાવથી, હાથમાં દોરડાથી બાંધેલી ઘડીયાળ લઈને આકાશમાં ગમન કરી શકે છે, ઇત્યાદિ વિષયનું પ્રતિપાદન નવમાં ઉદ્દેશામાં કરવામાં આવ્યું છે. દસમાં ઉદ્દેશામાં સમુદ્ઘાતોનું વર્ણન કરવામાં આવ્યું છે આ પ્રકારના દસ ઉદ્દેશકોનો આ તેરમાં શતકમાં સમાવેશ થાય છે ઉપર્યુક્ત ગાથાનો અર્થ આ પ્રમાણે થાય છે.

पृथिव्यादिवक्तव्यता।

मूलम्–'रायगिहे जाव एवं वयासी–कइणं भंते! पुढवीओ पण्णत्ताओ? गोयमा! सत्तपुढवीओ पन्नत्ताओ, तं जहा–रयणप्पभा जाव अहे सत्तमा। इमीसे णं भंते! रयणप्पभाए पुढवीए केवइया निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता? गोयमा! तीसं निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता। ते णं भंते! किं संखेज्जवित्थडा, असंखेज्जवित्थडा? गोयमा! संखेज्जवित्थडा वि, असंखेज्जवित्थडा वि। इमीसे णं भंते! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु संखेज्जवित्थडेसु नरएसु एगसमएणं केवइया नेरइया उववज्जंति१? केवइया काउलेस्सा उववज्जंति२? केवइया कण्हपक्खिया उववज्जंति३? केवइया सुक्कपक्खिया उववज्जंति४? केवइया सन्नी उववज्जंति५? केवइया असन्नी उववज्जंति६? केवइया भवसिद्धिया उववज्जंति७? केवइया अभवसिद्धिया उववज्जंति८? केवइया आभिणिबोहियनाणी उववज्जंति९? केवइया सुयनाणी उववज्जंति१०? केवइया ओहिनाणी उववज्जंति११? केवइया मइ अन्नाणी उववज्जंति१२? केवइया सुयअन्नाणी उववज्जंति१३? केवइया विब्भंगनाणी उववज्जंति१४? केवइया चक्खुदंसणी उववज्जंति१५? केवइया अचक्खुदंसणी उववज्जंति१६? केवइया ओहिदंसणी उववज्जंति१७? केवइया आहारसन्नोवउत्ता उववज्जंति१८? केवइया भयसन्नोवउत्ता उवव-

ज्जंति१९? केवइया मेहुणसन्नोवउत्ता उववज्जंति२०? केवइया परिग्गहसन्नोवउत्ता उववज्जंति२१? केवइया इत्थी वेयगा उववज्जंति२२? केवइया पुरिसवेयगा उववज्जंति२३? केवइया नपुंसगवेयगा उववज्जंति२४? केवइया कोहकसाई उववज्जंति२८? जाव केवइया लोभकसाई उववज्जंति२६? केवइया सोइंदियउवउत्ता उववज्जंति२९? जाव केवइया फासिंदियोवउत्ता उववज्जंति३३? केवइया नोइंदियोवउत्ता उववज्जंति३४? केवइया मणजोगी उववज्जंति३५? केवइया वइजोगी उववज्जंति३६? केवइया कायजोगी उववज्जंति३७? केवइया सागारोवउत्ता उववज्जंति३८? केवइया अणागारोवउत्ता उववज्जंति३९? गोयमा! इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु संखेज्जवित्थडेसु नेरइएसु जहण्णेणं एक्को वा दोवा तिन्नि वा उक्कोसेणं संखेज्जा नेरइया उववज्जंति, जहण्णेणं एक्को वा, दो वा, तिन्नि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा काउलेस्सा उववज्जंति, जहण्णेणं एक्को वा; दो वा, तिन्नि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा कण्हपक्खिया उववज्जंति, एवं सुक्कपक्खिया वि, एवं सन्नी, एवं असन्नी वि, एवं भवसिद्धिया, एवं अभवसिद्धिया, आभिणिबोहियनाणी, सुयनाणी, ओहिनाणी, मइअन्नाणी, सुयअन्नाणी, विभंगनाणी, चक्खुदंसणी ण उववज्जंति, जहण्णेणं एक्को वा, दो वा, तिन्नि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा अचक्खुदंसणी उववज्जंति, एवं ओहिदंसणी वि, आहारसन्नोवउत्ता वि जाव परिग्गहसन्नोवउत्ता उववज्जंति, इत्थी वेयगा न उववज्जंति, पुरिसवेयगा वि न उववज्जंति, जहण्णेणं

एक्को वा, दो वा, तिन्नि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा नपुंसगवेयगा उववज्जंति, एवं कोहकसाई जाव लोभकसाई उववज्जंति, सोइंदियउवउत्ता न उववज्जंति, एवं जाव फासिंदियोवउत्ता न उववज्जंति, जहण्णेणं एक्को वा, दो वा, तिन्नि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा नो इंदियोवउत्ता उववज्जंति, मणजोगी ण उववज्जंति, एवं वइजोगी वि, जहण्णेणं एक्को वा, दो वा, तिन्नि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा कायजोगी उववज्जंति, एवं सागारोवउत्ता वि, एवं अणागारोवउत्ता वि ॥सू० १॥

छाया—राजगृहे यावत् एवमवादीत्—कति खलु भदन्त ! पृथिव्यः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! सप्तपृथिव्यः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा—रत्नप्रभा यावत् अधः सप्तमी, अस्याः खलु भदन्त ! रत्नप्रभायाः पृथिव्याः कियन्ति निरयावासशतसहस्राणि प्रज्ञप्तानि ? गौतम ! त्रिंशत् निरयावासशतसहस्राणि प्रज्ञप्तानि, तानि खलु भदन्त ! किं संख्येयविस्ताराणि, असंख्येयविस्ताराणि ? गौतम ! संख्येयविस्ताराण्यपि, असंख्येयविस्ताराण्यपि, अस्यां खलु भदन्त ! रत्नप्रभायां पृथिव्यां त्रिंशति-निरयावासशतसहस्रेषु संख्येयविस्तारेषु नरकेषु एकसमयेन कियन्तो नैरयिका उपपद्यन्ते ? कियन्तः कापोतलेश्याः उपपद्यन्ते ? कियन्तः कृष्णपाक्षिका उपपद्यन्ते ३ ? कियन्तः शुक्लपाक्षिका उपपद्यन्ते ४ ? कियन्तः संज्ञिन उपपद्यन्ते ५ ? कियन्तः असंज्ञिन उपपद्यन्ते ६ ? कियन्तो भवसिद्धिका उपपद्यन्ते ७ ? कियन्तः अभवसिद्धिका उपपद्यन्ते८ ? कियन्तः आभिनिबोधिकज्ञानिन उपपद्यन्ते ९ ? कियन्तः श्रुतज्ञानिनः उपपद्यन्ते १० ? कियन्तः अवधिज्ञानिनः उपपद्यन्ते ११ ? कियन्तो मत्यज्ञानिनः उपपद्यन्ते १२ ? कियन्तः श्रुतज्ञानिन उपपद्यन्ते १३ ? कियन्तो विभङ्गज्ञानिन उपपद्यन्ते १४ ? कियन्तश्चक्षुर्दर्शनिन उपपद्यन्ते १५ ? कियन्तः अचक्षुर्दर्शनिन उपपद्यन्ते १६ ? कियन्तः अवधिदर्शनिनः उपपद्यन्ते १७ ? कियन्त आहारसंज्ञोपयुक्ता उपपद्यन्ते १८ ? कियन्तो भयसंज्ञोपयुक्ता उपपद्यन्ते १९ ? कियन्तो मैथुनसंज्ञोपयुक्ताः उपपद्यन्ते २० ? कियन्तः परिग्रह-संज्ञोपयुक्ता उपपद्यन्ते २१ ? कियन्तः स्त्रीवेदका उपपद्यन्ते २२ ? कियन्तः पुरुष-वेदका उपपद्यन्ते २३ ? कियन्तो नपुंसकवेदका उपपद्यन्ते २४ ? कियन्तः क्रोध-कषायिण उपपद्यन्ते २५ ? यावत् कियन्तो लोभकषायिणः उपपद्यन्ते २८ ? कियन्तः श्रोत्रेन्द्रियोपयुक्ता उपपद्यन्ते२९ ? यावत् कियन्तः स्पर्शनेन्द्रियोपयुक्ता

उपपद्यन्ते३३? कियन्तो नो इन्द्रियोपयुक्ता उपपद्यन्ते३४? कियन्तो मनोयोगिन उपपद्यन्ते३५? कियन्तो वचोयोगिन उपपद्यन्ते३६? कियन्तः काययोगिन उपपद्यन्ते३७? कियन्तः साकारोपयुक्ता उपपद्यन्ते३८? कियन्तः अनाकारोपयुक्ता उपपद्यन्ते३९? गौतम! अस्याः खलु रत्नप्रभायाः पृथिव्याः त्रिंशतिनिरयावास-शतसहस्रेषु संख्येयविस्तारेषु नरकेषु जघन्येन एको वा, द्वौ वा, त्रयो वा, उत्कृष्टेन संख्येयाः नैरयिकाः उपपद्यन्ते, जघन्येन एको वा, द्वौ वा, त्रयो वा, उत्कृष्टेन संख्येयाः कापोतलेश्या उपपद्यन्ते, जघन्येन एको वा, द्वौ वा, त्रयो वा, उत्कृष्टेन संख्येयाः कृष्णपाक्षिका उपपद्यन्ते, एवं शुक्लपाक्षिका अपि, एवं संज्ञिनः, एवम् असंज्ञिनोऽपि, एवं भवसिद्धिकाः, एवम् अभवसिद्धिकाः, आभिनिबोधिक-ज्ञानिनः, श्रुतज्ञानिनः, अवधिज्ञानिनः, मत्यज्ञानिनः, श्रुतज्ञानिनः, विभङ्गज्ञानिनो-ऽपि उपपद्यन्ते, चक्षुर्दर्शनिनो नोपपद्यन्ते, जघन्येन एको वा, द्वौ वा, त्रयो वा, उत्कृष्टेन संख्येया अचक्षुर्दर्शनिन उपपद्यन्ते, एवम् अवधिदर्शनिनोऽपि, आहार-संज्ञोपयुक्ता अपि, यावत् परिग्रहसंज्ञोपयुक्ता अपि, स्त्रीवेदका नोपपद्यन्ते, पुरुष-वेदका अपि, नोपपद्यन्ते, जघन्येन एको वा, द्वौ वा, त्रयो वा, उत्कृष्टेन संख्येया नपुंसकवेदका उपपद्यन्ते, एवं क्रोधकषायिणो यावत् लोभकषायिणोऽपि उपपद्यन्ते, श्रोत्रेन्द्रियोपयुक्ता नोपपद्यन्ते, एवं यावत् स्पर्शनेन्द्रियोपयुक्ता नोपपद्यन्ते जघ-न्येन एको वा, द्वौ वा, त्रयो वा, उत्कृष्टेन संख्येया नो इन्द्रियोपयुक्ता उपपद्यन्ते, मनोयोगिनो नोपपद्यन्ते, एवं वचोयोगिनोऽपि, जघन्येन एको वा, द्वौ वा, त्रयो वा उत्कृष्टेन संख्येयाः काययोगिन उपपद्यन्ते, एवं साकारोपयुक्ता अपि, एवम् अनाकारोपयुक्ता अपि ॥सू० १॥

टीका—अथ रत्नप्रभादिपृथिवीविषये विशेषवक्तव्यतां प्ररूपयितुमाह—'रायगिहे' इत्यादि। 'रायगिहे जाव एवं वयासी'—राजगृहे यावत्—नगरे स्वामी

पृथिव्यादिवक्तव्यता—

'रायगिहे जाव एवं वयासी' इत्यादि।

टीकार्थ—सूत्रकारने इस सूत्र द्वारा रत्नप्रभा आदि पृथिवियों के विषय में विशेष वक्तव्यता कही है—'रायगिहे जाव एवं वयासी'

—પૃથ્વી આદિની વકતવ્યતા—

"रायगिहे जाव एवं वयासी" ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ—સૂત્રકારે આ સૂત્ર દ્વારા રત્નપ્રભા આદિ પૃથ્વીઓના વિષયમાં વિશેષ વકતવ્યતાનું કથન કર્યું છે. "रायगिहे जाव एवं वयासी" રાજગૃહે

समवसृतः, धर्मकथां श्रोतुं पर्षत् निर्गच्छति, धर्मकथां श्रुत्वा प्रतिगता पर्षत्, ततो विनयेन शुश्रूषमाणो गौतमः प्राञ्जलिपुटः पर्युपासीनः एवं-वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादीत्-'कइ णं भंते ! पुढवीओ पण्णत्ताओ ?' हे भदन्त ! कति खलु पृथिव्यः प्रज्ञप्ताः ? भगवानाह-'गोयमा ! सत्त पुढवीओ पण्णत्ताओ' हे गौतम ! सप्त पृथिव्यः प्रज्ञप्ताः, 'तं जहा=रयणप्पभा जाव अहे सत्तमा' तद्यथा-रत्नप्रभा, यावत्-शर्करा-प्रभा, वालुकाप्रभा, पङ्कप्रभा, धूमप्रभा, तमःप्रभा, अधःसप्तमी, गौतमः पृच्छति-'इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए केवइया निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता ?' हे भदन्त ! अस्यां खलु रत्नप्रभायां पृथिव्यां कियन्ति निरयावासशतसहस्राणि-

राजगृह नगर में यावत्-महावीर स्वामी पधारे धर्मकथा को सुनने के लिये परिषदा निकली और धर्मकथा सुनकर फिर वह अपने २ स्थान पर चली गई तब विनय से धर्मश्रवणाभिलाषी गौतम ने दोनों हाथ जोड़कर बड़े विनय के साथ प्रभु से इस प्रकार पूछा-'कइणं भंते ! पुढवीओ पण्णत्ताओ' हे भदन्त ! कितनी पृथिवियां कही गई हैं ? उत्तर में प्रभु कहते हैं-'गोयमा !' हे गौतम ! 'सत्त पुढवीओ पण्णत्ताओ' पृथिवियां सात कही हैं। 'तं जहा' जो इस प्रकार से हैं-'रयणप्पभा जाव अहे सत्तमा' रत्नप्रभा यावत् शर्कराप्रभा, वालुकाप्रभा, पङ्कप्रभा, धूमप्रभा, तमःप्रभा और अधःसप्तमी (तमस्तमप्रभा)।

अब गौतमस्वामी प्रभु से ऐसा पूछते हैं-'इमी से णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए केवइया निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता' हे भदन्त !

નગરમાં મહાવીર પ્રભુ પધાર્યા ધર્મકથા સાંભળવાને પરિષદ નીકળી ધર્મકથા સાંભળીને પરિષદ વિખરાઇ ગઈ ત્યાર બાદ ધર્મતત્ત્વને સમજવાની અભિલાષા-વાળા ગૌતમ સ્વામીએ બન્ને હાથ જોડીને ખૂબ જ વિનયપૂર્વક મહાવીર પ્રભુને આ પ્રમાણે પૂછયું-"कइणं भंते ! पुढवीओ पण्णत्ताओ ?" હે ભગવન્ ! પૃથ્વીઓ કેટલી કહી છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-" गोयमा ! सत्त पुढवीओ पण्णत्ताओ " હે ગૌતમ ! પૃથ્વીઓ સાત કહી છે. " तंजहा " તેમના નામ નીચે પ્રમાણે છે-" रयण-प्पभा जाव अहे सत्तमा " (૧) રત્નપ્રભા, (૨) શર્કરાપ્રભા, (૩) વાલુકાપ્રભા, (૪) પંકપ્રભા, (૫) ધૂમપ્રભા, (૬) તમઃપ્રભા અને (૭) અધઃસપ્તમી (તમસ્તમપ્રભા)

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-" इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए केवइया निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता ?" હે ભગવન્ ! આ રત્નપ્રભા પૃથ્વીમાં કેટલા લાખ નરકાવાસો કહ્યા છે ?

नरकावासलक्षाणि, प्रज्ञप्तानि? भगवानाह-'गोयमा! तीसं निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता' हे गौतम! रत्नप्रभापृथिव्यां त्रिंशत् निरयावासशतसहस्राणि-नरकावासलक्षाणि प्रज्ञप्तानि। गौतमः पृच्छति-'तेणं भंते! किं संखेज्जवित्थडा, असंखेज्जवित्थडा?' हे भदन्त! ते खलु उपर्युक्तास्त्रिंशल्लक्षनिरयावासाः; किं संख्येयविस्ताराः सन्ति? किंवा असंख्येयविस्ताराः सन्ति? भगवानाह-'गोयमा! संखेज्जवित्थडा वि, असंखेज्जवित्थडा वि' हे गौतम! ते निरयावासाः संख्येयविस्तारा अपि सन्ति, असंख्येयविस्तारा अपि सन्ति, गौतमः पृच्छति-'इमीसे णं भंते! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु संखेज्जवित्थडेसु नरएसु एगसमएणं केवइया नेरइया उववज्जंति?' हे भदन्त! अस्यां खलु रत्नप्रभायां पृथिव्यां त्रिंशति-त्रिंशत्संख्यकेषु, निरयावासशतसहस्रेषु नर-

---

इस रत्नप्रभा पृथिवी में कितने लाख नरकावास कहे गये हैं? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-'गोयमा' हे गौतम! 'तीसं निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता' रत्नप्रभा पृथिवी में ३० लाख नारकावास कहे गये हैं।

अब गौतम प्रभु से ऐसा पूछते हैं-'तेणं भंते! किं संखेज्जवित्थडा, असंखेज्जवित्थडा' हे भदन्त! वे नारकावास संख्यात योजन विस्तार वाले हैं या असंख्यात योजन विस्तारवाले हैं? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-'गोयमा! संखेज्जवित्थडा वि असंखेज्जवित्थडा वि' हे गौतम! वे नारकावास संख्यातयोजन विस्तारवाले भी हैं और असंख्यातयोजन विस्तारवाले भी हैं। अब गौतम प्रभु से ऐसा पूछते हैं-'इमीसे णं भंते! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु संखेज्जवित्थडेसु नरएसु एगसमएणं केवइया नेरइया उववज्जंति' हे भदन्त!

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-" तीसं निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता?" હે ગૌતમ! રત્નપ્રભા પૃથ્વીમાં ૩૦ લાખ નરકાવાસો કહ્યા છે.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-" तेणं भंते! किं संखेज्जवित्थडा, असंखेज्जवित्थडा?" હે ભગવન્! તે નરકાવાસો શું સંખ્યાત યોજનના વિસ્તારવાળા છે, કે અસંખ્યાત યોજનના વિસ્તારવાળા છે?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-" गोयमा! હે ગૌતમ! संखेज्जवित्थडा वि' असंखेज्जवित्थडा वि " તે નરકાવાસો સંખ્યાત યોજનના વિસ્તારવાળા પણ છે અને અસંખ્યાત યોજનના વિસ્તારવાળા પણ છે.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-" इमीसे णं भंते! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु संखेज्जवित्थडेसु नरएसु एगसमएणं केवइया नेरइया उवव-

कावासलक्षेषु, संख्येयविस्तारेषु नरकेषु एकसमये कियन्तो नैरयिका उपपद्यन्ते? 'केवइया काउलेस्सा उववज्जंति२?' कियन्तः कापोतलेश्याः-कापोतलेश्यावन्तो जीवा उपपद्यन्ते? रत्नप्रभापृथिव्यां कापोतलेश्यावन्त एवोत्पद्यन्ते न तु कृष्णलेश्यादिमन्तः, अतः कापोतलेश्यावत एवाश्रित्य प्रश्नः कृत इत्यवसेयम्; 'केवइया कण्हपक्खिया उववज्जंति३?' कियन्तः कृष्णपाक्षिकाः जीवा उपपद्यन्ते? 'केवइया सुक्कपक्खिया उववज्जंति४?' कियन्तः शुक्लपाक्षिकाः जीवा उपपद्यन्ते४? तत्र कृष्णपाक्षिक शुक्लपाक्षिक जीवानां लक्षणं तु-'जे सिमवड्ढो पोग्गलपरियट्टो सेसओ उ संसारो। ते सुक्कपक्खिया खलु अहिगे पुण कण्हपक्खीया॥१॥'

येषामपार्द्धः पुद्गलपरिवर्तः शेषकस्तु संसारः।
ते शुक्लपाक्षिकाः खलु अधिके पुनः कृष्णपाक्षिका इति॥

रत्नप्रभापृथिवी में जो ३० लाख नारकवास हैं और इनमें जो संख्यात-योजन के विस्तारवाले नारकावास है उनमें एकसमय में कितने नारक उत्पन्न होते हैं? 'केवइया काउलेस्सा उववज्जंति' कितने कापोतलेश्या-वाले जीव उत्पन्न होते हैं? यह जो प्रश्न किया गया है-उसका कारण ऐसा है कि रत्नप्रभापृथिवी में कापोतलेश्यावाले जीव उत्पन्न होते हैं, कृष्णादिलेश्यावाले नहीं, इसलिये कापोतलेश्यावाले जीव को आश्रित करके ही यह प्रश्न किया गया है ऐसा जानना चाहिये-'केवइया कण्ह-पक्खिया उववज्जंति' कितने कृष्णपाक्षिक जीव उत्पन्न होते हैं 'केवइया सुक्कपक्खिया उववज्जंति' कितने शुक्लपाक्षिक जीव उत्पन्न होते हैं? कृष्ण-पाक्षिक और शुक्लपाक्षिक जीवों का लक्षण इस प्रकार कहा गया है—

"जेसिम वड्ढो पोग्गलपरियट्टो सेसओ उ संसारो।
ते सुक्कपक्खिया खलु अहिगे पुण कण्हपक्खीया॥"

જ્જંતિ ?" હે ભગવન્! રત્નપ્રભા પૃથ્વીના ત્રીસ લાખ નરકાવાસોમાંના જે સંખ્યાત યોજનના વિસ્તારવાળા નરકાવાસો છે, તેમાં એક સમયમાં કેટલા નારકો ઉત્પન્ન થાય છે? "केवइया काउलेस्सा उववज्जंति ?" કેટલા કાપોત-લેશ્યાવાળા જીવો ઉત્પન્ન થાય છે? (આ પ્રકારનો પ્રશ્ન પૂછવાનું કારણ એ છે કે રત્નપ્રભા પૃથ્વીમાં કાપોતલેશ્યાવાળા જ જીવો ઉત્પન્ન થાય છે, કૃષ્ણાદિ-લેશ્યાવાળા જીવો ઉત્પન્ન થતા નથી તેથી કાપોતલેશ્યાવાળા જીવોને અનુલ-ક્ષીને જ આ પ્રશ્ન પૂછવામાં આવ્યો છે, એમ સમજવું.) केवइया कण्हप-क्खिया उववज्जंति ?" કેટલા કૃષ્ણપાક્ષિક જીવો ઉત્પન્ન થાય છે? "केवइया सुक्कपक्खिया उववज्जंति ?" કેટલા શુકલપાક્ષિક જીવો ઉત્પન્ન થાય છે?

तथा च येषां जीवानां किञ्चिन्न्यूनार्धपुद्गलपरिवर्तः संसारः अवशिष्टो भवति ते शुक्लपाक्षिकाः, अथ च येषां तदधिकः संसारः अवशिष्टो भवति ते कृष्णपाक्षिका व्यपदिश्यन्ते इति भावः। 'केवइया सन्नी उववज्जंति५?' कियन्तः संज्ञिनो जीवा उपपद्यन्ते ? 'केवइया असन्नी उववज्जंति६ ?' कियन्तः असंज्ञिनो जीवा उपपद्यन्ते६ ?' 'केवइया भवसिद्धिया उववज्जंति७ ?' कियन्तो भवसिद्धिकाः भवे सिद्धिर्येषां ते भवसिद्धिकाः, उपपद्यन्ते ? 'केवइया अभवसिद्धिया उववज्जंति८ ?' कियन्तः अभवसिद्धिकाः न भवे सिद्धिर्येषां ते अभवसिद्धिकाः, उपपद्यन्ते ? 'केवइया आभिणिबोहियनाणी उववज्जंति९ ?' कियन्तः आभिनिबोधिकज्ञानिनः मतिज्ञानवन्तः, उपपद्यन्ते, 'केवइया सुयनाणी उववज्जंति१० ?',

---

जिन जीवों का संसार अपार्द्धपुद्गलपरिवर्तमात्र रह गया है-वे शुक्लपाक्षिक जीव है और इससे अधिक जिनका संसार हैं वे कृष्णपाक्षिक जीव हैं। तात्पर्य कहने का यह हैं कि जिन जीवों का संसार किंचिन्न्यून अर्द्धपुद्गलपरिवर्तमात्र बाकी रहा है, वे शुक्लपाक्षिक हैं और इससे अधिक संसारवाले जीव कृष्णपाक्षिक हैं। 'केवइया सन्नी उववज्जंति, केवइया असन्नी उववज्जंति' कितने संज्ञी जीव उत्पन्न होते हैं? कितने असंज्ञी जीव उत्पन्न होते हैं? 'केवइया भवसिद्धिया उववज्जंति' कितने भवसिद्धिक-भव में जिन्हों की सिद्धि हैं ऐसे जीव उत्पन्न होते हैं? 'केवइया अभवसिद्धिया उववज्जंति' कितने अभवसिद्धिक-भव में जिन्हों की सिद्धि नहीं है-ऐसे जीव उत्पन्न होते हैं? 'केवइया आभिणिबोहियनाणी उववज्जंति'

કૃષ્ણપાક્ષિક અને શુકલપાક્ષિક જીવોનું લક્ષણ આ પ્રમાણે છે-

"जेसिम बड्ढो पोग्गलपरियट्टो सेसओ उ संसारो।
ते सुक्कपक्खिया खलु अहिणे पुण कण्हपक्खीया॥"

જે જીવોનો સંસાર અર્ધપુદ્ગલપરિવર્ત કરતાં ન્યૂન બાકી રહ્યો હોય છે, તે જીવોને શુકલપાક્ષિક કહે છે, અને તેમના કરતાં અધિક સંસારવાળા જીવોને કૃષ્ણપાક્ષિક કહે છે.

"केवइया सन्नी उववज्जंति, केवइया असन्नी उववज्जंति ?" કેટલા સંજ્ઞી જીવો ઉત્પન્ન થાય છે? કેટલા અસંજ્ઞી જીવો ઉત્પન્ન થાય છે? "केवइया भवसिद्धिया उववज्जंति ?" કેટલા ભવસિદ્ધિક જીવો ઉત્પન્ન થાય છે? "केवइया अभवसिद्धिया उववज्जंति ?" કેટલા અભવસિદ્ધિકો ઉત્પન્ન થાય છે? (ભવને તરી જનારને ભવસિદ્ધિક અને ભવસાગરને તરી ન જનારને અભવસિદ્ધિક કહે છે) "केवइया आभिणिबोहियनाणी उववज्जंति ?" કેટલા આભિનિબોધિક

कियन्तः श्रुतज्ञानिनः उपपद्यन्ते ? 'केवइया ओहिनाणी उववज्जंति११ ?' कियन्तः अवधिज्ञानिनः उपपद्यन्ते ? 'केवइया मइ अन्नाणी उववज्जंति१२ ?' कियन्तो मत्यज्ञानिन उपपद्यन्ते ? 'केवइया सुयअन्नाणी उववज्जंति१३ ?' कियन्तः श्रुताज्ञानिनः उपपद्यन्ते ? 'केवइया विभंगनाणी उववज्जंति१४ ?' कियन्तो विभङ्गज्ञानिन उपपद्यन्ते ? 'केवइया चक्खुदंसणी उववज्जंति१५ ?' कियन्तश्चक्षुर्दर्शनिन उपपद्यन्ते ? 'केवइया ओहिदंसणी उववज्जंति१७ ?' कियन्तः अवधिदर्शनिन उपपद्यन्ते ? 'केवइया आहारसन्नोवउत्ता उववज्जंति१८ ?' कियन्त आहारसंज्ञोपयुक्ताः-आहारसंज्ञावन्त उपपद्यन्ते ? 'केवइया भयसन्नोवउत्ता उवव-

---

कितने आभिनिबोधिकज्ञानी-मतिज्ञानी-जीव उत्पन्न होते हैं ? 'केवइया सुयणाणी उववज्जंति' कितने श्रुतज्ञानी उत्पन्न होते हैं ? 'केवइया ओहिनाणी उववज्जंति' कितने अवधिज्ञानी उत्पन्न होते हैं ? 'केवइया मइ अन्नाणी उववज्जंति' कितने मत्यज्ञानी जीव उत्पन्न होते हैं ? 'केवइया सुयअन्नाणी उववज्जंति' कितने श्रुतअज्ञानी जीव उत्पन्न होते हैं ? 'केवइया विभंगनाणी उववज्जंति' कितने विभंगज्ञानी उत्पन्न होते है ? 'केवइया चक्खुदंसणी उववज्जंति' कितने चक्षुर्दर्शनवाले जीव उत्पन्न होते हैं ? 'केवइया अचक्खुदंसणी उववज्जंति' कितने अचक्षुर्दर्शनवाले जीव उत्पन्न होते हैं ? 'केवइया ओहिदंसणी उववज्जंति' कितने अवधिदर्शनी जीव उत्पन्न होते हैं ? 'केवइया आहारसन्नोवउत्ता उववज्जंति' कितने आहारसंज्ञावाले जीव उत्पन्न होते हैं ? 'केवइया भयसन्नोवउत्ता उववज्जंति' कितने भयसंज्ञावाले उत्पन्न होते

જ્ઞાની (મતિજ્ઞાની) જીવો ઉત્પન્ન થાય છે ? "केवइया सुयणाणी उववज्जंति ?" કેટલા શ્રુતજ્ઞાની જીવો ઉત્પન્ન થાય છે ? "केवइया ओहिनाणी उववज्जंति ?" કેટલા અવધિજ્ઞાની જીવો ઉત્પન્ન થાય છે ? "केवइया मइ अन्नाणी उववज्जंति ?" કેટલા મત્યજ્ઞાની જીવો ઉત્પન્ન થાય છે ? 'केवइया सुय अन्नाणी उववज्जंति ?" કેટલા શ્રુતજ્ઞાની જીવો ઉત્પન્ન થાય છે ? "केवइया विभंगनाणी उववज्जंति ?" કેટલા વિભંગજ્ઞાની જીવો ઉત્પન્ન થાય છે ? "केवइया चक्खुदंसणी उववज्जंति ?' કેટલા ચક્ષુદર્શનવાળા જીવો ઉત્પન્ન થાય છે ? "केवइया अचक्खुदंसणी उववज्जंति ?" કેટલા અચક્ષુદર્શનવાળા જીવો ઉત્પન્ન થાય છે ? "केवइया ओहिदंसणी उववज्जंति ?" કેટલા અવધિદર્શનવાળા જીવો ઉત્પન્ન થાય છે ? "केवइया आहारसन्नोवउत्ता उववज्जंति ?" કેટલા આહારસંજ્ઞાવાળા જીવો ઉત્પન્ન થાય છે ? "केवइया भयसन्नोवउत्ता उववज्जंति ?"

ज्जंति१९?' कियन्तो भयसंज्ञोपयुक्ता उपपद्यन्ते ? 'केवइया मेहुणसन्नोवउत्ता उववज्जंति२० ?' कियन्तो मैथुनसंज्ञोपयुक्ता उपपद्यन्ते ? 'केवइया परिग्गहसन्नोवउत्ता उववज्जंति२१ ?' कियन्तः परिग्रहसंज्ञोपयुक्ताः-परिग्रहसंज्ञावन्त उपपद्यन्ते ? 'केवइया इत्थिवेयगा उववज्जंति२२ ?' कियन्तः स्त्रीवेदकाः-स्त्रीत्ववेदिन उपपद्यन्ते ? 'केवइया पुरिसवेयगा उववज्जंति२३ ?' कियन्तः पुरुषवेदकाः-पुंस्त्ववेदिन उपपद्यन्ते ? 'केवइया नपुंसगवेयगा उववज्जंति२४ ?' कियन्तो नपुंसकवेदकाः-नपुंसकत्ववेदिन उपपद्यन्ते ? 'केवइया कोहकसाई उववज्जंति२५ ?' कियन्तः क्रोधकषायिणः उपपद्यन्ते ? 'जाव केवइया लोभकसायी उववज्जंति२८ ?' यावत् कियन्तो मानकषायिणः कियन्तो मायाकषायिणः कियन्तो लोभकषायिण उपपद्यन्ते ? 'केवइया सोइंदिय उवउत्ता उववज्जंति२९ ?' कियन्तः श्रोत्रेन्द्रियोपयुक्ताः-श्रोत्रेन्द्रियोपयोगवन्त उपपद्यन्ते ? 'जाव केवइया फासिंदियोवउत्ता

हैं ? 'केवइया मेहुणसन्नोवउत्ता उववज्जंति' कितने मैथुन संज्ञावाले जीव उत्पन्न होते हैं ? 'केवइया परिग्गहसन्नोवउत्ता उववज्जंति' कितने परिग्रह संज्ञावाले जीव उत्पन्न होते हैं ? 'केवइया इत्थी वेयगा उववज्जंति' कितने स्त्रीत्ववेदी जीव उत्पन्न होते हैं ? 'केवइया पुरिसवेयगा उववज्जंति' कितने पुरुषवेदक जीव उत्पन्न होते हैं ? 'केवइया नपुंसगवेयगा उववज्जंति' कितने नपुंसकवेदक जीव उत्पन्न होते हैं ? 'केवइया कोहकसाई उववज्जंति' कितने क्रोधकषायी जीव उत्पन्न होते हैं ? 'जाव केवइया लोभकसायी उववज्जंति' यावत्-कितने मानकषायी जीव उत्पन्न होते हैं ? कितने मायाकषायी और कितने लोभकषायी जीव उत्पन्न होते हैं ? 'केवइया सोइंदियउवउत्ता उववज्जंति' कितने श्रोत्रेन्द्रियोपयुक्त-श्रोत्रेन्द्रिय उपयोगवाले जीव-उत्पन्न होते हैं ? 'जाव

કેટલા ભયસંજ્ઞાવાળા જીવો ઉત્પન્ન થાય છે ? "केवइया मेहुणसन्नोवउत्ता उववज्जंति ?" કેટલા મૈથુનસંજ્ઞાવાળા જીવો ઉત્પન્ન થાય છે ? "केवइया परिग्गहसन्नोवउत्ता उववज्जंति ?" કેટલા પરિગ્રહસંજ્ઞાવાળા જીવો ઉત્પન્ન થાય છે ? "केवइया इत्थीवेयगा उववज्जंति ?" કેટલા સ્ત્રીવેદી જીવો ઉત્પન્ન થાય છે ? "केवइया पुरिसवेयगा उववज्जंति ?" કેટલા પુરુષવેદક જીવો ઉત્પન્ન થાય છે ? "केवइया नपुंसगवेयगा उववज्जंति ?" કેટલા નપુંસકવેદક જીવો ઉત્પન્ન થાય છે ? "केवइया कोहकसायी उववज्जंति ? जाव केवइया लोभकसायी उववज्जंति ?" કેટલા ક્રોધકષાયવાળા જીવો ઉત્પન્ન થાય છે ? કેટલા માનકષાયી જીવો ઉત્પન્ન થાય છે ? કેટલા માયા કષાયી જીવો ઉત્પન્ન થાય છે ? કેટલા

उववज्जंति३३' यावत् कियन्तश्चक्षुरिन्द्रियोपयुक्ताः, कियन्तो घ्राणेन्द्रियोपयुक्ताः; कियन्तो रसनेन्द्रियोपयुक्ताः, कियन्तः स्पर्शनेन्द्रियोपयुक्ताः उपपद्यन्ते ? 'केवइया नो इंदियोवउत्ता उववज्जंति३४?' कियन्तो नो इन्द्रियोपयुक्ता उपपद्यन्ते? 'केवइया मणजोगी उववज्जंति३५?' कियन्तो मनोयोगिन उपपद्यन्ते ? 'केवइया वइजोगी उववज्जंति३६?' कियन्तो वचोयोगिन उपपद्यन्ते ? 'केवइया कायजोगी उववज्जंति३७?' कियन्तः काययोगिन उपपद्यन्ते ? 'केवइया सागारोवउत्ता उववज्जंति३८?' कियन्तः साकारोपयुक्ता उपपद्यन्ते? 'केवइया अणागारोवउत्ता उववज्जंति३९?' कियन्तः अनाकारोपयुक्ता उपपद्यन्ते ?। भगवानाह 'गोयमा! इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु संखेज्जवित्थडेसु नरएसु जहण्णेणं एक्को वा, दो वा, तिन्नि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा नेरइया

केवइया फासिंदियोवउत्ता उववज्जंति' यावत्-कितने घ्राणेन्द्रियोपयुक्त, कितने रसनेन्द्रियोपयुक्त और कितने स्पर्शनेन्द्रियोपयुक्त जीव उत्पन्न होते हैं ? 'केवइया नोइंदियोवउत्ता उववज्जंति' कितने नोइन्द्रियोपयुक्त जीव उत्पन्न होते हैं ? 'केवइया मणजोगी उववज्जंति' कितने मनोयोगी उत्पन्न होते हैं ? 'केवइया वइजोगी उववज्जंति' कितने वचनयोगी जीव उत्पन्न होते हैं ? 'केवइया कायजोगी उववज्जंति' कितने काययोगी उत्पन्न होते हैं ? 'केवइया सागारोवउत्ता उववज्जंति' कितने साकारोपयोगयुक्त जीव उत्पन्न होते हैं, 'केवइया अणागारोवउत्ता उववज्जंति' कितने अनाकारोपयुक्त जीव उत्पन्न होते हैं ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-'गोयमा' हे गौतम ! 'इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु संखेज्जवित्थडेसु नरएसु जहण्णेणं एक्को वा, दो

લોભકષાયી જીવો ઉત્પન્ન થાય છે ? " केवइया सोइंदिय उवउत्ता उववज्जंति ?" કેટલા શ્રોત્રેન્દ્રિય ઉપયોગવાળા જીવો ઉત્પન્ન થાય છે ? " जाव केवइया फासिंदियोवउत्ता उववज्जंति ?' કેટલા ઘ્રાણેન્દ્રિયોપયુક્ત, કેટલા રસનેન્દ્રિયોપયુક્ત, અને કેટલા સ્પર્શેન્દ્રિયોપયુક્ત જીવો ઉત્પન્ન થાય છે ? " केवइया नोइंयोवउत्ता उववज्जति ?" કેટલા નોઇન્દ્રિયોપયુક્ત જીવો ઉત્પન્ન થાય છે ? " केवइया मणजोगी उववज्जंति ?" કેટલા મનોયોગી જીવો ઉત્પન્ન થાય છે ? " केवइया वइजोगी उववज्जंति ?" કેટલા વચનયોગી જીવો ઉત્પન્ન થાય છે ? " केवइया कायजोगी उववज्जंति ?" કેટલા કાયયોગી જીવો ઉત્પન્ન થાય છે ? " केवइया सागारोवउत्ता उववज्जंति ?' કેટલા સાકારોપયોગયુક્ત જીવો ઉત્પન્ન થાય છે ? " केवइया अणागारोवउत्ता उववज्जंति ?" કેટલા અનાકારોપયુક્ત જીવો ઉત્પન્ન થાય છે ?

આ પ્રશ્નોનો ઉત્તર આપતા મહાવીર પ્રભુ કહે છે કે-" इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु संखेज्जवित्थडेसु नरएसु जहण्णेणं

उववज्जंति' हे गौतम ! अस्यां खलु रत्नप्रभायां पृथिव्यां त्रिंशति निरयावासशतसहस्रेषु=नरकावासलक्षेषु संख्येयविस्तारेषु नरकेषु जघन्येन एको वा, द्वौ वा; त्रयोवा, नैरयिकाः, उत्कृष्टेन संख्येयाः नैरयिका उपपद्यन्ते, 'जहण्णेणं एक्कोवा, दो वा, तिन्निवा, उक्कोसेणं संखेज्जा काउलेस्सा उववज्जंति' जघन्येन एको वा, द्वौ वा, त्रयो वा, उत्कृष्टेन संख्येयाः कापोतलेश्याः-कापोतलेश्यावन्तः उपपद्यन्ते-'जहण्णेणं एक्को वा, दो वा, तिन्नि वा उक्कोसेणं संखेज्जा कण्हपक्खिया उववज्जंति' जघन्येय एको वा, द्वौ वा, त्रयो वा, उत्कृष्टेन संख्येयाः कृष्णपक्षिका उपपद्यन्ते, 'एवं सुक्कपक्खियावि, एवं सन्नी, एवं असन्नी वि, एवं भवसिद्धिया, एवं अभवसिद्धिया' एवं-पूर्वोक्तरीत्या, शुक्लपक्षिका अपि जघन्येन एकोवा, द्वौ वा, त्रयो

वा, तिन्नि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा नेरइया उववज्जंति' हे गौतम ! इस रत्नप्रभा पृथिवी में ३० लाख नरकावासों में जो कि संख्यातयोजन विस्तारवाले हैं जघन्य से एक, दो अथवा तीन नैरयिक उत्पन्न होते हैं, और उत्कृष्ट से संख्यात नैरयिक उत्पन्न होते हैं-'जहण्णेणं एक्को वा, दो वा तिन्नि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा काउलेस्सा उववज्जंति' जघन्य से एक, या दो अथवा तीन और उत्कृष्ट से संख्यात कापोतलेश्यावाले जीव उत्पन्न होते हैं, 'जहण्णेणं एक्को वा, दो वा, तिन्नि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा कण्हपक्खिया उववज्जंति' जघन्य से एक दो या तीन और उत्कृष्ट से संख्यात कृष्णपाक्षिक उत्पन्न होते हैं-'एवं सुक्कपक्खिया वि एवं सन्नी एवं असन्नी वि, एवं भवसिद्धिया, एवं अभवसिद्धिया' इसी प्रकार से शुक्लपाक्षिक जीव भी जघन्य से एक, या दो या तीन उत्पन्न

एक्कोवा, दोवा, तिन्निवा, उक्कोसेणं संखेज्जा नेरइया उववज्जति" હે ગૌતમ! રત્નપ્રભા પૃથ્વીના ૩૦ લાખ નરકાવાસોમાંના જે સંખ્યાત યોજનના વિસ્તારવાળા નરકાવાસો છે, તેમાં એક સમયમાં ઓછામાં ઓછા એક, બે અથવા ત્રણ નારકો ઉત્પન્ન થાય છે અને વધારેમાં વધારે સંખ્યાત નારકો ઉત્પન્ન થાય છે. "जहण्णेणं एक्कोवा, दो वा, तिन्निवा, उक्कोसेणं संखेज्जा काउलेस्सा उववज्जंति" તેમાં એક સમયમાં ઓછામાં ઓછા એક, બે અથવા ત્રણ અને વધારેમાં વધારે સંખ્યાત કાપોતલેશ્યાવાળા નારકો ઉત્પન્ન થાય છે. "जहण्णेणं एक्कोवा, दो वा, तिन्निवा, उक्कोसेणं संखेज्जा कण्हपक्खिया उववज्जंति" ત્યાં એક સમયમાં ઓછામાં ઓછા એક, બે અથવા ત્રણ અને વધારેમાં વધારે સંખ્યાત કૃષ્ણપાક્ષિકો ઉત્પન્ન થાય છે. "एवं सुक्कपक्खिया वि, एवं सन्नी एवं असन्नी वि, एवं भवसिद्धिया, एवं अभवसिद्धिया" એજ પ્રમાણે શુક્લ-

वा, उत्कृष्टेन संख्येया उपपद्यन्ते, एवं-तथैव संज्ञिनो जघन्येन एको वा, द्वौ वा, त्रयो वा, उत्कृष्टेन संख्येया उपपद्यन्ते, एवं-तथैव, असंज्ञिनोऽपि जघन्येन एको वा, द्वौ वा, त्रयो वा, उत्कृष्टेन संख्येया उपपद्यन्ते, एवं भवसिद्धिकाः जघन्येन एको वा, द्वौ वा, त्रयो वा, उत्कृष्टेन संख्येया उपपद्यन्ते, 'आभिणिबोहियनाणी, सुयनाणी, ओहिनाणी, मइ अन्नाणी, सुय अन्नाणी, विभंग नाणी' आभिनिबोधिकज्ञानिनः, श्रुतज्ञानिनः, अवधिज्ञानिनः, मत्यज्ञानिनः, श्रुताज्ञानिनः, विभङ्गज्ञानिनः जघन्येन एको वा, द्वौ वा, त्रयो वा, उत्कृष्टेन संख्येया उपपद्यन्ते, 'चक्खुदंसणी ण उववज्जंति' चक्षुर्दर्शनिनो नो उपपद्यन्ते इन्द्रिय परित्यागेनैव तत्रोत्पत्तेःविधानात्, अथ अचक्षुर्दर्शनिनो कथं तर्हि तत्र उत्पत्तिरितिचेन्न इन्द्रि-

---

होते हैं और उत्कृष्ट से संख्यात उत्पन्न होते हैं। इसी प्रकार का कथन संज्ञी जीवों की, असंज्ञी जीवों की भवसिद्धिक जीवों की, उत्पत्ति के विषय में भी जानना चाहिये, अर्थात् ये सब जघन्य से एक, दो, या तीन उत्पन्न होते हैं और उत्कृष्ट से संख्यात उत्पन्न होते हैं 'आभिणिबोहियनाणी, सुयनाणी, ओहिनाणी, मइ अन्नाणी, सुयअन्नाणी, विभंगनाणी' इसी प्रकार से आभिनिबोधिकज्ञानी, श्रुतज्ञानी अवधिज्ञानी मत्यज्ञानी, श्रुताज्ञाती और विभंगज्ञानी-ये सब भी जघन्य से एक या दो अथवा तीन उत्पन्न होते हैं और उत्कृष्ट से संख्यात उत्पन्न होते हैं 'चक्खुदंसणी ण उववज्जंति' चक्षुर्दर्शनी वहां उत्पन्न नहीं होते हैं-क्योंकि इन्द्रियों का परित्याग करके ही जीव वहां उत्पन्न होते हैं। यदि ऐसी बात है तो फिर अचक्षुर्दर्शनियों का वहां उत्पाद कैसे कहा गया है? सो ऐसी आशंका यहां पर नहीं करनी चाहिये-क्योंकि इन्द्रियानाश्रित सामान्य

પાંચેન્દ્રિયજીવો, સંજ્ઞીજીવો, અસંજ્ઞીજીવો, ભવસિદ્ધિક જીવો અને અભવસિદ્ધિક જીવો પણ એક સમયમાં ઓછામાં ઓછા એક, બે અથવા ત્રણ અને વધારેમાં વધારે સંખ્યાત ઉત્પન્ન થાય છે. "आभिणिबोहियनाणी, सुयनाणी, ओहिनाणी, मइ अन्नाणी, सुय अन्नाणी, विभंगनाणी" એજ પ્રમાણે આભિનિબોધિકજ્ઞાની, શ્રુતજ્ઞાની, અવધિજ્ઞાની, મત્યજ્ઞાની, શ્રુતાજ્ઞાની અને વિભંગજ્ઞાની જીવો પણ એક સમયમાં ઓછામાં ઓછા એક, બે અથવા ત્રણ અને વધારેમાં વધારે સંખ્યાત ઉત્પન્ન થાય છે "चक्खुदंसणी ण उववज्जंति" ચક્ષુદર્શની ત્યાં ઉત્પન્ન થતા નથી, કારણ કે ઇન્દ્રિયોનો પરિત્યાગ કરીને જ જીવો ત્યાં ઉત્પન્ન થાય છે. જો ત્યાં ચક્ષુદર્શનીનો ઉત્પાદ થતો ન હોય, તો અચક્ષુદર્શનીનો ઉત્પાદ કેવી રીતે સંભવી શકે?

यानाश्रितस्य सामान्योपयोगमात्रस्याचक्षुर्दर्शनशब्दप्रतिपाद्यस्य उत्पत्तिसमयेऽपि सद्भावादचक्षुर्दर्शनिन उपपद्यन्ते, इत्यभिप्रायेणाह–' जहण्णेणं एक्को वा, दो वा, तिन्नि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा अचक्खुदंसणी उववज्जंति ' जघन्येन एको वा, द्वौ वा, त्रयो वा, उत्कृष्टेन संख्येयाः अचक्षुर्दर्शनिन उपपद्यन्ते, 'एवं ओहिदंसणी वि, आहारसन्नोवउत्ता वि जाव परिग्गहसन्नोवउत्ता वि उववज्जंति ' एवं पूर्वोक्तरीत्या, अवधिज्ञानिनोऽपि, आहारसंज्ञोपयुक्ता अपि, यावत्–भयसंज्ञोपयुक्ता अपि, मैथुनसंज्ञोपयुक्ता अपि, परिग्रहसंज्ञोपयुक्ता अपि जघन्येन एको वा, द्वौ वा, त्रयो वा, उत्कृष्टेन संख्येया उपपद्यन्ते, ' इत्थी वेयगा न उववज्जंति, पुरिसवेयगा वि न उववज्जंति ' स्त्रीवेदकाः नोपपद्यन्ते, पुरुषवेदका नोपपद्यन्ते, भङ्गप्रत्ययात्तेषां

उपयोग मात्र का जो कि अचक्षुर्दर्शनप्रतिपाद्य है, उत्पत्ति के समय में भी सद्भाव रहता है इसलिये वहां अचक्षुर्दर्शनियों की उत्पत्ति कही गई है। इसी अभिप्राय को लेकर 'जहण्णेणं एक्को वा, दो वा, तिन्नि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा अचक्खुदंसणी उववज्जंति' ऐसा कहा गया है, कि जघन्य से एक, दो, अथवा तीन, और उत्कृष्ट से संख्यात अचक्षुर्दर्शनी उत्पन्न होते हैं 'एवं ओहिदंसणी वि, आहारसन्नोवउत्ता वि जाव परिग्गहसन्नोवउत्ता उववज्जंति' इसी प्रकार से अवधिदर्शनी भी, आहारसंज्ञोपयुक्त भी यावत्–भयसंज्ञोपयुक्त भी, मैथुनसंज्ञोपयुक्त भी, और परिग्रहसंज्ञोपयुक्त भी जघन्य से एक, दो अथवा तीन और उत्कृष्ट से संख्यात उत्पन्न होते हैं 'इत्थी वेयगा न उववज्जंति' पुरिसवेयगा वि ण उववज्जंति' यहां स्त्रीवेदक नहीं उत्पन्न होते हैं,

---

આ પ્રકારની શંકા અહીં કરવી જોઇએ નહીં, કારણ કે અચક્ષુદર્શન પ્રતિપાદ્ય ઇન્દ્રિયાનાશ્રિત સામાન્ય ઉપયોગમાત્રનો ઉત્પત્તિના સમયમાં પણ ત્યાં સદ્ભાવ રહે છે, તે કારણે ત્યાં અચક્ષુદર્શનીઓની ઉત્પત્તિ થાય છે, એવું કહેવામાં આવ્યું છે એજ કારણે અહીં એવું કહેવામાં આવ્યું છે કે "जहण्णेणं एक्कोवा, दो वा, तिन्निवा, उक्कोसेणं संखेज्जा अचक्खुदंसणी उववज्जंति" ત્યાં એક સમયમાં ઓછામાં ઓછા એક, બે અથવા ત્રણ અને વધારેમાં વધારે સંખ્યાત અચક્ષુદર્શની જીવો ઉત્પન્ન થાય છે. "एवं ओहिदंसणी वि, आहारसन्नोवउत्ता वि जाव परिग्गहसन्नोवउत्ता उववज्जंति" એજ પ્રમાણે ત્યાં એક સમયમાં અવધિજ્ઞાની, આહારસંજ્ઞોપયુક્ત, ભયસંજ્ઞોપયુક્ત, મૈથુનસંજ્ઞોપયુક્ત અને પરિગ્રહસંજ્ઞોપયુક્ત જીવો પણ ઓછામાં ઓછા એક, બે અથવા ત્રણ અને વધારેમાં વધારે સંખ્યાત ઉત્પન્ન થાય છે. "इत्थीवेयगा न उववज्जंति, पुरिसवेयगा वि ण उववज्जंति" ત્યાં સ્ત્રીવેદકો અને પુરુષવેદકો

नपुंसकमात्रवेदत्वात् अत एवाह–'जहण्णेणं एक्को वा, दो वा, तिन्नि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा नपुंसगवेयगा उववज्जंति' जघन्येन एको वा, द्वौ वा, त्रयो वा, उत्कृष्टेन संख्येया नपुंसकवेदका उपपद्यन्ते, 'एवं कोहकसाई जाव लोभकसाई उववज्जंति' एवं तथैव क्रोधकषायिणो यावत्–मानकषायिणः, मायाकषायिणः, लोभकषायिणो जघन्येन एको वा, द्वौ वा, त्रयो वा, उत्कृष्टेन संख्येया उपपद्यन्ते, 'सोइंदिय उवउत्ता न उववज्जंति, एवं जाव फासिंदियोवउत्ता न उववज्जंति' श्रोत्रेन्द्रियोपयुक्ता न उपपद्यन्ते, एवं तथैव यावत्–चक्षुरिन्द्रियोपयुक्ताः, घ्राणेन्द्रियोपयुक्ताः, रसनेन्द्रियोपयुक्ताः, स्पर्शनेन्द्रियोपयुक्ताः, नोपपद्यन्ते इन्द्रियणां तदानीमसद्भावात्, 'जहण्णेणं एक्को वा, दो वा, तिन्नि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा

और न पुरुषवेदक उत्पन्न होते हैं, क्योंकि यहां पर भवप्रत्यय–(नरक के भव में) नपुंसकवेदमात्र ही होता है, इसीलिये यहां 'जहण्णेणं एक्को वा, दो वा, तिन्नि वा उक्कोसेणं संखेज्जा नपुंसगवेयगा उववज्जंति' जघन्य से एक दो अथवा तीन और उत्कृष्ट से संख्यात नपुंसकवेदक जीव उत्पन्न होते हैं ऐसा कहा गया है। 'एवं कोह कसाई' जाव लोभकसाई उववज्जंति' इसी प्रकार से क्रोधकषायी, यावत् मानकषायी, मायाकषायी और लोभकषायी जीव जघन्य से एक, दो अथवा तीन और उत्कृष्ट से संख्यात उत्पन्न होते हैं 'सोइंदिय उवउत्ता न उववज्जंति' एवं जाव फासिंदियोवउत्ता न उववज्जंति' श्रोत्रेन्द्रियोपयुक्त चक्षुइन्द्रियोपयुक्त एवं घ्राणेन्द्रियोपयुक्त जीव भी यहां उत्पन्न नहीं होते हैं क्योंकि उस समय इन्द्रियों का अभाव रहता है 'जहण्णेणं एक्को वा, दो वा, तिन्नि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा नो इंदियोवउत्ता उव-

---

ઉત્પન્ન થતા નથી, કારણ કે ત્યાં ભવપ્રત્યય (નરકના ભવમાં) નપુંસકવેદ માત્ર જ હોય છે. તેથી ત્યાં "जहण्णेणं एक्को, वा, दो वा, तिन्नि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा नपुंसगवेयगा उववज्जंति" ઓછામાં ઓછા એક, બે અથવા ત્રણ અને વધારેમાં વધારે સંખ્યાત નપુંસકવેદક જીવો ઉત્પન્ન થાય છે, એવું કહ્યું છે "एवं कोहकसाई जाव लोभकसाई उववज्जंति" એજ પ્રમાણે ક્રોધકષાયી, માનકષાયી, માયાકષાયી અને લોભકષાયી જીવો પણ ઓછામાં ઓછા એક, બે અથવા ત્રણ અને વધારેમાં વધારે સંખ્યાત ઉત્પન્ન થાય છે. "सोइंदियउवउत्ता न उववज्जंति एवं जाव फासिंदियोवउत्ता न उववज्जंति" શ્રોત્રેન્દ્રિયોપયુક્ત, ચક્ષુઇન્દ્રિયોપયુક્ત, ઘ્રાણેન્દ્રિયોપયુક્ત અને સ્પર્શેન્દ્રિયોપયુક્ત જીવોની ત્યાં ઉત્પત્તિ થતી નથી, કારણ કે તે સમયે ત્યાં ઇન્દ્રિયોનો

नो इंदिओवउत्ता उववज्जंति' जघन्येन-एको वा, द्वौ वा, त्रयो वा, उत्कृष्टेन संख्येया नो इन्द्रियोपयुक्ता उत्पद्यन्ते, यद्यपि नो इन्द्रियस्य मनोरूपतया तत्र मनः पर्याप्त्यभावे द्रव्यमनो नास्ति तथापि भावमनसश्चैतन्यरूपस्य सदा सद्भावात् तदुपयुक्तानामुत्पादात् नो इन्द्रियोपयुक्ता उत्पद्यन्ते इत्युक्तम्, 'मणजोगी ण उववज्जंति, एवं वइजोगी वि' मनोयोगिनः तत्र नोपपद्यन्ते, एवं-तथैव वचोयोगिनोऽपि तत्र नोत्पद्यन्ते, उत्पादसमयेऽपर्याप्तकत्वेन मनोवचसोरसद्भावात्, 'जहण्णेणं एक्को वा, दो वा, तिन्नि वा उक्कोसेणं संखेज्जा कायजोगी उववज्जंति' वज्जंति' जघन्य से एक, दो, अथवा तीन और उत्कृष्ट से संख्यात नोइन्द्रियोपयुक्त उत्पन्न होते हैं।

शंका—अपर्याप्तावस्था में वहां पर मनः पर्याप्ति के अभाव में द्रव्यमन नहीं होता है-और यह नोइन्द्रिय मनोरूप होती है-अतः कैसे वहां पर नो इन्द्रियोपयुक्तों का उत्पाद कहा गया है ? तो इसका उत्तर ऐसा है कि यद्यपि वहां पर द्रव्यमन नहीं है परन्तु फिर भी चैतन्यरूप भावमन का तो सदा सद्भाव रहता है इसलिये तदुपयुक्तजीवों का उत्पाद होने से नो इन्द्रियोपयुक्तों का उत्पाद कहा गया है ? 'मणयोगी ण उववज्जंति, एवं वइजोगी वि' मनोयोगी और वचोयोगी वहां उत्पन्न नहीं होते हैं-क्योंकि उत्पाद समय में अपर्याप्तक होने से मन और वचन का अभाव कहा गया है 'जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिन्नि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा कायजोगी उववज्जंति' जघन्य से एक दो अथवा

અભાવ રહે છે. "जहण्णेणं एक्का वा, दो वा, तिन्निवा, उक्कोसेणं संखेज्जा नोइंदियोवउत्ता उववज्जंति" ત્યાં ઓછામાં ઓછા એક, બે અથવા ત્રણ અને વધારેમાં વધારે સંખ્યાત નોઇન્દ્રિયોપયુકત જીવો ઉત્પન્ન થાય છે.

શંકા-અપર્યાપ્તાવસ્થામાં ત્યાં મનઃપર્યાપ્તિના અભાવને લીધે મનનો સદ્ભાવ હોતો નથી, અને આ નોઇન્દ્રિય મનરૂપ હોય છે. તો પછી ત્યાં નોઇન્દ્રિયોપયુકતોનો સદ્ભાવ કેવી રીતે સંભવી શકે ?

ઉત્તર-જો કે ત્યાં દ્રવ્યમનનો સદ્ભાવ નથી પરન્તુ ચૈતન્ય રૂપ ભાવમનનો તો સદા સદ્ભાવ રહે છે. તેથી ભાવમનોપયુકત જીવોનો ત્યાં ઉત્પાદ થવાથી નોઇન્દ્રિયોપયુકતોનો સદ્ભાવ કહેવામાં આવ્યો છે

"मणजोगी ण उववज्जंति, एवं वइजोगी वि" ત્યાં મનોયોગી અને વચનયોગી જીવો ઉત્પન્ન થતા નથી, કારણ કે ઉત્પાદને સમયે તેઓ અપર્યાપ્તક હોય છે, તેથી મન અને વચનનો અભાવ કહેવામાં આવ્યો છે. जहण्णेणं एक्को वा, दो वा, तिन्निवा, उक्कोसेणं संखेज्जा कायजोगी उववज्जंति" ત્યાં એક

जघन्येन एको वा, द्वौ वा, त्रयो वा, उत्कृष्टेन संख्येयाः काययोगिन उपपद्यन्ते, सर्वसंसारिजीवानां सर्वदैव काययोगस्य सद्भावात्, 'एवं सागारोवउत्ता वि, एवं अणागारोवउत्ता वि' एवं-पूर्वोक्तरीत्यैव साकारोपयुक्ता अपि साकारोपयोगवन्तोऽपि, एवम् अनाकारोपयुक्ता अपि-अनाकारोपयोगवन्तोऽपि जघन्येन एको वा, द्वौ वा, त्रयो वा, उत्कृष्टेन संख्येयास्तत्रोत्पद्यन्ते ॥सू० १॥

मूलम्-"इमीसे णं भंते! रयणप्पभाए पुढवीए, तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु संखेज्जवित्थडेसु नेरइएसु एगसमएणं केवइया नेरइया उववज्जंति? केवइया काउलेस्सा उववज्जंति? जाव केवइया अणागारोवउत्ता उववज्जंति? गोयमा! इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए, तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु संखेज्जवित्थडेसु नरएसु एगसमएणं जहण्णेणं एक्को वा, दो वा, तिन्नि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा नेरइया उववज्जंति, एवं जाव सन्नी, असन्नीण उववज्जंति, जहण्णेणं एक्को वा, दो वा, तिन्नि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा भवसिद्धिया उववज्जंति, एवं जाव सुय अन्नाणी, विभंगनाणी ण उववज्जंति, चक्खुदंसणी ण उववज्जंति, जहण्णेणं एक्को वा, दो वा, तिन्नि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा अचक्खुदंसणी उववज्जंति,

---

तीन और उत्कृष्ट से संख्यात काययोगी उत्पन्न होते हैं क्यों कि समस्त संसारी जीवों में काययोग का सदा ही सद्भाव रहता है 'एवं सागारोवउत्ता वि एवं अणागारोवउत्ता वि' इसी प्रकार से साकारोपयोगवाले भी और अनाकारोपयोगवाले भी जघन्य से एक दो अथवा तीन और उत्कृष्ट से संख्यात वहां उत्पन्न होते हैं ॥ सू० १ ॥

સમયે ઓછામાં ઓછા એક, બે, અથવા ત્રણ અને વધારેમાં વધારે સંખ્યાત કાયયેાગી ઉત્પન્ન થાય છે, કારણ કે સમસ્ત સંસારી જીવેામાં કાયયેાગનેા સદા સદ્ભાવ જ રહે છે. "एवं सागारोवउत्ता वि एवं अणागारोवउत्ता वि" એજ પ્રમાણે સાકારોપયેાગવાળા અને અનાકારોપયેાગવાળા જીવેા પણ ઓછામાં ઓછા એક, બે અથવા ત્રણ અને વધારેમાં વધારે સંખ્યાત ઉત્પન્ન થાય છે. ॥સૂ૦૧॥

एवं जाव लोभकसाई, सोइंदियउवउत्ता ण उव्वट्टंति, एवं जाव फासिंदियोवउत्ता न उव्वट्टंति, जहण्णेणं एक्को वा, दो वा, तिन्नि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा नो इंदियोवउत्ता उव्वट्टंति, मणजोगी न उव्वट्टंति, एवं वइजोगी वि, जहण्णेणं एक्को वा, दो वा तिन्नि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा कायजोगी उव्वट्टंति, एवं सागारोवउत्ता, अणगारोवउत्ता ॥सू० २॥

छाया—अस्याः खलु भदन्त! रत्नप्रभायाः पृथिव्याः त्रिंशति निरयावास-शतसहस्रेषु संख्येयविस्तृतेषु नरकेषु एकसमयेन कियन्तो नैरयिका उद्वर्तन्ते? कियन्तः कापोतलेश्याः उद्वर्तन्ते? यावत् कियन्तः अनाकारोपयुक्ता उद्वर्तन्ते? गौतम! अस्याः खलु रत्नप्रभायाः पृथिव्याः त्रिंशति निरयावासशतसहस्रेषु संख्येय-विस्तृतेषु नरकेषु एकसमयेन जघन्येन एको वा, द्वौ वा, त्रयो वा उत्कृष्टेन संख्येयाः नैरयिका उद्वर्तन्ते, एवं यावत् संज्ञिनः, असंज्ञिनो नोद्वर्तन्ते, जघन्येन एको वा, द्वौ वा, त्रयो वा, उत्कृष्टेन संख्येया भवसिद्धिका उद्वर्तन्ते, एवं यावत् श्रुतज्ञानिनः, विभङ्गज्ञानिनो नोद्वर्तन्ते, चक्षुर्दर्शनिनो नोद्वर्तन्ते, जघन्येन एको वा, द्वौ वा, त्रयो वा, उत्कृष्टेन संख्येयाः अचक्षुर्दर्शनिन उद्वर्तन्ते, एवं यावत् लोभकषायिणः श्रोत्रेन्द्रियोपयुक्ताः नोद्वर्तन्ते, एवं यावत्-स्पर्शनेन्द्रियोपयुक्ता नोद्वर्तन्ते, जघन्येन एको वा, द्वौ वा, त्रयो वा, उत्कृष्टेन संख्येया नोइन्द्रियो-पयुक्ता उद्वर्तन्ते, मनोयोगिनो नोद्वर्तन्ते, एवं वचोयोगिनोऽपि, जघन्येन एको वा, द्वौ वा, त्रयो वा, उत्कृष्टेन संख्येयाः काययोगिन उद्वर्तन्ते, एवं साकारोपयुक्ताः अनाकारोपयुक्ताः ॥सू० २॥

टीका—अथ रत्नप्रभा नैरयिकाणामेवोद्वर्तनां प्ररूपयितुमाह-'इमीसे णं' इत्यादि, 'इमीसे णं भंते! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु

'इमीसे णं भंते! इत्यादि।

टीकार्थ-सूत्रकार ने इस सूत्र द्वारा नैरयिक जीवों की उद्वर्त्तना की प्ररूपणा की है इसमें गौतम ने प्रभु से ऐसा पूछा है-'इमीसे णं भंते!

"इमीसे णं भंते!" ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ-સૂત્રકારે આ સૂત્રમાં નારકોની ઉદ્વર્ત્તનાની પ્રરૂપણા કરી છે. આ વિષયને અનુલક્ષીને ગૌતમ સ્વામી મહાવીર પ્રભુને એવો પ્રશ્ન પૂછે છે કે-" इमीसेणं भंते! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु सखे-

संखेज्जवित्थडेसु नरएसु एगसमएणं केवइया नेरइया उव्वट्टंति ?' गौतमः पृच्छति हे भदन्त ! अस्यां खलु रत्नप्रभायां पृथिव्यां त्रिंशत् संख्यकेषु निरयावाससयसहस्रेषु नरकावासलक्षेषु संख्येयविस्तृतेषु नरकेषु एकसमयेन कियन्तो नैरयिका उद्वर्तन्ते ? नरकभवं परित्यज्य निःसरन्ति ? 'केवइया काउलेस्सा उव्वट्टंति ?' कियन्तः कापोतलेश्यावन्तस्तत उद्वर्तन्ते ? 'जाव केवइया अणागारोवउत्ता उव्वट्टंति ?' यावत्-कियन्तः कृष्णपाक्षिकादारभ्य अनाकारोपयुक्तपर्यन्ता उद्वर्तन्ते ? इत्येकोनचत्वारिंशत् प्रश्नाः पूर्वोक्ता अत्र संग्राह्याः, भगवानाह-'गोयमा ! इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए, तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु संखेज्जवित्थडेसु नरएसु एगसमएणं जहण्णेणं एक्को वा, दो वा, तिन्नि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा नेर-

---

रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु संखेज्जवित्थडेसु नरएसु एगसमएणं केवइया नेरइया उव्वट्टंति ? हे भदन्त ! इस रत्नप्रभापृथिवी में जो ३० लाख नरकावास कहे हैं, उनमें से जो नरकावास संख्यातयोजन के विस्तारवाले हैं उनमें से एक समय में कितने नारक नरकभव को छोड़कर निकलते हैं ? 'केवइया काउलेस्सा उव्वट्टंति' कितने कापोतलेश्यावाले नारक वहां से निकलते हैं ? 'जाव केवइया अणागारोवउत्ता उव्वट्टंति ?' यावत् कितने कृष्णपाक्षिक से लेकर अनाकारोपयुक्तक के नारक वहां से निकलते हैं ? इस प्रकार ३९ प्रश्न जो कि पहिले कहे जा चुके हैं वे सब यहां उद्भावित करना चाहिये। उसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-'गोयमा ! इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु संखेज्जवित्थडेसु नरएसु एगसमएणं

ज्जवित्थडेसु नरएसु एगसमएणं केवइया नेरइया उव्वट्टंति ?" હે ભગવન્ ! રત્નપ્રભા પૃથ્વીના જે ૩૦ લાખ નરકાવાસો કહ્યા છે, તેમાંના સંખ્યાત યોજનના વિસ્તારવાળા નરકાવાસોમાંથી એક સમયે કેટલા નારકો નરકભવને છોડીને નીકળે છે ? (નરકભવનું આયુષ્ય પૂરું કરીને ત્યાંથી નીકળવાની ક્રિયાને ઉદ્વર્ત્તના કહે છે) "केवइया काउलेस्सा उव्वट्टंति ?" કેટલા કાપોત લેશ્યાવાળા નારકો ત્યાંથી નીકળે છે ? "जाव केवइया अणागारोवउत्ता उव्वट्टंति ?" કૃષ્ણપાક્ષિકથી લઈને અનાકારોપયુક્ત સુધીના કેટલા નારકો ત્યાંથી એક સમયમાં નીકળે છે ? આ પ્રકારે પહેલા સૂત્રમાં ઉત્પાદના વિષયમાં જે ૩૯ પ્રશ્નો પૂછવામાં આવ્યા છે, એવા જ ૩૯ પ્રશ્નો અહીં ઉદ્વર્ત્તનાના વિષયમાં પૂછવામાં આવ્યા છે, એમ સમજવું જોઈએ.

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-"गोयमा !" હે ગૌતમ ! "इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु संखेज्जवित्थडेसु नरएसु एगसमएणं

इया उव्वट्टंति, एवं जाव सन्नी' हे गौतम ! अस्याः खलु रत्नप्रभायाः पृथिव्याः, त्रिंशति नरकावासशतसहस्रेषु-त्रिंशल्लक्षनरकावासेषु संख्येयविस्तृतेषु-संख्येयविस्तारेषु नरकेषु एकसमयेन जघन्येन एको वा, द्वौ वा, त्रयो वा, उत्कृष्टेन संख्येयाः नैरयिका उद्वर्तन्ते, एवं-तथैव-यावत्-कापोतलेश्याः, कृष्णपाक्षिकाः, शुक्लपाक्षिकाः, संज्ञिनश्च जघन्येन एको वा, द्वौ वा त्रयो वा, उत्कृष्टेन संख्येया उद्वर्तन्ते, 'असन्नी ण उव्वट्टंति' असंज्ञिनो नोद्वर्तन्ते तत उद्वर्तनायाः परभवप्रथमसमये सद्भावेन नैरयिकाणामसंज्ञिषु उत्पादाभावादतस्तेऽसंज्ञिनः सन्तरत्तो नोद्वर्तन्ते, इत्युक्तम्, 'जहण्णेणं एको वा, दो वा, तिन्नि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा भवसिद्धिया उव्वट्टंति, एवं जाव सुय अन्नाणी' जघन्येन एको वा, द्वौ वा, त्रयो

जहण्णेणं एको वा, दो वा, तिन्नि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा नेरइया उव्वट्टंति, एवं जाव सन्नी' हे गौतम ! इस रत्नप्रभा पृथिवी में जो ३० लाख नरकावास कहे गये हैं उनमें से जो नरकावास संख्यातयोजन विस्तारवाले हैं उनमें से एक समय में कम से कम एक या दो या तीन नारक कम से कम तो मरकर वहां से निकलते ही हैं और अधिक से अधिक संख्यात नारक मर कर वहां से निकलते हैं। इसी प्रकार से यावत्-कापोतलेश्यावाले, कृष्णपाक्षिक, शुक्लपाक्षिक और संज्ञी, जघन्य से एक, दो या तीन और उत्कृष्ट से संख्यातनक निकलते हैं। असंज्ञी वहां से उद्वर्त्तना नहीं करते हैं अर्थात् उद्वर्त्तना परभव के प्रथम समय में होती है और नारक जीव असंज्ञी में मरकर उत्पन्न नहीं होता है-इसलिये ऐसा कहा है कि असंज्ञी होकर नारक वहां से उद्वर्त्तना नहीं करते हैं। 'जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिन्नि वा,

---

जहण्णेणं एक्कोवा, दोवा, तिन्निवा, उक्कोसेणं संखेज्जा नेरइया उववट्टंति, एवं जाव सन्नी" આ રત્નપ્રભા પૃથ્વીના ત્રીસ લાખ નરકાવાસોમાંના જે સંખ્યાત યોજનના વિસ્તારવાળા નરકાવાસો છે તેમાંથી એક સમયમાં ઓછામાં ઓછા એક, બે અથવા ત્રણ અને વધારેમાં વધારે સંખ્યાત નારકો નરકભવનું આયુષ્ય પૂરું કરીને નીકળે છે. એજ પ્રમાણે કાપોતલેશ્યાવાળા, કૃષ્ણપાક્ષિક, શુકલપાક્ષિક અને સંજ્ઞી નારકો પણ ઓછામાં ઓછા એક, બે અથવા ત્રણ અને વધારેમાં વધારે સંખ્યાત નીકળે છે. ત્યાંથી અસંજ્ઞી નારકો ઉદ્વર્ત્તના કરતા નથી કારણ કે ઉદ્વર્ત્તના પરભવના પ્રથમ સમયમાં થાય છે અને નારકો મરીને અસંજ્ઞીમાં ઉત્પન્ન થતા નથી તેથી જ એવું કહેવામાં આવ્યું છે કે અસંજ્ઞી અવસ્થામા નારકો ત્યાંથી ઉદ્વર્ત્તના કરતા નથી. "जहण्णेणं एक्को वा, दो वा, तिन्नि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा भवसिद्धिया उववट्टंति एवं जाव

वा, उत्कृष्टेन संख्येया भवसिद्धिका उद्वर्तन्ते, एवं-तथैव, यावत्-अभवसिद्धिकाः, आभिनिबोधिकज्ञानिनः, श्रुतज्ञानिनः, अवधिज्ञानिनः, मत्यज्ञानिनः, श्रुताज्ञानिनो जघन्येन एको वा, द्वौ वा, त्रयो वा, उत्कृष्टेन संख्येया उद्वर्तन्ते, इतिभावः। 'विभंगनाणी ण उव्वट्टंति, चक्खुदंसणी ण उव्वट्टंति' विभङ्गज्ञानिन एते नोद्वर्तन्ते मरणकाले विभङ्गाभावात्, चक्षुर्दर्शनिनो नोद्वर्तन्ते मरणकाले चक्षुर्दर्शनासद्भावात्, तथाचोक्तम्-

"असन्निणो य विभंगिणो य उव्वट्टणाइ वज्जेज्जा।
दोसु वि य चक्खुदंसणी ण वइ तह इंदियाइं वा ॥१॥

छाया—असंज्ञिनश्च विभङ्गिनश्च उद्वर्तनानि वर्जयेत्।
द्वयोरपि चक्षुर्दर्शिनः, मनोवचस्तथा इन्द्रियाणि वा ॥१।

उक्कोसेणं संखेज्जा भवसिद्धिया उव्वट्टंति एवं जाव सुय अन्नाणी' जघन्य से एक, दो अथवा तीन तक और अधिक से अधिक संख्यात तक भवसिद्धिक नारक यहां से एक समय में उद्वर्त्तना करते हैं इसी प्रकार से यावत् अभवसिद्धिक नारक, आभिनिबोधिकज्ञानी, श्रुतज्ञानी, अवधिज्ञानी, मत्यज्ञानी, श्रुताज्ञानी नारक वहां से कम से कम एक, दो या तीनतक निकलते हैं और अधिक से अधिक संख्यात तक भी निकलते हैं। 'विभंगनाणी ण उव्वट्टंति चक्खुदंसणी ण उव्वट्टंति' विभंगज्ञानी उद्वर्त्तना नहीं करते हैं-क्योंकि मरणकाल में विभंगज्ञान का अभाव हो जाता है इसी प्रकार से चक्षुर्दर्शनी उद्वर्त्तना नहीं करते हैं क्यों कि मरणकाल में चक्षुर्दर्शन का अभाव हो जाता है। सो ही कहा है- 'असंन्निणो य' इत्यादि, 'जहण्णेणं एक्को वा, दो वा, तिन्नि वा, उक्को-

---

સુય અન્નાણી" ઓછામાં ઓછા એક, બે અથવા ત્રણ અને વધારેમાં વધારે સંખ્યાત ભવસિદ્ધિક નારકો ત્યાંથી એક સમયમાં નીકળે છે. એજ પ્રમાણે અભવસિદ્ધિક નારકો, આભિનિબોધિકજ્ઞાની નારકો શ્રુતજ્ઞાની નારકો, અવધિજ્ઞાની નારકો, મત્યજ્ઞાની નારકો અને શ્રુતજ્ઞાની નારકો પણ ત્યાંથી એક સમયમાં ઓછામાં ઓછા એક, બે અથવા ત્રણ નીકળે છે અને વધારેમાં વધારે સંખ્યાત સુધી પણ નીકળે છે. "विब्भगनाणी ण उव्वट्टंति' चक्खुदंसणी ण उव्वट्टति" ત્યાંથી વિભંગજ્ઞાની નારકો ઉદ્વર્ત્તના કરતા નથી કારણ કે મરણકાળે વિભંગજ્ઞાનનો અભાવ થઈ જાય છે. એજ પ્રમાણે ચક્ષુર્દર્શની નારકો પણ ત્યાંથી ઉદ્વર્ત્તના કરતા નથી, કારણ કે મરણકાળે ચક્ષુર્દર્શનનો પણ અભાવ જ રહે છે.

એજ વાત આ સૂત્રપાઠ દ્વારા વ્યક્ત કરવામાં આવી છે—

"असन्निणो य" इत्यादि—

'जहण्णेणं एक्को वा, दो वा, तिन्नि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा अचक्खुदंसणी उव्वट्टंति' जघन्येन एको वा, द्वौ वा, त्रयो वा, उत्कृष्टेन संख्येयाः अचक्षुर्दर्शनिन उद्वर्तन्ते 'एवं जाव लोभकसायी' एवं तथैव, यावत्-अवधिदर्शनिनः आहारसंज्ञोपयुक्ताः, भयसंज्ञोपयुक्ताः, मैथुनसंज्ञोपयुक्ताः, परिग्रहसंज्ञोपयुक्ताः, स्त्रीवेदकाः, पुरुषवेदकाः, नपुंसकवेदकाः, क्रोधकषायिणः, मानकषायिणः, मायाकषायिणः, लोभकषायिणो जघन्येन एको वा, द्वौ वा, त्रयो वा, उत्कृष्टेन संख्येयाः उद्वर्तन्ते, 'सोइंदियोवउत्ता ण उव्वट्टंति, एवं जाव फासिंदियोवउत्ता न उव्वट्टंति' श्रोत्रेन्द्रियोपयुक्ता स्तत्र नोद्वर्तन्ते, एवं-तथैव यावत्-चक्षुरिन्द्रियोपयुक्ताः, घ्राणेन्द्रियोपयुक्ताः, रसनेन्द्रियोपयुक्ताः, स्पर्शनेन्द्रियोपयुक्ता नोद्वर्तन्ते इन्द्रियाणि मुक्त्वैव उद्वर्तनसद्भावात्, 'जहण्णेणं एक्को वा, दो वा,

---

सेणं संखेज्जा अचक्खुदंसणी उव्वट्टंति' जघन्य से एक, दो, या तीन और उत्कृष्ट से संख्यात अचक्षुर्दर्शनी उद्वर्त्तना करते हैं 'एवं जाव लोभकसायी' इसी प्रकार से यावत्-अवधिदर्शनी' आहारसंज्ञोपयुक्त, भयसंज्ञोपयुक्त, मैथुनसंज्ञोपयुक्त, परिग्रहसंज्ञोपयुक्त, स्त्रीवेदक, पुरुषवेदक, नपुंसकवेदक, क्रोधकषायी, मानकषायी, मायाकषायी, लोभकषायी नारक जघन्य से एक, दो या तीन और उत्कृष्ट से संख्यात वहां से उद्वर्त्तना करते हैं, 'सोइंदियोवउत्ता ण उव्वट्टंति, एवं जाव फासिंदियोवउत्ता न उव्वट्टंति' इसी प्रकार से श्रोत्रेन्द्रियोपयुक्त, वहां पर उद्वर्त्तना नहीं करते हैं, चक्षुइन्द्रियोयुक्त, घ्राणेन्द्रियोपयुक्त, रसनेन्द्रियोपयुक्त, स्पर्शनेन्द्रियोंपयुक्त उद्वर्त्तना नहीं करते हैं, क्योंकि इन्द्रियोंको छोड़ कर ही उद्वर्त्तना का सद्भाव कहा गया है। 'जहण्णेणं एक्को वा,

---

"जहण्णेणं एक्कोवा, दो वा, तिन्निवा, उक्कोसेणं संखेज्जा अचक्खुदंसणी उव्वट्टंति" ઓછામાં ઓછા એક, બે અથવા ત્રણ અને વધારેમાં વધારે સંખ્યાત અચક્ષુર્દર્શની નારકો ત્યાંથી ઉદ્વર્ત્તના કરે છે. एवं जाव लोभकसायी" એજ પ્રમાણે અવધિદર્શની, આહારસંજ્ઞોપયુક્ત, ભયસંજ્ઞોપયુક્ત, મૈથુનસંજ્ઞોપયુક્ત, પરિગ્રહસંજ્ઞોપયુક્ત, સ્ત્રીવેદક, પુરુષવેદક, નપુંસકવેદક, ક્રોધકષાયી, માનકષાયી, માયાકષાયી અને લોભકષાયી નારકો પણ ત્યાંથી એક સમયમાં ઓછામાં ઓછા એક, બે અથવા ત્રણ નીકળે છે અને વધારેમાં વધારે સંખ્યાત પણ નીકળે છે. "सोइंदियोवउत्ता ण उव्वट्टंति, एवं जाव फासिंदियोवउत्ता न उव्वट्टंति" શ્રોત્રેન્દ્રિયોપયુક્ત નારકો ત્યાંથી ઉદ્વર્ત્તના કરતા નથી ચક્ષુઇન્દ્રિયોપયુક્ત, ઘ્રાણેન્દ્રિયોપયુક્ત, રસનેન્દ્રિયોપયુક્ત, અને સ્પર્શેન્દ્રિયોપયુક્ત નારકો પણ ત્યાંથી ઉદ્વર્ત્તના કરતા નથી, કારણ કે ઇન્દ્રિયોને છોડીને

तिन्नि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा नोइंदियोवउत्ता उव्वट्टंति' जघन्येन एको वा, द्वौ वा, त्रयो वा, उत्कृष्टेन संख्येया नो इन्द्रियोपयुक्ताः मनोयुक्ता उद्वर्तन्ते, 'मणजोगी न उव्वट्टंति एवं वइजोगी वि' मनोयोगिन स्ततो नोद्वर्तन्ते, एवं-तथैव वचो-योगिनोऽपि ततो नो द्वर्तन्ते, 'जहण्णेणं एक्को ना, दो वा, तिन्नि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा कायजोगी उव्वट्टंति, 'एवं सागारोवउत्ता अणागारोवउत्ता' जघन्येन एको वा, द्वौ वा, त्रयो वा, उत्कृष्टेन संख्येयाः काययोगिनः कार्मणकाययोगिन उद्वर्तन्ते, एवं-तथैव साकारोपयुक्ताः, अनाकारोपयुक्ताः जघन्येन एको वा, द्वौ वा, त्रयो वा, उत्कृष्टेन संख्येया स्तत उद्वर्तन्ते, इति भावः ॥सू० २॥

मूलम्-इमीसे णं भंते! रयणप्पभाए पुढवीए, तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु संखेज्जवित्थडेसु नेरइएसु केवइया नेर-

---

दो वा तिन्नि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा वा नो इंदियोवउत्ता उव्वट्टंति' जघन्य से एक, दो अथवा तीन और उत्कृष्ट से संख्यात नोइन्द्रियोप-युक्त-मनोयुक्त उद्वर्त्तना करते हैं 'मणजोगी, न उव्वट्टंति, एवं वइजोगी वि' मनोयोगी उद्वर्त्तना नहीं करते हैं-वचनयोगी भी वहां से उद्व-र्त्तना नहीं करते हैं। 'जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिन्नि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा कायजोगी उव्वट्टंति, एवं सागारोवउत्ता अणागारोवउत्ता' जघन्य से एक, दो, या तीन और उत्कृष्ट से संख्यात काययोगी-कार्मणकाययोगी-उद्वर्त्तना करते हैं इसी प्रकार से साकारोपयुक्त और अनाकारोपयुक्त जघन्य से एक, दो अथवा तीन और उत्कृष्ट से संख्यात वहां से उद्वर्त्तना करते हैं ॥सू० २॥

---

* ઉદ્વર્ત્તનાનો સદ્ભાવ કહ્યો છે. "जहण्णेणं एक्कोवा, दोवा, तिन्निवा, उक्कोसेणं संखेज्जा वा नोइंदियोवउत्ता उव्वट्टंति" એક સમયમાં ઓછામાં ઓછા એક, બે અથવા ત્રણ અને વધારેમાં વધારે સંખ્યાત નોઇન્દ્રિયોપયુક્ત (મનોયુકત) નારકો ત્યાંથી ઉદ્વર્ત્તના કરે છે "मणजोगी न उव्वट्टंति, एवं वइजोगी वि" મનોયોગી અને વચનયોગી નારકો ઉદ્વર્ત્તના કરતા નથી. "जहण्णेणं एक्कोवा, दो वा, तिन्नि वा, उक्कोसेणं संखिज्जा कायजोगी उव्वट्टंति" ઓછામાં ઓછા એક, બે અથવા ત્રણ અને વધારેમાં વધારે સંખ્યાત કાયયોગી નારકો ત્યાંથી ઉદ્વર્ત્તના કરે છે. "एवं सागारोवउत्ता अणगारोवउत्ता" એજ પ્રમાણે સાકારોપયુકત અને અનાકારોપયુકત નારકો પણ ત્યાંથી ઓછામાં ઓછા એક, બે અથવા ત્રણ અને વધારેમાં વધારે સંખ્યાત ઉદ્વર્ત્તના કરે છે. ॥સૂ૦૨॥

इया पण्णत्ता? केवइया काउलेस्सा जाव केवइया अणागारोवउत्ता पण्णत्ता? केवइया अणंतरोववन्नगा पण्णत्ता१? केवइया परंपरोववन्नगा पण्णत्ता२? केवइया अणंतरोवगाढा पण्णत्ता३? केवइया परंपरोवगाढा पण्णत्ता४? केवइया अणंतराहारा पण्णत्ता५? केवइया परंपराहारा पण्णत्ता६? केवइया अणंतरपज्जत्ता पण्णत्ता७? केवइया परंपरपज्जत्ता पण्णत्ता८? केवइया चरिमा पण्णत्ता९? केवइया अचरिमा पण्णत्ता१०? गोयमा! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससय-सहस्सेसु संखेज्जवित्थडेसु नरएसु संखेज्जा नेरइया पण्णता, संखेज्जा काउलेस्सा पण्णत्ता, एवं जाव संखेज्जा सन्नी पण्णत्ता, असन्नी सिय अत्थि, सिय नत्थि, जइ अत्थि जहण्णेणं एक्को वा, दो वा, तिन्नि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा पण्णत्ता, संखेज्जा भवसिद्धिया पण्णत्ता, एवं जाव संखेज्जा परिग्गहसन्नोवउत्ता पण्णत्ता, इत्थिवेयगा नत्थि, पुरिसवेयगा नत्थि, संखेज्जा नपुंसगवेयगा पण्णत्ता, एवं कोहकसायी वि, माणकसाई जहा असन्नी, एवं जाव लोभकसाई पण्णत्ता, संखेज्जा सोइंदियोवउत्ता पण्णत्ता, एवं जाव फासिंदियोवउत्ता, नो इंदियोवउत्ता जहा असन्नी, संखेज्जा मणजोगी पण्णत्ता, एवं जाव अणागारोवउत्ता, अणंतरोववन्नगा सिय अत्थि, सिय नत्थि, जइ अत्थि जहा असन्नी, संखेज्जा परंपरोववन्नगा पण्णत्ता, एवं जहा अणंतरोववन्नगा तहा अणंतरोगाढगा, अणंतराहारगा अणंतरपज्जत्तगा, परंपरोवगाढगा जाव अचरिमा जहा परंपरोववन्नगा॥सू०३॥

छाया—अस्याः खलु भदन्त! रत्नप्रभायां पृथिव्यां त्रिंशति निरयावास-शतसहस्रेषु संख्येयविस्तृतेषु नरकेषु कियन्तो नैरयिकाः प्रज्ञप्ताः? कियन्तः कापोतलेश्या यावत् कियन्तः अनाकारोपयुक्ताः प्रज्ञप्ताः? कियन्तः अनन्तरोपपन्नकाः प्रज्ञप्ताः१? कियन्तः परम्परोपपन्नकाः प्रज्ञप्ताः२? कियन्तः अनन्तरावगाढाः

प्रज्ञप्ताः३ ? कियन्तः परम्परावगाढाः प्रज्ञप्ताः४ ? कियन्तः अनन्तराहाराःप्रज्ञप्ताः ५? कियन्तः परंपराहाराः प्रज्ञप्ताः ६? कियन्तः अनन्तरपर्याप्तकाः प्रज्ञप्ताः ७? कियन्तः परम्परापर्याप्तकाः प्रज्ञप्ताः ८? कियन्तश्चरमाः प्रज्ञप्ताः ९ ? कियन्तः अचरमाः प्रज्ञप्ताः१० ? गौतम ! अस्याः रत्नप्रभायाः पृथिव्याः त्रिंशति निरयावासशतसहस्रेषु संख्येयविस्तृतेषु नरकेषु संख्येयाः नैरयिकाः प्रज्ञप्ताः, संख्येयाः कापोतलेश्याः प्रज्ञप्ताः, एवं यावत्–संख्येयाः संज्ञिनः प्रज्ञप्ताः, असंज्ञिनः स्यात् सन्ति, स्यात् न सन्ति, ये सन्ति जघन्येन एको वा, द्वौ वा, त्रयो वा, उत्कृष्टेन संख्येयाः प्रज्ञप्ताः, संख्येयाः भवसिद्धिकाः प्रज्ञप्ताः एवं यावत् संख्येयाः परिग्रहसंज्ञोपयुक्ताः प्रज्ञप्ताः, स्त्रीवेदकाः न सन्ति, पुरुषवेदकाः न सन्ति, संख्येया नपुंसकवेदकाः प्रज्ञप्ताः, एवं क्रोधकषायिणोऽपि, मानकषायिणो यथा असंज्ञिनः, एवं यावत् लोभकषायिणः, प्रज्ञप्ताः संख्येया श्रोत्रेन्द्रियोपयुक्ताः प्रज्ञप्ताः, एवं यावत् स्पर्शनेन्द्रियोपयुक्ताः, नो इन्द्रियोपयुक्ताः यथा असंज्ञिनः, संख्येयाः मनोयोगिनः प्रज्ञप्ताः, एवं यावत्–अनाकारोपयुक्ताः, अनन्तरोपपन्नकाः, स्यात् सन्ति, स्यात् न सन्ति, ये सन्ति यथा असंज्ञिनः, संख्येयाः परम्परोपपन्नकाः, एवं यथा अनन्तरोपपन्नका स्तथा अनन्तरावगाढकाः, अनन्तराहारकाः, अनन्तरपर्याप्तकाः, परम्परावगाढका यावत् अचरमा यथा परम्परोपपन्नकाः ॥सू० ३॥

टीका—तदेवं रत्नप्रभानैरयिकाणामुत्पत्तौ उद्वर्तनायांच परिमाणं प्ररूप्य तेषामेव सत्तायां परिमाणं प्ररूपयितुमाह–'इमीसे णं' इत्यादि। 'इमी से णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु संखेज्जवित्थडेसु

'इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए' इत्यादि।

टीकार्थ—रत्नप्रभा के नैरयिकों के उत्पत्ति में और उद्वर्त्तना में परिमाण की प्ररूपणा करके अब सूत्रकार इस सूत्र द्वारा उन्हीं के सत्ता में परिमाण की प्ररूपणा करते हैं–इसमें गौतम ने प्रभु से ऐसा पूछा है कि 'इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससय-

---

"इमीसेणं भंते ! रयणप्पभाए" इत्यादि—

ટીકાર્થ–રત્નપ્રભા પૃથ્વીના સંખ્યાત યોજનના વિસ્તારવાળા નરકાવાસોમાં એક સમયમાં કેટલા નારકો ઉત્પન્ન થાય છે અને ત્યાંથી એક સમયમાં કેટલા નારકો ઉદ્વર્ત્તના કરે છે, તેની પ્રરૂપણા કરીને હવે સૂત્રકાર ત્યાં કેટલા નારકો રહેલા છે, તેની પ્રરૂપણા કરે છે. આ વિષયને અનુલક્ષીને ગૌતમ સ્વામી મહાવીર પ્રભુને એવો પ્રશ્ન પૂછે છે કે–"इमीसेणं भंते ! रयणप्पभाए

नरएसु केवइया नेरइया पन्नत्ता ?' गौतमः पृच्छति–हे भदन्त ! अस्यां खलु रत्नप्रभायां पृथिव्यां त्रिंशति निरयावासशतसहस्रेषु–त्रिंशल्लक्षनरकावासेषु संख्येयविस्तृतेषु नरकेषु कियन्तो नैरयिकाः प्रज्ञप्ताः ? 'केवइया काउलेस्सा जाव केवइया अणागारोवउत्ता पण्णत्ता ?' कियन्तः कापोतलेश्यावन्तो यावत्-कृष्णपाक्षिका इत्यारभ्य कियन्तः अनाकारोपयुक्ताः प्रज्ञप्ताः ? इति पर्यन्ताः पूर्वोक्ताः एकोनचत्वारिंशद्भेदाः संग्राह्याः 'केवइया अणंतरोववन्नगा पण्णत्ता१ ?' कियन्तः अनन्तरोपपन्नकाः–प्रथमसमयोत्पन्नाः प्रज्ञप्ताः ? 'केवइया परंपरोववन्नगा पण्णत्ता२ ?' कियन्तः परम्परोपपन्नकाः उत्पत्तिसमयापेक्षया द्व्यादिसमयेषु वर्तमानाः प्रज्ञप्ताः ? 'केवइया अणंतरोवगाढा पण्णत्ता३ ?' कियन्तः अनन्तरावगाढाः

सहस्सेसु संखेज्जवित्थडेसु नरएसु केवइया नेरइया पण्णत्ता' हे भदन्त ! इस रत्नप्रभापृथिवी में ३० लाख नरकावास कहे गये है और उनमें से जो नरकावास संख्यात योजन के विस्तारवाले कहे गये हैं, सो उनमें कितने नारक कहे गये हैं ? 'केवइया काउलेस्सा जाव केवइया अणागारोवउत्ता पण्णत्ता' कितने कापोतलेश्या वाले कहे गये हैं ? यावत् कृष्णपाक्षिक से लेकर कितने अनाकारोपयुक्त नारक कहे गए हैं ? इस प्रकार से अनाकारोपयुक्त तक जो २९ भेद कहे गए हैं उन सबको यहां प्रश्न के रूप उद्भावित करना चाहिए। 'केवइया अणंतरोववन्नगा पण्णत्ता' कितने अनन्तरोपपन्नक-प्रथम समय में उत्पन्न हुए नारक कहे गये हैं ? 'केवइया परंपरोववन्नगा पण्णत्ता' कितने परम्परोपपन्नक-उत्पत्ति-समय की अपेक्षा से दो आदि समयों में वर्तमान नारक कहे गये हैं ?

पुढवीए तीसाए निरयवाससयसहस्सेसु संखेज्जवित्थडेसु नरएसु केवइया नेरइया पण्णत्ता ?" હે ભગવન્ ! રત્નપ્રભા પૃથ્વીના ૩૦ લાખ નરકાવાસોમાંના જે સંખ્યાત યોજનના વિસ્તારવાળા નરકાવાસો છે તેમાં કેટલા નારકો કહ્યા છે ? "केवइया काउलेस्सा जाव केवइया अणागारोवउत्ता पण्णत्ता ?' કેટલા કાપોતલેશ્યાવાળા નારકો કહ્યા છે ? અને કૃષ્ણપાક્ષિકથી લઈને અનાકારોપયુક્ત પર્યન્તના નારકો કેટલા કહ્યા છે ? (અનાકારોપયુક્ત સુધીના ૩૯ ભેદોને અનુલક્ષીને અહીં આ પ્રકારના પ્રશ્નો સમજી લેવા જોઈએ.) "केवइया अणंतरोववन्नगा पण्णत्ता ?" કેટલા અનન્તરોપપન્નક (પ્રથમ સમયમાં ઉત્પન્ન થયેલા) નારકો કહ્યા છે ? "केवइया परंपरोववन्नगा पण्णत्ता ?" કેટલા પરમ્પરોપપન્નક (ઉત્પત્તિ સમયની અપેક્ષાએ બે આદિ સમયોમાં વર્તમાન) નારકો કહ્યા છે ? "केवइया अणंतरोवगाढा पण्णत्ता ?" કેટલા અનન્તરાવગાઢ

विवक्षितक्षेत्रे प्रथमसमयावगाढाः प्रज्ञप्ताः ? 'केवइया परंपरोवगाढा पण्णत्ता ४?' कियन्तः परम्परावगाढाः विवक्षितक्षेत्रे परम्पराद्वितीयादिकः समयोऽवगाढे येषां ते परम्परावगाढाः प्रज्ञप्ताः ? 'केवइया अणंतराहारा पण्णत्ता ५?' कियन्तः अनन्तराहाराः-प्रथमसमयाहाराः, प्रज्ञप्ताः ? 'केवइया परंपराहारा पण्णत्ता ६?' कियन्तः परम्पराहाराः-द्वयादिसमयाहाराः प्रज्ञप्ताः ? 'केवइया अणंतरपज्जत्ता पण्णत्ता७?' कियन्तः अनन्तरपर्याप्तकाः-प्रथमसमयपर्याप्तकाः प्रज्ञप्ताः ? 'केवइया परंपरपज्जता८?' कियन्तः परम्परापर्याप्तकाः-द्व्यादिसमयपर्याप्तकाः प्रज्ञप्ताः ? केवइया चरिमा पण्णत्ता९ ?' कियन्तश्चरमाः चरमो नैरयिकभवेषु स एव भवो येषां ते चरमाः, वैरयिकभवस्य वा चरम समये वर्तमानाश्चरमाः प्रज्ञप्ताः ? 'केवइया अचरिमा पण्णत्ता१०?' कियन्तः

'केवइया अणंतरोवगाढा पण्णत्ता' कितने अनन्तरावगाढ-विवक्षितक्षेत्र में प्रथम समय में अवगाढ-मौजूद-कहे गये हैं ? 'केवइया परंपरोवगाढा' कितने परंपरावगाढ-विवक्षित क्षेत्र में परम्परारूप से जिनके अवगाढ में द्वितीयादिक समय है-ऐसे कहे गये हैं ? 'केवइया अणंतराहारा पण्णत्ता' कितने अनन्तराहार-प्रथम समय में है आहार जिन्हों का ऐसे कहे गए हैं ? 'केवइया परंपराहारा पण्णत्ता' कितने परम्पराहार-दो आदि समयों में आहार वाले कहे गए हैं ? 'केवइया अणंतरपज्जत्ता पण्णत्ता' कितने अनन्तर पर्याप्तक-प्रथम समय में पर्याप्तक हुए-कहे गए हैं ? 'केवइया परंपरपज्जत्ता' कितने परंपरापर्याप्तक-द्वयादि समयों में पर्याप्तक हुये कहे गये हैं ? 'केवइया चरिमा पण्णत्ता' कितने चरम-नैरयिक भवों में वही भव जिनका अन्तिम हैं ऐसे अथवा नैरयिक भव

(વિવક્ષિત ક્ષેત્રમાં પ્રથમ સમયમાં અવગાઢ-ભોજૂદ) નારકો કહ્યા છે ? "केवइया परंपरोवगाढा ?" કેટલા પરમ્પરાવગાઢ (વિવક્ષિત ક્ષેત્રમાં પરંપરા રૂપે જેમના અવગાઢમાં દ્વિતીય આદિક સમયવાળા) નારકો છે ? "केवइया अणंतराहारा पण्णत्ता ?" કેટલા અનન્તાહાર (પ્રથમ સમયમાં આહાર લેનારા) નારકો કહ્યા છે ? "केवइया परंपराहारा पण्णत्ता ?" કેટલા પરમ્પરાહાર (બે આદિ સમયોમાં આહાર લેનારા) નારકો કહ્યા છે ? 'केवइया अणंतरपज्जत्ता पण्णत्ता ?" કેટલા પ્રથમ સમયમાં પર્યાપ્તક (અનન્તર પર્યાપ્ત) નારકો કહ્યા છે ? "केवइया परंपरपज्जत्ता ?" કેટલા પરમ્પરા પર્યાપ્તક (બે આદિ સમયોમાં પર્યાપ્તક થયેલા) નારકો કહ્યા છે ? "केवइया चरिमा पण्णत्ता ?" કેટલા ચરમ (નારક ભવોમાં એજ ભવ જેનો અન્તિમ છે આ) નારકો છે ? "केवइया अचरिमा पण्णत्ता" કેટલા અચરિમ (પૂર્વોક્ત ચરમોથી ભિન્ન) નારકો કહ્યા છે?

अचरमाः-पूर्वोक्तचरमभिन्नाः प्रज्ञप्ताः ? भगवानाह-'गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु संखेज्जवित्थडेसु नरएसु संखेज्जा नेरइया पण्णत्ता, संखेज्जा काउलेस्सा पण्णत्ता' हे गौतम ! अस्यां रत्नप्रभायां पृथिव्यां त्रिंशति निरयावासशतसहस्रेषु त्रिंशल्लक्षनरकावासेषु संख्येयविस्तृतेषु नरकेषु संख्येया नैरयिकाः प्रज्ञप्ताः, संख्येयाः कापोतलेश्यावन्तः प्रज्ञप्ताः, 'एवं जाव संखेज्जा सन्नी पण्णत्ता' एवं-तथैव यावत् संख्येयाः कृष्णपाक्षिकाः, संख्येयाः, शुक्लपाक्षिकाः, संख्येयाः संज्ञिनः प्रज्ञप्ताः, 'असन्नी सिय अत्थि, सिय नत्थि' असंज्ञिनः स्यात् कदाचित् सन्ति, स्यात्-कदाचित् न सन्ति, 'जइ अत्थि जहण्णेणं एक्को वा, दो वा, तिन्नि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा पण्णत्ता' ये

के चरम समय में वर्तमान ऐसे कहे गए हैं ? ? 'केवइया अचरिमा पण्णत्ता' कितने अचरिम-पूर्वोक्त चरमों से भिन्न कहे गए हैं ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-'गोयमा' हे गौतम ! 'इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु संखेज्जवित्थडेसु नरएसु संखेज्जा नेरइया पण्णत्ता, संखेज्जा काउलेस्सा पण्णत्ता' इस रत्नप्रभा पृथिवी में जो ३० लाख नरकावास कहे गए हैं, और उनमें जो संख्यात योजन के विस्तार वाले नरकावास कहे गये हैं-उनमें संख्यात नैरयिक जीवों की सत्ता कही गई है तथा कापोतलेश्यावाले नैरयिक भी संख्यात ही कहे गये हैं। 'एवं जाव संखेज्जा सन्नी पण्णत्ता' इसी प्रकार से यावत् संख्यात ही कृष्णपाक्षिक नारक कहे गए हैं, और संख्यात ही शुक्लपाक्षिक नारक कहे गए हैं, तथा संख्यात ही संज्ञी नारक कहे गए हैं। 'असन्नी सिय अत्थि, सिय नत्थि' असंज्ञी नारक वहां कभी होते भी हैं और नहीं भी होते हैं 'जइ अत्थि जहण्णेणं एक्को वा दो वा, तिन्नि

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-"गोयमा !" હે ગૌતમ ! "इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु संखेज्जवित्थडेसु नरएसु संखेज्जा नेरइया पण्णत्ता, संखेज्जा काउलेस्सा पण्णत्ता" આ રત્નપ્રભા પૃથ્વીના ૩૦ લાખ નરકાવાસોમાંના સંખ્યાત યોજનના વિસ્તારવાળા જે નરકાવાસો છે તેમાં સંખ્યાત નારકોનું અસ્તિત્વ કહ્યું છે, તથા કાપોતલેશ્યાવાળા નારકો પણ સંખ્યાત જ કહ્યા છે. "एवं जाव संखेज्जा सन्नी पण्णत्ता' એજ પ્રમાણે કૃષ્ણપાક્ષિક નારકો પણ સંખ્યાત જ કહ્યા છે. શુકલપાક્ષિક નારકો પણ સંખ્યાત જ કહ્યા છે અને સંજ્ઞી નારકો પણ સંખ્યાત જ કહ્યા છે. "असन्नी सिय अत्थि, सिय नत्थि" અસંજ્ઞી નારકો કયારેક ત્યાં હોય છે, અને

असंज्ञिनो यदि सन्ति ते जघन्येन एको वा, द्वौ वा, त्रयो वा, उत्कृष्टेन संख्येयाः प्रज्ञप्ताः, 'असंज्ञिभ्य उद्वृत्य ये नैरयिकत्वेनोत्पन्नास्ते अपर्याप्तकावस्थायाम्-संज्ञिनः भूतपूर्वत्वात्, ते चाल्पा एव सन्ति इत्यभिप्रायेण 'सिय अत्थि' इत्याद्युक्तम्, 'संखेज्जा भवसिद्धिया पण्णत्ता, एवं जाव संखेज्जा परिग्गहसंनोवउत्ता पण्णत्ता' संख्येयाः भवसिद्धिकाः प्रज्ञप्ताः, एवं तथैव, यावत्-संख्येयाः अभवसिद्धिकाः, संख्येयाः आभिनिबोधिकज्ञानिनः, संख्येयाः, श्रुतज्ञानिनः, संख्येयाः अवधिज्ञानिनः, संख्येयाः मत्यज्ञानिनः, संख्येयाः श्रुताज्ञानिनः, संख्येया विभङ्गज्ञानिनः, संख्येयाश्चक्षुर्दर्शनिनः, संख्येयाः अचक्षुर्दर्शनिनः, संख्येया अवधिज्ञानिनः, संख्येया आहारसंज्ञोपयुक्ताः, संख्येया भयसंज्ञोपयुक्ताः, संख्येयाः मैथुनसंज्ञोपयुक्ताः, परि-

---

वा, उक्कोसेणं संखेज्जा पण्णत्ता' यदि होते हैं तो वे कम से कम या तो एक या दो या तीन होते हैं और ज्यादा से ज्यादा संख्यात होते हैं। असंज्ञियों में से मरकर जो नैरयिकरूप से उत्पन्न होते हैं, वे अपर्याप्तक अवस्था में भूतपूर्व की अपेक्षा से असंज्ञी कहे गए हैं, ऐसे जीव अल्प ही होते हैं इसी अभिप्राय को लेकर "सिय अत्थि" आदि सूत्र कहा गया है। 'संखेज्जा भवसिद्धिया पण्णत्ता' भवसिद्धिक वहां संख्यात कहे गये हैं यावत् अभवसिद्धिक भी संख्यात ही कहे गये हैं आभिनिबोधिकज्ञानी भी संख्यात ही कहे गये हैं, श्रुतज्ञानी भी संख्यात ही कहे गये हैं, अवधिज्ञानी भी संख्यात ही कहे गये हैं, मतिअज्ञानी, श्रुतअज्ञानी, विभंगज्ञानी, चक्षुर्दर्शनी, अचक्षुर्दर्शनी, अवधिदर्शनी, आहारसंज्ञोपयुक्त, भयसंज्ञोपयुक्त, मैथुनसंज्ञोपयुक्त और परिग्रह संज्ञो

ક્યારેક નથી હોતા. "जइ अत्थि जहण्णेणं एक्कोवा, दोवा, तिन्नि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा पण्णत्ता" જો અસંજ્ઞી નારકો ત્યાં હોય છે, તો ઓછામાં ઓછા એક, બે અથવા ત્રણ હોય છે અને વધારેમાં વધારે સંખ્યાત હોય છે અસંજ્ઞીઓમાંથી મરીને જેઓ નારક રૂપે ઉત્પન્ન થાય છે, તેમને અપર્યાપ્તક અવસ્થામાં ભૂતપૂર્વની અપેક્ષાએ અસંજ્ઞી કહ્યા છે; એવાં જીવો અલ્પ હોય છે, તેથી જ "सिय अत्थि सिय नत्थि" આ પ્રકારનું કથન કરવામાં આવ્યું છે. 'संखेज्जा भवसिद्धिया पण्णत्ता" ત્યાં સંખ્યાત ભવસિદ્ધિક નારકો કહ્યા છે અને અભવસિદ્ધિક પણ સંખ્યાત જ કહ્યા છે, આભિનિબોધિક જ્ઞાની પણ સંખ્યાત જ કહ્યા છે, શ્રુતજ્ઞાની, પણ સંખ્યાત જ કહ્યા છે, અવધિજ્ઞાની પણ સંખ્યાત જ કહ્યા છે, મત્યજ્ઞાની, શ્રુતાજ્ઞાની, વિભંગજ્ઞાની, ચક્ષુર્દર્શની, અચક્ષુર્દર્શની, અવધિદર્શની, આહારસંજ્ઞોપયુકત, ભયસંજ્ઞોપયુકત,

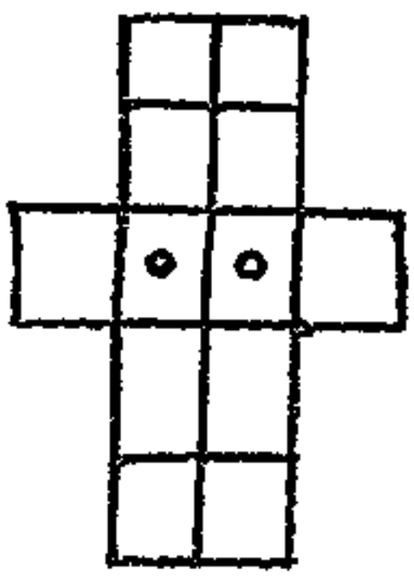
जघन्यपदे षट्
प्रदेशाः आकारो यथा

१



उत्कृष्टपदे द्वादश स्पर्शक
प्रदेशाः आकारो यथा

२



अधस्तनत्रिधा ३



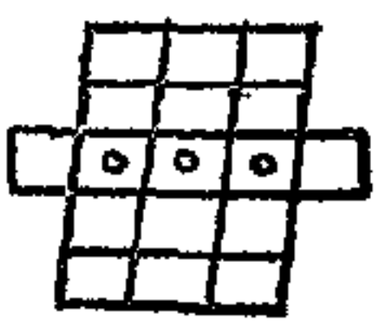
अथवा
उपरितनत्रिधा

४



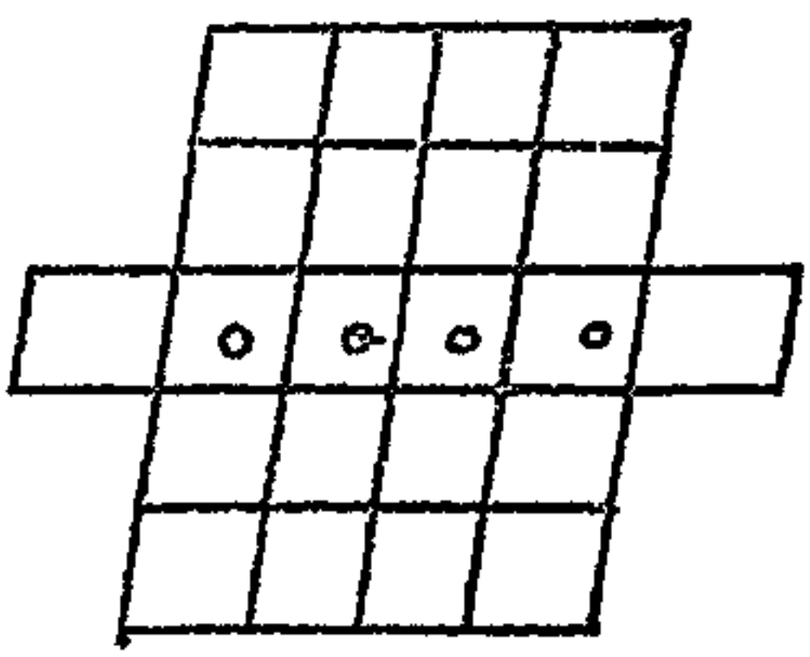
सप्तदशस्पर्शकप्रदेशाः

५



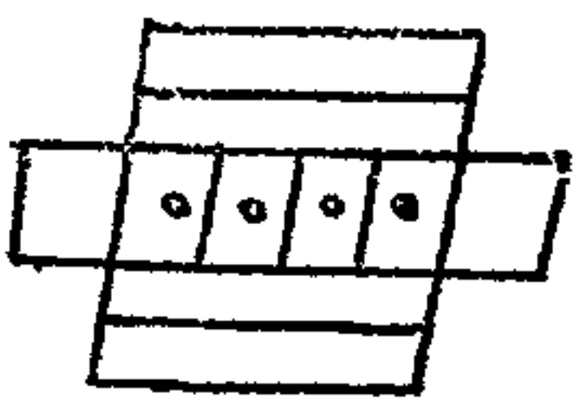
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
४	६	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०	२२
७	१२	१७	२२	२७	३२	३७	४२	४७	५२

६



जघन्यपदमें पुद्गलास्तिकायके चारप्रदेश धर्मास्तिकाय के दश प्रदेशों द्वारा जो स्पृष्ट होते हैं उनका कोष्टक

७



उत्कृष्ट पद में पुद्गलास्तिकायके चार प्रदेश धर्मास्तिकाय के २२ प्रदेशों द्वारा स्पृष्ट होते हैं उनका कोष्टक

८

ग्रहसंज्ञोपयुक्ताः, प्रज्ञप्ताः, 'इत्थिवेयगा नत्थि, पुरिसवेयगा नत्थि, संखेज्जा नपुंसगवेयगा पण्णत्ता, स्त्रीवेदका न सन्ति, पुरुषवेदका न सन्ति, किन्तु नपुंसकवेदकाः प्रज्ञप्ताः, 'एवं कोहकसाई वि, माणकसाई जहा असन्नी, एवं जहा लोभकसाई' एवं तथैव क्रोधकषायिणोऽपि संख्येयाः प्रज्ञप्ताः, मानकषायिणो यथा असंज्ञिनः स्यात् सन्ति, स्यात् न सन्ति इति प्रतिपादितास्तथा प्रतिपत्तव्याः, एवं-तथैव, यावत् संख्येया मानकषायिणः संख्येयाः मायाकषायिणः, संख्येयाः लोभकषायिणः प्रज्ञप्ताः, 'संखेज्जा सो इंदियोवउत्ता पण्णत्ता, एवं जाव फासिंदियोवउत्ता नो इंदियोवउत्ता जहा असन्नी' संख्येयाः श्रोत्रेन्द्रियोपयुक्ताः प्रज्ञप्ताः, एवं-तथैव, यावत्-संख्येयाश्चक्षुरिन्द्रियोपयुक्ताः, संख्येया घ्राणेन्द्रियोपयुक्ताः, संख्येया रसनेन्द्रियोपयुक्ताः, संख्येयाः

पयुक्त थे सब वहां संख्यात संख्यात ही कहे गये हैं 'इत्थिवेयगा नत्थि, पुरिसवेयगा नत्थि, संखेज्जा नपुंसगवेयगा पण्णत्ता' स्त्रीवेदक पुरुषवेदक वहां नहीं होते हैं किन्तु नपुंसकवेदक ही वहां होते हैं 'एवं कोहकसाई वि, माणकसाई जहा असन्नी, एवं जहा लोभकसाई' क्रोधकषायी भी वहां संख्यात ही होते हैं असंज्ञी जैसे वहां होते भी हैं और नहीं भी होते हैं ऐसा कहा गया है, उसी प्रकार से मानकषायी भी वहां प्रतिपादित हुए हैं। ये यहां संख्यात कहे गये हैं, मायाकषायी भी वहां संख्यात कहे गये हैं और लोभकषायी भी संख्यात ही कहे गये हैं। 'संखेज्जा सोइंदियोवउत्ता पण्णत्ता, एवं जाव फासिंदियोवउत्ता, नो इंन्दियोवउत्ता जहा असन्नी' श्रोत्रेन्द्रियोपयुक्त भी वहां संख्यात ही कहे गये हैं, इसी प्रकार चक्षुइन्द्रियोपयुक्त भी संख्यात, घ्राणेन्द्रियोप-

---

મૈથુનસંજ્ઞોપયુકત અને પરિગ્રહસંજ્ઞોપયુકત નારકો પણ ત્યાં સંખ્યાત, સંખ્યાત જ કહ્યા છે. "इत्थिवेयगा नत्थि, पुरिसवेयगा नत्थि, संखेज्जा नपुंसगवेयगा पण्णत्ता" ત્યાં સ્ત્રીવેદકો નથી, પુરુષવેદકો પણ નથી, પરન્તુ સંખ્યાત નપુંસકવેદકો જ હોય છે. "एवं कोहकसाई वि, माणकसाई जहा असन्नी, एवं जहा लोभकसाई" ત્યાં ક્રોધકષાયી નારકો સંખ્યાત હોય છે, અસંજ્ઞી નારકોની જેમ માનકષાયી નારકો ત્યાં હોય છે પણ ખરાં અને નથી પણ હોતા જો માનકષાયી નારકોનો ત્યાં સદ્ભાવ હોય તો તેઓ ત્યાં સંખ્યાત હોય છે, એજ પ્રમાણે ત્યાં માયાકષાયી નારકો પણ સંખ્યાત જ કહ્યા છે અને લોભકષાયી નારકો પણ સંખ્યાત કહ્યા છે. "संखेज्जा सोइंदियोवउत्ता पण्णत्ता, एवं जाव फासिंदियोवउत्ता, नोइंदियोवउत्ता जहा असन्नी" શ્રોત્રેન્દ્રિયોપયુકત નારકો પણ ત્યાં સંખ્યાત જ કહ્યા છે, એજ પ્રમાણે ચક્ષુઇન્દ્રિયોપ-

स्पर्शनेन्द्रियोपयुक्ताः प्रज्ञप्ताः, नो इन्द्रियोपयुक्ताः यथा असंज्ञिनः स्यात् सन्ति स्यात् न सन्ति इत्युक्ता स्तथा वक्तव्याः, 'संखेज्जा मणजोगी पण्णत्ता, एवं जाव अणागारोवउत्ता' संख्येयाः मनोयोगिनः प्रज्ञप्ताः, एवं-तथैव, यावत्-संख्येयाः वचोयोगिनः, संख्येयाः काययोगिनः, संख्येयाः साकारोपयुक्ताः, संख्येया अनाकारोपयुक्ताः प्रज्ञप्ताः। 'अणंतरोववन्नगा सिय अत्थि, सिय नत्थि' अनन्तरोपपन्नकाः स्यात् सन्ति, स्यात् न सन्ति, 'जइ अत्थि जहा असन्नी' तत्र ये अनन्तरोपपन्नकाः सन्ति ते यथा असंज्ञिनः प्रतिपादितस्तथै। प्रतिपत्तव्याः, संखेज्जा परंपरोववन्नगा पण्णत्ता' संख्येयाः परम्परोपपन्नकाः प्रज्ञप्ताः, 'एवं जहा अणंतरोववन्नगा तहा अणंतरोवगाढगा, अणंतराहारगा, अणंतरपज्जत्तगा परंपरोवगा-

---

युक्त भी संख्यात, रसनेन्द्रियोपयुक्त भी संख्यात और स्पर्शनेन्द्रियोपयुक्त भी संख्यात ही कहे गये हैं। नो इन्द्रियोपयुक्त असंज्ञियों के जैसे हैं भी और नहीं भी हैं, ऐसे कहे गये हैं 'संखेज्जा मणजोगी पण्णत्ता, एवं जाव अणागारोवउत्ता' मनोयोगी संख्यात, वचोयोगी संख्यात, काययोगी संख्यात, साकारोपयुक्त संख्यात और अनाकारोपयुक्त भी संख्यात ही कहे गये हैं। 'अणंतरोववन्नगा सिय अत्थि, सिय नत्थि' अनन्तरोपपन्नक वहां हैं भी और नहीं भी हैं 'जइ अत्थि जहा असन्नी' यदि ये वहां हैं तो असंज्ञियों के जैसे हैं—अर्थात् जिस प्रकार से असंज्ञी कहे गये हैं—वैसे कहे गये हैं 'संखेज्जा परंपरोववन्नगा पण्णत्ता' परम्परोपपन्नक भी संख्यात ही कहे गये हैं 'एवं जहा अणंतरोववन्नगा तहा अणंतरोवगाढगा, अणंतराहारगा, अणंतरपज्जत्त-

---

-યુકત પણું સંખ્યાત, ઘ્રાણેન્દ્રિયોપયુકત પણ સંખ્યાત, રસનેન્દ્રિયોપયુકત પણ સંખ્યાત અને સ્પર્શેન્દ્રિયોપયુકત પણ સંખ્યાત કહ્યા છે. ત્યાં નોઇન્દ્રિયોપયુકત નારકો અસંજ્ઞી નારકોની જેમ હોય છે પણ ખરાં અને નથી પણ હોતા. "संखेज्जा मणजोगी पण्णत्ता, एवं जाव अणागारोवउत्ता" ત્યાં મનોયોગી સંખ્યાત, વચનયોગી સંખ્યાત, કાયયોગી સંખ્યાત, સાકારોપયુકત સંખ્યાત અને અનાકારોપયુકત પણ સંખ્યાત કહ્યા છે. "अणंतरोववन्नगा सिय अत्थि, सिय नत्थि" અનન્તરોપપન્નક નારકો ત્યાં હોય છે પણ ખરાં અને નથી પણ હોતા. "जइ अत्थि जहा असन्नी" જો ત્યાં તેમનો સદ્ભાવ હોય છે, તો અસંજ્ઞીઓની જેમ તેઓ સંખ્યાત હોય છે "संखेज्जा परंपरोववन्नगा पण्णत्ता" ત્યાં પરંપરોપપન્નક નારકો પણ સંખ્યાત જ કહ્યા છે. "एवं जहा अणंतरोववन्नगा तहा अणंतरोवगाढगा, अणंतराहारगा, अणंतरपज्जत्तगा,

द्धगा जाव अचरिमा जहा परंपरोववन्नगा' एव-तथैव, यथा अनन्तरोपपन्नकाः प्रतिपादितास्तथा अनन्तरावगाढाः, अनन्तराहारकाः, अनन्तरपर्याप्तकाः परम्परावगाढकाः यावत्-परम्पराहारकाः, परम्परा पर्याप्तकाः, चरमाः, अचरमाः यथा परम्परोपपन्नकाः प्रतिपादिता स्तथा प्रतिपत्तव्याः तथा च मानमायालोभकषायोपयुक्तानां नो इन्द्रियोपयुक्तानामनन्तरोपपन्नकानामनन्तरावगाढानामनन्तराहारकाणामनन्तरपर्याप्तकानां च कादाचित्कत्वात् "सिय अत्थि" 'स्यात् सन्ति' इत्यादि वक्तव्यम्, शेषाणां तु बहुत्वात् संख्येया इति वक्तव्यमितिफलितम् ॥सू० ३॥

मूलम्-"इमीसे णं भंते! रयणप्पभाए पुढवीए, तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु असंखेज्जवित्थडेसु एगसमएणं केव-

---

त्तगा, परंपरोवगाढगा जाव अचरिमा जहा परंपरोववन्नगा' इस प्रकार जैसे अनन्तरोपपन्नक कहे गये हैं उसी प्रकार से अनन्तरावगाढ, अनन्ताराहारक, अनन्तरपर्याप्तक कहे गये हैं, परम्परावगाढ यावत् परम्पराहारक, परम्परापर्याप्तक, चरम और अचरम ये सब जैसे परम्परोपपन्नक कहे गये हैं वैसे ही जानना चाहिये तथा च-मान, माया, लोभ, इन कषायों से उपयुक्त तथा नोइन्द्रियोपयुक्त, अनन्तरोपपन्नक, अनन्तरावगाढ, अनन्ताराहारक अनन्तरपर्याप्तक ये सब कादाचित्क होते हैं-कभी होते भी हैं और कभी नहीं भी होते हैं-इस कारण इनमें 'स्यात् सन्ति' इत्यादि पाठ का उच्चारण करना चाहिये और बाकी जो बचे हैं उनमें बहुत्व होने से 'संख्येया' ऐसा कहना चाहिये यहाँ तक संख्यात योजन विस्तारवाले नरकावासों की वक्तव्यता कही गई है ॥सू० ३॥

परंपरोवगाढगा जाव अचरिमा जहा परपरोववन्नगा" અનન્તરોપપન્નક નારકોના જેવું જ કથન અનન્તરાવગાઢ, અનન્તરાહારક અને અનન્તરપર્યાપ્તકના વિષયમાં સમજવું પરમ્પરોપપન્નકના જેવું જ કથન પરમ્પરાવગાઢ, પરમ્પરાહારક, પરમ્પરાપર્યાપ્તક, ચરમ અને અચરમ નારકો વિષે સમજવું એટલે કે માન, માયા, લોભ આ કષાયોથી ઉપયુકત તથા નોઈન્દ્રિયોપયુકત, અનન્તરોપપન્નક, અનન્તરાવગાઢ, અનન્તરાહારક, અને અનન્તર પર્યાપ્તક નારકોનો ત્યાં કયારેક સદ્ભાવ હોય છે અને કયારેક સદ્ભાવ હોતો નથી તે કારણે તેમની સંખ્યા બતાવતી વખતે "स्यात् सन्ति" ઈત્યાદિ "કયારેક હોય છે અને કયારેક નથી હોતા" એ પ્રકારનું કથન થવું જોઇએ બાકીના નારકોની સંખ્યા ઘણી હોવાને કારણે તેમને "संख्येया" સંખ્યાત કહેવા જોઇએ સંખ્યાત યોજનના વિસ્તારવાળા નરકાવાસોના નારકોનું કથન અહીં પૂરું થાય છે. ॥સૂ૦ ૩॥

इया नेरइया उववज्जंति, जाव केवइया अणागारोवउत्ता उववज्जंति ? गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए, तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु असंखेज्जवित्थडेसु नरएसु एगसमएणं जहण्णेणं एक्को वा, दो वा, तिन्नि वा, उक्कोसेणं असंखेज्जा नेरइया उववज्जंति, एवं जहेव संखेज्जवित्थडेसु तिन्नि गमगा तहा असंखेज्जवित्थडेसु वि तिन्नि गमगा, नवरं असंखेज्जा भाणियव्वा, सेसं तं चेव जाव असंखेज्जा अचरिमा पण्णत्ता, नाणत्तं लेस्सासु, लेसाओ जहा पढमसए नवरं संखेज्जवित्थडेसु वि, असंखेज्जवित्थडेसु वि, ओहिनाणी, ओहिदंसणी य संखेज्जा उव्वट्टा वेयव्वा, सेसं तं चेव ॥सू० ४॥

छाया—अस्याः खलु भदन्त ! रत्नप्रभायाः पृथिव्याः त्रिंशति निरयावासशतसहस्रेषु असंख्येयविस्तृतेषु एकसमयेन कियन्तो नैरयिका उपपद्यन्ते, यावत् कियन्तः अनाकारोपयुक्ता उपपद्यन्ते ? गौतम ! अस्याः रत्नप्रभायाः पृथिव्याः त्रिंशति निरयावासशतसहस्रेषु असंख्येयविस्तृतेषु नरकेषु एकसमयेन जघन्येन एको वा, द्वौ वा, त्रयो वा, उत्कृष्टेन असंख्येया नैरयिका उपपद्यन्ते, एवं यथैव संख्येयविस्तृतेषु त्रीणि गमकानि तथा असंख्येयविस्तृतेषु अपि त्रीणि गमकानि, नवरम् असंख्येया भणितव्याः, शेषं तदेव यावत्—असंख्येयाः अचरिमाः प्रज्ञप्ताः, नानात्वं लेश्यासु, लेश्या यथा प्रथमशतके, नवरं संख्येयविस्तृतेष्वपि, असंख्येयविस्तृतेष्वपि अवधिज्ञानिनः, अवधिदर्शनिनश्च संख्येया उद्वर्तयितव्याः, शेषं तदेव ॥सू० ४॥

टीका—तदेवं संख्यातविस्तृतनैरयिकावासनारकवक्तव्यतां प्रतिपाद्य अथ तद्विपरीतासंख्येयविस्तृतनैरयिकावासनारकवक्तव्यतां प्ररूपयितुमाह—'इमीसे

'इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए' इत्यादि

टीकार्थ—संख्यात योजन विस्तार वाले नैरयिकावासों के नारकों की वक्तव्यता का प्रतिपादन करके अब सूत्रकार उनसे भिन्न असं-

---

"इमीसेणं भंते ! रयणप्पभाए" ઈત્યાદિ—

ટીકાર્થ—સંખ્યાત યોજનના વિસ્તારવાળા નરકાવાસોના નારકોની વક્તવ્યતાનું પ્રતિપાદન કરીને હવે સૂત્રકાર તેમના કરતાં ભિન્ન એવાં

णं भंते' इत्यादि, 'इमीसे णं भंते! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु असंखेज्जवित्थडेसु नरएसु एगसमएणं केवइया नेरइया उववज्जंति, जाव केवइया अणागारोवउत्ता उववज्जंति?' गौतमः पृच्छति-हे भदन्त! अस्यां खलु रत्नप्रभायां पृथिव्यां त्रिंशति निरयावासशतसहस्रेषु-त्रिंशल्लक्षनरकावासेषु असंख्येयविस्तृतेषु नरकेषु एकसमयेन कियन्तो नैरयिका उपपद्यन्ते? यावत्-कियन्तः कापोतलेश्यावन्तः इत्यारभ्य कियन्तः अनाकारोपयुक्ता इतिपर्यन्ता उपपद्यन्ते?-भगवानाह-'गोयमा! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु असंखेज्जवित्थडेसु नरएसु, एगसमएणं जहण्णेणं एको वा,

---

ख्यातयोजन विस्तार वाले नैरयिकावासों के नैरयिकों की वक्तव्यता का कथन इस सूत्र द्वारा कर रहे हैं-इसमें गौतमने प्रभु से ऐसा पूछा है-'इमीसे णं भंते! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु असंखेज्जवित्थडेसु नरएसु एगसमएणं केवइया नेरइया उववज्जंति जाव केवइया अणागारोवउत्ता उववज्जंति' हे भदन्त! इस रत्नप्रभापृथिवी में ३० लाख नरकावासों में जो कि असंख्यातयोजन विस्तार वाले हैं उनमें एक समय में कितने नारक उत्पन्न होते हैं? यावत् कितने कापोतलेश्यावाले उत्पन्न होते हैं इस प्रकार के प्रश्न कापोतलेश्यावाले से लगाकर अनाकारोपयुक्त तक करना चाहिये। इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-'गोयमा' हे गौतम! 'इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु असंखेज्जवित्थडेसु नरएसु एगसम-

---

અસંખ્યાત યોજનના વિસ્તારવાળા નરકાવાસોની વક્તવ્યતાનું કથન કરે છે- આ વિષયને અનુલક્ષીને ગૌતમ સ્વામી મહાવીર પ્રભુને એવો પ્રશ્ન પૂછે છે કે-" इमीसेणं भंते! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु असंखेज्जवित्थडेसु नरएसु एगसमएणं केवइया नेरइया उववज्जंति जाव केवइया अणागारोवउत्ता उववज्जंति ?" હે ભગવન્! આ રત્નપ્રભા પૃથ્વીના ૩૦ લાખ નરકાવાસોમાંના જે અસંખ્યાત યોજનના વિસ્તારવાળા નરકાવાસો છે, તેમાં એક સમયમાં કેટલા નારકો ઉત્પન્ન થાય છે? કેટલા કાપોતલેશ્યાવાળા નારકો ઉત્પન્ન થાય છે? આ પ્રકારના પ્રશ્નો અનાકારોપયુક્ત પર્યન્તના નારકો વિષે પૂછવામાં આવેલ છે, એમ સમજવું પહેલા સૂત્ર જેવાં જ પ્રશ્નો અહીં અસંખ્યાત યોજનના વિસ્તારવાળા નરકાવાસો વિષે પણ સમજવા.

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-" गोयमा! હે ગૌતમ! " इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु असंखेज्जवित्थडेसु नरएसु एगसमए

दो वा, तिन्नि वा, उक्कोसेणं असंखेज्जा नेरइया उववज्जंति' हे गौतम! अस्यां रत्नप्रभायां पृथिव्यां त्रिंशति निरयावासशतसहस्रेषु असंख्येयविस्तृतेषु नरकेषु एकसमयेन जघन्येन एको वा, द्वौ वा, त्रयो वा, उत्कृष्टेन असंख्येया नैरयिका उपपद्यन्ते, 'एवं जहेव संखेज्जवित्थडेसु तिन्नि गमगा तहा असंखेज्जवित्थडेसु वि तिन्नि गमगा, नवरं असंखेज्जा भाणियव्वा' एवं-पूर्वोक्तरीत्या, यथैव संख्येयविस्तृतेषु नरकेषु त्रीणि गमकानि-उत्पादोद्वर्तनासत्ताविषयकालापकसमूहाः संख्येयविस्तृतेष्वपि नरकेषु त्रीणि गमकानि-उत्पादो-द्वर्तना-सत्ता विषयकालापकसमूहाः मतिपत्तव्याः, नवरं-पूर्वापेक्षया विशेषस्त्वत्र असंख्येयाः भणितव्याः, 'सेसं तं चेव जाव असंखेज्जा अचरिमा पण्णत्ता, नाणत्तं लेस्सासु, लेसाओ जहा पढमाए' शेषं तदेव-पूर्वोक्तसं-

---

एणं जहण्णेणं एक्को वा, दो वा, तिन्नि वा, उक्कोसेणं असंखेज्जा नेरइया उववज्जंति' इस रत्नप्रभा पृथिवी में ३० लाख नैरयिकावास हैं और उनमें जो असंख्यात योजन के विस्तार वाले हैं, उनमें एक समय में कम से कम रूप में एक, या दो, या तीन नारक तक उत्पन्न होते हैं और अधिक से अधिक रूप में असंख्यात नारक तक उत्पन्न होते हैं। 'एवं जहेव संखेज्जवित्थडेसु तिन्नि गमगा तहा असंखेज्जवित्थडेसु वि तिन्नि गमगा, नवरं असंखेज्जा भाणियव्वा' पूर्वोक्त रीति से जैसे संख्यात योजन विस्तारवाले नरकावासों में तीन गमक-उत्पाद, उद्वर्तना सत्ता इन विषयक आलापकसमूह कहे गये हैं वैसे ही वे उतने यहां पर भी जानना चाहिये 'सेसं तं चेव जाव असंखेज्जा अचरिमा पण्णत्ता, नाणत्तं लेस्सासु, लेसाओ जहा पढमाए' पूर्वोक्त संख्यात-

---

जहण्णेणं एक्कोवा, दो वा, तिन्नि वा, उक्कोसेणं असंखेज्जा नेरइया उववज्जंति" આ રત્નપ્રભા પૃથ્વીના ૩૦ લાખ નરકાવાસોમાંના જે અસંખ્યાત યોજનના વિસ્તારવાળા નરકાવાસો છે તેમાં એક સમયમાં ઓછામાં ઓછા એક, બે અથવા ત્રણ નારકો ઉત્પન્ન થાય છે અને વધારેમાં વધારે અસંખ્યાત નારકો ઉત્પન્ન થાય છે. "एवं जहेव संखेज्जवित्थडेसु तिन्नि गमगा तहा असंखेज्ज वित्थडेसु वि तिन्नि गमगा, नवरं असंखेज्जा भाणियव्वा" પહેલા, બીજા અને ત્રીજા સૂત્રમાં સંખ્યાત યોજનવાળા નરકાવાસોના વિષયમાં જેવાં ત્રણ ગમક (ઉત્પાદ, ઉદ્વર્તના અને સત્તાના વિષયમાં જેવા આલાપકસમૂહ-પ્રશ્નોત્તરો) આપવામાં આવ્યા છે, એવાં જ પ્રશ્નોત્તરો અહીં પણ સમજી લેવા જોઇએ. "सेसं तंचेव जाव असंखेज्जा अचरिमा पण्णत्ता, नाणत्तं लेस्सासु, लेसाओ जहा

ख्येयविस्तृतनरकवदेव यावत्-असंख्येयाः कापोतलेश्यावन्तः, इत्यारभ्य असंख्येया अनाकारोपयुक्ता इति पर्यन्ता उपपद्यन्ते, असंख्येयाः पूर्वोक्ताः एकोनचत्वारिंशद्भेदभिन्नाः नैरयिका उद्वर्तन्ते, तथा असंख्येया अनन्तरोपपन्नकाः१, असंख्येयाः परम्परोपपन्नकाः२, असंख्येया अनन्तरावगाढाः३, असंख्येयाः प०-

---

योजन विस्तार वाले नरकों के तीन आलापकों की अपेक्षा यदि इन असंख्यात योजन विस्तार वाले नरकों के आलापकों में कोई अन्तर हैं तो वह "असंख्यात" इस पद की अपेक्षा से ही है अर्थात् असंख्यात योजन विस्तारवाले नरकों में उत्कृष्टों से असंख्यात नारक उत्पन्न होते हैं-तब कि संख्यात योजन विस्तारवाले नरकावासों में उत्कृष्ट से संख्यात नारक उत्पन्न होते हैं ऐसा कहा गया है। इसी प्रकार असंख्यात पद को लेकर के कथन में भिन्नता उद्वर्तना और सत्ता के आलापकों में भी जाननी चाहिये बाकी का और सब कथन पूर्वोक्त संख्यात योजन विस्तृत नरकों की तरह जानना चाहिये। यावत् कापोतलेश्या वाले यहां से लेकर अनाकार उपयोगवाले यहां तक के सब नारक असंख्यात असंख्यात उत्पन्न होते हैं। इसी प्रकार से २९ भेदभिन्न नारक असंख्यात असंख्यात ही उद्वर्त्तना करते हैं-वहां से मरकर बाहर निकलते हैं, तथा अनन्तरोपपन्नक असंख्यात ही होते हैं, पर-

---

पढमसए" પૂર્વોક્ત સંખ્યાત યોજનના વિસ્તારવાળા નરકાવાસોના નારકોના ત્રણ આલાપકો કરતાં અસંખ્યાત યોજનના વિસ્તારવાળા નરકાવાસોના નારકોમાં જો કોઇ અન્તર હોય, તો તે એટલું જ છે કે-સંખ્યાત યોજનના વિસ્તારવાળા નારકોમાં વધારેમાં વધારે "સંખ્યાત" નારકો ઉત્પન્ન થાય છે, પરન્તુ અસંખ્યાત યોજનના વિસ્તારવાળા નરકાવાસોમાં વધારેમાં વધારે 'અસંખ્યાત' નારકો ઉત્પન્ન થાય છે, એમ સમજવું એજ પ્રમાણે ઉદ્વર્ત્તના અને સત્તા વિષયક આલાપકોમાં પણ સંખ્યાતને બદલે અસંખ્યાત પદનો પ્રયોગ અહીં (અસંખ્યાત યોજનના વિસ્તારવાળા નરકાવાસોના નારકોના કથનમાં) થવો જોઇએ. બાકીનું સમસ્ત કથન પૂર્વોક્ત સંખ્યાત યોજનના વિસ્તારવાળા નરકાવાસોના નારકોના કથન પ્રમાણે જ સમજવું એટલે કે કાપોતલેશ્યાવાળા નારકોથી લઇને અનાકારોપયુક્ત પર્યન્તના નારકો પણ ત્યાં એક સમયમાં વધારેમાં વધારે અસંખ્યાત ઉત્પન્ન થાય છે, અસંખ્યાત ઉદ્વર્ત્તના કરે છે અને અસંખ્યાત નારકોનું ત્યાં અસ્તિત્વ હોય છે. એજ પ્રમાણે અનન્તરોપપન્નક નારકો પણ ત્યાં અસંખ્યાત જ હોય છે, પરમ્પરો-

म्परावग.ढाः४, असंख्येया अनन्तराहाराः५, असंख्येयाः परम्पराहाराः६, असंख्येया अनन्तरपर्याप्ताः७, असंख्येयाः परम्परापर्याप्ताः८, असंख्येयाश्चरमाः९, असंख्येया अचरमाः१० प्रज्ञप्ताः। किन्तु नानात्वं लेश्यासु कापोतादिषु विज्ञेयम्। ताश्चलेश्या यथा प्रथमशतके द्वितीयोद्देशके प्रतिपादिता स्तथैवात्र प्रतिपत्तव्याः, 'नवरं संखेज्जवित्थडेसु वि असंखेज्जवित्थडेसु वि ओहिनाणी ओहिदंसणी य संखेज्जा उव्वट्टा वेयव्वा, सेसं तं चेव' नवरं-विशेषस्तु संख्येयविस्तृतेष्वपि, असंख्येयविस्तृतेष्वपि नरकेषु अवधिज्ञानिनः, अवधिदर्शिनिनश्च संख्येया एव उद्वर्तयितव्याः न तु असंख्येयाः, अवधिज्ञानिनः अवधिदर्शिनिनश्च तीर्थङ्करादय

म्परोपपन्नक भी असंख्यात ही होते हैं, अनन्तरावगाढ भी असंख्यात ही होते हैं, परम्परावगाढ भी असंख्यात ही होते हैं, अनन्तराहार भी वाले भी असंख्यात ही होते हैं, परम्पराहार वाले भी असंख्यात ही होते हैं, अनन्तरपर्याप्त नारक भी असंख्यात ही होते हैं, परम्परापर्याप्त भी नारक असंख्यात ही होते हैं चरम भी असंख्यात ही होते हैं, और अचरम भी असंख्यात होते हैं १०, 'नवरं संखेज्जवित्थडेसु वि असंखेज्जवित्थडेसु वि ओहिनाणी ओहिदंसणी य संखेज्जा उवट्टावेयव्वा, सेसं तं चेव' चाहे संख्यात योजन विस्तार वाले नारक हों चाहे असंख्यात योजन विस्तार वाले नारकहों उनमें से अवधिज्ञानी और अवधिदर्शनी नारक संख्यातमात्रा में ही उद्वर्तित होते हैं असंख्यातमात्रा में नहीं, क्योंकि अवधिज्ञानी और अवधिदर्शनी प्रायः

પપન્નક નારકો પણ અસંખ્યાત જ હોય છે, અનન્તરાવગાઢ નારકો પણ અસંખ્યાત જ હોય છે, પરમ્પરાવગાઢ નારકો પણ અસંખ્યાત જ હોય છે, અનન્તરાહારવાળા નારકો પણ અસંખ્યાત જ હોય છે, પરમ્પરાહારવાળા નારકો પણ અસંખ્યાત જ હોય છે, અનન્તર પર્યાપ્ત નારકો પણ અસંખ્યાત જ હોય છે, પરમ્પરા પર્યાપ્ત નારકો પણ અસંખ્યાત જ હોય છે, ચરમ નારકો પણ અસંખ્યાત જ હોય છે અને અચરમ નારકો પણ અસંખ્યાત જ હોય છે. પરન્તુ લેશ્યાઓમાં-કાપોતલેશ્યા આદિકોમાં-ભિન્નતા છે. તે લેશ્યાઓ, પ્રથમ શતકના બીજા ઉદ્દેશામાં જેવી કહી છે એવી અહીં પણ સમજવી જોઇએ. "नवरं संखेज्जवित्थडेसु वि असंखेज्जवित्थडेसु वि ओहिनाणी ओहिदंसणी य संखेज्जा उवट्टा वेयव्वा, सेस तंचेव" સંખ્યાત યોજનના વિસ્તારવાળા તથા અસંખ્યાત યોજનના વિસ્તારવાળા નરકાવાસોમાંથી વધારેમાં વધારે સંખ્યાત અવધિજ્ઞાની અને અવધિદર્શની નારકો ઉદ્વર્ત્તના કરે છે- અસંખ્યાત યોજનના વિસ્તારવાળા નરકાવાસોમાંથી અસંખ્યાત અવધિજ્ઞાની અને અવધિદર્શની નારકોની ઉદ્વર્ત્તના થતી નથી, કારણ કે અવધિજ્ઞાની અને

एव भवन्ति, ते च अल्पा एव, अल्पत्वाच्च संख्येया एवेति भावः। शेषं तदेव-पूर्वोक्तमेव ॥सू० ४॥

मूलम्-'सक्करप्पभाए णं भंते ! पुढवीए केवइया निरयावास० पण्णत्ता पुच्छा ? गोयमा ! पणतीसं निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता, ते णं भंते ! किं संखेज्जवित्थडा, असंखेज्जवित्थडा, एवं जहा रयणप्पभाए तहा सक्करप्पभाए वि, नवरं असन्नी तिसु वि गमएसु न भन्नंति, सेसं तं चेव।

वालुयप्पभाए णं पुच्छा, गोयमा ! पन्नरसनिरयावास-सयसहस्सा पण्णत्ता, सेसं जहा सक्करप्पभाए, णाणत्तं लेसासु, लेसाओ जहा पढमसए।

पंकप्पभाए पुच्छा, गोयमा ! दसनिरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता, एवं जहा सक्करप्पभाए, नवरं ओहिनाणी, ओहि-दंसणी य न उव्वट्टंति, सेसं तं चेव।

धूमप्पभाए णं पुच्छा, गोयमा ! तिन्नि निरयावाससय-सहस्सा, एवं जहा पंकप्पभाए।

तमाए णं भंते ! पुढवीए केवइया निरयावास० पण्णत्ता पुच्छा गोयमा ! एगे पंचूणे निरयावाससयसहस्से पण्णत्ते, सेसं जहा पंकप्पभाए।

तीर्थंकरादि ही होते हैं इसलिये वे वहां से थोडे से ही च्यवते हैं तब इसका तात्पर्य यही है कि वे वहां से संख्यात ही च्यवते हैं। बाकी का और सब कथन पूर्वोक्त रूप से ही है ॥ सू० ४ ॥

અવધિદર્શની મોટે ભાગે તીર્થંકરાદિ જ હોય છે, તેથી એવાં થોડાં જીવોનુ જ ત્યાંથી ચ્યવન થતું હોય છે. એટલે કે ત્યાંથી અવધિજ્ઞાની અને અવધિ-દર્શનીની ઉદ્વર્ત્તનાનું પ્રમાણ સંખ્યાત જ સમજવું બાકીનું સમસ્ત કથન પૂર્વોક્ત કથન પ્રમાણે જ સમજવું ॥સૂ૦૪॥

अहे सत्तमाए णं भंते! पुढवीए कति अणुत्तरा महति-महालया महानिरयावासा पण्णत्ता? गोयमा! पंच अणुत्तरा जाव अपइट्ठाणे, ते णं भंते! किं संखेज्जवित्थडा, असंखेज्जवित्थडा? गोयमा! संखेज्जवित्थडा य, असंखेज्जवित्थडा य, अहे सत्तमाए णं भंते! पुढवीए पंचसु अणुत्तरेसु महति महालय जाव महा-निरएसु संखेज्जवित्थडे नरए एगसमएणं केवइया उववज्जंति? एवं जहा पंकप्पभाए, नवरं तिसु नाणेसु न उववज्जंति, न उव्वट्टंति, पण्णत्ता एसु तहेव अत्थि। एवं असंखेज्जवित्थडेसु वि, नवरं असंखेज्जा भाणियव्वा ॥सू० ५॥

छाया—शर्कराप्रभायां खलु भदन्त! पृथिव्यां कियन्ति निरयावासशतसह-स्राणि पृच्छा, गौतम! पञ्चविंशति निरयावासशतसहस्राणि प्रज्ञप्तानि, तानि खलु भदन्त! किं संख्येयविस्तृताः, असंख्येयविस्तृताः, एवं यथा रत्नप्रभायां तथा शर्कराप्रभायामपि, नवरम्—असंज्ञिनस्त्रिष्वपि गमकेषु न भण्यन्ते, शेषं तदेव।

वालुकाप्रभायां खलु पृच्छा, गौतम! पञ्चदशनिरयावासशतसहस्राणि प्रज्ञ-प्तानि, शेषं यथा शर्कराप्रभायाम्, नानात्वं लेश्यासु, लेश्या यथा प्रथमशतके।

पङ्कप्रभायां, पृच्छा गौतम! दश निरयावासशतसहस्राणि प्रज्ञप्तानि, एवं यथा शर्कराप्रभायाम्, नवरम् अवधिज्ञानिनः, अवधिदर्शनिनश्च न उद्वर्तन्ते, शेषं तदेव।

धूमप्रभायां खलु पृच्छा, गौतम! त्रीणि निरयावासशतसहस्राणि, एवं यथा पङ्कप्रभायाम्।

तमायां खलु भदन्त! पृथिव्यां कियन्ति निरयावासशतसहस्राणि पृच्छा, गौतम! एकं पञ्चोनं निरयावासशतसहस्रं प्रज्ञप्तम्, शेषं यथा पङ्कप्रभायाम्।

अधः सप्तम्यां खलु भदन्त! पृथिव्यां कति अनुत्तरा महातिमहालया महा-निरयावासाः प्रज्ञप्ताः? गौतम! पञ्च अनुत्तरा यावत् अप्रतिष्ठानम्, ते खलु भदन्त! किं संख्येयविस्तृताः? असंख्येयविस्तृताः? गौतम! संख्येयविस्तृताश्च, असंख्येय-विस्तृताश्च, अधः सप्तम्यां खलु भदन्त! पृथिव्यां पञ्चसु अनुत्तरेषु महातिमहालय यावत् महानिरयेषु संख्येयविस्तृते नरके एकसमयेन कियन्तः उपपद्यन्ते? एवं यथा पङ्कप्रभायां, नवरं, नवरं त्रिषु ज्ञानेषु न उपपद्यन्ते, न उद्वर्तन्ते, प्रज्ञप्ता एषु तथैव अस्ति, एवम् असंख्येयविस्तृतेष्वपि, नवरम् असंख्येया भणितव्याः ॥ सू० ५ ॥

टीका—अथ शर्करादि षट् पृथिवी वक्तव्यतामाह–'सक्करप्पभाएणं' इत्यादि। 'सक्करप्पभाएणं भंते ! पुढवीए केवइया निरयावाससयसहस्सा पुच्छा' गौतमः पृच्छति–हे भदन्त ! शर्कराप्रभायां खलु पृथिव्यां कियन्ति निरयावासशतसहस्राणि नरकावासलक्षाणि प्रज्ञप्तानि ? इति पृच्छा, भगवानाह–'गोयमा ! पणवीसं निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता' हे गौतम ! शर्कराप्रभायां पृथिव्यां पञ्चविंशतिः निरयावासशतसहस्राणि–नरकावासलक्षाणि प्रज्ञप्तानि, गौतमः पृच्छति–' तेणं भंते ! किं संखेज्जवित्थडा असंखेज्जवित्थडा ?' हे भदन्त ! ते खलु पञ्चविंशतिं लक्षनिरयावासाः किं संख्येयविस्तृताः सन्ति ? किं वा असंख्येयविस्तृताः सन्ति ? भगवानाह–' एवं जहा रयणप्पभाए तहा सक्करप्पभाए वि, नवरं असन्नी तिसु वि

' सक्करप्पभाए णं भंते ' इत्यादि ।

टीकार्थ—सूत्रकाने इस सूत्र द्वारा शर्कराप्रभा आदि ६ पृथिवियों के सम्बन्ध में वक्तव्यता कही है–इसमें गौतम ने प्रभु से ऐसा पूछा है–'सक्करप्पभाए णं भंते !–पुढवीए केवइया निरयावाससयसहस्सा पुच्छा' हे भदन्त ! शर्कराप्रभा नामकी जो दूसरी पृथिवी है उसमें कितने लाख नरकावास कहे गये हैं ? इसके उत्तर में प्रभु ने कहा है कि 'गोयमा' हे गौतम ! 'पणवीसं निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता' इस पृथिवी में २५ लाख नरकावास कहे गये हैं। 'तेणं भंते ! किं संखेज्जवित्थडा, असंखेज्जवित्थडा' हे भदन्त ! वे २५ लाख नरकावास क्या संख्यातयोजन विस्तारवाले हैं या असंख्यातयोजन विस्तार वाले हैं ? तो इस प्रश्न के उत्तर में प्रभु ने कहा–'एवं जहा रयणप्पभाए तहा

" सक्करप्पभाए ण भंते ! " ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ–સૂત્રકારે આ સૂત્ર દ્વારા શર્કરાપ્રભાથી લઇને તમસ્તમપ્રભા નામની ૬ નરકપૃથ્વીઓના વિષયમાં કથન કર્યું છે–

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન–" सक्करप्पभाएणं भंते ! पुढवीए केवइया निरयावाससयसहस्सा पुच्छा " હે ભગવન્ ! શર્કરાપ્રભા નામની જે બીજી નરક છે; તેમાં કેટલા લાખ નરકાવાસો છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર–" गोयमा ! હે ગૌતમ ! " पणवीसं निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता " શર્કરાપ્રભા પૃથ્વીમાં ૨૫ લાખ નરકાવાસ કહ્યા છે.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન–" तेणं भंते ! किं संखेज्जवित्थडा, असंखेज्जवित्थडा ?" હે ભગવાન્ ! તે ૨૫ લાખ નરકાવાસો શું સંખ્યાત યોજનના વિસ્તારવાળા છે, કે અસંખ્યાત યોજનના વિસ્તારવાળા છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર–" एवं जहा रयणप्पभाए तहा सक्करप्पभाए वि, नवरं असन्नी तिसु वि गमएसु न भन्नंति, सेसं तंचेव " હે ગૌતમ ! જેમ

गमएसु न भन्नंति सेसं तं चेव' एवं पूर्वोक्तरीत्या यथा रत्नप्रभायां संख्येयविस्तृता अपि, असंख्येयविस्तृताश्च अपि, नरकावासाः प्रतिपादितास्तथा शर्करा प्रभायामपि संख्येयविस्तृताः, असंख्येयविस्तृताश्च नरकावासाः प्रतिपत्तव्याः, नवरं पूर्वापेक्षया विशेषस्तु असंज्ञिन स्त्रिष्वपि गमकेषु उत्पादोद्वर्त्तनस्थितिविषयेषु आलापकेषु न भण्यन्ते, न वक्तव्याः, यतः असंज्ञिनां प्रथमायामेव पृथिव्यामुत्पादसद्भावात् 'असन्नी खलु पढमं" इति वचनात्, शेषं तदेव-पूर्वोक्तवदेवावसेयम् ।

सक्करप्पभाए वि, नवरं असन्नी तिसु वि गमएसु न भन्नंति, सेसं तं चेव' हे गौतम ! पूर्वोक्त रीति से रत्नप्रभा में संख्यातयोजन के विस्तारवाले नरकावास कहे गये हैं, उसी प्रकार से शर्कराप्रभा में भी संख्यातयोजन के और असंख्यातयोजन के विस्तारवाले नरकावास कहे गये हैं. पूर्व में जैसे उत्पाद, उद्वर्त्तना और स्थिति विषयक तीन आलापकों में असंज्ञियों का उत्पाद, उद्वर्त्तना और स्थिति-कही गई है, अर्थात्-उत्पाद, उद्वर्त्तना और स्थिति विषयक आलापक कहे गये हैं-वे आलापक यहां नहीं कहना चाहिये-क्योंकि यहां पर असंज्ञियों का उत्पाद ही नहीं होता है। असंज्ञीजीवों का उत्पाद प्रथम पृथिवी में ही होता है। 'असन्नी खलु पढमं' ऐसा सिद्धान्त का कथन है। बाकी का और सब कथन रत्नप्रभापृथिवी की तरह से ही जानना चाहिये.

રત્નપ્રભામાં કેટલાક નરકાવાસો સંખ્યાત યોજનના વિસ્તારવાળા છે અને કેટલાક અસંખ્યાત યોજનના વિસ્તારવાળા છે, એજ પ્રમાણે શર્કરાપ્રભામાં પણ કેટલાક નરકાવાસો સંખ્યાત યોજનના વિસ્તારવાળા અને કેટલાક અસંખ્યાત યોજનના વિસ્તારવાળા છે. આગળ રત્નપ્રભા પૃથ્વીના નારકોના વિષયમાં જેવું કથન કરવામાં આવ્યું છે, એવું જ કથન અહીં પણ કરવું જોઇએ તે કથન કરતા શર્કરાપ્રભાના નારકોના કથનમા એટલી જ વિશેષતા છે કે-રત્નપ્રભામાં ઉત્પાદ, ઉદ્વર્ત્તના અને સ્થિતિવિષયક ત્રણ આલાપકોમાં અસંજ્ઞિઓના ઉત્પાદ, ઉદ્વર્ત્તના અને સ્થિતિનું કથન કરવામાં આવ્યુ છે, પરન્તુ શર્કરાપ્રભામાં તે આલાપકો કહેવા જોઇએ નહીં, કારણ કે અસંજ્ઞિઓની ઉત્પત્તિ આ પૃથ્વીમાં થતી જ નથી. અસંજ્ઞી જીવોનો ઉત્પાદ પહેલી નરકમાં જ થાય છે. સિદ્ધાન્તમાં આ પ્રકારનું કથન છે કે "असन्नी खलु पढमं" અસંજ્ઞી જીવોનો પહેલી રત્નપ્રભા પૃથ્વીમાં જ ઉત્પાદ થાય છે બાકીનું સમસ્ત કથન રત્નપ્રભા પૃથ્વીના નારકોના કથન પ્રમાણે જ સમજવું.

वालुयप्पभाए णं पुच्छा ' गौतमः पृच्छति-हे भदन्त ! वालुकाप्रभायां खलु पृथिव्यां कियन्ति निरयावासशतसहस्राणि प्रज्ञप्तानि ? इति पृच्छा, भगवानाह-'गोयमा ! पन्नरसनिरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता, सेसं जहा सक्करप्पभाए, णाणत्तं लेसासु, लेसाओ जहा पढमसए' हे गौतम ! वालुकाप्रभायां पृथिव्यां पञ्चदशनिरयावासशतसहस्राणि-नरकावासलक्षाणि प्रज्ञप्तानि शेषं यथा शर्कराप्रभायां पृथिव्यां प्रतिपादितम् तथैवात्रापि प्रतिपत्तव्यम् , केवलं नानात्वं-पृथक्त्वं लेश्यासु अवसेयम् ताश्च लेश्याः यथा प्रथमशतके प्रथमोद्देशके उक्ता स्तथैवात्रापि वक्तव्याः ।

पूर्वं रत्नप्रभायां शर्कराप्रभायां च द्वयोः पृथिव्योरेका कापोतलेश्या प्रतिपादिता, अत्र वालुकाप्रभायां तु कापोतनीलेति लेश्याद्वयं भवति । तथा च संग्रहगाथा-' काउ दोसु तइयाइ, मीसिया नीलिया चउत्थीए ।

पंचमियाए मीसा, कण्हा तत्तो परमकण्हा ॥ १ ॥

अब गौतम प्रभु से ऐसा पूछते हैं-'वालुयप्पभाए णं पुच्छा' हे भदन्त ! वालुका प्रभा पृथिवी में कितने लाख नरकावास कहे गये हैं ? इसके उत्तर में प्रभु ने कहा-'गोयमा' हे गौतम ! 'पन्नरस निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता' वालुकाप्रभा में १५ लाख नरकावास कहे गये हैं। 'सेसं जहा सक्करप्पभाए, णाणत्तं लेसासु, लेसाओ जहा पढमसए' बाकी का यहां का और सब कथन शर्कराप्रभापृथिवी में जैसा कहा गया है वैसा ही है. यदि कुछ यहां शर्कराप्रभापृथिवी के कथन की अपेक्षा भिन्नता है तो वह लेश्याओं में है ये लेश्याएँ प्रथम शतक के प्रथम उद्देशक में कहे अनुसार हैं, अर्थात् रत्नप्रभा और शर्कराप्रभा इन दोनों पृथिवियों में एक कापोतलेश्या कही गई है-परन्तु यहां वालुका प्रभा में कापोत और नील ये दो लेश्याएँ कही गई हैं- इनकी

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-" वालुयप्पभाएणं पुच्छा " હે ભગવન્ ! વાલુકાપ્રભા નામની ત્રીજી નરકપૃથ્વીમાં કેટલા લાખ નરકાવાસો છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-" गोयमा ! " હે ગૌતમ ! " पन्नरसनिरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता " વાલુકાપ્રભા પૃથ્વીમાં પંદર લાખ નરકાવાસ કહ્યા છે. " सेसं जहा सक्करप्पभाए, णाणत्तं लेसासु, लेसाओ जहा पढमसए " બાકીનું સમસ્ત કથન શર્કરાપ્રભાના કથન પ્રમાણે જ સમજવું શર્કરાપ્રભાના કથન કરતાં વાલુકાપ્રભાના કથનમાં એટલી જ વિશેષતા છે કે રત્નપ્રભા અને શર્કરાપ્રભામાં એક કાપોતલેશ્યા જ કહી છે, પરન્તુ વાલુકાપ્રભામાં કાપોત અને નીલ, આ બે લેશ્યાઓનો સદ્ભાવ કહ્યો છે. આ લેશ્યાઓને અનુલક્ષીને " काऊ दोसु तइयाइ " ઇત્યાદિ સંગ્રહગાથા આપવામાં આવી છે

छाया—कापोतो द्वयोः तृतीयायां मिश्रिता, नीलिका चतुर्थ्याम् ।
पञ्चम्यां मिश्रा कृष्णा ततः परमकृष्णा ॥ १ ॥

'पंकप्पभाए पुच्छा' गौतमः पृच्छति-हे भदन्त ! पङ्कप्रभायां पृथिव्यां कियन्ति निरयावासशतसहस्राणि प्रज्ञप्तानि ? इति पृच्छा भगवानाह-'गोयमा ! दस निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता' हे गौतम ! पङ्कप्रभायां पृथिव्यां दश निरयावास-शतसहस्राणि-नरकावासलक्षाणि प्रज्ञप्तानि 'एवं जहा सक्करप्पभाए, नवरं ओहिनाणी, ओहिदंसणी य न उव्वट्टंति, सेसं तं चेव' एवं पूर्वोक्तरीत्या, यथा शर्कराप्रभायां प्रतिपादितं तथैव पङ्कप्रभायामपि प्रतिपत्तव्यम्, नवरं-पूर्वापेक्षया विशेषस्तु पङ्कप्रभायाम् अवधिज्ञानिनः, अवधिदर्शनिनश्च नोद्वर्तन्ते यतः अवधि-ज्ञानिनः, अवधिदर्शनिनश्च प्रायस्तीर्थङ्करा एव भवन्ति, ते च चतुर्थ्यां उद्वृत्ता

संग्रहगाथा इस प्रकार से है-'काऊ दोसु तइयाइ' इत्यादि ।

अब गौतम प्रभु से ऐसा पूछते हैं-'पंकप्पभाए पुच्छा' हे भदन्त ! पंकप्रभा पृथिवी में कितने लाख नरकावास कहे गये हैं ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-'गोयमा' हे गौतम ! 'दस निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता' पंकप्रभा में १० लाख नरकावास कहे गये हैं । 'एवं जहा सक्करप्पभाए, नवरं ओहिनाणी, ओहिदंसणी य न उव्वट्टंति, सेसं तं चेव' पूर्वोक्त रीति से जैसा शर्कराप्रभा में कहा जा चुका है, उसी प्रकार से पंकप्रभा में भी जानना चाहिये. परन्तु शर्कराप्रभा के कथन की अपेक्षा पंकप्रभा के कथन में ऐसी विशेषता है, कि पंकप्रभा में अवधिज्ञानी, अवधिदर्शनी उद्वर्त्तना नहीं करते हैं, क्यों कि अवधिज्ञानी अवधिदर्शनी प्रायः तीर्थंकर ही होते हैं, और चौथी

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-"पंकप्पभाए पुच्छा" હે ભગવન્! ચોથી પંક-પ્રભા પૃથ્વીમાં કેટલા નરકાવાસો કહ્યા છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-"गोयमा !" હે ગૌતમ ! "दसनिरयावाससय-सहस्सा पण्णत्ता" પંકપ્રભામાં દસ લાખ નરકાવાસ કહ્યા છે. "एवं जहा सक्करप्पभाए, नवरं ओहिनाणी, ओहिदंसणी य न उव्वट्टंति, सेसं तं चेव" શર્કરાપ્રભામાં જેવું કથન કરવામાં આવ્યું છે, એવું જ સમસ્ત કથન પંક-પ્રભાના વિષયમાં પણ સમજવું, પરન્તુ શર્કરાપ્રભાના કથન કરતાં પંકપ્રભાના કથનમાં એટલી જ વિશેષતા છે કે-પંકપ્રભાથી અવધિજ્ઞાની અને અવધિદર્શની જીવો ઉદ્વર્ત્તના કરતા નથી, કારણ કે સામાન્ય રીતે તીર્થંકરો જ અવધિજ્ઞાની અને અવધિદર્શની હોય છે અને ચોથી પૃથ્વીમાંથી નીકળેલો જીવ તીર્થંકર

स्तीर्थङ्करतया नोत्पद्यन्ते इति भावः। शेषं तदेव-पूर्वोक्तवदेव बोध्यम्। अत्र पङ्कप्रभायामेका नीललेश्या वर्तते।

'धूमप्पभाए णं पुच्छा' गौतमः पृच्छति-हे भदन्त! धूमप्रभायां खलु पृथिव्यां कियन्ति निरयावासशतसहस्राणि प्रज्ञप्तानि? इति पृच्छा, भगवानाह-'गोयमा! तिन्नि निरयावाससयसहस्सा, एवं जहा पंकप्पभाए' हे गौतम! धूमप्रभायां त्रीणि निरयावासशतसहस्राणि-नरकावासलक्षाणि प्रज्ञप्तानि, एवं-तथैव, यथा पङ्कप्रभायां प्रतिपादितं तथा धूमप्रभायामपि प्रतिपादनीयम्, 'अत्र धूमप्रभायां नीलकृष्णेति लेश्याद्वयं वर्तते'

'तमाए णं भंते! पुढवीए केवइया निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता पुच्छा' गौतमः पृच्छति-हे भदन्त! तमायां खलु पृथिव्यां कियन्ति निरयावासशतसह-

---

पृथिवी का निकला हुआ जीव तीर्थंकर रूप से उत्पन्न होता नहीं है बाकी का और सब कथन पूर्वोक्त जैसा ही है। यहां पंकप्रभा में एक नीललेश्या है। 'धूमप्पभाए णं पुच्छा' इस सूत्र द्वारा गौतम ने प्रभु से ऐसा पूछा है-हे भदन्त! धूमप्रभा पृथिवी में कितने नरकावास कहे गये हैं? इसके उत्तर में प्रभु ने कहा-गोयमा! हे गौतम! 'तिन्नि निरयावाससयसहस्सा, एवं जहा पंकप्पभाए' धूमप्रभा पृथिवी में ३ लाख नरकावास कहे गये हैं। बाकी का और सब कथन यहां पर पंकप्रभा में कहे गये कथन के अनुसार ही जानना चाहिये। यहां धूमप्रभा में नीललेश्या और कृष्णलेश्या ये दो लेश्याएँ हैं। 'तमाए णं भंते! पुढवीए केवइया निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता पुच्छा?' गौतम ने इस सूत्र द्वारा प्रभु से ऐसा पूछा है कि हे भदन्त! तमा नाम की छठी पृथिवी

રૂપે ઉત્પન્ન થતો નથી બાકીનું સમસ્ત કથન શર્કરાપ્રભાના કથન જેવું જ છે. પંકપ્રભામાં માત્ર નીલલેશ્યાવાળા નારકો જ હોય છે.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-"धूमप्पभाए णं पुच्छा" હે ભગવન્! પાંચમી ધૂમપ્રભા પૃથ્વીમાં કેટલા નરકાવાસો છે?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-"गोयमा!" હે ગૌતમ! "तिन्नि निरयावाससयसहस्सा, एवं जहा पंकप्पभाए" ધૂમપ્રભા પૃથ્વીમાં ત્રણ લાખ નરકાવાસ કહ્યા છે. બાકીનું સમસ્ત કથન અહીં પંકપ્રભાના પૂર્વોક્ત કથન પ્રમાણે જ સમજવું ધૂમપ્રભામાં નીલલેશ્યા અને કૃષ્ણલેશ્યાવાળા નારકો જ હોય છે.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-"तमाए णं भंते! पुढवीए केवइया निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता पुच्छा?" હે ભગવન્! તમઃપ્રભા નામની છઠ્ઠી પૃથ્વીમાં કેટલા લાખ નરકાવાસો કહ્યા છે?

स्राणि-नरकावासलक्षाणि प्रज्ञप्तानि ? इति पृच्छा, भगवानाह-' गोयमा ! एगे पंचूणे निरयावाससयसहस्से पण्णत्ते, सेसं जहा पंकप्पभाए ' हे गौतम ! तमः प्रभायां खलु पृथिव्याम् खलु एकं पञ्चोनं निरयावासशतसहस्रम्-पञ्चन्यूनैकलक्ष नरकावासाः प्रज्ञप्ताः, शेषं यथा पङ्कप्रभायां प्रतिपादितं तथा तमायामपि प्रतिपादनीयम्, अत्र तमःप्रभायामेका कृष्णलेश्या वर्तते । ' अहे सत्तमाए णं भंते ! पुढवीए कई अणुत्तरा महइमहालया महानिरया पण्णत्ता ? ' गौतमः पृच्छति- हे भदन्त ! अधः सप्तम्यां खलु पृथिव्यां कति अनुत्तराः महातिमहालयाः अतिविस्ताराः, महानिरयाः महानिरयावासाः प्रज्ञप्ताः ? भगवानाह- गोयमा ! पंच अणुत्तरा जाव अपइट्ठाणे ' हे गौतम ! अधःसप्तम्यां पृथिव्यां पञ्च अनुत्तरा यावत् महातिमहालया महानिरयावासाः कालः, महाकालः, रौरवः, महारौरवः, अप्रतिष्ठानं च

में कितने लाख नरकावास कहे गये हैं ? इसके उत्तर में प्रभु ने कहा- 'गोयमा' हे गौतम ! 'एगे पंचूणे निरयावाससयसहस्से पण्णत्ते' तमः प्रभा नाम की छठी पृथिवी में पांच कम एक लाख नरकावास कहे गये हैं । बाकी का और सब कथन पंकप्रभा में किये गये कथन के अनुसार ही यहां जानना चाहिए । यहां एक कृष्णलेश्या ही है । 'अहे सत्तमाए णं भंते ! पुढवीए कई अणुत्तरा महइमहालया महानिरया पण्णत्ता' इस सूत्र द्वारा गौतम प्रभु से ऐसा पूछ रहे हैं कि हे भदन्त ! अधः सप्तमी पृथिवी में कितने अनुत्तर एवं अतिविस्तार वाले महानिरय-महानरकावास कहे गये हैं ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-' गोयमा ' हे गौतम ! ' पंच अणुत्तरा जाव अपइट्ठाणे ' अधः सप्तमी पृथिवी में पांच अनुत्तर नरकावास अप्रतिष्ठान तक कहे गए हैं और ये बहुत ही अधिक विस्तार वाले कहे गए हैं । इनके नाम इस प्रकार से हैं-काल १, महाकाल २,

---

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-" गोयमा ! " હે ગૌતમ ! " एगे पंचूणे निरयावाससयसहस्से पण्णत्ते " તમઃપ્રભા નરકપૃથ્વીમાં એક લાખમાં પાંચ ઓછા (૯૯૯૯૫) નરકવાસો છે. બાકીનું સમસ્ત કથન પંકપ્રભાના કથન પ્રમાણે જ સમજવું આ નરકમાં કૃષ્ણલેશ્યાવાળા નારકો જ હોય છે.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-" अहे सत्तमाए णं भंते ! पुढवीए कइ अणुत्तरा महइमहालया महानिरया पण्णत्ता ?" હે ભગવન્ ! અધઃસપ્તમી પૃથ્વીમાં કેટલા અનુત્તર અને બહુ જ વિસ્તારવાળા મહાનરકાવાસો કહ્યા છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-" गोयमा ! " હે ગૌતમ ! " पंच अणुत्तरा जाव अपइट्ठाणे " અધઃસપ્તમી પૃથ્વીમાં પાંચ અનુત્તર નરકાવાસો કહ્યા છે. તેમનો વિસ્તાર ઘણો જ મોટો છે તેમનાં નામ નીચે પ્રમાણે છે-(૧) કાલ, (૨)

एतदभिधेयाः प्रज्ञप्ताः । अत्र तमस्तमःप्रभायामेका महाकृष्णलेश्या वर्तते । गौतमः पृच्छति–ते णं भंते किं संखेज्जवित्थडा, असंखेज्जवित्थडा ?' हे भदन्त ! ते खलु पञ्च महानिरयावासाः किं संख्येयविस्तृताः सन्ति ? किं वा असंख्येयविस्तृताः सन्ति ? भगवानाह–गोयमा ! संखेज्जवित्थडे य, असंखेज्जवित्थडा य ' हे गौतम ! अधःसप्तम्यां पञ्च महानिरयावासाः संख्येयविस्तृताश्च सन्ति, असंख्येयविस्तृताश्च, गौतमः पृच्छति–' अहे सत्तमाए णं भंते ! पुढवीए पंचसु अणुत्तरेसु महतिमहालय जाव महानिरएसु संखेज्जवित्थडे नरए एगसमएणं केवइया नेरइया उववज्जंति ? ' हे भदन्त ! अधःसप्तम्यां खलु पृथिव्यां पञ्चसु अनुत्तरेषु महाति-

---

रौरव ३, महारौरव ४ और अप्रतिष्ठान ५, इस तमस्तमः प्रभा में एक महाकृष्णलेश्या है । अब गौतम प्रभु से ऐसा पूछते हैं–तेणं भंते ! किं संखेज्जवित्थडा, असंखेज्जवित्थडा ' हे भदन्त ! ये सप्तम अधः पृथिवी के जो पांच अनुत्तर महाविस्तृत निरयावास हैं वे क्या संख्यातयोजन विस्तारवाले हैं ? या असंख्यात योजन विस्तारवाले हैं ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं–' गोयमा ' हे गौतम ! ' संखेज्जवित्थडे य असंखेज्जवित्थडा य ' इन पांच में से एक निरयावास संख्यातयोजन विस्तार वाला है और चार असंख्यात योजन के विस्तार वाले हैं । अब गौतम प्रभु से ऐसा पूछते हैं–'अहे सत्तमाए णं भंते ! पुढवीए पंचसु अणुत्तरेसु महइमहालय जाव महानिरएसु संखेज्जवित्थडे नरए एगसमएणं केवइया नेरइया उववज्जंति ' हे भदन्त ! अधःसप्तमी पृथिवी के जो पांच

મહાકાલ, (૩) રૌરવ, (૪) મહારૌરવ અને (૫) અપ્રતિષ્ઠાન આ તમસ્તમ પ્રભા પૃથ્વીમાં એક માત્ર મહાકૃષ્ણલેશ્યાનો જ સદ્ભાવ હોય છે.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન–" तेणं भंते ! किं संखेज्जवित्थडा, असंखेज्जवित्थडा?" હે ભગવન્ ! તે અધઃસપ્તમી પૃથ્વીના જે પાંચ અનુત્તર, મહાવિસ્તૃત નરકાવાસો છે; તે શું સંખ્યાત યોજનના વિસ્તારવાળા છે, કે અસંખ્યાત યોજનના વિસ્તારવાળા છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર–" गोयमा ! " संखेज्जवित्थडे य असंखेज्जवित्थडा य " હે ગૌતમ ! તેમાં કેટલાક સંખ્યાત યોજનના વિસ્તારવાળા છે અને કેટલાક અસંખ્યાત યોજનના વિસ્તારવાળા છે.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન–" अहे सत्तमाए णं भंते ! पुढवीए पंचसु अणुत्तरेसु महइमहालय जाव महानिरएसु संखेज्जवित्थडे नरए एगसमएणं केवइया नेरइया उववज्जंति ?" હે ભગવન્ ! અધઃસપ્તમી પૃથ્વીના જે પાંચ અનુત્તર મહાવિસ્તૃત

महालय यावत् महानिरयेषु संख्येयविस्तृते मध्यमे अप्रतिष्ठानाख्ये नरके एक समयेन कियन्तो नैरयिका उपपद्यन्ते ? भगवानाह –' एवं जहा पंकप्पभाए ' एवं–पूर्वोक्तरीत्या, यथा पङ्कप्रभायां संख्येया नैरयिका उपपद्यन्ते इत्यादि प्रतिपादितं तथा अधः सप्तम्यामपि प्रतिपादनीयम्, ' नवरं तिसु नाणेसु न उववज्जंति, न उव्वट्टंति, पण्णत्ता एसु तहेव अत्थि ' नवरं–पूर्वापेक्षया विशेषस्तु त्रिषु ज्ञानेषु आभिनिबोधिकादि त्रिषु नोपपद्यन्ते, नोद्वर्तन्ते च यतः सम्यक्त्वपरिभ्रष्टानामेव तत्रोत्पादेन तत उद्वर्तनेन च आद्येषु त्रिषु ज्ञानेषु नोत्पद्यन्ते, नवा उद्वर्तन्ते इति

अनुत्तर महाविस्तृत नरकावास हैं उनमें से जो संख्यात योजन का नरकावास है उसमें एक समय में कितने नारक उत्पन्न होते हैं? अर्थात् अप्रतिष्ठान नामके नरकावास में एक समय में कितने नारक–उत्पन्न होते हैं ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं–'एवं जहा पंकप्पभाए' हे गौतम! जैसा कथन पहिले पंकप्रभा में संख्यात नैरयिक उत्पन्न होते हैं इत्यादिरूप से कहा गया उसी प्रकार का कथन अधःसप्तमी में भी करना चाहिये 'नवरं तिसु नाणेसु न उववज्जंति, न उव्वट्टंति, पण्णत्ता एसु तहेव अत्थि'.परन्तु पूर्व की अपेक्षा विशेषता ऐसी है कि आभिनिबोधिक आदि तीन ज्ञानों में जीव यहां उत्पन्न नहीं होते हैं, और न उद्वर्त्तना करते हैं क्योंकि सम्यक्त्व से परिभ्रष्ट हुए जीवों का ही वहां उत्पाद होता है और वहां से उद्वर्तना करते हैं, इसलिये आद्य तीन

નરકાવાસો છે તેમાં એક સમયમાં કેટલા નારકો ઉત્પન્ન થાય છે ? એટલે કે અપ્રતિષ્ઠાન નામના નરકાવાસમાં એક સમયમાં કેટલા નારકો ઉત્પન્ન થાય છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર–"एवं जहा पंकप्पभाए" હે ગૌતમ ! આગળ જેવું કથન પંકપ્રભાના વિષયમાં કરવામાં આવ્યું છે, એવું જ કથન અહીં પણ ગ્રહણ કરવું જોઇએ એટલે કે ત્યાં સંખ્યાત નારકો ઉત્પન્ન થાય છે, ઇત્યાદિ કથન પંકપ્રભાના નારકોના કથન અનુસાર જ સમજવું. नवरं तिसु-नाणेसु न उववज्जंति, न उव्वट्टंति, पण्णत्ता एसु तहेव अत्थि" પરન્તુ પંકપ્રભા કરતાં અહીં એટલી વિશેષતા છે કે આભિનિબોધિક આદિ ત્રણ જ્ઞાનોમાં અહીં જીવો ઉત્પન્ન થતા નથી, અને ઉદ્વર્ત્તના પણ કરતા નથી, કારણ કે સમ્યક્ત્વથી પરિભ્રષ્ટ થયેલા જીવોનો જ ત્યાં ઉત્પાદ થાય છે અને ત્યાંથી તેઓ ઉદ્વર્ત્તના કરે છે, તેથી આભિનિબોધિક આદિ પહેલા ત્રણ જ્ઞાનોમાં તેઓ ઉત્પન્ન પણ થતા નથી અને ઉદ્વર્ત્તના પણ કરતા નથી, એવું કહેવામાં આવ્યું

भावः। किन्तु प्रज्ञप्ताः विद्यमानताऽऽलापकाः एषु पञ्चसु अनुत्तरेषु महानिरयेषु तथैव-पूर्ववदेव सन्ति, तथा चैतेषु पञ्चसु नरकावासेषु कियन्तः आभिनिबोधिकज्ञानिनः, श्रुतज्ञानिनः, अवधिज्ञानिनश्च प्रज्ञप्ताः ? इत्यत्र उत्पादोद्वर्तनसत्ताख्येषु त्रिषु गमकेषु मध्ये तृतीयगमके सत्ताविषयकालापके, तथैव--रत्नप्रभादि पृथिवीष्विवात्रापि सन्ति, अत्रोत्पन्नानां सम्यग्दर्शनलाभे आभिनिबोधिकादि ज्ञानत्रय सद्भावात्। 'एवं असंखेज्जवित्थडेसु वि, नवरं असंखेज्जा भाणियव्वा' एवं-पूर्वोक्तरीत्या, असंख्येयविस्तृतेषु अपि चतुर्षु निरयावासेषु असंख्येया नैरयिका

ज्ञानों में वे उत्पन्न नहीं होते और उद्वर्त्तना नहीं करते कहे गये हैं। किन्तु विद्यमानता संबंधी जो आलापक है वह इन पांच अनुत्तर महानिरयों में पूर्वकी तरह ही है। तथा च 'इस पांच महानरकावासों में कितने आभिनिबोधिकज्ञानी हैं? कितने श्रुतज्ञानी हैं, कितने अवधिज्ञानी हैं' तो इस प्रश्न के उत्तर में ऐसा जानना चाहिये कि उत्पाद, उद्वर्त्तना और सत्ता विषयक तीन आलापकों में से जो सत्ता-विषयक तृतीय आलापक है उसमें रत्नप्रभादिपृथिवियों में जैसे ये कहे गये हैं वैसे जानना चाहिये क्योंकि यहां जो नारक उत्पन्न होते हैं, उनको सम्यग्दर्शन का लाभ होता है--अतः उसके लाभ होने पर आभिनिबोधिक आदि तीन ज्ञान का सद्भाव कहा गया है। 'एवं असंखेज्जवित्थडेसु वि, नवरं असंखेज्जा भाणियव्वा' इसी प्रकार पूर्वोक्तरीति के अनुसार असंख्यात योजन विस्तार वाले चार निरयावासों में असंख्यात नैरयिक उत्पन्न होते हैं। इसी अभिप्राय

છે. પરન્તુ વિદ્યમાનતા વિષયક જે આલાપકો છે, તે આ પાંચ અનુત્તર મહાનિરયાવાસો (મહાનરકાવાસોમાં) પંકપ્રભાના જેવાં જ છે. જેમ કે–

પ્રશ્ન–" આ પાંચ મહાનરકાવાસોમાં કેટલા આભિનિબોધિક જ્ઞાની છે? કેટલા શ્રુતજ્ઞાની છે? કેટલા અવધિજ્ઞાની છે?

ઉત્તર–ઉત્પાદ ઉદ્વર્ત્તના અને વિદ્યમાનતા વિષેના ત્રણ આલાપકોમાંનો જે વિદ્યમાનતા વિષયક ત્રીજો આલાપક છે તેમાં રત્નપ્રભા આદિ પૃથ્વીઓમાં જેવું કથન પહેલા ત્રણ જ્ઞાનોની વિદ્યમાનતાના વિષયમાં કરવામા આવ્યું છે, એવું જ કથન અધઃસપ્તમીમાં પણ કરવું જોઈએ, કારણ કે અહીં જે નારકો ઉત્પન્ન થાય છે, તેમને સમ્યગ્દર્શનની પ્રાપ્તિ થઈ શકે છે, તેથી તેની પ્રાપ્તિ થવાની શકયતાને કારણે ત્યાં આભિનિબોધિક આદિ ત્રણ જ્ઞાનોનો સદ્ભાવ કહ્યો છે. " एवं असंखेज्जवित्थडेसु वि, नवरं असंखेज्जा भाणियव्वा " એજ પ્રમાણે અસંખ્યાત યોજનના વિસ્તારવાળા બાકીના ચાર મહાનરકાવાસોમાં અસંખ્યાત નારકો ઉત્પન્ન થાય છે, ઇત્યાદિ કથન સમજવું જોઈએ અહીં " સંખ્યાત " ને

उपपद्यन्ते इत्यभिप्रायेणाह-नवरं-पूर्वापेक्षया विशेषस्तु अत्र असंख्येया भणितव्याः इति भावः ॥ सू० ५ ॥

रत्नप्रभादि विशेषवक्तव्यता ।

मूलम्-"इमीसे णं भंते! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु संखेज्जवित्थडेसु नरएसु किं सम्मद्दिट्ठी नेरइया उववज्जंति, मिच्छादिट्ठी नेरइया उववज्जंति, सम्मामिच्छादिट्ठी नेरइया उववज्जंति ? गोयमा! सम्मद्दिट्ठी वि नेरइया उववज्जंति, मिच्छादिट्ठी वि नेरइया उववज्जंति नो सम्मामिच्छादिट्ठी नेरइया उववज्जंति। इमीसे णं भंते! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु संखेज्जवित्थडेसु नरएसु किं सम्मद्दिट्ठी नेरइया उववज्जंति ? एवं चेव। इमीसे णं भंते! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु संखेज्जवित्थडा नरगा किं सम्मदिट्ठीहिं, नेरइएहिं अविरहिया, मिच्छादिट्ठीहिं नेरइएहिं अविरहिया, सम्मामिच्छादिट्ठीहिं नेरइएहिं अविरहिया वा? गोयमा! सम्मदिट्ठीहिं वि नेरइएहिं अविरहिया मिच्छादिट्ठीहिं वि नेरइएहिं अविरहिया, सम्मामिच्छादिट्ठीहिं नेरइएहिं अविरहिया, विरहिया वा। एवं असंखेज्जवित्थडेसु वि तिन्नि गमका भाणियव्वा। एवं सक्करप्पभाए वि, एवं जाव तमाए वि। अहे सत्तमाए णं भंते! पुढवीए पंचसु अणुत्तरेसु जाव संखेज्जवित्थडे नरए किं सम्मदिट्ठी

को लेकर 'नवरं असंखेज्जा भाणियव्वा' ऐसा कहा गया है। शेष वर्णन अप्रतिष्ठान के समान ही है ॥ सू० ५ ॥

બદલે "असंख्यातनेा" પ્રયેાગ સર્વત્ર થવેા જોઇએ. એજ વાત "नवरं असंखेज्जा भाणियव्वा" આ સૂત્રપાઠ દ્વારા વ્યક્ત કરવામાં આવી છે. ॥સૂ૦૫॥

नेरइया पुच्छा ? गोयमा! सम्मद्दिट्ठी नेरइया न उववज्जंति, मिच्छादिट्ठी नेरइया उववज्जंति, सम्मामिच्छादिट्ठी नेरइया न उववज्जंति। एवं उव्वट्टंति वि। अविरहिए जहेव रयणप्पभाए, एवं असंखेज्जवित्थडेसु वि तिन्नि गमगा॥सू० ६॥

छाया—अस्यां खलु भदन्त ! रत्नप्रभायां पृथिव्यां त्रिंशति निरयावासशतसहस्रेषु संख्येयविस्तृतेषु नरकेषु किं सम्यग्दृष्टयो नैरयिका उपपद्यन्ते ? मिथ्यादृष्टयो नैरयिका उपपद्यन्ते ? सम्यग्मिथ्यादृष्टयो नैरयिका उपपद्यन्ते ? गौतम ! सम्यग्दृष्टयोऽपि नैरयिका उपपद्यन्ते, मिथ्यादृष्टयोऽपि नैरयिका उपपद्यन्ते, नो सम्यग्मिथ्यादृष्टयो नैरयिका उपपद्यन्ते, अस्यां खलु भदन्त ! रत्नप्रभायां पृथिव्यां त्रिंशति निरयावासशतसहस्रेषु संख्येयविस्तृतेषु नरकेषु किं सम्यग्दृष्टयो नैरयिका उद्वर्तन्ते ? एवं चैव, अस्यां खलु भदन्त ! रत्नप्रभायां पृथिव्यां त्रिंशति निरयावासशतसहस्रेषु संख्येयविस्तृता नरकाः किं सम्यग्दृष्टिभिः नैरयिकैरविरहिताः, मिथ्यादृष्टिभिः नैरयिकैरविरहिताः, सम्यग्मिथ्यादृष्टिभिः नैरयिकैरविरहिता वा ? गौतम ! सम्यग्दृष्टिभिरपि नैरयिकैरविरहिताः, मिथ्यादृष्टिभिरपि नैरयिकैरविरहिताः सम्यग्मिथ्यादृष्टिभिः नैरयिकैरविरहिताः विरहिता वा, एवम् असंख्येयविस्तृतेष्वपि त्रीणि गमकानि भणितव्यानि, एवं शर्कराप्रभायामपि, एवं यावत्-तमायामपि, अधः सप्तम्यां खलु भदन्त ! पृथिव्यां पञ्चसु अनुत्तरेषु यावत् संख्येयविस्तृते नरके किं सम्यग्दृष्टयो नैरयिकाः पृच्छा ? गौतम ! सम्यग्दृष्टयो नैरयिका न उपपद्यन्ते, मिथ्यादृष्टयो नैरयिका उपपद्यन्ते, सम्यग् मिथ्यादृष्टयो नैरयिका न उपपद्यन्ते, एवम् उद्वर्तन्तेऽपि, अविरहितो यथैव रत्नप्रभायाम्, एवम् असंख्येयविस्तृतेष्वपि त्रीणि गमकानि। सू. ६॥

टीका—अथ रत्नप्रभादि नरकवक्तव्यतामेव सम्यग्दृष्ट्याद्यपेक्षया प्ररूपयितुमाह-' इमीसे णं भंते' इत्यादि। 'इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए

'इमीसे णं भंते !' इत्यादि।

टीकार्थ—सूत्रकार ने इस सूत्र द्वारा रत्नप्रभा आदि नरकों की वक्तव्यता को ही सम्यग्दृष्टि आदि की अपेक्षा लेकर प्ररूपित की है-

---

"इमीसे णं भंते ! इत्यादि—

ટીકાર્થ—સૂત્રકારે આ સૂત્રમાં રત્નપ્રભા આદિ નરકોની વક્તવ્યતાની જ સમ્યગ્દૃષ્ટિ આદિ જીવોની અપેક્ષાએ પ્રરૂપણા કરી છે. આ વિષયને અનુ-

निरयावाससयसहस्सेसु संखेज्जवित्थडेसु नरएसु किं सम्मद्दिट्ठी नेरइया उववज्जंति, मिच्छादिट्ठी नेरइया उववज्जंति, सम्मामिच्छादिट्ठी नेरइया उववज्जंति ?' हे भदन्त ! अस्यां खलु रत्नप्रभायां पृथिव्यां त्रिंशति निरयावासशतसहस्रेषु-नरकावासलक्षेषु संख्येयविस्तृतेषु-संख्येयविस्तारवत्सु नरकेषु किं सम्यग्दृष्टयो नैरयिका उपपद्यन्ते ? किं वा मिथ्यादृष्टयो नैरयिका उपपद्यन्ते ? किं वा सम्यग्मिथ्यादृष्टयो-मिश्रदृष्टयो नैरयिका उपपद्यन्ते ? भगवानाह-' गोयमा ! सम्मद्दिट्ठी वि नेरइया उववज्जंति, मिच्छादिट्ठी वि नेरइया उववज्जंति, नो सम्मामिच्छादिट्ठी नेरइया उववज्जंति ' हे गौतम ! रत्नप्रभायां संख्येयविस्तृतेषु नरकेषु सम्यग्दृष्टयोऽपि नैरयिका उपपद्यन्ते, अथ च मिथ्यादृष्टयोऽपि नैरयिका उपपद्यन्ते, किन्तु नो सम्यग्मिथ्यादृष्टयो नैरयिका उपपद्यन्ते, " न सम्ममिच्छो

इसमें गौतम ने प्रभु से ऐसा पूछा है-' इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु संखेज्जवित्थडेसु नरएसु किं सम्मद्दिट्ठी नेरइया उववज्जंति, मिच्छादिट्ठी नेरइया उववज्जंति, सम्मामिच्छादिट्ठी नेरइया उववज्जंति' हे भदन्त ! इस रत्नप्रभापृथिवी के ३० लाख नरकावासों के संख्यातयोजनविस्तारवाले नरकावासों में क्या समग्दृष्टि नारक उत्पन्न होते हैं ? या मिथ्यादृष्टि नारक उत्पन्न होते हैं ? या सम्यग्मिथ्यादृष्टि नारक उत्पन्न होते हैं ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-' गोयमा ' हे गौतम ! 'सम्मद्दिट्ठी वि नेरइया उववज्जंति, मिच्छादिट्ठी वि नेरइया उववज्जंति, नो सम्मामिच्छादिट्ठी नेरइया उववज्जंति' रत्नप्रभापृथिवी में के ३० लाख नरकावासो में के संख्यातयोजन विस्तारवाले नरकावासों में सम्यग्दृष्टि नैरयिक भी

લક્ષીને ગૌતમ સ્વામી મહાવીર પ્રભુને એવો પ્રશ્ન પૂછે છે કે-" इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु संखेज्जवित्थडेसु नरएसु किं सम्मद्दिट्ठी नेरइया उववज्जंति, मिच्छादिट्ठी नेरइया उववज्जंति, सम्मामिच्छादिट्ठी नेरइया उववज्जंति ?" હે ભગવન્ ! આ રત્નપ્રભા પૃથ્વીના ૩૦ લાખ નરકાવાસોમાંના જે સંખ્યાત યોજનના વિસ્તારવાળા નરકાવાસો છે, તેમાં શું સમ્યગ્દૃષ્ટિ નારકો ઉત્પન્ન થાય છે ? કે મિથ્યાદૃષ્ટિ નારકો ઉત્પન્ન થાય છે? કે સમ્યગ્મિથ્યાદૃષ્ટિ નારકો ઉત્પન્ન થાય છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-" गोयमा ! " હે ગૌતમ ! " सम्मद्दिट्ठी वि नेरइया उववज्जंति, मिच्छादिट्ठी वि नेरइया उववज्जंति, नो सम्मामिच्छादिट्ठी नेरइया उववज्जंति " રત્નપ્રભા પૃથ્વીના ૩૦ લાખ નરકાવાસોમાંના સંખ્યાત યોજનના વિસ્તારવાળા નરકાવાસોમાં સમ્યગ્દૃષ્ટિ નારકો પણ ઉત્પન્ન થાય છે, મિથ્યા-

कुणइ कालं" इति वचनप्रामाण्येन मिश्रदृष्टयवस्थायां मरणाभावात्। गौतमः पृच्छति-'इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु संखेज्जवित्थडेसु नरएसु किं सम्मदिट्ठी नेरइया उव्वट्टंति ? एवं चेव ' हे भदन्त ! अस्यां खलु रत्नप्रभायां पृथिव्यां त्रिंशति निरयावासशतसहस्रेषु त्रिंशल्लक्षनिरयावासेषु संख्येयविस्तृतेषु नरकेषु किं सम्यग्दृष्टयो नैरयिका उद्वर्तन्ते ? ' एवं चेव ' इति, एवमेव प्रश्नोत्तरं विज्ञेयम्, तथाहि-किं वा मिथ्यादृष्टयो नैरयिकाः उद्वर्तन्ते ? किं वा सम्यग्मिथ्यादृष्टयो नैरयिका उद्वर्तन्ते ? भगवानाह-रत्नप्रभायां पृथिव्यां ततः सम्यग्दृष्टयोऽपि नैरयिका उद्वर्तन्ते, अथ च मिथ्यादृष्टयोऽपि नैरयिका उद्वर्तन्ते, किन्तु नो सम्यग्मिथ्यादृष्टयो नैरयिका उद्वर्तन्ते। गौतमः पृच्छति-

---

उत्पन्न होते हैं, और मिथ्यादृष्टि नैरयिक भी उत्पन्न होते हैं, परन्तु सम्यग्मिथ्यादृष्टि नैरयिक उत्पन्न नहीं होते हैं। क्योंकि "न सम्ममिच्छो कुणइ कालं" इस वचन के अनुसार मिश्रदृष्टि अवस्था में मरण नहीं होता है. अब गौतम प्रभु से ऐसा पूछते हैं-'इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु संखेज्जवित्थडेसु नरएसु किं सम्मदिट्ठी नेरइया उव्वट्टंति' हे भदन्त ! इस रत्नप्रभापृथिवी के ३० लाख नरकावासों में के संख्यातयोजन विस्तारवाले नरकावासो में क्या सम्यग्दृष्टिनारक उद्वर्त्तना करते हैं ? या मिथ्यादृष्टि नारक उद्वर्त्तना करते है ? या सम्यक्मिथ्यादृष्टि नारक उद्वर्त्तना करते हैं ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-हे गौतम ! 'एवं चेव' रत्नप्रभापृथिवी में वहां से सम्यग्दृष्टिनैरयिक उद्वर्त्तना (निकलते) करते हैं, तथा मिथ्यादृष्टि नैरयिक भी

દૃષ્ટિ નારકો પણ ઉત્પન્ન થાય છે, પરન્તુ સમ્યગ્મિથ્યાદૃષ્ટિ નારકો ઉત્પન્ન થતા નથી, કારણ કે "न सम्ममिच्छो कुणइ कालं" આ વચન અનુસાર મિશ્રદૃષ્ટિ અવસ્થામાં મરણ થતું નથી.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-"इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु संखेज्जवित्थडेसु नरएसु किं सम्मदिट्ठी नेरइया उव्वट्टंति ?" હે ભગવન્ ! આ રત્નપ્રભા પૃથ્વીના જે ૩૦ લાખ નરકાવાસોમાંના જે સંખ્યાત યોજનના વિસ્તારવાળા નરકાવાસો છે, તેમાંથી શું સમ્યગ્દૃષ્ટિ નારકો ઉદ્વર્ત્તના કરે છે ? કે મિથ્યાદૃષ્ટિ નારકો ઉદ્વર્ત્તના કરે છે ? કે સમ્યગ્મિથ્યાદૃષ્ટિ નારકો ઉદ્વર્ત્તના કરે છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-"एवं चेव" હે ગૌતમ ! ત્યાંથી સમ્યગ્દૃષ્ટિ નારકો પણ ઉદ્વર્ત્તના કરે છે, મિથ્યાદૃષ્ટિ નારકો પણ ઉદ્વર્ત્તના કરે છે, પરન્તુ જે મિશ્રદૃષ્ટિ નારકો છે, તેઓ ત્યાંથી ઉદ્વર્ત્તના કરતા નથી-નીકળતા નથી.

'इमीसेणं भंते! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु संखेज्जवित्थडा नरगा किं सम्मद्दिट्ठीहिं नेरइएहिं अविरहिया वा मिच्छादिट्ठीहिं नेरइएहिं अविरहिया, सम्मामिच्छादिट्ठीहिं नेरइएहिं अविरहिया वा?' हे भदन्त! अस्यां खलु रत्नप्रभायां पृथिव्यां त्रिंशति निरयावासशतसहस्रेषु संख्येयविस्तृता नरकाः किं सम्यग्दृष्टिभिर्नैरयिकैरविरहिताः=विरहवर्जिता युक्ता इत्यर्थः सन्ति? किं वा मिथ्यादृष्टिभिर्नैरयिकैरविरहिताः सन्ति? किं वा सम्यग्मिथ्यादृष्टिभिर्नैरयिकैरविरहिता वा सन्ति? भगवानाह-गोयमा! सम्मद्दिट्ठीहिं वि नेरइएहिं अविरहिया, मिच्छादिट्ठीहिं वि नेरइएहिं अविरहिया, सम्मामिच्छादिट्ठीहिं नेरइएहिं अविरहिया, विरहिया वा' हे गौतम! रत्नप्रभायां पृथिव्यां संख्येयविस्तृता नरकाः सम्यग्दृष्टिभिरपि नैरयिकैरविरहिताः सन्ति, एवं मिथ्यादृष्टिभिरपि नैरयिकै-

---

उद्वर्त्तना करते हैं। परन्तु जो मिश्रदृष्टि नैरयिक हैं वे वहां से उद्वर्त्तना नहीं करते हैं। अब गौतम प्रभु से ऐसा पूछते हैं 'इमीसे णं भंते! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु संखेज्जवित्थडा नरगा किं सम्मद्दिट्ठीहिं नेरइएहिं अविरहिया, मिच्छादिट्ठीहिं नेरइएहिं अविरहिया, सम्मामिच्छादिट्ठीहिं नेरइएहिं अविरहिया वा' हे भदन्त! इस रत्नप्रभापृथिवी में जो ३० लाख नरकवास हैं सो उनमें जो संख्यात-योजन के विस्तारवाले नरकावास हैं, वे क्या सम्यग्दृष्टियों से सहित हैं? या मिथ्यादृष्टियों से या सम्यग्मिथ्यादृष्टियों से सहित हैं? इसके उत्तर में प्रभुने कहा-'गोयमा' हे गौतम! 'सम्मद्दिट्ठीहिं वि नेरइएहिं अविरहिया, मिच्छादिट्ठिहिं वि नेरइएहिं अविरहिया, सम्मामिच्छादिट्ठीहिं नेरइएहिं अविरहिया, विरहिया वा' रत्नप्रभापृथिवी में जो संख्यात-योजन के विस्तारवाले नरकावास हैं, वे सम्यग्दृष्टि नैरयिकों से भी

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-"इमीसे णं भंते! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु संखेज्जवित्थडा नरगा किं सम्मद्दिट्ठीहिं नेरइएहिं अविरहिया, मिच्छादिट्ठीहिं नेरइएहिं अविरहिया, सम्मामिच्छादिट्ठीहिं नेरइएहिं अविरहिया वि" હે ભગવન્! આ રત્નપ્રભા પૃથ્વીના ૩૦ લાખ નરકાવાસોમાંના સંખ્યાત યોજનના વિસ્તારવાળા નરકાવાસો શું સમ્યગ્દૃષ્ટિ નારકોથી યુક્ત છે? કે મિથ્યાદૃષ્ટિ નારકોથી યુક્ત છે? કે સમ્યગ્મિથ્યાદૃષ્ટિ નારકોથી યુક્ત છે?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-"गोयमा!" હે ગૌતમ! "सम्मद्दिट्ठीहिं वि नेरइएहिं अविरहिया, मिच्छादिट्ठीहिं वि नेरइएहिं अविरहिया, सम्मामिच्छादिट्ठीहिं नेरइएहिं अविरहिया, विरहिया वा" રત્નપ્રભા પૃથ્વીના જે સંખ્યાત યોજનના વિસ્તારવાળા નરકાવાસો છે, તેઓ સમ્યગ્દૃષ્ટિ નારકોથી પણ યુક્ત છે,

विरहिताः सन्ति, किन्तु सम्यग्मिथ्यादृष्टिभिर्नैरयिकैरविरहिताः-युक्ताः सन्ति, विरहिताः-शून्या वा सन्ति, तेषां कादाचित्कत्वेन विरहसंभवात्। 'एवं असंखेज्जवित्थडेसु तिन्नि गमगा भाणियव्वा' एवं-पूर्वोक्तरीत्यैव, असंख्येयविस्तृतेष्वपि नरकेषु त्रीणि गमकानि-उत्पादो-द्वर्तना-सत्ता विषयकास्त्रयोऽभिलापकरूपाः भणितव्याः-वक्तव्याः। 'एवं सक्करप्पभाए वि, एवं जाव तमाए वि' एवं-पूर्वोक्तवदेव, शर्कराप्रभायामपि पृथिव्यां त्रयोऽभिलापकाः-उत्पादोद्वर्तना-सत्ता विषयका वक्तव्याः, एवं-तथैव यावत्-वालुकाप्रभायां, पङ्कप्रभायां, धूमप्रभायां, तमःप्रभायामपि उत्पादो-द्वर्तना-सत्ता विषयकाः पूर्वोक्तास्त्रयोऽभिलापका वक्तव्याः। गौतमः पृच्छति-'अहे सत्तमाए णं भंते! पुढवीए पंचसु

अविरहित-सहित हैं, मिथ्यादृष्टि नैरयिकों से भी सहित हैं। परन्तु जो सम्यग्मिथ्यादृष्टि नैरयिक हैं उनसे कदाचित् सहित भी हैं, क्यों कि ये कादाचित्क होते हैं-इसलिये इनका विरह संभवता है। 'एवं असंखेज्जवित्थडेसु वि तिन्नि गमगा भाणियव्वा' इसी प्रकार पूर्वोक्त-रीति के अनुसार असंख्यात विस्तारवाले भी नरकावासों में उत्पाद; उद्वर्त्तना और सत्ताविषयक तीन अभिलापक कहना चाहिये 'एवं सक्करप्पभाए वि एवं जाव तमाए वि' इसी प्रकार से शर्कराप्रभा में भी उत्पाद, उद्वर्त्तना और सत्ताविषयक तीन अभिलापक कहना चाहिये. तथा इसी प्रकार से यावत् वालुकाप्रभा में पंकप्रभा में, धूमप्रभा में तमः प्रभा में भी उत्पाद, उद्वर्त्तना एवं सत्ता विषयक तीन अभिलापक कहना चाहिये। अब गौतमस्वामी प्रभु से ऐसा पूछते हैं-'अहे सत्तमाए णं'

મિથ્યાદૃષ્ટિ નારકોથી પણ યુક્ત હોય છે, પરન્તુ કયારેક તે નરકાવાસો સમ્યગ્મિથ્યાદૃષ્ટિ નારકોથી અવિરહિત (યુક્ત) પણ હોય છે અને કયારેક વિરહિત (રહિત) પણ હોય છે, કારણ કે સમ્યગ્મિથ્યાદૃષ્ટિઓનો ત્યાં કાયમ સદ્ભાવ જ હોય છે એવું નથી, કયારેક સદ્ભાવ અને કયારેક અભાવ હોવાને કારણે તેમનો વિરહ પણ સંભવી શકે છે. "एवं असंखेज्जवित्थडेसु वि तिन्नि गमगा भाणियव्वा" સંખ્યાત યોજનના વિસ્તારવાળા નરકાવાસોના જેવું જ કથન અસંખ્યાત યોજનના વિસ્તારવાળા નરકાવાસોના સમ્યગ્દૃષ્ટિ, મિથ્યાદૃષ્ટિ અને મિશ્રદૃષ્ટિ નારકોના ઉત્પાદ, ઉદ્વર્ત્તના અને વિદ્યમાનતાના વિષયમાં પણ સમજવું. "एवं सक्करप्पभाए वि, एवं जाव तमाए वि" એજ પ્રમાણે શર્કરાપ્રભા પૃથ્વીમાં પણ ઉત્પાદ, ઉદ્વર્ત્તના અને વિદ્યમાનતાના વિષયમાં ત્રણ આલાપકોનું કથન કરવું જોઈએ એજ પ્રકાર વાલુકાપ્રભા,

अणुत्तरेसु जाव संखेज्जवित्थडे नरए किं सम्मदिट्ठी नेरइया पुच्छा ?' हे भदन्त ! अधः सप्तम्यां खलु पृथिव्यां पञ्चसु अनुत्तरेषु-यावत्-महातिमहालयेषु महानिरयावासेषु काल-महाकाल-रौरव-महारौरवा-प्रतिष्ठानसंज्ञकेषु संख्येयविस्तृते नरके किं सम्यग्दृष्टयो नैरयिका उपपद्यन्ते ? किं वा मिथ्यादृष्टयो नैरयिका उपपद्यन्ते इति पृच्छा, भगवानाह-'गोयमा ! सम्मदिट्ठी नेरइया न उववज्जंति, मिच्छादिट्ठी नेरइया उववज्जंति, सम्मामिच्छादिट्ठी नेरइया न उववज्जंति' हे गौतम ! अधः सप्तम्यां पृथिव्यां सम्यग्दृष्टयो नैरयिका नोपपद्यन्ते, किन्तु मिथ्यादृष्टयो नैरयिका उपपद्यन्ते, सम्यग्मिथ्यादृष्टयो नैरयिकाश्च नोपपद्यन्ते, 'एवं उव्वट्टंति वि। अवि-

भंते ! पुढवीए पंचसु अणुत्तरेसु जाव संखेज्जवित्थडे नरए किं सम्मदिट्ठी नेरइया पुच्छा' हे भदन्त ! अधःसप्तमीपृथिवी में जो पांच अनुत्तर महाविशाल नरकावास कहे गये हैं कि जिनके नाम काल, महाकाल, रौरव, महारौरव एवं अप्रतिष्ठान हैं-इनमें क्या सम्यग्दृष्टि नारक उत्पन्न होते हैं ? या मिथ्यादृष्टि नारक उत्पन्न होते हैं ? या सम्यग्-मिथ्यादृष्टि नारक उत्पन्न होते हैं ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-'गोयमा' हे गौतम ! 'सम्मदिट्ठी नेरइया न उववज्जंति, मिच्छादिट्ठी नेरइया उववज्जंति, सम्मामिच्छादिट्ठी नेरइया न उववज्जंति' अधः सप्तमी पृथिवी में सम्यग्दृष्टि नैरयिकउत्पन्न नहीं होते हैं, किन्तु मिथ्यादृष्टि नैरयिक ही उत्पन्न होते हैं । सम्यग्मिथ्यादृष्टि नैरयिक

પંકપ્રભા, ધૂમપ્રભા અને તમઃપ્રભામાં પણ ઉત્પાદ, ઉદ્વર્ત્તના અને વિધમાનતા વિષયક ત્રણ અભિલાપોનું કથન થવું જોઈએ.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-"अहे सत्तमाए णं भंते ! पुढवीए पंचसु अणुत्तरेसु जाव संखेज्जवित्थडे नरए किं सम्मदिट्ठी नेरइया पुच्छा ?" હે ભગવન્ ! અધઃસપ્તમી પૃથ્વીના કાલ, મહાકાલ, રૌરવ, મહારૌરવ અને અપ્રતિષ્ઠાન નામના જે પાંચ અનુત્તર, મહાવિશાલ નરકાવાસો છે, તેમાંના સંખ્યાત યોજનના વિસ્તારવાળા નરકાવાસમાં (અપ્રતિષ્ઠાન નામના નરકાવાસમાં) શું સમ્યગ્દૃષ્ટિ નારકો ઉત્પન્ન થાય છે? કે મિથ્યાદૃષ્ટિ નારકો ઉત્પન્ન થાય છે? કે સમ્યગ્મિથ્યાદૃષ્ટિ નારકો ઉત્પન્ન થાય છે?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-"गोयमा !" હે ગૌતમ ! "सम्मदिट्ठी नेरइया न उववज्जंति, मिच्छादिट्ठी नेरइया उववज्जंति, सम्मामिच्छादिट्ठी नेरइया न उववज्जंति" અધઃસપ્તમીના તે મહાનરકાવાસોમાં સમ્યગ્દૃષ્ટિ નારકો ઉત્પન્ન થતા નથી, સમ્યગ્મિથ્યાદૃષ્ટિ નારકો પણ ઉત્પન્ન થતા નથી, પરન્તુ મિથ્યાદૃષ્ટિ

रहिए जहेव रयणप्पभाए। एवं असंखेज्जवित्थडेसु वि तिन्नि गमगा' एवं-पूर्वोत्पत्तिरीत्यैव 'उद्वर्तनेऽपि' इति-उद्वर्त्तनायामपि वक्तव्याः तथा च अधः सप्तम्यां पृथिव्यां सम्यग्दृष्टयो नैरयिका नोद्वर्तन्ते, एवं सम्यग्मिथ्यादृष्टयोऽपि नैरयिका नोद्वर्तन्ते, अपि तु मिथ्यादृष्टय एव नैरयिका उद्वर्तन्ते। अविरहितवक्तव्यता च अधःसप्तम्यां यथा रत्नप्रभायां प्रतिपादिता तथैव प्रतिपादनीया, तथा च अधः सप्तम्यां पृथिव्यां संख्येयविस्तृतो नरकः सम्यग्दृष्टिभिरपि नैरयिकैरविरहितः, मिथ्यादृष्टिभिरपि नैरयिकैरविरहितो वर्तते, सम्यग्मिथ्यादृष्टिभिर्नैरयिकैस्तु अविरहितो विरहितो वा भवति, तेषां कादाचित्कत्वेन विरहसंभवात्। एवं-तथैव-

भी उत्पन्न नहीं होते हैं। 'एवं उव्वट्टंति वि' अविरहिए जहेव रयणप्पभाए, एवं असंखेज्जवित्थडेसु वि तिन्नि गमगा' इसी प्रकार-से पूर्वोत्पत्ति की रीति के अनुसार ही यहां उद्वर्त्तना में भी कहना चाहिये. तथा च-अधःसप्तमीपृथिवी में सम्यग्दृष्टि नैरयिक उद्वर्त्तना नहीं करते हैं, सम्यग्मिथ्यादृष्टि नैरयिक भी उद्वर्त्तना नहीं करते हैं, किन्तु मिथ्यादृष्टि नैरयिक ही उद्वर्त्तना करते हैं। अविरहितवक्तव्यता यहां अधःसप्तमीपृथिवी में, जैसी रत्नप्रभा पृथिवी में यह कही गई है वैसी ही कहनी चाहिये. तथा च-अधःसप्तमी पृथिवी में संख्यात योजन का विस्तारवाला नरकावास में सम्यग्दृष्टियों से भी अविरहित होता है, मिथ्यादृष्टियों से भी अविरहित होता है. परन्तु सम्यग्मिथ्यादृष्टियों से वह विरहित भी रहता है और अविरहित भी रहता है। क्योंकि ये कादाचित्क होते हैं-अतः इनके विरह की यहां संभवना रहती है।

ના૨૬ો જ ઉત્પન્ન થાય છે. "एवं उव्वट्टंति वि, अविरहिए जहेव रयणप्पभाए, एवं असंखेज्जवित्थडेसु वि तिन्नी गमगा" આ પૂર્વોક્ત રીતે જ અહીં ઉદ્વર્ત્તનાનું કથન પણ કરવું જોઈએ એટલે કે અધઃસપ્તમી પૃથ્વીના સંખ્યાત યોજનના વિસ્તારવાળા નરકાવાસોમાંથી સમ્યગ્દૃષ્ટિ નારકો પણ ઉદ્વર્ત્તના કરતા નથી, સમ્યગ્મિથ્યાદૃષ્ટિ નારકો પણ ઉદ્વર્ત્તના કરતા નથી, પરન્તુ મિથ્યાદૃષ્ટિ નારકો જ ઉદ્વર્ત્તના કરે છે. વિરહિત અને અવિરહિત વિષયક વક્તવ્યતા અહીં રત્નપ્રભા જેવી જ સમજવી. એટલે કે અધઃસપ્તમીના સંખ્યાત યોજનના વિસ્તારવાળા નરકાવાસો સમ્યગ્દૃષ્ટિ નારકોથી અવિરહિત (યુક્ત) છે. મિથ્યાદૃષ્ટિ નારકોથી પણ યુક્ત છે, પરન્તુ તે નરકાવાસો સમ્યગ્મિથ્યાદૃષ્ટિ નારકોથી યુક્ત પણ હોય છે અને રહિત પણ હોય છે. કારણ કે તેઓનું કયારેક ત્યાં અસ્તિત્વ હોય છે અને કયારેક હોતું નથી, તેથી નરકાવાસો

सङ्ख्येयविस्तृतवदेव असंख्येयविस्तृतेष्वपि अधः सप्तम्याः नरकेषु त्रीणि गमकानि-उत्पादो-द्वर्तना-सत्ता विषयका अभिलापाः वक्तव्या इति भावः ॥सू० ६॥

नरकवक्तव्यता।

मूलम्-से णूणं भंते! कण्हलेस्से नीललेस्से जाव सुक्कलेस्से भवित्ता कण्हलेस्सेसु नेरइएसु उववज्जइ? हंता, गोयमा! कण्हलेस्से जाव उववज्जइ, से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ-कण्हलेस्से जाव उववज्जइ? गोयमा! लेस्सट्ठाणेसु संकिलिस्समाणेसु संकिलिस्समाणेसु कण्हलेस्से परिणमइ, कण्हलेस्सं परिणमइत्ता कण्हलेस्सेसु नेरइएसु उववज्जइ, से तेणट्ठेणं जाव उववज्जइ। से णूणं भंते! कण्हलेस्से जाव सुक्कलेस्से भवित्ता, नीललेस्सेसु नेरइएसु उववज्जइ? हंता, गोयमा! जाव उववज्जइ। से केणट्ठेणं जाव उववज्जइ? गोयमा! लेस्सट्ठाणेसु संकिलिस्समाणेसु वा, विसुज्झमाणेसु वा नीललेस्सं परिणमइ, नीललेस्सं परिणमइत्ता नीललेस्सेसु नेरइएसु उववज्जइ, से तेणट्ठेणं गोयमा! जाव उववज्जइ। से णूणं भंते! कण्हलेस्से नील जाव भवित्ता काउलेस्सेसु नेरइएसु उववज्जइ, एवं जहा नीललेस्साए तहा काउलेस्सा वि भाणियव्वा जाव से तेणट्ठेणं जाव उववज्जइ, सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति ॥सू० ७॥

तेरसमे पढमो उद्देसो समत्तो ॥१३-१॥

अधःसप्तमी के संख्यातयोजन के विस्तारवाले नरकावास की तरह ही असंख्यातयोजन के विस्तारवाले नरकावासों में भी उत्पाद, उद्वर्तना एवं सत्ता विषयक तीन आलापक कहना चाहिये. ॥सू० ६॥

તેમનાથી રહિત પણ સંભવી શકે છે. અધઃસપ્તમીના અસંખ્યાત યોજનના નરકાવાસોમાં પણ ઉત્પાદ, ઉદ્વર્તના અને વિદ્યમાનતા વિષયક ત્રણ આલાપકો, સંખ્યાત યોજનના વિસ્તારવાળા નરકાવાસો જેવાં જ સમજી લેવા. ॥સૂ૦ ૬॥

छाया—तत् नूनं भदन्त ! कृष्णलेश्यः' नीललेश्यो यावत् शुक्ललेश्यो भूत्वा कृष्णलेश्येषु नैरयिकेषु उपपद्यते ? हंत, गौतम ! कृष्णलेश्यो यावत्-उपपद्यते, तत् केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते कृष्णलेश्यो यावत् उपपद्यते ? गौतम ! लेश्यास्थानेषु संक्लिश्यत्सु संक्लिश्यत्सु कृष्णलेश्यां परिणमति, कृष्णलेश्यां परिणम्य कृष्णलेश्येषु नैरयिकेषु उपपद्यते, तत् तेनार्थेन यावत् उपपद्यते, तत् नूनं भदन्त ! कृष्णलेश्यो यावत् शुक्ललेश्यो भूत्वा नीललेश्येषु नैरयिकेषु उपपद्यते ? हन्त, गौतम ! यावत् उपपद्यते, तत् केनार्थेन यावत्-उपपद्यते ? गौतम ! लेश्यास्थानेषु संक्लिश्यत्सु वा, विशुद्धयत्सु वा नीललेश्यां परिणमति, नीललेश्यां परिणम्य नीललेश्येषु नैरयिकेषु उपपद्यते, तत् तेनार्थेन गौतम ! यावत् उपपद्यते, तत् नूनं भदन्त ! कृष्णलेश्यो नील यावत् भूत्वा कापोतलेश्येषु नैरयिकेषु उपपद्यते ? एवं यथा नीललेश्यः तथा कापोतलेश्योऽपि भणितव्यः यावत्-तत् तेनार्थेन यावत् यथा उपपद्यते, तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति ॥ सू० ७ ॥

त्रयोदशशतके प्रथमोद्देशकः समाप्तः ॥ १३-१ ॥

टीका—अथ नारकवक्तव्यतामेव प्रकारान्तरेण प्ररूपयितुमाह-'से णूणं भंते ! कण्हलेस्से नीललेस्से जाव सुक्कलेस्से भवित्ता कण्हलेस्सेसु नेरइएसु उववज्जइ ?' गौतमः पृच्छति-हे भदन्त ! तत् अथ, नूनं खलु कृष्णलेश्यः-कृष्णलेश्यावान्, नीललेश्यावान् यावत्-कापोतलेश्यावान्, पद्मलेश्यावान्, तेजोलेश्यावान्

नरकवक्तव्यता-

'से णूणं भंते ! कण्हलेस्से' इत्यादि ।

टीकार्थ—इस सूत्र द्वारा सूत्रकार ने नारकसंबंधी वक्तव्यता को ही प्रकारान्तर से प्रदर्शित किया है-इसमें गौतम ने प्रभु से ऐसा पूछा है-'से णूणं भंते कण्हलेस्से नीललेस्से जाव सुक्कलेस्से भवित्ता कण्हलेस्सेसु नेरइएसु उववज्जइ' हे भदन्त ! कृष्णलेश्यावाला, नीललेश्यावाला यावत् कापोतलेश्यावाला, पद्मलेश्यावाला, तेजोलेश्यावाला, शुक्ल-

---

—નરકવક્તવ્યતા—

"से णूणं भंते ! कण्हलेस्से" ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ—આ સૂત્ર દ્વારા સૂત્રકારે નારકોની લેશ્યાઓના વિષયમાં પ્રરૂપણા કરી છે. આ વિષયને અનુલક્ષીને ગૌતમ સ્વામી મહાવીર પ્રભુને એવો પ્રશ્ન પૂછે છે કે-' से णूणं भंते ! कण्हलेस्से नीललेस्से जाव सुक्कलेस्से भवित्ता कण्हलेस्सेसु नेरइएसु उववज्जंति ?" હે ભગવન્ ! શું જીવ કૃષ્ણલેશ્યાવાળો, ...

शुक्ललेश्यावान् भूत्वा किं कृष्णलेश्येषु-कृष्णलेश्यावत्सु नैरयिकेषु उपपद्यते ? भगवानाह-'हंता, गोयमा ! कण्हलेस्से जाव उववज्जइ' हे गौतम ! हन्त-सत्यम्, कृष्णलेश्यावान् यावत् नीललेश्यावान्, कापोतलेश्यावान्, तेजोलेश्यावान्, पद्मलेश्यावान्, शुक्ललेश्यावान् भूत्वा कृष्णलेश्यावत्सु नैरयिकेषु उपपद्यते। गौतमः पृच्छति-'से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ-कण्हलेस्से जाव उववज्जइ' हे भदन्त! तत्-अथ, केनार्थेन एवमुच्यते-कृष्णलेश्यो यावत्-नीललेश्यः, कापोतलेश्यः, तेजोलेश्यः पद्मलेश्यः, शुक्ललेश्यो भूत्वा कृष्णलेश्येषु नैरयिकेषु उपपद्यते इति ? भगवानाह-'गोयमा ! लेस्सट्ठाणेसु संकिलिस्समाणेसु संकिलिस्समाणेसु कण्हलेस्सं परिणमइ, कण्हलेस्सं परिणमइत्ता कण्हलेस्सेसु नेरइएसु उववज्जइ, हे गौतम !

लेश्यावाला होकर के जीव क्या कृष्णलेश्यावाले नैरयिकों में उत्पन्न हो जाता है ? इसके उत्तर में प्रभु करते हैं-'हंता, गोयमा ! कण्हलेस्से जाव उववज्जइ' हां गौतम ! कृष्णलेश्यावाला यावत्-नीललेश्यावाला, तेजोलेश्यावाला पद्मलेश्यावाला, शुक्लेश्यावाला होकर के जीव कृष्णलेश्यावाले नैरयिकों में उत्पन्न हो जाता है। अब गौतम प्रभु से ऐसा पूछते हैं-'से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ, कण्हलेस्से जाव उववज्जइ' हे भदन्त ! ऐसा आप किस कारण से कहते हैं कि कृष्णलेश्यावाला, नीललेश्यावाला, कापोतलेश्यावाला, पीतलेश्यावाला, पद्मलेश्यावाला, शुक्ललेश्यावाला होकर के जीव कृष्णलेश्यावाले नैरयिकों में उत्पन्न हो जाता है ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-'गोयमा' हे गौतम ! 'लेस्सट्ठाणेसु संकिलिस्समाणेसु संकिलिस्समाणेसु कण्हलेस्सं परिणमइ,

---

નીલલેશ્યાવાળો, કાપોતલેશ્યાવાળો, તેજોલેશ્યાવાળો, પદ્મલેશ્યાવાળો અને શુકલ-લેશ્યાવાળો થઈને શું કૃષ્ણલેશ્યાવાળા નારકોમાં ઉત્પન્ન થઈ જાય છે ખરો ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-"હંતા, ગોયમા ! કણ્હલેસ્સે જાવ ઉવવજ્જઇ" હા, ગૌતમ ! કૃષ્ણલેશ્યાવાળો, નીલલેશ્યાવાળો, કાપોતલેશ્યાવાળો, તેજોલેશ્યાવાળો, પદ્મલેશ્યાવાળો અને શુકલલેશ્યાવાળો થઈને જીવ કૃષ્ણલેશ્યાવાળા નારકોમાં ઉત્પન્ન થઈ જાય છે.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-"से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुचइ, कण्हलेस्से जाव उववज्जइ" હે ભગવન્ ! આપ શા કારણે એવું કહો છો કે કૃષ્ણલેશ્યાવાળો, નીલલેશ્યાવાળો, કાપોતલેશ્યાવાળો, તેજોલેશ્યાવાળો, પદ્મલેશ્યાવાળો, અથવા શુકલલેશ્યાવાળો થઈને જીવ કૃષ્ણલેશ્યાવાળા નારકોમાં ઉત્પન્ન થઈ જાય છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-"गोयमा !" હે ગૌતમ ! "लेस्सट्ठाणेसु संकिलिस्समाणेसु संकिलिस्समाणेसु कण्हलेस्सं परिणमइ, कण्हलेस्सं परिणमइत्ता कण्ह-

लेश्यास्थानेषु लेश्याभेदेषु संक्लिश्यत्सु संक्लिश्यत्सु पौनः पुन्येन संक्लेशम् अविशुद्धिं प्राप्नुवत्सु जीवः कृष्णलेश्यां परिणमति-प्राप्नोति, कृष्णलेश्यां परिणम्य-प्राप्य, कृष्णलेश्येषु नैरयिकेषु उपपद्यते, 'से तेणट्ठेणं जाव उववज्जइ' तत्-अथ, तेनार्थेन यावत्-एवमुच्यते यावत् कृष्णलेश्येषु नैरयिकेषु उपपद्यते, गौतमः पृच्छति-'से णूणं भंते! कण्हलेस्से जाव सुक्कलेस्से भवित्ता नीललेस्सेसु नेरइएसु उववज्जइ?' हे भदन्त! तत् अथ, नूनं खलु किम् कृष्णलेश्यो यावत्-शुक्ललेश्यो भूत्वा नीललेश्येषु नैरयिकेषु उपपद्यते? भगवानाह-'हंता, गोयमा! जाव उववज्जइ' हे गौतम! हन्त-सत्यम्, यावत्-कृष्णलेश्यादिमान् भूत्वा नीललेश्येषु नैरयिकेषु उपपद्यते, गौतमः पृच्छति-'से केणट्ठेणं जाव उववज्जइ?'

कण्हलेस्सं परिणमइत्ता कण्हलेस्सेसु नेरइएसु उववज्जइ' लेश्या के भेद पुनः पुनः अविशुद्धि को प्राप्त होते रहते हैं उनकी अविशुद्धि में जीव कृष्णलेश्या को प्राप्त करता है, कृष्णलेश्या को प्राप्त करके फिर कृष्णलेश्यावाले नैरयिकों में उत्पन्न हो जाता है। 'से तेणट्ठेणं जाव उववज्जइ' इसी कारण हे गौतम! मैंने ऐसा कहा है यावत् वह कृष्णलेश्यावाले नैरयिकों में उत्पन्न होता है। अब गौतमप्रभु से ऐसा पूछते हैं-'से णूणं भंते! कण्हलेस्से जाव सुक्कलेस्से भवित्ता नीललेस्सेसु नेरइएसु उववज्जइ' हे भदन्त! क्या कृष्णलेश्यावाला, यावत् शुक्ललेश्यावाला होकर के जीव नीललेश्यावाले नैरयिकों में उत्पन्न हो जाता है? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-'हंता गोयमा! जाव उववज्जइ' हां, गौतम! कृष्णादिलेश्यावाला होकर के जीव नीललेश्यावाले नैरयिकों में उत्पन्न हो जाता है। अब गौतम प्रभु से ऐसा पूछते हैं-

लेस्सेसु नेरइएसु उववज्जइ" લેશ્યાના ભેદો ફરી ફરીને અવિશુદ્ધિ પ્રાપ્ત કરતા રહે છે. તેમની અવિશુદ્ધિ વખતે જીવ કૃષ્ણલેશ્યા પ્રાપ્ત કરે છે, કૃષ્ણલેશ્યા પ્રાપ્ત કરીને તે કૃષ્ણલેશ્યાવાળા નારકોમાં ઉત્પન્ન થઈ જાય છે. "से तेणट्ठेणं जाव उववज्जइ" હે ગૌતમ! તે કારણે મેં એવું કહ્યું છે કે કૃષ્ણથી લઈને શુકલ પર્યન્તની લેશ્યાવાળો થઈને જીવ કૃષ્ણલેશ્યાવાળા નારકોમાં ઉત્પન્ન થઈ જાય છે.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-"से णूणं भंते! कण्हलेस्से जाव सुक्कलेस्से भवित्ता नीललेस्सेसु नेरइएसु उववज्जइ?" હે ભગવન્! કૃષ્ણલેશ્યાથી લઈને શુકલલેશ્યા પર્યન્તની લેશ્યાવાળો થઈને શું જીવ નીલલેશ્યાવાળા નારકોમાં ઉત્પન્ન થઈ જાય છે ખરો?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-"हंता, गोयमा! जाव उववज्जइ" હા, ગૌતમ! કૃષ્ણાદિ લેશ્યાવાળો થઈને જીવ નીલલેશ્યાવાળા નારકોમાં ઉત્પન્ન થઈ જાય છે.

तत् केनार्थेन यावत्-कृष्णलेश्यादिमान् भूत्वा नीललेश्येषु नैरयिकेषु उपपद्यते ? भगवानाह-' गोयमा ! लेस्सट्ठाणेसु संकिलिस्समाणेसु वा विसुज्झमाणेसु वा नीललेस्सं परिणमइ, नीललेस्सं परिणमइत्ता नीललेस्सेसु नेरइएसु उववज्जइ ' हे गौतम ! लेश्यास्थानेषु लेश्याभेदेषु संक्लिश्यत्सु वा-अविशुद्धिं गच्छत्सु, विशुध्यत्सु वा-विशुद्धिं गच्छत्सु वा. प्रशस्तलेश्याभेदेषु अविशुद्धिं गच्छत्सु अप्रशस्तलेश्याभेदेषु विशुद्धिं गच्छत्सु नीललेश्यां परिणमति-प्राप्नोति, नीललेश्यां परिणम्य-प्राप्य, नीललेश्येषु नैरयिकेषु उपपद्यते, ' से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव उववज्जइ ' हे गौतम ! तत्-अथ, तेनार्थेन, यावत्-एवमुच्यते-कृष्णलेश्यादिमान् भूत्वा नीललेश्येषु नैरयिकेषु उपपद्यते । गौतमः पृच्छति-' से णूणं भंते ! कण्ह-

---

'से केणट्ठेणं जाव उववज्जइ' हे भदन्त ! ऐसा आप किस कारण से कहते हैं कि यावत्-कृष्णादिलेश्यावाला होकर के जीव नीललेश्यावाले नैरयिकों में उत्पन्न हो जाता है ? इसके उत्तर में प्रभु कहते है-'गोयमा' लेस्सट्ठाणेसु संकिलिस्समाणेसु वा विसुज्झमाणेसु वा नीललेस्सं परिणमइ, नीललेस्सं परिणमइत्ता नीललेस्सेसु नेरइएसु उववज्जइ' हे गौतम ! लेश्यास्थान-लेश्याभेद अविशुद्धि को अथवा विशुद्धि को प्राप्त जब होते रहते हैं-अर्थात् प्रशस्त लेश्यास्थान- अविशुद्धि को व जब प्राप्त होते रहते हैं-तब नीललेश्या को जीव प्राप्त करता है, नीललेश्या को प्राप्त करके नीललेश्यावाले नैरयिकों में यह उत्पन्न हो जाता है । 'से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव उववज्जइ' इस कारण हे गौतम ! मैंने ऐसा कहा है कि यावत्-कृष्णलेश्या आदिवाला हो करके जीव

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-" से केणट्ठेणं भंते ! जाव उववज्जइ " હે ભગવન્! આપ શા કારણે એવું કહો છો કે કૃષ્ણાદિ લેશ્યા વાળો થઈને જીવ નીલ લેશ્યાવાળા નારકોમાં ઉત્પન્ન થઈ જાય છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-" गोयमा ! " હે ગૌતમ ! " लेस्सट्ठाणेसु संकिलिस्समाणेसु वा विसुज्झमाणेसु वा नीललेस्सं परिणमइ, नीललेस्सं परिणमइत्ता नीललेस्सेसु नेरइएसु उववज्जइ " જ્યારે લેશ્ય ભેદો (લેશ્યાસ્થાન) અવિશુદ્ધિ અથવા વિશુદ્ધિને પ્રાપ્ત કરતા રહે છે, એટલે કે જ્યારે પ્રશસ્ત લેશ્યાસ્થાનો અવિશુદ્ધિને અને અપ્રશસ્ત લેશ્યાસ્થાનો વિશુદ્ધિને પ્રાપ્ત કરતા રહે છે, ત્યારે જીવ નીલલેશ્યા પ્રાપ્ત કરે છે, અને નીલલેશ્યા પ્રાપ્ત કરીને જીવ નીલલેશ્યાવાળા નારકોમાં ઉત્પન્ન થઈ જાય છે. " से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव उववज्जइ " હે ગૌતમ ! તે કારણે મેં એવું કહ્યું છે કે કૃષ્ણાદિ લેશ્યાવાળો થઈને જીવ નીલલેશ્યાવાળા નારકોમાં ઉત્પન્ન થઈ જાય છે.

लेस्से नील जाव भवित्ता काउलेस्सेसु नेरइएसु उववज्जइ ?' हे भदन्त ! तत् अथ, नूनं खलु किं कृष्णलेश्यो, नील यावत् नीलादिलेश्यावान् भूत्वा कापोतलेश्येषु नैरइकेषु उपपद्यते ? भगवानाह-' एवं जहा नीललेस्साए तहा काउलेस्साए वि भाणियव्वा, जाव से तेणट्ठेणं जाव उववज्जइ' हे गौतम ! एवं-पूर्वोक्तरीत्यैव, यथा नीललेश्यां तथा कापोतलेश्याऽपि भणितव्या, यावत् हन्त, गौतम ! कृष्णलेश्यादिमान् भूत्वा कापोतलेश्येषु नैरयिकेषु उपपद्यते । तत् केनार्थेन एवमुच्यते-कृष्णलेश्यादिमान् भूत्वा कापोतलेश्येषु नैरयिकेषु उपपद्यते ? गौतम ! लेश्याभेदेषु संक्लिश्यत्सु अविशुद्धिं गच्छत्सु विशुध्यत्सु विशुद्धिं गच्छत्सु वा,

---

नीललेश्यावाले नैरयिकों में उत्पन्न होता है । अब गौतम प्रभु से ऐसा पूछते हैं-'से णूणं भंते ! कण्हलेस्से नील जाव भवित्ता काउलेस्सेसु नेरइएसु उववज्जइ' हे भदन्त ! क्या कृष्णलेश्यावाला यावत् नीलादिलेश्यावाला होकर के जीव कापोतलेश्यावाले नैरयिकों में उत्पन्न होता है ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-'एवं जहा नीललेस्साए तहा काउलेस्साए वि भाणियव्वा, जाव से तेणट्ठेणं जाव उववज्जइ' हे गौतम ! जैसा कथन नीललेश्या में किया गया है-वैसा ही कथन कापोतलेश्या में भी करना चाहिये यावत् हां, गौतम ! कृष्णलेश्यादिवाला होकर के भी जीव कापोतलेश्यावाले नैरयिकों में उत्पन्न होता है । हे भदन्त ! ऐसा आप किस कारण से कहते हैं कि कृष्णादिलेश्यावाला होकर के जीव कापोतलेश्यावाले नैरयिकों में उत्पन्न होता है ? तब इस पर प्रभु कहते हैं-गौतम ! लेश्यास्थान-लेश्याभेद जब अविशुद्धि

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-" से णूणं भंते ! कण्हलेस्से नील जाव भवित्ता काउलेस्सेसु नेरइएसु उववज्जइ " હે ભગવન્ ! શું કૃષ્ણ, નીલ આદિ લેશ્યાવાળો થઈને જીવ કાપોતલેશ્યાવાળા નારકોમાં ઉત્પન્ન થાય છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-" एवं जहा नीललेस्साए तहा काउलेस्साए वि भाणियव्वा, जाव से तेणट्ठेणं जाव उववज्जइ " હા, ગૌતમ ! જેવું કથન નીલલેશ્યામાં કરવામાં આવ્યું છે, એવું જ કથન કાપોતલેશ્યામાં પણ કરવું જોઈએ એટલે કે કૃષ્ણાદિ લેશ્યાવાળો થઈને પણ જીવ કાપોતલેશ્યાવાળાં નારકોમાં ઉત્પન્ન થાય છે.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-હે ભગવન્ ! આપ શા કારણે એવું કહો છો કે કૃષ્ણાદિ લેશ્યાવાળો થઈને જીવ કાપોતલેશ્યાવાળા નારકોમાં ઉત્પન્ન થાય છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-હે ગૌતમ ! જ્યારે લેશ્યાસ્થાન (લેશ્યાભેદ) અવિશુદ્ધિને અથવા વિશુદ્ધિને પ્રાપ્ત કરતા રહે છે, ત્યારે જીવ કાપોત-

प्रशस्तलेश्याभेदेषु अविशुद्धिं गच्छत्सु, अप्रशस्तलेश्याभेदेषु च विशुद्धिं गच्छत्सु कापोतलेश्यां परिणमति, कापोतलेश्यां परिणम्य कापोतलेश्येषु नैरयिकेषु उपपद्यते, तत्-अथ, तेनार्थेन यावत्-एवमुच्यते-कृष्णलेश्यादिमान् भूत्वा कापोतलेश्येषु नैरयिकेषु उपपद्यते इति भावः। अन्ते गौतम आह-' सेवं भंते ? सेवं भंते ! त्ति ' हे भदन्त ! तदेवं भवदुक्तं सर्वं सत्यमेव, हे भदन्त ! तदेवं-भवदुक्तं सर्वं सत्यमेव ॥ सू० ७ ॥

॥ इति श्री विश्वविख्यात-जगद्वल्लभ-प्रसिद्धवाचक पञ्चदशभाषा-
कलितललितकलापालापकप्रविशुद्धगद्यपद्यनैकग्रन्थनिर्मापक,
वादिमानमर्दक श्री शाहू छत्रपति कोल्हापुरराजप्रदत्त-
'जैनाचार्य' पदभूषित—कोल्हापुरराजगुरु-
बालब्रह्मचारि—जैनाचार्य—जैनधर्मदिवाकर
-पूज्य श्री घासीलालव्रतिविरचितायां
श्री "भगवतीसूत्रस्य" प्रमेयचन्द्रिका-
ख्यायां व्याख्यायां त्रयोदशशतके
प्रथमोद्देशकः समाप्तः ॥१३-१॥

को, अथवा विशुद्धि को प्राप्त होते रहते हैं-तब जीव कापोतलेश्या को प्राप्त करता है, कापोतलेश्या को प्राप्त करके वह कापोतलेश्यावाले नैरयिकों में उत्पन्न होता है। अब 'अन्त में गौतम प्रभु से कहते हैं-'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति हे भदन्त आपका कहा हुआ यह सब कथन सत्य ही है, हे भदन्त ! आपका कहा हुआ सब सत्यही है ॥ सू० ७॥
जैनाचार्य जैनधर्मदिवाकर पूज्यश्री घासीलालजी महाराज कृत
"भगवतीसूत्र" की प्रमेयचन्द्रिका व्याख्याके तेरहवें शतक का
॥ पहेला उद्देशक समाप्त १३-१ ॥

લેશ્યાને પ્રાપ્ત કરે છે, અને કાપોતલેશ્યાને પ્રાપ્ત કરીને તે જીવ કાપોતલેશ્યાવાળા નારકોમાં ઉત્પન્ન થઇ જાય છે.

ગૌતમ સ્વામી કહે છે કે-"सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति" હે ભગવન્! આપે આ વિષયને અનુલક્ષીને જે પ્રતિપાદન કર્યું, તે સત્ય છે. હે ભગવન્! આપની વાત સર્વથા સત્ય જ છે. ॥સૂ૦૭॥
જૈનાચાર્ય જૈનધર્મદિવાકર પૂજ્યશ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ કૃત "ભગવતીસૂત્ર"ની પ્રમેયચન્દ્રિકા વ્યાખ્યાના તેરમા શતકનો પહેલો ઉદ્દેશો સમાપ્ત ॥૧૩-૧॥

अथ द्वितीयोद्देशकः प्रारभ्यते-

त्रयोदशशतके द्वितीयोद्देशकस्य संक्षिप्तविवरणम्,

देवानां प्रकारवक्तव्यता, भवनवासिदेवानां प्रकारवक्तव्यता, असुरकुमारावासवक्तव्यता, असुरकुमारावासेषु उत्पादवक्तव्यता, असुरकुमारावासेषु उद्वर्तनावक्तव्यता, नागकुमारादीनामावासवक्तव्यता, वानव्यन्तरदेवानामावासवक्तव्यता, एकसमयेन वानव्यन्तरदेवानामुत्पादवक्तव्यता, ज्योतिषिकदेवानां विमानावासवक्तव्यता, सौधर्मदेवलोकेषु विमानावासवक्तव्यता, एकसमयेन सौधर्मादिसहस्रारान्तरेषु देवानामुत्पादवक्तव्यता, आनतप्राणतयोर्देवलोकयोर्विमानावासवक्तव्यता, ग्रैवेयकविमानावासवक्तव्यता, अनुत्तरविमानवक्तव्यता, पञ्चानुत्तरविमानेषु एक

तेरहवें शतकका प्रारंभ-

उद्देशा दूसरा

तेरहवें शतक के इस द्वितीय उद्देशक में जो विषय वर्णित हुआ है, उस का विवरण संक्षेप से इस प्रकार से है-देवों के प्रकार की वक्तव्यता, भवनवासी देवों के प्रकार की वक्तव्यता, असुरकुमारावासों में उत्पादवक्तव्यता, असुरकुमारावासों में उद्वर्त्तना-(च्यवन) वक्तव्यता, नागकुमारादिकों के आवास की वक्तव्यता, वानव्यन्तर देवों के आवास की वक्तव्यता, एक समय में वानव्यन्तर देवों के उत्पाद की वक्तव्यता, ज्योतिषिक देवों के विमानावासकी वक्तव्यता, सौधर्मदेवलोकों में विमानावासवक्तव्यता, एक समय में सौधर्मादि सहस्रारान्त में देवों के उत्पाद की वक्तव्यता आनतप्राणतदेवलोकों में विमानावासवक्तव्यता, ग्रैवेयक विमानावास-

---

તેરમા શતકનો પ્રારંભ-

ઉદ્દેશક બીજો

તેરમાં શતકના બીજા ઉદ્દેશકમાં જે વિષયનું પ્રતિપાદન કરવામાં આવ્યું છે, તેનું સંક્ષિપ્ત વિવરણ આ પ્રમાણે છે-દેવોના પ્રકારનું કથન, ભવનવાસી દેવોના પ્રકારનું કથન, અસુરકુમારાવાસોમાંથી ઉદ્વર્ત્તના (ચ્યવન)નું કથન, નાગકુમારાદિકોના આવાસની વક્તવ્યતા, વાનવ્યન્તર દેવોના આવાસની વક્તવ્યતા, એક સમયમાં કેટલા વાનવ્યન્તર દેવોનો ઉત્પાદ થાય છે, તેનું કથન, જ્યોતિષિક દેવોના વિમાનાવાસની વક્તવ્યતા, સૌધર્મદેવલોકના વિમાનાવાસોની વક્તવ્યતા, એક સમયમાં સૌધર્મથી લઈને સહસ્રાર પર્યન્તના કલ્પોમાં કેટલા દેવોની ઉત્પત્તિ થાય છે, તેનું કથન આનતપ્રાણત દેવલોકના વિમાનાવાસની વક્તવ્યતા,

समयेन देवानामुत्पादादि वक्तव्यता, असुरकुमारावासेषु सम्यग्दृष्ट्यादि समुत्पाद-वक्तव्यतामरूपणम्, कृष्णलेश्यादिमन्तोभूत्वा कृष्णलेश्यादियुक्तदेवेषु उत्पद्यन्ते किम् ? इत्यादि प्रश्नोत्तरम् ।

देववक्तव्यता ।

मूलम्—कइविहा णं भंते ! देवा पण्णत्ता ? गोयमा ! चउव्विहा देवा पण्णत्ता, तं जहा—भवणवासी, वाणमंतरा, जोइसिया, वेमाणिया, भवणवासी णं भंते ! देवा कइविहा पण्णत्ता ? गोयमा ! दसविहा पण्णत्ता, तं जहा—असुरकुमारो, एवं भेओ जहा बितियसए देवुद्देसए जाव अपराजिया सव्वट्ठसिद्धगा, केवइया णं भंते ! असुरकुमारावाससयसहस्सा पण्णत्ता ? गोयमा ! चोसट्ठिं असुरकुमारावाससयसहस्सा पण्णत्ता, ते णं भंते ! किं संखेज्जवित्थडा, असंखेज्जवित्थडा पण्णत्ता ? गोयमा ! संखेज्ज-वित्थडा वि, असंखेज्जवित्थडा वि पण्णत्ता, चोसट्ठी णं भंते ! असुरकुमारावाससयसहस्सेसु संखेज्जवित्थडेसु असुरकुमारावा-सेसु एगसमएणं केवइया असुरकुमारा उववज्जंति, जाव केव-इया तेउलेस्सा उववज्जंति, केवइया कण्हपक्खिया उववज्जंति,

---

वक्तव्यता, अनुत्तरविमानावासवक्तव्यता, पांच अनुत्तरविमानों में एक समय में देवों के उत्पाद आदि की वक्तव्यता असुरकुमारावासों में सम्यग्दृष्टयादि के समुत्पाद की वक्तव्यता कृष्णलेश्यादिवाले होकर जीव कृष्णलेश्यादियुक्त देवों में उत्पन्न होते हैं क्या ? इत्यादि प्रश्न का उत्तर ।

ગ્રૈવેયકવિમાનાવાસની વક્તવ્યતા, અનુત્તર વિમાનાવાસવક્તવ્યતા, અનુત્તર-વિમાનોની વક્તવ્યતા, પાંચ અનુત્તર વિમાનોમાં એક સમયમાં કેટલા દેવોનો ઉત્પાદ આદિ થાય છે, તેની વક્તવ્યતા, અસુરકુમારાવાસોમાં સમ્યગ્દૃષ્ટિ આદિ દેવોના સમુત્પાદની વક્તવ્યતા, "શું કૃષ્ણાદિ લેશ્યાવાળા થઇને જીવો કૃષ્ણાદિ લેશ્યાયુક્ત દેવોમાં ઉત્પન્ન થાય છે ખરાં ?" ઇત્યાદિ પ્રશ્નોના ઉત્તર.

एवं जहा रयणप्पभाए तहेव पुच्छा, तहेव वागरणं, नवरं दोहिं वेदेहिं उववज्जंति, नपुंसगवेयगा न उववज्जंति, सेसं तं चेव उव्वट्टंतगा वि तहेव, नवरं असन्नी उव्वट्टंति, ओहिनाणी, ओहिदंसणी य ण उव्वट्टंति, सेसं तं चेव, पण्णत्तएसु तहेव नवरं संखेज्जगा इत्थिवेयगा पण्णत्ता, एवं पुरिसवेयगा वि, नपुंसगवेयगा नत्थि, कोहकसायी सिय अत्थि, सिय नत्थि, जइ अत्थि जहण्णेणं एक्को वा दो वा, तिन्नि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा पण्णत्ता, एवं माणकसायी, मायाकसाई, संखेज्जा लोभकसायी पण्णत्ता, सेसं तं चेव तिसु वि गमएसु संखेज्जेसु चत्तारिलेस्साओ भाणियव्वाओ, एवं असंखेज्जवित्थडेसु वि नवरं तिसु वि गमएसु असंखेज्जा भाणियव्वा जाव असंखेज्जा अचरिमा पण्णत्ता, केवइया णं भंते! नागकुमारावाससयसहस्सा पण्णत्ता? एवं जाव थणियकुमारा, नवरं जत्थ जत्तिया भवणा, केवइया णं भंते! वाणमंतरावाससयसहस्सा पण्णत्ता? गोयमा! असंखेज्जा वाणमंतरावाससयसहस्सा पण्णत्ता, ते णं भंते! किं संखेज्जवित्थडा, असंखेज्जवित्थडा? गोयमा! संखेज्जवित्थडा, नो संखेज्जवित्थडा संखेज्जेसु णं भंते! वाणमंतरावाससयसहस्सेसु एगसमएणं केवइया वाणमंतरा उववज्जंति? एवं जहा असुरकुमाराणं संखेज्जवित्थडेसु तिन्नि गमगा तहेव भाणियव्वा, वाणमंतराणं वि तिन्नि गमगा केवइया णं भंते! जोइसियविमाणावाससयसहस्सा पण्णत्ता? गोयमा! असंखेज्जा जोइसियविमाणावाससयसहस्सा पण्णत्ता,

ते णं भंते! किं संखेज्जवित्थडा, असंखेज्जवित्थडा? एवं जहा वाणमंतराणं तहा जोइसियाण वि, तिन्नि गमगा भाणियव्वा नवरं एगा तेउलेस्सा, उववज्जंतेसु पण्णत्तेसु य असन्नी नत्थि, सेसं तं चेव, सोहम्मे णं भंते! कप्पे केवइया विमाणावाससय-सहस्सा पण्णत्ता? गोयमा! बत्तीसं विमाणावाससयसहस्सा पण्णत्ता, ते णं भंते! किं संखेज्जवित्थडा, असंखेज्जवित्थडा? गोयमा! संखेज्जवित्थडा वि, असंखेज्जवित्थडा वि, सोहम्मे णं भंते! कप्पे बत्तीसाए विमाणावाससयसहस्सेसु संखेज्जवित्थडेसु विमाणेसु एगसमएणं केवइया सोहम्मा देवा उववज्जंति? केवइया तेउलेस्सा उववज्जंति? एवं जहा जोइसियाणं तिन्नि गमगा तहेव तिन्नि गमगा भाणियव्वा, नवरं तिसु वि संखेज्जा भाणियव्वा ओहिनाणी, ओहिदंसणी य चवावेयव्वा, सेसं तं चेव, असंखेज्जवित्थडेसु एवं चेव तिन्नि गमगा, णवरं तिसु वि गमएसु असंखेज्जा भाणियव्वा, ओहिनाणी य, ओहिदंसणी य संखेज्जा चयंति, सेसं तं चेव, एवं जहा सोहम्मे वत्तव्वया भणिया तहा ईसाणे वि छ गमगा भाणियव्वा, सणंकुमारे एवं चेव, नवरं इत्थीवेयगा न उववज्जंति, पण्णत्तेसु य न भण्णंति, असन्नी तिसु वि गमएसु न भण्णंति, सेसं तं चेव, एवं जाव सहस्सारे, नाणत्तं विमाणेसु लेस्सासु य, सेसं तं चेव, आणयपाणयेसु णं भंते! कप्पेसु केवइया विमाणावाससया पण्णत्ता? गोयमा! चत्तारि विमाणावाससया पण्णत्ता, ते णं भंते! किं संखेज्जवित्थडा,

असंखेज्जवित्थडा ? गोयमा ! संखेज्जवित्थडा वि, असंखेज्ज-वित्थडा वि, एवं संखेज्जवित्थडेसु तिन्नि गमगा जहा सहस्सारे असंखेज्जवित्थडेसु विमाणेसु०, उववज्जंतेसु य, चयंतेसु य, एवं चेव संखेज्जा भाणियव्वा, पण्णत्तेसु, असंखेज्जा नवरं नोइंदि-योवउत्ता, अणंतरोववन्नगा, अणंतरोवगाढगा, अणंतराहारगा, अणंतरपज्जत्तगा य एएसिं जहण्णेणं एक्को वा, दो वा, तिन्नि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा पण्णत्ता, सेसा असंखेज्जा भाणियव्वा, आरणच्चुएसु एवं चेव, जहा आणयपाणएसु, नाणत्तं विमाणेसु एवं गेवेज्जगा वि, कइ णं भंते ! अणुत्तरविमाणा पण्णत्ता ? गोयमा ! पंच अणुत्तरविमाणा पण्णत्ता, ते णं भंते ! किं संखेज्ज-वित्थडा, असंखेज्जवित्थडा ? गोयमा ! संखेज्जवित्थडे य, असंखे-ज्जवित्थडा य, पंचसु णं भंते ! अणुत्तरविमाणेसु संखेज्जवि-त्थडे विमाणे एगसमएणं केवइया अणुत्तरोववाइया देवा उव-वज्जंति ? केवइया सुक्कलेस्सा उववज्जंति ? पुच्छा, तहेव, गोयमा ! पंचसु णं अणुत्तरविमाणेसु संखेज्जवित्थडे अणुत्तरविमाणे एग-समएणं जहण्णेणं एक्को वा, दो वा, तिन्नि वा, उक्कोसेणं अणुत्तरोववाइया देवा उववज्जंति, एवं जहा गेवेज्जविमाणेसु संखेज्जवित्थडेसु, नवरं किण्हपक्खिया अभवसिद्धिया तिसु अन्नाणेसु एए न उववज्जंति, न चयंति, न पण्णत्तएसु भाणि-यव्वा, अचरिमा वि खोडिज्जंति जाव संखेज्जा चरिमा पण्णत्ता, सेसं तं चेव, असंखेज्जवित्थडेसु वि एए ण भण्णंति, नवरं अचरिमा अत्थि, सेसं जहा गेवेज्जएसु असंखेज्जवित्थडेसु जाव

असंखेज्जा अचरिमा पण्णत्ता, चोसट्ठीए णं भंते! असुरकुमारा वाससयसहस्सेसु संखेज्जवित्थडेसु असुरकुमारावासेसु किं सम्मदिट्ठी असुरकुमारा उववज्जंति? मिच्छादिट्ठी, एवं जहा रयणप्पभाए तिन्नि आलावगा भणिया तहा भाणियव्वा, एवं असंखेज्जवित्थडेसु वि तिन्नि गमगा, एवं जाव गेवेज्जविमाणेसु, अणुत्तरविमाणेसु एवं चेव, नवरं तिसु वि आलावएसु मिच्छादिट्ठी सम्मामिच्छादिट्ठी य न भन्नंति, सेसं तं चेव, से णूणं भंते! कण्णलेस्से नील जाव सुक्कलेस्से भवित्ता, कण्हलेस्सेसु देवेसु उववज्जइ? हंता, गोयमा! एवं जहेव नेरइएसु पढमे उद्देसए तहेव भाणियव्वं, नीललेसाए वि जहेव नेरइयाणं जहा नीललेसाए, एवं जाव पम्हलेस्सेसु सुक्कलेस्सेसु एवं चेव नवरं लेस्साट्ठाणेसु विसुज्झमाणेसु विसुज्झमाणेसु सुक्कलेस्सं परिणमंति, सुक्कलेस्सं परिणमइत्ता सुक्कलेस्सेसु देवेसु उववज्जंति, से तेणट्ठेणं जाव उववज्जंति।

तेरसमे बीओ उद्देसो समत्तो॥ १३—२॥

छाया—कतिविधाः खलु भदन्त! देवा? प्रज्ञप्ताः? गौतम! चतुर्विधा देवा प्रज्ञप्ताः, तद्यथा-भवनवासिनः, वानव्यन्तराः, ज्योतिषिकाः वैमानिकाः, भवनवासिनः खलु भदन्त! देवाः कतिविधाः प्रज्ञप्ताः? गौतम! दशविधाः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा—असुरकुमाराः, एवं भेदो यथा द्वितीयशतके देवोद्देशके यावत् अपराजिताः सर्वार्थसिद्धिकाः, कियन्ति खलु भदन्त! असुरकुमारावासशतसहस्राणि प्रज्ञप्तानि? गौतम चतुःषष्टिः असुरकुमारावासशतसहस्राणि प्रज्ञप्तानि, ते खलु भदन्त! किं संख्येयविस्तृताः, असंख्येयविस्तृताः, प्रज्ञप्ताः? गौतम!

संख्येयविस्तृता अपि, असंख्येयविस्तृता अपि, चतुष्षष्ट्यां खलु भदन्त ! असुरकुमारावासशतसहस्रेषु संख्येयविस्तृतेषु असुरकुमारावासेषु एकसमयेन कियन्तः असुरकुमारा उपपद्यन्ते ? यावत् कियन्तस्तेजोलेश्या उपपद्यन्ते ? कियन्तः कृष्णपाक्षिका उपपद्यन्ते ? एवं यथा रत्नप्रभायां तथैव पृच्छा, तथैव व्याकरणम् नवरं द्वाभ्यां वेदाभ्याम् उपपद्यन्ते, नपुंसकवेदकाः न उपपद्यन्ते शेषं तदेव उद्वर्तका अपि तथैव, नवरम् असंज्ञिन उद्वर्तन्ते, अवधिज्ञानिनः, अवधिदर्शनिनश्च न उद्वर्तन्ते, शेषं तदेव, प्रज्ञप्तकेषु तथैव, नवरं संख्येयकाः स्त्रीवेदकाः प्रज्ञप्ताः, एवं पुरुषवेदका अपि, नपुंसकवेदकाः न सन्ति, क्रोधकषायिणः स्यात् सन्ति, स्यात् न सन्ति, ये सन्ति जघन्येन एको वा, द्वौ वा, त्रयो वा' उत्कृष्टेन संख्येयाः प्रज्ञप्ताः, एवं मानकषायिणः, मायाकषायिणः, संख्येयाः लोभकषायिणः प्रज्ञप्ताः, शेषं तदेव, त्रिष्वपि गमकेषु संख्येयेषु चतस्रो लेश्याः भणितव्याः एवम् असंख्येयविस्तृतेष्वपि, नवरम् त्रिष्वपि गमकेषु असंख्येया भणितव्याः, यावत् असंख्येयाः, अचरमाः प्रज्ञप्ताः, कियन्ति खलु भदन्त ! नागकुमारावासशतसहस्राणि प्रज्ञप्तानि ? एवं यावत्-स्तनितकुमाराः, नवरं यत्र यावन्ति भवनानि, कियन्ति खलु भदन्त ! वानव्यन्तरावासशतसहस्राणि प्रज्ञप्तानि ? गौतम ! असंख्येयानि वानव्यन्तरावासशतसहस्राणि प्रज्ञप्तानि, ते खलु भदन्त ! किं संख्येयविस्तृताः, असंख्येयविस्तृताः ? गौतम ! संख्येयविस्तृताः, नो असंख्येयविस्तृताः, संख्येयेषु खलु भदन्त ! वानव्यन्तरावासशतसहस्रेषु एकसमयेन कियन्तः वानव्यन्तरा उपपद्यन्ते ? एवं यथा असुरकुमाराणां संख्येयविस्तृतेषु त्रीणि गमकानि तथैव भणितव्यानि वानव्यन्तराणामपि त्रीणि गमकानि, कियन्ति खलु भदन्त ! ज्योतिषिकविमानावासशतसहस्राणि प्रज्ञप्तानि ? गौतम ! असंख्येयानि ज्योतिषिकविमानावासशतसहस्राणि प्रज्ञप्तानि ? ते खलु भदन्त ! किं संख्येयविस्तृताः असंख्येयविस्तृताः ? एवं यथा वानव्यन्तराणां तथा ज्योतिषिकाणामपि त्रीणि गमकानि भणितव्यानि, नवरम् एका तेजोलेश्या, उपपद्यन्तेषु प्रज्ञप्तेषु च असंज्ञिनो न सन्ति, शेषं तदेव, सौधर्मे खलु भदन्त ! कल्पे कियन्ति विमानावासशतसहस्राणि प्रज्ञप्तानि ? गौतम ! द्वात्रिंशत् विमानावासशतसहस्राणि प्रज्ञप्तानि, ते खलु भदन्त ! किं संख्येयविस्तृताः, असंख्येयविस्तृताः ? गौतम ! संख्येयविस्तृता अपि असंख्येयविस्तृता अपि, सौधर्मे खलु भदन्त ! कल्पे द्वात्रिंशतिविमानावासशतसहस्रेषु संख्येयविस्तृतेषु विमानेषु एकसमयेन कियन्तः सौधर्मिका देवा उपपद्यन्ते ? कियन्तस्तेजोलेश्या उपपद्यन्ते ? एवं यथा ज्योतिषिकाणां त्रीणि गमकानि भणितव्यानि, त्रीणि गमकानि भणितव्यानि, नवरं त्रिष्वपि संख्येया भणितव्याः, अवधिज्ञानिनः

अवधिदर्शिनिनश्च व्यावर्णयितव्याः शेषं तदेव, असंख्येयविस्तृतेषु एवमेव त्रीणि गमकानि, नवरं त्रिष्वपि गमकेषु असंख्येया भणितव्याः, अवधिज्ञानिनश्च, अवधिदर्शिनिनश्च संख्येयाश्चयवन्ति, शेषं तदेव, एवं यथा सौधर्मसंवक्तव्यता भणिता तथा ईशानेऽपि षट् गमकानि भणितव्यानि, सनत्कुमारे एवञ्चैव, नवरं स्त्रीवेदका न उपपद्यन्ते, मज्ञप्तेषु च न भण्यन्ते, असंज्ञिनस्त्रिष्वपि गमकेषु न भण्यन्ते, शेषं तदेव, एवं यावत् सहस्रारे, नानात्वं विमानेषु, लेश्यासु च , शेषं तदेव, आनतप्राणतेषु खलु भदन्त ! कल्पेषु कियन्ति विमानावासशतानि मज्ञप्तानि ? हे गौतम ! चत्वारि विमानावासशतानि मज्ञप्तानि, ते खलु भदन्त ! किं संख्येयविस्तृताः, असंख्येयविस्तृताः ? गौतम ! संख्येयविस्तृता अपि, असंख्येयविस्तृता अपि, एवं संख्येयविस्तृतेषु त्रीणि गमकानि यथा सहस्रारे असंख्येयविस्तृतेषु, विमानेषु उपपद्यन्तेषु च च्यवन्तिषु च एवं चैव संख्येया भणितव्याः, मज्ञप्तेषु असंख्येयाः, नवरं नो इन्द्रियोपयुक्ताः, अनन्तरोपपन्नकाः, अनन्तरावगाढाः, अनन्तराहारकाः, अनन्तरपर्याप्तकाश्च एतेषां जघन्येन एको वा, द्वौ वा, त्रयो वा, उत्कृष्टेन संख्येयाः मज्ञप्ताः, शेषाः असंख्येया भणितव्याः, आरणाऽच्युतेषु एवं चैव यथाऽऽनतप्राणतेषु, नानात्वं विमानेषु, एवं ग्रैवेयका अपि, कति खलु भदन्त ! अनुत्तरविमानाः मज्ञप्ताः ? गौतम ! पञ्च अनुत्तरविमानाः मज्ञप्ताः ते खलु भदन्त ! किं संख्येयविस्तृताः, असंख्येयविस्तृताः ? गौतम ! संख्येयविस्तृतश्च, असंख्येयविस्तृताश्च पञ्चसु खलु भदन्त ! अनुत्तरविमानेषु संख्येयविस्तृते विमाने एकसमयेन कियन्तः अनुत्तरोपपातिका देवा उपपद्यन्ते ? कियन्तः शुक्ललेश्या उपपद्यन्ते ? पृच्छा, तथैव, गौतम ! पञ्चसु खलु अनुत्तरविमानेषु संख्येयविस्तृते अनुत्तरविमाने एकसमयेन जघन्येन एको वा, द्वौ वा, त्रयो वा, उत्कृष्टेन संख्येयाः अनुत्तरोपपातिकाः देवाः उपपद्यन्ते, एवं यथा ग्रैवेयकविमानेषु संख्येयविस्तृतेषु, नवरं कृष्णपाक्षिकाः, अभवसिद्धिकाः त्रिषु अज्ञानेषु एते न उपपद्यन्ते, न च्यवन्ति, न मज्ञप्तेषु भणितव्याः, अचरमा अपि प्रतिषिध्यन्ते, यावत् संख्येयाः चरमाः मज्ञप्ताः, शेषं तदेव, असंख्येयविस्तृतेष्वपि एते न भण्यन्ते, नवरम् अचरमाः सन्ति, शेषं यथा ग्रैवेयकेषु असंख्येयविस्तृतेषु यावत् असंख्येयाः अचरमाः मज्ञप्ताः, चतुष्पष्टौ खलु भदन्त ! असुरकुमारावासशतसहस्रेषु संख्येयविस्तृतेषु असुरकुमारावासेषु किं सम्यग्दृष्टयः असुरकुमाराः उपपद्यन्ते ? मिथ्यादृष्टयः, एवं यथा रत्नप्रभायां त्रय आलापका भणितास्तथा भणितव्याः, एवम् असंख्येयविस्तृतेष्वपि त्रीणि गमकानि, एवं यावत् ग्रैवेयकविमानेषु, अनुत्तरविमानेषु एवमेव, नवरं त्रिष्वपि आलापकेषु मिथ्यादृष्टयः सम्यग् मिथ्यादृष्टयश्च न भण्यन्ते,

शेषं तदेव । गौतमः पृच्छति-तत् नूनं भदन्त ! कृष्णलेश्यः, नील यावत् शुक्ल लेश्यो भूत्वा कृष्णलेश्येषु देवेषु उपपद्यन्ते ? हन्त गौतम ! एवं यथैव नैरयिकेषु प्रथम उद्देशके तथैव भणितव्यम् , नीललेश्यायामपि यथैव नै·यिकाणां यथा नील-लेश्यायाम् , एवं यावत् पद्मलेश्येषु, शुक्ललेश्येषु एवमेव, नवरं लेश्यास्थानेषु विशु-ध्यत्सु विशुध्यत्सु शुक्ललेश्यां परिणमन्ति, शुक्ललेश्यां परिणम्य शुक्ललेश्येषु देवेषु उपपद्यन्ते, तत् तेनार्थेन यावत् उपपद्यन्ते, तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति ॥सू. १॥

त्रयोदशके शतके द्वितीयोद्देशकः समाप्तः ॥

टीका—प्रथमोद्देशके नैरयिकाणां प्ररूपितत्वेन द्वितीयोद्देशके अस्मिन् औप-पातिकत्वसाधर्म्याद् देवान् प्ररूपयितुमाह-'कइविहा णं भंते इत्यादि, 'कइविहाणं भंते ! देवा पण्णत्ता ?' गौतमः पृच्छति-हे भदन्त ! कतिविधाः खलु देवाः प्रज्ञप्ताः ? भगवानाह-' गोयमा ! चउव्विहा देवा पण्णत्ता ' हे गौतम ! चतुर्विधा देवाः प्रज्ञप्ताः, ' तं जहा-भवणवासी, वाणमंतरा, जोइसिया, वेमाणिया ' तद्यथा-

देववक्तव्यता—

'कइविहा णं भंते ! देवा पण्णत्ता' इत्यादि ।

टीकार्थ—प्रथम उद्देशक में नैरयिकों की प्ररूपणा की गई है, इस कारण इस द्वितीय उद्देशक में औपपातिकपने की सधर्मता को लेकर सूत्रकार देवोंकी प्ररूपणा कर रहे हैं-इसमें गौतम ने प्रभु से ऐसा पूछा है-'कइविहा णं भंते ! देवा पण्णत्ता' हे भदन्त ! देव कितने प्रकार के कहे गये हैं ? इसके उत्तर में प्रभु ने कहा 'गोयमा' हे गौतम ! 'चउव्विहा देवा पण्णत्ता' देव चार प्रकार के कहे गये हैं । 'तं जहा' जो इस प्रकार से हैं-'भवणवासी, वाणमंतरा, जोइसिया,

—દેવોની વક્તવ્યતા—

" कइविहा णं भंते ! देवा पण्णत्ता " ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ—પહેલા ઉદ્દેશામાં નારકોની પ્રરૂપણા કરવામાં આવી. ઔપપાતિકતાની સધર્મતાને કારણે હવે આ બીજા ઉદ્દેશામાં સૂત્રકાર દેવોની પ્રરૂપણા કરે છે-આ વિષયને અનુલક્ષીને ગૌતમ સ્વામી મહાવીર પ્રભુને એવો પ્રશ્ન પૂછે છે કે-"कइविहा णं भंते ! देवा पण्णत्ता ?" હે ભગવન્ ! દેવોના કેટલા પ્રકાર કહ્યા છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-" गोयमा ! " હે ગૌતમ ! " चउव्विहा देवा पण्णत्ता " દેવોના ચાર પ્રકાર કહ્યા છે, " तंजहा " જે નીચે પ્રમાણે છે-" भवणवासी, वाणमंतरा, जोइसिया, वेमाणिया " (૧) ભવનવાસી, (૨) વાનવ્યન્તર, (૩) જ્યોતિષિક, અને (૪) વૈમાનિક.

भवनवासिनः, वानव्यन्तराः, ज्योतिषिकाः, वैमानिकाः। गौतमः पृच्छति–'भवण-वासीणं भंते ! देवा कइविहा पण्णत्ता ?' हे भदन्त ! भवनवासिनः खलु देवाः कतिविधाः प्रज्ञप्ताः ? भगवानाह–' गोयमा ! दसविहा पण्णत्ता ' हे गौतम ! दश-विधा भवनवासिनो देवाः प्रज्ञप्ताः, ' तं जहा–असुरकुमारा एवं भेओ जहा बिति-यसए देवुद्देसए जाव अपराजिया सव्वट्ठसिद्धगा ' तद्यथा–असुरकुमाराः, एवं रीत्या भेदः देवप्रकारो, यथा द्वितीयशतके सप्तमे देवोद्देशके प्रतिपादितस्तथैव अत्रापि प्रतिपादनीयः, यावत्–नागकुमाराः, सुवर्णकुमाराः, अग्निकुमाराः, विद्युत्-कुमाराः, उदधिकुमाराः, द्वीपकुमाराः, पवनकुमाराः, दिशाकुमाराः, स्तनित-कुमाराः, वानव्यन्तराः, अष्टौ ज्योतिषिकाः पञ्च वैमानिकाः सौधर्मेशानादयो द्वादश,

---

वेमाणिया' भवनवासी, वानव्यन्तर, ज्योतिषिक और वैमानिक, अब गौतमस्वामी प्रभु से ऐसा पूछते हैं—भवणवासी णं भंते ! देवा कइविहा पण्णत्ता' हे भदन्त ! जो भवनवासी देव हैं–वे कितने प्रकार के कहे गये हैं ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं–'गोयमा' हे गौतम ! 'दसविहा पण्णत्ता' भवनवासी देव १० प्रकार के कहे गये हैं । 'तं जहा' जो इस प्रकार से हैं–'असुरकुमारा एवं भेओ जहा बितियसए देवु-द्देसए जाव अपराजिया सव्वट्ठसिद्धगा' असुरकुमार यावत्–नागकुमार, सुवर्णकुमार, अग्निकुमार, विद्युत्कुमार, उदधिकुमार, द्वीपकुमार, पवन-कुमार, स्तनितकुमार, देवों के इस प्रकार के भेदों का कथन द्वितीय शतक के सप्तम उद्देशक में कहा गया है। वहां वानव्यन्तर आठ प्रकार के, ज्योतिषिक पांच प्रकार के वैमानिक और सौधर्म ईशान आदि

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન–" भवणवासीणं भंते ! देवा कइविहा पण्णत्ता ?" હે ભગવન્ ! ભવનવાસી દેવો કેટલા પ્રકારના કહ્યા છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર–" दसविहा पण्णत्ता–तजहा " હે ગૌતમ ! ભવન-વાસી દેવોના નીચે પ્રમાણે દસ પ્રકાર કહ્યા છે–" असुरकुमारा एवं भेओ जहा बितियसए देवुद्देसए जाव अपराजिया सव्वट्ठसिद्धगा " અસુરકુમાર આદિ ભેદોનું જેવું કથન બીજા શતકના સાતમાં ઉદ્દેશામાં કરવામાં આવ્યું છે, એવું કથન અહીં ગ્રહણ કરવું જોઈએ ત્યાં ભવનપતિના દસ ભેદો આ પ્રમાણે કહ્યા છે– (૧) અસુરકુમાર, (૨) નાગકુમાર, (૩) સુવર્ણકુમાર, (૪) અગ્નિકુમાર, (૫) વિદ્યુતકુમાર, (૬) ઉદધિકુમાર, (૭) દ્વીપકુમાર, (૮) વાયુકુમાર, (૯) દિશાકુમાર અને (૧૦) સ્તનિતકુમાર વાનવ્યન્તર દેવોના આઠ પ્રકાર અને જ્યોતિષિકોના પાંચ પ્રકાર કહ્યા છે. વૈમાનિક દેવોના સૌધર્મકલ્પવાસી આદિ ૧૨ પ્રકાર કહ્યા

नवग्रैवेयक पञ्चानुत्तरविजयवैजयन्तजयन्तापराजिताः सर्वार्थसिद्धकाः। गौतमः पृच्छति-' केवइया णं भंते ! असुरकुमारावाससयसहस्सा पण्णत्ता ?' हे भदन्त ! कियन्ति खलु असुरकुमारावासशतसहस्राणि प्रज्ञप्तानि ? भगवानाह-' गोयमा ! चोसट्ठिं असुरकुमारावाससयसहस्सा पण्णत्ता ' हे गौतम ! चतुष्पष्टिः असुरकुमारावासशतसहस्राणि-चतुष्पष्टिलक्षासुरकुमारानासाः असुरकुमारभवनानि प्रज्ञप्तानि, गौतमः पृच्छति-' ते णं भंते ! किं संखेज्जवित्थडा, असंखेज्जवित्थडा ? हे भदन्त ! ते खलु चतुष्पष्टिलक्षासुरकुमारावासाः किं संख्येयविस्तृताः सन्ति ? किम्वा असंख्येयविस्तृताः सन्ति ? भगवानाह-' गोयमा ! संखेज्जवित्थडा वि, असंखेज्जवित्थडा वि ' हे गौतम ! पूर्वोक्ता असुरकुमारावासाः संख्येयविस्तृता

के भेद से १२ प्रकार के कहे गये हैं। नव ग्रैवेयक और अनुत्तरविमान-विजय, वैजयन्त जयन्त, अपराजित एवं सर्वार्थसिद्धक, इस प्रकार से पांच कहे गये हैं। अब गौतमस्वामी प्रभु से ऐसा पूछते हैं 'केवइया णं भंते ! असुरकुमारावाससयसहस्सा पण्णत्ता' हे भदन्त ! असुरकुमारावास कितने लाख प्रज्ञप्त हुए हैं ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-'गोयमा' हे गौतम ! 'चोसट्ठिं असुरकुमारावाससयसहस्सा पण्णत्ता' असुरकुमारावास ६४ लाख कहे हैं। अब इस पर गौतमस्वामी प्रभु से पूछते हैं-'ते णं भंते ! किं संखेज्जवित्थडा असंखेज्जवित्थडा' हे भदन्त ! वे ६४ लाख असुरकुमारावास संख्यात योजनविस्तारवाले है या असंख्यात योजन विस्तावाले हैं ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं 'गोयमा' हे गौतम ! 'संखेज्जवित्थडा वि, असंखेज्जवित्थडा वि' वे ६४ लाख असुरकुमारा-

---

છે. ગ્રૈવેયકવિમાનો નવ પ્રકારના અને અનુત્તર વિમાનો પાંચ પ્રકારના કહ્યા છે પાંચ અનુત્તર વિમાનોનાં નામ નીચે પ્રમાણે છે-વિજય, વૈજયન્ત, જયન્ત, અપરાજિત અને સર્વાર્થસિદ્ધ.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-" केवइयाणं भंते ! असुरकुमारावाससयसहस्सा पण्णत्ता ?" હે ભગવન્ ! અસુરકુમારાવાસો કેટલા લાખ કહ્યા છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-" गोयमा ! " હે ગૌતમ ! " चोसट्ठि असुरकुमारावाससयसहस्सा पण्णत्ता ?" અસુરકુમારોના ૬૪ લાખ આવાસો કહ્યા છે.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-" ते णं भंते ! किं संखेज्जवित्थडा असंखेज्जवित्थडा ?" હે ભગવન્ ! તે ૬૪ લાખ અસુરકુમારાવાસો શું સંખ્યાત યોજનના વિસ્તારવાળા છે, કે અસંખ્યાત યોજનના વિસ્તારવાળા છે ?

अपि सन्ति, असंख्येयविस्तृता अपि सन्ति, तथा चोक्तम्-

" जंबुद्दीवसमा खलु भवणा जे हुंति सव्वखुड्डागा
संखेज्जवित्थडा मज्झिमा उ सेसा असंखेज्जा ॥ १ ॥

छाया—जम्बूद्वीपसमानि खलु भवनानि यानि भवन्ति सर्वं क्षुल्लकानि,
संख्यातविस्तृतानि मध्यमानि तु शेषाणि असंख्येयानि ॥ १ ॥

गौतमः पृच्छति-' चोसट्ठीणं भंते ! असुरकुमारावाससयसहस्सेसु संखेज्जवित्थडेसु असुरकुमारावासेसु एगसमएणं केवइया असुरकुमारा उववज्जंति ' हे भदन्त! चतुष्षष्ट्यां खलु असुरकुमारावासशतसहस्रेषु,-चतुष्षष्टिलक्षासुरकुमारावासेषु, संख्येयविस्तृतेषु असुरकुमारावासेषु एकसमयेन कियन्तः असुरकुमारा उपपद्यन्ते? ' जाव केवइया तेउल्लेस्सा उववज्जंति? यावत्-कियन्तः कृष्णलेश्यावन्तः,

वाअ संख्यातयोजन विस्तारवाले भी हैं और असंख्यातयोजन विस्तारवाले भी हैं-सो ही कहा—'जंबुद्दीवसमा खलु' इत्यादि ।

इस गाथा का अर्थ ऐसा है-कि असुरकुमारादिकों के सब से छोटे जो भवन हैं वे जंबूद्वीप के समान हैं। मध्यम भवन संख्यात विस्तार वाले हैं एवं बाकी के असंख्यातयोजनविस्तार वाले हैं ।

अब गौतमस्वामी प्रभु से 'चोसट्ठीणं भंते ! असुरकुमारावाससयसहस्सेसु संखेज्जवित्थडेसु असुरकुमारावासेसु एगसमएणं केवइया असुरकुमारा उववज्जंति' हे भदन्त ! ६४ लाख असुरकुमारावासों में से जो असुरकुमारावास संख्यातयोजन के विस्तारवाले हैं उनमें एक समय में कितने असुरकुमार उत्पन्न होते हैं ? 'जाव केवइया तेउल्लेस्सा

महावीर प्रभुनो उत्तर-" गोयमा ! संखेज्जवित्थडा वि, असंखेज्जवित्थडा वि " हे गौतम ! ते असुरकुमारावासो, संख्यात योजनना विस्तारवाळा पण छे अने असंख्यात योजनना विस्तारवाळा पण छे. એજ वात नीचेना सूत्रपाठ द्वारा व्यकत थाय छे—" जंबुद्दीवसमा खलु " इत्यादि—

આ ગાથાનો અર્થ-અસુરકુમાર દિકોના જે નાનામાં નાનાં ભવનો છે, તે જબંબૂદ્વીપના જેવડા છે, મધ્યમ ભવનો સંખ્યાત યોજનના વિસ્તારવાળાં છે, અને બકીનાં ભવનો અસંખ્યાત યોજનના વિસ્તારવાળાં છે.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-" चोसट्ठीणं भंते ! असुरकुमारावाससयसहस्सेसु संखेज्जवित्थडेसु असुरकुमारावासेसु एगसमएणं केवइया असुरकुमारा उववज्जंति ?" હે ભગવન્ ! ૬૪ લાખ અસુરકુમારાવાસોમાંના જે સંખ્યાત યોજનના વિસ્તારવાળા અસુરકુમારાવાસો છે, તેમાં એક સમયમાં કેટલા અસુરકુમારો ઉત્પન્ન થાય છે ? " जाव केवइया तेउल्लेस्सा उववज्जंति ?" કેટલા કૃષ્ણલેશ્યાવાળા,

कियन्तो नीललेश्यावन्तः, कियन्तः कापोतलेश्यावन्तः, कियन्तस्तेजोलेश्यावन्त उपपद्यन्ते ? 'केवइया कण्हपक्खिया उववज्जंति' कियन्तः कृष्णपाक्षिकाः पूर्वोक्त स्वरूपा उपपद्यन्ते, 'एवं जहा रयणप्पभाए तहेव पुच्छा, तहेव वागरणं' एवं-रीत्या यथा रत्नप्रभायां तथैव अत्रापि पृच्छा प्रतिपादनीयाः तथैव रत्नप्रभावदेव व्याकरणं-व्याख्यानं कर्तव्यम्, 'नवरं दोहिं वेदेहिं उववज्जंति' नवरं-पूर्वापेक्षया विशेषस्तु अत्र द्वयोर्वेदयोः स्त्रीवेदपुरुषवेदयोः उपपद्यते तयोरेव तेषु सत्वात्,

उववज्जंति' यावत् कितने कृष्णलेश्यावाले कितने नीललेश्यावाले, कितने कापोतलेश्यावाले, तथा कितने तेजोलेश्यावाले उत्पन्न होते हैं ? 'केवइया कण्हपक्खिया उववज्जंति' तथा कितने पूर्वोक्त स्वरूपवाले कृष्णपाक्षिक उत्पन्न होते हैं ? 'एवं जहा रयणप्पभाए तहेव पुच्छा' इस प्रकार से जैसे ३९ प्रश्न नारकों के विषय में रत्नप्रभा पृथिवी में किये गये हैं-वैसे ही प्रश्न यहां असुरकुमारों को लेकर के करना चाहिये 'तहेव वागरणं' इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं- हे गौतम ! जैसा इन प्रश्नों का उत्तर रत्नप्रभा पृथिवी के संख्यातयोजन विस्तारवाले एवं असंख्यातयोजन विस्तारवाले नरकावासों में दिया गया है-उसी प्रकार से यहां पर भी इन प्रश्नों का उत्तर समझना चाहिये 'नवरं दोहिं वेदेहिं उववज्जंति' परन्तु उस समाधान की अपेक्षा इस कथन में यदि कोई विशेषता है तो वह ऐसी है कि यहां पर दो वेदों में-स्त्री

કેટલા નીલલેશ્યાવાળા, કેટલા કાપોતલેશ્યાવાળા તથા કેટલા તેજોલેશ્યાવાળા નારકો ત્યાં એક સમયમાં ઉત્પન્ન થાય છે ? "केवइया कण्हपक्खिया उववज्जंति" તથા કેટલા પૂર્વોક્ત સ્વરૂપવાળા કૃષ્ણપાક્ષિક અસુરકુમારો ઉત્પન્ન થાય છે ? "एवं जहा रयणप्पभाए तहेव पुच्छा" એજ પ્રમાણે જેવાં પ્રશ્નો નારકોના વિષયમાં રત્નપ્રભા પૃથ્વીના સૂત્રમાં (પહેલા ઉદ્દેશાના પહેલા સૂત્રમાં) પૂછવામાં આવ્યા છે, એવાં જ પ્રશ્નો અહીં અસુરકુમારોના વિષયમાં પણ પૂછવા જોઈએ. આ પ્રશ્નનો ઉત્તર આપતા મહાવીર પ્રભુ કહે છે કે-"तहेव वागरणं" હે ગૌતમ ! રત્નપ્રભા પૃથ્વીના સંખ્યાત અને અસંખ્યાત યોજનના વિસ્તારવાળા નરકાવાસોના નારકોના વિષયમાં આ પ્રશ્નોના જેવા ઉત્તરો આપવામાં આવ્યા છે એવા જ ઉત્તરો અહીં અસુરકુમારના અસુરકુમારાવાસના વિષયમાં પણ સમજી લેવા "नवरं दोहिं वेदेहिं उववज्जंति" પરન્તુ નારકોના કથન કરતાં અસુરકુમારોના કથનમાં એટલી જ વિશેષતા છે કે અસુરકુમારોમાં પુરુષવેદ અને સ્ત્રીવેદનો જ સદ્ભાવ હોય છે. "नपुंसगवेयगा न उववं-

'नपुंसगवेयगा न उववज्जंति, सेसं तं चेव' नपुंसकवेदकास्तत्र नोपपद्यन्ते, शेषं तदेव-पूर्वोक्तवदेव बोध्यम्। 'उव्वट्टंतगावि तहेव, असन्नी उव्वट्टंति' उद्वर्तका अपि तथैव-पूर्वोक्तरत्नप्रभावदेव बोध्याः, नवरं-पूर्वापेक्षया विशेषस्तु-असंज्ञिनः उद्वर्तन्ते असुरकुमारादारभ्य ईशानपर्यन्तदेवानामसंज्ञिष्वपि पृथिव्यादिपूत्पादात्, 'ओहिनाणी, ओहिदंसणी य ण उव्वट्टंति, सेसं तं चेव' अवधिज्ञानिनः, अवधिदर्शिनश्च न उद्वर्तन्ते, असुरादिभ्य उद्वृत्तानां तीर्थङ्करादित्वाप्तेः, तीर्थङ्करादीनामेव चावधिमतामुद्वृत्तत्वोपलब्धेः। शेषं तदेव-पूर्ववदेव बोध्यम्, 'पण्णत्तएसु

वेद और पुरुषवेद में-उत्पन्न होते हैं। क्योंकि इनमें उत्पन्न होनेवालों में ये ही दो वेद होते हैं। 'नपुंसगवेयगा न उववज्जंति सेसं तं चेव' नपुंसकवेदवाले यहां उत्पन्न नहीं होते हैं-और सब कथन बाकी का पहिले जैसा ही है। 'उव्वट्टंतगा वि तहेव, असन्नी उव्वट्टंति' उद्वर्तकों के सम्बन्ध का कथन रत्नप्रभा में किये गये इनके कथन की तरह से ही जानना चाहिये, परन्तु जो इनके कथन में यहां विशेषता है वह ऐसी है कि यहां असंज्ञी उद्वर्तना करते हैं। क्योंकि असुरकुमार से लेकर ईशानपर्यन्त के देव असंज्ञीपृथिव्यादिकों में भी उत्पन्न हो जाते हैं। 'ओहिनाणी, ओहिदंसणी य ण उव्वट्टंति-सेसं तं चेव' अवधिज्ञानी और अवधिदर्शनी यहां से उद्वर्तना नहीं करते हैं, क्योंकि असुरादिकों से उद्वृत्त हुए जीवों की उत्पत्ति तीर्थंकरादि रूप से नहीं होती है और अवधिज्ञान एवं अवधिदर्शनसहित तीर्थंकरादिक ही उद्वर्तना करते हैं। बाकी का और सब कथन यहां उद्वर्तना संबंधी पहिले के

ज्जंति" અસુરકુમારાવાસોમાં નપુંસકવેદવાળા અસુરકુમારો ઉત્પન્ન થતા નથી. "सेसं तंचेव" બાકીનું સમસ્ત કથન રત્નપ્રભા પૃથ્વીના નારકોના જેવું જ સમજવું.

"उव्वट्टंतगा वि तहेव, असन्नी उव्वट्टंति" ઉદ્વર્તના વિષયક કથન પણ રત્નપ્રભા નારકોના કથન જેવું જ અહીં સમજવું પરન્તુ અસુરકુમારોની ઉદ્વર્તના કથનમાં એટલી જ વિશેષતા છે કે અસુરકુમારથી અસંજ્ઞીઓ પણ ઉદ્વર્તના કરે છે, કારણ કે અસુરકુમારથી લઇને ઈશાનપર્યન્તના દેવો અસંજ્ઞી પૃથ્વીકાય આદિમાં પણ ઉત્પન્ન થઇ જાય છે. "ओहिनाणी, ओहिदंसणी य ण उव्वट्टंति-सेसं तंचेव" અવધિજ્ઞાની અને અવધિદર્શની જીવો અહીંથી (અસુરકુમારાવાસોમાંથી) ઉદ્વર્તના કરતા નથી, કારણ કે અસુરકુમારાદિમાંથી ઉદ્વૃત્ત થયેલા (નીકળેલા) જીવોની તીર્થંકરાદિ રૂપે ઉત્પત્તિ થતી નથી અને અવધિજ્ઞાન અને અવધિદર્શનથી યુક્ત તીર્થંકરોની જ ઉદ્વર્તના થાય છે. બાકીનું સમસ્ત કથન ઉદ્વર્તના સંબંધી નારકોના પૂર્વોક્ત કથન પ્રમાણે જ

तहेव, नवरं संखेज्जगा इत्थिवेयगा पण्णत्ता, एवं पुरिसवेयगा वि, नपुंसगवेयगा नत्थि' प्रज्ञप्तेषु-तत्तद्विषयेषु प्रज्ञप्तपदोपलक्षितालापकाधीतेषु असुरकुमारेषु तथैव रत्नप्रभावदेव यथा प्रथमोद्देशके प्रोक्तं तथैवात्रापि वक्तव्यम्, नवरं-विशेषस्तु संख्येयकाः स्त्रीवेदकाः, प्रज्ञप्ताः, एवं-तथैव पुरुषवेदका अपि प्रज्ञप्ताः, किन्तु अत्र असुरकुमारादिषु नपुंसकवेदका न सन्ति, 'कोहकसायी सिय अत्थि सिय नत्थि' जइ अत्थि जहण्णेणं एक्को वा, दो वा, तिन्नि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा पण्णत्ता' क्रोधकषायिणः असुरकुमारावासेषु स्यात् कदाचित् सन्ति, स्यात्-कदाचित् न सन्ति, यदा क्रोधकषायिणः सन्ति, तदा जघन्येन एको वा, द्वौ वा, त्रयो वा सन्ति, उत्कृष्टे न तु संख्येयाः, प्रज्ञप्ताः, 'एवं माणकसायी, मायाकसायी'

कथन जैसा ही है। 'पण्णत्तएसु तहेव, नवरं संखेज्जगा इत्थिवेयगा पण्णत्ता, एवं पुरिसवेयगा वि, नपुंसगवेगा नत्थि' प्रज्ञप्तपदोपलक्षित आलापक में पढे गये असुरकुमारों में रत्नप्रभा की तरह ही जैसा कि प्रथमोद्देशक में कहा है उसी प्रकार से कहना चाहिये। परन्तु वहां के कथन की अपेक्षा जो यहां के इस विषयक कथन में विशेषता है वह ऐसी है कि यहां स्त्रीवेदक संख्यात कहे हैं और पुरुषवेदक भी संख्यात कहे गये हैं। यहां नपुंसकवेदक नहीं होते हैं। 'कोहकसायी सिय अत्थि, सिय नत्थि' जइ अत्थि जहण्णेणं एको वा दो वा तिन्नि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा पण्णत्ता' असुरकुमारावासों में क्रोधकषायी कदाचित् होते भी हैं और कदाचित् नहीं भी होते हैं। यदि क्रोधकषायी यहां होते हैं, तो वे जघन्य से एक, या दो या तीन तक होते हैं और उत्कृष्ट से संख्यात तक होते हैं। 'एवं माणकसायी, माया-

---

સમજવું. "पण्णत्तएसु तहेव, नवरं संखेज्जगा इत्थिवेयगा पण्णत्ता, एवं पुरिस-वेयगा वि; नपुंसगवेयगा नत्थि" પ્રજ્ઞપ્તપદોપલક્ષિત આલાપકમાં અહીં પહેલા ઉદ્દેશકના જેવું જ કથન થવું જોઈએ, પરન્તુ તે કથન કરતાં અસુરકુમારોના કથનમાં એટલી જ વિશેષતા છે કે—અહીં સ્ત્રીવેદકો સંખ્યાત કહ્યા છે અને પુરુષવેદકો પણ સંખ્યાત કહ્યા છે અહીં નપુંસકવેદકો હોતા નથી. "कोहकसायी सिय अत्थि, सिय नत्थि जइ अत्थि जहण्णेणं एक्को वा, दो वा, तिन्नि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा पण्णत्ता" અસુરકુમારાવાસોમાં ક્રોધકષાયી અસુરકુમારો કયારેક હોય છે પણ બધાં અને કયારેક નથી પણ હોતા જો ત્યાં તેમનો સદ્ભાવ હોય છે, તો ઓછામાં ઓછા એક, બે અથવા ત્રણ અને વધારેમાં વધારે સંખ્યાત ક્રોધકષાયીનો સદ્ભાવ હોય છે. "एवं माण-

एवं-क्रोधकषायिवदेव मानकषायिणो मायाकषायिणश्च असुरकुमारावासेषु स्यात् सन्ति, स्यात् न सन्ति, यदा मानकषायिणो मायाकषायिणो भवेयुः तदा जघन्येन एको वा, द्वौ वा, त्रयो वा, उत्कृष्टेन तु संख्येयाः प्रज्ञप्ताः, तथा च क्रोधमान मायाकषायोदयिनो देवेषु कादाचित्का एव भवन्ति, इत्यभिप्रायेणैवोक्तम्-स्यात् सन्ति स्यात् न सन्तीत्यादि. किन्तु लोभकषायोदयिनो देवेषु सर्वदैव भवन्तीत्याह-संखेज्जा लोभकसायी पण्णत्ता, सेसं तं चेव' देवेषु संख्येया लोभकषायिणः प्रज्ञप्ताः, शेषं तदेव-पूर्वोक्तवदेव बोध्यम्, 'तिसु वि गमएसु संखेज्जेसु चत्तारि लेस्साओ भाणियव्वाओ' त्रिष्वपि गमकेषु-उत्पादो-द्वर्तना-सत्तालक्षणेषु त्रिष्वपि

कसायी' इसी प्रकार से असुरकुमारावासों में मानकषायी और माया-कषायी कदाचित् होते हैं और कदाचित् नहीं होते हैं। यदि वे हो भी तो जघन्य से एक या दो तीन तक होते हैं और उत्कृष्ट से वे संख्यातक होते हैं। इस प्रकार के इस कथन से यह प्रतीत होता है कि देवों में क्रोध, मान, माया, कषाय के उदयवाले जीव कादाचित्क ही होते हैं। इसी अभिप्राय को लेकर 'स्यात् सन्ति स्यात् न सन्ति' ऐसा पाठ कहा गया है। किन्तु जो लोभकषायवाले जीव हैं वे देवों में सर्वदा ही पाये जाते हैं। कारण कि देवों में लोभकषायी बहुत पाये जाते हैं। इसी बात को प्रकट करने के लिये 'संखेज्जा लोभकसायी पण्णत्ता' ऐसा पाठ कहा गया है, देवों में लोभकषायी संख्यात होते हैं। बाकी का और सब कथन इस विषय का पहिले जैसा कहा जा चुका है वैसा ही जानना चाहिये। 'तिसु वि गमएसु संखेज्जेसु चत्तारि लेस्साओ

कसायी, मायाकसायी" એજ પ્રમાણે અસુરકુમારાવાસોમાં માનકષાયી અને માયાકષાયી અસુરકુમારો પણ કયારેક હોય છે અને કયારેક નથી હોતા જો તેમનો સદ્ભાવ હોય છે, તો ઓછામાં ઓછા એક, બે અથવા ત્રણનો અને વધારેમાં વધારે સંખ્યાતનો સદ્ભાવ હોય છે. આ કથનથી એ વાતનું પ્રતિપાદન થાય છે કે દેવોમાં ક્રોધ, માન અને માયા કષાયના ઉદયવાળા જીવો કયારેક જ હોય છે. તેથી જ એવું કહેવામાં આવ્યું છે કે "स्यात् सन्ति, स्यात् न सन्ति" પરન્તુ લોભકષાયવાળા જીવોનો દેવોમાં સદા સદ્ભાવ રહે છે, કારણ કે લોભકષાયના ઉદયવાળા ઘણા દેવો હોઈ શકે છે, તેથી જ એવો સૂત્રપાઠ આપવામાં આવ્યો છે કે "संखेज्जा लोभकसायी पण्णत्ता" "દેવોમાં લોભકષાયી સંખ્યાત હોય છે." બાકીનું આ વિષયને લગતુ સમસ્ત કથન પૂર્વોક્ત કથન પ્રમાણે જ સમજવું. "तिसु वि गमएसु संखे-

आलापकेषु संख्येयेषु संख्येयविस्तृतेषु असुरकुमारावासेषु चतस्रोलेश्याः-कृष्ण-लेश्याः १, नीललेश्या २, कापोतलेश्या ३, तेजोलेश्या ४, च भणितव्याः, एताश्चतस्र एव हि लेश्याः असुरकुमारादीनां भवन्ति। 'एवं असंखेज्जवित्थडेसु वि, नवरं तिसु वि गमएसु असंखेज्जा भाणियव्वा, जाव असंखेज्जा अचरिमा पण्णत्ता' एवं-पूर्वोक्तरीत्यैव असंख्येयविस्तृतेष्वपि असुरकुमारावासेषु संख्येयविस्तृतासुरकुमारावासवदेव सर्वं वोध्यम् किन्तु नवरं-पूर्वापेक्षया विशेषस्तु त्रिष्वपि गमकेषु 'उत्पादोद्वर्तना-सत्ता' विषयेषु अभिलापकेषु असंख्येया भणितव्या -वक्तव्याः, यावत्-असंख्येयाः असुरकुमाराः, असंख्येयाः कृष्णपक्षिकाः, असंख्येयाः शुक्लपक्षिकाः,

भाणियव्वाओ' संख्यातयोजनविस्तारवाले असुरकुमारावासों में जो उत्पाद, उद्वर्त्तना और सत्ता के आलापक कहे गये हैं उनमें कृष्ण-लेश्या, नीललेश्या, कापोतलेश्या और तेजोलेश्या ये चार लेश्याएँ कहनी चाहिये। क्योंकि असुरकुमारादिकों में ये चार लेश्याएँ ही होती हैं। 'एवं असंखेज्जवित्थडेसु वि, नवरं तिसु वि गमएसु असंखेज्जा भाणियव्वा, जाव असंखेज्जा अचरिमा पण्णत्ता' इसी प्रकार से-संख्यातयोजन विस्तारवाले असुरकुमारावासों की तरह से ही पूर्वोक्त रीति के अनुसार असंख्यात योजनविस्तारवाले भी असुर-कुमारावासों में सब कथन जानना चाहिये। परन्तु असंख्यात योजन विस्तारवाले असुरकुमारावासों में जो उत्पाद, उद्वर्त्तना और सत्ता संबंधी तीन आलापक कहे गये हैं-वहां 'असंख्यात' ऐसा पाठ कहना चाहिये। यावत् असंख्यात असुरकुमार हैं, असंख्यात कृष्णपाक्षिक हैं,

જેસુ चत्तारि लेस्साओ भाणियव्वाओ" સંખ્યાત યોજનના વિસ્તારવાળા અસુરકુમારાવાસોમાં જે ઉત્પાદ, ઉદ્વર્ત્તના અને સત્તા (વિદ્યમાનતા) વિષયક આલાપકો કહ્યા છે, તેમાં કૃષ્ણલેશ્યા, નીલલેશ્યા, કાપોતલેશ્યા અને તેજોલેશ્યા, આ ચાર લેશ્યાઓ કહેવી જોઈએ, કારણ કે અસુરકુમારાદિકોમાં ચાર લેશ્યાઓ જ સંભવી શકે છે. "एवं असंखेज्जवित्थडेसु वि, नवरं तिसु वि गमएसु असंखेज्जा भाणियव्वा, जाव असंखेज्जा अचरिमा पण्णत्ता" એજ પ્રમાણે-સંખ્યાત યોજનના વિસ્તારવાળા અસુરકુમારાવાસની જેમ જ-અસંખ્યાત યોજનના વિસ્તારવાળા અસુરકુમારાવાસોમાં પણ સમજવું પરન્તુ અસંખ્યાત યોજનના વિસ્તારવાળા અસુરકુમારાવાસોમાં ઉત્પાદ, ઉદ્વર્ત્તના અને સત્તા વિષયક ત્રણ આલાપકોમાં 'સંખ્યાત' ને બદલે "असंख्यात"-પદ કહેવું જોઇએ જેમ કે-અસંખ્યાત યોજનના વિસ્તારવાળા અસુરકુમારાવાસોમાં અસંખ્યાત અસુરકુમારો છે, અસંખ્યાત કૃષ્ણપાક્ષિક છે, અસંખ્યાત શુકલ-

असंख्येयाः कृष्णादिलेश्यावन्तः, इत्याद्यारभ्य असंख्येयाः अनाकारोपयुक्ताः' इति पर्यन्ता, एकोनचत्वारिंशति३९ तथा 'असंख्येयाः अनन्तरोपपन्नकाः' इत्याद्यष्ट तथा असंख्येयाश्चरमाः, असंख्येया अचरमाः प्रज्ञप्ताः। गौतमः पृच्छति-'केवइया णं भंते ! नागकुमारावाससयसहस्सा पण्णत्ता ?' हे भदन्त! कियन्ति खलु नागकुमारावासशतसहस्राणि प्रज्ञप्तानि ? 'एवं जाव थणियकुमारा' एवं-तथैव यावत् सुवर्णकुमारादारभ्य स्तनितपर्यन्तानां कियन्ति तत्तदावासशतसहस्राणि प्रज्ञप्तानि ? इति प्रश्नः। भगवानाह-'नवरं जत्थ जत्तिया भवणा' नवरं-विशेषस्तु यत्र निकाये यावन्ति भवनलक्षाणि सन्ति, तत्र तावन्ति वक्तव्यतानि यथा

"चउसट्ठी असुराणं, नागकुमाराण होइ चुलसीई ।
बावत्तरि कणगाणं वाउकुमाराण छन्नउई ॥ १ ॥

असंख्यात शुल्कपाक्षिक हैं, असंख्यातकृष्णादिलेश्यावाले हैं, इत्यादि सब कथन असंख्यात अनाकार उपयोग वाले हैं यहां तक जानना चाहिये तथा असंख्यात ही अनन्तरोपपन्नक आदि है और असंख्यात ही चरम एवं असंख्यात ही अचरम हैं । अब गौतमस्वामी प्रभु से ऐसा पूछते हैं-'केवइया णं भंते! नागकुमारावाससयसहस्सा पण्णत्ता' हे भदन्त! नागकुमारावास कितने लाख कहे गये हैं ? 'एवं जाव थणियकुमारा' इसी प्रकार से हे भदन्त ! सुवर्णकुमार से लेकर स्तनितकुमार तक के भवनपति देवों के अपने २ नाम के आवास कितने लाख कहे गये हैं ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-'नवरं जत्थ जत्तिया भवणा' हे गौतम! जिस निकाय में जितने लाख भवन हैं वहां पर उतने लाख भवनरूप आवास कहना चाहिये-यथा-'चउसट्ठी असुराणं' इन दो गाथाओं का

પાક્ષિક છે, અસંખ્યાત કૃષ્ણાદિ લેશ્યાવાળા છે, ઇત્યાદિ કથન ગ્રહણ થવું જોઈએ ત્યાં અસંખ્યાત અનાકારોપયોગવાળા અસુરકુમારો છે, ત્યાં સુધીનું સમસ્ત કથન અહીં સમજી લેવું જોઇએ. તથા અનન્તરોપપન્નકથી લઈને ચરમ અને અચરમ સુધીના અસુરકુમારો પણ અસંખ્યાત છે, એમ સમજવું

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-"केवइया णं भंते ! नागकुमारावाससयसहस्सा पण्णत्ता ?" હે ભગવન્ ! નાગકુમારાવાસ કેટલા લાખ કહ્યા છે ? "एवं जाव थणियकुमारा" એજ પ્રમાણે હે ભગવન્ ! સુવર્ણકુમારોથી લઈને સ્તનિતકુમાર પર્યન્તના ભવનપતિ દેવોના કેટકેટલા આવાસો કહ્યા છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-"नवरं जत्थ जत्तिया भवणा" હે ગૌતમ ! જે નિકાયમાં જેટલાં લાખ ભવન છે, તે નિકાયમાં એટલાં લાખ ભવન રૂપ આવાસ કહેવા જોઈએ નીચેની બે ગાથાઓમાં પ્રત્યેક ભવનપતિ નિકાયના

दीवदिसा उदहीणं विज्जुकुमारिंदथणियमग्गीणं ।
जुयलाणं पत्तेयं छावत्तरिमो सयसहस्सा ॥ २ ॥ इति,

चतुषष्टिः असुराणाम्, नागकुमाराणां भवति चतुरशीतिः, द्वासप्ततिः कनकानां 'सुवर्णकुमाराणां' वायुकुमाराणां षण्णवतिः ॥ १ ॥
द्वीपदिशोदधीनां विद्युत्कुमारेन्द्रस्तनिताग्नीनाम् । युगलानां प्रत्येकानि षट् सप्ततिः शतसहस्राणि ॥ २ ॥ इति,

अयं भावः—'चउसट्ठी असुराणं' इति-असुरकुमाराणामुत्तरदिशि त्रिंशल्लक्षाणि, दक्षिणदिशि चतुस्त्रिंशल्लक्षाणीति सर्वाणि चतुष्षष्टिलक्षाणि भवनानि भवन्ति ६४ । एवं नागकुमाराणामुत्तरदिशि चत्वारिंशल्लक्षाणि, दक्षिणदिशि चतुश्चत्वारिंशल्लक्षाणि, इति चतुरशीतिलक्षाणि ८४ । सुवर्णकुमाराणामुत्तरदिशि चतुस्त्रिंशल्लक्षाणि, दक्षिणदिशि अष्टत्रिंशल्लक्षाणि इति द्विसप्तति लक्षाणि ७२ । वायुकुमाराणामुत्तरदिशि षट् चत्वारिंशल्लक्षाणि, दक्षिणदिशि पञ्चाशल्लक्षाणीति-षण्णवतिलक्षाणि ९६ । द्वीपकुमार-दिशाकुमारो-दधिकुमार-विद्युत्कुमार-स्तनितकुमारा-ऽग्निकुमाराणां मध्ये एकैकस्य चोत्तरदिशि षट्त्रिंशल्लक्षाणि दक्षिण-

ભાવાર્થ ઐસા હૈ—અસુરકુમારોં કે ભવન ૬૪ લાખ હૈં, અર્થાત્ ઉત્તર-દિશા મેં ૩૦ લાખ ઔર દક્ષિણદિશા મેં ૩૪ લાખ ભવન હૈં ઇસી પ્રકાર સે નાગકુમારોં કે ઉત્તર દિશામેં ૪૦ લાખ, ઔર દક્ષિણ દિશામેં ૪૪ લાખ-ઇસ પ્રકાર સે ૮૪ લાખ ભવન હૈં, સુવર્ણકુમારોં કે ઉત્તરદિશા મેં ૩૪ લાખ, ઔર દક્ષિણદિશામેં ૩૮ લાખ ભવન હૈં-ઇસ પ્રકાર સબ ૭૨ લાખ ભવન હૈં, વાયુકુમારોં કે ઉત્તરદિશા મેં ૪૬ લાખ, ઔર દક્ષિણદિશા મેં ૫૦ લાખ ભવન હૈં ઇસ પ્રકાર સબ ૯૬ લાખ ભવન હૈં । દ્વીપકુમાર, દિશાકુમાર, ઉદધિકુમાર, વિદ્યુત્કુમાર, સ્તનિતકુમાર ઔર

દેવોના આવાસોની સંખ્યા બતાવવામાં આવેલ છે. "चउसट्ठी असुराणं" ઇત્યાદિ આ ગાથાઓનો અર્થ નીચે પ્રમાણે છે—અસુરકુમારોના ૬૪ લાખ ભવન છે, અસુરકુમારોના ૩૦ લાખ ભવન ઉત્તર દિશામાં છે અને ૩૪ લાખ ભવન દક્ષિણ દિશામાં છે. નાગકુમારોના ૪૦ લાખ ભવન ઉપર અને ૪૪ લાખ દક્ષિણ દિશામાં છે. આ રીતે તેમના કુલ ૮૪ લાખ ભવન છે. સુવર્ણકુમારોના ઉત્તર દિશામાં ૩૪ લાખ અને દક્ષિણમાં ૩૮ લાખ ભવનો મળીને કુલ ૭૨ લાખ ભવન છે. વાયુકુમારોના ઉત્તરમાં ૪૬ લાખ અને દક્ષિણમાં ૫૦ લાખ ભવનો મળી કુલ ૯૬ લાખ ભવનો છે દ્વીપકુમાર, દિશાકુમાર, ઉદધિકુમાર, વિદ્યુત્કુમાર, અગ્નિકુમાર અને સ્તનિતકુમાર આ

दिशि चत्वारिंशल्लक्षाणीति षट्सप्ततिलक्षाणि भवनानि एकैकेषां भवन्तीति। अथ च सर्वेषां भवनपतीनां सर्वसङ्कलनया द्विसप्ततिलक्षोत्तरसप्तकोटिपरिमितानि (७७२०००००) भवनानि भवन्ति। तेषु चोत्तरदिशि सर्वसङ्कलनया-षट्षष्टिलक्षोत्तरत्रिकोटि परिमितानि (३६६०००००) भवनानि, तथा दक्षिणदिशि सर्वसंकलनया षट्लक्षोत्तरचतुष्कोटि परिमितानि (४०६०००००) भवनानी सन्तीति जातानि सर्वाणि द्विसप्ततिलक्षोत्तरसप्तकोटिसंख्यकानि (७७२० ०००) भवन्तीति भावः।

गौतमः पृच्छति-'केवइयाणं भंते! वाणमंतरावाससयसहस्सा पण्णत्ता?' हे भदन्त! कियन्ति खलु वानव्यन्तरावासशतसहस्राणि प्रज्ञप्तानि? भगवानाह-'गोयमा! असंखेज्जा वाणमंतरावाससयसहस्सा पण्णत्ता' हे गौतम! असंख्येयानि वानव्यन्तरावासशतसहस्राणि प्रज्ञप्तानि। गौतमः पृच्छति-'ते णं भंते! किं संखे

अग्निकुमार इनके बीच में एक एक के उत्तरदिशा में ३६ लाख और दक्षिणदिशा में ४० लाख इस प्रकार ७६ लाख भवन प्रत्येक के हैं। इन सब भवनों की संख्या का जोड ७७२००००० सातकरोड बहत्तर लाख होते हैं। उत्तरदिशा के भवनों का जोड ३६६०००० होते हैं और दक्षिणदिशा के भवनों का जोड ४०६०००० होता हैं। इस प्रकार से इनका जोड कुल ७७२०००० हो जाता है।

अब गौतमस्वामी प्रभु से ऐसा पूछते हैं-'केवइया णं भंते! वाणमंतरावाससयसहस्सा पण्णत्ता' हे भदन्त! वानव्यन्तरों के आवासों की संख्या कितने लाख की कही गई है? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-'गोयमा! असंखेज्जा वाणमंतरावाससयसहस्सा पण्णत्ता' हे गौतम! वानव्यन्तरों के आवासों की संख्या असंख्यात लाख की कही गई है।

પ્રત્યેકના ઉત્તર દિશામાં ૩૬-૩૬ લાખ અને દક્ષિણ દિશામાં ૪૦-૪૦ લાખ ભવનો મળી કુલ ૭૬-૭૬ લાખ ભવનો છે ઉત્તર દિશાના ભવનોનો કુલ સરવાળો ૩૬૬૦૦૦૦૦ અને દક્ષિણ દિશાનાં ભવનોનો કુલ સરવળો ૪૦૬૦૦૦૦૦ થાય છે આ રીતે ભવનપતિઓના દસે નિકાયના દેવોના ભવનોનો કુલ સરવાળો ૭૭૨૦૦૦૦૦ થાય છે.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-" केवइयाणं भंते! वाणमंतरावाससयसहस्सा पण्णत्ता " હે ભગવન્! વાનવ્યન્તર દેવોના કેટલા લાખ આવાસો કહ્યા છે?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-" गोयमा! असंखेज्जा वाणमंतरावाससयसहस्सा पण्णत्ता " હે ગૌતમ! વાનવ્યન્તરોના આવાસોની સંખ્યા અસંખ્યાત લાખની કહી છે.

ज्जवित्थडा, असंखेज्जवित्थडा ?' हे भदन्त ! ते खलु वानव्यन्तरावासाः किं संख्येयविस्तृताः सन्ति ? किंवा असंख्येयविस्तृताः सन्ति ? भगवानाह-'गोयमा ! संखेज्जवित्थडा, नो असंखेज्जवित्थडा' हे गौतम ! संख्येयविस्तृताः सन्ति. वानव्यन्तरावासाः, नो असंख्येयविस्तृताः सन्ति । तथा चोक्तम्—

"जंबुद्दीवसमा खलु उक्कोसेणं हवंति ते नगरा ।
खुड्डा खेत्तसमा खलु विदेहसमगाउ मज्झिमगा॥१॥

छाया—जम्बूद्वीपसमानि खलु उत्कृष्टेन भवन्ति तानि नगराणि ।
क्षुद्राणि क्षेत्रसमानि (भरतैरावत क्षेत्रसमानि) खलु विदेहसमकानि
(महाविदेह क्षेत्रतुल्यानि) मध्यमकानि ॥१॥ इति ।

गौतमः पृच्छति-'संखेज्जेसुणं भंते ! वाणमंतरावाससयसहस्सेसु एगसमएणं

अब गौतमस्वामी प्रभु से ऐसा पूछते हैं-'तेणं भंते ! किं संखेज्जवित्थडा असंखेज्जवित्थडा' हे भदन्त ! ये वानव्यन्तरों के असंख्यात लाख भवनावास क्या संख्यातयोजन के विस्तारवाले हैं, या असंख्यात योजन के विस्तारवाले हैं ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-'गोयमा ! हे गौतम ! 'संखेज्जवित्थडा, नो असंखेज्जवित्थडा' ये वानव्यन्तरों के आवास संख्यातविस्तारवाले ही हैं, असंख्यातविस्तारवाले नहीं हैं। तथाचोक्तम्-जंबुद्दीवसमा खलु' इत्यादि । तात्पर्य ऐसा है कि वानव्यन्तरों के जो क्षुद्रावास हैं-वे भरत, ऐरवतक्षेत्र के समान हैं और जो मध्यम आवास है वे महाविदेह क्षेत्र के समान हैं तथा जो इसके उत्कृष्ट नगर हैं वे जम्बूद्वीप के समान हैं।

अब गौतमस्वामी प्रभु से ऐसा पूछते हैं-संखेज्जेणं भंते ! वाणमंतरा-

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-" तेणं भंते ! किं संखेज्जवित्थडा असंखेज्जवित्थडा" હે ભગવન્ ! વાનવ્યન્તરોના તે અસંખ્યાત લાખ ભવનાવાસો શું સંખ્યાત યોજનના વિસ્તારવાળા છે ?, કે અસંખ્યાત યોજનના વિસ્તારવાળા છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર—"गोयमा ! संखेज्जवित्थडा, नो असंखेज्जवित्थडा" હે ગૌતમ ! વાનવ્યન્તરોના તે આવાસો સંખ્યાત યોજનના વિસ્તારવાળા છે, અસંખ્યાત યોજનના વિસ્તારવાળા નથી કહ્યું પણ છે કે-" जंबुद्दीवसमा खलु " ઇત્યાદિ-તાત્પર્ય એ છે કે " વાનવ્યન્તરોના જે ક્ષુદ્રાવાસો સૌથી નાના છે, તેઓભરત ઐરવત ક્ષેત્રના સમાન છે, મધ્યમ આવાસો મહાવિદેહ ક્ષેત્ર સમાન છે અને તેમનાં જે નગરો છે, તેઓ જંબૂદ્વીપના સમાન છે. "

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-" संखेज्जेसु णं भंते ! वाणमंतरावाससयसहस्सेसु एग

केवइया वाणमंतरा उववज्जंति?' हे भदन्त ! संख्येयविस्तृतेषु खलु वानव्यन्तरा वासशतसहस्रेषु एकसमयेन कियन्तो वानव्यन्तरा उपपद्यन्ते ? भगवानाह-'एवं जहा असुरकुमाराणं। संखेज्जवित्थडेसु तिन्नि गमगा तहेव भाणियव्वा। वाणमंतराण वि तिन्नि गमगा' हे गौतम! एवं-पूर्वोक्तरीत्यैव यथा असुरकुमाराणां संख्येयविस्तृतेषु असुरकुमारावासेषु त्रीणि गमकानि-उत्पादो-द्वर्तना-सत्ता' विषयका आलापकाः भणितानि तथैव वानव्यन्तराणामपि संख्येयविस्तृतेषु वानव्यन्तरावासेषु त्रीणि गमकानि-'उत्पादो-द्वर्तना-सत्ता विषयका आलापकाः' भणितव्यानि, गौतमः पृच्छति-'केवइयाणं भंते ! जोइसियविमाणावाससयसहस्सा पण्णत्ता ?' हे भदन्त ! कियन्ति खलु ज्योतिषिकविमानावासशतसहस्राणि

वाससयसहस्सेसु एगसमएणं केवइया वाणमंतरा उववज्जंति' हे भदन्त! संख्यातयोजनविस्तारवाले वानव्यन्तरों के आवासों में एक समय में कितने वानव्यन्तर उत्पन्न होते हैं ? उत्तर में प्रभु कहते हैं-'एवं जहा असुरकुमारा णं संखेज्जवित्थडेसु' तिन्नि गमगा, तहेव भाणियव्वा, वाणमंतराण वि तिन्नि गमगा' हे गौतम! पूर्वोक्तरीति के अनुसार असुरकुमारों के संख्यातविस्तारवाले असुरकुमारावासों में उत्पाद् उद्वर्त्तना और सत्ताविषयक आलाप कहे जा चुके हैं, उसी प्रकार से वानव्यन्तरों के भी संख्योनयोजनविस्तारवाले वानव्यन्तरावासों में उत्पाद, उद्वर्त्तना एवं सत्ता विषयक तीन आलापक कहना चाहिये। अब गौतम प्रभु से ऐसा पूछते हैं-'केवइया णं भंते जोइसियविमाणावाससयसहस्सा पण्णत्ता' हे भदन्त ! ज्योतिषिक विमानावास कितने लाख कहे

समएणं केवइया वाणमंतरा उववज्जंति ?" હે ભગવન્! સંખ્યાત યોજનના વિસ્તારવાળા વાનવ્યન્તરાવાસોમાં એક સમયમાં કેટલા વાનવ્યન્તર દેવો ઉત્પન્ન થાય છે?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-" एवं जहा असुरकुमाराणं संखेज्जवित्थडेसु, तिन्नि गमगा, तहेव भाणियव्वा, वाणमंतराण वि तिन्नि गमगा " હે ગૌતમ! અસુરકુમારોના સંખ્યાત યોજનના વિસ્તારવાળા અસુરકુમારાવાસોમાં ઉત્પાદ, ઉદ્વર્ત્તના અને સત્તાવિષયક ત્રણ આલાપકો પહેલાં પ્રકટ કરવામાં આવ્યા છે, એજ પ્રમાણે વાનવ્યન્તરોના પણ સંખ્યાત યોજનના વિસ્તારવાળા વાનવ્યન્તરાવાસોમાં પણ ઉત્પાદ, ઉદ્વર્ત્તના અને સત્તાવિષયક ત્રણ આલાપક કહેવા જોઈએ.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-" केवइयाणं भंते ! जोइसियविमाणावाससयसहस्सा पण्णत्ता " હે ભગવન્! જ્યોતિષિક દેવોના કેટલા લાખ વિમાનાવાસ કહ્યા છે?

मज्झत्ताणि ? भगवानाह–'गोयमा ! असंखेज्जा जोइसियविमाणावाससयसहस्सा पण्णत्ता' हे गौतम ! असंख्येयानि ज्योतिष्कविमानावासशतसहस्राणि मज्झत्तानि. गौतमः पृच्छति–'तेणं भंते ! किं संखेज्जवित्थडा ? असंखेज्जवित्थडा ?' हे भदन्त ! ते खलु असंख्येयलक्षाः ज्योतिष्कविमानावासाः किं संख्येयविस्तृताः सन्ति ? किंवा असंख्येयविस्तृताः सन्ति ? भगवानाह–'एवं जहा वाणमंतराणं तहा जोइसियाण वि तिन्नि गमगा भाणियव्वा, नवरं एगा तेउल्लेस्सा, उववज्जंतेसु पण्णत्तेसु य असन्नी नत्थि, सेसं तं चेव' एवं–पूर्वोक्तरीत्या यथा वानव्यन्तराणां त्रीणि गमकानि–'उत्पादो–द्वर्तना–सत्ता' विषयाणि प्रतिपादितानि, तथैव ज्योतिष्काणामपि त्रीणि गमकानि–'उत्पादो–द्वर्तना–सत्ता विषयकाणि भणितव्यानि प्रतिपत्तव्यानि, तथा च–"एगसट्ठिभागं काऊणजोयणं' इत्यादि ग्रामाण्येन

गये हैं ? उत्तर में प्रभु कहते हैं–'गोयमा' हे गौतम ! 'असंखेज्जा जोइसियविमाणावाससयसहस्सा पण्णत्ता' ज्योतिष्कविमानावास असंख्यातलाख कहे गये हैं। अब गौतमस्वामी से ऐसा कहते हैं–'ते णं भंते ! किं संखेज्जवित्थडा, असंखेज्जवित्थडा' हे भदन्त ! ज्योतिष्कविमानावास क्या संख्यातयोजनवाले हैं, या असंख्यातयोजनविस्तार वाले हैं ? उत्तर में प्रभु कहते हैं–'एवं जहा वाणमंतराणं तहा जोइसियाण वि तिन्नि गमगा भाणियव्वा, नवरं एगा तेउलेस्सा, उववज्जंतेसु पण्णत्तेसु य असन्नी नत्थि सेसं तं चेव' हे गौतम ! पूर्वोक्तरीति के अनुसार जैसे वानव्यन्तरों के उत्पाद, उद्वर्त्तना एवं सत्ता विषयक तीन आलाप कहे गये हैं, उसी प्रकार ज्योतिषकों के भी उत्पाद, उद्वर्त्तना एवं

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર–" गोयमा ! " હે ગૌતમ ! असंखेज्जा जोइसियविमाणावाससयसहस्सा पण्णत्ता " જ્યોતિષિક દેવોના વિમાનાવાસો અસંખ્યાત લાખ કહ્યા છે.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન–ते णं भंते ! किं सखेज्जवित्थडा, असंखेज्जवित्थडा ?" હે ભગવન્ ! જ્યોતિષિકોના વિમાનાવાસો શું સંખ્યાત યોજનના વિસ્તારવાળા છે, કે અસંખ્યાત યોજનના વિસ્તારવાળા છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર–" एव जहा वाणमंतराणं तहा जोइसियाण वि तिन्नि गमगा भाणियव्वा, नवरं एगा तेउलेस्सा, उववज्जंति तेसु पण्णत्तेसु य असन्नी नत्थि, सेसं तचेव " હે ગૌતમ ! પહેલા વાનવ્યન્તરોના ઉત્પાદ, ઉદ્વર્ત્તના અને સત્તાવિષયક જેવા ત્રણ આલાપકો કહ્યા છે, એવાં જ જ્યોતિષિકોના ઉત્પાદ ઉદ્વર્ત્તના અને સત્તાવિષયક ત્રણ આલાપકો કહેવા જોઈએ. તથા

ज्योतिष्के संख्येयविस्तृता एव विमानावासाः प्रतिपत्तव्याः, किन्तु नवरं-पूर्वापेक्षया विशेषस्त्वत्र एका तेजोलेश्यैव वक्तव्या, वानव्यन्तरे तु लेश्याचतुष्टयमुक्तम्, तथा उत्पद्यन्तेषु-उत्पद्यन्ते पदोपलक्षितेषु वानव्यन्तरेषु असंज्ञिनः उत्पद्यन्ते इत्युक्तमत्रतु तन्निषेधो बोध्यः, तथा च ज्योतिष्केषु असंज्ञिनो नोत्पद्यन्ते, एवं प्रज्ञप्तेषु-प्रज्ञप्तपदोपलक्षितेषु सत्ताविषयकेषु चात्र असंज्ञिनो न सन्ति, उत्पादाभावात् इति भावः। शेषं तदेव-पूर्वोक्तवानव्यन्तरावासवदेव ज्योतिष्कावासेऽपि बोध्यम्। गौतमः पृच्छति-'सोहम्मे णं भंते। कप्पे केवइया विमाणावाससयसहस्सा पण्णत्ता?' हे भदन्त! सौधर्मे खलु कल्पे कियन्ति विमानावासशतसहस्राणि प्रज्ञप्तानि? भगवानाह-'गोयमा! बत्तीसं विमाणावाससयसहस्सा

सत्ताविषयक तीन आलापक कहना चाहिये। तथा च 'एगसट्ठिभागं काऊण जोयणं' इत्यादि प्रमाण से ज्योतिष्क में संख्यातयोजनविस्तारवाले ही विमानावास जानना चाहिये। किन्तु पूर्वकथन की अपेक्षा इस कथन में यदि कोई विशेषता है तो वह ऐसी है कि यहां पर केवल एक तेजोलेश्या ही है, वानव्यन्तरों में चार लेश्याएँ हैं। तथा उत्पाद पदोपलक्षितवानव्यन्तरों में असंज्ञी उत्पन्नहोते कहेगये हैं, यहां पर उनका निषेध कियागया है। अर्थात् ज्योतिषिकों में असंज्ञी उत्पन्न नहीं होते हैं। इसी प्रकार प्रज्ञप्तपदोपलक्षित इन ज्योतिष्कों में असंज्ञी जीव नहीं है क्योंकि इनका यहां उत्पाद ही नहीं होता है। बाकी का और सब कथन यहां पूर्वोक्तवानव्यन्तरावास की तरह से ही जानना चाहिये। अब गौतमस्वामी प्रभु से ऐसा पूछते हैं-'सोहम्मे णं भंते! कप्पे केवइया विमाणावाससयसहस्सा पण्णत्ता' हे भदन्त! सौधर्मकल्प में-कितने लाख विमाना-

---

"एगसट्ठिभागं काऊण जोयणं" ઇત્યાદિ કથન અનુસાર જ્યોતિષિકોના વિમાનાવાસો સંખ્યાત યોજનના વિસ્તારવાળા જ સમજવા વાનવ્યન્તરોના કથન કરતાં અહીં એટલી જ વિશેષતા છે કે વાનવ્યન્તરોમાં ચાર લેશ્યાઓ હોય છે, પરન્તુ જ્યોતિષિકોમાં માત્ર તેજોલેશ્યાનો જ સદ્ભાવ હોય છે. વળી વાનવ્યન્તરોમાં અસંજ્ઞી ઉત્પન્ન થાય છે, પરંતુ જ્યોતિષિકોમાં અસંજ્ઞીનો ઉત્પાદ કહ્યો નથી બાકીનું સમસ્ત કથન વાનવ્યન્તરોના જેવું જ સમજવું.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-"सोहम्मेणं भंते! कप्पे केवइया विमाणावाससयसहस्सा पण्णत्ता" હે ભગવન્! સૌધર્મ દેવલોકમાં કેટલા લાખ વિમાનાવાસ કહ્યા છે?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-"गोयमा! बत्तीसं विमाणावाससयसहस्सा पण्णत्ता" હે ગૌતમ! સૌધર્મ કલ્પમાં ૩૨ લાખ વિમાનાવાસ કહ્યા છે,

पण्णत्ता' हे गौतम ! सौधर्मकल्पे द्वात्रिंशद्विमानावासशतसहस्राणि प्रज्ञप्तानि। गौतमः पृच्छति-'तेणं भंते ! किं संखेज्जवित्थडा, असंखेज्जवित्थडा ?' हे भदन्त ! ते खलु द्वात्रिंशल्लक्षविमानावासाः किं संख्येयविस्तृताः सन्ति ? किंवा असंख्येयविस्तृताः सन्ति ? भगवानाह-गोयमा ! संखेज्जवित्थडा वि, असंखेज्जवित्थडा वि' हे गौतम! सौधर्मे विमानावासाः संख्येयविस्तृता अपि सन्ति, असंख्येयविस्तृता अपि सन्ति। गौतमः पृच्छति-' सोहम्मे णं भंते ! कप्पे बत्तीसाए विमाणावाससयसहस्सेसु संखेज्जवित्थडेसु विमाणेसु एगसमएणं केवइया सोहम्मा देवा उववज्जंति ?' हे भदन्त ! सौधर्मे खलु कल्पे द्वात्रिंशति विमानावासशतसहस्रेषु द्वात्रिंशल्लक्षविमानावासेषु संख्येयविस्तृतेषु विमानेषु एकसमयेन कियन्तः सौधर्माः देवा उपपद्यन्ते ? ' केवइया तेउलेस्सा उववज्जंति ?'

वास कहे गये हैं ? उत्तर में प्रभु कहते हैं-'गोयमा ! बत्तीसं वीमाणावाससयसहस्सा पण्णत्ता' हे गौतम ! सौधर्मकल्प में ३२ लाख विमानावास कहे गये हैं। अब गौतमस्वामी प्रभु से ऐसा पूछते हैं-'ते णं भंते ! किं संखेज्जवित्थडा, असंखेज्जवित्थडा' हे भदन्त ! सौधर्मकल्प के ये ३२ लाख विमानावास संख्यातयोजनविस्तारवाले हैं ? या असंख्यातयोजनविस्तारवाले हैं ? उत्तर में प्रभु कहते हैं-'गोयमा' हे गौतम ! 'संखेज्जवित्थडा वि असंखेज्जवित्थडा वि' ये सौधर्मदेवलोकसंबंधी ३२ लाख विमानावास संख्यातयोजनविस्तारवाले भी हैं और असंख्यातयोजनविस्तारवाले भी हैं। अब गौतमस्वामी प्रभु से ऐसा पूछते हैं-'सोहम्मेणं भंते ! कप्पे बत्तीसाए विमाणावाससयसहस्सेसु संखेज्जवित्थडेसु एगसमएणं केवइया सोहम्मा देवा उववज्जंति' हे भदन्त ! सौधर्मकल्प के ३२ लाख विमानावासों में के संख्यातयोजन विस्तारवाले विमानावासों में एकसमय में कितने सौधर्मदेव उत्पन्न

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-"તે णं भंते ! किं संखेज्जवित्थडा, असंखेज्जवित्थडा?" હે ભગવન્ ! સૌધર્મકલ્પના ૩૨ લાખ વિમાનવાસો શું સંખ્યાત યોજનના વિસ્તારવાળા છે, કે અસંખ્યાત યોજનના વિસ્તારવાળા છે ?

ઉત્તર-' गोयमा !" હે ગૌતમ ! "संखेज्जवित्थडा वि असंखेज्जवित्थडा वि." સંખ્યાત યોજનના વિસ્તારવાળા પણ છે અને અસંખ્યાત યોજનના વિસ્તારવાળા પણ છે.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-" सोहम्मेणं भंते ! कप्पे बत्तीसाए विमाणवाससयसहस्सेसु संखेज्जवित्थडेसु विमाणेसु एगसमएणं केवइया सोहम्मा देवा उववज्ज ति" હે ભગવન્ ! સૌધર્મ કલ્પના ૩૨ લાખ વિમાનાવાસોમાંના જે સંખ્યાત યોજનના વિસ્તારવાળા વિમાનાવાસો છે, તેમાં એક સમયમાં કેટલા સૌધર્મ દેવો ઉત્પન્ન થાય છે ? "केवइया तेउलेस्सा उववज्जंति ?" કેટલા તેજોલેશ્યાવાળા ઉત્પન્ન થાય છે ?

कियन्तस्तेजोलेश्यावन्त उपपद्यन्ते ? भगवानाह-' एवं जहा जोइसियाणं तिन्नि गमगा तहेव तिन्नि गमगा भाणियव्वा ' एवं-पूर्वोक्तरीत्या यथा ज्योतिषिकाणां त्रीणि गमकानि उत्पादोद्-वर्तना-सत्ता विषयकाणि आलापकरूपाणि भणितानि तथैव सौधर्मिकाणामपि देवानां त्रीणि गमकानि-पूर्वोक्तानि अभिलापकरूपाणि भणितव्यानि, ' नवरं तिसु वि संखेज्जा भाणियव्वा' ओहिनाणी, ओहिदंसणी चवावेयव्वा, सेसं तं चेव ' नवरं-पूर्वापेक्षया विशेषस्तु अत्र त्रिष्वपि गमकेषु-उत्पादो-द्वर्तना-सत्ता विषयकेषु संख्येयाः सौधर्मिका देवाः भणितव्याः, अवधिज्ञानिनः, अवधिदर्शनिनश्च च्यावयितव्याः प्रच्यावनीयाः ' च्यवन्ति ' पदेन व्यवहर्तव्याः यतो हि सौधर्मादिकल्पाच्च्युतास्सन्तस्तीर्थङ्करादयो भवन्ति अतोऽत्रधि

होते हैं ? 'केवइया तेउलेस्सा उववज्जंति' कितने तेजोलेश्यावाले उत्पन्न होते हैं ? इसके उत्तर में-प्रभु कहते हैं-'एवं जहा जोइसिया णं तिन्नि गमगा तहेव तिन्नि गमगा भाणियव्वा' हे गौतम! ज्योतिषिकों के जैसे उत्पाद, उद्वर्त्तना और सत्ताविषयक तीन आलापक कहे गये हैं वैसे ही आलापक तीन यहां पर भी कहना चाहिये। 'नवरं तिसु वि संखेज्जा भाणियव्वा, ओहिनाणी, ओहिदंसणी य चवावेयव्वा, सेसं तं चेव' परन्तु ज्योतिषिकदेवों के तीन आलापकों की अपेक्षा यहां के उत्पाद, उद्वर्त्तना और सत्ता के आलापकों में 'संख्यात' का पाठ बोलना चाहिये। तथा च-संख्यातसौधर्मदेव ही उत्पन्न होते हैं, संख्यात सौधर्मदेव ही उद्वर्त्तना करते हैं और संख्यात ही सौधर्मदेव सत्ता में मौजूद रहते हैं, अवधिज्ञानी और अवधिदर्शनी यहां से च्युत होते हैं। क्योंकि सौधर्मादिकल्पों से चयित हुए जीव तीर्थकरादिक होते हैं। बाकी का और सब कथन यहां

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-"एवं जहा जोइसियाणं तिन्नि गमगा तहेव तिन्नि गमगा भाणियव्वा" હે ગૌતમ! જ્યોતિષિકોના ઉત્પાદ, ઉદ્વર્ત્તના અને સત્ત વિષયક જેવાં ત્રણ આલાપકો કહેવામાં આવ્યા છે, એવાં જ ત્રણ આલાપકો અહીં પણ કહેવા જોઇએ. "नवरं तिसु वि संखेज्जा भाणियव्वा, ओहिनाणी, ओहिदंसणी य चवावेयव्वा, सेसं तंचेव" જ્યોતિષિકોના ત્રણ આલાપકો કરતાં આ ત્રણ આલાપકોમાં એટલી જ વિશેષતા છે કે ત્યાં ત્રણે આલાપકોમાં "સંખ્યાત પદ વપરાયું છે, તેને બદલે અહીં 'અસંખ્યાત' પદ મૂકવું જોઈએ. જેમ કે....સંખ્યાત જીવો ત્યાં સૌધર્મ દેવ રૂપે ઉત્પન્ન થાય છે, સંખ્યાત સૌધર્મ દેવો ત્યાંથી ઉદ્વર્ત્તના કરે છે અને ત્યાં સંખ્યાત સૌધર્મદેવો વિદ્યમાન છે. સૌધર્મ કલ્પમાંથી અવધિજ્ઞાની જીવો ત્યાંથી ચ્યુત થાય છે, કારણ કે સૌધર્માદિ કલ્પમાંથી ચ્યુત થયેલા જીવો તીર્થંકરાદિક

ज्ञान्यादयश्च्यावयितव्या इति भावः, शेषं तदेव-पूर्वोक्तवदेव बोध्यम् । 'असंखेज्जवित्थडेसु एवं चेव तिन्नि गमगा, नवरं तिसु वि गमएसु असंखेज्जा भाणियव्वा' असंख्येयविस्तृतेषु सौधर्म विमानावासेषु एवमेव संख्येयविस्तृतवदेव त्रीणि गमकानि-उत्पादादिविषयकाणि बोध्यानि, नवरं-पूर्वापेक्षया विशेषस्तु-त्रिष्वपि गमकेषु असंख्येयाः सौधर्मादिकाः भणितव्याः । 'ओहिनाणी य, ओहिदंसणी य संखेज्जा चयंति, सेसं तं चेव' अवधिज्ञानिनश्च, अवधिदर्शिनश्च संख्येयाश्च्यवन्ति, संख्येयानामेव तीर्थङ्करादित्वेनोत्पादसद्भावात्, शेषं तदेव-पूर्वोक्तवदेव अवसेयम्, 'एवं जहा सोहम्मे वत्तव्वया भणिया तहा ईसाणे वि छ गमगा

पूर्वोक्त जैसा ही जानना चाहिये 'असंखेज्जवित्थडेसु एवं चेव तिन्नि गमगा, नवरं तिसु वि गमएसु असंखेज्जा भाणियव्वा' तथा असंख्यातयोजनविस्तारवाले जो सौधर्मविमानावास हैं उनमें संख्यातयोजनविस्तारवाले सौधर्मविमानावासों के जैसे उत्पाद, उद्वर्त्तना, सत्ताविषयक आलापक कहना चाहिये। परन्तु इन आलापकों में संख्यातपद की जगह असंख्यातपद का प्रयोग करना चाहिये। 'अवधिज्ञानी और अवधिदर्शनी यहां से-असंख्यातयोजनविस्तारवाले सौधर्मविमानावासों से-असंख्यात की मात्रा में चवित नहीं होते हैं-किन्तु संख्यात की मात्रा में ही चवित होते हैं। क्योंकि तीर्थंकरादिकरूप से जो उत्पन्न होते हैं, वे संख्यात ही उत्पन्न होते हैं असंख्यात नहीं। बाकी का और सब कथन पहिले कहे गये जैसा ही जानना चाहिये। 'एवं जहा सोहम्मे वत्तव्वया भणिया, तहा ईसाणे

થાય છે. બાકીનું સમસ્ત કથન જ્યોતિષિકોના કથન જેવું જ સમજવું. "असंखेज्जवित्थडेसु एव चेव तिन्नि गमगा, नवरं तिसु वि गमएसु असंखेज्जा भाणियव्वा" અસંખ્યાત યોજનના વિસ્તારવાળા જે સૌધર્મકલ્પના વિમાનાવાસો છે, તેમાં સંખ્યાત યોજનના વિસ્તારવાળા વિમાનાવાસોના જેવાં જ ઉત્પાદ, ઉદ્વર્ત્તના અને સત્તાવિષયક આલાપકો કહેવા જોઈએ, પરન્તુ આ આલાપકોમાં સંખ્યાત પદને બદલે અસંખ્યાત પદનો પ્રયોગ કરવો જોઈએ "અવધિજ્ઞાની અને અવધિદર્શની અહીંથી (અસંખ્યાત યોજનના વિસ્તારવાળા સૌધર્મવિમાનાવાસોમાંથી) અસંખ્યાતની માત્રામાં ચ્યુત થતા નથી, પણ સંખ્યાતની માત્રામાં જ ચ્યુત થાય છે, કારણ કે જે જીવો ત્યાંથી ચ્યવીને તીર્થંકરાદિ રૂપે ઉત્પન્ન થાય છે, તેમની સંખ્યા સંખ્યાત જ છે, અસંખ્યાત નથી બાકીનું સમસ્ત કથન પૂર્વોક્ત કથન અનુસાર જ સમજવું

भाणियव्वा' एवं पूर्वोक्तरीत्या यथा सौधर्मे कल्पे वक्तव्यता भणिता तथा ईशानेऽपि कल्पे षड्गमकानि-उत्पादो-द्वर्तना-सत्ताविषयकाणि त्रीणि संख्यातविस्तृतान्याश्रित्य, एतान्येव त्रीणि असंख्यातविस्तृतानाश्रित्य, इत्येवं षड्गमकानि भणितव्यानि। 'सणंकुमारे एवं चेव' सनत्कुमारे कल्पे, एवमेव-पूर्वोक्तरीत्यैव संख्यातासंख्यातविस्तृतानाश्रित्य त्रयाणां त्रयाणाम्-उत्पादो-द्वर्तना-सत्ता विषयकाणामालापकानां मेलनेन षट् आलापका भणितव्याः, 'नवरं इत्थी वेयगा न उववज्जंति' नवरं सौधर्मेशानापेक्षया विशेषस्तु सनत्कुमारे स्त्रीवेदका न उपपद्यन्ते, स्त्रियो देव्यः सनत्कुमारादिषु नोत्पद्यन्ते, नत्रा तत्र देव्यः सन्ति-

---

वि छ गमगा भाणियव्वा' जिस प्रकार से संख्यातयोजन विस्तारवाले सौधर्मदेवावासों के ये उत्पाद उद्वर्तना एवं सत्ताविषयक आलापक कहे गये हैं उसी प्रकार से संख्यातयोजनविस्तारवाले और असंख्योनयोजन विस्तारवाले ईशानदेवावासों के भी तीन तीन-छ आलापक-उत्पाद, उद्वर्तना और सत्ता विषयक कहना चाहिये। 'सणंकुमारे एवं चेव' सनत्कुमारकल्प में भी इसी प्रकार से संख्यात असंख्यातविस्तारवाले सनत्कुमारावासों को लेकर के तीन तीन ६ आलापक उत्पाद, उद्वर्तना और सत्ता विषयक कहना चाहिये। 'नवरं इत्थीवेयगा न उववज्जंति' परन्तु ईशानदेवावासों के आलापकों की अपेक्षा यहां जो विशेषता है वह ऐसी है कि यहां स्त्री वेदी उत्पन्न नहीं होते

"एवं जहा सोहम्मे वत्तव्वया भणिया, तहा ईसाणे वि छ गमगा भाणियव्वा" જેવી રીતે સંખ્યાત અને અસંખ્યાત યોજનના વિસ્તારવાળા સૌધર્મવિમાનાવાસોમાં ઉત્પાદ, ઉદ્વર્ત્તના અને સત્તા વિષયક ત્રણ ત્રણ આલાપકો કહેવામાં આવ્યા છે, એવાં જ ત્રણ ત્રણ આલાપકો-કુલ છ આલાપકો-ઈશાનકલ્પના સંખ્યાત અને અસંખ્યાત યોજનના વિસ્તારવાળા વિમાનાવાસોમાં ઉત્પાદ, ઉદ્વર્ત્તના અને સત્તાના વિષયમાં પણ કહેવા જોઈએ "सणंकुमारे एवं चेव" સનત્કુમાર કલ્પના સંખ્યાત અને અસંખ્યાત યોજનના વિસ્તારવાળા વિમાનાવાસોમાં ઉત્પાદ, ઉદ્વર્ત્તના અને સત્તાવિષયક ત્રણ ત્રણ આલાપકો-કુલ છ આલાપકો-પણ એજ પ્રમાણે કહેવા જોઈએ. "नवरं इत्थीवेयगा न उववज्जंति" પરન્તુ સૌધર્મ અને ઈશાનના દેવાવાસો કરતાં અહીં વિશેષતા એટલી જ છે કે અહીં (સનત્કુમાર કલ્પમાં) સ્ત્રીવેદી ઉત્પન્ન થતાં નથી, એટલે કે દેવીઓ ઉત્પન્ન થતી નથી કારણ કે સૌધર્મ અને ઈશાન, આ બે દેવલોકમાં જ દેવીઓનો ઉત્પાદ કહ્યો છે ત્યાર પછીના સનત્કુમારાદિ દેવલોકોમાં દેવી-

इत्याह-'पण्णत्तेसु य न भण्णंति' प्रज्ञप्तेषु-प्रज्ञप्तपदोपलक्षित सत्ताविषयक गमके च स्त्रीवेदका न भण्यन्ते, सनत्कुमारादिषु देवीनां सत्ताया अभावात् किन्तु तत्र सनत्कुमारादिषु, अधस्तनदेवलोकादेवीनां गमनसंभवात् तत्रतो देवीनामुद्वर्तनं कदाचिद्भवतीति उद्वर्तना न निषिद्धेति भावः। 'असन्नी तिसु वि गमएसु न भण्णंति, सेसं तं चेव' असंज्ञिनः सनत्कुमारावासेषु त्रिष्वपि गमकेषु-उत्पादो-द्वर्तना-सत्ता विषयकेषु आलापकेषु न भण्यन्ते। सनत्कुमारादिदेवानां संज्ञिभ्य एवोत्पाद-सद्भावेन च्युतानां च संज्ञिष्वेव गमनेन, गमकत्रयेऽपि असंज्ञित्वस्यासद्भावात्,

हैं। अर्थात् देवियां यहां उत्पन्न नहीं होता हैं, क्योंकि देवियों का उत्पाद-दो देवलोक तक-सौधर्म ईशान देवलोक तक ही-कहा गया है। आगे के सनत्कुमारादि देवलोकों में नहीं। अतः जब इनका यहां उत्पाद ही नहीं है तब 'पण्णत्तेसु य न भणंति' प्रज्ञप्तपदोपलक्षित-सत्ताविषयक गमकों में स्त्रीवेदी नहीं कहे गये हैं। क्योंकि सनत्कुमारादिकों में देवियों का सत्ता में अभाव कहा गया है, सनत्कुमादिकों में जो देवियां आती हैं वे अधस्तनदेवलोक से ही आती हैं। अतः वहां से कदाचित् देवियों की उद्वर्त्तना होती है-इसीलिये उद्वर्त्तना का निषेध यहां नहीं किया गया है। असन्नी तिसु वि गमएसु न भण्णंति, सेसं तं चेव' असंज्ञी जीव सनत्कुमारावासों के तीनों भी उत्पाद, उद्वर्त्तना, और सत्ताविषयक आलापकों में नहीं कहे गये हैं। क्योंकि सनत्कुमादि देवों का उत्पाद संज्ञी जीवों में से ही होता है और जब ये वहां से चवित होते हैं-तब

ओनो उत्पाद कह्यो नथी. आ रीते सनत्कुमार देवलोकमां देवीओनी उत्पत्ति ज थती न होवाथी, "पण्णत्तेसु य न भण्णंति" प्रज्ञप्तपदोपलक्षित सत्ताविषयक आलापकोमां पण स्त्रीवेदीनो अभाव ज कह्यो छे, कारण के सनत्कुमारादिक देवलोकोमां देवीओनी विद्यमानतानो ज अभाव कह्यो छे. सनत्कुमारादिकोमां जे देवीओ आवे छे, तेओ अधस्तन (नीचेना) देवलोकमांथी ज आवे छे. तेथी त्यां कयारेक देवीओनी उद्वर्त्तना थाय छे, तेथी अहींया देवीओनी उद्वर्त्तनानो निषेध कह्यो नथी. "असन्नी तिसु वि गमएसु न भण्णंति, सेसं तंचेव" सनत्कुमारावासोना त्रणे आलापकोमां असंज्ञी जीवोनुं कथन करवुं जोईओ नहीं, कारण के त्यां असंज्ञी जीवो उत्पन्न थता नथी, त्यांथी असंज्ञी जीवोनी उद्वर्त्तना थती नथी अने त्यां असंज्ञी जीवो होता पण नथी, कारण के सनत्कुमारादि देवोनो उत्पाद संज्ञी जीवोमांथी ज थाय छे अने त्यांथी च्यवीने तेओ संज्ञी जीवोमां ज उत्पन्न थाय छे. तेथी त्रणे आला-

'एवं जाव सहस्सारे' एवं-पूर्वोक्तदेव यावत् माहेन्द्रे, ब्रह्मलोके, लान्तके, महाशुक्रे, सहस्रारे च कल्पे आलेयम्, सहस्रारान्तेषु कल्पेषु तिर्यग्योनिकानामुत्पादेन असंख्येयानां त्रिष्वपि गमकेषु उत्पादो-द्वर्त्तना-सत्ता विषयकेषु सद्भावात्, णाणत्तं विमाणेसु लेस्सासु य, सेसं तं चेव' नानात्वं-पृथक्त्वं विमानेषु लेश्यासु चावसेयम्, तत्र विमानेषु नानात्वम्, तथाहि प्रथमे कल्पे द्वात्रिंशल्लक्षाणि विमानावासाः, द्वितीये अष्टाविंशतिलक्षाणि विमानावासाः, तृतीये द्वादशलक्षाणि, चतुर्थे अष्ट लक्षाणि, पञ्चमे चत्वारि लक्षाणि, षष्ठे पञ्चाशत् सहस्राणि, सप्तमे चत्वारिंशत्सहस्राणि, अष्टमे षट्सहस्राणि, नवमे दशमे च चतुश्शतानि, एकादशे द्वादशे च

भी ये संज्ञी जीवों में ही उत्पन्न होते हैं अतः तीनों गमकों में असंज्ञी जीवों का सद्भाव नहीं कहा गया है। 'एवं जाव सहस्सारे' इसी प्रकार से यावत्-माहेन्द्र, ब्रह्मलोक, लान्तक, महाशुक्र और सहस्रारान्त कल्पों में तिर्यग्योनिक जीवों का उत्पाद होने से असंख्यातयोजनविस्तारवाले इन आवासों के तीनों गमकों में-आलापकों में-उत्पाद, उद्वर्त्तना और सत्ताविषयक गमकों में असंख्यात तिर्यग्योनिक जीवों का उत्पाद होने से असंख्याततिर्यग्योनिक का सद्भाव कहा गया है। 'णाणत्तं विमाणेसु, लेस्सासु य सेसं तं चेव' तथा पूर्वकथन की अपेक्षा यहां विमानों के कथन में और लेश्याओं के कथन में भिन्नता है-जो इस प्रकार से हैं-प्रथमकल्प में ३२ लाख विमानावास हैं द्वितीय कल्प में २८ लाख विमानावास हैं तीसरे कल्प में १२ लाख विमानावास हैं, चौथे कल्प में ८ लाख विमानावास हैं, पांचवें कल्प में चार लाख विमानावास हैं, छठे कल्प में ५० हजार विमानावास हैं, सातवेंकल्प में ४० हजार विमानावास हैं, आठवें कल्प में छ हजार विमानावास हैं, नौवें और

પકોમાં અસંજ્ઞી જીવોનો સદ્ભાવ કહ્યો નથી. "एवं जाव सहस्सारे" એજ પ્રકારનું કથન માહેન્દ્ર, બ્રહ્મલોક, લાન્તક, મહાશુક્ર અને સહસ્રાર સુધીના કલ્પોમાં પણ સમજવું આ કલ્પોમાં તિર્યંગ્યોનિક જીવોનો ઉત્પાદ હોવાથી અસંખ્યાત યોજનના વિસ્તારવાળા આ આવાસોમાં ત્રણે આલાપકોમાં-ઉત્પાદ, ઉદ્વર્ત્તના અને સત્તાવિષયક આલાપકોમાં-અસંખ્યાત તિર્યંગ્યોનિકનો સદ્ભાવ કહ્યો છે. "णाणत्तं विमाणेसु लेस्सासु य, सेसं तंचेव" પૂર્વકથન કરતા આ કથનમાં વિમાનો અને લેશ્યાઓના કથનમાં જ ભિન્નતા છે. તે નીચે પ્રમાણે છે-પહેલા કલ્પમાં ૩૨ લાખ વિમાનાવાસ છે, બીજામાં ૨૮ લાખ, ત્રીજામાં ૧૨ લાખ, ચોથામાં આઠ લાખ, પાંચમાંમાં ૪ લાખ, છઠ્ઠામાં ૫૦ હજાર, સાતમાંમાં ૪૦ હજાર, આઠમાંમાં ૬ હજાર, નવમાં અને દસમામાં ૪૦૦

त्रीणि शतानि नवग्रैवेयकेषु प्रथमत्रिके एकादशोत्तरशतम्, द्वितीयत्रिके सप्तोत्तरशतम्, तृतीयत्रिकेषु एकशतम्, पञ्चानुत्तरविमानेषु पञ्चविमानावासाः सर्वमेलनेन ८४९७०२३ त्रयोविंशत्यधिक सप्तनवतिसहस्रोत्तर चतुरशीतिलक्षाणि विमानावासाः वैमानिकानां सौधर्मादारभ्यानुत्तरविमानपर्यन्तानाम् अवसेयाः, इति,

प्रतिपत्तव्यम् लेश्यासु तु नानात्वम्, तथाहि-प्रथमे द्वितीयकल्पे तेजोलेश्या, तृतीये चतुर्थे पञ्चमे च कल्पे पद्मलेश्या, अग्रे सर्वेषु कल्पेषु शुक्ललेश्या भवति। शेषं तदेव-पूर्वोक्तवदेवावसेयम्, गौतमः पृच्छति-'आणयपाणयेसु णं भंते ! कप्पेसु केवइया विमाणावाससया पण्णत्ता ?' हे भदन्त ! आनतप्राणतयोः खलु कल्पयोः कियन्ति विमानावासशतानि प्रज्ञप्तानि ? भगवानाह-'गोयमा ! चत्तारि

दशवें देवलोक में ४०० विमान हैं, ११ वें और १२ वें देवलोक में ३०० विमानावास हैं, नवग्रैवेयकों के प्रथमत्रिक में एक सौ ग्यारह विमान हैं, द्वितीयत्रिक में १०७ विमान हैं, तृतीयत्रिक में १०० एक सौ विमान हैं। पांचवें अनुत्तरविमानों में पांच विमान हैं। इस प्रकार सब मिलकर कुल विमानावासों का जोड सौधर्म से लेकर अनुत्तर विमानों तक ८४९७०२३ होता है। इस प्रकार विमानों में नानात्व प्रकट कर अब लेश्याओं में नानात्व प्रकट किया जाता है-जो इस प्रकार से है-प्रथम और द्वितीय कल्प में तेजोलेश्या है, तृतीय चतुर्थ एवं पंचमकल्प में पद्मलेश्या है, और इनमें आगे के और सब कल्पों में केवल एक शुक्ललेश्या है। बाकी का और सब कथन पूर्वोक्त जैसा ही है। अब गौतम प्रभु से ऐसा पूछते हैं- 'आणयपाणएसु णं भंते ! कप्पेसु केवइया विमाणावाससया पण्णत्ता' हे भदन्त आनतप्राणतकल्पों में कितने सौ विमानावास कहे

અને અગિયારમાં અને બારમાં દેવલોકમાં ૩૦૦ વિમાનાવાસ છે. નવગ્રૈવેયકોના પહેલા ત્રિકમાં ૧૧૦, બીજા ત્રિકમાં ૧૦૭ અને ત્રીજા ત્રિકમાં ૧૦૧ વિમાનો છે. આ સિવાય અનુત્તર વિમાનો પાંચ કહ્યા છે. આ રીતે સૌધર્મથી લઈને અનુત્તર વિમાનો પર્યન્તના કુલ વિમાનાવાસો ૮૪૯૭૦૨૩ થાય છે. હવે લેશ્યાઓની અપેક્ષાએ ભિન્નના પ્રકટ કરવામાં આવે છે-પહેલા અને બીજા કલ્પમાં તેજોલેશ્યાનો, ત્રીજા, ચોથા અને પાંચમાં કલ્પમાં પદ્મલેશ્યાનો, અને ત્યાર પછીનાં બધાં કલ્પોમાં શુકલલેશ્યાનો સદ્ભાવ હોય છે. બાકીનું સમસ્ત કથન પૂર્વોક્ત કથન જેવું-જ સમજવું.

· ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-" आणयपाणएसु णं भंते ! कप्पेसु केवइया विमाणावाससया पण्णत्ता ?" હે ભગવન્ ! આનતપ્રાણત કલ્પોમાં કેટલાં સો વિમાનો કહ્યાં છે?

विमाणावाससया पण्णत्ता' हे गौतम ! आनतप्राणतकल्पयोश्चत्वारि विमानावास-शतानि प्रज्ञप्तानि, गौतमः पृच्छति-'तेणं भंते ! किं संखेज्जवित्थडा असंखेज्ज-वित्थडा ?' हे भदन्त ! ते खलु चतुःशतविमानावासाः किं संख्येयविस्तृता भव-न्ति ? किंवा असंख्येयविस्तृता भवन्ति ? भगवानाह-'गोयमा ! संखेज्जवित्थडा वि, असंखेज्जवित्थडा वि' हे गौतम ! ते विमानावासाः संख्येयविस्तृता अपि सन्ति, असं-ख्येयविस्तृता अपि सन्ति, 'एवं संखेज्जवित्थडेसु तिन्नि गमगा जहा सहस्सारे, असं-खेज्जवित्थडेसु उववज्जंतेसु य चयंतेसु य एवं चेव संखेज्जा भाणियव्वा, पण्णत्तेसु असंखेज्जा' एवं पूर्वोक्तरीत्या, संख्येयविस्तृतेषु विमानावासेषु त्रीणि गमकानि-उत्पादो-द्वर्तना-सत्तानिप्रयकाणि यथा सहस्रारे कल्पे प्रतिपादितानि तथा

गये हैं ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-'गोयमा ! चत्तारि विमाणावास-सया पण्णत्ता' हे गौतम ! आनतप्राणतकल्पों में ४०० विमानावास कहे गये हैं। अब गौतमस्वामी प्रभु से ऐसा पूछते हैं-'तेणं भंते ! किं संखेज्जवित्थडा असंखेज्जवित्थडा' हे भदन्त ! ये ४०० विमानावास-संख्यात योजनविस्तारवाले हैं ? या असंख्यातयोजन विस्तारवाले हैं ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-'गोयमा ! संखेज्जवित्थडा वि, असंखे-ज्जवित्थडा वि' ये संख्यातयोजन विस्तारवाले भी हैं और असंख्यात-योजन विस्तारवाले भी हैं। 'एवं संखेज्जवित्थडेसु तिन्नि गमगा-जहा सहस्सारे, असंखेज्जवित्थडेसु उववज्जंतेसु य चयंतेसु य एवंचेव संखेज्जा भाणियव्वा, पण्णत्तेसु असंखेज्जा' पूर्वोक्तरीति के अनुसार संख्यातयोजनविस्तारवाले विमानावासों में उत्पाद उद्वर्तना सत्ता-

---

૧ મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-" गोयमा ! चत्तारि विमाणावाससया पण्णत्ता " હે ગૌતમ ! આનતપ્રાણત કલ્પોમાં ૪૦૦ વિમાનાવાસ કહ્યા છે.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-" ते णं भंते ! किं संखेज्जवित्थडा, असंखेज्जवि-त्थडा ?" હે ભગવન્ ! તે ૪૦૦ વિમાનાવાસો સંખ્યાત યોજનના વિસ્તાર-વાળા છે, કે અસંખ્યાત યોજનના વિસ્તારવાળા છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-" गोयमा ! संखेज्जवित्थडा वि, असंखेज्जवित्थडा-वि " હે ગૌતમ ! તેઓ સંખ્યાત યોજનના વિસ્તારવાળા પણ છે અને અસંખ્યાત યોજનના વિસ્તારવાળા પણ છે. " एवं संखेज्जवित्थडेसु तिन्नि गमगा, जहा सहस्सारे, असंखेज्जवित्थडेसु उववज्जंतेसु य चयंतेसु य एवंचेव संखेज्जा भाणियव्वा, पण्णत्तेसु असंखेज्जा " આગળ સહસ્રાર કલ્પના સંખ્યાત યોજનના વિસ્તારવાળા વિમાનાવાસોમાં દેવોના ઉત્પાદ, ઉદ્વર્તના (ચ્યવન)

प्रतिपत्तव्यानि, असंख्येयविस्तृतेषु विमानावासेषु, उत्पद्यन्तेषु-उत्पद्यमानेषु उत्पद्यन्ते पदोपलक्षितविषयेषु च च्यवन्तिषु-च्यवत्सु च्यवन्तिपदोपलक्षितविषयेषु च एवमेव पूर्वोक्तरीत्यैव संख्येयाः भणितव्याः । प्रज्ञप्तेषु-प्रज्ञप्तपदोपलक्षितेषु विषयेषु असंख्येयाः वक्तव्याः तथा च आनतप्राणतयोः संख्येयविस्तृतेषु विमानावासेषु उत्पादे च्यवने अवस्थाने च विमानानां संख्यातविस्तृतत्वात् संख्याता एव भवन्ति, असंख्यातविस्तृतेषु उत्पादच्यवनयोः संख्याता एव भवन्ति यतो गर्भजमनुष्येभ्य एव आनतादिषु उत्पद्यन्ते, ते च संख्याता एव सन्ति, एवमेव आनतादिभ्यश्च्युता गर्भजमनुष्येष्वेवोत्पद्यन्ते, अत एकसमये संख्याताना-

विषयक तीन आलापक सहस्रारकल्प में कहे अनुसार जानना चाहिये। तथा असंख्यातयोजन विस्तारवाले विमानावासों में उत्पाद-विषयक और उद्वर्तना विषयक जो आलापक कहे गये हैं उनमें पूर्वोक्तरीति के अनुसार 'संख्यात' पाठ का उच्चारण करना चाहिये। तथा सत्ताविषयक आलापक में 'असंख्यात' ऐसे पाठ का उच्चारण करना चाहिये। संख्यातयोजनविस्तारवाले आनतप्राणतविमानावासों में संख्यातयोजन विस्तारवाले होने के कारण उत्पाद उद्वर्तना और सत्ता में संख्यात ही आनतप्राणत देव होते हैं, और असंख्यात योजन-विस्तारवाले आनतप्राणत विमानावासों में असंख्यात योजनविस्तारवाले होने के कारण उत्पाद में और च्यवन में तो संख्यात ही आणतप्राणत देव होते हैं। क्योंकि गर्भजमनुष्यों से ही आकरके जीव आनतादिकों में उत्पन्न होते हैं। और ये संख्यात ही होते हैं। इसी प्रकार आन-

અને સત્તા વિષયક જેવા ત્રણ આલાપકો કહ્યા છે એવાં જ ત્રણ આલાપકો અહીં પણ કહેવા જોઇએ તથા અસંખ્યાત યોજનના વિસ્તારવાળા આનત-પ્રાણતના વિમાનાવાસોમાં ઉત્પાદ અને ઉદ્વર્ત્તના વિષયક આલાપકોમાં 'સંખ્યાત' પદનું જ ઉચ્ચારણ થવું જોઈએ પરન્તુ સત્તાવિષયક આલાપકમાં "અસંખ્યાત" પદનું ઉચ્ચારણ થવું જોઈએ જેમ કે...આનતપ્રાણતના સંખ્યાત યોજનના વિસ્તારવાળા વિમાનાવાસોમાં સંખ્યાત દેવો ઉત્પન્ન થાય છે, તેમાંથી સંખ્યાત દેવોનું ચ્યવન થાય છે અને ત્યાં સંખ્યાત આનતપ્રાણત દેવો વિદ્યમાન હોય છે. આનતપ્રાણતના અસંખ્યાત યોજનના વિસ્તારવાળા વિમાનાવાસોમાં એક સમયમાં સંખ્યાત દેવોનો ઉત્પાદ થાય છે, કારણ કે ગર્ભજ મનુષ્યોમાંથી આવીને ત્યાં જીવો ઉત્પન્ન થાય છે અને તેમની સંખ્યા સંખ્યાત પ્રમાણ જ હોય છે. સંખ્યાત યોજનના વિસ્તારવાળા

मेवोत्पादच्यवनसम्भवः, अवस्थानं तु असंख्यातानामपि स्यात्, असंख्यजीवितत्वेन एकस्मिन्नेव जीवितकाले असंख्यातानामुत्पादात्, इति फलितम्, 'नवरं नोइंदियोवउत्ता अणंतरोववन्नगा, अणंतरोवगाढगा, अणंतराहारगा, अणंतरपज्जत्तगा य एएसिं जहण्णेणं एक्को वा, दो वा, तिन्नि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा पण्णत्ता सेसा असंखेज्जा भाणियव्वा' नवरं—पूर्वापेक्षया विशेषस्तु—आनतप्राणतयोर्विमानावासेषु नो इन्द्रियोपयुक्ताः मनोयुक्ताः, अनन्तरोपपन्नकाः, अनन्तरावगाढकाः, अनन्तराहारकाः, अनन्तरपर्याप्तकाश्च एतेषां पञ्चानां जघन्येन एको वा, द्वौ वा, त्रयो वा,

---

तादिकों से चवित हुए जीव भी गर्भजमनुष्यों में ही उत्पन्न होते हैं। इसलिये एक समय में संख्यात जीवों का ही उत्पाद और च्यवन संभवता है। तथा जो अवस्थान असंख्यातों का कहा गया है—सो उसमें कारण ऐसा है कि इनका आयुष्य असंख्यात वर्ष का होता है। अतः इनके जीवनकाल में असंख्यातदेव उत्पन्न होते हैं, इसलिये स्थिति में असंख्यात देवों की यहां प्ररूपणा की गई है। 'नवरं नोइंदियो वउत्ता अणंतरोववन्नगा, अणंतरोवगाढगा, अणंतराहारगा, अणंतरपज्जत्तगा य एएसिं जहण्णेणं एक्को वा, दो वा, तिन्नि वा उक्कोसेणं संखेज्जा पण्णत्ता, सेसा असंखेज्जा भाणियव्वा' पूर्व की अपेक्षा यदि कोई विशेषता है तो वह ऐसी है कि आनतप्राणत के विमानावासों में मनोयुक्त, अनन्तरोपपन्नक, अनन्तरावगाढक, अनन्तराहारक और

તે વિમાનાવાસોમાંથી એક સમયમાં સંખ્યાત દેવોનું જ ચ્યવન થાય છે, કારણ કે ત્યાંથી સંખ્યાત દેવો જ ચ્યવન પામીને ગર્ભજ મનુષ્યોમાં ઉત્પન્ન થાય છે. તેથી ત્યાં એક સમયમાં સંખ્યાત જીવોનો ઉત્પાદ કહ્યો છે અને ત્યાંથી એક સમયમાં સંખ્યાત જીવોનું ચ્યવન કહ્યું છે. પરન્તુ આનતપ્રાણત કલ્પોના અસંખ્યાત યોજનનાં વિસ્તારવાળા વિમાનાવાસોમાં અસંખ્યાત દેવો વિદ્યમાન હોય છે, કારણ કે તેમનું આયુષ્ય અસંખ્યાત વર્ષનું હોય છે. તેથી તેમના જીવનકાળમાં ત્યાં અસંખ્યાત દેવો ઉત્પન્ન થાય છે, તેથી સત્તા (વિદ્યમાનતા) વિષયક આલાપકમાં અહીં અસંખ્યાત દેવોની પ્રરૂપણા કરવામાં આવી છે. "नवरं नोइंदियोवउत्ता अणंतरोववन्नगा, अणंतरोवगाढगा, अणंतराहारगा, अणंतरपज्जत्तगा य एएसिं जहण्णेणं एक्को वा, दो वा, तिन्नि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा पण्णत्ता, सेसा असंखेज्जा भाणियव्वा" પરન્તુ પહેલાંના કથન કરતાં અહીં વિશેષતા એટલી જ છે કે આનતપ્રાણતના વિમાનાવાસોમાં મનોયુક્ત, અનન્તરોપપન્નક, અનન્તરાવગાઢક, અનન્તરાહારક અને અનન્તર પર્યાપ્ત જીવો

उत्कृष्टेन संख्येयाः प्रज्ञप्ताः, शेषाः उक्तपञ्चातिरिक्ताः असंख्येया भणितव्याः तथा च केवलं नो इन्द्रियोपयुक्तादिषु पञ्चपदेषु संख्येया एव, तेषामुत्पादावसरे एव सद्भावात् उत्पत्तिश्च संख्येयानामेव, आरणच्चुतेषु एवं चेव जहा आणयपाणएसु नाणत्तं विमाणेषु, एवं गेवेज्जगावि' आरणाच्युतयोः कल्पयोस्तु एतदेव-पूर्वोक्तवदेव यथा आनतप्राणतयोः कल्पयोः प्रतिपादितं तथैव प्रतिपत्तव्यम्, नानात्वं-पृथक्त्वं त्रिंशतत्वम् विमानेषु बोध्यम्, एवं-पूर्वोक्तरीत्यैव ग्रैवेयका अपि नवप्रकाराः आनतप्राणतादिवदेव अवसेयाः तथा च नवग्रैवेयकविमानानां पृथक्त्वम् अष्टादशाधिकशतत्रयम् गौतमः पृच्छति-'कइणं भंते ! अणुत्तरविमाणा पण्णत्ता ?'

अनन्तरपर्याप्तक ये सब जघन्य से एक या दो या तीन तक कहे गये हैं और उत्कृष्ट से संख्यात तक कहे गये हैं। इनसे अतिरिक्त और सब असंख्यात कहे गये हैं। तथा च-केवल नोइन्द्रियोपयुक्तादिक पांच पदों में संख्यात ही उत्पन्न होते हैं क्योंकि इनका उत्पाद के अवसर में ही सद्भाव रहता है। और उत्पत्ति संख्यातों की ही होती है। 'आरणच्चुएसु एवं चेव जहा आणयपाणएसु, नाणत्तं विमाणेसु, एवं गेवेज्जगा वि' जैसा कथन आनतप्राणत कल्पों में किया जाता है वैसा ही आरण और अच्युत इन दो कल्पों में भी करना चाहिये। परन्तु विमानों की संख्या में भिन्नता है और वह तीन सौ ३०० के रूप में है। अर्थात् यहां विमानों की संख्या तीनसौ ३०० है। आनतप्राणत इन दो कल्पों में किये गये कथन के अनुसार ही नवग्रैवेयकों में भी कथन जानना चाहिये। परन्तु यहां पर भी विमानों की अपेक्षा से भिन्नता है-क्योंकि यहां पर विमानों की संख्या ३१८ कही गई। तब कि आनतप्राणत में विमानों की संख्या ४०० कही गई है।

ઓછામાં ઓછા એક, બે અથવા ત્રણ કહ્યા છે અને વધારેમાં વધારે સંખ્યાત કહ્યા છે. તે સિવાયના બધાં અસંખ્યાત કહ્યા છે. જેમ કે....કેવળ નો ઇન્દ્રિયોપયુક્ત આદિ પાંચ પદોમાં સંખ્યાત જ ઉત્પન્ન થાય છે, કારણ કે તેમના ઉત્પાદના અવસરમાં જ સદ્ભાવ રહે છે. અને ઉત્પત્તિ સંખ્યાતોની જ થાય છે. "आरणच्चुएसु एवं चेव जहा आणयपाणएसु, नाणत्तं विमाणेसु, एव गेवेज्जगा वि" જેવું કથન આનતપ્રાણતના વિષે કરવામાં આવ્યું છે, એવું જ કથન આરણ અને અચ્યુત કલ્પોવિષે પણ કરવું જોઇએ પણ વિમાનોની સંખ્યામાં જ ભિન્નતા છે. આ બન્ને કલ્પોમાં ૩૦૦ વિમાનો છે, ત્યારે આનતપ્રાણતમાં ૪૦૦ વિમાનો છે. ગ્રૈવેયકમાં વિમાનોની સંખ્યા ૩૧૮ ની છે. બાકીનું કથન આનતપ્રાણતના પ્રમાણે સમજવું.

हे भदन्त ! कति खलु अनुत्तरविमानाः प्रज्ञप्ताः ? भगवानाह-'गोयमा ! पंच अणुत्तरविमाणा पण्णत्ता' हे गौतम ! पञ्च अनुत्तरविमानाः प्रज्ञप्ताः, गौतमः पृच्छति-'ते णं भंते ! किं संखेज्जवित्थडा, असंखेज्जवित्थडा ?' हे भदन्त ! ते खलु पञ्चानुत्तरविमानाः किं संख्येयविस्तृताः सन्ति ? किं वा असंख्येयविस्तृताः सन्ति ? भगवानाह-'गोयमा ! संखेज्जवित्थडे य, असंखेज्जवित्थडा य हे गौतम ! पञ्चानुत्तरविमानेषु एकः संख्येयविस्तृतश्च अस्ति, अन्ये असंख्येयविस्तृताश्च सन्ति तत्र मध्यमः संख्यातविस्तृतो वर्तते योजनलक्षप्रमाणत्वात् गौतमः पृच्छति-

अब गौतमस्वामी प्रभु से ऐसा पूछते हैं 'कइ णं भंते ! अणुत्तरविमाणा पण्णत्ता' हे भदन्त ! अनुत्तर विमान कितने कहे गये हैं ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-'गोयमा ! पंच अणुत्तरविमाणा पण्णत्ता' हे गौतम ! अनुत्तरविमान पांच कहे गये हैं। अब गौतमस्वामी प्रभु से ऐसा पूछते हैं-'ते णं भंते ! किं संखेज्जवित्थडा, असंखेज्जवित्थडा' हे भदन्त ! वे पांच अनुत्तरविमान संख्यात योजन विस्तारवाले हैं, या असंख्यातयोजन विस्तारवाले हैं ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-'गोयमा ! संखेज्जवित्थडे य असंखेज्जवित्थडा य' हे गौतम ! ये पांच अनुत्तर विमानो में से एक अनुत्तरविमान संख्यातयोजन विस्तार वाला है और शेष असंख्यातयोजन विस्तारवाले हैं। अर्थात् इनमें जो मध्यम विमान है वह एक लाख योजन प्रमाण होने से संख्यात-योजनप्रमाणवाला कहा गया है। अब गौतमस्वामी प्रभु से ऐसा

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-"कइ णं भंते ! अणुत्तरविमाणा पण्णत्ता ?" હે ભગવન્ ! અનુત્તર વિમાનો કેટલાં કહ્યાં છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-"पंच अणुत्तरविमाणा पण्णत्ता" હે ગૌતમ ! અનુત્તર વિમાનો પાંચ કહ્યાં છે ?

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-"ते णं भंते ! किं संखेज्जवित्थडा, असंखेज्जवित्थडा ?" હે ભગવન્ ! તે પાંચ અનુત્તર વિમાનો સંખ્યાત યોજનના વિસ્તારવાળાં છે, કે અસંખ્યાત યોજનના વિસ્તારવાળાં છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-"गोयमा ! संखेज्जवित्थडे य, असंखेज्जवित्थडा य" હે ગૌતમ ! પાંચ અનુત્તર વિમાનોમાંનું એક અનુત્તર વિમાન સંખ્યાત યોજનના વિસ્તારવાળું છે અને બાકીના ચાર અસંખ્યાત યોજનના વિસ્તારવાળાં છે. એટલે કે તેમાં જે મધ્યમ વિમાન છે તે એક લાખ યોજનના વિસ્તારવાળું હોવાથી તેને સંખ્યાત યોજનના વિસ્તારવાળું કહ્યું છે.

'पंचसु णं भंते ! अणुत्तरविमाणेसु संखेज्जवित्थडे विमाणे एगसमएणं केवइया अणुत्तरोववाइया देवा उववज्जंति ? हे भदन्त ! पञ्चसु खलु अनुत्तरविमानेषु संख्येयविस्तृते विमाने एक समये कियन्तः अनुत्तरौपपातिका देवा उपपद्यन्ते ? 'केवइया सुक्कलेस्सा उववज्जंति ? पुच्छा तहेव' कियन्तः शुक्ललेश्या उपपद्यन्ते ? इत्यादि पृच्छा तथैव-पूर्वोक्तरीत्यैव अवसेया, भगवानाह-' गोयमा ! पंचसु णं अणुत्तरविमाणेसु संखेज्जवित्थडे अणुत्तरविमाणे एगसमएणं जहण्णेणं एक्को वा, दो वा, तिन्नि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा अणुत्तरोववाइया देवा उववज्जंति, हे गौतम ! पञ्चसु खलु अनुत्तरविमानेषु संख्येयविस्तृते अनुत्तरविमाने एक समये जघन्येन एको वा, द्वौ वा, त्रयो वा, उत्कृष्टेन संख्येया अनुत्तरौपपातिका

पूछते हैं-'पंचसु णं भंते ! अणुत्तरविमाणेसु संखेज्जवित्थडे विमाणे एगसमएणं केवइया अणुत्तरोववाइया देवा उववज्जंति' हे भदन्त ! पांच अनुत्तरविमानों में से जो मध्यमविमान संख्यातयोजन का विस्तार-वाला कहा गया है उसमें एक समय में कितने अनुत्तरोपपातिक देव उत्पन्न होते हैं ? 'केवइया सुक्कलेस्सा उववज्जंति ? पुच्छा तहेव' कितने शुक्ललेश्यावाले उत्पन्न होते हैं ? इत्यादि प्रश्न यहां पूर्वोक्त रीति से ही जानना चाहिये । इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं='गोयमा ! पंचसु णं अणुत्तरविमाणेसु संखेज्जवित्थडे अणुत्तरविमाणे एगसमएणं जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिन्नि वा उक्कोसेणं संखेज्जा अणुत्तरोववाइया देवा उववज्जंति' हे गौतम ! पांच अनुत्तरविमानों में से जो मध्यमविमान संख्यातयोजन विस्तारवाला कहा गया है उसमें एक समय में कम से कम एक, या दो या तीन तक और अधिक से अधिक संख्यात तक

गौतम स्वामीनो प्रश्न-" पंचसु णं भंते ! अणुत्तरविमाणेसु संखेज्जवित्थडे विमाणे एगसमएणं केवइया अणुत्तरोववाइया देवा उववज्जंति ?" हे भगवन् ! पांच अनुत्तर विमानोमांना संख्यात योजनना विस्तारवाळा अनुत्तर विमानमां એક સમયમાં કેટલા અનુત્તરોપપાતિક દેવો ઉત્પન્ન થાય છે ? " केवइया सुक्कलेस्सा उववज्जंति ? पुच्छा तहेव " તેમાં એક સમયમાં કેટલા શુકલલેશ્યાવાળા દેવો ઉત્પન્ન થાય છે ? ઇત્યાદિ પૂર્વોક્ત પ્રશ્નો અહીં પણ સમજી લેવાના છે.

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-" गोयमा ! पंचसु णं अणुत्तरविमाणेसु संखेज्जवित्थडे अणुत्तरविमाणे एगसमएणं जहण्णेणं एक्को वा, दो वा, तिन्नि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा अणुत्तरोववाइया देवा उववज्जंति " હે ગૌતમ ! પાંચ અનુત્તર વિમાનોમાંના સંખ્યાત યોજનના વિસ્તારવાળા મધ્યમ વિમાનમાં એક સમયમાં

देवा उपपद्यन्ते, 'एवं जहा गेवेज्जविमाणेसु संखेज्जवित्थडेसु' एवं-पूर्वोक्तरीत्या, यथा ग्रैवेयकविमानेषु संख्येयविस्तृतेषु उक्तं तथैव अत्रापि वक्तव्यम्, किन्तु नवरं किण्हपक्खिया, अभवसिद्धिया, तिसु अण्णाणेसु एए न उववज्जंति, न चयन्ति, न पण्णत्तएसु भाणियव्वा' नवरं-पूर्वापेक्षया विशेषस्तु अत्र कृष्णपाक्षिकाः, अभवसिद्धिकाः त्रिषु अज्ञानेषु मत्यज्ञानश्रुताज्ञानविभङ्गज्ञानलक्षणेषु वर्तमाना एते जीवा न उत्पद्यन्ते, न च्यवन्ति, न प्रज्ञप्तपदोपलक्षितेषु च भणितव्याः न प्रज्ञप्ताः सन्तीति भावः। 'एवं च अनुत्तरविमानेषु संख्येयविस्तृते विमाने सम्यग्दृष्टीनामेवोत्पादसद्भावात् कृष्णपाक्षिकाभवसिद्धिकत्र्यज्ञानिनाम् आलापकत्रयेऽपि उत्पाद-च्यवन-सत्ताविषयके मतिषेधः कृतोऽवसेयः,

---

अनुत्तरौपपातिक देव उत्पन्न होते हैं। 'एवं जहा गेवेज्जविमाणेसु संखेज्जवित्थडेसु' इस प्रकार से जैसा पूर्व में संख्यातयोजन विस्तारवाले ग्रैवेयकविमानों में कहा गया है उसी प्रकार से यहां पर भी जानना चाहिये। परन्तु 'नवरं किण्हपक्खिया, अभवसिद्धिया तिसु अन्नाणेसु एए न उववज्जंति, न चयंति, न पण्णत्तेसु भाणियव्वा' नवग्रैवेयकों के कथन की अपेक्षा यदि यहां के कथन में कोई विशेषता है तो वह ऐसी है कि मतिअज्ञान, श्रुतअज्ञान और विभङ्गज्ञान इन तीन अज्ञानों में वर्तमान कृष्णपाक्षिक और अभवसिद्धिक जीव यहां उत्पन्न नहीं होते हैं, यहां से उद्वर्त्तना नहीं करते हैं और न सत्ता में ही यहां होते हैं। इस प्रकार संख्यातयोजन विस्तारवाले अनुत्तरविमान में सम्यग्दृष्टि जीवों का ही उत्पाद होता है, इस कारण वहां तीन अज्ञानवाले कृष्ण-

---

ઓછામાં ઓછા એક, બે અથવા ત્રણ અને વધારેમાં વધારે સંખ્યાત અનુત્તરૌપપાતિક દેવો ઉત્પન્ન થાય છે. "एवं जहा गेवेज्जविमाणेसु संखेज्ज वित्थडेसु" પહેલાં જેવું કથન સંખ્યાત યોજનના વિસ્તારવાળાં ગ્રૈવેયક વિમાનોના દેવોના વિષે કરવામાં આવ્યું છે, એવું જ કથન સંખ્યાત યોજનના વિસ્તારવાળા અનુત્તર વિમાનના દેવો વિષે પણ સમજવું "नवरं किण्हपक्खिया, अभवसिद्धिया, तिसु अन्नाणेसु एए न उववज्जति, न चयंति न पण्णत्तेसु भाणियव्वा" પરન્તુ નવગ્રૈવેયકોના કથન કરતાં અહીં એટલી જ વિશેષતા છે કે સંખ્યાત યોજનના વિસ્તારવાળા અનુત્તર વિમાનમાં કૃષ્ણપાક્ષિક, અભવસિદ્ધિક અને મતિઅજ્ઞાન, શ્રુતઅજ્ઞાન, અને વિભંગજ્ઞાન, આ ત્રણ અજ્ઞાનોથી યુક્ત જીવોની ઉત્પત્તિ થતી નથી, ચ્યવન પણ થતું નથી અને એવાં જીવો ત્યાં વિદ્યમાન પણ હોતા નથી. આ રીતે સંખ્યાત યોજનના વિસ્તારવાળા અનુત્તર વિમાનમાં સમ્યગ્દૃષ્ટિ જીવોનો જ ઉત્પાદ, થાય છે તે કારણે ત્રણ

'अचरिमा वि खोडिज्जंति, जाव संखेज्जा चरिमा पण्णत्ता, सेसं तं चेव' अचरमा अपि अत्र प्रतिषिध्यन्ते, तथा च येषां चरमोऽनुत्तरदेवभवः स एव ते चरमास्तद्भिन्नास्तु अचरमास्ते चात्र प्रतिषेधयितव्याः, यतश्चरमाणामेव मध्यमे अनुत्तरविमाने उत्पद्यमानत्वात्, अचरमाणां तत्रानुत्पादात्, यावत्-संख्येयाः शुक्लपाक्षिकादयः' संख्येयाश्चरमाश्च प्रज्ञप्ताः सन्ति, शेषं तदेव-पूर्वोक्तदेवावसेयम्। असंखेज्जवित्थडेसु वि एए न भण्णंति' असंख्येयविस्तृतेषु अपि असंख्यात योजनविस्तारयुक्तेषु, इत्यर्थः एवमग्रेऽपि चतुर्षु अनुत्तरविमानेषु एते पूर्वोक्ताः कृष्णपाक्षिकादयः त्रिष्वपि आलापकेषु-उत्पाद-च्यवन-सत्ता विषयेषु न

पाक्षिक और अभवसिद्धिक जीवों का उत्पाद च्यवन और सत्ताविषयक इन तीन आलापकों में प्रतिषेध किया गया है। ऐसा जानना चाहिये। 'अचरिमा वि खोडिज्जंति, जाव संखेज्जा चरिमा पण्णत्ता, सेसं तं चेव' यहां अचरमजीवों का भी उत्पाद निषिद्ध है-क्योंकि इस मध्यम अनुत्तरविमानमें चरम जीवों का ही उत्पाद होता है। तात्पर्य कहने का यह है कि-जिनका यही अनुत्तरभव चरम-अन्तिम भव है वे तो चरम हैं-और इनसे भिन्न अचरम हैं। अचरमजीवों का यहां उत्पाद ही नहीं होता है। क्योंकि उनके अभीभव बाकी रहते हैं। जिनके भव इसी भव के सिवाय नहीं होते हैं-जो यहां से चवित होकर मनुष्यभव लेकर मोक्ष में जानेवाले होते हैं-वे ही जीव यहां उत्पन्न होते कहे हैं। इसी कारण यहां संख्यात शुक्लपाक्षिकजीव और संख्यात चरमभववाले जीव कहे गये हैं। बाकी का और सब कथन पूर्व में जैसा कहा गया है वैसा ही जानना चाहिये। "असंखेज्ज वित्थडेसु वि एए न भण्णंति' असंख्यातयोजनविस्तारवाले चार अनु-

---

અજ્ઞાનવાળા કૃષ્ણપાક્ષિક, અને અભવસિદ્ધિક જીવોનો ઉત્પાદ, ચ્યવન અને અસ્તિત્વ વિષયક ત્રણ આલાપકોમાં નિષેધ કરવામાં આવ્યો છે, એમ સમજવું. "अचरिमा वि खोडिज्जंति, जाव संखेज्जा चरिमा पण्णत्ता, सेसं तंचेव" ત્યાં અચરમ જીવોનો ઉત્પાદ થતો નથી, કારણ કે આ મધ્યમ અનુત્તર વિમાનમાં ચરમ જીવોનો જ ઉત્પાદ થાય છે. આ કથનનો ભાવાર્થ એ છે કે-જેમનો અનુત્તર વિમાનમાં ઉત્પત્તિ રૂપે ભવ ચરમ (અન્તિમ) છે, એવા જીવોનો જ ત્યાં ઉત્પાદ થાય છે. જેનો તે ભવ અન્તિમ નથી, એવા જીવોને અચરમ કહે છે. એવા અચરમ જીવોનો ત્યાં ઉત્પાદ થતો નથી જે જીવો ત્યાંથી ચ્યવીને મનુષ્ય ભવ પ્રાપ્ત કરીને મોક્ષ પ્રાપ્ત કરવાના છે, એવાં જીવોનો અને સંખ્યાત ચરમભવવાળા જીવોનો સદ્ભાવ કહ્યો છે. બાકીનું સમસ્ત કથન પૂર્વોક્ત કથન પ્રમાણે જ સમજવું.

भण्यंते, किन्तु 'नवरं अचरिमा अत्थि, सेसं जहा गेवेज्जएसु असंखेज्ज-वित्थडेसु जाव असंखेज्जा अचरिमा पण्णत्ता' नवरं-संख्येयविस्तृतानुत्तरविमानापेक्षया असंख्येयविस्तृतानुत्तरविमानेषु विशेषस्तु-अत्र अचरमाः सन्ति, यतो बाह्यानुत्तरचतुर्विमानेषु पुनरचरमाणामपि उत्पादसद्भावात्, शेषं यथा ग्रैवेयकेषु असंख्येयविस्तृतेषु विमानेषु प्रतिपादितं तथैवात्रापि प्रतिपादनीयम्, यावत्-असंख्येयाः शुक्लपाक्षिकाद्यः, चरमान्ताः, असंख्येयाः अचरमाः प्रज्ञप्ताः, गौतमः पृच्छति-'चोसट्ठीए णं भंते ! असुरकुमारावाससयसहस्सेसु संखेज्जवित्थडेसु असुरकुमारावासेसु किं सम्मद्दिट्ठी असुरकुमारा उववज्जंति मिच्छादिट्ठी ? हे भदन्त !

त्तरविमानों में ये पूर्वोक्त कृष्णपाक्षिक आदि जीव उत्पाद, उद्वर्त्तना और सत्ताविषयक तीनों आलापकों में नहीं कहे गये हैं-'नवरं अचरिमा अत्थि, सेसं जहा गेवेज्जेसु असंखेज्जवित्थडेसु जाव असंखेज्जा अचरिमा पण्णत्ता' संख्यात विस्तारवाले अनुत्तर विमान के कथन की अपेक्षा इस असंख्यातयोजन विस्तारवाले अनुत्तरविमानों के कथन में यदि कोई विशेषता है तो ऐसी है यहां पर 'अचरिमा अचरमभववाले जीव भी उत्पन्न होते हैं। इस कारण यहां उनका सद्भाव कहा गया है। इस प्रकार जैसा कथन असंख्यातयोजनविस्तारवाले ग्रैवेयकविमानों में किया गया है उसी प्रकार का अवशिष्ट और सब कथन यहां पर भी करना चाहिये। यावत् असंख्यात शुक्लपाक्षिक आदि जीव, चरमभववाले जीव और असंख्यात अचरमभववाले जीव यहां कहे गये हैं यहां तक कथन करना चाहिये।

"असंखेज्जवित्थडेसु वि एए न भण्णंति" असंख्यात योजनना विस्तार वाळां चार अनुत्तर विमानोमां पण पूर्वोक्त कृष्णपाक्षिक आदि जीवोनो उत्पाद थतो नथी, त्यांथी एवां जीवोनुं व्यवन पण थतुं नथी अने त्यां एवां जीवोनुं अस्तित्व पण होतुं नथी. "नवर अचरिमा अत्थि, सेसं जहा गेवेज्जेसु असंखेज्जवित्थडेसु जाव असंखेज्जा अचरिमा पण्णत्ता" संख्यात योजनना विस्तारवाळा अनुत्तर विमानना कथन करतां असंख्यात योजनना विस्तारवाळा विमानोना कथनमां एटली ज विशेषता छे के अहीं अचरिमो (अचरम भवना जीवो) पण उत्पन्न थाय छे, तेथी अहीं तेमनो सद्भाव कह्यो छे. आ प्रकारे जेवुं कथन असंख्यात योजनना विस्तारवाळा ग्रैवेयक विमानोमां करवामां आव्युं छे, एवुं ज बाकीनुं समस्त कथन अहीं पण करवुं जोइए जेम के असंख्यात योजनना विस्तारवाळां चार अनुत्तर विमानोमां असंख्यात शुक्लपक्षिक आदि जीवो. असंख्यात चरमभववाळा जीवो अने असंख्यात अचरमभववाळा जीवो, होय छे, त्यां सुधीनुं कथन थवुं जोईए.

चतुष्षष्टयां खलु असुरकुमारावासशतसहस्रेषु चतुष्षष्टिलक्षासुरकुमारावासेषु किं सम्यग्दृष्टयः असुरकुमारा उपपद्यन्ते ? किं मिथ्यादृष्टयः ? 'एवं जहा रयणप्पभाए तिन्नि अलावगा भणिया तहा भाणियव्वा' किं वा मिथ्यादृष्टयः उपपद्यन्ते किं वा सम्यग्मिथ्यादृष्टय उपपद्यन्ते ? एवं पूर्वोक्तरीत्या, यथा रत्नप्रभायां त्रय आलापकाः-"उपपद्यन्ते, उद्वर्तन्ते, सत्ताः" इत्येवं त्रयोऽभिलापकाः भणितास्तथैव अत्रापि त्रय आलापकाः उत्पादोद्वर्तन-सत्ताविषयकाः प्रश्नरूपेणोत्तररूपेण च भणितव्याः, 'एवं असंखेज्जवित्थडेसु वि तिन्नि गमगा' एवं पूर्वोक्तरीत्या असंख्येयविस्तृतेष्वपि असुरकुमारावासेषु त्रीणि गमकानि-सम्यग्दृष्टि-मिथ्यादृष्टि-सम्यग्मिथ्यादृष्टीनाम्

अथ गौतमस्वामी प्रभु से ऐसा पूछते हैं-चोसट्ठीणं भंते ! असुरकुमारावाससयसहस्सेसु संखेज्जवित्थडेसु असुरकुमारावासेसु किं सम्मदिट्ठी, असुरकुमारा उववज्जंति मिच्छादिट्ठी' हे भदन्त ! ६४ लाख असुरकुमारावासों के संख्यातयोजनवाले असुरकुमारावासों में क्या सम्यग्दृष्टि असुरकुमार उत्पन्न होते हैं ? या मिथ्यादृष्टि असुरकुमार उत्पन्न होते हैं या सम्यग्मिथ्यादृष्टि असुरकुमार उत्पन्न होते हैं ? उत्तर में प्रभु कहते हैं-'एवं जहा रयणप्पभाए तिन्नि आलावगा भणिया, तहा भाणियव्वा' इस प्रकार से जैसे रत्नप्रभा में तीन आलापक कहे गये हैं-वैसे ही तीन आलापक यहां भी कहना चाहिये। अर्थात्-जैसे प्रश्नोत्तर के रूप में रत्नप्रभापृथिवी में सम्यग्दृष्टि, मिथ्यादृष्टि एवं सम्यग्मिथ्यादृष्टि इनके सम्बन्ध में जो उत्पाद, उद्वर्तना, और सत्ताविषयक कहे गये हैं वैसे ही यहां पर भी प्रश्नोत्तररूप से कहना चाहिये। 'एवं असंखेज्ज-

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-" चोसट्ठीणं भंते ! असुरकुमारावाससयसहस्सेसु संखेज्जवित्थडेसु असुरकुमारावासेसु किं सम्मदिट्ठी असुरकुमारा उववज्जंति, मिच्छादिट्ठी " હે ભગવન્ ! ૬૪ લાખ અસુરકુમારાવાસોમાંના જે સંખ્યાત યોજનના વિસ્તારવાળા અસુરકુમારાવાસો છે તેમાં શું સમ્યગ્દૃષ્ટિ અસુરકુમારો ઉત્પન્ન થાય છે ? કે મિથ્યાદૃષ્ટિ અસુરકુમારો ઉત્પન્ન થાય છે ? કે સમ્યગ્મિથ્યાદૃષ્ટિ અસુરકુમારો ઉત્પન્ન થાય છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-" एवं जहा रयणप्पभ ए तिन्नि आलावगा भणिया, तहा, भाणियव्वा " હે ગૌતમ ! આ વિષયને અનુલક્ષીને જેવાં ત્રણ આલાપક રત્નપ્રભા પૃથ્વીમાં કહેવામાં આવ્યા છે, એવાં જ ત્રણ આલાપક અહીં પણ કહેવા જોઈએ એટલે કે રત્નપ્રભા પૃથ્વીમાં સમ્યગ્દૃષ્ટિ, મિથ્યાદૃષ્ટિ અને સમ્યગ્મિથ્યાદૃષ્ટિના ઉત્પાદ, ઉદ્વર્તના અને સત્તાવિષયક જેવાં ત્રણ પ્રશ્નોત્તર ૩૫ આલાપકો કહ્યા છે, એવાં જ અહીં પણ કહેવા જોઈએ " एवं असंखेज्ज-वित्थडेसु वि, तिन्नि गमगा " એજ પ્રમાણે અસંખ્યાત યોજનના વિસ્તારવાળા અસુર-

उत्पाद-च्यवन-सत्ताविषयकाणि अभिलापकरूपाणि प्रश्नोत्तररूपेण रत्नप्रभापृथिवीवद् वक्तव्यानि 'एवं जाव गेवेज्जविमाणेसु वि' एवं-पूर्वोक्तरीत्यैव, यावत्-नागकुमारादिभवनपति-वानव्यन्तर-ज्योतिषिक-सौधर्मेशानादिविमानावासेषु ग्रैवेयकविमानेष्वपि च संख्येयासंख्येयविस्तृतेषु, एवमेव पूर्वोक्तवदेव प्रश्नोत्तररूपा आलापका भणितव्याः। 'अणुत्तरविमाणेसु एवं चेव' अनुत्तरविमानेष्वपि एवमेव त्रयः आलापकाः प्रश्नोत्तररूपेण कर्त्तव्याः। 'नवरं तिसु वि आलावएसु मिच्छादिट्ठी, सम्मामिच्छादिट्ठी य न भण्णंति, सेसं तं चेव' नवरं पूर्वापेक्षया विशेषस्तु-त्रिष्वपि आलापकेषु-उत्पाद-च्यवन-सत्ता-विषयकेषु संख्यातासंख्यात-

---

विस्थडेसु वि तिन्नि गमगा' इसी प्रकार से असंख्यातविस्तारवाले असुरकुमारावासों में सम्यक्दृष्टि, मिथ्यादृष्टि और मिश्रदृष्टियों के उत्पाद, उद्वर्त्तना और सत्ताविषयक तीन आलापक प्रश्नोत्तररूप से कहना चाहिये। 'एवं जाव गेवेज्जविमाणेसु वि' इसी पूर्वोक्त रीति के अनुसार ही यावत् नागकुमारादि भवनपतियों के वानव्यन्तरों के ज्योतिषिकों के सौधर्म ईशान आदि वैमानिकों के विमानावासों में एवं ग्रैवेयकविमानावासों में भी चाहे वे संख्यातयोजनविस्तारवाले हो प्रश्नोत्तररूप से सम्यक्दृष्टि, मिथ्यादृष्टि एवं मिश्रदृष्टियों के उत्पत्तिकादिविषयक तीन आलापक कहना चाहिये। 'अणुत्तरविमाणेसु एवंचेव' अनुत्तरविमानों में भी इसी प्रकार से तीन आलापक प्रश्नोत्तररूप से कहना चाहिये! 'नवरं तिसु वि आलावएसु मिच्छादिट्ठी, सम्मामिच्छादिट्ठी य न भण्णंति सेसं तं चेव' परन्तु यहां पर तीनों-उद्वर्त्तना और सत्ताविषयक अलापकों में, संख्यातयोजनविस्तारवाले एवं असंख्यात

કુમારાવાસોમાં સમ્યગ્દૃષ્ટિ, મિથ્યાદૃષ્ટિ અને સમ્યગ્ મિથ્યાદૃષ્ટિઓના ઉત્પાદ, ઉદ્વર્તના અને સત્તા વિષયક ત્રણ આલાપકો પ્રશ્નોત્તરરૂપે કહેવા જોઈએ. "एवं जाव गेवेज्जविमाणेसु वि" એજ પ્રમાણે નાગકુમારાદિ ભવનપતિઓમાં, વાનવ્યન્તરોમાં, જ્યોતિષિકોમાં, સૌધર્મ આદિ વૈમાનિકોના વિમાનાવાસોમાં અને નવગ્રૈવેયક વિમાનાવાસોમાં, સંખ્યાત અને અસંખ્યાત યોજનના વિસ્તારવાળા આવાસો અથવા વિમાનાવાસોમાં, પ્રશ્નોત્તર રૂપે સમ્યગ્દૃષ્ટિ, મિથ્યાદૃષ્ટિ અને મિશ્રદૃષ્ટિયોના ઉત્પાદ આદિ વિષયક ત્રણ આલાપક કહેવા જોઈએ. "अणुत्तरविमाणेसु एवं चेव" અનુત્તર વિમાનોમાં પણ એજ પ્રકારના ત્રણ આલાપક પ્રશ્નોત્તર રૂપે કહેવા જોઈએ "नवरं तिसु वि आलावएसु मिच्छादिट्ठी, सम्मामिच्छादिट्ठी य न भण्णंति, सेसं तंचेव" પરન્તુ સંખ્યાત અને અસંખ્યાત યોજનના વિસ્તારવાળાં અનુત્તર વિમાનોમાં ઉત્પાદ, ચ્યવન અને સત્તાવિષય

विस्तृतेषु पञ्चानुत्तरविमानेषु मिथ्यादृष्टयः, सम्यग्मिथ्यादृष्टयश्च न भण्यन्ते न उपपद्यन्ते, न च्यवन्ति, न प्रज्ञप्ताः सन्तीत्यर्थः अनुत्तरविमानेषु तेषामसंभवात्, शेषं तदेव-पूर्वोक्तवदेव, अवसेयम्, गौतमः पृच्छति-'से णूणं भंते ! कण्हलेस्से नील जाव सुक्कलेस्से भवित्ता कण्हलेस्सेसु देवेसु उववज्जइ' हे भदन्त ! तत् अथ, नूनं खलु कृष्णलेश्यो नील यावत् नीललेश्यः, कापोतलेश्यः, तेजोलेश्यः, पद्मलेश्यः, शुक्ललेश्यः कृष्णादिशुक्ललेश्यावान् भूत्वा किं कृष्णलेश्येषु देवेषु उपपद्यते ? भगवानाह-'हंता गोयमा ! एवं जहेव नेरइएसु पढमे उद्देसए तहेव भाणियव्वं' हे गौतम ! हन्त-सत्यम्, एवं-पूर्वोक्तरीत्या यथैव नैरयिकेषु अत्रैव त्रयोदशशतकस्य

योजन विस्तारवाले पांच अनुत्तर विमानों में मिश्रदृष्टि एवं मिथ्यादृष्टि नहीं कहना चाहिये। क्योंकि-इन दोनों का न यहां उत्पाद होता है, न यहां उद्वर्तना होती है और न इनकी यहां सत्ता ही रहती है। यहां तो गृहीतसम्यग्दर्शनवाले जीव ही उत्पन्न होते हैं इसलिये इनके सम्बन्ध में ही उत्पातादि विषयक तीन आलापक कहे गये हैं। बाकी का और सब कथन पूर्वोक्तानुसार ही है। अब गौतमस्वामी प्रभु से ऐसा पूछते हैं-'से णूणं भंते ! कण्हलेस्से नील जाव सुक्कलेस्से भवित्ता कण्हलेस्सेसु देवेसु उववज्जइ' हे भदन्त ! कृष्णलेश्यावाला जीव, नीललेश्यावाला, यावत्-कापोतलेश्यावाला, तेजोलेश्यावाला, पद्मलेश्यावाला शुक्ललेश्यावाला होकर के क्या कृष्णलेश्यावाले देवों में उत्पन्न होता है ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-हंता, गोयमा ! एवं जहेव नेरइएसु पढमे उद्देसए तहेव भाणियव्वं' हे गौतम ! जैसा नैरयिकों के विषय में तेरहवें शतक के प्रथम

આલાપકોમાં મિથ્યાદૃષ્ટિઓ અને સમ્યગ્મિથ્યાદૃષ્ટિઓનું કથન કરવું જોઈએ નહીં, કારણ કે તે બન્નેનો ત્યાં ઉત્પાદ પણ થતો નથી, તેમનું ત્યાંથી ચ્યવન પણ થતું નથી અને ત્યાં તેમનું અસ્તિત્વ પણ હોતું નથી અનુત્તર વિમાનોમાં તો ગૃહીત સમ્યગ્ દર્શનવાળા જીવો જ ઉત્પન્ન થાય છે, તેથી તેમના સંબંધમાં જ ઉત્પાતાદિ વિષયક ત્રણ આલાપક કહેવામાં આવ્યા છે. બાકીનું સમસ્ત કથન પૂર્વોક્ત કથન અનુસાર જ સમજવું.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-"से णूणं भंते ! कण्हलेस्से नील जाव सुक्कलेस्से भवित्ता कण्हलेस्सेसु देवेसु उववज्जइ ?" હે ભગવન્ ! કૃષ્ણલેશ્યાવાળો જીવ, નીલલેશ્યાવાળો, કાપોતલેશ્યાવાળો, તેજોલેશ્યાવાળો, પદ્મલેશ્યાવાળો અને શુક્લલેશ્યાવાળો થઈને શું કૃષ્ણલેશ્યાવાળા દેવોમાં ઉત્પન્ન થઈ જાય છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-"हंता गोयमा ! एवं जहेव नेरइएसु पढमे उद्देसए तहेव भाणियव्वं" હે ગૌતમ ! તેરમાં શતકના પહેલા ઉદ્દેશામા નાર-

प्रथमे उद्देशके भणितं तथैव अत्रापि भणितव्यम्, तथा च-कृष्णादिशुक्ललेश्यान्ता भूत्वा कृष्णलेश्येषु देवेषु उपपद्यन्ते 'नीललेसाए वि जहेव नेरइयाणं' नीललेश्यानामपि यथैव नैरयिकाणां नीललेश्यावतां प्रतिपादनं कृतं तथैव प्रतिपादनं कर्त्तव्यम्, तथा च कृष्णलेश्यावन्तः, नीललेश्यावन्तः, कापोतलेश्यावन्तः, तेजोलेश्यावन्तः, पद्मलेश्यावन्तः, शुक्ललेश्यावन्तो भूत्वापि नीललेश्येषु देवेषु उपपद्यन्ते, 'एवं जहा-नीललेसाए एवं जाव पम्हलेसेसु, सुक्कलेस्सेसु एवं चेव' यथा नीललेश्या विषये प्रतिपादनं कृतम् एवं यथैव, यावत्-कापोतलेश्येषु तेजोलेश्येषु पद्मलेश्येषु, शुक्ललेश्येषु च, एवमेव-पूर्वोक्तरीत्यैव प्रतिपादनं कर्त्तव्यम्, तथा च-कृष्णलेश्यावन्तः, नीललेश्यावन्तः, कापोतलेश्यावन्तः, तेजोलेश्यावन्तः पद्मलेश्यावन्तः, शुक्ललेश्यावन्तो भूत्वा कापोतलेश्येषु देवेषु उपपद्यन्ते, कृष्णलेश्यावन्तः, नीललेश्यावन्तः, कापोतलेश्यावन्तः, तेजोलेश्यावन्तः, पद्मलेश्या-

---

उद्देशक में कहा है' उसी प्रकार से यहां पर भी कहना चाहिये। तथा च-जीव कृष्णलेश्या से लेकर शुक्ललेश्या तक की लेश्याओंवाला होकर कृष्णलेश्यावाले देवों में उत्पन्न होते हैं 'नीललेसाए वि जहेव नेरइयाणं' जैसा नीललेश्यावाले नैरयियों के विषय में कहा गया है उसी प्रकारका कथन नीललेश्यावाले देवों का भी करना चाहिये। तथा च-कृष्णलेश्यावाले, नीललेश्यावाले कापोतलेश्यावाले तेजोलेश्योवाले, पद्मलेश्यावाले शुक्ललेश्यावाले होकर के भी नीललेश्यावाले देवों में उत्पन्न होते हैं। 'एवं जहा नीललेसाए एवं जाव पम्हलेसेसु- सुक्कलेस्सेसु एवं चेव' जैसा नीललेश्या के विषय में कहा गया है। वैसा ही यावत्-कापोतलेश्यावालों में तेजोलेश्यावालों में पद्मलेश्यावालों में शुक्ललेश्यावालों में, प्रतिपादन करना चाहिये। तथा च-कृष्णलेश्यावाले नीलले-

---

કોના વિષયમાં જેવું કથન કરવામાં આવ્યું છે, એવું જ કથન અહીં પણ કરવું જોઈએ જેમ કે-જીવ કૃષ્ણથી લઈને શુકલપર્યન્તની લેશ્યાઓવાળો થઈને કૃષ્ણલેશ્યાવાળા દેવોમાં ઉત્પન્ન થાય છે. "नीललेस्साए वि जहेव नेरइयाणं" જેવું કથન નીલલેશ્યાવાળા નારકોના વિષયમાં કરવામાં આવ્યું છે, એવું જ કથન નીલલેશ્યાવાળા દેવોના વિષયમાં પણ કરવું જોઈએ. જેમ કે-કૃષ્ણલેશ્યાવાળા, નીલલેશ્યાવાળા, કાપોતલેશ્યાવાળા, તેજોલેશ્યાવાળા, પદ્મલેશ્યાવાળા અને શુકલલેશ્યાવાળા થઈને પણ નીલલેશ્યાવાળા દેવોમાં જીવો ઉત્પન્ન થાય છે. "एवं जहा नीललेसाए एव जाव पम्हलेसेसु सुक्कलेस्सेसु एवं चेव" જેવું નીલલેશ્યાવાળાના વિષયમાં કહ્યું એવું જ કાપોતલેશ્યાવાળાઓમાં, તેજોલેશ્યાવાળાઓમાં, પદ્મલેશ્યાવાળાઓમાં અને શુકલલેશ્યાવાળાઓમાં પ્રતિપાદન કરવું જોઈએ જેમ કે કૃષ્ણલેશ્યાવાળા, નીલલેશ્યાવાળા, કાપોતલેશ્યાવાળા,

वन्तः शुक्ललेश्यावन्तो भूत्वा तेजोलेश्येषु उपपद्यन्ते, कृष्णलेश्यावन्तः, नील-लेश्यावन्तः, कापोतलेश्यावन्तः, तेजोलेश्यावन्तः. पद्मलेश्यावन्तः शुक्ललेश्या-वन्तो भूत्वा पद्मलेश्येषु देवेषु उपपद्यन्ते, कृष्णलेश्यादशुक्ललेश्यावन्तो भूत्वा शुक्ललेश्येषु देवेषु उपपद्यन्ते, अत्र विशेषमाह-'नवरं लेस्सट्ठाणेसु विसुज्झमाणेसु विसुज्झमाणेसु सुक्कलेस्सं परिणमन्ति, सुक्कलेस्सं परिणमइत्ता, सुक्कलेस्सेसु देवेसु उववज्जंति' नवरं नैरयिकापेक्षया विशेषस्तु-लेश्यास्थानेषु कृष्णादिलेश्याप्रकारेषु विशुध्यत्सु विशुध्यत्सु, शुक्ललेश्यां परिणमन्ति प्राप्नुवन्ति, शुक्ललेश्यां परिणम्य-प्राप्य, शुक्ललेश्येषु देवेषु उपपद्यन्ते। तदुपसंहरन्नाह-' से तेणट्ठेणं जाव

श्यावाले, कापोतलेश्यावाले, तेजोलेश्यावाले पद्मलेश्यावाले, शुक्ललेश्या-वाले होकर के कापोतलेश्यावाले देवों में उत्पन्न होते हैं। कृष्णलेश्या वाले, नीललेश्यावाले, कापोतलेश्यावाले, तेजोलेश्यावाले, पद्मलेश्या-वाले, शुक्ललेश्यावाले होकर के तेजोलेश्यावाले देवों में उत्पन्न होते हैं। कृष्णलेश्यावाले, नीललेश्यावाले, कापोतलेश्यावाले, तेजोले-श्यावाले पद्मलेश्यावाले शुक्ललेश्यावाले होकर पद्मलेश्यावाले देवों में उत्पन्न होते हैं। कृष्णलेश्यादि शुक्ललेश्यान्त होकर के शुक्ललेश्या-वाले देवों में उत्पन्न होते हैं। इसमें विशेषता प्रदर्शन करते हुए सूत्र-कार कहते हैं-'नवरं लेस्सट्ठाणेसु विसुज्झमाणेसु २ सुक्कलेस्सं परिणमंति, सुक्कलेस्सं परिणमइत्ता सुक्कलेस्सेसु देवेसु उववज्जंति' हे गौतम! नैरयिकों की अपेक्षा से जो यहां विशेषता है वह ऐसी है कि कृष्णादिलेश्या प्रकारों में विशुद्धता होते २ जब जीव शुक्ललेश्या को प्राप्त कर लेते हैं

તેજોલેશ્યાવાળા, પદ્મલેશ્યાવાળા અને શુકલલેશ્યાવાળા થઈને કાપોતલેશ્યા-વાળા દેવોમાં ઉત્પન્ન થાય છે. કૃષ્ણલેશ્યાવાળા, નીલલેશ્યાવાળા, કાપોતલે-શ્યાવાળા, તેજોલેશ્યાવાળા, પદ્મલેશ્યાવાળા, શુકલલેશ્યાવાળા થઈને તેજોલેશ્યા-વાળા દેવોમાં ઉત્પન્ન થાય છે. કૃષ્ણલેશ્યાવાળા, નીલલેશ્યાવાળા, કાપોતલે-શ્યાવાળા, તેજોલેશ્યાવાળા, પદ્મલેશ્યાવાળા શુકલલેશ્યાવાળા થઈને પદ્મલેશ્યા-વાળા દેવોમાં ઉત્પન્ન થાય છે. જીવ કૃષ્ણથી લઈને શુકલપર્યન્તની લેશ્યા-વાળો થઈને શુકલલેશ્યાવાળા દેવોમાં ઉત્પન્ન થાય છે હવે તેમાં વિશેષતા દર્શાવવા માટે સૂત્રકાર કહે છે કે-"नवरं लेस्सट्ठाणेसु विसुज्झमाणेसु२ सुक्क-लेस्सं परिणमंति, सुक्कलेस्सं परिणमइत्ता सुक्कलेस्सेसु देवेसु उववज्जंति" હે ગૌતમ! નારકો કરતાં દેવોમાં એવી વિશેષતા છે કે કૃષ્ણાદિલેશ્યા પ્રકારોમાં વધારેને વધારે વિશુદ્ધતા થતાં થતાં જ્યારે જીવો શુકલલેશ્યાની પ્રાપ્તિ કરી

उववज्जंति' हे गौतम ! तत्-अथ, तेनार्थेन-तेन कारणेन, यावत्-कृष्णलेश्यावन्तः, नीललेश्यावन्तः, कापोतलेश्यावन्तः. तेजोलेश्यावन्तः, पद्मलेश्यावन्तः, शुक्ललेश्यावन्तो भूत्वा शुक्ललेश्येषु देवेषु उपपद्यन्ते इति भावः । अन्ते गौतम आह-'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति हे भदन्त ! तदेवं-भवदुक्तं सत्यमेव, हे भदन्त ! तदेवं-भवदुक्तं सत्यमेवेत्याशयः ॥ सू० १॥

इति श्री विश्वविख्यात जगद्वल्लभादिपदभूषित बालब्रह्मचारि 'जैनाचार्य' पूज्यश्री घासीलालव्रतिविरचितायां श्री "भगवती" सूत्रस्य प्रमेयचन्द्रिका-ख्यायां व्याख्यायां त्रयोदशशतकस्य द्वितीयोद्देशकः समाप्तः ॥१३-२॥

तब उसे प्राप्त कर वे शुक्ललेश्यावाले देवों में उत्पन्न हो जाते हैं। 'से तेणट्ठेणं जाव उववज्जंति' इसी कारण हे गौतम ! मैंने ऐसा कहा है कि कृष्णलेश्यावाले, नीललेश्यावाले, कापोतलेश्यावाले, तेजोलेश्यावाले, पद्मलेश्यावाले, शुक्ललेश्यावाले होकर के जीव शुक्ललेश्यावाले देवों में उत्पन्न हो जाते हैं। 'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति" हे भदन्त ! आप का कथन सर्वथा सत्य ही है हे भगवान् आप का कहा हुआ यह सब सत्य ही है ऐसा कहकर वे गौतम ! भगवान् यावत् अपने स्थान पर विराजमान हो गए ॥ सू० १ ॥

जैनाचार्य जैनधर्मदिवाकर पूज्यश्री घासीलालजीमहाराज कृत
"भगवतीसूत्र" की प्रमेयचन्द्रिका व्याख्याके तेरहवें शतकका
॥ दूसरा उद्देशक समाप्त ॥ १३-२ ॥

હે છે, ત્યારે તેને પ્રાપ્ત કરીને તેઓ શુકલલેશ્યાવાળા દેવોમાં ઉત્પન્ન થઈ જાય છે. "से तेणट्ठेणं जाव उववज्जंति" હે ગૌતમ ! તે કારણ મેં એવું કહ્યું છે કે જીવો કૃષ્ણલેશ્યાવાળા, નીલલેશ્યાવાળા, કાપોતલેશ્યાવાળા, તેજોલેશ્યાવાળા, પદ્મલેશ્યાવાળા અને શુકલલેશ્યાવાળા થઈને શુકલલેશ્યાવાળા દેવોમાં ઉત્પન્ન થઈ જાય છે. "सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति" "હે ભગવન્ ! આપે જે કહ્યું તે સત્ય છે. હે ભગવન્ ! આપની વાત સર્વથા સત્ય જ છે" આ પ્રમાણે કહીને મહાવીર પ્રભુને વંદણા નમસ્કાર કરીને ગૌતમ સ્વામી પોતાને સ્થાને બેસી ગયા. ॥સૂ૦૧॥

જૈનાચાર્ય જૈનધર્મદિવાકર પૂજ્યશ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ કૃત "ભગવતી સૂત્ર"ની પ્રમેયચન્દ્રિકા વ્યાખ્યાના તેરમાં શતકનો બીજો ઉદ્દેશક સમાપ્ત॥૧૩-૨॥

अथ तृतीयोद्देशकः प्रारभ्यते ।

त्रयोदशशतके तृतीयोद्देशकस्य संक्षिप्तविषयविवरणम्

नारका अनन्तराहारिणो भवन्ति, ततः पश्चात् अनुक्रमेण परिचारणा वक्तव्यता प्ररूपणम् ।

परिचारणावक्तव्यता ।

मूलम्—"नेरइयाणं भंते ! अणंतराहारा, तओ निव्वत्तणया, एवं परियारणापयं निरवसेसं भाणियव्वं । सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति"।सू.१।

छाया—नैरयिकाः खलु भदन्त ! अनन्तराहाराः, ततो निर्वर्तना, एवं परिचारणापदं निरवशेषं भणितव्यम्, तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति ॥सू० १॥

टीका—द्वितीयोद्देशकान्ते देववक्तव्यतायाः प्ररूपितत्वेन, देवानां च प्रायः परिचारणावत्त्वात् परिचारणां शब्दादिविषयोपभोगरूपां प्ररूपयितुमाह—' नेरइयाणं

तीसरा उद्देशेका प्रारंभ—

तेरहवें शतक के इस तृतीय उद्देशक में वर्णित विषय का विवरण संक्षेप से इस प्रकार है—नारक अनन्तर आहारी होते हैं इसके पश्चात् अनुक्रम से परिचारणा का कथन ।

परिचारणा वक्तव्यता—

'नेरइयाणं भंते ! अणंतराहारा' इत्यादि ।

टीकार्थ—दूसरे उद्देशे के अन्त में देव संबन्धी वक्तव्यता की प्ररूपणा की गई है ? देव प्रायः परिचारणा वाले होते हैं, शब्दादि विषयों का उपभोग करना इसका नाम परिचारणा है इस सूत्र द्वारा सूत्रकार ने इसी परिचारणा की प्ररूपणा की है—इसमें गौतम ने प्रभु

ત્રીજા ઉદ્દેશાનો પ્રારંભ—

તેરમાં શતકના ત્રીજા ઉદ્દેશકમાં પ્રતિપાદિત વિષયનું સંક્ષિપ્ત વિવરણ આ પ્રમાણે છે—નારકો અનન્તર આહારી હોય છે. ત્યાર બાદ અનુક્રમે પરિચારણાનું કથન.

—પરિચારણાવક્તવ્યતા—

" नेरइयाणं भंते ! अणंतराहारा " ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ—બીજા ઉદ્દેશકમાં દેવોની વક્તવ્યતાની પ્રરૂપણા કરવામાં આવી છે. દેવો સામાન્ય રીતે પરિચારણાવાળા હોય છે. (શબ્દાદિ વિષયોનો ઉપયોગ કરવો તેનું નામ પરિચારણા છે) આ સૂત્ર દ્વારા સૂત્રકારે એજ પરિચારણાની પ્રરૂપણા કરી છે—

भंते ! अणंतराहारा, तओ निव्वत्तणया, एवं परियारणापदं निरवसेसं भाणियव्वं' गौतमः पृच्छति–हे भदन्त ! नैरयिकाः खलु किम् अनन्तराहाराः–अनन्तरम्–उत्पादक्षेत्रमाप्तिप्रथमसमये एव आहारयन्तीति अनन्तराहाराः भवन्ति ? ततः पश्चात् किं निर्वर्तनता–निर्वर्त्तना–शरीरनिष्पत्ति भवति ? एवं रीत्या परिचारणापदं–प्रज्ञापनायाश्चतुस्त्रिंशत्तमं पदं, निरवशेषं–सर्वं भणितव्यम्–अत्र वक्तव्यम् ॥

अन्ते गौतम आह–'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' हे भदन्त ! तदेवं भवदुक्तं सत्यमेव, हे भदन्त ! तदेवं भवदुक्तं सत्यमेवेति भावः ॥सू० १॥

इति त्रयोदशशतके तृतीयोद्देशकः समाप्तः ॥१३–३॥

से ऐसा पूछा है 'नेरइयाणं भंते ! अणंतराहारा, तओ निव्वत्तणया' हे भदन्त ! नारकी क्या उत्पातक्षेत्र की प्राप्ति करते ही प्रथम समय में आहार करने लगते हैं ? फिर इसके पश्चात् उनके शरीर की निष्पत्ति होती है क्या ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं–हे गौतम ! (एवं) ऐसा ही है यहां (परियारणापदं निरवसेसं भाणियव्वं) परिचारणापद–प्रज्ञापना का ३४ वां पद–सम्पूर्णरूप से कहना चाहिए। (सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति) अन्त में गौतम भगवान् से कहते हैं कि हे भदन्त ! आप का कहा हुआ यह सब सत्य ही है, हे भदन्त ! आप का कहा हुआ यह सब सत्य ही है ॥ सू० १ ॥

तेरहवें शतकका तीसरा उद्देशा संपूर्ण १३–३

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન–" नेरइयाणं भंते ! अणंतराहारा, तओ निव्वत्तणया " હે ભગવન્ ! નારકો શું ઉત્પાત ક્ષેત્રની પ્રાપ્તિ કરતાં જ પ્રથમ સમયમાં આહાર કરવા લાગે છે ? અને શું ત્યાર બાદ તેમના શરીરની નિષ્પત્તિ (રચના) થાય છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર–" गोयमा ! एवं " હા, ગૌતમ ! એવું જ બને છે. અહીં " परियारणापदं निरवसेसं भाणियव्व " પરિચારણા પદ (પ્રજ્ઞાપનાનું ૩૪મું પદ, પૂરેપૂરું કહેવું જોઈએ.

" सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति " હે ભગવન્ ! આપે જે કહ્યું તે સત્ય છે. હે ભગવન્ ! આપની વાત સર્વથા સત્ય જ છે, આ પ્રમાણે કહીને વંદણા નમસ્કાર કરીને ગૌતમ સ્વામી પોતાને સ્થાને બેસી ગયા. ॥સૂ૦૧॥

॥ તેરમાં શતકનો ત્રીજો ઉદ્દેશક સમાપ્ત ॥૧૩–૩॥

अथ चतुर्थोद्देशकः प्रारभ्यते ।

त्रयोदशशतके चतुर्थोद्देशकस्य संक्षिप्तविषयविवरणम् ।

नरकपृथिवीप्ररूपणम्, नैरयिकद्वारनिरूपणम्, स्पर्शाद्वारप्ररूपणम्, प्रणिधिद्वार-प्ररूपणम्, निरयान्तद्वारनिरूपणम्, लोकमध्यद्वारप्ररूपणम्, अधोलोकमध्यद्वारप्ररूपणम्, ऊर्ध्वलोकमध्यद्वारप्ररूपणम्, तिर्यग्लोकमध्यद्वारप्ररूपणम्, दिग्विदिक्प्रवहद्वारप्ररूपणम्, ऐन्द्रीदिशोनिर्गमवक्तव्यता, आग्नेय्यादिदिशि निर्गमवक्तव्यता, लोकप्ररूपणम्, अस्तिकायप्रवर्तनद्वारप्ररूपणम्, धर्मास्तिकायादिभिर्जीवानां प्रवर्तन-वक्तव्यता, अस्तिकायप्रदेशस्पर्शनाद्वारप्ररूपणम्, धर्मास्तिकायस्य एकप्रदेशो धर्मा-स्तिकायादिद्रव्यस्य कियद्भिः प्रदेशैः स्पृश्यते ? इति प्ररूपणम्, एवम्—अधर्मा

चौथे उद्देशे का प्रारंभ—

तेरहवें शतक के इस चतुर्थ उद्देशक में वर्णित हुए विषय का विवरण संक्षेप से इस प्रकार है—नरकपृथिवी की प्ररूपणा नैरयिक द्वारनिरूपण १, स्पर्शाद्वारप्ररूपणा २, प्रणिधिद्वार प्ररूपणा ३, निरयान्त द्वारनिरूपण ४, लोकमध्यद्वारप्ररूपणा ५, अधोलोकमध्यद्वारप्ररूपणा ६, उर्ध्वलोकमध्यद्वारप्ररूपणा७, तिर्यग्लोकमध्यद्वारप्ररूपणा८, दिग् विदिक् प्रवहद्वारप्ररूपणा९, ऐन्द्रीदिशोनिर्गमवक्तव्यता १०, आग्नेयादि दिशाओं के निर्गम की वक्तव्यता ११, लोकप्ररूपणा १२, अस्तिकायप्रवर्तनद्वार-प्ररूपणा १३, धर्मास्तिकाय आदि द्वारा जीवों के प्रवर्तन की वक्तव्यता, अस्तिकायप्रदेशस्पर्शनाद्वारवक्तव्यता, धर्मास्तिकायका एकप्रदेश, धर्मा-

---

ચોથા ઉદ્દેશાનો પ્રારંભ—

તેરમાં શતકના ચોથા ઉદ્દેશકમાં પ્રતિપાદિત વિષયનું સંક્ષિપ્ત વિવરણ નીચે પ્રમાણે છે—(૧) નરકપૃથ્વીની પ્રરૂપણા—નૈરયિકદ્વાર નિરૂપણ (૨) સ્પર્શ-દ્વારની પ્રરૂપણા (૩) પ્રણિધિદ્વારની પ્રરૂપણા (૪) નિરયાન્તદ્વાર નિરૂપણ (૫) લોકમધ્યદ્વારની પ્રરૂપણા (૬) અધોલોકમધ્યદ્વારની પ્રરૂપણા, (૭) ઉર્ધ્વલોક મધ્યદ્વારની પ્રરૂપણા, (૮) તિર્યગ્લોક મધ્યદ્વારની પ્રરૂપણા (૯) દિગ્વિદિગ્ પ્રવહદ્વારની પ્રરૂપણા, (૧૦) ઐન્દ્રીદિશોનિર્ગમ વકતવ્યતા, (૧૧) આગ્નેયાદિ દિશાઓના નિર્ગમની વક્તવ્યતા (૧૨) લોકપ્રરૂપણા, (૧૩) અસ્તિકાયપ્રવર્ત્તન-દ્વાર પ્રરૂપણા. વળી આ ઉદ્દેશકમાં નીચેના વિષયોનું પણ પ્રતિપાદન કરવામાં આવ્યુ છે—ધર્માસ્તિકાય આદિ દ્વારા જીવોનાં પ્રવર્તનની પ્રરૂપણા, અસ્તિકાય પ્રદેશ સ્પર્શના દ્વાર વક્તવ્યતા, ધર્માસ્તિકાયનો એક પ્રદેશ, ધર્માસ્તિકાય

स्तिकायादीनामपि स्पर्शनाप्ररूपणम्, एवं पुद्गलास्तिकायस्य द्वौ प्रदेशौ, पुद्गलास्तिकायस्य त्रयः प्रदेशाः, यावत् संख्याताः असंख्याताः अनन्ताः प्रदेशाश्च कियद्भिः धर्मास्तिकायादिप्रदेशैः स्पृश्यन्ते ? इत्यादि प्ररूपणम्, ततः कालस्य एकसमयवक्तव्यता प्ररूपणम्, धर्मास्तिकायद्रव्यवक्तव्यताप्ररूपणम्, अधर्मास्तिकायद्रव्यवक्तव्यताप्ररूपणम्, अवगाढद्वारवक्तव्यताप्ररूपणम्, यत्र धर्मास्तिकायस्य एकप्रदेशोऽवगाढो भवति तत्र अन्यधर्मास्तिकायादीनां कियन्तः प्रदेशा अवगाढा भवन्ति ? इत्यादि प्ररूपणम्, एवम् अधर्मास्तिकायादिविषयेऽपि अवगाढसूत्रनिरूपणम्। एकाद्धासमयवक्तव्यता, एक धर्मास्तिकायवक्तव्यता, एकाधर्मास्तिकायवक्तव्यता, पृथिवीकायिकवक्तव्यता, अप्कायिकवक्तव्यता,

स्तिकाय आदि द्रव्य के कितने प्रदेशों से स्पर्श किया जाता है ? ऐसी प्ररूपणा इसी प्रकार से अधर्मास्तिकाय आदिकों की भी स्पर्शना का प्ररूपण पुद्गलास्तिकाय के दो प्रदेश, तीन प्रदेश, यावत्-संख्यात, असंख्यात और अनन्त प्रदेश कितने धर्मास्तिकायादि प्रदेशों द्वारा छुये जाते हैं-इत्यादि प्ररूपणा इसके बाद काल के एक समय की प्ररूपणा धर्मास्तिकायद्रव्य की वक्तव्यता अधर्मास्तिकाय द्रव्य की वक्तव्यता, अवगाढद्वार की वक्तव्यता, जहां धर्मास्तिकाय का एकप्रदेश अवगाढ होता है वहां धर्मास्तिकाय के और कितने प्रदेश अवगाढ होते हैं ? इत्यादि प्ररूपणा इसी प्रकार से अधर्मास्तिकाय आदि के विषय में भी अवगाढसूत्र का निरूपण एकाद्धासमयवक्तव्यता एकधर्मास्तिकायवक्तव्यता एक अधर्मास्तिकायवक्तव्यता पृथिवीकायिक वक्तव्यता, अप्का-

આદિ દ્રવ્યના કેટલા પ્રદેશો વડે સ્પર્શિત થાય છે, આ વિષયનું નિરૂપણ એજ પ્રમાણે અધર્માસ્તિકાય આદિની સ્પર્શનાનું પણ પ્રરૂપણા, પુદ્ગલાસ્તિકાયના બે પ્રદેશ, ત્રણ પ્રદેશ, ચાર પ્રદેશ આદિથી લઇને સંખ્યાત, અસંખ્યાત અને અનંત પર્યન્તના પ્રદેશોનો કેટલાં ધર્માસ્તિકાયાદિ પ્રદેશો દ્વારા સ્પર્શ થાય છે ? ઇત્યાદિ વિષયની પ્રરૂપણા ત્યાર બાદ કાળના એક સમયની પ્રરૂપણા, ધર્માસ્તિકાયદ્રવ્યની વક્તવ્યતા, અધર્માસ્તિકાયદ્રવ્યની વક્તવ્યતા, અવગાઢદ્વારની વક્તવ્યતા, જ્યાં ધર્માસ્તિકાયનો એક પ્રદેશ અવગાઢ થાય છે, ત્યાં ધર્માસ્તિકાયના બીજા કેટલા પ્રદેશો અવગાઢ થાય છે ? ઇત્યાદિ પ્રશ્નો અને તેમના ઉત્તરો એજ પ્રમાણે અધર્માસ્તિકાય આદિના વિષયમાં પણ અવગાઢસૂત્રની પ્રરૂપણા, એકાદ્ધાસમયની પ્રરૂપણા, એક ધર્માસ્તિકાયની પ્રરૂપણા, એક અધર્માસ્તિકાયની પ્રરૂપણા પૃથ્વીકાયિકની પ્રરૂપણા, અપ્કાયિ-

अस्तिकायनिषदनद्वारवक्तव्यता, धर्मास्तिकायादिः त्रिषु द्रव्येषु उपवेष्टुं समर्थो भवेत् ? इत्यादि प्ररूपणम्, बहुसमयद्वारवक्तव्यतामरूपणम्, लोकस्य वक्रभाग-वक्तव्यता, संस्थानद्वारवक्तव्यता चेति ॥

मूलम्–"नेरइय१, फास२, पणिही३, निरयंते४, चेव लोयमज्झे य५। दिसिविदिसाण पवहा य६, पवत्तणं अत्थिकाएहिं७॥१॥
अत्थी पएसफुसणा८, ओगाहणया य९, जीवमोगाढा।१०।
अत्थि पएस निसीयण११, बहुसमे१२, लोगसंठाणे१३॥२॥

छाया—नैरयिकः१, स्पर्शः२, प्रणिधिः३, निरयान्तः,४, चैव लोकमध्यं च५।
दिशाविदिशां च प्रवहः६, प्रवर्त्तनम् अस्तिकायेषु७ ॥१॥
अस्तिप्रदेशस्पर्शनम्८, अवगाहना च९, जीवावगाढाः१०।
अस्ति प्रदेशनिषीदनम्११, बहुसमः१२, लोकसंस्थानम्।१३॥२॥

टीका—चतुर्थोद्देशकार्थसंग्रहगाथाद्वयमाह–"नेरइय" इत्यादि। नैरयिक

कायिकवक्तव्यता, अस्तिकाय में निषदन (बैठना) द्वारवक्तव्यता, धर्मास्तिकायादि तीन द्रव्यों में उपवेशा के लिए क्या समर्थ है ? इत्यादि प्ररूपणा, बहुसमयद्वारवक्तव्यता, लोकवक्रभागवक्तव्यता, और संस्थानद्वार वक्तव्यता।

द्वारगाथा–'नेरइय १, फास२' इत्यादि, 'अत्थीपएसफुसणा' इत्यादि। नैरयिक १, स्पर्श २, प्रणिधि ३, निरयान्त ४, लोकमध्य ५, दिशा-विदिशाप्रवाह ६ अस्तिकायप्रवर्तन७, अस्तिकायप्रदेशस्पर्शना८, अवगा-हना ९ जीवावगाढ १०, अस्तिकायनिषदन ११, बहुसम ११ और लोकसंस्थान ये १३ द्वार इस उद्देशक में कहे गये हैं।

टीकार्थ—इस चतुर्थ उद्देशक में सूत्रकार ने यह, द्वार संग्रह गाथा कही है। इसमें नैरयिकवक्तव्यता की प्ररूपणा करनेवाला प्रथम

કની પ્રરૂપણા, અસ્તિકાયોમાં નિષદન (બેસવાની ક્રિયા) દ્વાર વક્તવ્યતા, ધર્માસ્તિકાય આદિ ત્રણ દ્રવ્યોમાં ઉપવેશન માટે શું સમર્થ છે ? ઇત્યાદિ પ્રરૂપણા બહુસમયદ્વારવક્તવ્યતા, લોકવક્રભાગવક્તવ્યતા, અને સંસ્થાનદ્વાર વક્તવ્યતા.

દ્વારગાથા–"નેરઇય૧, ફાસર ઇત્યાદિ 'અત્થીપએસફુસણા" ઇત્યાદિ—

આ ઉદ્દેશકમાં નીચે પ્રમાણે ૧૩ દ્વાર કહ્યાં છે–(૧) નૈરયિક, (૨) સ્પર્શ, (૩) પ્રણિધિ, (૪) નિરયાન્ત, (૫) લોકમધ્ય, (૬) દિશાવિદિશાપ્રવાહ, (૭) અસ્તિકાયપ્રવર્તન, (૮) અસ્તિકાય પ્રદેશ સ્પર્શના, (૯) અવગાહના, (૧૦) જીવાવગાઢ, (૧૧) અસ્તિકાયનિષદન, (૧૨) બહુસમ, (૧૩) લોકસંસ્થાન.

ટીકાર્થ–ચોથા ઉદ્દેશકમાં કયા કયા વિષયનું નિરૂપણ કરવામાં આવ્યું છે તે આ ગાથામાં બતાવવામાં આવેલ છે. પહેલા નૈરયિકદ્વારમાં નરકો અને

वक्तव्यताप्ररूपणम् १, स्पर्शस्वरूपनिरूपणम् २, प्रणिधिप्ररूपणम् ३, निरयान्तस्वरूपप्ररूपणम् ४, लोकमध्यस्वरूपनिरूपणम् ५, दिग्विदिक्प्रवहस्वरूपनिरूपणम् ६, अस्तिकायप्रवर्तनप्ररूपणम् ७, अस्तिकायप्रदेशस्पर्शननिरूपणम् ८, अवगाहनानिरूपणम् ९, जीवावगाढप्ररूपणम् १०, अस्तिकायनिषदनप्ररूपणम् ११, बहुसमवक्तव्यताप्ररूपणम् १२, लोकसंस्थानस्वरूपप्ररूपणम् १३॥इति।

नारकपृथिवीवक्तव्यता।

मूलम्–"कइ णं भंते! पुढवीओ पण्णत्ताओ? गोयमा! सत्त पुढवीओ पण्णत्ताओ, तं जहा–रयणप्पभा जाव अहेसत्तमा,

---

नैरयिक द्वार है १, स्पर्श के स्वरूप का निरूपण करनेवाला द्वितीय स्पर्शद्वार है २, प्रणिधिकी प्ररूपणा करनेवाला तृतीय पणिधिद्वार है ३, निरयान्तस्वरूप को प्ररूपणा करनेवाला चतुर्थनिरयान्तद्वार है ४ लोकमध्यस्वरूप करनेवाला पांचवां लोकमध्यद्वार है ५, दिशा विदिशा के प्रवहस्वरूप का निरूपक छठा दिशा विदिशाप्रवाह द्वार है ६, अस्तिकायके प्रवर्तना का प्ररूपक सातवां अस्तिकायप्रवर्तन द्वार है ७, अस्तिकाय प्रदेशस्पर्शनका निरूपक आठवां अस्तिकायप्रदेश स्पर्शनाद्वार है ८, अवगाहना का निरूपक नवमां अवगाहनाद्वार है ९, जीवावगाढप्ररूपक दशवां जीवावगाढद्वार है १० अस्तिकाय निषदनप्ररूपक ११ वां अस्तिकायनिषदन द्वार है ११, बहुसमवक्तव्यताप्ररूपक बारहवां बहुसमद्वार है, १२ और लोकसंस्थानस्वरूपप्ररूपक तेरहवां लोकसंस्थान द्वार है।

નારક જીવોની પ્રરૂપણા કરવામાં આવી છે બીજા સ્પર્શદ્વારમાં સ્પર્શના સ્વરૂપનું નિરૂપણ કરવામાં આવ્યું છે ત્રીજા પ્રણિધિદ્વારમાં પ્રણિધિની પ્રરૂપણા કરવામાં આવી છે નિરયાન્તસ્વરૂપની પ્રરૂપણા કરનારૂં ચોથું નિરયાન્તદ્વાર છે. લોકમધ્યના સ્વરૂપનું નિરૂપણ પાંચમાં લોકમધ્યદ્વારમાં કરવામાં આવ્યુ છે. છટ્ઠા દિશાવિદિશાપ્રવાહદ્વારમાં દિશાવિદિશાના પ્રવહસ્વરૂપનું નિરૂપણ કરવામાં આવ્યું છે. સાતમાં અસ્તિકાયપ્રવર્તનદ્વારમાં અસ્તિકાયના પ્રવર્તનની પ્રરૂપણા કરવામાં આવી છે. આઠમાં અસ્તિકાયપ્રદેશસ્પર્શના દ્વારમાં અસ્તિકાય પ્રદેશ સ્પર્શનું નિરૂપણ કરવામાં આવ્યું છે નવમાં અવગાહનાદ્વારમાં અવગાહનાનું અને દસમાં જીવાવગાઢદ્વારમાં જીવાવગાઢનું નિરૂપણ કરવામાં આવ્યું છે અસ્તિકાયનિષદનની પ્રરૂપણા અગિયારમાં અસ્તિકાયનિષદનદ્વારમાં કરી છે. બારમાં બહુસમદ્વારમાં બહુસમવક્તવ્યતાની અને તેરમાં લોકસંસ્થાન દ્વારમાં લોકસંસ્થાનના સ્વરૂપની પ્રરૂપણા કરવામાં આવી છે.

अहे सत्तमाए णं पुढवीए पंच अणुत्तरा महतिमहालया जाव अपइट्ठाणे, ते णं णरगा छट्ठीए तमाए पुढवीए नरएहिंतो महंतराचे व१, महाविस्थिन्नतरा चेव२, महावगासतरा चेव३, महापइरिक्कतरा चेव४, णो तहा महापवेसणतरा चेव१, णो आइण्णतरा चेव२, णो आउलतराचेव३, अणोयणतराचेव४, तेसु णं नरएसु नेरइया छट्ठीए तमाए पुढवीए नेरइएहिंतो महाकम्मतराचेव१, महाकिरियतराचेव२, महासवतराचेव३, महावेयणतराचेव४, णो तहा अप्पकम्मतराचेव१, णो अप्पाकिरियतराचेव२, णो अप्पासवतराचेव३, णो अप्पवेयणतराचेव४, अप्पाड्ढियतराचेव१, अप्पज्जुत्तियतराचेव२, णो तहा महाड्ढियतराचेव१, णो महज्जुइयतराचेव२, छट्ठीए णं तमाए पुढवीए एगे पंचूणे निरयावाससयसहस्से पण्णत्ते, ते णं नरगा अहे सत्तमाए पुढवीए नेरएहिंतो नो तहा महंततराचेव१, महाविस्थिन्नतराचेव२, महावगासतराचेव३, महापइरिक्कतराचेव४, महप्पवेसणतराचेव१ आइन्नतराचेव२, आउलतराचेव३, अणोयणतराचेव४, तेसु णं नरएसु नेरइया अहे सत्तमाए पुढवीए नेरइएहिंतो अप्पकम्मतराचेव१, अप्पकिरियतराचेव२, अप्पासवतराचेव३, अप्पवेयणतराचेव४, महाड्ढियतराचेव१, महाजुइयतराचेव२, णो तहा अप्पाड्ढियतराचेव, अप्पज्जुइयतराचेव, छट्ठीए णं तमाए पुढवीए नरगा पंचमाए धूमप्पभाए पुढवीए नरएहिंतो महत्तराचेव१, महाविस्थिन्नतराचेव२, महावगासतराचेव३, महापइरिक्कतरा-

चेव४, णो तहा महप्पवेसणतराचेव१, णो आइण्णतराचेव२, णो आउलतराचेव३, अणोयणतराचेव४, तेसु णं नरएसु नेरइया पंचमाए, धूमप्पभाए पुढवीए नेरइएहिंतो महाकम्मतराचेव१, महाविदिथिन्नतराचेव२, महावगासतराचेव३, महापइरिक्कतराचेव४, णो तहा अप्पकम्मतराचेव१, णो अप्पकिरियतराचेव२, णो अप्पासवतराचेव३, णो अप्पवेयणतराचेव४, अप्पड्ढियतराचेव१, अप्पज्जुइतराचेव२, णो तहा महड्ढियतराचेव१, णो महज्जुइयतराचेव२, पंचमाए णं धूमप्पभाए पुढवीए तिन्नि निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता, एवं जहा छट्ठीए भणिया, एवं सत्तवि पुढवीओ परोप्परं भणंति जाव रयणप्पभंति जाव णो तहा महड्ढियतराचेव, अप्पज्जुइयतराचेव ॥सू० १॥

छाया—कति खलु भदन्त ! पृथिव्यः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! सप्त पृथिव्यः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा रत्नप्रभा यावत्-अधः सप्तमी, अधः सप्तम्यां खलु पृथिव्यां पञ्च अनुत्तराः महातिमहालया यावत्-अप्रतिष्ठानम्, ते खलु नरकाः षष्ठ्यास्तमायाः पृथिव्याः नरकेभ्यो महत्तराश्चैव १, महाविस्तीर्णतराश्चैव २, महावकाशतराश्चैव ३, महाप्रतिरिक्ततराश्चैव ४, नो तथा महाप्रवेशनतराश्चैव १, नो आकीर्णतराश्चैव २, नो आकुलतराश्चैव ३, अनोदनतराश्चैव ४, तेषु खलु नरकेषु नैरयिकाः षष्ठ्यास्तमायाः पृथिव्या नैरयिकेभ्यो महाकर्मतराश्चैव १, महाक्रियातराश्चैव २, महास्रवतराश्चैव ३, महावेदनतराश्चैव ४, नो तथा अल्पकर्मतराश्चैव १, नो अल्पक्रियातराश्चैव २, नो अल्पास्रवतराश्चैव ३, नो अल्पवेदनतराश्चैव ४, अल्पर्द्धिकतराश्चैव १, अल्पद्युतिकतराश्चैव २, नो तथा महर्द्धिकतराश्चैव १, नो महाद्युतिकतराश्चैव २, षष्ठ्यां खलु तमायां पृथिव्याम् एकं पञ्चोनं निरयावासशतसहस्रं प्रज्ञप्तम्, ते खलु नरकाः अधः सप्तम्याः पृथिव्याः नरकेभ्यो नो तथा महत्तराश्चैव १, महाविस्तीर्णतराश्चैव २, महावकाशतराश्चैव ३, महाप्रतिरिक्ततराश्चैव ४, महाप्रवेशनतराश्चैव १, आकीर्णतराश्चैव २, आकुलतराश्चैव ६, अनोदनतराश्चैव ४, तेषु खलु नरकेषु नैरयिकाः अधः सप्तम्याः पृथिव्याः नैरयिकेभ्यः अल्पकर्मतराश्चैव १,

अल्पक्रियातराश्चैव २, अल्पास्रवतराश्चैव ३, अल्पवेदनतराश्चैव ४, नो तथा महाकर्मतराश्चैव १, महाक्रियतराश्चैव २, महास्रवतराश्चैव ३, महावेदनतराश्चैव ४, महर्द्धिकतराश्चैव, महाद्युतिकतराश्चैव नो तथा अल्पर्द्धिकतराश्चैव, अल्पद्युतिकतराश्चैव, षष्ठ्याः खलु तमायाः पृथिव्याः नरकाः पञ्चम्याः धूमप्रभायाः पृथिव्याः नरकेभ्यो महत्तराश्च १, महाविस्तीर्णतराश्चैव २, महाप्रकाशतराश्चैव ३, महातिरिक्ततराश्चैव ४, नो तथा महाप्रवेशनतराश्चैव १, नो आकीर्णतराश्चैव २, नो आकुलतराश्चैव ३, अनोदनतराश्चैव ४, तेषु खलु नरकेषु नैरयिकाः पञ्चम्याः धूमप्रभायाः पृथिव्याः नैरयिकेभ्यो महाकर्मतराश्चैव, १, महाक्रियातराश्चैव २, महास्रवतराश्चैव ३, महावेदनतराश्चैव ४, नो तथा अल्पकर्मतराश्चैव, नो अल्पक्रियातराश्चैव २, नो अल्पास्रवतराश्चैव ३, नो अल्पवेदनतराश्चैव ४, अल्पर्द्धिकतराश्चैव १, अल्पद्युतिकतराश्चैव २, नो तथा महर्द्धिकतराश्चैव १, नो महाद्युतिकतराश्चैव २, पञ्चम्यां धूमप्रभायां पृथिव्यां त्रीणि निरयावासशतसहस्राणि भवन्तीति, एवं यथा षष्ठी भणिता एवं सप्तापि पृथिव्यः परस्परं भण्यन्ते, यावत् रत्नप्रभान्ता इति यावत् नो तथा महर्द्धिकतराश्चैव, अल्पद्युतिकतराश्चैव ॥ सू० १ ॥

टीका—तृतीयोद्देशके शब्दादिविषयोपभोगरूपपरिचारणा प्रोक्ता, तथा च कर्मबन्धः, तेन च परम्परया नारकादौ गमनं भवतीति प्रथमं नैरयिकद्वारमाह—'कइ णं भंते ! इत्यादि । कइ णं भंते ! पुढवीओ पण्णत्ताओ ?' गौतमः पृच्छति—

नारकपृथिवीवक्तव्यता—

'कइ णं भंते ! पुढवीओ' इत्यादि ।

टीकार्थ—तृतीय उद्देशक में शब्दादिविषयोपभोगरूप परिचारणा कही जा चुकी है । इससे कर्मों का बंध होता है । इससे परम्परारूप से जीवों का नरकादि में गमन होता है—इस कारण सूत्रकारने सर्वत्र प्रथम नरकद्वार यहां कहा है—इसमें गौतमने प्रभु से ऐसा पूछा है—'कइ णं भंते ! पुढवीओ पण्णत्ताओ' हे भदन्त ! पृथिवियां कितनी कही गई है ?

—નારકપૃથ્વીવક્તવ્યતા—

" कइणं भंते ! पुढवीओ " ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ—ત્રીજા ઉદ્દેશામાં શબ્દાદિ વિષયેાપભેાગરૂપ પરિચારણાનું કથન કરવામાં આવ્યું છે. તેને લીધે કર્મોનેા બંધ થાય છે તેથી જીવેાનું નરકાદિ ગતિમાં ગમન થાય છે. તે કારણે સૂત્રકારે આ ચેાથા ઉદ્દેશકમાં સૌથી પહેલાં નરકદ્વારનું નિરૂપણ કર્યું છે. આ વિષયને અનુલક્ષીને ગૌતમ સ્વામી મહાવીર પ્રભુને એવેા પ્રશ્ન પૂછે છે કે—" कइणं भंते ! पुढवीओ पण्णत्ताओ ?" હે ભગવન્ ! પૃથ્વીઓ કેટલી કહી છે ?

हे भदन्त ! कति खलु पृथिव्यः प्रज्ञप्ताः ? भगवानाह–' गोयमा ! सत्त पुढवीओ पण्णत्ताओ ' हे गौतम ! सप्तपृथिव्यः प्रज्ञप्ताः, ' तं जहा–रयणप्पभा जाव अहे सत्तमा ' तद्यथा-रत्नप्रभा, यावत्–शर्कराप्रभा, वालुकाप्रभा, पङ्कप्रभा, धूमप्रभा, तमःप्रभा, अधःसप्तमी च । ' अहे सत्तमाएणं पुढवीए पंच अणुत्तरा महातिमहालया जाव अपइट्ठाणे ? अधः सप्तम्यां खलु पृथिव्यां पञ्चानुत्तराः प्रधानाः अन्याप्रधानवेदना संक्लेशत्वात्, महातिमहालयाः अतिविस्तारवन्तो नरकावासाः यावत्–कालः १, महाकालः २, रौरवम्, महारौरवम्, अप्रतिष्ठानं चेत्-नामकाः सन्ति, ' ते णं णरगा छट्ठीए तमाए पुढवीए नरएहिंतो महंततरा चेव १, महाविच्छिण्णतराचेव २, महावगासतराचेव ३ महापइरिक्कतराचेव ४ ' हे गौतम ! ते खलु नरकाः पूर्वोक्ताः पञ्चनरकावासाः षष्ठ्यास्तमायाः पृथिव्याः नरकेभ्यो

इसके उत्तर में प्रभु ने कहा–'गोयमा' हे गौतम ! 'सत्तपुढवीओ पण्णत्ताओ' पृथिवियां सात कही गई हैं 'तं जहा' जो इस प्रकार से हैं–'रयणप्पभा जाव अहेसत्तमा' रत्नप्रभा यावत्–शर्कराप्रभा, वालुकाप्रभा, पंकप्रभा, धूमप्रभा और अधःसप्तमी–(तमस्तमःप्रभा)।

अब गौतमस्वामी प्रभु से ऐसा पूछते हैं–'अहे सत्तमाए णं पुढवीए पंच अणुत्तरा महतिमहालया जाव अपइट्ठाणे' हे भदन्त ! सातवीं पृथिवी जो अधःसप्तमी है उसके प्रधान पांच महाविशाल–काल, महाकाल, रौरव महारौरव और अप्रतिष्ठान ये नरकावास कहे गये हैं न ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं–हां, गौतम ! कहे गये हैं । ये नरक छठी तमः प्रभा पृथिवी के नरकों की अपेक्षा दीर्घता में बहुत बडे हैं, एवं विष्कंभ

તેનો ઉત્તર આપતા મહાવીર પ્રભુ કહે છે કે–" गोयमा !" હે ગૌતમ ! " सत्त पुढवीओ पण्णत्ताओ " પૃથ્વીઓ (નરકો) સાત કહી છે. " तंजहा " તેમનાં નામ નીચે પ્રમાણે છે–" रयणप्पभा जाव अहे सत्तमा " રત્નપ્રભા, શર્કરા-પ્રભા, વાલુકાપ્રભા, પંકપ્રભા, ધૂમપ્રભા, તમઃપ્રભા, અધઃસપ્તમી (तमस्तमःप्रभा.)

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન–" अहे सत्तमाए णं पुढवीए पंच अणुत्तरा महति-महालया जाव अपइट्ठाणे " હે ભગવન્ ! જે સાતમી અધઃસપ્તમી નરક છે તેમાં પાંચ અનુત્તર, મહાવિશાળ કાળ, મહાકાળ, રૌરવ, મહારૌરવ, અને અપ્રતિ-ષ્ઠાન, આ પાચ નરકાવાસો કહ્યા છે ખરા ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર–હા, ગૌતમ ! ત્યાં તે પાંચ નરકાવાસો આવેલા છે. તે નરકાવાસો છઠ્ઠી તમઃપ્રભા નરકના નરકાવાસો કરતાં લંબાઇ અને પહોળાઇની અપેક્ષાએ ઘણું જ વધારે વિસ્તારવાળા છે. તે નરકાવાસોમાં નારકોને રહેવાને માટેનું ક્ષેત્ર વિશાળ છે. તેથી તેઓ મહાવકાશતર (છઠ્ઠી

महत्तराश्चैव आयामेन-दैर्घ्येण सन्ति, महाविस्तीर्णतराश्चैव विष्कम्भेण-परिधिना सन्ति महावकाशतराश्चैव-अवकाशो बहूनां वक्ष्यमाणद्रव्याणामवस्थितियोग्यं क्षेत्रं, महान् अवकाशो येषु ते महावकाशाः, अतिशयेन महावकाशा महावकाशतराः सन्ति, तेषां च महाजनसंकीर्णताव्यावृत्त्यर्थमाह-महामतिरिक्ततराश्चैव-महत्मतिरिक्तं नैरयिकरहितं येषु ते महामतिरिक्ताः, अतिशयेन महामतिरिक्ताः महामतिरिक्ततरा अत्यन्तशून्याः सन्ति, किन्तु-'णो तहा महापवेसणतराचेव १, नो आइण्णतरा चेव २, नो आउलतरा चेव ३, अणोयणतरा चेव ४' नो-नैव किल तथा-तेन प्रकारेण, महामवेशनतराश्चैव यथा षष्ठ नारक पृथिवी नरकावासा अतिशयेन महत्मवेशनं गत्यन्तराभरकगतौ जीवानां प्रवेशो येषु ते तथाविधा भवन्ति, न तथाविधा भवन्ति, षष्ठ पृथिव्यपेक्षया सप्तमपृथिव्ती नारकाणामसंख्यगुणहीनत्वात्, अतएव नो आकीर्णतराश्चैव-नात्यन्तं नारकैराकीर्णा संकीर्णास्ते भवन्ति, नो वा आकुलतराश्चैव-आकुला-व्याप्ता नारकैः तेषामतिशयेन योगादाकुलतरा

की अपेक्षा महाविस्तारवाले हैं। इनमें वक्ष्यमाण द्रव्यों को रहने के लिये अवस्थान योग्य क्षेत्र बहुत विशाल है-इसलिये ये महावकाशतर हैं। परन्तु इनमें अधिक नारक जीव नहीं हैं इसलिये ये महाप्रतिरिक्ततर है-शून्य है। 'णो तहा महापवेसणतराचेव १' जैसे छठी नारक पृथिवी के नरकावास गत्यन्तर से आये हुए जीवों के प्रवेशवाले बने रहते हैं-उस प्रकार से ये प्रवेशवाले नहीं हैं-क्योंकि छठी पृथिवी की अपेक्षा सातवीं पृथिवी में नारक असंख्यातगुणित हीन कहे गये हैं। इसी कारण अधःसप्तमी के नरकावास नारकों से अत्यन्त आकीर्णतर-संकीर्ण-नहीं रहते हैं। और न वे नारकों से अत्यन्त व्याप्त ही रहते हैं। इसी कारण वहां नारकों में आपस में संघट्टन नहीं होता है।

નરકના નરકવાસો કરતાં વધારે અવકાશવાળા) છે. પરંતુ તે નરકાવાસોમાં છઠ્ઠી નરકના નરકાવાસો જેટલા અધિક જીવો નથી, તેથી તેઓ મહાપ્રતિરિક્તતર-શૂન્ય-છે. "णो तहा महापवेसणतराचेव१" છઠ્ઠી નરકના નરકાવાસોમાં જેવી રીતે અન્ય ગતિમાંથી આવતાં જીવોનો પ્રવેશ ચાલૂ જ રહ્યા કરે છે, એવી રીતે અહીં તેમનો પ્રવેશ ચાલૂ રહેતો નથી, કારણ કે છઠ્ઠી નરક કરતાં સાતમી નરકમાં નારકોની સંખ્યા અસંખ્યાત ગણી ઓછી છે. તે કારણે અધઃસપ્તમીના નરકાવાસો નારકો વડે અત્યન્ત આકીર્ણતર-સંકીર્ણ રહેતા નથી તે નરકાવાસો નારકો વડે અત્યન્ત વ્યાપ્ત પણ રહેતા નથી. તે કારણે ત્યાં નારકોમાં એક બીજા સાથે સંઘટ્ટન થતું નથી બીડને કારણે ત્યાં

नो तथाविधा भवन्ति, अतएव ते सप्तमनरकावासा अनोदनतराश्चैव बाहुल्याभावात् अनिश्चयेन अन्योन्यं नोदनवर्जिताः परस्परसंघर्षरहिता भवन्ति । ' तेसु णं नरएणं नेरइया छट्ठीए तमाए पुढवीए नेरइएहिंतो महाकम्मतरा चेव १, महाकिरियतराचेव २, महासवतरा चेव ३, महावेयणतरा चेव ४ ' तेषु खलु पञ्चसु सप्तमपृथिवीनरकावासेषु नैरयिकाः षष्ठ्यास्तमाया पृथिव्या नैरयिकेभ्यो महाकर्मतराश्चैव भवन्ति–षष्ठपृथिवी नैरयिकापेक्षया तेषां नैरयिकाणां ज्ञानावरणीयादि कर्मणां महत्त्वात् १, तथैव ते सप्तमपृथिवीनैरयिका षष्ठनरकापेक्षया महाक्रियातराश्चैव भवन्ति, तेषां कायिक्यादि क्रियाणां महत्त्वात्, तत्काले कायमहत्त्वात्

आपस में भीड़ में एक दूसरे से धक्का मुक्की हो जाना इसका नाम नोदन है। ऐसा नोदन यहां इसीलिये नहीं है कि यहां पर नारकों की बहुलता नहीं है। 'तेसु णं नरएणं नेरइया छट्ठीए नेरइयहिंतो महाकम्मतराचेव, १ महाकिरियतराचेव २, महासवतराचेव ३, महावेयणतराचेव ४' ससमनरकपृथिवी के इन पांच नरकावासों में नैरयिक तमः पृथिवी के नैरयिकों की अपेक्षा महाकर्मतरवाले होते हैं–क्यों कि छट्ठी पृथिवी के नैरयिकों की अपेक्षा इन नारकियों के ज्ञानावरणीयादि कर्म बहुत अधिक मात्रा में बंधे हुए होते हैं। तथा इसी प्रकार से वे महाक्रियावाले होते हैं–क्योंकि इनकी जो कायिकी आदि क्रियाएँ हैं वे महान् होती हैं–पांच सौ ५०० धनुष की अवगाहना–शरीर की ऊँचाई यहां होती है इसलिये यहां काय की महानता है–और इससे पहिले भवमें ये महारम्भ

ધક્કામુક્કી પણ થતી નથી આ પ્રકારની ધક્કામુક્કીને નોદન કહે છે. ત્યાં આ પ્રકારનું નોદન થવાની શકયતા જ રહેતી નથી કારણ કે ત્યાં નારકોની સંખ્યા અધિક નથી. " तेसु णं नरएणं नेरइया छट्ठीए तमाए पुढवीए नेरएहिंतो महाकम्मतराचेव१, महाकिरियतराचेव२, महासवतराचेव३, महावेयणतराचेव४ " સાતમી નરકના નરકાવાસોના નારકો છઠ્ઠી તમઃપ્રભા પૃથ્વીના નારકો કરતાં મહાકર્મતરવાળા હોય છે કારણ કે છઠ્ઠી પૃથ્વીના નારકો કરતાં તે નારકોના જ્ઞાનાવરણીય આદિ કર્મ વધારે પ્રમાણમાં બંધાયેલાં હોય છે. એજ પ્રમાણે તેઓ મહાક્રિયાવાળા પણ હોય છે, કારણ કે તેમની જે કાયિકી આદિ ક્રિયાઓ છે તે મહાન્ હોય છે. ત્યાં શરીરની અવગાહના (ઉંચાઈ) ૫૦૦ યોજનની હોય છે, તેથી ત્યાં કાયની મહાનતા છે અને આગલા ભવમાં તેઓ મહારમ્ભ, મહાપરિગ્રહ આદિવાળા હોય છે, તેથી તેમને મહાક્રિયાવાળા કહ્યા

पूर्वकाले च महारम्भादित्वात् २, अतएव ते तदपेक्षया महास्रवतराश्चैव भवन्ति ३, एवं महावेदनतराश्चैव भवन्ति, तेषां तदपेक्षया महाकर्मत्वात् ४, किन्तु 'नो तहा अप्पकम्मतरा चेव १, नो अप्पकिरियतरा चेव २, नो अप्पास्रवतरा चेव ३, नो अप्पवेयणतरा चेव ४, नो-नैव किल, तथा तेन प्रकारेण अल्पकर्मतराश्चैव भवन्ति, यथा षष्ठपृथिवी नैरयिकास्तदपेक्षया अल्पकर्मतरा भवन्ति, नो वा तथा ते अल्पक्रियतराश्चैव भवन्ति, यथा षष्ठ पृथिवी नैरयिकास्तदपेक्षया अल्पक्रियातरा नो भवन्ति, नो नैव वा ते तथा अल्पास्रवतराश्चैव भवन्ति यथा षष्ठपृथिवी नैरयिकास्तदपेक्षया अल्पास्रवतरा नो भवन्ति नो वा तथा ते अल्पवेदनतराश्चैव भवन्ति, यथा षष्ठपृथिवी नैरयिका अल्पवेदनतरा भवन्ति, तथा सप्तमी पृथिवी स्थिता नेति भावः। 'अप्पड्ढियतरा चेव १, अप्पज्जुइयतरा चेव २, नो तहा

महापरिग्रह आदि वाले होते हैं-इसलिये ये महाक्रियावाले कहे गये हैं। इसी कारण ये उनकी अपेक्षा से महास्रववाले भी कहे गये हैं। यहां वेदना छठे नरक की अपेक्षा अधिक होती है-क्योंकि नारकी जीवरूप से जब यहां कोइ नया जीव उत्पन्न होता है तब वह यहां की वेदना के मारे पहिले पहिल पांच सौ ५०० योजनतक ऊँचा उछल जाता है। ऐसी वेदना यहां पर है। किन्तु 'नो तहा अप्पकम्मतरा चेव१' जिस प्रकार छठे नारक के जीव अल्पतर कर्मवाले होते हैं-वैसे ये अल्पतर कर्मवाले नहीं होते है ? 'नो अप्पकिरियतरा चेव' उनकी तरह अल्पतर कायादि क्रियावाले नहीं होते हैं २, नो अप्पास्रवतराचेव ३, अप्पवेयणतराचेव ४' अल्पतर आस्रववाले नहीं होते हैं और न उनकी तरह अल्पवेदनावाले ही होते हैं ४, किन्तु छठी पृथिवी नैरयिकों की अपेक्षा ये 'अप्पड्ढियतराचेव ? अप्पज्जुइयतराचेव २' अल्पऋद्धिवाले होते हैं

છે. એજ કારણે છઠ્ઠી નરકના નારકો કરતાં તેમને મહા આસ્રવવાળા કહ્યા છે. છઠ્ઠી નરક કરતાં સાતમી નરકમાં અધિક વેદનાનો અનુભવ કરવો પડે છે. કોઈ પણ નવો જીવ જ્યારે ત્યાં ઉત્પન્ન થાય છે ત્યારે ત્યાંની વેદનાને કારણે પહેલી વખત તો તે ૫૦૦ યોજન સુધી ઊંચે ઉછળે છે. આટલી બધી વેદના ત્યાં વેઠવી પડે છે. પરન્તુ "नो तहा अप्पकम्मतरा चेव१" છઠ્ઠી નરકના નારકોના જેવાં અલ્પતર કર્મવાળા તેઓ હોતા નથી, "नो अप्पकिरियतराचेव" વળી તેઓ છઠ્ઠી નરકના નારકોના જેવાં અલ્પતર કાયાદિ ક્રિયાવાળા હોતા નથી. "नो अप्पास्रवतराचेव३ अप्पवेयणतराचेव" તેઓ અલ્પતર આસ્રવવાળા પણ હોતા નથી અને અલ્પતર વેદનાવાળા પણ હોતા નથી. "अप्पड्ढियतराचेव, अप्पज्जुइयतराचेव" છઠ્ઠી નરકના નારકો કરતાં સાતમી

महड्ढियतरा चेव १, नो महज्जुइयतरा चेव २' अतएव ते सप्तमपृथिवी नैरयिकाः अल्पर्द्धिकतराश्चैव भवन्ति, तेषां षष्ठपृथिव्यपेक्षया अवध्यादि ऋद्धेरल्पत्वात्, एवम्-ते अल्पद्युतिकतराश्चैव भवन्ति तेषां दीप्तेरभावात्, अतएव ते नो तथा महर्द्धिकतराश्चैव भवन्ति, यथा षष्ठपृथिवीस्थनैरयिका महर्द्धिकतरा भवन्ति। एवं ते नो, महाद्युतिकतराश्चैव भवन्ति, यथा षष्टपृथिवी नैरयिका महाद्युतिकतरा भवन्ति तथा नेत्यर्थः। षष्ठ नारकं मरूपयितुमाह-'छट्ठीएणं तमाए पुढवीए एगे पंचूणे निरयावाससयसहस्से पण्णत्ते' षष्ठ्यां खलु तमायां पृथिव्याम् एकं पञ्चोनं निरयावासशतसहस्रं-पञ्चन्यूनैकलक्षनिरयावासाः प्रज्ञप्तम्। 'ते णं नरगा अहे सत्तमाए पुढवीए नरएहिंतो नो तहा महंततरा चेव १, महावित्थिन्नतरा चेव २,

---

क्योंकि इन सातवीं पृथिवी के नैरयिकों की अवध्यादि ऋद्धि छठी पृथिवी के नैरयिकों की अपेक्षा अल्प होती है। इसी प्रकार से ये उनकी अपेक्षा दीप्ति का अभाव होने से अल्पदीप्तिवाले होते हैं। इसलिये जैसे छठी पृथिवी के नैरयिक महर्द्धिकतर होते हैं ऐसे ये महर्द्धिकतर नहीं होते हैं। और न महाद्युतिकतर होते हैं। अब गौतम-स्वामी प्रभु से ऐसा पूछते हैं कि हे भदन्त! छठी पृथिवी जो तमः प्रभा नामकी है उसमें कितने नैरयिकावास कहे गये हैं? और यहां के नैरयिकों की क्या हालत है? इसके उत्तरमें प्रभु कहते हैं-'छट्ठीए णं तमाए पुढवीए एगे पंचूणे निरयावाससयसहस्से पण्णत्ते' हे गौतम! छठी तमः प्रभा नाम की जो पृथिवी हैं उसमें पांच कम एक लाख नरकावास कहे गये हैं 'ते णं णरगा अहे सत्तमाए पुढवीए नरएहिंतो

નરકના નારકો અલ્પઋદ્ધિવાળા અને અલ્પદીપ્તિવાળા હોય છે સાતમી નારકના નારકોની અવધિ આદિ ઋદ્ધિ છઠ્ઠી નરકના નારકોની અવધિ આદિ ઋદ્ધિ કરતાં ન્યૂન હોય છે છઠ્ઠી નરકના નરકોના શરીરની દીપ્તિકરતાં સાતમી નરકના નારકોની દીપ્તિ ઓછી હોય છે. તેથી જ તેમને અલ્પતર ઋદ્ધિવાળા અને અલ્પતર દીપ્તિવાળા કહ્યા છે

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન—હે ભગવન્ તમઃપ્રભા નામની છઠ્ઠી નરકમાં કેટલા નરકાવાસો કહ્યા છે? ત્યાં નારકોની હાલત કેવી છે?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર—"छट्ठीएणं तमाए पुढवीए एगे पंचूणे निरयावास सयसहस्से पण्णत्ते" હે ગૌતમ! છઠ્ઠી તમઃપ્રભા નરકમાં એક લાખ કરતાં પાંચ ન્યૂન (૯૯૯૯૫) નરકવાસો છે. "तेणं णरया अहे सत्तमाए पुढवीए

महावगासतरात्र चेव ३, महापइरिक्कतरा चेव ४' ते खलु षष्ठपृथिवीनरकाः अधः सप्तम्याः पृथिव्याः नरकेभ्यो नो तथा महत्तराश्चैव भवन्ति, नो तथा महाविस्तीर्णतराश्चैव भवन्ति, नो वा तथा महावकाशतराश्चैव भवन्ति, यथा सप्तमपृथिवी नरका महत्तराः, महाविस्तीर्णतराः, महावकाशतराः, महाप्रतिरिक्ततरा भवन्ति तथा नेति भावः, अपितु-' महप्पवेसणतरा चेव १, आइण्णतरा चेव २, आउलतरा चेव ३, णोयणतरा चेव ४ ' ते षष्ठ पृथिवी नरकाः महाप्रवेशनतराश्चैव, आकीर्णतराश्चैव आकुलतराश्चैव व्याप्ताश्च नो दनतराश्चैव प्रेरणातत्पराश्च भवन्ति। 'तेसु णं नरएसु नेरइया अहे सत्तमाए पुढवीए नेरइएहिंतो अप्पकम्मतरा चेव १, अप्पकिरियतरा चेव २, अप्पासवतरा चेव ३, अप्पवेयणतरा चेव ४ ' ते खलु षष्ठ पृथिव्याः नरकेषु नैरयिकाः अधः सप्तम्याः

'नो तहा महंतमरा चेव १, महावित्थिन्नतरा चेव २, महावगासतरा चेव ३ महापइरिक्कतरा चेव ४' तथा ये छठी पृथिवी के नरक अधःसप्तमी पृथिवी के नरकावासों में से बडे नहीं हैं, न वे वैसे महाविस्तारवाले हैं, न वैसे वे महावकाशवाले हैं, और न वे वैसे महाप्रतिरिक्ततर ही हैं। जैसे सप्तमपृथिवी के नरक महत्तर, महाविस्तीर्णतर, महावकाशतर और महाप्रतिरिक्ततर हैं। 'महप्पवेसणतरा चेव १, आइण्णतरा चेव २, आउलतरा चेव ३ णोयणतरा चेव ४' ये छठी पृथिवी के नरकावास महाप्रवेशनतर हैं १, आकीर्णतर हैं २, आकुलतर है ३, और प्रेरणातत्पर हैं। 'तेसु णं नरएसु नेरइया अहेसत्तमाए पुढवीए नेरइएहिंतो अप्पकम्मतरा चेव १, अप्पकिरियतरा चेव २, अप्पासवतरा चेव ३, अप्पवेयणतरा चेव ४' छट्ठी पृथिवी के नरकों में जो नैरयिक हैं वे अधः

नरएहिंतो नो तहा महंततरा चेव, महावित्थिन्नतरा चेव २, महावगासतरा चेव ३, महापइरिक्कतरा चेव ४" છઠ્ઠી નરકના નરકાવાસો અધઃસપ્તમીના નરકાવાસો કરતાં મોટા નથી, તે નરકાવાસો અધઃસપ્તમીના નરકાવાસો જેટલા મહાવિસ્તારવાળા પણ નથી, મહાવકાશવાળા પણ નથી અને મહાપ્રતિરિકતતર (શૂન્ય) પણ નથી. "महप्पवेसणतरा चेव, आइण्णतरा चेव, आउलतरा चेव, णोयणतरा चेव" સાતમી નરકના નરકાવાસો કરતાં તે નરકાવાસો મહાપ્રવેશનતર, આકીર્ણતર, આકુલતર અને પ્રેરણાતત્પર છે. એટલે કે તે નરકાવાસોમાં વધારે નારકોનો પ્રવેશ થયા કરે છે, ત્યાં સંકડાશ રહે છે, ધક્કમુક્કી ચાલે છે અને નારકોનાં શરીરનું સંઘટ્ટન થયા કરે છે "तेसु णं नरएसु नेरइया अहे सत्तमाए पुढवीए नेरइएहिंतो अप्पकम्मतरा चेव १, अप्पकिरियतरा चेव २, अप्पासवतरा चेव ३, अप्पवेयणतरा चेव" છઠ્ઠી પૃથ્વીના નારકો સાતમી પૃથ્વીના નારકો કરતાં અલ્પકર્મતર,

पृथिव्या नैरयिकेभ्यः अल्पकर्मतराश्चैव, अल्पक्रियतराश्चैव, अल्पास्रवतराश्चैव, अल्पवेदनतराश्चैव भवन्ति, 'णो तहा महाकम्मतरा चेव १, महाकिरियतरा चेव २, महास्रवतरा चेव ३, महावेयणतरा चेव ४' नो तथा षष्ठपृथिव्या नैरयिका महाकर्मतराश्चैव, महाक्रियतराश्चैव, महास्रवतराश्चैव, महावेदनतराश्चैव भवन्ति यथा सप्तमपृथिव्या नैरयिका महाकर्मतराः, महाक्रियतराः, महास्रवतराः महावेदनतराश्च भवन्ति तथा नैते इति भावः, किन्तु 'महड्ढियतराचेव १, महाजुइयतरा चेव २, नो तहा अप्पड्ढियतरा चेव १, अप्पज्जुइतरा चेव २,' ते षष्ठ पृथिव्याः नैरयिका महर्द्धिकतराश्चैव, महाद्युतिकतराश्चैव भवन्ति, परन्तु नो तथा अल्पर्द्धिकतराश्चैव, अल्पद्युतिकतराश्चैव भवन्ति यथा सप्तमपृथिव्या नैरयिका अल्पर्द्धिकतराः, अल्पद्युतिकतराश्च भवन्ति न तथैते इति भावः। 'छट्ठीए णं तमाए पुढवीए नरगा पंचमाए धूमप्पभाए पुढवीए नरएहिंतो महत्तरा चेव १, महाविस्थिन्नतरा चेव २, महावगासतरा चेव ३, महा पइरिक्कतरा चेव ४, षष्ठ्याः खलु तमायाः

सप्तमीपृथिवी के नैरयिकों की अपेक्षा अल्पकर्मतर, अल्पास्रवतर और अल्पवेदनातर होते हैं। 'णो तहा महाकम्मतराचेव, १ महाकिरियतराचेव, २ महास्रवतराचेव ३, महावेयणतराचेव ४' तथा वे सप्तमपृथिवी के नैरयिकों जैसे महाकर्मतर, महाक्रियातर, महास्रवतर और महावेदनतर नहीं हैं 'महड्ढियतराचेव १, महाजुइयतरा चेव २, नो तहा अप्पड्ढियतराचेव १, अप्पज्जुइयतराचेव २' ये छठी पृथिवी के नैरयिक महर्द्धिकतर होते हैं, और महाद्युतिकतर होते हैं, सप्तमपृथिवी के जैसे ये अल्पर्द्धिक और अल्पद्युतिकतर नहीं होते हैं 'छट्ठीए णं तमाए पुढवीए नरगा पंचमाए धूमप्पभाए पुढवीए नेरइएहिंतो महत्तराचेव १ महाविस्थिन्नतराचेव २, महावगासतराचेव ३, महापइरिक्कतराचेव ४' छठी

અલ્પક્રિયાતર, અલ્પ અસ્રાતર, અને અલ્પવેદનાતર હોય છે. "णो तहा महाकम्मतराचेव १, महाकिरियतराचेव, महास्रवतराचेव ३, महावेयणतराचेव ४" તેઓ અધઃસપ્તમીના નારકો જેટલા મહાકર્મતર, મહાક્રિયાતર, મહાસ્રવતર અને મહાવેદનતર નથી. "महड्ढियतराचेव १, महाजुइयतराचेव २, नो तहा अप्पड्ढियतराचेव १, अप्पज्जुइयतराचेव २" આ છઠ્ઠી નરકના નારકો સાતમી નરકના નારકો કરતાં અધિક ઋદ્ધિવાળા અને અધિક દ્યુતિવાળા હોય છે, પરન્તુ તેઓ સાતમી નરકના નારકો કરતાં અલ્પ ઋદ્ધિવાળા અને અલ્પ દ્યુતિવાળા હોતા નથી. "छट्ठीए णं तमाए पुढवीए नरगा पंचमाए धूमप्पभाए पुढवीए नेरइएहिंतो महत्तराचेव १, महाविस्थिन्नतराचेव २, महावगासतराचेव ३, महापइ-

पृथिव्याः नरकाः पञ्चम्याः धूमप्रभायाः पृथिव्याः नरकेभ्यो महत्तराश्चैव, महाविस्तीर्णतराश्चैव, महावकाशतराश्चैव, महाप्रतिरिक्ततराश्चैव भवन्ति, 'नो तहा महप्पवेसणतराचेव १, आइण्णतरा चेव २, आउलतराचेव ३, अणोयतराचेव' नो तथा षष्ठ पृथिवी नरका महाप्रवेशनतराश्चैव, आकीर्णतराश्चैव, आकुलतराश्चैव, नोदनतराश्चैव भवन्ति, यथा पञ्चमपृथिवीनरका महाप्रवेशनतराः, आकीर्णतराः, आकुलतराः, नोदनतराश्च भवन्ति तथा नेति भावः। 'तेसु णं नरएसु नेरइया पंचमाए धूमप्पभाए पुढवीए नेरइएहिंतो महाकम्मतरा चेव १, महाकिरियतरा चेव २, महासवतरा चेव ३, महावेयणतरा चेव ४' तेषु खलु षष्ठपृथिव्या नरकेषु नैरयिकाः पञ्चम्या धूमप्रभायाः पृथिव्या नैरयिकेभ्यो महाकर्मतराश्चैव, महाक्रियतराश्चैव, महास्रवतराश्चैव, महावेदनतराश्चैव भवन्ति, 'नो तहा अप्पकम्मतरा चेव १,

---

पृथिवी के नरक पंचमी पृथिवी धूमप्रभा के नरकों की अपेक्षा महत्तर हैं, महाविस्तीर्णतर हैं। महावकाशतर है और महाप्रतिरिक्त हैं 'नो तहा महप्पवेसणतराचेव १, आइण्णतराचेव २, आउलतराचेव ३, अणोयणतराचेव ४' परन्तु ये पंचमी पृथिवी के नरकों जैसे महाप्रवेशनतर, आकीर्णतर और नोदनतर नहीं हैं—पांचवीं पृथिवी के नरक छठी पृथिवी के नरकों की अपेक्षा तो महाप्रवेशनतर, आकीर्णतर, आकुलतर और नोदनतर होते हैं—वैसे ये षष्ठपृथिवी के नारक नहीं होते हैं। 'तेसु णं नरएसु नेरइया पंचमाए धूमप्पभाए पुढवीए नेरइएहिंतो महाकम्मतराचेव १ महाकिरियतराचेव २ महासवतराचेव ३ महावेयणतराचेव ४' छठी पृथिवी के नारक पंचमी के नैरयिकों की अपेक्षा महाकर्मतर, महाक्रियातर, महास्रवतर और महावेदनतर होते

रिक्ततराचेव ४" છઠ્ઠી નરકના નરકાવાસો પાંચમી ધૂમપ્રભાના નરકાવાસો કરતાં વધારે મોટા, વધારે વિસ્તારવાળા, વધારે અવકાશવાળા અને વધારે પ્રતિરિક્ત (શૂન્ય) છે. "नो तहा महप्पवेसणतराचेव, आइण्णतराचेव, आउलतराचेव, अणोयणतराचेव" પરન્તુ છઠ્ઠી નરકના નરકાવાસો પાંચમી નરકના નરકાવાસો જેટલાં મહાપ્રવેશાન્તર (વધારે નારકોના પ્રવેશવાળા), આકીર્ણતર (સંકડાશવાળા), આકુલતર, અને નોદનતર (ધક્કામુક્કીવાળા) નથી પાંચમી ધૂમપ્રભા પૃથ્વીના નરકાવાસો છઠ્ઠી પૃથ્વીના નરકાવાસો કરતાં મહાપ્રવેશનતર, આકીર્ણતર, આકુલતર અને નોદનતર હોય છે. "तेसु णं नरएसु नेरइया पंचमाए धूमप्पभाए पुढवीए नेरइएहिंतो महाकम्मतराचेव १, महाकिरियतराचेव २, महासवतराचेव ३, महावेयणतराचेव ४" પાંચમી પૃથ્વીના નારકો કરતાં છઠ્ઠી પૃથ્વીના નારકો મહાકર્મતર, મહાક્રિયાતર, મહાસ્રવતર, અને મહાવેદનતર હોય છે. "नो तहा अप्पकम्मतराचेव १,

अप्पकिरियतरा चेव २, अप्पासवतरा चेव ३, अप्पवेयणतरा चेव ' षष्ठ पृथिव्या नैरयिका नो तथा अल्पकर्मतराश्चैव, अल्पक्रियतराश्चैव, अल्पास्रवतराश्चैव, अल्पवेदनतराश्चैव भवन्ति, यथा पञ्चमपृथिव्या नैरयिका अल्पकर्मतराः, अल्पक्रियतराः अल्पास्रवतराः, अल्पवेदनतराश्च भवन्ति तथा नैते इति भावः। ' अपड्ढियतरा चेव १, अप्पज्जुइतरा चेव २, नो महड्ढियतरा चेव १, महज्जुइतरा चेव २ ' ते षष्ठ पृथिव्या नैरयिकाः अल्पार्द्धिकतराश्चैव, अल्पद्युतिकतराश्चैव भवन्ति, किन्तु नो तथा ते षष्ठ पृथिव्या नैरयिका महर्द्धिकतराश्चैव, महाद्युतिकतराश्चैव भवन्ति यथा पञ्चम पृथिव्या नैरयिका महर्द्धिकतराः, महाद्यैतिकतराश्च भवन्ति तथा नेति भावः। पञ्चमनरकवर्णनमाह—' पंचमाएणं धूमप्पभाए पुढवीए तिन्नि निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता ' पञ्चम्यां खलु धूमप्रभायां पृथिव्यां त्रीणि निरयावासशतसहस्राणि लक्ष-

---

हैं। 'नो तहा अप्पकम्मतराचेव १ अप्पकिरियतरा चेव २, अप्पासवतराचेव ३, अप्पवेयणतराचेव ४' जैसे पंचमी पृथिवी के नारक अल्पतरकर्मवाले, अल्पतरक्रियावाले अल्पतर आस्रववाले और अल्पतर वेदनावाले होते हैं-वैसे ये छठी पृथिवी के नारक अल्पतरकर्मवाले, अल्पतरक्रियावाले, अल्पतर आस्रववाले और अल्पतर वेदनावाले नहीं होते हैं ' अप्पड्ढियतराचेव १, अप्पज्जुइयतराचेव २, नो तहामहड्ढियतराचेव, महज्जुइयतराचेव' छठी पृथिवी के नैरयिक अल्पर्द्धिक एवं अल्पद्युतिक होते हैं। पंचम पृथिवी के नैरयिकों की तरह वे महर्द्धिक और महाद्युतिक नहीं होते हैं। 'पंचमाए णं धूमप्पभाए पुढवीए तिन्नि निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता' पंचमनरक का वर्णन करते हुए प्रभु कहते हैं-गौतम! पंचमपृथिवी जो धूमप्रभा है उसमें तीन लाख नरकावास

अप्पकिरियतराचेव२, अप्पासवतराचेव३, अप्पवेयणतराचेव४" પાંચમી પૃથ્વીના નારકો જેટલાં અલ્પતર કર્મવાળા, અલ્પતર ક્રિયાવાળા, અલ્પતર આસ્રવવાળા અને અલ્પતર વેદનાવાળા હોય છે, એટલાં અલ્પતર કર્મવાળા, અલ્પતર ક્રિયાવાળા, અલ્પતર આસ્રવવાળા અને અલ્પતર વેદનાવાળા છઠ્ઠી નરકના નારકો હોતા નથી. " अप्पड्ढियतराचेव१, अप्पज्जुइयतराचेव२, नो तहा महड्ढियतराचेव, महज्जुइयतराचेव " છઠ્ઠી પૃથ્વીના નારકો અલ્પ ઋદ્ધિવાળા અને અલ્પદ્યુતિવાળાં હોય છે. પાંચમી નરકના નારકો જેટલી મહાઋદ્ધિ અને મહાદ્યુતિવાળા તેઓ હોતા નથી. " पंचमाए णं धूमप्पभाए पुढवीए तिन्नि निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता " પાંચમી ધૂમપ્રભા નરકનું વર્ણન કરતા મહાવીર પ્રભુ કહે છે કે—હે ગૌતમ! પાંચમી નરકમાં ત્રણ લાખ નરકાવાસ

त्रयपरिमितानि प्रज्ञप्तानि, 'एवं जहा छट्ठीए भणिया, एवं सत्त वि, पुढवीओ परोप्परं भण्णंति, जाव रयणप्पभत्ति, जाव नो तहा महड्ढियतरा चेव, अप्पजुइतरा चेव' एवं पूर्वोक्तरीत्या, यथा षष्ठ्याः पृथिव्याः नरकावासादिविषये वक्तव्यता भणिता एवं-तथैव सप्ताऽपि पृथिव्यो भण्यते सप्तानामपि नारकपृथिवीनां परस्पर-नरकावासादिविषये वक्तव्यता, भणितव्या यावत्-चतुर्थी पङ्कप्रभा-तृतीया वालुकाप्रभा-द्वितीया शर्कराप्रभा-प्रथमा रत्नप्रभेति, यावत् पञ्चम्याः धूमप्रभायाः पृथिव्या नरकाश्चतुर्थ्याः पङ्कप्रभायाः पृथिव्याः नरकेभ्यो महत्तराश्चैव, महा विस्तीर्णतराश्चैव, महावकाशतराश्चैव, महाप्रतिरिक्ततराश्चैव भवन्ति, नो तथा महा-प्रवेशनतराः, आकीर्णतराः, आकुलतराः, नोदनतराश्चैव भवन्ति यथा चतुर्थ्याः पृथिव्या नरका महाप्रवेशनतराः, आकीर्णतराः, आकुलतराः, नोदनतराश्चैव भवन्ति।

कहेगये हैं। 'एवं जहा छट्ठीए भणिया, एवं सत्त वि पुढवीओ परोप्परं भण्णंति, जाव रयणप्पभत्ति, जाव नो तहा महड्ढियतराचेव, अप्पज्जुइयतराचेव' जिस प्रकार छठी पृथिवी के नरकावासादि के विषय में वक्तव्यता कही गई है, इसी प्रकार से सातों पृथिवियों के भी परस्पर में नरकावासादि के विषय में वक्तव्यता कहनी चाहिये। यावत् चतुर्थी-पंक-प्रभा, तृतीया-वालुकाप्रभा द्वितीया शर्कराप्रभा, प्रथमा-रत्नप्रभा-पृथिवी तक इस तरह जैसे पंचमी धूमप्रभापृथिवी के नरक चतुर्थपंकप्रभापृथिवी के नरकों की अपेक्षा महत्तर, महाविस्तीर्णतरमहावकाशतर, महाप्रति-रिक्ततर हैं, वैसे ये महाप्रवेशनतर, आकीर्णतर अकुलतर और नोद-नेतर नहीं हैं क्यों कि चतुर्थपृथिवी के नरक इनकी अपेक्षा महा-प्रवेशनतर, आकीर्णतर, आकुलतर और नोदनतर कहे गये है। इस

કહ્યા છે "एवं जहा छट्ठीए भणिया, एव सत्त वि पुढवीओ परोप्परं भण्णंति, जाव रयणप्पभंत्ति, जाव नो महड्ढियतराचेव, अप्पज्जुइयतराचेव" જે પ્રકારે છઠ્ઠી પૃથ્વીના નરકાવાસાદિના વિષયમાં કથન કરવામા આવ્યું છે, એજ પ્રમાણે સાતે પૃથ્વીઓમાં પણ નરકાવાસાદિના વિષયમાં પરસ્પરને લગતું એવું જ કથન કરવું જોઈએ એટલે કે ચોથી પંકપ્રભા, ત્રીજી વાલુકાપ્રભા, બીજી શર્કરાપ્રભા અને પહેલી રત્નપ્રભાનું પણ એવું જ કથન સમજી લેવું. જેમ કે પાંચમી ધૂમપ્રભાના નરકવાસો ચોથી પંકપ્રભાના નરકાવાસો કરતાં મહત્તર, મહાવિસ્તીર્ણતર, મહાવકાશતર, મહાપ્રતિરિક્તતર છે ધૂમપ્રભાના નરકાવાસો પંકપ્રભાના નરકાવાસો જેવાં મહાપ્રવેશનતર, આકીર્ણતર, આકુલતર અને નોદનતર નથી કારણ કે ચોથી પંકપ્રભા નરકના નારકો પાંચમી ધૂમપ્રભાના નારકો કરતાં મહાપ્રવેશનતર, આકીર્ણતર, આકુલતર અને નોદનતર કહ્યાં છે.

एवं तेषु पञ्चम्याः पृथिव्याः नरकेषु नैरयिकाश्चतुर्थ्याः पृथिव्याः नैरयिकेभ्यो महाकर्मतराः, महाक्रियतराः, महास्रवतराः, महावेदनतराश्च भवन्ति, किन्तु नो तथा अल्पकर्मतराः, अल्पक्रियतराः, अल्पास्रवतराः, अल्पवेदनतराश्च भवन्ति, यथा चतुर्थ्याः पृथिव्याः नैरयिकाः अल्पकर्मतराः, अल्पक्रियतराः, अल्पास्रवतराः, अल्पवेदनतराश्च भवन्ति न तथेति भावः। एवमेव ते पञ्चम्याः पृथिव्या नैरयिकाः अल्पर्द्धिकतराः, अल्पद्युतिकतराश्च भवन्ति, नो तथा महर्द्धिकतराः, महाद्युतिकतराश्च भवन्ति, यथा चतुर्थ्याः पृथिव्याः नैरयिकाः महर्द्धिकतराः, महाद्युतिकतराश्च भवन्ति न तथैते, इत्यादि रीत्या चतुर्थ्याः पङ्कप्रभायाः पृथिव्या नरकादिविषये,

---

प्रकार पंचमी पृथिवी के उन नरकों में नैरयिक चतुर्थपृथिवी के नैरयिकों की अपेक्षा से महाकर्मतर, महाक्रियातर, महास्रवतर और महावेदनतर हैं, अल्पतरकर्मवाले, अल्पतरक्रियावाले, अल्पतर आस्रववाले और अल्पतर वेदनवाले नहीं है, जैसे कि चतुर्थपृथिवी के नरक इनकी अपेक्षा महाप्रवेशनतर, आकीर्णतर, आकुलतर और नोदनतर कहे गये हैं। इस प्रकार वे पंचमी पृथिवी के उन नरकों में नैरयिक, चतुर्थपृथिवी के नैरयिकों की अपेक्षा से महाकर्मतर, महाक्रियातर, महास्रवतर और महावेदनतर हैं, अल्पतर कर्मवाले, अल्पतरक्रियावाले, अल्पतर आस्रववाले और अल्पतरवेदनवाले नहीं है, जैसे कि चतुर्थपृथिवी के नैरयिक अल्पतर कर्मवाले, अल्पतर क्रियावाले अल्पतर आस्रववाले और अल्पतर वेदनावाले होते हैं। इसी प्रकार से वे पंचमी पृथिवी के नैरयिक जैसे अल्पऋद्धिवाले हैं, और अल्पद्युतिवाले हैं, वैसे वे महाऋद्धिवाले और महाद्युतिवाले नहीं हैं, जैसे चतुर्थपृथिवी के नैरयिक महाऋद्धिवाले और महाद्युतिवाले इनकी अपेक्षा होते हैं। इसी रीति के अनुसार चतुर्थ पंकप्रभापृथिवी के नरकादि के विषय में,

---

એજ પ્રમાણે ચોથી પૃથ્વીના નારકો કરતાં પાંચમી પૃથ્વીના નારકો મહાકર્મતર, મહાક્રિયાતર, મહાસ્રવતર અને મહાવેદનતર છે. તેઓ ચોથી પંકપ્રભાના નારકો જેટલા અલ્પકર્મતર, અલ્પક્રિયાવાળા, અલ્પઆસ્રવવાળા અને અલ્પવેદનાવાળા નથી. એજ પ્રમાણે પાંચમી પૃથ્વીના નારકો જેવી અલ્પઋદ્ધિવાળા અને અને અલ્પદ્યુતિવાળા છે, એવી અલ્પઋદ્ધિ અને અલ્પદ્યુતિવાળા ચોથી પૃથ્વીના નારકો નથી ચોથી પંકપ્રભાના નારકો પાંચમી ધૂમપ્રભાના નારકો કરતાં મહાઋદ્ધિવાળા અને મહાદ્યુતિવાળા છે. એજ પ્રમાણે ચોથી પંકપ્રભાપૃથ્વીના નરકાવાસાદિના વિષયમાં, ત્રીજી વાલુકાપ્રભાના નર-

तृतीयस्याः वालुकाप्रभायाः पृथिव्या नरकादिविषये, द्वितीयस्याः शर्कराप्रभायाः पृथिव्या नरकादिविषये, प्रथमायाः रत्नप्रभायाः पृथिव्याः नरकादिविषये च वक्तव्यता पूर्वोक्तवदेव स्वयमूहनीया, अन्तिमसमालापकमाह—नो तथा शर्कराप्रभायाः पृथिव्या नैरयिका महर्द्धिकतराः, महाद्युतिकतराश्च सन्ति, यथा रत्नप्रभायाः पृथिव्या नैरयिकाः महर्द्धिकतराः, महद्युतिकतराश्च भवन्ति, अपितु अल्पर्द्धिकतराः, अल्पद्युतिकतराश्च भवन्ति शर्कराप्रभा नैरयिका इत्यर्थः ॥ सू० १ ॥

'नेरइय' इति प्रथमं द्वारं समाप्तम् ।

स्पर्शद्वारवक्तव्यता

मूलम्—रयणप्पभा पुढवि नेरइया णं भंते! केरिसयं पुढविफासं पच्चणुभवमाणा विहरंति? गोयमा! अणिट्ठं जाव अमणामं एवं जाव अहे सत्तमपुढविनेरइया, एवं आउफासं, एवं जाव वणस्सइफासं ॥सू० २॥

छाया—रत्नप्रभा पृथिवी नैरयिकाः खलु भदन्त! कीदृशं पृथिवीस्पर्शं प्रत्यनुभवन विहरन्ति? गौतम! अनिष्टं यावत्—अमनोऽमम्—एवं यावत्—अधः सप्तमपृथिवी नैरयिकाः, एवम् अप्स्पर्शम्, एवं यावत् वनस्पतिस्पर्शम् ॥ सू० २॥

तृतीयवालुकापृथिवी के नरकादि के विषय में, द्वितीय शार्कराप्रभा पृथिवी के नरकादि के विषय में और रत्नप्रभापृथिवी के नरकादि के विषय में वक्तव्यता अपने आप समझनी चाहिये। अन्तिम अभिलाप कैसा होगा? सो इसके लिये कहा गया है कि—शर्कराप्रभापृथिवी के नैरयिक ऐसे महर्द्धिकतर और महाद्युतिकतर नहीं होते है। जैसे कि रत्नप्रभापृथिवी के नैरयिक महर्द्धिकतर और महाद्युतिकतर होते हैं। इस प्रकार शर्कराप्रभा के अल्पर्द्धिक और अल्पद्युतिक नैरयिक हैं॥१॥

प्रथम नैरयिक द्वार समाप्त ॥

કાવાસાદિના વિષયમાં, બીજી શર્કરાપ્રભાના નરકાવાસાદિના વિષયમાં અને પહેલી રત્નપ્રભાના નરકાવાસાદિના વિષયમાં પણ કથન પોતાની જાતે જ સમજી લેવું. હવે છેલ્લો અભિલાપ પ્રકટ કરવામાં આવે છે—" શર્કરાપ્રભા પૃથ્વીના નારકો રત્નપ્રભા પૃથ્વીના નારકો જેટલી મહાઋદ્ધિવાળા અને મહાદ્યુતિવાળા હોતા નથી. તેઓ રત્નપ્રભાના નારકો કરતાં અલ્પઋદ્ધિવાળા અને અલ્પદ્યુતિવાળા હોય છે. ॥સૂ૦૧॥

॥ પ્રથમ નૈરયિકદ્વાર સમાપ્ત ॥

टीका—अथ स्पर्शद्वारमधिकृत्य माह-' रयणप्पभा० ' इत्यादि । ' रयणप्प-भापुढवि नेरइयाणं भंते ! केरिसयं पुढविफासं पच्चणुभवमाणा विहरंति ?' गौतमः पृच्छति-हे भदन्त ! रत्नप्रभापृथिवीनैरयिकाः खलु कीदृशं-किम्प्रकारकं पृथिवीस्पर्शं-पृथिव्याः सम्बन्धिस्पर्शं प्रत्यनुभवन्तः-अनुभवविषयी कुर्वन्तो विह-रन्ति ? तिष्ठन्ति ? भगवानाह-' गोयमा ! अणिट्ठं जाव अमणामं, एवं जाव अहे सत्तमपुढवि नेरइया, एवं आउफासं, एवं जाव वणस्सइफासं ' हे गौतम ! रत्न-प्रभा पृथिवी नैरयिकाः अनिष्टम्-अवाञ्छनीयं सकलजीवारुचिकरत्वात् यावत्-अकान्तम्-अकमनीयम् अनभिलषणीयत्वात् अप्रियम्-द्वेषोत्पादकत्वात्, अमनो,

स्पर्शद्वारवक्तव्यता

'रयणप्पभा पुढविनेरइया णं भंते ! ' इत्यादि।

टीकार्थ—सूत्रकार ने इस सूत्रद्वारा स्पर्शद्वारा का वर्णन किया है-इसमें गौतम ने प्रभु से ऐसा पूछा है-'रयणप्पभापुढवि नेरइया णं भंते ! केरिसयं पुढविफासं पच्चणुभवमाणा विहरंति' हे भदन्त! रत्नप्रभा-पृथिवी के जो नैरयिक हैं-वे पृथिवी संबंधी कैसे अर्थात् किस प्रकार के स्पर्श का अनुभव करते हैं ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-'गोयमा' हे गौतम ! 'अनिट्ठं जाव अमणामं, एवं अहेसत्तमपुढविनेइया एवं आउ-फासं, एवं जाव वणस्सइफासं' रत्नप्रभापृथिवी के नैरयिक अनिष्ट-सकल जीवों को अरुचिकारक होने से अवांछनीय, यावत् अकान्त-अनभिलषणीय होने से अकमनीय, द्वेषोत्पादक होने से अप्रिय, सतत

—સ્પર્શદ્વારવક્તવ્યતા—

" रयणप्पभा पुढवि नेरइयाणं भंते ! " ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ-સૂત્રકારે આ સૂત્રમાં સ્પર્શદ્વારનું પ્રતિપાદન કર્યું છે આ વિષયને અનુલક્ષીને ગૌતમ સ્વામી મહાવીર પ્રભુને એવો પ્રશ્ન પૂછે છે કે-" रयणप्पभा पुढवि नेरइयाणं भंते ! केरिसयं पुढविफास पच्चणुब्भवमाणा विह-रंति ?' હે ભગવન્ ! રત્નપ્રભા પૃથ્વીના નારકો પૃથ્વી સંબંધી કેવા પ્રકારના સ્પર્શનો અનુભવ કરે છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-" गोयमा ! " હે ગૌતમ ! " अनिट्ठं जाव अम-णामं, एवं जाव अहे सत्तमपुढवि नेरइया, एवं आउफासं, एवं जाव वणस्सइ-फासं " રત્નપ્રભા પૃથ્વીના નારકો અનિષ્ટ (સમસ્ત જીવોને અરુચિકર હોવાને કારણે અવાંછનીય), અકાન્ત (અણગમો પ્રેરે તેવા), અપ્રિય (દ્વેષોત્પાદક હોવાને કારણે અપ્રિય), અમનોજ્ઞ (સતત દુઃખજનક હોવાને કારણ અમનોજ્ઞ), અને અમનોમ (મનને પ્રતિકૂળ હોવાને કારણે અમનોમ) એવાં પૃથ્વી સંબંધી સ્પર્શનો અનુભવ કરે છે. વળી અહીં અનિષ્ટ આદિ પદોની સાથે "तर-तम"

मम्-सततदुःखजनकत्वात्, अमनोऽमम्-मनसः प्रतिकूलत्वात्, एतादृशं पृथिवी स्पर्शं प्रत्यनुभवन्तो विहरन्ति, एवं-पूर्वोक्तरीत्यैव यावत्-शर्कराप्रभापृथिवीनैरयिकाः, वालुकाप्रभापृथिवी नैरयिकाः, पङ्कप्रभापृथिवी नैरयिकाः, धूमप्रभापृथिवी-नैरयिकाः, तमःप्रभापृथिवी नैरयिकाः, अधःसप्तमपृथिवीनैरयिकाश्च अनिष्टम्, अकान्तम्, अप्रियम्, अमनोज्ञम्, अमनोऽमम् पृथिवीकायिकस्पर्शम् उत्तरोत्तरमे-कैकमधिकमनिष्टमनिष्टतरमनिष्टतमादिकं प्रत्यनुभवन्तो विहरन्ति, एवं पूर्वोक्तरीत्यैव रत्नप्रभादि सप्तपृथिवीनैरयिकाः अनिष्टम्, अकान्तम्, अप्रियम्, अमनोऽमम् अप्कायिकस्पर्शम् प्रत्यनुभवन्तो विहरन्ति, एवं-पूर्वोक्तरीत्यैव, यावत्-तेजस्का-यिकस्पर्शं, वायुकायिकस्पर्शम्, वनस्पतिकायिकस्पर्शं च, पूर्वोक्तानिष्टादिविशेषण-

---

दुःखजनक होने से अमनोज्ञ, तथा मन के प्रतिकूल होने से अमनोम ऐसे पृथिवी स्पर्श का अनुभव करते हैं। यहां से आगे अनिष्टादि प्रत्येक पदों के साथ-तर, तम प्रत्यय और लगा लेना चाहिये-तथा च-वे उत्तरोत्तर में अनिष्ट तर, अनिष्टतम आदिरूपसे पृथिवी संबंधी स्पर्श का अनुभव करते है, इसी पूर्वोक्तरीतिसे यावत् शर्कराप्रभा पृथिवी के नैरयिक, वालुकाप्रभापृथिवी के नैरयिक, पंकप्रभापृथिवी के नैरयिक, धूमप्रभा पृथिवी के नैरयिक, तमःप्रभापृथिवी के नैरयिक और अधःसप्तमी पृथिवी के नैरयिक भी अनिष्ट, अकान्त अप्रिय, अमनोज्ञ और अमनोम आदिरूप से पृथिवीकायिक संबंधी स्पर्शका अनुभव करते हैं। इसी प्रकार से रत्नप्रभा से लेकर अधःसप्तमीपृथिवी के नैरयिक अनिष्ट, अकान्त, अप्रिय, अमनोज्ञ और अमनोम आदिरूप से अप्कायिक संबंधी स्पर्श का अनुभव करते हैं। इसी प्रकार से वे तेजस्कायिक संबंधी, वायुकायिकसंबंधी और वनस्पतिकायिक संबंधी

પ્રત્યયો લગાડવા જોઇએ એટલે કે તેઓ પૃથ્વીસંબંધી અનિષ્ટતર, અનિષ્ટતમ આદિ સ્પર્શોનો પણ અનુભવ કરે છે. એજ પ્રમાણે શર્કરાપ્રભા પૃથ્વીના નારકો, વાલુકાપ્રભાના નારકો, પંકપ્રભાના નારકો, ધૂમપ્રભાના નારકો, તમઃપ્રભાના નારકો અને અધઃસપ્તમી પૃથ્વીના નારકો પણ અનિષ્ટ, અકાન્ત, અપ્રિય, અમનોજ્ઞ, અને અમનોમ આદિ રૂપે પૃથ્વીકાયિક સ્પર્શનો અનુભવ કરે છે. એજ પ્રમાણે રત્નપ્રભાથી લઈને અધઃસપ્તમી પર્યન્તની સાતે નરકોના નારકો અનિષ્ટ, અકાન્ત, અપ્રિય, અમનોજ્ઞ અને અમનોમ આદિ રૂપે અપ્કાયિક સંબંધી સ્પર્શનો, વાયુકાયિક સંબંધી સ્પર્શનો, તેજસ્કાયિક સંબંધી સ્પર્શનો અને વનસ્પતિકાયિક સંબંધી સ્પર્શનો પણ અનુભવ કરે

विशिष्टमेव प्रत्यनुभवन्तो रत्नप्रभादि सप्तपृथिवी नैरयिका विहरन्ति, अत्रेदं बोध्यम् यद्यपि बादरतैजसकायिकानां समयक्षेत्रमात्रविषये एव सद्भावात्, सूक्ष्मतेजसकायिकानां तु तत्र सद्भावेऽपि स्पर्शनेन्द्रियाविषयत्वादेव तत्स्पर्शोवक्तुमशक्यस्तथा चैवमत्रापि पृथिवीषु नैरयिकाणां तेजस्कायिकस्पर्शवर्जित पृथिवीकायिकादि स्पर्शस्यैव ग्रहणस्य युक्तत्वात्, यावत्पदेन तेजस्कायिकस्पर्शस्य ग्रहणं न युक्तं प्रतिभाति, तथापि यावत्पदसंग्राह्य तेजस्कायिकस्पर्शसजातेनात्र तेजस्कायिकस्यैव परमाधार्मिकनिष्पादिताग्निसदृशोष्णवस्तुनः स्पर्शस्यैव विवक्षितत्वेन नकोऽपि दोषः ॥सू० २॥

स्पर्शका अनिष्टादि विशेषण विशिष्टरूप से ही अनुभव करते हैं। यहां पर इतना विशेष समझना चाहिये कि–बादर तैजस्कायिक जीवों का सद्भाव केवल समय क्षेत्र में ही है अन्यत्र नहीं, सूक्ष्म तैजस्कायिक जीवों का सद्भाव सर्वत्र है। अतः नरकों में भी सूक्ष्मतैजस्कायिक जीवों का सद्भाव पाया जाता है। इस प्रकार नरकों में इनका सद्भाव होने पर भी स्पर्शनेन्द्रिय द्वारा इनके स्पर्शका ग्रहण नहीं हो सकता। क्योंकि सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीव किसी भी इन्द्रिय के द्वारा गृहीत नहीं हो सकते हैं ऐसा सिद्धान्त का कथन है। इसलिये नारक जीव इनके स्पर्शका अनिष्टादिरूप से अनुभव करते हैं ऐसा कथन वक्तुं अशक्य है। अतः सातों ही पृथिवियों में नैरयिक, तैजस्कायिक स्पर्शवर्जित पृथिवीकायिकादि के स्पर्श का ही अनिष्टादिरूपसे अनुभव करते हैं ऐसा युक्ति युक्त होनेसे यहां यावत् पद से जो तैजस्कायिक के स्पर्श का ग्रहण किया गया है, वह युक्त प्रतीत नहीं होता है फिरभी यावत्पदसे गृहीत तैजस्कायिक स्पर्श शब्द से यहां तैजस्कायिक

છે. અહીં આ વાત ધ્યાનમાં રાખવા જેવી છે કે બાદર તેજસ્કાયિક જીવોનો સદ્ભાવ માત્ર સમયક્ષેત્રમાં જ છે, બીજે નથી. સૂક્ષ્મ તેજસ્કાયિક જીવોનો સદ્ભાવ સર્વત્ર છે તેથી નરકોમાં પણ સૂક્ષ્મ તેજસ્કાયિક જીવોનો સદ્ભાવ હોય છે આ પ્રકારે નરકોમાં તેમનો સદ્ભાવ હોવા છતાં પણ સ્પર્શેન્દ્રિય દ્વારા તેમના સ્પર્શનું ગ્રહણ થઈ શકતું નથી, કારણ કે સૂક્ષ્મ એકેન્દ્રિય જીવો કોઈ પણ ઈન્દ્રિય દ્વારા ગૃહીત થઈ શકતા નથી એવું સિદ્ધાન્તનું કથન છે. તેથી નારક જીવો તેમના સ્પર્શનો અનિષ્ટાદિ રૂપે અનુભવ કરે છે, આ પ્રકારનું કથન અશક્ય બની જાય છે. તેથી એવું જ કથન યુક્તિયુક્ત લાગે છે કે સાતે પૃથ્વીના નારકો તેજસ્કાયિક સ્પર્શ સિવાયના પૃથ્વીકાયિકાદિના સ્પર્શનો જ અનિષ્ટાદિ રૂપે અનુભવ કરે છે. તેથી અહીં 'यावत्' પદ દ્વારા જે તેજસ્કાયિકના સ્પર્શનું ગ્રહણ કરવામાં આવ્યું છે તે યોગ્ય લાગતું નથી છતાં પણ અહીં "यावत्" પદ દ્વારા ગૃહીત તેજસ્કાયિક સ્પર્શદ્વારા તૈજસ્કાયિકના જેવી ઉષ્ણવસ્તુ કે જે અગ્નિ જેવી હોય છે અને જેનું પરમાધા-

रत्नप्रभादिप्रणिधि (अपेक्षाद्वार) वक्तव्यता

मूलम्–'इमा णं भंते! रयणप्पभा पुढवी दोच्चं सक्करप्पभं पुढविं पणिहाय सव्वमहंतिया बाहल्लेणं सव्वक्खुड्डिया सव्वंतेसु एवं जहा जीवाभिगमे बितिए नेरइए उद्देसए ॥सू० ३॥

छाया—इयं खलु भदन्त! रत्नप्रभापृथिवी द्वितीयां शर्कराप्रभां पृथिवीं प्रणिधाय सर्वमहती बाहल्येन, सर्वक्षुद्रिका सर्वान्तेषु, एवं यथा जीवाभिगमे द्वितीये नैरयिकोद्देशके ॥ सू० ३ ॥

टीका—अथ तृतीयं प्रणिधिद्वारमाह–'इमा णं भंते! इत्यादि। 'इमा णं भंते रयणप्पभा पुढवी दोच्चं सक्करप्पभं पुढविं पणिहाय सव्वमहंतिया बाहल्लेणं, सव्वक्खुड्डिया सव्वंतेसु?' गौतमः पृच्छति–हे भदन्त! इयं खलु रत्नप्रभापृथिवी द्वितीयां शर्कराप्रभां पृथिवीं प्रणिधाय-प्रतीत्य-आश्रित्य, शर्कराप्रभा पृथिव्यपेक्षया इत्यर्थः किं सर्वमहतिका-सर्वथा महती वर्तते? बाहल्येन-परिधिना स्थौल्येनेत्यर्थः,

---

की जैसी उष्ण वस्तु का जो अग्नितुल्य होती है और जिसे परमाधार्मिकदेवादि निष्पन्न करते हैं, स्पर्श विवक्षित है ॥ २ ॥

इति स्पर्शद्वार वक्तव्यता ॥

रत्नप्रभादिप्रणिधि–अपेक्षा–द्वारवक्तव्यता—

'इमा णं भंते! रयणप्पभापुढवी' इत्यादि।

टीकार्थ—इस सूत्र में तीसरे प्रणिधिद्वार का कथन है। इसमें गौतमने प्रभु से ऐसा पूछा है–'इमा णं भंते! रयणप्पभा पुढवी दोच्चं सक्करप्पभं पुढविं पणिहाय सव्वमहंतिया बाहल्लेणं, सव्वक्खुड्डिया सव्वंतेसु' हे भदन्त! यह रत्नप्रभा नामकी जो पहिली पृथिवी है। वह शर्कराप्रभा नामकी दूसरी पृथिवी की अपेक्षा क्या परिधि–स्थूलता–में

ભિન્ન હેવો દ્વારા નિર્માણ થાય છે, તેને ગ્રહણ કરવામાં આવે તો કોઈ પણ દોષનો અવકાશ રહેતો નથી. ॥સૂ૦૨॥

॥ સ્પર્શદ્વારની વક્તવ્યતા સમાપ્ત ॥

–રત્નપ્રભાદિ પ્રણિધિદ્વાર વક્તવ્યતા–

"इमाणं भंते! रयणप्पभा पुढवी" ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ–આ સૂત્ર દ્વારા સૂત્રકારે ત્રીજા પ્રણિધિદ્વારનું કથન કર્યું છે ગૌતમ સ્વામી મહાવીર પ્રભુને એવો પ્રશ્ન પૂછે છે કે–"इमाणं भंते! रयणप्पभा पुढवी दोच्चं सक्करप्पभं पुढविं पणिहाय सव्वमहंतिया बाहल्लेणं, सव्वक्खुड्डिया सव्वंतेसु" હે ભગવન્! રત્નપ્રભા નામની પહેલી પૃથ્વી શું શર્કરાપ્રભા નામની બીજી પૃથ્વી કરતાં પરિધિની (સ્થૂલતાની) અપેક્ષાએ મોટી છે, અને

अथ च रत्नप्रभा पृथिवी सर्वक्षुद्रिका-सर्वथा क्षुद्रा लघ्वी वर्तते सर्वान्तेषु पूर्वपश्चिमदक्षिणोत्तरदिग्भागेषु, रत्नप्रभायाः आयामविष्कम्भाभ्यां रज्जुप्रमाणत्वात्, शर्कराप्रभायाश्च ततो महत्तरत्वात्, 'एवं जहा जीवाभिगमे बितीये नेरइयउद्देसए' एवं-तथैव वर्तते रत्नप्रभापृथिव्याः बाहल्यस्य अशीतिसहस्राधिकलक्षयोजनप्रमाणत्वात्, शर्कराप्रभा पृथिव्या बाहल्यस्य च द्वात्रिंशत् सहस्राधिकलक्षयोजनप्रमाणत्वात्, यथा जीवाभिगमे द्वितीये नैरयिकोद्देशके उक्तं तथैवात्रापि वक्तव्यम्, तथा

મોટાઈ में सर्वथा बडी है? और पूर्व, पश्चिम, दक्षिण एवं उत्तर दिग्भागों में आयामविष्कंभ को लेकर छोटी है? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-'एवं जहा जीवाभिगमे बितीये नेरइयउद्देसए' हां गौतम! ऐसा ही है-रत्नप्रभापृथिवी द्वितीय शर्कराप्रभापृथिवी की अपेक्षा स्थूलता में अधिक है और आयाम एवं विष्कंभ में यह चारों दिशाओं में उसकी अपेक्षा छोटी है। क्योंकि रत्नप्रभा का आयामविष्कंभ एक रज्जुप्रमाण है और शर्कराप्रभा का विस्तार उससे अधिक है। इत्यादि सब कथन जैसा कि जीवाभिगम सूत्र के द्वितीय नैरयिक उद्देशक में किया गया है। वैसा ही यहां पर जानना चाहिये, रत्नप्रभापृथिवी की मोटाई एक लाख ८० हजार योजन की है। इसलिये यह सब से बड़ी है, और शर्कराप्रभा की मोटाई एक लाख ३२ हजार योजन की है, इसलिये उससे यह छोटी है-रत्नप्रभा लंबाई चौडाई में एक राजूप्रमाण

પૂર્વ, પશ્ચિમ, દક્ષિણ અને ઉત્તર દિગ્ભાગોમાં લંબાઇ અને પહોળાઈની અપેક્ષાએ નાની છે અહીં?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-"एवं जहा जीवाभिगमे बितीये नेरइय उद्देसए" હા, ગૌતમ! એવું જ છે. રત્નપ્રભા પૃથ્વીની સ્થૂલતા આસપાસ જે પૃથ્વીકાયિક, શર્કરાપ્રભા પૃથ્વી કરતાં અધિક છે અને તે ચારે દિશાઓમાં તેની લંબાઈ અને પહોળાઇની અપેક્ષાએ શર્કરાપ્રભા પૃથ્વી કરતાં નાની છે, કારણ કે રત્નપ્રભાનો આયામવિષ્કંભ (લંબાઇ પહોળાઈ) એક રજ્જૂ પ્રમાણ છે અને શર્કરાપ્રભાનો તેના કરતાં અધિક છે. જીવાભિગમ સૂત્રના બીજા નૈરયિક ઉદ્દેશકમાં આ વિષયને અનુલક્ષીને જે કથન કરવામાં આવ્યું છે, તે અહીં ગ્રહણ કરવાનું છે રત્નપ્રભાની સ્થૂલતા એક લાખ એંસી હજાર યોજનની છે. તેથી તે સ્થૂલતાની અપેક્ષાએ સાતે પૃથ્વીઓમાં મોટી છે શર્કરાપ્રભાની સ્થૂલતા એક લાખ બત્રીસ હજાર યોજનની છે. તેથી તે સ્થૂલતામાં રત્નપ્રભા કરતાં નાની છે. રત્નપ્રભાની લંબાઇ પહોળાઈ તેનાં કરતાં અધિક છે આ

चोक्तं जीवाभिगमे तृतीयप्रतिपत्तौ द्वितीयोद्देशके, हंता, गोयमा ! इमा णं रयणप्पभा पुढवी दोच्चं पुढविं पणिहाय जाव सव्वक्खुड्डिया सव्वंतेसु, एवं एएणं अभिलावेणं जाव छट्ठिया पुढवी अहे सत्तमं पुढविं पणिहाय जाव सव्वक्खुड्डिया सव्वंतेसु" त्ति हन्त, गौतम ! इयं खलु रत्नप्रभा पृथिवी द्वितीयां पृथिवीं प्रणिधाय यावत् सर्वक्षुद्रिका सर्वान्तेषु एवम् एनेन अभिलापेन यावत् षष्ठी पृथिवी अधः सप्तमीं पृथिवीं प्रणिधाय यावत् सर्वक्षुद्रिका सर्वान्तेषु, इति ॥ सू० ३ ॥

है और शर्कराप्रभा उससे अधिक है। जीवाभिगम सूत्र के तृतीय प्रतिपत्ति का द्वितीय उद्देशक में ऐसा पाठ इस विषय में कहा गया है-'हंता, गोयमा ! इमा णं रयणप्पभापुढवी दोच्चं पुढविं पणिहाय जाव सव्वक्खुड्डिया सव्वंतेसु, एवं एएसु अभिलावेणं जाव छट्ठिया पुढवी पणिहाय जाव सव्वक्खुड्डिया सव्वंतेसु त्ति ' हां गौतम ! यह रत्नप्रभा पृथिवी द्वितीय पृथिवी की अपेक्षा यावत् सर्वान्तों में-पूर्व पश्चिम, दक्षिण एवं उत्तरदिग्भागों में-सब से छोटी है। इसी प्रकार से इस अभिलाप से यावत् छठी पृथिवी अधः सप्तमीपृथिवी की अपेक्षा यावत् सर्वान्तों में-पूर्व पश्चिम दक्षिण एवं उत्तरदिग्भागों में-सब से छोटी है॥सू० ३॥

इति रत्नप्रभादि प्रणिधिद्वारवक्तव्यता ॥

વિષયને અનુલક્ષીને જીવાભિગમ સૂત્રના બીજા ઉદ્દેશામાં આ પ્રકારનો સૂત્રપાઠ આપ્યો છે. "हंता, गोयमा ! इमाणं रयणप्पभा पुढवी दोच्चं पुढविं पणिहाय जाव सव्वक्खुड्डिया सव्वंतेसु, एवं एएसु अभिलावेणं जाव छट्ठिया पुढवी अहे सत्तमं पुढविं पणिहाय जाव सव्वक्खुड्डिया सव्वंतेसु त्ति" હા, ગૌતમ ! આ રત્નપ્રભા પૃથ્વી બીજી રત્નપ્રભા પૃથ્વી કરતાં સ્થૂલતામાં મોટી છે અને લંબાઇ પહોળાઈની અપેક્ષાએ સર્વાન્તોમાં (પૂર્વ, પશ્ચિમ, ઉત્તર અને દક્ષિણ દિગ્ભાગોમાં) નાની છે. રત્નપ્રભા પૃથ્વી સ્થૂલતાની અપેક્ષાએ સાતે પૃથ્વીઓમાં સૌથી મોટી છે, પરન્તુ લંબાઇ પહોળાઈની અપેક્ષાએ સૌથી નાની છે. આ પ્રકારનું કથન સાતમી પૃથ્વી પર્યન્તની પૃથ્વીઓના વિષયમાં પણ સમજી લેવું જોઇએ. અભિલાપ આ પ્રકારનો બનશે-છઠ્ઠી પૃથ્વીની સ્થૂલતા અધઃસપ્તમી પૃથ્વી કરતાં વધારે છે, પરન્તુ આયામવિષ્કંભની અપેક્ષાએ સાતમી પૃથ્વી છઠ્ઠી પૃથ્વી કરતાં મોટી છે અને સાતે પૃથ્વીઓમાં મોટી છે. ॥સૂ૦૩॥

॥ રત્નપ્રભાદિ પ્રણિધિદ્વાર વક્તવ્યતા સમાપ્ત ॥

निरयान्तद्वारवक्तव्यता।

मूलम्–'इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए णिरयपरिसामंतेसु जे पुढविक्काइया, एवं जहा नेरइय उद्देसए जाव अहे सत्तमाए ॥सू० ४॥

छाया—अस्याः खलु भदन्त ! रत्नप्रभायाः पृथिव्याः निरयपरिसामन्तेषु ये पृथिवीकायिकाः, एवं यथा नैरयिकोद्देशके यावत्–अधः सप्तम्याम् ॥ सू० ४ ॥

टीका—अथ चतुर्थं निरयान्तद्वारमधिकृत्याह–'इमीसे णं भंते' इत्यादि। 'इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए णिरयपरिसामंतेसु जे पुढविक्काइया ?' गौतमः पृच्छति–हे भदन्त ! अस्याः खलु रत्नप्रभायाः पृथिव्याः निरयपरिसामन्तेषु–निरयावासानां परिपार्श्वतो ये पृथिवीकायिकाः, अप्कायिकाः, तेजस्कायिकाः, वायुकायिकाः, वनस्पतिकायिका· जीवाः सन्ति, ते किं महाकर्मवन्तः, महाक्रियावन्तः, महास्रववन्तः महावेदनावन्तः सन्ति ? भगवानाह–'एवं जहा

निरयान्तद्वारवक्तव्यता—

'इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए' इत्यादि।

टीकार्थ—सूत्रकारने इस सूत्र द्वारा चौथे निरयान्त द्वार की पल्पणा की है–इसमें गौतम ने प्रभु से ऐसा पूछा है–'इमी से णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए णिरयपरिसामंतेसु जे पुढविक्काइया०' हे भदन्त ! इस रत्नप्रभापृथिवी में जो नैरयिकावास हैं उन नैरयिकावासों के आसपास जो पृथिवीकायिक, अप्कायिक, तेजस्कायिक, वायुकायिक, एवं वनस्पतिकायिक जीव हैं, वे क्या महाकर्मवाले, महाक्रियावाले, महास्रववाले और महावेदनावाले हैं ? इसके उत्तर में प्रभु ने कहा 'एवं जहा नेरइय

—નિરયાન્તદ્વારવક્તવ્યતા—

"इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए" ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ–સૂત્રકારે આ સૂત્ર દ્વારા ચોથા નિરયાન્ત દ્વારની પ્રરૂપણા કરી છે. આ વિષયને અનુલક્ષીને ગૌતમ સ્વામી મહાવીર પ્રભુને એવો પ્રશ્ન પૂછે છે કે–"इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए णिरयपरिसामंतेसु जे पुढविक्काइया०" હે ભગવન્ ! આ રત્નપ્રભા પૃથ્વીમા જે નરકાવાસો છે, તે નરકાવાસોની અપ્કાયિક, તેજસ્કાયિક, વાયુકાયિક અને વનસ્પતિકાયિક જીવો છે તેઓ શું મહાકર્મવાળા, મહાક્રિયાવાળા, મહાઆસ્રવવાળા અને મહાવેદનાવાળા છે ? આ પ્રશ્નનો ઉત્તર આપતા મહાવીર પ્રભુ કહે છે કે–"एवं जहा नेरइय उद्देसए जाव अहे सत्तमाए" હે ગૌતમ ! આ વિષયને અનુલક્ષીને જીવાભિગમ

नेरइयउद्देसए जाव अहे सत्तमाए' हे गौतम ! एवं-पूर्वोक्तरीत्या, यथा जीवाभिगमसम्बन्धिनि तृतीयप्रतिपत्तिगते द्वितीये नैरयिकोद्देशके प्रतिपादितं तथैवात्रापि प्रतिपत्तव्यम्, तथाचोक्तं जीवाभिगमे—

"आउक्काइया, तेउक्काइया, वाउक्काइया, वणस्सइक्काइया तेणं जीवा-महाकम्मतरा चेव जाव महावेयणतरा चेव ? हंता, गोयमा !' इत्यादि, यावत्-शर्कराप्रभायाः पृथिव्याः, वालुकाप्रभायाः, पङ्कप्रभायाः, धूमप्रभायाः, तमःप्रभायाः, अधः सप्तम्याः निरयसामन्तेषु निरयावासानां परिपार्श्वतः अप्कायिकादयः, महाकर्मतराः, महाक्रियतराः, महास्रवतराः, महावेदनतराश्चैव भवन्ति ॥सू० ४॥

लोकमध्यद्वारवक्तव्यता

मूलम्—"कहिं णं भंते! लोगस्स आयाममज्झे पण्णत्ते ? गोयमा ! इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए उवासंतरस्स असंखेज्जतिभागं ओगाहेत्ता एत्थ णं लोगस्स आयाममज्झे पण्णत्ते। कहिणं भंते! अहे लोगस्स आयाममज्झे पण्णत्ते ? गोयमा !

उद्देसए जाव अहेसत्तमाए' हे गौतम ! जैसा जीवाभिगमसंबंधी तृतीय-प्रतिपत्तिगत द्वितीय नैरयिक उद्देशक में प्रतिपादित हुआ है, उसी प्रकार से यहां पर भी समझना चाहिये। जीवाभिगम में ऐसा ही कहा गया है—'आउक्काइया, तेउक्काइया, वाउक्काइया, वणस्सइकाइया तेणं जीवा महावेयणतराचेव ? हंता, गोयमा ! इत्यादि यावत् शर्कराभा के, वालुकाप्रभा के पंकप्रभा के धूमप्रभा के, तमःप्रभा के अधःसप्तमी के नैरयिकावासों के आसपास जो अप्कायिकादिक जीव हैं वे महाकर्म-वाले महाक्रियावाले, महास्रववाले और महावेदनावाले हैं॥ ४ ॥

इति निरयान्तद्वारवक्तव्यता ॥

સૂત્રના બીજા નૈરયિક ઉદ્દેશકમાં જે કથન કરવામાં આવ્યું છે, તે કથન અહીં પણ ગ્રહણ કરવું જોઈએ જીવાભિગમમાં એવું કહેવામાં આવ્યું છે કે—"आउक्काइया, तेउक्काइया, वाउक्काइया, वणस्सइक्काइया तेणं जीवा महावेयणतराचेव ? हंता, गोयमा !" ઇત્યાદિ હે ગૌતમ ! રત્નપ્રભા, શર્કરાપ્રભા, વાલુકાપ્રભા, પંકપ્રભા, ધૂમપ્રભા, તમઃપ્રભા અને અધઃસપ્તમી પૃથ્વીના નરકાવાસોની આસપાસ જે અપ્કાયિક આદિ જીવો છે, તેઓ મહાકર્મવાળા, મહાક્રિયાવાળા, મહાઆસ્રવવાળા અને મહાવેદનાવાળા છે. ॥સૂ૦૪॥

॥ નિરયાન્તદ્વાર વક્તવ્યતા સંપૂર્ણ ॥

चउत्थीए पंकप्पभाए पुढवीए उवासंतरस्स सातिरेगं अद्धं ओगाहेत्ता, एत्थ णं अहेलोगस्स आयाममज्झे पण्णत्ते। कहि णं भंते! उड्ढलोगस्स आयाममज्झे पण्णत्ते? गोयमा! उप्पिं सणंकुमारमाहिंदाणं कप्पाणं हेट्ठिं बंभलोए कप्पे रिट्ठ विमाणे पत्थडे एत्थ णं उड्ढलोगस्स आयाममज्झे पण्णत्ते। कहि णं भंते! तिरियलोगस्स आयाममज्झे पण्णत्ते? गोयमा! जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स बहुमज्झदेसभाए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उवरिमहेट्ठिल्लेसु खुड्डागपयरेसु, एत्थ णं तिरियलोगस्स मज्झे अट्ठपएसिए रुयए पण्णत्ते, जओणं इमाओ दसदिसाओ पवहंति, तं जहा-पुरत्थिमा पुरत्थिमदाहिणा एवं जहा दसमसए नामधेज्जत्ति ॥सू० ५॥

छाया—कुत्र खलु भदन्त! लोकस्य आयाममध्यं प्रज्ञप्तम्? गौतम! अस्याः खलु रत्नप्रभायाः पृथिव्या आकाशान्तरस्य असंख्येयतमभागम् अवगाह्य, अत्र खलु लोकस्य आयाममध्यं प्रज्ञप्तम्। कुत्र खलु भदन्त! अधोलोकस्य आयाममध्यं प्रज्ञप्तम्? गौतम! चतुर्थ्याः पङ्कप्रभायाः पृथिव्या आकाशान्तरस्य सातिरेकम् अर्धम् अवगाह्य, अत्र खलु अधोलोकस्य आयाममध्यं प्रज्ञप्तम्। कुत्र खलु भदन्त! उर्ध्वलोकस्य आयाममध्यं प्रज्ञप्तम्! गौतम! उपरि सनत्कुमारमाहेन्द्रयोः कल्पयोः, अधोब्रह्मलोके कल्पे रिष्टविमानं प्रतरम्, अत्र खलु उर्ध्वलोकस्य आयाममध्यं प्रज्ञप्तम्। कुत्र खलु भदन्त! तिर्यग्लोकस्य आयाममध्यं प्रज्ञप्तम्? गौतम! जम्बूद्वीपे द्वीपे मन्दरस्य पर्वतस्य बहुमध्यदेशभागे अस्याः रत्नप्रभायाः पृथिव्याः उपरिमाधस्तनयोः क्षुद्रकप्रतरयोः, अत्र खलु तिर्यग्लोकस्य मध्ये अष्ट प्रदेशिको रुचकः प्रज्ञप्तः, यतः खलु इमाः दशदिशः प्रवहन्ति तद्यथा-पौरस्त्या, पौरस्त्यदक्षिणा एवं यथा दशमशतके नामधेयमिति॥ सू० ५॥

टीका—अथ पञ्चमं लोकद्वारमाह-'कहि णं भंते' इत्यादि। 'कहि णं भंते! लोगस्स आयाममज्झे पण्णत्ते! गौतमः पृच्छति-हे भदन्त! कुत्र खलु अस्य लोकस्य

आयाममध्यम्-आयामस्य दैर्घ्यस्य मध्यं-मध्यभागः, प्रज्ञप्तम्? भगवानाह-'गोयमा ! इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए उवासंतरस्स असंखेज्जइभागं ओगाहेत्ता, एत्थ णं लोगस्स आयाममज्झे पण्णत्ते' हे गौतम ! अस्याः खलु रत्नप्रभायाः पृथिव्याः आकाशान्तरस्य-आकाशखण्डस्य, असंख्येयतमं भागम् अवगाह्य-उल्लङ्घ्य-अत्र खलु रत्नप्रभापृथिव्या आकाशखण्डस्य असंख्येयतमभागोल्लंघनानन्तरे प्रदेशे, लोकस्य अस्य आयाममध्यं-दैर्घ्यमध्यभागः, प्रज्ञप्तम्। गौतमः पृच्छति-

लोकमध्यद्वारवक्तव्यता—

'कहि णं भंते ! लोगस्स आयाममज्झे पण्णत्ते' इत्यादि।

टीकार्थ—इस सूत्र द्वारा सूत्रकार ने लोकद्वार की प्ररूपणा की है-इसमें गौतम ने प्रभु से ऐसा पूछा है-'कहि णं भंते ! लोगस्स आयाममज्झे पण्णत्ते' हे भदन्त ! लोक की लम्बाई का मध्यभाग कहां पर कहा गया है? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-'गोयमा ! इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए उवासंतरस्स असंखेज्जइभागं ओगाहेत्ता एत्थ णं लोगस्स आयाममज्झे पण्णत्ते' हे गौतम ! इस रत्नप्रभापृथिवी का जो आकाशान्तर-आकाशखण्ड है उस आकाशखंड का जो असंख्यातवां भाग है-उस असंख्यातवें भागको उल्लंघन करके जो स्थान आया है-वही लोक की लम्बाई का मध्यभाग है। अर्थात्-रत्नप्रभापृथिवी के असंख्यातवें भाग को उल्लंघन करके अनन्तर प्रदेश में लोक की लम्बाई

-લોકમધ્યદ્વારવક્તવ્યતા-

"कहिणं भंते ! लोगस्स आयाममज्झे पण्णत्ते" ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ—આ સૂત્રમાં સૂત્રકારે લોકદ્વારની પ્રરૂપણા કરી છે આ વિષયને અનુલક્ષીને ગૌતમ સ્વામી મહાવીર પ્રભુને એવો પ્રશ્ન પૂછે છે કે—"कहिणं भंते ! लोगस्स आयाममज्झे पण्णत्ते?" હે ભગવન્! લોકની લંબાઈનો મધ્યભાગ કઈ જગ્યાએ કહ્યો છે?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર—"गोयमा ! इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए उवासंतरस्स असंखेज्जइभागं ओगाहेत्ता एत्थ णं लोगस्स आयाममज्झे पण्णत्ते" હે ગૌતમ! આ રત્નપ્રભા પૃથ્વીનું જે આકાશાન્તર (આકાશખંડ) છે તે આકાશાન્તરના અસંખ્યાતમાં ભાગનું ઓળંગન કરતા જે સ્થાન આવે છે, તે સ્થાન જ લોકની લંબાઈનો મધ્યભાગ છે. એટલે કે રત્નપ્રભા પૃથ્વીના આકાશખંડના અસંખ્યાતમાં ભાગનું ઉલ્લંઘન કર્યા બાદ જે સ્થાન આવે છે, તે સ્થાન જ લોકની લંબાઈનો મધ્યભાગ છે.

'कहि णं भंते ! अहे लोगस्स आयाममज्झे पण्णत्ते? हे भदन्त ! कुत्र खलु स्थाने अधोलोकस्य आयाममध्यम्-आयामस्य दैर्घ्यस्य मध्यं-मध्यभागः, प्रज्ञप्तम् ? भगवानाह-'गोयमा ! चउत्थीए पंकप्पभाए पुढवीए उवासंतरस्स सातिरेगं अद्धं ओगाहित्ता, एत्थ णं अहे लोगस्स आयाममज्झे पण्णत्ते' हे गौतम! चतुर्थ्याः पङ्कप्रभायाः पृथिव्याः आकाशान्तरस्य-आकाशखण्डस्य, सातिरेकं-किञ्चिदधिकम्, अर्द्धम्-अर्धभागम्, अवगाह्य-प्रविश्य उल्लङ्घनानन्तरमित्यर्थः, अत्र खलु उक्तप्रदेशे, अधोलोकस्य आयाममध्यम्-दैर्घ्यमध्यभागः, प्रज्ञप्तम् । तथा च मेरुमध्यस्य रुचकप्रदेशस्याधो नवयोजनशतानि अतिक्रम्याधोलोको भवति लोकान्तं यावत्, स च सातिरेकाः सप्तरज्जवस्तन्मध्यभागश्चतुर्थ्याः पञ्चम्याश्च पृथिव्याः यदवकाशान्तरं तस्य सातिरेकमर्द्धमतिक्रम्य भवतीतिभावः । गौतमः पृच्छति-

---

का मध्यभाग कहा गया है। अब गौतमस्वामी प्रभु से पूछते हैं-'कहि णं भंते ! अहेलोगस्स आयाममज्झे पण्णत्ते' हे भदन्त ! अधोलोक की लम्बाई का मध्यभाग कहां पर कहा गया है ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-'गोयमा' हे गौतम ! 'चउत्थीए पंकप्पभाए पुढवीए, उवासंतरस्स सातिरेकं अद्धं ओगाहित्ता एत्थ णं अहे लोगस्त आयाममज्झे पण्णत्ते' पंकप्रभानामकी जो चौथी पृथिवी है-उस पृथिवी के आकाशखण्ड को कुछ अधिक आधा उल्लंघन करके अनन्तर प्रदेश आता है-ठीक यही प्रदेश अधोलोककी लम्बाई का मध्यभाग कहा गया है। तथा च मेरुके मध्यमें जो रुचक प्रदेश है उस रुचक प्रदेश के नीचे नौ सौ योजन आगे जाकर अधोलोक है यह सर्वत्र कुछ अधिक सात राजू है। इसका मध्यभाग चौथीपृथिवी और पांचवीं पृथिवी के मध्य

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-" कहिणं भंते ! अहेलोगस्स आयाममज्झे पण्णत्ते " હે ભગવન્ ! અધોલેકની લંબાઈનો મધ્યભાગ કઈ જગ્યાએ કહ્યો છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-" गोयमा ! " હે ગૌતમ ! " चउत्थीए पंकप्पभाए पुढवीए, उवासंतरस्स सातिरेकं अद्धं ओगाहित्ता एत्थणं अहे लोगस्स आयाममज्झे पण्णत्ते " પંકપ્રભા નામની ચેાથી પૃથ્વીના આકાશખંડના અર્ધ ભાગ કરતાં સહેજ વધુ ભાગને ઓળંગવાથી જે પ્રદેશ આવે છે, તે પ્રદેશને જ અધેાલેાકની લંબાઈનેા મધ્યભાગ કહ્યો છે. એટલે કે મેરુની મધ્યમાં જે રુચકપ્રદેશ છે તે રુચક પ્રદેશની નીચે ૯૦૦ યેાજનનું અંતર ઓળંગવાથી અધેાલેાક આવે છે. તેનેા વિસ્તાર સાત રાજૂ પ્રમાણથી અધિક છે. તેનેા મધ્યભાગ કયાં છે ? ચેાથી અને પાંચમી પૃથ્વીની મધ્યનું જે અવકાશાન્તર

'कहि णं भंते ! उड्ढलोगस्स आयामझे पण्णत्ते ?' हे भदन्त ! कुत्र खलु स्थाने ऊर्ध्वलोकस्य आयाममध्यम्-दैर्घ्यमध्यभागः प्रज्ञप्तम् ? भगवानाह-'गोयमा ! उप्पिं सणंकुमारमाहिंदाणं कप्पाणं हेट्ठिं बंभलोए कप्पे रिट्ठविमाणे पत्थडे, एत्थ णं उड्ढलोगस्स आयामझे पण्णत्ते' हे गौतम ! उपरि सनत्कुमारमाहेन्द्रयोः कल्पयोः ऊर्ध्वमित्यर्थः, अधो ब्रह्मलोके कल्पे,ब्रह्मलोककल्पस्य अधस्तादित्यर्थः रिष्टविमाननामप्रतरमस्ति, अत्र खलु-रिष्टविमानप्रतरे, ऊर्ध्वलोकस्य, आयाम-मध्यं-दैर्घ्यमध्यभागः प्रज्ञप्तम्, तथा च मेरुमध्यस्थरुचकप्रदेशस्योपरि नवयो-जनशतानि अतिक्रम्य ऊर्ध्वलोको व्यपदिश्यते, लोकान्तमेव यावत् स च सप्त-रज्जवः किञ्चिन्न्यूनास्तन्मध्यभागः सनत्कुमारमाहेन्द्रकल्पयोरूर्ध्वं ब्रह्मलोककल्प-स्य अधस्तात् रिष्टविमानप्रतरसमीपे भवतीतिभावः, गौतमः पृच्छति-'कहि णं

में जो अवकाशान्तर है उस अवकाशान्तर का कुछ अधिक आधाभाग उल्लंघन करके आता है।

अब गौतमस्वामी प्रभु से ऐसा कहते हैं-'कहि णं भंते ! उड्ढलो-गस्स आयामझे पण्णत्ते' हे भदन्त ! ऊर्ध्वलोक की लम्बाई का मध्यभाग कहां कहा गया है ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-'गोयमा ! उप्पिं सणंकुमारमाहिंदाणं कप्पाणं हेट्ठिं बंभलोए कप्पे रिट्ठविमाणे पत्थडे, एत्थणं उड्ढलोगस्स आयामझे पण्णत्ते' हे गौतम ! सनत्कुमार और माहेन्द्र नामके जो कल्प हैं सो इन कल्पों के ऊपर और ब्रह्मलोककल्प के नीचे रिष्टविमान नामका प्रतर है। इसमें ही ऊर्ध्वलोक की लम्बाई का मध्यभाग कहा गया है। तथा च-मेरुमध्यस्थ रुचकप्रदेश के ऊपर नौ सौ योजन की ऊचाई के बाद ऊर्ध्वलोक गिना गया है। यह भी कुछ कम सात राजु है। इसका मध्य-

---

છે, તે અવકાશાન્તરના અર્ધા કરતા સહેજ વધારે ભાગને ઓળંગવાથી અધોલોકનો મધ્યભાગ આવે છે.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-"कहि णं भंते ! उड्ढलोगस्स आयामझे पण्णत्ते" હે ભગવન્ ! ઉર્ધ્વલોકની લંબાઇનો મધ્યભાગ કયાં કહ્યો છે ? તેનો ઉત્તર આપતા મહાવીર પ્રભુ કહે છે કે-"गोयमा ! उप्पिं सणंकुमारमाहिंदाणं कप्पाणं हेट्ठिं बंभलोए कप्पे रिट्ठविमाणे पत्थडे, एत्थ णं उड्ढलोगस्स आयामझे पण्णत्ते" હે ગૌતમ ! સનત્કુમાર અને માહેન્દ્ર નામનાં કલ્પોની ઉપર અને બ્રહ્મલોક કલ્પની નીચે રિષ્ટવિમાન નામનું પ્રતર છે. તેમાં જ ઉર્ધ્વલોકની લંબાઇનો મધ્યભાગ છે. આ કથનનો ભાવાર્થ આ પ્રમાણે છે-મેરુની મધ્યના રુચક પ્રદેશથી ૯૦૦ યોજન ઊંચે ઉર્ધ્વલોક આવેલો છે. તેનો વિસ્તાર સાત રાજૂ

भंते ! तिरियलोगस्स आयाममज्झे पण्णत्ते ?' हे भदन्त ! कुत्र खलु स्थाने तिर्यग्लोकस्य आयाममध्यं-दैर्घ्यमध्यभागः प्रज्ञप्तम् ? भगवानाह-'गोयमा ! जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स बहुमज्जदेसभाए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उवरिमहेट्ठिल्लेसु खुड्डागपयरेसु, एत्थ णं तिरियलोगस्स मज्झे अट्ठ पएसिए रुयए पण्णत्ते' हे गौतम ! जम्बूद्वीपे द्वीपे, मन्दरस्य पर्वतस्य बहुमध्यदेशभागे मेरुपर्वतसममध्यभागे इत्यर्थः, अस्याः रत्नप्रभायाः पृथिव्याः उपरिमाधस्तात्-उपरितनाधस्तनयोः, क्षुद्रकप्रतरयोः, सर्वापेक्षया लघुप्रदेशप्रतरयोरित्यर्थः, अत्र खलु-रत्नप्रभा पृथिव्याः उपर्यधः क्षुद्रकप्रतरद्वयसमीपे, तिर्यग्लोकस्य मध्यं-मध्यभागरूपः अष्टप्रदेशिको रुचकः प्रज्ञप्तः, स एवाष्टप्रदेशिको रुचकस्तिर्यग्लोकायाममध्यं भवति, तथा लोकस्य वज्रमध्यसंस्थानत्वाद् रत्नप्रभायाः रत्नकाण्डे सर्वक्षुद्रकंप्रतरद्वयमस्ति, ययोश्चोपरितनः प्रतरो-यत आरभ्य लोकस्योपरिमुखावृद्धिः, अथ च अधस्तनः प्रतरो-

---

भाग सनत्कुमार और माहेन्द्रकल्प के ऊपर और ब्रह्मलोककल्प के नीचे रिष्टविमान प्रतर के समीप में है। अब गौतम प्रभु से ऐसा पूछते हैं-'कहि णं भंते ! तिरियलोयस्स आयाममज्झे पण्णत्ते' हे भदन्त ! तिर्यग्लोक की लम्बाई का मध्यभाग कहां पर कहा गया है ? उत्तर में प्रभु कहते हैं-'गोयमा ! हे गौतम ! 'जंबूद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स बहुमज्झदेसभाए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उवरिमहेट्ठिल्लेसु खुड्डागपयरेसु, एत्थणं तिरियलोगस्स मज्झे अट्ठपएसिए रुयए पण्णत्ते' जंबूद्वीप नामके द्वीप में मंदरपर्वत के सममध्यभाग में इस रत्नप्रभा-पृथिवी के ऊपर नीचे के दो क्षुद्रक प्रतरों के समीप में तिर्यग्लोक का मध्यभाग रूप अष्टप्रदेशिक रुचक कहा गया है। यह अष्टप्रदेशिक रुचक ही तिर्यग्लोग की लम्बाई का मध्यभाग है। लोक का वज्र के

- પ્રમાણુ કરતાં થોડા ઓછા છે. તેનો મધ્યભાગ સનત્કુમાર અને માહેન્દ્ર કલ્પની ઉપર અને બ્રહ્મલોક કલ્પની નીચે રિષ્ટવિમાન પ્રતરની સમીપમાં છે.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-" कहिणं भंते ! तिरियलोयस्स आयाममज्झे पण्णत्ते ?" હે ભગવન્ ! તિર્યગ્લોકની લંબાઈનો ભાગ કયાં કહ્યો છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-" गोयमा ! હે ગૌતમ ! " जबुद्दीवे दीवे मन्दरस्स पव्वयस्स बहुमज्झदेसभाए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उवरिमहेट्ठिल्लेसु खुड्डागपयरेसु, एत्थ णं तिरियलोगस्स मज्झे अट्ठपएसिए रुयए पण्णत्ते " જંબૂદ્વીપ નામના દ્વીપમાં મંદર પર્વતના સમમધ્યભાગમાં આ રત્નપ્રભા પૃથ્વીની ઉપર નીચેના બે ક્ષુદ્રક પ્રતરોની સમીપમાં તિર્યગ્લોકના મધ્યભાગ રૂપ અષ્ટપ્રદેશિક રુચક આવેલ છે. આ અષ્ટપ્રદેશિક રુચક જ તિર્યગ્લોકની લંબાઈનો મધ્યભાગ છે. લોકનું સંસ્થાન વજ્રના મધ્યભાગ જેવું છે-રત્નપ્રભાના રત્નકાંડમાં

यत आरभ्य लोकस्याधोमुखावृद्धिश्च भवतः, तयोरुपरितनाधस्तनयोः क्षुद्रकप्रतरयोः-सर्वलघुप्रदेशप्रतरयोः-समीपे अष्टप्रदेशिकरुचकस्तिर्यग्लोकमध्यभागरूपः प्रज्ञप्त इतिफलितम्। कीदृशोऽसावष्टप्रदेशिको रुचकः ? इत्याह-'जओ णं इमाओ दसदिसाओ पवहंति, तं जहा-पुरत्थिमा, पुरत्थिमदाहिणा, एवं जहा दसमसए नामधेज्ज त्ति' यतः खलु यस्मात् किल अष्टप्रदेशिकात् रुचकात् इमाः प्रदर्श्यमानाः दशदिशः प्रवहन्ति-निस्सरन्ति, तद्यथा-पौरस्त्या-पूर्वा दिक् पौरस्त्यदक्षिणा-आग्नेयी विदिक्, एवं-रीत्या, यथा दशमशतके प्रथमोद्देशके नामधेयमस्ति तथैवात्रापि तन्नामधेयं विज्ञेयम्, तथा च-दक्षिणा दिक्, दक्षिणपश्चिमा नैर्ऋती विदिक्, पश्चिमा दिक्, पश्चिमोत्तरा-वायव्या विदिक्, उत्तरादिक्, उत्तरपौरस्त्या ऐशानी विदिक्, ऊर्ध्वम्, अधश्च, इत्येवं तासां दशानां दिशां नामधेयानि अवसेयानीति भावः ॥सू० ५॥

मध्य जैसा संस्थान है-रत्नप्रभा के रत्नकाण्ड में सर्वक्षुद्रक दो प्रतर हैं। इनमें जो ऊपर का प्रतर है सो यहां से लेकर लोक ऊपर मुखवृद्धि होती है। और नीचे का जो प्रतर है सो यहां से लेकर लोक की अधोमुखवृद्धि होती है। इन उपरितन अधस्तन दोनों क्षुद्रकप्रतरों के पास अष्टप्रदेशिक रुचक है। सो वह रुचक तिर्यग्लोक का मध्यभाग कहा गया है। यह रुचक कैसा है? सो इसके लिये कहा गया है कि इस अष्टप्रदेशिक रुचक से 'इमाओ दस दिसाओ पवहंति-तंजहा-पुरत्थिमा, पुरत्थिमदाहिणा-एवं जहा दसमसए नामधेज्जंत्ति' ये दश दिशाएँ निकली हैं-उनके नाम इस प्रकार से हैं-पूर्वदिशा, पूर्वदक्षिणदिशाका कोना-आग्नेयी विदिशा, दक्षिणदिशा, दक्षिणपश्चिमदिशा का कोना-

---

સર્વક્ષુદ્રક બે પ્રતર છે. આ બન્ને પ્રતરોમાંનું જે ઉપરનું પ્રતર છે ત્યાંથી લઈને લોકની ઉપર મુખાવૃદ્ધિ થાય છે, અને નીચેનું જે પ્રતર છે ત્યાંથી લઈને લોકના અધોમુખા વૃદ્ધિ થાય છે. તે ઉપરિતન-અધસ્તન બન્ને પ્રતરોની પાસે અષ્ટપ્રદેશિક રુચક છે. તે રુચક જ તિર્યગ્લોકના મધ્યભાગ રૂપ છે. તે રુચક કેવું છે ? આ પ્રશ્નનો જવાબ એવો છે કે-આ અષ્ટપ્રદેશિક રુચકમાંથી "इमाओ दस दिसाओ पवहति, तंजहा-पुरत्थिमा, पुरत्थिमादाहिणा, एवं जहा दसमसए नामधेज्जंति" આ દસ દિશાઓ નીકળી છે-પૂર્વદિશા, પૂર્વ અને દક્ષિણ દિશા વચ્ચેની આગ્નેયી વિદિશા (અગ્નિકોણ), દક્ષિણદિશા, દક્ષિણ અને પૂર્વ વચ્ચેની નૈઋત્ય વિદિશા, પશ્ચિમદિશા, પશ્ચિમ અને ઉત્તર વચ્ચેની વાયવ્ય વિદિશા, ઉત્તરદિશા, ઉત્તર અને પૂર્વની વચ્ચેની ઈશાન

दिग्विदिक्प्रवहद्वारवक्तव्यता।

मूलम्–"इमा णं भंते! दिसा किमाइया, किं पवहा, कइपदेसाइया, कइपदेसुत्तरा, कइपदेसिया, किं पज्जवसिया, किं संठिया पण्णत्ता? गोयमा! इंदाणं दिसा रुयगाइया, रुयगप्पवहा, दुप्पएसाइया, दुप्पएसुत्तरा, लोगं पडुच्च असंखेज्जपएसिया, अलोगं पडुच्च अणंतपएसिया, लोगं पडुच्च साइया सपज्जवसिया, अलोगं पडुच्च साइया, अपज्जवसिया, लोगं पडुच्च सुरजसंठिया, अलोगं पडुच्च सगडुद्धिसंठिया पण्णत्ता। अग्गेयी णं भंते! दिसा किमाइया, किं पवहा, कइपएसाइया, कइपएसविस्थिन्ना, कइपएसिया, किं पज्जवसिया, किं संठिया पण्णत्ता? गोयमा! अग्गेयी णं दिसा रुयगाइया, रुयगप्पवहा, एगपएसाइया, एगपएसविस्थिन्ना, अणुत्तरा, लोगं पडुच्च असंखेज्ज पएसिया, अलोगं पडुच्च अणंतपएसिया, लोगं पडुच्च साइया सपज्जवसिया, अलोगं पडुच्च साइया अपज्जवसिया, छिन्नमुत्तावलिसंठिया पण्णत्ता। जमा जहा इंदा। नेरई जहा अग्गेयी। एवं जहा इंदा तहा दिसाओ चत्तारि जहा अग्गेयी तहा चत्तारि वि विदिसाओ। विमला णं भंते! दिसा किमाइया० पुच्छा? जहा अग्गेयी। गोयमा! विमला णं दिसा

नैर्ऋत्यविदिशा, पश्चिमदिशा, पश्चिम उत्तरदिशा को कोना वायव्यविदिशा, उत्तरदिशा, तथा उत्तरपूर्वदिशाका कोना ईशान विदिशा। ऊर्ध्वदिशा और अधोदिशा इस प्रकार से उनके ये नाम हैं। इस प्रकार का वर्णन दशमशतक के प्रथम उद्देशक में किया गया है॥ ५॥

इति लोकमध्याद्वारवक्तव्यता॥

વિદિશા, ઉર્ધ્વદિશા અને અધોદિશા. આ પ્રમાણે દશમાં શતકના પહેલા ઉદ્દેશામાં દિશાઓનું વર્ણન કરવામાં આવેલું છે. ॥સૂ૦૫॥

॥ લોકમધ્યદ્વાર વકતવ્યતા સંપૂર્ણ॥

रुयगाइया, रुयगप्पवहा, चउप्पएसाइया, चउप्पएसविस्थिन्ना, अणुत्तरा लोगं पडुच्च, सेसं जहा अग्गेयी, नवरं रुयगसंठिया पण्णत्ता, एवं तमा वि ॥सू० ६॥

छाया—ऐन्द्री खलु भदन्त! दिक् किमादिका, किं प्रवहा, कति प्रदेशादिका, कतिप्रदेशोत्तरा, कतिप्रदेशिका, किं पर्यवसिता, किं संस्थिता प्रज्ञप्ता ? गौतम ! ऐन्द्री खलु दिक् रुचकादिका, रुचकप्रवहा, द्विप्रदेशादिका, द्विप्रदेशोत्तरा, लोकं प्रतीत्य असंख्येयप्रदेशिका, अलोकं प्रतीत्य अनन्तप्रदेशिका, लोकं प्रतीत्य सादिका सपर्यवसिता, अलोकं प्रतीत्य सादिका अपर्यवसिता, लोकं प्रतीत्य मुरजसंस्थिता, अलोकं प्रतीत्य शकटोर्धः संस्थिता प्रज्ञप्ता। आग्नेयी खलु भदन्त! दिक् किमादिका, किं प्रवहा, कति प्रदेशादिका, कतिप्रदेशविस्तीर्णा, कतिप्रदेशिका, किं पर्यवसिता, किं संस्थिता प्रज्ञप्ता ? गौतम ! आग्नेयी खलु दिक् रुचकादिका, रुचकप्रवहा, एकप्रदेशादिका, एकप्रदेशविस्तीर्णा, अनुत्तरा, लोकं प्रतीत्य असंख्येयप्रदेशिका, अलोकं प्रतीत्य अनन्तप्रदेशिका, लोकं प्रतीत्य सादिका सपर्यवसिता, अलोकं प्रतीत्य सादिका अपर्यवसिता, छिन्नमुक्तावलीसंस्थिता प्रज्ञप्ता। याम्या यथा ऐन्द्री। नैर्ऋती यथा आग्नेयी। एवं यथा ऐन्द्री तथा दिशश्चतस्रः, यथा आग्नेयी तथा चतुरोऽपि विदिशः। विमला खलु भदन्त! दिक् किमादिका: ? पृच्छा, यथा आग्नेयी, गौतम! विमला खलु दिक् रुचकादिका, रुचकप्रवहा, चतुष्प्रदेशादिका, चतुष्प्रदेशविस्तीर्णा, अनुत्तरा, लोकं प्रतीत्य शेषं यथा आग्नेयी, नवरं रुचकसंस्थिता प्रज्ञप्ता, एवं तमाऽपि ॥ सू० ६ ॥

टीका—अथ षष्ठं दिक् विदिक् प्रवहद्वारमाह—'इंदा णं भंते' इत्यादि। इंदा णं भंते! दिसा किमाइका, किं पवहा, कइपएसाइया, कइपएसुत्तरा, कइपएसिया,

दिग्विदिक् प्रवहद्वारवक्तव्यता ॥

'इंदा णं भंते! दिसा किमाइया' इत्यादि।

टीकार्थ—इस सूत्र द्वारा सूत्रकार ने दिक् विदिक् प्रवहद्वार का निरूपण किया है—इस में गौतमने प्रभु से ऐसा पूछा है—'इंदा णं भंते! दिसा' हे भदन्त! ऐन्द्री दिशा—पूर्वदिशा (किमाइया) क्या आदिवाली

—દિગ્વિદિક્ પ્રવહદ્વાર વક્તવ્યતા—

"इंदा णं भंते! दिसा किमाइया" ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ—સૂત્રકારે આ સૂત્રમાં દિક્ વિદિક્ પ્રવહદ્વારનું નિરૂપણ કર્યું છે. ગૌતમ સ્વામી મહાવીર પ્રભુને એવો પ્રશ્ન પૂછે છે કે—" इंदा णं भंते! दिसा किमाइया ?" હે ભગવન્! ઐન્દ્રીદિશા (પૂર્વદિશા) શું આદિવાળી છે ? એટલે

किं पज्जवसिया, किं संठिया पण्णत्ता ? गौतमः पृच्छति-हे भदन्त ! ऐन्द्री खलु प्राची पूर्वा दिक् किमादिका-क आदिः प्रथमो यस्याः सा किमादिका ? आदिश्च विवक्षया वैपरीत्येनापि स्यादत आह-किं पवहा-प्रवहति-निस्सरति अस्मादिति प्रवहः, कः प्रवहो निर्गममूलं यस्याः सा किं पवहा ? कति प्रदेशादिका कति प्रदेशाः आदिर्यस्याः सा कति प्रदेशादिका ? कतिप्रदेशोत्तरा-कतिप्रदेशा उत्तरे-वृद्धौ यस्याः सा कतिप्रदेशोत्तरा ? कतिप्रदेशिका-कतिप्रदेशाः यस्याः सा कतिप्रदेशिका ? किं पर्यवसिता-किं पर्यवसितम्-अवसानं यस्याः सा किं पर्यवसिता-किमवसाना ? किं संस्थिता-किं संस्थितं-संस्थानं यस्याः सा किं संस्थिता-किमाकारा प्रज्ञप्ता ? भगवानाह-' गोयमा ! इंदाणं दिसा रुयगाइया, रुयगप्पवहा, दुप्पएसाइया, दुप्पएसुत्तरा लोगं पडुच्च असंखेज्जपएसिया, अलोगं पडुच्च अणंतपएसिया, लोगं पडुच्च साइया, सपज्जवसिया, अलोगं पडुच्च साईया अपज्जवसिया, लोगं पडुच्च

है ? अर्थात् इसके पहिले क्या है ? आदिपन विवक्षा वश उल्टेरूप से भी हो सकता है । इसके लिये पूछा गया है कि (किं पवहा) इसके निर्गम का मूल क्या है ? कि जिससे यह निकली है । (कइ पएसाइया) इसकी आदि में कितने प्रदेश हैं ? (कइ पएसुत्तरा) उत्तर में-वृद्धि में इसकी कितने प्रदेश हैं ? (कइ पएसिया) यह कितने प्रदेशोंवाली है ? (किं पज्जवसिया) इसका अन्त कहां है ? (किं संठिया पण्णत्ता) और कैसे आकारवाली यह कही गई है ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-'गोयमा' हे गौतम ! 'इंदाणं दिसा रुयगाइया' ऐन्द्रीदिशा-पूर्वदिशा रुचक आदि-वाली है-अर्थात् ऐन्द्रीदिशा के पहिले रुचक है । 'रुयगप्पवहा, दुप्पए-साइया, दुप्पएसुत्तरा, लोगं पडुच्च असंखेज्जपएसिया, अलोगं पडुच्च अणंतपएसिया' यह रुचक से निकली है अर्थात्-इसका मूल निर्गम-

---

કે તેની પહેલાં શું છે ? આદિપણાનું કથન ઉલ્ટારૂપે થઇ શકે છે. તે માટે જ પૂછવામાં આવ્યું છે કે-(किं पवहा) તેના નિર્ગમનું મૂળ ક્યાં છે-એટલે કે ક્યાંથી તેનો આરંભ થાય છે ? (कइ पएसाइया) તેની આદિમાં કેટલા પ્રદેશો છે ? (कइ पएसुत्तरा) તેની ઉત્તરમાં (વૃદ્ધિમાં) કેટલા પ્રદેશો છે ? (कइ पएसिया) તે કેટલા પ્રદેશોવાળી છે ? (किं पज्जवसिया) તેનો અન્ત ક્યાં છે ? (किं संठिया पण्णत्ता) તેનો આકાર કેવો કહ્યો છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-" गोयमा ! " હે ગૌતમ ! " इंदाणं दिसा रुय-गाइया " ઐન્દ્રી દિશા (પૂર્વદિશા)નો પ્રારંભ રુચકથી થાય છે એટલે કે તેની પહેલાં રુચક છે. (रुयगप्पवहा दुप्पएसाइया, दुप्पएसुत्तरा, लोगं पडुच्च असं-खेज्जपएसिया, अलोगं पडुच्च अणंतपएसिया) તે રુચકમાંથી નીકળી છે એટલે

मुरजसंठिया, अलोगं पडुच्च सगडुद्धिसंठिया पण्णत्ता' हे गौतम ! ऐन्द्री खलु दिक्, रुचिकादिका-रुचकः आदिर्यस्याः सा रुचकादिका, अतएव रुचकप्रवहा-प्रवहति-निर्गच्छति अस्मात् इति प्रवहः, रुचकः प्रवहो निर्गमस्थानं यस्याः सा रुचकप्रवहा, द्विप्रदेशादिका-द्वौ प्रदेशौ आदौ यस्याः सा द्विप्रदेशादिका, द्विप्रदेशोत्तरा द्वौ प्रदेशौ उत्तरे वृद्धौ यस्याः सा द्विप्रदेशोत्तरा, लोकं प्रतीत्य-आश्रित्य लोकापेक्षयेत्यर्थः असंख्येयप्रदेशिका-असंख्येयाः प्रदेशा यस्याः सा असंख्येयप्रदेशिका, अलोकं प्रतीत्य-आश्रित्य-अलोकापेक्षया इत्यर्थः, अनन्तप्रदेशिकाः-अनन्ताः प्रदेशाः यस्याः सा अनन्तप्रदेशिका, लोकं प्रतीत्य-आश्रित्य लोकापेक्षयेत्यर्थः सादिका-आदिसहिता, सपर्यवसिता-सावसाना, अलोकं प्रतीत्य-आश्रित्य, अलोकापेक्षयेत्यर्थः, सादिका अपर्यवसिता, न सान्ता, लोकं प्रतीत्य-अपेक्ष्य लोकापेक्षयेति भावः मुरजसंस्थिता-मुरजस्य-मृदङ्गस्य संस्थितं-संस्थानम् आकारो यस्याः सा तथाविधा, तथा च लोकान्तस्य परिमण्डलाकारत्वेन दिशो मुरजसंस्थानता संभवति, अतएव लोकान्तं प्रतीत्य-आश्रित्य मुरजसंस्थितेत्युक्तम्, अलोकं प्रतीत्य-आश्रित्य-अलोकापेक्षयेत्यर्थः, शकटोद्धिसंस्थिता शकटस्य

द्वार रुचक है। इसकी आदि में दो प्रदेश हैं। यह द्विप्रदेशोत्तर है अर्थात् यह दो प्रदेशों की वृद्धिवाली है। लोक की अपेक्षा से यह असंख्यात प्रदेशोंवाली है। अलोक की अपेक्षा से यह अनन्तप्रदेशों-वाली है, तथा लोक की अपेक्षा से यह आदिसहित है। और अवसान सहित है, अलोक की अपेक्षा से यह सादि अपर्यवसित है। लोक की अपेक्षा से इसका आकार मृदङ्ग के आकार जैसा है, क्योंकि लोक परिमण्डलाकार है, इसलिये दिशा में मुरजाकारता-मृदङ्गाकारता बन जाती है। इसीलिये यहां उसका आकार मृदङ्ग के आकार जैसा कहा गया है। अलोक की अपेक्षा से यह-शकटौधिसंस्थानवाली है अर्थात्

કે તેનું મૂળ નિર્ગમદ્વાર રુચક છે. તેની આદિમાં બે પ્રદેશ છે અને તે દ્વિપ્રદેશોત્તર છે, એટલે કે તે બે પ્રદેશોની વૃદ્ધિવાળી છે. લોકની અપેક્ષાએ તે અસંખ્યાત પ્રદેશોવાળી છે, અલોકની અપેક્ષાએ તે અનંત પ્રદેશોવાળી છે. તથા લોકની અપેક્ષાએ તે આદિસહિત છે અને અવસાનસહિત છે. અલોકની અપેક્ષાએ તે સાદિ સપર્યવસિત છે. લોકની અપેક્ષાએ તેનો આકાર મૃદંગના જેવો છે. લોક પરિમંડલાકાર હોવાથી દિશામાં મૃદંગાકારતા સંભવી શકે છે, તેથી જ તેનો આકાર મૃદંગના આકાર જેવો કહ્યો છે. અલોકની અપેક્ષાએ તે શકટોધિ આકારવાળી છે. એટલે કે ગાડાની આગળ જે લાકડાનો

ओधिरिव लम्बायमानशकटाग्रभागवत् संस्थितं-संस्थानम्-आकारो यस्याः सा तथाविधा, प्रज्ञप्ता-भणिता, गौतमः पृच्छति-'अग्गेयी णं भंते ! दिसा किमाइया, किं पवहा, कइपदेसाइया, कइपदेसवित्थिन्ना, कइपएसिया, किं पज्जवसिया, किं संठिया पण्णत्ता ?' हे भदन्त ! आग्नेयी खलु दिक्-विदिगित्यर्थः, किमादिका कः आदिर्यस्याः सा किमादिका, किं प्रवहा-कः प्रवहो निर्गममूलस्थानं यस्याः सा किं प्रवहा, कतिप्रदेशादिका, कतिप्रदेशविस्तीर्णा-कतिप्रदेशविस्तृता, कतिप्रदेशिका, किं पर्यवसिता-किमवसाना, किं संस्थिता-किमाकारा, प्रज्ञप्ता ? भगवानाह-' गोयमा ! अग्गेयीणं दिसा रुयगाइया, रुयगप्पवहा, एगपएसाइया, एगपएसवित्थिन्ना अणुत्तरा लोगं पडुच्च असंखेज्जपएसिया, अलोगं पडुच्च अणंतपएसिया, लोगं पडुच्च साइया सपज्जवसिया, अलोगं पडुच्च साइया अपज्जव-

---

-गाडी के आगे का जो लम्बाकाठ होता है-सो इस काठ के अग्रभाग के जैसा इसका आकार है। अब गौतमस्वामी प्रभु से ऐसा पूछते हैं-'अग्गेयी णं भंते ! दिसा किमाइया, किं पवहा, कइपएसा, कइपएसवित्थिन्ना, कइपएसिया, किं पज्जवसिया, किं संठिया, पण्णत्ता' हे भदन्त ! आग्नेयी विदिशा, किस आदिवाली है, इसके निर्गम का मूलस्थान कौन है ? कितने प्रदेशों में यह विस्तीर्ण है ? कितने प्रदेशोंवाली यह है ? यह किस अन्तवाली है ? और कैसा इसका आकार है ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-'गोयमा' हे गौतम ! 'अग्गेयी णं दिसा रुयगाइया, रुयगप्पवहा, एगपएसाइया, एगपएसवित्थिन्ना, अणुत्तरा लोगं पडुच्च, असंखेज्जपएसिया, अलोगं पडुच्च अणंतपएसिया, लोगं पडुच्च साइया, सपज्जवसिया अलोगं पडुच्च साइया अपज्जवसिया, छिण्णमुत्तावली

લાંબો લાંબો ભાગ હોય છે તેને "શકટોધિ" કહે છે. પૂર્વદિશાનો આકાર આ શકટોધિ જેવો છે.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-"अग्गेयीणं भंते ! दिसा किमाइगा, किं पवहा, कइपएसाइया, कइपएसवित्थिन्ना, कइ पएसिया, किं पज्जवसिया, किं संठिया पण्णत्ता ?" હે ભગવન્ ! આગ્નેયી વિદિશા (અગ્નિકોણ) કયા આદિવાળી છે? તેનું નિર્ગમસ્થાન-મૂળ-કયાં છે ? તે કેટલા પ્રદેશોમાં વિસ્તીર્ણ છે ? તે કેટલા પ્રદેશોવાળી છે ? તે કયા અન્તવાળી છે ? તેનો આકાર કેવો છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-"गोयमा ! હે ગૌતમ ! "अग्गेयीणं दिसा रुयगाइया, रुयगप्पवहा, एगपएसाइया, एगपएसवित्थिन्ना, अणुत्तरा, लोगं पडुच्च असंखेज्जपएसिया, अलोगं पडुच्च अणंतपएसिया, लोगं पडुच्च साइया, सपज्जवसिया अलोगं पडुच्च साइया अपज्जवसिया छिण्णमुत्तावली संठिया पण्णत्ता" અગ્નિવિદિશા રુચક આદિ વાળી છે, એટલે કે રુચકથી શરૂ

सिया, छिन्नमुत्तावलिसंठिया पण्णत्ता' हे गौतम ! आग्नेयी खलु दिक्-विदिगित्यर्थः, रुचकादिका-रुचकः आदिर्यस्याः सा तथाविधा, रुचकप्रवहा रुचकः प्रवहो यस्याः सा तथाविधा, एकप्रदेशादिका-एकः प्रदेशः आदिर्यस्याः सा तथाविधा, एकप्रदेशविस्तीर्णा-एकः प्रदेशो विस्तीर्णो-विस्तृतो यस्याः सा तथाविधा, यतः अनुत्तरा-वृद्धिवर्जिता, अतएव एकप्रदेशविस्तीर्णा प्रति भावः। लोकं प्रतीत्य आश्रित्य असंख्येयप्रदेशिका, अलोकं प्रतीत्य अपेक्ष्य, अलोकापेक्षयेत्यर्थः, अनन्तप्रदेशिका, लोकान्तं प्रतीत्य आश्रित्य सादिका सपर्यवसिता-सादिसान्ता, अलोकं प्रतीत्य-आश्रित्य, सादिका-आदिसहिता अपर्यवसिता-अन्तरहिता, छिन्नमुक्तावलिसंस्थिता-विकीर्णमुक्तावलीवत् संस्थितं-संस्थानम् आकारो यस्याः सा तथाविधा प्रज्ञप्ता। 'जमा जहा इंदा, नेरई जहा अग्गेयी, एवं जहा इंदा तहा दिसाओ चत्तारि, जहा अग्गेयी तहा चत्तारि वि विदिसाओ' याम्या-दक्षिणा दिग् यथा ऐन्द्री पूर्वादिक् प्रतिपादिता तथैव प्रतिपत्तव्या,

---

संठिया पण्णत्ता' આગ્નેયી વિદિશા રુચક આદિવાળી છે, અર્થાત્ इस दिशा के पहिले रुचक है इसका निर्गमस्थान भी रुचक है। एक प्रदेश आदि है, एक प्रदेश इसका विस्तृत है। क्योंकि यह अनुत्तरा-वृद्धिवर्जित है लोक की अपेक्षा से यह असंख्यात प्रदेशोंवाली है, अलोक की अपेक्षा से यह अनन्तप्रदेशोंवाली है। तथा लोक की अपेक्षा से यह सादि सपर्यवसित है, अलोक की अपेक्षा से यह आदिसहित और अन्त-रहित है। तथा इसका आकार विकीर्णमुक्तावली के जैसा है 'जमा जहा इंदा, नेरई जहा अग्गेयी, एवं जहा इंदा तहा दिसाओ चत्तारि, जहा अग्गेयी तहा चत्तारि वि विदिसाओ' दक्षिणदिशा पूर्वदिशा के जैसी कथनवाली है, नैर्ऋती विदिशा आग्नेयी विदिशा के जैसी कथनवाली

થાય છે–તેની પહેલાં રુચક છે, તેનું નિર્ગમસ્થાન પણ રુચક છે, એક પ્રદેશ તેનો આદિ છે, તેનો એક પ્રદેશ વિસ્તૃત છે કારણ કે તે અનુત્તરા (વૃદ્ધિરહિત) છે. લોકની અપેક્ષાએ તે અસંખ્યાત પ્રદેશોવાળી છે, અને અલોકની અપેક્ષાએ અનંતપ્રદેશોવાળી છે લોકની અપેક્ષાએ તે આદિ (આદિસહિત) અને સપર્યવસિત (અન્તવાળી) છે અને અલોકની અપેક્ષાએ તે સાદિ અને અન્તરહિત છે, તથા તેનો આકાર વિકીર્ણ મુક્તાવલીના જેવો છે. "जमा जहा इंदा, नेरई जहा अग्गेयी, एवं जहा इंदा तहा दिसाओ चत्तारि, जहा अग्गेयी तहा चत्तारि वि विदिसाओ" પૂર્વદિશાના જેવું જ કથન દક્ષિણ દિશાનું સમજવું અગ્નિ વિદિશાના જેવું જ કથન નૈર્ઋત્ય દિશા

नैर्ऋती विदिक् यथा आग्नेयी विदिक् प्रतिपादिता तथैव प्रतिपत्तव्या, एवं पूर्वोक्त रीत्या, यथा ऐन्द्री दिक् प्ररूपिता तथैव दिशश्चतस्रः पूर्वा दक्षिणा पश्चिमा उत्तरा च प्ररूपणीया, एवं यथा आग्नेयी विदिक् प्रतिपादिता तथा चतस्रोऽपि नैर्ऋती, वायव्या, ऐशानी, आग्नेयी च प्रतिपत्तव्या । गौतमः पृच्छति-'विमलाणं भंते ! दिसा किमाइया पुच्छा जहा अग्गेयीए ?' हे भदन्त ! विमला खलु ऊर्ध्वदिक् किमादिका-कः आदिर्यस्याः सा तथाविधा, किं प्रवहा, कति प्रदेशादिका कति प्रदेशोत्तरा, कतिप्रदेशिका, किं पर्यवसिता, किं संस्थिता प्रज्ञप्ता इति पृच्छा यथा आग्नेय्या विदिशः पृच्छा कृता तथा विमलायाः पृच्छा कर्त्तव्या । भगवानाह-

---

है । इसी प्रकार जैसा कथन पूर्वदिशा के संबंध में किया गया है इसी प्रकार का कथन शेष दिशाओं के संबंध में अर्थात् दक्षिण पश्चिम और उत्तर दिशाओं के संबंध में और जैसा कथन में आग्नेयीविदिशा के संबंध में किया गया है वैसा ही कथन शेष तीन विदिशाओं के नैर्ऋती वायव्य और ऐशानी के संबंध में भी करना चाहिये । अब गौतम-स्वामी प्रभु से ऐसा पूछते हैं-'विमला णं भंते ! दिसा किमाइया० पुच्छा -जहा अग्गेयीए' हे भदन्त ! विमला-ऊर्ध्वदिशा किस प्रकारके आदि-वाली है ? इसके निर्गम का मूल कौन है ? इसकी आदि में कितने प्रदेश हैं ? वृद्धि में इसके कितने प्रदेश हैं ? यह स्वयं कितनी प्रदेशों-वाली है ? इसका अंत कहां है ? कैसा इसका आकार है ? इस प्रकार से जैसे प्रश्न पहिले आग्नेयी विदिशा के संबंध में किये गये हैं वैसे ही प्रश्न इस विमला दिशा के संबंध में भी ये किये हैं । इसके उत्तर में प्रभु

વિષે સમજવું આ પ્રકારે જેવું કથન પૂર્વ દિશા વિષે કરવામાં આવ્યું છે, એવું જ કથન બાકીની દિશાઓ-દક્ષિણ, પશ્ચિમ અને ઉત્તર દિશા વિષે સમજવું અગ્નિવિદિશા વિષે જેવું કથન કરવામાં આવ્યું છે, એવું જ કથન બાકીની વિદિશાઓ-નૈઋંત્ય, વાયવ્ય અને ઈશાન-વિષે સમજવું.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-" विमलाणं भंते ! दिसा किमाइया० पुच्छा-जहा अग्गेयीए " હે ભગવન્ ! વિમલા દિશા (ઉર્ધ્વ દિશા) કયા આદિ વાળી છે ? તેના નિર્ગમનું મૂળ કયાં છે ? તેની આદિમાં કેટલા પ્રદેશ છે ? વૃદ્ધિમાં કેટલા પ્રદેશ છે ? તે પોતે કેટલા પ્રદેશોવાળી છે ? તેનો અન્ત કયાં છે ? તેનો આકાર કેવો છે ? આ પ્રકારે જેવા પ્રશ્નો અગ્નિવિદિશા વિષે પૂછવામાં આવ્યા છે, એવા જ પ્રશ્નો ઉર્ધ્વ દિશા વિષે પણ પૂછવામાં આવ્યા છે.

'गोयमा ! विमला णं दिसा रुयगाइया, रुयगप्पवहा, चउप्पएसाइया; चउप्पएसवित्थिन्ना अणुत्तरा, लोगं पडुच्च, सेसं जहा अग्गेयीए, नवरं रुयगसंठिया पण्णत्ता, एवं तमा वि ' हे गौतम ! विमला खलु ऊर्ध्वादिक् रुचकादिका, रुचकआदिर्यस्याः सा तथाविधा, रुचकप्रवहा–रुचकः प्रवहो–निर्गममूलस्थानं यस्याः सा तथाविधा, चतुष्प्रदेशादिका चत्वारः प्रदेशा आदिर्यस्याः सा तथाविधा, चतुष्प्रदेशविस्तीर्णा चत्वारः प्रदेशाः विस्तीर्णाः–विस्तृताः यस्याः सा तथाविधा चतुष्प्रदेशविस्तारवतीत्यर्थः, अनुत्तरा–वृद्धिवर्जिता, लोकं प्रतीत्य–अपेक्ष्य लोकापेक्षयेत्यर्थः असंख्येयप्रदेशिका, अलोकं प्रतीत्य–आश्रित्य अनन्तप्रदेशिका, लोकं प्रतीत्य सादिका सपर्यवसिता, अलोकं प्रतीत्य सादिका अपर्यवसिता प्रज्ञप्ता, नवरं पूर्वापेक्षया विशेषस्तु रुचकसंस्थिता–रुचकाकारा न तु च्छिन्नमुक्तावलीसंस्थिता प्रज्ञप्ता, एवं–रीत्या, तमा अधोदिगपि रुचकादिका, रुचकप्रवहा, चतुष्प्रदेशादिका,

---

कहते हैं–'गोयमा' हे गौतम ! 'विमला णं दिसा रुयगाइया, रुयगप्पवहा, चउप्पएसाइया, चउप्पएसवित्थिन्ना, अणुत्तरा, लोगं पडुच्च सेसं जहा अग्गेयीए' यह विमलादिशा–ऊर्ध्वदिशा रुचक आदिवाली है, इसके निर्गम का मूलस्थान रुचक है, चारप्रदेश इसके आदि हैं चारप्रदेश इसके विस्तीर्ण हैं, वृद्धि से यह वर्जित है, लोक की अपेक्षा से यह असंख्यात प्रदेशोंवाली है, अलोक की अपेक्षा से यह अनन्तप्रदेशवाली है, लोक की अपेक्षा से यह सादि सान्त है और अलोक की अपेक्षा से यह सादि अनन्त है ! पूर्वकथन की अपेक्षा इसके कथन में यदि कोई विशेषता है तो वह ऐसी है कि इस दिशा का आकार रुचक के आकार जैसा है । छिन्नमुक्तावली के जैसा नहीं है । इसी प्रकार का कथन तमो-

---

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર–"गोयमा !" હે ગૌતમ ! "विमलाणं दिसा रुयगाइया, रुयगप्पवहा, चउप्पएसाइया, चउप्पएसवित्थिन्ना, अणुत्तरा, लोगं पडुच्च सेस जहा अग्गेयीए" વિમલા દિશા (ઉર્ધ્વદિશા) રુચક રૂપ આદિવાળી છે, તેના નિર્ગમનું મૂળસ્થાન રુચક છે. ઉર્ધ્વદિશા આદિમાં ચાર પ્રદેશવાળી છે, તેના ચાર પ્રદેશ વિસ્તીર્ણ છે, તે વૃદ્ધિથી રહિત છે લોકની અપેક્ષાએ તે અસંખ્યાત પ્રદેશોવાળી છે અને અલોકની અપેક્ષાએ અનંત પ્રદેશોવાળી છે. લોકની અપેક્ષાએ તે આદિસહિત અને અન્તસહિત છે, અલોકની અપેક્ષાએ તે સાદિ (આદિ સહિત) અને અનન્ત છે. પૂર્વ કથન કરતાં આ કથનમાં એટલી જ વિશેષતા છે કે આ દિશાનો આકાર રુચકના જેવો છે, છિન્ન મુક્તાવલીના જેવો નથી. ઉર્ધ્વદિશાના જેવું જ કથન તમોદિશા (અધોદિશા) વિષે પણ સમજવું એટલે કે અધોદિશા પણ રુચક

चतुष्प्रदेशविस्तीर्णा, अनुत्तरा वृद्धिवर्जिता लोकं प्रतीत्य असंख्येयप्रदेशिका, अलोकं प्रतीत्य अनन्तप्रदेशिका, लोकान्तं प्रतीत्य सादिका सपर्यवसिता, अलोकं प्रतीत्य सादिका अपर्यवसिता, रुचकाकारा च प्रज्ञप्ता इति भावः ॥ सू० ६ ॥

परिवर्तनद्वारवक्तव्यता ।

मूलम्–"किमयं भंते! लोए त्ति पवुच्चइ? गोयमा! पंचत्थिकाया, एसणं एवइए लोए त्ति पवुच्चइ, तं जहा–धम्मत्थिकाए, अहम्मत्थिकाए, जाव पोग्गलत्थिकाए। धम्मत्थिकाएणं भंते! जीवाणं किं पवत्तइ? गोयमा! धम्मत्थिकाएणं जीवाणं आगमणगमण. भासुम्मेसमणजोगा, वइजोगा, कायजोगा, जे यावन्ने तहप्पगारा चला भावा सव्वे ते धम्मत्थिकाए पवत्तंति, गतिलक्खणेणं धम्मत्थिकाए। अहम्मत्थिकाएणं जीवाणं किं पवत्तइ? गोयमा! अहम्मत्थिकाएणं जीवाणं ठाण निसीयण-तुयट्टणमणस्स य एगत्तीभावकरणता जे यावन्ने तहप्पगारा थिरा भावा सव्वे ते अहम्मत्थिकाए पवत्तंति, ठाणलक्खणेणं

दिशा–अधोदिशा के सम्बन्ध में भी करना चाहिये। अर्थात् अधोदिशा भी रुचक आदिवाली है, रुचकरूप निर्गमस्थानवाली है यह चार प्रदेशरूप आदिवाली है, इसके चार प्रदेश विस्तीर्ण हैं, यह वृद्धिवर्जित है, लोक की अपेक्षा से यह असंख्यातप्रदेशोंवाली है, अलोककी अपेक्षा से यह अनन्त-प्रदेशोंवाली हैं, लोककी अपेक्षा यह सादि सान्त है और अलोक की अपेक्षा यह सादि अनन्त है, तथा आकार में रुचक के जैसा आकारवाली है॥६॥

इति दिग्विदिग्प्रवहद्वार वक्तव्यता ॥

રૂપ આદિવાળી છે, તે રુચક રૂપ નિર્ગમસ્થાનવાળી છે, તે ચાર પ્રદેશરૂપ આદિવાળી છે; તેના ચાર પ્રદેશો વિસ્તીર્ણ છે, તે વૃદ્ધિ રહિત છે, લોકની અપેક્ષાએ અસંખ્યાત પ્રદેશોવાળી અને અલોકની અપેક્ષાએ અનંત પ્રદેશો-વાળી છે. લોકાન્તની અપેક્ષાએ તે સાદિ અને સાન્ત છે, પણ અલોકની અપેક્ષાએ તે સાદિ અનન્ત છે, તથા તેનો આકાર રુચક જેવો છે. ॥સૂ૦૬॥

દિગ્વિદિક્ પ્રવહદ્વાર સંપૂર્ણ

अहम्मत्थिकाए! आगासत्थिकाए णं भंते! जीवाणं अजीवाणं य किं पवत्तइ? गोयमा! आगासत्थिकाए णं जीवदव्वाणं य, अजीवदव्वाण य भायणभूए-एगेण वि, से पुन्ने दोहि वि पुन्ने, सयं पि माएज्जा, कोडिएणं वि पुन्ने कोडिसहस्सं पि माएज्जा॥१॥ अवगाहणा लक्खणे णं आगासत्थिकाए, जीवत्थिकाएणं भंते! जीवाणं किं पवत्तइ? गोयमा! जीवत्थिकाए णं जीवे अणंताणं आभिणिबोहियनाणं पज्जवाणं अणंताणं सुयनाणपज्जवाणं एवं जहा बितियसए अत्थिकायउद्देसए जाव उवओगं गच्छइ, उवओगलक्खणेणं जीवे। पोग्गलत्थिकाए णं पुच्छा, गोयमा! पोग्गलत्थिकाए णं जीवाणं ओरालियवेउव्विय आहारए तेयाकम्मए सोइंदियचक्खिंदियघाणिंदियजिब्भिंदिय-फासिंदिय मणजोगवयजोगकायजोगआणापाणूणं च गहणं पवत्तइ, गहणलक्खणे णं पुग्गलत्थिकाए॥सू० ७॥

छाया—किमयं भंते! लोक इति प्रोच्यते? गौतम! पञ्चास्तिकायाः, एष खलु एतावत्को लोक इति प्रोच्यते, तद्यथा-धर्मास्तिकायः, अधर्मास्तिकायः, यावत् पुद्गलास्तिकायः। धर्मास्तिकायः खलु भदन्त! जीवानां किं प्रवर्तते? गौतम! धर्मास्तिकाये खलु जीवानाम् आगमनगमनभाषोन्मेषमनोयोगवचोयोग काय-योगाः, ये चान्यन्ते तथाप्रकाराश्चलाः भावाः सर्वे ते धर्मास्तिकाये प्रवर्तन्ते, गति लक्षणः खलु धर्मास्तिकायः। अधर्मास्तिकायः खलु जीवानां किं प्रवर्तते? गौतम! अधर्मास्तिकाये खलु जीवानां स्थाननिषदनत्वग्वर्तनं मनसश्च एकत्वीभावकरणता, ये चान्यन्ये स्थिरा भावाः सर्वे ते अधर्मास्तिकाये प्रवर्तन्ते, स्थानलक्षणः खलु अधर्मास्तिकायः। आकाशास्तिकायः खलु भदन्त! जीवानाम् अजीवानां च किं प्रवर्तते? गौतम! आकाशास्तिकाये खलु जीवद्रव्याणां च अजीवद्रव्याणां च भाजनभूते, एकेनापि पूर्णे तस्मिन् द्वाभ्यामपि पूर्णे शतमपि मायात्, कोटिशते-नापि पूर्णे कोटिसहस्रमपि मायात्॥१॥ अवगाहनालक्षणः खलु आकाशास्ति

कायः । जीवास्तिकायः खलु भदन्त ! जीवानां किं प्रवर्तते ? गौतम ! जीवास्तिकाये खलु जीवः अनन्तानाम् आभिनिबोधिकज्ञानपर्यवाणाम्, अनन्तानां श्रुतज्ञानपर्यवाणाम्, एवं यथा द्वितीयशतके अस्तिकायोद्देशके यावत् उपयोगं गच्छति' उपयोगलक्षणः खलु जीवः । पुद्गलास्तिकायः खलु पृच्छा, गौतम ! पुद्गलास्तिकाये खलु जीवानम् औदारिकवैक्रियाहारकतैजसकार्मणश्रोत्रेन्द्रियचक्षुरिन्द्रियघ्राणेन्द्रियजिह्वेन्द्रियस्पर्शेन्द्रियमनोयोगवचोयोगकाययोगानप्राणानां च ग्रहणं प्रवर्तते, ग्रहणलक्षणः खलु पुद्गलास्तिकायः ॥ सू० ७ ॥

टीका—अथ सप्तमं प्रवर्त्तनद्वारमाह–' किमियं भंते ! ' इत्यादि । ' किमयं भंते ! लोएत्ति पवुच्चइ ? ' गौतमः पृच्छति–हे भदन्त ! किम् अयं लोक इति प्रोच्यते, कस्तावत् लोकशब्दार्थः ? भगवानाह–' गोयमा ! पंचत्थिकाया, एसणं एवइए लोए त्ति पवुच्चइ' हे गौतम ! पञ्च अस्तिकायाः, एष खलु पञ्चास्तिकायसमूहः एतावत्को लोक इति प्रोच्यते, पञ्चास्तिकायरूपो लोक शब्दार्थ इति भावः । तान् पञ्चास्तिकायान् प्रदर्शयति–' तं जहा–धम्मत्थिकाए, अहम्मत्थिकाए जाव

प्रवर्त्तनद्वारवक्तव्यता—

'किमयं भंते ! लोएत्ति पवुच्चइ' इत्यादि ।

टीकार्थ–सूत्रकार ने इस सूत्रद्वारा सातवें प्रवर्त्तन द्वार का कथन किया है। इसमें गौतम ने प्रभु से ऐसा पूछा है–'किमयं भंते ! लोएत्ति-पवुच्चइ' हे भदन्त ! लोक शब्द का वाच्यार्थ क्या है ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं–'गोयमा' हे गौतम ! 'पंचत्थिकाया, एस णं एवइए लोए त्ति पवुच्चइ' पंचास्तिकायरूप लोक शब्दका वाच्यार्थ है । अर्थात् पांच जो अस्तिकाय है–वे ही लोक रूप हैं । 'तं जहा' वे अस्तिकाय इस

—પ્રવર્ત્તનદ્વારવક્તવ્યતા—

" किमयं भंते ! लोएत्ति पवुच्चइ " ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ–સૂત્રકારે આ સૂત્રમાં સાતમાં પ્રવર્ત્તન દ્વારનું કથન કર્યું છે. આ વિષયને અનુલક્ષીને ગૌતમ સ્વામી મહાવીર પ્રભુને એવો પ્રશ્ન પૂછે છે કે–" किमयं भंते ! लोए त्ति पवुच्चइ ?" હે ભગવન્ ! લોક શબ્દનો વાચ્યાર્થ શો છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર–" गोयमा ! " હે ગૌતમ ! " पंचत्थिकाया एस णं एवइए लोए त्ति पवुच्चइ " આ લોક પંચાસ્તિકાય રૂપ છે. એટલે કે જે પાંચ અસ્તિકાય છે, તેઓ જ લોકરૂપ છે. " तंजहा " તે પાંચ અસ્તિકાયો નીચે પ્રમાણે છે–" धम्मत्थिकाए, अहम्मत्थिकाए, जाव पोग्गलत्थिकाए " (૧) ધર્મા-

पोग्गलत्थिकाए ' तद्यथा–धर्मास्तिकायः, अधर्मास्तिकायः, यावत्–आकाशास्ति-कायः, जीवास्तिकायः, पुद्गलास्तिकायः । गौतमः पृच्छति–' धम्मत्थिकाए णं भंते ! जीवाणं किं पवत्तइ ?' हे भदन्त ! धर्मास्तिकायः खलु जीवानां किं–कथं प्रवर्तते ? धर्मास्तिकायेन जीवानां कीदृशी प्रवृत्तिर्भवति ? इति प्रश्नः । भगवानाह–'गोयमा ! धम्मत्थिकाए णं जीवाणं आगमणगमणभासुम्मेसमणजोगा वइजोगा कायजोगा, जे यावन्ने तहप्पगारा चला भावा सव्वे ते धम्मत्थिकाए पवत्तंति' हे गौतम ! धर्मास्तिकाये सति खलु जीवानाम् आगमनगमनभाषोन्मेषमनोयोग-वचोयोगकायजोगाः, तत्र आगमनगमने प्रसिद्धे, भाषा–व्यक्तवचनम् , उन्मेषः नयनस्पन्दनात्मकव्यापारविशेषः, मनोयोगवाग्योगकाययोगाः प्रसिद्धा एव,

---

प्रकार से हैं–'धम्मत्थिकाए, अहम्मत्थिकाए, जाव पोग्गलत्थिकाए) धर्मा-स्तिकाय, अधर्मास्तिकाय यावत्–आकाशास्तिकाय, जीवास्तिकाय और पुद्गलास्तिकाय । अब गौतमस्वामी प्रभु से ऐसा पूछते हैं–'धम्मत्थिकाए णं भंते ! जीवा णं किं पव्वत्तइ' हे भदन्त ! धर्मास्तिकाय के सहारे के जीवों की प्रवृत्ति कैसी होती है ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं–'गोयमा ! धम्म-त्थिकाए णं जीवाणं आगमण–गमण-भासुम्मेसमणजोगा, वइजोगा, काय-जोगा जे यावन्ने तहप्पगारा चला भावा सव्वे ते धम्मत्थिकाए पव-त्तंति' हे गौतम ! धर्मास्तिकाय के होने पर ही जीवों का आना जाना–गमनागमन होता है अर्थात्–चलना फिरना होता है । कहीं से आना और कहीं पर जाना ऐसा जो आनेजानेरूप कार्य होता है वह धर्मास्ति-काय के सद्भाव में ही होता है। इसी प्रकार से भाषा–व्यक्तवचन, उन्मेष नेत्र का उघाडना, .मनोयोग, वाग्योग, काययोग तथा इसी

स्तिकाय, (२) अधर्मास्तिकाय, (३) आकाशास्तिकाय, (४) जीवास्तिकाय अने (५) पुद्गलास्तिकाय.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન–" धम्मत्थिकाए णं भंते ! जीवाणं किं पव्वत्तइ" હે ભગવન્ ! ધર્માસ્તિકાય જીવોની પ્રવૃત્તિમાં કેવી રીતે મદદ રૂપ બને છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર–" गोयमा ! धम्मत्थिकाए णं जीवाणं आगमणगमण–भासुम्मेसमणजोगा, वइजोगा, कायजोगा, जे यावन्ने तहप्पगारा चला भावा सव्वे ते धम्मत्थिकाए पवत्तंति " હે ગૌતમ ! ધર્માસ્તિકાયના અસ્તિત્વને લીધે જ જીવો ગમનાગમન (અવરજવર) કરી શકે છે. કોઈ જગ્યાએથી આવવાનું અને કોઇ જગ્યાએ જવાનું કાર્ય ધર્માસ્તિકાયનો સદ્ભાવ હોય તો જ થઇ શકે છે. એજ પ્રમાણે ભાષા (વચન બોલવાની ક્રિયા), ઉન્મેષ (નેત્ર ઉઘાડવાની ક્રિયા), મનોયોગ, વાગ્યોગ, કાયયોગ તથા એજ પ્રકારની બીજી પણ જે

अत्र च मनोयोगादयः सामान्यरूपाः, आगमनादयस्तु तद्विशेषरूपा भवन्ति, अतस्तेषां भेदेनोपादानं कृतम्, एवं ये चान्यान्ये-आगमनादिभ्योऽपरे तथा प्रकाराः-आगमनादिसदृशाः भ्रमणचलनादयश्चला भावाश्चलस्वभावा पर्यायाः सन्ति, सर्वे ते धर्मास्तिकाये सति भवर्तन्ते, तत्र हेतुमाह-'गइलक्खणे णं धम्मत्थिकाए' यतो गतिलक्षणः-गतिलक्षणं यस्य स तथाविधः खलु धर्मास्तिकायो भवति, धर्मास्तिकायस्य गतिस्वभावत्वादिति भावः। गौतमः पृच्छति-'अहम्मत्थिकाए णं जीवाणं किं पवत्तइ ?' हे भदन्त ! अधर्मास्तिकायः खलु जीवानां किं कथं प्रवर्तते ? अधर्मास्तिकायेन जीवानां कीदृशी प्रवृत्तिर्भवति ? इति प्रश्नः। भगवानाह-'गोयमा ! अहम्मत्थिकाए णं जीवाणं ठाणनिसीयणतुयट्टणमणस्स य एगत्तीभावकरणया, जे यावन्ने तहप्पगारा थिरा भावा सव्वे ते अहम्मत्थिकाए पवत्तंति' हे गौतम ! अधर्मास्तिकाये सति खलु, अधर्मास्तिकायेनेत्यर्थः जीवानां स्थान निषदनत्वग्वर्तनं कायोत्सर्गशयनानि, तत्र स्थानं स्थितिः, निषदनम्-उपवेशनम्, त्वग्वर्तनं-पार्श्वपरिवर्तनस्य स्थिरीकरणम्, मनसश्च एकत्वीभावकरणता-

---

प्रकार जो और भी चलस्वभावरूप भ्रमण-चलन आदि पर्याये हैं वे सब भी धर्मास्तिकाय के होने पर ही होते हैं। इसमें हेतु यह है-'गइलक्खणे णं धम्मत्थिकाए' धर्मास्तिकाय का स्वभाव गतिरूप है। अब गौतमस्वामीप्रभु से ऐसा पूछते हैं-'अहम्मत्थिकाएणं जीवाणं किं पवत्तइ' हे भदन्त ! अधर्मास्तिकाय के सहारे से जीवों की प्रवृत्ति कैसी होती है ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-'गोयमा ! अहम्मत्थिकाए णं जीवाणं ठाणनिसीयण तुयट्टणमणस्स य एगत्तीभावकरणया जे यावन्ने तहप्पगारा थिरा भावा सव्वे ते अहम्मत्थिकाए पवत्तंति' हे गौतम ! अधर्मास्तिकाय के होने पर ही खडे रहनेरूप, बैठनेरूप, करवट नहीं बदलनेरूप, मनको एकीभाव करनेरूप कार्य होते है, तथा इन स्थान निष-

---

ચલસ્વભાવરૂપ ભ્રમણ આદિ પર્યાયો છે, તે સઘળી ક્રિયાઓ પણ ધર્માસ્તિકાય હોય તો જ થઈ શકે છે. "गइलक्खणेणं धम्मत्थिकाए" ધર્માસ્તિકાયનો સ્વભાવ ગતિરૂપ છે-તેને લીધે જ ગતિ સંભવી શકે છે.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-"अहम्मत्थिकाए णं जीवाणं किं पवत्तइ ?" હે ભગવન્! અધર્માસ્તિકાયની મદદથી જીવો કેવી પ્રવૃત્તિ કરી શકે છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-"गोयमा ! अहम्मत्थिकाएणं जीवाण ठाणनिसीयण-तुयट्टणमणस्स य एगत्तीभावकरणया जे यावन्ने तहप्पगारा थिरा भावा, सव्वे ते अहम्मत्थिकाए प्रवर्त्तंति" હે ગૌતમ ! અધર્માસ્તિકાયનો સદ્ભાવ હોવાને કારણે જ ઊભા રહેવારૂપ, બેસવારૂપ, પડખું નહીં બદલવારૂપ, મનને એકાગ્ર

अनेकत्वस्य एकत्वस्य भवनमेकत्वीभावस्तस्य यत्करणं तद्भावस्तत्ता एकत्वीभावकरणता भवति, एवं ये चान्यन्ये स्थाननिषदनादिभ्यो भिन्नाः तथाप्रकाराः-स्थाननिषदनादिसदृशाः स्थिराः भावाः सन्ति, सर्वे ते अधर्मास्तिकाये सति प्रवर्तन्ते, तत्र हेतु माह-' ठाणलक्खणे णं अहम्मत्थिकाए ' यतः स्थानलक्षणः-स्थानं लक्षणं यस्य स तथाविधः खलु अधर्मास्तिकायो भवति, अधर्मास्तिकायस्य स्थितिस्वभावत्वादिति भावः। गौतमः पृच्छति-' आगासत्थिकाए णं भंते ! जीवाणं अजीवाणय किं पवत्तइ ? ' हे भदन्त ! आकाशास्तिकायः खलु-जीवानाम् अजीवानां च किं कथं प्रवर्तते ? आकाशास्तिकायेन जीवानां कीदृशी प्रवृत्तिर्भवति ? इति प्रश्नः। भगवानाह-'गोयमा ! आगासत्थिकाए णं जीवदव्वाण य अजीवदव्वाणय भायणभूए-एगेण वि से पुन्ने, दोहिं वि पुन्ने सयं पि माएज्जा कोडिसएण वि पुन्ने कोडिसहस्सं पि माएज्जा ॥ १ ॥

दन आदि से भिन्न और भी इन्हीं जैसे स्थिर भाव धर्मास्तिकाय के सद्भाव में ही संपादित होते हैं क्योंकि 'ठाणलक्खणे णं अहम्मत्थिकाए' स्थानलक्षणवाला यह अधर्मास्थिकाय कहा गया है। अब गौतमस्वामी प्रभु से ऐसा पूछते हैं-'आगासत्थिकाए णं भंते ! जीवाणं अजीवाण य किं पवत्तइ' हे भदन्त ! आकाशास्तिकाय से जीवों और अजीवों की प्रवृत्ति कैसी होती है ?-अर्थात् आकाशास्तिकाय में जीव और अजीव अपनी कैसी प्रवृत्ति करते हैं ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-(गोयमा) 'आगासत्थिकाए णं जीवदव्वाण य अजीवदव्वाण य भायणभूए' हे गौतम ! आकाशास्तिकाय जीव द्रव्यों का और अजीवद्रव्यों का भाजनभूत होता है, ' एगेण वि से पुन्ने दोहिं वि पुन्ने सयंपि माएज्जा, कोडिसएण वि पुन्ने कोडिसहस्सं पि माएज्जा' क्योंकि जीवा-

---

કરવા રૂપ, તથા એવા પ્રકારના બીજા પણ સ્થિર ભાવો અધર્માસ્તિકાયના સદ્ભાવને લીધે જ સંભવી શકે છે, કારણ કે " ठाणलक्खणे णं अहम्मत्थिकाए " આ અધર્માસ્તિકાયને સ્થાન (સ્થિતિ) લક્ષણવાળું કહ્યું છે.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-" आगासत्थिकाएणं भंते ! जीवाणं अजीवाण य किं पवत्तइ ?" હે ભગવન્ ! આકાશાસ્તિકાય જીવો અને અજીવોની પ્રવૃત્તિમાં કેવી રીતે મદદરૂપ બને છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-" आगासत्थिकाए णं जीवदव्वाण य अजीव दव्वाण य भायणभूए " હે ગૌતમ ! આકાશાસ્તિકાય જીવદ્રવ્યો તથા અજીવદ્રવ્યોના ભાજન (આશ્રયસ્થાન) રૂપ બને છે. " एगेण वि से पुन्ने, दोहि वि पुन्ने सयंपि माएज्जे, कोडिसएण वि पुन्ने कोडिसहस्संपि माएज्जा " કારણ કે જીવાદિક

हे गौतम ! आकाशास्तिकायः खलु जीवद्रव्याणां च, अजीवद्रव्याणां च भाजनभूतो भवति, तथा च एतस्मिन् आकाशास्तिकाये सति जीवादीनामवगाहः प्रवर्तते, तस्य जीवादिभाजनभूतत्वं प्रदर्शयति 'एगेण वि से' इत्यादि, एकेनापि परमाण्वादिना सः असौ आकाशास्तिकायप्रदेशः पूर्णो भृतः तथा द्वाभ्यामपि ताभ्यां परमाणुभ्यां पूर्णः स आकाशास्तिकायप्रदेशो भवति, तत्र आकाशास्तिकाये एकद्विपरमाण्वादिभिः पूर्णे शतमपि मायात्-समाविशेत्, तथा कोटिशतेनापि पूर्णो भवति, तत्र कोटिसहस्रमपि मायात्-समाविशेत् ॥१॥ एवं च यथाऽपवरकाकाशमेकप्रदीप प्रभापटलेनापि पूर्यते तत्र द्वितीयमपि प्रदीपप्रभापटलं माति, यावच्छतमपिप्रभापटलं तत्र माति, तथा औषधिविशेषापादितपरिणामादेकत्र पारदकर्षे 'तोला' इति प्रसिद्धे सुवर्णकर्षशतं प्रविशति, पारदकर्षीभूतं च तद्भवति औषधिसामर्थ्यात्, पुनः पारदस्य कर्षः सुवर्णस्य च कर्षशतं भवति, पुद्गलपरिणा-

---

दिक द्रव्यों को अवगाह देने का इसका स्वभाव है। एक भी पुद्गलपरमाणु आदि जिस आकाश के एक प्रदेश में अवगाहित होता है, आकाश के उसी एकप्रदेश में दो भी पुद्गलपरमाणु अवगाहित हो जाते हैं और सौ भी पुद्गलपरमाणु अवगाहित हो जाते हैं। तथा उसी एकप्रदेश में कोटिशत और कोटिसहस्र भी पुद्गलपरमाणु समा जाते हैं। जैसे कोठरी के आकाश में एक दीपक की प्रभा भी समा जाती है, दो दीपकों की प्रभा भी समा जाती है, सौ दीपकों की प्रभा भी समा जाती हैं। तथा औषधिविशेष से आपादित परिणाम के प्रभाव से एक तोला पारेमें सौ तोला सोना प्रविष्ट हो जाता है अर्थात् समा जाता है और वह सोना पारे के वजन में आ जाता है तथा वापिस पृथक्करने पर औषधि के सामर्थ्य से पारा एक तोला और सोना १०० सौ तोला हो जाता है। पुद्गलपरिणाम की कुछ ऐसी ही

દ્રવ્યોને અવગાહ દેવાનો તેનો સ્વભાવ છે. આકાશના જે એક પ્રદેશમાં એક જ પરમાણુ આદિ અવગાહિત થાય છે (રહે છે), એજ આકાશના એક પ્રદેશમાં બે પુદ્ગલપરમાણુ પણ અવગાહિત થઈ જાય છે, સો પુદ્ગલપરમાણુ પણ અવગાહિત થઈ જાય છે, તથા તે એક જ પ્રદેશમાં કોટિશત અને કોટિ-સહસ્ર પુદ્ગલપરમાણુ પણ સમાઈ જાય છે. જેવી રીતે ઓરડાના આકાશમાં (અવકાશમાં) એક દીપકનો પ્રકાશ પણ સમાઈ જાય છે, બે દીપકનો પ્રકાશ પણ સમાઈ જાય છે અને સો દીપકનો પ્રકાશ પણ સમાઈ જાય છે, તથા ઔષધિવિશેષ દ્વારા સંપાદિત પરિણામના પ્રભાવથી એક તોલા પારામાં સો તોલા સોનાનો સમાવેશ થઈ જાય છે અને તે સોનું પારાના વજનમાં આવી જાય છે તથા પારાનું વજન પણ ઔષધિના પ્રભાવથી ૧૦૦ તોલા બરાબર

मस्य विचित्रत्वात्, तत्र हेतुमाह-'अवगाहणालक्खणे णं आगासत्थिकाए' अवगाहनालक्षणः-अवगाहना-समावेशरूपम् आश्रयभावो लक्षणं स्वरूपम् स्वभावो वा यस्य स तथाविधः खलु आकाशास्तिकायो भवति आकाशास्तिकायस्य अवगाहना स्वभावत्वादिति भावः। गौतमः पृच्छति-'जीवत्थिकाये णं भंते! जीवाणं किं पवत्तइ?' हे भदन्त! जीवास्तिकायः खलु जीवानां किं-कथं प्रवर्तते? जीवास्तिकायेन जीवतया जीवानां कीदृशी प्रवृत्तिर्भवति? इति प्रश्नः, भगवानाह-'गोयमा! जीवत्थिकाये णं जीवे अणंताणं आभिणिबोहियनाणपज्जवाणं, अणंताणं सुयनाणपज्जवाणं, एवं जहा बितियसए अत्थिकायउद्देसए जाव उवओगं गच्छइ' हे गौतम! जीवास्तिकाये सति खलु जीवः अनन्तानम् अभिनिबोधिकज्ञानपर्यवाणाम् मतिज्ञानपर्यायाणाम् अनन्तानां श्रुतज्ञानपर्यवाणाम्, एवं रीत्या,

---

विचित्रता है। 'अवगाहनालक्खणे णं आगासत्थिकाए' ऐसा क्यों होता है तो इसका उत्तर यही है कि अवगाहनालक्षणवाला यह आकाश है। अर्थात् आकाशास्तिकाय का ऐसा ही स्वभाव है कि वह जीवादिक द्रव्यों को अपने में ठहरने के लिये स्थान-जगह देता है। अब गौतम-स्वामी प्रभु से ऐसा पूछते हैं-'जीवत्थिकाए णं भंते! जीवाणं किं पवत्तइ' हे भदन्त! जीवास्तिकाय से जीवों की कैसी प्रवृत्ति होती है? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-'गोयमा! जीवत्थिकाए णं जीवे अणंताणं आभिणिबोहियनाणपज्जवाणं, अणंताणं सुयनाणपज्जवाणं एवं जहा बितियसए अत्थिकायउद्देसए जाव उवओगं गच्छइ' हे गौतम! जीवास्तिकाय के होने पर जीव अनन्तमतिज्ञान की पर्यायों के अनन्तश्रुत-

---

થઈ જાય છે, એજ પ્રકારે પુદ્ગલપરિણામની પણ કોઈ એવી જ વિચિત્રતા છે એવું કેમ બને છે? આ પ્રશ્નનો ઉત્તર એ છે કે "अवगाहनालक्खणेणं आगासत्थिकाए" આ આકાશ અવગાહનાલક્ષણવાળું છે. એટલે કે આકાશાસ્તિકાયનો સ્વભાવ જ એવો છે કે તે જીવાદિક દ્રવ્યોને પોતાની અંદર રહેવા માટે સ્થાન આપે છે.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-"जीवत्थिकाए णं भंते! जीवाणं किं पवत्तइ?" હે ભગવન્! જીવાસ્તિકાય જીવોની પ્રવૃત્તિમાં કેવી રીતે મદદરૂપ બને છે?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-"गोयमा! जीवत्थिकाए णं जीवे अणंताणं आभिणिबोहियनाणपज्जवाणं, अणंताणं सुयनाणपज्जवाणं एवं जहा बितियसए अत्थिकायउद्देसए जाव उवओगं गच्छइ" હે ગૌતમ! જીવાસ્તિકાયના સદ્ભાવમાં જ જીવો અનંત મતિજ્ઞાનની પર્યાયોના, અનંત શ્રુતજ્ઞાનની પર્યાયોના,

यथा द्वितीयशतके अस्तिकायोद्देशके-दशमोद्देशके यावत्-अवध्यादि ज्ञानपर्यवाणाम् ज्ञानदर्शनयोः उपयोगं गच्छति-प्राप्नोति, तत्र हेतुमाह-'उवओगलक्खणे णं जीवे' यतः उपयोगलक्षणः-उपयोगः लक्षणं स्वरूपं यस्य स तथाविधः खलु जीवो भवति, जीवास्तिकायस्य उपयोग स्वभावत्वादिति भावः। गौतमः पृच्छति-'पोग्गलत्थिकाए णं पुच्छा' हे भदन्त ! पुद्गलास्तिकायः खलु जीवानां किं-कथं प्रवर्तते ? पुद्गलास्तिकायेन जीवानां कीदृशी प्रवृत्तिर्भवति ? इति प्रश्नः, भगवानाह-'गोयमा ! पोग्गलत्थिकाए णं जीवाणं ओरालियवेउव्विया आहारए तेया कम्मए सोइंदियचक्खिंदियघाणिंदिय जिब्भिंदियफासिंदिय मणजोगवयजोगकायजोगआणापाणूणं च गहणं पवत्तइ' हे गौतम ! पुद्गलास्तिकाये सति खलु पुद्गलास्तिकायेनेत्यर्थः जीवानाम् औदारिकवैक्रियाहारकतैजसकार्मणश्रोत्रेन्द्रिय

ज्ञान की पर्यायों के इस रीति से द्वितीयशतक में अस्तिकाय उद्देशक में वर्णितपद्धति के अनुसार यावत् अवधिज्ञान आदि ज्ञानों की पर्यायों के, ज्ञानदर्शन के उपयोग को प्राप्त करता है। क्योंकि 'उवओगलक्खणे णं जीवे' उपयोग है लक्षण जिसका ऐसा यह जीवास्तिकाय है। अर्थात् उपयोग स्वभाववाला जीवास्तिकाय कहा गया है। अब गौतम स्वामी प्रभु से ऐसा पूछते हैं-'पोग्गलत्थिकाए णं पुच्छा' हे भदन्त ! पुद्गलास्तिकाय से जीवों की प्रवृत्ति कैसी होती है ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-'गोयमा ! पोग्गलत्थिकाए णं जीवाणं ओरालिय वेउव्विय आहारए तेयाकम्मए, सोइंदिय, चक्खिंदिय, घाणिंदिय, जिब्भिंदिय, फासिंदिय, मणजोग वयजोगकायजोग आणापाणूणं च गहणं पवत्तइ' हे गौतम ! पुद्गलास्तिकाय के होने पर जीवों के औदारिक, वैक्रिय,

---

તથા બીજા શતકના અસ્તિકાય ઉદ્દેશકમાં વર્ણવેલી અવધિજ્ઞાન આદિ જ્ઞાનોની પર્યાયોના, જ્ઞાનદર્શનના ઉપયોગને પ્રાપ્ત કરે છે કારણ કે "उवओगलक्खणे णं जीवे" આ જીવાસ્તિકાય ઉપયોગલક્ષણવાળું છે. એટલે કે જીવાસ્તિકાયને ઉપયોગ સ્વભાવવાળું કહ્યું છે.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-"पोग्गलत्थिकाए णं पुच्छा" હે ભગવન્! પુદ્ગલાસ્તિકાય જીવોની પ્રવૃત્તિમાં કેવી રીતે મદદરૂપ બને છે?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-"गोयमा ! पोग्गलत्थिकाए णं जीवाणं ओरालिय-वेउव्विय आहारए तेयाकम्मए, सोइंदिय, चक्खिंदिय, घाणिंदिय, जिब्भिंदिय, फासिंदिय, मणजोग, वयजोगकायजोग आणापाणूणं च गहणं पवत्तइ" હે ગૌતમ ! પુદ્ગલાસ્તિકાયનો સદ્ભાવ હોવાને લીધે જ જીવો औદારિક, વૈક્રિય,

चक्षुरिन्द्रियघ्राणेन्द्रियजिह्वेन्द्रियस्पर्शनेन्द्रियमनोयोगवचोयोगकाययोगानप्राणानां च ग्रहणं प्रवर्तते, तत्र हेतुमाह–'गहणलक्खणेणं पोग्गलत्थिकाए' ग्रहणलक्षणः ग्रहणम्–आदानं लक्षणं–स्वरूपं यस्य स तथाविधः खलु पुद्गलास्तिकायो भवति, पुद्गलास्तिकायस्य औदारिकादिग्रहणस्वभावत्वात्। औदारिकादीनां च पुद्गलमयत्वादिति भावः ॥सू० ७॥

एकास्तिकाय प्रदेशस्पर्शनाद्वारवक्तव्यता

मूलम्–"एगे भंते! धम्मत्थिकायपएसे केवइएहिं धम्मत्थिकायपएसेहिं पुट्ठे? गोयमा! जहन्नपए तिहिं उक्कोसपए छहिं। केवइएहिं अहम्मत्थिकायपएसेहिं पुट्ठे? गोयमा! जहन्नपए चउहिं उक्कोसपए सत्तहिं। केवइएहिं आगासत्थिकायपएसेहिं पुट्ठे? गोयमा! सत्तहिं। केवइएहिं जीवत्थिकायपएसेहिं पुट्ठे? गोयमा! अणंतेहिं। केवइएहिं पोग्गलत्थिकायपएसेहिं पुट्ठे? गोयमा! अणंतेहिं। केवइएहिं अद्धासमएहिं पुट्ठे? सिय पुट्ठे, सिय नो पुट्ठे, जइ पुट्ठे नियमं अणंतेहिं॥ एगे भंते! अहम्मत्थिकायपएसे केवइएहिं धम्मत्थिकायपएसेहिं पुट्ठे? गोयमा! जहन्नपए चउहिं, उक्कोसपए सत्तहिं। केवइएहिं अहम्मत्थिकायपएसेहिं पुट्ठे? जह-

---

आहारक, तैजस कार्मण इनके ग्रहणमें, तथा श्रोत्रेन्द्रिय, चक्षुइंद्रिय, घ्राणेन्द्रिय, जिह्वेन्द्रिय, स्पर्शनेन्द्रिय, मनोयोग, वचोयोग, काययोग श्वासोच्छ्वास इनके ग्रहणमें प्रवृत्ति होती है क्योंकि–'गहणलक्खणेणं पोग्गलत्थिकाए' पुद्गलास्तिकाय का स्वभाव ग्रहण करने का है–अर्थात् पुद्गलास्तिकाय द्वारा जीव औदारिक आदि पुद्गलों को ग्रहण करता है ये औदारिक आदि पुद्गलमय हैं ॥ ७ ॥

इति प्रवर्त्तनद्वारवक्तव्यता ॥

આહારક, તૈજસ અને કાર્મણના ગ્રહણમાં તથા શ્રોત્રેન્દ્રિય, નેત્રેન્દ્રિય, ઘ્રાણેન્દ્રિય, રસનેન્દ્રિય, સ્પર્શેન્દ્રિય, મનોયોગ, વચનયોગ અને કાયયોગના ગ્રહણમાં પ્રવૃત્ત થાય છે, કારણ કે "गहणलक्खणेणं पोग्गलत्थिकाए" પુદ્ગલાસ્તિકાયનો સ્વભાવ ગ્રહણ કરવાનો છે. એટલે કે ઔદારિક આદિને ગ્રહણ કરવાનો પુદ્ગલાસ્તિકાયનો સ્વભાવ છે તે ઔદારિક આદિ પુદ્ગલમય છે. ॥સૂ૦૭॥

॥ પ્રવર્ત્તનદ્વાર વક્તવ્યતા સંપૂર્ણ ॥

ज्झपए तिहिं, उक्कोसपए छहिं, सेसं जहा धम्मत्थिकायस्स॥ एगे भंते! आगासत्थिकायपएसे केवइएहिं धम्मत्थिकायपएसेहिं पुट्ठे? गोयमा! सिय पुट्ठे, सिय नो पुट्ठे, जइ पुट्ठे जहन्नपए एक्केण वा, दोहिं वा, तीहिं वा, चउहिं वा, उक्कोसपए सत्तहिं, एवं अहम्मत्थिकायप्पएसेहि वि। केवइएहिं आगासत्थिकाय-पएसेहिं पुट्ठे? छहिं, केवइएहिं जीवत्थिकायपएसेहिं पुट्ठे, सिय पुट्ठे, सिय नो पुट्ठे, जइ पुट्ठे नियमं अणंतेहिं। एवं पोग्गलत्थि-कायपएसेहि वि। अद्धासमएहि वि। एगे भंते! जीवत्थिकाय-पएसे केवइएहिं धम्मत्थिकायपएसेहिं पुट्ठे? पुच्छा, जहन्नपए चउहिं उक्कोसपए सत्तहिं। एवं अहम्मत्थिकायपएसेहि वि, केवइएहिं आगासत्थिकायपएसेहिं पुट्ठे? सत्तहिं। केवइएहिं जीवत्थिकायपएसेहिं पुट्ठे? सेसं जहा धम्मत्थिकायस्स। एगे भंते! पोग्गलत्थिकायपएसे केवइएहिं धम्मत्थिकायपएसेहिं पुट्ठे? एवं जहेव जीवत्थिकायस्स॥सू० ८॥

छाया—एको भदन्त! धर्मास्तिकायप्रदेशः कियद्भिः धर्मास्तिकायप्रदेशैः स्पृष्टः? गौतम! जघन्यपदे त्रिभिः, उत्कृष्टपदे षड्भिः, कियद्भिः अधर्मास्ति-कायप्रदेशैः स्पृष्टः? गौतम! जघन्यपदे चतुर्भिः, उत्कृष्टपदे सप्तभिः। कियद्भिः आकाशास्तिकायप्रदेशैः स्पृष्टः? गौतम सप्तभिः। कियद्भिः जीवास्तिकायप्रदेशैः स्पृष्टः? गौतम! अनन्तैः। कियद्भिः पुद्गलास्तिकायप्रदेशैः स्पृष्टः? गौतम! अनन्तैः। कियद्भिः अद्धासमयैः स्पृष्टः? स्यात् स्पृष्टः, स्यात् नो स्पृष्टः, यदा स्पृष्टो नियमात् अनन्तैः। एको भदन्त! अधर्मास्तिकायप्रदेशः कियद्भिः धर्मा-स्तिकायप्रदेशैः स्पृष्टः? गौतम! जघन्यपदे चतुर्भिः, उत्कृष्टपदे सप्तभिः। कियद्भिः अधर्मास्तिकायप्रदेशैः स्पृष्टः? जघन्यपदे त्रिभिः, उत्कृष्टपदे षड्भिः, शेषं यथा धर्मास्तिकायस्य॥ एको भदन्त! आकाशास्तिकायप्रदेशः कियद्भिः धर्मास्तिकायप्रदेशैः स्पृष्टः? गौतम! स्यात् स्पृष्टः, स्यात् नो स्पृष्टः, यदा स्पृष्टो जघन्यपदे एकेन वा, द्वाभ्यां वा, त्रिभिर्वा, चतुर्भिर्वा, उत्कृष्टपदे सप्तभिः, एवम् अधर्मास्तिकायप्रदेशैरपि। कियद्भिः आकाशास्तिकायप्रदेशैः स्पृष्टः? षड्भिः कियद्भिः जीवास्तिकायप्रदेशैः स्पृष्टः? स्यात् स्पृष्टः, स्यात् नो स्पृष्टः, यदा

स्पृष्टो नियमात् अनन्तैः, एवं पुद्गलास्तिकायप्रदेशैरपि, अद्धासमयैरपि, एको भदन्त ! जीवास्तिकायप्रदेशः कियद्भिः धर्मास्तिकायप्रदेशैः स्पृष्टः ? पृच्छा, जघन्यपदे चतुर्भिः, उत्कृष्टपदे सप्तभिः, एवम् अधर्मास्तिकाय प्रदेशैरपि, कियद्भिः आकाशास्तिकाय प्रदेशैः स्पृष्टः ? सप्तभिः, कियद्भिः जीवास्तिकायप्रदेशैः स्पृष्टः ? शेषं यथा धर्मास्तिकायस्य, एको भदन्त ! पुद्गलास्तिकायप्रदेशः कियद्भिः धर्मास्तिकायप्रदेशैः स्पृष्टः ? एवं यथैव जीवास्तिकायस्य ॥ सू० ८ ॥

टीका—अथ अष्टमम् आकाशास्तिकायादिप्रदेशद्वारमाह—'एगे भंते' इत्यादि। 'एगे भंते ! धम्मत्थिकायपएसे केवइएहिं धम्मत्थिकायपएसेहिं पुट्ठे?' गौतमः पृच्छति—हे भदन्त ! एको धर्मास्तिकायप्रदेशः कियद्भिः धर्मास्तिकाय-प्रदेशैः स्पृष्टो भवति ? भगवानाह—'गोयमा ! जहन्नपए तिहिं, उक्कोसपए छहिं'

एकास्तिकायप्रदेश स्पर्शद्वारवक्तव्यता—

'एगे भंते ! धम्मत्थिकायपएसे' इत्यादि।

टीकार्थ—इस सूत्रद्वारा सूत्रकार ने आठवें आकाशास्तिकायादि-प्रदेशद्वार का निरूपण किया है-इसमें गौतमने प्रभु से ऐसा पूछा है—'एगे भंते ! धम्मत्थिकायपएसे केवइएहिं धम्मत्थिकायपएसेहिं पुट्ठे' हे भदन्त ! धर्मास्तिकाय का एकप्रदेश धर्मास्तिकाय के कितने प्रदेशों द्वारा स्पृष्ट होता है ? पूछने का अभिप्राय ऐसा है कि धर्मास्तिकाय में असंख्यात प्रदेश कहे गये हैं-सो उसका एकप्रदेश उसके ही कितने प्रदेशों द्वारा

—એકાસ્તિકાયપ્રદેશ સ્પર્શદ્વાર વક્તવ્યતા—

" एगे भंते ! धम्मत्थिकायपएसे " ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ—સૂત્રકારે આ સૂત્રમાં આઠમાં આકાશાસ્તિકાયાદિ પ્રદેશદ્વારનું નિરૂપણ કર્યું છે. આ વિષયને અનુલક્ષીને ગૌતમ સ્વામી મહાવીર પ્રભુને એવો પ્રશ્ન પૂછે છે કે—" एगे भंते ! धम्मत्थिकायपएसे केवइएहिं धम्मत्थिकाय-पएसेहिं पुट्ठे ?" હે ભગવન્ ! ધર્માસ્તિકાયનો એક પ્રદેશ ધર્માસ્તિકાયના કેટલા પ્રદેશો વડે સ્પૃષ્ટ થાય છે ? આ પ્રશ્નનો ભાવાર્થ એ છે કે ધર્માસ્તિ-કાયમાં અસંખ્યાત પ્રદેશ કહ્યા છે. અહીં એવો પ્રશ્ન પૂછાયો છે કે ધર્માસ્તિ-કાયનો એક પ્રદેશ તેના જ કેટલા પ્રદેશો દ્વારા સ્પૃષ્ટ થયેલો હોય છે ?

हे गौतम ! जघन्यपदे-जघन्येन त्रिभिः धर्मास्तिकाय प्रदेशैः, उत्कृष्टपदे-उत्कृष्टेन षड्भिः धर्मास्तिकायप्रदेशैः एको धर्मास्तिकायप्रदेशः स्पृष्टो भवति, अत्र जघन्यपदेन लोकान्तक्षोणो विवक्षितः, यत्र एकस्य धर्मास्तिकायप्रदेशस्य अतिस्तोकैरन्यैः स्पर्शना भवति। स च भूम्यासन्नापवरकक्षोणदेशसदृशो बोध्यः, तत्र उपरितनेन एकेन, द्वाभ्यां च पार्श्वतः इत्येवं धर्मास्तिकायस्य त्रिभिः प्रदेशैः विवक्षितप्रदेशस्य स्पर्शना भवति। उत्कृष्टपदेन चतुर्दिशां चत्वारः प्रदेशाः, ऊर्ध्वाधोदिशोश्च द्वौ प्रदेशौ, इत्येवं षड्भिः प्रदेशैः विवक्षितप्रदेशस्य स्पर्शना भवति ।१। गौतमः पृच्छति-' केवइएहिं अहम्मत्थिकायपएसेहिं पुट्ठे ? ' हे भदन्त ! एको धर्मास्ति-

---

छुआ गया होता है ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-'गोयमा ! जहन्नपए तिहिं, उक्कोसपए छहिं' हे गौतम ! जघन्यपद में वह एक धर्मास्तिकाय प्रदेश तीन धर्मास्तिकायप्रदेशों द्वारा स्पृष्ट होता है-यहां जघन्यपद से लोकान्तकोण विवक्षित है-यहां धर्मास्तिकाय का विवक्षित एक प्रदेश ऊपर के एक प्रदेश द्वारा और आसपास के दो प्रदेशों द्वारा स्पृष्ट होता है इस प्रकार अतिस्तोक अन्य प्रदेशों से उनकी स्पर्शना कही गई है। यह लोकान्तकोण भूमिके पास के कोठे के कोने के प्रदेश जैसा समझना चाहिये। उत्कृष्ट से वह विवक्षित धर्मास्तिकाय का एकप्रदेश अपनी चारों दिशाओं के धर्मास्तिकायप्रदेशों से और ऊपर नीचे के दो प्रदेशों से स्पृष्ट होता है-इस प्रकार चार दिशाओं के चार प्रदेशों से और ऊपर नीचे के दो प्रदेशों से उस विवक्षित प्रदेश की स्पर्शना कही गई है। अब गौतमप्रभु से ऐसा पूछते हैं-केवइएहिं-

---

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-" गोयमा ! जहन्नपए तिहिं, उक्कोसपए छहिं " હે ગૌતમ ! જઘન્યપદની અપેક્ષાએ તે એક ધર્માસ્તિકાય પ્રદેશ ત્રણ ધર્માસ્તિકાય પ્રદેશો દ્વારા સ્પૃષ્ટ થાય છે. અહીં જઘન્યપદ દ્વારા લોકાન્તકોણ ગ્રહણ કરવો જોઈએ ત્યાં ધર્માસ્તિકાયનો અમુક એક પ્રદેશ ઉપરના એક પ્રદેશ દ્વારા અને આસપાસના બે પ્રદેશો દ્વારા સ્પૃષ્ટ થાય છે. આ રીતે અતિસ્તોક અન્ય પ્રદેશો વડે તેની સ્પર્શના થવાનું કહેવામાં આવ્યું છે. આ લોકાન્તકોણ ભૂમિની પાસેના કોઠાના ખૂણાના પ્રદેશ જેવો સમજવો જોઈએ. ઉત્કૃષ્ટની અપેક્ષાએ વિચાર કરવામાં આવે તો ધર્માસ્તિકાયનો એક પ્રદેશ પોતાની ચારે દિશાઓના ધર્માસ્તિકાય પ્રદેશો દ્વારા અને ઉપર નીચેના બે પ્રદેશો દ્વારા સ્પૃષ્ટ થાય છે. આ રીતે ચાર દિશાઓના ચાર પ્રદેશો વડે, ઉપરના એક અને નીચેના એક, એમ છ પ્રદેશો વડે તેની સ્પર્શના થાય છે.

कायप्रदेशः कियद्भिः अधर्मास्तिकायप्रदेशैः स्पृष्टो भवति ? भगवानाह-' गोयमा ! जहन्नपए चउहिं, उक्कोसपए सत्तहिं ' हे गौतम ! जघन्यपदे-जघन्येन, चतुर्भिः अधर्मास्तिकायप्रदेशैः, उत्कृष्टपदे-उत्कृष्टेन सप्तभिः अधर्मास्तिकायप्रदेशैः एको धर्मास्तिकाय प्रदेशः स्पृष्टो भवति, तत्र जघन्यपदेन उपर्युक्तास्त्रयः, चतुर्थस्तु धर्मास्तिकायप्रदेशस्थानस्थितो विवक्षत इत्येवं चतुर्भिः उत्कृष्टपदेन च पूर्वोक्ताः षड्दिक्षट्के, सप्तमस्तु धर्मास्तिकायप्रदेशस्थ एवेत्येवं विवक्षितः, सप्तभिश्च अधर्मास्तिकायप्रदेशैः स्पृष्टो धर्मास्तिकायप्रदेश एक इत्यर्थः २। गौतमः पृच्छति-

---

अहमत्थिकायपएसेहिं पुट्ठे' हे भदन्त ! धर्मास्तिकायका एकप्रदेश कितने अधर्मास्तिकायप्रदेशों द्वारा स्पृष्ट होता है ? यह प्रश्न इसलिये पूछा गया है कि लोकाकाश में तिल में तैल की तरह धर्मादिक द्रव्य सर्वत्र भरे हुए हैं-अतः धर्मास्तिकाय जहां पर है वहीं पर अधर्मास्तिकाय आदि अन्य अस्तिकाय भी है। इसीलिये। पूछा जा रहा है कि धर्मास्तिकाय का एक विवक्षितप्रदेश अधर्मास्तिकाय के कितने प्रदेशों द्वारा स्पृष्ट होता है। इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-'गोयमा ! जहन्नपए चउहिं, उक्कोसपए सत्तहिं' हे गौतम ! धर्मास्तिकाय का एकप्रदेश जघन्य से अधर्मास्तिकाय के चार प्रदेशों द्वारा और उत्कृष्ट से सातप्रदेशों द्वारा स्पृष्ट होता हैं-वह इस प्रकार से-अधर्मास्तिकाय के एक ऊपर के प्रदेश से, आसपास के-आजूबाजू के दो प्रदेशों से तथा धर्मास्ति-

---

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-" केवइएहिं अहमत्थिकायपएसेहिं पुट्ठे ?" હે ભગવન્ ! ધર્માસ્તિકાયનો એક પ્રદેશ અધર્માસ્તિકાયના કેટલા પ્રદેશો વડે સ્પૃષ્ટ થાય છે ? આ પ્રશ્ન પૂછવાનું કારણ એ છે કે જેમ તલમાં તેલ રહેલું હોય છે એમ લોકાકાશમાં ધર્માસ્તિકાય આદિ દ્રવ્ય સર્વત્ર વ્યાપ્ત હોય છે. તેથી જ્યાં ધર્માસ્તિકાય હોય છે, ત્યાં અધર્માસ્તિકાય આદિ અન્ય અસ્તિકાય પણ રહેલા હોય છે. તેથી જ એવો પ્રશ્ન પૂછવામાં આવ્યો છે કે ધર્માસ્તિકાયનો એક પ્રદેશ અધર્માસ્તિકાયના કેટલા પ્રદેશો વડે સ્પૃષ્ટ થાય છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-" गोयमा ! जहन्नपए चउहिं, उक्कोसपए सत्तहिं " હે ગૌતમ ! ધર્માસ્તિકાયનો એક પ્રદેશ અધર્માસ્તિકાયના ઓછામાં ઓછા ચાર પ્રદેશ વડે અને વધારેમાં વધારે સાત પ્રદેશો વડે સ્પૃષ્ટ થાય છે. ઓછામાં ઓછા ચાર પ્રદેશો વડે નીચે પ્રમાણે સ્પૃષ્ટ થાય છે-ધર્માસ્તિકાયનો તે એક પ્રદેશ અધર્માસ્તિકાયના એક ઉપરના પ્રદેશ વડે, આસપાસના બે પ્રદેશો વડે તથા ધર્માસ્તિકાયના પ્રદેશના સ્થાન પર રહેલા એક પ્રદેશ વડે

'केवइएहिं आगासत्थिकायपएसेहिं पुट्ठे ?' हे भदन्त ! कियद्भिः आकाशास्ति-कायप्रदेशैः एको धर्मास्तिकायप्रदेशः स्पृष्टः ? इति प्रश्नः, भगवानाह-' गोयमा ! सत्तहिं ' हे गौतम ! सप्तभिरेव आकाशास्तिकायप्रदेशैरेको धर्मास्तिकायप्रदेशः स्पृष्ट इति भावः । लोकान्तेऽपि अलोकाकाशप्रदेशानां सद्भावात् २, गौतमः पृच्छति-'केवइएहिं जीवत्थिकायपएसेहिं पुट्ठे ?' हे भदन्त ! कियद्भिः जीवास्ति-कायप्रदेशैरेको धर्मास्तिकायप्रदेशः स्पृष्टः ? इति प्रश्नः भगवानाह-' गोयमा !

काय के प्रदेश के स्थान पर रहे हुए एकप्रदेश से-इस प्रकार जघन्य से चार प्रदेशों से उस धर्मास्तिकाय के एकप्रदेश की स्पर्शना कही गई है, तथा उत्कृष्ट से छह दिशाओं के छह प्रदेशों और सातवें धर्मा-स्तिकाय के प्रदेश के स्थान पर स्थित हुए एक अधर्मास्तिकाय के प्रदेश से इस प्रकार उस धर्मास्तिकाय के एक प्रदेश की स्पर्शना उत्कृष्ट से होती कही गई है। १ अब गौतम प्रभु से ऐसा पूछते हैं-'केवइएहिं आगासत्थिकायपएसेहिं पुट्ठे' हे भदन्त ! धर्मास्तिकाय का एकप्रदेश आकाशास्तिकाय के कितने प्रदेशों से स्पृष्ट होता है ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं 'गोयमा' हे गौतम ! सात आकाशास्तिकाय प्रदेशों से एक धर्मास्तिकायप्रदेश स्पृष्ट होता है । क्योंकि लोकान्त में भी अलो-काकाश के प्रदेशों का सद्भाव है २ अब गौतम प्रभु से ऐसा पूछते हैं 'केवइएहिं जीवत्थिकायपएसेहिं पुट्ठे' हे भदन्त ! जीवास्तिकाय के कितने

સ્પૃષ્ટ થાય છે. વધારેમાં વધારે સાત પ્રદેશો વડે આ પ્રકારે તેની સ્પર્શના સમજવી-ધર્માસ્તિકાયના તે એક પ્રદેશની છ દિશાઓના છ પ્રદેશો વડે અને ધર્માસ્તિકાયના પ્રદેશના સ્થાન પર રહેલા એક અધર્માસ્તિકાયના પ્રદેશ વડે સ્પર્શના થાય છે. આ રીતે ધર્માસ્તિકાયના એક પ્રદેશની અધર્માસ્તિકાયના વધારેમાં વધારે સાત પ્રદેશો વડે સ્પર્શના થાય છે. ।૨।

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-" केवइएहिं आगासत्थिकायपएसेहिं पुट्ठे ?" હે ભગવન્! ધર્માસ્તિકાયના એક પ્રદેશની આકાશાસ્તિકાયના કેટલા પ્રદેશો વડે સ્પર્શના થાય છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-" गोयमा ! " હે ગૌતમ ! ધર્માસ્તિકાયનો એક પ્રદેશ આકાશાસ્તિકાયના સાત પ્રદેશો વડે સ્પૃષ્ટ થાય છે, કારણ કે લોકા-ન્તમાં પણ અલોકાકાશના પ્રદેશોનો સદ્ભાવ છે. ।૩।

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-"केवइएहिं जीवत्थिकायपएसेहिं पुट्ठे ?" હે ભગવન્! ધર્માસ્તિકાયનો એક પ્રદેશ જીવાસ્તિકાયના કેટલા પ્રદેશો વડે સ્પૃષ્ટ થાય છે ?

अणंतेहिं' हे गौतम ! एको स्तिकायप्रदेशः अनन्तैः जीवास्तिकायप्रदेशैः स्पृष्टो भवति, तथाहि-अनन्तैरनन्तजीवसम्बन्धिनाम् अनन्तानां प्रदेशानाम् तत्रैक धर्मास्तिकायप्रदेशे पार्श्वतश्च दिक्त्रयादौ विद्यमानत्वात् ४, गौतमः पृच्छति-' केवइएहिं पोग्गलत्थिकायपएसेहिं पुट्ठे ?' हे भदन्त ! एको धर्मास्तिकायप्रदेशः कियद्भिः पुद्गलास्तिकायप्रदेशैः स्पृष्टो भवति ? भगवानाह-' गोयमा ! अणंतेहिं' हे गौतम ! एको धर्मास्तिकायप्रदेशः अनन्तैः पुद्गलास्तिकायप्रदेशैः स्पृष्टो भवति' अनन्तपुद्गलसम्बन्धिनामनन्तानां प्रदेशानां तत्रैकधर्मास्तिकायप्रदेशे पार्श्व-

---

प्रदेशों द्वारा धर्मास्तिकाय का एक प्रदेश स्पृष्ट होता है ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-'गोयमा अणंतेहिं' हे गौतम ! धर्मास्तिकाय का एक प्रदेश जीवास्तिकाय के अनन्तप्रदेशों से स्पृष्ट होता है। इसका तात्पर्य ऐसा है कि धर्मादिक द्रव्यों की तरह जीवद्रव्य एक नहीं है। वह तो अनन्त द्रव्यरूप है। इसलिये एक धर्मास्तिकाय के प्रदेश पर और उसके आस पास अनन्त जीवों के अनन्त प्रदेश विद्यमान रहते हैं-इसीलिये यहां ऐसा कहा गया है। ४ अब गौतम प्रभु से ऐसा पूछते हैं-'केवइएहिं पोग्गलत्थिकायपएसेहिं पुट्ठे' हे अदन्त ! एक धर्मास्तिकायप्रदेश पुद्गलास्तिकाय के कितने प्रदेशों द्वारा स्पृष्ट होता है ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-'अणंतेहिं' हे गौतम ! धर्मास्तिकाय का एक प्रदेश अनन्तपुद्गलास्तिकाय प्रदेशों से स्पृष्ट होता है। क्योंकि अनन्तपुद्गलसंबंधी अनन्तप्रदेशों का धर्मास्तिकाय के एकप्रदेश पर और उसके पास दिक-

---

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-" गोयमा ! अणंतेहिं " હે ગૌતમ ! ધર્માસ્તિકાયનો એક પ્રદેશ જીવાસ્તિકાયના અનંતપ્રદેશો વડે સ્પૃષ્ટ થાય છે. આ કથનનો ભાવાર્થ એ છે કે ધર્માદિક દ્રવ્યોની જેમ જીવ દ્રવ્ય એક નથી તે તો અનંત દ્રવ્યરૂપ છે. તેથી એક ધર્માસ્તિકાયના પ્રદેશ પર અને તેની આસપાસ અનંત જીવોના અનંત પ્રદેશ વિદ્યમાન રહે છે. તેથી અહીં ઉપર મુજબનું કથન કરવામાં આવ્યું છે. ।४।

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-" केवइएहिं पोग्गलत्थिकायपएसेहिं पुट्ठे ?" હે ભગવન્ ! ધર્માસ્તિકાયનો એક પ્રદેશ પુદ્ગલાસ્તિકાયના કેટલા પ્રદેશો વડે સ્પૃષ્ટ થાય છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-" अणंतेहिं " હે ગૌતમ ! ધર્માસ્તિકાયનો એક પ્રદેશ પુદ્ગલાસ્તિકાયના અનંત પ્રદેશો વડે સ્પૃષ્ટ થાય છે. કારણ કે અનંત

तश्च दिक्त्रयादौ विद्यमानत्वात् ५, गौतमः पृच्छति-' केवइएहिं अद्धासमएहिं पुट्ठे ?' हे भदन्त ! एको धर्मास्तिकायप्रदेशः कियद्भिः अद्धासमयैः स्पृष्टो भवति ? भगवानाह-'सिय पुट्ठे सिय नो पुट्ठे, जइ पुट्ठे नियमं अणंतेहिं' हे गौतम ! अद्धासमयः समयक्षेत्र एव, न परतोऽतः एको धर्मास्तिकायप्रदेशः अद्धासमयैः स्यात्-कदाचित् समयक्षेत्रापेक्षया स्पृष्टो भवति, स्यात् कदाचित् बहिःक्षेत्रापेक्षया स्पृष्टो न भवति, तत्रापि यदा तैः स्पृष्टो भवति तदा नियमात्-नियमतः, अनन्तै अद्धासमयैः स्पृष्टो भवति, अद्धासमयानामनादित्वात् अनन्तत्वाच्च, अथवा

त्रयादि में सद्भाव रहता है। ५। अब गौतम प्रभु से ऐसा पूछते हैं-'केवइएहिं अद्धासमएहिं पुट्ठे' एक धर्मास्तिकाय प्रदेश कितने अद्धासमयों से स्पृष्ट होता है ? उत्तर में प्रभु कहते हैं-'सिय पुट्ठे, सिय नो पुट्ठे' हे गौतम ! धर्मास्तिकाय का एकप्रदेश कदाचित् अद्धासमयों से स्पृष्ट होता है और कदाचित् नहीं होता है। इसका तात्पर्य ऐसा है-कि अद्धासमयक्षेत्र-अढाईद्वीप में ही है-उसके बाहर नहीं इसलिये समय-क्षेत्र की अपेक्षा धर्मास्तिकाय का एकप्रदेश अद्धासमयों से स्पृष्ट होता कहा गया है, तथा बहिःक्षेत्रापेक्षया वह स्पृष्ट नहीं होता कहा गया है। 'जइ पुट्ठे नियमं अणंतेहिं' यदि वह समयक्षेत्रापेक्षा से अद्धा-समयों द्वारा स्पृष्ट होता है तो नियमतः वह अनन्त अद्धासमयों से स्पृष्ट होता है। क्योंकि अद्धासमय अनादि और अनन्त होते हैं।

પુદ્ગલના અનંત પ્રદેશોનો ધર્માસ્તિકાયના એક પ્રદેશ પર અને તેની પાસે દિક્ત્રયાદિમાં સદ્ભાવ રહે છે. ।૫।

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-"केवइएहिं अद्धासमएहिं पुट्ठे ?" હે ભગવન્! ધર્માસ્તિકાયનો પ્રદેશ કેટલા અદ્ધાસમયો વડે સ્પૃષ્ટ થાય છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-"सिय पुट्ठे, सिय नो पुट्ठे" હે ગૌતમ! ધર્માસ્તિકાયનો એક પ્રદેશ કયારેક અદ્ધાસમયો વડે સ્પૃષ્ટ થાય છે અને કયારેક થતો નથી આ કથનનો ભાવાર્થ એવો છે કે-અદ્ધાસમય સમયક્ષેત્ર-અઢી દ્વીપમાં જ છે, તેની બહાર નથી. તેથી સમયક્ષેત્રની અપેક્ષાએ એવું કથન કરવામાં આવ્યું છે કે ધર્માસ્તિકાયનો એક પ્રદેશ અદ્ધાસમયો વડે સ્પૃષ્ટ થાય છે, પરન્તુ તેની બહારના ક્ષેત્રની અપેક્ષાએ તે સ્પૃષ્ટ થતો નથી એવું કથન કરવામાં આવ્યું છે. "जइ पुट्ठे नियमं अणंतेहिं" જો તે સમય-ક્ષેત્રની અપેક્ષાએ અદ્ધાસમયો વડે સ્પૃષ્ટ થાય છે, તો નિયમથી જ તે અનંત અદ્ધાસમયો વડે સ્પૃષ્ટ થાય છે, કારણ કે અદ્ધાસમય અનાદિ અને અનંત

वर्तमानसमययुक्तानि अनन्तानि द्रव्याणि, अनन्ता एव समयाः, इत्यन्तै स्तैः स्पृष्ट इत्युच्यते ६ । गौतमः पृच्छति-' एगे भंते ! अहमत्थिकायपएसे केवइएहिं धम्मत्थिकायपएसेहिं पुट्ठे ?' हे भदन्त ! एकः खलु अधर्मास्तिकायप्रदेशः कियद्भिः धर्मास्तिकायप्रदेशैः स्पृष्टो भवति ? भगवानाह-, गोयमा ! जहन्नपए चउहिं, उक्कोसपए सत्तहिं' हे गौतम ! जघन्यपदे-जघन्येन चतुर्भिः धर्मास्तिकायप्रदेशैः उत्कृष्टपदे-उत्कृष्टेन सप्तभिः धर्मास्तिकायप्रदेशैः एकोऽधर्मास्तिकायप्रदेशः स्पृष्टो भवति ॥ गौतमः पृच्छति-' केवइएहिं अहम्मत्थिकायपएसेहिं पुट्ठे ?' हे भदन्त ! एकोऽधर्मास्तिकायप्रदेशः कियद्भिः अधर्मास्तिकायप्रदेशैः स्पृष्टो भवति ? भगवानाह-' जहन्नपए तिहिं, उक्कोसपए छहिं, सेसं जहा धम्मत्थिका-

---

अथवा-वर्तमानसमयविशिष्ट अनन्तद्रव्य अनन्तसमयरूप ही हैं-इस प्रकार से भी वह अनन्तसमयों से स्पृष्ट कहा गया है ६ । अब गौतम प्रभु से ऐसा पूछते हैं-'एगे भंते ! अहम्मत्थिकायपएसे केवइएहिं धम्मत्थिकायपएसेहिं पुट्ठे' हे भदन्त ! अधर्मास्तिकाय का प्रदेश धर्मास्तिकाय का एकप्रदेश धर्मास्तिकाय के कितने प्रदेशों से स्पृष्ट होता है ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-'गोयमा ! जहन्नपए चउहिं, उक्कोसपए सत्तहिं' हे गौतम ! एक अधर्मास्तिकाय का प्रदेश जघन्य से चार धर्मास्तिकाय प्रदेशों से और उत्कृष्ट से सात धर्मास्तिकाय प्रदेशों से स्पृष्ट होता है । अब गौतम प्रभु ऐसा पूछते हैं-'केवइएहिं अहम्मत्थिकायपएसेहिं पुट्ठे' एक अधर्मास्तिकाय प्रदेश कितने अधर्मास्तिकायप्रदेशों से स्पष्ट होता है ? उत्तर में प्रभु कहते हैं-'जहन्नपए तिहिं, उक्कोसपए

હોય છે. અથવા-વર્તમાન સમય વિશિષ્ટ અનંત દ્રવ્ય અનંત સમય રૂપ જ છે, આ રીતે પણ તેને અનંત સમયો વડે સ્પૃષ્ટ કહ્યું છે.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-" एगे भंते ! अहम्मत्थिकायपएसे केवइएहिं धम्मत्थिकायपएसेहिं पुट्ठे ?" હે ભગવન્ ! અધર્માસ્તિકાયનો એક પ્રદેશ ધર્માસ્તિકાયના કેટલા પ્રદેશો વડે સ્પૃષ્ટ થાય છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-" गोयमा ! जहन्नपए चउहिं, उक्कोसपए सत्तहिं " હે ગૌતમ ! એક અધર્માસ્તિકાયનો પ્રદેશ ઓછામાં ઓછા ચાર અને વધારેમાં વધારે સાત ધર્માસ્તિકાયના પ્રદેશો વડે સ્પૃષ્ટ થાય છે.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-" केवइएहिं अहम्मत्थिकायपएसेहिं पुट्ठे ?" હે ભગવન્ ! એક અધર્માસ્તિકાય પ્રદેશ કેટલા અધર્માસ્તિકાય પ્રદેશો વડે સ્પૃષ્ટ થાય છે?

यस्स' हे गौतम ! जघन्यपदे-जघन्येन, त्रिभिः अधर्मास्तिकायप्रदेशैः, उत्कृष्ट-पदे-उत्कृष्टेन, षड्भिः अधर्मास्तिकायप्रदेशैः एकोऽधर्मास्तिकायप्रदेशः स्पृष्टो भवति, शेषं यथा धर्मास्तिकायस्य प्रतिपादितं तथैव अधर्मास्तिकायस्यापि प्रतिपत्तव्यम्, तथा च एकस्य अधर्मास्तिकायप्रदेशस्य शेषाणामाकाशास्तिकायादीनां प्रदेशैः स्पर्शोहि पूर्वोक्तैकधर्मास्तिकायप्रदेशस्पर्शानुसारेणैवावसेयः ६, गौतमः पृच्छति-एगे भंते ! 'आगासत्थिकायपएसे केवइएहिं धम्मत्थिकायपएसेहिं पुट्ठे ?' हे भदन्त ! एकः खलु आकाशास्तिकायप्रदेशः कियद्भिः धर्मास्तिकायप्रदेशैः स्पृष्टो भवति ? भगवानाह-गोयमा ! सिय पुट्ठे सिय नो पुट्ठे, जइ पुट्ठे जहन्नपदे

छहिं सेसं जहा धम्मत्थिकायस्स' हे गौतम ! जघन्यरूप से वह अधर्मास्तिकाय का एक प्रदेश तीन अधर्मास्तिकाय प्रदेशों से और उत्कृष्ट रूप से वह अधर्मास्तिकाय का एक प्रदेश ६ अधर्मास्तिकाय प्रदेशों से स्पृष्ट होता है। बाकी का और सब कथन यहां पर धर्मास्तिकाय के विषय में जैसा किया गया है वैसा ही कर लेना चाहिये। तथा च- अधर्मास्तिकाय के एकप्रदेश का शेष आकाशास्तिकायादिकों के प्रदेशों से स्पर्श पूर्वोक्त एक धर्मास्तिकाय प्रदेश स्पर्श के अनुसार ही जानना चाहिये। ६। अब गौतम प्रभु से ऐसा पूछते हैं-'एगे भंते ! आगासत्थिकायपएसे केवइएहिं धम्मत्थिकायपएसेहिं पुट्ठे' हे भदन्त ! आकाशास्तिकाय का एकप्रदेश धर्मास्तिकाय के कितने प्रदेशों से स्पृष्ट होता है ? इसके उत्तर में प्रभु

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-" जहन्नपए तिहिं, उक्कोसपए छहिं, सेसं जहा धम्मत्थिकायस्स " હે ગૌતમ ! અધર્માસ્તિકાયનો એક પ્રદેશ ઓછામાં ઓછા ત્રણ અને વધારેમાં વધારે છ અધર્માસ્તિકાય પ્રદેશો વડે સ્પૃષ્ટ થાય છે બાકીનું સમસ્ત કથન ધર્માસ્તિકાયના વિષયમાં ઉપર કરેલા કથન અનુસાર સમજવું એટલે કે અધર્માસ્તિયકાયના એક પ્રદેશનો આકાશાસ્તિકાય આદિના પ્રદેશો દ્વારા સ્પર્શ પૂર્વોક્ત એક ધર્માસ્તિકાય પ્રદેશના સ્પર્શ અનુસાર જ સમજવો જોઈએ. ।६।

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-" एगे भंते ! आगासत्थिकायपएसे केवइएहिं धम्मत्थिकायपएसेहिं पुट्ठे ?" હે ભગવન્ ! આકાશાસ્તિકાયનો એક પ્રદેશ ધર્માસ્તિકાયના કેટલા પ્રદેશો વડે સ્પૃષ્ટ થાય છે ?

एक्केण वा, दोहिं वा, तीहिं वा, चउहिं वा, उक्कोसपए सत्तहिं ' हे गौतम ! एकः आकाशास्तिकायप्रदेशः धर्मास्तिकायप्रदेशः, स्यात् कदाचित् स्पृष्टो भवति स्यात् कदाचित् नो स्पृष्टो भवति, तत्र-लोकमाश्रित्य स्यात् स्पृष्टो भवति, अलो, कमाश्रित्य स्यात् नो स्पृष्टो भवति, तत्रापि यदा स्पृष्टो भवति तदा जघन्यपदे जघन्येन, एकेन वा, द्वाभ्यां वा, त्रिभिर्वा, चतुर्भिर्वा धर्मास्तिकायप्रदेशैः, उत्कृष्ट-पदे-उत्कृष्टेन सप्तभिः धर्मास्तिकायप्रदेशैः एकः अकाशास्तिकायप्रदेशः स्पृष्टो भवति, एवञ्च यदा स्पृष्टस्तदा जघन्येन एकेन धर्मास्तिकायप्रदेशेन स्पृष्टो भवति, तथाहि-एवंविधलोकान्तवर्तिना धर्मास्तिकायैकप्रदेशेन शेषधर्मास्तिकायप्रदे-शेभ्यो निर्गतेन एकोऽग्रभागवर्त्तीलोकाकाश प्रदेशः स्पृष्टः, वक्रगतस्त्वसौ द्वाभ्यां,

---

कहते हैं-'गोयमा ! सिय पुट्ठे, सिय नो पुट्ठे' जइ पुट्ठे जहन्नपए एक्केण वा दोहिं वा तीहिं वा, चउहिं वा, उक्कोसपए सत्तहिं' हे गौतम ! आकाशास्तिकाय का एकप्रदेश धर्मास्तिकाय प्रदेशों से कदाचित्-लोक को आश्रित करके स्पृष्ट होता है और कदाचित्-अलोक को आश्रित करके स्पृष्ट नहीं होता है, इसमें भी जब वह स्पृष्ट होता है तब जघन्य रूप से एक या दो या तीन या चार-धर्मास्तिकायप्रदेशों से स्पृष्ट होता है और उत्कृष्ट से सात धर्मास्तिकायप्रदेशों द्वारा स्पृष्ट होता है। इस प्रकार जब वह आकाशास्तिकाय का एकप्रदेश धर्मास्तिकाय के एकप्रदेशद्वारा स्पृष्ट होता है तब उसका अभिप्राय ऐसा होता है कि जघन्यरूप से धर्मास्तिकाय के शेष प्रदेशों से निर्गत हुआ ऐसा जो लोकान्त में वर्तमान एक धर्मास्तिकायप्रदेश है उसके

'મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-" गोयमा ! सिय पुट्ठे, सिय नो पुट्ठे " હે ગૌતમ ! આકાશાસ્તિકાયનો એક પ્રદેશ કયારેક-લોકને આશ્રિત કરીને-ધર્માસ્તિકાય પ્રદેશો વડે સ્પૃષ્ટ થાય છે, અને કયારેક-અલોકને આશ્રિત કરીને-ધર્માસ્તિકાય પ્રદેશો વડે સ્પૃષ્ટ થતો નથી. " जइ पुट्ठे, जहन्नपए एक्केण वा दोहिं वा, तीहिं वा, चउहिं वा, उक्कोसपए सत्तहिं " જ્યારે તે ધર્માસ્તિકાય પ્રદેશો વડે સ્પૃષ્ટ થાય છે, ત્યારે ઓછામાં ઓછા એક અથવા બે અથવા ત્રણ અથવા ચાર અને વધારેમાં વધારે સાત ધર્માસ્તિકાયપ્રદેશો વડે સ્પૃષ્ટ થાય છે. આકાશાસ્તિકાયનો એક પ્રદેશ ધર્માસ્તિકાયના એક પ્રદેશ વડે સ્પૃષ્ટ થવાનો ભાવાર્થ આ પ્રમાણે છે-જઘન્યરૂપે ધર્માસ્તિકાયના બાકીના પ્રદેશોમાંથી નિર્ગત થયેલો એવો જે લોકાન્તમાં રહેલો એક ધર્માસ્તિકાય પ્રદેશ છે તેના દ્વારા અલોકાકાશના અગ્રભાગમાં રહેલો એવો લોકાકાશનો એક પ્રદેશ સ્પૃષ્ટ

यस्य च लोकाकाशप्रदेशस्य अग्रतोऽधस्तादुपरि च धर्मास्तिकायप्रदेशाः सन्ति स त्रिभिर्धर्मास्तिकायप्रदेशैः स्पृष्टः। यस्त्वेवम्-लोकान्ते कोणगत आकाश-प्रदेशोऽप्रावेकेन धर्मास्तिकायप्रदेशेन,तदवगाढेन, अन्येन च उपरिवर्तिना, अधो-वर्तिना वा, द्वाभ्यां च दिग्द्वयावस्थिताभ्याम् स्पृष्टः, इत्येवं चतुर्भिः, यश्चाधस्तात् उपरि च, एवं दिग्द्वये च तत्रैव वर्तमानेन च धर्मास्तिकायप्रदेशेन स्पृष्टः स पञ्चभिः, यस्त्वधस्तादुपरि च तथा दिक्त्रये, तत्रैव च वर्तमानेन धर्मास्तिकायप्रदे-

द्वारा अलोकाकाश के अग्रभाग में वर्तमान ऐसा लोकाकाश का एक प्रदेश स्पृष्ट होता है। तथ इसका अभिप्राय ऐसा है कि वक्रगत आकाश प्रदेश धर्मास्तिकाय के दो प्रदेशों द्वारा स्पृष्ट होता है। तथा जिस लोकाकाशप्रदेश के आगे, नीचे, ऊपर धर्मास्तिकाय के प्रदेश हैं वह लोकाकाशप्रदेश तीन धर्मास्तिकायप्रदेशों द्वारा स्पृष्ट होता है। तथा -लोकान्त में कोने में रहा हुआ जो आकाशप्रदेश है वह वहां पर रहे हुए एक धर्मास्तिकाय प्रदेश द्वारा तथा दो दिशाओं में से ऊपर नीचे की दो दिशाओं में रहे हुए दो प्रदेशों में से-किसी एकप्रदेश द्वारा एवं दो दिशाओं में रहे हुए-आसपास की दो दिशाओं में रहे हुए दो प्रदेशों-धर्मास्तिकाय के दो प्रदेशों द्वारा स्पृष्ट होता है-इस प्रकार धर्मास्तिकाय के चार प्रदेशों द्वारा वह आकाशास्तिकाय का एक प्रदेश स्पृष्ट होता। तथा जो आकाश का प्रदेश ऊपर नीचे के दो प्रदेशों द्वारा-धर्मास्तिकाय के दो प्रदेशों द्वारा, तथा आसपास की दो दिशाओं में रहे हुए दो धर्मास्तिकायप्रदेशों द्वारा, तथा, उसी आकाश प्रदेश पर रहे हुए एक धर्मास्तिकायप्रदेश द्वारा स्पृष्ट होता है वह धर्मास्ति-

થાય છે. વક્રગત આકાશપ્રદેશ ધર્માસ્તિકાયના બે પ્રદેશો દ્વારા સ્પૃષ્ટ થાય છે. તથા જે લોકાકાશ પ્રદેશની આગળ, નીચે અને ઉપર ધર્માસ્તિકાયપ્રદેશો છે, તે લોકાકાશપ્રદેશ ત્રણ ધર્માસ્તિકાયપ્રદેશો વડે સ્પૃષ્ટ થાય છે. તથા લોકાન્તમાં ખૂણામાં રહેલો જે આકાશપ્રદેશ છે તે ત્યાં રહેલા એક ધર્માસ્તિ-કાયપ્રદેશ વડે, તથા ઉપર અને નીચેની બે દિશાઓમાં રહેલા બે પ્રદેશોમાંના કોઈ એક પ્રદેશ દ્વારા, તથા આસપાસની બે દિશાઓમાં રહેલા ધર્માસ્તિકાયના બે પ્રદેશો વડે સ્પૃષ્ટ થાય છે. આ રીતે ધર્માસ્તિકાયના ચાર પ્રદેશો વડે તે આકાશાસ્તિકાયનો એક પ્રદેશ સ્પૃષ્ટ થાય છે. જે આકાશનો પ્રદેશ ઉપર નીચેના ધર્માસ્તિકાયના બે પ્રદેશો દ્વારા, આસપાસની બે દિશાઓમાં રહેલા બે ધર્માસ્તિકાયપ્રદેશો દ્વારા અને એજ આકાશપ્રદેશ પર રહેલા એક ધર્મા-સ્તિકાયપ્રદેશ દ્વારા સ્પૃષ્ટ થાય છે, તે આકાશપ્રદેશને ધર્માસ્તિકાયના પાંચ

शेन स्पृष्टः स षड्भिः, यश्चाधस्तादुपरि च तथा दिक्षु चतुष्टये तत्रैव च वर्तमानेन धर्मास्तिकायप्रदेशेन स्पृष्टः स सप्तभिः धर्मास्तिकायप्रदेशैः स्पृष्टो भवतीति भावः। 'एवं अहम्मत्थिकायपएसेहिं वि' एवं-पूर्वोक्तरीत्यैव, अधर्मास्तिकाय-प्रदेशैरपि एक आकाशास्तिकायप्रदेशैः स्यात्-कदाचित् स्पृष्टो भवति, स्यात्-कदाचित्, नो स्पृष्टो भवति, यदापि स्पृष्टो भवति तदापि जघन्येन एकेन वा, द्वाभ्यां वा, त्रिभिर्वा, चतुर्भिर्वा, उत्कृष्टेन तु सप्तभिः स्पृष्टो भवति २, गौतमः

काय के पांच प्रदेशों द्वारा स्पृष्ट माना गया है। तथा जो आकाश-प्रदेश नीचे ऊपर के वर्तमान धर्मास्तिकायप्रदेशद्वय से, तथा तीन दिशा में वर्तमान धर्मास्तिकायप्रदेशत्रय से और वहीं पर वर्तमान एक धर्मास्तिकायप्रदेश से स्पृष्ट होता है वह आकाशास्तिकाय का एक-प्रदेश धर्मास्तिकाय के ६ प्रदेशों द्वारा स्पृष्ट होता माना गया है। तथा जो आकाशास्तिकाय का एकप्रदेश ऊपर नीचे के दो धर्मास्तिकाय के प्रदेशों से तथा चारों दिशाओं में वर्तमान चार धर्मास्तिकायप्रदेशों से तथा वहीं पर वर्तमान एक धर्मास्तिकाय प्रदेश से स्पृष्ट होता है वह सात धर्मास्तिकाय प्रदेशों से स्पृष्ट हुआ माना जाता है। 'एवं अहम-त्थिकायपएसेहिं वि' इसी प्रकार से आकाशास्तिकाय का एकप्रदेश कदाचित् अधर्मास्तिकाय के प्रदेशों द्वारा स्पृष्ट होता है और कदाचित् स्पृष्ट नहीं होता है। यदि अधर्मास्तिकाय के प्रदेशों से वह आकाशास्तिकाय का प्रदेश स्पृष्ट होता है-तो वह जघन्य से उसके एकप्रदेश से अथवा दो प्रदेशों से, या तीन

પ્રદેશો દ્વારા સ્પૃષ્ટ થયેલું ગણાય છે. જે આકાશપ્રદેશ ઉપર નીચે રહેલા બે ધર્માસ્તિકાયપ્રદેશો વડે, તથા ત્રણ દિશામાં રહેલા ત્રણ ધર્માસ્તિકાયપ્રદેશો વડે અને ત્યાંજ રહેલા એક ધર્માસ્તિકાયપ્રદેશ વડે સ્પૃષ્ટ થાય છે, તે આકાશાસ્તિકાયના એક પ્રદેશને ધર્માસ્તિકાયના છ પ્રદેશો વડે સ્પૃષ્ટ થયેલો માનવામાં આવે છે. તથા જે આકાશાસ્તિકાયનો એક પ્રદેશ ઉપર નીચેના બે ધર્માસ્તિકાયના પ્રદેશો વડે, તથા ચાર દિશામાં રહેલા ચાર ધર્માસ્તિકાયના પ્રદેશો વડે, તથા ત્યાંજ રહેલા એક ધર્માસ્તિકાયના પ્રદેશ વડે સ્પૃષ્ટ થાય છે, તેને સાત ધર્માસ્તિકાયપ્રદેશો વડે સ્પૃષ્ટ થયેલો માનવામાં આવે છે. "एवं अहम्मत्थिकायपएसेहिं वि" એજ પ્રમાણે આકાશાસ્તિકાયનો એક પ્રદેશ કયારેક અધર્માસ્તિકાયના પ્રદેશો વડે સ્પૃષ્ટ થાય છે અને કયારેક થતો નથી. જો તે આકાશાસ્તિકાયનો એક પ્રદેશ અધર્માસ્તિકાયના પ્રદેશો વડે સ્પૃષ્ટ

पृच्छति–' केवइएहिं आगासत्थिकायप्पएसेहिं पुट्ठे ?' हे भदन्त ! एकः आकाशास्तिकायप्रदेशः कियद्भिः आकाशास्तिकायप्रदेशैः स्पृष्टो भवति ? भगवानाह–' छहिं' हे गौतम ! षड्भिः आकाशास्तिकायप्रदेशैः एकः आकाशास्तिकायप्रदेशः स्पृष्टो भवति, एकस्य लोकाकाशप्रदेशस्य आलोकाकाशप्रदेशस्य वा षड्दिग् व्यवस्थितैरेव आकाशास्तिकायप्रदेशैः स्पर्शनात् २, गौतमः पृच्छति–' केवइएहिं जीवत्थिकाय पएसेहिं पुट्ठे ?' हे भदन्त ! एकः आकाशास्तिकायप्रदेशः कियद्भिः जीवास्तिकायप्रदेशैः स्पृष्टो भवति ? भगवानाह–' सिय पुट्ठे सिय नो पुट्ठे, जइ पुट्ठे नियमं अणंतेहिं ' हे गौतम ! एक आकाशास्तिकायप्रदेशो

प्रदेशों से या चार प्रदेशों से और उत्कृष्ट से सातप्रदेशों से स्पृष्ट होता है । २ । अब गौतमस्वामी प्रभु से ऐसा पूछते हैं–'केवइएहिं आगासत्थिकायपएसेहिं पुट्ठे' हे भदन्त ! एक आकाशास्तिकायप्रदेश कितने आकाशास्तिकाय प्रदेशों द्वारा स्पृष्ट होता है ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं–'छहिं' हे गौतम । एक आकाशास्तिकायप्रदेश छह आकाशास्तिकाय प्रदेशों द्वारा स्पृष्ट होता । क्योंकि एक लोकाकाशका प्रदेश अथवा अलोकाकाश का प्रदेश षट्दिग्व्यवस्थित ही आकाशास्तिकायप्रदेशों द्वारा छुआ छुआ होता है । इसलिये छह प्रदेशों द्वारा स्पृष्ट होता है ? उत्तर में प्रभु कहते हैं–'सिय पुट्ठे सिय नो पुट्ठे, जइ पुट्ठे

થાય છે, તો ઓછામાં ઓછા એક પ્રદેશ વડે અથવા બે પ્રદેશો વડે અથવા ત્રણ પ્રદેશો વડે અથવા ચાર પ્રદેશો વડે અને વધારેમાં વધારે સાત પ્રદેશો વડે સ્પૃષ્ટ થાય છે.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન–" केवइएहिं आगासत्थिकायपएसेहिं पुट्ठे ?" હે ભગવન્! આકાશાસ્તિકાયનો એક પ્રદેશ કેટલા આકાશાસ્તિકાયપ્રદેશો વડે સ્પૃષ્ટ થાય છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર–" छहिं " આકાશાસ્તિકાયનો એક પ્રદેશ છ આકાશાસ્તિકાયપ્રદેશો વડે સ્પૃષ્ટ થાય છે, કારણ કે એક લોકાકાશનો પ્રદેશ અથવા અલોકાકાશનો પ્રદેશ છ દિશાઓમાં રહેલા જ આકાશાસ્તિકાયપ્રદેશો દ્વારા સ્પૃષ્ટ થાય છે. તેથી જ છ પ્રદેશો વડે તેની સ્પર્શના કહી છે.

ગૌતમસ્વામીનો પ્રશ્ન–" केवइएहिं जीवत्थिकायपएसेहिं पुट्ठे ?" હે ભગવન્! આકાશાસ્તિકાયનો એક પ્રદેશ જીવાસ્તિકાયના કેટલા પ્રદેશો વડે સ્પૃષ્ટ થાય છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર–" सिय पुट्ठे, सिय नो पुट्ठे, जइ पुट्ठे नियमं अणंतेहिं " હે ગૌતમ ! એક આકાશાસ્તિકાયનો પ્રદેશ કયારેક જીવાસ્તિકાયના

जीवास्तिकायप्रदेशैः स्यात्-कदाचित्, स्पृष्टो भवति, स्यात्-कदाचित् नो स्पृष्टो भवति, यदाऽसौ लोकाकाशप्रदेशो विवक्षितस्तदा स्पृष्टो भवति, यदाऽसौ लोकाकाशप्रदेशविशेषो विवक्षितस्तदा न स्पृष्टो भवति, जीवानां तत्रासद्भावात्, तत्र यदा स्पृष्टो भवति तदा नियमात्-नियमतः, अनन्तैः जीवास्तिकायप्रदेशैः स्पृष्टो भवति ४, 'एवं पोग्गलत्थिकायपएसेहिं वि, अद्धासमएहिं वि' एवं-पूर्वोक्तरीत्यैव, पुद्गलास्तिकायप्रदेशैरपि स्यात्-कदाचित् स्पृष्टो भवति, स्यात्-कदाचित्, नो स्पृष्टो भवति तत्रापि यदा स्पृष्टो भवति तदा अनन्तैः पुद्गलास्तिकायप्रदेशैः एक आकाशास्तिकायप्रदेशः स्पृष्टो भवति ५,

नियमं अणंतेहिं' हे गौतम! एक आकाशास्तिकाय का प्रदेश जीवास्तिकाय के प्रदेशों द्वारा कदाचित् स्पृष्ट होता है और कदाचित् स्पृष्ट नहीं होता है। यदि वह उनके द्वारा स्पृष्ट होता है तो नियम से वह जीवास्तिकाय के अनन्तप्रदेशों द्वारा स्पृष्ट होता है। तात्पर्य कहने का यह है कि जब लोकाकाशप्रदेश विवक्षित होता है तब तो वह उनके द्वारा स्पृष्ट होता है और जब अलोकाकाशप्रदेशविशेष विवक्षित होता है तब वह उनके द्वारा स्पृष्ट नहीं होता है। क्योंकि वहां पर जीवों का सद्भाव नहीं माना गया है। कारण कि आकाश के सिवाय और कोई द्रव्य नहीं पाया जाता है ।४। 'एवं पोग्गलत्थिकायपएसेहिं वि. अद्धासमएहिं वि' इसी प्रकार से आकाशास्तिकाय का एकप्रदेश पुद्गलास्तिकायप्रदेशों द्वारा कदाचित् स्पृष्ट होता है और कदाचित् स्पृस्ट नहीं होता है, यदि वह इनके द्वारा स्पृष्ट होता है तो नियम से अनन्तपुद्गलास्तिकायप्रदेशों द्वारा स्पृष्ट होता है ।५। इसी

પ્રદેશો વડે સ્પૃષ્ટ થાય છે અને કયારેક સ્પૃષ્ટ થતો નથી જો તે તેમના દ્વારા સ્પૃષ્ટ થાય છે તો નિયમથી જ જીવાસ્તિકાયના અનંત પ્રદેશો દ્વારા સ્પૃષ્ટ થાય છે. આ કથનનો ભાવાર્થ એ છે કે જ્યારે લોકાકાશપ્રદેશ વિવક્ષિત થાય છે, ત્યારે તે તેમના દ્વારા સ્પૃષ્ટ થાય છે, પરન્તુ જ્યારે અલોકાકાશપ્રદેશવિશેષ વિવક્ષત થાય છે, ત્યારે તે તેમના દ્વારા સ્પૃષ્ટ થતો નથી, કારણ કે ત્યાં જીવોનો સદ્ભાવ જ હોતો નથી અલોકાકાશમાં આકાશ સિવાય બીજા કોઈ દ્રવ્યનો સદ્ભાવ જ હોતો નથી. "एवं पोग्गलत्थिकायपएसेहिं वि, अद्धासमएहिं वि" એજ પ્રમાણે આકાશાસ્તિકાયનો એક પ્રદેશ પુદ્ગલાસ્તિકાય પ્રદેશો દ્વારા કયારેક સ્પૃષ્ટ થાય છે અને કયારેક સ્પૃષ્ટ થતો નથી. જો તે તેમના દ્વારા સ્પૃષ્ટ થાય છે તો નિયમથી જ અનંત પુદ્ગલાસ્તિકાયપ્રદેશો વડે સ્પૃષ્ટ થાય છે. એજ પ્રમાણે આકાશાસ્તિકાયનો એક પ્રદેશ કયારેક

एवं-तथैव, अद्धासमयैरपि स्यात्-कदाचित् समयक्षेत्रापेक्षया स्पृष्टो भवति, स्यात्-कदाचित् बहिःक्षेत्रापेक्षया नो स्पृष्टो भवति, तत्रापि यदा स्पृष्टो भवति तदा नियमात् अनन्तैः अद्धासमयैः एक आकाशास्तिकायप्रदेशः स्पृष्टो भवति ६, गौतमः पृच्छति-'एगे भंते ! जीवास्तिकायपएसे केवइएहिं धम्मत्थिकायपएसेहिं पुट्ठे ? पुच्छा' हे भदन्त ! एकः खलु जीवास्तिकायप्रदेशः कियद्भिः धर्मास्तिकायप्रदेशैः स्पृष्टः ? इति पृच्छा, भगवानाह-' जहन्नपदे चउहिं, उक्कोसपए सत्तहिं' हे गौतम ! जघन्यपदे-जघन्येन चतुर्भिः धर्मास्तिकायप्रदेशैः, उत्कृष्टपदे-

प्रकार से आकाशास्तिकाय का एकप्रदेश अद्धासमयों द्वारा भी कदाचित् स्पृष्ट होता है और कदाचित् स्पृष्ट नहीं होता है। यदि वह इनके द्वारा स्पृष्ट होता है तो तो नियम से वह अनन्त अद्धासमयों द्वारा स्पृष्ट होता है। इस कथन का तात्पर्य ऐसा है कि अद्धासमय का सद्भाव ढाईद्वीप में ही माना गया है इसके बाहिर नहीं। यहां जो ऐसा कहा गया है कि आकाशास्तिकाय का एकप्रदेश अद्धासमयों द्वारा कदाचित् स्पृष्ट होता है-सो यह कथन समयक्षेत्रकी अपेक्षा से किया गया है। बहिःक्षेत्र की अपेक्षा से नहीं। बहिःक्षेत्र की अपेक्षा से तो 'कदाचित् वह इनके द्वारा स्पष्ट नहीं होता है' यह किया गया है।६। अब गौतमस्वामी प्रभु से ऐसा पूछते हैं-'एगे भंते ! जीवत्थिकायपएसे केवइएहिं धम्मत्थिकायपएसेहिं पुट्ठे पुच्छा' हे भदन्त ! जीवास्तिकाय का एकप्रदेश धर्मास्तिकाय के कितने प्रदेशों द्वारा स्पृष्ट होता है ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-'जहन्नपए चउहिं, उक्कोसपए

અદ્ધાસમયો વડે સ્પૃષ્ટ થાય છે અને કયારેક તેમના વડે સ્પૃષ્ટ થતો નથી. જો તેમની સાથે સ્પૃષ્ટ થાય તો નિયમથી જ અનંત અદ્ધાસમયો વડે સ્પૃષ્ટ થાય છે. આ પ્રકારના કથનનું કારણ એ છે કે-અદ્ધાસમયનો સદ્ભાવ અઢીદ્વીપમાં જ હોય છે, તેની બહારના ક્ષેત્રોમાં હોતો નથી. "આકાશાસ્તિકાયનો પ્રદેશ કયારેક અદ્ધાસમયો વડે સ્પૃષ્ટ થાય છે." આ કથન સમયક્ષેત્રની અપેક્ષાએ કરવામાં આવ્યું છે. "આકાશાસ્તિકાયનો એક પ્રદેશ કયારેક અદ્ધાસમયો વડે સ્પૃષ્ટ થતો નથી," આ કથન સમયક્ષેત્ર (અઢી દ્વીપ)ની બહારના ક્ષેત્રોની અપેક્ષાએ કરવામાં આવ્યું છે.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-"एगे भंते ! जीवत्थिकायपएसे केवइएहिं धम्मत्थिकायपएसेहिं पुट्ठे पुच्छा" હે ભગવન્ ! જીવાસ્તિકાયનો એક પ્રદેશ કેટલા ધર્માસ્તિકાયપ્રદેશો દ્વારા સ્પૃષ્ટ થાય છે ?

उत्कृष्टेन सप्तभिः धर्मास्तिकायप्रदेशैः एको जीवास्तिकायप्रदेशः स्पृष्टो भवति,

ननु लोकान्तकोणलक्षणे जघन्यपदे स्पर्शकप्रदेशानां सर्वाल्पत्वात् चतुर्भिरिति कथमुक्तमिति चेदुच्यते-अधस्तात्, उपरिवा एकः, दिशोस्तु द्वौ, एकस्तु यत्र जीवप्रदेश एवावगाढ इत्येवं चतुर्भिरित्यस्य जघन्येन युक्तत्वात्, एकश्च जीवास्तिकायप्रदेशः, एकत्राकाशप्रदेशादौ केवलिसमुद्घातस्यैव लभ्यमानत्वात् १, 'एवं अहम्मत्थिकायपएसेहिं वि' एवं पूर्वोक्तरीत्यैव, अधर्मास्तिकायप्रदेशैरपि

सत्तहिं' हे गौतम ! जघन्य से चार धर्मास्तिकायप्रदेशों द्वारा और उत्कृष्ट से सातधर्मास्तिकायप्रदेशों द्वारा एक जीवास्तिकायप्रदेश स्पृष्ट होता है। यहां ऐसी आशंका हो सकती है कि लोकान्तकोने में-जघन्यपद में-स्पर्शकप्रदेशों की सर्वाल्पता होती है-फिर आप ऐसा कैसे कहते हैं कि एक जीवास्तिकायप्रदेश जघन्य से चार धर्मास्तिकायप्रदेशों द्वारा स्पृष्ट होता है ? तो इसका उत्तर ऐसा है-ऊपर अथवा नीचे एक प्रदेश से, आसपास की दो दिशाओं के प्रदेशों से और एक वह प्रदेश कि जहां यह अवगाढ है इस प्रकार चार प्रदेशों द्वारा यह जघन्य से स्पृष्ट हुआ माना गया है। 'एकः जीवास्तिकायप्रदेशः' ऐसा जो कहा गया है-वह केवलिसमुद्घात कि अपेक्षा से कहा गया है-क्योंकि केवलिसमुद्घातवाले जीव का ही एक आकाशप्रदेशादि में एक प्रदेश हो सकता है। 'एवं अहम्मत्थिकायपएसेहिं वि' इसी प्रकार से

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-" जहन्नपए चउहिं, उक्कोसपए सत्तहिं " હે ગૌતમ! જીવાસ્તિકાયનો એક પ્રદેશ ઓછામાં ઓછા ચાર અને વધારેમાં વધારે સાત ધર્માસ્તિકાય પ્રદેશો દ્વારા સ્પૃષ્ટ થાય છે.

શંકા-લોકાન્તખૂણામાં-ઓછામાં ઓછા પ્રદેશોની અપેક્ષાએ-સ્પર્શક પ્રદેશોની સર્વાલ્પતા હોય છે. છતાં આપ શા કારણે એવું કહો છો કે એક જીવાસ્તિકાયપ્રદેશ ઓછામાં ઓછા ચાર ધર્માસ્તિકાય પ્રદેશો વડે સ્પૃષ્ટ થાય છે?

સમાધાન-ઉપર અથવા નીચેના એક પ્રદેશ વડે, આસપાસની બે દિશાઓના બે પ્રદેશો વડે, અને એક તે પ્રદેશ વડે કે જ્યાં તે અવગાઢ (રહેલો) હોય છે, આ પ્રકારે ઓછામાં ઓછા ચાર પ્રદેશો વડે તે સ્પૃષ્ટ થતો ગણાય છે.

" एकः जीवास्तिकायप्रदेशः " એવું જે કહેવામાં આવ્યું છે તે કેવલિસમુદ્ઘાતની અપેક્ષાએ કહેવામાં આવ્યું છે, કારણ કે કેવલિસમુદ્ઘાતવાળા જીવનો જ એક આકાશપ્રદેશાદિમાં એક પ્રદેશ હોઈ શકે છે.

जघन्येन चतुर्भिः, उत्कृष्टेन सप्तभिश्च एको जीवास्तिकायप्रदेशः स्पृष्टः २। गौतमः पृच्छति-'केवइएहिं आगासत्थिकायप्पएसेहिं पुट्ठे ?' हे भदन्त ! एकोजीवास्तिकायप्रदेशः कियद्भिः आकाशास्तिकायप्रदेशैः स्पृष्टः ? भगवानाह-'सत्तहिं' हे गौतम ! सप्तभिः आकाशास्तिकायप्रदेशैः एको जीवास्तिकायप्रदेशः स्पृष्टो भवति। गौतमः पृच्छति-' केवइएहिं जीवत्थिकायप्पएसेहिं पुट्ठे ?' हे भदन्त ! कियद्भिः जीवास्तिकायप्रदेशैः एको जीवास्तिकायप्रदेशः स्पृष्टो भवति ? 'सेसं जहा धम्मत्थिकायस्स' शेषं यथा धर्मास्तिकायस्य प्रतिपादितं तथैव जीवास्तिकायस्यापि प्रतिपत्तव्यम्; तथा च यथा एको धर्मास्तिकायप्रदेशः अनन्तै जीवास्तिकायप्रदेशैः स्पृष्टो भवति तथैव एको जीवास्तिकायप्रदेशोऽपि अनन्तैः जीवास्तिकायप्रदेशैः स्पृष्टो भवतीति भावः। गौतमः पृच्छति-' एगे भंते !

चार अधर्मास्तिकायप्रदेशों द्वारा भी जघन्य से और सातप्रदेशों द्वारा उत्कृष्ट से एक जीवास्तिकायप्रदेश स्पृष्ट होता है ऐसा जानना चाहिये२। अब गौतम प्रभु से ऐसा पूछते हैं-' केवइएहिं आगासत्थिकायपएसेहिं पुट्ठे' हे अदन्त एक जीवास्तिकायप्रदेश कितने आकाशास्तिकायप्रदेशों द्वारा स्पृष्ट होता है ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं- सेसं जहा धम्मत्थिकायस्स' हे गौतम ! धर्मास्तिकाय के विषय में जैसा कथन कियागया है-वैसा ही बाकी का कथन जीवास्तिकाय के विषय में करना चाहिये। तथा च-जैसा एक धर्मास्तिकाय का प्रदेश अनन्तजीवास्तिप्रदेशों द्वारा स्पृष्ट हुआ कहा गया है, उसी प्रकार एक जीवास्तिकाय प्रदेश भी अनन्त जीवास्तिकायप्रदेशों द्वारा स्पृष्ट होता है ऐसा कहा गया है।

" एवं अहम्मत्थिकायपएसेहिं वि " એજ પ્રમાણે જીવાસ્તિકાયનો એક પ્રદેશ ઓછામાં ઓછા ચાર અને વધારેમાં વધારે સાત અધર્માસ્તિકાયપ્રદેશો વડે સ્પૃષ્ટ થાય છે.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-" केवइएहिं आगासत्थिकायपएसेहिं पुट्ठे ?" હે ભગવન્! જીવાસ્તિકાયનો એક પ્રદેશ આકાશાસ્તિકાયના કેટલા પ્રદેશો વડે સ્પૃષ્ટ થાય છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-" सेसं जहा धम्मत्थिकायस्स " હે ગૌતમ ! જેવું કથન ધર્માસ્તિકાયના વિષયમાં કરવામાં આવ્યું છે, એજ પ્રમાણે બાકીનું જીવાસ્તિકાયના વિષયમાં થવું જોઈએ એટલે કે જેમ એક ધર્માસ્તિકાયનો પ્રદેશ અનંત જીવાસ્તિકાયપ્રદેશો દ્વારા સ્પૃષ્ટ થાય છે, એજ પ્રમાણે એક જીવાસ્તિકાયપ્રદેશ પણ અનંત જીવાસ્તિકાયપ્રદેશો વડે સ્પૃષ્ટ થાય છે.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-" एगे भंते ! पोग्गलत्थिकायपएसे केवइएहिं धम्म-

पोग्गलत्थिकायपएसे केवइएहिं धम्मत्थिकायपएसेहिं पुट्ठे ?' हे भदन्त ! एकः खलु पुद्गलास्तिकायप्रदेशः कियद्भिः धर्मास्तिकायप्रदेशैः स्पृष्टो भवति ? एवम् कियद्भिः अधर्मास्तिकायप्रदेशादिभिः स्पृष्टो भवति ? 'एवं जहेव जीवत्थिकायस्स' एवं पूर्वोक्तरीत्या यथैव जीवास्तिकायस्य प्रतिपादनम् कृतम् तथैव पुद्गलास्तिकायस्यापि प्रतिपादनं कर्त्तव्यम् तथा च-एकः पुद्गलास्तिकायप्रदेशो जघन्येन चतुर्भिः उपर्यधोभागस्याविवक्षणात् उत्कृष्टेन सप्तभिः धर्मास्तिकाय-

---

अब गौतम प्रभु से ऐसा पूछते हैं-'एगे भंते ! पोग्गलत्थिकायपएसे केवइएहिं धम्मत्थिकायपएसेहिं पुट्ठे' हे भदन्त ! एक पुद्गलास्तिकाय-प्रदेश कितने धर्मास्तिकायप्रदेशों द्वारा स्पृष्ट होता है ? इसी प्रकार वह कितने अधर्मास्तिकायादिकों के प्रदेशों से स्पृष्ट होता है ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं 'एवं जहेव जीवत्थिकायस्स' हे गौतम ! जिस प्रकार पूर्वोक्तरीति से जीवास्तिकाय का प्रतिपादन किया गया है उसी प्रकार पुद्गलास्तिकाय का भी प्रतिपादन कर लेना चाहिये। तथा च-एक पुद्गलास्तिकाय प्रदेश जघन्य से चार धर्मास्तिकाय प्रदेशों द्वारा-ऊपर नीचे की दिशाओं में के किसी एक धर्मास्तिकाय के प्रदेश से आजू-बाजू की दो दिशाओं के धर्मास्तिकाय के दो प्रदेशों से और एक वहां के धर्मास्तिकाय के प्रदेश से कि जहां वह अवगाढ हो रहा है, स्पृष्ट होता है। इस प्रकार वह पुद्गलास्तिकाय का एकप्रदेश धर्मास्तिकाय-के जघन्यरूप में ४ प्रदेशों से स्पृष्ट होता है यहां उपरि अधोभाग की

त्थिकायपएसेहिं पुट्ठे ?" હે ભગવન્! પુદ્ગલાસ્તિકાયનો એક પ્રદેશ ધર્માસ્તિ-કાયના કેટલા પ્રદેશો વડે સ્પૃષ્ટ થાય છે? એજ પ્રમાણે તે કેટલા અધર્મા-સ્તિકાયાદિકોના પ્રદેશો વડે સ્પૃષ્ટ થાય છે?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-" एवं जहेव जीवत्थिकायस्स " હે ગૌતમ! આ વિષયને અનુલક્ષીને જેવું જીવાસ્તિકાયનું પ્રતિપાદન કરવામાં આવ્યું છે, એજ પ્રમાણે પુદ્ગલાસ્તિકાયનું પણ પ્રતિપાદન કરવું જોઇએ. જેમ કે-પુદ્ગલા-સ્તિકાયનો એક પ્રદેશ ધર્માસ્તિકાયના ઓછામાં ઓછા ચાર પ્રદેશો વડે (ઉપર નીચેના ધર્માસ્તિકાય પ્રદેશોમાંના કોઈ એક પ્રદેશ વડે, આસપાસની બે દિશાઓના ધર્માસ્તિકાયના બે પ્રદેશો વડે, અને જ્યાં તે અવગાઢ છે ત્યાંના એક ધર્માસ્તિકાય પ્રદેશ વડે) સ્પૃષ્ટ થાય છે. અહીં ઉપરિ અધોભા-ગની વિવક્ષા કરવામાં આવી નથી. ઉત્કૃષ્ટની અપેક્ષાએ પુદ્ગલાસ્તિકાયનો એક

प्रदेशैः स्पृष्टः, एवमेव अधर्मास्तिकायप्रदेशैरपि स्पृष्टो विज्ञेयः, सप्तभिश्चाकाशास्तिकायप्रदेशैः स्पृष्टः, अनन्तैश्च जीवास्तिकायप्रदेशैः स्पृष्टः, अनन्तैश्च पुद्गलास्तिकायप्रदेशैः स्पृष्टो भवति, इति भावः ॥ सू० ८ ॥

द्विप्रदेशिकादि पुद्गलास्तिकायस्पर्शद्वारवक्तव्यता।

मूलम्–"दो भंते! पोग्गलत्थिकायपएसा केवइएहिं धम्मत्थिकायप्पएसेहिं पुट्ठा? जहन्नपदे छहिं, उक्कोसपए बारसहिं, एवं अहमत्थिकायप्पएसेहिं वि, केवइएहिं आगासत्थिकायपएसेहिं पुट्ठा? बारसहिं, सेसं जहा धम्मत्थिकायस्स। तिन्नि भंते! पोग्गलत्थिकायपएसा केवइएहिं धम्मत्थिकायपएसेहिं पुट्ठा? जहन्नपए अट्ठहिं, उक्कोसपए सत्तरसहिं, एवं अहम्मत्थिकायपएसेहिं वि, केवइएहिं आगासत्थिकायपएसेहिं पुट्ठा? सत्तरसहिं, सेसं जहा धम्मत्थिकायस्स, एवं एएणं गमेणं भाणियव्वं, जाव दस, नवरं जहन्नपदे दोन्नि पक्खिवियव्वा, उक्कोसपए पंच। चत्तारि पोग्गलत्थिकायपएसा०? जहन्नपए दसहिं, उक्कोसपए बावीसाए। पंच पोग्गलत्थिकायपएसा०? जहन्नपदे बारसहिं, उक्कोसपदे बत्तीसाए। छ पोग्गलत्थिकाय-

---

विवक्षा नहीं की गई है। तथा उत्कृष्टरूप में वह सात धर्मास्तिकाय प्रदेशों से स्पृष्ट होता है इसी प्रकार से वह पुद्गलास्तिकाय का एक प्रदेश अधर्मास्तिकाय के प्रदेशों से भी स्पष्ट होता है। सात आकाशास्तिकाय प्रदेशों से वह स्पष्ट है; अनन्तजीवास्तिकायप्रदेशों से स्पृष्ट होता है और अनन्त ही पुद्गलास्तिकायप्रदेशों से स्पृष्ट होता है॥सू० ८॥

इति एकास्तिकायप्रदेशस्पर्शद्वारवक्तव्यता ॥

પ્રદેશ ધર્માસ્તિકાયના સાત પ્રદેશો વડે સ્પૃષ્ટ થાય છે. એજ પ્રમાણે તે પુદ્ગલાસ્તિકાયનો એક પ્રદેશ અધર્માસ્તિકાયના પ્રદેશો વડે પણ સ્પૃષ્ટ થાય છે. તે સાત આકાશાસ્તિકાય પ્રદેશો વડે સ્પૃષ્ટ થાય છે, અનંત જીવાસ્તિકાયપ્રદેશો વડે સ્પૃષ્ટ થાય છે અને અનંત પુદ્ગલાસ્તિકાય પ્રદેશો વડે પણ સ્પૃષ્ટ થાય છે. ॥સૂ૦૮॥

એકાસ્તિકાયપ્રદેશસ્પર્શનાદ્વારવક્તવ્યતા સંપૂર્ણ

पएसा०? जहन्नपदे चोद्दसहिं, उक्कोसपदे बत्तीसाए। सत्त पोग्गलत्थिकायपएसा०? जहन्नेणं सोलसहिं० उक्कोसेणं सत्तत्तीसाए। अट्ठ पोग्गलत्थिकायपएसा०? जहन्नेणं अट्ठारसहिं उक्कोसेणं बायालीसाए। नव पोग्गलत्थिकायपएसा०? जहण्णेणं वीसाए, उक्कोसेणं सीयालीसाए। दस पोग्गलत्थिकायपएसा०? जहण्णेणं बावीसाए, उक्कोसेणं बावन्नाए, आगासत्थिकायस्स सठ्ठत्थ उक्कोसगं भाणियव्वं। संखेज्जा भंते! पोग्गलत्थिकायपएसा केवइएहिं धम्मत्थिकायपएसेहिं पुट्ठा? जहन्नपए तेणेव संखेज्जएणं दुगुणेणं दुरूवाहिएणं, उक्कोसपए तेणेव संखेज्जएणं पंचगुणेणं दुरूवाहिएणं। केवइएहिं अधम्मत्थिकायपएसेहिं, एवं चेव। केवइएहिं आगासत्थिकायपएसेहिं पुट्ठा? तेणेव संखेज्जएणं पंचगुणेणं दुरूवाहिएणं। केवइएहिं जीवत्थिकायपएसेहिं पुट्ठा? अणंतेहिं, केवइएहिं पोग्गलत्थिकायपएसेहिं पुट्ठा? अणंतेहिं, केवइएहिं अद्धासमएहिं? सिय पुट्ठे, सिय णो पुट्ठे, जाव अणंतेहिं। असंखेज्जा भंते! पोग्गलत्थिकायप्पएसा केवइएहिं धम्मत्थिकायपएसेहिं पुट्ठा? जहण्णपए तेणेव असंखेज्जएणं दुगुणेणं दुरूवाहिएणं, उक्कोसेणं तेणेव असंखेज्जएणं पंचगुणेणं दुरूवाहिएणं, सेसं जहा संखेज्जाणं, जाव नियमं अणंतेहिं। अणंता भंते! पोग्गलत्थिकायपएसा केवइएहिं धम्मत्थिकायपएसेहिं पुट्ठा? एवं जहा असंखेज्जा तहा अणंता वि निरवसेसं। एगे भंते! अद्धासमए केवइएहिं धम्मत्थिकायपएसेहिं पुट्ठे?

सत्तहिं, केवइएहिं अहम्मत्थिकायपएसेहिं पुट्ठे? एवं चेव, एवं आगासत्थिकायपएसेहि वि, केवइएहिं जीवत्थिकायपएसेहिं पुट्ठे? अणंतेहिं, एवं जाव अद्धासमएहिं। धम्मत्थिकाए णं भंते! केवइएहिं धम्मत्थिकायप्पएसेहिं पुट्ठे? नत्थि एगेण वि, केवइएहिं अधम्मत्थिकायपएसेहिं? असंखेज्जेहिं, केवइएहिं आगासत्थिकायपएसेहिं पुट्ठे? असंखेज्जेहिं, केवइएहिं जीवत्थिकायपएसेहिं पुट्ठे? अणंतेहिं, केवइएहिं पोग्गलत्थिकायपएसेहिं? अणंतेहिं, केवइएहिं अद्धासमएहिं? सिय पुट्ठे सिय नो पुट्ठे; जइ पुट्ठे नियमा अणंतेहिं। अहम्मत्थिकाए णं भंते! केवइएहिं धम्मत्थिकायपएसेहिं? असंखेज्जेहिं, केवइएहिं अहम्मत्थिकायपएसेहिं? णत्थि एक्केण वि, सेसं जहा धम्मत्थिकायस्स, एवं एएणं गमएणं, सट्ठाणे वि सट्ठाणए नत्थि एक्केण वि पुट्ठा, परट्ठाणए आदिल्लएहिं तिहिं, असंखेज्जेहिं भाणियव्वं, पच्छिल्लएसु तिसु अणंता भाणियव्वा, जाव अद्धासमए त्ति, जाव केवइएहिं अद्धासमएहिं पुट्ठे? नत्थि एक्केण वि ॥सू० ९॥

छाया—द्वौ भदन्त! पुद्गलास्तिकायप्रदेशौ कियद्भिः धर्मास्तिकायप्रदेशैः स्पृष्टौ? जघन्यपदे षड्भिः; उत्कृष्टपदे द्वादशभिः, एवम् अधर्मास्तिकायप्रदेशैरपि, कियद्भिराकाशास्तिकायप्रदेशैः स्पृष्टौ? द्वादशभिः, शेषं यथा धर्मास्तिकायस्य, त्रयो भदन्त! पुद्गलास्तिकायप्रदेशाः कियद्भिः धर्मास्तिकायप्रदेशैः स्पृष्टाः? जघन्यपदे अष्टभिः; उत्कृष्टपदे सप्तदशभिः, एवम् अधर्मास्तिकायप्रदेशैरपि, कियद्भिः आकाशास्तिकायप्रदेशैः स्पृष्टाः? सप्तदशभिः, शेषं यथा धर्मास्तिकायस्य, एवम् एतेन गमेन भणितव्यं यावत् दश, नवरम् जघन्यपदे द्वौ प्रक्षेप्तव्यौ, उत्कृष्टपदे पञ्च, चत्वारः पुद्गलास्तिकायप्रदेशाः कियद्भिः धर्मास्तिकायप्रदेशैः स्पृष्टाः? जघन्यपदे दशभिः उत्कृष्टपदे द्वाविंशत्या, पञ्चपुद्गलास्तिकायप्रदेशाः कियद्भिः०? जघन्यपदे द्वादशभिः, उत्कृष्टपदे सप्तविंशत्या, षट् पुद्गलास्तिकाय-

प्रदेशाः कियद्भिः धर्मास्तिकायप्रदेशैः स्पृष्टाः ? जघन्यपदे चतुर्दशभिः, उत्कृष्टपदे द्वात्रिंशत्या, सप्तपुद्गलास्तिकायप्रदेशाः कियद्भिः धर्मास्तिकायप्रदेशैः स्पृष्टाः ? जघन्येन षोडशभिः, उत्कृष्टेन सप्तत्रिंशता, अष्ट पुद्गलास्तिकायप्रदेशाः कियद्भिः धर्मास्तिकायप्रदेशैः स्पृष्टाः ? जघन्येन अष्टादशभिः, उत्कृष्टेन द्वाचत्वारिंशता नव पुद्गलास्तिकायप्रदेशाः कियद्भिः धर्मास्तिकायप्रदेशैः स्पृष्टाः ? जघन्येन विंशत्या, उत्कृष्टेन सप्तचत्वारिंशता, दशपुद्गलास्तिकायप्रदेशाः कियद्भिः धर्मास्तिकायप्रदेशैः स्पृष्टाः ? जघन्येन द्वाविंशत्या, उत्कृष्टेन द्वापञ्चाशता. आकाशास्तिकायस्य सर्वत्र उत्कृष्टं भणितव्यम्, संख्येयाः भदन्त ! पुद्गलास्तिकायप्रदेशाः कियद्भिः धर्मास्तिकायप्रदेशैः स्पृष्टाः ? जघन्यपदे तेनैव संख्येयकेन. द्विगुणेन द्विरूपाधिकेन, उत्कृष्टपदे तेनैव संख्येयकेन पञ्चगुणेन द्विरूपाधिकेन कियद्भिः अधर्मास्तिकायप्रदेशैः ? एवं चैव, कियद्भिः आकाशास्तिकायप्रदेशैः ? तेनैव संख्येयकेन पञ्चगुणेन द्विरूपाधिकेन, कियद्भिः जीवास्तिकायप्रदेशैः० ? अनन्तैः, कियद्भिः पुद्गलास्तिकायप्रदेशैः० ? अनन्तैः, कियद्भिः अद्धासमयैः ? स्यात् स्पृष्टः, स्यात् नो स्पृष्टः, यावत् अनन्तैः, असंख्येयाः भदन्त ! पुद्गलास्तिकायप्रदेशाः कियद्भिः धर्मास्तिकायप्रदेशैः स्पृष्टाः ? जघन्यदे तेनैव असंख्येयकेन द्विगुणेन द्विरूपाधिकेन, उत्कृष्टेन तेनैव असंख्येयेन. पञ्चगुणेन द्विरूपाधिकेन, शेषं यथा संख्येयानां यावत् नियमात् अनन्तैः, अनन्ताः भदन्त ! पुद्गलास्तिकायप्रदेशाः कियद्भिः धर्मास्तिकायप्रदेशैः स्पृष्टः ? एवं यथा असंख्येयास्तथा अनन्ता अपि निरवशेषम्, एको भदन्त ! अद्धासमयः कियद्भिः धर्मास्तिकायप्रदेशैः स्पृष्टः ? सप्तभिः, कियद्भिः अधर्मास्तिकायप्रदेशैः स्पृष्टः ? एवमेव, एवम् आकाशास्तिकायप्रदेशैरपि, कियद्भिः जीवास्तिकायप्रदेशैः स्पृष्टः ? अनन्तैः, एवं यावत् अद्धासमयैः, धर्मास्तिकायः खलु भदन्त ! कियद्भिः धर्मास्तिकायप्रदेशैः स्पृष्टः ? नास्ति एकेनापि, कियद्भिः अधर्मास्तिकायप्रदेशैः ? असंख्येयैः, कियद्भिः आकाशास्तिकायप्रदेशैः स्पृष्टः ? असंख्येयैः, कियद्भिः जीवास्तिकायप्रदेशैः स्पृष्टः ? अनन्तैः, कियद्भिः पुद्गलास्तिकायप्रदेशैः स्पृष्टः ? अनन्तैः, कियद्भिः अद्धासमयैः स्पृष्टः ? स्यात् स्पृष्टः, स्यात् नो स्पृष्टः, यदा स्पृष्टो नियमात् अनन्तैः, अधर्मास्तिकायः खलु भदन्त ! कियद्भिः धर्मास्तिकायप्रदेशैः स्पृष्टः ? असंख्येयैः, कियद्भिः अधर्मास्तिकायप्रदेशैः स्पृष्टः ? नास्ति एकेनापि, शेषं यथा धर्मास्तिकायस्य, एवम् एतेन गमकेन सर्वेऽपि स्वस्थानके नास्ति एकेनापि स्पृष्टाः, परस्थानके आदिमेषु त्रिषु असंख्येयैः भणितव्याः, पश्चिमेषु त्रिषु अनन्ताः भणितव्याः, यावत् अद्धासमयोऽस्ति, यावत् कियद्भिः अद्धासमयैः स्पृष्टः, अस्ति एकेनापि सू०९।

टीका—इतः पूर्वं धर्मास्तिकायादीनां चतुर्णां पुद्गलास्तिकायस्य चैकैकस्य-प्रदेशस्य स्पर्शना प्रतिपादिता, अथ विशिष्य पुद्गलास्तिकायस्यैव द्विप्रदेशादि स्कन्धानां स्पर्शनां प्ररूपयितुमाह-'दो भंते' इत्यादि। 'दो भंते! पोग्गलत्थिकायपएसा केवइएहिं धम्मत्थिकायपएसेहिं पुट्ठा?' गौतमः पृच्छति-हे भदन्त! द्वौ पुद्गलास्तिकायप्रदेशौ कियद्भिः धर्मास्तिकायप्रदेशैः स्पृष्टौ भवतः? भगवानाह-'जहन्नपदे छहिं, उक्कोसपए बारसहिं' हे गौतम! जघन्यपदे-जघन्येन, षड्भिः, उत्कृष्टपदे उत्कृष्टेन द्वादशभिः धर्मास्तिकायप्रदेशैः द्वौ पुद्गलास्तिकायप्रदेशौ स्पृष्टौ

द्विप्रदेशिकादि पुद्गलास्तिकाय स्पर्शद्वारवक्तव्यता—

'दो भंते! पोग्गलत्थिकायपएसा केवइएहिं धम्मत्थिकायपएसेहिं' इत्यादि।

टीकार्थ—इस सूत्र से पहिले धर्मास्तिकायादिक चार अस्तिकायों के और पुद्गलास्तिकाय के एक एक प्रदेश की स्पर्शना कही है। अब वे विशेषरूप से इस सूत्र द्वारा पुद्गलास्तिकाय के ही द्विप्रदेशादिरूपस्कन्धों की स्पर्शना की प्ररूपणा कर रहे हैं-इसमें गौतमने प्रभु से ऐसा पूछा है-'दो भंते! पोग्गलत्थिकायपएसा केवइएहिं धम्मत्थिकायपएसेहिं-पुट्ठा' हे भदन्त! पुद्गलास्तिकाय के दो प्रदेश धर्मास्तिकाय के कितने प्रदेशों द्वारा स्पृष्ट होते हैं? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-'जहन्नपए छहिं, उक्कोसपए बारसहिं' हे गौतम! जघन्यपद में-अर्थात् जघन्य से धर्मास्तिकाय के छह प्रदेशों द्वारा और उत्कृष्ट से धर्मास्तिकाय के १२ प्रदेशों द्वारा पुद्गलास्तिकाय के दो प्रदेश स्पृष्ट होते हैं। इसका तात्पर्य

—બે આદિ પ્રદેશોવાળા પુદ્ગલાસ્તિકાય સ્પર્શદ્વાર વક્તવ્યતા—

"दो भंते! पोग्गलत्थिकायपएसा केवइएहिं धम्मत्थिकायपएसेहिं" इत्यादि—

ટીકાર્થ—પૂર્વ સૂત્રમાં ધર્માસ્તિકાયાદિક ચાર અસ્તિકાયોના અને પુદ્ગલાસ્તિકાયના એક પ્રદેશની સ્પર્શનાનું કથન કરવામાં આવ્યું છે. હવે સૂત્રકાર આ સૂત્ર દ્વારા પુદ્ગલાસ્તિકાયના બે આદિ પ્રદેશોવાળા સ્કંધોની પ્રરૂપણા કરે છે. આ વિષયને અનુલક્ષીને ગૌતમસ્વામી મહાવીર પ્રભુને એવો પ્રશ્ન પૂછે છે કે—"दो भंते! पोग्गलत्थिकायपएसा केवइएहिं धम्मत्थिकाय-पएसेहिं पुट्ठा?" હે ભગવન્! પુદ્ગલાસ્તિકાયના બે પ્રદેશો ધર્માસ્તિકાયના કેટલા પ્રદેશો વડે સ્પૃષ્ટ થાય છે?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર—"जहन्नपए छहिं, उक्कोसपए बारसहिं" હે ગૌતમ! પુદ્ગલાસ્તિકાયના બે પ્રદેશો ઓછામાં ઓછા છ અને વધારેમાં વધારે બાર ધર્માસ્તિકાયપ્રદેશો વડે સ્પૃષ્ટ થાય છે. તેનું સ્પષ્ટીકરણ નીચે પ્રમાણે છે

भवतः, तथाहि-लोकान्ते द्विप्रदेशिकः स्कन्धः एकाकाशप्रदेशसमवगाढः, स च प्रतिद्रव्यावगाहप्रदेशः इति नयमताङ्गीकारेण अवगाहप्रदेशस्य एकस्यापि भिन्नतया द्वाभ्यां स्पृष्टः, तथा यस्तस्य उपरि-अधस्ताद् वा प्रदेशस्तस्यापि पुद्गलद्वयस्पर्शनेन नयमतादेव भेदाद् द्वाभ्याम्, तथा पार्श्वप्रदेशौ एकैकं परमाणुं स्पृशतः परस्परव्यवधानात्, इत्येवं जघन्येन षड्भिः धर्मास्तिकायप्रदेशैर्द्व्यणुकस्कन्धस्य स्पर्शना भवति। नयमतानङ्गीकारे तु चतुर्भिरेव द्व्यणुकस्य जघन्येन स्पर्शना

ऐसा है कि लोकान्त में-द्विप्रदेशिक स्कन्ध उसके एक प्रदेश को अवगाहित करके रहता है और इसी लोकान्त के एक प्रदेश में धर्मास्तिकायादिक द्रव्यों के प्रदेश भी अवगाहित होकर रहते हैं, इस प्रकार वह लोकान्त का एक प्रदेश होकर भी प्रतिद्रव्य द्वारा अवगाही होनेके कारण भिन्न ही माना जावेगा। ऐसा एक प्रदेश नयमत है। सो इस मत के अनुसार एक होने पर भी अवगाह प्रदेश भिन्न होने के कारण पुद्गल के उन प्रदेशों द्वारा स्पृष्ट होता है। तथा जो उनके ऊपर का या नीचे का प्रदेश है वह भी पुद्गल के दो प्रदेशों से स्पृष्ट होने के कारण नयमतानुसार भिन्न है, तथा पास के दो प्रदेश एक एक परमाणु का परस्पर व्यवधान से स्पर्श करते हैं इस प्रकार छह धर्मास्तिकायप्रदेशों से द्व्यणुक स्कन्ध की स्पर्शना होती है। तथा-पूर्वोक्त इस नयमत का जब आश्रय नहीं किया जाता है-तब जघन्य से चार ही धर्मास्तिकायप्रदेशों द्वारा द्व्यणुक स्कन्ध की स्पर्शना होती है। वह इस प्रकार से

લોકાન્તમાં દ્વિપ્રદેશિક સ્કંધ તેના એક પ્રદેશને અવગાહિત કરીને રહે છે અને એજ લોકાન્તના એક પ્રદેશમાં ધર્માસ્તિકાયાદિક દ્રવ્યોના પ્રદેશ પણ અવગાહિત થઈને રહે છે, આ રીતે તે લોકાન્તનો એક પ્રદેશ એક હોવા છતાં પણ પ્રતિદ્રવ્ય દ્વારા અવગાહી હોવાને કારણે ભિન્ન જ માનવો પડશે, એવી એક નયની માન્યતા છે. આ મત અનુસાર એક હોવા છતાં પણ તે અવગાહ પ્રદેશ ભિન્ન હોવાને કારણે પુદ્ગલના તે બે પ્રદેશો દ્વારા સ્પૃષ્ટ થાય છે તથા જે તેમની ઉપરનો અથવા નીચેનો પ્રદેશ છે તે પણ પુદ્ગલના બે પ્રદેશો વડે સ્પૃષ્ટ હોવાને કારણે નયમતાનુસાર ભિન્ન છે. તથા પાંસેના બે પ્રદેશ એક એક પરમાણુના પરસ્પરના વ્યવધાનથી સ્પર્શ કરે છે આ રીતે ૬ ધર્માસ્તિકાય પ્રદેશો વડે બે અણુવાળા સ્કંધની સ્પર્શના થાય છે. તથા-પૂર્વોક્ત નયમતનો જો આધાર ન લેવામાં આવે, તો ઓછામાં ઓછા ચાર જ ધર્માસ્તિકાય પ્રદેશો દ્વારા બે અણુવાળા સ્કંધની સ્પર્શના થાય છે. તે

भवेत् उपरि अधः पार्श्वद्वयेन च इति, अथवा अत्र यद् बिन्दुद्वयं तत्परमाणुद्वयमिति मन्तव्यम्, तत्र चार्वाचीनः परमाणुर्धर्मास्तिकायप्रदेशेन अर्वाग्वर्त्तिना स्पृष्टः परभागवर्त्ती च परमाणुः परतः स्थितेन धर्मास्तिकायप्रदेशेन स्पृष्टः इत्येवं द्वौ, एवं ययोः प्रदेशयोर्मध्ये परमाणुद्वयं स्थाप्यते तयोरग्रेतनाभ्यां प्रदेशाभ्यां तौ स्पृष्टौ-प्रथमेन प्रथमः, द्वितीयेन द्वितीयः, इत्येवं द्वौ, द्वौचावगाढत्वादेवं स्पृष्टौ इत्येवं षट्-यंत्रस्याकारो यंत्रपृष्ठे प्रथमअंके अवलोकनीयं

उत्कृष्टेन तु द्वादशभिः धर्मास्तिकायप्रदेशैः स्पर्शना भवति, तथाहि-परमाणुः

ऊपर नीचे के दो प्रदेशों से और आजूबाजू के दो प्रदेशों से-इस प्रकार चार धर्मास्तिकाय प्रदेशों द्वारा यह जघन्य स्पर्शना होती है। अथवा-यहां जो दो बिन्दुएँ हैं वे दो परमाणु हैं ऐसा जानना चाहिये-इनमें पहिली तरफ का परमाणु पहिली तरफ के धर्मास्तिकाय प्रदेशों द्वारा स्पृष्ट होता है, और परभागवर्ती परमाणु परभागवर्ती धर्मास्तिकाय प्रदेश द्वारा स्पृष्ट होता है। तथा जिन दो प्रदेशों के बीच में परमाणु द्वय स्थापित किये गये हैं, वे अग्रेतन दो प्रदेशों द्वारा स्पृष्ट होते हैं-प्रथम से प्रथम, और द्वितीयप्रदेश से द्वितीय-इस प्रकार से चार प्रदेश हो जाते हैं। और जहां जहां ये दो परमाणु अवगाढ हैं वहां के दो प्रदेशों की स्पर्शना-इस प्रकार छह प्रदेश की जघन्य स्पर्शना होती है। जघन्य पद में षट् स्पर्शक प्रदेशों द्वारा स्पर्शना का आकार यंत्र के पृष्ठ में नं. १ में देखलेवे.

उत्कृष्ट स्पर्शना जो धर्मास्तिकाय के १२ प्रदेशों द्वारा होती है

સ્પર્શનાનું સ્પષ્ટીકરણ આ પ્રમાણે છે-ઉપર નીચેના બે પ્રદેશો વડે અને આસપાસના બે પ્રદેશો વડે, આ પ્રકારે ચાર ધર્મસ્તિકાય પ્રદેશો વડે તે સ્પર્શના થાય છે અથવા-અહીં જે બે બિંદુઓ છે, તેમને બે પરમાણુ માની લો. તેમાંનો એક તરફનો પરમાણુ, એક તરફના ધર્મસ્તિકાય પ્રદેશો દ્વારા સ્પૃષ્ટ થાય છે, અને બીજી તરફનો પરમાણુ બીજી તરફના ધર્મસ્તિકાયપ્રદેશદ્વારા સ્પૃષ્ટ થાય છે તથા જે બે પ્રદેશોની વચ્ચે બે પરમાણુને સ્થાપિત કરવામાં આવ્યા છે તેઓ અગ્રેતન બે પ્રદેશો દ્વારા સ્પૃષ્ટ થાય છે-પહેલો પ્રદેશ વડે પહેલો અને બીજા પ્રદેશ વડે બીજો, આ રીતે ચાર પ્રદેશ થઇ જાય છે અને જ્યાં તે બે પરમાણુ અવગાઢ છે, ત્યાંના બે પ્રદેશોની સ્પર્શના-આ પ્રકારે છ પ્રદેશોની જઘન્ય (ઓછામાં ઓછી) સ્પર્શના થાય છે. ઓછામાં ઓછા ૬ સ્પર્શક પ્રદેશો દ્વારા થતા સ્પર્શની આકૃતિ યંત્રના પેજમાં નં. ૧ ની જોઇ લેવી.

પુદ્ગલાસ્તિકાયના બે પ્રદેશોની ધર્માસ્તિકાયના વધારેમાં વધારે ૧૨ પ્રદેશો વડે સ્પર્શના થાય છે. આ બાબતનું હવે સ્પષ્ટીકરણ કરવામાં આવે છે-બે

द्वयेन द्विप्रदेशावगाहत्वात् स्पृष्टौ, द्वौ चाधस्तनौ च द्वौ, पूर्वपश्चिमपार्श्वयोश्च द्वौ द्वौ, दक्षिणोत्तरपार्श्वयोश्च एकैक इत्येवमेव मेते द्वादश इति भावः। उत्कृष्टपदे द्वादश स्पर्शप्रदेशकक्रोष्ठकम् यंत्र पृष्ठे द्वितीयांके अवलोकनीयम्

'एवं अहम्मत्थिकायपएसेहि वि' एवं-पूर्वोक्तरीत्यैव, अधर्मास्तिकायप्रदेशैरपि जघन्येन षड्भिः, उत्कृष्टेन द्वादशभिः द्वौ पुद्गलास्तिकायप्रदेशौ स्पृष्टौ भवत, उक्तयुक्तेः२ गौतमः पृच्छति-'केवइएहिं आगासत्थिकायपएसेहिं पुट्ठा?' हे भदन्त! कियद्भिः आकाशास्तिकायप्रदेशैः द्वौ पुद्गलास्तिकायप्रदेशौ स्पृष्टौ भवतः? भगवानाह-'बारसहिं, सेसं जहा धम्मत्थिकायस्स' हे गौतम!-द्वादशभिः

वह इस प्रकार से-परमाणुद्वय द्वारा अवगाहित हुए स्थान के दो प्रदेश, नीचे के दो प्रदेश और ऊपर के दो प्रदेश, पूर्वपश्चिम पार्श्व के दो दो प्रदेश, तथा दक्षिण उत्तर पार्श्व का एक एक प्रदेश इस प्रकार से धर्मास्तिकाय के १२ प्रदेशों द्वारा उत्कृष्ट स्पर्शना होती है। उत्कृष्ट पद में १२ स्पर्शक प्रदेशों द्वारा स्पर्शना का आकार यंत्रपृष्ठ में नं. २ दो देख लेवें.

'एवं अहम्मत्थिकायपएसेहिवि' इसी प्रकार ६ अधर्मास्तिकायप्रदेशों द्वारा पुद्गलास्तिकाय के दो प्रदेश जघन्य से स्पृष्ट होते हैं, और अधर्मास्तिकाय के १२ प्रदेशों द्वारा पुद्गलास्तिकाय के दो प्रदेश उत्कृष्ट से स्पृष्ट होते हैं। इस विषय के स्पष्टीकरण में युक्ति पूर्वोक्त जैसी ही है।२।

अब गौतम प्रभु से ऐसा पूछते हैं-'केवइएहिं आगासत्थिकायपएसेहिं पुट्ठे' हे भदन्त! कितने आकाशास्तिकाय प्रदेशों द्वारा पुद्गलास्तिकाय के दो प्रदेश स्पृष्ट होते हैं? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-'बारसहिं सेसं जहा धम्मत्थिकायस्स' हे गौतम! १२ आकाशास्तिकाय प्रदेशों द्वारा

પરમાણુ દ્વારા અવગાહિત થયેલા સ્થાનના બે પ્રદેશ, નીચેના બે પ્રદેશ અને ઉપરના બે પ્રદેશ, પૂર્વપશ્ચિમ તરફના બબ્બે પ્રદેશ, તથા દક્ષિણઉત્તર તરફનો એક એક પ્રદેશ આ રીતે ધર્માસ્તિકાયના વધારેમાં વધારે બાર પ્રદેશો વડે સ્પર્શના થાય છે વધારેમાં વધારે ૧૨ સ્પર્શકપ્રદેશો દ્વારા સ્પર્શનાની આકૃતિ યંત્રપૃષ્ઠમાં નં. ૨ બે નીં જોઇ લેવી.

"एवं अहम्मत्थिकायपएसेहिं वि" એજ પ્રમાણે પુદ્ગલાસ્તિકાયના બે પ્રદેશો ઓછામાં ઓછા ૬ અને વધારેમાં વધારે ૧૨ અધર્માસ્તિકાયપ્રદેશો વડે સ્પૃષ્ટ થાય છે આ વિષયનું સ્પષ્ટીકરણ ઉપરના સ્પષ્ટીકરણ પ્રમાણે જ સમજવું.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-"केवइएहिं आगासत्थिकायपएसेहिं पुट्ठा" હે ભગવન્! પુદ્ગલાસ્તિકાયના બે પ્રદેશો આકાશાસ્તિકાયના કેટલા પ્રદેશો વડે સ્પૃષ્ટ થાય છે?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-"बारसहिं, सेसं जहा धम्मत्थिकायस्स" હે

आकाशास्तिकायप्रदेशैः द्वौ पुद्गलास्तिकायप्रदेशौ स्पृष्टौ भवतः, अत्र जघन्यपदा भावो बोध्यः लोकान्तेऽपि आकाशप्रदेशानाम् सद्भावात्, अत एव द्वादशभि रित्येवोक्तम्३. शेषं यथा धर्मास्तिकायस्य प्रतिपादितं तथैवात्रापि प्रतिपादनीयम्, तथा चाभिलापक्रमः–द्वौ भदन्त ! पुद्गलास्तिकायप्रदेशौ कियद्भिः जीवास्तिकाय-प्रदेशैः स्पृष्टौ भवतः४, एवं पुद्गलास्तिकायप्रदेशैरपि अनन्तैः द्वौ पुद्गलास्तिकाय-प्रदेशौ स्पृष्टौ भवतः५, अद्धासमयैस्तु स्यात् स्पृष्टौ भवतः, स्यात् स्पृष्टौ नापि भवतः, तत्रापि यदा स्पृष्टौ तदा नियमादनन्तैः अद्धासमयैः स्पृष्टौ भवतः६।

दो पुद्गलास्तिकायप्रदेश स्पृष्ट होते हैं–यहां पर जघन्य पद का अभाव जानना चाहिये–क्योंकि लोकान्त में भी आकाशप्रदेशों का सद्भाव है। इसी कारण यहां केवल १२ प्रदेशों द्वारा ही स्पर्शना कही गई है। बाकी का कथन धर्मास्तिकाय का जैसा कहा गया है वैसा ही जानना चाहिये। तथा च अभिलापक्रम इस प्रकार से है–हे भदन्त ! दो पुद्गलास्तिकायप्रदेश कितने जीवास्तिकायप्रदेशों द्वारा स्पृष्ट होते हैं ? हे गौतम ! दो पुद्गलास्तिकायप्रदेश अनन्तजीवास्तिकायप्रदेशों द्वारा स्पृष्ट होते हैं। इसी प्रकार दो पुद्गलास्तिकाय प्रदेश अनन्त पुद्गलास्ति-कायप्रदेशों द्वारा स्पृष्ट होते हैं। अद्धासमयों द्वारा वे कदाचित् स्पृष्ट होते हैं और कदाचित् स्पृष्ट नहीं होते हैं। यदि वे पुद्गलास्तिकाय के दो प्रदेश अद्धासमयों द्वारा स्पृष्ट हों तो नियम से अनन्त अद्धासमयों

ગૌતમ ! ૧૨ આકાશાસ્તિકાય પ્રદેશો દ્વારા બે પુદ્ગલાસ્તિકાયપ્રદેશો સ્પૃષ્ટ થાય છે. અહીં જઘન્ય પદનો અભાવ સમજવો, કારણ કે લોકાન્તમાં પણ આકાશપ્રદેશોનો સદ્ભાવ છે. તેથી જ અહીં કેવળ ૧૨ પ્રદેશો વડે જ સ્પર્શના કહેવામાં આવી છે. બાકીનું ધર્માસ્તિકાયને અનુલક્ષીને જેવું કથન કરવામાં આવ્યું છે, એવું જ સમજવું જેમ કે–આ પ્રકારનો અભિ-લાપક્રમ આગળ સમજવો–“ હે ભગવન્ ! બે પુદ્ગલાસ્તિકાયપ્રદેશો કેટલા જીવાસ્તિકાયપ્રદેશો વડે સ્પૃષ્ટ થાય છે ?” “ હે ગૌતમ ! બે પુદ્ગલ સ્તિકાય-પ્રદેશો અનંત જીવાસ્તિકાયપ્રદેશો વડે સ્પૃષ્ટ થાય છે.” એજ પ્રમાણે બે પુદ્ગલાસ્તિકાયપ્રદેશો અનંત પુદ્ગલાસ્તિકાયપ્રદેશો વડે સ્પૃષ્ટ થાય છે. અદ્ધા-સમયો દ્વારા તેઓ કયારેક સ્પૃષ્ટ થાય છે અને કયારેક સ્પૃષ્ટ થતા નથી. જો પુદ્ગલાસ્તિકાયના બે પ્રદેશો અદ્ધાસમયો વડે સ્પૃષ્ટ થાય છે તો નિયમથી જ અનંત અદ્ધાસમયો વડે સ્પૃષ્ટ થાય છે. સમયક્ષેત્રમાં (અઢીદ્વીપમાં) જ તેઓ અદ્ધાસમયો વડે સ્પૃષ્ટ થાય છે, સમયક્ષેત્રની બહારના ક્ષેત્રની અપેક્ષાએ

समयक्षेत्राद् बहिरपेक्षया न स्पृष्टौ भवतः तत्राद्धाकालाभावात्, गौतमः पृच्छति-'तिन्नि भंते! पोग्गलत्थिकायपएसा केवइएहिं धम्मत्थिकायपएसेहिं पुट्ठा ?' हे भदन्त! त्रयः पुद्गलास्तिकायप्रदेशाः कियद्भिः धर्मास्तिकायप्रदेशैः स्पृष्टाः भवन्ति? भगवानाह-'जहन्नपए अट्ठहिं, उक्कोसपए सत्तरसहिं, एवं अहम्मत्थिकायपएसेहि वि' हे गौतम! जघन्यपदे-जघन्येन, अष्टभिः, उत्कृष्टपदे-उत्कृष्टेन, सप्तदशभिः धर्मास्तिकायप्रदेशैः त्रयः पुद्गलास्तिकायप्रदेशाः स्पृष्टाः भवन्ति, तत्र जघन्येन पूर्वोक्तनयमतेन अवगाहप्रदेशस्त्रिधा अधस्तनोऽथवा उपरितनः त्रिधा,

द्वारा स्पृष्ट होते हैं। समय क्षेत्र के बाहर की अपेक्षा वे स्पृष्ट नहीं होते हैं। क्योंकि यहां पर अद्धासमयका अभाव है। अब गौतम प्रभु से ऐसा पूछते हैं-'तिन्नि भंते! पोग्गलत्थिकायपएसा केवइएहिं धम्मत्थिकायपएसेहिं पुट्ठा' पुद्गलास्तिकाय के तीन प्रदेश धर्मास्तिकाय के कितने प्रदेशों द्वारा स्पृष्ट होते हैं? उत्तर में प्रभु कहते हैं-'जहन्नपए अट्ठहिं, उक्कोसपए सत्तरसहिं, एवं अहम्मत्थिकायपएसेहि वि' हे गौतम! पुद्गलास्तिकाय के तीन प्रदेश जघन्य से धर्मास्तिकाय के आठ प्रदेशों द्वारा और उत्कृष्ट से धर्मास्तिकाय के १७ प्रदेशों द्वारा स्पृष्ट होते हैं। इसी प्रकार से वे जघन्य से अधर्मास्तिकाय के आठ प्रदेशों द्वारा और उत्कृष्ट से १७ प्रदेशों द्वारा स्पृष्ट होते हैं। इस विषय में खुलासा कथन इस प्रकार से है-यद्यपि पुद्गलास्तिकाय के तीन प्रदेश जघन्यरूप से एक प्रदेश में ही अवगाढ होते हैं-परन्तु पूर्वोक्त नय के मता-

---

વિચાર કરવામાં આવે તો તેઓ અદ્ધાસમયો વડે સ્પૃષ્ટ થતા નથી, કારણ કે ત્યાં અદ્ધાસમયનો અભાવ છે.'

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-"तिन्नि भंते! पोग्गलत्थिकायपएसा केवइएहिं धम्मत्थिकायपएसेहिं पुट्ठा" હે ભગવન્! પુદ્ગલાસ્તિકાયના ત્રણ પ્રદેશો ધર્માસ્તિકાયના કેટલા પ્રદેશો વડે સ્પૃષ્ટ થાય છે?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-"जहन्नपए अट्ठहिं, उक्कोसपए सत्तरसहिं, एवं अहम्मत्थिकायपएसेहिं वि" હે ગૌતમ! પુદ્ગલાસ્તિકાયના ત્રણ પ્રદેશો ધર્માસ્તિકાયના ઓછામાં ઓછા આઠ પ્રદેશો વડે અને વધારેમાં વધારે ૧૭ પ્રદેશો વડે સ્પૃષ્ટ થાય છે. એજ પ્રમાણે પુદ્ગલાસ્તિકાયના ત્રણ પ્રદેશો અધર્માસ્તિકાયના ઓછામાં ઓછા આઠ પ્રદેશો વડે અને વધારેમાં વધારે ૧૭ પ્રદેશો વડે સ્પૃષ્ટ થાય છે. આ વિષયમાં નીચે પ્રમાણે સ્પષ્ટીકરણ આપવામાં આવ્યું છે-જો કે પુદ્ગલાસ્તિકાયના ત્રણ પ્રદેશ જઘન્ય રૂપે એક પ્રદેશમાં જ અવગાઢ હોય છે,

द्वौ पार्श्वतश्चेत्येवमष्टौ बोध्याः। अस्याकृतिः यंत्रपृष्ठे तृतीयचतुर्थेऽङ्के अवलोकनीया उत्कृष्टेन तु सप्तदशबोध्याः यथा-परमाणुत्रयेण त्रिप्रदेशावगाढत्वात् त्रयः स्पृष्टाः, त्रयोऽधस्तनाः, त्रय उपरितनाः पूर्वपश्चिमभागे त्रयस्त्रयः, उत्तरदक्षिणपार्श्वयोश्चैकैकः इत्येवं सर्वसंख्यया सप्तदश भवन्ति, अस्याकृतिः यंत्रपृष्ठे पंचमेऽङ्के अवलोकनीया सप्तदशस्पर्शकप्रदेशाः,

બુસાર વે તીન પ્રદેશ મેં અવગાઢ હુએ માને જાતે હૈં-ઇસ પ્રકાર તીન પરમાણુઓં દ્વારા અવગાહપ્રદેશ તીન પ્રકાર કા માન લિયા જાતા હૈ। ઔર ઇનકે નીચે કે અથવા ઊપર કે પ્રદેશ તીન, ઔર દો પ્રદેશ ઇનકી આજૂબાજૂ કે, ઇસ પ્રકાર ધર્માસ્તિકાય કે આઠ પ્રદેશોં દ્વારા પુદ્ગલાસ્તિકાય કે તીન પ્રદેશોં કી સ્પર્શના હોતી હૈ-યહ જઘન્ય સ્પર્શના હૈ। ઇસકા આકાર યંત્રપૃષ્ઠ મેં નં૦ ૩ મેં ઔર ૪ મેં દેખ લેવેં

નીચે કે તીન પ્રદેશકા આકાર, ઊપર કે તીન પ્રદેશ કા આકાર તથા ઉત્કૃષ્ટ સે જો ધર્માસ્તિકાય કે ૧૭ પ્રદેશોં દ્વારા પુદ્ગલાસ્તિકાય કે તીન પ્રદેશોં કી સ્પર્શના કહી ગઈ-યહ ઇસ પ્રકાર સે હૈ-જહાં પુદ્ગલાસ્તિકાય કે તીન પ્રદેશ અવગાહિત હો રહે હૈં વે તીન પ્રદેશ ઉનકે દ્વારા સ્પૃષ્ટ હૈં, તીન પ્રદેશ ઊપર કે ઔર તીન પ્રદેશ નીચે કે ઉનકે દ્વારા સ્પૃષ્ટ હૈં, તથા પૂર્વપશ્ચિમભાગ કે તીન તીન પ્રદેશ ઔર ઉત્તરદક્ષિણપાર્શ્વકા એક ૨ પ્રદેશ સ્પૃષ્ટ હોતા હૈ। ઇસ પ્રકાર સે ધર્માસ્તિકાય કે ૧૭ પ્રદેશોં દ્વારા પુદ્ગલાસ્તિકાય કે તીન પ્રદેશોં કી ઉત્કૃષ્ટરૂપ સે સ્પર્શના હોતી હૈ। ઇસકા આકાર યંત્રપૃષ્ઠ મેં નં૦ ૫ મેં દેખ લેવેં

પરંતુ પૂર્વોક્ત નયની માન્યતા અનુસાર તેમને ત્રણ પ્રદેશમાં અવગાઢ થયેલા મનાય છે. આ રીતે ત્રણ પરમાણુઓ દ્વારા અવગાહપ્રદેશ ત્રણ પ્રકારના માની લેવામાં આવે છે અને તેમની નીચેના અથવા ઉપરના ત્રણ પ્રદેશ, અને બે તેમની આજૂબાજૂના પ્રદેશ, આ પ્રકારે ધર્માસ્તિકાયના આઠ પ્રદેશો દ્વારા પુદ્ગલાસ્તિકાયના ત્રણ પ્રદેશોની સ્પર્શના થાય છે. આ જઘન્ય સ્પર્શના સમજવી તેની આકૃતિ યંત્રપૃષ્ઠમાં નં. ૩ અને ૪ માં જોઇ લેવી.

વધારેમાં વધારે ૧૭ ધર્માસ્તિકાય પ્રદેશો દ્વારા ત્રણ પુદ્ગલાસ્તિકાય પ્રદેશોની સ્પર્શનાનું સ્પષ્ટીકરણ-જ્યાં પુદ્ગલાસ્તિકાયના ત્રણ પ્રદેશ અવગાહિત થઇ રહેલા છે, તે ત્રણ પ્રદેશો તેમના દ્વારા સ્પૃષ્ટ છે. ત્રણ પ્રદેશ ઉપરના અને ત્રણ પ્રદેશ નીચેના તેમના દ્વારા સ્પૃષ્ટ છે. તથા પૂર્વપશ્ચિમ ભાગના ત્રણ ત્રણ પ્રદેશ અને ઉત્તરદક્ષિણ ભાગનો એક એક પ્રદેશ સ્પૃષ્ટ થાય છે. આ રીતે ધર્માસ્તિકાયના વધારેમાં વધારે ૧૭ પ્રદેશો દ્વારા પુદ્ગલાસ્તિકાયના ત્રણ પ્રદેશોની સ્પર્શના થાય છે તેની આકૃતિ યંત્રપૃષ્ઠમાં નં. ૫ માં જોઇ લેવી.

एवं-पूर्वोक्तरीत्यैव, अधर्मास्तिकायप्रदेशैरपि जघन्येन अष्टभिः, उत्कृष्टेन सप्तदशभिः त्रयः पुद्गलास्तिकायप्रदेशाः स्पृष्टा भवन्ति२, गौतमः पृच्छति-'केवइएहिं आगासत्थिकायपएसेहिं पुट्ठा?' हे भदन्त! कियद्भिः आकाशास्तिकायप्रदेशैः त्रयः पुद्गलास्तिकायप्रदेशाः स्पृष्टा भवन्ति? भगवानाह-'सत्तरसहिं' हे गौतम! सप्तदशभिः आकाशास्तिकायप्रदेशै', त्रयः पुद्गलास्तिकायप्रदेशाः स्पृष्टा भवन्ति ३, अत्रापि जघन्यपदाभावो बोध्यो लोकान्ते आकाशप्रदेशानां सद्भावात् 'सेसं जहा धम्मत्थिकायस्स', शेषं जीवपुद्गलाद्धाविषयकं प्रकरणं यथा धर्मास्तिकायस्य प्रतिपादितं तथैवात्रापि प्रतिपत्तव्यम्; तथा चाभिलापक्रमस्त्वेवं बोध्यः-त्रयः भदन्त! पुद्गलास्तिकायप्रदेशाः कियद्भिः

इसी प्रकार से अधर्मास्तिकाय के ८ प्रदेशों द्वारा जघन्य स्पर्शना और उसके १७ प्रदेशों द्वारा उत्कृष्ट स्पर्शना होती है ऐसा जानना चाहिये।

अब गौतमप्रभु से ऐसा पूछते हैं 'केवइएहिं आगासत्थिकायपएसेहिं-पुट्ठा' हे भदन्त! कितने आकाशास्तिकाय प्रदेशों द्वारा पुद्गलास्तिकाय के तीन प्रदेशों की स्पर्शना होती है? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-'सत्तरसहिं' हे गौतम! १७ आकाशास्तिकाय प्रदेशों द्वारा पुद्गलास्तिकाय के तीन प्रदेशों की स्पर्शना होती है। यहां पर भी जघन्यपद का अभाव जानना चाहिये। क्योंकि लोकान्त में आकाशप्रदेशों का सद्भाव रहता है। 'सेसं जहा धम्मत्थिकायस्स' इसके आगे का जीव, पुद्गल और अद्धाविषयक प्रकरण है जैसा धर्मास्तिकाय का कहा जा चुका है, वैसा ही जानना चाहिये। तथा च अभिलाप क्रम इस

એજ પ્રમાણે અધર્માસ્તિકાયના ઓછામાં ઓછા આઠ અને વધારેમાં વધારે ૧૭ પ્રદેશો વડે પુદ્ગલાસ્તિકાયના ત્રણ પ્રદેશોની સ્પર્શના થાય છે, એમ સમજવું.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-"केवइएहिं आगासत्थिकायपएसेहिं पुट्ठा?" હે ભગવન્! કેટલા આકાશાસ્તિકાયના પ્રદેશો વડે પુદ્ગલાસ્તિકાયના ત્રણ પ્રદેશોની સ્પર્શના થાય છે?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-"सत्तरसहिं" હે ગૌતમ! આકાશાસ્તિકાયના સત્તર પ્રદેશો વડે પુદ્ગલાસ્તિકાયના ત્રણ પ્રદેશોની સ્પર્શના થાય છે. અહીં પણ જઘન્યપદનો અભાવ જ સમજવો, કારણ કે લોકાન્તમાં આકાશપ્રદેશોનો સદ્ભાવ રહે છે. "सेसं जहा धम्मत्थिकायस्स" ત્યાર પછીનું કથન-જીવ,

जीवास्तिकायप्रदेशैः स्पृष्टाः भवन्ति ? गौतम ! अनन्तैः जीवास्तिकायप्रदेशैः त्रयः पुद्गलास्तिकायप्रदेशाः स्पृष्टा भवन्ति ४, एवं पुद्गलास्तिकायप्रदेशैरपि अनन्तैः त्रयः पुद्गलास्तिकायप्रदेशाः स्पृष्टा भवन्ति ५, अद्धासमयैस्तु स्यात् स्पृष्टाः समयक्षेत्रापेक्षया स्यान्नो स्पृष्टाः समयक्षेत्रबहिरपेक्षया, तत्रापि यदा स्पृष्टा भवन्ति तदापि नियमादनन्तैरेव अद्धासमयैः त्रयः पुद्गलास्तिकायप्रदेशाः स्पृष्टाः बोध्याः, 'एवं एएणं गमेणं भाणियव्वं जाव दस, नवरं जहन्नपदे दोन्नि पक्खिवेयव्वा, उक्कोसपए पंच' एवं पूर्वोक्तरीत्या, एतेन उपर्युक्तेन, गमेन-अभिलापक्रमेण, भणितव्यम् वक्तव्यम्, यावत् चत्वारः, पञ्च, षट्, सप्त, अष्टौ, नव, दश वा

प्रकार से हैं-हे भदन्त ! तीन पुद्गलास्तिकाय प्रदेश जीवास्तिकाय के कितने प्रदेशों द्वारा स्पष्ट होते हैं। हे गौतम ! तीन पुद्गलास्तिकाय प्रदेश अनन्तजीवास्तिकायप्रदेशों द्वारा स्पृष्ट होते हैं। इसी प्रकार से वे अनन्त पुद्गलास्तिकाय प्रदेशों द्वारा स्पृष्ट होते हैं। तथा अद्धा-समयों द्वारा वे कदाचित् स्पृष्ट होते हैं और कदाचित् स्पृष्ट नहीं होते हैं। यदि होते हैं तो वे नियम से अनन्त अद्धासमयों द्वारा स्पृष्ट होते हैं। समयक्षेत्र की अपेक्षा से वे अनन्त अद्धासमयों द्वारा स्पृष्ट होते हैं ऐसा जानना चाहिये। 'एवं एएणं गमेणं भाणियव्वं जाव दस, नवरं जहन्नपदे दोन्नि पक्खिवेयव्वा, उक्कोसपए पंच' इसी प्रकार इस उपर्युक्त अभिलाप क्रम से यावत्-चार, पांच, छह, सात, आठ,

પુદ્ગલ અને અદ્ધાવિષયક કથન ધર્માસ્તિકાયના પૂર્વોક્ત કથન પ્રમાણે જ સમજવું જેમ કે તેમના વિષે આ પ્રકારના પ્રશ્નોત્તરો બનશે–

પ્રશ્ન–પુદ્ગલાસ્તિકાયના ત્રણ પ્રદેશો જીવાસ્તિકાયના કેટલા પ્રદેશો વડે સ્પૃષ્ટ થાય છે?

ઉત્તર–હે ગૌતમ ! પુદ્ગલાસ્તિકાયના ત્રણ પ્રદેશો જીવાસ્તિકાયના અનંત પ્રદેશો વડે સ્પૃષ્ટ થાય છે. એજ પ્રમાણે તેઓ અનંત પુદ્ગલાસ્તિકાયપ્રદેશો વડે સ્પૃષ્ટ થાય છે અદ્ધાસમયો વડે તેઓ ક્યારેક સ્પૃષ્ટ થાય છે અને ક્યારેક સ્પૃષ્ટ થતા નથી જો તેઓ અદ્ધાસમયો વડે સ્પૃષ્ટ થાય છે તો નિયમથી જ અનંત અદ્ધાસમયો વડે સ્પૃષ્ટ થાય છે સમયક્ષેત્રની અપેક્ષાએ વિચાર કરવામાં આવે તો તેઓ અનંત અદ્ધાસમયો વડે સ્પૃષ્ટ થાય છે, પરન્તુ સમયક્ષેત્રની બહારના ક્ષેત્રમાં તેઓ તેમના દ્વારા સ્પૃષ્ટ થતા નથી, એમ સમજવું. "एवं एएणं गमेणं भाणियव्वं जाव दस, नवरं जहन्नपदे दोन्नि पक्खिवेयव्वा, उक्कोसपए पंच" એજ પ્રકારે–પૂર્વોક્ત પ્રશ્નોત્તરો દ્વારા ચાર, પાંચ, છ, સાત, આઠ, નવ અને

पुद्गलास्तिकायप्रदेशाः वक्तव्याः, नवरं-विशेषस्तु जघन्यपदे द्वौ प्रक्षेप्तव्यौ, उत्कृष्टपदे पञ्च प्रक्षेप्तव्याः,

तथा-एकद्वित्र्यादि परमाणूनां जघन्यपदे उत्कृष्टपदे च प्रत्येकं कति कति स्पर्शना-प्रदेशा भवन्तीति तत्प्रकारोऽपि प्रदर्श्यते अत्र सर्वत्रैव जघन्यपदे विवक्षित परमाणुतो द्विगुणा द्विसंख्याधिकाश्च स्पर्शकप्रदेशा भवन्ति। उदाहरणम्-यथा एकः परमाणुर्द्वाभ्यां गुणने जातौ द्वौ, तयोर्द्विकसंमेलने जाताश्चत्वारः स्पर्शना प्रदेशा जघन्यपदे भवन्ति। एवं द्वित्र्यादि दशपर्यन्तेषु परमाणुषु योजना कर्त्तव्या। उत्कृष्टपदे तु एकपरमाणोः पञ्चगुणत्वे जाताः पञ्च द्विकसंमेलने सप्त स्पर्शक-

---

नौ और दश तकके पुद्गलास्तिकाय के प्रदेश कहना चाहिये। परन्तु जघन्यपद में दो का और उत्कृष्ट पद में पांच का प्रक्षेप करना चाहिये।

तथा-एक दो तीन आदि परमाणुओं के जघन्यपद में और उत्कृष्ट पद में प्रत्येक के कितने २ स्पर्शना प्रदेश होते हैं ऐसा भी सूत्रकार दिखाते हैं-इस प्रकार में सर्वत्र ही जघन्यपद में विवक्षित परमाणु से दूने और दो संख्या अधिक स्पर्शक प्रदेश होते हैं, जैसे-एक परमाणु दो से गुणा करने पर दो परमाणु आते हैं, इनके द्विक संमेलन में जो चार आते हैं वे स्पर्शना प्रदेश हैं और ये जघन्यपद में हैं। इसी प्रकार से दो तीन आदि दशतक के परमाणुओं से ऐसी ही योजना करनी चाहिये। उत्कृष्टपद में एक परमाणु को पांचसे गुणा करने पर पांच परमाणु हो जाते हैं, इनमें द्विक संमेलन से अर्थात्

દસ સુધીના પુદ્ગલાસ્તિકાયના પ્રદેશોની ધર્માસ્તિકાયાદિના પ્રદેશો વડે સ્પર્શનાનું કથન કરવું જોઇએ પરન્તુ વિશેષતા એટલી જ છે કે પ્રત્યેક જઘન્યપદમાં ઉત્તરોત્તર બે પ્રદેશોની અને ઉત્કૃષ્ટ પદમાં પાંચની વૃદ્ધિ કરતા જવું જોઈએ.

તથા-એક, બે, ત્રણ આદિ પરમાણુઓના જઘન્ય પદમાં અને ઉત્કૃષ્ટ પદમાં પ્રત્યેકના કેટલા કેટલા સ્પર્શનાપ્રદેશ હોય છે તે આ પ્રકારે પણ ગણી શકાય છે-જઘન્યપદમાં સ્પર્શકપ્રદેશોની સંખ્યા નક્કી કરવા માટે પરમાણુની જેટલી સંખ્યા આપી હોય તેના બમણાં કરી બે ઉમેરવા જેમકે એક પરમાણુના બમણા કરવાથી બે આવે અને તેમાં બે ઉમેરવાથી ચાર આવે આ રીતે ઓછામાં ઓછા ચાર સ્પર્શક પ્રદેશો આવે છે, એજ પ્રમાણે બેથી લઇને દસ પર્યન્તના પરમાણુઓના જઘન્ય સ્પર્શક પ્રદેશો પણ ગણી શકાય છે. ઉત્કૃષ્ટ સ્પર્શકોની સંખ્યા નક્કી કરવા માટે પરમાણુના પાંચ ગણાં કરી બે ઉમેરવા જેમ કે એક પરમાણુને પાંચ વડે ગુણવાથી પાંચ પરમાણુ થાય છે. તેમાં બે ઉમેરવાથી સાત સ્પર્શક પ્રદેશો આવે છે એજ પ્રમાણે બેથી

प्रदेशा भवन्ति। पूर्वरीत्यैव द्वित्रिचतुरादि दशपरमाणु पर्यन्तेषु अपि योजनाऽनुसेयेति। इदमपि कोष्ठकेनैवज्ञातव्यम्। तच्च कोष्ठकं यंत्रपृष्ठे षष्ठे विलोकनीयम्

अत्रैवं बोध्यम्-जघन्यपदे परमाणोः (प्रदेशस्य) ये स्पर्शना प्रदेशा भवन्ति तेषु द्वयोः प्रक्षेपणेन द्वयोः परमाण्वोः जघन्यपदे स्पर्शना प्रदेशा आयान्ति, एवं पूर्वपूर्वेषु जघन्यस्पर्शनाप्रदेशेषु सर्वत्र उत्तरोत्तरं द्वि द्वि प्रक्षेपणेन त्रिः चतुः पञ्च-षट्-सप्ता-ऽष्ट-नव-दश परमाणूनां जघन्यपदे स्पर्शना प्रदेशाः आगमिष्यन्ति। एवम् उत्कृष्टपदे एकपरमाणोः स्पर्शनाप्रदेशेषु पञ्चप्रक्षेपणेन (संमेलनेन) द्वयोः परमाण्वोरुत्कृष्टपदे स्पर्शना प्रदेशा आयान्ति। एवं पूर्वपूर्वेषु उत्कृष्टस्पर्शना-प्रदेशेषु पञ्चपञ्चप्रक्षेपणेन त्र्यादिदशपर्यन्तानां परमाणूनामुत्कृष्टस्पर्शनाप्रदेशा

दोके मिलाने से सात स्पर्शक प्रदेश होते हैं। इसी पूर्वरीति से दो तीन चार आदि शततक के परमाणुओं में भी योजना जाननी चाहिये। इसकी आकृति यंत्रपृष्ठ के छठे अंक में देख लेवें कोष्ठक से बात इस प्रकार जानी जा सकती है—

यहां ऐसा समझना-जघन्य पद में परमाणु के (पदेशके) जो स्पर्शना प्रदेश होते हैं उनमें दो का प्रक्षेप करने से परमाणुओं के जघन्य पद में स्पर्शनाप्रदेश आते हैं। इसी प्रकार पूर्व पूर्व जघन्य स्पर्शना प्रदेशों में सर्वत्र उत्तरोत्तर दो दो का प्रक्षेप करने से तीन, चार, पांच, छह, सात, आठ, नौ और दश इन परमाणुओं के जघन्यपद में स्पर्शना प्रदेश आजावेंगे, इसी प्रकार उत्कृष्ट पद में एक परमाणु के स्पर्शना प्रदेशो में पांच का प्रक्षेप करने से-पांच मिलाने से दो परमाणुओं के उत्कृष्टपद में स्पर्शना प्रदेश आ जाते हैं। इस प्रकार पूर्व पूर्व उत्कृष्ट

લઈને દસ પર્યન્તના પરમાણુઓનો વધારેમાં વધારે સ્પર્શક પ્રદેશો પણ નક્કી કરી શકાય છે આ વાત યંત્રના પેજમાં આપેલ નં: ૬ ની આકૃતિથી સ્પષ્ટ થાય છે-

સ્પષ્ટીકરણ-જઘન્ય પદમાં એક પરમાણુના (પ્રદેશના) જે સ્પર્શના પ્રદેશો હોય છે તેમાં બે ઉમેરવાથી બે પરમાણુઓના જઘન્યપદમાં સ્પર્શનાપ્રદેશ આવી જાય છે એજ પ્રમાણે પ્રત્યેક આગળના જઘન્ય સ્પર્શના પ્રદેશોમાં ઉત્તરોત્તર બબ્બે પ્રદેશો ઉમેરવાથી ત્રણ, ચાર, પાંચ, છ, સાત, આઠ, નવ અને દસ, પરમાણુઓના જઘન્ય સ્પર્શના પ્રદેશો અનુક્રમે ૮, ૧૦, ૧૨, ૧૪, ૧૬, ૧૮, ૨૦ અને ૨૨ આવશે એજ પ્રમાણે વધારેમાં વધારે સ્પર્શક પ્રદેશો જાણવાની પદ્ધતિ બતાવવામાં આવે છે એક પરમાણુના વધારેમાં વધારે સ્પર્શક પ્રદેશો ૭ છે. તેમાં પાંચ ઉમેરવાથી બે પરમાણુઓના સ્પર્શક પ્રદેશો

आगमिष्यन्ति। तेच यंत्रपृष्ठे षष्ठाङ्कस्य कोष्टकेन ज्ञातव्याः। तदेव विस्तरेण प्ररूपयितुमाह-' चत्तारि पोग्गलत्थिकायपएसा केवइएहिं धम्मत्थिकायपएसेहिं पुट्ठा ?' गौतमः पृच्छति-हे भदन्त ! चत्वारः पुद्गलास्तिकायप्रदेशाः कियद्भिः धर्मास्तिकायप्रदेशैः स्पृष्टा भवन्ति ? भगवानाह-' जहन्नपदे दसहिं, उक्कोसपदे बावीसाए ' हे गौतम ! जघन्यपदे-जघन्येन दशभिः धर्मास्तिकायप्रदेशैः, जघन्यपदे दशप्रदेशात्मककोष्ठकं यंत्रपृष्ठे सप्तमाङ्के विलोकनीयम्। चतुष्प्रदेशस्य नयविशेषापेक्षया स्कन्धरूपेण विवक्षितत्वात्, उत्कृष्टपदे-उत्कृष्टेन, द्वाभ्यां,

स्पर्शना प्रदेशों में पांच पांच के मिलाने से तीन से लेकर दश परमाणुओं के उत्कृष्ट से स्पर्शना प्रदेश आजावेंगे। इस सब कथन का सारांश ऐसा है-समस्त जघन्यपद में विवक्षित परमाणु को दुगुना करना चाहिये और उसमें दो जोड देना चाहिये। उत्कृष्ट पद में विवक्षित परमाणुओं को पांचगुणा करना चाहिये और आये हुए उस संख्या में दो जोड देना चाहिये। इस प्रकार करने से विवक्षित परमाणुओं की जघन्य स्पर्शना और उत्कृष्ट स्पर्शना आजाती है। यह बात जघन्यपद में दश प्रदेशात्मक कोष्टक यंत्रपृष्ठ के सातवें अंक में देख लेवें कोष्ठक द्वारा जाननी चाहिये, सूत्रकार इसी का वर्णन अब विस्तार से करते हैं-'चत्तारिपोग्गलत्थिकायपएसा केवइएहिं धम्मत्थिकायपएसेहिं पुट्ठा' गौतम प्रभु से ऐसा पूछते हैं-हे भदन्त ! चार पुद्गलास्तिकायप्रदेश कितने धर्मास्तिकायप्रदेशों द्वारा स्पृष्ट होते हैं ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-'जहन्नपए दसहिं उक्कोसपए बावीसाए' हे गौतम ! जघन्य से दश धर्मास्तिकाय प्रदेशों द्वारा चार पुद्गलास्ति-

---

१२ આવે છે એજ પ્રમાણે પાંચ પાંચની ઉત્તરોત્તર વૃદ્ધિ કરતા જવાથી ત્રણથી લઇને દસ સુધીના પરમાણુઓના ઉત્કૃષ્ટ સ્પર્શના પ્રદેશો અનુક્રમે ૧૭, ૨૨, ૨૭, ૩૨, ૩૭, ૪૨, ૪૭ અને ૫૨ આવશે આ કથનનો સારાંશ એ છે કે જઘન્ય પદમાં જેટલા પરમાણુ સ્પર્શકોની સંખ્યા જાણવી હોય તેટલા પરમાણુના બમણાં કરી બે ઉમેરવાથી ઓછામાં ઓછા કેટલા સ્પર્શકો હશે, તે જાણી શકાશે પરમાણુઓના પાંચ ગણાં કરી બે ઉમેરવાથી તે પરમાણુઓના ઉત્કૃષ્ટ-સ્પર્શકોની સંખ્યા જાણી શકાશે આ વાત જઘન્યપદમાં દશ પ્રદેશાત્મક કોષ્ઠક યંત્રપૃષ્ઠમાં નં. ૭ માં કોઠાની મદદથી પણ સમજી શકાય તેમ છે.

હવે સૂત્રકાર આ વાત વિસ્તારપૂર્વક સમજાવે છે-

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-" चत्तारि पोग्गलत्थिकायपएसा केवइएहिं धम्मत्थिकायपएसेहिं पुट्ठा ?" હે ભગવન્ ! પુદ્ગલાસ્તિકાયના ચાર પ્રદેશો કેટલા ધર્માસ્તિકાયપ્રદેશો વડે સ્પૃષ્ટ થાય છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-" जहन्नपए दसहिं उक्कोसपए बावीसाए " હે ગૌતમ ! ઓછામાં ઓછા દસ અને વધારેમાં વધારે બાવીશ ધર્માસ્તિકાય-

शत्या धर्मास्तिकायप्रदेशैश्चत्वारः पुद्गलास्तिकायप्रदेशाः स्पृष्टा भवन्ति। उत्कृष्टपदे द्वाविंशति स्पर्शकप्रदेशानां कोष्ठकम् यंत्रपृष्ठे अष्टमाङ्के विलोकनीयम्। गौतमः पृच्छति ' पंच पुग्गलत्थिकायपएसा केवइएहिं धम्मत्थिकायपएसेहिं पुट्ठा ?' हे भदन्त ! पञ्चपुद्गलास्तिकायप्रदेशाः कियद्भिः धर्मास्तिकायप्रदेशैः स्पृष्टा भवन्ति ? भगवानाह-'जहन्नपदे बारसहिं, उक्कोसपए सत्तावीसाए' हे गौतम ! जघन्यपदे-जघन्येन द्वादशभिः धर्मास्तिकायप्रदेशैः, उत्कृष्टपदे-उत्कृष्टेन, सप्तविंशत्या धर्मास्तिकायप्रदेशैः पञ्चपुद्गलास्तिकायप्रदेशाः स्पृष्टा भवन्ति। गौतमः पृच्छति-'छ पोग्गलत्थिकायपएसा०' हे भदन्त ! षट् पुद्गलास्तिकाय-

---

काय प्रदेश स्पृष्ट होते हैं। जघन्यपद में पुद्गलास्तिकाय के चार प्रदेश धर्मास्तिकाय के दशप्रदेशों द्वारा जो स्पृष्ट होते कहे गये हैं, उनका कोष्ठक यंत्रपृष्ठमं सात में देख लेवें

उत्कृष्ट पद में पुद्गलास्तिकाय के जो चार प्रदेश धर्मास्तिकाय के २२ प्रदेशों द्वारा स्पृष्ट होते कहे गये हैं-उनका कोष्ठक का यंत्रपृष्ठ के नं० ८ में देख लेवें

अब गौतम प्रभु से ऐसा पूछते हैं-'पंच पोग्गलत्थिकायपएसा केवइएहिं धम्मत्थिकायपएसेहिं पुट्ठा' हे भदन्त ! पांच पुद्गलास्तिकाय प्रदेश कितने धर्मास्तिकाय प्रदेशों द्वारा स्पृष्ट होते हैं ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-'जहन्नपए बारसहिं, उक्कोसपए सत्तावीसाए' हे गौतम ! पुद्गलास्तिकाय के पांच प्रदेश जघन्य रूप से धर्मास्तिकाय के १२ प्रदेशों द्वारा और उत्कृष्टरूप से धर्मास्तिकाय के २७ प्रदेशों द्वारा

પ્રદેશો વડે ચાર પુદ્ગલાસ્તિકાયપ્રદેશો સ્પૃષ્ટ થાય છે, ઓછામાં ઓછા દસ ધર્માસ્તિકાયપ્રદેશો વડે ચાર પુદ્ગલાસ્તિકાયપ્રદેશોની સ્પર્શનાનો કોઠો યંત્રપેજમાં સાતમા નંબરનો છે તે કોઠો જોઇને સમજી લેવો.

ધર્માસ્તિકાયના વધારેમાં વધારે ૨૨ પ્રદેશો વડે પુદ્ગલાસ્તિકાયના ચાર પ્રદેશોની સ્પર્શના થાય છે આ વાત સ્પષ્ટ કરતો કોઠો યંત્રપેજમાં નં. ૮ માં જોઇને સમજી લેવો.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-" पंच पोग्गलत्थिकायपएसा केवइएहिं धम्मत्थिकायपएसेहिं पुट्ठा ?" હે ભગવન્ ! પાંચ પુદ્ગલાસ્તિકાયપ્રદેશો કેટલા ધર્માસ્તિકાયપ્રદેશો વડે સ્પૃષ્ટ થાય છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-" जहन्नपए बारसहिं, उक्कोसपए सत्तावीसाए " હે ગૌતમ ! પુદ્ગલાસ્તિકાયના પાંચ પ્રદેશો ધર્માસ્તિકાયના ઓછામાં ઓછા ૧૨ પ્રદેશો વડે અને વધારેમાં વધારે ૨૭ પ્રદેશો વડે સ્પૃષ્ટ થાય છે.

कायप्रदेशाः कियद्भिः धर्मास्तिकायप्रदेशैः स्पृष्टा भवन्ति ? भगवानाह-' जहन्नपए चोद्दसहिं, उक्कोसपए बत्तीसाए ' हे गौतम ! जघन्यपदे-जघन्येन, चतुर्दशभिः धर्मास्तिकायप्रदेशैः उत्कृष्टपदे-उत्कृष्टेन, द्वात्रिंशता धर्मास्तिकायप्रदेशैः षट्पुद्गलास्तिकायप्रदेशाः स्पृष्टा भवन्ति । गौतमः पृच्छति-' सत्तपोग्गलत्थिकायपएसा केवइएहिं धम्मत्थिकायपएसेहिं पुट्ठा ? ' हे भदन्त ! सप्त पुद्गलास्तिकायप्रदेशाः कियद्भिः धर्मास्तिकायप्रदेशैः स्पृष्टा भवन्ति ? भगवानाह-' जहण्णेणं सोलसहिं उक्कोसेणं सत्ततीसाए ' हे गौतम ! जघन्येन षोडशभिः धर्मास्तिकायप्रदेशैः, उत्कृष्टेन सप्तत्रिंशता धर्मास्तिकायप्रदेशैः सप्तपुद्गलास्तिकायप्रदेशाः स्पृष्टा

स्पृष्ट होते हैं। अब गौतम प्रभु से ऐसा पूछते हैं-'छ पोग्गलत्थिकायपएसा' हे भदन्त! पुद्गलास्तिकाय के ६ प्रदेश धर्मास्तिकाय के कितने प्रदेशों द्वारा स्पृष्ट होते हैं ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-'जहन्नपए चोद्दसहिं, उक्कोसपए बत्तीसाए' हे गौतम! जघन्यपद में धर्मास्तिकाय के १४ प्रदेशों द्वारा और उत्कृष्ट पद में ३२ प्रदेशों द्वारा पुद्गलास्तकाय के ६ प्रदेश स्पृष्ट होते है। अब गौतम प्रभु से ऐसा पूछतें हैं-'सत्त पोग्गलत्थिकायपएसा केवइएहिं धम्मत्थिकायपएसेहिं पुट्ठा ' हे भदन्त! सात पुद्गलास्तिकाय प्रदेश धर्मास्तिकाय के कितने प्रदेशों द्वारा स्पृष्ट होते हैं ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-'जहण्णेणं सोलसहिं उक्कोसेणं सत्ततीसाए' हे गौतम ! पुद्गलास्तिकाय के सात प्रदेश जघन्य पद में धर्मास्तिकाय में १६ प्रदेशो द्वारा और उत्कृष्ट पद धर्मास्तिकाय के ३७ प्रदेशों द्वारा स्पृष्ट होते हैं। अब गौतम प्रभु से ऐसा पूछतें

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-" छ पोग्गलत्थिकायपएसा० " હે ભગવન્! પુદ્ગલાસ્તિકાયના ૬ પ્રદેશો ધર્માસ્તિકાયના કેટલા પ્રદેશો વડે સ્પૃષ્ટ થાય છે?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-" जहन्नपए चोद्दसहिं, उक्कोसपए बत्तीसाए " હે ગૌતમ! પુદ્ગલાસ્તિકાયના ૬ પ્રદેશો ધર્માસ્તિકાયના ઓછામાં ઓછા ૧૪ પ્રદેશો વડે અને વધારેમાં વધારે ૩૨ પ્રદેશો વડે સ્પૃષ્ટ થાય છે.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-" सत्त पोग्गलत्थिकायपएसा केवइएहिं धम्मत्थिकायपएसेहिं पुट्ठा ?" હે ભગવન્! સાત પુદ્ગલાસ્તિકાય પ્રદેશો કેટલા ધર્માસ્તિકાયપ્રદેશો વડે સ્પૃષ્ટ થાય છે?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-" जहन्नेणं सोलसहिं, उक्कोसेणं सत्ततीसाए " હે ગૌતમ! પુદ્ગલાસ્તિકાયના સાત પ્રદેશો ધર્માસ્તિકાયના ઓછામાં ઓછા ૧૬ પ્રદેશો વડે અને વધારેમાં વધારે ૩૭ પ્રદેશો વડે સ્પૃષ્ટ થાય છે.

भवन्ति । गौतमः पृच्छति–' अट्ठ पोग्गलत्थिकायपएसा केवइएहिं धम्मत्थिकाय-पएसेहिं पुट्ठा ?' हे भदन्त ! अष्टपुद्गलास्तिकायप्रदेशाः कियद्भिः धर्मास्तिकाय-प्रदेशैः स्पृष्टा भवन्ति ? भगवानाह–' जहण्णेणं अट्ठारसहिं उक्कोसेणं बयालीसाए ' जघन्येन अष्टादशभिः धर्मास्तिकायप्रदेशैः, उत्कृष्टेन द्वाचत्वारिंशता धर्मास्तिकाय-प्रदेशैः अष्टपुद्गलास्तिकायप्रदेशाः स्पृष्टा भवन्ति । गौतमः पृच्छति–'नवपोग्गलत्थि-कायपएसा केवइएहिं धम्मत्थिकायपएसेहिं पुट्ठा ?' हे भदन्त ! नवपुद्गलास्ति-कायप्रदेशाः कियद्भिः धर्मास्तिकायप्रदेशैः स्पृष्टाः भवन्ति ? भगवानाह–'जह-ण्णेणं वीसाए, उक्कोसेणं सीयालीसाए ' हे गौतम ! जघन्येन विंशत्या धर्मास्ति-

---

हैं–'अट्ठपोग्गलत्थिकायपएसा केवइएहिं धम्मत्थिकायपएसेहिं पुट्ठा' हे भदन्त ! पुद्गलास्तिकाय के आठ प्रदेश धर्मास्तिकाय के कितने प्रदेशों द्वारा स्पृष्ट होते है? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं–'जहण्णेणं अट्ठार-सहिं, उक्कोसेणं बायालीसाए' हे गौतम ! पुद्गलास्तिकाय के आठ प्रदेश जघन्यपद में धर्मास्तिकाय के १९ प्रदेशों द्वारा और उत्कृष्ट पद में धर्मास्तिकाय के ४२ प्रदेशों द्वारा स्पृष्ट होते हैं । अब गौतम प्रभु से ऐसा पूछते हैं–'नव पोग्गलत्थिकायपएसा केवइएहिं धम्मत्थिकायपएसेहिं पुट्ठा' हे भदन्त ! पुद्गलास्तिकाय के नौ प्रदेश धर्मास्तिकाय के कितने प्रदेशों द्वारा स्पृष्ट होते हैं ? उत्तर में प्रभु कहते हैं—'जहण्णेणं वीसाए, उक्कोसेणं सीयालीसाए' हे गौतम ! पुद्गलास्तिकाय के नौ प्रदेश जघन्य पद में धर्मास्तिकाय के २० प्रदेशों द्वारा और उत्कृष्ट पद में धर्मास्ति-

---

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન–" अट्ठ पोग्गलत्थिकायपएसा केवइएहिं धम्मत्थि-कायपएसेहिं पुट्ठा ?" હે ભગવન્ ! પુદ્ગલાસ્તિકાયના આઠ પ્રદેશો ધર્માસ્તિકાયના કેટલા પ્રદેશો વડે સ્પૃષ્ટ થાય છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર–" जहण्णेणं अट्ठारसहिं, उक्कोसेणं बायालीसाए " હે ગૌતમ ! પુદ્ગલાસ્તિકાયના આઠ પ્રદેશો ધર્માસ્તિકાયના ઓછામાં ઓછા ૧૮ પ્રદેશો વડે અને વધારેમાં વધારે ૪૨ પ્રદેશો વડે સ્પૃષ્ટ થાય છે.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન–" नव पोग्गलत्थिकायपएसा केवइएहिं धम्मत्थि-कायपएसेहिं पुट्ठा ?" હે ભગવન્ ! પુદ્ગલાસ્તિકાયના નવ પ્રદેશો ધર્માસ્તિકા-યના કેટલા પ્રદેશો વડે સ્પૃષ્ટ થાય છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર–" जहण्णेणं वीसाए, उक्कोसेणं सीयालीसाए " હે ગૌતમ ! પુદ્ગલાસ્તિકાયના નવ પ્રદેશો ધર્માસ્તિકાયના ઓછામાં ઓછા ૨૦ પ્રદેશો વડે અને વધારેમાં વધારે ૪૭ પ્રદેશો વડે સ્પૃષ્ટ થાય છે,

कायप्रदेशैः, उत्कृष्टेन सप्तचत्वारिंशता धर्मास्तिकायप्रदेशैः नवपुद्गलास्तिकायप्रदेशाः स्पृष्टा भवन्ति । गौतमः पृच्छति-' दस पोग्गलत्थिकायपएसा केवइएहिं धम्मत्थिकायपएसेहिं पुट्ठा ?' हे भदन्त ! दशपुद्गलास्तिकायप्रदेशाः कियद्भिः धर्मास्तिकायप्रदेशैः स्पृष्टा भवन्ति ? भगवानाह-' जहण्णेणं बावीसाए, उक्कोसेणं बावण्णाए' हे गौतम ! जघन्येन द्वाविंशत्या धर्मास्तिकायप्रदेशैः उत्कृष्टेन द्वापञ्चाशता धर्मास्तिकायप्रदेशैः दशपुद्गलास्तिकायप्रदेशाः स्पृष्टा भवन्ति । ' आगासत्थिकायस्स सव्वत्थ उक्कोसगं भाणियव्वं ' आकाशास्तिकायस्य सर्वत्र-एकप्रदेशिकाद्यसंख्यप्रदेशिकान्ते उत्कृष्टकम् उत्कृष्टपदमेव भणितव्यम्, न जघन्यकमितिभावः। आकाशस्य सर्वत्र सद्भावात् असंख्यप्रदेशत्वात् । गौतमः पृच्छति-' संखेज्जा भंते ! पोग्गलत्थिकायपएसा केवइएहिं धम्मत्थिकायपएसेहिं पुट्ठा ?' हे भदन्त ! संख्येयाः

काय के ४७ पदेशों द्वारा स्पृष्ट होते हैं ।

अब गौतम प्रभु से ऐसा पूछते हैं-' दस पोग्गलत्थिकायपएसा केवइएहिं धम्मत्थिकायपएसेहिं पुट्ठा ' हे भदन्त ! पुद्गलास्तिकाय के १० दश प्रदेश धर्मास्तिकाय के कितने प्रदेशों द्वारा स्पृष्ट होते हैं ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-'जहण्णेणं बावीसाए उक्कोसेणं बावन्नाए' हे गौतम ! धर्मास्तिकाय के २२ प्रदेशों द्वारा जघन्यरूप में, और धर्मास्तिकाय के ५२ प्रदेशों द्वारा उत्कृष्टरूप में १० पुद्गलास्तिकाय के प्रदेश स्पृष्ट होते हैं। 'आगासत्थिकायस्स सव्वत्थ उक्कोसगं भाणियव्वं' आकाशास्तिकाय का सर्वत्र-एकप्रदेशिक से लेकर असंख्यात प्रदेशिक तक में-उत्कृष्टपद ही कहना चाहिये-जघन्य पद नहीं, क्यों कि उसका सर्वत्र सद्भाव रहता है। अब गौतम से ऐसा पूछते हैं-'संखेज्जा भंते ! पोग्गलत्थिकायपएसा केवइएहिं धम्म-

---

गौतम स्वामीनो प्रश्न-" दस पोग्गलत्थिकायपएसा केवइएहिं धम्मत्थिकायपएसेहिं पुट्ठा ?" हे भगवन् ! पुद्गलास्तिकायना दस प्रदेशो धर्मास्तिकायना केटला प्रदेशो वडे स्पृष्ट थाय छे ?

महावीर प्रभुनो उत्तर-" जहण्णेणं बावीसाए, उक्कोसेणं बावन्नाए " हे गौतम ! पुद्गलास्तिकायना दस प्रदेशो धर्मास्तिकायना ओछामां ओछा २२ प्रदेशो वडे अने वधारेमां वधारे पर प्रदेशो वडे स्पृष्ट थाय छे. " आगासत्थिकायस्स सव्वत्थ उक्कोसगं भाणियव्वं " आकाशास्तिकायनुं उत्कृष्ट पद ज सर्वत्र-एक प्रदेशिकथी लईने असंख्यात प्रदेशिक सुधीमा-कहेवुं जोईए-जघन्य पदनुं कथन करवुं जोईए नहीं, कारण के तेनो सर्वत्र सद्भाव रहे छे, अने ते असंख्यात प्रदेशवाणुं छे.

पुद्गलास्तिकायप्रदेशाः कियद्भिः धर्मास्तिकायप्रदेशैः स्पृष्टा भवन्ति ? भगवानाह-'जहन्नपए तेणेव संखेज्जएणं दुगुणेणं दुरूवाहिएणं, उक्कोसपए तेणेव संखेज्जएणं पंचगुणेणं दुरूवाहिएणं' हे गौतम ! जघन्यपदे जघन्येन, तेनैव-यत् संख्येयकोऽयं स्कन्धस्तेनैव प्रदेशसंख्येयकेन द्विगुणेन द्विरूपाधिकेन धर्मास्तिकायप्रदेशेन संख्येयाः पुद्गलास्तिकायप्रदेशाः स्पृष्टा भवन्ति, उत्कृष्टपदे-उत्कृष्टेन,

स्तिकाय पएसेहिं पुट्ठा' हे भदन्त ! पुद्गलास्तिकाय के संख्यातप्रदेश धर्मास्तिकाय के कितने प्रदेशों द्वारा स्पृष्ट होते हैं ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-'जहन्नपए तेणेव संखेज्जेणं दुगुणेणं दुरूवाहिएणं उक्कोसपए तेणेव संखेज्जएणं पंचगुणेणं दुरूवाहिएणं' हे गौतम ! पुद्गलास्तिकाय के संख्यातप्रदेश जघन्यपद में धर्मास्तिकाय के दो अधिक द्विगुणित संख्यातप्रदेशों द्वारा स्पृष्ट होते हैं और उत्कृष्टपद में वे दो अधिक पंचगुणित संख्यात प्रदेशों द्वारा स्पृष्ट होते हैं। इसको हम इस प्रकार से समझ सकते हैं-मानलो-जघन्यपद में २० प्रदेशिक स्कंध लोकान्त में एक प्रदेश में स्थित है-इसे पूर्वोक्त नयमतानुसार यों मानना चाहिये कि वह लोक के २० प्रदेशों में अवगाढ (रहा हुआ) है। सो जहां वह अवगाढ है वहां के उन २० प्रदेशों द्वारा तथा उसी नयमतानुसार अपने उपरितन या अधस्तन २० प्रदेशों द्वारा, एवं आजूबाजू के दो प्रदेशों द्वारा इस प्रकार धर्मास्तिकाय के ४२

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-"संखेज्जा भंते ! पोग्गलत्थिकायपएसा केवइएहिं धम्मत्थिकायपएसेहिं पुट्ठा ?" હે ભગવન્ ! પુદ્ગલાસ્તિકાયના સંખ્યાત પ્રદેશો ધર્માસ્તિકાયના કેટલા પ્રદેશો વડે સ્પૃષ્ટ થાય છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-"जहन्नपए तेणेव संखेज्जेणं दुगुणेणं दुरूवाहिएणं, उक्कोसपए तेणेव संखेज्जएणं पंचगुणेणं दुरूवाहिएणं" ગૌતમ ! પુદ્ગલાસ્તિકાયના સંખ્યાત પ્રદેશો ધર્માસ્તિકાયના ઓછામાં ઓછા તે સંખ્યાતના બમણા કરતાં બે અધિક પ્રદેશો વડે સ્પૃષ્ટ થાય છે અને વધારેમાં વધારે તે સંખ્યાતના પાંચ ગણું કરતાં બે અધિક પ્રદેશો વડે સ્પૃષ્ટ થાય છે. આ કથનનું સ્પષ્ટીકરણ આ પ્રમાણે કરી શકાય-ધારો કે વીસ પ્રદેશિક એક સ્કંધ લોકાન્તમાં એક પ્રદેશમાં રહેલો છે. પૂર્વોક્ત નયમતાનુસાર એવું માનવું જોઇએ કે તે લોકના ૨૦ પ્રદેશોમાં અવગાઢ (રહેલો) છે તેથી જ્યાં તે રહેલો છે ત્યાંના તે ૨૦ પ્રદેશો દ્વારા, તથા એજ નયમતાનુસાર પોતાના ઉપરિતન અથવા અધસ્તન ૨૦ પ્રદેશો દ્વારા અને આજૂબાજૂના બે પ્રદેશો દ્વારા, આ રીતે ધર્માસ્તિકાયના ઓછામાં ઓછા ૪૨ પ્રદેશો વડે પુદ્ગલાસ્તિકાયના

तेनैव-यत्संख्येयकोऽयं स्कन्धस्तेनैव प्रदेशसंख्येकेन पञ्चगुणेन द्विरूपाधिकेन धर्मास्तिकायप्रदेशेन संख्येयाः पुद्गलास्तिकायप्रदेशाः स्पृष्टा भवन्ति, तथाहि-जघन्यपदे विंशतिप्रदेशिकः स्कन्धो लोकान्ते एकप्रदेशे स्थितः, स च नयमतेन विंशत्यावगाढप्रदेशैः, विंशत्येव च नयमतेनैव अधस्तनैः, उपरितनैर्वा प्रदेशैः, द्वाभ्यां च

प्रदेशों द्वारा, पुद्गलास्तिकाय के संख्यातप्रदेश जघन्यपद में स्पृष्ट होते हैं। यह पहिले कहा जा चुका है कि जघन्यपद में विवक्षित प्रदेशों को द्विगुणित करके आगत संख्या में दो को जोड़ देना चाहिये। यहां पुद्गलास्तिकाय के संख्यातप्रदेश-२० प्रदेश जघन्यपद में विवक्षित है-उन्हें २ से गुणा करने पर या उतने ही प्रदेश उनमें मिलाने पर ४० आते हैं और फिर ४० में २ को जोड़ देने से ४२ हो जाते हैं। ये ४२ प्रदेशजघन्यपद में धर्मास्तिकाय के हैं। इतने धर्मास्तिकाय प्रदेशों द्वारा संख्यातप्रदेश पुद्गलास्तिकाय के स्पृष्ट होते हैं। उत्कृष्ट पद में धर्मास्तिकाय के १०२ प्रदेशों द्वारा पुद्गलास्तिकाय के संख्यात प्रदेश स्पृष्ट होते हैं। इन्हें इस प्रकार से समझना चाहिये। विवक्षित प्रदेशों को ५ से गुणित कर आये हुए संख्या में २ जोड देना चाहिये-इस प्रकार करने से उत्कृष्ट पद में स्पृष्ट प्रदेशों की संख्या आ जाती है। इसका तात्पर्य ऐसा है कि उत्कृष्ट पद में २० संख्याप्रमाण संख्यात परमाणुवाला पुद्गलास्तिकायरूप स्कन्ध स्वाभाविक २० अवगाढ प्रदेशों

સંખ્યાત પ્રદેશો જઘન્યપદમાં સ્પૃષ્ટ થાય છે. તે વાત તો પહેલાં સ્પષ્ટ કરવામાં આવી છે કે જઘન્યપદમાં આવેલા પ્રદેશોના બમણા કરીને ગુણાકારમાં બે ઉમેરવાથી સ્પર્શકના પ્રદેશો જાણી શકાય છે. અહીં પુદ્ગલાસ્તિકાયના સંખ્યાત પ્રદેશ-૨૦ પ્રદેશ-જઘન્ય પદમાં લેવામા આવ્યા છે. તેના બમણા કરવાથી ૪૦ આવે છે. પછી ૪૦ માં બે ઉમેરવાથી ૪૨ આવે છે. એટલે કે ૨૦ પ્રદેશોવાળો સ્કંધ ધર્માસ્તિકાયના ઓછામાં ઓછા ૪૨ પ્રદેશો વડે સ્પૃષ્ટ થાય છે સંખ્યાત પ્રદેશોવાળા સ્કંધ-ધારો કે ૨૦ પ્રદેશોવાળો સ્કંધ ધર્માસ્તિકાયના વધારેમાં વધારે ૧૦૨ પ્રદેશો વડે સ્પૃષ્ટ થાય છે. આ કથનનું સ્પષ્ટીકરણ આ પ્રમાણે છે-પુદ્ગલાસ્તિકાયના પ્રદેશોના પાંચ ગણું કરી ગુણાકારમાં બે ઉમેરવાથી વધારેમાં વધારે સ્પૃષ્ટ પ્રદેશોની સંખ્યા આવે છે. આ કથનનું તાત્પર્ય એ છે કે-ઉત્કૃષ્ટ પદમાં ૨૦ સંખ્યાપ્રમાણ સંખ્યાત પરમાણુવાળા પુદ્ગલાસ્તિકાયરૂપ સ્કંધ સ્વાભાવિક ૨૦ અવગાઢ પ્રદેશો

पार्श्वप्रदेशाभ्यामिति द्विचत्वारिंशत्संख्यकप्रदेशैः स्पृश्यते, उत्कृष्टपदे तु विंशत्या स्वाभाविकैरवगाढप्रदेशैः, तथा विंशत्या अधस्तनैः, विंशत्या उपरितनैः विंशत्या विंशत्या पूर्वपश्चिमपार्श्वयोश्च, द्वाभ्यां च दक्षिणोत्तरपार्श्ववर्तिभ्यां स्पृष्टस्ततश्च त्रिचत्वारिंशः संख्यातपरमाणुकः स्कन्धः पञ्चगुणितया प्रदेशानां विंशत्या, प्रदेशद्वयेन द्व्यधिकशतेनेत्यर्थः स्पृष्ट इति। गौतमः ! पृच्छति–'केवइएहिं अधम्मत्थिकाएहिं' हे भदन्त ! कियद्भिः, अधर्मास्तिकायप्रदेशैः संख्येयाः पुद्गलास्तिकायप्रदेशाः स्पृष्टा भवन्ति ? भगवानाह–'एवं चेव' हे गौतम ! एवमेव–पूर्वोक्तधर्मास्तिकायप्रदेशवदेव जघन्येन तेनैव संख्येयेन द्विगुणेन द्विरूपाधिकेन अधर्मास्तिकायप्रदेशेन उत्कृष्टेन तेनैव संख्येयेन पञ्चगुणेन द्विरूपाधिकेन अधर्मास्तिकायप्रदेशेन संख्येयाः पुद्गलास्तिकायप्रदेशाः स्पृष्टा भवन्ति। गौतमः पृच्छति–'केवइएहिं आगासत्थिकायपएसेहिं पुट्ठा ?' हे भदन्त ! कियद्भिः आकाशा

द्वारा, तथा २० अधस्तन (नीचे) और २० उपरितन प्रदेशों द्वारा, और २०–२० पूर्व पश्चिम के पास के प्रदेशों द्वारा और दक्षिण उत्तर पार्श्ववर्ती दो प्रदेशों द्वारा स्पृष्ट होता है। अब गौतम प्रभु से ऐसा पूछते हैं–'केवइएहिं अहम्मत्थिकायपएसेहिं०' हे भदन्त ! कितने अधर्मास्तिकाय प्रदेशों द्वारा संख्यात पुद्गलास्तिकायप्रदेश स्पृष्ट होते हैं। इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं–'एवंचेव' हे गौतम ! पूर्वोक्त धर्मास्तिकायप्रदेशों के कथनानुसार ही जघन्यपद में द्विगुणित एवं दोरूप अधिक उसी संख्यात अधर्मास्तिकायप्रदेश से, तथा उत्कृष्ट पद में पंचगुणित एवं दो रूप अधिक उसी संख्यात अधर्मास्तिकायप्रदेश से संख्यात पुद्गलास्तिकायप्रदेश स्पृष्ट होते हैं। अब गौतमस्वामी प्रभु से

દ્વારા, ૨૦ નીચેના પ્રદેશો દ્વારા, ૨૦ ઉપરના પ્રદેશો દ્વારા, અને ૨૦–૨૦ પૂર્વપશ્ચિમની પાસેના પ્રદેશો દ્વારા અને દક્ષિણુઉત્તર તરફના બે પ્રદેશો દ્વારા સ્પૃષ્ટ થાય છે.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન–' केवइएहिं अहम्मत्थिकायपएसेहिं० ?" હે ભગવન્ ! કેટલા અધર્માસ્તિકાય પ્રદેશો વડે સંખ્યાત પુદ્ગલાસ્તિકાય પ્રદેશો સ્પૃષ્ટ થાય છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર–" एवं चेव " હે ગૌતમ ! પૂર્વોક્ત ધર્માસ્તિકાય પ્રદેશોની જેમ જ ઓછામાં ઓછા તે સંખ્યાત કરતાં બે અધિક અધર્માસ્તિકાયપ્રદેશો વડે તથા વધારેમાં વધારે તે સંખ્યાત કરતાં પાંચ ગણું કરતાં બે અધિક અધર્માસ્તિકાય પ્રદેશો વડે તે સંખ્યાત પ્રદેશોવાળું પુદ્ગલાસ્તિકાય સ્પૃષ્ટ થાય છે.

स्तिकायप्रदेशैः संख्येया पुद्गलास्तिकायप्रदेशाः स्पृष्टा भवन्ति ? भगवानाह-' तेणेव संखेज्जएणं पंचगुणेणं दुरूवाहिएणं' हे गौतम ! तेनैव-यत्संख्येयकोऽयं-स्कन्धस्तत्प्रदेश संख्येयकेनैव पञ्चगुणेन द्विरूपाधिकेन आकाशास्तिकायप्रदेशेन संख्येयाः पुद्गलास्तिकायप्रदेशाः स्पृष्टा भवन्ति ? गौतमः पृच्छति-' केवइएहिं जीवत्थिकायपएसेहिं पुट्ठा ?' हे भदन्त ! कियद्भिः जीवास्तिकायप्रदेशैः संख्येयाः पुद्गलास्तिकायप्रदेशाः स्पृष्टा भवन्ति ? भगवानाह-' अणंतेहिं ' हे गौतम ! अनन्तैः जीवास्तिकायप्रदेशैः संख्येयाः पुद्गलास्तिकायप्रदेशाः स्पृष्टा भवन्ति ।

ऐसा पूछते हैं-'केवइएहिं आगासत्थिकायपएसेहिं पुट्ठा' हे भदन्त ! संख्यात पुद्गलास्तिकायप्रदेश कितने आकाशास्तिकाय प्रदेशों द्वारा स्पृष्ट होते हैं ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-' तेणेव संखेज्जएणं पंचगुणेणं दुरूवाहिएणं' हे गौतम ! संख्यात प्रदेशवाला जो पुद्गलस्कंध है वह दो रूप अधिक पंचगुणित संख्यात प्रदेशों द्वारा स्पृष्ट होता है-अर्थात् पुद्गलास्तिकाय के संख्यातप्रदेश दो रूप अधिक पांचगुणित आकाशास्तिकाय के संख्यातप्रदेशों द्वारा स्पृष्ट होते हैं। यह कथन उत्कृष्ट पदकी अपेक्षा कहा गया जानना चाहिये। अब गौतमस्वामी प्रभु से ऐसा पूछते हैं-'केवइएहिं जीवत्थिकायपएसेहिं पुट्ठा' संख्यात पुद्गलास्तिकायप्रदेश कितने जीवास्तिकायप्रदेशों द्वारा स्पृष्ट होते हैं ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-'अणंतेहिं' हे गौतम ! अनन्त जीवास्तिकायप्रदेशों द्वारा संख्यातपुद्गलास्तिकालप्रदेश स्पृष्ट होते हैं। अब

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-" केवइएहिं आगासत्थिकायपएसेहिं पुट्ठा ?" હે ભગવન્! સંખ્યાત પુદ્ગલાસ્તિકાય પ્રદેશો કેટલા આકાશાસ્તિકાયપ્રદેશો વડે સ્પૃષ્ટ થાય છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-" तेणेव संखेज्जएणं पंचगुणेणं दुरूवाहिएणं " હે ગૌતમ ! સંખ્યાત પ્રદેશોવાળો જે પુદ્ગલસ્કંધ છે તે પાંચ ગણું સંખ્યાત કરતાં બે અધિક આકાશાસ્તિકાય પ્રદેશો વડે સ્પૃષ્ટ થાય છે. આ કથન ઉત્કૃષ્ટ પદની અપેક્ષાએ કરવામાં આવ્યું છે.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-" केवइएहिं जीवत्थिकायपएसेहिं पुट्ठा ?" હે ભગવન્! સંખ્યાત પ્રદેશોવાળો જે પુદ્ગલસ્કંધ છે તે કેટલા જીવાસ્તિકાયપ્રદેશો વડે સ્પૃષ્ટ થાય છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-' अणंतेहिं " હે ગૌતમ ! સંખ્યાત પુદ્ગલાસ્તિકાયપ્રદેશો અનંત જીવાસ્તિકાયપ્રદેશો વડે સ્પૃષ્ટ થાય છે.

गौतमः पृच्छति–'केवइएहिं पोग्गलत्थिकायपएसेहिं पुट्ठा ?' हे भदन्त ! कियद्भिः पुद्गलास्तिकायप्रदेशैः संख्येयाः पुद्गलास्तिकायप्रदेशाः स्पृष्टा भवन्ति ? भगवानाह–' अणंतेहिं ' हे गौतम ! अनन्तैः पुद्गलास्तिकायप्रदेशैः संख्येयाः पुद्गलास्तिकायप्रदेशाः स्पृष्टा भवन्ति । गौतमः पृच्छति–'केवइएहिं अद्धासमएहिं पुट्ठा ?' हे भदन्त ! कियद्भिः अद्धासमयैः संख्येयाः पुद्गलास्तिकायप्रदेशाः स्पृष्टा भवन्ति ? भगवानाह–' सिय पुट्ठे सिय नो पुट्ठे जाव अणंतेहिं ' हे गौतम ! अद्धासमयैः संख्येयाः पुद्गलास्तिकायप्रदेशाः स्यात्–कदाचित् स्पृष्टा भवन्ति समय क्षेत्रापेक्षया; स्यात्–कदाचित् नो स्पृष्टा भवन्ति समयक्षेत्राद्बहिरपेक्षया, यावत्–

गौतम प्रभु से ऐसा पूछते हैं–'केवइएहिं पोग्गलत्थिकायपएसेहिं पुट्ठा' हे भदन्त ! कितने पुद्गलास्तिकाय प्रदेशों द्वारा संख्यात पुद्गलास्तिकाय प्रदेश स्पृष्ट होते हैं ? उत्तर में प्रभु कहते हैं–'अणंतेहिं' हे गौतम ! अनन्त पुद्गलास्तिकायप्रदेशों द्वारा संख्यात पुद्गलास्तिपदेश स्पृष्ट होते हैं। अब गौतमस्वामी प्रभु से ऐसा पूछते हैं–'केवइएहिं अद्धासमएहिं पुट्ठा' हे भदन्त ! कितने अद्धासमयों द्वारा संख्यात पुद्गलास्तिकायप्रदेश स्पृष्ट होते हैं ? उत्तर में प्रभु कहते हैं–'सिय पुट्ठे, सिय नो पुट्ठे जाव अणंतेहिं' हे गौतम ! अद्धासमयों द्वारा संख्यात पुद्गलास्तिकायप्रदेश कदाचित् स्पृष्ट होते हैं और कदाचित् स्पृष्ट नहीं होते हैं। कदाचित् स्पृष्ट होते हैं ऐसा जो कथन है वह समयक्षेत्र की अपेक्षा से है क्योंकि समयक्षेत्र में ही अद्धासमय का सद्भाव है–समयक्षेत्र के बाहिर अद्धासमय का सद्भाव नहीं है। इसलिये वे उनके द्वारा स्पृष्ट नहीं होते हैं। समय-

---

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન–"केवइएहिं पोग्गलत्थिकायपएसेहिं पुट्ठा ?" હે ભગવન્ ! કેટલા પુદ્ગલાસ્તિકાય પ્રદેશો દ્વારા સંખ્યાત પુદ્ગલાસ્તિકાયપ્રદેશ સ્પૃષ્ટ થાય છે ?

ઉત્તર–"अणंतेहिं" હે ગૌતમ ! અનંત પુદ્ગલાસ્તિકાયપ્રદેશો વડે સંખ્યાત પુદ્ગલાસ્તિકાય પ્રદેશ સ્પૃષ્ટ થાય છે.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન–"केवइएहिं अद्धासमएहिं पुट्ठा ?" હે ભગવન્ ! કેટલા અદ્ધાસમયો વડે સંખ્યાત પુદ્ગલાસ્તિકાય પ્રદેશો સ્પૃષ્ટ થાય છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર–"सिय पुट्ठे, सिय नो पुट्ठे जाव अणंतेहिं" હે ગૌતમ ! સંખ્યાત પુદ્ગલાસ્તિકાયપ્રદેશો કયારેક અદ્ધાસમયો વડે સ્પૃષ્ટ થાય છે અને કયારેક સ્પૃષ્ટ થતા નથી. 'કયારેક સ્પૃષ્ટ થાય છે.' એવું જે કથન કરવામાં આવ્યું છે તે સમયક્ષેત્રની અપેક્ષાએ કરવામાં આવ્યું છે.

यदा-स्पृष्टा भवन्ति तदा नियमात् अनन्तैः अद्धासमयैः स्पृष्टा भवन्ति। गौतमः पृच्छति-'असंखेज्जा भंते ! पोग्गलत्थिकायपएसा केवइएहिं धम्मत्थिकायपएसेहिं पुट्ठा ?' भदन्त ! असंख्येयाः पुद्गलास्तिकायप्रदेशाः कियद्भिः धर्मास्ति कायप्रदेशैः स्पृष्टा भवन्ति ? भगवानाह-' जहन्नपए तेणेव असंखेज्जएणं दुगुणेणं दुरूवाहिएणं, उक्कोसपए तेणेव असंखेज्जएणं पंचगुणेणं दुरूवाहिएणं, सेसं जहा संखेज्जाणं जाव नियमं अणंतेहिं ' हे गौतम ! जघन्यपदे-जघन्येन, तेनैव यदसंख्येयकोऽयं स्कन्धस्तेनैव प्रदेशासंख्येयकेन द्विगुणेन द्विरूपाधिकेन धर्मास्ति कायप्रदेशेन उत्कृष्टेन तु तेनैव-यदसंख्येयकोऽयं स्कन्धस्तेनैव प्रदेशासंख्येयकेन पञ्चगुणेन द्विरूपाधिकेन धर्मास्तिकायप्रदेशेन असंख्येयाः पुद्गलास्तिकायप्रदेशाः

क्षेत्र में ही जब ये अद्धासमयों द्वारा स्पृष्ट होते हैं-तब नियम से ये अनन्त अद्धासमयों द्वारा स्पृष्ट होते हैं। अब गौतमस्वामी प्रभु से ऐसा पूछते हैं-'असंखेज्जाणं भंते ! पोग्गलत्थिकायपएसा केवइएहिं धम्मत्थिकायपएसेहिं पुट्ठा' हे भदन्त ! असंख्यात पुद्गलास्तिकाय प्रदेश कितने धर्मास्तिकायप्रदेशों द्वारा स्पृष्ट होते हैं ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-जहण्णपए तेणेव असंखेज्जएणं दुगुणेणं दुरूवाहिएणं, उक्कोसपए तेणेव असंखेज्जएणं पंचगुणेणं दुरूवाहिएणं, सेसा जहा संखेज्जाणं जाव नियमं अणंतेहिं' हे गौतम ! जघन्यपद में उस असंख्यात को दुगुना करके आये हुए राशि में दो को जोड देना चाहिये, इस प्रकार करने से जो प्रदेश राशि आती है इतने राशिप्रमाण धर्मास्तिकाय प्रदेशों द्वारा पुद्गलास्तिकाय के असंख्यातप्रदेश स्पृष्ट होते हैं। तथा उत्कृष्टपद में उसी असंख्यात को पंचगुणा करके आये हुए

કારણ કે સમયક્ષેત્રમાં જ અદ્ધાસમયનો સદ્ભાવ છે, સમયક્ષેત્રની બહાર અદ્ધાસમયનો સદ્ભાવ હોતો નથી તેથી ત્યાં તેઓ અદ્ધાસમયો વડે સ્પૃષ્ટ થતા નથી જ્યારે સમયક્ષેત્રમાં તેઓ અદ્ધાસમયો વડે સ્પૃષ્ટ થાય છે, ત્યારે નિયમથી જ અનંત અદ્ધાસમયો વડે જ સ્પૃષ્ટ થાય છે

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-" असंखेज्जाणं भंते ! पोग्गलकायपएसा केवइएहिं धम्मत्थिकायपएसेहिं पुट्ठा ?" હે ભગવન્! અસંખ્યાત પુદ્ગલાસ્તિકાય પ્રદેશો કેટલા ધર્માસ્તિકાયપ્રદેશો વડે સ્પૃષ્ટ થાય છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-" जहण्णपए तेणेव असंखेज्जएणं दुगुणेणं दुरूवाहिएणं, उक्कोसपए तेणेव असंखेज्जएणं पचगुणेणं दुरूवाहिएणं, सेसा जहा संखेज्जाणं जाव नियमं अणंतेहि " હે ગૌતમ ! અસંખ્યાતના બમણાં કરીને પછી બે ઉમેરવાથી જેટલી સંખ્યા આવે એટલા ઓછામાં ઓછા ધર્માસ્તિ-

स्पृष्टा भवन्ति, शेषं यथा संख्येयानां यावत् पुद्गलास्तिकायप्रदेशानाम् अधर्मास्ति-कायप्रदेशैः जघन्येन द्विगुणैः द्विरूपाधिकैः तैरेव संख्येयकैः, उत्कृष्टेन पञ्चगुणैः द्विरूपाधिकैः, आकाशास्तिकायप्रदेशैस्तु तैरेव संख्येयकैः पञ्चगुणैः द्विरूपाधिकैः,

---

राशि में दो को जोड देना चाहिये। इस प्रकार करने से जो प्रदेश-राशि आती है सो इतने राशिप्रमाण धर्मास्तिकाय प्रदेशों द्वारा पुद्गलास्तिकाय के असंख्यातप्रदेश स्पृष्ट होते हैं तथा उत्कृष्टपद में उसी असंख्यात को पंचगुणा करके आये हुए राशि में दो को जोड देना चाहिये-इस प्रकार करने से जो प्रदेशराशि आती हैं सो इतने राशिप्रमाण धर्मास्तिकायप्रदेशों द्वारा पुद्गलास्तिकाय के असंख्यात-प्रदेश स्पृष्ट होते हैं बाकी का और सब कथन जैसा पुद्गलास्तिकाय के संख्यात प्रदेशों के संबंध में कहा गया है-वैसा ही यहां जानना चाहिये। विशेषता केवल इतनी है कि यहां प्रत्येक अभिलाप में संख्यात की जगह असंख्यात का पाठ बोलना चाहिये। तात्पर्य ऐसा है कि जैसा पहिले संख्यात पुद्गलास्तिकायप्रदेशों के विषय में कहा गया कि-संख्यात पुद्गलास्तिकायप्रदेशों की जघन्यरूप से दो रूप अधिक, द्विगुणित संख्यात अधर्मास्तिकायप्रदेशों द्वारा उत्कृष्टरूप से दो रूप अधिक पंचगुणित संख्यात अधर्मास्तिकायप्रदेशों द्वारा, दो रूप अधिक पंचगुणित संख्यात आकाशास्तिकाय प्रदेशों द्वारा, अनन्त

કાય પ્રદેશો વડે, અને અસંખ્યાતના પાંચ ગણું કરીને પછી બે ઉમેરવાથી જેટલી સંખ્યા આવે એટલા વધારેમાં વધારે ધર્માસ્તિકાયપ્રદેશો વડે અસં-ખ્યાત પુદ્ગલાસ્તિકાયપ્રદેશો સ્પૃષ્ટ થાય છે બાકીનું સમસ્ત કથન પુદ્ગલા-સ્તિકાયના સંખ્યાત પ્રદેશોના સંબંધમાં જે પ્રમાણે કરવામાં આવ્યું છે એજ પ્રમાણે અહીં સમજવું વિશેષતા એટલી જ છે કે અહીં પ્રત્યેક અભિલાપમાં સંખ્યાતને બદલે અસંખ્યાત પદનો પ્રયોગ કરવો જોઇએ આ કથનનો ભાવાર્થ એ છે કે-અસંખ્યાત પુદ્ગલાસ્તિકાયોની ઓછામાં ઓછા અસંખ્યાતના બમણું કરતાં બે અધિક અધર્માસ્તિકાયપ્રદેશો વડે અને વધારેમાં વધારે અસંખ્યાતના પાંચ ગણું કરતાં બે અધિક અધર્માસ્તિકાય પ્રદેશો વડે સ્પર્શના થાય છે, તથા અસંખ્યાતના પાંચ ગણું કરતાં બે અધિક આકાશાસ્તિકાય-પ્રદેશો વડે અસંખ્યાત પુદ્ગલાસ્તિકાયપ્રદેશો સ્પૃષ્ટ થાય છે. અનંત જીવાસ્તિ-

जीवास्तिकायप्रदेशैः पुद्गलास्तिकायप्रदेशैः अनन्तैः, अद्धासमयैस्तु यदा स्पर्शना तदा नियमात् अनन्तैरेव स्पर्शना प्रतिपादिता तथैव असंख्येयानामपि पुद्गलास्तिकायप्रदेशानां तैरेव असंख्येयैः अधर्मास्तिकायप्रदेशैः जघन्येन द्विगुणैः द्विरूपाधिकैः, उत्कृष्टेन तैरेव असंख्येयकैः अधर्मास्तिकायप्रदेशैः पञ्चगुणैः द्विरूपाधिकैः, आकाशास्तिकायप्रदेशैस्तु तैरेव असंख्येयकैः पञ्चगुणैः द्विरूपाधिकैः, जीवास्तिकायप्रदेशैः पुद्गलास्तिकायप्रदेशैश्च अनन्तैः, अद्धासमयैः पुनर्यदा स्पर्शना तदा नियमाद् अनन्तैरेव स्पर्शना भवतीति भावः, गौतमः पृच्छति-' अणंता भंते ! पोग्गलत्थिकायपएसा केवइएहिं धम्मत्थिकायपएसेहिं पुट्ठा ? ' हे भदन्त ! अनन्ताः पुद्गलास्तिकायप्रदेशाः कियद्भिः धर्मास्तिकायप्रदेशैः स्पृष्टा भवन्ति ? भगवानाह-' एवं जहा असंखेज्जा तहा अणंता वि निरवसेसं ' हे गौतम ! एवं-पूर्वोक्तरीत्यैव,

---

जीवास्तिकायप्रदेशों द्वारा, अनन्तपुद्गलास्तिकायप्रदेशों द्वारा तथा जब अद्धासमयों द्वारा स्पर्शना होती है तब नियमतः अनन्त अद्धासमयों द्वारा स्पर्शना कही गई है, उसी प्रकार से जघन्यरूप से दो रूप अधिक, द्विगुणित असंख्यात अधर्मास्तिकायप्रदेशों द्वारा, तथा उत्कृष्टरूप से दो रूप अधिक पंचगुणित असंख्यात अधर्मास्तिकाय प्रदेशों द्वारा असंख्यात पुद्गलास्तिकायप्रदेशों की स्पर्शना होती है तथा दोरूप अधिक पंचगुणित असंख्यात आकाशास्तिकायप्रदेशों द्वारा, अनन्त जीवास्तिकायप्रदेशों द्वारा, अनन्त पुद्गलास्तिकाय प्रदेशों द्वारा और जब अद्धासमयों द्वारा स्पर्शना होती है तब नियमतः अनन्त अद्धासमयों द्वारा असंख्यात पुद्गलास्तिकायप्रदेशों की स्पर्शना होती है।

अब गौतमस्वामी प्रभु से ऐसा पूछते हैं-'अणंता भंते ! पोग्गलत्थिकायपएसा केवइएहिं धम्मत्थिकायपएसेहिं पुट्ठा' हे भदन्त ! पुद्गलास्तिकाय के अनन्तप्रदेश धर्मास्तिकाय के कितने प्रदेशों द्वारा स्पृष्ट होते हैं ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-'एवं जहा असंखेज्जा तहा

કાયપ્રદેશો દ્વારા, અનંત પુદ્ગલાસ્તિકાયપ્રદેશો દ્વારા અને જ્યારે અદ્ધાસમયો દ્વારા સ્પર્શના થાય ત્યારે નિયમતઃ અનંત અદ્ધાસમયો દ્વારા અસંખ્યાત પુદ્ગલાસ્તિકાય પ્રદેશોની સ્પર્શના થાય છે.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-" अणंता भंते ! पोग्गलत्थिकायपएसा केवइएहिं धम्मत्थिकायपएसेहिं पुट्ठा ?" હે ભગવન્ ! પુદ્ગલાસ્તિકાયના અનંત પ્રદેશો અધર્માસ્તિકાયના કેટલા પ્રદેશ વડે સ્પૃષ્ટ થાય છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-" एवं जहा असंखेज्जा तहा अणंता वि निरवसेसं " હે ગૌતમ ! પહેલાં જે પ્રકારનું અસંખ્યાત પુદ્ગલાસ્તિકાયપ્રદેશોનું

यथा असंख्येयाः पुद्गलास्तिकायप्रदेशाः प्रतिपादितास्तथैव अनन्ता अपि पुद्गलास्तिकायप्रदेशाः निरवशेषाः सर्वे प्रतिपत्तव्याः, विशेषस्तु अत्र यथा जघन्यपदे औपचारिका अवगाहप्रदेशा अधस्तना उपरितना वा भवन्ति तथैव उत्कृष्टपदेऽपि, निरूपचारितानाम् अनन्तानाम् आकाशप्रदेशानाम् अवगाहतोऽसद्भावात्, लोकस्यापि असंख्येयप्रदेशात्मकत्वात्, तथाचोक्तम्—

'धम्माइ पएसेहिं दुपएसाई जहन्नयपयम्मि ।
दुगुणदुरूवहिएणं तेणेव कहं नु हु फुसेज्जा ? ॥ १ ॥
एत्थ पुण जहण्णपयं लोगंते तत्थ लोगमालिहिउं ।
फुसणा दावेयव्वा अहवा खंभाइ कोडीए ॥ २ ॥ इति ॥

छाया—धर्मादि प्रदेशैर्द्विप्रदेशादिः जघन्यपदे ।
द्विगुणरूपाधिकेन तेनैव कथं नु हु स्पृशेत् ? ॥ १ ॥
अत्र पुनर्जघन्यपदं लोकान्ते तत्र लोकमालिख्य ।
स्पर्शना दापयित्वा, अथवा स्तम्भादिकोट्या (स्तम्भाद्याकारेण) ॥ २ ॥

अणंता वि निरवसेसं ' हे गौतम ! पूर्वोक्त रीति द्वारा जिस प्रकार से असंख्यात पुद्गलास्तिकायप्रदेशों का कथन किया गया है—उसी प्रकार से पुद्गलास्तिकाय के समस्त अनन्त प्रदेशों का कथन भी जानना चाहिये—परन्तु यहां ऐसी विशेषता है कि जैसे यहां जघन्यपद में भी नीचे के या ऊपर के वे अवगाह प्रदेश औपचारिक होते हैं, उसी प्रकार से उत्कृष्टपदमें भी नीचे के या ऊपर के वे अवगाहप्रदेश औपचारिक होते हैं, क्योंकि अवगाह की अपेक्षा से आकाशप्रदेश लोकाकाशप्रदेश-विना उपचार के अनन्त नहीं होते है। कारण यह है कि लोकाकाशके प्रदेश असंख्यात ही सिद्धान्तकारों ने कहे है। अतः अवगाह की अपेक्षा आकाशप्रदेश अनन्त वास्तविकरूप से नहीं होते है। सो ही कहाहै—'धम्माइपएसेहिं' इत्यादि ।

કથન કરવામાં આવ્યું છે, એજ પ્રકારે પુદ્ગલાસ્તિકાયના સમસ્ત અનંત પ્રદેશોનું કથન પણ સમજવું પરન્તુ અહીં એવી વિશેષતા છે કે—જેવી રીતે અહીં જઘન્ય પદમાં નીચેના અથવા ઉપરના અવગાહ પ્રદેશ ઔપચારિક હોય છે, એજ પ્રમાણે ઉત્કૃષ્ટ પદમાં પણ નીચેના અથવા ઉપરના તે અવગાહપ્રદેશો ઔપચારિક હોય છે, કારણ કે અવગાહની અપેક્ષાએ આકાશપ્રદેશ—લોકાકાશપ્રદેશ—ઔપચારિકતા વિના અનંત હોતા નથી, કારણ કે લોકાકાશના પ્રદેશ સિદ્ધાન્તકારોએ અસંખ્યાત જ કહ્યા છે તેથી અવગાહની અપેક્ષાએ આકાશપ્રદેશ વાસ્તવિક રૂપે અનંત હોતા નથી. એજ વાત આ સૂત્રપાઠ દ્વારા વ્યક્ત થઈ છે—"धम्माइपएसेहिं" ઇત્યાદિ.

गौतमः पृच्छति-' एगे भंते ! अद्धासमए केवइएहिं धम्मत्थिकायपएसेहिं पुट्ठे ? हे भदन्त ! एकः खलु अद्धासमयः कियद्भिः धर्मास्तिकायप्रदेशैः स्पृष्टः ? भगवानाह-' सत्तहिं ' हे गौतम ! सप्तभिः धर्मास्तिकायप्रदेशैः एकः अद्धासमयः स्पृष्टो भवति, अत्र वर्तमानसमयविशिष्टः समयक्षेत्रमध्यवर्ती परमाणुरेव अद्धासमयेन ग्रहीतव्यः, अन्यथा अद्धासमयस्य सप्तभिः धर्मास्तिकायादिप्रदेशैः स्पर्शनाऽनुपपत्तिः स्यात् , एवमत्र जघन्यपदाभावो बोध्यः, अद्धासमयस्य मनुष्यक्षेत्रमध्यवर्तित्वात् , जघन्यपदस्य लोकान्ते एव सद्भावात् । सप्तभिः स्पर्शना त्वेवम्-अद्धासमयविशिष्टं परमाणुद्रव्यम् एकत्र धर्मास्तिकायप्रदेशेऽवगाढम् , अन्ये च तस्य

अब गौतमस्वामी प्रभु से ऐसा पूछते हैं-'एगे भंते ! अद्धासमए केवइएहिं धम्मत्थिकायपएसेहिंपुट्ठे' हे भदन्त ! एक अद्धासमय कितने-धर्मास्तिकायप्रदेशों द्वारा स्पृष्ट होता है ? उत्तर में प्रभु कहते हैं-'सत्तहिं' हे गौतम ! सात धर्मास्तिकायप्रदेशों द्वारा एक अद्धासमय स्पृष्ट होता है। यहां 'अद्धासमय' इस शब्द से वर्तमान समय विशिष्ट समय क्षेत्रमध्यवर्ती परमाणु ही गृहीत करना चाहिये। नहीं तो अद्धासमय की सात धर्मास्तिकायप्रदेशों द्वारा स्पर्शना नहीं बन सकती है। यहां जघन्यपद का अभाव समझना चाहिये क्योंकि अद्धासमय मनुष्यक्षेत्र मध्यवर्ती है। जघन्यपद का सद्भाव तो लोकान्त में ही है । सात धर्मास्तिकायप्रदेशों द्वारा अद्धासमय की स्पर्शना इस प्रकार से है-अद्धासमयविशिष्ट परमाणु द्रव्य धर्मास्तिकाय के एक प्रदेश में अवगाढ है, धर्मास्तिकाय के दूसरे ६ प्रदेश उसकी ६ दिशाओं

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-" एगे भंते ! अद्धासमए केवइएहिं धम्मत्थिकायपएसेहिं पुट्ठे ?" હે ભગવન્ ! એક અદ્ધાસમય કેટલા ધર્માસ્તિકાયપ્રદેશ વડે સ્પૃષ્ટ થાય છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-" सत्तहिं " હે ગૌતમ ! સાત ધર્માસ્તિકાય પ્રદેશો દ્વારા એક અદ્ધાસમય સ્પૃષ્ટ થાય છે. અહીં " अद्धासमय " આ પદ વર્તમાન સમયવિશિષ્ટ, સમયક્ષેત્રમધ્યવર્તી (અઢી દ્વીપના) પરમાણુ જ ગૃહીત કરવા જોઇએ, નહીં તો અદ્ધાસમયની સાત ધર્માસ્તિકાય પ્રદેશો વડે સ્પર્શના સંભવી શકતી નથી અહીં જઘન્ય પદનો અભાવ સમજવો, કારણ કે અદ્ધાસમયનો મનુષ્યક્ષેત્રમાં જ સદ્ભાવ છે, જઘન્ય પદનો સદ્ભાવ તો લોકાન્તમાં જ છે. સાત ધર્માસ્તિકાય પ્રદેશો દ્વારા અદ્ધાસમયની સ્પર્શના આ પ્રકારે થાય છે-અદ્ધાસમયવિશિષ્ટ પરમાણુદ્રવ્ય ધર્માસ્તિકાયના એક પ્રદેશમાં અવગાઢ

षट्सु दिक्षु इत्येवं रीत्या सप्तेति । गौतमः पृच्छति-'केवइएहिं अहम्मत्थिकायप्प-एसेहिं पुट्ठे ?' हे भदन्त ! कियद्भिः अधर्मास्तिकायप्रदेशैः एकः अद्धासमयः स्पृष्टो भवति ? भगवानाह-' एवं चेव ' हे गौतम ! एवमेव-पूर्वोक्तरीत्यैव, सप्तभिः अधर्मास्तिकायप्रदेशैः एकः अद्धासमयः स्पृष्टो भवति, उक्तयुक्तेः, 'एवं आगा-सत्थिकायप्पएसेहि वि ' एवं-तथैव पूर्वोक्तरीत्यैव आकाशास्तिकायप्रदेशैरपि सप्तभिरेव एकः अद्धासमयः स्पृष्टो भवति । गौतमः पृच्छति-' केवइएहिं जीव-त्थिकायप्पएसेहिं पुट्ठे ? ' हे भदन्त ! कियद्भिः जीवास्तिकायप्रदेशैः एकः अद्धा समयः स्पृष्टो भवति ? भगवानाह-' अणंतेहिं, एवं जाव अद्धासमएहिं ' हे गौतम ! अनन्तैः जीवास्तिकायप्रदेशैः एकः अद्धासमयः स्पृष्टो भवति, एवं-

---

में हैं इस रीति से सात हो जाते हैं । अब गौतमस्वामी प्रभु से ऐसा पूछते हैं-'केवइएहिं अहम्मत्थिकायपएसेहिं पुट्ठे' हे भदन्त! कितने अध-र्मास्तिकाय प्रदेशों द्वारा एक अद्धासमय स्पृष्ट होता है ? उत्तर में प्रभु कहते हैं-'एवंचेव' हे गौतम ! सात अधर्मास्तिकायप्रदेशों द्वारा एक अद्धासमय स्पृष्ट होता है-युक्ति इस विषय में कही जा चुकी है। 'एवं आगासत्थिकायपएसेहि वि' इसी प्रकार सात ही आकाशा-स्तिकायप्रदेशों द्वारा एक अद्धासमय स्पृष्ट होता है । अब गौतमस्वामी प्रभु से ऐसा पूछते हैं-'केवइएहिं जीवत्थिकायपएसेहिं पुट्ठे' हे भदन्त ! किनने जीवास्तिकायप्रदेशों द्वारा एक अद्धासमय स्पृष्ट होता है ? उत्तर में प्रभु कहते हैं-'अणंतेहिं एवं जाव अद्धासमएहिं' हे गौतम ! अनन्त जीवास्तिकायप्रदेशों द्वारा एक अद्धासमय स्पृष्ट होता है । इसी प्रकार

છે, ધર્માસ્તિકાયના બીજા ૬ પ્રદેશો તેની ૭ દિશાઓમાં છે, આ રીતે સાત ધર્માસ્તિકાયપ્રદેશો વડે સ્પર્શના થાય છે.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-" केवइएहिं अहम्मत्थिकायपएसेहिं पुट्ठे ?" હે ભગવન્ ! એક અદ્ધાસમય કેટલા અધર્માસ્તિકાયના પ્રદેશો વડે સ્પૃષ્ટ થાય છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-" एवं चेव " હે ગૌતમ ! સાત અધર્માસ્તિકાયના પ્રદેશો વડે એક અદ્ધાસમય સ્પૃષ્ટ થાય છે. તેનું સ્પષ્ટીકરણ પણ ઉપર મુજબ જ સમજવું. " एवं आगासत्थिकायपएसेहिं वि " એજ પ્રમાણે સાત આકાશાસ્તિકાયપ્રદેશો વડે એક અદ્ધાસમય સ્પૃષ્ટ થાય છે.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-" केवइएहिं जीवत्थिकायपएसेहिं पुट्ठे ?" હે ભગવન્ ! એક અદ્ધાસમય કેટલા જીવાસ્તિકાયપ્રદેશ વડે સ્પૃષ્ટ થાય છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-" अणंतेहिं, एवं जाव अद्धासमएहिं " એક અદ્ધાસમય અનંત જીવાસ્તિકાયપ્રદેશો વડે સ્પૃષ્ટ થાય છે, એજ પ્રમાણે

तथैव पूर्वोक्तरीत्या यावत्-अनन्तैः पुद्गलास्तिकायप्रदेशैः एकः अद्धासमयः स्पृष्टो भवति, अद्धासमयैस्तु अनन्तैरेव एकः अद्धासमयः स्पृष्टो भवति, तथा च अद्धासमयविशिष्ट परमाणुद्रव्यरूपः एकः अद्धासमयः, अनन्तैः जीवास्तिकायप्रदेशैः स्पृष्टो भवति, तेषामेकप्रदेशोऽपि अनन्तत्वात्, एवम् अनन्तैः पुद्गलास्तिकाय-प्रदेशैः स्पृष्टः, एकद्रव्यस्य स्थाने पार्श्वतश्चानन्तानां पुद्गलानां सद्भावात् अनन्तैरेवाद्धासमयैश्च स्पृष्टो भवति, अद्धासमयविशिष्टानामनन्तानामपि परमाणु-द्रव्याणामद्धासमयत्वेन विवक्षितत्वात्, तेषांच तस्य स्थाने तत्पार्श्वतश्च सद्भावात्। धर्मास्तिकायादीनां प्रदेशतः स्पर्शनां प्रतिपाद्य अथ द्रव्यतस्तत्स्पर्शनां प्रतिपाद-

---

यावत्-अनन्तपुद्गलास्तिकायप्रदेशों द्वारा एक अद्धासमय स्पृष्ट होता है, तथा अनन्त ही अद्धासमयों द्वारा एक अद्धासमय स्पृष्ट होता है। तथा-अद्धासमय विशिष्ट परमाणुद्रव्य रूप एक अद्धासमय अनन्तजीवास्ति-कायप्रदेशों द्वारा स्पृष्ट होता है, क्योंकि वे एकप्रदेश में भी अनन्त होते हैं। इसी प्रकार अनन्त पुद्गलास्तिकायप्रदेशों एक अद्धासमय द्वारा स्पृष्ट होते हैं। क्योंकि एक द्रव्य के स्थान में तथा उसकी आजूबाजू में अनन्त-पुद्गलोंका सद्भाव रहता है। अनन्त अद्धासमयों द्वारा एक अद्धासमय स्पृष्ट होता है-इसका तात्पर्य ऐसा है कि अद्धासमयविशिष्ट अनन्त-परमाणुद्रव्य अद्धासमयरूप से विवक्षित हुए हैं। अतः ये अद्धासमय-रूप से विवक्षितपरमाणु उसके स्थान में और उसकी आजूबाजू में अनन्त रहते हैं। इस प्रकार धर्मास्तिकायादि कों की प्रदेश की अपेक्षा स्पर्शना कहकर अब द्रव्यतः उनकी स्पर्शना कही जाती है-इसमें गौतम ने

અનંત પુદ્ગલાસ્તિકાય પ્રદેશો વડે એક અદ્ધાસમય સ્પૃષ્ટ થાય છે અને અનંત અદ્ધાસમયો વડે એક અદ્ધાસમય સ્પૃષ્ટ થાય છે. અદ્ધાસમય વિશિષ્ટ પરમાણુદ્રવ્ય રૂપ એક અદ્ધાસમય અનંત જીવાસ્તિકાયપ્રદેશો વડે સ્પૃષ્ટ થાય છે કારણ કે તેઓ એક પ્રદેશમાં પણ અનંત હોય છે. એજ પ્રમાણે અનંતપુદ્ગલાસ્તિકાય પ્રદેશો વડે એક અદ્ધાસમય સ્પૃષ્ટ થાય છે, કારણ કે એક દ્રવ્યના સ્થાનમાં તથા તેની આજૂ માજૂમાં અનંત પુદ્ગલોનો સદ્ભાવ રહે છે. અનંત અદ્ધાસમયો વડે એક અદ્ધાસમય સ્પૃષ્ટ થાય છે તેનું સ્પષ્ટીકરણ નીચે પ્રમાણે છે-અદ્ધાસમય-વિશિષ્ટ અનંત પુદ્ગલપરમાણુ દ્રવ્ય અદ્ધાસમય રૂપે કથિત થયેલ છે. તેથી તે અદ્ધાસમય રૂપે વિવક્ષિત પરમાણુ તેના સ્થાનમાં તથા તેની આસપાસમાં અનંત રહે છે આ રીતે ધર્માસ્તિ કાયાદિકોના પ્રદેશની અપેક્ષાએ સ્પર્શનાનું કથન કરીને હવે દ્રવ્યની અપેક્ષાએ તેમની સ્પર્શનાનું કથન કરવામાં આવે છે—

यति-'धम्मत्थिकाएणं भंते ! केवइएहिं धम्मत्थिकायप्पएसेहिं पुट्ठे ?' गौतमः पृच्छति-हे भदन्त ! धर्मास्तिकायः खलु कियद्भिः धर्मास्तिकायप्रदेशैः स्पृष्टो भवति ? भगवानाह-'नत्थि एक्केण वि' हे गौतम ! धर्मास्तिकायो नास्ति एकेनापि धर्मास्तिकायप्रदेशेन स्पृष्टः, सकलस्यैव धर्मास्तिकायस्य मश्चित्तत्वेन तद्व्यतिरिक्तस्य च धर्मास्तिकायप्रदेशस्याभावात्, तथा च नेदं भवति यद्-एकेनापि धर्मास्तिकायप्रदेशेन असौ धर्मास्तिकायः स्पृष्टो भवति । गौतमः पृच्छति-'केवइएहिं अधम्मत्थिकायप्पएसेहि पुट्ठे ?' हे भदन्त ! कियद्भिः अधर्मास्तिकायप्रदेशैः धर्मास्तिकायः स्पृष्टो भवति ? भगवानाह-'असंखेज्जेहिं' हे गौतम ! असंख्येयैः अधर्मास्तिकायप्रदेशैः धर्मास्तिकायः स्पृष्टो भवति, धर्मास्तिकायप्रदेशानन्तरमेव अधर्मास्तिकायसम्बन्धिनामसंख्येयानामपि प्रदेशानां व्यवस्थित-

---

प्रभु से ऐसा पूछा है-'धम्मत्थिकाएणं भंते ! केवइएहिं धम्मत्थिकायपएसेहिं पुट्ठे' हे भदन्त ! धर्मास्तिकाय द्रव्य धर्मास्तिकाय के कितने प्रदेशों द्वारा स्पृष्ट होता है ? उत्तर में प्रभु कहते हैं-'नत्थि एकेण वि' हे गौतम ! धर्मास्तिकाय द्रव्य धर्मास्तिकाय के एक भी प्रदेश से स्पृष्ट नहीं होता है। इसलिये उससे भिन्न कोई और धर्मास्तिकाय प्रदेशका सद्भाव बचता नहीं है। अब गौतम प्रभु से ऐसा पूछते हैं-'केवइएहिं अहम्मत्थिकायपएसेहिं पुट्ठे' हे भदन्त ! धर्मास्तिकाय कितने अधर्मास्तिकाय-प्रदेशों द्वारा स्पृष्ट होता है ? उत्तर में प्रभु कहते हैं-'असंखेज्जेहिं' हे गौतम ! धर्मास्तिकायद्रव्य असंख्यात अधर्मास्तिकायप्रदेशों द्वारा स्पृष्ट होता है। क्योंकि धर्मास्तिकाय के प्रदेशों के अनन्तर ही अधर्मास्तिकाय संबंधी असंख्यातप्रदेश व्यवस्थित हैं। अब गौतम ऐसा

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-"धम्मत्थिकाए भंते ! केवइएहिं धम्मत्थिकायपएसेहिं पुट्ठे ?" હે ભગવન્ ! ધર્માસ્તિકાય દ્રવ્ય ધર્માસ્તિકાયના કેટલા પ્રદેશો દ્વારા સ્પૃષ્ટ થાય છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-"नत्थि एक्केण वि" હે ગૌતમ ! ધર્માસ્તિકાય દ્રવ્ય ધર્માસ્તિકાયના એક પણ પ્રદેશ વડે સ્પૃષ્ટ થતું નથી, કારણ કે સમસ્ત ધર્માસ્તિકાય વિષે પ્રશ્ન પૂછવામાં આવ્યો છે તે કારણે તેનાથી ભિન્ન એવા બીજા કોઈ પણ ધર્માસ્તિકાય પ્રદેશનો સદ્ભાવ જ સંભવી શકતો નથી

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-"केवइएहिं अहम्मत्थिकायपएसेहिं पुट्ठे ?" હે હે ભગવન્ ! ધર્માસ્તિકાય દ્રવ્ય કેટલા અધર્માસ્તિકાય પ્રદેશો વડે સ્પૃષ્ટ થાય છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-"असंखेज्जेहिं" હે ગૌતમ ! ધર્માસ્તિકાય દ્રવ્ય અસંખ્યાત અધર્માસ્તિકાય પ્રદેશો વડે સ્પૃષ્ટ થાય છે, કારણ કે ધર્માસ્તિકાયના પ્રદેશોની અનન્તર જ અધર્માસ્તિકાયના અસંખ્યાત પ્રદેશો રહેલા હોય છે,

त्वात्। गौतमः पृच्छति-'केवइएहिं आगासत्थिकायप्पएसेहिं पुट्ठे ?' हे भदन्त! कियद्भिः आकाशास्तिकायप्रदेशैः धर्मास्तिकायः स्पृष्टो भवति ? भगवानाह-'असंखेज्जेहिं' हे गौतम! असंख्येयैः आकाशास्तिकायप्रदेशैः धर्मास्तिकायः स्पृष्टो भवति, धर्मास्तिकायस्य असंख्येयप्रदेशस्वरूपलोकाकाशप्रमाणत्वात्। गौतमः पृच्छति-'केवइएहिं जीवत्थिकायप्पएसेहिं पुट्ठे ?' हे भदन्त! कियद्भिः जीवास्तिकायप्रदेशैः धर्मास्तिकायः स्पृष्टो भवति ? भगवानाह-'अणंतेहिं' हे गौतम! अनन्तैः जीवास्तिकायप्रदेशैः धर्मास्तिकायः स्पृष्टो भवति, धर्मास्तिकायस्य जीवास्तिकायप्रदेशव्याप्त्यैवावस्थितत्वात्, तेषां च अनन्तत्वात्। गौतमः पृच्छति-'केवइएहिं पोग्गलत्थिकायप्पएसेहिं ?' हे भदन्त! कियद्भिः पुद्गलास्तिकायप्रदेशैः धर्मास्तिकायः स्पृष्टो भवति ? भगवानाह-'अणंतेहिं' हे गौतम! अनन्तैः पुद्गलास्तिकायप्रदेशैः धर्मा-

---

पूछते हैं-'केवइएहिं आगासत्थिकायप्पएसेहिं पुट्ठे' हे भदन्त! कितने आकाशास्तिकायप्रदेशों द्वारा धर्मास्तिकाय स्पृष्ट होता है। उत्तर में प्रभु कहते हैं-'असंखेज्जेहिं' हे गौतम! असंख्यात आकाशास्तिकाय-प्रदेशों द्वारा धर्मास्तिकाय स्पृष्ट होता है। क्योंकि धर्मास्तिकाय असंख्यातप्रदेशस्वरूप लोकाकाशबराबर कहा गया है। अब गौतम प्रभु से ऐसा पूछते हैं-केवइएहिं जीवत्थिकायप्पएसेहिं पुट्ठे' हे भदन्त! कितने जीवास्तिकायप्रदेशों द्वारा धर्मास्तिकाय द्रव्य स्पृष्ट होता है? उत्तर में प्रभु कहते हैं-'अणंतेहिं' हे गौतम! अनन्तजीवास्तिकाय-प्रदेशों द्वारा धर्मास्तिकायद्रव्य स्पृष्ट होता है। क्योंकि जीवास्तिकाय के प्रदेशों को व्याप्त करके ही धर्मास्तिकाय अवस्थित है। जीवा-

---

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-"केवइएहिं आगासत्थिकायप्पएसेहिं पुट्ठे ?" હે ભગવન્! ધર્માસ્તિકાય દ્રવ્ય કેટલા આકાશાસ્તિકાય પ્રદેશો વડે સ્પૃષ્ટ થાય છે?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-"असंखेज्जेहिं" હે ગૌતમ! અસંખ્યાત આકાશાસ્તિકાયપ્રદેશો વડે ધર્માસ્તિકાયદ્રવ્ય સ્પૃષ્ટ થાય છે, કારણ કે ધર્માસ્તિકાય અસંખ્યાત પ્રદેશ રૂપ લોકાકાશ બરાબર કહ્યું છે.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-"केवइएहिं जीवत्थिकायप्पएसेहिं पुट्ठे ?" હે ભગવન્! ધર્માસ્તિકાય દ્રવ્ય કેટલા જીવાસ્તિકાયપ્રદેશો વડે સ્પૃષ્ટ થાય છે?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-"अणंतेहिं" અનંત જીવાસ્તિકાય પ્રદેશો વડે ધર્માસ્તિકાય દ્રવ્ય સ્પૃષ્ટ થાય છે, કારણ કે જીવાસ્તિકાયના પ્રદેશોને વ્યાપ્ત કરીને જ ધર્માસ્તિકાય દ્રવ્ય રહેલું છે. જીવાસ્તિકાયને અનંત કહ્યું છે.

स्तिकायः स्पृष्टो भवति, उक्तयुक्तेः। गौतमः पृच्छति-'केवइएहिं अद्धासमएहिं ?' हे भदन्त ! कियद्भिः अद्धासमयैः धर्मास्तिकायः स्पृष्टो भवति ? भगवानाह-'सिय पुट्ठे सिय नो पुट्ठे, जइ पुट्ठे नियमा अणंतेहिं' हे गौतम ! अद्धासमयैः धर्मास्तिकायः स्यात्-कदाचित् स्पृष्टो भवति समयक्षेत्रापेक्षया, स्यात्-कदाचित् नो स्पृष्टो भवति बहिःक्षेत्रापेक्षया, तत्रापि यदा स्पृष्टो भवति तदा नियमात् अनन्तैः अद्धासमयैः स्पृष्टो भवति। गौतमः पृच्छति-' अहमत्थिकाएणं भंते ! केवइएहिं धम्मत्थिकायप्पएसेहिं पुट्ठे ?' हे भदन्त ! अधर्मास्तिकायः खलु कियद्भिः धर्मास्तिकायप्रदेशैः स्पृष्टो भवति ? भगवानाह-'असंखेज्जेहिं' हे गौतम ! असंख्येयैः धर्मास्तिकायप्रदेशैः अधर्मास्तिकायः स्पृष्टो भवति। गौतमः पृच्छति-

---

स्तिकाय को अनन्त कहा गया है। अब गौतमस्वामी प्रभु से ऐसा पूछते हैं-'केवइएहिं अद्धासमएहिं' हे भदन्त ! कितने अद्धासमयों द्वारा धर्मास्तिकाय स्पृष्ट होता है ? उत्तर में प्रभु करते हैं- सिय पुट्ठे, सिय नो पुट्ठे-जइ पुट्ठे नियमा अणंतेहिं' हे गौतम ! धर्मास्तिकाय अद्धासमयों द्वारा कदाचित् स्पृष्ट होता है और कदाचित् स्पृष्ट नहीं होता है। समयक्षेत्र की अपेक्षा से स्पृष्ट और बहिःक्षेत्र की अपेक्षा से अस्पृष्ट कहा गया है। यदि यह अद्धासमयों द्वारा स्पृष्ट होता है तो नियम से अनन्त अद्धासमयों द्वारा स्पृष्ट होता है। अब गौतमस्वामी प्रभु से ऐसा पूछते हैं-'अहमत्थिकाएणं भंते ! केवइएहिं धम्मत्थिकायप्पएसेहिं पुट्ठे' हे भदन्त ! अधर्मास्तिकाय धर्मास्तिकाय के कितने प्रदेशों द्वारा स्पृष्ट होता है ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं- 'असंखेज्जेहिं' हे गौतम ! धर्मास्तिकाय के असंख्यात प्रदेशों द्वारा अधर्मास्तिकाय स्पृष्ट होता है।

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-" केवइएहिं अद्धासमएहिं पुट्ठे ?" હે ભગવન્ ! કેટલા અદ્ધાસમયો દ્વારા ધર્માસ્તિકાય દ્રવ્ય સ્પૃષ્ટ થાય છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-" सिय पुट्ठे, सिय नो पुट्ठे, जइ पुट्ठे नियमा अणतेहिं " હે ગૌતમ ! ધર્માસ્તિકાયદ્રવ્ય અદ્ધાસમયો દ્વારા કયારેક સ્પૃષ્ટ થાય છે અને કયારેક સ્પૃષ્ટ થતું નથી. સમયક્ષેત્રની અપેક્ષાએ સ્પૃષ્ટ અને સમયક્ષેત્રની બહારના ક્ષેત્રની અપેક્ષાએ અસ્પૃષ્ટ કહ્યું છે. જયારે તે અદ્ધાસમયો વડે સ્પૃષ્ટ થાય છે ત્યારે નિયમથી જ અનંત અદ્ધાસમયો વડે સ્પૃષ્ટ થાય છે.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-" अहम्मत्थिकायए णं भंते ! केवइएहिं धम्मत्थिकायप्पएसेहिं पुट्ठे ?" હે ભગવન્ ! અધર્માસ્તિકાય દ્રવ્ય ધર્માસ્તિકાયના કેટલા પ્રદેશો વડે સ્પૃષ્ટ થાય છે ?

'केवइएहिं अहम्मत्थिकायपएसेहिं पुट्ठे ?' हे भदन्त ! कियद्भिः अधर्मास्तिकायप्रदेशैः अधर्मास्तिकायः स्पृष्टो भवति ? भगवानाह-'णत्थि एक्केण वि, सेसं जहा धम्मत्थिकायस्स' हे गौतम ! नास्ति एकेनापि अधर्मास्तिकायप्रदेशेन अधर्मास्तिकायः स्पृष्टः, सकलस्यैव अधर्मास्तिकायस्य अश्रितत्वेन तद्व्यतिरिक्तस्य च धर्मास्तिकायप्रदेशस्याभावात्, शेषं यथा धर्मास्तिकायस्य प्रतिपादितं तथैव अधर्मास्तिकायस्यापि प्रतिपत्तव्यम्, तथा च असंख्येयैः आकाशास्तिकायप्रदेशैः अधर्मास्तिकायः स्पृष्ट, अनन्तैः जीवास्तिकायप्रदेशैः अधर्मास्तिकायः स्पृष्टः, अनन्तैः पुद्गलास्तिकायप्रदेशैः स्पृष्टः, अद्धासमयैस्तु स्यात् स्पृष्टः, स्यात् नो

अब गौतमस्वामी प्रभु से ऐसा पूछते हैं-'केवइएहिं अहम्मत्थिकायपएसेहिं पुट्ठे' हे भदन्त ! अधर्मास्तिकाय के कितने प्रदेशों द्वारा अधर्मास्तिकाय स्पृष्ट होता है ? इसके उत्तर में प्रभु कहते है-'णत्थि एक्केण वि' सेसं जहा धम्मत्थिकायस्स' हे गौतम ! अधर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकाय के एक भी प्रदेश द्वारा स्पृष्ट नहीं होता है। क्योंकि पूरा अधर्मास्तिकाय ही यहां प्रश्नित हुआ है। अतः उससे भिन्न अधर्मास्तिकाय प्रदेश स्वतंत्र और कोई दूसरा बचता नहीं है। बाकी का और सब कथन जैसा धर्मास्तिकाय का कहा गया है वैसा ही अधर्मास्तिकाय का भी जानना चाहिये। तथा च-आकाशास्तिकाय के असंख्यातप्रदेशों द्वारा अधर्मास्तिकाय स्पृष्ट होता है, अनन्त जीवास्तिकायप्रदेशों द्वारा अधर्मास्तिकाय स्पृष्ट होता है, अनन्त पुद्गला-

---

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-"असंखेज्जेहिं" હે ગૌતમ ! ધર્માસ્તિકાયના અસંખ્યાત પ્રદેશો વડે અધર્માસ્તિકાય સ્પૃષ્ટ થાય છે,

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-"केवइएहिं अहम्मत्थिकायपएसेहिं पुट्ठे ?" હે ભગવન્ ! અધર્માસ્તિકાયના કેટલા પ્રદેશો વડે અધર્માસ્તિકાય સ્પૃષ્ટ થાય છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-"णत्थि एक्केण वि, सेसं जहा धम्मत्थिकायस्स" હે ગૌતમ ! અધર્માસ્તિકાયદ્રવ્ય અધર્માસ્તિકાયના એક પણ પ્રદેશ વડે સ્પૃષ્ટ થતું નથી, કારણ કે સંપૂર્ણ અધર્માસ્તિકાયને અનુલક્ષીને અહીં પ્રશ્ન પૂછવામાં આવ્યો છે. તેથી તેનાથી ભિન્ન એવા અન્ય અધર્માસ્તિકાય પ્રદેશનું સ્વતંત્ર અસ્તિત્વ સંભવી શકતું નથી. બાકીનું સમસ્ત કથન ધર્માસ્તિકાયના કથન અનુસાર જ સમજવું જેમ કે-આકાશાસ્તિકાયના અસંખ્યાત પ્રદેશો વડે અધર્માસ્તિકાય સ્પૃષ્ટ થાય છે, અનંત જીવાસ્તિકાય પ્રદેશો દ્વારા અધર્માસ્તિકાય સ્પૃષ્ટ થાય છે, અનંત પુદ્ગલાસ્તિકાય પ્રદેશો દ્વારા અધર્માસ્તિકાય

स्पृष्टः, यदा स्पृष्टस्तदा नियमात् अनन्तैरेव अद्धासमयैः अधर्मास्तिकायः स्पृष्टो भवति, 'एवं एएणं गमएणं सव्वे वि सट्ठाणए नत्थि एक्केण वि पुट्ठा, परट्ठाणए आदिल्लएहिं तिहिं असंखेज्जेहिं भाणियव्वं, पच्छिल्लएसु तिसु अणंता भाणियव्वा, जाव अद्धासमयो त्ति' एवं पूर्वोक्तरीत्यैव, एतेन गमकेन अभिलापक्रमेण आकाशास्तिकायस्य ६, जीवास्तिकायस्य ६, पुद्गलास्तिकायस्य ६, अद्धासमयस्य च ६, अभिलापा भणितव्याः, केवलं यत्र धर्मास्तिकायादिस्तत्प्रदेशैरेव प्ररूप्यते तत् स्वस्थानम्, अन्यच्च परस्थानं, तत्र सर्वेऽपि धर्मास्तिकायादयः स्वस्थाने 'न सन्ति एकेनापि स्पृष्टाः' इति प्रत्युत्तरं ज्ञेयम्।

स्तिकाय प्रदेशों द्वारा अधर्मास्तिकाय स्पृष्ट होता है। तथा अद्धासमयों से वह कदाचित् स्पृष्ट होता है और कदाचित् स्पृष्ट नहीं होता है। यदि वह उनसे स्पृष्ट होता है, तो नियमतः अनन्त अद्धासमयों द्वारा स्पृष्ट होता है। 'एवं एएणं गमएणं सव्वेवि सट्ठाणए नत्थि एक्केण वि पुट्ठा, परट्ठाणए आदिल्लएहिं तिहिं असंखेज्जेहिं भाणियव्वं पच्छिल्लएसु तिसु अणंता भाणियव्वा, जाव अद्धासमयो त्ति' इस प्रकार पूर्वोक्त रीति से इस अभिलापक्रम से आकाशास्तिकाय के ६, जीवास्तिकाय के ६, पुद्गलास्तिकाय के ६ और अद्धासमय के ६ अभिलाप कहना चाहिये। जहां केवल धर्मास्तिकायादिद्रव्य का उनके प्रदेशों के साथ स्पर्शना का विचार होता है वह स्वस्थानक है और दूसरे द्रव्य के प्रदेशों के साथ जो स्पर्शना का विचार है वह परस्थानक है समस्त धर्मास्तिकायादिकद्रव्य 'स्वस्थान में एक भी प्रदेश से स्पृष्ट नहीं होते हैं' ऐसा

સ્પૃષ્ટ થાય છે, તથા અદ્ધાસમયો વડે કયારેક તે સ્પૃષ્ટ થાય છે અને કયારેક સ્પૃષ્ટ થતું નથી જો તે તેમના દ્વારા સ્પૃષ્ટ થતું હોય, તો નિયમથી જ અનંત અદ્ધાસમયો વડે સ્પૃષ્ટ થાય છે.

"एवं एएणं गमएणं सव्वे वि सट्ठाणए नत्थि एक्केण वि पुट्ठा, परट्ठाणए आदिल्लएहिं तिहिं असंखेज्जेहिं भाणियव्वं पच्छिल्लएसु तिसु अणंता भाणियव्वा, जाव अद्धासमयो त्ति" એજ પ્રકારે પૂર્વોકત પદ્ધતિ અનુસાર આકાશાસ્તિકાયના ૬, જીવાસ્તિકાયના ૬, પુદ્ગલાસ્તિકાયના ૬, અને અદ્ધાસમયના ૬ અભિલાપ (પ્રશ્નોત્તરો) કહેવા જોઇએ જ્યાં કેવળ ધર્માસ્તિકાયાદિ દ્રવ્યનો તેમના પ્રદેશોની સાથે સ્પર્શનાનો વિચાર થાય છે, તે સ્થાનકનું નામ સ્વસ્થાનક છે, તથા અન્ય દ્રવ્યોના પ્રદેશોની સાથે સ્પર્શનાનો વિચાર થતો હોય, તે સ્થાનકનું નામ પરસ્થાનક છે. સમસ્ત ધર્માસ્તિકાયાદિક દ્રવ્ય "સ્વસ્થાનકમાં એક પણ પ્રદેશ વડે સ્પૃષ્ટ થતું નથી," એવો પ્રત્યુત્તર સમજવો

परस्थाने च आदिमेषु त्रिषु-धर्मास्तिकायादि त्रयगमकेषु असंख्येयैः स्पृष्टाः इति भणितव्यम्, धर्माधर्मास्तिकाययोरसंख्येयप्रदेशत्वात्, तत्संपृष्टाकाशस्य चासंख्येयप्रदेशत्वात्, पश्चिमेषु-अन्तिमेषु त्रिषु जीवपुद्गलाद्धासमयरूपत्रयगमकेषु च अनन्ता भणितव्या', 'अनन्तैः प्रदेशैः स्पृष्टः' इति वक्तव्यम्, तेषां जीवास्तिकायादीनामनन्तप्रदेशत्वात्। अत्र च आकाशास्तिकायगमकेऽय विशेषो यत् आकाशास्तिकायो धर्मास्तिकायादिप्रदेशैः स्पृष्टश्चास्पृष्टश्च, तत्र यः स्पृष्टः सोऽसंख्येयैर्धर्माधर्मास्तिकाययोः प्रदेशैः, जीवास्तिकायादीनां तु त्रयाणामनन्तैः प्रदेशैः स्पृष्टो भवति, यावत्-अद्धासमय इति, अद्धासमयगमकपर्यन्तं धर्मास्ति-

---

प्रत्युत्तर जानना चाहिये। तथा परस्थान में आदिम तीन में धर्मास्तिकायादि तीन गमकों में असंख्यातप्रदेशों से स्पृष्ट है ऐसा कहना चाहिये। क्योंकि धर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकाय ये दोनों असंख्यात प्रदेशवाले हैं, तथा इनसे संस्पृष्ट आकाश भी असंख्यात प्रदेशोंवाला है। तथा पश्चिम-अन्तिम तीन, जीव पुद्गल और अद्धासमय इनके अभिलापों में अनन्त प्रदेशों द्वारा स्पृष्ट हैं ऐसा कहना चाहिये, कारण कि जीवास्तिकायादिक अनन्तप्रदेशोंवाले हैं। यहां आकाशास्तिकाय के गमक में ऐसी विशेषता है कि आकाशास्तिकाय धर्मास्तिकाय के प्रदेशों द्वारा स्पृष्ट भी है और अस्पृष्ट भी है। जो आकाशास्तिकाय स्पृष्ट है वह धर्मास्तिकाय के असंख्यात प्रदेशों द्वारा स्पृष्ट होता है तथा तीन जीवास्तिकायादिकों के अनन्तप्रदेशों द्वारा स्पृष्ट होता है इस प्रकार अद्धासमय के गमक तक धर्मास्तिकायादिक छह के गमक कहना चाहिये। यावत्-कितने धर्मा-

---

જોઈએ પરસ્થાનમાં પહેલાં ત્રણમાં-ધર્માસ્તિકાય આદિ ત્રણમાં અસંખ્યાત પ્રદેશો વડે સ્પૃષ્ટ છે, એવું કથન કરવું જોઇએ, કારણ કે ધર્માસ્તિકાય અને અધર્માસ્તિકાય અસંખ્યાત પ્રદેશો વાળાં છે, તથા તેમના દ્વારા સંસ્પૃષ્ટ આકાશ પણ અસંખ્યાત પ્રદેશોવાળું છે. છેલ્લા ત્રણ અભિલાપોમાં-જીવાસ્તિકાય, પુદ્ગલાસ્તિકાય અને અદ્ધાસમયના અભિલાપોમાં-અનંત પ્રદેશો વડે સ્પૃષ્ટ કહેવું જોઈએ કારણ કે જીવાસ્તિકાયાદિક અનન્ત પ્રદેશોવાળાં છે. અહીં આકાશાસ્તિકાયના અભિલાપમાં એવી વિશેષતા છે કે આકાશાસ્તિકાય ધર્માસ્તિકાયના પ્રદેશો દ્વારા સ્પૃષ્ટ પણ છે અને અસ્પૃષ્ટ પણ છે જે આકાશાસ્તિકાય સ્પૃષ્ટ છે તે ધર્માસ્તિકાયના અસંખ્યાત પ્રદેશો દ્વારા સ્પૃષ્ટ હોય છે તથા જીવાસ્તિકાય આદિ ત્રણના અનંત પ્રદેશો દ્વારા સ્પૃષ્ટ હોય છે. આ રીતે અદ્ધાસમયના ગમક પર્યન્તના ધર્માસ્તિકાયાદિક છ ગમકનું કથન કરવું

कायादीनां षण्णां गमकानि वक्तव्यानि, 'जाव केवइएहिं अद्धासमएहिं पुट्ठे ?' यावत् अद्धासमयः कियद्भिः धर्मास्तिकायादिप्रदेशैः स्पृष्टः ? इति गौतमस्य अद्धासमयविषयकः प्रश्नः स्वयमूहनीयः, भगवानाह-'नत्थि एक्केण वि' हे गौतम ! नास्ति एकेनापि अद्धासमयेन अद्धासमयः स्पृष्टः, परप्रदेशेन तु यथा योग्यम् आधत्रयेण असंख्येयप्रदेशेन स्पृष्टः, उपान्तिमद्वयेन तु अनन्तप्रदेशेन स्पृष्टो भवतीति भावः। निरुपचरितस्य अद्धासमयस्य एकस्यैव सद्भावात्, अतीतानागतसमययोस्तु विनष्टानुत्पन्नत्वेन असत्त्वात् न समयान्तरेण स्पृष्टता संभवतीति भावः ॥ सू० ९ ॥

स्तिकायादिक के प्रदेशों द्वारा अद्धासमय स्पृष्ट होता है ? इस प्रकार का गौतम का अद्धासमयविषयक प्रश्न अपने आप उद्भावित करना चाहिये-इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-'नत्थि एक्केण वि' हे गौतम ! स्वस्थान की अपेक्षा यथायोग्य आदि के तीन अस्तिकाय के असंख्यात प्रदेशों से अद्धासमय स्पृष्ट होता है। तथा अन्तिम दो अस्तिकायों के-जीवास्तिकाय और पुद्गलास्तिकाय के अनन्त प्रदेशों से वह अद्धासमय स्पृष्ट होता है। निरुपचरित अद्धासमय एक ही होता है। इस कारण उसकी समयान्त के साथ स्पर्शना नहीं होती है क्योंकि अतीत एवं अनागत समय का, विनष्ट और अनुत्पन्न होने के कारण सत्व नहीं माना गया है ॥ सू० ९ ॥

इति द्विप्रदेशिकादि पुद्गलास्ति कायस्पर्शद्वारवक्तव्यता ॥

જોઈએ છેલ્લા અદ્ધાસમય વિષયક પ્રશ્નોત્તરો આ પ્રમાણે સમજવા-અદ્ધાસમય કેટલા ધર્માસ્તિકાયાદિકના પ્રદેશો દ્વારા સ્પૃષ્ટ થાય છે ? આ પ્રકારે છએ પ્રશ્નો જાતે બનાવી લેવાં

અદ્ધાસમય કેટલા અદ્ધાસમયો વડે સ્પૃષ્ટ થાય છે ? -આ સ્વસ્થાન વિષયક પ્રશ્નનો ઉત્તર આ પ્રમાણે છે-'नत्थि एक्केण वि" હે ગૌતમ ! અદ્ધાસમય એક પણ અદ્ધાસમય વડે સ્પૃષ્ટ થતો નથી, ધર્માસ્તિકાયના, અધર્માસ્તિકાયના અને આકાશાસ્તિકાયના અસંખ્યાત પ્રદેશો વડે અને છેલ્લા બે અસ્તિકાયોના (જીવાસ્તિકાય અને પુદ્ગલાસ્તિકાયના અનંત પ્રદેશો વડે અદ્ધાસમય સ્પૃષ્ટ થાય છે નિરૂપચરિત અદ્ધાસમય એક જ હોય છે કારણે તેની સમયાન્તરની સાથે સ્પર્શના થતી નથી, કારણ કે અતીત (ભૂત) અને અનાગત (ભવિષ્ય) સમયનું વિનષ્ટ અને અનુત્પન્ન હોવાને કારણે અસ્તિત્વ જ માનવામાં આવ્યું નથી ॥સૂ૦૯॥

॥ द्विप्रदेशिकादि पुद्गलास्तिकाय स्पर्शद्वार वक्तव्यता संपूर्ण ॥

अवगाहद्वारवक्तव्यता।

मूलम्–'जत्थ णं भंते! एगे धम्मत्थिकायप्पएसे ओगाढे, तत्थ केवइया धम्मत्थिकायपएसा ओगाढा? नत्थि एगोवि, केवइया अहम्मत्थिकायपएसा ओगाढा एक्को, केवइया आगासत्थिकायप्पएसा ओगाढा? एक्को, केवइया जीवत्थिकायप्पएसा ओगाढा? अणंता, केवइया पोग्गलत्थिकायपएसा ओगाढा? अणंता, केवइया अद्धासमया ओगाढा? सिय ओगाढा, सिय नो ओगाढा, जइ ओगाढा अणंता। जत्थ णं भंते! एगे अहम्मत्थिकायपएसे ओगाढे, तत्थ केवइया धम्मत्थिकायपएसा ओगाढा? नत्थि एक्को, केवइया अहम्मत्थिकायपएसा ओगाढा? नत्थि एक्को वि, सेसं जहा धम्मत्थिकायस्स। जत्थ णं भंते! एगे आगासत्थिकायपएसे ओगाढे, तत्थ केवइया धम्मत्थिकायप्पएसा ओगाढा? सिय ओगाढा, सिय नो ओगाढा, जइ ओगाढा, एक्को। एवं अहम्मत्थिकायपएसा वि। केवइया आगासत्थिकायपएसा ओगाढा? नत्थि एक्को वि, केवइया जीवत्थिकायप्पएसा ओगाढा? सिय ओगाढा, सिय नो ओगाढा, जइ ओगाढा, अणंता, एवं जाव अद्धासमया। जत्थ णं भंते! एगे जीवत्थिकायपएसे ओगाढे तत्थ केवइया धम्मत्थिकायपएसा ओगाढा? एक्को। एवं अहम्मत्थिकायपएसा, एवं आगासत्थिकायपएसा वि। केवइया जीवत्थिकायपएसा ओगाढा? अणंता, सेसं जहा धम्मत्थिकायस्स। जत्थ णं भंते! एगे पोग्गल-

त्थिकायपएसे ओगाढे, तत्थ केवइया धम्मत्थिकायपएसा ओगाढा? एवं जहा जीवत्थिकायपएसे तहेव निरवसेसं। जत्थ णं भंते दो पोग्गलत्थिकायपएसा ओगाढा, तत्थ केवइया धम्मत्थिकायपएसा ओगाढा? सिय एक्को, सिय दोन्नि, एवं अहम्मत्थिकायस्स वि, एवं आगासत्थिकायस्स वि, सेसं जहा धम्मत्थिकायस्स। जत्थ णं भंते! तिन्नि पोग्गलत्थिकायपएसा ओगाढा? तत्थ केवइया धम्मत्थिकायपएसा ओगाढा? सिय एक्को, सिय दोन्नि, सिय तिन्नि, एवं अहम्मत्थिकायस्स वि, एवं आगासत्थिकायस्स वि, सेसं जहेव दोण्हं, एवं एक्केको वड्ढियव्वो, पएसा आइल्लएहिं, तिहिं अत्थिकाएहिं, सेसं जहेव दोण्हं जाव दसण्हं सिय एक्को, सिय दोन्नि, सिय तिन्नि, जाव सिय दस, संखेज्जाणं सिय एक्को सिय दोन्नि, जाव सिय दस, सिय संखेज्जा? असंखेज्जाणं सिय एक्को, जाव सिय संखेज्जा, सिय असंखेज्जा, जहा असंखेज्जा, एवं अणंता वि। जत्थ णं भंते! एगे अद्धासमए ओगाढे, तत्थ केवइया धम्मत्थिकाय-पएसा, ओगाढा? एक्को, केवइया अहम्मत्थिकायपएसा ओगाढा? एक्को, केवइया आगासत्थिकायपएसा ओगाढा? एक्को, केवइया जीवत्थिकायपएसा ओगाढा? अणंता, एवं जाव अद्धासमया। जत्थ णं भंते! धम्मत्थिकाए ओगाढे तत्थ केव-इया धम्मत्थिकायपएसा ओगाढा? नत्थि एक्को वि, केवइया अहम्मत्थिकायपएसा ओगाढा? असंखेज्जा, केवइया आगा-सत्थिकायपएसा ओगाढा? असंखेज्जा, केवइया जीवत्थिकाय-

पएसा ओगाढा? असंखेज्जा, केवइया जीवत्थिकायपएसा ओगाढा? अणंता, एवं जाव अद्धासमया। जत्थ णं भंते! अहम्मत्थिकाए ओगाढे तत्थ केवइया धम्मत्थिकायपएसा ओगाढा? असंखेज्जा, केवइया अहम्मत्थिकायपएसा ओगाढा? नत्थि एक्को वि, सेसं जहा धम्मत्थिकायस्स, एवं सट्ठाणे नत्थि एक्को वि भाणियव्वं, परट्ठाणे आदिल्लगा तिन्नि असंखेज्जा भाणियव्वा, पच्छिल्लगा तिन्नि अणंता, भाणियव्वा जाव अद्धासमओ त्ति, जाव केवइया अद्धासमया ओगाढा? नत्थि एक्को वि ॥सू० १०॥

छाया—यत्र खलु भदन्तं! एको धर्मास्तिकायप्रदेशः अवगाढस्तत्र कियन्तो धर्मास्तिकायप्रदेशाः अवगाढाः? नास्ति एकोऽपि, कियन्तः अधर्मास्तिकाय प्रदेशाः अवगाढाः? एकः, कियन्त आकाशास्तिकायप्रदेशाः अवगाढाः? एकः, कियन्तो जीवास्तिकायप्रदेशाः अवगाढाः? अनन्ताः, कियन्तः पुद्गलास्तिकाय प्रदेशाः अवगाढाः? अनन्ताः, कियन्त अद्धासमयाः अवगाढाः? स्यात् अवगाढाः, स्यात् नो अवगाढाः, यदा अवगाढाः अनन्ताः, यत्र खलु भदन्त! एकः अधर्मास्तिकायप्रदेशः अवगाढस्तत्र कियन्तो धर्मास्तिकायप्रदेशाः अवगाढाः? एकः, कियन्तः अधर्मास्तिकायप्रदेशा अवगाढाः? नास्ति एकोऽपि शेषं यथा धर्मास्तिकायस्य, यत्र खलु भदन्त! एकः आकाशास्तिकायप्रदेशः अवगाढस्तत्र कियन्तो धर्मास्तिकायप्रदेशा अवगाढाः? स्यात् अवगाढाः स्यात् नो अवगाढाः' यदा अवगाढाः, एकः, एवम् अधर्मास्तिकायप्रदेशा अपि, कियन्तः आकाशास्तिकायप्रदेशाः अवगाढाः? नास्ति एकोऽपि, कियन्तो जीवास्तिकायप्रदेशा अवगाढाः? स्यात् अवगाढाः, स्यात् नो अवगाढाः, यदा अवगाढाः अनन्ताः, एवं यावत् अद्धासमयाः यत्र खलु भदन्त! एको जीवास्तिकायप्रदेशः अवगाढस्तत्र कियन्तो धर्मास्तिकायप्रदेशा अवगाढाः? एकः एवम् अधर्मास्तिकायप्रदेशाः, एवम् आकाशास्तिकाय प्रदेशा अपि, कियन्तो जीवास्तिकायप्रदेशाः अवगाढाः अनन्ताः? शेषं यथा धर्मास्तिकायस्य, यत्र खलु भदन्त! एकः पुद्गलास्तिकायप्रदेशः अवगाढस्तत्र कियन्तो धर्मास्तिकायप्रदेशा अवगाढाः? एवं यथा जीवास्तिकायप्रदेशस्तथैव निरवशेषम्, यत्र खलु भदन्त! द्वौ पुद्गलास्तिकायप्रदेशौ अवगाढौ तत्र कियन्तो धर्मास्तिकायप्रदेशाः अवगाढाः? स्यात् एकः, स्यात् द्वौ, एवम् अधर्मास्तिकाय-

रयापि, एवम् आकाशास्तिकायस्यापि शेषं यथा धर्मास्तिकायस्य, यत्र खलु भदन्त! त्रयः पुद्गलास्तिकायप्रदेशा अवगाढास्तत्र कियन्तो धर्मास्तिकायप्रदेशा अवगाढाः ? स्यात् एकः, स्यात् द्वौ, स्यात् त्रयः, एवम् अधर्मास्तिकायस्यापि एवम् आकाशास्तिकायस्यापि, शेषं यथैव द्वयोः, एवम् एकैको वर्द्धयितव्यः प्रदेशः, आदिभिस्त्रिभिः अस्तिकायैः, शेषं यथैव द्वयोर्यावत् दशानां स्यात् एकः, स्यात् द्वौ, स्यात् त्रयः, यावत्-स्यात् दश, संख्येयानां स्यात् एकः, स्यात् द्वौ, यावत् स्यात् दश, स्यात् संख्येयाः, असंख्येयानां स्यात् एकः, यावत् स्यात् संख्येयाः, स्यात् असंख्येयाः, यथा असंख्येयाः, एवम् अनन्ता अपि, यत्र भदन्त ! एकोऽद्धासमयः अवगाढस्तत्र कियन्तो धर्मास्तिकायप्रदेशा अवगाढाः ? एकः, कियन्तः अधर्मास्तिकायप्रदेशाः अवगाढाः ? एकः, कियन्त आकाशास्तिकायप्रदेशा अवगाढाः ? एकः, कियन्तो जीवास्तिकायप्रदेशा अवगाढाः ? अनन्ताः, एवं यावत् अद्धासमयाः यत्र खलु भदन्त ! धर्मास्तिकायः अवगाढस्तत्र कियन्तो धर्मास्तिकायप्रदेशा अवगाढाः ? नास्ति एकोऽपि, कियन्तोऽधर्मास्तिकायप्रदेशाः अवगाढाः ? असंख्येयाः, कियन्त आकाशास्तिकायप्रदेशा अवगाढाः ? असंख्येयाः, कियन्तो जीवास्तिकायप्रदेशा अवगाढाः ? अनन्ता, एवं यावत् अद्धासमयाः, यत्र खलु भदन्त ! अधर्मास्तिकायप्रदेशः अवगाढस्तत्र कियन्तो धर्मास्तिकायप्रदेशा अवगाढाः ? असंख्येयाः, कियन्तोऽधर्मास्तिकायप्रदेशा अवगाढाः ? नास्ति एकोऽपि, शेषं यथा धर्मास्तिकायस्य, एवं सर्वे स्वस्थाने नास्ति एकोऽपि भणितव्यम्, परस्थाने आदिमास्त्रयः असंख्येया भणितव्याः, पश्चिमास्त्रयोऽनन्ता भणितव्याः, यावत् अद्धासमय इति, यावत् कियन्तः अद्धासमया अवगाढाः ? नास्ति एकोऽपि ॥ सू० १० ॥

टीका—अथ नवमम् अवगाहद्वारमाह-'जत्थ णं भंते !' इत्यादि। 'जत्थ णं भंते ! एगे धम्मत्थिकायपएसे ओगाढे, तत्थ केवइया धम्मत्थिकायप्पएसा

अवगाहद्वारवक्तव्यता—

"जत्थ णं भंते ! एगे धम्मत्थिकायप्पएसे" इत्यादि।

टीकार्थ-सूत्रकार ने इस सूत्र द्वारा नौवें अवगाहद्वार का विवेचन किया है इसमें गौतमने प्रभु से ऐसा पूछा है-'जत्थणं भंते ! एगे धम्म-

---

—અવગાહદ્વાર વક્તવ્યતા—

"जत्थ णं भंते ! एगे धम्मत्थिकायपएसे" इत्यादि—

ટીકાર્થ-સૂત્રકારે આ સૂત્ર દ્વારા નવમાં અવગાહદ્વારનું નિરૂપણ કર્યું છે. આ વિષયને અનુલક્ષીને ગૌતમસ્વામી મહાવીર પ્રભુને એવો પ્રશ્ન પૂછે છે કે-" जत्थ णं भंते ! एगे धम्मत्थिकायपएसे ओगाढे, तत्थ केवइया धम्मत्थिकाय-

ओगाढा ?' गौतमः पृच्छति-हे भदन्त ! यत्र खलु स्थाने एकः धर्मास्तिकाय-प्रदेशोऽवगाढो भवति तत्र स्थाने कियन्तो धर्मास्तिकायप्रदेशा अवगाढाः स्थिता भवन्ति ? भगवानाह-' नत्थि एक्को वि ' हे गौतम ! यत्र प्रदेशे धर्मास्ति-कायस्य एकः प्रदेशोऽवगाढो भवति तत्र अन्यस्तत्प्रदेशो नास्ति एकोऽपि एक-धर्मास्तिकायप्रदेशस्थाने अन्यस्य धर्मास्तिकायप्रदेशस्य अविद्यमानत्वात्, गौतमः पृच्छति-' केवइया अहमत्थिकायप्पएसा ओगाढा ? ' हे भदन्त ! यत्र एको धर्मास्तिकाय प्रदेशोऽवगाढोऽस्ति तत्र कियन्तः अधर्मास्तिकायप्रदेशा अव-गाढा भवन्ति ? भगवानाह-' एक्को' हे गौतम ! एकधर्मास्तिकायप्रदेशावगाहना-

---

त्थिकायपएसे ओगाढे, तत्थ केवइया धम्मत्थिकायपएसा ओगाढा ' हे भदन्त! जिस स्थान पर एक प्रदेश धर्मास्तिकाय का अवगाह होता है अर्थात् आकाश के जिस प्रदेश में धर्मास्तिकाय का एक प्रदेश अवगा-हित है-रहा हुआ है-वहां धर्मास्तिकाय के और कितने प्रदेश अवगाढ-स्थित हैं ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-'नत्थि एक्को वि ' हे गौतम। जिस प्रदेश में धर्मास्तिकाय का एक प्रदेश अवगाढ होता है, उस प्रदेश में धर्मास्तिकाय का दूसरा प्रदेश अवगाढ नहीं होता है क्योंकि वह वहां अविद्यमान रहता है।

अब गौतम स्वामी प्रभु से ऐसा पूछते हैं-' केवइया अहम्मत्थि-कायपएसा ओगाढा ' हे भदन्त ! जिस स्थान पर धर्मास्तिकाय का एक प्रदेश अवगाढ है-वहां पर अधर्मास्तिकाय के कितने प्रदेश अवगाढ होते हैं ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-'एक्को' हे गौतम ! जिस स्थान

पएसा ओगाढा ?'' હે ભગવન્ ! જે સ્થાન પર ધર્માસ્તિકાયનો એક પ્રદેશ અવગાહિત હોય છે-એટલે કે આકાશના જે પ્રદેશમાં ધર્માસ્તિકાયનો એક પ્રદેશ રહેલો હોય છે-ત્યાં ધર્માસ્તિકાયના બીજા કેટલા પ્રદેશો અવગાઢ (રહેલા) હોય છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-" नत्थि एक्को वि " હે ગૌતમ ! જે પ્રદેશમાં ધર્માસ્તિકાયનો એક પ્રદેશ અવગાહિત હોય છે. તે પ્રદેશમાં ધર્માસ્તિકાયનો બીજો એક પણ પ્રદેશ અવગાહિત હોતો નથી, કારણ કે તે ત્યાં અવિદ્યમાન રહે છે.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-' केवइया अहम्मत्थिकायपएसा ओगाढा ?" હે ભગવન્ ! જે સ્થાન પર ધર્માસ્તિકાયનો એક પ્રદેશ અવગાહિત (સ્થિત) છે, તે સ્થાન પર અધર્માસ્તિકાયના કેટલા પ્રદેશો અવગાહિત હોય છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-" एक्को " હે ગૌતમ ! જે સ્થાન પર ધર્મા-

स्थाने एकोऽधर्मास्तिकायप्रदेशोऽवगाढो भवति, धर्मास्तिकायप्रदेशस्थानेऽधर्मास्तिकायप्रदेशस्य विद्यमानत्वात्। गौतमः पृच्छति-' केवइया आगासत्थिकायप्पएसा ओगाढा ?' हे भदन्त ! एकधर्मास्तिकायप्रदेशावगाहस्थाने कियन्ताऽऽकाशास्तिकायप्रदेशाः अवगाढा भवन्ति ? भगवानाह-' एक्को ' हे गौतम ! तत्र एक एव आकाशास्तिकायप्रदेशः अवगाढो भवति, गौतमः पृच्छति-' केवइया जीवत्थिकायपएसा ओगाढा ?' एकः धर्मास्तिकायप्रदेशावगाहस्थाने कियन्तो जीवास्तिकायप्रदेशा अवगाढा भवन्ति ? भगवानाह-' अणंता ' हे गौतम ! तत्र

पर धर्मास्तिकाय का एक प्रदेश अवगाढ है-वहां पर एक धर्मास्तिकाय-प्रदेश की अवगाहना स्थान पर-अधर्मास्तिकाय का एक प्रदेश अवगाढ होता है-क्यों कि धर्मास्तिकाय प्रदेश के स्थान पर अधर्मास्तिकाय का एक प्रदेश विद्यमान रहता है।

अब गौतमस्वामी प्रभु से ऐसा पूछते हैं-' केवइया आगासत्थिकायप्पएसा ओगाढा ' हे भदन्त ! एक धर्मास्तिकाय प्रदेश के अवगाहना स्थान में आकाशास्तिकाय के कितने प्रदेश अवगाढ होते हैं ? उत्तर में प्रभु कहते हैं-' एक्को ' हे गौतम ! वहां पर एक ही आकाशास्तिकाय-प्रदेश अवगाढ होता है।

अब गौतमस्वामी प्रभु से ऐसा पूछते हैं-'केवइया जीवत्थिकायप्पएसा ओगाढा' हे भदन्त ! एक धर्मास्तिकायप्रदेशावगाहस्थान में जीवास्तिकाय के कितने प्रदेश अवगाढ होते हैं ? उत्तर में प्रभु कहते हैं-अणंता' हे गौतम ! वहां जीवास्तिकाय के अनन्तप्रदेश अवगाढ होते हैं।

સ્તિકાયનો એક પ્રદેશ અવગાહિત હોય છે, ત્યાં-એક ધર્માસ્તિકાય પ્રદેશની અવગાહના સ્થાન પર અધર્માસ્તિકાયનો એક પ્રદેશ અવગાહિત હોય છે, કારણ કે ધર્માસ્તિકાય પ્રદેશના સ્થાન પર અધર્માસ્તિકાયનો એક પ્રદેશ વિદ્યમાન રહે છે.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-" केवइया आगासत्थिकायप्पएसा ओगाढा ?" હે ભગવન્ ! એક ધર્માસ્તિકાયપ્રદેશના અવગાહના સ્થાનમાં આકાશાસ્તિકાયના કેટલા પ્રદેશો અવગાહિત હોય છે ?

ઉત્તર-" एक्को " તે સ્થાન પર આકાશાસ્તિકાયનો એક જ પ્રદેશ અવગાહિત હોય છે

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-" केवइया जीवत्थिकायप्पएसा ओगाढा ?" હે ભગવન્ ! એક ધર્માસ્તિકાય પ્રદેશના અવગાહના સ્થાનમાં જીવાસ્તિકાયના કેટલા પ્રદેશો અવગાહિત હોય છે ?

अनन्ता जीवास्तिकायप्रदेशा अवगाढा भवन्ति, गौतमः पृच्छति-'केवइया पोग्गलत्थिकायपएसा' हे भदन्त ! एकधर्मास्तिकायप्रदेशस्थाने कियन्तः पुद्गलास्तिकायप्रदेशा अवगाढा भवन्ति भगवानाह-'अणंता' हे गौतम तत्र अनन्ताः पुद्गलास्तिकायप्रदेशा अवगाढा भवन्ति, जीवास्तिकायपुद्गलास्तिकाययोरनन्तानां प्रदेशानाम् एकैकस्य धर्मास्तिकायप्रदेशस्य स्थाने सद्भावेन, तस्य तैः प्रत्येकमनन्तैरेव व्याप्तत्वादिति भावः, गौतमः पृच्छति-' केवइया अद्धासमया ?' हे भदन्त ! कियन्तः अद्धासमयाः एकधर्मास्तिकायप्रदेशस्थाने अवगाढा भवन्ति ? भगवानाह-'सिय ओगाढा, सिय नो ओगाढा, जइ ओगाढा, अणंता' हे गौतम !

अब गौतमस्वामी प्रभु से ऐसा पूछते हैं-केवइया पोग्गलत्थिकायपएसा' हे भदन्त ! एक धर्मास्तिकायप्रदेश के अवगाह स्थान में पुद्गलास्तिकाय के कितने प्रदेश अवगाढ-स्थित होते हैं-उत्तर में प्रभु कहते हैं-'अणंता' हे गौतम! वहां पर पुद्गलास्तिकाय के अनन्तप्रदेश अवगाढ होते हैं। जीवास्तिकाय और पुद्गलास्तिकाय के अनन्तप्रदेशों का एक एक धर्मास्तिकायप्रदेश के स्थान में सद्भाव होता है इससे वे प्रत्येक अनन्त प्रदेश उस धर्मास्तिकाय के प्रदेश को व्याप्त करते हैं।

अब गौतमस्वामी प्रभु से ऐसा पूछते हैं-' केवइया अद्धासमया' हे भदन्त ! एक धर्मास्तिकायप्रदेशस्थान में कितने अद्धासमय अवगाढ-स्थित होते हैं ? उत्तर में प्रभु कहते हैं-' सिय ओगाढा, सिय नो ओगाढा, अणंता' हे गौतम ! वहां पर अद्धासमय कदाचित् अवगाढ

ઉત્તર-" अणंता " હે ગૌતમ ! ત્યાં જીવાસ્તિકાયના અનંત પ્રદેશો અવગાહિત હોય છે.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-" केवइया पोग्गलत्थिकायपएसा ?" હે ભગવન્ ! એક ધર્માસ્તિકાયપ્રદેશના અવગાહના સ્થાનમાં પુદ્ગલાસ્તિકાયના કેટલા પ્રદેશો અવગાહિત હોય છે ?

ઉત્તર-" अणंता " હે ગૌતમ ! ત્યાં પુદ્ગલાસ્તિકાયના અનંત પ્રદેશો અવગાઢ હોય છે. જીવાસ્તિકાય અને પુદ્ગલાસ્તિકાયના અનંત પ્રદેશોનો એક એક ધર્માસ્તિકાય પ્રદેશના સ્થાનમાં સદ્ભાવ હોય છે તેથી તે પ્રત્યેકના અનંત પ્રદેશો તે ધર્માસ્તિકાયના પ્રદેશને વ્યાપ્ત કરે છે.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-" केवइया अद्धासमया ?" હે ભગવન્ ! જે સ્થાનમાં ધર્માસ્તિકાયનો એકપ્રદેશ અવગાહિત હોય છે, તે સ્થાનમાં કેટલા અદ્ધાસમય અવગાહિત (સ્થિત) હોય છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-" सिय ओगाढा, सिय नो ओगाढा, जइ ओगाढा

तत्र अद्धासमयाः स्यात्-कदाचित् अवगाढा भवन्ति, स्यात्-कदाचित् नो अवगाढा भवन्ति, तत्र यदा अवगाढा भवन्ति तदा अनन्ता एव अद्धासमया अवगाढा भवन्ति, अद्धासमयानां मनुष्यलोके एव सद्भावेन परतोऽसद्भावात्, धर्मास्तिकायप्रदेशस्थाने तेषामवगाहोऽस्ति, नास्ति च, यत्रास्ति तत्रानन्तानामेवेति भावः, गौतमः पृच्छति-'जत्थ णं भंते ! एगे अहम्मत्थिकायप्पएसे ओगाढे तत्थ केवइया धम्मत्थिकायप्पएसा ओगाढा ?' हे भदन्त ! यत्र एकोऽधर्मास्तिकायप्रदेशोऽवगाढो भवति, तत्र कियन्तो धर्मास्तिकायप्रदेशा अवगाढा भवन्ति ? भगवानाह-'एक्को' हे गौतम ! तत्र एको धर्मास्तिकायप्रदेशोऽवगाढो भवति,

---

होते हैं, कदाचित् अवगाढ नहीं होते हैं यदि वे वहां पर अवगाढ होते हैं तो अनन्त ही अद्धासमय वहां अवगाढ होते हैं। क्योंकि मनुष्यलोक में ही अद्धासमयों का सद्भाव होता है-मनुष्यलोक से बाहर इनका सद्भाव नहीं होता है इसप्रकार धर्मास्तिकायप्रदेश के प्रस्थान में उनका अवगाह है भी और नहीं भी है। जहां है वहां अनन्तरूप में उनका सद्भाव है।

अब गौतमस्वामी प्रभु से ऐसा पूछते हैं-जत्थ णं भंते ! एगे अहम्मत्थिकायपएसे ओगाढे, तत्थ केवइया धम्मत्थिकायपएसा ओगाढा' हे भदन्त ! जहां पर एक अधर्मास्तिकायप्रदेश अवगाढ है वहां पर कितने धर्मास्तिकायप्रदेश अवगाढ हैं ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-'एक्को' हे गौतम ! वहां पर एक धर्मास्तिकायप्रदेश अवगाढ है-इस विषय में युक्ति कही जा चुकी है।

अणंता" હે ગૌતમ ! તે સ્થાન પર કયારેક અદ્ધાસમય અવગાહિત હોય છે અને કયારેક અવગાહિત હોતા નથી જો તેઓ તે સ્થાન પર અવગાહિત હોય, તો અનંત અદ્ધાસમયો જ ત્યાં અવગાહિત હોય છે. કારણ કે મનુષ્યલોકમાં જ અદ્ધાસમયોનો સદ્ભાવ હોય છે, મનુષ્યલોકની બહાર તેમનો સદ્ભાવ નથી તે કારણે ધર્માસ્તિકાય પ્રદેશના સ્થાનમાં તેમની અવગાહના હોય છે પણ ખરી અને નથી પણ હોતી જ્યાં હોય છે ત્યાં અનંત રૂપે જ તેમનો સદ્ભાવ રહે છે.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-"जत्थ णं भंते ! एगे अहम्मत्थिकायपएसे ओगाढे, तत्थ केवइया धम्मत्थिकायपएसा ओगाढा ?" હે ભગવન્ ! જે સ્થાન પર એક અધર્માસ્તિકાયપ્રદેશ અવગાઢ (સ્થિત) હોય છે, ત્યાં કેટલા ધર્માસ્તિકાય પ્રદેશો અવગાઢ હોય છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-"एक्को" હે ગૌતમ ! ત્યાં એક ધર્માસ્તિકાય પ્રદેશ અવગાઢ હોય છે તેનું સ્પષ્ટીકરણ પહેલાં થઇ ચુકયુ છે.

उक्तयुक्तेः । गौतमः पृच्छति–' केवइया अहम्मत्थिकायप्पएसा ओगाढा ? ' तत्र कियन्तोऽधर्मास्तिकायप्रदेशा अवगाढा भवन्ति ? भगवानाह–' नत्थि एक्को वि हे गौतम ! तत्र एकोऽपि अधर्मास्तिकायप्रदेशोऽवगाढो नास्ति, स्वस्थाने स्वप्रदेशान्तरस्यावगाहाभावात् ' सेसं जहा धम्मत्थिकायस्स ' शेषं तत्र आकाशास्तिकायप्रदेशावगाढादिकं यथा धर्मास्तिकायस्य प्रतिपादितं तथैव अध-

अब गौतमस्वामी प्रभु से ऐसा पूछते हैं–'केवइया अहम्मत्थिकायप्पएसा ओगाढा' हे अदन्त ! जहां पर एक अधर्मास्तिकाय प्रदेश अवगाढ है–वहां पर अधर्मास्तिकाय के और कितने प्रदेश अवगाढ हैं ? उत्तर में प्रभु कहते हैं–' नत्थि एको वि ' हे गौतम ! वहां पर एक भी अधर्मास्तिकाय प्रदेश अवगाढ नहीं है। क्योंकि अपने अवगाह स्थान में अपने ही अन्य प्रदेश के अवगाह होने का अभाव रहता है। ' सेसं जहा धम्मत्थिकायस्स ' जैसा धर्मास्तिकाय के प्रकरण में आकाशास्तिकाय के प्रदेश के अवगाहादि का कथन किया गया है वैसा ही शेष कथन यहां अधर्मास्तिकाय के विषय में भी जानना चाहिये। अर्थात् जहां अधर्मास्तिकाय का एकप्रदेश अवगाढ है वहां पर आकाशास्तिकाय का भी एकप्रदेश अवगाढ है, जहां अधर्मास्तिकाय का एक प्रदेश अवगाढ है, वहां जीवास्तिकाय के भी अनन्त प्रदेश अवगाढ हैं, जहां अधर्मास्तिकाय का एकप्रदेश अवगाढ है वहां पुद्गलास्तिकाय के भी अनन्तप्रदेश अवगाढ हैं, तथा जहां पर अधर्मास्तिकाय का एक

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન–" केवइया अहम्मत्थिकायप्पएसा अवगाढा ?" હે ભગવન્ ! જ્યાં એક અધર્માસ્તિકાય પ્રદેશ અવગાઢ હોય છે, તે સ્થાન પર કેટલા અધર્માસ્તિકાયના બીજા પ્રદેશો અવગાઢ હોય છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર–" नत्थि एक्को वि " હે ગૌતમ ! તે સ્થાન પર બીજો એક પણ અધર્માસ્તિકાયપ્રદેશ અવગાઢ હોતો નથી, કારણ કે પોતાના જ અવગાહસ્થાનમાં પોતાના જ અન્ય પ્રદેશની અવગાહના થવાનો અભાવ રહે છે " सेसं जहा धम्मत्थिकायस्स " જેવું ધર્માસ્તિકાયના પ્રકરણમાં આકાશાસ્તિકાયના પ્રદેશના અવગાહાદિનું કથન કરવામાં આવ્યું છે, એવું જ બાકીનું કથન અહીં અધર્માસ્તિકાયના વિષયમાં પણ સમજવું એટલે કે જ્યાં અધર્માસ્તિકાયનો એક પ્રદેશ અવગાઢ છે, ત્યાં આકાશાસ્તિકાયનો પણ એક પ્રદેશ અવગાઢ હોય છે જ્યાં અધર્માસ્તિકાયનો એક પ્રદેશ અવગાઢ છે. ત્યાં જીવાસ્તિકાયના પણ અનંત પ્રદેશો અવગાઢ છે, જ્યાં અધર્માસ્તિકાયનો એક પ્રદેશ અવગાઢ છે ત્યાં પુદ્ગલાસ્તિકાયના પણ અનંત પ્રદેશો અવગાઢ

र्मास्तिकायस्यापि प्रतिपत्तव्यम्। गौतमः पृच्छति-'जत्थ णं भंते! एगे आगासत्थिकायपएसे ओगाढे तत्थ केवइया धम्मत्थिकायपएसा ओगाढा?' हे भदन्त! यत्र खलु एक आकाशास्तिकायप्रदेश अवगाढ स्तत्र कियन्तो धर्मास्तिकायप्रदेशाः अवगाढा भवन्ति? भगवानाह-'सिय ओगाढा, सिय नो ओगाढा जइ ओगाढा एक्को' हे गौतम! तत्र धर्मास्तिकायप्रदेशाः स्यात्-कदाचित्, अवगाढा भवन्ति, स्यात्-कदाचित् नो अवगाढा भवन्ति, यदा अवगाढा भवन्ति तदा एक एव धर्मास्तिकायप्रदेशोऽवगाढो भवति, आकाशस्य लोकालोकरूपत्वात्

प्रदेश अवगाढ है, वहां पर अद्धासमय कदाचित् अवगाढ होते भी हैं और कदाचित् नहीं भी होते हैं-यदि वे वहां पर अवगाढ होते हैं तो अनन्तमात्रा में ही होते हैं।

अब गौतमस्वामी प्रभु से ऐसे पूछते हैं-'जत्थ णं भंते! एगे आगासत्थिकायपएसे ओगाढे, तत्थ केवइया धम्मत्थिकायपएसा ओगाढा' हे भदन्त! जहां पर एक आकाशास्तिकायप्रदेश अवगाढ़ है वहां पर धर्मास्तिकाय के कितने प्रदेश अवगाढ हैं? उत्तर में प्रभु कहते हैं-'सिय ओगाढा सिय नो ओगाढा एक्को' हे गौतम! वहां पर धर्मास्तिकाय के प्रदेश कदाचित् अवगाढ हैं भी और कदाचित् अवगाढ नहीं भी हैं यदि वहां पर धर्मास्तिकाय प्रदेश अवगाढ होते हैं तो धर्मास्तिकाय का एक प्रदेश ही वहां अवगाढ होता है, क्योंकि लोकालोक स्वरूप आकाश होता है और धर्मास्तिकाय का अवगाढ लोकाकाश में है-अलोकाकाश में

છે, જ્યાં અધર્માસ્તિકાયનો એક પ્રદેશ અવગાઢ છે, ત્યાં અદ્ધાસમયો કયારેક અવગાઢ હોય છે અને કયારે અવગાઢ હોતા નથી જો તેઓ તે સ્થાન પર અવગાઢ હોય છે તો અનંત રૂપે જ હોય છે.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-"जत्थ णं भंते! एगे आगासत्थिकायपएसे ओगाढे, तत्थ केवइया धम्मत्थिकायपएसा ओगाढा?" હે ભગવન્! જ્યાં એક આકાશાસ્તિકાયપ્રદેશ અવગાઢ હોય છે, તે પ્રદેશ પર કેટલા ધર્માસ્તિકાયપ્રદેશો અવગાઢ હોય છે?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-"सिय ओगाढा, सिय नो ओगाढा, जइ ओगाढा एक्को" હે ગૌતમ! આકાશાસ્તિકાય પ્રદેશના અવગાહના સ્થાન પર કયારેક ધર્માસ્તિકાયના પ્રદેશ અવગાઢ હોય છે અને કયારેક અવગાઢ હોતા નથી જો અવગાઢ હોય છે તો ધર્માસ્તિકાયનો એક જ પ્રદેશ ત્યાં અવગાઢ હોય છે. કારણ કે લોકાલોક રૂપ આકાશ હોય છે અને ધર્માસ્તિકાયનો અવગાઢ લોકાકાશમાં જ છે-અલોકાકાશમાં નથી કારણ કે અલોકાકાશમાં ધર્માસ્તિકા-

लोकाकाशेऽवगाढो भवति, अलोकाकाशे तु न, तदभावात्, 'एवं अहम्मत्थिकाय-पएसा वि' एवं-धर्मास्तिकायप्रदेशावगाहवदेव, अधर्मास्तिकायप्रदेशा अपि तत्र स्यात् अवगाढा भवन्ति, स्यात् नो अवगाढा भवन्ति, यदा अवगाढा भवन्ति तदा एक एवाधर्मास्तिकायप्रदेशोऽवगाढो भवति, उक्तयुक्तेः। गौतमः पृच्छति-'केव-इया आगासत्थिकायप्पएसा ओगाढा?' कियन्तस्तत्राकाशास्तिकायप्रदेशा अव-गाढा भवन्ति?-भगवानाह-'नत्थि एक्को वि' तत्राकाशास्तिकायप्रदेशस्थाने एको ऽपि तदन्यः आकाशास्तिकायप्रदेशोऽवगाढो न भवति, स्वस्थाने स्वप्रदेशान्तर-

---

नहीं है। कारण-अलोकाकाश में धर्मास्तिकाय का अभाव है। 'एवं अहम्मत्थिकायपएसा वि' धर्मास्तिकायप्रदेश अवगाह की तरह ही अध-र्मास्तिकाय के प्रदेश भी वहां पर कदाचित् अवगाढ हैं और कदाचित् अवगाढ नहीं हैं-यदि वे वहां पर अवगाढ होते हैं तो एक ही अधर्मास्तिकाय का प्रदेश उक्तयुक्ति अनुसार अवगाढ होता है। अब गौतमस्वामी प्रभु से ऐसा पूछते हैं-'केवइया आगासत्थिकायप्प-एसा ओगाढा' हे भदन्त! जहां पर आकाशास्तिकाय का एक प्रदेश अवगाढ-स्थित है वहां पर आकाशास्तिकाय के और कितने प्रदेश अवगाढ-स्थित है, इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-'नत्थि एक्कोवि' हे गौतम! जहां पर आकाशास्तिकाय का एक प्रदेश अवगाढ है-वहां आका-शास्तिकाय के और दूसरे प्रदेशों में से एक प्रदेश भी अवगाढ नहीं है क्योंकि अपने स्थान में स्वप्रदेशान्तर के अवगाह होने का असंभव होने

યનો અભાવ છે. "एवं अहम्मत्थिकायपएसा वि" ધર્માસ્તિકાય પ્રદેશના અવગાહની જેમ જ અધર્માસ્તિકાયના પ્રદેશ પણ કયારેક ત્યાં અવગાઢ હોય છે અને કયારેક અવગાઢ હોતા નથી જો તેઓ ત્યાં અવગાઢ હોય છે તો એક જ અધર્માસ્તિકાયનો પ્રદેશ ત્યાં અવગાઢ હોય છે તેનુ સ્પષ્ટીકરણ પણ ઉપર મુજબ સમજવું.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-"केवइया आगासत्थिकायपएसा ओगाढा?" હે ભગવન્! જ્યાં આકાશાસ્તિકયનો એક પ્રદેશ અવગાઢ છે, ત્યાં આકાશા-સ્તિકાયના બીજા કેટલા પ્રદેશો અવગાઢ (સ્થિત) હોય છે?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-"नत्थि एक्को वि" હે ગૌતમ! જ્યા આકા-શાસ્તિકાયનો એક પ્રદેશ અવગાઢ છે, ત્યા આકાશ સ્તિકાયનો બીજો એક પણ પ્રદેશ અવગાઢ હોતો નથી, કારણ કે પોતાના જ સ્થાનોમા પોતાના જ અન્ય પ્રદેશોની અવગાહના અસંભવિત છે.

स्यावगाहासंभवात्। गौतमः पृच्छति-केवइया जीवत्थिकायपएसा ओगाढा?' तत्र कियन्तो जीवास्तिकायप्रदेशा अवगाढा भवन्ति? भगवानाह-'सिय ओगाढा, सिय नो ओगाढा, जइ ओगाढा, अणंता' तत्र जीवास्तिकायप्रदेशाः स्यात्-कदाचित् अवगाढा भवन्ति, स्यात्-कदाचित् नो अवगाढा भवन्ति यदा अवगाढा भवन्ति, उक्तयुक्तेः। 'एवं जाव अद्धासमया' एवं-पूर्वोक्तरीत्यैव, यावत्-पुद्गलास्तिकायप्रदेशा स्तत्र स्यात् अवगाढा भवन्ति, स्यात् नो अवगाढा भवन्ति, यदा अवगाढा स्तदा अनन्ता एवावगाढा भवन्ति, एवं तत्र अद्धासमया अपि स्यात्

के कारण विधान नहीं है। अब गौतमस्वामी प्रभु से ऐसा पूछते हैं-'केवइया जीवत्थिकायपएसा ओगाढा' हे भदन्त! जहां पर आकाशास्तिकाय का एक प्रदेश स्थित है, वहां पर जीवास्तिकाय के कितने प्रदेश अवगाढ-स्थित हैं? उत्तर में प्रभु कहते हैं-'सिय ओगाढा, सिय नो ओगाढा, जइ ओगाढा, अणंता' हे गौतम! यहां पर जीवास्तिकाय के प्रदेश कदाचित् अवगाढ भी हैं और कदाचित् अवगाढ नहीं भी हैं। यदि वे वहां पर अवगाढ हैं-तो अनन्त मात्रा में ही हैं। कदाचित् अवगाढ हैं और कदाचित् अवगाढ नहीं हैं' इस विषय में युक्ति कही जा चुकी है। अर्थात् आकाशास्तिकाय लोकालोकस्वरूप होता है। जीवास्तिकाय का सद्भाव लोक में है-अलोक में नहीं है। 'एवं जाव अद्धासमया' इसी प्रकार आकाशास्तिकाय प्रदेश के अवगाढ स्थान में पुद्गलास्तिकाय प्रदेश अवगाढ होते भी हैं और नहीं भी होते हैं। यदि वे वहां पर अवगाढ होते हैं-तो अनन्तमात्रा में ही होते हैं।

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-"केवइया जीवत्थिकायपएसा ओगाढा?" હે ભગવન્! જ્યાં આકાશાસ્તિકાયનો એક પ્રદેશ અવગાઢ (રહેલો) છે, ત્યાં જીવાસ્તિકાયના કેટલા પ્રદેશો અવગાહિત હોય છે?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-" सिय ओगाढा, सिय नो ओगाढा, जइ ओगाढा अणंता " હે ગૌતમ! ત્યાં જીવાસ્તિકાયના પ્રદેશ કયારેક અવગાઢ હોય છે અને કયારેક અવગાઢ હોતા નથી. જો તેઓ ત્યાં અવગાઢ હોય છે તો અનંત માત્રામાં જ અવગાઢ હોય છે. કારણ કે આકાશાસ્તિકાય લોકાલોક રૂપ હોય છે. જીવાસ્તિકાયનો સદ્ભાવ લોકમાં જ હોય છે અલોકમાં તેનો અભાવ છે. "एव जाव अद्धासमया" એજ પ્રમાણે આકાશાસ્તિકાય-પ્રદેશના અવગાઢ સ્થાનમાં પુદ્ગલાસ્તિકાય પ્રદેશનો અવગાઢ કયારેક હોય છે પણ ખરો અને કયારેક નથી પણ હોતો, જો તેઓ ત્યાં અવગાઢ હોય છે, તો અનંતમાત્રામાં જ હોય છે એજ પ્રમાણે ત્યાં અદ્ધાસમય પણ

अवगाढाः समयक्षेत्रापेक्षया, स्यात् नो अवगाढाः समयक्षेत्राद्बहिरपेक्षया, यदा अवगाढा स्तदा अनन्ता एवावगाढा भवन्ति। गौतमः पृच्छति–'जत्थ णं भंते! एगे जीवत्थिकायप्पएसे ओगाढे तत्थ केवइया धम्मत्थिकायप्पएसा ओगाढा?' हे भदन्त! यत्र खलु एको जीवास्तिकायप्रदेशोऽवगाढो भवति तत्र कियन्तो धर्मास्तिकायप्रदेशा अवगाढा भवन्ति? भगवानाह–'एक्को, एवं अहम्मत्थिकायपएसा, एव आगासत्थिकायप्पएसा वि' तत्र एको धर्मास्तिकायप्रदेशोऽवगाढो भवति, एवं–तथैव आकाशास्तिकायप्रदेशा अपि एक आकाशास्तिकायप्रदेशोऽवगाढ स्तत्र भवति इति भावः। गौतमः पृच्छति-केवइया जीवत्थिकायपएसा ओगाढा?'

इसी प्रकार से वहां पर अद्धासमय भी कदाचित् अवगाढ होते हैं और कदाचित् अवगाढ नहीं भी होते हैं। यदि वे वहां पर अवगाढ हैं–तो अनन्तमात्रा में ही अवगाढ हैं इसका कारण यह है कि समय लोकक्षेत्र में ही पाया जाता है। लोकक्षेत्र से बाहर क्षेत्र में नहीं पाया जाता है। क्योंकि लोकक्षेत्र से बाहर क्षेत्र में उसका सद्भाव नहीं कहा गया है। अब गौतमस्वामी प्रभु से ऐसा पूछते हैं–'जत्थ णं भंते! एगे जीवत्थिकायपएसे ओगाढे, तत्थ केवइया धम्मत्थिकायप्पएसा ओगाढा' हे भदन्त! जहां एक जीवास्तिकायप्रदेश अवगाढ है। वहां पर धर्मास्तिकाय के कितने प्रदेश अवगाढ हैं? उत्तर में प्रभु कहते हैं–'एक्को' एवं अहम्मत्थिकायपएसा, एवं आगासत्थिकायप्पएसा वि' हे गौतम! वहां पर एक धर्मास्तिकायप्रदेश, एक अधर्मास्तिकायप्रदेश और एक आकाशास्तिकायप्रदेश अवगाढ है। अब गौतमस्वामी प्रभु से ऐसा पूछते हैं–'केवइया जीवत्थिकायपएसा ओगाढा' हे भदन्त! उस जीवा-

કયારેક અવગાઢ હોય છે અને કયારેક અવગાઢ હોતા નથી જો તેઓ ત્યાં અવગાઢ હોય છે, તો અનંત માત્રામાં જ અવગાઢ હોય છે તેનું કારણ એ છે કે સમયનો સદ્ભાવ મનુષ્યક્ષેત્રોમાં જ હોય છે, મનુષ્યક્ષેત્રની બહારના ક્ષેત્રોમાં તેનો સદ્ભાવ કહ્યો નથી.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન–"जत्थ णं भंते! एगे जीवत्थिकायपएसे ओगाढे' तत्थ केवइया धम्मत्थिकायप्पएसा ओगाढा?" હે ભગવન્! જ્યાં જીવાસ્તિકાયનો એક પ્રદેશ અવગાઢ હોય છે, ત્યાં કેટલા ધર્માસ્તિકાયપ્રદેશો અવગાઢ હોય છે?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર–"एक्को एवं अहम्मत्थिकायपएसा, एवं आगासत्थिकायपएसा वि" હે ગૌતમ! ત્યાં એક ધર્માસ્તિકાયપ્રદેશ એક અધર્માસ્તિકાય પ્રદેશ અને એક આકાશાસ્તિકાયપ્રદેશ અવગાઢ હોય છે.

तत्रैव जीवास्तिकायप्रदेशस्थाने कियन्तो जीवास्तिकायप्रदेशा अवगाढा भवन्ति? भगवानाह-'अणंता, सेसं जहा धम्मत्थिकायस्स' अनन्ता जीवास्तिकायप्रदेशा स्तत्रावगाढा भवन्ति, शेषं यथा धर्मास्तिकायस्य प्रतिपादितं तथैव जीवास्तिकायस्यापि प्रतिपत्तव्यम्। गौतमः पृच्छति-'जत्थ णं भंते ! एगे पोग्गलत्थिकायपएसे ओगाढे तत्थ केवइया धम्मत्थिकायप्पएसा०?' हे भदन्त ! यत्र खलु एकः पुद्गलास्तिकायप्रदेशोऽवगाढो भवति तत्र कियन्तो धर्मास्तिकायप्रदेशा अवगाढा भवन्ति? भगवानाह-एवं जहा जीवत्थिकायप्पएसे तहेव निरवसेसं' हे गौतम! एवं-पूर्वोक्तरीत्या यथा जीवास्तिकायप्रदेशः प्रतिपादित स्तथैव अस्य पुद्गलास्तिकायस्यापि निरवशेषं-सर्वं प्रतिपत्तव्यम्। गौतमः पृच्छति-'जत्थ णं भंते दो

स्तिकाय के और कितने प्रदेश अवगाढ हैं? उत्तर में प्रभु कहते है-'अणंता' सेसं जहा धम्मत्थिकायस्स, हे गौतम! वहां पर अनन्त जीवास्तिकायप्रदेश अवगाढ हैं। अवशिष्ट कथन धर्मास्तिकाय के कथनानुसार इस जीवास्तिकाय का भी जानना चाहिये।

अब गौतमस्वामी प्रभु से ऐसा पूछते हैं-'जत्थ णं भंते! एगे पोग्गलत्थिकायपएसे ओगाढे, तत्थ केवइया धम्मत्थिकायपएसा०' हे भदन्त! जहां पर एक पुद्गलास्तिकायप्रदेश स्थित हैं-वहां पर धर्मास्तिकाय के कितने प्रदेश स्थित हैं? उत्तर में प्रभु कहते हैं-'एवं जहा जीवत्थिकायप्पएसे तहेव निरवसेसं' हे गौतम! पहिले जैसा जीवास्तिकायप्रदेश के विषय में कथन किया गया है, उसी प्रकार से पुद्गलास्तिकाय का भी सम्पूर्णरूप से कथन करना चाहिये।

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-"केवइया जीवत्थिकायपएसा ओगाढा?" હે ભગવન્! તે જીવાસ્તિકાયપ્રદેશના અવગાહના સ્થાનમાં જીવાસ્તિકાયના અન્ય કેટલા પ્રદેશો અવગાઢ હોય છે?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-"अणंता, सेसं जहा धम्मत्थिकायस्स" હે ગૌતમ! ત્યાં અનંત જીવાસ્તિકાયપ્રદેશો અવગાઢ હોય છે બાકીનું કથન, ધર્માસ્તિકાયના જેવુ જ આ જીવાસ્તિકાયના વિષયમાં પણ સમજવું.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-"जत्थ णं भंते! एगे पोग्गलत्थिकायपएसे ओगाढे, तत्थ केवइया धम्मत्थिकायपएसा०" હે ભગવન્! જ્યાં એક પુદ્ગલાસ્તિકાયપ્રદેશ અવગાઢ હોય છે, ત્યાં ધર્માસ્તિકાયના કેટલા પ્રદેશો અવગાઢ હોય છે?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-"एवं जहा जीवत्थिकायपएसे तहेव निरवसेसं" હે ગૌતમ! પહેલાં જીવાસ્તિકાયપ્રદેશના વિષયમાં જેવું કથન કરવામાં આવ્યું છે, એજ પ્રમાણે પુદ્ગલાસ્તિકાયનું પણ સંપૂર્ણ રૂપે કથન કરવું જોઈએ.

पोग्गलत्थिकायपएसा ओगाढा तत्थ केवइया धम्मत्थिकायपएसा० ?' हे भदन्त ! यत्र खलु द्वौ पुद्गलास्तिकायप्रदेशौ अवगाढौ भवत स्तत्र कियन्तो धर्मास्तिकाय-प्रदेशाः अवगाढा भवन्ति ? भगवानाह-सिय एक्को, सिय दोन्नि, एवं अहम्मत्थिकायस्स वि, एवं आगासत्थिकायस्स वि, सेसं जहा धम्मत्थिकायस्स' तत्र स्यात्-कदाचित्, एको धर्मास्तिकायप्रदेशोऽवगाढो भवति, स्यात्-कदाचित्-द्वौ धर्मास्तिकायप्रदेशौ तत्रावगाढौ भवतः, तत्र यदा एकत्राकाशप्रदेशे द्व्यणुकः स्कन्धोऽवगाढो भवेत्तदा तत्र एक एव धर्मास्तिकायप्रदेशोऽवगाढो भवति, यदा तु द्वयोराकाशप्रदेशयो द्व्यणुकः स्कन्धोऽवगाढः स्यात्तदा तत्र द्वौ धर्मास्तिकायप्रदेशौ

अब गौतम प्रभु से ऐसा पूछते हैं-'जत्थ णं भंते ! दो पोग्गलत्थिकायपएसा ओगाढा तत्थ केवइया धम्मत्थिकायपएसा०' हे भदन्त ! जहां पर पुद्गलास्तिकाय के दो प्रदेश अवगाढ हैं, वहां पर धर्मास्ति काय के कितने प्रदेश अवगाढ हैं ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-'सिय एक्को, सिय दोन्नि, एवं अहम्मत्थिकायस्स वि, एवं आगासत्थिकायस्स वि- सेसं जहा धम्मत्थिकायस्स' हे गौतम ! वहां पर कदाचित् एक धर्मास्तिकायप्रदेश अवगाढ होता है, कदाचित् दो धर्मास्तिकाय प्रदेश अवगाढ होते हैं-अर्थात् जब एक आकाश प्रदेश में द्व्यणुक स्कन्ध अवगाढ होता है तब वहां एक ही धर्मास्तिकायप्रदेश अवगाढ होता है, और जब दो आकाशप्रदेशों में द्व्यणुक स्कन्ध अवगाढ होता है तब वहां दो धर्मास्तिकाय प्रदेश अवगाढ होते हैं-इसी प्रकार से वहां

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-" जत्थणं भंते ! दो पोग्गलत्थिकायपएसा ओगाढा, तत्थ केवइया धम्मत्थिकायपएसा०?" હે ભગવન્ ! જ્યાં પુદ્ગલાસ્તિકાયના બે પ્રદેશ અવગાઢ છે, ત્યાં ધર્માસ્તિકાયના કેટલા પ્રદેશો અવગાઢ હોય છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-" सिय एक्को, सिय दोन्नि, एवं अहम्मत्थिकायस्स वि, एवं आगासत्थिकायस्स वि, सेसं जहा धम्मत्थिकायस्स " હે ગૌતમ ! જ્યાં પુદ્ગલાસ્તિકાયના બે પ્રદેશ અવગાઢ હોય છે, ત્યાં કયારેક ધર્માસ્તિકાયનો એક પ્રદેશ પણ અવગાઢ હોય છે અને કયારેક ધર્માસ્તિકાયના બે પ્રદેશો પણ અવગાઢ હોય છે આ કથનનો ભાવાર્થ એ છે કે-જ્યારે એક આકાશપ્રદેશમા બે અણુવાળો સ્કંધ અવગાઢ હોય છે, ત્યારે ત્યાં એક જ ધર્માસ્તિકાયપ્રદેશ અવગાઢ હોય છે, અને જ્યારે બે આકાશપ્રદેશોમાં બે અણુવાળો સ્કંધ અવગાઢ હોય છે, ત્યારે ત્યાં બે ધર્માસ્તિકાયપ્રદેશો અવગાઢ હોય છે એજ પ્રમાણે ત્યાં કયારેક અધર્માસ્તિકાયનો પણ એક પ્રદેશ અવ-

अवगाढौ भवतः, एवं तथैव, अधर्मास्तिकायस्यापि स्यादेकः, स्यात् द्वौ, एवं तथैव, आकाशास्तिकायस्यापि स्यादेकः, स्याद् द्वौ प्रदेशौ तत्रावगाढौ भवतः, शेषम्-उक्तापेक्षयाऽवशिष्ट जीवास्तिकायपुद्गलास्तिकायाद्धासमयस्वरूपं त्रयम्, यथा धर्मास्तिकायप्रदेशवक्तव्यतायामुक्तं तथैव पुद्गलप्रदेशद्वयवक्तव्यतायामपि वक्तव्यम्, पुद्गलप्रदेशद्वयस्थाने तदीया अनन्ताः प्रदेशा अवगाढा भवन्तीति भावः, गौतमः पृच्छति-'जत्थ णं भंते ! तिन्नि पोग्गलत्थिकायपएसा ओगाढा तत्थ केवइया धम्मत्थिकायपएसा ओगाढा ?' हे भदन्त ! यत्र खलु त्रयः पुद्गलास्तिकायप्रदेशा अवगाढा भवन्ति तत्र कियन्तो धर्मास्तिकायप्रदेशा अवगाढा भवन्ति भगवानाह-'सिय एक्को, सिय दोन्नि, सिय तिन्नि'

अधर्मास्तिकाय का भी कदाचित् एक प्रदेश और कदाचित् दो प्रदेश अवगाढ होते हैं-इस कथन से बाकी बचा जो कथन है, अर्थात् जीवास्तिकाय पुद्गलास्तिकाय और अद्धासमय ये तीन जिस प्रकार से धर्मास्तिकायप्रदेश की वक्तव्यता में कहे गये हैं, उसी प्रकार से इनतीन विषयक कथन पुद्गलास्तिकाय के दो प्रदेशों की वक्तव्यता में भी करना चाहिये तात्पर्य ऐसा है कि पुद्गलप्रदेशद्वय के स्थान में इनके अनन्तप्रदेश अवगाढ होते हैं।

अब गौतमस्वामी प्रभु से ऐसा पूछते हैं-'जत्थ णं भंते ! तिन्नि पोग्गलत्थिकायपएसा ओगाढा, तत्थ केवइया धम्मत्थिकायपएसा ओगाढा' हे भदन्त ! जहां पुद्गलास्तिकाय के तीन प्रदेश अवगाढ हैं, वहां धर्मास्तिकाय के कितने प्रदेश अवगाढ होते हैं ? इसके उत्तर में

ગાઢ હોય છે અને કયારેક બે પ્રદેશો અવગાઢ હોય છે. આકાશાસ્તિકાયના અવગાઢના વિષયમાં પણ એવું જ કથન છે આ કથન સિવાયનું બાકીનું જે કથન છે, એટલે કે જીવાસ્તિકાય, પુદ્ગલાસ્તિકાય અને અદ્ધાસમય વિષયક જે કથન છે, તે ધર્માસ્તિકાયપ્રદેશની વક્તવ્યતામા કરેલા કથન અનુસાર સમજવું એટલે કે આ ત્રણેના વિષયમાં પુદ્ગલ સ્તિકાયના બે પ્રદેશોની વક્તવ્યતા ધર્માસ્તિકાયના પ્રદેશની પૂર્વોક્ત વક્તવ્યતા અનુસાર સમજવી એટલે કે પુદ્ગલ સ્તિકાયના બે પ્રદેશો જ્યાં અવગાઢ હોય છે, ત્યાં આ ત્રણેના અનંત પ્રદેશો અવગાઢ હોય છે

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-"जत्थ णं भंते ! तिन्नि पोग्गलत्थिकायपएसा ओगाढा, तत्थ केवइया धम्मत्थिकायपएसा ओगाढा ?" હે ભગવન્ ! જ્યાં પુદ્ગલાસ્તિકાયના ત્રણ પ્રદેશો અવગાઢ હોય છે, ત્યાં ધર્માસ્તિકાયના કેટલા પ્રદેશો અવગાઢ હોય છે ?

हे गौतम! तत्र स्यात्-कदाचित् एको धर्मास्तिकायप्रदेशोऽवगाढो भवति, स्यात्-कदाचित् द्वौ धर्मास्तिकायप्रदेशौ अवगाढौ भवतः, स्यात् कदाचित् त्रयो धर्मास्तिकायप्रदेशास्तत्रावगाढा भवन्ति, तत्र यदा त्रयोऽपि परमाणव एकत्राकाशप्रदेशेऽवगाढास्तदा तत्रैको धर्मास्तिकायप्रदेशोऽवगाढः, यदा तु द्वयोराकाशप्रदेशयोस्तदा द्वौ धर्मास्तिकायप्रदेशौ अवगाढौ, यदातु त्रिषु आकाशप्रदेशेषु अवगाढास्तदा त्रयो धर्मास्तिकायप्रदेशा अवगाढा भवन्ति। 'एवं अहमत्थिकायस्स वि, एवं आगासत्थिकायस्स वि, सेसं जहेव दोण्हं' एवं धर्मास्तिकायवदेव अधर्मास्तिकायस्यापि स्यात् एकः, स्यात् द्वौ, स्यात् त्रयः

प्रभु कहते हैं-सिय एक्को सिय दोन्नि सिय तिन्नि' हे गौतम! वहां पर कदाचित् एक धर्मास्तिकायप्रदेश अवगाढ होता है, कदाचित् दो धर्मास्तिकाय प्रदेश अवगाढ होते हैं, और कदाचित् तीन धर्मास्तिकायप्रदेश अवगाढ होते है। तात्पर्य कहने का यह है कि जब तीन परमाणु एकत्र आकाशप्रदेश में अवगाढ होते हैं उससमय वहां एक धर्मास्तिकायप्रदेश, अवगाढ होता है जब दो आकाशप्रदेश में तीन परमाणु अवगाढ होते हैं तब दो धर्मास्तिकायप्रदेश अवगाढ होते हैं और जब तीन आकाशप्रदेशों में तीन पुद्गलपरमाणु अवगाढ होते हैं तब तीन धर्मास्तिकायप्रदेश वहां अवगाढ होते हैं। 'एवं अहमत्थिकायस्स वि, एवं आगासत्थिकायस्स वि, जहेव दोण्हं' धर्मास्तिकाय के कथन अनुसार ही अधर्मास्तिकाय का भी कदाचित् दो प्रदेश और कदाचित् तीन प्रदेश वहां अवगाढ होते हैं। जीवास्तिकाय, पुद्गला-

---

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર–"सिय एक्को, सिय दोन्नि, सिय तिन्नि" હે ગૌતમ! ત્યાં કયારેક એક ધર્માસ્તિકાય પ્રદેશ અવગાઢ હોય છે, કયારેક બે ધર્માસ્તિકાયપ્રદેશો અવગાઢ હોય છે અને કયારેક ત્રણ ધર્માસ્તિકાયપ્રદેશો અવગાઢ હોય છે આ કથનનો ભાવાર્થ આ પ્રમાણે છે–જ્યારે ત્રણ પરમાણુ એકજ આકાશ પ્રદેશમાં અવગાઢ હોય છે, ત્યારે ત્યાં એક ધર્માસ્તિકાયપ્રદેશ અવગાઢ હોય છે જ્યારે બે આકાશપ્રદેશમાં ત્રણ પરમાણુ અવગાઢ હોય છે, ત્યારે ત્યાં બે ધર્માસ્તિકાય પ્રદેશો અવગાઢ હોય છે જ્યારે ત્રણ આકાશપ્રદેશોમાં ત્રણ પુદ્ગલપરમાણુ અવગાઢ હોય છે, ત્યારે ત્યાં ત્રણ ધર્માસ્તિકાયપ્રદેશો અવગાઢ હોય છે, "एवं अहम्मत्थिकायस्स वि, एवं आगासत्थिकायस्स वि सेसं जहा दोण्हं" ધર્માસ્તિકાયની જેમ જ અધર્માસ્તિકાયનો પણ કયારેક એક પ્રદેશ, કયારેક બે પ્રદેશ અને કયારેક ત્રણ પ્રદેશ ત્યાં અવગાઢ હોય છે,

प्रदेशास्त्रयावगाढा भवन्ति, एवं-त्रयोऽपि आकाशास्तिकायस्यापि स्यात् एकः, स्यात् द्वौ, स्यात् त्रयः, प्रदेशास्त्रयावगाढा भवन्ति, शेषम्-उक्तापेक्षयाऽवसेयं जीवास्तिकायपुद्गलास्तिकायाद्धासमयविषयकं गमकं यथैव द्वयोः पुद्गलास्तिकायप्रदेशयोरवगाहनाप्ररूपणे प्रतिपादितं तथैव पुद्गलास्तिकायप्रदेशत्रयप्ररूपणेऽपि प्रतिपादितव्यम्, पुद्गलास्तिकायप्रदेशत्रयस्थानेऽनन्ता जीवपुद्गलप्रदेशाद्धासमयाः अवगाढा भवन्ति अद्धासमयानामनन्तत्वं समयक्षेत्रापेक्षया, इत्येवमत्रसेयम्। 'एवं एक्केक्को वड्ढियव्वो पएसो आइल्लएहिं तिहिं अत्थिकाएहिं, सेसं जहेव, दोण्हं जाव दसण्हं सिय एक्को, सि। दोन्नि, सिय तिन्नि जाव सिय दस' एवं पूर्वोक्तरीत्या एकैको वर्द्धयितव्यः प्रदेशः आदिमानां त्रयाणाम् अस्तिकायानाम्-धर्माधर्माकाशास्तिकायरूपाणामित्यर्थः यथा पुद्गलास्तिकायप्रदेशत्रयावगाहमरू-

---

स्तिकाय और अद्धासमय इन तीन विषयक गमक जैसा दो पुद्गलास्तिकायप्रदेशों की अवगाहना के प्ररूपण में कहा गया है, उसी प्रकार से वह पुद्गलास्तिकाय के तीनप्रदेशों की प्ररूपणा में भी जानना चाहिये तात्पर्य ऐसा है कि पुद्गलास्तिकाय के तीन प्रदेशों की अवगाहना के स्थान में अनन्त जीव, अनन्तपुद्गल और अनन्त अद्धासमय अवगाढ होते हैं। अद्धासमयों में जो अनन्तता कही गई है वह समयक्षेत्र की अपेक्षा से कही गई है। 'एवं एक्केक्को वड्ढियव्वो पएसो आइल्लएहिं तिहिं अत्थिकाएहिं, सेसं जहेव दोण्हं जाव दसण्हं, सिय एक्को सिय दोन्नि, सिय तिन्नि जाव सिय दस' इस प्रकार पूर्वोक्तरीति से आदि के तीन अस्तिकायों का-धर्मास्तिकाय का, अधर्मास्तिकाय का और आकाशास्तिकाय का एक २ प्रदेश बढ़ाते वृद्धिगत (बढ़ाना) करना चाहिये

આકાશાસ્તિકાયના પ્રદેશોની ત્યાં અવગાહના વિષે પણ એવું જ કથન સમજવું જીવાસ્તિકાય, પુદ્ગલાસ્તિકાય અને અદ્ધાસમય, આ ત્રણેના પ્રદેશોની ત્યાં અવગાહનાના વિષયમાં બે પુદ્ગલાસ્તિકાયપ્રદેશોની અવગાહનાના વક્તવ્યમાં કહ્યા પ્રમાણે જ કથન સમજવું એટલે કે પુદ્ગલાસ્તિકાયના ત્રણ પ્રદેશો જ્યાં અવગાઢ હોય છે, ત્યાં અનન્ત જીવાસ્તિકાયપ્રદેશો, અનંત પુદ્ગલાસ્તિકાયપ્રદેશો અને અનન્ત અદ્ધાસમયો અવગાઢ હોય છે અદ્ધાસમયોમાં જે અનંતતા કહી છે, તે સમયક્ષેત્રની અપેક્ષ એ કહી છે ' एव एक्केक्को वड्ढियव्वो पएसो आइल्लएहि तिहिं अत्थिकाएहि, सेसं जहेव दोण्हं, जाव दसण्हं, सिय एक्को, सिय दोन्नि, सिय तिन्नि, जाव सिय दस " આ રીતે પૂર્વોક્ત પદ્ધતિ અનુસાર આદિના ત્રણ અસ્તિકાયોના-ધર્માસ્તિકાય, અધર્માસ્તિકાય અને આકાશાસ્તિકાયના-એક એક પ્રદેશની વૃદ્ધિ કરવી જોઈએ જેવી રીતે

पणे धर्मास्तिकायादित्रये एकैकः प्रदेशोवृद्धि नीतस्तथैव पुद्गलास्तिकायप्रदेश चतुष्टयावगाहप्ररूपणेऽपि एकैकस्तत्र वर्द्धनीयः अभिलापो यथा-यत्र खलु भदन्त ! चत्वारः पुद्गलास्तिकायप्रदेशा अवगाढास्तत्र कियन्तो धर्मास्तिकाय-प्रदेशा अवगाढा भवन्ति ? गौतम ! स्यादेकः, स्याद् द्वौ, स्यात् त्रयः, स्यात् चत्वारः, इत्यादि, शेषम्-उक्तप्रथमत्रयापेक्षयाऽवशिष्ट जीवपुद्गलाद्धासमयविष-यकं तु यथा द्वयोः पुद्गलास्तिकायप्रदेशयोर्विषये प्रतिपादितं तथैव यावत्-चतुः पञ्च षट् सप्ताष्ट नव दशानां पुद्गलास्तिकायप्रदेशानां विषयेऽपि प्रतिपादनीयम् तथा

जिस प्रकार पुद्गलास्तिकाय के प्रदेशत्रय-तीन प्रदेश के अवगाह प्ररूपण में धर्मास्तिकायादित्रय के एक २ प्रदेश को वृद्धिंगत करने की बात कही गई है, उसी प्रकार से पुद्गलास्तिकाय के प्रदेश चतुष्टय की अवगाहना की प्ररूपणा में भी एक एक प्रदेश उनका बढाना चाहिये ऐसा समझना 'अभिलाप ऐसा है-हे भदन्त ! जहां पर पुद्गलास्तिकाय के चारप्रदेश अवगाढ हैं, वहां धर्मास्तिकाय के कितने प्रदेश अवगाढ होते हैं ? उत्तर में प्रभु कहते हैं-गौतम ! वहां पर कदाचित् एक, कदाचित् दो, कदाचित् तीन और धर्मास्तिकायप्रदेश अवगाढ होते है। इत्यादि उक्त प्रथमत्रय की अपेक्षा से अवशिष्ट जीव, पुद्गल और अद्धासमय विषयक जो अभिलाप हैं वे जैसे पुद्गलास्तिकाय के दो प्रदेशों के सम्बन्ध में कहे गये हैं उसी प्रकार से वे यावत्-चार, पांच, छह, सात, आठ, नौ और दश पुद्गलास्तिकाय प्रदेशों के विषय में

પુદ્ગલાસ્તિકાયના ત્રણ પ્રદેશોની અવગાહનાના કથનમાં ધર્માસ્તિકાયાદિ ત્રણના એક એક પ્રદેશની વૃદ્ધિ કરવાનું કહેવામાં આવ્યું છે, એજ પ્રમાણે પુદ્ગલાસ્તિકાયના ચાર પ્રદેશોની અવગાહનાની વક્તવ્યતામાં પણ તેમના એક એક પ્રદેશની વૃદ્ધિ કરવી જોઇએ જેમ કે-

પ્રશ્ન-હે ભગવન્ ! જ્યાં પુદ્ગલાસ્તિકાયના ચાર પ્રદેશો અવગાઢ હોય છે, ત્યાં ધર્માસ્તિકાયના કેટલા પ્રદેશો અવગાઢ હોય છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-હે ગૌતમ ! ત્યાં કયારેક એક, કયારેક બે, કયારેક ત્રણ અને કયારેક ચાર ધર્માસ્તિકાયપ્રદેશો અવગાઢ હોય છે એવું કથન અધર્માસ્તિકાય અને આકાશાસ્તિકાયના પ્રદેશોની ત્યા અવગાહના વિષે સમજવું જીવ, પુદ્ગલ અને અદ્ધાસમય વિષયક જે અભિલાપ છે, તે પુદ્ગાસ્તિકાયના બે પ્રદેશોના સંબધમાં પ્રકટ કરેલા અભિલાપ પ્રમાણે જ સમજવા એજ પ્રમાણે પાંચ, છ, સાત, આઠ, નવ અને દસ પુદ્ગલાસ્તિકાયના પ્રદેશોના વિષયમાં પણ કથન કરવું જોઇએ પુદ્ગલાસ્તિકાયના દસ પ્રદે-

च यत्र पुद्गलास्तिकायस्य दशप्रदेशा अवगाढा भवन्ति, तत्र धर्मास्तिकायस्य स्यात्-कदाचिद् एकः प्रदेशः, स्यात्-कदाचित् द्वौ प्रदेशौ, स्यात्-कदाचित् त्रयः प्रदेशाः, यावत्-स्यात् चत्वारः प्रदेशाः, स्यात् पञ्चप्रदेशाः, स्यात् षट् प्रदेशाः, स्यात् सप्तप्रदेशाः, स्यात् अष्टप्रदेशाः, स्यात् नवप्रदेशाः स्यात् दशप्रदेशा अवगाढा भवन्ति। 'संखेज्जाणं सिय एक्को, सिय दोन्नि. जाव सिय दस, सिय संखेज्जा' यत्र संख्येयाः खलु पुद्गलास्तिकायप्रदेशा अवगाढा भवन्ति, तत्र धर्मास्तिकायस्य स्यात्-कदाचित् एकः प्रदेशः, स्यात् कदाचित् द्वौ प्रदेशौ, यावत्-स्यात् त्रयः, स्यात् चत्वारः, स्यात् पञ्च स्यात् षट्, स्यात् सप्त, स्यात् अष्ट, स्यात् नव, स्यात् दश स्यात् संख्येयाः प्रदेशा अवगाढा भवन्ति, 'असंखेज्जाणं सिय एक्को जाव

कहना चाहिये तथा च-जहां पर हे भदन्त ! पुद्गलास्तिकाय के दशप्रदेश अवगाढ हैं वहां धर्मास्तिकाय के कितने प्रदेश अवगाढ होते है ? हे गौतम ! वहां पर धर्मास्तिकाय का कदाचित् एक प्रदेश, कदाचित् उसके दो प्रदेश, कदाचित् तीन प्रदेश, कदाचित् चारप्रदेश, कदाचित् पांचप्रदेश, कदाचित् छहप्रदेश, कदाचित् सातप्रदेश, कदाचित् आठ-प्रदेश, कदाचित् नौ प्रदेश और कदाचित् दश प्रदेश अवगाढ होते हैं। 'संखेज्जाणं सिय एक्को, सिय दोन्नि, जाव सिय दस, सिय संखेज्जा' जहां पर पुद्गलास्तिकाय के संख्यातप्रदेश अवगाढ हैं, वहां धर्मास्तिकाय का कदाचित् एक प्रदेश, कदाचित् उसके दो प्रदेश, कदाचित् तीन प्रदेश, कदाचित् चार प्रदेश, कदाचित् पांच प्रदेश, कदाचित् छह प्रदेश, कदाचित् सात प्रदेश, कदाचित् आठ प्रदेश, कदाचित् नौ प्रदेश, कदाचित् दशप्रदेश और कदाचित् संख्यात प्रदेश अवगाढ होते

શેાના વિષયમાં નીચે પ્રમાણે પ્રશ્નોત્તરે। બનશે–" હે ભગવન્ ! જ્યાં પુદ્ગલાસ્તિકાયના દસ પ્રદેશેા અવગાઢ હેાય છે, ત્યાં ધર્માસ્તિકાયના કેટલા પ્રદેશેા અવગાઢ હેાય છે ?"

ઉત્તર–" હે ગૌતમ ! ત્યાં કયારેક ધર્માસ્તિકાયનેા એક પ્રદેશ, કયારેક બે પ્રદેશ, કયારેક ત્રણ પ્રદેશ, કયારેક ચાર પ્રદેશ કયારેક પાંચ પ્રદેશ, કયારેક છ પ્રદેશ, કયારેક સાત પ્રદેશ, કયારેક આઠ પ્રદેશ કયારેક નવ પ્રદેશ અને કયારેક દસ પ્રદેશ અવગાઢ હેાય છે. ' संखेज्जाणं सिय एक्को, सिय दोन्नि, जाव सिय दस, सिय संखेज्जा " જ્યાં પુદ્ગલાસ્તિકાયના સંખ્યાત પ્રદેશેા અવગાઢ હેાય છે, ત્યાં ધર્માસ્તિકાયનેા એક પ્રદેશ કયારેક અવગાઢ હેાય છે, કયારેક બે પ્રદેશ, કયારેક ત્રણ પ્રદેશ, કયારેક ચાર, કયારેક પાંચ, કયારેક છ, કયારેક સાત, કયારેક આઠ કયારેક નવ, કયારેક દસ અને કયારેક

सिय संखेज्जा, सिय असंखेज्जा, जहा संखेज्जा, एवं अणंता वि' यत्र असंख्येयाः खलु पुद्गलास्तिकायप्रदेशा अवगाढा भवन्ति तत्र धर्मास्तिकायस्य स्यात् एकः, यावत् स्यात् द्वौ, स्यात् त्रयः, स्यात् चत्वारः, स्यात् पञ्च, स्यात् षट्, स्यात् सप्त, स्यात् अष्ट, स्यात् नव, स्यात् दश, स्यात् संख्येयाः, स्यात् असंख्येयाः प्रदेशा अवगाढा भवन्ति, यथा असंख्येयाः पुद्गलास्तिकायप्रदेशा उक्ताः, एवं-अनन्ता अपि पुद्गलास्तिकायप्रदेशा वक्तव्याः, तथा च अभिलापक्रमः-यत्र खलु भदन्त ! अनन्ताः पुद्गलास्तिकायप्रदेशा अवगाढा भवन्ति तत्र कियन्तो धर्मास्तिकायप्रदेशा अवगाढा भवन्ति ? गौतम ! तत्र धर्मास्तिकायस्य स्यादेकः, स्यात् द्वौ,

---

हैं। 'असंखेज्जाणं सिय एक्को, जाव सिय संखेज्जा, सिय असंखेज्जा, जहा असंखेज्जा एवं अणंता वि' जहां पर पुद्गलास्तिकाय के असंख्यात प्रदेश अवगाढ होते हैं, वहां पर धर्मास्तिकाय का कदाचित् एक प्रदेश यावत्-कदाचित् दो प्रदेश, कदाचित् तीन प्रदेश, कदाचित् चार प्रदेश, कदाचित् पांच प्रदेश, कदाचित् छहप्रदेश, कदाचित् सात प्रदेश, कदाचित् आठप्रदेश, कदाचित् नौ प्रदेश, कदाचित् दशप्रदेश, कदाचित् संख्यात प्रदेश और कदाचित् असंख्यात प्रदेश अवगाढ होते हैं। जिस प्रकार से वे असंख्यात पुद्गलास्तिकाय प्रदेश कहे गये हैं, उसी प्रकार से अनन्तपुद्गलास्तिकायप्रदेश भी कहना चाहिये तथा च-अभिलापक्रम ऐसा होता है-हे भदन्त ! जहां पर अनन्त पुद्गलास्तिकायप्रदेश अवगाढ हैं, वहां पर धर्मास्तिकाय के कितने प्रदेश अवगाढ होते हैं? हे गौतम ! वहां पर धर्मास्तिकाय का कदाचित् एकप्रदेश कदाचित् उसके दो प्रदेश, कदाचित् तीनप्रदेश, यावत् कदाचित् असंख्यातप्रदेश

સંખ્યાત પ્રદેશો અવગાઢ હોય છે. "असंखेज्जाणं सिय एक्को, जाव सिय असंखेज्जा, जहा संखेज्जा एवं अणता वि" જ્યાં પુદ્ગલાસ્તિકાયના અસંખ્યાત પ્રદેશો અવગાઢ હોય છે, ત્યાં ધર્માસ્તિકાયનો કયારેક એક પ્રદેશ કયારેક બે પ્રદેશ એજ પ્રમાણે ઠસ સુધીના પ્રદેશો, કયારેક સંખ્યાત પ્રદેશો અને કયારેક અસંખ્યાત પ્રદેશો અવગાઢ હોય છે જે પ્રકારે અસંખ્યાત પુદ્ગલાસ્તિકાય પ્રદેશોનું કથન કરવામાં આવ્યું છે, એજ પ્રમાણે અનંત પુદ્ગલાસ્તિકાયનું કથન પણ કરવું જોઇએ જેમ કે આ પ્રકારના પ્રશ્નોત્તરો-" હે ભગવન્ ! જ્યાં પુદ્ગલાસ્તિકાયના અનંત પ્રદેશો અવગાઢ હોય છે, ત્યાં ધર્માસ્તિકાયના કેટલા પ્રદેશો અવગાઢ હોય છે ?

ઉત્તર-હે ગૌતમ ! ત્યાં કયારેક ધર્માસ્તિકાયનો એક પ્રદેશ, કયારેક બે પ્રદેશ, કયારેક ત્રણ પ્રદેશ એજ પ્રમાણે કયારેક અસંખ્યાત પર્યન્તના

यावत् स्यात् असंख्येयाः प्रदेशा अवगाढा भवन्ति इत्येतदेवपर्यन्तं बोध्यः ननु, स्यात् अनन्ताः प्रदेशा इति, धर्मास्तिकायाधर्मास्तिकायलोकाकाशप्रदेशानामनन्तानामसद्भावात्, जीवपुद्गलाद्धासमयरूपेषु त्रिषु अनन्तता बोध्या, तेषामनन्तत्वात्

अथ प्रकारान्तरेणावगाहद्वारमेव प्ररूपयितुमाह–'जत्थ णं भंते ! एगे अद्धासमये ओगाढे तत्थ केवइया धम्मत्थिकायपएसा ओगाढा ?' गौतमः पृच्छति–हे भदन्त ! यत्र खलु एकः अद्धासमयोऽवगाढो भवति तत्र कियन्तो धर्मास्तिकायप्रदेशा अवगाढा भवन्ति ? भगवानाह–'एक्को' एकाद्धासमयावगाहस्थाने एको

अवगाढ होते हैं। इस प्रकार यह कथन धर्मास्तिकाय के असंख्यात प्रदेश की अवगाहना तक ही कहा गया जानना चाहिये क्योंकि धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय और लोकाकाश के असंख्यातप्रदेश ही सिद्धान्तकारों ने कहे हैं अनन्त नहीं। इसलिये वहां धर्मास्तिकाय के कदाचित् अनन्तप्रदेश अवगाढ नहीं होते कहे गये हैं। जीव पुद्गल एवं अद्धासमय इन तीन में अनन्तप्रदेश होते हैं। क्योंकि ये स्वयं अनन्त होते हैं।

अब प्रकारान्तर से सूत्रकार अवगाहनाद्वार की ही प्ररूपणा करते हैं–इसमें गौतम ने प्रभु से ऐसा पूछा है–'जत्थ णं भंते ! एगे अद्धासमए ओगाढे तत्थ केवइया धम्मत्थिकायपएसा ओगाढा' हे भदन्त ! जहां एक अद्धासमय अवगाढ होता है, वहां धर्मास्तिकाय के कितने प्रदेश अवगाढ होते हैं ? उत्तर में प्रभु कहते हैं–'एक्को' हे गौतम ! वहां धर्मास्तिकाय का एक प्रदेश अवगाढ होता है।

પ્રદેશો પણ અવગાઢ હોય છે આ પ્રકારે આ કથનમાં ધર્માસ્તિકાયના અસંખ્યાત પર્યન્તના પ્રદેશોની ત્યાં અવગાહના સમજવી જોઈએ કારણ કે ધર્માસ્તિકાય, અધર્માસ્તિકાય અને લોકાકાશના અસંખ્યાત પ્રદેશો જ સિદ્ધાંતકારોએ કહ્યા છે–અનંત પ્રદેશો કહ્યા નથી તેથી જ ત્યાં ધર્માસ્તિકાયના અનંત પ્રદેશો કયારેક અવગાઢ હોય છે, એવું કથન કરવામાં આવ્યું નથી જીવ, પુદ્ગલ અને અદ્ધાસમય, આ ત્રણમાં અનંત પ્રદેશ હોય છે, કારણ કે તેઓ અનંત હોય છે.

હવે સૂત્રકાર અન્ય પ્રકારે અવગાહનાદ્વારની પ્રરૂપણા કરે છે—

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન–"जत्थ णं भंते ! एगे अद्धासमए ओगाढे, तत्थ केवइया धम्मत्थिकायपएसा ओगाढा ?" હે ભગવન્ ! જ્યાં એક અદ્ધાસમય અવગાઢ હોય છે, ત્યાં ધર્માસ્તિકાયના કેટલા પ્રદેશો અવગાઢ હોય છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર–"एक्को" હે ગૌતમ ! ત્યાં ધર્માસ્તિકાયનો એક પ્રદેશ અવગાઢ હોય છે.

धर्मास्तिकायप्रदेशोऽवगाढो भवति, गौतमः पृच्छति–'केवइया अहम्मत्थिकायपएसा ओगाढा ?' तत्र कियन्तोऽधर्मास्तिकायप्रदेशा अवगाढा भवन्ति ? भगवानाह–'एक्को' तत्र एकोऽधर्मास्तिकायप्रदेशोऽवगाढो भवति। गौतमः पृच्छति–'केवइया आगासत्थिकायपएसा ओगाढा ?' तत्र कियन्तः आकाशास्तिकायप्रदेशा अवगाढा भवन्ति ? भगवानाह–'एक्को' तत्र एक आकाशास्तिकायप्रदेशोऽवगाढो भवति। गौतमः पृच्छति–'केवइया जीवत्थिकायपएसा ओगाढा ?' तत्र कियन्तो जीवास्तिकायप्रदेशा अवगाढा भवन्ति ? भगवानाह–'असंखा, एवं जाव

अब गौतम प्रभु से ऐसा पूछते है–'केवइया अहम्मत्थिकायपएसा ओगाढा' हे भदन्त ! जहां एक अद्धासमय अवगाढ होता है–वहां अधर्मास्तिकाय के कितने प्रदेश अवगाढ होते हैं ? उत्तर में प्रभु कहते हैं–'एक्को' हे गौतम ! वहां पर अधर्मास्तिकाय का एक प्रदेश अवगाढ होता है।

अब गौतम प्रभु से ऐसा पूछते हैं–'केवइया आगासत्थिकायपएसा ओगाढा' हे भदन्त ! जहां अद्धासमय अवगाढ है, वहां पर आकाशास्तिकाय के कितने प्रदेश अवगाढ होते हैं ? उत्तर में प्रभु कहते हैं 'एक्को' हे गौतम ! वहां पर आकाशास्तिकाय का एक प्रदेश अवगाढ होता है।

अब गौतम ऐसा पूछते हैं–'केवइया जीवत्थिकायपएसा ओगाढा' हे भदन्त ! जहां पर एक अद्धासमय अवगाढ है, वहां पर जीवास्तिकाय

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન–' केवइया अहम्मत्थिकायपएसा ओगाढा ?" હે ભગવન્ ! જ્યાં એક અદ્ધાસમય અવગાઢ હોય છે, ત્યાં અધર્માસ્તિકાયના કેટલા પ્રદેશો અવગાઢ હોય છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર–" एक्को " હે ગૌતમ ! ત્યાં અધર્માસ્તિકાયનો એક પ્રદેશ અવગાઢ હોય છે.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન–' केवइया आगासत्थिकायपएसा ओगाढा ?" હે ભગવન્ ! જ્યાં એક અદ્ધાસમય અવગાઢ હોય છે, ત્યાં આકાશાસ્તિકાયના કેટલા પ્રદેશો અવગાઢ હોય છે ?

ઉત્તર–" एक्को " હે ગૌતમ ! ત્યાં આકાશાસ્તિકાયનો એક પ્રદેશ અવગાઢ હોય છે

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન–" केवइया जीवत्थिकायपएसा ओगाढा ?" હે ભગવન્ ! જ્યાં એક અદ્ધાસમય અવગાઢ હોય છે, ત્યાં જીવાસ્તિકાયના કેટલા પ્રદેશો અવગાઢ હોય છે ?

अद्धासमया ' तत्रानन्ता जीवास्तिकायप्रदेशा अवगाढा भवन्ति, एवं-तथैव यावत् तत्र अनन्ताः पुद्गलास्तिकायप्रदेशा अवगाढा भवन्ति किन्तु तत्र एकोऽपि अद्धा-समयो नावगाढो भवति स्वस्थानेऽवगाहनाया असद्भावात् । गौतमः पृच्छति-' जत्थ णं भंते ! धम्मत्थिकाए ओगाढे तत्थ केवइया धम्मत्थिकायपएसा ओगाढा ?' हे भदन्त यत्र खलु धर्मास्तिकायोऽवगाढो भवति तत्र किियन्तो धर्मास्तिकाय-प्रदेशा अवगाढा भवन्ति ? भगवानाह-' नत्थि एक्को वि ' तत्र नास्ति एकोऽपि धर्मास्तिकायप्रदेशोऽवगाढः, धर्मास्तिकायेन समस्त तत्प्रदेशसंग्रहात् प्रदेशान्त-

---

के कितने प्रदेश अवगाढ होते हैं ? उत्तर में प्रभु कहते हैं 'अणंता' हे गौतम ! वहां पर जीवास्तिकाय के अनन्त प्रदेश अवगाढ होते है । 'एवं जाव अद्धासमया' इसी प्रकार से वहां अनन्तपुद्गलास्तिकायप्रदेश अवगाढ होते हैं । परन्तु जहां पर एक अद्धासमय अवगाढ है वहां पर एक भी अद्धासमय अवगाढ नहीं होता है । क्योंकि स्वस्थान में अवगाहना का असद्भाव कहा गया है । अब गौतमस्वामी प्रभु से ऐसा पूछते हैं-'जत्थ णं भंते ! धम्मत्थिकाए ओगाढे' हे भदन्त ! जहां पर धर्मास्तिकाय अवगाढ है 'तत्थ केवइया धम्मत्थिकायपएसा ओगाढा' वहां पर धर्मास्तिकाय के कितने प्रदेश अवगाढ होते हैं? उत्तर में प्रभु कहते हैं-'नत्थि एक्को वि' हे गौतम ! वहां पर धर्मास्तिकाय का एक भी प्रदेश अवगाढ नहीं होता है । क्योंकि धर्मास्तिकाय वहां अपने समस्त प्रदेशों का संग्रह करके ही तो अवगाढ है । अतः इसका और कोईसा ऐसा प्रदेश नहीं है जो इससे अलाहदा हुआ वहां अवगाढ हो ।

ઉત્તર-" अणंता " હે ગૌતમ ! ત્યાં જીવાસ્તિકાયના અનંત પ્રદેશો અવગાઢ હોય છે. " एवं जाव अद्धासमया " એજ પ્રમાણે ત્યાં અનંત પુદ્ગલાસ્તિકાયપ્રદેશો અવગાઢ હોય છે પરન્તુ જ્યાં એક અદ્ધાસમય અવગાઢ છે, ત્યાં એક પણ અન્ય અદ્ધાસમય અવગાઢ હોતા નથી કારણ કે સ્વસ્થા-નમાં અવગાહનાનો સદ્ભાવ કહ્યો નથી.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-" जत्थ णं भंते ! धम्मत्थिकाए ओगाढे तत्थ केवइया धम्मत्थिकायपएसा ओगाढा ? " હે ભગવન્ ! જ્યાં ધર્માસ્તિકાય અવગાઢ છે, ત્યાં ધર્માસ્તિકાયના કેટલા પ્રદેશો અવગાઢ હોય છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-" नत्थि एक्को वि " હે ગૌતમ ! ત્યાં ધર્માસ્તિ-કાયનો એક પણ પ્રદેશ અવગાઢ હોતો નથી, કારણ કે ધર્માસ્તિકાય ત્યાં પોતાના સમસ્ત પ્રદેશોનો સંગ્રહ કરીને અવગાઢ થયેલું હોય છે. તેથી તેનો અન્ય કોઈ એવો પ્રદેશ નથી કે જે ત્યાં અલગ રૂપે અવગાઢ હોય છે.

राणां चाभावात् । गौतमः पृच्छति-' केवइया अहम्मत्थिकायपएसा ओगाढा ?' तत्र किमन्तः अधर्मास्तिकायप्रदेशा अवगाढा भवन्ति ? भगवानाह-' असंखेज्जा ' तत्र असंख्येया अधर्मास्तिकायप्रदेशा अवगाढा भवन्ति, गौतमः पृच्छति-' केवइया आगासत्थिकायपएसा ओगाढा ?' तत्र कियन्त आकाशास्तिकायप्रदेशा अवगाढा भवन्ति ? भगवानाह-' असंखेज्जा ' तत्र असंख्येया आकाशास्तिकायप्रदेशा अवगाढा भवन्ति, अधर्मास्तिकायलोकाकाशयोरसंख्येयप्रदेशत्वात्, गौतमः पृच्छति-' केवइया जीवत्थिकायपएसा ओगाढा ?' तत्र कियन्तो जीवास्तिकायप्रदेशा अवगाढा भवन्ति ? भगवानाह-' अणंता, एवं जाव अद्धा समया '

अब गौतम प्रभु से ऐसा पूछते हैं ' केवइया अहम्मत्थिकायपएसा ओगाढा' हे भदन्त ! वहां अधर्मास्तिकाय के कितने प्रदेश अवगाढ़ हैं ? उत्तर में प्रभु कहते हैं-'असंखेज्जा' हे गौतम ! वहां पर अधर्मास्तिकाय के असंख्यात प्रदेश अवगाढ होते हैं । अब गौतमस्वामी प्रभु से ऐसा पूछते हैं-'केवइया आगासत्थिकायपएसा ओगाढा' हे भदन्त ! वहां पर कितने आकाशास्तिकायप्रदेश अवगाढ़ हैं ? उत्तर में प्रभु कहते हैं-'असंखेज्जा' हे गौतम ! वहां पर आकाशास्तिकाय के प्रदेश असंख्यात अवगाढ होते हैं अधर्मास्तिकाय और लोकाकाश इनके असंख्यात प्रदेश होते हैं । अब गौतमस्वामी प्रभु से ऐसा पूछते हैं-'केवइया जीवत्थिकायपएसा ओगाढा' हे भदन्त ! वहां पर जीवास्तिकाय के कितने प्रदेश अवगाढ होते हैं ? उत्तर में प्रभु कहते हैं-'अणंता' एवं जाव अद्धासमया' हे गौतम ! वहां पर जीवास्तिकाय के

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-" केवइया अहम्मत्थिकायपएसा आगाढा ?" હે ભગવન્ ! ત્યાં અધર્માસ્તિકાયના કેટલા પ્રદેશો અવગાઢ હોય છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-" असंखेज्जा " હે ગૌતમ ! ત્યાં અધર્માસ્તિકાયના અસંખ્યાત પ્રદેશો અવગાઢ હોય છે.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-" केवइया आगासत्थिकायपएसा ओगाढा ?" હે ભગવન્ ! ત્યાં આકાશાસ્તિકાયના કેટલા પ્રદેશો અવગાઢ હોય છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-" असंखेज्जा " હે ગૌતમ ! ત્યાં આકાશાસ્તિકાયના અસંખ્યાત પ્રદેશો અવગાઢ હોય છે કારણ કે ધર્માસ્તિકાય, અધર્માસ્તિકાય અને લોકાકાશના અસંખ્યાત પ્રદેશો હોય છે.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-" केवइया जीवत्थिकायपएसा ओगाढा ?" હે ભગવન્ ! ત્યાં જીવાસ્તિકાયના કેટલા પ્રદેશો અવગાઢ હોય છે ? તેનો ઉત્તર આપતાં મહાવીર પ્રભુ કહે છે-" अणंता एवं जाव अद्धासमया " હે ગૌતમ !

तत्र अनन्ता जीवास्तिकायप्रदेशा अवगाढा भवन्ति, जीवास्तिकायस्यानन्तप्रदेशत्वात्, एवं-तथैव यावत्-अनन्ताः पुद्गलास्तिकायप्रदेशास्तत्रावगाढा भवन्ति, पुद्गलास्तिकायस्यापि अनन्तप्रदेशत्वात्, एवम् अनन्ता अद्धासमयास्तत्रावगाढा भवन्ति, तस्यापि अनन्तत्वात्। गौतमः पृच्छति-'जत्थ णं भंते! अहम्मत्थिकाए ओगाढे तत्थ केवइया धम्मत्थिकायपएसा ओगाढा?' हे भदन्त! यत्र खलु अधर्मास्तिकायोऽवगाढो भवति तत्र कियन्तो धर्मास्तिकायप्रदेशा अवगाढा भवन्ति? भगवान् आह-'असंखेज्जा' तत्र असंख्येया धर्मास्तिकायप्रदेशा अवगाढा भवन्ति धर्मास्तिकायप्रदेशानाम् असंख्येयत्वात्, गौतमः पृच्छति-'केवइया अहम्मत्थिकायपएसा ओगाढा?' तत्र कियन्तोऽधर्मास्तिकायप्रदेशा अवगाढा भवन्ति?

अनन्तप्रदेश अवगाढ होते हैं। क्योंकि जीवास्तिकाय अनन्तप्रदेशवाला होता है। इसी प्रकार वहां पुद्गलास्तिकाय के अनन्तप्रदेश अवगाढ होते हैं? क्योंकि पुद्गलास्तिकाय के भी अनन्तप्रदेश होते हैं। इसी प्रकार वहां अनन्त अद्धासमय भी अवगाढ होते है। क्योंकि अद्धासमय भी अनन्त होते हैं। अब गौतमस्वामी प्रभु ऐसा पूछते हैं-'जत्थ णं भंते! अहम्मत्थिकाए ओगाढे, तत्थ केवइया धम्मत्थिकायपएसा ओगाढा' हे भदन्त! जहां अधर्मास्तिकाय अवगाढ है-वहां धर्मास्तिकाय के कितने प्रदेश अवगाढ होते है? उत्तर में प्रभु कहते हैं-'असंखेज्जा' हे गौतम! वहां पर धर्मास्तिकाय के असंख्यात प्रदेश अवगाढ होते हैं। क्योंकि धर्मास्तिकाय के प्रदेश असंख्यात होते हैं। अब गौतमस्वामी प्रभु से ऐसा पूछते हैं-'केवइया अहम्मत्थिकायपएसा ओगाढा' हे भदन्त! वहां अधर्मास्तिकाय के कितने प्रदेश अवगाढ होते हैं? उत्तर में प्रभु

જીવાસ્તિકાય અનંત પ્રદેશવાળું છે એજ પ્રમાણે ત્યાં પુદ્ગલાસ્તિકાયના પણ અનંત પ્રદેશો હોય છે એજ પ્રમાણે ત્યાં અનંત અદ્ધાસમયો અવગાઢ હોય છે, કારણ કે અદ્ધાસમયો પણ અનંત હોય છે.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-"जत्थ णं भंते! अहम्मत्थिकाए ओगाढे, तत्थ केवइया धम्मत्थिकायपएसा ओगाढा?" હે ભગવન્! જ્યાં અધર્માસ્તિકાય અવગાઢ છે, ત્યાં ધર્માસ્તિકાયના કેટલા પ્રદેશો અવગાઢ હોય છે?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-"असंखेज्जा" હે ગૌતમ! ત્યાં ધર્માસ્તિકાયના અસંખ્યાત પ્રદેશ અવગાઢ હોય છે, કારણ કે ધર્માસ્તિકાયના પ્રદેશ અસંખ્યાત છે.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-"केवइया अहम्मत्थिकायपएसा ओगाढा?" હે ભગવન્! ત્યાં અધર્માસ્તિકાયના કેટલા પ્રદેશો અવગાઢ હોય છે?

भगवानाह–' नत्थि एक्को वि ' तत्र नास्ति एकोऽपि अधर्मास्तिकायप्रदेशोऽवगाढः अधर्मास्तिकायशब्देन तत्प्रदेशानां सर्वेषां संग्रहात् प्रदेशान्तराणां चाभावात्, ' सेसं जहा धम्मत्थिकायस्स ' शेषम्–उक्तापेक्षया यदवशिष्टम् आकाशास्तिकायजीवास्तिकायपुद्गलास्तिकायाद्धासमयविषयकं गमकं यथा धर्मास्तिकायस्य प्रतिपादितं तथैव प्रतिपादनीयम्, ' एवं सव्वे, सट्ठाणे नत्थि एक्को वि भाणियव्वं, परट्ठाणे आदिल्लगा तिन्नि असंखेज्जा भाणियव्वा, पच्छिल्लगा तिन्नि अणंता भाणियव्वा जाव अद्धासमओत्ति जाव केवइया अद्धासमया ओगाढा?' नत्थि एक्कोऽवि' एवं पूर्वोक्तरीत्या, सर्वे धर्मास्तिकायादयोऽद्धासमयान्ता वक्तव्याः किन्तु स्वस्थानके स्वस्य एकोऽपि प्रदेशो नास्ति इति भाणितव्यं युक्ते

कहते हैं– ' नत्थि एक्को वि ' हे गौतम ! वहां पर अधर्मास्तिकाय का एक भी प्रदेश अवगाढ नहीं होता है। क्योंकि ' अधर्मास्तिकाय ' इस शब्द द्वारा समस्त उसके प्रदेशों का संग्रह हो जाता है। इसलिये प्रदेशान्तर बचते नहीं हैं। ' सेसा जहा धम्मत्थिकायस्स ' यहां पर अब जो आकाशास्तिकाय, जीवास्तिकाय, पुद्गलास्तिकाय, अद्धासमय इनके जो गमक नहीं कहे गये हैं उन्हें धर्मास्तिकाय के सम्बंध में कहे गये अनुसार जानना चाहिये ' एवं सव्वे सट्ठाणे नत्थि एक्को वि भाणियव्वं, परट्ठाणे आदिल्लगा तिन्नि असंखेज्जा भाणियव्वा, पच्छिल्लगा तिन्नि अणंता भाणियव्वा, जाव अद्धासमयो त्ति जाव केवइया अद्धासमया ओगाढा, नत्थि एक्को वि " इस प्रकार पूर्वोक्त रीतिसे समस्त धर्मास्तिकाय से लेकर अद्धासमय तक के द्रव्य कहना चाहिये किन्तु

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર–" नत्थि एक्को वि " હે ગૌતમ ! ત્યાં અધર્માસ્તિકાયનો એક પણ પ્રદેશ અવગાઢ હોતો નથી કારણ કે " અધર્માસ્તિકાય " આ પદ દ્વારા તે ના સમસ્ત પ્રદેશોનો સંગ્રહ થઈ જાય છે તેથી અલગ અધર્માસ્તિકાય પ્રદેશ સંભવી શકતો નથી ' सेसं जहा धम्मत्थिकायस्स " બાકીના આકાશાસ્તિકાય, જીવાસ્તિકાય, પુદ્ગલાસ્તિકાય અને અદ્ધાસમય વિષયક પ્રશ્નોત્તરો, ધર્માસ્તિકાયના વિષયમાં જેવા પ્રશ્નોત્તરો આપ્યા છે, એવા જ સમજવા.

" एवं सव्वे सट्ठाणे नत्थि एक्को वि भाणियव्वं, परट्ठाणे आदिल्लगा तिन्नि असंखेज्जगा भाणियव्वा, पच्छिल्लगा तिन्नि अणंता भाणियव्वा, जाव अद्धासमयो त्ति जाव केवइया अद्धासमया ओगाढा, नत्थि एक्को वि " એજ પ્રમાણે પૂર્વોક્ત પદ્ધતિ પ્રમાણે ધર્માસ્તિકાયથી લઈને અદ્ધાસમય પર્યન્તના દ્રવ્યનુ

रुक्तत्वात्, परस्थानकेतु आदिमास्त्रयः धर्मास्तिकायाधर्मास्तिकायाकाशास्तिकायाः असंख्येया भणितव्याः, पश्चिमा अन्तिमास्त्रयो जीवास्तिकायपुद्गलास्तिकायाद्धासमया अनन्ता भणितव्याः, यावत् अद्धासमय इति—अद्धासमयपर्यन्तमित्यर्थः यावत् कियन्तो अद्धासमयास्तत्रापगाढाः ? नास्ति एकोऽपि तत्रावगाढः प्रदेश इति ।

तथा च यावत् करणात् अद्धासमयगमके आद्यं धर्मास्तिकायप्रदेशादिकं पदपञ्चकं सूचितं भवति, षष्ठम् अद्धासमयविषयकं पदं लिखितमेवास्ति, इति प्रश्नः,

स्वस्थान में अपना एक भी प्रदेश अवगाढ नहीं होता है ऐसा समझना इस विषय में युक्ति पहले कही जा चुकी है। परस्थान में आदि के तीन अस्तिकाय द्रव्य-धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय और आकाशास्तिकाय असंख्यात कहना चाहिये, और अन्त के तीन द्रव्य जीवास्तिकाय, पुद्गलास्तिकाय और अद्धासमय ये अनन्त कहना चाहिये। और ऐसा कथन यावत् अद्धासमय तक करना चाहिये अर्थात्-जहां अद्धासमय अवगाढ होते हैं-वहां पर एक भी अद्धासमय अवगाढ नहीं होता है। यहां 'यावत्' पद दिया है सो उससे यह सूचित किया है अद्धासमय के गमक में धर्मास्तिकायादि पांच पद हैं अर्थात् जहां पर अद्धासमय अवगाढ है वहां पर धर्मास्तिकाय के, अधर्मास्तिकाय के, आकाशास्तिकाय के, जीवास्तिकाय के और पुद्गलास्तिकाय के प्रदेश अपनी २ प्रदेशसंख्या के अनुसार अवगाढ हैं। परन्तु स्वस्थान में

કથન થવું જોઇએ આ વિષયનું સ્પષ્ટીકરણ પહેલા થઇ ચુકયું છે. પરસ્થાનમાં ધર્માસ્તિકાય, અધર્માસ્તિકાય અને આકાશાસ્તિકાય રૂપ પહેલાં ત્રણના અસંખ્યાત પ્રદેશો અવગાઢ હોય છે, તેમ કહેવું જોઈએ અને છેલ્લા ત્રણ દ્રવ્યો જીવાસ્તિકાય, પુદ્ગલાસ્તિકાય અને અદ્ધાસમયને અનંત કહેવા જોઇએ અદ્ધાસમય સુધી એવું કથન થવું જોઈએ એટલે કે "જ્યાં અદ્ધાસમયો અવગાઢ હોય છે, ત્યાં અન્ય એક પણ અદ્ધાસમય અવગાઢ હોતો નથી." આ છેલ્લા પ્રશ્નનો ઉત્તર છે. અહીં "यावत्" પદ એ સૂચિત કરે છે કે અદ્ધાસમયના અભિલાપકમાં છ પદ છે જેમ કે જ્યાં અદ્ધાસમય અવગાઢ હોય છે ત્યાં અસંખ્યાત ધર્માસ્તિકાય, અસંખ્યાત અધર્માસ્તિકાય, અને અસંખ્યાત આકાશાસ્તિકાયના પ્રદેશો અવગાઢ હોય છે અને અદ્ધાસમય દ્વારા અવગાહિત સ્થાનમાં અનંત જીવાસ્તિકાય પ્રદેશો અને અનંત પુદ્ગલાસ્તિકાય પ્રદેશો અવગાઢ હોય છે, પરન્તુ સ્વસ્થાનમાં અવ-

तदुत्तरं तु-अद्धासमयस्थाने अद्धासमयान्तरावगाढएकोऽपि नास्ति, निरुपचरितस्याद्धासमयस्यैकस्यैव सद्भावादिति ॥ सू० १० ॥

जीवावगाढद्वारवक्तव्यता।

मूलम्-'जत्थ णं भंते! एगे पुढविकाइए ओगाढे, तत्थ णं केवइया पुढविकाइया ओगाढा? असंखेज्जा, केवइया आउक्काइया ओगाढा? असंखेज्जा, केवइया तेउकाइया ओगाढा? असंखेज्जा, केवइया वाउक्काइया ओगाढा? असंखेज्जा, केवइया वणस्सइकाइया ओगाढा? अणंता। जत्थ णं भंते! आउक्काइए ओगाढे तत्थ णं केवइया पुढविकाइया ओगाढा? असंखेज्जा, केवइया आउकाइया ओगाढा? असंखेज्जा, एवं जहेव पुढविकाइयाणं वत्तव्वया तहेव सव्वेसिं निरवसेसं भाणियव्वं जाव वणस्सइकाइयाणं जाव केवइया वणस्सइकाइया ओगाढा अणंता ॥सू० ११॥

छाया-यत्र खलु भदन्त! एकः पृथिवीकायिकोऽवगाढ स्तत्र खलु कियन्तः पृथिवीकायिका अवगाढाः? असंख्येयाः, कियन्तः अप्कायिका अवगाढाः? असंख्येयाः, कियन्तस्तेजस्कायिका अवगाढाः असंख्येयाः, कियन्तो वायुकायिका अवगाढाः? असंख्येयाः, कियन्तो वनस्पतिकायिका अवगाढाः? अनन्ताः, यत्र खलु भदन्त! अप्कायिकः अवगाढस्तत्र खलु कियन्तः पृथिवीकायिका अवगाढाः? असंख्येयाः, कियन्तः अप्कायिका अवगाढाः? असंख्येयाः, एवं यथैव पृथिवीकायिकानां वक्तव्यता तथैव सर्वेषां निरवशेषं भणितव्यम्, यावत् वनस्पतिकायिकानाम्, यावत् कियन्तो वनस्पतिकायिका अवगाढाः अनन्ताः ॥सू० ११॥

अवगाहना के असद्भाव से वहां पर अद्धासमयस्थान में एक भी अद्धासमयान्तर की अवगाहना नहीं होती है। क्योंकि निरुपचरितरूप से अद्धासमय एक ही कहा गया है ॥ सू० १० ॥

इतिअवगाहनाद्वारवक्तव्यता ॥

ગાહનાનો અસદ્ભાવ હોવાને લીધે અદ્ધાસમય જ્યાં અવગાઢ હોય છે, ત્યાં એક પણ અન્ય અદ્ધાસમયની અવગાહના થતી નથી, કારણ કે નિરૂપચરિત રૂપે અદ્ધાસમય એક જ કહ્યો છે. ॥સૂ૦૧૦॥

॥ અવગાહના દ્વાર વક્તવ્યતા સંપૂર્ણ

टीका—अथ दशमं जीवावगाढद्वारमाह-'जत्थ णं भंते! एगे' इत्यादि। 'जत्थ णं भंते! एगे पुढविकाइए ओगाढे तत्थ णं केवइया पुढविकाइया ओगाढा?' गौतमः पृच्छति-हे भदन्त! यत्र खलु स्थाने एकः पृथिवीकायिको जीवोऽवगाढो भवति तत्र खलु कियन्तः पृथिवीकायिका जीवा अवगाढा भवन्ति? भगवानाह 'असंखेज्जा' एकपृथिवीकायिकावगाहस्थाने असंख्येयाः सूक्ष्माः पृथिवीकायिका अवगाढा भवन्ति तथा चोक्तम्-"जत्थ एगो तत्थ नियमा असंखेज्जा" इति। यत्र एकस्तत्र नियमात् असंख्येयाः" इति। गौतमः पृच्छति-'केवइया आउकाइया ओगाढा?' एकपृथिवीकायिकावगाढस्थाने कियन्त अप्कायिका अवगाढा

जीवावगाढद्वारवक्तव्यता—

'जत्थ णं भंते! एगे पुढविकाइए ओगाढे' इत्यादि।

टीकार्थ—इस सूत्र द्वारा सूत्रकार ने दशवें जीवावगाढद्वार का कथन किया है-इसमें गौतमस्वामी ने प्रभु से ऐसा पूछा है-'जत्थ णं एगे पुढविकाइए ओगाढे, तत्थ णं केवइया पुढविकाइया ओगाढा' हे भदन्त! जिस स्थान पर पृथिवीकायिक जीव अवगाढ होता है, वहां कितने पृथिवीकायिक जीव अवगाढ होते हैं? उत्तर में प्रभु कहते हैं-'असंखेज्जा' हे गौतम! जहां पर एक पृथिवीकायिक जीव अवगाढ होते हैं। उस अवगाहनास्थान में असंख्यात सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीव अवगाढ होते हैं। सो ही कहा-है-'जत्थ एगो तत्थ नियमा असंखेज्जा' जहां एक होता है, वहां नियम से असंख्यात होते हैं।

—જીવાવગાઢ દ્વાર વક્તવ્યતા—

"जत्थ णं भंते! एगे पुढवीकाइए ओगाढे" ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ-આ સૂત્ર દ્વારા સૂત્રકારે દસમાં જીવાવગાઢ દ્વારનું નિરૂપણ કર્યું છે આ વિષયને અનુલક્ષીને ગૌતમ સ્વામી મહાવીર પ્રભુને એવો પ્રશ્ન પૂછે છે કે-"जत्थ णं भंते एगे पुढविकाइए ओगाढे, तत्थ णं केवइया पुढविकाइया ओगाढा?" હે ભગવન્! જે સ્થાન પર, એક પૃથ્વીકાયિક જીવ અવગાઢ (સ્થિત) હોય છે, ત્યાં કેટલા પૃથ્વીકાયિક જીવો અવગાઢ હોય છે?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-"असंखेज्जा" હે ગૌતમ! જ્યાં એક પૃથ્વીકાયિક જીવ અવગાઢ હોય છે. તે અવગાહના સ્થાનમાં અસંખ્યાત સૂક્ષ્મ પૃથિવીકાયિક જીવો અવગાઢ હોય છે કહ્યું પણ છે કે-"जत्थ एगो तत्थ नियमा असंखेज्जा" "જ્યાં એક હોય છે, ત્યાં નિયમથી જ અસંખ્યાત હોય છે."

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-"केवइया आउकाइया ओगाढा?" હે ભગવન્!

भवन्ति ? भगवानाह--'असंखेज्जा' तत्र असंख्येया अप्कायिकाः सूक्ष्माः अवगाढा भवन्ति उक्तयुक्तेः । गौतमः पृच्छति--' केवइया तेउकाइया ओगाढा ? ' तत्र कियन्त स्तेजस्कायिका अवगाढा भवन्ति ? भगवानाह--' असंखेज्जा ' तत्र असंख्येयास्तेजस्कायिका जीवाः सूक्ष्मा अवगाढा भवन्ति, गौतमः पृच्छति--' केवइया वाउकाइया ओगाढा ? ' तत्र कियन्तो वायुकायिका जीवा अवगाढा

अब गौतमस्वामी प्रभु से ऐसा पूछते हैं--'केवइया आउकाइया ओगाढा' हे भदन्त जहां एक पृथिवीकायिक जीव अवगाढ होता है, उस अवगाढ स्थान में कितने अप्कायिक जीव अवगाढ होते हैं ? उत्तर में प्रभु कहते हैं--'असंखेज्जा' हे गौतम ! जहां एक पृथिवीकायिक जीव अवगाढ होता है । उस स्थान पर असंख्यात सूक्ष्म अप्कायिक जीव अवगाढ होते हैं--क्योंकि इस विषय में युक्ति पहिले कही जा चुकी है । अब गौतमस्वामी प्रभु से ऐसा पूछते हैं--'केवइया तेउकाइया ओगाढा' हे ! भदन्त ! जहां एक पृथिवीकायिक जीव अवगाढ है--वहां कितने तेजस्कायिक जीव अवगाढ होते हैं ? उत्तर में प्रभु कहते हैं 'असंखेज्जा' हे गौतम ! जहां एक पृथिवीकायिक जीव अवगाढ होता है--वहां पर असंख्यात सूक्ष्म तेजस्कायिक अवगाढ होते हैं ।

अब गौतमस्वामी प्रभु से ऐसा पूछते हैं--'केवइया वाउकाइया ओगाढा' हे भदन्त। जहां पर एक पृथिवीकायिक जीव अवगाढ होता है

જે સ્થાન પર એક પૃથ્વીકાયિક જીવ અવગાઢ હોય છે, તે અવગાહના સ્થાનમાં કેટલા અપ્કાયિક જીવો અવગાઢ હોય છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર--" असंखेज्जा " હે ગૌતમ ! જ્યાં એક પૃથ્વીકાયિક જીવ અવગાઢ હોય છે, તે સ્થાન પર અસંખ્યાત સૂક્ષ્મ અપ્કાયિક જીવો અવગાઢ હોય છે તેનું સ્પષ્ટીકરણ પહેલાના સ્પષ્ટીકરણ અનુસાર જ સમજવું.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન--" केवइया तेउकाइया ओगाढा ?" હે ભગવન્ ! જ્યાં એક પૃથ્વીકાયિક જીવ અવગાઢ હોય છે, ત્યાં કેટલા તેજસ્કાયિક જીવો અવગાઢ હોય છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર--" असंखेज्जा " હે ગૌતમ ! જ્યાં એક પૃથ્વીકાયિક અવગાઢ હોય છે, ત્યાં અસંખ્યાત સૂક્ષ્મ તેજસ્કાયિક જીવો અવગાઢ હોય છે.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન--" केवइया वाउकाइया ओगाढा ?" હે ભગવન્ !

भवन्ति ? भगवानाह-'असंखेज्जा' तत्र असंख्येयाः सूक्ष्मा वायुकायिका जीवा अवगाढा भवन्ति, गौतमः पृच्छति-'केवइया वणस्सइकाइया ओगाढा ?' तत्र कियन्तो वनस्पतिकायिका जीवा अवगाढा भवन्ति ? भगवानाह-'अणंता' तत्र अनन्ता वनस्पतिकायिका जीवा अवगाढा भवन्ति, वनस्पतिकायिकजीवाना मनन्तत्वात्, तथा च एक पृथिवीकायिकावगाहस्थाने असंख्येयानां प्रत्येकं पृथिवी-कायिकादीनां चतुर्णां सूक्ष्माणामवगाहना भवन्ति, वनस्पतिकायिकानां तु अनन्ताना

वहां पर कितने वायुकायिक वायुकायिक जीव आवगाढ होते हैं ? उत्तर में प्रभु कहते हैं 'असंखेज्जा' हे गौतम ! जहां पर एक पृथिवीकायिक जीव अवगाढ होता है वहां पर सूक्ष्मवायुकायिक जीव असंख्यात अवगाढ होते हैं।

अब गौतमस्वामी प्रभु से ऐसा पूछते हैं-'केवइयावणस्सइकाइया ओगाढा' हे भदन्त ! जहां पर एक पृथिवीकायिक जीव अवगाढ होता है, वहां पर कितने वनस्पतिकायिक जीव अवगाढ होते हैं ? उत्तर में प्रभु कहते हैं-'अणंता' हे गौतम ! जहां पर एक पृथिवीकायिक जीव अवगाढ होता है, वहां पर अनन्त वनस्पतिकायिक जीव अवगाढ होते हैं। क्योंकि वनस्पतिकायिक जीव अनन्त कहे गये हैं। तथा च एक-पृथिवीकायिक जीव के अवगाहस्थान में प्रत्येक असंख्यात सूक्ष्मपृथिवी

જે સ્થાન પર એક પૃથ્વીકાયિક જીવ અવગાઢ હોય છે, તે અવગાહના સ્થાન પર કેટલા વાયુકાયિક જીવો અવગાઢ હોય છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-" असंखेज्जा " હે ગૌતમ ! જે સ્થાન પર એક પૃથ્વીકાયિક જીવ અવગાઢ હોય છે, તે સ્થાન પર અસંખ્યાત સૂક્ષ્મ વાયુકાયિક જીવો અવગાઢ હોય છે

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-" केवइया वणस्सइकाइया ओगाढा ? ' હે ભગવન્ ! એક પૃથ્વીકાયિક જીવ જ્યાં અવગાઢ હોય છે, ત્યાં કેટલા વનસ્પતિકાયિક જીવો અવગાઢ હોય છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-" अणंता " હે ગૌતમ ! જ્યાં એક પૃથ્વીકાયિક જીવ અવગાઢ હોય છે, ત્યાં અનંત વનસ્પતિકાયિક જીવો અવગાઢ હોય છે, કારણ કે વનસ્પતિકાયિક જીવ અનંત કહ્યા છે. આ કથનનો ભાવાર્થ એ છે કે એક પૃથ્વીકાયિક જીવના અવગાહના સ્થાનમાં અસંખ્યાત સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક જીવો, અસંખ્યાત સૂક્ષ્મ અપ્કાયિક જીવો, અસંખ્યાત સૂક્ષ્મ તેજસ્કાયિક

मवगाढो भवति, इत्यर्थः, गौतमः पृच्छति-'जत्थ णं भंते ! एगे आउकाइए ओगाढे तत्थ णं केवइया पुढविकाइया ओगाढा ?' हे भदन्त ! यत्र खलु एकः अप्कायिको जीवः अवगाढस्तत्र खलु कियन्तः पृथिवीकायिका अवगाढा भवन्ति ? भगवानाह-'असंखेज्जा' एकाप्कायिकावगाढस्थाने असंख्येयाः पृथिवीकायिका अवगाढा भवन्ति । गौतमः पृच्छति-'केवइया आउक्काइया ओगाढा ?' तत्र कियन्तः अप्कायिका अवगाढा भवन्ति ? भगवानाह-'असंखेज्जा' तत्र असंख्येया अप्कायिका अवगाढा भवन्ति, 'एवं जहेव पुढविकाइयाणं

कायिक जीव, असंख्यात सूक्ष्म अप्कायिक जीव, असंख्यात सूक्ष्म वायुकायिक जीव और अनन्तवनस्पतिकायिक जीव अवगाढ स्थित हैं।

अब गौतमस्वामी प्रभुसे ऐसा पूछते हैं-'जत्थ णं भंते! एगे आउकाइए ओगाढे' हे भदन्त ! जहां पर एक अप्कायिक जीव अवगाढ होता है, वहां पर 'केवइया पुढविकाइया ओगाढा' कितने पृथिवीकायिक जीव अवगाढ होते हैं ? उत्तर में प्रभु कहते हैं-'असंखेज्जा' हे गौतम ! जहां पर एक अप्कायिक जीव अवगाढ होता है उस स्थान पर असंख्यात पृथिवीकायिक जीव अवगाढ होते हैं। अब गौतमप्रभु से ऐसा पूछते हैं-'केवइया आउकाइया ओगाढा' हे भदन्त ! एक अप्कायिक जीव के अवगाहस्थान में अप्कायिक कितने जीव अवगाढ होते है ? उत्तर में प्रभु कहते हैं-'असंखेज्जा' वहां पर असंख्यात अप्कायिक जीव अवगाढ होते हैं। 'एवं जहेव पुढवीकाइयाणं

જીવો, અસંખ્યાત સૂક્ષ્મ વાયુકાયિક જીવો અને અનંત વનસ્પતિકાયિક જીવો અવગાઢ (સ્થિત) હોય છે.

હવે ગૌતમ સ્વામી મહાવીર પ્રભુને એવો પ્રશ્ન પૂછે છે કે-'जत्थणं भंते ! एगे आउकाइए ओगाढे" હે ભગવન્ ! જે સ્થાન પર એક અપ્કાયિક જીવ અવગાઢ હોય છે, તે અવગાહના સ્થાન પર "केवइया पुढविकाइया ओगाढा ?" કેટલા પૃથ્વીકાયિક જીવો અવગાઢ હોય છે ? તેનો ઉત્તર આપતા મહાવીર પ્રભુ કહે છે-"असंखेज्जा" હે ગૌતમ જ્યાં એક અપ્કાયિક જીવ અવગાઢ હોય છે, ત્યાં અસંખ્યાત પૃથ્વીકાયિક જીવો અવગાઢ હોય છે.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-"केवइया आउक्काइया ओगाढा ?' હે ભગવન્ ! એક અપ્કાયિક જીવના અવગાહના સ્થાનમાં કેટલા અપ્કાયિક જીવો અવગાઢ હોય છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-"असंखेज्जा" હે ગૌતમ ! ત્યાં અસંખ્યાત અપ્કાયિક જીવો અવગાઢ હોય છે. "एव जहेव पुढवीकाइयाणं वत्तव्वया तहेव

वत्तव्वया तहेव सव्वेसिं निरवसेसं भाणियव्वं' एवं पूर्वोक्तरीत्या, यथैव पृथिवीकायिकानां वक्तव्यता उक्ता तथैव सर्वेषामप्कायिकादीनां चतुर्णामपि वक्तव्यत्वं निरवशेषं सर्वं भणितव्यम्, तदाह-'जाव वणस्सइकाइयाणं, जाव केवइया वणस्सइकाइया ओगाढा ? अणंता' यावत्-तेजस्कायिकानां, वायुकायिकानां वनस्पतिकायिकानां वक्तव्यता पृथिवीकायिकवदेव स्वयमूहनीया, यावत्-तेषां प्रत्येकं पञ्च पञ्च पृथिवीकायिकादिभिरभिलापा अवसेयाः, तत्रान्तिमाभिलापस्वरूपमाह-तत्र कियन्तो वनस्पतिकायिका जीवा अवगाढा भवन्ति ? इति प्रश्नाभिलापः, उत्तराभिलापस्तु-तत्र अनन्ता वनस्पतिकायिका अवगाढा भवन्ति इति भावः ॥ सू० ११ ॥

वत्तव्वया तहेव सव्वेसिं निरवसेसं भाणियव्वं' पूर्वोक्त रीति से जैसी वक्तव्यता पृथिवीकायिक जीवों की कही गई है उसी प्रकार की वक्तव्यता सम्पूर्णरूप से समस्त अप्कायिकादि चारों जीवों से सम्बन्ध में भी कहनी चाहिये। इसी बात को स्पष्ट करने के लिये सूत्रकार 'जाव वणस्सइकाइयाणं, जाव केवइया वणस्सइकाइया ओगाढा' अणंता' इस सूत्र को प्रश्नोत्तर के रूप में प्रकट करते हैं-इसमें वे कहते हैं कि यावत् तेजस्कायिक, वायुकायिक, वनस्पतिकायिक इन जीवों की वक्तव्यता पृथिवीकायिक जीवों के जैसी ही है यह बात अपने आप समझना चाहिये, यावत् इसके प्रत्येक के पांच पांच अभिलाप पृथिवीकायिक जीवोंके जैसे ही हैं-अन्तिम अभिलाप इस प्रकार से है-हे भदन्त ! जहां पर वनस्पतिकायिक एक जीव अवगाढ होता है-वहां

सव्वेसिं निरवसेसं भाणियव्वं" પહેલાં જેવી વક્તવ્યતા પૃથ્વીકાયિક જીવોની કહી છે, એજ પ્રકારની વક્તવ્યતા સંપૂર્ણ રૂપે અપ્કાયિકાદિ ચારે પ્રકારના જીવો વિષે કહેવી જોઇએ એજ વાતને વધુ સ્પષ્ટ કરવા માટે સૂત્રકાર "जाव वणस्सइकाइयाणं, जाव केवइया वणस्सइकाइया ओगाढा अणंता" આ સૂત્રને પ્રશ્નોત્તર રૂપે પ્રકટ કરે છે-તેમાં તેઓ કહે છે કે અપ્કાયિક, તેજસ્કાયિક, વાયુકાયિક અને વનસ્પતિકાયિકની વક્તવ્યતા પૃથ્વીકાયિક જીવોની વક્તવ્યતા જેવી જ છે, તે વાત જાતે જ સમજી લેવી તે પ્રત્યેકના પાંચ પાંચ પ્રશ્નોત્તરો પૃથ્વીકાયિકના પ્રશ્નોત્તરો જેવાં જ સમજી લેવા છેલ્લો અભિલાપ આ પ્રકારનો છે—

પ્રશ્ન-હે ભગવન્! જે સ્થાન પર એક વનસ્પતિકાયિક જીવ અવગાઢ હોય છે, તે સ્થાન પર કેટલા વનસ્પતિકાયિક જીવો અવગાઢ હોય છે ?

अस्तिकायप्रदेशनिषदनद्वारवक्तव्यताप्रस्तावः

मूलम्—"एयंसि णं भंते! धम्मत्थिकायंसि, अहम्मत्थिकायंसि, आगासत्थिकायंसि, चक्किया केई आसइत्तए वा, चिट्ठित्तए वा, निसीइत्तए वा, तुयट्टित्तए वा? णो इणट्ठे समट्ठे, अणंता पुण तत्थ जीवा ओगाढा। से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ—एयंसि णं धम्मत्थिकायंसि जाव आगासत्थिकायंसि णो चक्किया केई आसइत्तए वा, जाव ओगाढा? गोयमा! से जहा नामए कूडागारसाला सिया दुहओ लित्ता गुत्ता गुत्तदुवारा जहा रायप्पसेणइज्जे जाव दुवारवयणाइं पिहेइ, पिहित्ता तीसे कूडागारसालाए बहुमज्झदेसभाए जहण्णेणं एक्को वा, दोवा, तिन्नि वा, उक्कोसेणं पदीवसहस्सं पलीवेज्जा, से णूणं गोयमा! ताओ पदीवलेस्साओ अन्नमन्नसंबद्धाओ अन्नमन्नपुट्ठाओ जाव अन्नमन्नघडत्ताए चिट्ठंति? हंता, चिट्ठंति, चक्किया णं गोयमा! केई तासु पदीवलेस्सासु आसइत्तए वा, जाव तुयट्टित्तए वा? भगवं! णो इणट्ठे समट्ठे, अणंता पुण तत्थ जीवा ओगाढा, से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ—जाव ओगाढा ॥सू० १२॥

छाया—एतस्मिन् खलु भदन्त ! धर्मास्तिकाये, अधर्मास्तिकाये, आकाशास्तिकाये शक्नुयात् कश्चित् आसितुं वा स्थातुं वा, निषत्तुं वा, त्वग्वर्तयितुं वा?

पर कितने वनस्पतिकायिक जीव अवगाढ होते हैं? उत्तर में प्रभु कहते हैं—हे गौतम! वहां पर अनन्त वनस्पतिकायिक जीव अवगाढ होते हैं सू० ॥ १२ ॥ इति जीवावगाढद्वारवक्तव्यता ॥

ઉત્તર-હે ગૌતમ! તે સ્થાન પર અનંત વનસ્પતિકાયિક જીવો અવગાઢ હોય છે. ॥ સૂ૦૧૨॥

॥ જીવાવગાઢદ્વાર વક્તવ્યતા સમાપ્ત ॥

नायमर्थः समर्थः, अनन्ताः पुनस्तत्र जीवा अवगाढाः, तत् केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते–एतस्मिन् खलु धर्मास्तिकाये, यावत् आकाशास्तिकाये नो शक्नुयात् कश्चित् आसितुं वा, यावत् अवगाढाः ? गौतम ! तद्यथानामकूटाकारशाला स्यात् उभयतो लिप्ता, गुप्ता, गुप्तद्वारा, यथा राजप्रश्नीये यावत् द्वारकपाटानि पिधत्ते, पिधाय, तस्याः कूटाकारशालायाः बहुमध्यदेशभागे जघन्येन एको वा, द्वौ वा, त्रयो वा, उत्कृष्टेन सहस्रं मदीपयेत्, तत् नूनं गौतम ! ताः मदीपलेश्याः अन्योन्यसंबद्धाः, अन्योन्यस्पृष्टाः यावत् अन्योन्य घटतया तिष्ठन्ति ? हन्त, तिष्ठन्ति ? शक्नुयात् खलु गौतम ! कश्चित् तासु मदीपलेश्यासु आसितुं वा, यावत् त्वग्वर्तयितुं वा ? भगवन् नायमर्थः समर्थः, अनन्ताः पुनस्तत्र जीवा अवगाढाः, तत् तेनार्थेन गौतम ! एवमुच्यते यावत् अवगाढाः ॥ सू० १२॥

टीका—अथ एकादशम् अस्तिकायप्रदेशनिषदनद्वारमाह–' एयंसि णं भंते ' इत्यादि । ' एयंसि णं भंते ! धम्मत्थिकायंसि, अहम्मत्थिकायंसि, आगासत्थिकायंसि चक्किया केइ आसइत्तए वा, चिट्ठित्तए वा. निसीइत्तए वा, तुयट्टित्तएवा ?' गौतमः पृच्छति–हे भदन्त ! एतस्मिन् खलु धर्मास्तिकाये अधर्मास्तिकाये, आकाशास्तिकाये किं शक्नुयात् समर्थो भवेत् कश्चित्पुरुषः आसितु वा–उपवेष्टुंवा, स्थातुं वा, निषत्तुं वा

अस्तिकायप्रदेशनिषदनद्वारवक्तव्यता—

'एयंसि णं भंते ! धम्मत्थिकायंसि' इत्यादि ।

टीकार्थ–सूत्रकारने इस सूत्रद्वारा ग्यारहवें अस्तिकायप्रदेशनिषदन द्वार का कथन किया है–इसमें गौतमस्वामीने प्रभु से ऐसा पूछा है–'एयंसि णं भंते ! धम्मत्थिकायंसि, अहम्मत्थिकायंसि आगासत्थिकायंसि चक्कियाकेई आसइत्तए वा चिट्ठित्तए वा, निसीइत्तए वा, तुयट्टित्तए वा' हे भदन्त ! इस धर्मास्तिकाय में, अधर्मास्तिकाय में आकाशास्तिकाय, में क्या कोई पुरुष, बैठने के लिये, खडा रहने के लिये, या करवट बदलने के

—અસ્તિકાય પ્રદેશ નિષદન દ્વાર વક્તવ્યતા—

' एयंसि णं भंते ! धम्मत्थिकायंसि " ઇત્યાદિ—

'ટીકાર્થ'– સૂત્રકારે આ સૂત્ર દ્વારા અગિયારમાં અસ્તિકાયપ્રદેશનિષદન દ્વારનું કથન કર્યું' છે–આ વિષયને અનુલક્ષીને ગૌતમ સ્વામી મહાવીર પ્રભુને એવો પ્રશ્ન પૂછે છે કે–" एयंसि णं भंते ! धम्मत्थिकायंसि, अहम्मत्थिकायंसि, आगासत्थिकायंसि चक्कियाकेई आसइत्तएवा, निसीइत्तएवा, तुयट्टित्तएवा " હે ભગવન્ ! આ ધર્માસ્તિકાયમાં, અધર્માસ્તિકાયમાં અને આકાશાસ્તિકાયમાં, શું કોઇ પુરુષ બેસવાને, ઉઠવાને, નીચે બેસવાને 'અથવા પડખું બદલવાને–સૂવાને " चक्किया " સમર્થ' હોઇ શકે છે ખરો ? (" चक्किया " ગામડી શબ્દ છે.)

अयः उपवेष्टु वा, त्वग्वर्तयितुं-आकोटितुं वा? इति प्रश्नः, तत्र 'चक्किया' इति 'शक्नुयात्' इत्यर्थे देशीयः शब्दो बोध्यः, भगवानाह-'णो इणट्ठे समट्ठे?' हे गौतम! नायमर्थः समर्थः-धर्मास्तिकायादित्रये कश्चिदपि पुरुषः उपवेशनादिकं यावत् त्वग्वर्तनं कर्तुं समर्थो नास्ति तेषु अमूर्त्तत्वात्, किन्तु 'अणंता पुण तत्थ जीवा ओगाढा' तत्र धर्मास्तिकायादौ, अनन्ताः पुनर्जीवा अवगाढा भवन्ति। गौतम स्तत्र कारणं पृच्छति-'से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ-एयंसि णं धम्मत्थिकायंसि जाव आगासत्थिकायंसि णो चक्किया केई आसइत्तए वा, जाव ओगाढा?' हे भदन्त! तत्केनार्थेन एवमुच्यते-एतस्मिन् खलु धर्मास्तिकाये यावत्-अधर्मास्तिकाये, आकाशास्तिकाये नो शक्नुयात् कश्चित्पुरुषः आसितुं वा, यावत् स्थातुं वा, निषत्तुं वा, त्वग्वर्तयितुं वा, अनन्ताः पुनस्तत्र जीवा अवगाढा इति? भगवानाह-'गोयमा!

लिये-लेटने के लिये 'चक्किया' समर्थ हो सकता है? 'चक्किया' यह देशीय शब्द है। उत्तर में प्रभु कहते हैं-'णो इणट्ठे समट्ठे' हे गौतम! यह अर्थ समर्थ नहीं है-अर्थात् धर्मास्तिकायादिक में कोई भी पुरुष उपवेशनादिक क्रिया करने में समर्थ नहीं हो सकता है क्योंकि ये धर्मास्तिकायादिक अमूर्तद्रव्य हैं। पर 'अणंता पुण तत्थ जीवा ओगाढा' अनन्त जीव वहाँ अवगाढ होते हैं। अब गौतमस्वामी प्रभु से ऐसा पूछते हैं-'से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ, एयंसि णं धम्मत्थिकायंसि जाव आगासत्थिकायंसि णो चक्कियाकेई आसइत्तए वा जाव ओगाढा' हे भदन्त! ऐसा आप किस कारण से कहते हैं कि धर्मास्तिकायादिक तीन में कोई भी पुरुष उपवेशनादि क्रिया कर सकने में समर्थ नहीं होता है। पर अनन्त जीव वहां अवगाढ हैं? इसके उत्तर में प्रभु

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-" णो इणट्ठे समट्ठे " હે ગૌતમ! એવું બની શકતું નથી એટલે કે ધર્માસ્તિકાયાદિકમાં કોઈ પણ પુરુષ બેસવા, ઉઠવાદિ ક્રિયાઓ કરવાને સમર્થ નથી, કારણ કે ધર્માસ્તિકાયાદિક ૩ એ અમૂર્ત છે. પરન્તુ "अणंता पुण तत्थ जीवा ओगाढा" અનંત જીવો ત્યાં અવગાઢ (સ્થિત) હોય છે.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-' से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ, एयंसि णं धम्मत्थिकायंसि जाव आगासत्थिकायंसि णो चक्किया केई आसइत्तए वा जाव ओगाढा " હે ભગવન્! આપ શા કારણે એવું કહો છો કે ધર્માસ્તિકાયાદિક ત્રણમાં કોઈ પણ પુરુષ ઉપવેશન આદિ ક્રિયાઓ કરવાને સમર્થ નથી પરન્તુ અનંત જીવો ત્યાં અવગાઢ છે?

से जहा नामए-कूडागारसाला सिया दुहओ लित्ता गुत्ता गुत्तदुवारा, जहा रायप्पसेणइज्जे जाव दुवारवयणाइं पिहेइ' हे गौतम ! तद्यथा नाम इति-वाक्यालङ्कारे, काचित् कूटाकारशाला-पर्वत शिखराकारशाला स्यात् भवेत् उभयतः-आभ्यन्तरतो बाह्यतश्च लिप्ता-गोमयमृत्तिकादिना, गुप्ता चतुर्दिक्षु आच्छादिता, गुप्तद्वारा-गुप्तं-पिहितं, द्वारं-गवाक्षादिकं यस्या सा तथाविधा यथा राजप्रश्नीये प्रतिपादिता तथैवात्रापि प्रतिपादनीया, यावत्-तस्यास्तादृशविशेषविशिष्टायाः कूटाकारशालायाः द्वारकपाटान् कश्चित् पिधत्ते-आवृणोति, तत्प्रवेशद्वारकपाटान् संघटयतीत्यर्थः 'पिहित्ता तीसे कूडागारसालाए बहुमज्झदेसभाए, जहन्नेणं एक्को वा, दो वा, तिन्नि वा, उक्कोसेणं पदीवसहस्सं पलीवेज्जा' तस्याः कूडागारशालायाः द्वारकपाटान् पिधाय तस्याः कूटाकारशालाया बहुमध्यदेशभागे-सममध्यप्रदेशे,

---

कहते हैं-'गोयमा ! से जहा नामए कूडागारसाला सिया' हे गौतम ! कल्पना करो कि कोई एक पर्वत के शिखर जैसी अकारवाली कूटागार शाला हो, यहां "नाम" यह पद वाक्यालङ्कार में प्रयुक्त हुआ है। 'दुहओ लित्ता, गुत्ता, गुत्तदुवारा, जहा रायप्पसेणइज्जे, जाव दुवारवयणाइं पिहेइ' वह कूटागारशाला भीतर बाहर दोनों जगह में गोमय आदि से लिप्त हो, चारों दिशाओं में आच्छादित हो, इसके गवाक्ष आदि दरवाजे बन्द हों-इस विषय में जैसा कथन राजप्रश्नीय सूत्र में आया है-वैसा ही कथन यहां पर इसका करना चाहिये ऐसे विशेषणों वाली उस कूटागारशाला का प्रवेशद्वार कोई व्यक्ति बन्द कर दे 'पिहित्ता तीसे कूडागारसालाए बहुमज्झदेसभाए जहन्नेणं एक्को वा, दो वा, तिन्नि वा, उक्कोसेणं पदीवसहस्सं पलीवेज्जा' और बन्द करके वह उसके भीतर मध्यभाग में कम से कम एक दीपक, दो दीपक, तीन

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-" गोयमा ! से जहा नामए कूडागारसाला सिया" હે ગૌતમ ! ધારો કે કોઇ એક પર્વતના શિખર જેવા આકારની કૂટાગારશાલા છે. અહીં "नाम" આ પદ વાકયાલંકારમાં વપરાયું છે "दुहओ लित्ता, गुत्ता, गुत्तदुवारा, जहा रायप्पसेणइज्जे जाव दुवारवयणाइं पिहेइ" હે ગૌતમ ! તે કૂટાગારશાલા અંદર અને બહાર છાણ આદિ વડે લીપેલી છે, ચારે દિશાઓમાં આચ્છાદિત છે, તેનાં ગવાક્ષ, દરવાજા આદિ બંધ છે આ વિષયને અનુલક્ષીને જેવું કથન રાજપ્રશ્નીય સૂત્રમાં કરવામાં આવ્યું છે, એવું જ તેનું વર્ણન અહીં પણ કરવું જોઈએ. આ વિશેષણોવાળી કૂટાગારશાલાનું પ્રવેશદ્વાર કોઇ વ્યકિત બંધ કરી દે. " पिहित्ता तीसे कूडागारसालाए बहुमज्झदेसभाए जहन्नेणं एक्को वा, दो वा, तिन्नि वा, उक्कोसेणं पदीवसहस्सं

जघन्येन एको वा, द्वौ वा, त्रयो वा प्रदीपाः प्रदीप्येरन्-प्रज्वालयेरन्. उत्कृष्टेन तु प्रदीपसहस्रं-सहस्रप्रदीपाः प्रदीप्येरन् 'से णूणं गोयमा! ताओ पदीवलेस्साओ अन्नमन्नसंवद्धाओ, अन्नमन्नपुट्ठाओ जाव अन्नमन्नघडत्ताए चिट्ठंति?' हे गौतम! तत् अस्ति, नूनं किल ताः पूर्वोक्तसहस्राधिकप्रदीपलेश्याः प्रदीपतेजःशिखाः, अन्योन्यसम्बद्धाः-परस्परसंसक्ताः अन्योन्यसंस्पृष्टाः परस्परस्पर्शवत्या यावत् अन्योन्यसम्बद्धस्पृष्टाः अन्योन्यघटतया-परस्परैक्यरूपतया तिष्ठन्ति किम्?। गौतमः समर्थयते-'हंता, चिट्ठंति' हे भदन्त! हन्त-सत्यम्, ताः पूर्वोक्ताः प्रदीपलेश्याः परस्परसम्बद्धाः सत्यो यावत् परस्परैक्यमिलितरूपतया तिष्ठन्ति। भगवान् पृच्छति-'चक्किया णं गोयमा! केई तासु पदीवलेस्सासु आसइत्तए वा, जाव तुयट्टित्तए वा?' हे गौतम! शक्नुयात् समर्थो भवेत् खलु किम्, कश्चित् पुरुष स्तासु पूर्वोक्तासु प्रदीपलेश्यासु प्रदीपप्रकाशोपरि आसितुं वा-उपवेष्टु वा, शयितुं वा, स्थातु वा, निषत्तुं वा, त्वग्वर्तयितुं वा? गौतम

दीपक और अधिक से अधिक एक हजार दीपक तक जला देवे 'से णूणं गोयमा! ताओ पदीवलेस्साओ अन्नमन्नं संवद्धाओ अन्नमन्नपुट्ठाओ जाव अन्नमन्नघडत्ताए चिट्ठंति' तो हे गौतम! अब विचार करो-उन हजार दीपकों की प्रभा आपस में संसक्त होकर, आपस में एक दूसरे की प्रभा को छूकर यावत् आपस में सम्बद्ध स्पृष्ट होकर परस्पर में एक रूप होकर रहती है न? गौतम कहते हैं 'हंता, चिट्ठंति' हां भदन्त! वे इसी प्रकार से वहां रहती हैं तो 'चक्किया णं गोयमा! केई तासु पदीवलेस्सासु आसइत्तए वा जाव तुयट्टित्तए वा' क्या गौतम! उन प्रदीप प्रभाओं के ऊपर कोई व्यक्ति बैठने के लिए, खड़ा रहने के लिए, नीचे बैठने के लिए या अपना करवट बदलने के लिए समर्थ हो

પલીવેજ્જા" બંધકરીને, તે તેની અંદર મધ્યભાગમાં ઓછામાં ઓછા એક, બે અથવા ત્રણ દીપક અને વધારેમાં વધારે એક હજાર દીપક પ્રકટાવે. "से णूणं गोयमा! ताओ पदीवलेस्साओ अन्नमन्नं संवद्धाओ अन्नमन्न पुट्ठाओ जाव अन्नमन्न घडत्ताए चिट्ठंति" तो હે ગૌતમ! હવે વિચાર કરો શું તે હજાર દીપકોની પ્રભા પરસ્પરમાં સંસકત થઈને, પરસ્પરની પ્રભાને સ્પર્શીને, અને એક બીજીમાં સંબદ્ધ-સ્પૃષ્ટ થઈને પરસ્પરમાં એક રૂપ થઈને રહે છે કે નહીં?

ગૌતમ સ્વામીનો ઉત્તર-"हंता, चिट्ठंति" હા, ભગવન્! એવું જ ત્યાં બને છે. તે દીપકોની પ્રભા એક બીજા સાથે એક રૂપ થઈને જ રહે છે.

મહાવીર પ્રભુનો પ્રશ્ન-"चक्किया णं गोयमा! केई तासु पदीवलेस्सासु आसइत्तए वा जाव तुयट्टित्तएवा" હે ગૌતમ! તે પ્રદીપપ્રભાઓની ઉપર શું કોઈ વ્યકિત બેસવાને, ઊભા રહેવાને, નીચે બેસવાને અથવા પોતાનું પડખું બદલવાને સમર્થ હોય છે ખરી?

आह-'भगव ! णो इणट्ठे समट्ठे' हे भगवन्! नायमर्थः समर्थः नैवं भवितुमर्हति, भगवानाह -'अणंता पुण तत्थ जीवा ओगाढा' किन्तु हे गौतम! अनन्ताः पुनस्तत्र सहस्रप्रदीपलेश्यासु-प्रदीपप्रकाशेषु जीवा अवगाढा भवन्ति, प्रकृतमुपसंहरन्नाह-'से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ-जाव ओगाढा' हे गौतम! तत् तेनार्थेन, एवमुच्यते यत्-त्वम्-एतस्मिन् धर्मास्तिकायादित्रये नो कश्चित् पुरुषः आसितुं वा, स्थातुं वा, निषत्तुं वा, त्वग्वर्तयितुं वा शक्नुयात् किन्तु अनन्ताः पुनस्तत्र जीवा अवगाढा भवन्ति ॥सू० १२॥

बहुसमद्वार वक्तव्यताप्रस्तावः

मूलम्-कहि णं भंते! लोए बहुसमे? कहिणं भंते! लोए सव्वविग्गहिए पण्णत्ते? गोयमा! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उवरिमहेट्ठिल्लेसु खुड्डागपयरेसु, एत्थ णं लोए बहुसमे, एत्थ णं

सकता है? इस पर गौतम कहते हैं-'भगवं! णो इणट्ठे समट्ठे' हे भदन्त! यह अर्थ समर्थ नहीं है-अर्थात् ऐसा नहीं हो सकता है। तब प्रभु कहते है 'अणंता पुण तत्थ ओगाढा' परन्तु वहां अनन्त जीव अवगाढ होते हैं। 'से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ जाव ओगाढा' इस कारण हे गौतम! मैंने ऐसा कहा है कि इस धर्मास्तिकायादिकत्रिक में कोई पुरुष न बैठ सकता है, न उठ सकता है, न खड़ा रह सकता है, और न करवट बदल सकता है। क्योंकि ये तीनों ही द्रव्य अमूर्त हैं। पर ऐसा होने पर भी अनन्त जीव इनमें अवगाढ होते हैं ॥सू० १२॥

॥ इति अस्तिकायप्रदेशनिषदनद्वार वक्तव्यता ॥

ગૌતમ સ્વામીનો ઉત્તર-" भगव ! णो इणट्ठे समट्ठे " હે ભગવન્! એવું સંભવી શકતું નથી. ત્યારે મહાવીર પ્રભુ કહે છે-" अणंता पुण तत्थ ओगाढा " પરન્તુ ત્યાં અનંત જીવો અવગાઢ હોય છે " से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ जाव ओगाढा " હે ગૌતમ ! તે કારણે મેં એવું કહ્યું છે કે આ ધર્માસ્તિકાય આદિ ત્રણ દ્રવ્યોમાં કોઇ પણ પુરુષ બેસી શકતો નથી ઉભો રહી શકતો નથી, ઊભો રહી શકતો નથી અને પડખું બદલી શકતો નથી કારણ કે તે ત્રણે દ્રવ્યો અમૂર્ત છે એવું હોવા છતાં પણ અનંત જીવો તેમાં અવગાઢ (સ્થિત) છે ॥સૂ૦૧૨॥

लोए सव्वविग्गहिए पण्णत्ते, कहिणं भंते! विग्गहविग्गहिए लोए पण्णत्ते? गोयमा! विग्गहकंडए, एत्थणं विग्गहविग्गहिए लोए पण्णत्ते ॥सू० १३॥

छाया—कुत्र खलु भदन्त! लोको बहुसमः? कुत्र खलु भदन्त! लोकः सर्वविग्रहिकः प्रज्ञप्तः? गौतम! अस्या रत्नप्रभायाः पृथिव्याः उपरिमान्तिमयोः क्षुल्लकप्रतरयोः, अत्र खलु लोको बहुसमः, अत्र खलु लोकः सर्वविग्रहिकः प्रज्ञप्तः, कुत्र खलु भदन्त! विग्रहविग्रहिको लोकः प्रज्ञप्तः? गौतम! विग्रहकण्डके अत्र खलु विग्रहविग्रहिको लोकः प्रज्ञप्तः ॥सू० १३॥

टीका—अथ द्वादशं लोकस्य बहुसमद्वारमाह-'कहिणं भंते! लोए' इत्यादि। 'कहिणं भंते! लोए बहुसमे? कहिणं भंते! लोए सव्वविग्गहिए पण्णत्ते?' गौतमः पृच्छति-हे भदन्त! कुत्र खलु स्थाने लोकः बहुसमः-अत्यन्तसमभागः प्रज्ञप्तः? लोकः क्वचिद् वर्धमानः, क्वचिद्धीयमानो भवति अतस्तयोः प्रतिषेधात् बहुसमः प्रदेशस्य वृद्धिहानिरहितः क वर्तते इतिभावः, अथ च हे भदन्त! कुत्र खलु स्थाने लोकः सर्वविग्रहिकः-विग्रहः-वक्रम् अस्यास्तीति विग्रहिकः सर्वथा

बहुसमद्वारवक्तव्यता—

'कहिणं भंते! लोए बहुसमे' इत्यादि।

टीकार्थ—इस सूत्र द्वारा सूत्रकार ने लोक का बहुसम द्वार कहा है-इसमें गौतम स्वामी ने प्रभु से ऐसा पूछा है-'कहिणं भंते! लोए बहुसमे, कहिणं भंते! लोए सव्वविग्गहिए पण्णत्ते' किस स्थान पर लोक अत्यन्त समभाग वाला कहा गया है? अर्थात् लोक की कहीं वृद्धि हुई है, कहीं हानि हुई है-सो इन दोनों के प्रतिषेध से प्रदेश की हानिवृद्धि से रहित ऐसा बहुसमभाग लोक कहां कहा गया है? वह

—બહુસમદ્વાર વક્તવ્યતા—

"कहिणं भंते! लोए बहुसमे" इत्यादि—

ટીકાર્થ-સૂત્રકારે આ સૂત્ર દ્વારા લોકના બહુસમદ્વારનું નિરૂપણ કર્યું છે-ગૌતમ સ્વામી મહાવીર પ્રભુને એવો પ્રશ્ન પૂછે છે કે-"कहिणं भंते! लोए बहुसमे, कहिण भंते! लोए सव्वविग्गहिए पण्णत्ते?" હે ભગવન્! કયા સ્થાને લોક અત્યન્ત સમભાગવાળો કહ્યો છે? એટલે કે લોકની કોઇ સ્થાને વૃદ્ધિ થઈ છે, કોઈ સ્થાને હાનિ થઇ છે, પરન્તુ તે બન્નેથી રહિત-પ્રદેશની હાનિવૃદ્ધિથી રહિત એવો બહુસમભાગયુકત લોક કયા સ્થાનમાં કહ્યો છે?

विग्रहिकः सर्वविग्रहिकः सर्वथा संक्षिप्तः अत्यन्तसंकीर्ण इत्यर्थः, गङ्गम ! भगवानाह· 'गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उवरिमहेट्ठिल्लेसु खुड्डागपयरेसु. एत्थणं लोए बहुसमे, एत्थणं लोए सव्वविग्गहिए पण्णत्ते' गौतम ! अस्या रत्नप्रभायाः पृथिव्याः उपरिमाधस्तनयोः उपरिमोयमवधीकृत्योर्ध्वं प्रतरवृद्धिः प्रवृत्ता, अधस्तनञ्च यमवधीकृत्याधः प्रतरवृद्धिः प्रवृत्ता तयोरुपरितनाधस्तनयोः क्षुल्लक प्रतरयोः शेषापेक्षया लघुतरयोः रज्जुप्रमाणायामविष्कम्भयोस्तिर्यग्लोकमध्यभाग वर्तिनो, अत्र खलु-एतयोः किल प्रज्ञापकेनोपदर्श्यमानेतया प्रत्यक्षीभूतयोः लोको बहुसमः अत्यन्तसमभागः, प्रज्ञप्तः, अत्र खलु एतयोः लोकः सर्वविग्रहिकः

कहां पर है ? तथा-हे भदन्त किस स्थान पर लोक सर्वविग्रहिक हैं ? विग्रह-वक्रता जिसमें है वह विग्रहिक है, सर्वथा विग्रहिक जो है वह सर्वविग्रहिक है। इसका अर्थ होता है सर्वथा संक्षिप्त अर्थात् अत्यन्त संकीर्ण ऐसा अत्यन्त संकीर्ण लोकभाग कहां पर है ? उत्तर में प्रभु कहते हैं-'गोयमा' हे गौतम ! 'इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उवरिमहेट्ठिल्लेसु खुड्डागपयरेसु, एत्थणं लोए बहुसमे, एत्थणं लोए सव्वविग्गहिए पण्णत्ते' इस रत्नप्रभा पृथिवी के उपरिम अधस्तन जो—शेष प्रतरों की अपेक्षा लघुतरप्रतर हैं कि जिनकी चौडाई १ राजुप्रमाण की है एवं जो तिर्यग्लोक के मध्यभागवर्ती हैं, तथा उपरिम लघुप्रतर से लेकर ऊर्ध्व में प्रतरवृद्धि होती है और अधस्तन प्रतर से लेकर अधः प्रतरवृद्धि होती है, उन लघुतर उपरिम, अधस्तन प्रतरों में लोक का अत्यन्त सम भाग

तथा हे भगवन्! क्या स्थाने लोक सर्वविग्रहिक छे ? जेमां विग्रह (वक्रता) छे तेनुं नाम विग्रहिक छे जे तद्दन विग्रहिक होय छे तेने सर्वविग्रहिक कहे छे. तेनो अर्थ सर्वथा संक्षिप्त एटले के अत्यंत संकीर्ण थाय छे. एवो अत्यंत संकीर्ण लोकभाग क्या स्थाने छे ?

महावीर प्रभुनो उत्तर-"गोयमा !" हे गौतम ! "इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उवरिमहेट्ठिल्लेसु खुड्डागपयरेसु. एत्थणं लोए बहुसमे, एत्थणं लोए सव्वविग्गहिए पण्णत्ते" आ रत्नप्रभा पृथ्वीना उपरिम (उपरना) अधस्तन (नीचेना) प्रतरो के जे बाकीना प्रतरो करतां लघुतर छे, जेमनी पहोळाई एक राजूप्रमाण छे अने जे तिर्यग्लोकनो मध्यवर्ती भाग छे, तथा जे उपरिम लघुतर प्रदेशथी लईने ऊर्ध्वमां प्रतरवृद्धि थाय छे अने अधस्तन प्रतरथी लईने अधोभागमा प्रतरवृद्धि थाय छे, ते लघुतर उपरिम, अधस्तन प्रतरोमां लोकनो अत्यन्त समभाग कहो छे. तथा तेमनी अंदर ज लोकनो सर्वविग्रहिक-अत्यंत संकीर्ण लोकभाग कहो छे,

प्रज्ञप्तः, गौतमः पृच्छति–' कहिणं भंते ! विग्गहविग्गहिए लोए पण्णत्ते ?' हे भदन्त ! कुत्र खलु स्थाने विग्रहविग्रहिकः–विग्रहो–वक्रं तद्युक्तो विग्रहः–शरीरं यस्यास्ति असौ विग्रहविग्रहिकः लोकरूपशरीरस्य वक्रतायुक्त भागः कुत्र प्रज्ञप्तः ? भगवानाह–' गोयमा ! विग्गहकंडए, एत्थ णं विग्गहविग्गहिए लोए पण्णत्ते.' हे गौतम ! विग्रहकण्डके–विग्रहो वक्रं कण्डकम् अवयवो विग्रहरूपं कण्डकं विग्रह कण्डकं तस्मिन् ब्रह्मदेवलोककूर्परे इत्यर्थः दस्तकोणी इति प्रसिद्धं तथा च लोक रूप शरीरस्य ब्रह्मदेवलोककूर्परभागोऽस्ति यत्र वा प्रदेशस्य वृद्धिलहान्या वा वक्रः अवयवो भवति तद् विग्रहकण्डकं तच्च प्रायो लोकान्तेष्वस्तीति भावः। अत्र खलु विग्रहकण्डके विग्रहविग्रहिको लोकः प्रज्ञप्तः इति भावः ॥ सू० १३ ॥

कहा गया है। तथा इन्हीं में लोक को सर्वविग्रहिक कहा गया है। अब गौतमस्वामी प्रभु से ऐसा पूछते हैं–'कहि णं भंते ! विग्गह विग्गहिए लोए पण्णत्ते' हे भदन्त ! लोकरूप शरीर का वक्रतायुक्त भाग कहां पर कहा गया है। और विग्रह नाम शरीर का भी है। वक्रतायुक्त है विग्रह जिसका वह विग्रह विग्रहिक है उत्तर में प्रभु कहते हैं–'गोयमा' हे गौतम ! विग्गहकंडए–एत्थ णं विग्गहविग्गहिए लोए पण्णत्ते' विग्रह–वक्र जो कण्डक–अवयव है वह विग्रहकण्डक है अर्थात् विग्रहरूप जो कण्डक है वह विग्रहकण्डक है। उस विग्रहकण्डक में–ब्रह्मदेवलोक में–यह ब्रह्मदेवलोक, लोकरूप शरीर की कुहनी जैसा भाग है, यहां प्रदेश की हानी और वृद्धि से वक्र अवयव होता है–विग्रह-विग्रहिक लोक कहा गया है। यह विग्रहकण्डक प्रायःलोकान्त में है। अर्थात् जहां पर विग्रहकण्डक है, वहां लोकरूप शरीर वक्रतायुक्त है। सू० १३ ॥

इति बहु समद्वारवक्तव्यता ॥

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન–" कहिणं भंते ! विग्गहविग्गहिए लोए पण्णत्ते ?" હે ભગવન્ ! લોક રૂપ શરીરનો વક્રતાયુકત ભાગ કયા સ્થાને કહ્યો છે ? 'વિગ્રહ' પદ વક્રના અર્થમાં પણ વપરાય છે અને શરીરના અર્થમાં પણ વપરાય છે. વક્રતાયુકત છે વિગ્રહ જેનો તેને વિગ્રહવિગ્રહિક કહે છે

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર–" गोयमा ! " હે ગૌતમ ! विग्गहकंडए–एत्थ ण विग्गहविग्गहिए लोए पण्णत्ते " વિગ્રહ (વક્ર) જે કંડક છે–તેને વિગ્રહકંડક કહે છે એટલે કે વિગ્રહરૂપ જે કંડક છે તેને વિગ્રહકંડક કહે છે તે વિગ્રહકંડકમાં–બ્રહ્મદેવલોકમાં (તે બ્રહ્મદેવલોક લોક રૂપ શરીરની કોણી જેવો ભાગ છે અહીં પ્રદેશની હાનિ અને વૃદ્ધિથી વક્ર અવયવ થાય છે) વિગ્રહ-વિગ્રહિક લોક કહ્યો છે. આ વિગ્રહકંડક પ્રાય. લોકાન્તમાં છે. એટલે કે જ્યાં વિગ્રહકંડક છે, ત્યાં લો.રૂપ શરીર વક્રતાયુક્ત છે. ॥સૂ૦૧૩॥

लोकसंस्थानद्वारवक्तव्यता।

मूलम्–"किंसंठिए णं भंते! लोए पण्णत्ते? गोयमा! सुपइट्ठिय संठिए लोए पण्णत्ते, हेट्ठा विच्छिन्ने, मज्झे जहा सत्तमसए पढमुद्देसे जाव अंतं करेंति, एयस्स णं भंते! अहे लोगस्स तिरियलोगस्स उड्ढलोगस्स य कयरे कयरे हिंतो जाव विसेसाहिया वा? गोयमा! सव्वत्थोवे तिरियलोए, उड्ढलोए असंखेज्जगुणे, अहेलोए विसेसाहिए, सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति ॥सू०१४॥

छाया—किं संस्थितः खलु भदन्त! लोकः प्रज्ञप्तः? गौतम! सुप्रतिष्ठिकसंस्थितो-लोकः प्रज्ञप्तः अधस्तनविस्तीर्णः, मध्ये यथा सप्तमशतके प्रथमोद्देशके यावत्–अन्तं कुर्वन्ति, एतस्य खलु भदन्त! अधोलोकस्य तिर्यग्लोकस्य, ऊर्ध्वलोकस्य च कतरे कतरेभ्यो यावत् विशेषाधिका वा? गौतम! सर्वस्तोकस्तिर्यग्लोकः, ऊर्ध्वलोकः असंख्येयगुणः, अधोलोको विशेषाधिकः, तदेवं भदन्त! तदेवं भदन्त! इति॥सू० १४॥

टीका—अथ त्रयोदशं लोकसंस्थानद्वारमाह–'किं संठिएणं भंते! लोए' इत्यादि। 'किं संठिए णं भंते! लोए पण्णत्ते?' हे भदन्त! किं संस्थितः किं संस्थितं–संस्थानम्–आकारो यस्य स किंसंस्थितः किमाकारः खलु लोकः प्रज्ञप्तः? भगवानाह–'गोयमा! सुपइट्ठियसंठिए लोए पण्णत्ते' हे गौतम!

लोकसंस्थान द्वारवक्तव्यता—

'किं संठिए णं भंते! लोए पण्णत्ते' इत्यादि।

टीकार्थ—सूत्रकार ने इस सूत्रद्वारा १३ वें लोकसंस्थान द्वार का प्ररूपण किया है–इसमें गौतमस्वामीने प्रभु से ऐसा पूछा है–'किं संठिए णं भंते! लोए पण्णत्ते' हे भदन्त! लोक का आकार कैसा कहा गया है? उत्तर में प्रभु कहते हैं–'गोयमा! सुपइट्ठियसंठिए लोए पण्णत्ते' हे गौतम!

—લોકસંસ્થાનદ્વાર વક્તવ્યતા—

"किं संठिए णं भंते! लोए पण्णत्ते" ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ-સૂત્રકારે આ સૂત્ર દ્વારા તેરમાં લોકસંસ્થાન દ્વારની પ્રરૂપણા કરી છે તેને અનુલક્ષીને ગૌતમ સ્વામી મહાવીર પ્રભુને એવો પ્રશ્ન પૂછે છે કે–"किं संठिए णं लोए पण्णत्ते" હે ભગવન્! લોકનો આકાર કેવો કહ્યો છે?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર–"गोयमा!" હે ગૌતમ! "सुपइट्ठियसंठिए लोए

सुप्रतिष्ठिकसंस्थितः-सुप्रतिष्ठितम् अधोमुखीकृताधः स्थापित शरावो परि ऊर्ध्वमुख स्थापितशरावः, तदिवसंस्थितमाकारो यस्य स तथाविधो लोकः प्रज्ञप्तः, 'हेट्ठा वित्थिन्ने, मज्झे जहा सत्तमसए पढमुद्देसे जाव अंतं करेंति' अधस्तात् विस्तीर्णः विशालः मध्ये संक्षिप्तः इत्यादिरीत्या यथा सप्तमशतके प्रथमोद्देशके प्रतिपादित स्तथैवात्रापि प्रतिपादनीयः, तत्प्रतिपादनावधिमाह-यावत्-सिध्यन्ति, बुध्यन्ते, मुच्यन्ते, सर्वदुःखानामन्तं कुर्वन्ति इत्येतत्पर्यन्तमित्यर्थः। अथाल्पबहुत्वं गौतमः पृच्छति-'एयस्स णं भंते! अहे लोगस्स तिरियलोगस्स, उड्ढलोगस्स य कयरे

लोक का आकार सुप्रतिष्ठक के आकार जैसा कहा गया है। नीचे मुख करके रखे शराव के ऊपर ऊर्ध्वमुख करके रखे गये शराव का जैसा आकार होता है-उसका नाम सुप्रतिष्ठक है। ऐसा ही आकार लोक का कहा गया है। 'हेट्ठा वित्थिन्ने, मज्झे जहा सत्तमसए पढमुद्देसे जाव अंतं करेंति' इस आकार में लोक नीचे विस्तीर्ण, मध्य में संक्षिप्त है, इत्यादि रीति से जैसा सप्तमशतक के प्रथम उद्देशक में प्रतिपादित किया गया है। उसी प्रकार से वह यहां पर भी प्रतिपादन करना चाहिये। यह प्रतिपादन कहां से यहां कहां तक का करना चाहिये। इसके लिये अवधिदिखाने के लिये सूत्रकार कहते हैं-'जाव अंतं करेंति' इस पाठ तक का प्रकरण लेकर यहां प्रतिपादन करना चाहिये। यहां यावत् शब्द से 'सिध्यन्ति, बुध्यन्ते, मुच्यन्ते, सर्वदुःखानाम्' इन पदों का संग्रह किया गया है। अब अल्प बहुत्व के विषय में गौतमस्वामी प्रभु से ऐसा पूछते हैं-'एयस्स णं भंते!

पण्णत्ते'' લોકનો આકાર સુપ્રતિષ્ઠિકના આકાર જેવો છે. ઊંધા રાખેલા એક શકોરા પર બીજા શકોરાને ઉર્ધ્વમુખ રાખીને જોડવાથી જેવો આકાર થાય છે, તેવા આકારને સુપ્રતિષ્ઠિક કહે છે એવો જ લોકનો આકાર કહ્યો છે. "हेट्ठा वित्थिन्ने, मज्झे जहा सत्तमसए पढमुद्देसे जाव अंतं करेंति" આ આકાર આ પ્રકારનો છે-નીચે લોક વિસ્તીર્ણ છે, મધ્યમાં સંક્ષિપ્ત છે, ઇત્યાદિ જેવું કથન સાતમાં શતકના પહેલા ઉદ્દેશામાં પ્રતિપાદિત કરવામાં આવ્યું છે, એજ પ્રમાણે અહીં પણ તેનું પ્રતિપાદન થવું જોઈએ તે પ્રતિપાદન કયાં સુધી કરવું જોઈએ તે હવે પ્રકટ કરવામાં આવે છે-"जाव अंतं करेंति" આ સૂત્રપાઠ પર્યન્તના કથનનું અહીં પ્રતિપાદન કરવું જોઈએ અહીં 'यावत्' પદ વડે "सिध्यन्ति, बुध्यन्ते, मुच्यन्ते, सर्वदुःखानाम्" આ પદોનો સંગ્રહ કરવામાં આવ્યો છે.

कयरे हिंतो जाव विसेसाहिया वा ?' हे भदन्त ! एतस्य खलु पूर्वोक्तस्य अधोलोकस्य तिर्यग्लोकस्य, ऊर्ध्वलोकस्य च मध्ये कतरे लोकाः कतरेभ्यो लोकेभ्यो यावत्-अल्पावा, बहुकावा, तुल्यावा, विशेषाधिकावा सन्ति ? भगवानाह-'गोयमा ! सव्वत्थोवे तिरियलोए, उड्ढलोए असंखेज्जगुणे, अहेलोए विसेसाहिए' हे गौतम ! सर्वस्तोकः सर्वापेक्षया अल्पः तिर्यग्लोकोऽस्ति तस्य अष्टादशयोजनशतायामत्वात्, तदपेक्षया ऊर्ध्वलोकः असंख्येयगुणोऽस्ति, किञ्चिन्न्यून सप्तरज्जुप्रमाणोच्चित्वात्। तदपेक्षया अधोलोको विशेषाधिकोऽस्ति, किञ्चित्समधिक-

---

अहेलोगस्स, तिरियलोगस्स, उड्ढलोगस्स य कयरे कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया वा' हे भदन्त ! पूर्वोक्त अधोलोक, तिर्यग्लोक और ऊर्ध्वलोक इन तीन लोकों के बीच में कौन लोक किस लोकों से अल्प हैं ? किनसे वे बहुत हैं ? कौन किनके बराबर हैं ? और कौन किनसे विशेषाधिक हैं ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-'गोयमा' हे गौतम ! 'सव्वत्थोवे, तिरियलोए, उड्ढलोए असंखेज्जगुणे, अहेलोए विसेसाहिए' सबकी अपेक्षा कम तिर्यग्लोक है, क्योंकि इसका आयाम १८ सौ योजन का है इसकी अपेक्षा ऊर्ध्वलोक असंख्यातगुणा क्योंकि यह कुछ कम सात राजु ऊचा है। इसकी अपेक्षा अधोलोक विशेषाधिक है। क्यों कि इसकी ऊचाई कुछ अधिक ७ राजु प्रमाण है। अब अन्त में गौतमप्रभु

હવે અલ્પબહુત્વના વિષયમાં ગૌતમ સ્વામી મહાવીર પ્રભુને આ પ્રમાણે પ્રશ્ન પૂછે છે-"एयस्सणं भंते ! अहेलोगस्स, तिरियलोगस्स, उड्ढलोगस्स कयरे कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ?" હે ભગવન્ ! પૂર્વોક્ત અધોલોક, તિર્યગ્લોક અને ઊર્ધ્વલોકમાં કયો લોક કયા લોક કરતાં નાનો છે ? કયો લોક કયા લોક કરતાં મોટો છે ? કયો લોક કયા લોકની બરાબર છે ? અને કયો લોક કયા લોકથી વિશેષાધિક છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-"गोयमा !" હે ગૌતમ ! "सव्वत्थोवे तिरियलोए, उड्ढलोए असंखेज्जगुणे, अहेलोए विसेसाहिए" તિર્યગ્લોક સૌથી નાનો છે, કારણ કે તેનો આયામ (લંબાઈ) અઢાર સો યોજનની છે. તેના કરતાં ઊર્ધ્વલોક અસંખ્યાત ગણો મોટો છે, કારણ કે તેની ઉંચાઈ સાત રાજુ કરતાં થોડી ઓછી છે. ઊર્ધ્વલોક કરતાં અધોલોક વધુ મોટો છે, કારણ કે તેની ઉંચાઈ સાત રાજૂપ્રમાણ કરતાં અધિક છે.

सप्तरज्जुप्रमाणोच्छ्रितत्वात्। अन्ते गौतमो भगवद्वाक्यं प्रमाणयन्नाह-'सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति' हे भदन्त! तदेवं भवदुक्तं सत्यमेव, हे भदन्त! तदेवं-भवदुक्तं सत्यमेवास्तीति भावः ॥ सू० १४ ॥

॥ इति श्री विश्वविख्यात-जगद्वल्लभ-प्रसिद्धवाचक पञ्चदशभाषा-
कलितललितकलापालापक-प्रविशुद्धगद्यपद्यनैकग्रन्थनिर्मापक,
वादिमानमर्दक श्री शाहू छत्रपति कोल्हापुरराजप्रदत्त-
'जैनाचार्य' पदभूषित—कोल्हापुरराजगुरु-
बालब्रह्मचारि—जैनाचार्य—जैनधर्मदिवाकर
-पूज्य श्री घासीलालव्रतिविरचितायां
श्री "भगवतीसूत्रस्य" प्रमेयचन्द्रिका-
ख्यायां व्याख्यायां त्रयोदशशतके
चतुर्थोद्देशकः समाप्तः ॥१३-४॥

से कहते हैं-'सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति' हे भदन्त! आपका कहा हुआ यह सब बिलकुल सत्य है, हे भदन्त! आपका कहा हुआ यह बिलकुल सत्य है ॥ सू० १४ ॥

इतिलोकसंस्थान द्वारावक्तव्यता ॥

जैनाचार्य जैनधर्मदिवाकर पूज्यश्री घासीलालजी महाराज कृत "भगवतीसूत्र" की प्रमेयचन्द्रिका व्याख्याके तेरहवें शतक का चौथा उद्देशक समाप्त ॥ १३-४ ॥

-- મહાવીર પ્રભુના વચનોને પ્રમાણભૂત ગણીને ગૌતમ સ્વામી કહે છે- "सेव भंते! सेवं भंते! त्ति" હે ભગવન્! આપનું આ કથન સર્વથા સત્ય છે. હે ભગવન્! આપનું આ કથન યથાર્થ જ છે. ॥સૂ૦૧૪॥

॥ લોકસંસ્થાનદ્વાર વક્તવ્યતા સમાપ્ત ॥

જૈનાચાર્ય જૈનધર્મદિવાકર પૂજ્યશ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ કૃત "ભગવતી સૂત્ર"ની પ્રમેયચન્દ્રિકા વ્યાખ્યાના તેરમા શતકનો ચોથો ઉદ્દેશકસમાપ્ત ॥૧૩-૪॥

अथ पञ्चमोद्देशकः प्रारभ्यते

त्रयोदशशतके पञ्चमोद्देशकस्य संक्षिप्तविषयविवरणम् ।

किं नैरयिकाः सचित्ताहारिणः ? किं वा अचित्ताहारिणः ? किं वा मिश्राहारिणः सन्ति ? नो सचित्ताहारिणो नैरयिका भवन्ति, नो वा मिश्राहारिणो नैरयिका भवन्ति, अपि तु अचित्ताहारिणो नैरयिका भवन्ति, एवमेव असुरकुमारादयोऽपि अवसेयाः ॥

नैरयिकवक्तव्यता ।

मूलम्—नेरइया णं भंते! किं सचित्ताहारा, अचित्ताहारा मीसाहारा ? गोयमा ! नो सचित्ताहारा, अचित्ताहारा, नो मीसाहारा, एवं असुरकुमारा पढमो नेरइयउद्देसओ निरवसेसो भाणियव्वो, सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥सू० १॥

छाया—नैरयिका खलु भदन्त ! किं सचित्ताहाराः, अचित्ताहाराः, मिश्राहाराः ? गौतम ! नो सचित्ताहाराः, अचित्ताहाराः, नो मिश्राहाराः, एवम् असुरकुमाराः, प्रथमो नैरयिकोद्देशको निरवशेषो भणितव्यः, तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त इति ॥ सू० १ ॥

पांचवे उद्देशेका प्रारंभ—

तेरहवें शतक से इस पंचम उद्देशक में जो विषय वर्णित हुआ है-उसका विवरणसंक्षेप से इस प्रकार है-क्या नैरयिक सचित्ताहारी होते है ? या अचित्ताहारी होते है ? या मिश्राहारी होते है ? नैरयिक सचित्ताहारी नहीं होते हैं, और न वे मिश्राहारी होते हैं किन्तु अचित्ताहारी होते हैं। इसी प्रकार से असुरकुमार आदि के संबंध में भी जानना चाहिये।

પાંચમા ઉદ્દેશાનો પ્રારંભ—

તેરમાં શતકના પાંચમાં ઉદ્દેશકમાં જે વિષયનું પ્રતિપાદન કરવામાં આવ્યું છે, તે વિષયનું સંક્ષિપ્ત વિવેચન–" શું નારકો સચિત્તાહારી હોય છે? કે અચિત્તાહારી હોય છે ? કે મિશ્રાહારી હોય છે ? " " નારકો સચિત્તાહારી પણ નથી, મિશ્રાહારી પણ નથી, પરન્તુ અચિત્તાહારી છે. એજ પ્રમાણે અસુરકુમારાદિના વિષયમાં પણ સમજવું.

टीका—चतुर्थोद्देशके लोकस्वरूपस्योक्तत्वेन लोके च नारकादीनां सद्भावेन नारकादि वक्तव्यतार्थं पञ्चमोद्देशकमारभते—' नेरयियाणं भंते ' इत्यादि । '-नेरइयाणं भंते ! किं सचित्ताहारा, अचित्ताहारा, मीसाहारा ? ' गौतमः पृच्छति—हे भदन्त ! नैरयिकाः खलु किं सचित्ताहाराः ? किं वा अचित्ताहाराः ? किं वा मिश्राहाराः-सचित्ताचित्ताहारा भवन्ति ? भगवानाह—' गोयमा ! नो सचित्ताहारा, अचित्ताहारा, नो मीसाहारा ' हे गौतम ! नैरयिकाः खलु नो सचित्ताहारा भवन्ति, नो वा मिश्राहाराः-सचित्ताचित्ताहारा भवन्ति, अपितु अचित्ताहाराः भवन्ति, ' एवं असुरकुमारा । पढमो नेरइयउद्देसओ निरवसेसो भाणियव्वो ' एवं

नैरयिक वक्तव्यता—

'नेरइया णं भंते! किं सचित्ताहारा अचित्ताहारा' इत्यादि।

टीकार्थ—चतुर्थ उद्देशक में लोक का स्वरूप कहा है, लोक में ही नारकादि को का सद्भाव है। इस कारण सूत्रकार ने नारकादिकों की वक्तव्यता के निमित्त इस पांचवें उद्देशक का कथन किया है। इसमें सर्वप्रथम गौतमने प्रभु से ऐसा पूछा है 'नेरइया णं भंते ! किं सचित्ताहारा, अचित्ताहारा, मीसाहारा ?' हे भदन्त ! नैरयिक सचित्त आहारवाले हैं ? या अचित्तआहारवाले हैं ? या मिश्रआहार वाले हैं ? उत्तर में प्रभु कहते हैं—'गोयमा' हे गौतम ! 'नो सचित्ताहारा नो मीसाहारा' नैरयिक न सचित्त आहारवाले हैं, न मिश्रआहारवाले हैं, किन्तु अचित्तआहारवाले हैं। 'एवं असुरकुमारा, पढमो नेरइय उद्देसओ निरवसेसो भाणियव्वो' इसी प्रकार असुरकुमार भी न सचित्त

—નારકોની વક્તવ્યતા—

"नेरइयाणं भंते ! किं सचित्ताहारा अचित्ताहारा" ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ—ચોથા ઉદ્દેશામાં લોકના સ્વરૂપનું નિરૂપણ કરવામાં આવ્યું. લોકમાં જ નારકાદિનો સદ્ભાવ હોય છે આ પ્રકારના પહેલાના ઉદ્દેશક સાથેના સંબંધને લીધે હવે સૂત્રકાર નારકાદિના આહારનું કથન કરે છે—

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન—"नेरइयाणं भंते ! किं सचित्ताहारा, अचित्ताहारा, मीसाहारा ?" હે ભગવન્ ! નારકો સચિત્ત આહારવાળા છે ? કે અચિત્ત આહારવાળા છે ? કે મિશ્ર આહારવાળા છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર—" गोयमा ! नो सचित्ताहारा, अचित्ताहारा, नो मीसाहारा " હે ગૌતમ ! નારકો સચિત્તાહારી પણ નથી, મિશ્રાહારી પણ નથી, પરન્તુ અચિત્તાહારી જ છે. " एवं असुरकुमारा, पढमो नेरइय उद्देसओ निरवसेसो भाणियव्वो " એજ પ્રમાણે અસુરકુમારો પણ સચિત્તાહારી નથી,

तथैव, असुरकुमारा अपि नो सचित्ताहाराः, नो वा मिश्राहाराः, अपितु अचित्ताहारा भवन्ति, तथा च नैरयिकादीनां सचित्ताहारादिविषये प्रज्ञापनायाः अष्टाविंशतितमस्याहारपदस्य प्रथमो नैरयिकोद्देशको निरवशेषः सर्वः भणितव्यः अत्र वक्तव्यः तथाचोक्तं प्रज्ञापनायाम्-'नेरइया णं भंते ! किं सचित्ताहारा, अचित्ताहारा, मीसाहारा ? गोयमा ! नो सचित्ताहारा, अचित्ताहारा, नो मीसाहारा' इत्यादि, अन्ते गौतमो भगवद्वाक्यं प्रमाणयन्नाह-' सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ' हे भदन्त ! तदेवं भवदुक्तं सत्यमेव, हे भदन्त ! तदेवं भवदुक्तं सत्यमेवेति भावः ॥सू १॥

॥ इति त्रयोदशशतके पञ्चमोद्देशकः ॥

आहारवाले होते हैं, न मिश्र आहारवाले होते हैं, किन्तु अचित्त आहारवाले होते हैं। नैरयिक आदिकों के सचित्ताहार आदि के विषय में प्रज्ञापना के २५ वें आहार पद का प्रथम नैरयिक उद्देशक समस्त यहां कहना चाहिये-प्रज्ञापना में ऐसा ही कहा है-'नेरइया णं भंते! किं सचित्ताहारा, अचित्ताहारा मीसाहारा? गोयमा ! नो सचित्ताहारा, अचित्ताहारा, नो मीसाहारा" इत्यादि।

अब अन्त में गौतम भगवान् के वाक्य को प्रमाण मानते हुए कहते हैं—'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' हे भदन्त ! इस प्रकार आपके द्वारा कहा गया यह विषय सत्य ही है, हे भदन्त ! आपके द्वारा कहा गया यह विषय सत्य ही है ॥ सू १ ॥

॥ पंचम उद्देशक समाप्त ॥ ५ ॥

મિશ્રાહારી નથી, પરન્તુ અચિત્તાહારી છે. નારકાદિના સચિત્ત હાર આદિના વિષયમાં પ્રજ્ઞાપના સૂત્રના પ્રથમ નૈરયિક ઉદ્દેશકનું ૨૮મું આહાર પદ અહીં સંપૂર્ણ રૂપે કહેવું જોઈએ પ્રજ્ઞાપનામાં ત્યાં એવું જ કહ્યું છે કે-" नेरइयाणं भंते ! किं सचित्ताहारा, अचित्ताहारा, मीसाहारा ?" गोयमा ! " नो सचित्ताहारा, अचित्ताहारा, नो मीसाहारा " इत्यादि-

ગૌતમ સ્વામી મહાવીર પ્રભુના વચનને પ્રમાણભૂત ગણીને કહે છે- " सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति " હે ભગવન્ ! આપે આ વિષયનું જે પ્રતિપાદન કર્યું છે તે સર્વથા સત્ય છે હે ભગવન્ ! આપની વાત સર્વથા સત્ય જ છે. ॥સૂ૦૧॥

॥ તેરમાં શતકનો પાંચમો ઉદ્દેશક સમાપ્ત ॥૧૩-૫॥